सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशब्द भंडार

वीसवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
०३ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार जेठूवाल	भगतां नवित	अमृतसर	०१
२३ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	करम सिँघ दे गृह	मीआं पुर	अमृतसर	०३
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	बीबी गुरमेज कौर दे गृह	मीआं पुर	अमृतसर	०५
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	बीबी वीरो दे गृह	बघिआड़ी	अमृतसर	०८
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	बीबी सेवी दे गृह	ठट्ठा	अमृतसर	१०
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	इंदर कौर दे गृह	बोड़ू	अमृतसर	११
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	महिंदर सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	१३
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	बचन सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	१३
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	करतार सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	१४
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	सुरजन सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	१५
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	प्रीतम सिँघ	मांगा सराए	अमृतसर	१६
२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	अजीत सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	१७
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	दर्शन सिँघ दे गृह	मांगा सराए	अमृतसर	१६
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	जागीर सिँघ दे गृह	मैणीआं	अमृतसर	२०
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	बीबी जीतो दे गृह	बाबोवाल	अमृतसर	२१
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	गिरधारा सिँघ दे गृह	बलोवाल	अमृतसर	२३
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	दलीप सिँघ दे गृह	बलोवाल	अमृतसर	२४
२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	बीबी सवरन कौर दे गृह	सैदपुर	अमृतसर	२४
२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	प्यारा सिँघ दे गृह	सैदपुर	अमृतसर	२६
२६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २	केसर सिँघ दे गृह	मैसम पुरा	अमृतसर	२८

1 २०

२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	गुरदयाल सिँघ दे गृह	नूर पुर		३०
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	साधू सिँघ दे गृह	नूर पुर		३३
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	विरसा सिँघ दे गृह	हरि गोबिंद पुरा	गुरदासपुर	३५
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	अवतार सिँघ दे गृह	गुरमुख पुरा	गुरदासपुर	३७
२६	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	सविंदर सिँघ दे गृह	दइआ	गुरदासपुर	३७
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	महिंदर सिँघ दे गृह	दइआ	गुरदासपुर	३६
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	मोहण सिँघ दे गृह	तारा चक्क	गुरदासपुर	४०
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	बंता सिँघ दे गृह	पंज गराई	गुरदासपुर	४१
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	करतार कौर दे गृह	पंज गरांई	गुरदासपुर	४३
२७	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	कांशी राम दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४५
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	चरन सिँघ दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४६
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	अजीत सिँघ दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४७
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	तारा सिँघ दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४८
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	मक्खण सिँघ दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४८
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	संत सिँघ दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४८
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	हरभजन कौर दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	४६
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	सुरजीत सिँघ दे गृह	फैज़पुरा	गुरदासपुर	५०
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	हुकम सिँघ दे गृह	फैजपुरा	गुरदासपुर	५१
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	जसवंत सिँघ दे गृह	फ़ैजपुरा	गुरदासपुर	५२
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	दलीप सिँघ दे गृह	फैज़पुरा	गुरदासपुर	५३
२८	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	समा दे गृह	डेड़	गुरदासपुर	५४
३०	अस्सू	शहिनशाही	सम्मत २	प्रीतम सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	५७

2
२०

2
२०

पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५९
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६४
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरबंस कौर दे गृह	मरड़	अमृतसर	६५
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ गुरदयाल सिँघ दे गृह	मूधल	अमृतसर	६६
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरबंस कौर दे गृह	मूधल	अमृतसर	६८
२ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	६८
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	७१
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ निरंजण सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	७२
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरनाम कौर दे गृह	वेरका	अंमितसर	७३
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ पिशोरा सिँघ दे गृह	वेरका	अमृतसर	७५
३ कतक शहिनशाही सम्मत २ सीतल सिँघ दे गृह	हरदो झण्डे	गुरदासपुर	७६
३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह	सोहल	गुरदासपुर	७८
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह	डडवां	गुरदासपुर	७९
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरनाम कौर दे गृह	लेल	गुरदासपुर	८३
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह	भुंबली	गुरदासपुर	८४
४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जरनैल सिँघ मैंहगा सिँघ दे गृह सद्दा		गुरदासपुर	८५
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी बावी दे गृह	दोसत पुरा	गुरदासपुर	८७
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी दीपो दे गृह	उचा	गुरदासपुर	८७
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ करम सिँघ दे गृह	सद्दा	गुरदासपुर	८७
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरो दे गृह	सद्दा	गुरदासपुर	८८
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी सधरो दे गृह	सद्दा	गुरदासपुर	८८
५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरमेज कौर दे गृह	कठयाली	गुरदासपुर	८९

3
२०

4 २०

५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	अजीत सिँघ दे गृह	हेमराज पुर	गुरदासपुर	६०
५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	दर्शन सिँघ गृह	हेमराज पुर	गुरदासपुर	६१
५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	सवरन सिँघ दे गृह	हयात नगर	गुरदासपुर	६२
५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी हरबंस कौर दे गृह	ग़ज़नीपुर	गुरदासपुर	६४
५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी सुलखणी दे गृह	ग़ज़नीपुर	गुरदासपुर	६६
५	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	बलदेव सिँघ दे गृह	शोन	गुरदासपुर	६८
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	गुरमुख सिँघ दे गृह	शोन	गुरदासपुर	६६
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	भजन सिँघ दे गृह	दोसतपुरा	गुरदासपुर	१००
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	धिरता सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१०१
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	सरदार सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१०३
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	रतन सिँघ दे गृह	कलानौर	गुरदासपुर	१०४
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	बलकार सिँघ दे गृह	रसूल पुर	गुरदासपुर	१०५
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	मंगल सिँघ दे गृह	डेड़	गुरदासपुर	१०७
६	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	जोगिंदर सिँघ दे गृह	डेड़	गुरदासपुर	११०
७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	दयाल सिँघ दे गृह	गवाड़	गुरदासपुर	११०
७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	सविंदर सिँघ	गवाड़	गुरदासपुर	१११
७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	सुरजीत कौर दे गृह	शिकार माछीआं	गुरदासपुर	११३
७	कत्तक	शहनशाही	सम्मत २	दलीप सिँघ दे गृह	पब्बा राली	गुरदासपुर	११४
७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	लाभ कौर दे गृह	पब्बा राली	गुरदासपुर	११४
७	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत २	जसबीर सिघ दे गृह	भोले के	गुरदासपुर	११५
७	कतक	शहिनशाही	सम्मत २	जागीर सिँघ दे गृह	भोले के	गुरदासपुर	११६
७	कतक	शहिनशाही	सम्मत २	करतार सिँघ दे गृह	वहीला	गुरदासपुर	११७

८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	हरजिंदर कौर दे गृह	पखो के राजे दे	गुरदासपुर	११८
८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	पूरन सिँघ दे गृह	मंजयां वाली	गुरदासपुर	१२१
८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	रवेल कौर दे गृह	खोखर	गुरदासपुर	१२३
८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी पूरो दे गृह	नवां पिंड	गुरदासपुर	१२५
८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	किशन कौर दे गृह	नवां पिंड	गुरदासपुर	१२७
८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी गुरो दे गृह	चुमिआरी	अमृतसर	१२९
८	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	जोगिंदर सिँघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	१३०
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	बलवंत कौर दे गृह	जट्टा	अमृतसर	१३१
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	दर्शन सिँघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	१३२
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी जीतो दे गृह	रमदास	अमृतसर	१३२
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिँघ दे गृह	मुद्दी पुर	अमृतसर	१३४
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी महिंदर कौर दे गृह	मुद्दी पुर	अमृतसर	१३५
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	शिंगारा सिँघ दे गृह	खैहरे	अमृतसर	१३६
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	हज़ारा सिँघ दे गृह	खैहरे	अमृतसर	१३८
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	मिलखा सिँघ दे गृह	खैहरे	अमृतसर	१३९
९	कत्तक	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमीत कौर दे गृह	मान	अमृतसर	१४०
पहली	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१४०
२	मग्घर	शहनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१५३
२	मग्घर	शहनशाही	सम्मत	२	अजैब सिँघ दे गृह	हरिराएपुर	बठिंडा	१५४
४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	टैहल सिँघ दे गृह	रूपोवाली	अमृतसर	१५५
४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	चरन सिँघ दे गृह	रूपोवाली	अमृतसर	१५७
४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रकाश कौर दे गृह	रूपोवाली	अमृतसर	१५७

5
२०

5
२०

६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	हजारा सिँघ दे गृह	फतूपुर	कपूरथला	१५८
६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	प्यारा सिँघ दे गृह	फतूपुरा	कपूरथला	१६०
६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	प्रीतम सिँघ दे गृह	ढिलवां	अमृतसर	१६१
६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी छिंदो दे गृह	लिटां		१६३
६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	गुरचरन सिँघ दे गृह	पंडोरी	कपूरथला	१६६
६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	ज्ञान सिँघ दे गृह	सुरख़पुर	कपूरथला	१६७
१०	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी बंत कौर दे गृह	दरीएवाल	कपूरथला	१६८
१०	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	जागीर सिँघ दे गृह	बसती शिकार पुर	कपूरथला	१७०
१०	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	प्यारा सिँघ दे गृह	जांगला	कपूरथला	१७२
१०	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	फ़कीर सिँघ दे गृह	मजीद पुरा	कपूरथला	१७२
१०	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	दर्शन सिँघ दे गृह	नूरपुर	कपूरथला	१७३
१०	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	महिंदर सिँघ दे गृह	हरनाम पुर	कपूरथला	१७५
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी प्यार कौर दे गृह	ढुड्डीआं	कपूरथला	१७७
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी प्यारो दे गृह	ढुड्डीआं	कपूरथला	१७८
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	ज्ञान सिँघ दे गृह	ढुड्डीआं	कपूरथला	१७६
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	सुरजीत कौर दे गृह	गोसल	कपूरथला	१८०
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	दौलत सिँघ दे गृह	शेख़पुरा	कपूरथला	१८१
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	गुरदयाल सिँघ दे गृह	कपूरथला		१८३
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	करतार सिँघ दे गृह	कपूरथला		१८४
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	सुखदेव सिँघ दे गृह	कपूरथला		१८५
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	बीबी अमृत कौर दे गृह	जेल गारडन	कपूरथला	१८५
११	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत २	जसवंत सिँघ दे गृह	चरखड़ी महल्ला	करतारपुर	१८७

6
२०

१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम कौर दे गृह	करतार पुर	जलंधर	१८८
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	हरबंस सिँघ दे गृह	करतार पुर	जलंधर	१८६
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	नगीना सिँघ दे गृह	माडल हाऊस	जलंधर	१६०
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्यारा सिँघ दे गृह	माडल हाऊस	जलंधर	१६३
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	हरदयाल सिँघ दे गृह	जलंधर	जलंधर	१६५
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	दर्शन कौर	लौढे पतड़	जलंधर	१६६
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	हरभजन कौर दे गृह	रुड़का	जलंधर	१६७
१२	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	बिशन दास दे गृह	जलंधर	जलंधर	१६८
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिँघ दे गृह	कोटली	कपूरथला	१६६
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर कौर दे गृह	कोटली	कपूरथला	२०१
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	सवरन सिँघ, गुरचरन सिँघ दे गृह	झंगी	जलंधर	२०२
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	पाल सिँघ दे गृह	ललीआं कलां	जलंधर	२०४
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	मल सिँघ दे गृह	ललीआं कलां	जलंधर	२०५
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	नसीब सिँघ दे गृह	बोपा राए	जलंधर	२०६
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	लाल सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	२०७
१३	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	लाल सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	२१०
१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	बलविंदर सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	२१३
१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	सरवण सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	२१५
१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	साधू सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	२१६
१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	करतार सिँघ दे गृह	गांधरां	जलंधर	२१७
१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	राम सिँघ दे गृह	सरींह	जलंधर	२१८
१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदयाल सिँघ दे गृह	चीमां कलां	जलंधर	२२०

7
२०

१४	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिँघ दे गृह	जंडिआला	जलंधर	२२३
१५	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रेम सिँघ दे गृह	जमशेर खेड़ा	जलंधर	२२६
१५	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	करतार कौर दे गृह	जमशेर खेड़ा	जलंधर	२३१
१५	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिँघ दे गृह	खेड़ा	जलंधर	२३३
१५	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमीत सिँघ दे गृह	फराला	जलंधर	२३४
१५	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	मनसा सिँघ दे गृह	फराला	जलंधर	२३५
१५	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी चरन कौर दे गृह	माहल गैहला	जलंधर	२३७
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमीत सिँघ दे गृह	फराला	जलंधर	२३८
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी चरन कौर दे गृह	फराला	जलंधर	२४०
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	साधू सिँघ दे गृह	सालारपुर	जलंधर	२४२
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर सिँघ दे गृह	दैंत पुरा	जलंधर	२४३
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	माई भागो दे गृह	बिलगा	जलंधर	२४४
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	केहर सिँघ दे गृह	रुड़का	जलंधर	२४४
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	लछमण सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२४५
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमेज सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५४
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	जोगिंदर सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५५
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	आत्मा सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५५
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी पूरो दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५५
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम कौर दे गृह	माहल गैहले	जलंधर	२५६
१६	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी ऊधी दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५६
१७	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	गिरदावर सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५६
१७	मग्घर	शहिनशाही	सम्मत	२	करनैल सिँघ दे गृह	बिलगा	जलंधर	२५७

8
२०

१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५८
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	२५८
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी नछत्तर कौर दे	गृह गोराया	जलंधर	२५९
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश सिँघ दे गृह	चीमे कलां	जलंधर	२६०
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ संतोख सिँघ दे गृह	सोढीआं	जलंधर	२६१
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिँघ दे गृह	कंग	जलंधर	२६२
१७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह	दुसांझ खुरद	जलंधर	२६३
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ रजिंदर सिँघ प्यारे लाल दे गृह	दुसांझ खुरद	जलंधर	२६४
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह	डाडीआं	हुशिआरपुर	२६८
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ संसार सिँघ दे गृह	डविडा	हुशिआरपुर	२६९
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह	रिहाणा कलां	हुशिआरपुर	२७०
१८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह	पुराणी डरोली	हुशिआरपुर	२७१
१९ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह	आदमपुर	जलंधर	२७३
१९ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ तारू सिँघ दे गृह	जंडीरे	हुशिआरपुर	२७५
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ मिरजईआं नाल	कादीआं	गुरदासपुर	२७७
मिरज़े दे मज़ार उते			२७९
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम कौर दे गृह	ठीकरी वाला	गुरदासपुर	२८०
२८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ पाल सिँघ दे गृह	मुंडा	अमृतसर	२८५
२९ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह	बसती तेगा सिँघ	फिरोज़पुर	२८९
पहली पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२९१
२ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०२

२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	अरजन सिँघ जगजीत सिँघ	सलीमपुरा	हुशिआरपुर	३०४
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	अमरीक सिँघ दे गृह	सराईं	हुशिआरपुर	३०७
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	अमरीक सिँघ दे गृह	सराईं	हुशिआरपुर	३०७
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	प्यारा सिँघ दे गृह	सराईं	हुशिआरपुर	३०८
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बलदेव कौर दे गृह	कंधाला शेख	हुशिआरपुर	३०८
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	भजन कौर दे गृह	बैरम पुर	हुशिआरपुर	३०९
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	तरसेम सिँघ दे गृह	खुरदा	हुशिआरपुर	३०९
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	ज्ञान चंद दे गृह	मिरज़ापुर धारीवाल	हुशिआरपुर	३०९
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	पूरन सिँघ दे गृह	रूपोवाली	हुशिआरपुर	३१०
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरिंदर सिँघ ख्याल सिँघ दे गृह	रूपोवाली	हुशिआरपुर	३१०
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	धंना सिँघ दे गृह	कुल्लीआं	हुशिआरपुर	३११
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	वतन सिँघ दे गृह	सरींह पुर	हुशिआरपुर	३१२
३	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हेम सिँघ दे गृह	डमाणा	हुशिआरपुर	३१३
४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	दयाल सिँघ दे गृह	डड्डां	हुशिआरपुर	३१४
४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	दयाल सिँघ दे गृह	डड्डां	हुशिआरपुर	३१६
४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	करतार सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	३१७
४	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	लाल सिँघ दे गृह	पंज ढेरा	हुशिआरपुर	३२०
५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	राम सिँघ दे गृह	गाल्हड़ीआं	हुशिआरपुर	३२१
५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरजीत सिँघ दे गृह	कालू चांग	हुशिआरपुर	३२२
५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	दलजीत सिँघ दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	३२३
५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बूआ दित्ता मल दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	३२५
५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	जीआ लाल दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	३२७

10
२०

11
२०

५	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	जोगिंदर दे गृह	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	३२६
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३३१
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	संतोख सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३३२
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी प्यारो दे गृह	जेठुवाल	अमृतसर	३३४
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	साधू सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३३७
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	मिलखा सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३३६
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	रूप सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४०
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बचन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४०
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	चरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४१
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	सुभागवंती दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४२
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	वरिआम सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४३
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४३
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी चरनी दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४४
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	पाल सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४५
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी मायो दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४६
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४६
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बाल कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३४८
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी नंती दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३५०
२१	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३५२
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	फ़ौजा सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३५६
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	आत्मा सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३५८
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	प्यारा सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३५८

11
२०

२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	दरबारा सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३६०
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	जीवण सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३६१
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरे शाह दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३६२
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	किशन सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	३६३
२२	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबख्श सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३६४
२६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	३६८
२७	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३८७
२८	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४०३
२८	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	हरबंस कौर	चक मुआफ़ी	लुधियाणा	४०८
२८	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	चतर कौर	सद्दा	गुरदासपुर	४०६
२८	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	अदालत सिँघ	आंडलू	लुधियाणा	४११
२६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	जागीर सिँघ दे गृह	सभरा	अमृतसर	४११
२६	पोह	शहिनशााही	सम्मत	२	सवरन सिँघ	दबुरजी	अमृतसर	४१२
२६	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	सुंदर सिँघ	रोसे	गुरदासपुर	४१२
३०	पोह	शहिनशाही	सम्मत	२	जोगिंदर सिँघ दे गृह	मैसम पुरा		४१४
पहली	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४१७
२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४२८
२	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	भजन सिँघ दे गृह	जीउ जुलाई	गुरदासपुर	४३०
१८	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	जरनैल सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोज़पुर	४३१
१८	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	करनैल सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोज़पुर	४३३
१८	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी महिंदर कौर दे गृह	शाह वाला	फिरोजपुर	४३४
१८	माघ	शहिनशाही	सम्मत	२	मक्खण सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोजपुर	४३६

12
२०

१८ माघ शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोजपुर	४३६
१८ माघ शहिनशाही सम्मत २ गुरदास सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोज़पुर	४३७
१८ माघ, शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोजपुर	४३८
१८ माघ शहिनशाही सम्मत २ बचन कौर दे गृह	पदरी	फिरोजपुर	४३९
१८ माघ शहिनशाही सम्मत २ गुरचरन कौर दे गृह	फिरोज़पुर		४३९
१९ माघ शहिनशाही सम्मत २ करतार कौर दे गृह,	रटौल रोही वाले,	फिरोज़पुर	४४०
१९ माघ शहिनशाही सम्मत २ खेम सिँघ दे गृह	कोट कपूरा		४४१
१९ माघ शहिनशाही सम्मत २ दौलत सिँघ दे गृह	पंज गराईं	फिरोज़पुर	४४३
१९ माघ शहिनशाही सम्मत २ दलीप कौर दे गृह	समालसर	फिरोज़पुर	४४४
१९ माघ शहिनशाही सम्मत २ राज सिँघ दे गृह	मुकतसर	फिरोज़पुर	४४५
१९ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी प्रीतम कौर दे गृह	मदरसा		४४६
२० माघ शहिनशाही सम्मत २ मल सिँघ दे गृह	अकाल गड़्		४४८
२० माघ शहिनशाही सम्मत २ अच्छर सिँघ दे गृह	सेखा		४५०
२० माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरजिंदर कौर दे गृह	सेखा		४५१
२० माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरविंदर कौर दे गृह	रखाला		४५१
२० माघ शहिनशाही सम्मत २ टहिल सिँघ दे गृह	हसपताल रोड	अबोहर	४५३
२० माघ शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह	रतेवाल गंगानगर	राजस्थान	४५४
२१ माघ शहिनशाही सम्मत २ अरजन सिँघ दे गृह	रतेवाल गंगानगर	राजस्थान	४५५
२१ माघ शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह	१ सी० सी०	गंगानगर	४५७
२१ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी लक्छो दे गृह	३ सी० सी०	गंगानगर	४५८
२१ माघ शहिनशाही सम्मत २ काबल सिँघ दे गृह	१८ बी० बी०	गंगानगर	४६०
२१ माघ शहिनशाही सम्मत २ रतन सिँघ दे गृह	२५ बी० बी०	गंगानगर	४६२

13
२०

२२ माघ शहिनशाही सम्मत २ महां सिँघ दे गृह	२५ बी० बी०	गंगानगर	४६६
२३ माघ शहिनशाही सम्मत २ तरलोक सिँघ दे गृह	२० ज़ैड	गंगानगर	४६८
२३ माघ शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत सिँघ दे गृह	बनवाली		४६९
२३ माघ शहिनशाही सम्मत २ मलकीअत सिँघ दे गृह	बनवाली		४७३
२४ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी दानो दे गृह	बनवाली		४७५
२४ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी तेज कौर दे गृह	बनवाली		४७६
२४ माघ शहिनशाही सम्मत २ करम सिँघ दे गृह	पिपली	फिरोजपुर	४७८
२४ माघ शहिनशाही सम्मत २ जरनैल सिँघ दे गृह	डूमवाली		४८१
२४ माघ शहिनशाही सम्मत २ जागीर कौर दे गृह	खोपर		४८३
२५ माघ शहिनशाही सम्मत २ बलबीर सिँघ	सरेस वाला	फिरोज़ पुर	४८४
२५ माघ शहिनशाही सम्मत २ चरनजीत कौर दे गृह	बहाउदी	हिसार	४८५
२५ माघ शहिनशाही सम्मत २ फुलजीत सिँघ दे गृह	चंधड़ कलां		४८७
२६ माघ शहिनशाही सम्मत २ रघबीर सिँघ दे गृह	चंधड़ कलां		४८८
२६ माघ शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिँघ दे गृह	चंधड़ कलां		४९०
२६ माघ शहिनशाही सम्मत २ आसा सिँघ दे गृह	खांग		४९२
२६ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी निहाल कौर दे गृह	कमाल पुर	लुधियाणा	४९४
२७ माघ शहिनशाही सम्मत २ हरचरन कौर दे गृह	रौली		४९६
पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४९८
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५११
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलविंदर कौर	सरेस वाला		५१५
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह	जेठू नंगल		५१५
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सोहण सिँघ दे गृह	भोले के		५१६

14
२०

२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	कुंदन सिँघ दे गृह	शाहपुर थेड़ी		५१६
२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	हज़ारा सिँघ दे गृह	मनिहाला		५१७
२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	समिंदर कौर दे गृह	चीमा		५१८
२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	प्रकाश कौर	दिल्ली		५१८
५	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	जागीर सिँघ दे गृह	नूर पुर		५२१
५	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	संतोख सिँघ दे गृह	नूर पुर		५२१
५	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	उतम सिँघ दे गृह	नाभा		५२२
६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	बलवंत सिँघ दे गृह	पटिआला		५२४
७	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	बलदेव किशन दे गृह	पटिआला		५२६
७	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सतवंत कौर दे गृह	पटिआला		५२८
७	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	बीबी काको दे गृह	चुपकी	पटिआला	५२६
७	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	बलदेव सिँघ, अजैब सिँघ दे गृह	बूटा सिँघ वाला	पटिआला	५३०
८	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	मोहर सिँघ दे गृह	बूटा सिँघ वाला	पटिआला	५३३
८	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	चानण सिँघ दे गृह	हंडोला	करनाल	५३५
८	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	करनैल सिँघ, जरनैल सिँघ दे गृह	खरका	करनाल	५३६
६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	करतार सिँघ दे गृह	कौमी फ़ारम	करनाल	५३८
६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	रण सिँघ दे गृह	अजीत नगर	करनाल	५३६
६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सुरजीत कौर दे गृह	अजीत नगर	करनाल	५४१
६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	महिंदर सिँघ दे गृह	गड़ी लांगरी	कुरकशेतर	५४३
१०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	मोहण सिँघ दे गृह	गड़ी लांगरी	कुरकशेतर	५४४
१०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	जरनैल सिँघ दे गृह	सतौरा	करनाल	५४७

15
२०

16
२०

१० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सौदागर सिंघ दे गृह	भट्ठ माजरा	करनाल	५४८
१० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिंघ दे गृह	ठीकरी	करनाल	५५०
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ वरिआम सिंघ दे गृह	ठीकरी	करनाल	५५१
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रणधीर सिंघ दे गृह	अरनाए	करनाल	५५२
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ निरंजण सिंघ दे गृह	फ़ारम	करनाल	५५४
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरमेज सिंघ दे गृह	थानेसर	करनाल	५५५
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ भान सिंघ दे गृह	नानक पुरा	करनाल	५५७
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सोहण सिंघ दे गृह	नानक पुरा	करनाल	५५८
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ संता सिंघ	तरन तारन		५५६
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ अवतार सिंघ	चबेवाल	हुशिआरपुर	५६०
१२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ दीदार सिंघ दे गृह	भाम	गुरदासपुर	५६०
१३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सरूप सिंघ दे गृह	ढुड्डी	फरीदकोट	५६१
१३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिंघ दे गृह	रूपो वाल	हुशिआरपुर	५६२
१३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बिशन सिंघ, सेवा सिंघ दे गृह		गुड़गाउँ	५६३
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिंघ दे गृह	औजला	कपूरथला	५६५
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रतन सिंघ हरनाम सिंघ दे गृह	नूर पुर		५६५
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ भगवान सिंघ	उड़मुड़ टांडा		५६६
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रेशम सिंघ दे गृह	खहिरा मजा	जलंधर	५६७
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिंघ	मंडिआणी	लुधियाणा	५६७
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ राज कौर दे गृह	जलौद	लुधियाणा	५६८
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हंस राज दे गृह	मकेरीआं	हुशिआरपुर	५६६
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ मुलख राज दे गृह	मकेरीआं	हुशिआरपुर	५७०

१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रेम दयाल दे गृह	मेरठ	५७१
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	निरंजण सिँघ दे गृह	अजितवाल फिरोज़पुर	५७२
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रेमी देवी दे गृह	झण्डे कैंप जम्मू	५७४
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	अमरजीत कौर जगजीत सिँघ सरमैल सिँघ	सलीमपुर हुशिआरपुर	५७५
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बिकरम सिँघ दे गृह	तखाण वध फिरोज़पुर	५७७
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	निरवैर सिँघ निरंजण सिँघ दे गृह कूचा नंबर ६	लुधियाणा	५७८
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरबंस सिँघ दे गृह	अजनौद लुधियाणा	५७८
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदीप सिँघ दे गृह	दबुरजी अमृतसर	५७६
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बूड़ सिँघ दे गृह	पुरीआं गुरदासपुर	५७६
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बावा सिँघ दे गृह	पुरीआं गुरदासपुर	५८०
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बलविंदर सिँघ दे गृह	चंद पुराणा फिरोज़पुर	५८१
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	चंदा सिँघ दे गृह	ललतों कलां लुधियाणा	५८१
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	दर्शन सिँघ दे गृह	वाहगे हुशिआर पुर	५८१
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	राजा राम दे गृह	लाजपत नगर दिल्ली	५८२
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	जगत सिँघ दे गृह	चमनाउं पौड़ी गढ़वाल	५८२
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	अवतार सिँघ दे गृह	शास्त्री नगर कानपुर नगर	५८३
१८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	किरपा सिँघ दे गृह	कानपुर	५८४
१८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदित सिँघ दे गृह	कानपुर	५८७
१८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबचन सिँघ दे गृह	लाल बंगला कानपुर	५८६
१८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी मायो	अमीं शाह खालड़ा	५६१

17 २०

१८	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सतवंत कौर दे गृह	कानपुर		५६२
१६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	गुरबख्श सिँघ दे गृह	महू	लखनऊ	५६४
१६	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	महल सिँघ दे गृह	शास्त्री नगर	कानपुर	६०३
२०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	ओम प्रकाश कालरे दे गृह	जंग पुरा	नवीं दिल्ली	६११
२०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	करतार सिँघ दे घर	शकूर बसती	नवीं दिल्ली	६११
२०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सवरण सिँघ दे गृह	खेड़ी	पटिआला	६११
२०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सवरन सिँघ दे गृह	अर्जन नगर	जलंधर	६१२
२०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	गुरचरन सिँघ दे गृह	जटूआ	संगरूर	६१२
२०	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	करम सिँघ दे गृह	भगवान पुरा	जलंधर	५१४
२१	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	हज़ारा सिँघ दे गृह	शरीफ गढ़	करनाल	५१४
२१	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	संता सिँघ दे गृह	शरीफ गढ़	करनाल	५१५
२१	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	बंता सिँघ दे गृह	मुगल माजरा	करनाल	६१६
२१	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	आसा सिँघ दे गृह	कलसाणी	करनाल	६१८
२१	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सरैण सिँघ दे घर	कलसाणी	करनाल	६१६
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	बचन सिँघ दे गृह	चिबाह	करनाल	६१६
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सवरन सिँघ दे गृह	कलोनी नंबर १	हज़ारी बाग	६२०
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	सरदारा सिँघ दे गृह	रौणी	लुधियाणा	६२१
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	काका सिँघ दे गृह	लिभड़ा	लुधियाणा	६२१
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	इंदर सिँघ दे गृह	हरबंस पुरा	पटिआला	६२१
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	गुरमेज सिँघ दे गृह	हरबंस पुरा	पटिआला	६२२
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	गुरदेव सिँघ दे गृह	हरबंस पुरा	पटिआला	६२२
२२	फग्गण	शहिनशाही सम्मत	२	नसीब कौर दे गृह	हरबंस पुरा	पटिआला	६२२

18
२०

२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी अमरो दे गृह	हरबंस पुरा	पटिआला	६२३
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्यारा सिँघ दे गृह	रोड़ा	पटिआला	६२३
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	सवरन सिँघ दे गृह	बरकत पुरा	पटिआला	६२३
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	मेवा सिँघ दे गृह	कलौंदी	अंबाला	६२५
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	पंजाब कौर दे गृह	कलौंदी	अंबाला	६२६
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	चैंचल सिँघ दे गृह	महौण	लुधियाणा	६२७
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	भाग सिँघ, पाखर सिँघ दे गृह	फराला	जलंधर	६३०
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर कौर दे गृह	खेड़ा	जलंधर	६३०
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरिंदर सिँघ दे गृह	जंडिआला	जलंधर	६३१
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बलबीर कौर दे गृह	जंडिआला	जलंधर	६३१
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	गणेशा सिँघ दे गृह	कोट कलां	जलंधर	६३२
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	धरमजीत सिँघ दे गृह	ठक्करवाल	जलंधर	६३२
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी ठाकरी दे गृह	फ़राला	जलंधर	६३३
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	रणजीत सिँघ दे गृह	वडाला	जलंधर	६३३
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	तलविंदर सिँघ दे गृह,	वडाला	जलंधर	६३३
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदीप कौर दे गृह	पबमा	जलंधर	६३४
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरबंस सिँघ दे गृह	ढड्डे	जलंधर	६३४
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	करतार कौर दे गृह	जंडिआला	जलंधर	६३६
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	मक्खण सिँघ, तेजइंदर सिँघ दे गृह	वडाला	जलंधर	६३७
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी समा कौर दे गृह	सुनड़	जलंधर	६३७
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी बचन कौर दे गृह	बोपाराए	जलंधर	६३८
२३	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी भजन कौर दे गृह	जमशेर	जलंधर	६३८

19
२०

२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २	हरबंस कौर दे घर	काला संघा	जलंधर	६३९
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ (२०२४ बिक्रमी)	हरि भगत	दवार	जेठुवाल	६४०
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	महिंदर सिँघ	झंमट		६६६
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	बचन कौर	झंमट		६६६
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	कुलवंत सिँघ	बस्ती पठाणा		६६६
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	गुरबंस कौर	चब्बा	अमृतसर	६६७
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	जुगिंदर कौर	लोटे कलोनी	अंबाला	६६७
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	बाल सिँघ	भगवां	अमृतसर	६६७
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	उतम चंद	तलवाड़ा	हुशिआरपुर	६६७
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	मुणशी राम	मिआनी	हुशिआरपुर	६६८
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी प्रकाशो	सालोवाल	गुरदासपुर	६६८
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी पुंनी	सालोवाल	गुरदासपुर	६६८
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	मनजीत सिँघ	दीदारे वाला	फिरोज़पुर	६६८
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	जरनैल सिँघ सलां वाली	तलवंडी	हुशिआरपुर	६६८
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	गुरचरन सिँघ	जम्मू		६६९
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	अजीत सिँघ	जम्मू		६६९
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	संत राम	गोकले चक	जम्मू	६६९
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	हरदीप कौर	फतिह नंगल	गुरदासपुर	६६९
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	गुरदित सिँघ	राम दुवाली	अमृतसर	६७०
पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी महिंदर कौर	सूसाणा	हुशिआरपुर	६७०
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी गुरनाम कौर	सूसाणा	हुशिआरपुर	६७०
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	जसवंत सिँघ	भाम	हुशिआरपुर	६७०

20
२०

२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी प्रीतम कौर	बुढे कोट	गुरदासपुर	६७१
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	परताप सिँघ	सणीआं वाला		६७१
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	सरदारा सिँघ	रोडे	फिरोज़पुर	६७२
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	शाम सिँघ	नंगल	फिरोज़पुर	६७२
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	तेज कौर	वलूर	फिरोज़पुर	६७२
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी गुरमेज़ कौर	मक्खण विंडी	अमृतसर	६७३
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	सुरिंदर कौर अैच अैम टी	पंचूआ डिसपैंसरी छीना वाली	अमृतसर	६७३
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	मिलखा सिँघ	३६ जे० बी०	गंगा नगर	६७४
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	वचिंत कौर	रुड़का	जलंधर	६७४
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	अजीत कौर	कड़ाला	कपूरथला	६७४
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	हज़ारा सिँघ	पंडोरी	अमृतसर	६७५
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी चरनो	भुसे	अमृतसर	६७५
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	हरबंस सिँघ	चौंक मोनी करोड़ी गली बूटा सिँघ वाली	अमृतसर	६७५
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	महिंदर सिँघ	बुघे	अमृतसर	६७६
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	भजन सिँघ	धींगा वाली	जम्मू	६७६
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	बीबी सवरनो किरतो वाल	ढाए वाल	अमृतसर	६७६
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	तारा सिँघ	गुंमटी	बठिंडा	६७७
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	किशन जीत सिँघ	लुहारा	जलंधर	६७७
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	मोहण सिँघ	कादीआं	गुरदासपुर	६७७
२ चेत शहिनशाही सम्मत ३	ज्ञान चंद	पूना शहर		६७८

21
२०

२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	नरिंदरजीत कौर खतिआर पुर	शाहजहान पुर	यू० पी०	६७८
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	सरजीत कौर	वेगे पुर	अमृतसर	६७८
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	गुरदास मल	कल्ला	अमृतसर	६७८
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	रोशन लाल	कल्ला	अमृतसर	६७६
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	माया राम	कल्ला	अमृतसर	६७६
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	सुरिंदर पाल	कल्ला	अमृतसर	६८०
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	जुगिंदर कौर	भोले	जलंधर	६८०
२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	गुरतख़त सिँघ	लौडूवाल	लुधियाणा	६८०
३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	साधू सिँघ	झामके	अमृतसर	६८१
३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	हरभजन कौर दे गृह	भगवानपुरा	अमृतसर	६८३
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	बीबी पीतो दे गृह	सठिआला	अमृतसर	६८४
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	तेजा सिँघ दे गृह	सठिआला	अमृतसर	६८६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	हजारा सिँघ दे गृह	खब्बे	अमृतसर	६६०
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	जोत शबद अधार महाराज पूरन सिँघ दे गृह		जेठूवाल	६६३
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	अमरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६३
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	सुरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६३
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६४
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६४
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	जागीर कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६४
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	सुरजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६४
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	दलीप सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६५
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	३	हरजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६५

22
२०

४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	सुलक्खण सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६५
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	भान सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६५
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	प्रीतम सिँघ ते वरिआम कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	प्रेम सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	ईशर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	बंता सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६७
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	इंदर सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६७
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	तारा सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६७
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	हरचरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६७
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	जरनैल सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६८
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	प्रकाश कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६८
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	बिशन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६८
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	प्रीतम कौर दे गृह	जेठुवाल	अमृतसर	६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	डा० माणक सिँघ	अमृतसर		६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	हरबंस सिँघ	बसती अड्डा जलंधर		६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	बंता सिँघ	यू० पी०		६६६
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	गुरदित सिँघ दे गृह	राम दवाली	अमृतसर	७००
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	कुंदन सिँघ	पंडोरी वड़ैच	अमृतसर	७००
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	बलजिंदर कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७००
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	दविंदर कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७००
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	सरजीत सिँघ गुरशरन सिँघ	सुलतान विंड गेट	अमृतसर	७०१
४	चेत	शहिनशाही	सम्मत ३	राज कौर	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७०१

23
२०

४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ नाज़र सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०१
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जगजीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०१
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरमीत सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०२
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बलविंदर कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०२
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरभजन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०२
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ करम सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०२
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी जगीर कौर	काठगड़	पटिआला	७०३
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सतपाल	फरीदाबाद		७०३
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी भिंदर कौर	कड़िआला	अमृतसर	७०३
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जुगिंदर कौर	गवाल टोली	फिरोज़पुर छाउणी	७०४
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ तरिपत कौर	गवाल टोली	फिरोज़पुर छाउणी	७०४
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ कशमीर सिँघ	सद्दा	गुरदासपुर	७०४
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जागीर सिँघ	सद्दा	गुरदासपुर	७०५
४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७०५
पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७०७
पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	७१६
२ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	७३५
१० जेठ शहिनशाही सम्मत ३ चेला सिँघ दे गृह	रेज़ीडैंसी रोड	जम्मू	७३६
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बीबी राम कौर दे गृह	छंब	जम्मू	७३८
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ लाल चंद दे गृह	जम्मू		७४०
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ अमरो देवी दे गृह	जम्मू		७४१
११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ अजीत सिँघ दे गृह	जम्मू		७४२

24
२०

११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ ज्ञान चंद खैरोवाल जम्मू ७४३

११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ फुम्मण सिँघ दे गृह जम्मू ७४४

११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गुरचरन सिँघ दे गृह जम्मू ७४५

११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रकाश चंद दे गृह जम्मू ७४८

१३ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शंकर आचारीआ मंदर श्रीनगर ७४८

१४ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शाही चशमा श्रीनगर ७५१

१४ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ पवित्र अस्थान सी गुरू हरि गोबिंद साहिब श्रीनगर ७५१

१४ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ धर्म अर्थ रोड श्रीनगर ७५४

१५ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ दरगाह हज़रत बल, आसार शरीफ,
मौलवी अबदुल कबीर दे साथ श्रीनगर ७५७

मौलवी अबदुल कबीर ने उतर दित्ता ७५६

महाराज जी वलों सवाल ७५६

दरगाह शरीफ़ विच इक मुस्लमान ने दुद्ध दित्ता उस परथाए ७६०

१५ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ मुसलमान दरवेश नाल मंदर खीर भवानी श्रीनगर ७६१

१६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ तेज भान दे गृह शेखसर बख़शी नगर मारकीट जम्मू ७६२

१६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ राम प्यारी दे गृह बदी पुर जम्मू ७६२

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शिव सिँघ बख़शी नगर मारकीट शेख़ सर वाला जम्मू ७६३

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ राम चंद दे गृह बख़शी नगर मारकीट जम्मू ७६३

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गुरदित सिँघ दे घर छंब वाला जम्मू ७६४

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ खज़ान सिँघ दे गृह रणबीर सिँघ पुरा जम्मू ७६४

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ रणीआं राम दे घर कलोए जम्मू ७६६

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ सेवा राम दे गृह कलोए जम्मू ७६७

25
२०

१७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	प्रीतम सिँघ दे गृह	कलोए		जंम	७६८
१७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	वकील सिँघ दे गृह	हंसा		जम्मू	७६९
१७	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	लछमण सिँघ दे गृह	सई	कलां	जम्मू	७७०
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	कुलवंत सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७१
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	बचन सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७१
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	खेमो देवी दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७२
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	प्रेमी देवी दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७२
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	बेला सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७३
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	बंती देवी दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७३
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	प्रताप सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७४
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	देवा सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७४
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	पूरन सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७४
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	हंस राज दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७५
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	इंदर सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७५
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	धीरो देवी दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७५
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	राजो देवी दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७६
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	धरमो देवी	सई	कैंप	जम्मू	७७६
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	चूड़ सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७७
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	वकील सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७७
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	अंगरेज सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७७
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	सोभा सिँघ दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७८
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	हरनामो देवी दे गृह	सई	कैंप	जम्मू	७७८

26
२०

27
२०

१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	प्रेम चंद दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७७६
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	सरदारा सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७७६
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	राम लाल दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७७६
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	नानक चंद दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८०
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	रवेला राम दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८०
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	झण्डू राम दे गृह	जौड़ीआं	जम्मू	७८१
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	शांती देवे दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८१
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	बेलू राम दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८१
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	गुरा राम दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८२
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	किशन लाल दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८२
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	नंदू दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८३
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	देवा सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८३
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	बीबी बचनो दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८४
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	गूड़ा राम	सई कैंप	जम्मू	७८४
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	कृपाल सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	७८४
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	दौलत राम दे गृह	कोटली राईआं	जम्मू	७८५
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	प्रकाश चंद दे गृह	मघोवाली	जम्मू	७८६
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	माया देवी दे गृह	मघोवाली	जम्मू	७८६
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	देवी सिँघ दे गृह	मघोवाली	जम्मू	७८७
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	लछमी देवी दे गृह	सीड़	जम्मू	७८७
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	माया कौर दे गृह	सीड़	जम्मू	७८८
१६	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	३	गुरनाम सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	७८६

27
२०

१६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ भगत सिँघ दे गृह	कीर	जम्मू	७८६
पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	७६०
१६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	७६४
१६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	७६५
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ जलूस चल्लण दे समें लिखत	जेठूवाल	अमृतसर	८०३
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार जेठूवाल जलूस दी समापती समें दा शबद			८०६
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८१६
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ रात दे समें	जेठूवाल	अमृतसर	८२१
पहली सावण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	८३४
६ सावण शहिनशाही सम्मत ३ कपूर सिँघ दे गृह	मोगा	फिरोज़पुर	८४३
७ सावण शहिनशाही सम्मत ३ सुरैण सिँघ दे गृह	निधां वाली		८४६
७ सावण शहिनशाही सम्मत ३ सुलक्खण सिँघ दे गृह	रुकनामूंगला	फिरोज़पुर	८४७
७ सावण शहिनशाही सम्मत ३ राम सिँघ दे गृह	फिरोज़ पुर छाउणी		८४८
८ सावण शहिनशाही सम्मत ३ गुरदेव सिँघ दे गृह	फिरोज़ पुर छाउणी		८५०
२६ सावण शहिनशाही सम्मत ३ दिल्ली दरबार विखे	दिल्ली		८५१
पहली भादरों शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८५३
२ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	८६२
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८६४
२० भादरों शहिनशाही सम्मत ३ सोहण सिँघ दे घर	शाह बुक्कर	फिरोज़पुर	८६५
२१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ करनैल सिँघ दे गृह	शाह वाला	फिरोज़पुर	८६७
२२ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ जरनैल सिँघ दे गृह शाह वाला		फिरोज़पुर	८६८

२२ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ बलवंत सिँघ दे गृह	तलवंडी जले खां	फिरोज़पुर		८७०
२३ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ सुरैण सिँघ दे गृह	निधां वाला			८७२
२४ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ हरी सिँघ दे गृह	बसती ख़लील	फिरोज़पुर		८७३
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ सुलक्खण सिँघ दे गृह	रुकना मूंगला	फिरोज़पुर		८७४
२६ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ गुरदेव कौर दे गृह	गोले वाला	फिरोज़पुर		८७८
२७ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ कृपाल सिँघ दे गृह	गोले वाला	फिरोज़पुर		८७६
२७ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ खेम सिँघ दे गृह	कोट कपूरा			८८०
२८ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ हरचंद सिँघ दे गृह	हरराए पुर	बठिंडा		८८२
२६ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ जसवंत सिँघ दे गृह	राजेआणा	फिरोज़पुर		८८३
३० भादरों शहिनशाही सम्मत ३ मंगल सिँघ दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८८५
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ करम सिँघ दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८८६
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ सरदारा सिँघ गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८८७
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ साधू सिँघ दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८८८
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ सरवन सिँघ दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८८६
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ भगवान कौर दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८६०
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ नाज़र सिँघ दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा		८६०
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३	मुंडीआं			८६१
३१ भादरों शहिनशाही सम्मत ३ गुरदेव सिँघ दे गृह	घड़ूआं			८६३
पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत सिँघ दे गृह	घड़ूआं			८६४
पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर		८६५
२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर		८६६
३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर		६०१

29
२०

५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार धीरपुर दिल्ली ६१३

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ सवामी अनंद जी महाराज आल इंडीआ भारत साधू समाज
२२ पटेल नगर दिल्ली ६१४

६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार धीर पुर दिल्ली ६१६

१० अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ सुवामी गुरचरन दास दे नाल हेमराज मिशन
पटेल नगर नवीं दिल्ली ६१७

१२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ मुलतान सेवा सम्मती आश्रम दिल्ली ६१६

मुलतान सेवा सम्मती, सवामी कृष्ना नंद सवामी गोबिंदा नंद हरदवार वाल्यां नाल ६२२

२३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ प्रीतम सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ६२४

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ सुखदेव राम दे गृह कल्ला अमृतसर ६३०

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ जागीर कौर दे गृह कल्ला अमृतसर ६३१

30

२०

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ गुरमुख सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ६३१

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरी सिँघ दे गृह कल्ला अमृतसर ६३३

२४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर ६३४

२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ दारा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर ६३५

२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर ६३६

२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ मक्खण सिँघ दे गृह नौरंगाबाद अमृतसर ६३८

२५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ राधा सुवामी डेरा बाबा
बग्गा सिँघ प्रताप सिँघ दे नाल तरन तारन अमृतसर ६३६

पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार जेठूवाल अमृतसर ६४१

२ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ६५०

३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ डेरा बाबा जैमल सिँघ ब्यास गुरचरन सिँघ नाल ६५२

30

२०

१३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६५४
१५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६५६
पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	६५८
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	६६४
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ रसीला राम सैदपुर वाले नाल			
हरि भगत दुवार जेठूवाल		अमृतसर	६६५
२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ गुरमीत सिँघ दे गृह	हरदो फराला	जलंधर	६६८
४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ शाकाहारी कानफ़रंस	दिल्ली		६७०
५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ डाकटर ओबंसन इसराईली नाल			
शाकाहारी कानफ़रंस विच लाल किला		दिल्ली	६७१
६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ इसराईली डैलीगेटज़ दे साथ	दिल्ली		६७१
७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ ठाकर सिँघ दे गृह	बीड़ अमीन		६७२
१६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ लछमण सिँघ धंगाली वाले दे गृह सई कैंप जम्मू			६७५
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ कुलवंत सिँघ दे गृह	धंगाली सई कैंप	जम्मू	६७७
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ देवा सिँघ	धंगाली सई कैंप	जम्मू	६७८
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ गूड़ा राम	सेख़ सर सई खुरद कैंप	जम्मू	६८०
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ बेला सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६८१
२० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ अंगरेज़ सिँघ दे गृह	सई कैंप	जम्मू	६८२
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ वकील सिँघ धंगाली	सई कैंप	जम्मू	६८४
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ पूरन सिँघ धंगाली	सई कैंप	जम्मू	६८५
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ बीबी मिठी देवी दे गृह	मघोवाली	जम्मू	६८७
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ माया देवी दे गृह	मघोवाली	जम्मू	६८६

31
२०

32
२०

२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	सरदार सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	९९०
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	लछमी देवी दे गृह	सीड़	जम्मू	९९२
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	सूबेदार तेजभान दे गृह	बख्शी नगर	जम्मू	९९४
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	राम चंद दे गृह	बख्शी नगर	जम्मू	९९५
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	शिव सिँघ दे गृह	बख्शी नगर	जम्मू	९९५
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	चीफ इंजीनिअर आर० अैल० शर्मा		जम्मू शहर	९९७
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	राम कौर दे गृह	छंब	जम्मू	१००१
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	प्रकाश चंद दे गृह	जम्मू		१००२
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	हरी सिँघ दे गृह	वजारत रोड	जम्मू	१००४
२२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	चेला सिँघ दे गृह	वज़ारत रोड	जम्मू	१००५
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	लाल चंद दे गृह	जम्मू		१००७
२३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३	केसरी देवी दे गृह	जम्मू		१००८
पहली पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०१०
२ पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०२५
२ पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०२६
३ पोह शहिनशाही सम्मत ३	मुनी सुशील कुमार नाल	मंडी अहिमद गड़	लुधियाणा	१०२८
१२ पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०२९
२१ पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार जेठूवाल अखबार रपोटरां नाल			१०३८
२१ पोह शहिनशाही सम्मत ३	आत्मा सिँघ दे गृह	मलूवाल	अमृतसर	१०४१
२३ पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०५०
२४ पोह शहिनशाही सम्मत ३	मुनी सुशील कुमार नाल	अमृतसर		१०५१
२४ पोह शहिनशाही सम्मत ३	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०२३

२५ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०६४
२६ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०७१
२७ पोह शहिनशाही सम्मत ३ सरव धरम समेलन हरि भगत दवार जेठूवाल			१०८६
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	११०४
२८ पोह शहिनशाही सम्मत ३ सरब धरम समेलन हरि भगत दवार जेठूवाल			१११६
३० पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	११३७
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ३ जैन मंदर	बटाला	अमृतसर	११३७
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ३ अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	अमृतसर	११४४
पहली माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	११४५
२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मुनी सुशील कुमार जैन संत मंडली दीना नगर			११५३
३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	११५५
३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बाबुपुर बाहर		गुरदासपुर	११६६
३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बलाका सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११७४
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११८४
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मक्खण सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११८६
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मक्खण सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११८७
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ करतार कौर दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११८८
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ संत सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११८९
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ भाग सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११९०
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ दीदार सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११९०
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ विरसा सिँघ दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११९२
४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बीबी हरनामो दे गृह	बाबुपुर	गुरदासपुर	११९३

33
२०

४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मेला सिँघ बीबी नंतो दे गृह बाबुपुर गुरदासपुर ११६४

४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ रावी कंढे ११६५

४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत गुरदासपुर १२०६

५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत गुरदासपुर १२०७

५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ रावी किनारे गुरदासपुर १२०८

५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ उजागर सिँघ दे गृह राज पुर चेबे गुरदासपुर १२१०

५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ उजागर सिँघ दे गृह ममीआं गुरदासपुर १२१२

५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सरदूल सिँघ वज़ीर पुर जटां
मलाह दे नाल रावी किनारे गुरदासपुर १२१४

५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत गुरदासपुर १२१८

६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत गुरदासपुर १२२४

६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ महिंदर सिँघ गड़ी लांगरी वाला
हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १२२५

६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १२२६

१५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १२२७

२१ माघ शहिनशाही सम्मत ३ भलाई पुर डोगरां हरि संगत अमृतसर १२२९

२२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ पाल सिँघ दे गृह भलाई पुर डोगरा अमृतसर १२५३

२२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे
टीउबैल लई नींह भलाई पुर डोगरा अमृतसर १२५६

२२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद अमृतसर १२५७

२३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ गुलज़ार सिँघ दे गृह जलालाबाद अमृतसर १२६१

२३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सुखविंदर सिँघ दे गृह जलालाबाद अमृतसर १२६३

२३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बलवंत सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	१२६५
२३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सुरैण सिँघ दे गृह	जंडिआलागुरू	अमृतसर	१२६६
२४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ तेजा सिँघ दे गृह	जंडिआलागुरू	अमृतसर	१२६९
२४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ संतोख सिँघ दे गृह	जंडिआलागुरू	अमृतसर	१२७१
२४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिँघ दे गृह	जंडिआलागुरू	अमृतसर	१२७१
२६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२७३
पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२७४
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२८१
४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१२८८
११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत सिँघ दे जन्म दिन ते हरि भगत दवार जेठूवाल		अमृतसर	१२९३
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरबंस सिँघ दे नवित माहल		अमृतसर	१२९५
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरबंस सिँघ दे नवित माहल		अमृतसर	१२९८
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ भाग सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	१३००
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हज़ारा सिँघ दे गृह	अमृतसर		१३०१
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिँघ दे गृह	गग्गो बूआ	अमृतसर	१३०३
२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ लाभ सिँघ दे गृह	चक्क फतिह सिँघ वाला		१३०५
२१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ जागीर सिँघ दे गृह	रत्ते वाल		१३०७
२२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ साधू सिँघ दे गृह १ सी० सी०		राजस्थान	१३०९
२२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ महां सिँघ दे गृह २५ बी० बी०		राजस्थान	१३११
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३,	२५ बी० बी०	राजस्थान	१३१३
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ गुरदयाल सिँघ दे गृह २५ बी० बी०		राजस्थान	१३१६

२३	फग्गण	शहिनशाही सम्मत ३	रतन सिँघ दे गृह	२५ बी० बी०	राजस्थान	१३२०
२४	फग्गण	शहिनशाही सम्मत ३	नंता सिँघ दे गृह	पदम पुर	राजस्थान	१३२३
२४	फग्गण	शहिनशाही सम्मत ३	बीबी तेज कौर दे गृह	बनवाली		१३२६
२४	फग्गण	शहिनशाही सम्मत ३	सुरजीत सिँघ दे गृह	बनवाली		१३२८
२५	फग्गण	शहिनशाही सम्मत ३	मलकीअत सिँघ गृह	बनवाली		१३२९

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ ३ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल भगतां नवित ★

तिन्न अस्सू कहे जन भगतां मिले श्री भगवाना, मूर्ख मूढ़ कलयुग जीव देण दुहाईआ। दया करे मेहरवान शाह सुल्ताना, दीन दुनी रिहा तड़फाईआ। साचे सन्तां दे के नाम तराना, कलयुग कूड़ी क्रिया अग्नी तत लगाईआ। गुरमुखां बख्श के चरण ध्याना, मनमुखां कूड़े धन्दे रिहा लगाईआ। गुरमुखां चरण धूढ़ करा इश्नाना, कलयुग जीवां दुरमति मैल रिहा लगाईआ। लेखा जाण जीव जगत जहाना, लख चुरासी खोजे थाउँ थाँईंआ। निरगुण निरवैर निराकार पहरया बाणा, बाण निराला
१ अणयाला शब्दी तीर चलाईआ। सति सरूपी प्रगट हो के धुर दा कान्हा, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। योद्धा सूरबीर बण १
२० मर्द मर्दाना, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। कलयुग अन्त जगत वासना जगत दिसे बेगाना, धुर दा संगी संग २०
ना कोए निभाईआ। कूड़ी क्रिया अंदर होया दीवाना, नाम खुमारी सति ना कोए रखाईआ। साचा घर ना किसे पहचाना, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं वरतां मात, नौ सत्त खोज खुजाईआ। भगतां मिले अगम्मी दात, दौलतमंद रिहा वरताईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, ज़र्रे ज़र्रे करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म दस्स साक, सज्जण इक्को रिहा जणाईआ। घर स्वामी खोल्ह के ताक, परदा ठाकर रिहा हटाईआ। सन्त सुहेला कर के पाक, पवित आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं दस्सां हाल, हालत सब दी वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी वजावणहारा ताल, दो जहान करे शनवाईआ। शाह सुल्तान होण बेहाल, राज मंत्री ना कोए वड्याईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डौरू आपणा डंक वजाईआ। जिस दी देवे ना कोए मिसाल, मिसल आपणी नवीं लए बणाईआ। साचे भगतां पुच्छे आ के हाल, मुरीद मुर्शद लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार

सच्ची सरनाईआ। अस्सू कहे मैं आसा रखी, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ध्यान लगाईआ। किस वेले परम पुरख दी वेखां गुरमुख सखी, साजण मिल के वज्जे वधाईआ। कन्त कन्तूहल पतिपरमेश्वर इक्को नज़रीं आए पती, पत्तीआं वाला हिस्सा ना कोए रखाईआ। निर्मल जोत होवे प्रकाश लोड़ रहे ना मोमबत्ती, बुत्तख़ानयां अंदर करे सफ़ाईआ। नाम निधाना अगम्मी धार दे के रती, रतन अमोलक गुरमुख लए बणाईआ। जगत समाज मन वासना साधू इक्वे खट्टे कोए ना खट्टी, खटके अंदर देण दुहाईआ। चार जुग दी पिछली पढ़ के पट्टी, सुनेहड़े सुण सुण खुशी मनाईआ। मंज़ल चढ़ के रमज़ हकीकी किसे ना तक्की, लाशरीक नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार सच्ची सरनाईआ। अस्सू कहे भगतां होणा सच मिलाप, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। कलयुग शाह सुल्तानां चढ़ना ताप, त्रैगुण माया अग्नी अग्ग तपाईआ। मनुआ मन होणा गुस्ताख़, गृह गृह घर घर करे लड़ाईआ। साचे नाम दा दिसे कोई ना चाक, चाकर चाकरी हक ना कोए कमाईआ। गोबिन्द करे पूरा भविख्त वाक्, वाकिफ़कार बण के दीन लोकाईआ। सन्त सुहेले कर इत्तफाक, मेला मेले सहिज सुभाईआ। साचे मण्डल पा के रास, सुरती शब्द काहन मिलाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, नूर नुराना करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया उडणी ख़ाक, जगत सहारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करदा, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। लेखा जाणे गृह गृह घर घर दा, लख चुरासी काया माटी हाटी खोज खुजाईआ। शब्द अगम्मी निरगुण धार अगम्मी हो के पढ़दा, आत्म परमात्म राग अलाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण फड़दा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। करे खेल नरायण नर दा, नर हरि परदा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तिन्न अस्सू कहे लेखा नाल तिन्हां दे, जो त्रैगुण लेखा गए मुकाईआ। पुरख अकाल मेल मिलाए जिन्हां दे, जन्म जन्म दा रोग गवाईआ। प्रभावित करके इक्क दूजे दे दिलां दे, दलिद्र अंदरों दए कढाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिन्हां नाल कौल कीते अन्तिम मिलांगे, विछड़े धुर दे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अस्सू कहे मैं खुल्हदा वेख्या ताक, ताकतवर आप खुल्हाईआ। गुरमुखां लहिणा देणा शब्दी करे बेबाक, पिछला पूरब झोली पाईआ। सृष्ट सबाई हुंदी दिसे ख़ाक, ख़ालस रूप ना कोए वटाईआ। मन वासना सारे बण के चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। आपणी समझे कोए ना ज़ात, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी बणाई नार कमज़ात, कन्त सुहागी मिल ना वज्जे वधाईआ। साचा खेड़ा करे ना कोए आबाद, उजड़ी दिसे जगत लोकाईआ। तन माटी हुंदा दिसे

बरबाद, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। शौह दरयाए डुब्बदा जाए जहाज़, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। साचा खोले कोई ना राज़, रमज़ विच समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दरगाहीआ। धुरदरगाह दा इक्को वासी, वास्ता भगतां नाल रखाईआ। कलयुग जीवां अन्तिम राए धर्म दवारे देवे फाँसी, फ़ैसला इक्को इक्क सुणाईआ। बचया रहे ना कोए पंडत काशी, कच्छहिरे वालयां होए ना कोए सहाईआ। बिन गोबिन्द शब्दी साचे मण्डल पावे कोए ना रासी, बिन पुरख अकाल देवे ना कोए वड्याईआ। मनुआ छड्डे ना अंदरों बदमाशी, बदला बदले विच्चों चुकाईआ। जगत ख़ाहिश होई अयाशी, हरस हवस ना कोए मिटाईआ। बिना भगतां साची दिसे कोए ना दासी, दरस पा के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बणा के इक्क जमाती, इक्को सिख्या दए समझाईआ। अस्सू तिन्न कहे मैं आसावंद, आहिस्ता आहिस्ता ध्यान लगाईआ। हुक्मे अंदर हो पाबन्द, बैठा सीस झुकाईआ। सब दा मालक नज़री आए हरि ख़ावंद, ख़ातून जगत रिहा हंढाहीआ। गुरमुख चाढ़ के नूरी चन्द, जोती जोत करे रुशनाईआ। शाह सुल्तानां देवे दंड, शब्दी डण्डा हथ्थ उठाईआ। सब दी नंगी कर के कंड, जगत कंडयां विच फसाईआ। जन भगतां दे के परमानंद, निजानंद करे रसाईआ। जिन्नां गाया सोहँ छन्द, शमां बुझी दए जगाईआ। जगत जन्म दी पूरी कर के मंग, आसा आपणे विच रलाईआ। मेहरवान हो सूरा सरबंग, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। रविदास चमारे पाई गंढु, लेखा लिखे कलम शाहीआ। पहली सावण भगतां ठंड, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। अस्सू तिन्न भण्डारा देवे वण्ड, रातीं सुत्यां अंदर दए टिकाईआ। सृष्टी दृष्टी खुआर होवे मनुआ जंग, जंगल प्रभास दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सूरा सरबंग, सर्ब सुल्तान मेहरवान इक्को नज़री आईआ।

★ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ करम सिँघ दे गृह पिण्ड मीआं पुर ज़िला अमृतसर ★

दरगाह साची ना इश्क मिजाज़ी ना हकीकी, हिकमत आलम इलम नज़र कोए ना आईआ। ना कोई शरअ ना शरायती, तन वजूद प्यार मुहब्बत ना कोए वखाईआ। ना कोई बख़्शंद ना अज़ीज़ी, निरगुण सरगुण ना कोए चतुराईआ। जल्वागर इक्क तौफ़ीकी, नूरो नूर बेपरवहीआ। ना कोई आसा ना कोई मनसा ना उम्मीदी, वासना रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई ढोला कलमा गीत राग नीती, गहर गम्भीर ना कोए सुणाईआ। ना कोई पवण ठंडी सीती, अग्नी तत ना कोए जलाईआ।

नेत्र लोचन नैण वेखण वाली रीती, नाता नाता ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जल्वागर नूर खुदाईआ। ना हकीकी ना मिजाज़ी, मिसल मिसाल ना कोए बणाईआ। ना शरअ ना निमाज़ी, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। ना कोई धुन ना कोई नादी, कलमा हक ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई लेखा फोले हाल माज़ी, मुसतकबिल मजलस महबूब बेपरवाहीआ। ना कोई सवाल ना कोई जवाबी, तालब तल्बगार नज़र कोए ना आईआ। ना कोई मित्र ना कोई अहिबाबी, महिराब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई मेल मिलाप ना होवे शादी, शादयाना हक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एकँकारा इक्क इकल्ला आपणी कार कमाईआ। ना मिजाज़ी ना हकीकी, प्रेम प्यार इश्क मुहब्बत वाला महबूब नज़र कोए ना आईआ। ना कोई लोक परलोक सलोक चौदां दिसे तबकी, ज़िमीं असमानां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई अक्खरां वाली देवे सिख्या सीख, संथा हुक्म नाल हुक्म ना कोए जणाईआ। ना कोई प्यार करन वाला वेखण वाला मीत, महबूब इक्को एकँकार इक्क दवारे सोभा पाईआ। ना कोई दरवेश मंगणहारा भीख, ना कोई झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी एकँकारा खेल अपारा दरगाह साची धाम न्यारा नूर नुराना शाह सुल्ताना वड मेहरवाना महव आपणी कार कमाईआ। मिजाज़ी हकीकी समझे कौण, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार जिस दा ढोला गाउण, अन्तिम ओसे विच आपणा आप जाण समाईआ। जिस दा लेखा जाणे ना कोई पाउण, पवण सुनेहड़ा सच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची मंज़ल आपणी धार आपणे विच मिलाईआ। ना कोई मुहब्बत ना कोई प्यार, ना कोए नाता जोड़ जुड़ाईआ। इक्को नूर नूर उज्यार, जिस दा लख चुरासी पसार, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। ओस रमज़ नूं समझे कोई ना विच संसार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। इश्क हकीकी मिजाजी तों बाहर (अथाह), बेपरवाह नज़री आईआ। जो आदि जुगादी सर्ब मलाह, बेड़ा सब दा पार लँघाईआ। जिस दरगाह विच वसे जल्वागर खुदा, नूर नुराना डगमगाईआ। ओथे इश्क सके ना कोए कमा, कामल मुर्शद इक्को दए वखाईआ। जिस दे विच्चों निकले ओसे विच गए समा, एका दूआ रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे विच टिकाईआ। साचे नाम दी साची धार, हरि सतिगुर आपणे विच समाईआ। जिस नाम नूं गाउँदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर शुकर मनाईआ। काया मन्दिर अंदर सुणदे रहे धुन्कार, बिन रसना जेहवा वज्जदी रहे वधाईआ।

शास्त्र सिमरत वेद पुराण ओसे दा करन विसथार, सिफ्तां नाल जगत वड्याईआ। जिस दी महिमा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणे विच रखाईआ। तिस दी ख़ाहिश बुद्धी विच समझे ना कोए जीव मन दी विचार, बिन अनुभव समझ कोए ना पाईआ। मंज़ल चढ़ के वेखो मंज़ल दुष्वार, नौ दवारयां तों परे जिस दी वज्जे वधाईआ। सो नाम आप निरँकार, निरगुण निरवैर इक्क अख्वाईआ। जिस नूं कागत कलम शाही ना लिखणहार, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। सो नाम आपणे हथ्थ रख्या करतार, करनी आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम आपणा आप दृढ़ाईआ। साचे नाम दा ना कोई तन ना वजूद, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। उस दा नाता इक्को नाल हक महबूब, मुहब्बत पुरख अकाल नाल पाइंदा। जिस दा जगत विद्या विच मिले ना कोए सबूत, सतिगुर इशारा शब्द इक्क समझाइंदा। जिस दा डंका आदि जुगादि जुग चौकड़ी वज्जे चारे कूट, दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। सो नाम दस्से आपणी मंज़ल हक हदूद, जिस दी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदी ना होवे नेस्तोनाबूद, फ़िकरयां विच फ़िकरा ना कोए समझाइंदा। जिधर वेखो हर हिरदे ओस नाम दा नाम वजूद, जो सिफ्तां अंदर सिफ्तां विच समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम आपणे विच छुपाइंदा। साचे नाम दी डैफ़ीनेशन जे कोई जाणे डायरैकट, डिफीकलट नज़र कोए ना आईआ। मनुआ मन पाए अफैकट, मंज़ल हक ना कोए पुचाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर पुरख अकाल दीन दयाल करे सलैकट, जुग चौकड़ी उहनां दए समझाईआ। कनैकशन करे बिना अलैकट, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। डंका वजाए ईसट वैसट, गैसट आपणे लए बणाईआ। जगत विच साचे नाम दे कोई बणे नहीं परोजैकट, जग नेत्र धार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम आदि जुगादि इक्को इक्क रखाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरमेज कौर दे गृह पिण्ड मीआं पुर ज़िला अमृतसर ★

सति कहे पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रुत्त, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को तेरा नाम वज्जे वधाईआ। जन भगतां उजल कर मुख, दुरमति मैल माया ममता मोह मिटाईआ। घर स्वामी आत्म परमात्म दे सुख, गृह गृह अंदर तेरा नूर इक्को नज़री आईआ। सन्त सुहेले आपणी गोदी चुक्क, चार वरन अठारां

बरन झगड़ा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सति कहे मेरे परम पुरख अबिनाशी, हरि करते तेरी वड वड्याईआ। कलयुग अन्त मेट अन्धेरी राती, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। नाम भण्डारा बख्श अमोलक दाती, चार वरन अठारां बरन आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बण साथी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। साचा नाम वखा इक्को हाटी, जगत दवारा लोड़ रहे ना राईआ। अमृत जाम पिला बण के साकी, साखी आपणी दे समझाईआ। मनुआ तन रहे ना आकी, बुद्धी बिबेक रूप बदलाईआ। तेरे नाम दी बिन अक्खरां वाली सुणदे रहे पाती, पतिपरमेश्वर शब्द सुनेहड़ा देणा घलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां भविख्तां वाली पूरी कर आखी, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले गुर चेले बणा दास दासी, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच रखाईआ। जन भगतां लहिणा देणा पूरब जन्म चुका बाकी, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। तेरी मंज़ल अगम्मी चढ़न घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। साची मंज़ल वेखण तेरी रहरासी, सूरज चन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। निर्मल नूर जोत तेरी प्रकाशी, प्रकाशत दिसे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साची मंग गया मंगाईआ। सति कहे प्रभ मेरे गहर गम्भीर, बेअन्त तेरी सरनाईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म अंदरों बदल दे तकदीर, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। नेत्र रो रो कहे कबीर, मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर, सच दवारे दए दुहाईआ। साबत रिहा ना कोए शाह अमीर, सब दे नेत्र वगे नीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सदी चौधवीं महबूब मंज़ल मिले ना कोए पीर, पैगम्बर घत्त के गए वहीर, दस्तगीर दस्त ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच कहे मोहे दे माण वड्याईआ। सति कहे प्रभ तेरा हुक्म लोड़ां सच्चा, सति सतिवादी तेरा राह तकाईआ। लख चुरासी दीन दुनी भाण्डा जाणां कच्चा, माटी ख़ाकी तन वजूद रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण जोड़ सक्का, साजण हो के वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द नाल तेरा कौल इकरार पक्का, कच्ची गंढु ना कोए पवाईआ। अबिनाशी करते दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार कलयुग कूड़ी क्रिया दे धक्का, धर्म दुआर एकँकार इक्को देणा प्रगटाईआ। साख्यात निरवैर निरगुण धार नज़री आवें बिन अक्खां, जोती जाते पुरख बिधाते नूरो नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा झोली डाहीआ। सति कहे मेरे धुर दे साहिब स्वामी, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा दे अगम्मी बाणी, बिन अक्खरां निरअक्खर कर पढ़ाईआ। तीर निराला अणयाला मार आपणी कानी, कायनात सोई सुरती दे उठाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मस्त ना रहे मस्तानी, मतलब

धुर दा दे समझाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी जीव जंत साध सन्त दा बानी, नित नवित वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। साची मंजल आत्म परमात्म दस्स रुहानी, परदा आप उठाईआ। भेव अभेदा खोल्ह पंज तत जिस्मानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सति सतिवाद देणा दृढ़ाईआ। सति कहे मेरे धुर दे ख़ालक, खैर मुहब्बत दे वरताईआ। सचखण्ड निवासी धरनी मालक, मेहर नज़र उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स इक्क इबादत, तेरा नाम ढोला सारे सिफ्त सालाहीआ। झगड़ा रहे ना निन्दक दुष्ट साकत, सज्जण सारे लैणे बणाईआ। मन बुद्धी तों परे दस्स ल्याकत, बोध अगाध दे जणाईआ। आत्म परमात्म होवे वाकिफ़, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सच साची मंग मंगाईआ। सति कहे मेरे परम पुरख अबिनाशी, करनी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ बालक सेवक तेरा दासन दासी, माण अभिमान ना कोए रखाईआ। साची मंज़ल आपणी दस्स अगम्मी घाटी, बिन पौड़ी डण्डे देणा चढ़ाईआ। जन भगतां पुच्छ आपणी वाती, निरगुण हो के वेख वखाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। इक्को तेरा नाम साचा होवे सिमरन पाठी, पूजा इक्को देणी वखाईआ। तेरा खेल वेखीए पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार लहिणा देणा चुका बाकी, झगड़ा अवर रहे ना राईआ। सति दुआर परदा खोल्ह ताकी, साथी हो के संग निभाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म सब नूं निरगुण धार दस्स ज़ाती, चार वरन अठारां बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी देणा समझाईआ। सति कहे प्रभ मैं मंगां दर हज़ूर, घर ठांडे सीस झुकाईआ। जोती जलवा दे नूर, अन्ध अज्ञान रहे ना राईआ। जन्म मरन दा बख्श कसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। मंज़ल रहे ना तेरी दूर, घर स्वामी देणा सुहाईआ। तूं समरथ सर्ब कला भरपूर, बेअन्त बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तपे जगत तन्दूर, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मन वासना हँकार होया ग़रूर, गुरबत अंदरों ना कोए कढाहीआ। कर किरपा सब दे अन्तर बख्श नूर, निरंतर ब्रह्म दे जणाईआ। आसा मनसा सच दवारे पूर, निरासा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारा इक्क वखाईआ। सति दुआर बख्श श्री भगवन्त, रहमत तेरी नज़री आईआ। तूं धुर दा स्वामी कन्त, करनहार वड्डी वड्याईआ। तूं शब्द अगम्मी दे मंत, मंतव अगला दे जणाईआ। गढ़ तुटे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्को नज़री आईआ। बिन तेरे बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे पढ़ाईआ। सति कहे तेरे दवारे इक्को मिन्नत, निउँ निउँ सीस

झुकाईआ। सच प्रेम दी दे हिम्मत, हर हिरदे डेरा लाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरी नज़री आए इक्को सिम्मत, दूजा दुआर ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण होवे मिलत, मेल मिलावा धुर दरगाहीआ। सच प्रीती दे खिल्लत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कूड़ खुआरी मेट ज़िल्लत, नाम निधान इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार उतार दुष्ट दुराचार अपराधी निन्दक, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत आपणे रंग रंगाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बीबी वीरो दे गृह पिण्ड बघिआड़ी ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ बख्श चरण सहारा, सहायक इक्को नज़री आईआ। धुर धाम दिसे तेरा सच दवारा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। दीवा बाती कमलापाती जगे अगम्म अपारा, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा आवे सच हुलारा, मुहब्बत विच महबूब लैणा मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करना पार किनारा, जूठ झूठ नईआ नौका शौह दरया रुढ़ाईआ। तेरे नाम दा नौ खण्ड पृथमी होवे इक्क जैकारा, लख चुरासी तेरा ढोला गाईआ। आत्म परमात्म करे सच प्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हँकारा, हउमे हंगता देणी मिटाईआ। सति सच कर उज्यारा, उजल आपणा आप समझाईआ। साचे नाम दा लग्गा दिसे इक्क अखाड़ा, गोपी काहन इक्को रूप बदलाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर तेरा तक्कदे रहे सहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। किरपा कर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर निराकारा, तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी परवरदिगारा, बेअन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग दे दृष्टी सृष्टी विच संसारा, परदा ओहला दे उठाईआ। तेरा सिफ्ती भरया रहे भण्डारा, श्री भगवान तेरा नाम जिस रसना जेहवा गा गा खुशी मनाईआ। तख्त निवासी शाहो भूप शाह महबूब वड सिक्दारा, दो जहानां वाली तेरा जलवा आलीशान दिसे धुर दरगाहीआ। करनी दे करते बण मीत मुरारा, कुदरत दे कादर दे वड्याईआ। लोकमात मार झात मेट अन्ध अंध्यारा, कलयुग कुकर्म देणा गवाईआ। दहि दिशा दिसे धुँदूकारा, चार कुण्ट साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जुग चौकड़ी बीते वारो वारा, आपणा पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी खेल दस्स अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह परदा ओहला दे उठाईआ। जागरत जोत बिन वरन गोत नाम निधान दे नज़ारा, अज़म अंदरों दे बदलाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दा देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सति कहे प्रभ मेरी सुण अगम्मी कूक, कुरिआं तों परे रिहा जणाईआ। जगत माया दीन दुनी रही फूक, फ़ाके विच दिसे लोकाईआ। झगड़ा दिसे चारों कूट, सांतक सति ना कोए कराईआ। विकार वध्या जूठ झूठ, ममता मोह करे लड़ाईआ। तेरा दिसे ना कोई धुर दा पूत, सपूत नज़र कोए ना आईआ। ख़ाली दिसदे भाण्डे पंज भूत, नाम निधान श्री भगवान तेरा विच ना कोए टिकाईआ। शब्द अगम्मी धुर दा भेज दूत, दूती दुष्टां दए मिटाईआ। पिछली चार जुग दी करनी करे मनसूख, अगला हुक्म आप वरताईआ। जन भगतां दरस प्यास दी दूर करे भूख, तृष्ना दए मिटाईआ। घर साचा दए सूख, सुखसागर विच समाईआ। जो चरण प्रीती तेरी धुर दी नीती अंदर गए झूज, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। तिन्नां अन्तर रहे कोई ना दूज, नाम मंत्र इक्को देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सति कहे प्रभ आदि जुगादी देवण योग, युगती आपणी दे समझाईआ। तेरे नाम प्यार दा मिले सच्चा रस भोग, दूजी वस्त कोए ना भाईआ। शब्द अगम्मी दे चोग, चुगली निंदया तों जगत लैणा बचाईआ। हउमे हंगता रहे ना रोग, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। तेरा दरस मिले अमोघ, अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाईआ। पैंडा रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक चरणां हेठ दबाईआ। आत्म परमात्म दा इक्को होवे सलोक, सोहला साचा देणा समझाईआ। सच दवारयों सके कोई ना रोक, रुकावट करे ना कोए लोकाईआ। जिस दवारे विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे कोटी कोट, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रख के बैठे ओट, सिर सके ना कोए उठाईआ। तिस दवारे दी अबिनाशी करते दे मौज, मजलस आपणे नाल जणाईआ। जित्थे बुध दी रहे कोई ना सोच, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। वेदां दी शास्त्रां दी करनी पए ना खोज, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण नूर हाज़र हज़ूर जोती जाते पुरख बिधाते तेरा दर्शन होवे रोज़, रोज़े निमाज़ तों लैणा बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दा साचा बख्श जोग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सति कहे प्रभ साचा सब नूं दरस जीवण, जन्म जन्म दा लेखा दे मुकाईआ। तेरी चरण प्रीती अंदर कलयुग जीव थीवण, नमों नमों कहि के सीस झुकाईआ। तेरा नाम सुनेहड़ा अमृत पीवण, अग्नी अग्ग देणी बुझाईआ। बिन तेरे कदमां किसे ना नीवण, पुरख अकाल तेरा इक्को इष्ट मनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सब दी लेखे ला सीवण, रस अगम्मा देणा चुआईआ। तेरा नाम अगम्मा रस पीवण, तृष्ना देणी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा सच दुआर सतिजुग साचा देणा वखाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बीबी सेवी दे गृह पिण्ड ठट्टा ज़िला अमृतसर ★

सति कहे श्री भगवान धुर दे सूरे, सर्ब शक्तीमान तेरी वड्याईआ। चरण प्रीती बख्श आपणी धूढ़े, धर्म दवारा इक्को दे वखाईआ। कलयुग नाता तोड़ क्रिया कूड़े, जूठ झूठ डेरा ढाईआ। सुघड़ सुजान बणा मूर्ख मूढ़े, मनमुखां गुरमति दे समझाईआ। इक्को दरस करना तेरा हज़ूरे, हाज़र हो के लैणा जगाईआ। पन्ध मुका नेरन दूरे, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आईआ। रंग चढ़ा आपणे गूढ़े, तन वजूद खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर देणी सरनाईआ। सति कहे प्रभ दीन दयाल सदा बखशिंदे, रहमत आपणी दे कमाईआ। कलयुग जीव अपराधी गंदे, दुराचारां कर सफ़ाईआ। नेत्रहीण संसारी अन्धे, निज नैण तेरा दरस कोए ना पाईआ। माया ममता मोह विकार तोड़ फंदे, फाँसी जम दी दे कटाईआ। विछोड़े विच होए मंदे, चंगयाई हथ्थ किसे ना आईआ। बिन ओढण सीस फिरन नंगे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जगत इश्नान करन तीर्थ तट गंगे, अमृत सरोवर ना कोए नुहाईआ। साची वस्त मिले ना नाम मंगे, किरपा कर के झोली देणी भराईआ। आत्म परमात्म बण संगे, अबिनाशी करते सगला संग बणाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हँकारी हंगे, हंगता अंदरों देणी कढाहीआ। परमानंद सुख सागर दे अनन्दे, निजानंद कर रसाईआ। मन वासना झगड़े रहिण ना दंगे, दग़े फरेब तों लैणा बचाईआ। बिन तेरी किरपा अबिनाशी करते टुट्टी कोई ना गंढे, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। दो जहानां पार कोई ना लँघे, मंज़ल हक ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दवारा देणा वखाईआ। सति कहे प्रभ सुण दुनी फ़रयाद, दीन देण दुहाईआ। तेरा खेल सदा जुगादि, आदि अन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। फिरी दरोही विच ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड वरभण्ड रिहा कुरलाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना साध, स्वाद नाम रस ना कोए चखाईआ। काया खेड़ा सब दा हुंदा दिसे बरबाद, नाम फुलवाड़ी सच ना कोए महकाईआ। सुरती सुरत ना खुल्ही जाग, सवाणी अक्ख ना कोए बदलाईआ। कलयुग जीव हँस होए काग, माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। तेरा अनुभव खेल समझे ना कोए दिमाग, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। बिन तेरी किरपा सब दा बुझदा जाए चिराग़, प्रकाश सच ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कूड़ी क्रिया बदल दे रिवाज, सतिजुग साचा मात टिकाईआ। दो जहानां जगदीस इक्को तेरे सीस सोहे ताज, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी इक्को नज़री आईआ। हरि सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख तेरी चरणी जावण लाग, मन ममता मोह मिटाईआ। साचे प्रेम दा बख्श वैराग, वैरी अंदरों दे कढाहीआ। गुरमुखां होवण वड वडभाग, भाग आपणा झोली दे भराईआ। तेरे नाम दा सुणन अगम्मी नाद, धुन आत्मक खुशी मनाईआ। लेखा रहे

ना सवाल जवाब, झगड़ा मुके जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां खेड़ा कर आबाद, बरबाद दिसे जगत लोकाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ इन्द्र कौर दे गृह पिण्ड बोड़ू ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ दे वस्त अपार, अपरम्पर स्वामी आपणी दया कमाईआ। सतिजुग वरते विच संसार, संसारी भण्डारी खुशीआं नाल सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना कोए विभचार, दुराचार देणा खपाईआ। हर हिरदे अंदर तेरे नाम दा होवे जैकार, धुर दा ढोला शब्द गाईआ। चार वरन अठारां बरन बख्श इक्क अधार, टेक इक्क जणाईआ। मन वासना जगत करे ना कोए खुआर, दुष्वार मंज़ल दे कटाईआ। गृह गृह नज़री आए निरँकार, निरगुण कर रुशनाईआ। ख़ाली भर भण्डार, अतोट अतुट वरताईआ। गुरमुख विछोड़े अंदर रोवे ना कोए ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति कहे प्रभ सति धर्म दी दे दे दात, दाता इक्को नज़री आईआ। जन भगतां पूरी कर ख्वाहिश, खालस आपणा रंग चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे तलाश, उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। मंज़ल मण्डल मण्डप पाउँदे रहे रास, गोपी काहन वेस वटाईआ। सच जोत दा दे प्रकाश, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। आसा मनसा पूरी कर आस, तृष्ना जगत वाली बुझाईआ। सच दवारे कर निवास, अस्थान भूमिका इक्क वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरा तमाश, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्श माण वड्याईआ। सति कहे प्रभ किरपा कर दीन दयाल, दया निध तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगत सुहेले वेख आपणे लाल, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। फल लगा सुक्के काष्ट डाल, रस आपणा नाम चुआईआ। तेरे प्रेम दी जो घालण रहे घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। जीवण दा मार्ग दस्स सुखाल, साची मंज़ल देणा चढ़ाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। त्रैगुण रहे ना कोए जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। दुआर वखा इक्को धर्मसाल, परदा ओहला आप उठाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान दर इक्को सोभा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा देंदे गए अहिवाल, रागां नादां सोहलया ढोलयां विच तेरा नाम समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति सतिवादी आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वस्त अमोलक धुर दी देणी वरताईआ।

सति कहे प्रभ वस्त अमोलक दे भण्डार, वरभण्ड मिले वड्याईआ। तूं आदि जुगादि परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अख्वाईआ। तेरे दर ते मंगदे गए बण भिखार, गुरू अवतार झोलीआं डाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, चरण धूढ़ी मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। तूं अन्तरजामी पुरख बिधाता वेखणहार, वेखें विगसें थांओं थाँईंआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां लोकमात ला निशान, निशाने पिछले दे बदलाईआ। तूं देवणहारा दाता इक्क श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। कागत कलम शाही तेरा दे ना सके ब्यान, बेअन्त कहि के शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देणा वर, दर ख़ाली देणा भराईआ। सति कहे प्रभ बख्श दे आपणी दात, दानी हो के झोली पाईआ। दुक्खां वाली मेट अन्धेरी रात, सुखां वाला साचा चन्द चमकाईआ। जन भगतां सदा रहे प्रभात, इक्को रंग देणा कराईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, नाता इक्को देणा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, साचा ढोला देणा दृढ़ाईआ। मेहरवान पुरख समराथ, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा अगम्मी वर, वारस हो के वेख वखाईआ। सति कहे प्रभ तूं करनी दा करता, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। दुःख रोग जन्म करमां हरता, हरस हवस दे मिटाईआ। ग़रीब निमाणयां वण्ड दर्दा, दुखियां दुःख दे चुकाईआ। जुग जन्म दीआं फोल फरदां, कर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। पुठ्ठीआं सिध्धीआं कर नरदां, नर नरायण बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित दर ठांडे करदे अरज़ां, आजिज़ हो के सीस झुकाईआ। मकरूज हो के चुका उन्हां दा कर्ज़ा, लहिणा देणा पिछला झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच्ची सरनाईआ। सति कहे प्रभ तुध बिन करे ना कोई किरपा, किरपन देवे ना कोए वड्याईआ। लोकमात कट बिपता, (बेपरीती) लेखा देणा चुकाईआ। भाग बणा गुरसिख साचे सिख दा, सिख्या इक्को देणी दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा कोई ना लिखदा, उह लेख देणा प्रगटाईआ। प्रेम प्यार बख्श सदा नित दा, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना मनूए चित दा, ठगोरी ठग्ग ना कोए कराईआ। नाता जोड़ आपणे हित दा, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जन भगत तेरी किरपा नाल जगत जहान जितदा, सति सन्तोख धीरज धर्म देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा देवे जिस जिस दा, गृह मन्दिर अंदर काया झोली दए भराईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ जन भगतां दे ज्ञान, अज्ञान अन्तर रहिण ना पाईआ। दिवस रैण इक्को बख्श ध्यान, प्रेम प्रीती चरण कँवल सरनाईआ। निरगुण तेरा ढोला गाण, आत्म परमात्म राग अलाईआ। साची धूढ़ करन इश्नान, दुरमति मैल धवाईआ। पुरख अबिनाशी तक्कण इक्को काहन, दो जहानां वाली नज़री आईआ। सचखण्ड दवारा बख्श हक अस्थान, भूमिका इक्को इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां दरस भेत, भावना सब दी पूर कराईआ। कूड़ी क्रिया कर खेत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। चरण प्रीती बख्श हेत, धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। दर्शन दे नेतन नेत, निज लोचन कर रुशनाईआ। सच दवारा लैण पेख, पेखत पेखत वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दवारे वसण अगम्मे देस, निरगुण निरगुण विच समाईआ। साचा मंत्र निरंतर दरस संदेश, अन्तर कर पढ़ाईआ। दृष्टी नाल बदल दे लेख, सृष्टी विच्चों बाहर कढाहीआ। तूं आदि जुगादी एकँकारा एक, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। जन भगतां रखी तेरी टेक, सहारा अवर ना कोए बणाईआ। सूरबीर सुल्तान हो के वेख, परदा ओहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। सति कहे बख्श दे साचा नूर, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन भगत सुहेले तेरे मज़दूर, नाम चाकरी सेव कमाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कर दूर, दर्दी हो के दर्द वण्डाईआ। दरस दे हाज़र हज़ूर, हर घट बैठा नज़री आईआ। तेरा मेला होवे ज़रूर, ज़ाहर हो के परदा देणा उठाईआ। तन रहे ना कोए ग़रूर, गुरबत देणी गवाईआ। हंगता गढ़ कर के चूरो चूर, चरण कँवल बख्श सरनाईआ। आसा मनसा सब दी पूर, तृष्ना विच ना कोए भटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हाज़र हाज़ूर, हरि मन्दिर जन भगतां देणा सुहाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ अमृत बरख मेघ, मेघला धार वहाईआ। जन भगतां बदल रेख, ऋषी मुनी वेखण चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारा वखा आपणा देस, सांझ जगत नालों तुड़ाईआ। जिस गृह इक्को रंग रहे सदा एक, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। ठाकर हो के दरस भेत, परदा ओहला दे चुकाईआ। नज़री आए नेतन नेत, दुर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप

१४
२०

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह इक्क जणाईआ। साचा घर दस्स प्रभ आप, सचखण्ड दवारा दे जणाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा इक्को होवे धुर दा जाप, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आत्म परमात्म तेरा देवे साथ, सगला संग बणाईआ। धुर दा लेखा लेखे कर रास, रस्ता आपणा इक्क जणाईआ। जगत वासना रहे ना कोए उदास, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाईआ। पवण स्वासी पवित्र करे सास, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक्क वखाईआ। सति कहे प्रभ तेरा मार्ग दिसे इक, एकँकार नज़री आईआ। मनुआ दहि दिश जाणो जाए टिक, उठ उठ भज्जे ना वाहो दाहीआ। बिन कलम शाही लेखा दे लिख, भविश आपणे नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े मेल सिख, सिख्या साची इक्क सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लहिणा देणा दे नजिठ्ठ, निरगुण हो के वेख वखाईआ। करवट लै बदल दे पिठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। भगतां मीत मुरारा बण मित, सज्जण इक्को नज़री आईआ। तेरा दर्शन करन नित, निज नेत्र कर रुशनाईआ। काया मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ वड़ विच, विचला परदा दे चुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी धुर दे मालक सांझे पित, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सच कहे प्रभ जन भगतां दे सति, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। घर घर उपजे ब्रह्म मत, मन मति ना कोए लड़ाईआ। तेरा नाउं निरँकारा लैण जप, दूजा रस ना कोए वखाईआ। तेरे मिलण दी खोल्ल के अक्ख, आख़र तेरा दर्शन पाईआ। दर ठांडे होवे जस, सिफ्त सालाही ढोले गाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होवे वस, वसल यार इक्को नूर ख़ुदाईआ। भगत भगवान दा सांझा होवे हक, हकीकत विच्चों लाशरीक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, वस्त अमोलक दे दे वथ, नाम भण्डारा आप वरताईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ भाग लगा काया खेड़ा, गुरमुख काया मन्दिर अंदर वज्जे वधाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया रहे ना झेड़ा, सति सति राग अलाईआ। आवण जावण कट लख चुरासी गेड़ा, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। नाता जोड़ तूं मेरा मैं तेरा, आत्म परमात्म संग बणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दो जहान खुल्ला रख वेहड़ा, साची मंज़ल आपणा घर वखाईआ। माया ममता मोह रहे ना कोए अन्धेरा, सच ज्ञान चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एको देणा धुर दा वर, दर ठांडे झोली डाहीआ। सति कहे प्रभ भगतां कर बिबेक बुद्धी, मन मति रहे ना राईआ। अन्तर अन्तश्करन होवे शुध्धी, कूड़ विकार देणा चुकाईआ। शब्दी रमज़ लगा गुज्झी, अनुभव आपणा भेव खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया औध जाए मुकी, मेहरवान हो सहाईआ। गुरमुख रहे कोए ना दुखी, विछोड़ा जन्म कर्म दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उजल कर के मात मुखी, मुफ्त आपणे नाम रंगण देणा रंगाईआ। सति कहे प्रभू साची दे दे सिख्या, हुक्म इक्को इक्क जणाईआ। तेरे नाम दी पवे भिच्छया, ख़ाली झोली दे भराईआ। भगतां पूरी कर इच्छया, निज तेरा दर्शन पाईआ। माण दवा वडुयां निक्कयां, बिरध बालां रंग चढ़ाईआ। जो तेरे दर दवारे विकया, करते कीमत लैणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई दस्स मिथ्या, सचखण्ड दवारा इक्को इक्क देणा समझाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ सुरजन सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ साचे प्रेम दी दे दाद, सृष्टी दृष्टी अंदर आप टिकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को तेरा नाम लए अराध, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साची मंज़ल वेख आपणे गुरमुख सच्चे साध, सन्त सुहेले मेल मिलाईआ। धुन आत्मक सुणा अगम्मा राग, शब्दी शब्दी ताल वजाईआ। बिन रसना जेहवा बख्श आप स्वाद, अमृत धुर दा जाम आप प्याईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना वाद विवाद, विख अंदरों देणी कढाहीआ। सोई सुरती दीन दुनी जाए जाग, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा हर हिरदे आवे आवाज़, चार वरन अठारां बरन इक्को ढोला गाईआ। मन वासना रहे कोई ना काग, हँस गुरमुख देणे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दवारा देणा प्रगटाईआ। सति कहे प्रभ साचे नाम दा वज्जे डंका, ब्रह्मण्ड खण्ड सोया रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल इक्क सुहाए तेरा बंका, परवरदिगार सांझा यार नज़री सब नूं आईआ। इक्को माण ताण दर दुआर दे राउ रंका, शाह हकीर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। भेव अभेदा खोल्ह आपणे सन्तां, भगवन हो के भगतां जोड़ जुड़ाईआ। बोध अगाध बण पंडता, नाम निरअक्खर दे जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म परदा दे उठाईआ। सति धर्म कहे तेरे दवारे करदा मिन्नता, पुरख अबिनाशी घट निवासी दर ठांडे सीस निवाईआ। सांतक सति करदे दृष्टी वालीआं सिसकां, सृष्टी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा देणा जणाईआ। सति कहे साची दस्स अगम्म हदूद, मंज़ल

१५ २०

हक बहक समझाईआ। जित्थे जावे ना कोई तन वजूद, तन माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। इक्को मालक मिले नर हरि महबूब, नूर नुराना नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना एका दूज, एकँकारा इक्को हुक्म देणा समझाईआ। तेरा भेव बिन तेरी किरपा कोई ना सके बूझ, बुद्धिवान चले ना कोई चतुराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर नेस्तोनाबूद, सच सुच्च घर घर दे टिकाईआ। जिधर तक्कां नज़री आवें मौजूद, लख चुरासी काया मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। जन भगत सुहेले कर महिफूज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल अटल दस्स अर्श अरूज, तेरी सरन इक्क तकाईआ। सति धर्म कहे साची दे दे वस्त आप, धुर मालक आप वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना पाप, पतित पुनीत देणा बणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क खुल्ला ताक, धर्म दवारा दे प्रगटाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना कोई ज़ात पात, दीन मज़ूब ना कोए लड़ाईआ। मानव मानव होवे इत्तफाक, आत्म आत्म रंग रंगाईआ। पंजां तत्तां साधना साध, सिदक सबूरी जोड़ जुड़ाईआ। सब दे अन्तर आपणी दस्स याद, भरम भुलेखा बाहर कढाहीआ। साढे तिन्न हत्थ कलयुग जीवां खेड़ा उजड़या कर आबाद, नाम निधान श्री भगवान बूटा इक्क लगाईआ। तूंही तूंही सब दे अंदरों निकले इक्क आवाज़, चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी शब्दी धार जीव जंत साध सन्त नज़री आईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म तेरा वेला रिहा आ, समां समें विच्चों बदलाईआ। सतिगुर शब्द बणे मलाह, खेवट खेटा धुर दरगाहीआ। साचा मार्ग दए वखा, रस्ता इक्को नज़री आईआ। आपणा नूर कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। साची सिख्या दए समझा, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। खुदी नूं मेटे आप खुदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। किसे नूं रहिण ना देवे जुदा, जो हरि हरि रहे ध्याईआ। साची बणत लए बणा, घड़न भन्नणहार बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दए रुढ़ा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सतिजुग साची धारा दए चला, चलत वेखे जगत लोकाईआ। नाम निधाना दए सुणा, सोहला धुर दा राग अलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने लैणा गा, गावत गावत गावत ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाल होवे मेहरवान, मेहरबान मेहर नज़र उठाईआ। साचा दस्स के इक्क ईमान, धर्म इक्को इक्क प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण दे कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जोती जाता बण अमाम, अमल वेखे कूड़ लोकाईआ। कलयुग बदल देवे निज़ाम, नौबत सतिजुग सच

वजाईआ। दूजा रहे ना कोए हुकाम, हुक्म आपणा इक्क समझाईआ। लेखा जाणे जगत जीव अवाम, फोलणहारा थाउँ थाँईंआ। जन भगतां देवे सच अस्थान, दवारा धुर दा आप दृढ़ाईआ। जिस गृह वसे श्री भगवान, भगत सुहेले लए टिकाईआ। सदा झुल्ले इक्क निशान, निशाना अवर ना कोए बणाईआ। गुरमुख होण ना देवे किसे ग़ुलाम, जगत शरअ ज़ंजीर तुड़ाईआ। साचा बख्शे इक्क पैग़ाम, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ। धुर संदेसा दे पैग़ाम, जगत सुत्यां लए उठाईआ। चरण प्रीती दे आराम, सुख सागर विच समाईआ। आवण जावण लख चुरासी गेड़ा कर आसान, हुक्में अंदर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां भगवन हो के लए मिलाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म कहे मेरे शहिनशाह साचे भूप, भूपत भूप तेरी सरनाईआ। कर प्रकाश सति सरूप, जोती जाते निरगुण जोत कर रुशनाईआ। कलयुग अन्ध अन्धेरा मिटे चारे कूट, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना जूठ झूठ, साचे नाम

दा ढोला सृष्टी गाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी भेज दूत, दुतीआ भाउ दे मिटाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों करे कूच, तन माटी कूचा गली कर सफ़ाईआ। सच सुहञ्जणी होवे रुत्त, रुतड़ी आपणा नाम महकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, बेपरवाह वेख वखाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण बुत्त, काया काअबे महबूब नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां उजल कर मुख, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप वेख वखाईआ। सन्त सुहेला विछोड़े विच झल्ले कोई ना दुःख, दर्दीआं दर्द लैणा वण्डाईआ। निरगुण हो के आपणी गोदी चुक्क, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के पुच्छ, पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम निधान श्री भगवान दस्स आपणी तुक, तुख्म तासीर दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेख झुक, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे गहर गम्भीर, गवर तेरी सरनाईआ। लख चुरासी बदल दे ज़मीर, ज़ामन बण के बेपरवाहीआ। जगत शरअ तोड़ ज़ंजीर, मार्ग इक्को इक्क समझाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़या कबीर, भगत सुहेले दे पुचाईआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीर, अमरापद देणा जणाईआ। झगड़ा रहे ना कोए तकदीर, तदबीर आपणी देणी समझाईआ। तेरे हथ्थ नाम शमशीर, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर,

१८
२०

सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाल दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा देणा खुल्ह़ाईआ। सति धर्म कहे मेरे धुर दे परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक्क सरनाईआ। बिन नेत्र अक्खां लोचन बख्श आपणा दीदार, जल्वागर कर नूर रुशनाईआ। मैं आदि जुगादी तेरा तल्बगार, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। दस्तगीर बण मददगार, साहिब स्वामी अन्तरजामी हो के वेख वखाईआ। आवण जावण लेखा रहे ना कोए विच संसार, पूरब लहिणा देणा मुकाईआ। भगत सुहेले खिदमतगार, ख़ादम हो के फेरा पाईआ। दीन दुनी दा बदल निज़ाम, नाज़म आज़म देणे मिटाईआ। इक्को ढोला दस्स जैकार, सोहला धुर दा राग सुणाईआ। नव नौ चार तेरा होए प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म परदा देणा उठाईआ। त्रै पंज रहे ना कोए आधार, नौ दर पैंडा पन्ध मुकाईआ। दर ठांडे खोल्ह़ किवाड़, जन भगतां परदा बजर कपाट तुड़ाईआ। तेरा शब्द उपजे नाद सच्ची धुन्कार, आत्म राग इक्क जणाईआ। अमृत बख्श ठंडा ठार, निजर झिरना आप झिराईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। महल अटल खेल होवे अपार, अपरम्पर स्वामी देणा समझाईआ। आत्म परमात्म तेरे अधार, ओट इक्को इक्क रखाईआ। कलयुग अन्तिम कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। वाहिद कलमा तेरा यार, हक महबूब तेरी पढ़ाईआ। अलिफ़ ये दी रहे ना कोए गुफ़तार, गुफ़त शनीद देणा समझाईआ। दर दरवाज़ा खोल्ह़ दवार, दरगाह साची पन्ध मुकाईआ। जन भगतां दे दीदार, मुरीद मुर्शद मिल के वज्जे वधाईआ। सदी चौधवीं खेल तेरा अपार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारा देणा प्रगटाईआ। सति कहे मैं वेखां धर्म दवार, दर ठांडा नज़री आईआ। निरगुण नूर होवे उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तख्त निवासी एकँकार, परवरदिगार सोभा पाईआ। सयदे करन पैगम्बर गुरू अवतार, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। देवणहार इक्क दातार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म चल्ले सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सके ना कोए बदलाईआ। सो ख़ालक ख़लक खेले खेल अपर अपार, भेव अभेदा आप जणाईआ। जन भगतां दए दीदार, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पावे सार, महासार्थी इक्को नजरी आईआ।

१६ २०

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिंघ दे गृह पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर ★

सदा सहाई होवे मेहरवान, सहायक इक्को इक्क अखवाइंदा। धर्म प्रीती दे के दान, चरण कँवल ओट समझाइंदा। धुर दा नाम दस्स निशान, मंज़ल हक हकीक पुचाइंदा। बोध अगाध महिमा अकथ दस्स महान, सिफ्त सालाही राग समझाइंदा। जोती जाता वड अमाम, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। पुरख अकाला दीन दयाला नौजवान, मर्द मर्दाना हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल विच जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो प्रधान, परम पुरख आत्म परमात्म हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी करे करतार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां पावे सार, दीन दुनी वेख वखाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म इक्क सुणाईआ। कूड़ी क्रिया कर खुआर, सति धर्म दए प्रगटाईआ। मानव मानस दए आधार, मानुख आपणे रंग रंगाईआ। सृष्ट सबाई करके ख़बरदार, सुरती शब्द नाम लगाईआ। मंज़ल दस्स अगम्म अपार, साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। दुखियां दर्द दए निवार, हरख सोग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआर दए जणाईआ। दर दुआर वसे आप, एकँकारा दया कमाईआ। आत्म परमात्म धुर दा जाप, चार जुग गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। रूह बुत्त होवे पाक, पतित पुनीत मिले वड्याईआ। बिनां तन्द सितार दे उपजे राग, धुन नाद अनाद शनवाईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंद्रा दए चुकाईआ। गुरमुख रहे कोए ना काग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। अन्तर अन्तर उपजे वैराग, निरंतर मंत्र इक्क दृढ़ाईआ। घर स्वामी मिले कन्त सुहाग, पुरख अबिनाशी घट निवासी करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए मुकाईआ। धुर दा लेखा एकँकार, इक्क इकल्ला आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, धरनी धरत धवल वेख वखाइंदा। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लए उबार, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। नाम भबूती दे के धुर दी छार, शरअ विच्चों बाहर कढाइंदा। आत्म परमात्म कर प्यार, निरगुण दीआ बाती जोत जगाइंदा। अमृत बख्श के ठंडा ठार, अग्नी तत कूड़ बुझाइंदा। शब्द नाद दे धुन्कार, सुन्न समाधी परदा लाहन्दा। काया माटी रहिण ना देवे अंध्यार, निरगुण नूरी चन्द चमकाइंदा। भगत सुहेले साची मंज़ल देवे चाढ़, नौ दवारे सुखमन टेडी बंक पार कराइंदा। मन वासना करे ना कोए खुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी हरिजन साचे आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन आपणे रंगे रंग अवल्ला, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सचखण्ड दुआर वखाए आपणा महल्ला, घर इक्को इक्क सुहाईआ। झगड़ा चुके जला थला, महीअल डेरा

ना कोए लगाईआ। शब्दी धार फड़ के पल्ला, गुरमुख आपणी गंढु पवाईआ। करे खेल आदि पुरख अबिनाशी करता इक्क इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दरगाह साची साचा धाम वखाए निहचल धाम अटला, छप्पर छन्न चार दिवार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त नित नवित जन भगतां फड़ाए आपणा शब्दी डोरी पल्ला, आर पार लेखा दए मुकाईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड मैणीआं ज़िला अमृतसर ★

सति कहे मैं तेरा आसावंद, आस आदि आदि रखाईआ। तेरे हुक्म दा हो पाबन्द, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। धुर दे मालक मिल ख़ावंद, ख़ाहिश मेरी पूर कराईआ। ख़ुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को देणी जणाईआ। तेरे नूर दा चमके चन्द, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। आत्मा परमात्मा गावे छन्द, साचा ढोला बेपरवाहीआ। घर ठाकर आवे अनन्द, सच दवारे वज्जे वधाईआ। मन विकारा करना खण्ड खण्ड, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। सुरत सवाणी रहे ना रंड, कन्त सुहाग मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सति कहे प्रभ तेरे नाम दी चढ़े रंगत, रंगण इक्को दे वखाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्ट सबाई तेरी होवे संगत, सगला संग इक्क जणाईआ। दूजे दर कोई ना जावे मंगत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश भिच्छया देणी पाईआ। सब दा लहिणा देणा चुकाउणा कलयुग अन्त, अन्तश्करन वेख वखाईआ। सतिजुग साची रुत्त मौले बसन्त, बहार गुलशन विच महकाईआ। हरख़ सोग ग़म ना रहे चिन्त, सुख सहिज देणा उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति कहे प्रभ हथ्थ रख मेरे सिर, पुश्त पनाह हो सहाईआ। तेरा धाम वेखां थिर, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जिस गृह वसें निरवैर निर, निरँकार डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस धारों किरनां बण के जांदे किर, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। ओन्हां कारण कलयुग अन्तिम आयों फिर, फ़ारग सारे दिते कराईआ। जन भगतां वास्ते लाईं ना चिर, चिरी विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गुर अवतार पैगम्बर तेरा शब्दी दस्सदे गए चिन्न्ह, रूप रंग समझ कोए ना पाईआ। सम्मत सम्मती लेखा रहे गिण, थित वार आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। सति कहे प्रभ तेरी धार अवल्ली, दो जहानां समझ किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जोत अकालण इक्क इकल्ली, दो जहानां खेल खिलाईआ। गुर

अवतार पैगम्बर योद्धे सूरबीर भेज के बली, बल आपणा आप प्रगटाईआ। भगत सुहेला बणदा रिहों वली छली, अछल अछल्ल आपणी कार कमाईआ। होका देंदा रिहों काया नगर धुर दे खेड़े अगम्मी गली, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिन भगतां आत्म परमात्म तेरे नाल किसे ना रली, मेल मिला के खुशी ना कोए मनाईआ। तेरा खेल वेख्या जलीं थलीं, टिल्ले पर्बत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया जगत विकार चरण कँवल हेठां मलीं, मलीन मुलम्मा कंचन देणा बणाईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बीबी जीतो दे गृह पिण्ड बाबोवाल जिला अमृतसर ★

जीव जंत समझे कोई ना बाकी, लेखा अगला नज़र किसे ना आईआ। बिन सतिगुर पूरे धुर दा शब्द दिसे कोए ना साकी, साख्यात परदा ना कोए उठाईआ। बन्द किवाड़ा खुल्हे किसे ना ताकी, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। मनुआ मिटे ना हँकारी आकी, कूड़ विकार ना कोए कढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल दी आदि जुगादि बाणी साची, धुर दा शब्द वज्जे सच नाम वधाईआ। नित नवित करे खेल श्री भगवान पंज तत बुत्त विच ख़ाकी, ख़ालस सालस आपणा रंग रंगाईआ। नाम अमोलक काया गोलक विकाए धुर दी हाटी, जगत वणजारा समझ कोए ना पाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह करे खेल कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणया रहे धुर दा साथी, सगला संगी बहुरंगी आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट भीतर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। साध सन्त प्रभ चाढ़े रंग, रंगण इक्को इक्क जणाइंदा। निज आत्म दे के परमानंद, परम पुरख आपणा भेव खुल्हाइंदा। शब्द अगम्मी वजा मृदंग, तुरीआ तों परे हरे आपणा रूप दरसाइंदा। शाह पातशाह शहिनशाह सूरा सरबंग, भेव चुका ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल जन भगतां चरणां हेठ रखाइंदा। धाम न्यारा एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा वसे सचखण्ड, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार दरगाह साची इक्को नूर नजरी आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद धुर दा राग अल्हाइंदा। धुर दा राग शब्द अगम्मी धुन, जगत सरवण सुणन कोए ना पाईआ। जिस नूं खोजण कोटन कोटि रिख मुन, मुनीश्र बैठे ध्यान लगाईआ। धुर दी धार एकँकार जन भगतां दस्से आपणा गुण, अवगुण अंदरों बाहर कढाहीआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले सज्जण चुण, चार

वरन अठारां बरन विच्चों आपणे रंग रंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भेव पावे कवण, परदा ओहला काया चोला बिन शब्द विचोला सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति धर्म दा सति दवारा, सति सतिवादी आपणा राह जणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ परदा खोल्, बिन अक्खां नज़री आईआ। तेरे नाम दा वज्जे अगम्मी ढोल, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। सचखण्ड दवारे तोल इक्को तोल, तोलणहारा इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी विच्चों साध सन्त गुरमुख वरोल, मेहरवान महबूब मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म वस सदा कोल, जगत विछोड़ा कूड़ कुड़यारा देणा मिटाईआ। गोबिन्द धार कर प्यार अमृत बख़्श अगम्मी पाहुल, रसना जेहवा रस समझ कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नाल जो दीन दुनी दे मालक कीता कौल, इकरार आपणा पूरा दे कराईआ। सृष्टी दृष्टी भुल्ली उपर धौल, इष्टी एका नूर नज़रे ना कोए खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे साचा वर, धरनी धरत धवल तेरा बैठी राह तकाईआ। सति कहे प्रभ मेरे धुर दे प्रीतम चोजी, मेहरवान तेरी इक्क सरनाईआ। शब्दी धार दो जहानां बण खोजी, लख चुरासी वेख वखाईआ। तेरा भगत नाम विहूणा रहे कोए ना रोगी, दुखियां दुःख देणा मिटाईआ। सच प्रेम दी बख़्शणी सोझी, चतुर सुजान सुघड़ सुचज्जे देणे उठाईआ। निरगुण
२२ निरवैर निराकार चुक्कणे आपणी गोदी, मेहर नज़र सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा चुकाउणा चौदां तबक चौदां लोकी, २२
२० सच सलोकी इक्क सुणाईआ। तेरी मंज़ल गुरमुखां चढ़नी होए ना औखी, सहिज सुभाउ नौ दवारे पार देणे कराईआ। निरअक्खर २०
नाम धार बख़्श पढ़नी पए कोई ना पोथी, अक्खरां तों परे निरगुण हरे तेरा जलवा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी सतिगुर साचे जीउ पिण्ड काचे तन वजूद देणी वड्याईआ। सति कहे मेरे हर घट मालक, बेपरवाह बेनज़ीर नज़री आईआ। करनी दे करते ख़लक दे ख़ालक, मख़लूक तेरी ओट तकाईआ। निरगुण सरगुण बण सालस, साहिब स्वामी वेस वटाईआ। चार वरन अठारां बरन बणा ख़ालस, ख़ालस रूप तेरा नूर करे रुशनाईआ। जन भगत अंदर रहे ना कोई निंद्रा आलस, ज्ञान नेत्र देणा खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया मेट टिक्का रहे कोई ना कालख, दुरमति मैल देणी धवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड दुआर तेरी सच्ची अदालत, अदल इन्साफ़ इक्को देणा वखाईआ। जित्थे वुकला करे ना कोए वकालत, हुक्मे अंदर सारे बैठे सीस निवाईआ। इक्को गोबिन्द सतिगुर शब्द देवे शहादत, बरीख़ाना सब नूं दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी नूरी जोत सदा सही सलामत, जन्म मरन कर्म विच कदे ना आईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ गिरधारा सिंघ दे गृह पिण्ड बलोवाल ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म गुरमुखां दात, जगत जुगत हथ्थ किसे ना आईआ। देवणहारा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी सदा वरताईआ। रखणहारा एथे ओथे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उतम श्रेष्ठ कर के भाग, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। दीन दुनी दा जगा के चिराग़, गुरमुख सच करे रुशनाईआ। जगत तृष्ना बुझा आग, अगला परदा दए उठाईआ। माया डस्से ना डस्सणी नाग, सति सन्तोख इक्क जणाईआ। साचे बेड़े चढ़ाए जहाज़, नाम निधाना इक्क वखाईआ। साची मंज़ल पुचाए आप, दर ठांडे दए बहाईआ। जित्थे पोह ना सके तीनों ताप, त्रैगुण झगड़ा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म होवे जाप, बिन रसना ढोला गाईआ। चिन्ता रहे ना कोए संताप, सति सतिवादी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण प्रीती जोड़ के नात, नर नरायण आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां सति दा जोड़ रिश्ता, सतिगुर आपणे नाल बंधाईआ। देवे दुःख ना कोए फ़रिश्ता, राए धर्म ना डंन लगाईआ। रूप बणा के साचे सिख दा, साची मंज़ल दए पुचाईआ। जित्थे चित्रगुप्त लेख नहीं लिखदा, चुरासी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। रस मिले परम पुरख दे हित दा, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना मनूए चित्त दा, चार्तक अमृत बूँद दए प्याईआ। साचा खेल पुरख अबिनाशी इक्क दा, गुरमुख इक्क इक्क रिहा तराईआ। जग नेत्र किसे ना दिसदा, जोती जामा वेस वटाईआ। लहिणा देणा मुका के पत्थर इट्ट दा, इष्ट निरगुण जोत रिहा समझाईआ। हिस्सा देवे गोबिन्द वाली चिट्ठ दा, बिन अक्खरां लेखे पाईआ। वेस वटा के धुर दे पित दा, पतिपरमेश्वर गुरमुख गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे नित नवित दा, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां सति सदा दवार, दरबान हो के खुशी मनाईआ। लोकमात सेवादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। चरण कँवल बण पनिहार, पनघट इक्को वेख वखाईआ। खुशीआं नाल प्रभ दा करे इज़हार, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। उच्ची कूक करे पुकार, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। साचा कर दरस दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। उच्ची कूक बोल जैकार, नाअरा इक्को दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेला गुरमुख सतिगुर हो के रिहा तार, तारनहार समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बलोवाल ★

जन भगतां लहिणा देणा सदा सति दा, सति सतिगुर दए वड्याईआ। झगड़ा रहे ना कूड़ी रत दा, रतन अमोलक दए वखाईआ। ढोला दस्स के आपणे जस दा, सोहँ करे हक पढ़ाईआ। दीदार बख्श प्रेम अक्ख दा, आख़र आपणा रंग चढ़ाईआ। हरिजन अंदर होवे वसदा, सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ दा, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई एकँकार, इक्क इकल्ला आप रखाईआ। दर ठांडा खोल्ह किवाड़, अग्नी तत दए बुझाईआ। ममता मोह ना सके साड़, हँकार विकार ना कोए वधाईआ। नाम निधाना बख्श के धार, धर्म दवारा इक्क समझाईआ। पुरख अबिनाशी धुर दा यार, मुहब्बत इक्को इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सिक्दार, सिखर चोटी चढ़ के वेख वखाईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बीबी सवरन कौर दे गृह पिण्ड सैदपुर ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया मेट गुस्ताख़, लोकमात धरनी धरत धवल रहिण मूल ना पाईआ। कलयुग जीवां जन्म कर्म मन विकार कर मुआफ़, मेहरवान महबूब मेहर नज़र उठाईआ। जन्म कर्म दा लेखा कर दे साफ़, दुरमति मैल धवाईआ। रूह बुत्त अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर कर दे पाक, पाकीज़ा हो के नूर ख़ुदाईआ। साचा कलमा धुर दा नग़मा कायनात दीन दुनी दस्स इक्क आदाब, सजदा इक्को इक्क समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा वाहिद लाशरीक निकले इक्क आवाज़, दूजा राग ना कोए अलाईआ। तेरे चरण कँवलां पढ़नी पए इक्क निमाज़, प्रेम प्रीती वुज़ू दे समझाईआ। काया खेड़ा उजड़या सब दा कर आबाद, अमृत मेघ आप बरसाईआ। धुन आत्मक हर हिरदे उपजे वैराग, वैरी कूड़े दे मिटाईआ। तेरे नाम दी विद्या नूं समझे ना कोए दिमाग़, बुद्धी तों परे बोध अगाध दे जणाईआ। सोई सुरती सब दी जाए जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। गुरमुख हँस बणा काग, मन वासना ना कोए कुरलाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी बदल दे समाज, रस्ता वाबस्ता हो के इक्को इक्क जणाईआ। तेरा खेल सदा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तेरे नाम दा वज्जे इक्को डंका नाद, नाउँ निरँकारा दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म कहे इक्को देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस झुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ दस्स

२५
२०

दे एको पूजा पाठ, सिमरन तेरा नाम नज़री आईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मुके सब दी वाट, पाँधी हो के कोए ना भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया काया मन्दिर अंदर मेट अन्धेरी रात, निरगुण हो के साचा नूर चन्द कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स आपणी गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर हो के कर पढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख समराथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भविख्तां विच जो गए आख, आख़र लहिणा देणा सब दा झोली पाईआ। जन भगतां अंदर साचे मन्दिर खोल्ह आपणा ताक, परदा ओहला ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाश्त वेखे सर्ब लोकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ लोकमात निरगुण धार आ, आलमां इलम दे जणाईआ। सृष्ट सबाई वेख भरी गुनाह, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। तुध बिन दिसे ना कोए मलाह, बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। चार वरन ना दए कोई समझा, झगड़ा मज़्ब ना कोए चुकाईआ। हर हिरदे अंदर डेरा ला, निरगुण हो के सोभा पाईआ। तूं ही जल्वागर खुदा, नूर नुराना नूर इलाहीआ। दीन दुनी होई बेवफ़ा, वफ़ादारी सब नूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी मेट सफ़ा, मलेछ बुद्धी नजर कोए ना आईआ। सति धर्म कहे मेरे सति पुरख साहिब स्वामी निरँजण, निराकार तेरी सरनाईआ। दाता दानी बण दर्द दुख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। नाम निधाना धुर दा दे अंजन, नेत्र लोचण नैण होवे रुशनाईआ। तेरे चरण धूढ़ दा होवे मजन, दूजा सरोवर ना कोए वखाईआ। दर दरवेश हो के सारे मंगण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अकाल आपणे नाम दी चाढ़ रंगण, रंगत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे झोली डाहीआ। सति धर्म कहे मैं बणया दरवेश, घर तेरे अलख जगाईआ। तूं आदि जुगादी देवणहार हमेश, निरगुण सरगुण झोली सर्ब भराईआ। लख चुरासी जीव जंत लैणा वेख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। लोकमात मार झात वेख आपणा परदेस, जित्थे परदेसी गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। नज़री आ नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। परमात्म हो के आत्म कर हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के निरगुण निरगुण दस्स भेत, भेव आपणा दे खुल्हाईआ। जो दिवस रैण एका एक रहे चेत, चेतन सब नूं दे कराईआ। कूड़ी क्रिया कर के खेत, ख़ादम आपणे लै बणाईआ। पुरख अकाल हो के लै वेख, अकल कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सति साची मंग मंगाईआ। सति कहे मेरे सर्ब गुणां भरपूर, भरम देणा गवाईआ। कूड़ी क्रिया कढु ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। मन वासना रहे ना कोए मफ़रूर, शब्द

डोरी बंध बंधाईआ। झगड़ा दूई ना रहे कूड़, झूठ अपराध देणा मिटाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, परदा ओहला आप चुकाईआ। जन भगतां बख्श अगम्मी धूढ़, मस्तक टिक्के नाम वखाईआ। तूं मालक आदि जुगादी हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा हज़रत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी बदलणा तेरा दस्तूर, दस्त बदस्त सब दा लहिणा देणा दे मुकाईआ।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिंघ दे गृह पिण्ड सैदपुर ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ मेल आपणे सन्त सुहेले गुरमुख, भगत भगवान निरगुण सरगुण नाता लै जुड़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर उजल कर मुख, प्रेम प्यार मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। जन्म मरन आवण जावण लख चुरासी रहे किसे ना दुःख, पतित पुनीत ठांडे सीत दे कराईआ। मात गर्भ उलटा होणा पवे ना रुख, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। मेहरवान महबूब परवरदिगार सांझे यार आपणी गोदी चुक्क, मुर्शद हो के मुरीदां वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स आपणी अगम्मी तुक, शब्द अनादी नाद धुन कर शनवाईआ। गृह मन्दिर काया अंदर इक्क अगम्मा दे सुख, सुखसागर काया गागर अंदर नज़री आईआ। परदा ओहला भेव अभेदा रहे कोई ना लुक, ठाकर हो के ठोकर आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखा धुर दा घर, जिस गृह निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सन्त सुहेले वेख आपणे मीत, मित्र प्यारा हो के मेल मिलाईआ। जिन्हां नाल जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलदा आयों रीत, मन्दिर मसीत लेखा दएं चुकाईआ। धाम वखाएं सदा अनडीठ, महल अटल दएं दृढ़ाईआ। जिस गृह मन्दिर अंदर वसें आप जगदीस, जगदीशर हो के खोज खुजाईआ। तेरा लहिणा देणा हस्त कीट, लख चुरासी भेव अभेदा परदा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे इक्को वर, आत्म परमात्म तेरी साची करन प्रीत, प्रीतम इक्को लैण मनाईआ। सति कहे प्रभ जन भगत सुहेले वेख जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण पोह ना सके अग्नी अग्ग, अमृत मेघ दे बरसाईआ। जगत दवारे पार कर हद्द, दर ठांडा इक्क जणाईआ। दे दरस उपर शाह रग, शहिनशाह हो के मेला लै मिलाईआ। तेरे नाम दी धुन सुणन सच्ची अनहद्द, अनरागी हो के आपणा राग दे दृढ़ाईआ। नाम खुमारी जाम हकीकी दे मद, मधुर धुन वज्जे सच वधाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, निरगुण नूरी चन्द कर रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहानां अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सतिगुर शब्द हो के दे साथ, सगला

संग आप निभाईआ। आत्म परमात्म धुर दा ढोला होवे तेरी गाथ, निरअक्खर निरवैर निराकार निरँकार दे समझाईआ। साचे सन्तां धुर दे भगतां खोल्ह अक्ख, दर्शन दे सदा प्रतख, दूर नेड़ा पन्ध ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी दीन दुनी नालों कर वक्ख, नाता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगतन मीता ठांडा सीता, सति दवारा एकँकारा गृह मन्दिर देणा वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां दे अगम्मी दान, गुरमुख सन्त सुहेले सज्जण झोली दे भराईआ। चरण धूढ़ी बख्श अगम्मी इश्नान, अंदर बाहर दुरमति मैल रहे ना राईआ। सुरत सवाणी आपणी सखी अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के वेख साचे काहन, निरगुण हो के निरगुण मेल मिलाईआ। शब्द निराला मार आपणा बाण, अणयाला तीर चलाईआ। झगड़ा मुके जीव जहान, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। घर ठाकर स्वामी मिल आण, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सन्त सुहेले दर ठांडे तेरा दर्शन पाण, बिन काअब्यो साचा हज्ज दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा हुक्मी हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आ जा भगतां दवार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द कर गुफ़तार, गुफ़त शनीद दे समझाईआ। तेरी महिमा मजलस विच होवे अपर अपार, जिस नूं अलिफ़ ये समझ सके ना राईआ। कागद कलम ना लिखणहार, शाही मिले ना कोए वड्याईआ। साचे सन्तां दे दीदार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। धुर दे मालक परवरदिगार, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग रैण अन्धेरी चार कुण्ट सृष्टी दिसे बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, बिन सतिगुर शब्द पार ना कोए कराईआ। निरगुण निरवैर सति सरूपी शाहो भूपी बण दलाल, लोकमात मार झात गुरमुख सज्जण आपणे रंग रंगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा देंदी गई अहिवाल, सिफ्तां विच तेरा ढोला गाईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक दीन दयाल, दयानिध इक्को इक्क नज़री आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अबिनाशी घट निवासी सति धर्म कहे मेरा मन्न सवाल, सवाली हो के बेनन्ती दिती सुणाईआ। साचे सन्तां सदा सदा सद वसें नाल, नाम निधाना वजाउँदा रिहों ताल, मार्ग जग जीवण दाते दस्सदा रहीं सुखाल, शब्दी सुत बणा के आपणा लाल, सदा वसाँईं सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल, दूजा दर ना कदे वखाईआ।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ केसर सिँघ दे गृह पिण्ड मैसम पुरा ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया मेट पखण्ड, चार कुण्ट दहि दिशा धरनी धरत धवल उपर रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ विकार हँकार दुराचार दे दंड, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद दे समझाईआ। जन भगतां अन्तर नाम दी पा ठंड, अमृत मेघ बूँद स्वांती आप चुआईआ। जन्म कर्म दी विछड़ी आत्म परमात्म टुट्टी गंढु, दो जहानां वाली आपणा रंग रंगाईआ। दूई द्वैत अन्ध अन्धेर अंदरों ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स धुर दा छन्द, सोहँ ढोला शब्द विचोला आपणा दे जणाईआ। रसना जेहवा कोई ना गावे मन विकारी गंद, बत्ती दन्द तेरा नाम ध्याईआ। कर प्रकाश सृष्टी दृष्टी अंदर नव खण्ड, सत्त दीप तेरा नूर होए रुशनाईआ। गुरमुखां निज आत्म दे सच अनन्द, परमानंद विच समाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को हो सहाईआ। कलयुग कूड़ कुटम्ब मेट काची वंग, कंचन गढ़ सतिजुग साचा दे सुहाईआ। अगम्मे नाम दा वजा मृदंग, मर्द मर्दाने श्री भगवाने आपणा डंका इक्क वजाईआ। भेव अभेदा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म परदा दे चुकाईआ। सन्त सुहेले वेख आपणे जन, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सति सतिवादी झोली डाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग वेख अन्धेरी अन्ध, सच प्रकाश नज़र कोए ना आईआ। मन वासना जगत मंज़ल मुके किसे ना पन्ध, सच दवारे चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। बिन सतिगुर शब्द सुरत सवाणी सब दी होई रंड, कन्त सुहागी सन्त ना कोए हंढाहीआ। खुशी होवे ना बन्द बन्द, तेरी बन्दगी बन्दीखाने विच्चों जगत बाहर ना कोए कढाहीआ। अन्तर निरंतर एका मंत्र दे धुर दा अनन्द, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेहर नज़र उठाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दे संग, ऊँच नीच राउ रंक ज़ात पात झगड़ा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धरनी धरत धवल उपर मेट भेख पखण्ड, सति धर्म दा सच्चा राह बण मलाह दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे झोली दे भराईआ। सति धर्म कहे मेरी अन्त अख़ीर पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। किरपा कर सिरजणहार, साहिब स्वामी तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया होया अंध्यार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। दीन दुनी होई खुआर, दीन मज़्हब ज़ात पात करे लड़ाईआ। तेरा कलमा हकीकत वाला लाशरीक सके ना कोए विचार, मुहब्बत विच मिल के तेरा दरस कोए ना पाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्के जीव गवार, अन्तर आत्म मंज़ल चढ़ के सचखण्ड दवारा एकँकारा नज़र किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया साकत निन्दक मेट दुष्ट

दुराचार, भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं जगत जगदीशर पा सार, ईसा मूसा मुहम्मद निउँ निउँ सजदयां विच सीस झुकाईआ। लहिणा देणा चौदां तबकां दे निवार, सबक इक्को इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म दर ठांडे अलख जगाईआ। सति कहे प्रभ साचे भगतां दे आपणा माण, नाम निधाना झोली पाईआ। अमृत रस दा दे जाम, खुमारी इक्को वार चढ़ाईआ। धुर संदेसा दे पैग़ाम, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। आपणी मंज़ल दस्स हक मुकाम, दरगाह साची परदा दे उठाईआ। सचखण्ड दुआर तेरा झुलदा वेखण निशान, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर मंगण दान, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। इक्को योद्धा सूरबीर शब्द गुरू बलवान, हुक्में अंदर हुक्म रिहा सुणाईआ। जिस दा कागत कलम लिख ना सके ब्यान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के सारे शुकर मनाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण निरगुण हो प्रधान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सज्जण गुरमुख लख चुरासी विच्चों भाल, सुरती शब्द मेला आप मिलाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, आत्म परमात्म बन्धन लए जुड़ाईआ। इक्को सोहे तेरा सचखण्ड दवारा सच्ची धर्मसाल, जित्थे मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुरमुख गुर गुर सतिगुर आपणे रंग रंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां खोलू अन्तर अक्ख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। उह देवणहार पुरख समरथ, दाता दातार वड्डी वड्याईआ। हकीकत विच्चों झोली पा हक, हुक्म धुर दा इक्क समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला गावण जस, जिस दी सिफ्त वेद पुराण शास्त्र सिमरत रहे गाईआ। तेरे नाम दा ढोला गावण अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह सच दवारे वज्जे इक्क वधाईआ। निरगुण धार हो प्रतख, सतिगुर मेला लै मिलाईआ। धुर फ़रमाना एकँकारा विच जहानां निरवैर हो के आपणा नाम दस्स, दहि दिशा चार कुण्ट इक्को ढोला दे समझाईआ। पारब्रह्म हो के ब्रह्म कर आपणे वस, वसल आपणा दे वखाईआ। सन्त सज्जण गुरमुख लोकमात कलयुग अन्त सदी चौधवीं रख, चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या डेरा दे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका मार्ग दस्स सच, सति सतिवादी हो के सति सति वखाईआ।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड नूर पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख सतिजुग साचा कर प्रकाश, कलयुग कूड़ी क्रिया अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप साडा रिहा कोई ना दास, आत्म परमात्म मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे अन्धेरी रात, साचा तेरा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म पढ़े कोई ना गाथ, सिफ्ती ढोले गा गा सारे शुकर रहे मनाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार तेरी करे कोई ना याद, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण श्री भगवान, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। किरपा कर वाली दो जहान, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धरनी धरत धवल होई (प्रधान), मन वासना आपणे नाल रलाईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच्चों अक्खरां वाला कढु ज्ञान, माया ममता मोह कीता हल्काईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी निरंतर तेरा जाणे कोई ना अगम्मा नाम, निरअक्खर धार ना कोए दृढ़ाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ कर कर थक्के इश्नान, दुरमति मैल अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर ना कोए धवाईआ। साची मंज़ल चढ़ के निरगुण मिले कोई ना आण, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। पल्लू फड़े ना सुरती शब्दी कोई काहन, सीता राम चारों कुण्ट पई दुहाईआ। पीर पैगम्बर नेत्र नैणां नीर वहाण, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ कुड़यारा दे मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ कलयुग वेख दीन दुनी, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। साचा दिस्या ना कोए ऋषी मुनी, मुनीश्र रूप ना कोए बदलाईआ। तेरे नाम दी अगम्मी सुणे ना कोए धुनी, धुन आत्मक राग ना कोए जणाईआ। लख चुरासी सृष्टी दृष्टी अंदर निरगुण धार हो के पुणी, गुण अवगुण वेखीं थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार दर दरवेश खादम हो के दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ सदी चौधवीं तक्क, बीस बीसा नाल रलाईआ। हकीकत विच्चों लभ्भे किसे ना हक, शरीकत विच दिसे लोकाईआ। जो शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी मार्ग रही दस्स, मंज़ल चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। मन वासना नौ दवारे जगत विकारां विच रहे नस्स, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। निज नेत्र लोचन नैण खुल्ही किसे ना अक्ख, प्रतख मिल्या ना रूप गुसांईआ। साचा नाम मिले किसे ना हट्ट, चौदां लोक चौदां तबक रहे कुरलाईआ। किरपा

कर मेहरवान महबूब पुरख समरथ, सच स्वामी तेरी इक्को ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भविख्तां विच तेरा आउणा आए दस्स, सिख्या लोकमात जीव जंत जगत समझाईआ। निरगुण धार निरवैर पुरख शब्द सरूपी हो प्रगट, जोती जाते निरगुण नूर कर रुशनाईआ। हर घट अंदर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त नाम निधान मार सट्ट, सोई सुरती लए उठाईआ। अमृत धार निजर निराकार दे रस, बूंद स्वांती आपणी आप चुआईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स आपणा जस्स, वेद पुराणां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाल हो कृपाल सतिजुग साचा मार्ग दे लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर सति सतिवन्त, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। मातलोक बणा आपणी बणत, कलयुग कूड़ी क्रिया दे मुकाईआ। गुरमुख सज्जण उठा धुर दे सन्त, भगत सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। बोध अगाध महिमा अनाद शब्द सुणा आपणा मंत, मंत्र इक्को दे दृढ़ाईआ। लख चुरासी नज़री आ धुर दा कन्त, आत्म सेजा सच हंढाहीआ। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, निरगुण निरवैर तेरा रूप उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे तेरे सचखण्ड दवारे करदे मिन्नत, निउं निउँ कदमां उपर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग सच्चा राह एकँकार बण मलाह चार वरनां देणा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख समरथ, इक्को तेरी ओट तकाईआ। कलयुग लहिणा देणा पूरब झोली पा हक, हकीकत अपणी दे समझाईआ। सतिजुग साचे साचा मार्ग दस्स, धरनी धरत धवल उपर टिकाईआ। हर हिरदे आप जा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। इक्को मंत्र निरंतर तेरा होवे जस, सिफ्तां वाला सिफ्ती ढोला आपे गाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला जन भगत रहे ना वक्ख, सूफ़ी फ़कीर लैणा मिलाईआ। जो तेरे मिलण दा कर के बैठे हठ, धीरज उन्हां देणा धराईआ। गृह मन्दिर काया माटी साची हाटी निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा मुकाईआ। साचे मण्डल दस्स के आपणी रास, गोपी काहन सुरती शब्द रास रचाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन वासना कर के पाश पाश, फ़रमांबरदार गुरसिख लैणे बणाईआ। जिन्हां निरगुण निरवैर तेरे मिलण दी रखी आस, बण विचोला साचा ढोला देणा सुणाईआ। ओन्हां अन्तर रहे ना अन्धेरी रात, लेखा लिख दे बिन कलम दवात, निरअक्खर नाल अक्खर दे समझाईआ। सतिजुग साची बख्श दे दात, तेरा नाम भण्डारा वड सौग़ात, इक्को नज़री आए पिता मात, दूजा अवर ना कोए दिसाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा राख, गुर अवतार पैगम्बर सच दवारे रहे आख, तेरा खेल पुरख अबिनाश, सतिजुग त्रेता द्वापर (कलयुग) तेरा दास,

३१
२०

जुग चौकड़ी हुक्म चले बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर निउं निउँ चरणी रहे लाग, सचखण्ड दुआर खुशी मनाईआ। अबिनाशी करते कलयुग कूड़ी क्रिया बुझा आग, त्रैगुण पंज तत ना कोए तपाईआ। इक्को सिमरन पूजा इक्को दस्सदे पाठ, इक्को कलमा दे दृढ़ाईआ। इक्को सरोवर होवे तेरा तीर्थ ताट, दुरमति मैल दे धवाईआ। इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदवाला नज़री आए माठ, गुरूदवारा इक्को दे समझाईआ। निरगुण हो के दर्शन दे उपर शाहरग, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। बिन मक्के काअबिदुं काया मन्दिर अंदर करा आपणा हज्ज, साचे हुजरे महबूब आपणा जलवा कर रुशनाईआ। कर बेनन्ती सति पुरख निरँजण लोकमात तैनूं रहे सद्द, संदेसा धुर शब्द विच सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पार किनारा करके हद्द, मार्ग सच्चा दे वखाईआ। मानव ज़ाती आपणी बणा यद, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत सुहेले तेरे नाम दी गावण सद, छन्द इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर ठांडे झोली रहे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उच्ची कूक करन पुकार, ढोला तेरा नाम लगाईआ। जो सिख्या दे के आए विच संसार, महासार्थी हो के तेरा रथ चलाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया सब नूं कीता खुआर, ख़ालस रूप नज़र कोए ना आईआ। तेरी मंजल चढ़े ना कोए निरँकार, निरगुण मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। चार वरन अठारां बरन सदी चौधवीं वेखी हाहाकार, सांतक सति ना कोए वरताईआ। पैगम्बर बणया ना कोए मददगार, दस्त बदस्त हथ्थ ना कोए मिलाईआ। सोई सुरती सक्या ना कोए उठाल, शब्दी नाद ना कोए शनवाईआ। बिन तेरे नामे होए सर्ब कंगाल, ख़ाली दवारे दिसण थांओं थाँईंआ। पुरख अकाल सतिगुर शब्द बणा दलाल, हकीकत वेख हक हलाल, हाज़र हो के फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख परमात्म आपणी आत्म वेख विच जहान, लोकमात निरगुण धार आपणा वेस वटाईआ। सति धर्म दा दिसे ना कोए निशान, जगत विद्या सब नूं कीता बेईमान, धर्म ईमान रहिण कोए ना पाईआ। मन शरअ विच बणे शैतान, तेरा गाए कोई ना गान, सच प्रीती तेरा नाता ना कोए जुड़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर निराकार निरँकार बेनन्ती अरदास कर परवान, जुग चौकड़ी (तूं) देवणहारा दान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आदि जुगादि वेखें आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी दो जहानां हुक्मरान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान रवि ससि सूर्या चन्द मण्डल मण्डप तेरे हुक्म अंदर भज्जण वाहो दाहीआ।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ साधू सिंघ दे गृह पिण्ड नूर पुर ★

पीर पैगम्बर करन सजदा, मुकामे हक सीस निवाईआ। परवरदिगार तेरा दिसे कोई ना बरदा, ख़ादम नज़र कोए ना आईआ। खेल वेख घर घर दा, उम्मत उम्मती खोज खुजाईआ। तेरा कलमा कोए ना मन्नदा, आलम उल्मा समझ कोए ना पाईआ। खेल वेख्या ना किसे तन वजूद दा, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। नूर नज़र आया ना हक महबूब दा, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। झगड़ा प्या काया कलबूत दा, शरअ पए लड़ाईआ। दरजा मिले ना सच्चे मनसूर दा, मंज़ल हक ना कोए पुचाईआ। खेल कर दे आपणे दस्तूर दा, दस्तगीर तेरे हथ्थ वड्याईआ। वेला वक्त आया अन्त हज़ूर दा, अमामां दे अमाम वेख वखाईआ। कर प्रकाश अगम्मी नूर दा, जोती जोत डगमगाईआ। कलयुग नाता तोड़ कूड़ दा, गढ़ हँकार दे मिटाईआ। झगड़ा रहे ना मूर्ख मूढ़ दा, सुघड़ सुच्चजे दे बणाईआ। टिक्का ला आपणी चरण धूढ़ दा, टकयां दा लेखा दे मुकाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी अरज़ बेनन्ती सब दी कबूलदा, काअबे दे मालक ख़ालक तेरे अग्गे इक्क अरज़ोईआ। तेरा मार्ग इक्क असूल दा, असल वसल दे वखाईआ। तेरी करनी नहीं कोई अदूलदा, गुर अवतार देण गवाहीआ। तेरा हुक्म सदा मन्ज़ूर दा, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ। पैंडा रहे ना मनमुख मग़रूर दा, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। गढ़ रहे ना कोए ग़रूर दा, ग़ुरबत सब दे अंदरों दे कढाहीआ। खेल वेख हाज़र हज़ूर मौजूद दा, माज़ी वेखण दा लेखा दे मुकाईआ। नज़ारा दस्स आपणी मंज़ले मक्सूद दा, हक बहक इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। पैगम्बर कहिण वेख अखीर, आखर रहे जणाईआ। साबत रिहा ना किसे यकीन, यके बाद दीगरे सारे देण दुहाईआ। तेरा मसला समझे ना कोए आमीन, आलम चले ना कोए चतुराईआ। झगड़ा प्या फ़र्शे ख़ाकी ज़मीन, ज़र्रे ज़र्रे तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। अलिफ़ ये देवे दलील, कायनात रही समझाईआ। मन हँकारी तोड़े ना कोए फ़सील, फ़ैसला हक ना कोए कराईआ। कलयुग क्रिया सदी चौधवीं कर तबदील, तबादला अन्त तेरे हथ्थ नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सजदयां विच बैठे सीस निवाईआ। पैगम्बर कहिण मेरे अमामां दे अमाम, अमल वेख जगत लोकाईआ। तेरा साचा समझे ना कोए इस्लाम, इस्म आअज़म नज़र कोए ना आईआ। तेरा नाउं ख़ालक ख़लक करे बदनाम, बदीआं विच वेखी लोकाईआ। हक संदेसा सच महबूब धुर दे हुजरे दे पैग़ाम, नग़मा आपणा नाम सुणाईआ। सच दवारे बख्श इक्क हमाम, आबे हयात हयाती वाला जाम प्याईआ। झगड़ा मुका तन ख़ाकी वजूद तमाम, इख़लाक आपणा दे दृढ़ाईआ। तेरे कदमां

उत्ते कदीम तों सारे करदे आए सलाम, समें विच्चों समां दे बदलाईआ। गुर अवतार तेरा दस्सदे आए नाम, नाउं निरँकारा जगत जणाईआ। कलयुग अन्त जीव जंत समझे ना कोए जहान, जहालत घर घर बैठी डेरा लाईआ। मन मति होई शैतान, शरअ शरीर अंदर करे लड़ाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच दिसे ना कोए इन्सान, इन्सानीअत विच बहि के खुशी ना कोए मनाईआ। जगत वासना दीन दुनी होई गुलाम, माया ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। तेरा महल अटल वेखे कोई ना आलीशान, सचखण्ड दवारे चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। जगत हुजरयां विच हुंदा हराम, मक्का काअबा रिहा कुरलाईआ। किरपा कर मेहरवान मिहबान, मिहबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। सब तों वक्खरा तेरा कलाम, कलमयां नूं कायम करने वाला इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे दर ठांडे अलख जगाईआ। पैगम्बर कहिण परवरदिगार सच्चे शहिनशाह, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। निरगुण धार बण जगत मलाह, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। साचे मार्ग दी दस्स हक सलाह, सफ़र पिछला पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा बख्श गुनाह, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सति सच कर रवां, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचा मार्ग चले नवां, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दवारे दर तेरे आस रखाईआ। पैगम्बर कहिण मेरे महबूब, महिव तेरी ओट इक्को नज़री आईआ। तेरा महल अटल अर्श अरूज, आअज़म आलीशान सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम जगत वासना दूर कर दूज, द्वैत सब दे अंदरों दे कढाहीआ। दीन मज़ब दी रहिण ना दे हदूद, शरअ विच करे ना कोए लड़ाईआ। हर घट नज़री आ मौजूद, मजलस घर घर दे वखाईआ। कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, कलमा इक्को दे पढ़ाईआ। तेरी खुशी दे वजद अंदर आपणा भुल्ल जाण वजूद, वाहिद तेरा ढोला गाईआ। चार कुण्ट बख्श सलूक, सुल्हकुल तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। झगड़यां विच ना रहे मखलूक, ख़ालक हो के हो सहाईआ। कर प्रकाश साचे कलबूत, काया काअबा दे वखाईआ। धुर दा नाम हुक्मरान कर मज़बूत, जिस अग्गे सिर सके ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी तेरा देंदे गए सबूत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। अन्तिम अन्त श्री भगवंत सब दी झोली पा हक हकूक, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। मुर्शद हो के मुरीदां कर महिफ़ूज, चार कुण्ट दहि दिशा सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरा एका हुक्म होवे महबूब, हदूद रहिण कोए ना पाईआ।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ विरसा सिँघ दे गृह पिण्ड हरि गोबिन्द पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

खून नालों खून होया पराया, साचा संग ना कोए बणाईआ। जिन्हां परम पुरख समरथ स्वामी अंदरों भुलाया, तिन्हां अंदर दूई दिती बिठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पई माया, भरमां विच भुल्ली लोकाईआ। साचा प्रेम भाई भाईआं विच नज़र ना आया, करनी दे करते खेल रचाईआ। धुर दा हुक्म साचा भाणा ना किसे मेट मिटाया, जुग जुग मिटदी वेखी लोकाईआ। गोबिन्द सूरे लेख लिखाया, सदी बीसवीं रही कुरलाईआ। बुध बिबेकी ना कोए जणाया, गुरमुख रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां समें नाल सुहाईआ। घर दा खून होया बेगाना, दर्दी दर्द ना कोए वण्डाइंदा। मन ने दूसरयां नाल लाया याराना, घर विच स्वामी नज़र किसे ना आइंदा। सज्जणां नूं सज्जण मारन ताअना, मुहब्बत विच मुहब्बत ना कोए समाइंदा। एह खेल करे श्री भगवाना, गुर शब्दी ताल वजाइंदा। कलयुग झोली पाया मंगया दाना, दात कूड़ कुड़यारी संग रखाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा माया ममता लग्गे तराना, तुरीआ पद ना कोए समाइंदा। आपणे अंदर मार के वेखो ध्याना, काम क्रोध हँकार घर घर डेरा लाइंदा। जे इक्को सिमरो श्री भगवाना, दूजा रहिण कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। बेगानयां नाल लग्गी प्रीत, घर दा नज़र कोए ना आईआ। एह कलयुग दी दस्सी रीत, रीतीवान समझ कोए ना पाईआ। झगड़ा पवा के हस्त कीट, ऊँचां नीचां दिता लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी करवट बदल के सब वल्ल कर लई पीठ, सनमुख हो के ना किसे समझाईआ। सब दी मन दे अधीन हो गई नीत, बुध बिबेक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्मे अंदर हुक्म रिहा भवाईआ। गुरमुखो तुसीं ना बणयो किसे दे बेगाने, सारे आपणे लओ बणाईआ। तुहाडे टुट्टण ना कदे याराने, साजण धुर दे लवो हंढाहीआ। उह गुरमुख सुघड़ सुचज्जे स्याणे, जो चार वरनां गंढु पवाईआ। उन्हां दे अंदर इक्क ध्याने, परम पुरख रहे मनाईआ। तिन्हां नूं सतिगुर शब्द मारे आपणे तीर काने, अणयाले आप चलाईआ। सो गुरमुख जो आपणा घर संभाले, बाहर लड़न दी लोड़ रहे ना राईआ। आपणे मीत मित्र भैण भाई साक सज्जण काया मन्दिर अंदर भाले, सुरती सुरत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी खेले खेल निराले, कलयुग खेल दीन दुनी आप वखाईआ। जगत नाता तुट्टा प्यार, प्रेमी नज़र कोए ना आईआ। बेगाने हो के घर दे करन खुआर, घर दे विच्चों घर समझ किसे ना आईआ। एसे कारण तुहाडे अंदर पंज चोर हो गए ख़बरदार, शब्द दी धुन सुणन कोए ना पाईआ। एह वी तुहाडे घर दे बाहरलीआं वस्तूआं दे बण गए

३५
२०

यार, याराने तुहाडे नालों तुड़ाईआ। जे इन्हां नूं बन्धन पा लओ फेर तुहाडे वस हो जाए सारा संसार, दो चार यार रखण दी लोड़ रहे ना राईआ। इस तों अगली होर कुछ समझो गुफ़तार, गुफ़त शनीद दयां जणाईआ। तुहाडा सी जगत विहार, अंदर चढ़ के वेखो मंज़ल उह हक मुनार, जित्थे महबूब मिल के बेगाना नज़र कोए ना आईआ।

खून नाल खून पाया झगड़ा, झगड़े झगड़े विच लोकाईआ। जे इस तों मार्ग वेखो अगला, अगला पिछला नज़र कोए ना आईआ। फेर संसार दिसे आपणा सगला, साथी सारे सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती प्यार अंदर होवे चार मंगला, गीत गोबिन्द इक्को करी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे सच सच दृढ़ाईआ। खून नाल करे खून वैर, वैरी पिता पूत नज़री आईआ। एहो कलयुग करनी दा कहर, जो सतिगुर अर्जन गया समझाईआ। जिन्हां दे अंदर साहिब सतिगुर दी हो गई मेहर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। उह सारयां दे मित्र बण गए इक्को वेर, घर दे बाहर दे बेगाने रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां सच दुआर दा वेख्या अगम्मी शहर, शहिनशाह मिल के खुशी मनाईआ। आपणे खून दे खून दी ज़रा होर करो शैर, सही आपणा आप नज़री आईआ।

३६ २०

सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दया कमाइंदा। जन भगतां नाम भगती दे के दान, दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। काया मन्दिर सुहा मकान, साढे तिन्न हथ्थ वड्ड वड्याइंदा। वस्त अमोलक दे के दान, ख़ाली भण्डार आप भराइंदा। अमृत सर करा इश्नान, दुरमति मैल धवाइंदा। दीवा बाती कमलापाती जगा महान, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। साची सखी मेल के धुर दा काहन, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। गेड़ा कट के लख चुरासी आवण जाण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सुहेला इक्क अकेला मेहर नज़र नाल तराइंदा। सतिगुर शब्द मेहर नज़र रिहा कर, करीम करता वड्ड वड्याईआ। हरि सन्त सुहेले सज्जण लए फड़, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। काया मन्दिर अंदर साचे पौड़े जाए चढ़, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा ढोला लवे पढ़, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारा वखा के इक्को नरायण नर, दरगाह साची धाम दए जणाईआ। भगत सुहेले सज्जण लै के जावे आपणे घर, अध विचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी जन भगतां देवे साचा वर, मेहर नज़र नाल नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ। सतिगुर नाम शब्द अगम्मा, अगम्म अगम्मड़ा आपणे विच रखाइंदा। ना मरया ना कदे जम्मा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा।

जुग चौकड़ी पुरख अकाल दीन दयाल प्रगट करे जो होवे ओस दा समां, समां समें विच बदलाइंदा। ओस नाम नूं ना कोई लालच ना कोई तमअ, तमाशा दीन दुनी वेख वखाइंदा। ना कोई हरख़ सोग ना ग़मा, चिन्ता रोग ना कोए सताइंदा। ना बन्द होया किसे हड्ड मास नाड़ी चम्मा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ हर घट विच समाइंदा। जननी कुक्ख किसे ना जम्मा, अग्नी कुण्ड ना कोए तपाइंदा। सो नाम आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सब ने मन्ना, जिस नूं मन्न के माणस रूप पंज तत परम पुरख आप वटाइंदा।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड गुरमुख पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

सतिगुर किरपा वसे खेड़ा, जन भगत मिले माण वड्याईआ। मानस जन्म बन्ने बेड़ा, जगत जहान ना कोए रुढ़ाईआ। भेव चुका के तेरा मेरा, परदा ओहला दए उठाईआ। प्रेम प्रीती अंदर दस्से चाउ घनेरा, ख़ुशीआं अंदर नाम वड्याईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लख चुरासी कटे जेड़ा, जन्म मरन दा लेख दए मुकाईआ। सतिगुर किरपा होवे उजल मुख, मिले माण वड्याईआ। जगत चिन्ता रहे ना दुःख, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। घर उपजाए साचा सुख, सज्जण साहिब स्वामी बेपरवाहीआ। भण्डारा दए अतुट, नखुट कदे ना जाईआ। हरि सन्त बणा के आपणे सुत, अबिनाशी करता गोद उठाईआ। परदा ओहला रहिण ना देवे लुक, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां जन्म कर्म दा मेट के दुःख, आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी दए कटाईआ।

★ २६ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ सविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड दया ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ किरपा कर छेती, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। तेरी साची मंज़ल दा रिहा कोए ना भेती, विद्या वाले करन लड़ाईआ। तेरे प्यार प्रेम दी समझे कोए ना नेकी, मानुख हो के आपणा आप भुलाईआ। दीन दुनी चार कुण्ट देखी, भरमे भुल्ली लोकाईआ। तेरा राह तक्कण भगत जन परदेसी, देस छड्ड के लोकमात अक्ख उठाईआ। चरण प्रीती बख़्श साची टेकी, सहारा इक्को इक्क जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मात मेटीं, मिट्टी वाली ख़ाक ना कोए उडाईआ। कूड़ कुड़यारे दर तों छेकीं, नेरन नेरा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान

हो सहाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आपणा दस्स दे अगम्मी नुकता, गुनाह दा लहिणा दे मुकाईआ। जिस मंज़ल ते तेरा पैंडा मुकदा, महबूब सहिजे दे टिकाईआ। परदा रहे ना ओहले लुक दा, नकाब परदा देणा चुकाईआ। प्रेम मिले तेरे साचे सुख दा, दूजी आस ना कोए रखाईआ। बिन तेरे दो जहान कोए ना पुछदा, पिछलयां दा संग अग्गे नज़र कोए ना आईआ। भगत उधारना तेरा खेल तुछ दा, दयावान देणी माण वड्याईआ। जो तेरे दवारे दीवाना हो के झुकदा, चरण कँवल धूढ़ रमाईआ। अन्त लेखा मुका दे उस दा, जो उस्तत विच तेरा नाम गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव दस्स दे आपणी तुक दा, नाम निधाना इक्क समझाईआ। सति कहे प्रभ हरिजन रहे कोई ना सुत्ता, सुत्ती वेखां जगत लोकाईआ। मेहरवान महबूब तैनूं वेखां तुठ्ठा, नज़रे कर्म नाल जगाईआ। सन्त सुहेला लटके फेर कदे ना पुठ्ठा, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। रसना खाए कोए ना कुठ्ठा, कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ। सच दवारे बिन तेरे कहे कोए ना आ भगत दवारे पुत्ता, पिता हो के गोद ना कोए उठाईआ। साचे जीवण दा समझे कोए ना मुद्दा, मुद्दतां दे विछड़े सके ना कोए मिलाईआ। आपणा भेव खोल्ह दे गुज्झा, गहर गम्भीर रमज़ लगाईआ। भगतां भाउ रहे ना दूजा, दुतीआ रूप ना कोए वटाईआ। नाम भण्डारा दे सुध्धा, सुख सागर विच समाईआ। तेरा लहिणा देणा आदि जगादि चौकड़ी जुगा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहार गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्मल कर सर्ब दी बुधा, बुध बिबेक दे बणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां कर बुध बिबेक, विवेकी आपणी दया कमाईआ। सच दवारे तेरा दर्शन लैण पेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जन्म जन्म दी बदल दे रेख, कर्म कर्म दा गेड़ा दे मिटाईआ। सच वखा अगम्मा देस, जिस घर बैठा सोभा पाईआ। दो जहानां बण के नर नरेश, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। जुग चौकड़ी कर कर वेस, गुर अवतार पैगम्बर नाउँ धराईआ। अन्तिम आपणा आप कर दे भेंट, नाता तत वजूद तुड़ाईआ। साची सेजा आपणी मंज़ल आपे लेट, सोभामान दए सुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां संग खेले खेड, खिलाड़ी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां लोकमात दिता भेज, भज्ज भज्ज उन्हां आपणा मेल मिलाईआ। सति कहे प्रभ जिन्हां लोकमात घलदा, पंज तत दे वड्याईआ। तिन्हां अंदर जोती शब्दी धार हो के रलदा, घर घर अंदर सोभा पाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आत्म सेजा इक्को मलदा, जिथे मलकुलमौत दए ना कोए सज़ाईआ। जन भगतां लेखा जणाए हिसाब हल्ल दा, हालत सब दी दए बदलाईआ। बिनां गुरमुखां किसे नूं पता नहीं कल्ह दा, कलमे वाले देण दुहाईआ। झगड़ा शुरु होण वाला जल थल दा, पल पल समझ किसे ना आईआ। हुक्म फ़रमान मिलण वाला

पुरख अटल दा, धुर दरगाही दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल वल छल दा, अछल छल आपणी खेल खिलाईआ।

★ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड दया ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ भगतां खुल्ही रख दृष्ट, दृष्टांतां दी लोड़ रहे ना राईआ। चौथे जुग दी पूरी हो गई किशत, लेखा अगला आपणा लै बणाईआ। लारा देवीं ना कोए स्वर्ग बहिश्त, सचखण्ड दवारा इक्को इक्क वखाईआ। नौ सौ चुरानवे दी फोल के वेख फ़रिसत, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। जो मंगां मंग के गया वशिष्ट, राम राम राम नाल समझाईआ। सतिगुर शब्द जगत वासना भोगे कोए ना गृहस्त, गृह गृह घर घर आपणी सेज हंढाहीआ। जिस नूं बुद्धी वाला समझ ना सके इश्क, हकीकत विच्चों आपणा हक दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सति कहे प्रभ रंग दे चोली, चोला रहिण कोए ना पाईआ। भगत सज्जण सहेली बणा गोली, गोलक ख़ाली दे भराईआ। गुरमुख रहे ना कोए मख़ौली, मुख उजल जगत कराईआ। हासी करे ना कोए धौली, धवल उपर मिले वड्याईआ। सार समझे ना कोए रौली, पंडत विद्या ना कोए दृढ़ाईआ। तेरे प्यार दी रुत्त रहे सदा मौली, मौला हो के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां समझा आपणी आउणी, आवण जावण अगला दे मुकाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां दस्स आपणा आउणा, अवागवण विच्चों बाहर कढाहीआ। साची सेजा दस्स सौणा, जित्थे सुत्यां ना कोए उठाईआ। साचा नाम दस्स गाउणा, जिस नूं गा के मिले बेपरवाहीआ। साचा मन्दिर दस्स सुहाउणा, जित्थे निर्मल जोत होवे रुशनाईआ। साचा नाद दस्स वजाउणा, बिन तन्द सतार हिलाईआ। साचा रंग दस्स चढ़ाउणा, बिन ललारी सोभा पाईआ। साचा वणज दस्स कराउणा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। साचा धाम दस्स सुहाउणा, सोभावन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। कर किरपा अबिनाशी करते आपणा मेल मिलाउणा, मिलावट विच मिली रहे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा आपणे घर वसाउणा, जित्थे वस के उजड़ कोए ना जाईआ।

★ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ मोहण सिँघ दे गृह पिण्ड तारा चक्क ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ भगतां संग जोड़, जोड़ा धर्म दुआर बणाईआ। शब्द अगम्मी बन्नृ डोर, बन्धन धुर दा एका पाईआ। वासना रहे ना मन दी कौड़, अमृत विख दे बणाईआ। चार कुण्ट दी मुके दौड़, सांतक सति सति कराईआ। मंज़ल मिले हकीकी पौड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तेरा दर्शन तक्कीए नाल ग़ौर, गहर गम्भीर नज़री आईआ। तुध बिन नज़र ना आवे कोई और, अवरा राह ना कोए जणाईआ। मानस जन्म जाए सौर, स्वार्थ परमारथ इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला देणा मिलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगत बणा धुर दे संगी, लोकमात नाल रलाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर आत्म जाए रंगी, रंग इक्को दे वखाईआ। पीठ पुश्त ना होवे नंगी, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। वस्त नाम शब्द सदा दे अनमंगी, अनडिठ्ठी दौलत झोली पाईआ। मन वासना रहे ना अंदर मंदी, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। तेरी प्रीती श्रेष्ठ सब तों लग्गे चंगी, कूड़ कुड़यारां डेरा ढाहीआ। निजर धार बख्श अनन्दी, अमृत रस मुख चुआईआ। साचा मार्ग दस्स डण्डी, औझड़ राह ना कोए भवाईआ। जन भगतां आत्म रहे ना रंडी, कन्त सुहागी मेला लैणा मिलाईआ। झगड़ा मुका के आवण जावण लख चुरासी खाना बन्दी, बन्दगी आपणी देणी समझाईआ। नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, ज्ञान लोचन इक्क खुल्हाईआ। मनुआ पंजां नाल मिल के करे ना जंगी, शब्द खण्डा देणा चमकाईआ। साथी रहे ना कोए पाखण्डी, गुरमुख मेलणा सहिज सुभाईआ। आपणे नाम दी ला के पाबन्दी, सब दा मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग देणा बणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां नाल मेल के रख, रखक हो के वेख वखाईआ। आपणे मिलण दी खुल्ही रख अक्ख, जगत नेत्र झगड़ा दे चुकाईआ। आत्म परमात्म कर जस, सिफ्तां विच तेरा ढोला गाईआ। हिरदे अंदर हरि जू वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। बिन तेरी किरपा मानस जन्म कीमत पए ना कौडी कक्ख, टकयां विच ना कोए विकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सांझा मार्ग दे दस्स, दासन दासी हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। सति कहे प्रभ भगता संग होवे साथ, धुर दा संग बणाईआ। मिल के गाईए तेरी गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुका मस्तक माथ, जन्म कर्म अगला दे बदलाईआ। सब कुछ स्वामी तेरे हाथ, करनहार वड्डी वड्याईआ। कलयुग समुंद सागर नईआ कर पार घाट, किनारा निरँकारा आपणा दे वखाईआ। जित्थे दिसे ना कोए अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा चुक्के दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच प्रीती जोड़ चरण कँवल नात,

रिश्ते कूड़े दे छुडाईआ। इक्को नज़री आवे कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरा दर्शन पाईआ। सांझी बणी रहे जमात, विछोड़ा रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को विकीए तेरे हाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे जोड़ जुड़ाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां नाल पा गंढु, टुट्टी गंढुणहार तेरी वड्याईआ। अमृत मेघ बरसा पा ठंड, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सीतल धार जोती नूर चाढ़ चन्द, रवि ससि दा लेखा दे मुकाईआ। लख चुरासी आवण जावण कट फंद, बन्धन अगला दे तुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा ढोला दस्स छन्द, शहिनशाह इक्को तेरा नाम ध्याईआ। बिनां रसना रस तों दे अनन्द, निज आत्म रस चखाईआ। जगत दवारा कूड़ी क्रिया तेरी मुहब्बत विच जाईए लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कूड़ी क्रिया दूई द्वैत शरअ रहे ना कोए अंदर कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सूरे सरबंग, दर तेरे ओट तकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां नाल जावां रल, दीन दुनी जगत तजाईआ। सृष्टी वेखी कपट छल, विकार हँकार विच लड़ाईआ। बिन तेरी किरपा गृह मिले ना निहचल धाम अटल, सच दवारा ना कोए वखाईआ। झगड़ा मुका दे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत इक्को तेरा नूर नज़री आईआ। अंदर रहे ना कोए सल्ल, कलयुग कूड़ी कल दे गवाईआ। जिस कारण जन भगतां लोकमात दिता घल्ल, धायल कर के आपणे नाल लै मिलाईआ। तेरे दुआर तेरा प्रकाश दीपक जोत हो के रिहा बल, घर घर करे रुशनाईआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशण दर ठांडा तेरा लईए मल्ल, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। मानस जन्म लख चुरासी दा इक्को वार मिले फल, वस्त अमोलक झोली देणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाल दीन दयाल तेरा विछोड़ा होवे ना किसे (पल), पलक दे अंदर आपणा नूर देणा चमकाईआ।

★ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ बंता सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईआं ज़िला गुरदासपुर ★

अस्सू कहे प्रभ नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए लँघ, जुग जुग तेरा ध्यान लगाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार बैठा रिहों आपणी सेज पलँघ, सति सतिवादी हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाम दा वजाउँदे रहे मृदंग, निरगुण सरगुण हो के तेरा ढोला गाईआ। सच प्रेम दा बख्श अगम्मा अनन्द, काया माटी चम्मां भाग लगाईआ। खुशी वखाउँदा रिहों बन्द बन्द, बन्दगी अंदर मछन्दगी इक्क जणाईआ। अन्त अख़ीर मंगीए एहो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ।

४१
२०

सृष्टी दृष्टी अंदर वेख सूरे सरबंग, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होई नंग, साचा तेरा नाम ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्ड, नौ खण्ड रही कुरलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जूठ झूठ वध्या गंद, सच सुगंध नज़र कोए ना आईआ। मन हँकारा घर घर करे जंग, सांतक सति ना कोए कराईआ। सति धर्म कहे मैं वेख होया दंग, हैरानी मेरे अंदर आईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। एका नाम वजा दो जहान मृदंग, अगम्मी नाद कर शनवाईआ। मानव ज़ाती भेव खुल्हा दे ब्रह्म हँ, आत्म परमात्म दे दिड़्हाईआ। तृष्ना कूड़ी रहे ना कोए तम, तामस तृखा ना कोए सताईआ। चिन्ता सोग मिटा दे ग़म, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। पवण स्वासी लेखे ला दे दम, जो जन तेरा नाम ध्याईआ। भगत उधारना तेरा कम्म, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रीती चली आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के बेड़ा बन्न्ह, खेवट खेटा हो के बेड़ा बन्ने दे लाईआ। भाग लगा काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक दे धन, जगत ख़ज़ाने दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्ध अन्धेर मिटा अज्ञान अन्न्ह, जलवा नूर कर रुशनाईआ। दहि दिशा ना उठ उठ धावे मन, मन दी मनसा दे खपाईआ। भगत सुहेले सज्जण तार (जन), तन माटी खुशी वखाईआ। हर घट निवासी एको रम, राम रहीम तूही नज़री आईआ। तेरे गृह शब्दी धार भगत सुहेले जाण जम्म, जमां दा झगड़ा दे मुकाईआ। कूड़ी क्रिया दे डंन, साची विद्या इक्क समझाईआ। सच दवारा वेख लँघ, भगतां मन्दिर अंदर परदा लाहीआ। तेरा सदा रहे संग, विछोड़े विच्चों विछोड़ा दे कटाईआ। जिस दा लेखा पुरी अनन्द, अनन्द ओसे दी झोली पाईआ। दूजा दिसे कोई ना संग, पुरख अकाल तेरी मिल के वज्जे वधाईआ। निरगुण धार प्रगट हो निसंग, निरअक्खर आपणा हुक्म दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सति धर्म तेरे दवारे मंग रिहा मंगाईआ। सति धर्म कहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग रिहों ओहले, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां सुणाउँदा रिहों ढोले, शब्द अनादी नाद वजाईआ। सच दवारे दे बणा के रखे गोले, हुक्म अंदर हुक्म चलाईआ। भाग लगा के काया माटी पंज तत चोले, चोज आपणे दएं समझाईआ। तेरा नाम फ़रमान धुर दा रसना जेहवा बोले, अनरागी राग सुणाईआ। अन्तिम गए तेरे कोले, लोकमात होई जुदाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार भाग ला उपर धरनी धरत धौले, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक रहिण ना रौले, झगड़ा सब दा दे गवाईआ। हर घट अंदर तेरा नूर मौले, जोती जोत डगमगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर कौले, इकरारनामा सारे रहे वखाईआ। कल तेरा भगत कोई ना डोले,

अडोल अडुल देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिनाम साची आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ नव नौ चार गए बीत, बीती कहाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जणाईआ। तेरी कलयुग तों अग्गे दस्से कोए ना रीत, अञ्जील कुरान परदा ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करे ना कोए नसीहत, हुक्में अंदर हुक्म ना कोए दृढ़ाईआ। तेरे हुक्म दी सारे करके गए वसीअत, असलीअत विच तेरा राह तकाईआ। दीन दुनी आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी तेरी मलकीअत, मालक इक्को नज़री आईआ। दो जहान श्री भगवान बिन साचे भगतां आपणी समझ सक्या ना कोए वलदीअत, पिता पुरख अकाल नजर किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सति सच तेरे अग्गे झोली डाहीआ। सति धर्म कहे जुग चौकड़ी गए नठ्ठ, बण के पाँधी पन्ध मुकाईआ। मैं बैठा रिहा कर के हठ, धीरज धार नाल रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जुग जुग मार्ग गए दस्स, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा हुक्म सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी अक्खरां वाला दे के हक, सिफ्तां वाली कर वड्याईआ। रागां नादां विच गाया जस, ढोला बेपरवाहीआ। अन्तिम कर के सारे बस, बैठे निउं निउँ सीस झुकाईआ। कलयुग अन्त चल्ले किसे ना वस्स, वास्ता सारे रहे पाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, साहिब स्वामी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। भविक्खतां दा पूरा कर हक, लहिणा देणा दे चुकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरे उत्ते सब नूं रिहा शक, कलयुग अन्तिम सहिसा रोग दे गवाईआ। कूड़ी क्रिया मातलोक विच्चों बाहर दे धक्क, धक्का हुक्म वाला लगाईआ। सति धर्म लोकमात दे रख, धर्म दवारा इक्क खुल्हाईआ। सन्त सुहेला रहे कोई ना वक्ख, गुरमुख गुर गुर गुर जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिखां करना पक्ख, जो तेरी ओट तकाईआ। तेरा नाअरा जैकारा इक्क होवे अलख, अक्खरां तों बाहर देणा समझाईआ। मेहरवान महबूब पुरख समरथ, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख हरिजन भगत निरगुण तेरा राह रहे तक्क, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ्थ ना सके राईआ।

★ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ करतार कौर दे गृह पिण्ड पंज गराँई ज़िला गुरदासपुर ★

सति धर्म कहे प्रभ कलयुग जीव रहे कोई ना विच निंद्रा, आलस अलख अगोचर देणी गवाईआ। मन विकारी हँकारी

तोड़ के जूठ झूठ दा जिंदरा, कुंजी नाम धुर दे राम देणी लगाईआ। साची रास वखाउणी काया माटी साढे तिन्न हथ्थ बन बिन्दरा, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। नेत्र नीर वहायण तेरा खेल वेख के सुरप्त इन्द्रा, सिँघासण आसण सारे देण तजाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक इक्क नरिंदरा, नर नरेश नज़री आईआ। साचे नाम दा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल मृदंग वजा किंगरा किंगरा, लख चुरासी अंदर तेरा धुन आत्मक राग वज्जे थांओं थाँईंआ। माण वड्याई बख्श जगत जीव जहान पिंगला, काया मंज़ल साचे पर्बत दे चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म सति दवारे आस रखाईआ। सति धर्म कहे परम पुरख परमात्म तेरी इक्को आस, आसा तृष्ना कूड़ी क्रिया दीन दुनी दे गवाईआ। चार वरन अठारां बरन निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर सञ्झ सवेर इक्को रंग देणा रंगाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे कर दास, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे सच वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के मेट अन्धेरी रात, सति सरूप शाहो भूप आपणा नूरी चन्द कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी दस्स जाप, गुर अवतार पैगम्बर मिल के तेरा ढोला धुर दा गाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया मन विकार हँकार कर विनास, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। झगड़ा रहे ना दीन दुनी ज़ात पात, कमलापाती पतिपरमेश्वर भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। निरगुण हो के सरगुण देणा चार कुण्ट साथ, दहि दिशा सगला संग बणाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान सच दवारे वज्जे इक्को नाद, नादी सुत गुरमुख लैणे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा खेड़ा कर आबाद, लोकमात जड़्ह दे लगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ किरपा कर गुण निधान, बेअन्त तेरी ओट रखाईआ। साचा झुल्ले धर्म इक्क निशान, निशाने कूड़े दे गवाईआ। सन्त सुहेले गुर चेले मिल के तेरा दर्शन पाण, दीद ईद चन्द कर रुशनाईआ। सदी चौधवीं शरअ रहे ना कोए शैतान, शरीअत विच्चों असलीअत दे प्रगटाईआ। मन वासना करे ना कोए हराम, दुष्ट दुराचार नज़र कोए ना आईआ। ममता रहे ना कोए ग़ुलाम, गुरबत अंदरों देणी कढाहीआ। इक्को सजदा तेरे चरण कँवल होवे सलाम, नमस्ते कहि के सारे शुकर मनाईआ। सति धर्म दा सति सतिवादी सब नूं दे दान, दाता हो के आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी सच दवारा देणा जणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आसा मनसा कर दे पूरी, पारब्रह्म प्रभ तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। एका जलवा दस्स नूरी, नूर नुराना नूर इक्को नज़री आईआ। जगत वासना रहे कोए ना कूड़ी, कूड़ कुटम्ब देणा मुकाईआ। सब दे मस्तक टिक्का लाउणा धुर दी धूढ़ी, दुरमति मैल देणी धवाईआ। तन वजूद रहे ना

कोए ग़रूरी, निवण सु अक्खर देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल तूं आदि जुगादि सदा दस्तूरी, हुक्मे अंदर हुक्म लैणा मनाईआ। सति धर्म कहे मैं मंगणहारा एक, एकँकार तेरा ध्यान लगाईआ। सच दवारे बख्श आपणी टेक, दूजे दर ना कोए भवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। तेरे चरण कँवल इक्क आदेस, निउं निउँ लागां पाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां इक्क नरेश, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। तेरी धार आदि जुगादि सदा शब्द गुरू दस दस्मेश, दहि दिशा वज्जे तेरी वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जामा धुर दे रामा तेरा नज़री आए भेस, भेख अवल्ला नूरी अल्ला समझ कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले जन भगत सूफ़ी सन्त फ़कीर लै वेख, वक्खरा हो के आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दवारा तेरा धुर दा देस, दरगाह साची मुकामे हक हक हकीकत वाली आदि जुगादि इक्को इक्क पढ़ाईआ।

★ २७ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ कांशी राम दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

४५
२०

सति धर्म कहे प्रभ सृष्ट सबाई रही रो, नेत्र नैण नीर वहाईआ। तेरा भेव ना दस्से को, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। माया ममता तेरे नालों कीता निर्मोह, मुहब्बत हक ना कोए कमाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया करे धरोह, दग़े फ़रेब नाल लड़ाईआ। तेरे दवारे दी देवे कोई ना साची सो, संदेसा धुर ना कोए सुणाईआ। काया मन्दिर अंदर होवे कोई ना लो, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। पंच विकार बणा के गरोह, धक्का सब नूं रहे लगाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार तेरे नाल सके कोई ना छोह, पारब्रह्म मेला मेल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म ढहि प्या सरनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ दीन दुनी रही कुरला, कर्म कुकर्म ना कोए बदलाईआ। साचा मिले ना कोए मलाह, खेवट खेटा रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को तेरी ओट रहे तका, दो जहान ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देण सलाह, धुर संदेसा इक्क अलाईआ। करनी दा करता कुदरत दा मालक निरवैर पुरख जावे आ, वेस अवल्लड़ा रूप धराईआ। जिस दा लेखा लिखे कोई ना कलम शाह, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां पकड़े बांह, भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सच करे न्याँ, अदल इन्साफ़ आपणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति धर्म तेरा लेखा वेख

वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सृष्टी मारे तेरे नाम दा नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साचा दिसे ना कोए मनारा, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। किरपा कर नर निरँकारा, शाह सिक्दारा इक्को तूंही नज़री आईआ। कलयुग मेट धूआँधारा, साचा चन्द दे चमकाईआ। तेरे चरण कँवल नमस्ते निमस्कारा, निउँ निउँ लागां पाईआ। तेरा नाम खण्डा आदि जुगादि सदा दो धारा, गुरमुख मनमुख दोवें वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्श हक प्यारा, प्रेम प्यार विच्चों आपणी मुहब्बत दे जणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया दे दे तलाक, साथ रहिण कोए ना पाईआ। धुर दी धार बख्श इख़लाक, रीती नीती नाल कुड़माईआ। निरगुण सरगुण बण सज्जण साक, धुर दा संग निभाईआ। जन भगतां अन्तर प्रीतम हो के खोल्ह ताक, परदयां विच्चों परदा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बख्श इत्तफाक, निफ़ाक नज़र कोए ना आईआ। कलयुग रैण मिटे अन्धेरी रात, रुतड़ी रुत्त तेरे नाल महकाईआ। अबिनाशी करते धुर दे मालक आण के पुच्छ वात, वाक्फकार हो के वेख वखाईआ। चार वरन अठारां बरन धर्म बणा इक्क जमात, रंग इक्को दे रंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ श्री भगवान बिन तेरी किरपा झगड़ा चुक्के ना ज़ात पात, जगत हालात ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे उत्ते आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब नूं पूरा विश्वास, विषयां विच्चों आपणा विशा दे बदलाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ भगतां दस्स आपणा धर्म, अधर्मी रहिण कोए ना पाईआ। उत्तम सृष्ट कर कर्म, निहकर्मी हो के वेख वखाईआ। सुफल कर माणस जन्म, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। अन्तर संसा रहे कोई ना भरम, द्वैत देणा डेरा ढाहीआ। नज़री आएं इक्को पुरख परम, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात वरन, बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब नूं इक्को दे सरन, शरनगत दे समझाईआ। निज नेत्र दर्शन तेरा करन, दोए लोचण पेख वज्जे वधाईआ। तेरे नाम दी मंज़ल चढ़न, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। चरण कँवल पल्लू धुर दा फड़न, सहारा इक्को दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां आपणा नाम दस्स सच, जूठ झूठ रहिण कोए ना पाईआ। भाग लगा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दे बणाईआ। इक्क उपजा ब्रह्म मत, विद्या धुर दी दे समझाईआ। अन्तर खोल्ह अक्ख, प्रतख नज़री आईआ। लख चुरासी विच्चों रख, रक्ख्या कर थाउँ थाँईंआ। सिर

समरथ रख हथ्थ, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तेरे चरण कँवल जावण ढठ्ठ, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। घर सरोवर वखा अठ्ठ सठ्ठ, अमृत आपणा नाम जणाईआ। दुरमति मैल दे कट, पतित पुनीत कर सफ़ाईआ। साचे नाम दा खोल्ह के हट्ट, गृह वणजारे लै बणाईआ। जन भगतां उबले कदे ना रत्त, सांतक सांत सति कर वखाईआ। बिन तेरे कोई ना जाणे मितगत, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कर हित, भगत सुहेले अंग लगाईआ। दिवस रैण वस चित, मन दी ठग्गी दे गवाईआ। सुहञ्जणी घड़ी कर वार थित, घड़ी पल आपणे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, घट मन्दिर कर रुशनाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ जन भगतां दे आपणे नाम दी रती, रतन अमोलक हीरे दे बणाईआ। धीरज सन्तोख दे सति सती, सतिवादी आपणी गंढु पवाईआ। नाम भण्डारा दे साचा लाहा लैण खट्टी, खटका लख चुरासी दे गवाईआ। निरगुण धार पढ़ा आपणी पट्टी, जगत मकतब दी लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण धार निरगुण जोत जगा अगम्मी बत्ती, सति सरूप कर रुशनाईआ। मालक बण धुर दा पती, पतिपरमेश्वर मेहर नज़र उठाईआ। मन वासना फिरे ना नस्सी, चार कुण्ट दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम पत रखीं, जन भगतां हो सहाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां थोड़ी जेही मिकदार, चुरासी विच्चों नज़री आईआ। जिन्हां दा हकीकत विच हक वसल दा इक्को यार, असल तेरा नूर नूर कर रुशनाईआ। मुहब्बत विच महबूब दे दीदार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। शरअ कलमयां तों रख बाहर, इबादत आपणी दे समझाईआ। वाहिद मेला होवे परवरदिगार, शाह महबूब तेरी सरनाईआ। दर ठांडे खोल्ह किवाड़, परदा ओहला देणा चुकाईआ। बिन तेरे साचा करे ना कोए प्यार, धुर दा संग ना कोए बणाईआ। भगत सुहेले तेरे ख़िदमतगार, जुग जुग सेव कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर किरपा आप निरँकार, निरगुण हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी धुर दे सिक्दार सिख्या आपणी देणी दृढ़ाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ जन भगतां बण आका, अकल दा मालक बेपरवाहीआ। आपणे मन्दिर दा खोल्ह ताका, कुफ़ल रहिण कोए ना पाईआ। आपणे नाम दा दस्स साका, शब्द कहाणी इक्क दृढ़ाईआ। सच धाम दा दस्स पाठा, पूजा इक्को दे समझाईआ। झगड़ा रहे ना अठ्ठ साठा, सरोवर धुर दे देणा नुहाईआ। मंज़ल बमंज़ल चुक्के वाटा, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। तेरा दरस होवे साख्याता, सिखर चोटी चढ़ के मंज़ल परदा देणा उठाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राता, नैण आपणे कर रुशनाईआ। तूं साहिब स्वामी साचा, सतिगुर इक्को इक्क अख्वाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी बदलदी रही गाथा, अदली हो के आपणा अदल कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बण राखा, रखक हो के वेखणा थाउँ थाँईंआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ जन भगतां दे नाम सहारा, सहायक इक्को नज़री आईआ। जगत जहान कर पार किनारा, नईआ नौका आपणा नाम चलाईआ। साचा मन्दिर दस्स दवारा, सचखण्ड बहि के खुशी मनाईआ। दीआ बाती निरगुण जोत कर उज्यारा, दर ठांडे डगमगाईआ। अमृत जाम दे ठांडा ठारा, रस निजर इक्क झिराईआ। शब्द नाद दे सच्ची धुन्कारा, अनरागी राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अंध्यारा, अज्ञान अन्ध रहिण ना पाईआ। तेरा दिसे हक दवारा, हकीकत विच तेरा नूर नज़री आईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सच्चे सिक्दारा, धुर फ़रमाना देणा सुणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त इक्को तूंही नज़री आईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां नाम कर उज्यारा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड तेरा घर सच्चा दरबारा, दवारा इक्को इक्क देणा वखाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे प्रभ जन भगतां आपणे नाम दी दे मस्ती, खुमारी धुर दी दे चढ़ाईआ। आपणी दस्स अगम्मी हस्ती, हस्त कीट विच्चों नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया जन भगतां अंदरों नस्सदी, भज्जे वाहो दाहीआ। आवाज़ निकले तूंही तूं तेरे जस

दी, तेरा नाम ढोला गाईआ। नींद खुल्ले अंदरली अक्ख दी, परदा ओहला दे चुकाईआ। तेरी कथा कहाणी लग्गे सच दी, सच सच दे समझाईआ। सोभावन्ती देह होवे काया माटी कच्च दी, कंचन गढ़ दे बणाईआ। मन वासना ना फिरे नच्चदी, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। धार दरस्स प्रभू प्रतख दी, स्वच्छ सरूपी आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति कहे प्रभ भगतां अंदरों खोलू परदा, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। तैनूं आपणे मन्दिर वेखण चढ़दा, घर स्वामी हो के वेख वखाईआ। सच दुआर दा बण बरदा, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं मालक घर घर दा, बिन तेरे गृह सोभा कोए ना पाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी नरैण नर दा, नर हरि तेरी इक्क सरनाईआ। सति कहे मैं निउँ निउँ चरण कँवल सीस धरदा, जगदीस संग बणाईआ। बिन भगतां तेरा नाम कोई ना जपदा, लोकमात ढोला ना कोए गाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया झगड़ा मेट दे पप दा, पतित पुनीत दे बणाईआ। बिन तेरे पैज कोई ना रखदा, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, बिन तेरे भगतां काया खेड़ा कदे ना वसदा, रुत्त बसन्त ना कोए सुहाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ हरभजन कौर दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ★

सति धर्म कहे प्रभ साचे भगत (लैण) तेरा नाम, बिन भगतां निरँकार ना कोए वड्याईआ। तेरे प्यार दा पीवण जाम, हकीकत वेख खुशी मनाईआ। तेरा संदेसा देवण तमाम, तमअ विच्चों सृष्टी बाहर कढाहीआ। बिन पैसे टक्यों बण गुलाम, तेरी चाकरी सेव कमाईआ। चरण कँवल रखण ध्यान, सिर सजदयां विच निवाईआ। साबत धर्म रख ईमान, जगत दुःख सुक्ख तेरी झोली पाईआ। योद्धे सूरबीर बण बलवान, जगत समाज नाल (करन) लड़ाईआ। इक्को ढोला तेरा गाण, गा गा खुशी मनाईआ। नाता तोड़ जगत जहान, मेहरवान तेरी ओट रखाईआ। चरण कँवल कर इश्नान, अठ्ठ सठ्ठ पन्ध मुकाईआ। तैनूं मन्नण इक्को काहन, दूजा कन्त ना कोए हंढाहीआ। तेरे दवारे करन बिसराम, सच सिँघासण सोभा पाईआ। बिन तेरी महिमा होर करन ना कोए कलाम, कलमा धुर दा ढोला गाईआ। कदमबोसी विच सलाम, सही सलामत तेरी सेव कमाईआ। तेरे सिर ना कोए एहसान, उजरत मंग ना कोए मंगाईआ। किरपा कर वड मेहरवान, सति धर्म तेरी झोली डाहीआ। साचे भगतां दे दान, अनमुल्ल आप वरताईआ। निरगुण नूर कर महान, जोत जोत नाल मिलाईआ। आपणी दरस्स पहचान, परदा

दे उठाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े कर परवान, परवाने धुर दे लै बणाईआ। जिस्म दा इस्म बण जजमान, मालक हो के हो सहाईआ। बिन तेरी किरपा काया बस्ती दिसे वैरान, वैरी घर विच करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी मंज़ल दस्स आसान, घर स्वामी ठाकर मिले श्री भगवान, अग्गे हो अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड फ़ैज पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगतो सतिजुग दी रखो आस, असल रूप सब नूं नज़री आईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, श्री भगवान दया कमाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, दो जहानां डगमगाईआ। कूड़ी क्रिया करे घात, जूठ झूठ दए गवाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चमकाईआ। आत्म परमात्म दस्से साची गाथ, सोहँ ढोला हक पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ के आपणा नात, रंग इक्को दए रंगाईआ। झगड़ा रहे ना दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊँच नीच ना वण्ड वण्डाईआ। नाम भण्डारा देवे धुर दी गाथ, अनमुलड़ी दौलत आप वरताईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी रखणा याद, यादाशत साची लैणी बणाईआ। सो सुणे आप फ़रयाद, मातलोक वेख वखाईआ। वस्त अमोलक देवे दाद, ख़ाली झोली सर्ब भराईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। गुरमुख हँस बुद्धी रहिण ना देवे कोई काग, कागों हँस दए बणाईआ। धुर दे नाम दी मारे अगम्मी आवाज़, शब्दी राज़ आप खुल्हाईआ। काया खेड़ा होण ना देवे बरबाद, आबाद आपणे नाल कराईआ। बिन रसना जेहवा अमृत देवे स्वाद, बूँद स्वांती आप चुआईआ। तन माटी ख़ाकी रहिण ना देवे कोई विवाद, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। हयाती नूं बदलण वाला देवे आब, जाम धुर दा इक्क प्याईआ। झगड़ा मुका के पुन्न सवाब, साचे दर दए वड्याईआ। धुर दे हुजरे दस्से करना आदाब, डण्डावत बन्दना आपणी दए समझाईआ। इक्को नाउँ निरँकारा दस्से वाहिद, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। सति धर्म करे आइद, काइदा कानून ना कोए बदलाईआ। जन भगतां समझावे सच मुफ़ाइद, मुफ्त मुफ़लिसां आप वरताईआ। धुर दा हुक्म कर राइज, राजन राज आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कर्म कांड दा कढ्ढ के अन्त नताइज, नतीजा गुर अवतार पैगम्बरां दए सुणाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले थोड़े वेख के लायक, बरखुरदार आपणी गोद बिठाईआ। शब्दी सतिगुर हो के करे हमायत, हमसाजण हो के मेल मिलाईआ। सच दवारा बख्शे अनायत, रहमत आपणी झोली पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सुणे ना कोए शकायत, शक विच वेखे सर्ब लोकाईआ।

चार जुग दे नामां दी गुर अवतार पैगम्बरां वेखे नुमाइश, हिसयां विच हिस्से दए दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल कर पैमाइश, पैदाइश वालयां दा लेखा दए मुकाईआ। साची मंज़ल दस्से हक रहाइश, रहिणा सहिणा इक्को दए समझाईआ। जित्थे मन वासना कदे ना आवे तैश, गुस्सा ग़म ना कोए सताईआ। जन भगतां होण ना देवे नालायक, नालश अंदरों बाहर देवे कढाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा सब दी कर के अज़माइश, इष्ट दे मालक वेखे थाउँ थाँईंआ। गुरमुखां आपणे घर दी कर पैदाइश, दर दवारे देवे माण वड्याईआ। साची पट्टी पढ़ा के दस्से इक्क जमायत, अवल दोम सोम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं एका हुक्म करे हदायत, हुजरयां अंदर मुजरा ना कोए लगाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ हुक्म सिँघ दे गृह पिण्ड फ़ैज़पुर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ अमृत दे आबेहयात, हयाती जगत दे बदलाईआ। सच दवारयों बख्श नजात, नछावर आपणा आप कराईआ। सदा सुहेला हो के दे साथ, संगी धुर दा बण के बेपरवाहीआ। लहिणा देणा वेख मस्तक माथ, पूरब लेखा दे चुकाईआ। सर्ब गुणां समराथ, सर्ब स्वामी तेरी वड वड्याईआ। साची मंज़ल पूरी कर दे घाट, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरी जात, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र उठा श्री भगवान, भाग सब दा दे बणाईआ। गुरमुख तेरे बच्चे बाल अंञाण, बुद्धी वाली ना कोए चतुराईआ। चरण प्रीती दे धुर दा दान, दानशमंदां विच्चों दाना आपणे लै प्रगटाईआ। सच दुआर बख्श माण, अभिमान अंदरों दे कढाहीआ। तेरा नाम अगम्मी सुणन बिनां कान, राग आपणा दे जणाईआ। सच दवारा वखा अगम्मी मकान, जिस मुकाम विच निरगुण जोत करें रुशनाईआ। तेरा सच सिँघासण शब्दी धार वेखण आण, तत्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। मंज़ल चढ़ के होण परवान, परम पुरख आपणे विच लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सच दुआर एकँकार भगत सुहेले धुर दी मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दे नाम वक्खरा अनडिठ, जगत विद्या हथ्थ किसे ना आईआ। बिन अक्खरां अक्खर दे लिख, लेक्खयां तों परे आपणा लेखा दे समझाईआ। जिधर तक्कीए निरगुण धार आवें दिस, दहि दिशा तेरा नूर होवे रुशनाईआ। तूं मालक बण धुर दा पित, पिता पूत गोद लैणे उठाईआ। जन भगतां कर आपणा हित, हरदम तेरा नाम ध्याईआ। सिख्या अंदर बणा लै धुर

दे सिख, सख्ती नाल आपणा हुक्म मनाईआ। करवट लै बदल ला पिठ्ठ, सनमुख हो के दर्शन दे वखाईआ। तेरा नाउँ अबिनाशी करता कहिंदे नित, नवित आपणी कार कमाईआ। सर्ब स्वामी वस चित, चेतन सुरती दे कराईआ। तूं पार उतारें जिस, वेद पुराण ओसे दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ आ जा काया मन्दिर गृह, घर ठांडे वज्जे वधाईआ। तेरे नाम दी लग्गी लय, लायक नालायक लै बणाईआ। साडे कोल नहीं कोई शै, शहिनशाह ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। इक्को तेरा रखदे भय, भउ विच बैठे सीस झुकाईआ। पंच विकारा गढ़ हँकारा नर निरँकारा अंदरों कर दे खै, खै़रखाह हो के आपणा संग निभाईआ। तेरा नाम निधाना इक्को अंदर रहे, रहिबर हो के रस्ता दे वखाईआ। सच संदेसा धुर दा कहे, हुक्म हाकम आप जणाईआ। झगड़ा मुका दे त्रैगुण त्रै, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। आपणी शक्ती दस्स दे शवै, शंकर ब्रह्मा शिव बैठण सीस निवाईआ। कूड़ी क्रिया करदे लै, भगतां संग रहिण ना पाईआ। इक्को याद तेरी रहै, याददाशत देणी बणाईआ। जन भगत सुहेले रहे कह, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब नूं नाम भण्डारा वस्त दएं, दे दे आपणी ख़ुशी मनाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ जसवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड फ़ैज़पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण ना तरसा, तड़प विच ना रख जुदाईआ। दयाल हो के दया कमा, दीन आपणे नाल मिलाईआ। पिछली आदत दे बदला, बदला सब दा दे चुकाईआ। गुरमुख साचे लै उठा, घर घर अंदर वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा गवाह, पूरब दी शहादत दे भुगताईआ। अग्गे आपणे लेखे लगा, समां समाप्त पिछली खेल वखाईआ। तेरा निशाना वेखीए नवां, नौवां सत्तां वज्जे वधाईआ। कूड़ा लालच रहे ना राअ, तमअ हरस हवस ना कोए तड़फाईआ। भाग लगा काया माटी चम्मां, चमन गुलशन आपणा दे महकाईआ। तेरी सेज सुहञ्जणी सवां, हरिजन साचा ख़ुशी मनाईआ। सचखण्ड दुआर सदा रहवां, बिन तेरे दूजा नज़र कोए ना आईआ। चरण कँवल सरनाई साची बहवां, भूमिका इक्को सोभा पाईआ। नित तेरा ढोला कहवां, गा गा शुकर मनाईआ। तेरे प्रकाश नाल जगा आपणी शमां, दीपक दीप डगमगाईआ। वस्त अमोलक तेरे दर तों लवां, ख़ाली झोली देणी भराईआ। मेहरवान वेखीं किते कर ना देवीं पर्‍रां, नाता आपणे नालों तुड़ाईआ। तेरे चरण कँवलां बलिहारी बलिहार जावां, जमां तों लैणा छुडाईआ। तेरा नाम निधाना गावां नाल चावां, चाओ

घनेरा देणा वखाईआ। गलवकड़ी पावां बिन हथ्थां बाहवां, अंगीकार कर के आपणे अंग लगाईआ। विछोड़े विच निकलण ना देवीं हावां, हमराह हो के आपणा संग बणाईआ। जन भगतां सदा तेरे मिलण दा दाअवा, दाअवेदार देणा बणाईआ। आपणे नाल तोल तोल के सावां, सांझे घर देणा वसाईआ। जित्थे जन्म कर्म दा पुछे कोई ना नावां, लेखा मंगण वाला नज़र कोए ना आईआ। सदा मंगण तेरीआं छावां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल जन भगत उठाउणे ज्यों पुत्तर गोद मावां, मुकाबला अवर ना कोए जणाईआ। मालक इक्को तेरी सेज रावां, दूजा अवर ना कोए हंढाहीआ। संग धुर दा तेरे संग निभावां, संगी साथी सर्ब तजाईआ। प्रेम प्रीती अंदर लै के अगम्मी लावां, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे जावां चावां चावां, ग़मी नेड़ कोए ना आईआ। तेरा प्रेम प्यार रहमत वाला सरूप इक्क वखावां, तेरे अग्गे परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रहिण ना देवीं दो जहान निथावां, अस्थान चरण कँवल देणा वखाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड फ़ैज़पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

५३
२०

जन भगत कहिण प्रभ साडी दूर कर थकावट, थक्के मांदे मंग मंगाईआ। साचे नाम दी कर सख़ावत, रहमत मेहर झोली पाईआ। मन दी अंदरों मेट बग़ावत, झगड़ा करे ना कूड़ लड़ाईआ। आपणा नूर कर सही सलामत, समें दे विछड़े मंग मंगाईआ। प्यार मुहब्बत दे अगम्मी नयामत, तोहफ़ा यकतरफ़ वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर कयामत, कामल मुर्शद तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। जन भगत कहिण प्रभ सारे गए थक्क, अग्गे बल रिहा ना राईआ। विकारी नक्कों ना लथ्थी नथ्थ, कुटम्ब कूड़ ना कोए मुकाईआ। कर कर थक्के बहुता हठ, हठी हो के जोग कमाईआ। पाँधी बण के रहे नठ्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। साडे रिहा कोई ना वस, चली ना कोई चतुराईआ। बुद्धी वाली कर के बस्स, तेरी ओट तकाईआ। हिरदे अंदर वस, हरि मालक बेपरवाहीआ। तेरे चरण कँवल रहे ढठ्ठ, नाता छड्डया ख़लक पराईआ। आपणे खाते घत्त, आप आपणे नाल मिलाईआ। जुग जुग तेरे नाल आईए वत, वतन बेवतन तेरी ओट रखाईआ। तूं साहिब स्वामी कमलापति, पतिपरमेश्वर शहिनशाहीआ। लेखे ला साडी रत्त, रतन अमोलक हीरे लै बणाईआ। सच दवारे दी दे मत, मतयां विच ना कोए रखाईआ। इक्को तेरा नाम लईए रट, बिनां रिटन तों राईट देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर खेल पुरख समरथ, आसा

सब दी पूर कराईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरे देण दा आया मौका, मुक्के कूड़ी वस्त पराईआ। जन भगतां अंदरों साफ़ कीता चौंका, पवित्र आपणा आप तेरे नाल बणाईआ। अमृत तेरा नाम तरौंका, पवित्र जल धार वहाईआ। तूं आउणा नाल शौंका, सूरबीर हो के फेरा पाईआ। गोबिन्द दा पूरा कर दे ढईए वाला ढौंका, लेखा अगला आपणे नाल बणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सुहा दे आपणे प्यार वाला पटना पौंटा, जित्थे छप्पर छन्न दूजी अवर ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन तेरी किरपा जन भगत सच दुआर कोए ना पहुंचा, सचखण्ड तेरा दरस कोए ना पाईआ।

★ २८ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ समा दे गृह पिण्ड डेड़ ज़िला गुरदासपुर ★

आत्मा निरगुण अगम्मी नूर, मैटीरीअल नज़र कोए ना आईआ। तत्तां नाल खेलणा जिस दा दस्तूर, कुदरत दे कादर दिता बणाईआ। उह चतुर सुघड़ ना मूढ़, इक्को रूप रही समाईआ। ना करनी दे फल अंदर होवे मजबूर, सज़ा कर्म ना कोए भुगताईआ। जिसदा मालक हज़रत हज़ूर, शहिनशाह बेपरवाहीआ। ओस दा मेला आपणे नाल रखे ज़रूर, तन वजूद जगत लोकमात कायनात कुड़माईआ। आपणी मुहब्बत दा दे सरूर, सद खुशीआं विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्मा वेस ना कोए बदलाईआ। आत्मा निरगुण रूप निराकार, प्रकाश प्रकाश विच्चों नज़री आईआ। जिस दा मालक इक्क सरदार, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। जो वेखे विगसे वेखणहार, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जन्म कर्म तों कर के बाहर, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी करन पुकार, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। आत्मा दा कथनी वाला नहीं इज़हार, विद्या विच ना कोए बणाईआ। ख़लक दा ख़ालक मख़लूक दा मालक जाणे भेव न्यार, अर्शे अज़ीम तालीम आपणी इक्क जणाईआ। फ़र्शे ख़ाकी ना कोए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म आपणा रंग वखाईआ। आत्म कदे ना होवे विनास, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। नूर नूर दा सच प्रकाश, रूहे रवां नज़री आईआ। खेल वेख पृथ्मी आकाश, ज़िमीं असमान भेव चुकाईआ। परवरदिगार सदा साथ, सगला संग बणाईआ। सदा इक्को (नूं करे) आदाब, नमसतयां विच सीस झुकाईआ। तन माटी पहन के ख़ाक, वजूद विच वसल करे यार खुदाईआ। मुहब्बत विच सदा वजाए रबाब, अहिबाब मिले चाँईं चाँईंआ। जित्थे नहीं कोई सवाल, नहीं कोई जवाब, रसना रस नहीं कोई स्वाद, अलिफ़ ये वाला नहीं अल्फाज़, विद्या वाली नहीं किताब, हिन्दसयां वाला

नहीं हिसाब, आत्मा दा उह ख़िताब, जित्थे रसना जेहवा बत्ती दन्द हो जाए लाजवाब, महिराब महबूब मिल के आपणा झट लँघाईआ। जगत विद्या दा (नहीं) फ़साद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आत्म अन्तर निरंतर निरगुण नूर दए समझाईआ। आत्मा ना जम्मदी ना मरदी, जीवण मरन रूप ना कोए वटाईआ। सदा भिखारन परवरदिगार दे दर दी, दरगाह साची सीस निवाईआ। बिन अक्खरां तों भेजे आपणी अर्ज़ी, आरज़ू आपणी दए समझाईआ। हुक्में अंदर पंज तत पहन के (वरदी), फ़र्ज धुर दा पूर कराईआ। दरवेश बणे ओस घर दी, जित्थे हमेश जल्वागर नूर खुदाईआ। वाकिफ़कार नहीं लिखण पढ़न दी, इलम तों परे आपणा राग सुणाईआ। जिस दे कोल मंज़ल हक हकीकत चढ़न दी, मुकामे हक सजदा कर कर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल नाल खिलाईआ। तन माटी ख़ाकी रह जावे जगत, दफ़न कफ़न नाल कराईआ। नाता जगत वाला जाए तुट्ट, ख़लक नालों होए जुदाईआ। आपणी ओस नाल मौले रुत्त, जो रुतड़ी दा मालक बेपरवाहीआ। जिस तों विछड़ी ओसे नाल मिल के होवे खुश, खुशीआं वाला ढोला गाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक आपणी धारा लए चुक्क, निरगुण नूर आपणे नूर विच मिलाईआ। सब दा मालक सही सलामत वेखे झुक, दो जहानां परदा दए उठाईआ। जन्म तों पहलां मरन तों बाद आत्मा नर्क स्वर्ग दा जाणे कोए ना सुख दुःख, भुक्ख प्यास दर दे मालक ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, परम पुरख परमात्म आत्म आपणे रंग रंगाईआ।

सदी चौधवीं दे के गए फ़रमान, हज़रत हो के सर्ब जणाईआ। नज़रीआ वेख ज़िमीं असमान, परदा ओहला भेव चुकाईआ। करे खेल धुर अमाम, परवरदिगार धुरदरगाहीआ। दीन दुनी विगड़े निज़ाम, नौबत हक ना कोए वजाईआ। साची मंज़ल चले ना हक इस्लाम, इस्म आज़म नूरे नज़र ना कोए टिकाईआ। खुदी हँकार तकब्बर कर के कत्लेआम, कातिल मक्तूल दोवें होण शुदाईआ। जलवा दिसे ना किसे मेहरवान, मुहब्बत विच महबूब मिलण कोए ना जाईआ। मुल्लां शेख़ रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़न कुरान, काया कुऱे दा भेव कोए ना पाईआ। अक्खरां दी ला के बैठे मीजान, रूहे रवां ना कोए शनवाईआ। धुर दा सुणे ना कोए पैग़ाम, अगम्मी आवाज़ जाणे ना कोए अलाहीआ। सिफ्तां वाली करन कलाम, कलमे हकीकी दा भेव ना कोए समझाईआ। तन वजूद दा ग़ुसलखानयां विच करन हमाम, अन्तर रूह पाक ना कोए वखाईआ। जगत वासना करन बिसराम, सुहञ्जणी सेज ना कोए वड्याईआ। साची दरगाह करे ना कोए कयाम, आपणी कीमत ना कोए पवाईआ।

दीनां मज़्बां विच हो बदनाम, बदी खुदी आपणे नाल रलाईआ। कायनात दा विगड़ जाए निज़ाम, साचा सबक ना कोए समझाईआ। धुर दा हुक्म ना समझे अवाम, शरअ शरअ करे लड़ाईआ। ओस वेले खुद खुदा होवे निगाहबान, करीम अज़ीम आपणा हुक्म वरताईआ। नूरे रब्बी नौजवान, अलाही हुक्म आप वरताईआ। तबी बण के तबीअत वेखे विच जहान, इन्सानां विच्चों इन्सान लए उठाईआ। हक महबूब दा दे ज्ञान, गुरबत विच्चों उल्फ़त लए प्रगटाईआ। हुक्में अंदर हो के हुक्मरान, अमर आपणा हुक्म जणाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैगम्बर सारे होण हैरान, हैरानी विच दिसे लोकाईआ। इक्को सूरबीर आवे मर्द मर्दान, मददगार इक्को नाल रखाईआ। कायनात चार कुण्ट करे ऐलान, धुर दा हुक्म हक सुणाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सुणाए इक्क पैग़ाम, पैगम्बरां दा पैगम्बर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदी चौधवीं चौदस चन्द रुशनाईआ। सदी चौधवीं देवे होका, कूक कूक सर्ब सुणाईआ। दीन दुनी समझो आपणा मौका, वेला वक्त दए गवाहीआ। साचा कलमा सुणो धुर सलोका, सुल्हकुल रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। हज़रत मिरज़ा साहिब दे मुतल्लक एह विचार, जो बुद्धी तों परे करन पढ़ाईआ। जो खुद खुदा दा करे इज़हार, ज़ाहर ज़हूर सिफ्तों वाली पढ़ाईआ। उस दे नाल उस दी सांझी गुफ़तार, जो गुफ़त शनीद हुक्म सुणाईआ। मंज़ल बमंज़ल करदा रहे ख़बरदार, ग़फ्लत निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। नूर दा नूर बणया रहे मददगार, वली अलाह आलमीन आलम दा वाहिद इक्क समझाईआ। मुहब्बत रखदा रहे अगम्मे यार, याराना इक्को नाल निभाईआ। जो ज़माना हाल माज़ी रिहा विचार, मुसतकबिल हुक्म रिहा समझाईआ। बिनां अक्खरां तों खतो किताबित करदा रिहों वारो वार, दिवस रैण घड़ी पल वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पैगम्बरां राहीं खुदा खुद करदा रिहा सदा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। जो सदीआं दा सदमा रिहा निवार, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। ओसे मुर्शद दे चरणां जाओ बलिहार, जिस मुर्शद ने मुद्दा दिता समझाईआ। जो खुद खुदा दा तल्बगार, तालब इलमां करे पढ़ाईआ। ओस दा दीदा दानिस्ता करो दीदार, कदमबोसी कर के आपणी खुशी मनाईआ। ओस दा वास्ता ओस नाल निरँकार, जो निराकार अख्वाईआ। महल अटल उच्च अगम्म अथाह दरगाह साची मुकामे हक वसे सचखण्ड दवार, सोभावन्त आपणी सोभा पाईआ। सहिजे नाल हज़रत मिरज़ा मिल्या आण, जिस दी जगत अक्खां ना करन पहिचाण, जलवा समझ ना सके ज़िमीं असमान, जिस दे अंदर नूह नदी तूफ़ान, खेल अंदर जगत जहान मेल अंदर बख्शे होए इन्सान, रहमत विच मुहब्बत देवे दान, कयामत विच आ के करे पहचान, सही सलामत आपणे विच मिलाईआ। ओह मिरज़ा

महबूब, हक हकीकत रिहा दृढ़ाईआ। वसे अर्श उच्च अरूज, आलीशान मन्दिर रिहा सुहाईआ। जित्थे सदा रहिणा महिफ़ूज, कदमां विच बहि के खुशी मनाईआ। सब ने छड्ड जाणा कलबूत, खाकी तन संग ना कोए निभाईआ। जिधर वेखो ओथे मालक मौजूद, मौजूदा हो के सब नूं रिहा समझाईआ। जिस दा वजूद तों परे वजूद, वजूद दी वज़ह जगत ना कोए जणाईआ। ओस दा तुहाडे हिरदे अंदर सबूत, साबत ईमान इक्को नजरी आईआ। ओस दी दीन मज़्ब वाली नहीं कोई हदूद, शरअ तों परे शायद ओहो नजरी आईआ। जिस दा खेल शरकन गरबन शमाल जनूब, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हक मंजल मक्सूद, मकासद सब दा वेख वखाईआ। मिरजे दा सदा तक्कदे रहो मिज़ार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सुत्यां जागदयां दिन्दा रहे दीदार, दरस विच दीद करे शनवाईआ। वाहिद दा वाहिद यार, यार दा याराना सूफ़ीआं विच्चों नज़री आईआ। मुहब्बत दा प्यार प्यार दा सरदार, सरदार दा सिक्दार सति दा मालक सोभनीक सोभा पाईआ।

★ ३० अस्सू शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म कहे मैं भगतां तक्कां दर, घर ठांडा वेख वखाईआ। जित्थे मिले पुरख अकाल नरायण नर, दो जहानां वाली बेपरवाहीआ। नाम निधाना श्री भगवाना देंदा रहे वर, धरनी माता श्री भगवान आपणा आप जणाईआ। काया माटी साचे मन्दिर वेखे चढ़, महल अटल निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सुहाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत प्रीती अंदर लए फड़, आत्म परमात्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार आपणी खेल रिहा कर, करनी दा करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति दवारा इक्क सुहाईआ। सति धर्म कहे मैं जन भगतां वेखां घराना, गहर गम्भीर दिता बणाईआ। जित्थे दीपक इक्क नुराना, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। प्रेम प्रीत इक्क तराना, शब्दी शब्द नाद सुणाईआ। आत्म परमात्म साचा गाणा, गा गा खुशी मनाईआ। दीपक जोत जगे महाना, निरगुण नूर डगमगाईआ। साचा मन्दिर सोहे मकाना, महबूब धुर दा नज़री आईआ। जिस दा हुक्म होए मर्दाना, चार कुण्ट दहि दिशा आप जणाईआ। सो खेल करे श्री भगवाना, भगवन हो के वेस वटाईआ। जन भगतां देवे साचा दाना, दौलत धुर दा नाम वरताईआ। सच दवारा दस्स के इक्क टिकाणा, मंज़ल पिछली दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति दवारा इक्क सुहाईआ। सति धर्म कहे जन भगतां होए दुआर

५८
२०

सुहावणा, किरपा करे आप निरँकार। जिन्हां आत्म परमात्म इक्को ढोला गावणा, दूजा रसन ना कोए जैकार। साचा इष्ट इक्क मनावणा, नाता तोड़ दुनी संसार। पुरख अकाला इक्क ध्यावणा, चरण कँवल सच निमस्कार। साचा मन्दिर इक्क सुहावणा, निरगुण गृह वेख अपर अपार। दीआ बाती इक्क जगावणा, कमलापाती देवणहार। साची गाथा इक्को गावणा, समरथ पुरख तूं ही निरँकार। दूजे दर ना सीस झुकावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। सति धर्म कहे जन भगतां गृह सुहञ्जणा, हरि करता आप सुहाईआ। जिस दवारे हरि जू लँघणा, घर ठांडे डेरा लाईआ। प्रेम प्रीती देवे सच अनन्दना, परमानंद इक्क जणाईआ। निरगुण सरगुण बणे सज्जणा, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सति धर्म कहे मैं हो के वेखां नीवां, निउँ निउँ ध्यान लगाईआ। जन भगतां माण मिले विच्चों जीवां, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीवां, रविदास चमारा दए गवाहीआ। नाम निधाना सच दवारे ओन्हां मिल के पीवां, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। चरण कँवल सरनाई थीवां, माण मोह अभिमान मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, मेलणहार वड्डी वड्याईआ। सति धर्म कहे मैं भगतां वेख होया खुशहाल, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जिन्हां मिल्या दीन दयाल, बन्धन दीन रिहा कटाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। साचा गृह सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। दीवा बाती कमलापाती बाल के बेमिसाल, जगत मिसल ना कोए जणाईआ। साचा मार्ग दे सुखाल, सिख्या इक्को करे पढ़ाईआ। जिन्हां पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सति धर्म कहे मैं ओन्हां वेखां हाल, जो आपणी हालत गए बदलाईआ। परम पुरख दे बण के लाल, गोबिन्द शब्दी गोद सुहाईआ। जन्म जन्म दी लेखे पाए घाल, पूरब लहिणा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। सति धर्म कहे मैं वेख्या भगतां मन्दिर, गुरमुख सोहणा डेरा लाईआ। कूड़ा दिसे कोई ना जंदर, खिड़की बन्द ना कोए कराईआ। मनुआ उठे ना दहि दिश बन्दर, वासना जगत ना कोए सताईआ। प्रकाश लभ्भे ना सूर्या चन्द्र, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अन्धेरा दिसे ना डूँघा खण्डर, नूर नुराना डगमगाईआ। सच दवारा इक्को मंगण, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। पुरख अकाल चाढ़ रंगण, तन वजूद तेरी झोली पाईआ। साचा ढोला दस्स छन्दन, राग नाद वज्जे बेपरवाहीआ। लख चुरासी आवण जावण रहे कोई ना बन्धन, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा सज्जण, साजण हो के हो सहाईआ। काया माटी भाण्डा बिन तेरी किरपा लोकमात कदे ना भज्जण,

भजन बन्दगी इक्को इक्क जणाईआ। आपणे नाम कंडे तोल के वज़न, कीमत करते लै पाईआ। धुर फ़रमाने अंदर फ़रमाना दे बदल, बदली आपणे हथ्थ रखाईआ। तूं भगत सुहेला इक्क इकेला आदि जुगादी करें अदल, अदालत तेरी नज़री आईआ। सब दी पूरी कर सधर, सधने तों परे दे वड्याईआ। सति धर्म कहे मैं जन भगतां लावां चन्दन, नाम टिक्के नाल वड्याईआ। जिन्हां दा लहिणा देणा हथ्थ सूरे सरबंगण, साहिब स्वामी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर सदा आदि निरँजण, जोत निरँजण तेरा नूर रुशनाईआ।

★ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

कत्तक कहे प्रभ भगतां लेखे ला कर्म, कुकर्मी रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रेम दा दस्स इक्को धर्म, अधर्मी रूप ना कोए वटाईआ। लेखे ला मानस देही जन्म, चुरासी गेड़ दे कटाईआ। भुलेखा कूड़ रहे ना भरम, भाण्डा भउ दे भन्नाईआ। भाग लगा काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। झगड़ा रहे ना किसे वरन, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। साची बख्श आपणी सरन, सरनगति इक्क समझाईआ। मार्ग दे तरनी तरन, तारनहार तेरी वड्याईआ। तेरा ढोला साचा पढ़न,
५६
२०
धुर दा नाम दे समझाईआ। शब्द अगम्मी मंज़ल चढ़न, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार तेरा दर्शन करन, नूर वेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कत्तक कहे प्रभ पूरब जन्म दे वेख ऋषी, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चौथे युग बणा अगम्मी सिक्खी, सिख्या नाम इक्क समझाईआ। जिस दी धार खंडिउँ तिक्खी, वालों निक्की समझ कोए ना पाईआ। सचखण्ड निवासी दे के आपणी चिट्ठी, हुक्म संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कत्तक कहे श्री भगवान, जन भगतां दे वड्याई। सति धर्म दा दस्स निशान, निशाने पिछले दे बदलाई। पूरब लेखा वेख मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाई। याद कर जंगल जूह बीआबान, बावन परदा रिहा उठाई। तेरा खेल दो जहान, जुग चौकड़ी हुक्म वरताई। कलयुग अन्त मार ध्यान, वेला वक्त दए गवाही। मेहर नज़र कर निगाहबान, महबूब हो के हो सहाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे बख्श माण वड्याई। सति दवारे बख्श दे दात, हरि करते तेरी ओट तकाईआ। निरगुण हो के दे साथ, सगला संग बणाईआ। मेहरवान पुरख समराथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। साचा ढोला दस्स गाथ, आत्म परमात्म इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा

वेख जगत, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। मेला मेल धुर दे भगत, भगवन हो के जोड़ जुड़ाईआ। लेखे ला आपणी रक्त, बूँद विच्चों बूँद स्वांती दे टपकाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवे तेरा फर्श अर्श, दो जहानां वज्जे वधाईआ। रिषीआं उत्ते कर तरस, तड़प पिछली दे बुझाईआ। तेरे हुक्म दा चले अगम्मी बरस, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। मेहर नज़र कहे प्रभ मेरे गुण निधान, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। कर किरपा दे दे दान, नाम निधान इक्क वरताईआ। बावन कर के गया ब्यान, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल होवे महान, अबिनाशी करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दे चुकाईआ। पूरब लहिणा चुक्के मात, पुरख अकाल दए वड्याईआ। बावन दस्स के गया गाथ, ढोला सच पढ़ाईआ। निरगुण हो के निरगुण वेख आपणी ज़ात, दूजा संग ना कोए जणाईआ। शिव जी तक्के उपर कैलाश, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मा करे तलाश, भज्जे वाहो दाहीआ। विष्नूं हो के दास, धुर दी सेव कमाईआ। पूरी कर आस, मनसा दे चुकाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कत्तक कहे जन भगतां वेख आप, आपणी दया कमाईआ। धुर दा बण साक, सज्जण नूर खुदाईआ। मन्दिर खोल्ह ताक, परदा अगम्म उठाईआ। नूर कर प्रकाश, जोती डगमगाईआ। शब्द अगम्मी नाद, धुर दा दे वजाईआ। पिछली कर याद, भविक्ख दए गवाहीआ। उजड़यां कर आबाद, खेड़ा दे सुहाईआ। रिषीआं सुण फ़रयाद, दर दवारे झोली डाहीआ। बदल दे समाज, झगड़ा दीन रहे ना राईआ। मानस जन्म कर काज, करनी करते आपणी कार कमाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत वखाईआ। घर स्वामी जगा चिराग़, जोती नूर डगमगाईआ। अंदर रहे ना वाद विवाद, कूड़ी क्रिया दे कढाहीआ। आपणी प्रीत अंदर कर विस्माद, बिस्मिल आपणे नाम कराईआ। परदा ओहला खोल्ह आग़ाज़, भरम रहे ना राईआ। तेरे चरण कँवल नमाज, सजदा इक्को इक्क जणाईआ। तूं ख़ालक प्रितपालक वाहिद, परवरदिगार नूर खुदाईआ। पूरा कर आपणा अहिद, कौल इकरार रहे जणाईआ। उह वक्त आ गया शायद, शाह पातशाह परदा दे उठाईआ। तेरा हुक्म होवे राइज, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ऋषी कहिण साडी करनी दा दे नताइज, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हुक्म समझाईआ। कत्तक कहे रिषीआं दा पकवान, कच्चउँ पक्का दे बणाईआ। जिन्हां दा मेला नाल भगवान, भागां विचों भाग दए समझाईआ। सुरती रहे ना कोई अंञाण, बुध बिबेक आप कराईआ। सच दवारे दे के माण, बख्शे चरण कँवल सरनाईआ। सच प्रीती दा

पकवान, पारब्रह्म प्रभ लेखे लाईआ। जिस दा रस विषयां वाला जाणे ना कोए इन्सान, रसना वण्ड ना कोए वण्डाईआ। करनी दा करता करे कल्याण, कलमयां तों बाहर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। कत्तक कहे पूरब ऋषी होए जमअ, शहादत जोती वाली भुगताईआ। जिन्हां दा जन्म होणा नवां, इक्को तारीख दए लिखाईआ। सारयां दा सांझा होवे समां, समाप्त कूड़ी वस्त पराईआ। लेखे ला के पवण स्वामी दमां, दमन आपणा आप कराईआ। झगड़ा रहे ना माटी चम्मां, मेला मेले धुरदरगाहीआ। रहे ना कोए नकम्मा, निकरमण नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां ने पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा ठाकर इक्को मन्नां, मन तों परे निरगुण हरे साचे दरे दरस दए दिखाईआ। दीन मज़्ब दा रहिण ना देवे बन्ना, हद्द हदूद जगत पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कत्तक कहे मैं आया तक्कण, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। की करे खेल पुरख समथन, निरगुण हो के वेस वटाईआ। की भगतां मार्ग आया दस्सण, निरवैर हो के करे पढ़ाईआ। किस दवारे आया वस्सण, सच मुकाम सोभा पाईआ। जगत जन्म दे विछड़े आया लभ्भण, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ। सन्त सुहेले बणा के सज्जण, साहिब आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। निज आत्म दे के परमानंदन, नर नरायण आपणा भेव खुल्हाईआ। दूजे दर ना कोए जाए मंगण, वस्त अमोलक आप वरताईआ। पुरख अकाल चाढ़ के रंगण, रंगत कूड़ी दए बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दस्स के छन्दन, सहिसा अंदरों दए कढाहीआ। जुग चौकड़ी टुट्टी आया गंढुण, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। जन भगतां काया मन्दिर आया लँघण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। धुर दा हुक्म दस्से निरँकार, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। ऋषीआं मंज़ल रहे ना कोई दुष्वार, पाँधीआं पन्ध दिता मुकाईआ। दर्दी हो के दर्द दए निवार, दुखियां दुःख गवाईआ। साची मंज़ल देवे चाढ़, जिस मंज़ल दा मालक इक्क अख्वाईआ। साचा दस्स के हरी दवार, हिरदा आपणा दए समझाईआ। जिस नूं समझे ना जगत संसार, बुद्धीवान ना कोए वड्याईआ। सद करनी करता करे खेल अपार, अपरम्पर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले मेल के आपणी धार, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। लहिणा देणा मुका सदा जुग चार, धुर दे हुक्म नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कत्तक किहा मैं आया भगतां कोल, आपणा पन्ध मुकाईआ। उच्ची कूक वजावां ढोल, ढोला गावां बेपरवाहीआ। जिस दा सदा अगम्मी तोल, तोलणहारा सृष्ट सबाईआ। सो भगतां रखे अडोल, डोले सर्ब लोकाईआ। दवारा इक्को खोल्ह, मन्दिर इक्को दए

वखाईआ। जिस दा भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, मुल्लां शेख़ समझ किसे ना आईआ। सो ख़ालक ख़लक खेल करे उपर धौल, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। तेरां सौ सतासी ऋषीआं दा पूरा कौल, इकरार तोड़ निभाईआ। प्रेम प्रीती पकवान अंदर खा के खट्टे मिट्ठे चौल, चाउ सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क जणाईआ। मार्ग कहे मेरा रस्ता एक, इक्को देणा जणाईआ। जन भगतां कर के बुध बिबेक, विवेकी धार देणी सुणाईआ। सति पुरख दी रखणी टेक, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी अवल्लड़ा भेख, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। सो साचे सन्तां धुर दे भगतां बदल देवे रेख, ऋषीआं देवे माण वड्याईआ। गुरमुखो जाओ आपणे देस, परदेसी रहिण कोए ना पाईआ। दर्शन दा लाहा इक्क विशेष, विषयां वाले पार कराईआ। प्रभ दा आउणा कदे ना होया हमेश, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा राह रहे वेख, नित नवित ध्यान लगाईआ। उह करनहारा सच्चा हेत, हितकारी इक्को शहिनशाहीआ। जिस कारण तुहानूं दिता भेज, सो भूमिका दिती सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क वखाईआ। सच दवारा वसदा, वसाए श्री भगवान। जो भगतां मार्ग दस्सदा, झगड़ा मुका ज़िमीं असमान। खुशीआं दे विच हस्सदा, शब्दी कर फ़रमान। ढोला गाओ आत्म परमात्म जस दा, दूजा अक्खर ना कोए ब्यान। भण्डारा लओ अगम्मी रस दा, जिस नूं चक्खे ना कोए ज़बान। तुहाडे लूं लूं अंदर रचदा, दिवस रैण निगाहबान। विछोड़े विच कदे ना नस्सदा, मेला सदा रहे भगत भगवान। उजल भाग होवे काया मट्ट दा, साढे तिन्न हथ्थ सोहे मन्दिर मकान। पुरख अकाल भेस शब्द अगम्मी जट्ट दा, विंगे टेडे सिध्धे करन वाला तरखाण। जगत स्वांगी रूप नट दा, समझे कोई ना पंज तत इन्सान। जिस दे कोल भण्डारा अगम्मी वथ दा, देंदा जाए हो मेहरवान। उह जुग जुग पैज रखदा, भगत सुहेला श्री भगवान। सच दवारे सदा वसदा, द्वारका वासी दए ब्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा ब्रह्म ज्ञान। कत्तक कहे ऋषीओ मैं तक्कां कद दा, कदीम ध्यान लगाईआ। मार्ग वेखां भगत भगवान यद दा, दूजा राह ना कोए तकाईआ। किस बिध सन्त सुहेले सद्द दा, पूरब विछड़े मेल मिलाईआ। सच दवारे आपे लँघ दा, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। झगड़ा मुका के कूड़ कुड़यारे गंद दा, सच सुच नाम समझाईआ। प्रकाश कर के गुरमुख चन्द दा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। वक्त सुहञ्जणा कर के प्रीती ठंड दा, विछोड़ा अग्न दए बुझाईआ। रस दे के आपणे अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। माण वड्याई कहे मैं भगतां जोगी, जोगी जोगीशर बैठे

ध्यान लगाईआ। हंगता वाले कोटन कर के रोगी, द्वैत विच दिते फसाईआ। जिन्हां नूं मिल गया धुर दा प्रीतम चोजी, चोज निराले रिहा वखाईआ। मैं ओन्हां दे दर दी खोजी, खोजण हो के भज्जां वाहो दाहीआ। जिन्हां दा ठाकर धुर दा मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिस दी याद करदे गए वेदी सोढी, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। भगतां खेलणा ओस दी गोदी, गोदावरी कन्ढ्ढा दए दुहाईआ। हरि दा भेव की पावण लोकी, चौदां लोक सार ना आईआ। बुद्धी कर ना सके सोची, समझ चले ना कोए चतुराईआ। जिन्हां दे अन्तर आसा इक्को लोची, लोचण तिन्हां दा दए खुल्हाईआ। जन भगतो साचे सन्तो तुहाडी शहादत पाउँदा जाए रविदास चमारा मोची, लेखा लिख लिख कलम शाहीआ। वेख्यो कोई विचार ना करयो रख के उंगल उत्ते ठोडी, तीवीआं वाला रूप वटाईआ। तुहाडी मंज़ल सब तों उच्ची चोटी, चेटक प्रभ दे नाल लगाईआ। जित्थे वासना रहे ना खोटी, खोटे खरे दए बणाईआ। जम्मू वाल्लयो तुहाडे पकवान दी खा के रोटी, पूरब लहिणा दए मुकाईआ। एह मिसल मिसाल जगत विच रह जाए मोटी, चार जुग सके ना कोए भुलाईआ। भगत भगवान दे सांझे बण गए गोती, वरन बरन ना कोए रखाईआ। दुरमति मैल सब दी गई धोती, जिन्हां मिली सच सरनाईआ। आत्म विछड़ी रहे कोई ना रोती, विछोड़ा दए कटाईआ। गुरमुख बणा के धुर दे माणक मोती, मणका मणके नाल जुड़ाईआ। सन्त सुहेला रहे कोई ना दोषी, निर्दोष दिते कराईआ। प्रभ दी मति ना हीण ना होछी, हुशियारी नाल गुरमुख लए तराईआ। सचखण्ड दवारे जन भगतां तादाद थोड़ी कदे होण ना देवे बहुती, बहुत्यां विच्चों थोड़े नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मंज़ल दस्स के सौखी, सुखाले आपणे घर पुचाईआ। कत्तक कहे मैं सुखल्ला वेख्या राह, रहिबर इक्को रिहा जणाईआ। सतिगुर शब्द बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। चार वरनां दे सलाह, शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। इक्को मिलो बेपरवाह, नाता तोड़ो जगत लोकाईआ। आवण जावण पन्ध लओ मुका, लख चुरासी लओ कटाईआ। राए धर्म ना दए सज़ा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। पुरख अकाल दी चरणी डिगे आ, जो आदम तों आदम लए उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लओ बणा गवाह, शहादत धुर दरबारे देण भुगताईआ। जो सच दवारे बैठे सीस निवा, नमस्ते कहि के शुकर मनाईआ। जे ओन्हां दा कहिणा गए भुला, कदे ना भुल्लो बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। कत्तक कहे प्रभ आपणा रंग रंग अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। करवट बदल बदल लै पिठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणयां नाल कर हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। ठगौरी कर कोए ना चित, चेतन सुरती दे कराईआ। मालक बण धुर दा पित, पिता पूत गोद बहाईआ। सच दवारे दे

सुख, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जगत रहे कोई ना दुःख, कूड़ दलिद्र देणा गवाईआ। आवण जावण जन भगतां पैंडा जाए मुक, मुकम्मल आपणे विच समाईआ। जो तेरे नाम दी गाउँदे तुक, सोहँ ढोला शहिनशाहीआ। ओनूां आ के घर घर पुछ, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ। जे किरत कर्म कर के तैथों गए रुस, मेहरवान हो के लै मनाईआ। जे रस्ता गए घुथ, मार्ग दे समझाईआ। तेरे भगत सुहेले तेरे नादी सुत, सुत्तयां लै जगाईआ। तेरे नाल मौले ओनूां रुत, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। तूं साहिब अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म परम पुरख अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां परदा ओहला रहिण ना देणा लुक, लुकयां नूं आपणे नाल मिलाईआ।

★ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सति धर्म कहे प्रभ दिता हलूणा, हलचल धुर दी दिती मचाईआ। कलयुग तपदा वेख्या धूणा, अग्नी अग्ग रिहा लगाईआ। जगत साध दिस्या ऊणा, भरपूर भण्डार ना कोए भराईआ। जन भगतां साचे नाम विच बदल के कूणा, आत्म परमात्म दिता समझाईआ। माण दे के दो जहान दूणा, द्वैत विच्चों बाहर कढाहीआ। लेखा मुका के जगत अकशूणा, खूणीआं वाला डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक्क वखाईआ। सति कहे प्रभ हुक्म दिता फ़रमान, फ़ुरनयां तों बाहर कढाहीआ। धर्म दा दस्स निशान, निशाने दिते भुलाईआ। आत्म परमात्म दा दे ज्ञान, ज्ञानीआं दा लेखा दिता मुकाईआ। सच्चा मार्ग दस्स सुजान, गुरमुख सुघड़ दिते बणाईआ। भरमे भुल्ले ना विच जहान, जहालत विच कदे ना आईआ। चुरासी दा मूल जामा इन्सान, हैवान बुद्धी ना कोए रखाईआ। सुणन वाले सरवण कान, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। खेल वेख ज़िमीं असमान, हैरानी गगन मण्डल छाईआ। हुक्म दे के धुर दा हुक्मरान, फ़रमान आपणा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आप उठाईआ। सति कहे मैं वेखण लग्गा अग्गा, पिछला ध्यान बदलाईआ। तक्कण लग्गा सूरा सरबग्गा, वाली दो जहान शहिनशाहीआ। जिस नूं समझे कोई ना गग्गा घग्घा, गोबिन्द घर भेव किसे ना आईआ। बिन भगतां किसे ना मिल्या सद्दा, सदीआं दे विछड़े रोवण मारन धाहींआ। जगत विच जिज्ञासू बण के (करन) दग़ा, फ़रेबां विच फ़ुरनयां नाल समाईआ। सच दुआर बिन किरपा किसे ना लभ्भा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। मिलण विछड़न दी समझे कोई ना वजह, वजूद विच ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल

करे हब्बा, हभ कुछ आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां बदल के अंदरों तबा, तबीब हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सति धर्म कहे मैं वेखां अगम्म स्वांगी, नज़र अक्ख ना कोए उठाईआ। जिस दी जगत जुग तांघी, आसां विच लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी जिस दे हुक्में अंदर बांदी, बन्दना विच बैठी सीस निवाईआ। उस दी खेल सदा धुरां दी, धुर मस्तक वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार झक्खड़ आंधी, गुरमुखां पोह ना सके राईआ। इक्क द्रोपत कृष्न बिना पत जांदी, कृष्न दा काहन सब दा होए सहाईआ। आत्मा रहे ना कोई थक्की मांदी, साचा रंग आप रंगाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा ढोला गांदी, गहर गम्भीर मिल के आपणा लेखा लए चुकाईआ। मंज़ल विच बणना पए ना पाँधी, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। अग्नी तपणा पए ना काया हाण्डी, दुःख दर्द ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी आप कमाईआ। सति कहे मैं धर्म दा वेखां दरवाज़ा, दरे दरबार सीस निवाईआ। दरबान हो के मारा वाजां, होका हक दृढ़ाईआ। मेल मिलावां ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे जोड़ जुड़ाईआ। दीन दुनी दा बदल के समाजा, समझ धुर दी दयां दृढ़ाईआ। जित्थे आत्म परमात्म दा होवे काजा, करनी नाल करनी ना कोए ठुकराईआ। नाम दा बेड़ा मिले जहाज़ा, तट किनारे ना कोए अटकाईआ। गृह वेखे पुरख समराथा, घर मन्दिर सोभा पाईआ। जित्थे आदि अन्त दी इक्को गाथा, गुर अवतार पैगम्बर सक्या ना कोए बदलाईआ। सो खेल करे तमाशा, निरगुण निरगुण जोत रुशनाईआ। मन बुद्धी दा संसारी हासा, भगतां अंदर भगती दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सहाई नाथ अनाथां, दीनन आपणे रंग रंगाईआ।

★ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरबंस कौर दे गृह पिण्ड मरड़ ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म कहे मैनूं मार अगम्मी आवाज़, शब्दी रमज़ नाल उठाईआ। उठ वेख अगला राज़, राज़क रहीम रिहा समझाईआ। नवें जुग दी साजण साज, भगत सुहेले लै प्रगटाईआ। सच दुआर दा दे के राज, रईयत इक्को लै बणाईआ। जिस सवाल दा जुग चौकड़ी दिता नहीं किसे जवाब, जवाबतलबी विच गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। ओस दा मालक बण के आप, आप आपणी खेल कराईआ। सिफ्तां वाला छड्ड के जाप, आत्म परमात्म नाता दिता जुड़ाईआ। बिना आत्म परमात्म तों सृष्टी दा बणे कोई ना साक, निरगुण सरगुण रूप ना कोए वखाईआ। बिना पुत्त तों सोहे कोई ना बाप, बिना बाप तों पूत नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के पाप, संताप दूर दए कराईआ। जिस दा चार जुग लैंदे रहे

ख्वाब, ख्वाहिशां अंदर ध्यान लगाईआ। सो वेखे खेल तमाश, अखाड़ा दो जहान लगाईआ। जिस दा दूसरा नहीं कोई साथ, इक्को वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां दस्स के आपणी गाथ, सोहँ ढोला दिता पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, लहिणा देणा वेख पृथ्मी आकाश, सृष्टी सास ग्रास लेखा लेखे विच्चों लए कढाहीआ।

जन्म तों अग्गे दिता तिलक, तिलकणबाज़ी दिती मुकाईआ। पक्का कर के इष्ट, दृष्ट दिती खुल्हाईआ। ब्रह्मण अग्गे कदे कोई ना जावे ख़िसक, भगतां मिल के ख़ुशी मनाईआ। प्रेम प्रीती दा रहे सिदक, भरोसा चरण कँवल सरनाईआ। सब दा लहिणा राम वशिष्ट, पूरब नज़री आईआ। नौ जन्म दी पिछली पूरी कर के लिख्त, भविख्त दिता बणाईआ। ख़ारज कीता विच्चों ओस लिस्ट, जित्थे दग़यां दी लड़ाईआ। विकार कीता निष्ट, निसचा इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तिलक कहे मैं होण नहीं देणे तलाक, नाता अग्गे ना कोए तुड़ाईआ। पंडत रहिण नहीं देणा कोई चालाक, अधीन भगतां देणे बणाईआ। भगतां तों चले सब दी शाख़, शनाख़त करे बेपरवाहीआ। मन बुद्धी दे वेखणे गुस्ताख़, झगड़े तक्कणे जगत लोकाईआ। गुरमुखां मिलणा साख्यात, सच कर रुशनाईआ। पूरब लहिणा मेटया रविदास दी कलम दवात, पन्ध दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा हो सहाईआ। तिलक कहे मैं ला कर टिक्का, टिकाणा धुर दा दिता वखाईआ। जित्थे वसे एकँकार इक्का, अग्गे इक्कीआं नाल वज्जे वधाईआ। धुर दा हुक्म जिस दा चले सिक्का, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओस दा मेटे कोई ना लिखा, लिख्तां देण गवाहीआ। सब तों वड्डा माण गुरसिखां, गुर की रीती जणाईआ। अन्तर भाई जगत जहान वखा के मिथा, मिथ्या दस्से सृष्ट सबाईआ। जन्म मरन दा हुक्में अंदर रख के चिठ्ठा, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौवां जन्मां दे कर्म कुकर्म दा कढ्ढ के सिट्टा, अग्गे भगतां नाल मिला के बिन भगती पार कराईआ।

★ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड मूधल ज़िला अमृतसर ★

सच्च विसथार उत्ते कदे ना शंका, पुरख अकाल ढोले सर्ब गाईआ। जिस दा सचखण्ड दवारा सोहे इक्को बंका, दरगाह

साची मुकामे हक हक वज्जे वधाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि जुगा जुगन्ता, नित नवित आपणा हुक्म वरताईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी बणाए आपणी बणता, धुर दा मालक ख़ालक बेपरवाहीआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोले साचे सन्ता, भगत सुहेला परदा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए नार कन्ता, कन्त कन्तूहल आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सदी चौधवीं गुर अवतार पैगम्बर सति धर्म पुरख अकाल दीन दयाल तेरे दर दा होया मंगता, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म सर्ब दे समझाईआ। चार वरन अठारां बरन आपणी चरण कँवल दस्स साची सिम्मता, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण झगड़ा रहे ना राईआ। बिबेक बुद्धी दे मूर्ख मूढ़ अंञाण निन्दका, रसना जेहवा बत्ती दन्द तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा हुक्म वरताईआ। शंका कहे मेरी जुग जुग शकायत, अबिनाशी करते सदा सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच प्रीती सब नूं दे अनायत, बख्शिश विच रहमत झोली पाईआ। जन भगतां साचे सन्तां सदा कर हमायत, हमसाजन हो के आपणा मेल मिलाईआ। धुर फ़रमान साचे हुक्म दी दे हदायत, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण वेख लायक, ल्याकत विच सदाकत दे बणाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार पुरख अबिनाशी कर रहाइश, हरिजन आपणे घर वसाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल तेरी कर ना सके कोए अज़माइश, बेपरवाह बेअन्त तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सति सतिवादी इक्को आस रखाईआ। शंका कहे मैं उच्ची कूक देवां होका, हुक्म धुर दा जगत सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा गाओ इक्क सलोका, सो पुरख निरँजण सब दा पिता माईआ। हरि पुरख निरँजण नाल मिलण दा मानस जन्म मौका, एकँकार गृह मन्दिर घर मिल के वज्जे वधाईआ। आदि निरँजण प्रकाश करो निर्मल जोता, जोती जोत डगमगाईआ। अबिनाशी करता काया काअबा हक मन्दिर वखाए अगम्मी कोठा, जगत दवारे लेखा दए मुकाईआ। श्री भगवान मेहरवान दयावान बुद्धी वाली बदल के सोचा, समझ शब्द इशारे नाल बदलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म परमात्म मार्ग दस्से सौखा, औखा राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर पुरख अकाल आदि जुगादी दीन दयाल दयानिध ठाकर ठोकर आपणा नाम लगाईआ। शंका कहे मेरी करे ना कोए शनाखत, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। बिना पुरख अकाल तों दूजी नहीं कोई इबादत, बिना जगदीश सीस ना किसे झुकाईआ। बिन साचे नाम नहीं रफ़ाकत, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। हरि का नाम धुर दी नयामत, रसीआ रस दए चखाईआ। जन भगतां पोह

ना सके कदे कयामत, कदीम दी रीती लोकमात चली आईआ। सतिगुर शब्द एथे ओथे दो जहानां दए ज़मानत, लख चुरासी विच्चों बरी लए कराईआ। पुरख अकाल समरथ परवरदिगार सांझा यार सदा सही सलामत, अलामत विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शंका कहे पुरख अकाल उत्ते होवे की शक, शिकवा नज़र कोए ना आईआ। जो मालक हकीकत हक, हुक्म धुर दा दए समझाईआ। जिस नूं कथनी सके ना कोए कथ्थ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पैगम्बर बेअन्त कहि के शुकर मनाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा मार्ग अगम्मा दस्स, दहि दिशा चार कुण्ट चार वरन अठारां बरन इक्को करे पढ़ाईआ। जन भगतां निरगुण सरगुण धार मेला हस्स हस्स, हस्ती विच मस्ती दए चढ़ाईआ। जिन्हां दी खोल्हे अंदरों अक्ख, नज़री आए आप प्रतख, शंकयां विच्चों कढु के वक्ख, मेला मिला के नाम सच, भाग लगा के काया माटी कच्च, साढे तिन्न करोड़ लूं लूं अंदर रच, रचना आपणी दए वखाईआ।

★ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरबंस कौर दे गृह पिण्ड मूधल ज़िला अमृतसर ★

सति कहे प्रभ सच कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे गवाईआ। तेरे प्रेम विच होवण सारे दास, खुदी विच रहिण कोए ना पाईआ। ढोला गावण स्वास स्वास, नाम निरंतर देणा दृढ़ाईआ। लेखे लाउणा हड्ड मास, नाड़ी नाड़ी कर रुशनाईआ। मानस जन्म आवे रास, लेखा चुरासी देणा मुकाईआ। परमात्म हो के आत्म वसणा साथ, सगला संग बणाईआ। चरण कँवल दे सहारा अनाथां नाथ, दीनन आपणी गोद टिकाईआ। तूं साहिब स्वामी सदा समराथ, देवणहार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले गुरमुख तेरा गावण जस, धुर दा नाम निरँकारा इक्को गाईआ।

★ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरी ओट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक्क सरनाईआ। जुग चौकड़ी लोकमात बीते कोटी कोट, नित नवित तेरा खेल बेपरवाहीआ। सच प्रकाश बिन तेरे दूसर होए ना निर्मल जोत, जोती जाते तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। बिन तेरे नाम साचा दिसे ना कोए सलोक, सोहला ढोला राग अनाद ना कोए जणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी आस तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख करतार, कुदरत कादर तेरी नज़री आईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, लोकमात थिर रहिण कोए ना पाईआ। भविख्तां विच तेरा करदे आए इज़हार, सोहले ढोले रागां नादां विच शनवाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, निगाहबान हो के वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी होई शैतान, शरअ विच करे लड़ाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, आलम इलम ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दर तेरे बणे भिखारी, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। किरपा कर निरवैर नर नरायण निरँकारी, निराधार तेरा नूर नज़री आईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सच्चे सिक्दारी, भूपत भूप तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। दो जहानां कर ख़बरदारी, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारी, चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा धुर दा देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण ग़रीब निवाज़, नवाज़श विच सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी करदे आए आदाब, अदब नाल कदमबोसी कर के ख़ुशी मनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चरण कँवल सरनाई गए लाग, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। दर दवारे ठांडे मार आवाज़, बेनन्ती दिती सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सृष्टी दृष्टी अंदर लग्गी आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सदी चौधवीं साडा पूरा होया राज, रईयत रहिण कोए ना पाईआ। किरपा कर पुरख अकाल दीन दयाल तेरा खेल सदा आदि, जुगादि तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान वजा अगम्मी नाद, नौबत हक दे सुणाईआ। कूड़ी क्रिया कायनात कर बरबाद, साचा नाम इक्क समझाईआ। सति धर्म सतिजुग साचा कर आबाद, दीन दुनी रहे ना कोए लड़ाईआ। शरअ विच होवे ना कोए फ़साद, मन का मणका दे भवाईआ। हँस बुद्धी रहे ना कोई काग, कागों हँस दे उडाईआ। दीपक जोत जगा चिराग़, घर घर आपणा नूर कर रुशनाईआ। जगत रीती बिन मन्दिर मसीती बदल दे समाज, समें दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे आख, आख़र ध्यान लगाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते दे वड्याईआ। सगली सृष्ट दृष्ट कर रहरास, रहमत नाल तराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स जाप, जगजीवण दाते दे समझाईआ। कोट जन्म दे पूरब मेट पाप, पवित्र ख़ाकी माटी तन वजूद दे बणाईआ। साचे भगतां धुर दा सज्जण बण साक, साख्यात हो के नज़री आईआ। दर ठांडे दस्सीए अन्त अन्त हालात, हालत बदली

सर्ब लोकाईआ। बिन तेरे हुक्म कलयुग कूड़ी क्रिया कदे ना पाए वफ़ात, हयाती विच्चों ज़िंदगी ना कोए बदलाईआ। फिरी दरोही कायनात, चार कुण्ट हल्काईआ। निरगुण वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। शब्द अगम्मी सुणे ना कोए आवाज़, धुर संदेसा ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कठ्ठे हो के कहिण, दीन मज़ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दर दवारे भिच्छया साची आए लैण, लहिणा देणा झोली दे भराईआ। नुकता रहे ना ऐन ग़ैन, बिन अक्खरां अक्खर सब नूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म दस्स आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई इक्को होवे जाप, जगजीवण दाते देणा जणाईआ। रूह बुत्त दोवें करने पाक, पतित पुनीत देणे बणाईआ। नज़री आउणा साख्यात, सनमुख हो के सोभा पाईआ। चार वरन दिसे इक्क जमात, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। तेरी सिफ्त महिमा दस्से ना कोए लुग़ात, अक्खरां विच ना वड वड्याईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दी झोली दे दे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। आत्म परमात्म सांझी कर दे गाथ, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। मन वासना झगड़ा रहे ना ख़ाहिश, ख़सूसीअत आपणी दे समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा होए विश्वास, कूड़ विषयां तों लैणा बाहर कढाहीआ। दो जहानां मण्डल मण्डप तेरी पैंदी वेखीए रास, लख चुरासी सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। तेरे उपर परम पुरख सब नूं आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा धुर दा वर, धर्म दवारा इक्क खुल़ाईआ। धर्म दुआर अगम्मा खोल़ दे, कर किरपा श्री भगवान। नाम जैकारा एका बोल दे, गा गा खुशी होवण दो जहान। साचे कंडे सब नूं तोल दे, तोलणहारे नौजवान। लख चुरासी कूड़ वरोल दे, सति सच कर पहचान। साचा नाम इक्क अनमोल दे, अनमुलड़ी वस्त कर प्रधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सृष्ट सबाई होणा मेहरवान। सृष्ट सबाई वेख आप, हरि आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट पाप, पतित पुनीत दे बणाईआ। जो भविख्तां विच आए आख, अन्तिम पूरा दे कराईआ। हउँ बालक नढ्ढे सेवक तेरे दास, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण खेल कर के आए तेरे पास, सचखण्ड दवारे चरण कँवल मिली सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरगुण तेरा मंगदे साथ, सगला संग बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां जोड़ शब्दी धार नात, रिश्ता फ़रिश्तयां तों परे आपणा लैणा बणाईआ। पूरा

७०
२०

कर अगम्मा वाक्, वाकिफ़कार हो के वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन अरदास, बेनन्ती इक्क जणाईआ। सब दी पूरी कर दे ख्वाहिश, खालस हो के धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ठांडे दरे दरबार देणा दान, दाते दातार दर तेरे आस रखाईआ।

★ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर शब्द कहे मेरा गुरमुखां नाल नाता, नातवां रूप ना कोए बदलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण देंदा आया साथा, सगला संग धरनी धरत धवल उपर वखाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दस्सदा आया अगम्मी गाथा, बिन मेरी किरपा जगत चले ना कोए वड्याईआ। सच दुआर एकँकार भेव खोल्हदा रिहा पुरख समराथा, बिन सतिगुर शब्द परदा ओहला ना कोए उठाईआ। सिफ्ती सिफ्त जणाउँदा रिहा लिखाउँदा रिहा नाल कलम दवाता, स्याही नाल शहिनशाह वड्याईआ। सन्त सुहेलयां सदा बणदा रिहा राखा, जन भगतां याचक हो के सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी सब दीआं पूरीआं करदा रिहा आसां, जो निरगुण निरवैर निरँकार उपर ओट तकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पाउँदा रिहा रासां, गोपी काहन आपणी धार चलाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत बणाउँदा रिहा जातां, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल श्री भगवान दा मन्नदा रिहा आखा, हुक्मे अंदर भज्जा वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब तों वक्खरा दस्सया साका, साख्यात हो के आप समझाईआ। नौ सत बिन साहिब समरथ दूजा रहे कोई ना आका, मालक सब दा इक्को बेपरवाहीआ। दीन दुनी बिन सच व्यपार सब नूं दिसे घाटा, सतिगुर शब्द कहे मेरा वणज करन कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे बिन मेरी किरपा, किरपन पार ना कोए कराईआ। दीन दुनी दी कटे कोई ना बिप्पता, चार युग देण गवाहीआ। साचा रूप धरे ना कोए सिख दा, सिख्या सच ना कोए समझाईआ। मेरी धार शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बाणी बोध कोई ना लिखदा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार मेरे बिना किसे नहीं दिसदा, साख्यात नज़र किसे ना आईआ। मेरे कोल भण्डारा, सतिगुर शब्द कहे, पुरख अकाल दे जस दा, जुग चौकड़ी सद वरताईआ। बाकी लहिणा देणा किसे दा नहीं रखदा, करनी कीती सब दी झोली पाईआ। सब तों वक्खरा इशारा दस्स के नेत्र अक्ख दा, आख़र मंज़ल दयां चढ़ाईआ। विछोड़ा कटा के रहिणा वक्ख दा, वास्ता इके नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैथों परदा ना कोई ओहला, चोरी चोर ना कोए कमाईआ। बिन मेरी धार गुर अवतार पैगम्बर बणे ना कोए विचोला, विचला भेव ना कोए खुल्हाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक सदा गोला, सेवक हो के लोकमात आपणी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी आदि जुगादि सदा सद सतिगुर शब्द कहे तेरा वक्खरा ढोला, जुग जुग आपणी करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क उपाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी क्या कोई करे सिफ्त, अक्खरां नाल की वड्याईआ। मेरे हुक्म अंदर सारे गुफ्त, बाहर रहिण कोए ना पाईआ। कोई समझ ना सके बिन मेरे पुरख अकाल दा इष्ट, दृष्टी जगत ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म जाण ना सके गृहस्त, गृहस्ती रोवण मारन धाईंआ। भरोसा यकीन ना आवे सिदक, भगत भगवान ना कोए मिलाईआ। झगड़ा पए ना दूती निन्दक, निरवैर रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखणहारा हाल, माज़ी परदा जगत खुल्हाईआ। धुर दा रख के सच सवाल, बिन पैमाने नापां लोकाईआ। चार वरन चार जुग दा पिछला वेख अहिवाल, दयाल समझ किसे ना आईआ। मन बुद्धी सब घालदे रहे घाल, घालणा विच लोकाईआ। कलयुग अन्त बदल के चाल, निराली आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण जोत दा बण दलाल, विचोला शब्द आप अख्वाईआ। भगत सुहेले सज्जण भाल, गुरमुख गुरसिख लै उठाईआ। नाता तोड़ के कूड़ जंजाल, जीवण जुगत हक समझाईआ। जिन्हां पोह ना सके काल, वेले अन्त ना कोए सज़ाईआ। सचखण्ड दवारा इक्को दिता वखाल, जिस दा दुआर ना कोए बदलाईआ। लख चुरासी विच्चों कर बहाल, घर ठांडे दिता टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे बिन मेरे कोई ना मिलाए नाल पुरख अकाल, जोती जोत ना कोए समाईआ। कलयुग अन्त हो दयाल, दीनां आपणी गोद उठाईआ। साचा मार्ग दस्स सुखाल, मंत्र धुर दा रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द गुरू गुर सतिगुर आप रखवाल, रखक हो के रच्छया करे थाउँ थाँईंआ।

★ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ निरँजण सिँघ दे गृह पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ★

सतिगुर शब्द कहे भगतां लवां जोड़, जोड़ीआं विच्चों जोड़ी आपणे नाल मिलाईआ। दूसर दी रहिण ना देवां लोड़, लोड़ींदा साजण घर दयां मिलाईआ। साचे मार्ग देवां तोर, जुग जुग सिख्या सच समझाईआ। नाम मंत्र फ़ुरना दे के फोर,

फ़रमांबरदार लवां बणाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, कूड़ी क्रिया दयां मिटाईआ। मनुआ मन ना पावे शोर, छोहर धुर दा दयां मिलाईआ। मेरे अग्गे चले ना किसे दा ज़ोर, ज़ोरावर बैठे सीस निवाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म दे के नकोर, नवें तों नवां दयां बदलाईआ। जन भगतां नाल आपणी पूरी कर के लोड़, मार्ग अगला दयां समझाईआ। द्वैत विच मेरी नहीं किसे नाल खोर, खुदी वालयां डेरा देवां ढाहीआ। जुग चौकड़ी मेरा खेल अवर का और, औरत मर्द समझ कोए ना पाईआ। जे कोई वेखे तक्क के ग़ौर, गहर गम्भीर हो के परदा लवां पाईआ। बिन भगतां कारज किसे ना जावे सौर, सौहरे पईए दोवें मारन धाईंआ। जुग चौकड़ी पिच्छो चलदा मुहब्बत वाला दौर, बिन गुरसिखां हथ्थ किसे ना आईआ। लख चुरासी विच्चों कुशतयां नालों गुरमुख मेरा चंगा जौहर, पुश्त दर पुश्त जिन्हां दी प्रीती चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा सगला संग बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे बिन मेरे रस होए कोए ना मिठ्ठा, कूड़ कुड़यारी दिसे लोकाईआ। बिन मेरे हुक्म गुर अवतार पैगम्बर लेख कोए ना लिखा, अक्खरां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। बिन मेरी धार समझे कोई ना चिठ्ठा, विद्या दी विद्या ना कोए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी जीव जंत कढ्ढ ना सके कोई सिट्टा, नतीजा सच ना कोए वखाईआ। बिना पुरख अकाल दूसर अवर नाहीं पिता, बिन मेरी पत्रका समझ किसे ना आईआ। जग नेत्र कदे ना दिसा, दिशा हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां साचे सन्तां सदा सदा सद बण के धुर दा मिता, मित्र प्यारा हो के मिती आपणी दयां समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्दी धार सतिगुर बिन वजूदों बण के निक्का, निक्कयां तों वड्डे रिहा बणाईआ। सच प्रेम दा ला टिक्का, टिक्कयां वाले गुरू तों खहिड़ा दयां छुडाईआ। अंदरे अंदर पा के खिच्चां, प्यार मुहब्बत विच बदलाईआ। आपणे मिलण दीआं दे के सिक्कां, सिख साजण लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा मार्ग दस्से सिध्धा, औझड़ राह ना कोए भवाईआ।

★ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरनाम कौर दे गृह पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहे किरपा कीती सतिगुर शब्द, सर्ब दिता जणाईआ। इक्को दुआर दा दस्सया अदब, आदाब धुर दा दिता समझाईआ। झगड़ा मुका के दीन मज़्हब, मज़्हबां तों परे शरअ नर नरायण दिती जणाईआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर पूजदे कदम, कदमबोसी कदीम दी रीती चली आईआ। ओथे कोई तत्तां वाला पैर नहीं जिस विच लभ्भणा पए पदम, चिन्न्हां

वाला निशान ना कोए वखाईआ। इक्को जोत जोत विच सारे बैठे मग्न, वक्खरा डेरा ना कोए लगाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द धार दी अंदर अंदर तूं मेरा मैं तेरा जपण, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। एका रूप सति सरूप निरगुण निरवैर लभ्भण, जोती जाता नज़री आईआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां आया सद्दण, होका हक नाम सुणाईआ। लख चुरासी विच्चों आया लभ्भण, सन्त सुहेले कर कर मेले आपणे नाल मिलाईआ। भाग लगा के काया माटी तन वजूद बदन, बदला पूरब जन्मां दा रिहा चुकाईआ। शब्दी ओढण सतिगुर सीस रहिण ना देवे नग्न, कन्त सुहाग हो के नज़र उठाईआ। प्रेम प्रीती साची रीती धर्म दुआर एकँकार चाढ़ के आपणी रंगण, अनडिठड़ा रंग दए वखाईआ। जन भगत कहे बिन सतिगुर शब्द दुआर दूजे दर मैं कदे ना जावां मंगण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। सारे ओसे दे मिलण दा वसीला यतन, यथार्थ सब दा मालक इक्को नज़री आईआ। जित्थों विछड़े ओसे दे जाणा वतन, बेवतनां नूं वतन (वाले) लए बणाईआ। सचखण्ड दवारा अगम्मी घाट धुर दा पत्तन, जित्थे पत्रयां वाली ना कोए पढ़ाईआ। इक्को जोत प्रकाश पुरख अकाल समर्थण, जिस दा मालक प्रितपालक जल्वागर नूर खुदाईआ। जन भगत सुहेले ओथे वसण, जित्थे जन्म कर्म दा लेखा रहे ना राईआ। संसा रोग वाला नहीं कोई भरम, माटी चर्म ना कोए वड्याईआ। चुरासी विच लैणा नहीं पैंदा जरम, जन्म रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे के धुर दी सरन, सरन इक्को दए वखाईआ। जन भगत कहे सतिगुर शब्द मेरा मीता, मित्र प्यारे सारे दिते तजाईआ। जुग चौकड़ी बदलणा जिस दी रीता, मन्दिर मसीतां तों बाहर डेरा दिता लवाईआ। आदि जुगादि सदा ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो देंदा रिहा हदीसा, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। सो साहिब स्वामी एकँकार मेरा जगदीसा, जन भगत सुहेला निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दा देवण वाला ख़ाली होवे ना ख़ीसा, अतोट अतुट नाम भण्डारा वरताईआ। कोई बदल ना सके ओस दा कीता, करनी दा करता इक्को नज़री आईआ। सदा सद रहे अतीता, त्रैगुण हुक्मे विच चलाईआ। सद वसे धाम अनडीठा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जन भगतां काया मन्दिर अंदर घर वखाए नज़दीका, नेरन नेरा हो के परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपणे नाम दा दस्स के टीका, बुद्धी तों परे दिता समझाईआ।

★ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ पिशोरा सिँघ दे गृह पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर ★

७५
२०

सतिगुर शब्द कहे आपणी करनी नाल भगत कोई नहीं बणदा, कमाई विच कमी सब दे अंदर नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे जुलाहा ताणा तणदा, ओस कबीर दा मालक काअब्यां तों परे डेरा लाईआ। जो लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत मानव जाती मन दा, अन्तर अन्तर वेखे थाउँ थाँईंआ। जोग अभ्यास पूजा पाठ मेल करे ना अगम्मी चन्न दा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। सुणया राग कम्म नहीं आउँदा कन्न दा, सरवणां मिले ना कोए वड्याईआ। कोई लेखा नहीं लग्गदा तत्तां वाले गुरू नूं दिते धन दा, अरबां खरबां विच मनसा पूर ना कोए कराईआ। जिनां चिर सतिगुर शब्द आपणी किरपा नहीं करदा, कदीम दे विछड़े मेल मिलाईआ। इक्को मालक सच दवारे साचे घर दा, बेघरे गुर अवतार पैगम्बर नज़री आईआ। आपणी मेहर नाल मुहब्बत विच सब (नूं वरदा), वारी वारी आपणे अंग लगाईआ। जो करनी मन मति बुद्धी अंदर जगत करदा, ओस नाल सतिगुर दी समझ किसे ना आईआ। जिस मंज़ल स्वामी हो के चढ़दा, रसत्यां तों परे राह आपणा रिहा बणाईआ। जो नग़मा कलमा नाम बिना अक्खरां तों भगत सुहेला पढ़दा, उह बिना सतिगुर शब्द सके ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्त एसे कारण चार कुण्ट दहि दिशा डरदा, सतिगुर अग्गे अक्ख ना कोए उठाईआ। क्यों उह आपणी दया नाल दयालू हो के कृपालू हो के आपणयां भगतां आप फड़दा, भगती दा खहिड़ा दिता छुडाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फिर फिर आप लभ्भदा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच भगत सुहेला लभ्भण कोए ना जाईआ। इक्को रूप दस्स अगम्मी हरि दा, हिरदे विच हारदिक दए वधाईआ। जन्म कर्म विछोड़ा मेट चिर दा, चिरी विछुन्ने काया कुंनी विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे बिन मेरे कोई ना बणया भगत, जगत भबूती कम्म किसे ना आईआ। आपणे प्रेम प्यार दी दे के शक्त, शक्ती अंदर नाम टिकाईआ। माण वड्याई दे के उपर धरत, पंज तत खुशी मनाईआ। जिनां चिर निरगुण हो के सरगुण दे अंदर ना आवां परत, परमात्मा दा भेद किसे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग हकीकी प्यार वलों मैं रख के बरत, बरतन सब दे मूधे रखे कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर बथेरे गए तड़प, ठीक ठीक मेरा ढोला गाईआ। चरण कँवलां विच लटक, नैण मटक मटक भवाईआ। मेरे हुक्म दा ओनां पिच्छे चढ़या रिहा कटक, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। मैं सुत्ता रिहा बिन नींद दे (बेखटक), आलस तों बाहर डेरा लाईआ। मेरा फ़रमाना अगम्मी चटक, चटूरे भाण्डे वेखे थाउँ थाँईंआ। फ़रमाना दे के सख्त, सख्ती नाल समझाईआ। जिस वेले आवे मेरा वक्त, सिध्धा भगतां नाल मेल मिलाईआ। भावें मालक सारे जगत, जगत दा मालक आप अख्वाईआ।

फिर वी भगतां नालों रख के फ़र्क, फिरकयां विच वण्ड वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मुड़ के कोई ना आवे परत, इक्क दूसरे दे पिच्छे यक्के बाद दीगरे हुक्म नाल घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे बिन काहदी पूजा, किस दा ध्यान लगाईआ। होर नहीं कोई दूजा, तीजे नैण ना कोए वड्याईआ। बिन मेरी किरपा साचा दर किसे ना सूझा, बुद्धिवानां बुद्धी दिती भुलाईआ। काया माटी सब दा भाण्डा मूधा, बिन सतिगुर शब्द सके ना कोए उलटाईआ। काया गागर सागर डूंघा, बिन सतिगुर शब्द पार ना कोए कराईआ। सतिगुर शब्द कहे जिस वेले मेरे वक्त दा इक्को वज्जे हूंगा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गुर अवतार पैगम्बर थर थर कम्बण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जगत विद्या विच मैं गूंगा, धुर दी धार विच मैं दो जहान ढूंडा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। बिन भगतां दूजे नाल कदे नहीं कूंदा, शब्दी गल्ल ना किसे समझाईआ। जुग चौकड़ी मेरा लारा हूं हूं दा, हौकयां विच सारे दिते तरसाईआ। बिन भगतां भेव दस्सया ना तूं ही तूं दा, तुहमत सब नूं दिती लगाईआ। मालक बण के (लूं लूं) दा, लोचनां तों परे लोचा भगतां वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं मालक बुत्त रूह दा, जुग जुग आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हा दे सच दुआर आपणी जूह दा, जगत जूहां विच्चों बाहर कढाहीआ।

★ ३ कतक शहिनशाही सम्मत २ सीतल सिँघ दे गृह पिण्ड हरदो झण्डे ज़िला गुरदासपुर ★

पुरख अकाल आपणी किरपा आप कर, करनी दे करते कुदरत दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। अबिनाशी करते पुरख अकाल दीन दयाल सांझे यार खोल्ह दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा चार वरन अठारां बरन इक्को दे दिसाईआ। सच सरोवर अमृत धार नौ सत्त वखा इक्क सर, दुरमति मैल अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर रहिण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर एकँकार इक्को नज़री आवे हरि, हिरदे अंदर वस के आपणा परदा दे उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत विकार माया ममता मोह जाए झड़, हउमे हंगता गढ़ दे तुड़ाईआ। त्रैगुण माया अग्नी अग्ग कोई ना जावे सड़, पंज तत तत्व तत आपणा दे बुझाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर काया मन्दिर अंदर साचे चढ़, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दे वजाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण निरगुण सरगुण आपणे ला लड़, शब्दी डोरी अगम्मी तन्द बंधाईआ , निरभउ भय ख़तरा चुका डर, दीन दुनी दा दर्द दे मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे मंगण वर, दर दरवेश हो के सीस झुकाईआ। सचखण्ड

दुआर एकँकार दरगाह साची मुकामे हक तेरा घर, हकीकत दे मालक शरक्त दीन दुनी दी दे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपाल हो के कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब स्वामी तेरी वड्याईआ। धुर दा मार्ग चार वरनां अठारां बरनां दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। गुरमुख साचे सन्तां निज नेत्र खोल्ह अक्ख, अक्खरां तों परे निरअक्खर धार दे समझाईआ। आत्म परमात्म करीए वस्स, वसल यार मिले जल्वागर नूर खुदाईआ। घर प्रकाश नूरी दीपक जोत जगे लट लट, अन्ध अन्धेर रहिण कोए ना पाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती वाला मेट फट्ट, नाम पट्टी इक्क बंधाईआ। दुरमति मैल दर्द दुःख भय भंजन हो के कट, काया कटाखश तीर अणयाला इक्क चलाईआ। सच दुआर एकँकार लोकमात खोल्ह हट्ट, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। धुर दे मालक सृष्टी दे प्रितपालक सब किछ तेरे हथ्थ, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल किरपा करदे आप, आप आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म दस्सदे जाप, जगजीवण दाते जुगती जगत दे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच जो गए आख़, आख़र सब दा लेखा पूरा दे कराईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहे ना कोई गुस्ताख़, बुद्धी बिबेक सब दी नज़री आईआ। निज गृह काया मन्दिर अंदर निरगुण धार कर वास, निवास अस्थान आपणा (लै बणाईआ)। जन भगतां आत्म परमात्म दे धरवास, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। झगड़ा चुक्के पृथ्मी आकाश, अकल कलधारी आपणा खेल देणा वखाईआ। तेरे दर दरबार जोड़ के हाथ, नमों नमों कहि के सारे सीस झुकाईआ। मंज़ल पौड़े चढ़ा आपणे घाट, अद्धविचकार दो जहान ना कोए अटकाईआ। लख चुरासी आवण जावण पतित पावण मेट वाट, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नाता रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, करनी दे करते आपणा रंग देणा रंगाईआ। पुरख अकाल किरपा सदा करदा, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर घल्लदा, हुक्म संदेशे नाल वड्याईआ। भेव खुल्ह्हा के निहचल धाम अटल दा, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा परदा दए उठाईआ। नज़ारा दस्स अगम्मी रंग महल्ल दा, महिफ़ल आपणे नाल लगाईआ। मालक हो के जल थल दा, महीअल खोजे थांओं थाँईंआ। झगड़ा मुकावे नित नवित दूई द्वैती सल दा, साहिब सुल्तान मेहरवान हो के आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा रहिण ना देवे कूड़ कुड़यारे कल दा, कालख टिक्का दुरमति मैल धोवे सब दी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा अंदर हर घट अंदर वसदा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पुरख अकाल किरपा करन जोग, जुग चौकड़ी दया कमाईआ। किरपा अंदर भगतां कर संजोग, धुर मेला लए मिलाईआ। किरपा अंदर

कट के हउमे रोग, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। किरपा अंदर परदा लाह के चौदां लोक, चौदां तबक भेव दए खुल्हाईआ। किरपा अंदर मेट के हरख सोग, चिन्ता ग़म दए मिटाईआ। किरपा अंदर आत्म परमात्म दे के धुर दा योग, जोगीशर आपणा हुक्म वरताईआ। किरपा अंदर दे के दरस अमोघ, भगत सुहेले आपणे घर वसाईआ। किरपा अंदर साचे सन्तां देवे आपणी मौज, मौजूदा हो के मेल मिलाईआ। किरपा अंदर गुरमुखां दस्से खोज, खोजी हो के आपणा संग दए निभाईआ। किरपा अंदर गुरसिखां प्रगट कर के निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा नूर करे रुशनाईआ। किरपा अंदर मन वासना मेट के सोच, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। किरपा अंदर आपणे नाम दा दस्स सलोक, सोहला ढोला इक्को दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, निहकंलक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, किरपा करे सदा जुग चार, वेखे विगसे पावे सार, भगत सुहेले लए उठाल, सूफ़ीआं बणे हक दलाल, सच दवारा एकँकारा दरगाह साची धाम न्यारा, ठांडा दर कृपाल हो के किरपा नाल वखाईआ।

७८
२०

★ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला गुरदासपुर ★

सतिगुर शब्द कहे जुग चौकड़ी मेरे मुहताज, नित नित बैठे ध्यान लगाईआ। मांगत हो के मंगदे रहिण दाद, ख़ाली झोली इक्क वखाईआ। धुर संयोगी बणाउँदे रहिण साथ, सगला संग जणाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, दीनन हो के सीस झुकाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जाते तेरी वड वड्याईआ। दीन दुनी बदलदा रिहों सदा समाज, समें दी समग्री आप वरताईआ। निरगुण सरगुण रचदा रिहों काज, निरवैर हो के आपणा खेल खिलाईआ। शब्द अगम्मी दो जहान मारदा रिहों आवाज़, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। सजदयां विच दस्सदा रिहों आदाब, नमस्ते विच नमों नमों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान महबूब मुहब्बत अंदर तेरा राह तकाईआ। सतिगुर शब्द कहे आदि जुगादि एका दानी, दयावान इक्क अख्वाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर सदा निशानी, निशाने जगत गए समझाईआ। जिस नूं समझणा नहीं आसानी, बुद्धिवानां बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल जोत नुरानी, नूर नुराना दो जहानां डगमगाईआ। जिस दी जूह होवे ना कदे बेगानी, लख चुरासी अंदर बैठा सोभा पाईआ। भेव अभेदा जाणे चारे खाणी चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण आपणी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे जुग चौकड़ी दर दरवेश, सिर सके ना कोए उठाईआ। मंगते रहे हमेश, निउं निउं सीस निवाईआ। कहिंदे रहे पेश, वेस अनेक वखाईआ। सुणदे रहे संदेश, धुर फ़रमाना शब्द अल्लाईआ। धरदे रहे वेस, लोकमात रूप बदलाईआ। खेलदे रहे खेल, ख़ालक ख़लक नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे जुग चौकड़ी मेरा हुक्म होवे बलवान, बलधारी इक्क अख्वाईआ। जिस दा डंका वज्जे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा भवाईआ। सीस निवाउँदे गोपी काहन, सीता राम चरण कँवल निउं निउं लागण पाईआ। पैगम्बर करन सलाम, गुरु गुरदेव कहि के शुकर मनाईआ। सब तों वक्खरा महल अटल उच्च मकान, मकबरयां विच डेरा कदे ना लाईआ। जित्थे रसना जेहवा बत्ती दन्द करे ना कोए कल्याण, अक्खरां वाला पत्तरयां वाला कलमा ना कोए जणाईआ। इक्को हुक्म श्री भगवान, धुर संदेसा अगम्मी धार अल्लाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, बुद्धी तों परे ज्ञान, शब्दी शब्द खेल महान, दो जहान ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी साचा हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी गुरदेव, देव आत्मा दयां वड्याईआ। सरगुण निरगुण सारे करदे सेव, सेवक हो के साची कार कमाईआ। मेरा खेल अलख अभेव, अगम्म अगोचर समझ कोए ना आईआ। गा ना सके कोई रसना जिहव, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। धाम न्यारा निहचल अटल निहकेव, निहकर्मी हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारा एकँकारा इक्को इक्क वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खेल दस्सां कमलापाती, पतिपरमेश्वर दयां जणाईआ। लख चुरासी जोत जगावां बिन दीवा बाती, नूरो नूर डगमगाईआ। कलयुग अन्त हुक्म श्री भगवन्त मेटां अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दस्स के पूजा पाठी, सिमरन जोग अभ्यास दयां समझाईआ। जन भगतां पुछां वाती, वारस हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म तेरा सतिजुग बणा के सच्चा साथी, महासार्थी हो के साथ देवे निभाईआ।

★ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड डडवां ज़िला गुरदासपुर ★

सति धर्म कहे किरपा कर प्रभ कन्त सुहाग, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कायनात विच्चों मेट दाग़, सच सुच सति सतिवाद आपणा दे जणाईआ। हँस बुद्धी सब दी बणा काग, गुरमुख गुरसिख

ਸन्त सुहेले चार वरन अठारां बरन लै बणाईआ। घर घर गृह गृह मन्दिर अंदर दीपक जोत जगा चिराग़, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा नूर कर रुशनाईआ। हर हिरदे अंदर प्रेम प्रीती साचा बख़्श वैराग, वैरी अंदरों काम क्रोध लोभ मोह हँकार दे गवाईआ। भगती अंदर बणा धुर दे सच्चे सन्त साध, साधना आपणा नाम दे जणाईआ। मानव जाती तैनूं रहे आराध, बिन पुरख अकाल दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक वाहिद, जल्वागर नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म दर ठांडे सीस निवाईआ। सति धर्म कहे किरपा कर श्री भगवन्त, भगवन तेरी आस रखाईआ। माया भुल्ला कलयुग जीव जंत, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। गृह गृह बणया गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। नानक गोबिन्द धार चार वरन समझे कोई ना एका संगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करन लड़ाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा अगम्मी भेज आपणा पंडत, दीन दुनी दए समझाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कर खण्डत, खण्डा खड़ग आपणा नाम चमकाईआ। अबिनाशी करते तेरे अग्गे मेरी मिन्नत, निउँ निउँ चरण कँवल लग्गां सरनाईआ। बिन तेरी किरपा चार कुण्ट दहि दिशा किसे विच ना दिसे हिम्मत, जो झगड़ा दीन मज़्ब दए मुकाईआ। शरअ दी रहिण ना दे इल्लत, इलम आलमां दे समझाईआ। मानस जन्म पा के तेरा रहे कोई ना निन्दक, दुष्ट दुराचार विभचार कर्म ना कोए कमाईआ। आत्म परमात्म आपणी दस्स अगम्मी मिल्लत, पारब्रह्म ब्रह्म लै मिलाईआ। चुरासी विच फेर ना होवे ज़िल्लत, जूनी जून ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म तेरे दवारे मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्त अख़ीर कर दे बदली, लोकमात रहिण ना पाईआ। तूं सचखण्ड निवासी धुर दा अदली, दो जहानां अदालत इक्क लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी आसा रख के गए कद दी, जुग चौकड़ी पिछली दए गवाहीआ। भगतां आत्म धार प्यार अंदर तैनूं सद्द दी, संदेसा शब्द नाम सुणाईआ। मेट कूड़ कुड़यार दूई द्वैती हद्द दी, जगत शरअ ना कोए लड़ाईआ। धुन सुणा आपणे अगम्मी नद दी, दो जहानां डंका दे वजाईआ। कलयुग दीन दुनी भरी हँकारी मद दी, नाम खुमारी नज़र कोए ना आईआ। जूठ झूठ कर्म विकार नहीं छड्डदी, त्रैगुण नाता ना कोए तुड़ाईआ। घर घर अग्नी दिसे बलदी, तत्व तत रही जलाईआ। वेख खेल कलूए कल दी, कालख टिक्के सब नूं रिहा लगाईआ। कोटां विच्चों कोई गुरमुख आत्मा तेरा दवारा मल्ल दी, बहुते भुल्ल के आपणा आप गए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद दर ठांडे सीस निवाईआ। सति धर्म कहे मेरे पुरख समरथ, स्वामी तेरी आस रखाईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारे रथ, रथ

रथवाही तेरी वड वड्याईआ। साचा मार्ग दीन दयाल दो जहानां आ के दस्स, श्री भगवान अगम्म कर पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दीन दुनी दे रस, रस्ता बावस्ता हो के इक्को इक्क दे समझाईआ। सिफ्तां विच ढोला नाम नग़मा तेरा गावण जस, बत्ती दन्द साची सिफ्त सालाहीआ। निज नेत्र नैण काया मन्दिर अंदर खोल्ह अक्ख, परदा ओहला दे उठाईआ। निरगुण धार जोत निरँकार स्वच्छ सरूप दरस दे प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा मेला लै मिलाईआ। तेरी आत्म परमात्म रहे कोई ना वक्ख, जुग जन्म दी विछड़ी जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं रही लँघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद पारब्रह्म प्रभ तेरी आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। तूं दीनां दाता सदा दयाल, मेहरवान अख्वाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दृष्टी अंदर होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। बिन सतिगुर शब्द मुरीदां पुछे कोई ना हाल, मुर्शद नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर गोबिन्द बण दलाल, विचोला इक्को सब दा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग वेख अन्त अख़ीर, मैं रो रो दयां दुहाईआ। साचा दिसे ना कोई पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे दस्से ना कोए पढ़ाईआ। शरअ कटे ना कोए ज़ंजीर, लाशरीक तेरे नाल ना कोए मिलाईआ। वाहिद दस्से ना कोए तदबीर, तकदीर तेरे नाल सके ना कोए बदलाईआ। झगड़ा प्या ग़रीब अमीर, अमरापद ना कोए वखाईआ। दीन दुनी होई दिलगीर, सांतक सति ना कोए कराईआ। लेखा मुके ना शाह हकीर, चार कुण्ट दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, लोकमात वेस वटाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे दीन दुनी दे मालक, दो जहानां वाली तेरी बेपरवाहीआ। कायनात वेख आपणी ख़लक ख़ालक, मख़लूक अन्तर परदा आप उठाईआ। बिन सतिगुर शब्द दिसे ना कोई सालस, हकीकत हक ना कोए दृढ़ाईआ। चार वरन रिहा ना ख़ालस, सति सतिवाद विच ना कोए समाईआ। मन वासना सब दे अंदर आदत, इबादत हक ना कोए कमाईआ। कूड़ी क्रिया ममता मोह वध्या लालच, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हर घट अंदर आपणा नाम अगम्मा बख्श नयामत, निरवैर हो के हो सहाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सही सलामत, साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट संताप, दुःख रहिण कोए ना पाईआ। सब दा मालक बण आप, पति परमेश्वर बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म दस्स जाप, जग जीवण

दाते दे जणाईआ। रूह बुत्त दोवें कर पाक, पतित पुनीत दे वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे सगला साथ, धुर दा संगी नज़री आईआ। भोलयां अनाथां नाथ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पार कर घाट, पत्तन आपणा दे वखाईआ। जित्थे इक्को होवे याद, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अबिनाशी करते सुण फ़रयाद, मेहरवान हो के मेहर अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग काया खेड़ा उजड़या कर आबाद, नाम धुर दे नाल वसाईआ। सोई सुरती सृष्ट सबाई जाए जाग, आलस निंद्रा विच रहिण कोए ना पाईआ। तेरे मिलण दा सब दे अन्तर उपजे वैराग, वैरी दूती दुश्मण अंदरों देणे भजाईआ। पुरख अकाल तूं सब दा माई बाप, पिता पूत सपूत गोद लैणे उठाईआ। अन्त अख़ीरी कल रहे ना अन्धेरी रात, सतिजुग साचा नाम चन्द देणा चमकाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चार वरनां अठारां बरनां इक्को देणा साथ, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, कलयुग लेखा देणा चुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कूड़, कुकर्म रहिण ना पाईआ। जन भगतां बख़्श आपणी धूढ़, गुरमुख गुरसिख पार लँघाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, गुरमति इक्क दरसाईआ। जोती जाते आपणा बख़्श दे नूर, जोती जोत कर रुशनाईआ। जुग बदलणा आदि जुगादि तेरा दस्तूर, हुक्में अंदर हुक्म सुणाईआ। गढ़ रहे ना कोए ग़रूर, ग़ुरबत सब दी देणी मिटाईआ। साचे नाम दा दे सरूर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त इक्क अख्वाईआ। सति धर्म कहे मैं होया मजबूर, मुश्किल आपणी दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सति धर्म कहे मैं आया दर ठंडे, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तूं जुग जुग आदि जुगादि वस्त अमोलक नाम वण्डे, अतोट अतुट वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर खण्ड खण्डे, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। दीन मज़्ह‍ब दे रहिण कोई ना दंगे, झगड़ा करे ना कोए लोकाईआ। मानस जाती सारे तेरे बन्दे, बन्दगी आपणी दे समझाईआ। लेखे ला चंगे मंदे, वड दाते तेरी वड्डी वड्याईआ। बिन तेरे नाम ओढण सीस फिरदे नंगे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। समरथ स्वामी आत्म परमात्म वस संगे, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म दुआर तेरा मंगे, मांगत हो के झोली डाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ मैं मंगण आया मंगता, बैठा दर हज़ूर। गढ़ तोड़ कलयुग हउमे हंगता, अरज़ कर मन्ज़ूर। मेल मिला के चार वरन बणा संगता, बख़्श अगम्मी आपणा नूर। झगड़ा मुका दे कूड़े मन दा, दहि दिशा ना पाए फ़तूर। प्रकाश कर दे आपणे चन्न दा, गोबिन्द प्रगट होवे हज़ूर। जो कूड़ विकारे डंन दा, सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़। काची वंग भन्नदा,

धुर फ़रमाना सुणावे ज़रूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं साहिब स्वामी समरथ सर्ब कला भरपूर।

★ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरनाम कौर दे गृह पिण्ड लेल ज़िला गुरदासपुर ★

सति कहे तेरा हुक्म सदा सख्ता, सख़ियां दे काहन गए जणाईआ। जो जुग जुग पैज भगतां रखदा, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। प्रेम प्यार अंदर हस्सदा, खुशीआं विच दए वड्याईआ। तेरा ढोला गा के जस दा, सिफ्तां विच सालाहीआ। कलमा सुणा के हक दा, हकीकत दए दृढ़ाईआ। भेव खुल्हावे शक दा, शरअ ना कोए लड़ाईआ। जुग जुग खेल तेरा तक्कदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। सेवा करदा कदे ना अक्क दा, सद भज्जे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। सति धर्म कहे तेरा हुक्म सदा अमर, अमरापद दए वखाईआ। डूँग्घा सागर गहर गवर, गम्भीर बेनज़ीर दए जणाईआ। बिन भगतां जाणे कोई ना ग़ैर अवर, परदा सके ना कोए उठाईआ। बिन सन्तां आए किसे ना सवर, सबर विच ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर नाल तराईआ। सति धर्म कहे तेरा हुक्म आदि जुगादी, जुग जुग हुक्म मनाईआ। सदा मेटे झगड़ा फ़सादी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जन भगतां सन्तां बणया रहे इमदादी, वेखे विगसे थाउँ थाँईंआ। ग़रीब निमाणयां सुणे फ़रयादी, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जुग बदलणा जिस दी वादी, वायदे पूरे दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। सति धर्म कहे तेरा हुक्म सदा सदा दो जहान, सिर सके ना कोए उठाईआ। बणां विच फिर के गए राम, दिवस रैण भज्जे चाँईं चाँईंआ। धरनी सुहा के गए तत्तां वाले काहन, गोपीआं रास रचाईआ। हज़रत बण के गए अमाम, नबी रसूल वड्याईआ। नानक गोबिन्द दे पैग़ाम, शब्दी शब्द सुणाईआ। करदे गए सलाम, झुक झुक सीस निवाईआ। बन्दना विच तमाम, डण्डावत विच लोकाईआ। कलमयां वाली कलाम, हुक्में अंदर समझाईआ। हुक्मे अंदर बदल निज़ाम, नौबत धुर दी दए वजाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, हुक्म धुर दा बेपरवाहीआ। सो खेल करे श्री भगवान, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। कलयुग अन्त हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। भगत सुहेले जगत पहचान, गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। सच प्रीती दे ज्ञान, दृष्टी अंदरों दिती खुल्हाईआ। नाम भण्डारा दे के दान, दयावान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग दस्स आसान, मुश्किल लख चुरासी वाली दूर कराईआ।

८३
२०

★ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भुम्बली ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहे मेरा सच्चा धर्म, धर्म आत्मा नाल बणाईआ। नाता जोड़ के सतिगुर चरण, सतिगुर मन्नां पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जिस नूं मिलयां फेर ना होवे जन्म, जन्म जन्म दा गेड़ा दए मुकाईआ। लेखा रहे ना कोए कूड़ कुकर्म, निहकर्मी हो के पतित पुनीत दए बणाईआ। मन विकार रहिण ना देवे कोई भरम, भय भउ आपणा इक्क वखाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात वरन, ऊँच नीच ना कोए लड़ाईआ। सचखण्ड दवारे बख्शे आपणी सरन, घर इक्को इक्क वखाईआ। जित्थे फेर ना होवे मरन, मर के जीवण दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। जन भगत कहे मेरा घर बार, सचखण्ड दवारा नज़री आईआ। जिस गृह वसे इक्क निरँकार, निरगुण बैठा सोभा पाईआ। बन्दना करदे गुरू अवतार, पैगम्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खड़े भिखार, दर ठांडे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी रोवण ज़ारो ज़ार, बिन नेत्र नैणां मारन धाहीआ। भगत सुहेले मंगण धूढ़ी चरण छार, सन्त सुहेले टिक्के ख़ाक रमाईआ। गुरमुख कूकण वारो वार, गुरसिख निउँ निउँ लागण पाईआ। जिस गृह किरपा करे आप करतार, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। दो जहानां बणया रहे सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लहिणा देंदा आया वारो वार, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, आसण सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्क सुहाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, मीत प्यारा इक्को इक्क अख्वाईआ। जन भगत कहे मेरा इक्को सच दवार, जिस दा दरवाज़ा बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दर इक्क वड्याईआ। जन भगत कहे मेरा मालक एकँकार खुद, अबिनाशी करता नज़री आईआ। जिस नूं समझ ना सके मन बुध, मति मतवाली चले ना कोए चतुराईआ। जो हर घट अंदर बैठा लुक, निरगुण हो के डेरा लाईआ। जिस दी मंज़ल किसे दे कोलों ना जाए मुक्क, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दा नाम निधाना इक्को अगम्मी तुक, भगत सुहेले मिल के गाईआ। सो देवणहारा साचा सुख, सुख आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, दर्दीआं दर्द गवाईआ। सफ़ल करा के जननी कुक्ख, मानस जन्म लेखे लाईआ। सच सुहञ्जणी सुहाए रुत्त, अबिनाशी अचुत बेपरवाहीआ। जन भगतां कर उजल मुख, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत कहे मेरा मालक एकँकार, इक्क इकल्ला नज़री आईआ। जिस दा दर ठांडा दरबार, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे सेवादार, नन्न्हे बच्चे हो के सेव कमाईआ।

शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी करन पुकार, खाणी बाणी जिस दा ढोला गाईआ। सो करनी दा करता सदा रहे सिक्दार, हुक्म धुर दा इक्क मनाईआ। भगतां पाउँदा रहे सार, नित नवित वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, लख चुरासी विच्चों आप जगाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को घर वसाईआ। पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। भाग लगाए काया माटी डाल, पत्त डाली आप महकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार वखा के सच्ची धर्मसाल, धुर दवारा दए खुल्हाईआ। जन भगत कहे मेरा नाता नाल पुरख अकाल, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे सन्तां सदा करे संभाल, सम्बल विच आ के शब्दी डंक वजा के जोत जोत चमका के चमन गुलशन गुरमुखां वेख वखाईआ।

★ ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जरनैल सिँघ मैंहगा सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

८५
२०

सतिगुर शब्द कहे जुग जुग भगतां चाढ़ां रंगण, रंग रंगीला आदि जुगादि इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म देवां सच अनन्दन, निजानंद धुर दा छन्द दयां समझाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मेटां बन्धन, बन्दगी पुरख अकाल दीन दयाल दयां दृढ़ाईआ। नाम निधान दो जहान दरसावां इक्को कंगण, निहकर्मी हो के कर्म कांड दा खहिड़ा दयां छुडाईआ। मेहरवान महबूब हो के लावां अंगण, अंगीकार कर के कायनात दा झगड़ा दयां मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के ढोला साचा छन्दन, शाह पातशाह शहिनशाह हो के आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेला इक्क इकेला आपणे नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां सदा मिलाउँदा रहां मेल, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। प्रकाश करदा रहां दीपक बिन बाती तेल, जोती जाता डगमगाईआ। पुरख अकाल जणाउँदा रहां धुर दा सज्जण सुहेल, सगला संग कूड़ तजाईआ। वखाउँदा रहां धाम नवेल, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। अचरज अगम्म दृढ़ाउँदा रहां आपणा खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां देंदा रहां दात, दानी हो के आप वरताईआ। नाम भण्डारा धुर सौग़ात, सगनां नाल झोली पाईआ। दीन दुनी दा बदल के समाज, सच समग्री इक्क वखाईआ। मानस जन्म संवार

के काज, करनी दी कीमत आपे पाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत लए बणाईआ। घर मेला कन्त सुहाग, ठाकर स्वामी हो के जोड़ जुड़ाईआ। त्रैगुण पोह ना सके आग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रात, राती रुत्ती आपणे नाल वखाईआ। मुहब्बत विच कर विस्माद, बिस्मिल कलमे विच जणाईआ। हुजरा समझा के हक महिराब, नौबत नाम करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं रंगणहारा आदि जुगादि, जुग चौकड़ी भगतां सेव कमाईआ। वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद, परदा ओहला दो जहान चुकाईआ। सच प्रेम दी बख्शणहारा दाद, वस्त अगम्मी झोली पाईआ। सोई सुरत खुल्हावणहारा जाग, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म बख्शणहारा वैराग, वैरी अंदरों दयां मुकाईआ। कूड़ी क्रिया कर त्याग, सच सुच्च इक्क समझाईआ। माया डस्से ना डस्सणी नाग, नागरिक सच दुआर दे दयां बणाईआ। धुर सुणा आपणा नाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान आपणे घर वसाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां दस्से वसेरा, दर ठांडा इक्क समझाईआ। जित्थे सदा चाउ घनेरा, खुशीआं विच वड्याईआ। ढोला गीत तेरा मेरा, सति सरूप नज़री आईआ। माया ममता कूड़ कुड़यार रहे ना डेरा, जूठ झूठ जड़्ह उखड़ाईआ। चुरासी वाला कट के गेड़ा, दर दवारा इक्क वखाईआ। जित्थे दिसे कोई ना सञ्झ सवेरा, रैण अन्धेरी ना कोए छाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सदा करे मेहरा, मेहरवाना मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत सुहेले आपणे दर सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे किरपा करे ग़रीब निवाजा, जन भगत वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह दरवाज़ा, दूर दुराडे लए बुलाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच नाम अगम्मी मारे आवाज़ा, सुर ताल जगत ना कोए शनवाईआ। होए सहाई अनाथ अनाथां, दीनन आपणे गले लगाईआ। जिन्हां गाई आत्म परमात्म धुर दी गाथा, गहर गम्भीर मेला लए मिलाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जन भगतां मानस जन्म कर रहरासा, रहिबर हो के वेख वखाईआ। चरण प्रीती सचखण्ड दुआर जोती जोत दे धरवासा, शब्दी शब्द धार समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, जन भगतां जुग जुग पूरीआं करे आसा, जन भगत निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी बावी दे गृह पिण्ड दोस्त पुरा ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ मन्नीए तेरा कहिणा, खुशीआं नाल लैणा मनाईआ। दरस बख़्श साचे नैणां, नैण कर रुशनाईआ। चरण दवारे बहणा, बहि बहि खुशी मनाईआ। आपणा भाणा दस्स सहिणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। पूरब जन्म दा लेखा तैथों लैणा, साहिब सतिगुर झोली देणा पाईआ। कूड़ी धार किसे नहीं वहिणा, जन भगत सुहेले तेरी ओट रखाईआ। नाम पदार्थ तेरा अगम्मी गहिणा, रूप सरूप दए बदलाईआ। तुध बिन सारी सृष्टी दिसे तरफ़ैणा, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाता लैणा जुड़ाईआ। जन भगत कहिण तेरे होईए दास, दासी रूप वटाईआ। झगड़ा मुके पृथ्मी आकाश, गेड़ा रहिण कोए ना पाईआ। करमां दा पूरा होवे खात, डूंघे वहिण ना कोए वहाईआ। तेरे नाम दी मिले दात, दातार मिल के खुशी मनाईआ। साची होवे गाथ, आत्म परमात्म राग अलाईआ। तेरा सहारा अनाथां नाथ, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। आपणे पत्तन खड़ना घाट, किनारा इक्को देणा वखाईआ। जित्थे रहे ना पिछली वाट, अगला पन्ध ना कोए फिराईआ। सदा वसीए तेरे पास, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जन भगत रहे ना कोए निरास, दर ठांडे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारा देणा वसाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी दीपो दे गृह उच्चा पिण्ड ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ तेरी साची सिख्या, सिख के खुशी मनाईआ। सृष्टी जाण के कूड़ी मिथ्या, नाता तेरे नाल रखाईआ। पूरब जन्मां वेख लिख्या, करमां डेरा देणा ढाहीआ। तेरा खेल नित नवितया, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम कर हित्या, हितकारी हो के संग निभाईआ। तेरा भाणा लागे मिठ्ठया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धाम वखाउणा सच अनडिठ्ठया, जित्थे दीपक जोत होवे रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा भगतां कारज ना किसे नजिठ्ठया, धुर दा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा साचा वर, सच मिले सरनाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ करम सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण इक्को तेरा जपणा जाप, जप जप खुशी मनाईआ। साडा वेखीं ना पुन्न पाप, मेहर नज़र मंग

मंगाईआ। जगत जन्म दे मेट संताप, झगड़े देणे गवाईआ। साडी प्रीती लेखे लाउणी आप, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। आत्म नाल जोड़ना नात, नाता प्रीतम लैणा बणाईआ। तन वजूद लेखे लाउणी ख़ाक, पंज तत सोभा पाईआ। तेरे नाल रहे इत्तफाक, दो जहान ना होए जुदाईआ। पिछला पूरा करना वाक्, वाकिफ़कार हो के वेख वखाईआ। भगतां अंदर खोल् के ताक, परदा देणा उठाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, गुस्सा पूरा देणा गवाईआ। आपणे मिलण दी दस्स के जाच, याचक हो के वेख वखाईआ। त्रैगुण माया पोह ना सके आंच, अग्नी अग्ग ना कोए लगाईआ। भाग लगाउणा काया माटी काच, कंचन गढ़ सुहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ सदा सदा तेरे दास, बिन सेवा दूजी कार ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत उधारना तेरा कम्म ख़ास, ख़ालस गुरमुख आप प्रगटाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरो दे गृह पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

बलिहारी घोली घोल घुमाई नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो आई वारी, वारस हो के लैणा बचाईआ। साचे नाम दी दे खुमारी, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। अंदर रहे ना गढ़ हँकारी, ममता मोह देणा मिटाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वारी, मार्ग धुर दा देणा समझाईआ। पार कराउणा नर नारी, नरायण तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच प्रीती तोड़ निभाउणी यारी, मुहब्बत आपणे घर बणाईआ। वेले अन्त ना होए खुआरी, सज़ा अवर ना कोए भुगताईआ। तेरा मेल जोत निरँकारी, निरगुण तेरे विच समाईआ। इक्को बख़्शणा सचखण्ड दवारी, ठांडा दर सोभा पाईआ। लहिणा देणा चुकाउणा वड संसारी, संसार सागर विच्चों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादी इक्क अवतारी, तारनहारा बेपरवाहीआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी सधरो दे गृह पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण असीं तेरे दरस प्यासे, जगत तृष्ना ना कोए वधाईआ। सद रखी इक्को आसे, आसावंद हो के डेरा लाईआ। धुर दा मिले पुरख अबिनाशे, अबिनाशी करता जोड़ जुड़ाईआ। जिस दे प्रेम प्रीती वाले हासे, ग़मीआं विच्चों बाहर कढाहीआ। आदि जुगादि ना कदे विनासे, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जन भगतां मानस जन्म करे रहरासे,

मेहर नज़र इक्क उठाईआ। निरगुण हो के वसे पासे, सगला संग बणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाशे, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोत करे रुशनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां दे सच भरवासे, धीरज धर्म दे जणाईआ। ख़ाली होण ना दे काया माटी कासे, नाम भण्डारा दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दस्स शनाख़े, शनाख़त विच कदे ना आईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरमेज कौर दे गृह पिण्ड कठयाली ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ वेख कलयुग अन्धेरी रात, सदी चौधवीं नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धुर दा नाम देवे कोई ना दात, बिन तेरी किरपा अगम्मी वस्त ना कोए वरताईआ। चार वरन अठारां बरन सुणे ना कोई फ़रयाद, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सांतक सति ना कोए कराईआ। काया खेड़ा उजड़यां करे ना कोए आबाद, अमृत आत्म सिंच हरा ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म तेरी करे कोई ना याद, सच तराना श्री भगवाना तेरा ढोला राग ना कोए गाईआ। जगत विकारा कूड़ हँकारा वध्या पाप, जूठ झूठ चार कुण्ट दहि दिशा होई हल्काईआ। मानव जाती कोई ना समझे आपणा आप, हँ ब्रह्म परदा ओहला ना कोए उठाईआ। सज्जण मीत देवे कोए ना साथ, पिता पूत मेल ना कोए मिलाईआ। सच सरोवर दसाए कोई ना ताट, घाट पत्तन दरगाह साची नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी आवण जावण पतित पावण मेटे कोए ना वाट, रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। निरगुण नूर निरवैर काया मन्दिर दिसे ना किसे प्रकाश, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत बैठे सीस निवाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख कलयुग अन्धेरा अन्ध, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरगुण आत्म परमात्म ढोला गाए कोई ना छन्द, सहिंसा भरम गढ़ कूड़ ना कोए तुड़ाईआ। लख चुरासी आवण जावण मुक्के किसे ना पन्ध, पाँधी हो के चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना भज्जण वाहो दाहीआ। पंच विकार घर घर गृह गृह लगाया जंग, दिवस रैण अठ्ठे पहर ममता मोह करे लड़ाईआ। निज आत्म परमात्म तेरे अमृत रस दा लए ना कोए अनन्द, परमानंद विच ना कोए समाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द मदिरा मास लाउँदे गंद, निजर झिरना अंमिउँ रस जाम ना कोए प्याईआ। माया डस्सणी घर घर मारे डंग, जगत तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच ढाहे कोई ना कंध, आत्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। बिन तेरी किरपा पुरख अबिनाशी दो जहानां देवे कोई ना संग, सगल सृष्टी

रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग अन्तिम वेख अन्धेरी रात रैण, रहमत विच नज़र कोए ना आईआ। नाता तुट्टा मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण कूड़ कुटम्ब साचा मीत ना कोए बणाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्ती ढोले सारे तेरे कहिण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार वरन अठारां बरन हरि संगत साचे धाम ना मिल के बहण, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर देण दुहाईआ। तेरा दरस निरगुण धार कोई ना तक्के निज नैण, ज्ञान अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी वेख वखाईआ। जन भगत कहिण सदी चौधवीं तक्कीए तेरा राह, रहिबर इक्को वेख वखाईआ। जो सब दा मालक बेपरवाह, सद बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर खुदा, अल्ला अलाह नूर रुशनाईआ। सो शहिनशाहां दा शहिनशाह, पातशाहां दा पातशाह वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी नाउँ धरा, धरनी धरत धौल आप सहाईआ। सन्त सुहेले हरिजन भगत कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढा, जगत वासना विच ना कोए फसाईआ। तेरे अग्गे रहमत विच सलामत विच अमानत इक्क दुआ, दरोही कर के सारे रहे सुणाईआ। परम पुरख मेरा आत्म परदा दे उठा, काया माटी ओहला रहे ना राईआ। जन भगत सुहेले दर ठांडे लै बुला, अग्नी तत रहे ना राईआ। मंज़ल अगम्मी लै चढ़ा, जगत वासना पन्ध मुकाईआ। शब्द अनादी धुन सुणा, अगम्मी राग अल्हाईआ। निरगुण जोत कर रुशना, बिन तेल बाती धुर दीपक डगमगाईआ। सचखण्ड दुआर बहा, जिस गृह तत्ती वा ना लागे राईआ। इक्को आपणा नाम जपा, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्त कन्त भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी निरगुण जोत विच मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब वाइदा पूर करा, निहकर्मी हो के आपणी नज़र उठाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड हेमराज पुर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ तेरी किरपा मिल्या तन ख़ाकी, वजूद जगत रहे हंढाहीआ। अमृत जाम दे बण के धुर साकी, प्याला मधुर ना कोए उठाईआ। मन करे ना कोए गुस्ताख़ी, गुस्सा अंदरों देणा चुकाईआ। दिवस रैण कर साडी राखी, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा रहे ना बाकी, अग्गे धर्म दुआर ना कोए सज़ाईआ। साहिब सतिगुर काया मन्दिर अंदर कर तलाशी, मालक हो के वेख वखाईआ। तृष्ना मोह ना रहे बदमाशी, बदला पिछला दे चुकाईआ। तेरा

नाम जपीए स्वास स्वासी, स्वार्थ एहो देणा दृढ़ाईआ। तूं पुरख अकाल सदा अबिनाशी, विनाशी जीव लैणे तराईआ। तेरी किरपा अन्तर मन्नीए तेरी आखी, आखर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहिण काया जुस्सा वेख ज़मीर, जामन हो के लै बचाईआ। तूं मालक शाह अमीन, शहिनशाह अख्वाईआ। धर्म दी सिख्या दे तालीम, तुलबिआं कर पढ़ाईआ। विछोड़े विच रहे ना कोए ग़मगीन, खुशी अंदरों दे बणाईआ। द्वैत विच करे ना तक्सीम, कूड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं शाह शहाना मालक इक्क अज़ीम, पातशाह बेपरवाहीआ। भगत उधारना तेरा खेल कदीम, कुदरत दे मालक तेरे हब्ब वड्याईआ। आपणा मार्ग दस्स महीन, रहिबर हो के आप समझाईआ। सब दे अंदर दे यकीन, भरोसा दे बन्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साचे प्रेम दी दे दे सिख्या, सिख्या सच समझाईआ। जो तेरे धर्म दवारे विकया, कीमत करते लै पाईआ। जगत जहान दिसे मिथ्या, तजे सर्ब सृष्ट सबाईआ। जगत वासना विच्चों जाए (ना) भिटया, पतित पुनीत दे बणाईआ। कोई ना पूजे पत्थर वट्टया, सिल पाहन ना सीस झुकाईआ। तेरी धार वेखीए निर्मल जोत चिट्टया, जोती जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भविख्त पूरा कर लिख्या, लेखा आपणे नाल बणाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड हेमराज पुर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ साडी वेख ना करनी, करते किस्मत दे बदलाईआ। सच दुआर आए धुर दी चरणी, चरणोदक अमृत जाम देणा प्याईआ। साची बख्शणी आपणी सरनी, सरनगति इक्को देणी समझाईआ। आपणे नाम दी तुक दस्सणी पढ़नी, मार्ग सच दा इक्क वखाईआ। शौह दरया दी दस्सणी तरनी, पार किनारे आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ढहि पए तेरी सरनाईआ। जन भगत कहिण साडे विच नहीं कोई भगती, भगवान तेरी आस रखाईआ। तेरे मिलण दी नहीं कोई शक्ती, शख्सीअत विच ना कोए वड्याईआ। तूं मालक धुर दा अर्शी, जोत नूर रुशनाईआ। असीं ख़ाली ख़ाकी बन्दे उपर धरती, बिन तेरी किरपा दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। साडी बेनन्ती एहो अर्ज़ी, ख्वाहिश तेरे अग्गे रखाईआ। सानूं दस्सणी आपणी रज़ा आपणी मर्ज़ी, सदा आपणा संग बणाईआ। साडी आत्मा दासी तेरे घर दी, घराने विच लैणा रखाईआ। मुहब्बत छड्डी सृष्टी जग दी, नाता कूड़ दिता तुड़ाईआ। मंज़ल मुकी मज़्बां हद्द दी, पार किनारा

तेरा दिसे बेपरवाहीआ। अग्गे धार रहिण ना देवीं अलग्ग दी, विछड़यां मेल मिलाईआ। एह खेल तेरे सबब दी, जुग चौकड़ी पिच्छो नज़री आईआ। जन भगत आत्मा सदा रहे तैनूं लभ्भदी, खोजे थाउँ थाँईंआ। बिरहों विच रहे सद्द दी, वैरागण हो के दए दुहाईआ। सेज सुहञ्जणी वेखे आपणी आत्म पलँघ दी, सुहावणा रूप ना कोए वटाईआ। मिले वड्याई ना तेरे अनन्द दी, जगत रस कम्म किसे ना आईआ। धन्न भाग जे तूं धार बणाई सोहँ छन्द दी, आत्म परमात्म ल्या जुड़ाईआ। बिन तेरे दरस होर नहीं कुछ मंगदी, आसा अवर ना कोए रखाईआ। दूजे दवारे कदे नहीं लँघदी, दर दर अलख ना कोए जगाईआ। इक्को ओट सूरे सरबंग दी, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खुशी बख्श बन्द बन्द दी, बन्दगी इक्को इक्क कराईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह हयात नगर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ धुर दा दे भरवासा, भरम विच जगत ना कोए भुलाईआ। तेरा नाम सिमरीए स्वास स्वासा, साह साह तेरा ढोला गाईआ। चरण कँवल दे निवासा, धरनी धरत धवल हो सहाईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर आसा, लेखा

पूरब वेख वखाईआ। माणस जन्म ना आवे घाटा, नाम भण्डारा देणा भराईआ। चुरासी वाली मेट दे वाटा, जूनी जून ना कोए भवाईआ। धुर दा अमृत जाम प्या दे बाटा, रस निजर आप झिराईआ। तूं साहिब स्वामी कमलापाता, पतिपरमेश्वर इक्क अख्वाईआ। आत्म परमात्म जोड़ नाता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। एथे ओथे दो जहानां बण राखा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा भेव किसे ना जाता, परदा ओहला दे उठाईआ। कलयुग मेट कूड़ी अन्धेरी राता, निरगुण जोती चन्द कर रुशनाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अबिनाशा, घट निवासी इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा धुर दी दाता, दातार हो के दे वरताईआ। जन भगत कहिण हउँ बालक तूं पिता माता, सेवक आपणे लै बणाईआ। सर्ब जीआं तूं जोती जाता, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक नज़री आएं आका, अकल बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। बन्द कवाड़ी खोल्ह ताका, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। सच दुआर कर निवासा, सचखण्ड साचे मिल के ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब कुछ तेरे हाथा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहिण साडा मेट पिछला अगला पन्ध, पाँधी हो के सीस निवाईआ। बिन तेरी किरपा किते ना आवे अनन्द, रस वेखे जगत लोकाईआ। खान्दयां पीन्दयां घस गए दन्द,

परमानंद विच ना कोए समाईआ। किशना सुखला दा वेंहदे रहे चन्द, बिन नूरी जोत ना जोत कोए रुशनाईआ। बिन तेरे हुक्म कर सके ना कोए पाबन्द, बन्धन नाम ना कोए बंधाईआ। धुर दा ढोला दे छन्द, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कर दे खण्ड खण्ड, खण्डा धुर दा नाम चमकाईआ। दीन दुनी विच रह के होए तंग, तंगदस्ती दे कटाईआ। तेरे मिलण दी इक्क उमंग, आसा मनसा तेरे अग्गे रखाईआ। भेव खुल्ा दे ब्रह्म हँ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लालच तृष्ना रहे ना तम, तामस अंदरों देणी कढाहीआ। लेखे लाउणा पवण स्वास दम, दामन हो के लैणा छुडाईआ। चिन्ता हरख सोग रहे ना ग़म, धुर दी ख़ुशी देणी प्रगटाईआ। भाग लगाउणा काया माटी चम्म, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। शब्द राग सुणाउणा बिन कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। शुकराने अंदर कहीए तेरा धन्न, धन्न धन्न धन्न तेरी बेपरवाहीआ। दहि दिशा ना भज्जे मनुआ मन, मनसा अंदरे अंदर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत सुहेले भगवन तेरी आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ गहर गम्भीर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। किरपा कर बेनज़ीर, नज़र तों परे परदा दे उठाईआ। आपणे मिलण दी अनोखी वक्खरी दस्स तदबीर, तकदीर दा झगड़ा दे मुकाईआ। तेरे नाम दा अमृत पीए सीर, शीरख़ार बच्चे लैणे बणाईआ। दुनी विच होईए ना कदे दिलगीर, सति सन्तोख देणा समझाईआ। झगड़ा मुका के शाह हकीर, एको रंग देणा रंगाईआ। अंदरे अंदर बदल के ज़मीर, ज़ामन हो के पल्लू देणा फड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे उत्ते इक्क यकीन, भरोसा तेरा नाम नज़री आईआ। सजदयां विच तैनूं कहि के आमीन, कामल मुर्शद तेरी ओट रखाईआ। हउँ बालक नढ्ढे मस्कीन, बिन तेरे यतीम जगत कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाउणा इक्क दर, दरवाज़ा ग़रीब निवाजा खोल्ह खुल्हाईआ। जन भगत कहिण किरपा कर पुरख अगम्म, अलख अगोचर तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेड़ा बन्न्ह, सदी सदीवी दए दुहाईआ। अरज़ बेनन्ती अरदास सुण बिनां कन्न, सरवणां दी लोड़ रहे ना राईआ। हउँ सेवक तेरे जन, जणेंदी इक्को तूं ही नज़री आईआ। जिस ने बख़्श्या काया माटी पंज तत तन, मन मति बुध नाल करी कुड़माईआ। आत्म परमात्म दे के धन, नाम ख़ज़ाना दिता भराईआ। निरगुण जोत चाढ़ के चन्न, प्रकाश प्रकाश विच्चों वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सदा सुहेले बिन तेरे दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहिण तेरे अग्गे इक्क अरज़ोई, आजज़ हो के सीस झुकाईआ। दो जहान श्री भगवान मिले कोए ना ढोई, सहायक नायक सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कोटां विच्चों तेरा भगत सुहेला दिसे कोई कोई, लख चुरासी ख़ाली काया माटी हाटी नज़री

आईआ। तेरे नाम दी इक्क दरोही, तोबा तोबा सारे रहे सुणाईआ। बिन तेरी मुहब्बत आत्म परमात्म किसे ना मोही, सुरती शब्दी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, भगत सुहेले भगवन तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जन भगत कहिण पुरख अबिनाशी सुहा दे रुत्त, रतन अमोलक हीरे गुरमुख लै बणाईआ। सन्त सुहेले सज्जण तेरे सुत, अपराधां तों लै छुडाईआ। मन वासना बदल दे रुख़, बुद्धी बिबेक दे बणाईआ। सच नाम दा दे सुख, सुखआसण दे समझाईआ। आपणे मिलण दी मेट के भुक्ख, तृष्ना जगत वाली गवाईआ। उजल कर मात मुख, दुरमति मैल धवाईआ। सफ़ल कर जननी कुक्ख, लहिणा देणा आपणे नाल बणाईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुत, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीनां अनाथां दीन दयाल मेट दुःख, दर्दीआं आपणा दर्द वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत सुहेले तेरा राह तकाईआ। जन भगत कहिण अबिनाशी करते आ जा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। भाग लगा काया खेड़े, बन्द किवाड़ी कुण्डा दे खुल्हाईआ। आत्म परमात्म ढोले गाईए तेरे मेरे, दूजा संग ना कोए रखाईआ। इक्को मंज़ल चढ़ के वेखीं गुरू चेरे, चेला गुरू इक्को रंग रंगाईआ। हकीकत विच फैसला हक नबेड़ें, नाते कूड़ जगत तुड़ाईआ। मेहरवान महबूब कर मेहरे, मुहब्बत विच आपणा घर वखाईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर जोत सरूपी ला के बैठे डेरे, सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को देणा वखाईआ। लख चुरासी जन्म चारे खाणी विच भोगे बथेरे, आवण जावण दी लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगत सुहेले बालक तेरे, तीर्थ तटां दा खहिड़ा दे छुडाईआ। काया मन्दिर अंदर जगत वासना रहे ना कोए अन्धेरे, अन्ध अज्ञान देणा चुकाईआ। ऐको वार एकँकार चाढ़ आपणे बेड़े, नईआ नौका धुर दा नाम दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान आपणी कर मेहरे, रहमत विच रस्ते आप चलाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरबंस कौर दे गृह पिण्ड ग़ज़नीपुर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण साडी श्रद्धा होवे पूरी, पूरन सतिगुर मिल के वज्जे वधाईआ। आत्म प्रकाश जोत होवे अगम्मी नूरी, नूर नुराना शाह सुल्ताना नज़री आईआ। जिस दे सचखण्ड दुआर वसीए सदा हज़ूरी, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। दो जहानां पन्ध मुका नेड़े दूरी, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आईआ। मन वासना जगत मिटे कूड़ी, बुध बिबेक दए बणाईआ।

गढ़ तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार ग़रूरी, गुरबत अंदरों दए कढाहीआ। चरण कँवल बख्शे साची धूढ़ी, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ी, साची विद्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आसा मनसा पूरन होवे जग, तृष्ना कूड़ रहिण ना पाईआ। किरपा करे सूरा सरबग्ग, सतिगुर शब्द बेपरवाहीआ। दरस वखाए उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। सुखमन टेडी बंक जाए लँघ, बिन मंज़ल पन्ध मुकाईआ। नाम निधान वजाए मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म हो के वसे संग, सगला संग वखाईआ। झगड़ा चुका के दीन दुनी विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड लेखा दए मुकाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी देवे इक्क अनन्द, अनन्द विच परमानंद लए प्रगटाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक्क समझाईआ। जन भगतां सदा रहे संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी साचा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। आसा मनसा पूरी होवे लोकमात, परलोक वज्जे वधाईआ। साहिब सतिगुर पूरा देवे आपणी दात, नाम भण्डारा एकँकारा आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स अगम्मी गाथ, बिन अक्खरां निरअक्खर दए समझाईआ। कलयुग मेट कूड़ अन्धेरी रात, निरगुण साचा चन्द करे रुशनाईआ। मन वासना कर के घात, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। बिन रसना जेहवा मार आवाज़, सोई सुरती लए उठाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के घर विच घर खोल्ह के राज़, परदा ओहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत सुहेला इक्क इकेला हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। मनसा पूरी होए सदा गुरमुख, गुर सतिगुर देवणहार वड्याईआ। जन्म कर्म दा रहिण ना देवे कोई दुःख, आवण जावण पतित पावण दए कटाईआ। उजल करे प्रेम प्रीती अंदर मात मुख, सुख सागर विच समाईआ। सन्त साजण आपणी गोदी लए चुक्क, चार कुण्ट दहि दिशा वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। मंज़ल बमंज़ल पैंडा जाए मुक्क, ज़िमीं असमान हो मेहरवान लहिणा देणा दए मुकाईआ। सो गुरमुख सन्त सुहेले प्रभ दी याद विच सदा खुश, जिन्हां दे अन्तर अन्तर निरंतर मंत्र आपणा दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परदा ओहला रहिण ना देवे कोई लुक, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को रंग वखाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी सुलखणी दे गृह ग़ज़नीपुर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण तेरे नाम दा इक्क सहारा, सहायक अवर नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर पुरख अकाल एकँकारा, इक्क इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। सांझे मीत परवरदिगारा, लाशरीक तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल न्यारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर सेव लगाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा होया धुँदूकारा, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे पुकारा, सोहले ढोले रागां नादां विच करे शनवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर रोवण ज़ारो ज़ारा, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर मारन धाहीआ। बीस बीसे हरि जगदीसे तेरा खेल वेखीए अपरम्पर अपर अपारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परदा ओहला देणा उठाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश साचा दिसे ना कोए सिक्दारा, शाहो भूप सति सरूप तेरा रूप नज़र कोए ना आईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, कलम शाही कूक कूक कुरलाईआ। दीन दुनी सृष्टी दृष्टी अंदर होई बेहाला, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। साची दिसे ना कोई धर्मसाला, काया काअबा मंज़ल हक ना कोए सुहाईआ। त्रैगुण माया तोड़े ना कोए जंजाला, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत सुहेले दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण सृष्टी दृष्टी अंदर रही कूक, राउ रंक देण दुहाईआ। कलयुग माया अग्नी सब नूं रही फूक, सांतक सति ना कोए कराईआ। झगड़ा प्या चारे कूट, दहि दिशा वरन बरन करे लड़ाईआ। भेव समझे ना कोई काया पंज भूत, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। सति धर्म धरनी धरत धवल उत्तों कर गया कूच, कूचा कूचा साफ़ ना कोए कराईआ। तेरे नाम दी धार सके कोए ना बूझ, ज्ञानी ध्यानी विद्वानी परदा सके ना कोए उठाईआ। लेखा मुके ना एक दूज, द्वैत शरअ ना कोए तजाईआ। तेरा नज़र ना आए किसे सति सरूप, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी राग सुणन कोए ना पाईआ। जन भगत सुहेले पुरख अकाल दीन दयाल आपणे बणा सपूत, पिता पूत हो के आपणी गोद उठाईआ। शब्द अगम्मी नौजवान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल भेज आपणा दूत, दुतीआ भाउ दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत सुहेले दर तेरे अलख जगाईआ। जन भगत कहिण किरपा कर पुरख समरथ, स्वामी तेरी आस रखाईआ। सृष्ट सबाई दिसे ख़ाली हथ्थ, नाम वस्त झोली ना कोए भराईआ। तेरे मिलण दी खुल्ही किसे ना अक्ख, निज लोयण ना कोए रुशनाईआ। धर्म रिहा ना किसे दुआर सच, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। मन वासना सारे रहे नच्च, कलयुग नटुआ

आपणा स्वांग वरताईआ। किरपा कर के भाग लगा काया माटी कच्च, कच्च कंचन गढ़ दे बणाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रती रत्त आपणा नाम दे टिकाईआ। आत्म परमात्म साची दे ब्रह्म मत, जगत विद्या दा लेखा दे मुकाईआ। चरण प्रीती साची नीती धुर दरबार जोड़ आपणा नत्त, नाते बिधाते आपणे नाल रखाईआ। जन भगत कहिण तैथों रहिणा कदे नहीं वक्ख, प्रतख हो के दर्शन दे गुसाँईंआ। सदी चौधवीं लैणा रख, प्रीतम हो के करना आपणे वस्स, मुहब्बत विच मेला लैणा मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा हो जाए जस, भगत भगवान मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे नाम वथ, वस्त अमोलक काया गोलक देणी टिकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ धुर दे मालक सच्चे स्वामी, सति सतिवादी तेरी बेपरवाहीआ। तूं हर घट अन्तरजामी, लख चुरासी वेखें थाउँ थाँईंआ। गुर अवतार पैगम्बरां दे के शब्द अगम्मी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दिते बणाईआ। सुरत बणा के आपणी सवाणी, शब्दी कन्त काहन नाल प्रनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को जेही रखें जवानी, बिरध बाल रूप ना कोए दरसाईआ। जुग चौकड़ी तेरी महिमा सिफ्तां वाली चली आई कहाणी, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। बिन भगतां मिल्या किसे ना पद निरबाणी, सचखण्ड दुआर बहि के खुशी ना कोए मनाईआ। जन भगत कहिण किरपा कर शाह सुल्तानी, शहिनशाह दर तेरे सीस निवाईआ। झगड़ा रहे ना कोए दीवानी, पूरब लेखा देणा बणाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दिसे फ़ानी, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। तेरे चरण कँवल विटहु कुरबानी, भगत सन्त गुरमुख गुरसिख दर ठांडे सीस निवाईआ। तूं ख़ालक ख़लक प्रितपालक सब दा जाण जाणी, जानणहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत भगवान इक्को रूप नज़री आईआ। जन भगत कहिण दूई द्वैत मेट दे शरअ, शरीअत विच रहिण कोए ना पाईआ। इक्को इष्ट तेरा बड़ा, पुरख अकाल दीन दयाल दो जहानां दे समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दर खड़ा, गुर अवतार पैगम्बर बैठा सीस निवाईआ। तेरा वरन बरन ज़ात पात नाल नहीं कोई धड़ा, सब दा मालक इक्को नूर नूर रुशनाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दवारे सदा खड़ा, घट भीतर डेरा लाईआ। तेरे चरण कँवल सरन सरनाई जन भगत सदा तरा, तारनहार समरथ स्वामी तेरी ओट तकाईआ। तेरा नाम शब्द दो जहानां खरा, खोटयां खरे दए बणाईआ। सच दुआर एकँकार सतिजुग साचे खोल्ह दरा, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आपणा इक्क वखाईआ। जन भगत कहिण पुरख अकाल दीन दयाल तेरा लड़ फड़ा, शब्दी पल्लू आपणी गंढु पवाईआ। तूं मालक नरायण नरा, नर हरि तेरा खेल वेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण

नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दुआर एकँकार तेरा धुर दा घरा, मुकामे हक दरगाह साची सच मुकाम देणा बणाईआ।

★ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बलदेव सिँघ दे गृह पिण्ड शोन ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहे तेरा खेल अगम्मी चलित्र, बिन चातृक गुरमुख समझ किसे ना आईआ। मेहरवान अबिनाशी करते बण आप आपणा मित्र, आत्म परमात्म तेरा नूर नज़री आईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार हो के नितर, परदा ओहला काया चोला दे मुकाईआ। मंज़ल चोटी हक हकीकी चढ़ सिखर, दरां तों उपर आपणा घर दे वखाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना मेट फ़िकर, फ़ाका आका रहिण कोए ना पाईआ। मन वासना भज्जे ना इधर उधर, डोरी तन्द अगम्मा लैणा पाईआ। मन्नणा पए ना कोई मढ़ीं वाला पित्र, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। तेरे नालों जाईए कदे ना विछड़, विछड़यां मेला लैणा आप मिलाईआ। जन भगत सुहेले कहिण असीं भरीआं चिक्कड़, दुरमति मैल देणी धवाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा नाम हिरदे विच ना होवे ज़िकर, ज़ाहर बातन ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ हर हिरदे अंदर वसीं, वसल देणा यार खुदाईआ। नाम डोरी बंधीं रस्सी, रस्ता भुल्ल कोए ना जाईआ। धुर दा मार्ग मर्द मर्दाना हो के दस्सीं, दहि दिशा परदा आप उठाईआ। साख्यात प्रगट होवीं साहमणे अक्खीं, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्लाईआ। सन्त सुहेला तेरा धुर दी सख़ी, सख़ावत कर के बग़ावत अंदरों देणी मिटाईआ। आत्म परमात्म धार करनी पक्की, पकवान खा के पुख़ते देणे बणाईआ। साची वस्त साचे घर ढकीं, परदा ओहला आप आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर सच दवारा देणा सुहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कूड़ी क्रिया कर मनसूख़, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा रहे ना द्वैती दूत, दुश्मण कूड़े देणे मिटाईआ। भेव मिटा दे जगत छूत, अछूत दृष्टी सृष्टी देणी वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे कूच, कूचा गली कर सफ़ाईआ। लेखे ला जन भगतां पंज भूत, भविख आपणा दे दृढ़ाईआ। तेरे नालों जाण कदे ना रूठ, रुठयां लैणा मनाईआ। मेहरवान हो के तुठ, तुहमत कूड़ ना लागे राईआ। अमृत जाम प्याउणा घुट, घटना घाट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरे दवारे गए पुज्ज, पूजनीक हो के समझ आपणी देणी समझाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड शोन ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण जन्म जन्म दा दिता नहीं जांदा जज़ीआ, फ़ैसला इक्को वार देणा कराईआ। भरमन वाला मेट दे प्रभू कजीआ, सांतक सति दे कराईआ। तेरी याद विच जुग चौकड़ी बीत गईआं सदीआं, सदमा सक्या ना कोए गवाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत पार करदे रहे नदीआं, तीर्थ तटां उत्ते फेरा पाईआ। जूठ झूठ कोट अपराध कीते बदीआं, बदले विच भुगतदे रहे सज़ाईआ। जन्म कर्म दा लेखा रुलदा रिहा विच रद्दीआं, करते कीमत ना कोए पाईआ। मन हँकार खुमारी विच रहीआं मधीआं, नाम रस ना कोए चखाईआ। जगत ख्वाहिश विच जगदीआं रहीआं मोम बत्तीआं, तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। वासना विच रखदे रहे हिस्से पत्तीआं, पतिपरमेश्वर तेरा रूप नज़र कोए ना आईआ। हठ्ठ विच हुन्दीआं रहीआं सत्तीआं, सति सतिवाद दर ना कोए खुल्हाईआ। तुलदीआं रहीआं नाल तोले माशे रत्तीआं, रतन अमोलक तेरा रूप ना कोए वटाईआ। अक्खरां वालीआं पढ़दीआं रहीआं पट्टीआं, पट्टेदार जगत गुरू बेअन्त हंढाहीआ। कलम शाही नाल लिखदीआं रहीआं फट्टीआं, हथ्थां उंगलां नाल वड्याईआ। कुकरमां दीआं भरदीआं रहीआं चट्टीआं, गुरमुख सख़ियां रो रो मारन धाहींआ। जगत विकार विच रहीआं अट्टीआं, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढाहीआ। ख्वाहिशां अंदर फिरीआं नठ्ठीआं, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेरा नाम लभ्भदीआं रहीआं विच्चों हट्टीआं, शिवदवाले मठ्ठ मन्दिर मस्जिद फोले थाउँ थाँईंआ। साचीआं खट्टीआं कितों ना खट्टीआं, खटका सक्या ना कोए मिटाईआ। अन्त इक्क दवारे ढठ्ठीआं, निरगुण सरन मिले सरनाईआ। जगत विद्याहीण हरिजन सिध्धे सादे जट्टीआं, जटा जूट वेस ना कोए वटाईआ। छुडा दे खेल बाज़ीगर नट्टीआं, नटुआ स्वांग ना कोए वरताईआ। हउँ सेवक बालक तेरीआं पठ्ठीआं, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर मतीआं, आशा इक्को इक्क वधाईआ। गलों लाह चुरासी रस्सीआं, फाँसी जम ना कोए पाईआ। तेरी सरनाई हेठां वस्सीआं, वास्ता जगत विच्चों तुड़ाईआ। बिन जल मीन तड़पण ना वैरागण मच्छिआं, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल वेख नाल अक्खीआं, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां दीआं गोबिन्द लाजां रखीआं, सो गुरमुख ध्यान लगाईआ। कौल इकरार दीआं शरतां जिन्हां नाल पक्कीआं, कच्ची गंढु ना कोए पवाईआ। हकीकत विच सच्चीआं, असलीअत विच नज़री आईआ। बिरहों वैरागण तेरीआं बच्चीआं, बचपन आपणी गोदी पाईआ। तेरे शब्दी तीर अणयाले फट्टीआं, पट्टी नाम देणी बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणीआं फ़रयादां तैनूं दस्सीआं, अवर दस्सण दी लोड़ रहे ना राईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ भजन सिँघ दे गृह दोस्तपुरा ज़िला गुरदासपुर ★

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां कर दे पुशटी, तस्दीक शहादत आपणा नाम भुगताईआ। मन विकार दा रहे कोए ना कुश्टी, दुरमति मैल देणी धवाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग कर दरुस्ती, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। साचे सन्तां नाम भण्डारा दे मुफ्ती, करते कीमत ना कोए लगाईआ। जगत आलस निंद्रा रहिण ना दे सुसती, सोई सुरती लै जगाईआ। धार वेखण पुरख अकाल अगम्मी ओस दी, जिस नूर दा मालक निरँकार तूं ही नज़री आईआ। एह कोई मंज़ल नहीं जोजन कोस दी, जन्म जन्म दा पैंडा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सन्त सुहेले तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जन भगत कहिण प्रभ आपणा संदेसा दे गुमनाम, ग़मां तों बाहर दे कढाहीआ। हज़रतां तों परे दे पैग़ाम, पैगम्बरां दे मालक इस्म आज़म दे समझाईआ। तूं सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा हुक्मरान, दो जहान श्री भगवान बैठण सीस निवाईआ। चरण प्रीती सच दवारे बख्श इक्क आराम, जगत ऐशो इशर्त दी लोड़ रहे ना राईआ। बरदे सेवक तेरे बणीए गुलाम, चाकर सेवक हो के तेरी सेव कमाईआ। लख चुरासी विच्चों जामा मेहरवान दिता इन्सान, हिंसा अंदरों देणी कढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी सिफ्त महिमा दा दे के गए ब्यान, काग़ज़ कलम शाही नाल लेखा जगत लिखाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा अमाम, अमन दा मार्ग दे जणाईआ। दीन दुनी दा बदल निज़ाम, कूड़ी क्रिया कलयुग बाहर कढाहीआ। तेरे चरण कँवल सजदा कोटन कोटि प्रणाम, नमस्ते कहि के शुकर मनाईआ। तूं सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मेहरवान, महबूब मुहब्बत धुर दी देणी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत दर ठांडे सीस निवाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख दीन दुनी अंदर गत, अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ली सतिगुर मत, गुरमति समझ किसे ना आईआ। मन वासना जगत विकारी हो के रहे नठ्ठ, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। काया मन्दिर अंदर किसे दुआर दिसे ना सति, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा भेव कोए ना पाईआ। घर घर दर दर नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रत्ती रत्त तेरा नाम नज़र कोए ना आईआ। तेरे मिलण दी खुल्ही दिसे किसे ना अक्ख, जगत लोचण दोए रो रो देण दुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार हो प्रतख, पारखू हो के भगत सुहेले नाम कसवट्टी लै लगाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी आदि जुगादि पुरख समरथ, दो जहानां वाली निरगुण धार नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा गावे जस, सिफ्त सालाही ढोले रागां नादां विच शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सर्ब

१०० २०

स्वामी सब किछ तेरे हथ्थ, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत कहिण प्रभ मेहर नज़र नाल वेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वध्या भेख, चार कुंट रही कुरलाईआ। साबत दिसे ना कोए धारी केस, मूंड मुंडाए रोवण मारन धाहींआ। तेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी चले हमेश, दो जहान सके ना कोए उलटाईआ। गल पल्लू पाउँदे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, देवत सुर नैणां नीर वहाईआ। साची धार दिसे ना किसे ऋषी केश, जगत गवर्धन भार ना कोए उठाईआ। सति सरूप किसे नज़र ना आए दस दस्मेश, दहि दिशा होई हल्काईआ। कूक पुकारे बाशक तशका शेष, सांगोपांग सुख ना कोए बणाईआ। परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल लोकमात वेख आपणा देस, लख चुरासी जीव जंत सारे देण दुहाईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया हउमे हंगता मेट रेख, ऋषी मुनी सिद्ध साधक सारे दे समझाईआ। तेरा नाउँ निरँकार इक्क विशेष, विषयां तों विश्व बाहर देणा कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत सुहेले दर दवारे अलख जगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख किरपा निधान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तेरा साचा मन्दिर दिसे ना किसे मकान, काया काअबा परदा ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना फिरे जहान, जहालत अंदरों ना कोए कढाहीआ। तेरा नाम बिन रसना जेहवा सुणे कोए ना कान, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। मन बुद्धी जगत विचार विच होई शैतान, शरअ विच शरीअत करे लड़ाईआ। कामल मुर्शद पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करते दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध ठाकर सुख सागर दे वखाईआ। तेरे चरण कँवल झुकदे ज़िमीं असमान, गुर अवतार पैगम्बर मंगण दान, दर दरवेश हो के ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जन भगतां आत्म अरज़ोई कर परवान, अठ्ठे पहर बण निगाहबान, सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया मेट हराम, कलाम आपणी दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारा दे दान, कूड़ी क्रिया जूठ झूठ मुके विच जहान, जहालत अलामत माया ममता मोह रहिण कोए ना पाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ धिरता सिँघ दे गृह कलानौर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ दर्शन देणा अनदिन, अनक कलधारी आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म आपणा वेखण नूरी चिन्नह, चन्द सूरज तों परे कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना त्रैगुण माया तिन्न, त्रैगुण अतीते दे वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते गिण गिण, नौ सौ चुरानवे पन्ध मुकाईआ। प्रगट हो अबिनाशी करते छिन, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ चिरी विछुन्ने, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग राह तकाईआ। सदी चौधवीं विचार ना गुण अवगुणे, अवगुण तेरी झोली पाईआ। तेरे नाम शब्द ढोले राग संगीत गीत बहु सुणे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जणाईआ। दीन दयाल आत्म परमात्म घर ठांडे दर्शन दे हुणे, अग्गे वक्त ना कोए जणाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगत सुहेले आपे थोड़े चुणे, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दी दे धुने, धुन आत्मक राग सुणाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कोटन कोटि जन्म करदे रहे भाल, भालयां हथ्थ किसे ना आईआ। रोंदे वेखे शाह कंगाल, जगत पातशाह देण दुहाईआ। बिन मुरीदां तों पुछे ना किसे दा हाल, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। चार कुण्ट चार वरन अठारां बरन प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। धुर दा मिले ना कोए दलाल, वणजारा हट्ट हक ना कोए वखाईआ। पदार्थ मिले ना अगम्मा माल, नाम निधान ना कोए जणाईआ। ख़ाली दिसे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले धर्मसाल, धुर दा मालक रूप ना कोए प्रगटाईआ। पढ़ पढ़ पुस्तक घालणा रहे घाल, कीती घाल लेखे कोए ना लाईआ। तेरे अग्गे इक्क सवाल, बेनन्ती विच अरज़ोईआ।
१०२ तूं दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध ठाकर इक्क अख्वाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर प्रितपाल, प्रितपालक हो के १०२
२० वेख वखाईआ। साचा मंत्र अन्तर निरंतर इक्क सिखाल, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। भगत वछल जन भगतां २०
दस्स आपणी अगम्मी चाल, चलत विच दीन दुनी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। जन भगत कहिण प्रभ पूरी करदे इच्छा, निछावर तेरे उत्तों आपणा आप कराईआ। सच प्रेम दी पा दे भिच्छा, भिक्खक हो के झोली देणी भराईआ। तेरे प्रेम प्यार दीआं अंदर रैहन्दीआं सिक्कां, सिखर चोटी चढ़ के होणा आप सहाईआ। जन भगत सुहेला तेरी धार विच्चों तेरा रूप निक्का, निक्कयों वड्डा देणा बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जग नेत्र सृष्टी दृष्टी अंदर जगत किसे ना दिसा, सति सरूप तेरा रूप ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी दर घर साचा देणा सुहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ लख चुरासी नालों कर चोरी, ठग्गी दीन दुनी कमाईआ। जन भगतां निरगुण धार हो के बौहड़ी, बौहड़ी बौहड़ी कर के देण दुहाईआ। वेखीं मार्ग गली भीड़ी ना रखीं सौड़ी, साचा राह देणा वखाईआ। मन वासना काया अंदर रहिण ना देवीं कौड़ी, विख अमृत रूप बणाईआ। तेरे नाम दी साचे मन्दिर लग्गे पौड़ी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। धुर शब्द बन्नूणा डोरी, तन्दी तन्द ना कोए कटाईआ। तेरी मंज़ल दिसे होर दी होरी, महबूब परदा हकीकत देणा उठाईआ। आत्म

परमात्म मिल के साची बणे जोड़ी, जोड़ा इक्को लैणा बणाईआ। तेरी प्रीत लग्गी निभे तोड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दे वस्त अगम्मी, अलख अगोचर अगम्म अथाह दर तेरे मंग मंगाईआ। आपणी धार दस्स दे नवीं, चार जुग दी गाथा दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म सेजा आ के सवीं, सच सिँघासण देणा सुहाईआ। काया मन्दिर अंदर घर ठांडे आ के बहिवीं, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। तेरा राह तक्कदे गए जोत सरूप आउणा अवतार चवी, चवीवें अवतार निहकलंक नरायण नर तेरे हथ्थ वड्याईआ। आपणा नाम हुक्म फ़रमान दो जहान अगला कहवीं, पिछला लहिणा देणा देणा चुकाईआ। जन भगतां ढोला आपणे नाल मिला के कहवीं, बिनां मिलाप तों जाप कम्म किसे ना आईआ। सच दुआर एकँकार हो के रहवीं, जन भगतां काया मन्दिर डेरा लाईआ। प्रेम प्यार दी भिच्छया जन भगत दवारयां लवीं, दूजा दर मंगण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अगम्मी वस्त अमोलक आप वरताईआ। जन भगत दे दे नाम रंग रंगीला, रंग आपणा दे चढ़ाईआ। लोकमात जगत भगत बण वसीला, कूड़ विकार विषयां तों बाहर लैणा रखाईआ। गुरमुख सज्जण तेरा कबीला, कामल मुर्शद हो के मेला लैणा मिलाईआ। झगड़ा रहे ना लोक तीनां, त्रैगुण डेरा देणा ढाहीआ। बिन तेरी किरपा बिन तेरे दरस भगतां किसे कम्म ना आवे जीणा, जीवण जी तेरी झोली पाईआ। बिन तेरी चरण सरन दूसर होर किसे नहीं नीणा, सिर मस्तक ना कोए झुकाईआ। तेरे नाम प्यार दा अमृत रस पीणा, निजर धार देणी वहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे दवारे दे मंगते तूं पातशाह नहीं कमीना, कायम मुकाम बैठा सच सिँघासण सोभा पाईआ। पिछली बन्द कर तक्सीमा, हिस्सयां वाला झगड़ा दे मुकाईआ। तेरे दवारे सारयां दा इक्को सांझा होवे ज़मीमा, जन भगत सुहेले इक्को घर देणे बहाईआ। किसे नूं लभ्भणा ना पए मक्का मदीना, काया काअबा देणा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां ठांडा करना सीना, कलयुग कूड़ी क्रिया अग्नी अग्ग बुझाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ सरदार सिँघ दे गृह पिण्ड कलानौर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ अंदरों कढ्ढ दे खुदी, खुद मालक हो के वेख वखाईआ। बुध बिबेक निर्मल कर बुद्धि, बुध तों परे आपणा नाम दृढ़ाईआ। आपणी रमज़ ला गुज्झी, शब्द इशारे नाल समझाईआ। भावना रहे कोए ना दूजी, एका

१०३ २०

१०४
२०

रंग देणा चढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोए वदी सुदी, किशना शुक्ला पक्ख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क जणाईआ। जन भगत कहिण हरि शब्दी दस्स इशारा, इच्छया सब दी पूर कराईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। साचे नाम दा दे भण्डारा, भण्डारी हो के आप वरताईआ। मानस जन्म ना आवे हारा, हिरदे अंदर हरदम आपणा आप याद कराईआ। इक्को तेरा चरण कँवल दिसे सहारा, सहायता दे के सहिमत आपणे नाल कराईआ। मूर्ख मुग्ध लेखे लाउणा गवारा, चतुर सुघड़ आपणे चरण लैणा बणाईआ। मन वासना रहे ना हाहाकारा, सांतक सति ना कोए कराईआ। इक्को तक्कीए तेरा धुर दरबारा, जिस गृह बैठा सोभा पाईआ। दीवा बाती कमलापाती तेरा नूर होवे उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सो मन्दिर सुहाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। जित्थे पार उतारें शाह कंगाला, कोझे कमले आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन हो के आसा पूर कराईआ। जन भगत कहिण तेरा दवारा वेखीए सचखण्ड, खण्डन सब नूं दे कराईआ। जित्थे दीन मज़्हब ज़ात पात दी नहीं वण्ड, आत्म निरगुण नूर जोत करें रुशनाईआ। पंज तत काया माटी सरीर नहीं कोई संग, वजूद तन ना कोए हंढाहीआ। मन कामना वासना विच पाए कोई ना डण्ड, डण्डावत कर के सीस ना कोए झुकाईआ। प्रकाश देवे कोए ना सूर्या चन्द, चन्द चांदनी तेरा नूर जोत रुशनाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त बहीं सूरे सरबंग, हुक्मरान हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां सो साहिब देणा अनन्द, जिस अनन्द विच्चों तेरा अनन्द मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान दीन बख्शंद, जन भगत सुहेले ग़रीब निमाणे आपणे गले लगाईआ।

१०४
२०

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ रतन सिँघ दे गृह पिण्ड कलानौर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण इक्क मंगीए तेरा दरस, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। कृपालू दयालू हो के करना तरस, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। तेरे हुक्में अंदर आ गए उपर फर्श, धरनी धरत धवल डेरा लाईआ। साडी मन्जूर कर अरज़, बेनन्ती दिती सुणाईआ। जन्म जन्म दा वण्ड दर्द, दुखियां दा दुःख गवाईआ। पल्ले नाम दाम नहीं खर्च, ख़ाली झोली देणी भराईआ। तैनूं लभ्भदे नहीं किसे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ चर्च, चर्चा करे सारी लोकाईआ। तेरा नूर तक्कणा चाहुन्दे असचरज, सति सरूप सोभा पाईआ। जे भगतां कारण आयों परत, प्रताप भगतां दे बणाईआ। असीं चार जुग

दे नामां दा रखदे बरत, रस भोग इक्को नाम तेरा खाईआ। पूरब लहिणे दी वेख फरद, लेखा पिछला खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी दे ज़रब, अगला जोड़ लैणा कराईआ। तेरी जिस धार (नूं) लभ्भ ना सकण अरब खरब, तेरी ख़बर सुण के बेख़बर खुशी मनाईआ। हँकार विकार छड्डुया दरभ, दीन दुनी दिती तजाईआ। दर ठांडे कर के अरज़, सीस दिता झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा देणा मुकाईआ। जन भगत कहिण कुछ दे आपणी धार, धर्म दवारा दे वखाईआ। कदीम दे कदमां तों विछड़े यार, करमां दा लेखा ढाहीआ। तेरी मुहब्बत विच बेज़ार, बेदार दे कराईआ। करनी दा करता बण करतार, कुदरत दा मालक हो के ख़ालक आपणा परदा देणा उठाईआ। तेरे चरण कँवल जन भगत सदा बलिहार, वारी घोली आपणा घोल घुमाईआ। राह तक्कदे रहे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर ध्यान लगाईआ। अन्त अख़ीरी आई साडी वार, वारस हो के लैणा मिलाईआ। तेरे दवारे दर दे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत कहिण साडी पूरी कर इंतज़ार, गिरयाज़ारी विच गिरजे मन्दिर दिते तजाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बलकार सिँघ दे गृह पिण्ड रसूल पुर ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कहिण तेरा नूर नज़र आए असली, जोती जोत कर रुशनाईआ। कलयुग भेख जगत बहु नकली, अकल बुद्धी दी करन लड़ाईआ। भरमे भुल्ली सृष्टी सगली, आत्म परमात्म परदा ना कोए उठाईआ। दीन दयाल पुरख अकाल तैनूं लभ्भणा पए ना विच्चों जंगलीं, काया मन्दिर अंदर परदा देणा चुकाईआ। प्रीतम तेरी प्रीत मिले रंगली, रंग रत्ते आपणा नाम रंगण देणा चढ़ाईआ। सुरती शब्द डोरी नाल बन्नृ लईं, बन्धन माया ममता मोह तुड़ाईआ। मानस जन्म मिल्या तेरे प्रेम प्यार अनन्द लई, जगत वासना होए ना कोए हल्काईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु लईं, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरी ओट रखाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकार हँकार विच्चों कढु लईं, तृष्ना अग्ग ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां हो सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ होए दुखी दुख्यार, दर्दवंद नज़र कोए ना आईआ। साख्यात मिले ना कोए गुर अवतार, पैगम्बर दीद नींद ना कोए खुल्हाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फिर फिर थक्के वारो वार, वारस हो के लवे ना कोए बचाईआ। पढ़ पढ़ थक्के रसना जेहवा विच संसार, पतिपरमेश्वर तेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हो खुआर, आपणी हालत गए बदलाईआ। धुर दा मालक मन्दिर

मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ ना मिल्या परवरदिगार, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं आई हार, हरिजन नेत्र रो रो देण दुहाईआ। किरपा कर करनी दे करते आप करतार, मेहरवान हो के मेहर नज़र आप उठाईआ। जन भगत सुहेले मँझधार विच्चों कढु बाहर, शौह दरया जगत ना कोए रुढ़ाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच झगड़ा रहे ना कोए संसार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म परदा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे दर दे सेवादार, याचक हो के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत दे दीदार, नेत्र लोचण अक्ख खुल्हाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कूड़ होया पसारा, नाउँ निरँकार नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट चार वरन चार यारी हाहाकारा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लग्गी अग्ग जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, बहत्तर नाड़ां काया माटी हट्ट सीतल सीत ना कोए कराईआ। धुर दरगाही पतिपरमेश्वर दरस होवे ना किसे मीत मुरारा, मित्र प्यारा यारड़ा सेज ना कोए हंढाहीआ। हउमे हंगता बणया गढ़ हँकारा, हँ ब्रह्म पारब्रह्म परदा सके ना कोए चुकाईआ। जगत वासना भरया कूड़ विकारा, सति धर्म सच निशान ना कोए झुलाईआ। जन भगत सुहेले कहिण पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम वेख दवारा, अन्तश्करन दीन दुनी खोज खुजाईआ। बिन तेरे दूजा कोई नहीं सहारा, गुर अवतार पैगम्बर तेरा सहारा गए समझाईआ। जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण देंदे रहे इशारा, शब्द विच्चों शब्द धार जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर प्रगट होवे एकँकारा, कल धारी आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत सुहेले भाग आपणा रहे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साडा पूरब दे दे भाग, लहिणा देणा झोली पाईआ। सोई सृष्टी विच्चों जाईए जाग, इक्को तेरा नाम ध्याईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत देणा बणाईआ। घर दीपक जोत जगे चिराग़, काया मन्दिर अंदर होए रुशनाईआ। स्वामी मिले कन्त सुहाग, जगत विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स जाप, जग जीवण दाते तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। माया ममता मोह कूड़ विकार रहे ना तीनों ताप, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते सति सतिवादी आपणा राह दे समझाईआ। हउँ सेवक ख़ादम बालक तेरे चाक, चाकरी आख़री तेरे चरण कँवलां नज़री आईआ। मनुआ मन ना रहे गुस्ताख़, शरअ शरीअत विच्चों देणा बाहर कढाहीआ। तेरा नाम अन्तर अन्तर होवे इक्को जाप, दूसर अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे सन्तां निरगुण जोत दर्शन दे आप, प्रकाश विच प्रकाश अबिनाश लैणा मिलाईआ।

१०७

२०

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड डेड्ढ ज़िला गुरदासपुर ★

हरि संगत विच कदे ना रहे भुलेखा, गुरमुख भुल्लया नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां अन्तर परम पुरख परमात्म दा चेता, चेतन सुरती कर के बैठे ध्यान लगाईआ। ओन्हां दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को नेता, निज नेत्र लोचण नैण बैठा अक्ख खुल्हाईआ। त्रैगुण माया पंज तत लग्गण ना देवे सेका, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के शब्द अगम्मी खोल्हे भेता, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। हरि संगत विच कदे ना होवे भरम, भरम भउ सतिगुर शब्द आप भन्नाईआ। जिन्हां दा साहिब सतिगुर लेखे लग्गा जरम, जन्म जन्म दा झगड़ा गए चुकाईआ। सति सतिवादी साचा बख़्शे इक्को धर्म, धर्म दवारा इक्को दए वखाईआ। जित्थे करनी दा रहे कोई ना कर्म, निहकर्मी हो के देवे माण वड्याईआ। जिन्हां भगतां सन्तां पुरख अकाल दी लई सरन, शरनगत इक्को दए वखाईआ। झगड़ा मुका के वरन बरन, लख चुरासी पैंडा दए मुकाईआ। नेत्र खोल्ह के हरन फरन, फुरनयां विच्चों मन आपणे बन्धन विच रखाईआ। उह साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता इक्को वरन, कन्त सुहागी साहिब सुल्तान महबूब मालक इक्क हंढाहीआ। सच दवारे ठांडे घर सरन सरनाई धुर दी पड़न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। जन भगतां भुलेखा कदे ना आवे नेड़े, भाण्डा भरम रहिण ना पाईआ। जिन्हां दे भाग लग्गा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ खेड़े, बन्द कवाड़ी खिड़की परदा ओहला गए उठाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी ओन्हां उत्ते करे मेहरे, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। पंज विकार गढ़ हँकार विच कदे ना घेरे, माया ममता मोह डेरा देवे ढाहीआ। जगत वासना मेट के हेरे फेरे, पारब्रह्म ब्रह्म मेला दए मिलाईआ। मानस जन्म हक हकीकत लेखा अन्त नबेड़े, दरगाह साची धुर दरबार हुक्म हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि संगत आपणे रंग रंगाईआ। भरम कहे मैनूं समझे कौण, परदा सके ना कोए उठाईआ। मेरा लेखा परे उणंजा पाउण, पवण गुरू मेरी बणत बणाईआ। कलयुग अन्त खेल वेखां हँकारी राउण, मन मनुआ नज़री आईआ। भरम विच विकारी जीव बिल्लाउण, सांतक सति ना कोए वरताईआ। गुरमुख सन्त भरम गढ़ आवण तुड़ाउण, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे सति, सति सतिवादी दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम शब्दी धार देवां ब्रह्म मत, पारब्रह्म हो के ब्रह्म दयां समझाईआ। त्रैगुण माया साड़ ना सके पंज तत, तत्व

१०७

२०

तत दयां जणाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। मालक हो के पुरख समरथ, स्वामी हो के खोज खुजाईआ। नाम भण्डारा दे के वथ, गुरमुख सज्जण लवां प्रगटाईआ। साचे सन्तां निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, जलवा नूर करां रुशनाईआ। भगतां रहिण ना देवां वक्ख, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला मेलां सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहानां मार्ग दस्स, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर दयां समझाईआ। निजर धार बख्शां अंमिउँ रस, झिरना धुर दा आप झिराईआ। हकीकत विच्चों प्रगटा के हक, हकूमत कूड़ दयां बदलाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दीन दुनी दस्स, दहि दिशा दयां समझाईआ। किसे ना चल्ले कोई वस, गुर अवतार पैगम्बर दरगाह साची सचखण्ड दुआर दर ठांडे बैठण सीस निवाईआ। प्रगट हो आप प्रतख, कलयुग मेट रैण अन्धेरी मस्स, मस्त खुमारी नाम दयां चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति संदेसा नर नरेशा एकँकार आप दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे सुण सति धर्म, धुर दी बाण दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे कोई ना कर्म, निहकर्मी हो के लेखा दयां मुकाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात वरन बरन, दीन मज़्हब खहिड़ा दयां छुडाईआ। तूं ही तूं ही सारे करन, धुर दा ढोला इक्को गाईआ। काया मकतब पाठशाला साची पढ़न, जित्थे पढ़ावण वाला जगत नेत्रां नज़र किसे ना आईआ। सरन सरनाई साहिब स्वामी इक्को प्रन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्क इकल्ला इक्को दए समझाईआ। सति धर्म कहे सतिजुग साचा मार्ग जावे लग्ग, अबिनाशी करता आप लगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो निरगुण धार प्रगट होवे जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हुक्म देवे सूरा सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी एथे ओथे दो जहान नज़र ना आवे हद्द, हदूद अंदर बन्द ना कोए कराईआ। सतिजुग साचा नाम निधान श्री भगवान दस्से आपणा छन्द, ढोला सोहला नग़मा कलमा आप पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक्क आपणी आप वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दे के सच अनन्द, जगत विकारां विच्चों बाहर कढाहीआ। मनुआ दहि दिशा भौं ना पावे डण्ड, वासना विच ना कोए हल्काईआ। दूई द्वैती ढाह के भरमां कंध, गढ़ हँकारी दए तुड़ाईआ। भगतन मीता ठांडा सीता पुरख अकाला दीन दयाला होवे सन्तां संग, गुरमुख गुरसिख सज्जण आपणे रंग रंगाईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान वजाए इक्क मृदंग, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करे आसा मनसा उमंग, तृष्ना पूरब रहे ना राईआ। इक्को नाम निधान जणाए नौ खण्ड, सत्त दीप इक्को राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल

साहिब बख़्शंद, बख्शिश रहमत विच साची करनी कार कमाईआ। सति धर्म पुरख अकाल दया कमावेगा। सो पुरख निरँजण वेख वखावेगा। हरि पुरख निरँजण परदा लाहवेगा। एकँकार हुक्म सुणावेगा। आदि निरँजण डगमगावेगा। श्री भगवान साचा तख्त इक्क सुहावेगा। अबिनाशी करता दो जहानां खेल खिलावेगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी धार जणावेगा। शब्दी सुत दुलारा इक्क उठावेगा। सचखण्ड दवारा आप सुहावेगा। थिर घर डंका नाम वजावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हावेगा। करोड़ तेतीसा नाल रलावेगा। सुर नर मुन जन वेख वखावेगा। त्रैगुण माया डेरा ढाहवेगा। पंज तत फोल फुलावेगा। गुर अवतार पैगम्बर साची धारों आप जगावेगा। कलयुग अन्तिम रच सुअम्बर, साची करनी कार कमावेगा। कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, सतिजुग मार्ग इक्क वखावेगा। सर्ब गुणां हो भरतम्बर, भाण्डा भरम भउ भनावेगा। नाम धुन सुणा मधुर, सोई सुरती आप जगावेगा। जन भगतां पूरी कर के सध्धर, सिध्धा आपणा राह वखावेगा। दीन मज़्ह़बां कर के पध्धर, वरन बरन डेरा ढाहवेगा। साचे नाम दी कर के कदर, कुदरत कादर वेख वखावेगा। सच प्रीती अंदर कर के मग्न, सन्त सुहेले जोड़ जुड़ावेगा। कूड़ी अग्ग मूल ना तपण, अमृत मेघ इक्क बरसावेगा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नाम सारे जपण, जगजीवण दाता वेख वखावेगा। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारे बैठ के हस्सण, गोबिन्द खुशीआं ताल वजावेगा। ग़रीब निमाणे कहिण पुरख अबिनाशी आया रखण, कोझे कमले गोद उठावेगा। सदी चौधवीं मेट के पप्पण, पतित पापी मेल मिलावेगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी वखा के इक्को पत्तन, किनारा धुर दा आप समझावेगा। चार वरन अठारां बरन पुरख अकाल दी साया हेठ वसण, झगड़ा शरअ ना कोए रखावेगा। प्रेम प्रीती अंदर करे संगठण, सतिजुग साची बणत बणावेगा। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले खुशीआं अंदर उठ उठ नठ्ठण, धुर दा रंग आप चढ़ावेगा। सति धर्म सतिजुग साचा मार्ग आवे आप प्रभ दस्सण, निरगुण जोती जोत रुशनावेगा। हर हिरदे आवे वसण, लख चुरासी परदा ओहला आप चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहवेगा। कलयुग कूड़ कुड़यारा मुक्केगा। पुरख अबिनाशी बूटा पुट्टेगा। आपणे शब्दी वहिण धार विच सुट्टेगा। सतिजुग साचा सोया उठेगा। लोकमात राह पुछेगा। धरनी धरत धवल धौल उपर आ के रुकेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग सतिजुग सतिजुग कलयुग दोहां दा लेखा सचखण्ड सच दुआर पुछेगा।

१०६
२०

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड डेड़ ज़िला गुरदासपुर ★

सति धर्म सतिगुर शब्द दया कमावेगा। निरगुण निरवैर हो के आवेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कहर, सांतक सति सति वरतावेगा। करे खेल गम्भीर गहर, गवरा हो के आपणा परदा लाहवेगा। जगत वासना विख रहे ना ज़हिर, अमृत रस आप चखावेगा। अन्त अख़ीर करे ना देर, दूर दुराडा फेरा पावेगा। हुक्मे अंदर दे के गेड़, गेड़ा लख चुरासी आप बदलावेगा। शाह सुल्तानां देवे भेड़, बुध मति आप भुलावेगा। हुक्मे अंदर जड़ उखेड़, मूँह दे भार सुटावेगा। सदी चौधवीं झगड़ा दए नबेड़, हज़रतां दा हज़रत कार कमावेगा। खुल्ला कर के धरत धवल दा वेहड़, कूड़ी क्रिया कर्म कांड चुकावेगा। मनमुखां भेज के धर्म राए दी जेल, फाँसी हासी विच रखावेगा। जन भगतां चाढ़ के रंग नवेल, निक्कयों वड्डे आप बणावेगा। सच धर्म दा बण के सच सुहेल, सज्जण हो के अंग लगावेगा। झगड़ा रहे ना गुरू गुर चेल, चेला गुरू सुरती शब्दी भेव खुल्लावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्तां सति धार नाल मेल, मिलाप जाप आपणा आप आप दृढ़ावेगा।

११० २०

★ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड गवाड़ ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत तेरी बदल जाए तकदीर, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां तदबीर, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्मे अंदर भवाईआ। अमृत दे के धुर दा सीर, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। किरपा करे बेनज़ीर, मेहर नज़र आप उठाईआ। पाटे चीथड़ रहिण ना देवे लीर, सरीर माटी मिले वड्याईआ। लहिणा देवणहारा शाह हकीर, फ़कीर आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दए वड्याईआ। जन भगत तेरी अन्तर बदले दलील, दिलदार हो के आप बदलाईआ। चुरासी वास्ते लभ्भणा पए ना कोए वकील, जगत अदालत ना कोए भवाईआ। सचखण्ड दवारे मन्ज़ूर होवे अपील, पारब्रह्म प्रभ लेखा दए मुकाईआ। गढ़ हँकार दी तोड़ फ़सील, फ़ैसला दूर दुराडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची साचा घर वखाईआ। जन भगत तेरा धाम न्यारा, निरगुण निरवैर आप बणाईआ। जिस घर वसे एकँकारा, जोती जाता सोभा पाईआ। चरण प्रीती दए सहारा, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। जुग जन्म विच्छों कढ्ढ के बाहरा, ज़ाहरा आपणे नाल रलाईआ। दीन दुनी रहे ना दायरा, दाअवा ख़ारज दए कराईआ। इक्को आत्म परमात्म दस्स के नाअरा, नर नरायण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दस्स के धुर दवारा, धुर दरबारे लए बुलाईआ।

★ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ सविंदर सिँघ पिण्ड गवाड़ ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत तेरा इष्ट श्री भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर तेरा अगम्म मकान, दरगाह साची मुकामे हक नज़री आईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस झुकाण, निरगुण हो के निरगुण अग्गे झोली डाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण दान, नेत्र नैणां बैठे नीर वहाईआ। जिस गृह दीपक जोत जगे महान, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी इक्को सोभा पाईआ। शब्द सुत जिस दा नौजवान, सतिगुर धार आपणी आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, हुक्मरान इक्को शहिनशाहीआ। जिस नूं सईयदे करदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड सिर सके ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल महान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा ढोला गाण, सिफ्तां विच निरअक्खर धार अक्खर लए बणाईआ। जग नेत्र जिस दी जीव जंत कर ना सके पहचान, सो पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरा पिता माईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जिस दा झुलदा धर्म निशान, साचा दुआर एकँकार इक्को इक्क प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच जिस दा ढोला दीन दुनी सुणान, सृष्टी दृष्टी अंदर गए जणाईआ। सो साहिब सूरा सुल्तान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी आप हो जाईआ। सदी चौधवीं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल चौदां तबकां परदा दए उठाईआ। हुक्मे अंदर देवे इक्क फ़रमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा जन भगतां रिहा वखाईआ। जन भगत तेरा दवारा अगम्म अथाह, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस घर बैठा बेपरवाह, पारब्रह्म प्रभ आपणा डेरा लाईआ। दूसर दिसे ना कोए निशां, निशाना कूड़ ना कोए झुलाईआ। झगड़ा रहे ना ज़िमीं असमां, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी एका हुक्मरां, दो जहानां फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त होवे मेहरवां, महबूब आपणी मुहब्बत दए समझाईआ। सदी चौधवीं हक हकीकत वाला करे न्याँ, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी अदालत इक्को इक्क जणाईआ। जो भविख्तां विच लिख्तां विच दृष्टां विच गए जणा, ज़ाहर ज़हूर हो के भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जिस दे नाम दी सदा लग्गदी रही सदा, ढोले सोहले सिफ्तां विच सालाहीआ। सो साहिब

स्वामी अन्तरजामी जल्वागर ख़ुदा, कायनात दा मालक प्रितपालक ख़ालक इक्को नज़री आईआ। जिस दे अग्गे ईसा मूसा मुहम्मद करदे गए दुआ, निउं निउं सजदयां विच सीस झुका, चरण धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोत करे रुशना, जोती जाता पुरख बिधाता वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। जिस दा लेखा जाणे कोई ना, बेअन्त कहि के सारे गए सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी परदा ओहला सके ना कोए उठा, मंज़ल हकीकी हक अगला हुक्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारा एकँकारा जन भगतां आप वखाईआ। जन भगत तेरा दुआर सचखण्ड, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे झगड़ा नहीं जेरज अंड, उत्भुज सेहतज वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक भरम भउ वाली नहीं कंध, हउमे हंगता गढ़ ना कोए रखाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द गाउण वाला नहीं कोई छन्द, अक्खरां वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। तख़्त निवासी पुरख अबिनाशी इक्को बैठा सोहे सूरा सरबंग, जोती जाता नूर नुराना नूर नूर करे रुशनाईआ। जगत दीपक प्रकाश ना कोए सूरज चन्द, मण्डल मण्डप रूप ना कोए वखाईआ। आत्म धार शब्द प्यार जोत निरँकार सच दुआर मेल मिला के (सचखण्ड), आपणी धार विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी सच दुआर भगत सुहेला इक्क इकेला इक्को इक्क वखाईआ। जन भगत तेरा दवारा सच, सति सतिवादी आप बणाईआ। जित्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को मत, पारब्रह्म प्रभ सिख्या सच समझाईआ। तन नाड़ी वजूद शरीर पंज तत ना उबले रत्त, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। तिस दवारे प्रभ चरण कँवलारे जाणा वस, छप्पर छन्न लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण जोत मिलणा जोत प्रकाश, प्रकाशत हो के आपणा नूर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका मण्डल पावे रास, गोपी काहन आपणा रूप वखाईआ। जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां गुरसिखां सूफ़ी फ़कीरां दीन विच्चों मज़्ब विच्चों शरअ विचों इस्लाम विच्चों कलाम विच्चों कर के बन्द ख़लास, धुर दा नाम अगम्म बनाम बिन अक्खरां निरअक्खर काया मन्दिर अंदर आप दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मंज़ल चोटी चढ़ के बैठा सिखर, जन भगतां जन्म मरन दा मेटे फ़िकर, मन वासना करे कोई ना ग़दर, माणस जन्म पूरी करे सध्धर, सिध्धा सचखण्ड दवारा एकँकारा निरगुण धारा जोत पसारा जल्वागर आपणा घर वखाईआ।

★ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड शिकार माछीआं ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत सति धर्म रख आस, सन्त सुहेले गुरमुख मिले माण वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब दी मिटावणहारा प्यास, जगत वासना तृष्ना दु:ख रहे ना राईआ। पूरब कर्म जन्म दी पूरी होवे आस, निरासा आसा विच बदलाईआ। मानस जन्म कर के रहरास, चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। नाम भण्डारा दे के दात, अनमुलड़ी दौलत आप वरताईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म गाउणी धुर दी गाथ, सोहँ ढोला वज्जे हक वधाईआ। किरपा करे पुरख समराथ, दो जहानां वाली होए सहाईआ। साची मंज़ल चढ़ना आपणे घाट, जगत दवारा ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दा वेखणा खेल तमाश, जित्थे सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक्को जोत नूर प्रकाश, जल्वागर बैठा तेरा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत सुहेले दर ठांडे लए बुलाईआ। जन भगत तेरा दवारा हरि चरण, जगत इष्ट ना कोए मनाईआ। किरपा कर के खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र नैण होए रुशनाईआ। मंज़ल आपणी दस्से चढ़न, जगत दवारे नौ पार कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत भगवान मिल के ढोला पढ़न, शास्त्र सिमरत वेद पुराण वाली करन ना कोए पढ़ाईआ। साहिब समरथ साची बख्शे इक्को सरन, शरनगत इक्को दए समझाईआ। झगड़ा मुका के आवण जावण मरन डरन, जम की फाँसी दए कटाईआ। लेखा रहे ना ज़ात पात दीन मज़्हब वरन बरन, शरअ शरीअत ना कोए लड़ाईआ। सिध्धा सचखण्ड दवारे दस्से वड़न, जिस गृह गुर अवतार पैगम्बर बैठे दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत कलयुग वेख कूड़ अन्धेरा, चारों कुण्ट साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल बन्न्हे कोई ना बेड़ा, सृष्टी दृष्टी अंदर फिरे हल्काईआ। मन हँकारी करे मेरा मेरा, ममता मोह ना कोए चुकाईआ। अबिनाशी करता किसे ना दिसे नेरन नेरा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत खोजण थाउँ थाँईंआ। बिन साचे भगतां साढे तिन्न हथ्थ वस्या किसे ना खेड़ा, घर मन्दिर ना वज्जी वधाईआ। सतिगुर शब्द पंज विकार चुकावे झेड़ा, मनमति रहे ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार जन भगतां लगाए धाम अगम्मे डेरा, जित्थे डर भउ रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत तेरा धाम अवल्ला, सचखण्ड साचा नज़री आईआ। जिस घर वसे पुरख इक्क इकल्ला, जोती जाता नूर खुदाईआ। शब्दी धार फड़ाए सुरती पल्ला, नाम निधाना डोरी तन्द गंढु बंधाईआ। सच संदेश नाउं निरँकार निरगुण धार एका घल्ला, आत्म परमात्म परमात्म आत्म

दए जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत नाल कर के वल छला, अछल छलधारी आपणा परदा ल्या छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा निहचल धाम अटला, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह सच सिँघासण पुरख अबिनाशन दरगाह साची सोभा पाईआ।

★ ७ कत्तक शहिनशाह सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड पब्बा राली ज़िला गुरदासपुर ★

श्री भगवान दीन दुनी दस्स सांझा राह, ऊँच नीच ज़ात पात दीन मज़्हब करे ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार बण मलाह, लख चुरासी खेवट खेटा इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो आप सहा, तुध बिन सहाई सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। धरनी धरत धवल रही कुरला, सन्त सुहेले बैठे नैण उठाईआ। जन भगत आपणा सीस रहे निवा, गुरमुख चरण कँवल लागण सच सरनाईआ। किरपा कर मेहरवान, महबूब तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशान, सति धर्म सतिजुग साचा दे वखाईआ। बोध अगाधी बिबेक दे दो जहान, भेव अभेद आपणा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर ठांडे हो सहाईआ। अबिनाशी करते तूं धुर दा मालक, मुलम्मा कलयुग कूड़ा रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण बण सालस, सतिगुर शब्द विचोला रूप वटाईआ। तेरी हकीकत वाली इक्क अदालत, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। साचे नाम दी करीं सख़ावत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलयुग अन्त साचा नाम मिले ना किसे नयामत, बिन रसना रस ना कोए वखाईआ। मन हँकारी करे बग़ावत, चार कुण्ट लड़ाईआ। आत्म परमात्म मेट आप अदावत, अदल इन्साफ़ आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दात दातार आपणी आप वरताईआ।

★ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ लाभ कौर दे गृह पिण्ड पब्बा राली ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगतां साची सदा रहे उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। मिले मेल पुरख अबिनाशी साचे मीत, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। नाम निधाना देवे अगम्मा गीत, आत्म परमात्म ढोला दए समझाईआ। दीन दुनी विच्चों बदल के रीत, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, सचखण्ड दवारे देवे माण वड्याईआ। काया माटी करे ठांडी सीत, त्रैगुण

अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। भरम रहिण ना देवे ज़ात पात ऊँच नीच, राउ रंक इक्को घर वसाईआ। दीन मज़्ह्ब दी मेट के लीक, मार्ग इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। उडीक अंदर जो तक्के राह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तिन्हां सतिगुर शब्द बणे मलाह, बेड़ा जगत जहान बन्ने दए लगाईआ। एथे ओथे दो जहाना होवे सहा, सहायक नायक इक्को बेपरवाहीआ। आवण जावण लख चुरासी पैंडा दए मुका, जून अजूनी भरम ना कोए भुलाईआ। साचा मन्दिर दए वखा, सचखण्ड दवारा इक्क सुहाईआ। जिस घर भगत सुहेले सन्त लए बहा, गुरमुख गुर गुर मेल मिलाईआ। तिन्हां लहिणा देणा चुका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो बैठे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरिजन आशा पूर कराईआ। उडीक अंदर जो खोल्हण अक्ख, बिन अक्खां राह तकाईआ। तिन्हां पुरख अकाल मिले समरथ, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। जिस दा शास्त्र सिमरत गाउँदे जस, वेद ग्रंथ देण गवाहीआ। सो स्वामी भगतां झोली पाए हक, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला राह तक्कदयां कदे ना जावे थक्क, थकावट विच कदे ना आईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर मंत्र आपणा नाम देवे सच, सच साचा आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, साढे तिन्न हथ्थ कंचन गढ़ दए सुहाईआ। लूं लूं अंदर जाए रच, रचना आपणी दए वखाईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर के आस, तृष्ना कूड़ी दए मिटाईआ। जिन्हां गुरमुखां जपया स्वास स्वास, सनमुख हो के नज़री आईआ। ओन्हां लेखे ला के सास ग्रास, घर आपणे दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा हो के दास, सेवक आपणी सेव कमाईआ।

★ ७ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जसबीर सिँघ दे गृह पिण्ड भोले के ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत कदे ना मर्दा, मुरदयां विच ना कदे समाईआ। सचखण्ड साची मंज़ल चढ़दा, ढोला गावे चाँईं चाँईआ। दर्शन करे नर हरि दा, नर नरायण मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत अंदर धरदा, धर्म दवारे बहि के खुशी मनाईआ। चरण कँवल धुर दे फड़दा, मस्तक आपणे नाल छुहाईआ। धर्म दुआर दा बण के बरदा, बन्दीख़ाने सारे जाए तजाईआ। वासी बण के सच दवारे धुर दे घर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दर इक्क वखाईआ। जन भगत कदे ना मोया, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जोती सरूपी जोत होया, जोत जोत

विच डगमगाईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोया, जगत बुद्धी समझ किसे ना आईआ। सदा सदा सद नवां नरोया, सच दवारे बैठा सोभा पाईआ। आलस निंद्रा विच कदे ना सोया, जागरत जोत करे रुशनाईआ। धुर दे प्यार अंदर जाए मोहया, मुहब्बत इक्को नाल रखाईआ। झगड़ा मुका के त्रै लोआ, लोक परलोक खहिड़ा दिता छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत जिस कारण देवे भेज, भजन बन्दगी आपणा आप जपाईआ। जोती जलवा दे के तेज, तिक्खी धार दए प्रगटाईआ। आत्म सेजा माण के सेज, सेज सुहञ्जणी वेख वखाईआ। सचखण्ड वखाए आपणा देस, देस कूड़ावे दए मुकाईआ। जित्थे रहे सदा हमेश, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। मालक बण के धुर नरेश, नर नरायण आपणा घर दए सुहाईआ। भगत सुहेला कर के आपणे पेश, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगती दा भगत भगवन्त नाल गुरमेज, सेज इक्को इक्क सुहाईआ।

★ ७ कतक शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड भोले के ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगतां बख्शे आपणी सच तस्वीर, इष्ट इक्को इक्क जणाईआ। भेव खुलाए बेनज़ीर, नज़र विच्चों नज़र दए बदलाईआ। नाम खण्डा दे शमशीर, शरअ कूड़ी बन्धन दए मुकाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म मना कबीर, किबल आपणा दिता समझाईआ। जन भगतां बख्श के नाम जागीर, दौलतमंद धुर दे दिता बणाईआ। जित्थे पुज्जे ना कोए ग़रीब अमीर, शाह सुल्तान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क सुहाईआ। जन भगतां बख्शे नाम निधान, रिद्ध सिद्ध ना कोए वड्याईआ। घर ठाकर मिले आण, स्वामी मेला सहिज सुभाईआ। साचे जीवण दा दे के दान, दानशमंद लए बणाईआ। साचे घर दी दे पहचान, महल अटल दए वखाईआ। साचे घर दा दे के नाम, सोहँ ढोला दए पढ़ाईआ। भाग लगा के काया माटी चाम, चमन धुर दा दए वखाईआ। जन भगतां मिलणा कर आसान, मेल मिलाए थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण निगाहबान, बिन अक्खां आख़र तक वेखे चाँईं चाँईंआ।

★ ७ कतक शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड वहीला ज़िला गुरदासपुर ★

सति धर्म कहे प्रभ लोकमात ला जड़, जड़ चेतन दीन दुनी दे समझाईआ। तेरे नाम दा ढोला सृष्टी दृष्टी अंदर जावे पढ़, एकँकार निरँकार आपणा भेव दे खुल्हाईआ। हकीकी मंज़ल सन्त सुहेले जावण चढ़, जगत वासना विच ना कोए अटकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सच दुआर आप खड़, दो जहानां परदा ओहला दे चुकाईआ। दर दरवेश हो के मंगां दर, भिक्खक हो के आपणी झोली डाहीआ। करनी दे करते किरपा कर, कुदरत दे कादर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट इक्क रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मैनूं लोकमात दे रख, सतिजुग साचे नाल वड्याईआ। किरपा कर पुरख समरथ, तेरी महिमा अकथ दयां जणाईआ। चार वरन अठारां बरन मेल मिलावां हस्स हस्स, खुशीआं अंदर तेरा नाम ढोला गीत दयां पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे गावण जस, सिफ्त सालाही बेपरवाही इक्को नज़री आईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार खोल्ह हट्ट, परवरदिगार सांझे यार वस्त अमोलक काया गोलक दे वरताईआ। तूं आदि जुगादि सदा सदा सच, सति सच तेरी आस रखाईआ। भाग लगा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दे बणाईआ। मन वासना दहि दिशा सके ना कोए नच्च, नटुआ नट स्वांग ना कोए वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरी पूरी कर आस, निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जाते कर रुशनाईआ। सति धर्म कहे किरपा कर शाह सुल्तान, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई दे इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दे मिटाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द तेरा गीत गाण, गा गा शुकर मनाईआ। काया काअबा सब दा कर परवान, परदा ओहला आप उठाईआ। साचे मन्दिर दर्शन दे आण, अनक कलधारी आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर धुर दा दे के गए ब्यान, अमाम हो के आपणा फेरा पाईआ। सतिगुर शब्द हो के कर कल्याण, कलमा कायनात दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरे दरे दरबार दरगाह साची इक्को ओट तकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे श्री भगवन्त, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सतिजुग साचा नाम दे मंत, मंत्र इक्को दे पढ़ाईआ। लख चुरासी नज़री आ धुर दा कन्त, कन्तूहल हो के साची सेज लै हंढाहीआ। आपणी महिमा दस्स अगणत, बेअन्त आपणा खेल दे समझाईआ। भरमे भुल्ला जीव जंत, साध सन्त रहे कुरलाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, सृष्टी दृष्टी अंदर निरगुण ढोला देणा समझाईआ। तेरा नाम निरँकार

कदे ना होवे खण्डत, खण्डा खड़ग धार आपणा नाउँ लै प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनादी नाद सुणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे चरण कँवल आदेश, नमस्ते विच सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म चले हमेश, दो जहान ना कोए उलटाईआ। चरण कँवलां झुकदे सदा विष्न ब्रह्मा शिव महेष, निउँ निउँ लागण पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वसा के आपणे देस, परदेस लोकमात दिता समझाईआ। निरगुण सरगुण खेलणा तेरी खेड, जगत खलाड़ी हो के फेरा पाईआ। भगत सन्त गुरमुख गुरसिख शब्दी धार मेल, निरगुण आपणा नूर कर रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहानां बण सज्जण सुहेल, कलयुग कूड़ी क्रिया नाता दे तुड़ाईआ। आवण जावण पतित पावन लख चुरासी जम की फाँसी धर्म राए दी कट जेल, बरीख़ाना मेहर नज़र नाल दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म सति पुरख निरँजण तेरे चरण कँवल बैठा सीस निवाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे महबूब, मुहब्बत तेरी बेपरवाहीआ। चार जुग तेरा मिलदा रिहा सबूत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। तेरा महल अटल उच्च अरूज, अर्श फर्श तेरा खेल नज़री आईआ। साची दस्स मंज़ले मक्सूद, मकसद सब दा वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कूड़ी क्रिया चार कुण्ट कर नेस्तोनाबूद, लोकमात रहिण ना पाईआ। जिधर तक्कां ओधर मौजूद, दिशा ख़ाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दीन दुनी कर महिफ़ूज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सच दुआर एकँकार निराकार गृह मन्दिर दस्स आपणी हदूद, जगत हदीसां खहिड़ा दे छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे ला लख चुरासी काया माटी तन वजूद, कलबूत आपणे रंग रंगाईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हरजिंदर कौर दे गृह पखो के राजे दे ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत सचखण्ड वेख सच्चा घराना, जिस घर दा मालक इक्को नज़री आईआ। दीपक जोत जगे महाना, तेल बाती ना कोए वड्याईआ। धुर दा मन्दिर सोहे मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। करे प्रकाश ना कोए सूर्या भाना, नूर ज़हूर बेपरवाहीआ। दूसर दिसे ना कोए बेगाना, एका एकँकार बैठा सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा निशाना, जुग चौकड़ी लोकमात दए समझाईआ। जन भगतां देवे नाम निधाना, निरवैर निराकार निरँकार आपणी वस्त झोली पाईआ। अन्तर आत्म निरंतर बख्शे अगम्म तराना, जिस दी सुर ताल समझ किसे ना आईआ। जिस दी महिमा करदे शास्त्र सिमरत

वेद पुराणा, अञ्जील कुरान खाणी बाणी ओसे दा ढोला गाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहानां, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एको एक सोभा पाईआ। जिस दा प्रेम प्रीती वाला मैख़ाना, मुहब्बत सब दे नाल जुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण पहनदा रिहा बाणा, तत्व तत वेस वटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो मेहरवाना, दरगाह साची हक मुकामे आपणा हुक्म वरताईआ। नाम संदेसा देवे धुर फ़रमाना, शब्द अनादी नाद जणाईआ। जन भगत उठ वेख मार ध्याना, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मेल मिलाए श्री भगवाना, भगवन आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा घर इक्क प्रगटाईआ। जन भगत तेरा घर सचखण्ड दवार, लोकमात थिर रहिण कोए ना पाईआ। जिस गृह वसे आप निरँकार, करनी दा करता डेरा लाईआ। हुक्मे अंदर रख गुरू अवतार, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, बैठे सीस निवाईआ। शब्द अगम्मी इक्क जैकार, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जिस नूं समझे ना कोई विद्या संसार, चौदां विद्या कम्म किसे ना आईआ। चौदां लोकां तों बाहर चौदां तबकां करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी खेल करे अपार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कार कमाईआ। नाम संदेसा नर नरेशा देवे एकँकार, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सच प्यार, सुरती शब्दी शब्दी सुरती आपणी खेल खिलाईआ। ग़फ्लत विच्चों आलस विच्चों निंद्रा विच्चों कढ्ढे बाहर, हुक्में अंदर हुक्म करे शनवाईआ। लहिणा देणा जन्म कर्म वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब दए निवार, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा आप खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर हो ख़बरदार, धुर संदेसा नर नरेशा आपणा नाम जणाईआ। सदी चौधवीं पावे सार, खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान देवणवाला हुलार, नाम झकोला दो जहानां आप लगाईआ। जन भगत उठ वेख नर नरायण मीत मुरार, धुरदरगाही सज्जण यार, इक्क इकल्ला एकँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। घर स्वामी मिले आण, शब्द अगम्मी दए फ़रमान, कूड़ी क्रिया मेटे जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा दर वखाए मकान, जिस गृह वसे नौजवान, मर्द मर्दाना शाह सुल्ताना आपणा डेरा लाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, हुक्म देवे हुक्मरान, हुक्मे अंदर सृष्ट सबाई रिहा भवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत मेटे निशान, सति धर्म करे परवान, भगत सुहेले मेले आण, गुर चेले आपणे रंग रंगाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण होवे निगाहबान, बिन अक्खां करे पहचान, बेपहचान रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां इक्को

घर दए वखाईआ। जन भगत तेरा सचखण्ड दुआर अवल्ला, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस घर मालक ख़ालक बैठा इक्क इकल्ला, एकँकार डेरा लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रखे अटला, निहचल देवे माण वड्याईआ। जोती दीप प्रकाश हो के आपे बला, नूरो नूर नूर करे रुशनाईआ। शब्द अनाद हो के आपणा संदेश आपे घल्ला, हुक्मरान हो के आपणा हुक्म मनाईआ। आपणी धार निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कार कमाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल जला थला, महीअल आपणा वेस वटाईआ। लख चुरासी अन्तर निरंतर आत्म परमात्म हो के रला, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दूई द्वैती मेटे सल्ला, नाम निधाना श्री भगवाना अणयाला तीर आप चलाईआ। जन भगतां वखाए अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा इक्क महल्ला, जित्थे महिफ़ल गुर अवतार पैगम्बर बैठे निरगुण धार रहे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत सुहेला इक्क इकेला एकँकार आपणी धार विच मिलाईआ। जन भगत सचखण्ड दवारा तेरा गृह, मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जिस घर आदि निरँजण अबिनाशी करता रहै, रहिबर हो के वेखे जगत लोकाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी जिस ने कीते खै, गुर अवतार पैगम्बर हुक्मे विच भवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नित नवित भण्डारा दए, देवणहार वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण आपणा नाम अगम्मा कहै, निरअक्खर विच्चों अक्खर धार प्रगटाईआ। जिस नूं समझे ना कोए शक्ती शवै, शाह पातशाह बेपरवाह आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआर एकँकार जन भगतां रिहा वखाईआ। जन भगत सचखण्ड दुआर तेरा सोहणा मन्दिर, सुहञ्जणा नज़री आईआ। जित्थे अन्धेरा नहीं कोई डूँघी कंदर, भँवरी भँवर ना कोए भवाईआ। वज्जा नहीं कोई जंदर, दर दरबान ना कोए अख्वाईआ। पढ़ना पए कोई ना मंत्र, निरंतर आपणा नूर करे रुशनाईआ। लेखा दिसे ना किसे गगनंतर, ज़िमी असमानां पैंडा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे भगत भगवान तेरा घर समझाईआ। जन भगत तेरा गृह उच्च अगम्म अथाह, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर ख़ुदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ओसे दा ढोला गाईआ। जिस ने कोटन कोटि आपणे सिफ्ती नाम लए धरा, अल्ला वाहिगुरू राम कहि के आपणा झट सारे रहे लँघाईआ। सतिनाम दा डंक वजा, गुर अवतार पैगम्बर करे शनवाईआ। सो सिँघासण पुरख अबिनाशन सुहाए आपणा थाँ, थान थनंतर देवे माण वड्याईआ। लोकमात जुग चौकड़ी करनहार न्याँ, कलयुग अन्तिम लहिणा देणा दए मुकाईआ। जन भगतां पकड़े निरगुण धार बांह, सरगुण लेखा

आपणे लेखे लाईआ। फड़ के हँस बणावे काँ, काग बुद्धी ना कोए कुरलाईआ। अगम्मा अमृत जाम दए प्या, निजर रस इक्क चुआईआ। साचा मार्ग दए वखा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जगत वासना विच्चों बाहर कढा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। सतिगुर शब्द बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। मंज़ल मंज़ल दए पुचा, सच दवारा इक्क सुहाईआ। जित्थे निरगुण जोत रुशना, नूर नुराना डगमगाईआ। जन भगत आत्म परमात्म जोती धार लए मिला, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। सच दुआर भूमिका लए सुहा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। भगत सुहेला प्रेम प्रीती अंदर आपणा आप कर फ़िदा, फ़ैसला प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। सचखण्ड दुआर जाए सिध्धा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान महबूब मुहब्बत विच जन भगतां सच दुआर देवे निग्घा, जित्थे अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे मिलण दी आपे दस्स के बिध्धा, मार्ग धुर दे दए लगाईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड मंजिआं वाली ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगत पुरख अकाल कर प्रणाम, आत्म परमात्म नाल मिलाईआ। भाग लग्गे तेरे काया माटी ग्राम, तन खेड़ा लैणा सुहाईआ। इक्को सिमर हरि का नाम, हिरदे हरि हरि सच वसाईआ। नाता कूड़ तोड़ जगत तमाम, तमअ तृष्ना दे मिटाईआ। साचे अमृत दा पी जाम, रसना मदि ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत नाम लै अगम्मा रस, रस्ता कूड़ दे तजाईआ। आत्म परमात्म गा जस, धुर दा ढोला शहिनशाहीआ। श्री भगवान दे हो वस, वास्ता जगत नालों तुड़ाईआ। निज नेत्र लोचन खोल्ह अक्ख, दर्शन कर प्रतख गोसाँईंआ। हकीकत विच्चों लै हक, धुर दी दौलत वण्ड वण्डाईआ। मिले मेल पुरख समरथ, सचखण्ड निवासी जोती जोत लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। जन भगत पुरख अकाल रख सहारा, इक्को आस रखाईआ। इक्को नाम बोल जैकारा, ढोला धुर दा इक्को गाईआ। इक्को वणज कर व्यपारा, इक्को हट्ट सोभा पाईआ। इक्को चरण कँवल कर निमस्कारा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। आत्म परमात्म मेला मेल विच संसारा, पारब्रह्म ब्रह्म नाता लै बंधाईआ। महल अटल वेख उच्च मनारा, सचखण्ड साचा नज़री आईआ। जिस घर वसे एकँकारा, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। शब्दी धार गुरू अवतारा, पैगम्बर मिल के वज्जे वधाईआ।

निरगुण नूर जोत उज्यारा, तत वजूद ना कोए वखाईआ। सो ठाकर स्वामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां मीत मुरारा, धुर दा संगी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे दए समझाईआ। जन भगत इक्को प्रेम दी रख सिक, प्रीती प्रभ दे नाल लगाईआ। दूजे दर मंग ना भिक्ख, देवणहार पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। शब्दी गोबिन्द धार बण सिख, सिख्या सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। निज नेत्र निराकार आवे दिस, लोचण नैण करे रुशनाईआ। मानस जन्म जग जित, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। आत्म परमात्म कर हित्त, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले धुर दा मित, मीत मुरारा हो के वेख वखाईआ। सदा सदा सद दर्शन कर नित, निज लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां जुग जुग देवे माण वड्याईआ। जन भगत प्रभ वेख पुरख समरथ, दाता सब दा नज़री आईआ। चुरासी विच्चों लए रख, गेड़े विच ना कोए भवाईआ। वस्त अमोलक हकीकत विच्चों देवे हक, लाशरीक शिरक्त दए मिटाईआ। साचा मार्ग दो जहानां दस्स, रहिबर हो के आप समझाईआ। आत्म कर के परमात्म वस्स, वास्ता इक्को घर बणाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी सुणा के नाद, अनादी धुन आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे कर के दास, भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत प्रभ नाम दी रख ओट, दूसर नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोट, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जिस दा प्रकाश निर्मल जोत, लख चुरासी आत्म रिहा डगमगाईआ। जिस दी बुद्धी तों परे सोच, अनुभव हुक्म आप सुणाईआ। जिस नूं झुकदे लोक परलोक, दो जहान सीस झुकाईआ। जिस दा नाम सच सलोक, सोहले ढोले गुर अवतार पैगम्बर गए गाईआ। जिस दा भाणा दो जहान सके ना कोए रोक, शाह सुल्तान बैठे सीस झुकाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी देवणहारा मोख, मुफ्त आपणा नाम वरताईआ। चिन्ता ग़म मिटावे हरख सोग, संसा रहिण कोए ना पाईआ। जन्म जन्म दा कटे वियोग, संयोगी आपणा मेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे साचा राह इक्क वखाईआ। जन भगत साचे नाम दी चढ़े रंगत, रंग रंगीला आपणा आप दए रंगाईआ। दूजे दर जाणा पए ना बण के मंगत, भिक्खक हो के भेख ना कोए वटाईआ। साचा मेल साहिब स्वामी करे गुरमुख संगत, सगला संग बणाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। सतिगुर शब्द दीन दयाल कृपाल आदि जुगादी बोध अगाधा पंडत, चार वरन अठारां बरन दए पढ़ाईआ। दूजे दर करनी पए किसे ना मिन्नत, निउँ निउँ सीस ना किसे झुकाईआ।

मनुआ मन ना करे इल्लत, शरअ विच शरीअत ना कोए लड़ाईआ। जन भगतां प्रभ आपणे मिलण दी देवे हिम्मत, हौसला अंदरे अंदर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सचखण्ड दुआर एकँकार दस्से साची सिम्मत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण लेखा दए मुकाईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ रवेल कौर दे गृह पिण्ड खोखर ज़िला गुरदासपुर ★

सतिजुग साचे हो सवाधान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी रिहा जगाईआ। नाम अगम्मा वस्त अमोलक झोली पावां तेरी दान, दौलतमंद एथे ओथे दो जहानां दयां बणाईआ। धुर दा ढोला गीत अगम्मा देवां सच्चा नाम, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ। हुक्म संदेसा दे विच जीव जहान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा परदा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स सच ज्ञान, सृष्टी दृष्टी अंदरों दे बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ रहे ना विच शैतान, चार वरन अठारां बरन बोध अगाध कर पढ़ाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार मेट नामों निशान, सति धर्म निहकर्मी तेरी झोली पाईआ। भगत सुहेले सन्त साजण गुरमुख वेख आण, गुरसिख धुर दे आपणे रंग रंगाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब झगड़ा प्या इन्सान, ऊँच नीच राउ रंक धीरज धीर ना कोए धराईआ। सति सतिवादी ब्रह्मादी नज़र ना आए किसे श्री भगवान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। मंज़ल हक चढ़ के मेरा दरस कोए ना पाण, धुर दा इष्ट पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द गाउँदे गाण, रागां नादां विच करन शनवाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी मिले किसे ना आण, पुरख अबिनाशी घट निवासी परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरी नेत्र अक्ख खुल्ल्हाईआ। सतिजुग साचे उठ जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग हँस बुद्धी होई काग, सति सच ना कोए वड्याईआ। मन वासना सृष्टी रही भाग, अग्नी अग्ग रही जलाईआ। प्रभ मिलण दा उपजे ना किसे वैराग, वैरी अंदरों ना कोए कढाहीआ। फिरी दरोही विच मात, तोबा तोबा करे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कोई ना देवे किसे साथ, साजण मीत दीन दुनी नज़री आईआ। कोटन कोटि रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्के पूजा पाठ, सिमरन योग अभ्यास विच मन ना कोए टिकाईआ। मानस जन्म किसे ना आवे रास, रस्ता रहिबर हो के ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दहि

दिशा दिसे अन्धेरी रात, साचा नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। परम पुरख परमात्म करे कोई ना याद, सिफ्तां वाले ढोले गा गा सारे शुकर मनाईआ। काया खेड़ा साढे तिन्न हथ्थ दिसे ना किसे आबाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे देवे वर, वर दाता दया कमाईआ। सतिजुग साचे उठ योद्धे सूरबीर मर्दाने मर्द, शाह पातशाह शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। लोकमात मार झात ग़रीब निमाणयां वण्ड दर्द, दुखियां दुःख देणा मिटाईआ। शरअ कसाई बणी करद, कत्लगाह वेखी लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर ठांडे दर करदे अरज़, सचखण्ड दवारे प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार सदी चौधवीं साडा होया पूरा फ़र्ज़, वेला वक्त दए गवाहीआ। तेरा खेल वेखीए निरगुण धार जोत असचरज, तत वजूद मिले ना कोए माण वड्याईआ। तेरे मिलण दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां सदा ग़रज़, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा दरस देणा वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त प्रभ वेख पूरब जन्म कर्म दी फ़रद, लहिणा देणा सब दा दे मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात जीव जंत रहे तड़प, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सन्तोख शब्द ज्ञान धीरज धीर रिहा समझाईआ। सतिजुग साचे साची वस्त नाम लै अनमुल्ली, धुर खज़ाना दयां भराईआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ कुल्ली, कायनात कलमा नग़मा हक दे सुणाईआ। दीन दुनी रहे ना भुल्ली, मार्ग धुर दा दे जणाईआ। अमृत धार निजर अमिउँ रस दे अगम्मी चुली, जाम अमाम दे प्याईआ। जन भगतां आत्मा विछोड़े विच रहे ना रुली, धुर दा मेला देणा मिलाईआ। फुल्ल फुलवाड़ी गुरमुख साचे जाए फुल्ली, पत्त डाली आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सति सतिवाद रिहा जणाईआ। सतिजुग साचे जा के वेख धरनी धरत, धवल आपणा आप टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी होई शर्त, बीस बीसा वक्त चुकाईआ। एका हुक्म चल्ले अर्श फर्श, दो जहानां वज्जे वधाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरे नाल आवे परत, जोती जाता वेस वटाईआ। जन भगतां साचे सन्तां देवे दरस, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस अगली दए बुझाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां उत्ते करे तरस, रहमत नाल सहिमत करे खुदाईआ। चौथे जुग सब दी पूरी करे ग़रज़, अरज़ बेनन्ती सुण के हुक्म दए सुणाईआ। नाम खण्डा निरगुण धार हथ्थ तेरे देवे खड़ग, खण्डां ब्रह्मण्डां भय दए वखाईआ। लोकमात जाणा निधड़क, पुरख अकाल दीन दयाल सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। उच्ची कूक आत्म परमात्म ढोला दस्सणा गरज, लख चुरासी जीव जंत देणा समझाईआ। जिस दा निराला राग वक्खरी तरज़, तराज़ू विच तोल ना कोए तुलाईआ। सतिजुग

साचे तेरी मद्दद करे पुरख अकाल धुर दा मर्द, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ी क्रिया लहिणा देणा दए मुकाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा वजा डंका, हुक्म धुर दा इक्क जणाईआ। ख़बरदार कर राउ रंकां, शाह हकीर सोया रहिण कोए ना पाईआ। सुहा वाहिद इक्को बंका, सच गृह दे वखाईआ। पकड़ उठा साचे सन्ता, जन भगतां अक्ख खुलाईआ। मेल मिला आत्म परमात्म नारी कन्ता, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। सतिजुग साची धार बणा बणता, घड़न भन्नणहार समरथ स्वामी देवे माण वड्याईआ। झगड़ा रहे ना विच जीव जंता, बोध अगाध दे समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगता, पारब्रह्म ब्रह्म सब नूं नज़री आईआ। धर्म विद्याला खोल अगम्मी पंडता, चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को हुक्म मनाईआ। धर्म दुआर वखा ऊँच नीच राउ रंक साची संगता, संगल शरअ दे तुड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार तेरा अंदर बाहर रंगदा, रंग चलूल दए चढ़ाईआ। लोकमात तेरा राह तक्कदा, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। मार्ग ला धर्म सति सच दा, जूठ झूठ डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार सदा सदा सद जुग चौकड़ी हर घट थाँ वसदा, ख़ाली दवारा नज़र कोए ना आईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी पूरो दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदासपुर ★

सतिजुग साचे साचे धर्म दा खोल दवार, मातलोक धुर संदेसा दे सुणाईआ। सतिगुर शब्द दा बण बरख़ुरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा मददगार, मेहरवान मेहर नज़र नाल पार कराईआ। झगड़ा दीन दुनी ना रहे विच संसार, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। सांझा दस्से सर्ब प्यार, मानव जाती दे समझाईआ। इष्ट मना इक्क निरँकार, देवत सुर दी लोड़ रहे ना राईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, परवरदिगार नूर ख़ुदाईआ। सचखण्ड निवासी दस्से धुर दा सिक्दार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे हुक्म अंदर जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। वारो वारी आउँदे पैगम्बर गुर अवतार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाम संदेसा बोल जैकार, चार कुण्ट करन जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ख़ाणी बाणी बण लिखार, निरअक्खर अक्खर धार बदलाईआ। सच दुआर दा खोल किवाड़, परदा ओहला जाण चुकाईआ। तिन्नां दी सिख्या कलयुग जीव समझ ना सके गवार, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। घर घर अंदर कूड़ी क्रिया लोभ मोह हँकार, माया ममता रही सताईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद

शिवदवाले मठ्ठ होवे विभचार, तीर्थ तट साचा रंग ना कोए रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई खुआर, प्रेम प्रीती साची रीती सच ना कोए कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जूठ झूठ कीता धूआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, लोकमात मार झात, अमृत बूँद सवांत सब नूं दे प्याईआ। सतिजुग साचे उठ लै अंगड़ाई, सवाधान पुरख अकाल रिहा कराईआ। लोकमात दीन दुनी पई दुहाई, हाहाकार विच लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी सिख्या गए भुलाई, साचे मार्ग चल के प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। माया ममता मोह कीता हलकाई, जगत वासना तृष्ना रही तड़फाईआ। साची मंज़ल चढ़ के मिले ना किसे माही, महबूब मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म होई जुदाई, पारब्रह्म ब्रह्म मेला ना कोए कराईआ। सुरती शब्द ना वज्जे वधाई, गीत गोबिन्द ना कोए सुणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे आपणा डंक दिता वजाई, राउ रंकां रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे सति सतिवाद साचा मार्ग दे वखाईआ। सतिजुग साचे दीन दुनी दे संदेश, नाउँ निरँकार इक्क दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन सब दा मालक इक्क नरेश, परम पुरख पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दी नज़र ना आए किसे रूप रेख, रंग रतड़ा बैठा हर घट डेरा लाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न शिव ब्रह्मा महेष, सिर सके ना कोए उठाईआ। सदा वस्या सचखण्ड देस, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर आपणा हुक्म चलाईआ। जिस दा ना मुच्छ दाढ़ी कोई केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोए वटाईआ। जिस ने सुत बणाया गोबिन्द दस दस्मेस, दहि दिशा दा मालक इक्को नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहे हमेश, गुर अवतार पैगम्बर सेवा विच रखाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग कूड़ी क्रिया हुक्मे नाल बदल दए रेख, माया ममता मोह डेरा ढाहीआ। सति धर्म दा धरत धवल उपर सुहञ्जणा कर देस, रुत अगम्मढ़ी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे हुक्म इक्क नरेश, नरां दा नरायण आप जणाईआ। सतिजुग साचे साची दे दे सिख्या, विद्याला धुर दा इक्क खुल्हाईआ। नाम निधान अगम्मी पा भिच्छया, भिक्खक बणे सर्ब लोकाईआ। कलयुग चौथे जुग पूरा होवे भविख्त लिख्या, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। दीन दुनी दृष्टी अंदर जापे मिथ्या, सगला संग ना कोए निभाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब नूं दस्स धुरदरगाही पितया, पतिपरमेश्वर सब दा पिता माईआ। जिस दा हुक्म लेख फ़रमान कदे ना मिटया, नित नवित आपणी धार चलाईआ। करे खेल सदा अनडिठया, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार हुक्मे अंदर जिस ने आपणे खाते सिटया, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, सतिजुग साचे तेरा लहिणा देणा अगला अजे ना मुकया, पिछला पिच्छे झोली पाईआ। सतिजुग साचे सति धर्म दा दस्स सतिवाद, साची सिख्या जगत जणाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे रिवाज, मन वासना रहे ना राईआ। उजड़या खेड़ा कर आबाद, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। हर हिरदे विच परमात्म आत्म आवे याद, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक नाम निधाना दे दाद, दौलतमंद गुरमुख दे बणाईआ। सोई सुरती सब दी जाए जाग, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। अन्तर अन्तर बिरहों विछोड़े दा उपजे वैराग, वैरी दूती दुश्मण रहिण कोए ना पाईआ। घर स्वामी मेल कन्त सुहाग, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। सति धर्म दा वड्डा होवे सुभाग, संसार सच विच दे रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धोवे दाग़, सतिजुग तेरा निरगुण नूर जगाए चिराग़, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ किशन कौर दे गृह नवां पिण्ड ★

सतिजुग साचे लोकमात दस्स इक्को नाम, चार वरन अठारां बरन दे समझाईआ। सब दा मालक आदि जुगादि श्री भगवान, अबिनाशी करता नूर खुदाईआ। जिस नूं झुकदे गुर अवतार पैगम्बर करन प्रणाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सचखण्ड दवारा जिस दा हक मुकाम, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत नूर महान, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा शब्दी सुत दुलारा सब दा काहन, मालक दो जहान अख्वाईआ। नित नवित लेखा जाणे जीव जहान, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया वेखे मार ध्यान, धरनी धरत धवल उपर परदा दए चुकाईआ। मन वासना सृष्टी दृष्टी शरअ होई शैतान, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। धुर दा हुक्म देवे हुक्मरान, नाम संदेसा इक्क सुणाईआ। लोकमात मार झात धुर संदेसा दे पैग़ाम, पीर पैगम्बरां तों परे कर पढ़ाईआ। जिस नूं समझ ना सके कोए बुद्धिवान इन्सान, निरअक्खर अक्खर धार विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे साचा मार्ग रिहा समझाईआ। सतिजुग साचे साची सिख्या दे संसार, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला दे सुणाईआ। मूर्ख मुग्ध जीव रहे ना कोए गवार, बिबेक बुद्धी सब दी दे कराईआ। साचे नाम दा चढ़या रहे खुमार, कूड़ कुड़यारी मद ना कोए प्याईआ। इक्को इष्ट दृष्ट नूर नज़र आए निरँकार, तूं ही तूं ही सारे राग अलाईआ। दीन मज़ब दा झगड़ा ज़ात पात करे ना किसे खुआर, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। शब्द संदेसा दे एका वार, एकँकार हुक्म मनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे सति पुरख निरँजण सति सतिवादी साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। सतिजुग साचे दीन दुनी चार कुण्ट दहि दिशा इक्क वखा सच्ची धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ इक्को नज़री आईआ। जिस घर ठाकर स्वामी मिले दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। तिस घर सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण वसण प्रभ दे नाल, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म पतपरमेश्वर मुरीदां मुर्शद हो के पुछे हाल, मेहरवान हो के महबूब आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी कीती करनी लेखे लावे घाल, जन्म मरन दा रहे ना कोए सवाल, गेड़ चुरासी दए कटाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत जगा बेमिसाल, मिसल असल असली दे समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बेहाल, जूठ झूठ वज्जे कोई ना ताल, मन ममता मोह दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरा सति दुआर खुल्ह्वावणहार एकँकार, हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। सतिजुग साचे कूड़ी क्रिया नाता तोड़, सच सच नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म धुर दा मेला जोड़, विछड़या रहिण कोए ना पाईआ। मन वासना कुकरमां विच्चों होड़, होका हरि हरि शब्द सुणाईआ। अंदर रहे ना तत्तां वाला चोर, ठग्गी चोरी यारी ना कोए कमाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक तेरे अन्तर दए टिकाईआ। सतिजुग साचे सच्चा बल धार, बलधारी दया कमाईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच्चों कढ्ढ कूड़ विकार, हँकार लोभ ममता दे मिटाईआ। सब नूं नज़री आए एका एकँकार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा होए सांझा जैकार, साचा ढोला शब्द विचोला इक्को दे बणाईआ। दुखियां दा दुःख निवार, हँकारीआं दा तोड़ हँकार, सांझा वखा सच्चा घर बार, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को कर प्यार, मंज़ल रहे ना किसे दुष्वार, सच दवारा एकँकारा इक्को दए वखाईआ। जिस घर बैठे पैगम्बर गुर अवतार, सजदा करन नमस्ते विच निमस्कार, निउँ निउँ पुरख अकाल लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरी साची सिख्या साख्यात सृष्टी दृष्टी अंदर नज़री आईआ। सतिजुग साचे साचा मार्ग दे एक, एकँकार रिहा दृढ़ाईआ। नव सत्त बख्श एक टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सचखण्ड दवारा सब नूं दस्स साचा देस, लख चुरासी भाउणा कम्म किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी दीन दयाल निरगुण सरगुण बदलदा आया भेख, रूप रंग रेख ना किसे समझाईआ। कलयुग अन्त जोती जामा श्री भगवन्त धरे अवल्लड़ा वेस, शब्दी डंक राउ रंक आपणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा सति दवार, धरनी धरत धवल उपर करे पसार, कूड़ी क्रिया दए निवार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तत वजूद रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग साचे सब दा सांझा बण मीत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा रहे ना किसे मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ परदा ओहला देणा चुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत बदल दे नीत, रीती अगली दे समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे गावण गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर मिल के वज्जे वधाईआ। काया माटी सब दी कर ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरा मालक ख़ालक प्रितपालक सदा बैठा रहे अतीत, त्रैगुण हुक्मे अंदर भवाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी सब दे वसे चीत, मन चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक इक्को घर बहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चरण कँवल साची दस्स प्रीत, प्रीतम आपणा सारे लैण बणाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, करे खेल प्रभू अनडीठ, परवरदिगार सांझा यार हुक्मे अंदर हुक्म दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा नाम सच कलाम दस्से इक्क हदीस, हज़रतां तों अग्गे हज़ूर आपणी दस्से पढ़ाईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरो दे गृह पिण्ड चम्यारी ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे सति धर्म मिले मन्ज़ूरी, दयावान दया कमाईआ। सेवा करनी दर हज़ूरी, फ़रमांबरदार रूप वटाईआ। मुहब्बत विच लेखे लग्गे मज़दूरी, चाकरी इक्को दए जणाईआ। कलयुग कूड़ा गढ़ तुट्टे ग़रूरी, हंगता रहिण कोए ना पाईआ। मन वासना कढ्ढणी कूड़ी, जूठ झूठ देणा मिटाईआ। साचे भगतां सन्तां पन्ध मुकाउणा नेड़े दूरी, विछड़या रहिण कोए ना पाईआ। चतुर सुघड़ बणाउणा मूर्ख मूढ़ी, मुग्ध अंञाण मिले वड्याईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा ज़रूरी, नाता धुर दा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। सतिजुग साचे साची दस्सणी निमस्कार, हरि चरण मिले वड्याईआ। इष्टां दा इष्ट एकँकार, सृष्टी दृष्टी दा मालक इक्क अख्वाईआ। जिस दी महिंमां गाउँदे रहे जुग चार, शास्त्र वेद पुराणां नाल सालाहीआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर करदे गए दीदार, जोती जाता डगमगाईआ। सो शाहो भूप दो जहाना सिक्दार, शहिनशाह सचखण्ड अख्वाईआ। करे खेल अपर अपार, अगम्म अथाह आपणी कार कमाईआ। साचा मार्ग लावे विच संसार, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया करे खुआर, ममता मोह रहे ना राईआ। गुरमुख सज्जण बणे मीत मुरार, घर सज्जण रंग रंगाईआ। गुरसिखां खोल्ह किवाड़,

परदा अंदरों दए चुकाईआ। निरगुण जोत करे उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। धुर दा शब्द सुणाए सची धुन्कार, अनादी नाद वजाईआ। आत्म परमात्म मिल के साचा मंगलाचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे साचा राह दरसाईआ। सतिजुग साचे सतिगुर शब्द रहिणा हुशियार, आलस निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कढ्ढ कूड़ कुड़यार, जूठ झूठ देणा मिटाईआ। सति धर्म दा कर पसार, सृष्टी दृष्टी देणी बदलाईआ। आत्म परमात्म दस्स जैकार, सोहँ ढोला देणा समझाईआ। सब दा मालक एकँकार, पुरख अकाला दो जहानां पिता माईआ। जिस नूं लभ्भदे रहे सदा जुग चार, चौकड़ी बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सो खेल करे अपर अपार, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जाता निरगुण धार हो उज्यार, शब्दी डंक राउ रंक आप सुणाईआ। सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों लए उभार, गुरमुख गुरसिख खोजे थाउँ थाँईंआ। एका बख्शे नाम अधार, चरण प्रीती धुर प्यार, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना शाहो भूप वड सिक्दार, हुक्म धुर दा दो जहानां आप समझाईआ।

★ ८ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे उठ प्रभ दे लाल, लाल गोपाला दीन दयाला आप उठाईआ। सृष्टी दीन दुनी होई बेहाल, शाह कंगाल रहे कुरलाईआ। साचा बणे ना कोए दलाल, विचोला हो के विचला भेव ना कोए खुल्हाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ कुड़यार वज्जे ताल, डंका सच ना कोए सुणाईआ। मुरीदां मुर्शद पुछे कोई ना हाल, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण देंदे गए अहिवाल, ढोला शब्दी रागां विच गाईआ। सदी चौधवीं बणे ना कोए प्रितपाल, मालक होए ना कोए सहाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा भगत सुहेले करन भाल, भगवन मिले बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर वखाए एको सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आप खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों करे बहाल, मार झात लोकमात विच्चों बाहर लए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी सच संदेश इक्क सुणाईआ। सतिजुग साचे उठ हो सवाधान, हुक्मे अंदर लै अंगड़ाईआ। कलयुग मेट कूड़ी क्रिया जगत निशान, निशाना धर्म दे झुलाईआ। सब नूं नज़री आए इक्क श्री भगवान, भगतां दा मालक बेपवाहीआ। चार वरन अठारां बरन दर दरवेश मंगते बणन आण, ख़ाली झोली सब दी दए भराईआ। तूं मेरा

मैं तेरा आत्म परमात्म ढोले सारे गाण, गा गा नव नौ चार वज्जे वधाईआ। आत्म शक्ती मिले महान, भगती इक्को इक्क दृढ़ाईआ। मुहब्बत विच महबूब होवे मेहरवान, मेहर नज़र नाल तराईआ। धुर दा शब्द देवे सच्ची धुनकान, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत रस अन्तर देवे पीण खाण, तृष्ना कूड़ी दए मिटाईआ। दरगाह साची सच्चखण्ड दुआर करे परवान, परवरदिगार सांझा यार मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुहेला इक्क इकेला वक्त दुहेला दए मुकाईआ। सतिजुग साचे उठ गहर गम्भीर, सतिगुर शब्द दए वड्याईआ। झगड़ा मुका काया तत शरीर, ममता मोह ना कोए लड़ाईआ। शरअ कट ज़ंजीर, शरीअत धुर दी दे समझाईआ। सति धर्म दी दस्स तदबीर, तरीका प्रभ दा नाम जणाईआ। दीन मज़्हब दी मेट लकीर, वरन बरन ना कोए रखाईआ। धुर दा रंग रंगा शाह हकीर, शहिनशाह साचा देणा मिलाईआ। जेहड़ा अंदरों बदले ज़मीर, ज़ामन हो के लऐ छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। सतिजुग साचे उठ बच्चे नन्हे, निरगुण निरवैर रिहा उठाईआ। जगत वासना मेट बन्ने, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। तेरा संदेश सृष्ट सबाई मन्ने, मन का मणका दे भवाईआ। कलयुग जीव रहिण ना अन्हे, नेत्र अक्ख देणी खुल्हाईआ। मिले मेल श्री भगवंने, भाग सब दा झोली पाईआ। सदी चौधवीं जन भगत जितने जणे, जाणकारी सब नूं दे कराईआ। पुरख अकाल भाग लगाए तिन्हां दे काया माटी तने, पंज तत ब्रह्म मति दए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धुर दा राग सुणाए अगम्मी कन्ने, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त कौर दे गृह पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग सति धर्म सुहावणी रुत्ती, रुत्त सुहञ्जणी देणी बणाईआ। सब दी मति करनी उच्ची, नीच रहिण कोए ना पाईआ। सुरती रहे कोई ना सुत्ती, सोई देणी उठाईआ। रमज़ रहे कोई ना लुकी, परदा देणा चुकाईआ। भगत सुहेले गोदी चुक्कीं, खुशीआं नाल उठाईआ। सच दवारे सुट्टीं, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छीं, आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सतिजुग साचे देवीं धुर दी ख़बर, बेख़बरां आप सुणाईआ। जो बैठे कर के सबर, सिदक ओन्हां तोड़ निभाईआ। मालक दस्सणा पुरख अकाल शेर बब्बर, भय विच रखे सर्ब लोकाईआ। आसा मनसा पूरी करे सध्धर, साध धुर दे लए बणाईआ। सचखण्ड दवारे करे कदर, कुदरत

दा मालक होए सहाईआ। मन वासना देवे बदल, ममता मोह मिटाईआ। कूड़ी क्रिया कर के कत्ल, सच दवारा दए जणाईआ। धाम न्यारे बहा के पत्तन, किनारा इक्को इक्क समझाईआ। जन भगत रहे ना कोए बेवतन, सच दवारे दए टिकाईआ। मनसा कर के पूरी आसण, असल आपणा रंग रंगाईआ। मेहरवान हो पुरख अबिनाशन, अबिनाशी आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मंजल दस्स के घाटन, दर दरवाज़ा इक्क सुहाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे धर्म मार्ग दस्सणा कलयुग जीवां, जाणकारी धुर दा नाम देणा कराईआ। लेखे लाउणी काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सीवां, सीना साफ़ देणा कराईआ। चलणा दस्सणा जगत नीवां, गढ़ हँकार ना कोए बणाईआ। निर्मल जोत प्रकाश करना अगम्मी दीवा, नूर सच देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग साचे सच धर्म दा दस्सणा रस्ता, राह इक्को देणा वखाईआ। प्रभ दा नाम बिन कीमत होवे सस्ता, कौडी हट्ट ना कोए विकाईआ। मनुआ फिरे ना दहि दिश नसदा, डोरी शब्द देणा बंधाईआ। नाम उपजे आत्म परमात्म सांझा जस दा, सोहँ सच पढ़ाईआ। मेल बणया रहे भगतां आपणी अक्ख दा, निज नेत्र दर्शन पाईआ। लहिणा देणा सब नूं देणा हक दा, परदा ओहला देणा चुकाईआ। झगड़ा दुनी रहे ना जग दा, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। सड़ना बुझाउणा त्रैगुण अग्ग दा, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। जन भगत दवारा वेखणा सजदा, सोभामान आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी जीतो दे गृह पिण्ड रमदास ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे साचे धर्म दा कर प्रचार, कलयुग कूड़ी क्रिया जूठ झूठ दे मिटाईआ। पवित्र कर सर्ब अस्थान, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ पाक नज़र कोए ना आईआ। शरअ विच दीन दुनी होई शैतान, तीर्थ तटां विभचार रहे कमाईआ। भय रखे ना कोए श्री भगवान, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए शरमाईआ। हरि चरण प्रीती करे ना कोए ध्यान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पढ़ पढ़ थक्का जीव जहान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव कोए ना

पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिले ना किसे श्री भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म नाता ना कोए जुड़ाईआ। काया माटी साचे मन्दिर अनहद नाद सुणे ना कोए धुनकान, अगम्मी राग ना कोए सुणाईआ। अमृत आत्म रस निजर झिरना बूँद स्वांती मिले ना पीण खाण, जगत तृष्ना अग्ग ना कोए बुझाईआ। मन वासना चार कुण्ट दहि दिशा फिरे सवान, बुध बिबेक साची टेक, ओट इक्क अकाल ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई वैरान, पंच विकार अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरी धार लए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे कलयुग कूड़ी क्रिया कढ्ढ, लोकमात धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। बिन हरि नामे सब दे ख़ाली होए हड्ड, माया ममता मोह होई हल्काईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दा मार्ग गए छड्ड, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। विश्व धार बणे कोई ना परम पुरख दी यद्द, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश अन्तर निरंतर परदा सके ना कोए उठाईआ। मन विकार दूई द्वैत शरअ ज़ंजीर तोड़े कोई ना हद्द, मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर, निरगुण जोत दरस कोए ना पाईआ। सुरती शब्दी निरगुण धार होई अड्ड, आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। त्रैगुण माया पंज तत अग्नी रही लग्ग, नाउँ निरँकार अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। भरमे भुल्ला जीव जंत जगत जग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। किसे दरस ना होवे उपर शाह रग, सच दवारे मिल के वज्जे ना हक वधाईआ। जगत विकारा पी पी थक्के मदि, नाम खुमारी सच ना कोए चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया साचे नाम नालों कीता अलग, सिफ्ती ढोले सारे गा गा शुकर मनाईआ। सतिजुग साचे साचा धर्म चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को दस्स, दहि दिशा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच फ़रमान इक्क समझाईआ। सतिजुग साचे धरनी धरत धवल दे धुर फ़रमाना, हुक्म अगम्म अथाह बेपरवाह दे समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार सब नूं मन्नणा पए भाणा, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सिर सके ना कोए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गाओ आत्म परमात्म साचा गाणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा राम इक्को इष्ट मनाईआ। जिस दी सिफ्त महिमा जुग चौकड़ी शास्त्र वेद करन पुराणा, अञ्जील कुरान ओसे दा ढोला गाईआ। सो समरथ स्वामी अन्तरजामी खेले खेल दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण निरवैर निराकार जोत सरूपी पहरया बाणा, आदि निरँजण दर्द दुःख भय भंजन भव सागर पार कराईआ। सतिजुग साचे धुर दा नाम निधान जगत जीवां नेत्र पा नाम अंजण, अन्ध अज्ञान अंदरों दे कढाहीआ। साची डण्डावत प्रणाम दस्स धुर दी बन्दन, बन्दगी विच मुछन्दगी

कूड़ी दे मुकाईआ। धुर दा टिक्का नाम जोत ललाटी मस्तक ला चन्दन, चन्द सूरज तों परे होए रुशनाईआ। आवण जावण लख चुरासी पतित पावण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कटणहारा दीन दुनी दे फंदन, लख चुरासी जम दी फाँसी रहिण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले भगत भगवान दर ठांडे इक्को वस्त मंगण, नाउँ निरँकारा एकँकारा धुर दा कलमा दए जणाईआ। काया माटी तन वजूद चाढ़े साची रंगण, रंग रंगीला मोहण माधव आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा वज्जे इक्क मृदंगन, मधुर धुन हरि भगत सुहेला लए सुण, सुन्न समाधी विच्चों अगला लेखा दए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना कोए अवगुण, गुणवन्ता गुण निधान श्री भगवान वस्त अमोलक काया झोली देवे पाईआ। एका नाम शब्द दो जहान लए सुण, गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर मिल के ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार, करनी दा करता करनेहार, कुदरत दा मालक सृष्ट दा पालक ख़लक दा ख़ालक दुनी दा दीन, देवणहारा सच तालीम, सतिजुग साचे कलयुग अंदर कर तरमीम, हुक्मे अंदर हुक्म देणा प्रगटाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड मुद्दी पुर ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे लोकमात बण बरदा, पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड निवासी रिहा जणाईआ। कूड़ कुड़यारा गढ़ हँकारा तोड़ घर घर दा, गृह मन्दिर अंदर काया माटी कर रुशनाईआ। सच भण्डारा वखा अमृतसर सरोवर नरायण नर दा, नर हरि आपणा परदा ओहला दए चुकाईआ। जन भगत साचा सन्त गुरमुख गुरसिख तूं मेरा मैं तेरा ढोला होवे पढ़दा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे सच वधाईआ। सन्त सुहेला सज्जण साची मंज़ल होवे चढ़दा, अद्धविचकार अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। धरनी धरत धवल उपर हुक्मे अंदर तैनूं घल्लदा, पुरख अबिनाशी घट निवासी धुर फ़रमाना आप जणाईआ। जगत वक्त चुका कपट छल दा, दुहेला रहिण कोए ना पाईआ। मुकाम वखा सचखण्ड दुआर दरगाह साची अटल दा, निहचल दे माण वड्याईआ। लेखा वेख जल थल दा, अनदिन आपणी सेव कमाईआ। कलेश रहे ना कलूए कल दा, कलकाती देणे खपाईआ। झगड़ा रहे ना दूई द्वैती सल्ल दा, दूती दुश्मण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरी साची धार प्रगट करे आप निरँकार, बख्शिश करे सृष्टी संसार, दृष्टी सब दी दे बदलाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दी लै जा धुनी, धुन आत्मक राग देणा जणाईआ। आलस निंद्रा

१३४
२०

विच रहे ना कोए ऋषी मुनी, मुनीश्रां देणा उठाईआ। तेरा मालक ख़ालक प्रितपालक वड गुण गुणी, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक्को नज़री आईआ। सब दी पुकार एथे ओथे दो जहान सदा रिहा सुणी, अनसुणत सब दा परदा ओहला दए चुकाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सब दी बदल दे कूणी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा मिटाईआ। सच प्रेम दी सब दे अंदर ला धूणी, मन हँकारा कूड़ विकारा देणा जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा सच दुआर प्रगट करे आप निरँकार, करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणा हुक्म आप सुणाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दी लै जा धुज्ज, धर्म दा पूत दे बणाईआ। जन भगतां साचे सन्तां भेव खुल्हा गुझ, परदा ओहला दे उठाईआ। धुर दा मालक लैण बुझ, परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। सच दवारा जाए सुज्झ, नेत्र लोचण नैण अक्ख होए रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी निंद्रा विच्चों जाण उठ, आलस रहिण कोए ना पाईआ। साचे नाम दा जाम अमृत पीवण घुट, प्याला मधुर हथ्थों देण सुटाईआ। दूई द्वैती शरअ शरीअत निकले फुट्ट, बन्द किवाड़ी बजर कपाटी परदा देणा खुल्हाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते नाल मिलाईआ। झगड़ा रहे ना वरन गोत, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। चिन्ता मिटा के ग़म हरख़ सोग, सांतक सति देणा वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म साचे नाम दी दे के चोग, चुग़ली निंदया तों देणा छुडाईआ। हउमे हंगता रहे कोई ना रोग, गढ़ हँकार ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं मेरा मैं तेरा करना धुर संजोग, संजीदगी नाल मेला देणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति दवारे सचखण्ड दुआर सति धर्म साची बख़्शे मौज, खुशी ग़मी विच्चों बाहर कढाहीआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ बीबी महिंदर कौर दे गृह पिण्ड मुद्दी पुर ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे धुर दा नाम लै वस्त, वास्ता सब दे नाल रखाईआ। इक्को रंग रंगणा कीट हस्त, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लहिणा देणा सब दा देणा दस्त, बदस्त लेखा मुकाउणा थाउँ थाँईंआ। जन भगतां नाम खुमारी रखणा मस्त, सच प्याला जाम प्याईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों कर के नष्ट, सति धर्म देणा प्रगटाईआ। गुरमुखां जन्म मरन दा रहे कोई ना कष्ट, गेड़ चुरासी देणा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दी दे धुन्कार, धर्म दवारा इक्को दे वखाईआ। सृष्ट सबाई पूजा होवे परम पुरख

निरँकार, निरगुण निरवैर सर्ब मनाईआ। दुतीआ भाउ कर खुआर, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा दस्स यार, जल्वागर नूर खुदाईआ। सचखण्ड निवासी सब दा मददगार, वैरी मीत नज़र कोए ना आईआ। देवणहारा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नाम आधार, गुर अवतार पैगम्बर सेवा लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखदा आया वारो वार, वारस हो के आपणा हुक्म मनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त किरपा करे आप दातार, दाता दानी हो के मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति स्वामी अन्तरजामी घट भीतर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त खोज खुजाईआ। सति धर्म सृष्ट सबाई दे दे अगम्मा रस, नाम रसीआ दे जणाईआ। मन वासना कर के वस्स, वसल दस्स बेपरवाहीआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, अक्खरां तों परे दस्स पढ़ाईआ। सच दुआर खोल्ह के हट्ट, नाम अमोलक देणा वरताईआ। झगड़ा रहे ना तीर्थ तट, अठ्ठ सठ्ठ ना कोए लड़ाईआ। सब दा मालक कमलापति, पतिपरमेश्वर दे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा गाउँदे जस, ढोले गीत नग़मे रागां नादां विच सुणाईआ। सो सब दा लहिणा देणा जुग चौकड़ी देवणहारा हक्क, हकीकत सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि

जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण करे खेल पुरख समरथ, देवणहार नाम भण्डारा वथ, दौलत धुर दी धुर दा राम आप वरताईआ।

१३६ २०

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ श्रृंगारा सिँघ दे गृह पिण्ड खहिरे ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचा सचखण्ड करे निमस्कार, प्रभ चरण कँवल सीस झुकाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरवैर दे माण वड्याईआ। लोकमात जावां विच संसार, हुक्मे अंदर तेरी सेव कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढ्ढां बाहर, दीन दुनी विच नज़र कोए ना आईआ। जूठ झूठ गढ़ तोड़ां हँकार, माया ममता मोह दयां खपाईआ। नारी नर करे ना विभचार, दुराचार ना कोए कमाईआ। सर्ब जीवां बख़्शां इक्क आधार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तेरा नाउँ जपावां परम पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरा राह वखाईआ। भगत सुहेले गुरमुख उठावां लाल, सन्त साजण खोज खुजाईआ। कलयुग रीती नीती बदल देवां चाल, सतिजुग साचा धर्म दयां प्रगटाईआ। जो तेरे नाम दी घालण रहे घाल, चार वरन अठारां बरनां विच्चों तेरे नाल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वखावां दीन दुनी दा हाल, हालत सब दी दयां वखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार सांझे यार सतिजुग तेरे ठांडे दरबार मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभू धर्म दा दे दे बल, बलधारी दे बणाईआ। कलयुग कूड़ विकार मेटां कपट छल, धरोह जगत ना कोए कमाईआ। तेरा प्रकाश करां घड़ी घड़ी पल पल, जोती जोत जोत जोत रुशनाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात मेटां द्वैती सल्ल, ऊँच नीच करे ना कोए लड़ाईआ। अमृत आत्म निजर झिरना वखावां साचा सरोवर जल, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ भज्जण दा लेखा दयां मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका वेखां रंग महल्ल, सच दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा तेरे चरण कँवल दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिजुग साचे साचा बख़्शां इक्को नाम, नाउँ निरँकारा दीन दुनी देणा दृढ़ाईआ। प्रेम प्रीती देवां जाम, अमृत रस देणा चखाईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात ना रहे निशान, निशाना शब्द अणयाला तीर इक्क वखाईआ। सिर हथ्थ रखे अबिनाशी करता मेहरवान, श्री भगवान आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप रहे ना कोए तुफ़ान, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां जेरज अंडां इक्को देणा वखाईआ। सब नूं नज़री आए मालक ख़ालक प्रितपालक श्री भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह सब दा पिता माईआ। मन बुद्धी दा रहे ना कोए गुलाम, झगड़ा रहे ना दीन इस्लाम, रसना जेहवा ना कोए कलाम, कायनात परदा ओहला देणा उठाईआ। साचा मन्दिर दस्स मकान, शिवदवाले मन्दिर मठ्ठ जिस दी पहचान, बिन सतिगुर गुरूदवारा ना कोए परवान, दर दरबारा दरगाह साची नज़र किसे ना आईआ। साचा नाम संदेसा बिन रसना जेहवा दे ज़बान, भेव अभेदा खोल्ह धुर अमाम, नज़री आए सब नूं एका काहन, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक्क दरसाईआ। सतिजुग साचे साची सिख्या दे दे जग, सख़ावत नाम भण्डारा झोली पाईआ। दीन दुनी दी बुझे अग्ग, ममता मोह ना कोए तपाईआ। एका नाम ढोला गीत कलमा नग़मा गावण छन्द, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख जन भगत सूफ़ी फ़कीर दर ठांडे लैणे सद्द, सद्दा होका इक्को नाम जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सदी चौधवीं प्यार मुहब्बत नाता गए छड्ड, एथे ओथे दो जहान सगला संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरी साची लाए हद्द, तेरे नाम दा वज्जे नद, सुणे लोक परलोक ब्रहिमद, ब्रह्मांड आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा लै भण्डारा, लोकमात देणा वरताईआ। कलयुग जीव मूर्ख मूढ़ ना रहे गवारा, बिबेक बुद्धी देणी कराईआ। सच्चा मार्ग दस्स धुर दरबारा, एकँकारा देणा मिलाईआ। मंज़ल किसे

ना रहे कोई दुष्वारा, जोग अभ्यास इक्को देणा समझाईआ। चार वरन अठारां बरन सांझा दस्सणा इक्क जैकारा, अक्खरां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सचखण्ड वसे सदा सच्ची धर्मसाला, सो सहाउणा दरसाउणा मनाउणा इक्क दवारा, दूजे दर दरवेश हो के मंगण कदे ना जाईआ। जिस घर जिस गृह जिस मन्दिर सईयदे करदे गुरू अवतारा, पैगम्बर नमस्ते कहि के शुकर मनाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट भीतर वेखणहार सर्ब संसारा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण जोत बिन वरन गोत निरगुण निरवैर परवरदिगार सांझा यार धुर दा सिक्दारा कल्की अवतारा, निहकलंक कल आपणी खेल खिलाईआ। जो जगत विद्या वसे बाहरा, चौदां लोक ना पावे सारा, चौदां तबक हाहाकारा, ज़िमीं असमानां वेखे अखाड़ा, गगन गगनंतर हुक्मे अंदर करे खेल न्यारा, लेखा जाणे सदा चौकड़ी जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे हुक्मे अंदर फिराईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी सदा निहकामी अन्तरजामी लख चुरासी जीव जंत अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहान जोती शब्द सदा सिक्दारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हुक्मे अंदर आपणा हुक्म वरताईआ।

१३८ २०

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड खहिरे ★

सतिजुग कहे प्रभ बिन तेरी किरपा मिटे ना कलयुग दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। मन वासना कूड़ी तृष्ना मिटे ना भुक्ख, कामना कूड़ ना कोए तजाईआ। उजल होवे किसे ना मुख, बिन तेरे नाम दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। बिन हरि नामे आवे किसे ना साचा सुख, सांतक सति ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के सन्त सुहेले गोदी चुक्क, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। मन विकारा कूड़ हँकारा शब्द डण्डे कुट्ट, खण्डा धुर दा लै उठाईआ। ग़रीब निमाणयां उपर मेहरवान हो के तुठ, दयावान हो के आपणी दया कमाईआ। जो तेरे चरण कँवल गया झुक, डण्डावत कर के सीस निवाईआ। उस दा आवण जावण लख चुरासी पैंडा जाए मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा निर्मल जोत, जोती जाते पुरख बिधाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सचखण्ड वसाउणा धुर दे कोट, जिस घर दीवा बाती कमलापाती तेरा निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। चिन्ता ग़म ना व्यापे कोई सोच, हिरस हवस ना कोए वधाईआ।

तेरे प्रेम दी मानण मौज, मजलस जन भगत तेरे नाल रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आदि जुगादी तेरी गोत, वरनां बरनां विच्चों खहिड़ा देणा छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ बिन तेरे हुक्म कलयुग ना होवे दूर, बलहीण ना मूल अख्वाईआ। हुक्म नाल जूठ झूठ मेट कूड़, क्रिया कपट रहिण ना पाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते बख्श आपणा नूर, नूर नुराना श्री भगवाना आपणा नाम दे चमकाईआ। शब्दी खण्डे तोड़ गढ़ ग़रूर, गुरबत दुरमति दोवें बाहर कढाहीआ। प्रगट हो के नज़री आ हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे हज़रत पीरां दे पीर रसूलां दे रसूल आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद धुर दी धार इक्क जणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ किरपा कर आप भगवन्त, भगवान हो के दया कमाईआ। मेरे नाल मिला साचे सन्त, भगत सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। जिन्हां दे अन्तर आत्म तेरा नाउँ मणीआं मंत, मन का मणका गए भवाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म विच समाईआ। तैनूं कहि के बेअन्त बेअन्त बेअन्त, शुकर आपणा रहे जणाईआ। मालक ख़ालक सृष्ट सबाई धुर दे कन्त, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल जुग चौकड़ी आदि अन्त, जुग चौकड़ी सद चले तेरे हुक्म रज़ाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ मिलखा सिँघ दे गृह पिण्ड खहिरे ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग कहे प्रभ साचा दे नाम खंजर, कूड़ी क्रिया घात दए कराईआ। धुर दा दे नाम निधान अंजण, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। वड्याई बख्श आप निरँजण, नरायण हो के हो सहाईआ। दाता बण दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। इक्को धूढ़ बख्श मज्जन, मजलस आपणे नाल रखाईआ। भगत सुहेले तैनूं सद्दण, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। तूं सच दवारा आवीं लँघण, बण के धुर दा पाँधी राहीआ। तेरे प्रकाश नाल गुरमुख दीपक जगण, आपणा नाम करन रुशनाईआ। साची प्रीती अंदर रहिण मग्न, सुरती शब्द विच समाईआ। बाहरों तत्तां वाला बदन, अंदर तेरा नूर डगमगाईआ। सचखण्ड छड्ड के आए तेरा वतन, बेवतनां आपणे घर लैणा बुलाईआ। चुरासी विच्चों मानुख जन्म दा उत्तम श्रेष्ट यतन, यथार्थ तेरी सेव कमाईआ। तूं स्वामी हो के आवीं रखण, रक्ख्या करीं थाँईं थाँईंआ। वेख वखावीं उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, दिशा कूट परदा ओहला रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरे आए साचे पत्तण, घाट किनारे आपणे देणा लगाईआ।

★ ६ कत्तक शहिनशाही सम्मत २ गुरमीत कौर दे गृह पिण्ड मान ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचे सृष्ट सबाई दस्सणा इक्को ठाकर, सचखण्ड निवासी देणा समझाईआ। जो पार करे विच्चों संसार सागर, आवण जावण लख चुरासी नाता दए तुड़ाईआ। करे प्रकाश काया माटी गागर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां सच दवारे देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडे होए सहाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा लै ख़र्चा, लोकमात ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाल दे नाम दी दस्स चर्चा, चार वरन दे समझाईआ। धुर दे हुक्म दा पा अग्गे पर्चा, जिस नूं हल ना कोए कराईआ। मालक दस्स उपर अर्शा, हर घट वस्या नज़री आईआ। भेव खोल्ह ज़िमीं फ़र्शा, परदा ओहला देणा चुकाईआ। कलयुग मिटे कूड़ अन्धेरा गर्दा, जगत विकार रहिण ना पाईआ। जन भगतां मेल होवे धुर दे हरि दा, हिरदे हरि लैण वसाईआ। नज़र आवे जो विछड़या चिर दा, जगत विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। भेव दस्स परमात्म पिर दा, प्रीतम इक्को देणा जणाईआ। जो चार कुण्ट दहि दिशा दो जहान निरगुण धार फिरदा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भेव खुल्हा दे घर थिर दा, सन्त सुहेले सचखण्ड लै मिलाईआ। जिस दे हुक्म नाल जुग चौकड़ी गेड़ा गिड़दा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा रूप लैण बदलाईआ। ओसे दे हुक्म नाल लहिणा देणा सब दा निबड़दा, लेखे विच्चों लेखा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त दए वरताईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा दे ढंडोरा, चार कुण्टां दे सुणाईआ। कलयुग मिटे अन्धेर घोरा, कूड़ी क्रिया देणी खपाईआ। मात दिसे ना कोई ठग्ग चोरा, कूड़ हराम ना कोए कमाईआ। साचे नाम दा इक्को गावण सारे दोहरा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिल के ख़ुशी मनाईआ। सस्से उपर दस्स सो होड़ा, हँ ब्रह्म आप जणाईआ। पुरख अकाल दी गुर अवतार पैगम्बरां सदा लोड़ा, बिन श्री भगवान लख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। प्रभ दा दर्शन जितना होवे उतना थोड़ा, जन भगत बिना दरस जग रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव चुका के तोरा मोरा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म सोहँ ढोला बण विचोला, सोहला धुर दा दिता समझाईआ।

★ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दी आदत, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर भज्जण वाहो दाहीआ।

तोड़ना विछोड़ना जुग चौकड़ी प्रभ दी धुर दी नयामत, आमद खुशामद आपणे विच छुपाईआ। जन भगतां नेड़े आउण ना देवे कदे कयामत, लेखा जाणे दो जहान थाउँ थाँईंआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार रखे सही सलामत, साहिब सुल्तान मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर सूफ़ी सन्त फ़कीर प्रभ दी अमानत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मन करे बग़ावत, ममता मोह विकार जगत लड़ाईआ। जिन्नां दी साहिब सतिगुर शब्द गुरदेव स्वामी देवे आप ज़मानत, ज़ामन धुर दा हो के लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जण, दिवस रैण अठ्ठे पहर वाहो दाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नित नवित निरगुण सरगुण धार नठ्ठण, थित वार घड़ी पल समझ किसे ना आईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड सच दवारे दात मंगण, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। बिन हरि किरपा दूसर चढ़े कोए ना रंगण, रंगत हक ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि खेल कर के गए त्रिलोकी नंदन, लोक परलोक सोहला ढोला गाईआ। सरगुण धार कर के गए बन्दन, नमो नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। मस्तक टिक्के धूढ़ी ख़ाक रमा के गए चन्दन, जगत धार विच संसार आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित भज्जदे, बण बण पाँधी राहीआ। कोटन कोटि काल गए लँघदे, समां समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए मंगदे, दर घर ठांडे सीस निवाईआ। सज्जण साक बणे रहे अंग दे, अंगीकार तन माटी ख़ाक तन वजूद हंढाहीआ। प्रकाश लैंदे रहे नूर अगम्मी चन्न दे, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी परवरदिगार इक्को रहे मन्नदे, परम पुरख बेपरवाहीआ। वणज कराउँदे रहे नाम भण्डारे धन दे, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। राग नाद सुणाउँदे रहे बिना कन्न दे, अनहद नादी नाद वजाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे रहे भन्नदे, भरम गढ़ तुड़ाईआ। हुक्मे अंदर रहे चलदे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। काया माटी तन शरीर रहे छड्डदे, वजूद वसल ना कोए खुदाईआ। बिन माता पिता रहे जम्मदे, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। झगड़े मुका के हरख़ सोग ग़म दे, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। अन्त भरोसा जाणे ना कोई आपणे दम दे, बिनां दमां तों दामनगीर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेपरवाह, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दा आदि जुगादी इक्को नाँ, नाउँ निरँकार रिहा अख्वाईआ। जल्वागर नूर खुदा, वाहिद लाशरीक बेपरवाहीआ। आत्म नालों होवे ना कदे जुदा, परमात्म वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लख चुरासी तत्तां वाला चोला जगत रिहा हंढा, घट

घट बैठा सोभा पाईआ। महल अटल कर रुशना, निरगुण नूर डगमगाईआ। शब्द अनादी ढोला गा, इक्को कलमा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी खेल खिलाईआ। मेहरवान हरि महबूब, मुहब्बत विच खेल खिलाईआ। जिस दा आहला अर्श अरूज, महल अटल सोभा पाईआ। जिस दी मंज़ल हक मक्सूद, जल्वागर नूर रुशनाईआ। जिस दे अन्तर नहीं दूज, निरंतर एका रंग रंगाईआ। आदि जुगादि ना होए नेस्तोनाबूद, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार कमाईआ। तन शरीर ना तत वजूद, जल्वागर इक्क अख्वाईआ। सो साहिब स्वामी हो मौजूद, अन्तरजामी परदा लाहीआ। बिन हरि किरपा किसे ना आवे सूझ, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र करे भगवान, हरि करता वड्ड वड्याईआ। गोबिन्द दे के गया ब्यान, पिछला लेखा इक्क समझाईआ। जिन्हां चौहां उठाया काहन, बणे पाँधी राहीआ। इक्क दा अंदरों बदलया ध्यान, पिछला लेखा दए गवाहीआ। मनुआ शरअ विच होया शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। शब्द सुनेहड़ा दिता नौजवान, नौबत धुर दा नाम वजाईआ। लहिणा देणा फेर चुकावां आण, कलयुग वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाईआ। दस कदम दी सेवा कर परवान, अगला झगड़ा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जिन्हां चुकया उच्च दा पीर, पीर पैगम्बर देण गवाहीआ। पिछला लेखा नाल शरीर, शरीर नाल दए वड्याईआ। महा सिँघ ने गाया तकदीर फड़ा हथ्थ तदबीर, तदबीर आपणा हुक्म मनाईआ। प्रेम प्यार दा सच ज़ंजीर, मुहब्बत शरअ विच छुपाईआ। मन आशा दा फुट्ट प्या ख़मीर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। साढे तिन्न साल अग्गे रहे भीड़, बेड़ा फेर दए बदलाईआ। तन माटी पाटे चीथड़ रहिण ना देवे चीर, चीरे वाला होए सहाईआ। जिस वेखी आख़र अख़ीर, मंज़ल वेखे नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप समझाईआ। धुर दा हुक्म कहे गुर अवतार पैगम्बरां कीता इक्ठ, दर ठांडे खुशी मनाईआ। निरगुण धार आए नठ्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। गुरमुख कदे ना होवे यमला जट्ट, भगत सुहेला नज़री आईआ। जिन्हां दा नाम भण्डारा खुल्ल्या धुर दा हट्ट, अबिनाशी करता आप वरताईआ। सो सन्त सुहेले लाहा लैण खट्ट, जिन्हां दा खटका अगला पिछला दिता चुकाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, सोई सुरती दए उठाईआ। दुरमति मैल देवे कट, पतित पुनीत आप कराईआ। वसणहारा घट घट, परदा ओहला दए चुकाईआ। निरगुण जोत लट लट, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। जन्म कर्म दा लहिणा देणा सब नूं देवे हक, हकीकत विच्चों लाशरीक खोज खुजाईआ। जो गोबिन्द गया दस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट

भीतर वेख वखाईआ। घट भीतर वेखणहारा सब दी करे खोज, लख चुरासी चारे खाणी फोल फुलाईआ। नित नवित जुग चौकड़ी जिस दा अगम्मड़ा चोज, जगत विद्या मन मति बुध समझ किसे ना आईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर सईयदे करदे चौदां लोक, परलोक सीस झुकाईआ। उस दा नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना इक्क सलोक, सोहला ढोला धुर दा नज़री आईआ। सच प्रीती धुर दी नीती आत्म परमात्म दस्से इक्को जोग, जोगीशर तपीशर मुनीशर जिस नूं ढूंडण थाउँ थाँईआ। जन भगतां कर के धुर संयोग, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। निरवैर हो के देवे दरस अमोघ, परदा ओहला आप उठाईआ। हउमे हंगता माया ममता कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे रोग, चिन्ता सोग आप मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म कर के धुर संजोग, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। जो आदि जुगादी सब दा कन्त, ब्रह्म ब्रह्मादी रिहा समाईआ। जिस दा नाम निधाना धुर दा मंत, मंत्र पढ़े जगत लोकाईआ। जो बोध अगाधा एकँकारा इक्को पंडत, दो जहानां रिहा पढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग धार चार वरन अठारां बरन निरगुण सरगुण बणा धुर दी संगत, सगला संग आप रखाईआ। जन भगत सुहेला इक्क इकेला दर दवारे जाए किसे ना मंगत, मांगत हो के झोली कोए ना डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग अन्त मुका झेड़ा, झगड़ा दो जहान रहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत निरगुण सरगुण दे गेड़ा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव दे खुल्हाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लहिणा देणा तुध बिन चुकावे केहड़ा, धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप दिसे अन्धेरा, धुर दा नूर साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हउमे हंगता सृष्ट सबाई दृष्टी अंदर पाया घेरा, विषयां विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। बिन तेरी किरपा कोई ना जाणे तेरा मेरा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव कोए ना पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया माटी दीन दुनी विच उजड़या खेड़ा, महल अटल सोभा कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं वक्त अन्त अख़ीरी नेड़ा, नेरन नेरा हो के दे समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी आसा अंदर कर के बैठे रहे वड्डा जेरा, जेरज अण्डज उत्भुज सेहतज आपणा आप भवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नर नरायण निरगुण धार एकँकार परवरदिगार तेरा होया फेरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा परदा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दवारे ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परवरदिगार बख़्श इख़लाक, ख़ाकी तन जगत मिले वड्याईआ। कूड़ी क्रिया

जगत वासना हुक्मे अंदर दे तलाक, अगला संग ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म हो के आपणा कर इत्तफाक, दूजी राए दी लोड़ रहे ना राईआ। घर स्वामी सज्जण बण चाक, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत बन खण्ड फेरा कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण हो के गए आख, सोहले ढोले रागां नादां नग़म्यां कलमयां विच तेरा नाम सालाहीआ। सदी चौधवीं दर दवारे होए मुहताज, बिन अक्खां नेत्र नैण रहे उठाईआ। धुर दे हुक्म दा शब्दी दे जवाब, कलम शाही दी लोड़ रहे ना राईआ। कुछ लहिणा देणा याद कर विच बग़दाद, नानक निरगुण निरगुण नाल शब्द पढ़ाईआ। जिस दी सुणी ना किसे आवाज़, लेखा लिख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करके कहिण आदाब, बिन सीस सीस झुकाईआ। महल अटल सोहे तेरा इक्क महिराब, महबूब तेरा नूर रुशनाईआ। निरगुण हो के दे इमदाद, बख़्शिश विच आपणा तरस कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्ह आप, तेरे हथ्थ वड वड्याईआ। निरगुण नूर साख्यात, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा भेव खुल्हाईआ। चार जुग तेरा लेखा लिखदे गए काग़ज़ात, अक्खरां वाली वण्ड वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए ब्यानात, ब्याना तेरा नाम धराईआ। बिन तेरे करे ना कोई नजात, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। सति धर्म दी सदी चौधवीं होई वफ़ात, सास ग्रास नज़र कोए ना आईआ। कूड़ कुड़यारे मिली शाबाश, कलयुग आपणा रंग वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरी करे तलाश, सदी चौधवीं लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक जगत वण्ड वड्डी छोटी कलास, कालख टिक्का मूल ना कोए धवाईआ। बिन तेरे नाम धुर दे जाम ख़ाली दिसे काया पंज तत लाश, नालश मेटे कोए ना जगत लोकाईआ। बिन तेरे पूरी करे कोए ना ख़ाहस, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। सब दे बिरथा दिसदे स्वास, साह साह तेरा नाम नज़र ना आईआ। जो नानक निरगुण धार गया आख, बिन अक्खरां लेख बणाईआ। गोबिन्द माछूवाड़े ल्या भाख, बिन नैणां नैण उठाईआ। कृष्न मंग के गया मंग साच, बिदर घर ध्यान लगाईआ। राम सौं के विच प्रभास, नैण मूंद अक्ख खुल्हाईआ। शिव झोली डाही उपर कैलाश, मस्तक दोवें हथ्थ टिकाईआ। ब्रह्मे हो के किहा दास, चरण कँवल नीर वहाईआ। विष्नूं वेख के परे आकाश, आख़र आपणी आस समझाईआ। तेरा नूर निरगुण जोत प्रकाश, तत्व तत ना कोए रखाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, परवरदिगार देणा समझाईआ। मुहम्मद दा अन्त अख़ीरी स्वास, सवा मिन्ट मंग मंगाईआ। मूसा डिग्ग के डूँघे खात, ख़ादम हो के झोली डाहीआ। ईसा गल लटका के फास, पाउँ फिसलदे वेले अरज़ सुणाईआ। सब ने अन्त अख़ीरी इक्को कीती अरदास, बेनन्ती आरज़ू मज़मून

इक्को दए समझाईआ। जिस वेले प्रभ प्रगट होवें आप, आप आपणा वेस वटाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स के इक्को जाप, जगजीवण दाते जुगत देणी जणाईआ। जन भगतां कोट जन्म दे मेट के पाप, पतित पुनीत देणे बणाईआ। तेरी मेहर नाल रूह बुत्त होवण पाक, भजन बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणाउणा साक, सज्जण कूड़े देणे तजाईआ। तेरा ब्रह्म तेरी ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सिफ्तां वाली तेरी गाथ, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। अन्तिम लहिणा देणा सब दा करना साफ़, निरअक्खर देणा जणाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, बुद्धी करे ना कोए लड़ाईआ। जन भगत चढ़ाउणे आपणे घाट, मंज़ल दस्सणी बेपरवाहीआ। भेव अभेदा खोल्हणा पुरख अबिनाश, अबिनाशी हो के दया कमाईआ। लख चुरासी अंदर काया मन्दिर तेरी पैंदी वेखीए रास, निरगुण निरगुण गोपी काहन खेल वखाईआ। जुग चौकड़ी चलदे रहे तेरे हुक्म दा मन्न के वाक्, वाक्य तेरा जगत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग लैणा बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा होवे वक्त सुहेला, साहिब स्वामी नज़री आईआ। आदि जुगादी इक्क इकेला, एकँकार तेरी वड्याईआ। सद वसें धाम नवेला, सचखण्ड आपणा नूर करें रुशनाईआ। बिन शब्दी धार तेरा रहे ना कोई चेला, गुर चेला तेरा रूप आपणा नज़रीं आईआ। बिन तेरी किरपा सरगुण होए कदे ना मेला, निरगुण जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। इक्को होवे वक्त सुहेला, सुहञ्जणी रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा देणा जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हउँ दर खलोते, दरगाह साची खुशी मनाईआ। जन भगत सुहेले कलयुग अन्त रहिण ना सोते, सुत्यां लैणा जगाईआ। लख चुरासी विच ना खावण गोते, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो तेरे मिलण दे मिलदे मौके, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार वरन अठारां बरन हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी सोच कोई ना सोचे, सोच समझ तों परे तेरी वड्याईआ। जो आया सो तेरा दर्शन लोचे, दिवस रैण अक्ख खुल्हाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे नाम दा देवे कोई ना होके, हुक्म हक ना कोए सुणाईआ। तेरा भाणा पुरख अकाल दीन दयाल जुग चौकड़ी कोई ना रोके, गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अंदर सदा सदा भवाईआ। जन भगतां अगले मार्ग दस्सणे सौखे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पढ़ने पैण किसे ना पोथे, आत्म परमात्म नाता देणा जुड़ाईआ। तेरी मंज़ल चढ़दयां दीन दुनी कोई ना रोके, शरअ अग्गे ना कोए अटकाईआ। तेरे विछोड़े विच अग्गे मर गए चोखे, अनगिणत गणत ना कोए कराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन तेरे भगत धुर दे वेख ला पोते, पिता गोबिन्द शब्द बणाईआ। इक्को सचखण्ड दुआर बहाउणे कोठे, जगत कुटीआ दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान दयावान तेरे दवारे

काहदे रोसे, जुग जन्म दयां रुठयां लैणा मनाईआ। बिनां तेरी किरपा जन्म कर्म दे पाप जाण ना धोते, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग देणा रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख समरथ, साहिब तेरी वड्याईआ। चरण कँवल धुर दी सरन गए ढठ्ठ, दर ठांडे सीस झुकाईआ। तेरी महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण चारे खाणी तेरा गा गा थक्की जस, सिफ्त विच सिफ्त सालाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर पीर तेरा नाम कलमा गए रट, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। तेरे हुक्मे अंदर दीनां मज़्हबां वाला खोल्ह के हट्ट, हटवाणे बण के तेरा नाम वरताईआ। शब्द अंदर नाम अंदर कलमे कलाम अंदर तैनूं दस्सदे रहे वस्या घट घट, गृह गृह डेरा लाईआ। दीन मज़्हब दी पा के वट्ट, तेरे नाम नाल नाम गए लड़ाईआ। तेरा खेल समझे कोई ना सच्च, तेरा हुक्म बेपरवाहीआ। कर किरपा जिस दी खोल्ही अंदरों अक्ख, निज नेत्र तेरा दर्शन पाईआ। ओसे अक्ख तों हो के अग्गे वक्ख, वक्खरे धाम डेरा लाईआ। जिस दवारे दी दहिलीज़ उत्ते गुर अवतार पैगम्बर जाण ढठ्ठ, सिर सके ना कोए उठाईआ। थोड़ा थोड़ा तेरे नाम दा कलमा गए रट, रट्टयां विच पई लोकाईआ। अन्त भरोसा तेरे उत्ते गए रख, लोकां परलोकां आप सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार निरवैर होवे प्रगट, परगणा समझ किसे ना आईआ।
जिस ने सारयां नूं जामा दिता बूँद रक्त, रत्त तन चोले नाल वड्याईआ। ओस दा भेव कवण सके लभ्भ, चार जुग ना किसे समझाईआ। थोड़ा थोड़ा शब्दी भार नाल दिता दब्ब, दब्बे नाल आपणा हुक्म मनाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जन्म लैणा प्या विच्चों भग, भगवन आपणा रूप ना किसे जणाईआ। एसे कारण सारे गए सद्द, निहकलंक कल कल्की तेरी ओट तकाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आवें जब, जप जीव दी लोड़ रहे ना राईआ। आपणयां भगतां लवीं लभ्भ, सेवक हो के सेव कमाईआ। ओनां नूं वेख खुशी होवीं गद गद, गदागर करीं लोकाईआ। चार जुग दयां सन्तां तैनूं दस्सया उपर शाह रग, शाह रग तों परे शहिनशाह आपणा पहला घर देणा वखाईआ। कोई अनहद नाद वज्जे ना डगाडग, धुनी धुन ना कोए शनवाईआ। तेरी मंज़ल दूर दुराडी हद्द, जित्थे तार सतार ना कोए हिलाईआ। जन भगतां दर्शन देणा जुग जन्म दी बुझाउणी अग्ग, अग्नी अग्ग गवाईआ। बिन मक्के काअब्यों कराउणा हज्ज, हुजरा धुर दा इक्क वखाईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरे आउण दा समझे ना कोए सबब, सभा सच नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन देणी माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं सांभ के रखे ख़त, जो शब्दी शब्द जणाईआ। जिन्हां दा लेख निरगुण धार आवे वत्त, बेवतन फेरा पाईआ। सब दा मालक हो के कमलापति, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ।

दीन दुनी नालों हो अलग, वक्खरा घर सुहाईआ। जिहनूं बुद्धी समझे कोई ना जग, चौदां विद्या ना कोए दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा जाण ना सके पद, परा पसन्ती मद्धम बैखरी निक्की निक्की धुनी राग सुणाईआ। जिस दी मंज़लां तों परे शुरु हुन्दी हद्द, जित्थे गुरू बैठे सीस निवाईआ। उस तों अग्गे सके कोई ना वध, कदम कदम ना कोए बदलाईआ। जलवे वाला कहि के रब्ब, नूरी नूर कहि सालाहीआ। जोत जोत कहि के गए जग, जोती जाता नाम सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे विच रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए अग्गे, अग्गा नज़र किछ ना आईआ। तेरी किरपा नाल तत्तां विच नूर हो के जगे, जगत कीती रुशनाईआ। तेरे नाम दे सुणाए होए गाए छन्दे, सोहले राग अलाईआ। ख़ाकी माटी बणे रहे बन्दे, बन्दगी विच तेरी ओट तकाईआ। प्रेम विच रहे रंगे, रंग तेरा नाम सोभा पाईआ। दीन दुनी विच करदे रहे दंगे, तेरे हुक्म विच लड़ाईआ। विष्टे नाल अंदरों रहे गंदे, दस दस विच सफ़ाईआ। तेरे नाम दे सिर झलदे रहे डण्डे, आपणा ज़ोर ना कोए प्रगटाईआ। अन्तिम मंगदे गए मंगे, दर तेरे सीस निवाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आवे कन्ढे, सति धर्म ना कोए रखाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ कूड़ कुड़यार फिरन विच वरभण्डे, मन वासना जगत हल्काईआ। माण रहे ना तट सरोवर जमना सुरस्ती गोदावरी गंगे, अठ्ठ सठ्ठ ना कोए वड्याईआ। साध सन्त जगत विच करन दंगे, दग़यां वाली लड़ाईआ। फिरे दरोही विच ब्रह्मण्डे, चौदां तबक सबक हक ना कोए सुणाईआ। भय रहे कोई ना खण्डे, अमृत रस ना कोए चुआईआ। आत्म बिन परमात्म होवे रंडे, कन्त सुहागी ना कोए हंढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साडे विच्चों जगत दी टुट्टी कोई ना गंढे, साफ़ तैनूं दिता सुणाईआ। तेरा खेल वेखण साहिब सूरे सरबंगे, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। जो हुक्म दिता गोबिन्द अन्त अख़ीरी औरंगे, शब्दी शब्द कर पढ़ाईआ। ओस दा वेला वक्त कदे ना लँघे, समां दमां वाला सके ना कोए बदलाईआ। इक्को योद्धा सूरबीर सुत दुलार भुयंगे, भुजा नज़र कोए ना आईआ। नव नौ चार शब्द धार उत्ते टंगे, टंगां वाले देण दुहाईआ। सार पावे जेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जन भगतां कर किरपा रखीं आपणे संगे, सगला संग बणाईआ। कर्म कुकर्म वेखीं (ना) चंगे मंदे, ग़रीब निमाणे लैणे तराईआ। तेरे प्रेम प्यार विच होण रंगे, रंगला इक्को मिलणा माहीआ। खेवट खेटा हो के बेड़ा चुकणा आपणे कंधे, कन्ढी वाले लैणे तराईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर मंत्र तेरे प्यार दे धन्दे, धुँदूकार विच्चों बाहर कराईआ। ओन्हां दा सीस जगदीस कदे होवे ना नंगे, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। बिन तेरे तेरा नाम कोई ना वण्डे, वण्डणहार तेरी वड्याईआ। बिन तेरी किरपा टुट्टी कोई ना गंढे, गंढणहार तेरी सरनाईआ।

जन भगत चढ़ाउणे आपणे डण्डे, डण्डावत इक्को देणी समझाईआ। लख चुरासी रहे ना फंदे, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना मंगे, पिछला लेखा देणा मुकाईआ। हिसाब लगाउणा पए ना किसे कोलों पंडे, जन्म दी पत्री ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे कोल साडे नाम दा गोदाम, गोदड़ीआं साडीआं विच दिता टिकाईआ। तैनूं मन्न के इक्क अमाम, अमन विच दर तेरे सीस निवाईआ। बरदे बण तेरे ग़ुलाम, सजदा सीस झुकाईआ। सुण के तेरा कलाम, कायनात दृढ़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार सदी चौधवीं बदल जाणा नज़ाम, बिन तेरे ना कोए सहाईआ। नबी रसूल होणे बदनाम, बदी करे लोकाईआ। मुल्लां शेखां पीणे जाम, ज़ामनी तेरी विच रखाईआ। सजदा करना हराम, हुरमत देणी उडाईआ। मुहब्बत विच होए ना कोई कुरबान करबले पए दुहाईआ। ओस वेले तेरा लभ्भण सारे निशान, निशाने आपणे आपणे लगाईआ। झगड़ा पए विच अवाम, बदनाम होवे खुदाईआ। तेरा हुक्म ना समझे कोई जो लेखा बिन अक्खरां लिख्या बनाम, मोहर कोरी इक्क लगाईआ। तेरा अन्त कहि ना सक्या कोई गुर अवतार पैगम्बर वाली ज़बान, बेअन्त कहि के सारे शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल लैणा कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए तेरा हाल, हालांकि तूं सब किछ रिहा जणाईआ। सानूं दिसदा साडा शरीर खाणा अन्त काल, कलमा कलाम तेरा नाम निशानी नज़री आईआ। दीनां मज़्बां वाला पा जंजाल, जाअली खेल दिता खिलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ बणा के धर्मसाल, धुर दा धर्म दिता वण्डाईआ। छोटे हिस्सयां विच कर कंगाल, कल्ले कल्ले दिता रखाईआ। असीं वेख के होए बेहाल, बिहबल हो के दईए दुहाईआ। तूं सब दा मालक पुरख अकाल, इक्क इकल्ला नज़री आईआ। जुग जुग आपणा नाम निरगुण हो के सरगुण दिता सिखाल, सिफ्तां वाली कर पढ़ाईआ। एह वी तेरा कमाल, सब कुछ जाणदयां कमले दिता बणाईआ। दीनां मज़्बां वाला पा के जाल, गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं ल्या फसाईआ। एसे कर के असीं कलयुग अन्त तेरे देंदे अहिवाल, आपणा पल्लू रहे छुडाईआ। प्रभ तूं साडे नाल चली आपणी चाल, अछल अछल्ल हो के दिता वखाईआ। तेरे हुक्मे अंदर घालण लई घाल, घल्ले आए सद्दे गए सदमा सर्ब मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दे रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं दस्सीए की, भेव अगला नज़र कोए ना आईआ। तेरे बणदे रहे जुग चौकड़ी पुत्तर धी, पिता पुरख अकाल मनाईआ। संदेशे देंदे गए जंत जी, जीवण जुगत दृढ़ाईआ। अन्त खिच्च के इक्को लीह, लीक दिती वखाईआ। जेहड़ा चार जुग दीनां मज़्बां दी रखाउँदा रिहा नींह, नित नित हुक्म वरताईआ। बीजदा

रिहा बी, साची रुत्त महकाईआ। वेखे ख़रीफ़ रबी, आपणा वेस वटाईआ। पैगम्बर कहि के गए नबी, रसूल ढोले गाईआ। जो मालक आदि जुगादि सभी, दो जहानां इक्क अख्वाईआ। जिस दे हुक्म अंदर नूह नदी, नादानां दए रुढ़ाईआ। पैगम्बरां धार रहे बद्धी, बन्दना करे सीस झुकाईआ। जो हुक्म देवे सभी, सभनां आ मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की लाहीए तेरा परदा, ओहला सके ना कोए चुकाईआ। साडा नाता जोड़ के चेतन जड़ दा, बूटा तत्तां वाला वखाईआ। शब्द अंदर समझाया ब्रह्मा सब नूं घड़दा, विष्नूं सेव कमाईआ। शंकर हो के फड़दा, शब्दी करे सफ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ सानूं दस्स की कुछ साडे अंदर धरदा, धरनी धरत धवल उपर वड्याईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं निक्की जेही बच्चयां वाली खेल तुहाडे नाल करदा, कदीम तों मेरी आदत चली आईआ। भेव छुपावां आपणे घर दा, परदा आपणे नाल रखाईआ। गुलाम बणावां चरणां तों हेठां आपणे दर दा, दर्दी हो के दर्द वण्डाईआ। जेहड़ा मंज़ल मेरी चढ़दा, नूरी जोत नूर करां रुशनाईआ। उह की हाल जाणे पिछला पर दा, परदयां तों परे फेर आपणा आप छुपाईआ। चरणां तों थल्ले थिर घर दवारा मल्ले मेरा शब्द दुलारा सुत गुर अवतारां पैगम्बरां वाला नाम पढ़दा, बिन अक्खरां तों उन्हां अंदर जड़दा, जड़त नज़र किसे नाँ आईआ। एसे कर के सब नूं गोला बणाया आपणे दर दा, पोला विच्चों ल्या रखाईआ। अबिनाशी करता हो के सति पुरख हो के सच सिँघासण आपणे दवारे वसदा, दूजा संग ना कोए रलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा वणजारा आपणे जस दा, ढोले दयां सुणाईआ। ओन्हां कोलों वी परदा रखदा, भेव कोए ना पाईआ। की होया जे गुरसिख तत्तां वाला हो के छड्डदा, आत्म विछोड़ा ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल एसे कारण खेल करे ठग्ग दा, चोरी करदा नज़र किसे ना आईआ। उल्मा झल्ले सारे जग दा, आपणयां कोलों आपणा आप बदनाम कराईआ। बदनाम हो के ना घटदा ना वधदा, जगत तराज़ू तोल ना कोए तुलाईआ। जिस प्यार अंदर सद्द दा, ओसे विहार अंदर दए बदलाईआ। सच दवारयों कदे ना कढ्ढदा, अन्त होए सहाईआ। जिन्हां दे सीस हथ्थ रख दा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जन भगतो तुसीं ना करयो सोग, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जुग जन्म दा तुहाडा पूरा होया जोग, जुगती इक्को नाम दिती समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ साची चुगा के चोग, चुगली निंदया तों बाहर कढाहीआ। निरगुण हो के देवे दरस अमोघ, सरगुण आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे बख़्शे साची मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। अग्गे होण ना देवे वियोग, विछोड़ा एथे दए कटाईआ। जन्म मरन दा रहिण ना देवे रोग, गर्भ दे रोगी पार

कराईआ। मंज़ल रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक दए टपाईआ। जित्थे पढ़ना पए ना कोए सलोक, अल्ला राम वाहिगुरू ओम कृष्न वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ओथे भगतां होवे पहुंच, पहुंचाए बेपरवाहीआ। जन भगतो तुहाडे बिना पुरख अकाल सदा औंत, जगत मिले ना माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बणदा रिहा खौंत, कन्त हो के नार हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सिर हथ्थ रखण दा प्रभ नूं चाअ, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जन भगतां सदा बणदा रिहा मलाह, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। जल्वागर इक्क ख़ुदा, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े लए मिला, मेला आपणे नाल रखाईआ। गुरमुख भुल्ले अबिनाशी करता भुल्ले ना, चुरासी लहिणा दए मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शहादत विच बणाए गवाह, अदालत इक्को इक्क वखाईआ। मेहर नज़र नाल सब नूं बरी दए करा, करमां दा गेड़ चुकाईआ। अन्त रो के मारे कोई ना धाह, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। जिस घर बैठा शहिनशाह, पुरख अकाल सोभा पाईआ। आदि जुगादी पिता माँ, मालक इक्को नज़री आईआ। जन भगतो तुहाडा वेला वक्त हुन्दा रवां, राहज़न सारे देण गवाहीआ। अग्गे बदल जाणा समां, संमण सब दे रिहा कढाहीआ। जिन्हां दे अंदर कूड़ी तमअ, लालच विच हल्काईआ। ओन्हां दा जन्म होणा नवां, कूकर सूकर रूप बदलाईआ। किसे पता नहीं साध सन्त आपणा जाणे कोई ना दमां, दामन अवर ना कोए फड़ाईआ। अग्नी तत तपणा चम्मा, चम्म दृष्टी जगत हल्काईआ। वाचक ज्ञान होणा निकम्मा, शब्द बबाण इक्क उडाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा रहिण नहीं देणा पंमा, परम पुरख दया कमाईआ। दीन मज़्ब दा रहिण नहीं देणा बन्ना, बन्दगी इक्को देणी समझाईआ। जिस कारण गोबिन्द इक्को लाया कन्ना, कायनात समझ किसे ना आईआ। दोंह अक्खां वाला जगत तुहाडे साहमणे कीता अन्न्हा, नेत्रां वालयां नज़र कोए ना आईआ। एसे दी शहादत अन्त देवे चौदां सौ तीह पंनां, पतित पावन भेव खुल्हाईआ। जेहड़ा हुक्म राम ने मन्ना, मनसा हुण दे नाल मिलाईआ। जेहड़ा कृष्न बिदर दवारे सुणया बिना कन्नां, ओस दा लेखा दए प्रगटाईआ। जिस नूं मूसा मूँह दे भार डिग्गा कहे नूर नवां, नौबत हक वजाईआ। जिस नूं ईसा फाँसी उत्ते याद कीता अख़ीरी दमां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिस मुहम्मद दा सवा मिन्ट लेखे लाया चम्मा, चशम दीद खेल खिलाईआ। जिस गोबिन्द सुत बणाया नन्हा, माछूवाड़ा सेज सुहाईआ। जिस नानक बग़दाद दा खेल वखाया बिन छप्पर छन्ना, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। सो निरगुण धार आया भन्ना, भज्जया वाहो दाहीआ। जन भगतो तुहानूं जगत धार विच्चों कर के मन्न्हा, मंत्र अगला दिता समझाईआ। जिस नूं पढ़यां कोई नेड़ ना आवे जमा, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। भण्डारा दे के धुर दा धना, धनाढ अगले दिता बणाईआ।

१५०
२०

तुसां कोई नाम चुक्कणा नहीं वज़न टन्नां, सीस गठ्ठ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला दिता बणाईआ। जन भगतो लेखा अगला बणया, हरि देवे माण वड्याईआ। जिस ने तुहाडा आत्म आपणी धारों जणया, तत्तां वाला शरीर मात पिता दे हिस्से पाईआ। उस दा शब्दी तीर सुणदे रहे अणयाला अणीआं, हुण सहिजे तुहानूं दिता लगाईआ। तुहाडे पिच्छे ओसे नूं बणीआं, जो तुहाडा धुर दा पिता माईआ। जगत अक्खां तुहाडीआं रहीआं ना अन्नीआं, अन्न खान्दयां सहिजे मिल्या आईआ। धन्ने नालों तुहाडीआं चंगीआं मन्नीआं, नित नवित सदा सदा दर्शन देवे चाँईं चाँईंआ। तुहाडे घरां दीआं खा के टुक्कर चप्पा खंनीआं, आपणा शुकर मनाईआ। लेखा चुकावे ओनां बच्चीआं नन्हीआं, जिस दी बल बावन दए गवाहीआ। शब्दी डोर बंधा के कन्नीआं, करमां दा कांड मुकाईआ। जन भगतो तुहानूं वजाउणीआं पैण ना टल्लीआं, संखां नाल ना कोए शनवाईआ। लभ्भणा पए ना मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरदवारे वालीआं गलीआं, सिध्धा बाज़ार एकँकार धुर दरबार दिता वखाईआ। जित्थे आत्मा परमात्मा नाल रलीआं, रल के झट लँघाईआ। उह गुरमुख सवाणीआं कदे ना होवण कल्लीआं, कलमयां तों परे जिन्नां नूं मिल्या धुर दा माहीआ। जिस नूं सजदा कीता अलीआं, उह आलम दा मालक बालम तुहाडा नज़री आईआ। जुग चौकड़ी वलीआ छलीआ, अछल छलधारी कहे लोकाईआ। जिस दे पिच्छे नानक धार गोबिन्द दितीआं बलीआं, बलधारी वेख वखाईआ। जन भगतो तुसीं ओस दी गोद विच बहि के पलीआं, जो पालणहार सर्ब अख्वाईआ। जिस ने प्यार अंदर विहार अंदर शृंगार अंदर संसार तुहाडीआं रूहां घल्लीआं, धायल कर के आपणे नाल मिलाईआ। दुनिया तुहानूं कहे एह मूर्ख टोलीआं झल्लीआं, जिन्नां दे अंदर झलक नूर इलाहीआ। पुरख अकाल कहे एन्नां मेरीआं दहिलीज़ां मल्लीआं, जित्थे दूजा नज़र कोए ना आईआ। एह ओस नूर दीआं डलीआं, जिस विच्चों नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की गाईए तेरा ढोला, ढोल इक्को तूं ही नज़री आईआ। साडा बदलदा रिहों बोला, सिफ्ती नाम जणाईआ। वटाउँदा रिहों चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। रखदा रिहों ओहला, संगी हो के भेव छुपाईआ। बणदा रिहों तोला, तराज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। पुरख अकाल तेरा परदा किसे ना फोला, फुलके खाण वाले गुर अवतार पैगम्बर बणा के लोकमात साडी सेव दिती लगाईआ। आपणा शब्द विच बणा के विचोला, विचे विच करी पढ़ाईआ। तेरे नाम दा पा के रौला, रौणक जगत विच रखाईआ। तैनूं दस्स के शाह दौला, दौलत दा मालक आए समझाईआ। चार जुग दे इकवंजा बवन्जा गुर अवतार पैगम्बर भगतां इक्ठ्ठा होया टोला, टोटल आपणा रहे जणाईआ। बिन तेरी किरपा दीन दुनी दा मेटे कोई ना रौला,

रावल पांधे झगड़ा ना कोए मुकाईआ। फिरी दरोही उपर धवला, जगत सन्त रहे कुरलाईआ। मन वासना जीव जहान होया बवला, बौरा हो के दए दुहाईआ। तूं नूर खुदाई अव्वला, आलमीन तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम सब तार दे जट्ट यमला, जो चल आए सरनाईआ। वजाउणा पए किसे ना तबला, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। सब दा पैंडा मुका दे अगला, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। भाउणा पए ना किसे जंगलां, तीर्थ तट ना कोए वखाईआ। पार करा दे ग़रीब कंगला, बिन टकयां कीमत पाईआ। शब्दी डोरी अंदर बंध ला, बन्दगी आपणी दे समझाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रंग ला, रंगत इक्को दे वखाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी जन भगतां प्रभू गंढु ला, आपणी गंढु आप पवाईआ। सन्त सुहेलयां साची ठंड पा, अग्नी तत बुझाईआ। जगत विछोड़ा रंड गवा, कन्त सुहाग नज़री आईआ। जन्म जन्म दा पन्ध मुका, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। दर आयां सचखण्ड बहा, जित्थे मिले तेरी सरनाईआ। सूरज चन्द ना कोए रुशना, जलवा जोत देणा चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणे गवाह, सारे देण सफ़ाईआ। जेहड़े जोड़े उह विछड़न कदे ना, बिछरत लए मिलाईआ। जिन्हां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ल्या गा, गहर गम्भीर आपणे घर वसाईआ। निथाव्याँ दे के धुर दा थाँ, दरगाह साची दए टिकाईआ। नाता तुड़ा के जगत वाले पिता माँ, पुरख अकाल आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा लेखे लाईआ। जन भगत कहिण प्रभ देवीं ना लारा, अछल अछल्ल तेरा भेव कोए ना आईआ। श्री भगवान कहे जन भगतो मैं तुहाडे बिनां रहां कुँवारा, धुर संयोग ना कोए बणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गुर अवतारां पैगम्बरां नाल करदा रिहा उधारा, तारीख़ तरीके नाल वधाईआ। मेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त कर के रहे गाईआ। शब्द नाद वजा नगारा, नग़मे दिते सुणाईआ। जोती नूर कर उज्यारा, ब्रह्मण्ड खण्ड जीउ पिण्ड दिता समझाईआ। थोड़ा जेहा कर इशारा, ऐशो इशर्त विच्चों बाहर रखाईआ। आपणा निक्का जेहा दे के चमत्कारा, चमन गुलशन दिते महकाईआ। अक्खरां वालीआं गवा के वारां, वारस जगत दिता बणाईआ। आप हो के बेएतबारा, जुग जुग बैठा रिहा मुख छुपाईआ। कलयुग अन्त हो उज्यारा, उजरत सब दी झोली पाईआ। लेखे लग्गे सब दा पहली मग्घर दिहाढ़ा, दिहाढ़ीदारां दी दिहाढ़ी झोली पाईआ। नौ मग्घर नूं दुआबे लग्गणा धर्म अखाड़ा, खिड़कीआं कुण्डे दए खुल्हाईआ। जन भगतो तुहाडा मंगण आए वाड़ा, आपणा पन्ध मुकाईआ। जेहड़ा कौल कीता गोबिन्द नाल शकोह दारा, तीर मुक्खी उत्ते लिखाईआ। अक्ख दी पलक नाल झलक नाल फलक तों उपर ख़लक दा विहारा, तुअल्लक इक्को नाल जुड़ाईआ। जिस दा हुक्म कटक दा अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार

१५३ २०

पैगम्बर कहिण की करीए तेरी सिफ्त, चार जुग दे सफ़े लए उलटाईआ। हुक्मे अंदर सारे कर के गृफ्त, दर ठांडे लए बहाईआ। कोई ना सके खिसक, पल्लू गंढु ना कोए तुड़ाईआ। रोंदे वेखे हकीकी मजाज़ी इश्क, दोवें देण दुहाईआ। प्रभू चार जुग दे साडे मुक्कण लग्गे इष्ट, तेरी इक्क सरनाईआ। उच्ची रो के किहा यसू करिसत, चीक उडीक विच लगाईआ। मैनूं याद फट्टे उत्ते किहा मरीअम बेटा दस्स टांक के जिसत, जिस्म तों बाहर आपणा आप वखाईआ। शब्दी हुक्म दे के ग्यों ख़िसक, अग्गे हो ना गंढु खुल्हाईआ। परवरदिगार किहा तेरी मेरी बिन अक्खरां वाली लिख्त, लेख ना कोए जणाईआ। यसू किहा कुछ दस्स भविख्त, भरम दे मिटाईआ। नूरी नूर किहा जिस वेले दुनिया दोहां दी होई निन्दक, निंदया विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए वखाईआ। यसू किहा कुछ दस्स होर, तृष्ना तृप्त कराईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले मुल्लां शेख़ मुसायक जगत नबी पंडत पांधे जगत सन्त होए चोर, चोरी गुरदर मन्दिर मस्जिद नज़री आईआ। तुहाडे हथ्थों सब दी टुट्टणी डोर, कच्चा तन्द तेरे गल लटकाईआ। सब नूं मेरी पैणी लोड़, लोहड़ा पवे जगत लोकाईआ। विछड़यां दए कोई ना जोड़, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। यसू हुण मैं होर फेर मैं होर, जद वेखो ते नवां नकोर, निक्का वड्डा नजर कोए ना आईआ। मेरा किसे नाल नहीं कोई ख़ोर, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। जिस कारण तुहानूं दिता तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। अन्त एस जग नूं चले छोड़, छुट्टी जगत लोकाईआ। मटकी देणी फोड़, भाण्डा तन भन्नाईआ। ओथे जाणा बौहड़, जित्थे बौहड़ी बौहड़ी करदा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाईआ। यसू किहा मैं तेरा ग़ुलाम, ख़ादम धुर दा लैणा बणाईआ। मेरी इच्छया पूरी करनी काम, आसा तेरे नाल वधाईआ। जिस वेले होण लग्गा बदनाम, बदी करे लोकाईआ। तूं यारे यार पहुंचणा आण, ग़मखार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना जन भगतां देवे धुर दा दाना, नाम निरवैर झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतो तुहाडा लोकमात रख के निशाना, निशाने उत्ते निशाना आ के लग्गा बेपरवाहीआ।

★ २ मग्घर शहिनशाह सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड दवारे वक्त सुहावा, स्वामी अन्तरजामी ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां पूरा करे दाअवा, दाअवेदार

१५३ २०

जो गए सुणाईआ। जुग चौकड़ी पूरब लेखा सब दा वेखे नावां, नर निरँकारा परदा आप उठाईआ। जन भगत सुहेले दर ठांडे मेले नाल चावां, चाउ घनेरा आपणे दर वखाईआ। तोल तराज़ू नाम कंडा रखे सावां, साँवल हो के आपणा हुक्म वरताईआ। भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ गरावां, खेड़ा हरिजन सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर साचा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआर रंग रंगीला, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल छैल छबीला, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। निरगुण धार भगत कबीला, कामल मुर्शद दए वड्याईआ। भाग लग्गे उत्ते ज़मीना, ज़ाहर ज़हूर वेख वखाईआ। लहिणा देणा जाणे पूरब कदीमां, कुदरत दा मालक वेख वखाईआ। महल अटल सुहाए इक्क अज़ीमा, आलीशान आप इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्त सतिजुग साची कर तरमीमां, तमअ कूड़ दए मिटाईआ। जन भगत बणा के धुर दा नगीना, निगाह आपणी विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लोक तीना, परलोक आपणा हुक्म वरताईआ।

१५४
२०

★ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ अजैब सिँघ दे गृह पिण्ड हरिराए पुर ज़िला बठिंडा ★

सच संदेश देवे हरि सच्चा, सच सच जगत वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा शब्दी धार बच्चा, बचपन सब दा आपणी झोली पाईआ। जन भगत सज्जण सहाई बण के सका, सगला भउ मिटाईआ। प्रेम अंदर रहिण ना देवे कच्चा, कंचन गढ़ इक्क सुहाईआ। देवे दरस आपणी अक्खा, अक्खां विच्चों नज़री आईआ। लहिणा देणा चुकावे बिना हथ्थां, समरथ होवे सहाईआ। प्रीती अंदर फिरे नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचा सच संदेश, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। परम पुरख दा इक्को उपदेश, उपमां तों परे पढ़ाईआ। गुणां विच विशेष, विश्यां दा गेड़ कटाईआ। वेखदा रहे हमेश, सदा सदा गुसाँईंआ। बख्शदा रहे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी लाईआ। बदलदा रहे रेख, जुग चौकड़ी डेरा ढाहीआ। वसौंदा रहे आपणे देस, घर सुहञ्जणा इक्क समझाईआ। करदा रहे अगम्मी हेत, हितकारी हो के बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात वेखे परदेस, परदेसी हो के आपणा खेल खिलाईआ।

★ ४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ टहिल सिँघ दे गृह पिण्ड रूपोवाली ज़िला अमृतसर ★

वाचक शब्दां दा अगम्मी शब्द इक, एकँकार निरँकार दए वड्याईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही लिख, निरअक्खर विच्चों अक्खर धार प्रगटाईआ। जिस दा नूर ज़हूर जगत नेत्रां नाल ना पए दिस, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। सो स्वामी अन्तरजामी सति सरूप सदा निक्क, वड्डा वड्डयां दए वड्याईआ। जिस ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन दुनी लई जित, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपणा हुक्म मनाईआ। जन भगतां करे प्रेमी प्रीतम हो के धुर दा हित, हितकारी हो के आपणा रंग रंगाईआ। निज नेत्र लोचन नैण खोल्ह के दर्शन देवे नित, दो जहानां वाली दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। ठाकर स्वामी हो के बणे पुरख अकाला पित, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिन्हां ने साचा शब्द धुर दा ल्या सिख, अगला पिछला लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि शब्द दए वड्याईआ। सर्ब शब्दां दा शब्द एको मीत, सुत दुलारा प्रभ दा नज़री आईआ। जिस दा नित नवित सोहला ढोला इक्को गीत, जुग चौकड़ी पीर पैगम्बर गए गाईआ। जिस नूं लभ्भदे ठाकर दवारे मन्दिर मस्जिद विच मसीत, शिवदवाले गुरदर भज्जण थाउँ थाँईंआ। सो बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच परदा लाहीआ। जन भगतां दस्स के हक प्रीत, परवरदिगार दए मिलाईआ। भरम मिटा के ऊँच नीच, अगम्म अथाह दए वखाईआ। कर प्रकाश पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करे रुशनाईआ। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाईआ। धुर दा शब्द कलयुग झगड़ा मेटे जूठ, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच सुहञ्जणी करे रुत्त, सतिजुग सच फुलवाड़ी आप महकाईआ। हुक्म सुणे अबिनाशी अचुत, निउँ निउँ लागे पाईआ। भाग लगाए काया माटी बुत्त, बुत्तखाने कूड़े करे सफ़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण आपणी गोदी चुक्क, सच दवारा एकँकारा इक्क वखाईआ। जिस ने सारयां शब्दां दी सांझी इक्क सुणाई तुक, तुख्म तासीर सब दी दए बदलाईआ। चार वरन अठारां बरन आसा तृष्ना मेटे भुक्ख, तृष्ना तृप्त दए कराईआ। जन भगतां सफ़ल कराए जननी कुक्ख, पतित पुनीत दए वड्याईआ। भेव खुल्हाए परदा ओहला लुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक्क दृढ़ाईआ। सारयां शब्दां दा इक्को संग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। इक्को मन्नण सूरा सरबंग, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वजाउँदे गए मृदंग, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणा ढोला गाईआ। जलवा नूर प्रकाश कर के गए चन्द, सूर्या चन्द ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म दस्स के गए अनन्द, निजानंद

परमानंद विच समाईआ। ढोले गीत गा के गए बत्ती दन्द, रसना जेहवा सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब स्वामी हो बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ। सर्ब शब्दां दा हरि शब्द तुरंग, दो जहानां वेख वखाईआ। आसा मनसा पूरी करे उमंग, तृष्ना कूड़ी दए गवाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा परदा लाहीआ। निरगुण जोत चाढ़ के चन्द, साचा नूर करे रुशनाईआ। धुर दा शब्द सुणा के बिना कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। लेखा जाण पवण स्वास दम, दामनगीर हो के लए छुडाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। सर्ब शब्दां दा शब्द जो गुरमुख लए मन्न, मन का मणका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सर्ब शब्दां दा हरि शब्द मिलाप, गुर शब्द मिले वड्याईआ। बिन रसना जेहवा चले जाप, जगजीवण दाता दए समझाईआ। कोट जन्म दे उतारे पाप, दुरमति मैल धवाईआ। रूह बुत्त दोवें करे साफ़, पाकीज़ा आपणा रंग चढ़ाईआ। काया मन्दिर साचे हुजरे सुहाए हक महिराब, महबूब आपणा परदा लाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सच्ची आवाज़, धुर दा शब्द करे शनवाईआ। जेहड़ा लभ्भे ना किसे विच्चों किताब, फोलयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं सईयदे करदे सर्ब आदाब, नमस्ते कहि के खुशी मनाईआ। सो शब्द जुग चौकड़ी चलाए रिवाज, मुहताज सारे लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच शब्द इक्क प्रगटाईआ। बहु शब्दां दा हरि शब्द स्वामी, अक्खरां नूं निरअक्खर धार समझाईआ। जिस दी महिमा करे चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। जो लहिणा देणा चुकाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाँईंआ। जो अमृत रस निजर झिरना झिराए अगम्मा पाणी, तीर्थ तट लेखा रहे ना राईआ। सुरती शब्द मिलाए बण के सच्चा हाणी, कूड़ विछोड़ा दए मुकाईआ। इक्को दस्से पद निरबाणी, महल अटल इक्क वखाईआ। जित्थे जगे जोत नूरानी, नूरो नूर करे रुशनाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द कथे ना कोए कहाणी, वरका वरका ना कोए उलटाईआ। खेले खेल परम पुरख शाह सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब शब्दां दा बणे आप ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म ब्रह्म करे हक पढ़ाईआ। सारयां शब्दां दा हरि शब्द नाल संयोग, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। सब दा पूरा करे जोग, जुगती आपणे कोल रखाईआ। लहिणा देणा जाण लोक परलोक, सलोक आपणा दए समझाईआ। जिस दा मेला नाल निर्मल जोत, सो शब्द गुरू बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म सदा सदा सद नवां फ़रमान देवे रोज़, रोज़े बांग दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां खोजी हो के लवे खोज, खोजत खोजत वेखे सर्ब लोकाईआ। सच दवारे दे के मौज, मजलस आपणे नाल बणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब शब्दां दा मालक इक, जिस दी सारे रखदे ओट, ओड़क ओसे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड एको शब्द दस्से बहुत, बहुते गुरुआं दी लोड़ रहे ना राईआ।

★ ४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड रूपोवाली ज़िला अमृतसर ★

सिफ्ती शब्द गाउँदे एको नाम, एका एक वड्याईआ। सुणदे इक्क पैग़ाम, सिफ्तां विच सालाहीआ। मन्नदे इक्क अमाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कहिंदे इक्क कलाम, कलमा जगत सुणाईआ। वखाउँदे इक्क निशान, निशाने आपणे नाल मिलाईआ। बन्नाउँदे जगत ईमान, हुक्मी दे सफ़ाईआ। जिस दा आदि जुगादि सच्चा इंतजाम, सो शब्द सतिगुर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक सब दा बण भगवान, भाग जुग जुग दए लगाईआ।

★ ४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश कौर दे गृह पिण्ड रूपोवाली ज़िला अमृतसर ★

अक्खरी शब्द नाम दी शाख, जुग चौकड़ी दिती समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए आख, नित नित सिफ्त सालाहीआ। रसना जेहवा दस्स के पाठ, बत्ती दन्द वड्याईआ। दीन दुनी समझा के धुर दी ज़ात, ज़ामन बण के आप दृढ़ाईआ। अन्त सब दा माई बाप, पतिपरमेश्वर इक्क अख्वाईआ। जिस दा साचा सुत शब्द एका एक गए आख, आख़र सब नूं करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्याईआ। साचे नाम दी बोली शब्द, शब्द नाम वड्याईआ। जिस ने वण्डे दीन मज़्हब, ऊँच नीच दिते समझाईआ। सजदयां विच करना दस्सया अदब, नमस्ते विच सीस झुकाईआ। धूढ़ी ख़ाक दस्सी कदम, रीती कदीम इक्क जणाईआ। सो सब नूं आवे सद्दण, धुर फ़रमान इक्क फ़रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। साचा हुक्म देवे धुर दा नाम, सिफ्ती नाम लए जगाईआ। बरदे बणो इक्क ग़ुलाम, ग़ुलामी जगत दयो मुकाईआ। साचा मार्ग दस्सो इक्क आसान, आसानी नाल समझाईआ। सारे करो परवान, परवाने दिते फड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देण ब्यान, आपणा लेख चुकाईआ। वेला वक्त पहुंचयां आण, चौथा जुग दए गवाहीआ। सतिजुग सच होणा बलवान, बलधारी आप उठाईआ। सब नूं गाउणा पए ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"", बहु शब्दां दा शब्द साहिब इक्को दिता बणाईआ।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड फत्तूपुर ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे मैं रिहा बेआस, वेद व्यास गया लिखाईआ। सतलुज कहे मेरा लेखा लिख्या गोबिन्द ख़ास, बिन कलम शाही लेख बणाईआ। अन्तिम लहिणा देणा दे हथ्थ पुरख अबिनाश, सरगुण निरगुण दिता समझाईआ। दीन दयाल पुरख अबिनाश वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग कूड़ी क्रिया उडे ख़ाक, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। आशा मनशा दा पूरा होवे भविख्त वाक्, वाक्य वेखे बेपरवाहीआ। जन भगतां मिलण दा कर इत्तफाक, जोड़ा जुड़े अगम्म अथाहीआ। जिस दा भेव समझे ना कोई किताब, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी बेअन्त कहि कहि सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी साचा लेखा जाणे आप, परदा ओहला दो जहान श्री भगवान आप उठाईआ। सन्त सुहेला मरे ना कोई बेआब, आबेहयात हयाती विच्चों आप प्याईआ। मुख़ातब हो के जिन्हां करे ख़ताब, बिनां ख़ता तों ख़ता मुआफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी रिहा मर्दा, मुर्दा होके मुरीद मुर्शद ध्यान लगाईआ। गुर अवतारां दा दर बणया रिहा बरदा, बन्दगी विच निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अरज़ां अरदासां रिहा करदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चरण कँवल रिहा फड़दा, जल धारा रूप बदलाईआ। बिन रसना जेहवा रिहा पढ़दा, नाउँ सिफ्तां वाला गाईआ। साची करनी रिहा करदा, दिवस रैण सेव कमाईआ। भेव लभ्भा ना पुरख अकाल दे घर दा, सचखण्ड दुआर एकँकार मेल ना कोए मिलाईआ। जो आया सो रिहा डरदा, भय विच भउ जणाईआ। मैं हाढ़े रिहा कढ्ढदा, रो रो दिती दुहाईआ। किस वेले अबिनाशी करता सच दवारे सद्दा, बिन हुक्मे हुक्म मनाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत रिहा लभ्भदा, जल थल हथ्थ कोए ना आईआ। धन्न भाग दिहाढ़ा होया अज्ज दा, खुशी विच खुशी दिती प्रगटाईआ। लहिणा देणा झगड़ा मुकया अलग दा, विछोड़ा जगत दए कटाईआ। जिस दा मेला दो जहान शब्दी धार सबब दा, जोती नूर करे रुशनाईआ। उह मालक ख़ालक प्रितपालक जलवा नूर हो के दगदा, तत वजूद नज़र कोए ना आईआ। लेखा मुका दे हकीकत हक दा, लाशरीक बेपरवाहीआ। संसा रोग गया शक दा, शिकवा दिता मिटाईआ। नाम भण्डारा देवे रस दा, रस्ता इक्को रिहा समझाईआ। जिस गृह मन्दिर सचखण्ड दुआर गुर अवतार पैगम्बर वसदा, प्रभ चरण कँवल ध्यान रखाईआ। ओथे होका इक्क सलोक अगम्मी जस दा, शास्त्र सिमरत ना कोए पढ़ाईआ। अबिनाशी करता दयानिध ठाकर स्वामी हो के जन भगतां पैज रखदा, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। परदा लाह के निज नेत्र अक्ख दा, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। सो खेल वखाए पुरख समरथ दा, महिमा

अकथ आप दृढ़ाईआ। भण्डारा खोल्ह आपणे हट्ट दा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल रिहा वरताईआ। स्वांग धर अगम्मे बाजीगर नट्ट दा, जगत स्वांगी रूप ना कोए वखाईआ। गुरमुखां नाम अनमुलड़े चोले रंग रंगदा, रंगत इक्को दए चढ़ाईआ। रस दे के निज आत्म अनन्द दा, परमानंद विच समाईआ। ब्यास किहा मैं जो कुछ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा मंगदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरा लेखा पूरा करे सफ़री हो के सफ़र पन्ध दा, पैंडा अगला दए मुकाईआ। एह खेल सूरे सरबंग दा, अल्पगां बेड़ा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्यास कहे मेरी पूरी होई आसा तृष्णा, तृखा रहिण कोए ना पाईआ। मैं वेखे ब्रह्मा विष्न शिव कृष्णा, नाथ त्रैलोकी फेरीआं गए पाईआ। मेरा लेख प्रदेश संदेस विच किसे ना लिखणा, कलम शाही नेत्र रो के मारे धाईंआ। मैं जगत दवारे जलधार हो के नहीं विकणा, कीमत कुम्भ ना कोए रखाईआ। जगत नेत्रां नाल नहीं दिसणा, कोटन कोटि साध सन्त मेरे विच गए तारीआं लाईआ। मैं इक्को पुरख अकाल मन्नणा पितना, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस ने दो जहान शब्दी हुक्म नाल जितणा, वैरी दुश्मण नज़र कोए ना आईआ। जगत ख़ुआरी मन वासना गृह गृह पावे पिटणा, पटने वाला आपणा हुक्म गया समझाईआ। जिस दा खेल बुद्धी वाले ना किसे नजिठ्ठणा, जगत सियासत ना कोए चतुराईआ। सो साहिब सुल्तान हो मेहरवान गुरमुख साचे सन्त जनां पए साचा हितना, हितकारी हो के निरँकारी हो के जोत अधारी हो के आत्म परमात्म सुरती शब्दी मेला लए मिलाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवितना, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हुक्म वरताईआ। जिस ने दीन दुनी सब नूं दस्सया मिथना, थिर रहिण कोए ना पाईआ। कोई ना जाणे कलयुग खेल कितना, सदी सदीवी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। ब्यास कहे मैं वेखां उह बस्ती, जित्थे बसतयां दी लोड़ रहे ना राईआ। तक्कां उह हस्ती, जिस ने हस्त कीट दिते बणाईआ। जिस नूं मालक कहिंदे अर्शी, फर्श उत्ते आपणा खेल वखाईआ। ग़रीब निमाणयां बण के दर्दी, दीनां अनाथां आपणी गोद उठाईआ। जिस दी तत वजूद चोले वाली समझे कोए ना वरदी, फरजी नज़र ना कोए टिकाईआ। कलयुग खेल वेखे अन्धेर गर्दी, गदागर हो के आपणा फेरा पाईआ। जिस कोलों सरगुण धार नित नवित डरदी, गुर अवतार पैगम्बर भाणे विच सईयदे सीस झुकाईआ। जिस दी मंज़ल बिन पौड़ी डण्डे गुरमुख आसा चढ़दी, अगला पैंडा पन्ध मुकाईआ। सो धार सच प्यार अंदर जगत सागर जाए तरदी, तारनहारा दया कमाईआ। वेख खेल अगम्मी हरि दी, खुशी अंदर रुची दिती बणाईआ। ब्यास कहे मेरी प्रीती ओस नरायण नर दी, जिस नूं नार पुरख कहि के सारे गाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल जाणे चोटी जड़ दी, जल धार एकँकार गोबिन्द प्यार विच रखाईआ।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड फत्तूपुरा ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे किरपा करे पुरख अबिनाशा, गोबिन्द धार दए वड्याईआ। गुरमुख रहे ना कोए निरासा, आसा मनसा सब दी पूर कराईआ। पुरख अकाल इक्क भरवासा, पारब्रह्म सच सरनाईआ। मानस जन्म होए रहरासा, चुरासी फाँसी गेड़ कटाईआ। सेवक बणाए दासी दासा, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी दया कमाईआ। जिन्हां गोबिन्द मन्नया आखा, आख़र प्रभ मिल के खुशी बणाईआ। लेखा जाणे जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सुरती शब्दी जोड़ के नाता, आत्म परमात्म गंढु रखाईआ। गृह मन्दिर वखा के साचा, सचखण्ड दुआर दए समझाईआ। लहिणा देणा मुकाए काया माटी जीउ पिण्ड काचा, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। पूरब जन्म लहिणा देणा पूरा कर घाटा, नाम वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी कर खाटा, खटका अगला दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा वेख वखाईआ। ब्यास कहे गुरमुख होए ना कोए बेमुख, मुखीए दो जहान नज़री आईआ। आत्म परमात्म जिन्हां मिले सच्चा सुख, सति सतिवादी दया कमाईआ। पंच विकार अंदरों कढ्ढे कुट्ट, काया कुटीआ करे सफ़ाईआ। शब्दी धार पए फुट्ट, नाद अनादी नाद सुणाईआ। अमृत निजर धार देवे घुट, बूँद स्वांती इक्क चवाईआ। परदा ओहला रहे ना लुक, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। आवण जावण जन्म मरन लख चुरासी मेट के दुःख, दर्द दुख भय भंजन आपणी गोद उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आत्म परमात्म हो के लए चुक्क, चार कुण्ट दहि दिशा झगड़ा दए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला अगम्मी दस्स के तुक, तुरत आपणे रंग रंगाईआ। सच सुहञ्जणी मौले रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन भगत सुहेला धुर दा सुत, अबिनाशी अचुत होए सहाईआ। मात गर्भ आवे ना उलटा रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल होए सहाईआ। ब्यास कहे गुरमुख कोई ना मारे धाह, धौल धर्म दया दए गवाहीआ। जिन्हां मिल्या बेपरवाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण नूरी जोत करे रुशना, जल्वागर डगमगाईआ। महबूब बण आप खुदा, खुदग़रज़ी दए कढाहीआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर होण ना देवे जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मन वासना पए ना कोई वबा, वफ़ात विच्चों बाहर रखाईआ। परमात्म

हो के कदे ना करे दग़ा, कूड़ा नाता ना कोए जुड़ाईआ। जन भगतां सदा वधे अग्गा, आगमन विच ख़ुशी वेखे लोकाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान मेहर करे सदा, सद सद आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे खेल दी आपे जाणे वजह, वज़ाहत विच सके ना कोए समझाईआ।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड ढिलवां ज़िला अमृतसर ★

ब्यास कहे मैं आस रखी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान कथा कहाणी सुणदा रिहा सच्ची, गुर अवतार पैगम्बर निरगुण सरगुण धार दए समझाईआ। राह तक्कदा रिहा कवण वेला परम पुरख परमात्म वेखां आपणी अक्खीं, लोचन नैण इक्को इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, घर साचे लए मिलाईआ। ब्यास कहे मैं तक्कदा रिहा राह, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दस्सदे रहे निरगुण नूर ख़ुदा, जोती जाता शहिनशाहीआ। जिस दे नालों आत्म होई जुदा, लख चुरासी विच समाईआ। धुर दे नाम दी गाउँदे गए सदा, होका ढोला इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ब्यास कहे मैं वेखां भगत, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिन्हां अन्तर आत्म निरंतर इक्को शक्त, शखसीअत दए बदलाईआ। नाता तोड़ कूड़ कुड़यार जगत, भगवन विच मिल के भाग आपणा रहे बणाईआ। जिस धार दा समझया कोई ना अर्थ, कथा विच कथनी ना कोए समझाईआ। कर सक्या कोई ना परख, जगत बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वाली दो जहान अर्श, फर्श आपणा हुक्म वरताईआ। प्रेमी प्यारयां उत्ते कर के तरस, प्रीतम हो के आपणा परदा दए उठाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी पूरब मेटे हरस, हवस अगली दए गवाईआ। लख चुरासी विच कोई ना पए तड़फ, जम की फाँसी दए कटाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल देवे आपणा दरस, नूरी जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी नाद अगम्मा पवे खड़क, तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। लेखे लावे बूँद रक्त, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सुहञ्जणा होवे वक्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। ब्यास कहे मैं वेखां भगत सुहेला तरदा, जुग चौकड़ी अबिनाशी करता आप तराईआ। जो निरगुण हो के सरगुण सन्त सुहेला फड़दा, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। परमात्म हो के आत्म वरदा, नार कन्त खेल खिलाईआ। ख़ाली भण्डारे भरदा, देवे नाम भण्डारा बेपरवाहीआ। साची मंज़ल चढ़दा, सच दवारा

इक्को इक्क समझाईआ। जित्थे दीप अगम्मा बलदा, सूरज चन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। दस्म दवारी तों अग्गे जन भगतां आप खड़दा, जित्थे मंज़ल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी हरिजन आपणे घर वसाईआ। ब्यास कहे परम पुरख दी आदि जुगादी रीत, जुग चौकड़ी चली आईआ। जन भगतां दस्स प्रीत, परम पुरख हो के आपणा परदा दए उठाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबा दो दोआबा आपणा आप दए समझाईआ। बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के साचा गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा दरस दए कराईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, अग्नी तत दए बुझाईआ। माण वड्याईआ बख्शे हस्त कीट, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। ब्यास कहे जिन्हां साहिब सतिगुर पूरे पाया दरस, दासी दास नज़री आईआ। जन्म जन्म दी मिटे हरस, हवस दो जहानां दए चुकाईआ। नाम भगती सिमरन पूजा पाठ दा उतारे कर्ज़, मकरूज लेखा दए मुकाईआ। करे खेल आप असचरज, जिस नूं जगत विद्या समझ सके ना राईआ। गुरमुखां भगतां नाल सदा वण्डे दर्द, दर्दीआं दुःख आपणी झोली पाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी मन्ने सदा अरज़, फ़र्ज आपणा तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१६२
२०

किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। सिर हत्थ रखे निरँकार, करनी दा करता आप अखवाइंदा। दर आयां देवे तार, तारनहार आप अखवाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सुणे सर्ब पुकार, बिना सरवण सोभा पाइंदा। भगत वछल बण गिरधार, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्को इक्क वखाइंदा। सतिगुर दरस दी जिन्हां लोड़, आसा पूरी दए कराईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां देवे जोड़, सुरत सबद नाल मिलाईआ। साचे मन्दिर ला के पौड़, नाम डण्डा हत्थ फड़ाईआ। सच प्रीती निभा के तोड़, टुटयां लए जुड़ाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के पंज चोर, आसा तृष्ना डेरा ढाहीआ। लेखा मुका के मोर तोर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी दर घर ठांडा इक्क वखाईआ। दर घर ठांडा वेखे हरिजन मीत, जिन्हां आपणी दया कमाइंदा। स्वामी हो के वसे अंदर चीत, ठगौरी जगत ना कोए बणाइंदा। लख चुरासी घट निवासी पुरख अबिनाशी परखणहारा नीत, जीव जंत साध सन्त हरिजन हरि हरि परदा आप चुकाइंदा। पिछला लेखा सब दा गया बीत, अगला लेखा समझ किसे ना आइंदा। बिन सतिगुर पूरे साची मंज़ल चढ़ाए ना कोए ठीक, ठीकर भन्न ना कोए वखाइंदा।

सतिगुर धाम सदा अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। कर किरपा मेहरवान हो के जिन्हां देवे हक प्रीत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार काया मन्दिर अंदर इक्क वखाइंदा।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी छिन्दो दे गृह पिण्ड लिटां ★

ब्यास कहे मैं वेखे जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। आउँदे जांदे रहे गुरू अवतार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। नाम संदेसा दे के गए विच संसार, शब्दी ढोले सोहले राग अल्हाईआ। चार वरन अठारां बरन दस्सदे गए प्यार, आत्म परमात्म बोध अगाध कर पढ़ाईआ। सच प्रीती एको दस्सदे गए एकँकार, नर निरँकार सब दा पिता माईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी करदे गए चरण कँवल निमस्कार, सजदयां विच सीस झुकाईआ। कलम शाही शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणदे गए लिखार, लिख्त भविख्त लोकमात दए गवाहीआ। नित नवित खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कल कल्की लै अवतार, कूड़ कलेश मलेछ दए मिटाईआ। जिस नूं लभ्भदे जल थल महीअल साची धार, समुंद सागर नीर वहाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी आपे जाणे आपणी कार, करनी दा करता आप अख्वाईआ। दीन दुनी तों वसे बाहर, तन वजूद माटी ख़ाक समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी खेल खिलाईआ। सति सतिवादी खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी आप कराइंदा। जिस नूं झुकदे गुरू अवतारा, पैगम्बरां चरणां विच टिकाइंदा। सदा वसे सचखण्ड सच्चे दवारा, दरगाह साची सोभा पाइंदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, हुक्मे अंदर सर्ब भवाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वरताउँदा रिहा बण वरतारा, भेव अभेदा आपणे विच छुपाइंदा। घट निवासी पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला एकँकारा, परवरदिगार सांझा यार हक हकीकत खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति साची कार कमाइंदा। साची कार करे करतार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोत कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। सोई सुरती जन भगत सुहेले लए उठाल, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक इक्को घर बहाईआ। शब्द विचोला

एथे ओथे दो जहानां बणा दलाल, सच वणजारा इक्को दए वखाईआ। आपे पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। तन माटी ख़ाकी सच वजूद हक महबूब मुहब्बत विच दस्से एका धर्मसाल, शिवदवाला मठ्ठ मसीत मन्दिर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस गृह वज्जे शब्द अगम्मी ताल, तन्द सितार नज़र कोए ना आईआ। सो लेखा जाणे दो जहान, श्री भगवान वड वड्याईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, शब्द अगम्मी देवे इक्क ज्ञान, निधान सृष्टी दृष्टी दए उठाईआ। सन्त सुहेले कर परवान, मेहरवान होवे मेहरवान, परदा ओहला काया चोला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दवारा इक्क दरसाईआ। दर दरबारा दस्स एका एक, एकँकार दए समझाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर रख के गए टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक नाम रमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सचखण्ड निवासी दो जहानां निरगुण सरगुण रिहा वेख, परदा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां काया मन्दिर अंदर चढ़ के खोले अगम्मा भेत, भेव अभेद आपणा दए जणाईआ। जिस नूं समझ ना सके चार वेद, शास्त्र सिमरत कूकण देण दुहाईआ। अक्खरां विच लिखदे गए लेख, काग़ज़ कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। बिन सतिगुर शब्द वसे साचे कोई ना देस, परदेसी बैठी जगत लोकाईआ। जिस दर ते कोटन कोटि झुकदे विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर शरअ ना कोए वखाईआ। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोए धराईआ। जिस दा साचा सुत एका दस दस्मेश, गोबिन्द सूरा नज़री आईआ। उस दा नाम विशा विषयां विच्चों वशेष, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस दी महिमा कर ना सके कोई कतेब, कुतबख़ाने सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाला कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जागरत जोत जगे प्रभ एक, इक्क इकल्ला भेव खुल्हाईआ। सचखण्ड दवारा समझाए धुर दा सच्चा देस, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले सन्त साजन सूफ़ी फ़कीर सच दवारे कर के पेश, पेशतर आपणा परदा दए उठाईआ। जिस दा भविख्तां विच लिख्तां विच लिख के गए लेख, वाक् दा वाकिफ़कार इक्को नज़री आईआ। साचे सन्तां करे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोट केती केत, चार कुण्ट जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत भज्जण वाहो दाहीआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला सदा वसे जन भगतां देस, गुरमुखां अंदर वड़ के सच सिँघासण पुरख अबिनाशण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म वरते आदि जुगादि, जुग चौकड़ी ना कोए उलटाईआ। जिस दी गुर

१६४
२०

अवतार पैगम्बर दस्सदे गए याद, सोहले ढोले सिफ्तां वाले कलमे नग़म्यां विच गाईआ। बिना कन्न तों सुणाउँदे गए आवाज़, धुन आत्मक राग अलाईआ। जिस दी सजदयां विच पढ़दे गए नमाज़, नमो नमो कर के सीस झुकाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बदल देवे समाज, हुक्म धुर दा आप सुणाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो वेखणहार जुगादि, मध आपणा हुक्म हुक्म विच बदलाईआ। सदी चौधवीं सुणनहारा फ़रयाद, पीर पैगम्बर जिस दी करन याद, सो देवणहारा दाद, वस्त अमोलक अमुल्ल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ला सृष्ट महल्ला अनदृष्ट दए वखाईआ। ब्यास कहे मेरी आसा पुन्नी, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल पुकार सुणी, सति सतिवादी मिल्या चाँईं चाँईंआ। भाग लगाया साचे मन्दिर धुर दे गृह अगम्मी कुल्ली, छप्पर छन्न नज़र किसे ना आईआ। जिस दी कीमत ग़नीमत विच अनमुल्ली, शाह पातशाह जगत सके ना कोए चुकाईआ। जन भगत नार विच संसार जुग चार जिस कदे ना भुल्ली, अभुल्ल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन इक्को इक्क दरसाईआ। सच सिँघासण गुरमुख आत्म गृह, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस घर स्वामी ठाकर हो के बहे, निरगुण जोती जाता डगमगाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होवे लय, मरन जन्म विच गेड़ ना कोए भवाईआ। आपणा भाणा आपे सहे, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। शब्दी हुक्म गुरमुखां सच कहे, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द आप सुणाईआ। धन्न सुभाग जिस काया मन्दिर अंदर जगया चिराग़ पुरख अकाला दीन दयाला तिस दवारे वसे गृह, घट भीतर सोभा पाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई शक्ती (शवै), जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच घराना श्री भगवाना इक्को इक्क सुहाईआ। सच घराना गुरमुख घर, काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जित्थे वसे नरायण नर, नारी पुरख रूप नज़र कोए ना आईआ। दयाल हो के कृपाल हो के सुरती लए फड़, शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। साचे मन्दिर स्वामी अन्तरजामी हो के जाए चढ़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। अमृत वखाए आत्म परमात्म साचा सर, झिरना अगम्मी आप झिराईआ। निरगुण निरगुण लए वर, सरगुण वज्जे तत वधाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार आपे खड़, परदा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित भगत भगवान खेल रिहा कर, करनी दा करता कुदरत दा मालक प्रितपालक ख़ालक आलस निंद्रा विच्चों सन्त सुहेला बाहर कढाहीआ।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरचरण सिँघ दे गृह पिण्ड पंडोरी ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे मेरा लेखा वेद व्यास, वेदां तों परे पढ़ाईआ। जित्थे बुद्धी करे ना कोए कयास, विद्या चल्ले ना कोए चतुराईआ। नज़र आवे ना किसे शाख़, शनाख़त जगत ना कोए कराईआ। ख़ोज करे ना माटी ख़ाक, ख़लक परदा ना कोए उठाईआ। मैं ओस दा होया दास, लख चुरासी दासी जिस दी नज़री आईआ। दो जहानां निरगुण सरगुण पावे रास, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणी रचन रचाईआ। आत्म परमात्म सब नूं देवे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला हो के वसे साथ, जुग चौकड़ी विछड़ कदे ना जाईआ। जिस दी महिमा गुर अवतार पैगम्बर भविक्खतां विच गए आख, शब्द संदेसा नाम जणाईआ। तिस दा दर्शन तक्कां साख्यात, सखी सुल्तान बेपरवाह नज़री आईआ। जिस दी समझे कोए ना जात, मज़्ह्ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सिफ्त कर ना सके कोई कलम दवात, काग़ज़ चले ना कोए चतुराईआ। जिस दी सजदयां विच पढ़न नमाज़, निमस्कार कर के सीस झुकाईआ। सो साहिब सुल्ताना हो मेहरवाना मेरा खोल्हे अंदरों राज़, परदा दए चुकाईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा जहाज़, नईआ नौका आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेखे खेल तमाश, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ। पंडत पांधा ला ना सके कोई हिसाब, गृह नछत्रां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। शास्त्र सिमरत रहे आख, आख़र एको सब दा पिता माईआ। सो कलयुग मेटे अन्धेरी रात, रैण अन्ध दए गवाईआ। आत्म परमात्म दस्से सब नूं गाथ, ढोला सोहला इक्को इक्क पढ़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार हो के वसे साथ, सगला संग दो जहान श्री भगवान आप निभाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को सिमरन पूजा पाठ, जोग अभ्यास तत साधन दए दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना दीन दुनी कायनात, कलमा नबी रसूलां आप समझाईआ। भगत भगवान दी बणे इक्क जमात, दूसर वण्ड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क खुल्हाईआ। सच दवारा खोल्हे पुरख समरथ, कलयुग अन्त दया कमाईआ। जन भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख हरिजन खोल्हे अन्तर अक्ख, निरंतर परदा दए उठाईआ। मन कामना कर के वस्स, मनसा आपणे नाल मिलाईआ। निजर धारा अमृत दे के रस, रस्ता अगला दए वखाईआ। कूड़ी क्रिया विकार हँकार कर के भट्ठ, भाण्डा भरम दए भन्नाईआ। झगड़ा मुका के तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध तों परे करे पढ़ाईआ। शब्द सुणाए अगम्मी धुन अनाद अनहद, अनाहत आपणा भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म सच दवारे कराए हज्ज, बिन काअब्यों महिराब आपणी आप वड्याईआ। जोती दीपक जन भगतां अंदर जाए जग, सूफ़ी सन्त फ़कीर डगमगाईआ। त्रैगुण माया

बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। हँस बणाए फड़ के कग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। लेखा जाणे जीव अल्पग, सरबग दाता बेपरवाहीआ। जुग जन्म दे विछड़े करमां अंदर रहिण ना देवे अलग, निहकर्मी हो के आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म मेलण दा शब्दी बण सबब, सुरती सति नाल जुड़ाईआ। इक्को दे के ब्रह्म मत, भेव दए खुल्हाईआ। हरिजन साचे सन्त मेल मिला के नाल सच, सच सुच संजम इक्क दृढ़ाईआ। भाग लग्गे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जिस दी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान सिँघ दे गृह पिण्ड सुरख़पुर ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे गुरमुख बेआस कोई ना रहिणा, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। निज नेत्र लोचन दर्शन पाए अगम्मी नैणां, जगत अक्ख प्रतख मिले गोसाईंआ। सतिगुर शब्द जिस धुर दा मन्नया कहिणा, हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी तिन्हां चुकाए पूरब लहिणा, लहिणेदार देणेदार हरि निरँकार इक्को इक्क अख्वाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी अंदर भाणा सब ने सहिणा, चार वरन अठारां बरन सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। ब्यास कहे जन भगतां रहे कोए ना बिप्पता, बिप्परीत ना कोए कमाईआ। जिन्हां दा लेखा पुरख अकाल लिखदा, लेखा लावे थाउँ थाँईंआ। सो रूप सति सरूप बणे धुर दे सिख दा, सिख्या गोबिन्द शब्द सच दृढ़ाईआ। झगड़ा मुक्के आवण जावण लख चुरासी नित दा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। इष्ट नज़री आए दृष्ट अंदर पुरख अकाल इक्क दा, एकँकार परवरदिगार सांझा यार जलवा नूर खुदाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा बिन दीदयां दिसदा, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेला लए मिलाईआ। हरिजन मेला करे आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। कोट जन्म दे मेट संताप, ताप तीनों डेरा ढाइंदा। जन्म कर्म दा लेखा कर मुआफ़, मुफ्त आपणा रंग चढ़ाइंदा। मनुआ रहिण ना देवे गुस्ताख़, शब्दी हुक्म नाल समझाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझा दस्से के जाप, जगजीवण दाता जगत जुगत आप समझाइंदा। शब्द अगम्मी सुणा नाद, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दूर कराइंदा। साचे मण्डल वखा रास निरगुण निरगुण गोपी काहन आपणा नाच नचाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार इक्क इकल्ला कर

निवास, सच सिँघासण शाहो शाबाश सोभा पाइंदा। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर निरंतर मंत्र आपणा इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी साची करनी कार कमाइंदा। ब्यास कहे गुरमुख सज्जण साचे उठ, लोकमात लै अंगड़ाईआ। सच दवारे झुक, बिन कदमां सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जावे तुठ, मेहरवान महबूब मेहर नज़र तकाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन जड़ आपणे लेखे पाईआ। अमृत जाम प्या घुट, निजर धारा दए वहाईआ। जोती नूर आवे फुट्ट, रवि ससि दी लोड़ रहे ना राईआ। मानस जन्म भाग ना जाए निखुट, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवान हरि सन्त सुहेला बणा के आपणा सुत, सच दवारा इक्क वखाईआ। जित्थे रहे ना ओहला लुक, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, मुकम्मल आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ला धुर दा महल्ला आप सुहाईआ। धुर महल्ल वेख अथाह, हरिजन सच ख़ुशी वखाईआ। जित्थे मिले इक्क मलाह, बेड़ा नईआ नौका आपणे कंध उठाईआ। धुर दा शब्द देवे सलाह, अक्खरीं वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन्म जन्म दे बख्श गुनाह, गुरबत अंदरों दए कढाहीआ। सच दृढ़ा के हरि का नाँ, नाउँ निरँकार दए समझाईआ। ग़रीब निमाणयां दे के साचा थाँ, सच दुआर दए टिकाईआ। धुर दरगाही बण के पिता माँ, पूत सपूते आपणी गोद उठाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला एकँकार देवे दो जहानां ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहान श्री भगवान हक अदालत करे सच न्याँ, हुक्म धुर दा आप समझाईआ।

★ १० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी बंत कौर दे गृह पिण्ड दरीएवाल ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे मेरा अमृत रूप जल नीर, पाणी कहे जगत लोकाईआ। चार जुग किसे ना दिती धीर, वहिणां विच भज्जा वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल तक्कदा रिहा बेनज़ीर, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। समझ आ ना सकी ओस दी तस्वीर, तसव्वर ना कोए कराईआ। कुछ आशा रखी कबीर, अन्तर ध्यान लगाईआ। गंगा कटे ज़ंजीर, शमशीर बेपरवाहीआ। बेनन्ती कीती अख़ीर, आख़र दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त बदले तेरी तकदीर, तदबीर दिती दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। ब्यास कहे मैं कदे ना होया बेआसा, कदीम तों कदम

ध्यान लगाईआ। गुर अवतार दे के गए भरवासा, यकीन इक्को इक्क जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आवे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी अविनाशी आपणा वेस वटाईआ। दो जहान वेखे खेल तमाशा, करनी दा करता आपणा खेल खिलाईआ। तेरा पूरा करे घाटा, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जन भगतां माण वड्याई दे विच दोआबा, सतलुज परदा दए उठाईआ। सच महिराब उपजा अगम्मा काअबा, नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। आपणा हुक्म वरतावे इक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जन भगत सुहेले सन्त बणाए धुर दे सिख, सिख्या सिक्खी इक्क दृढ़ाईआ। निहकर्मी हो के लेखा दए लिख, लिख्त भविख्त नाल वड्याईआ। सच प्रेम दी बख्श के सिक, सिखर चोटी दए चढ़ाईआ। सद देवे दर्शन नित, नवित वेख वखाईआ। धुर दा मालक बण के पित, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। निरगुण धार खेल अनडिठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाईआ। ब्यास कहे मैं आसावंद, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। हुक्मे अंदर हो पाबन्द, भज्जां वाहो दाहीआ। ढोला गाउँदा रिहा छन्द, मैं तेरा तूं मेरा धुर दा माहीआ। मंगदा रिहा संग, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अबिनाशी करते देणा इक्क अनन्द, सुक्ख सागर तेरी बेपरवाहीआ। खुशी कराउणा बन्द बन्द, बन्दगी आपणी इक्क दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चौकड़ी गई लँघ, कलयुग कूड़ी क्रिया अन्त दए दुहाईआ। भेव खुलाउणा पारब्रह्म ब्रह्म हँ, हम साजन हो के आपणा मेल मिलाईआ। शरअ रहे ना कोई द्वैती कंध, कूड़ कुटम्ब देणा मुकाईआ। आत्म नाता आपणे नाल गंढु, परमात्म हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। साचा रंग दे अपार, अपरम्पर दर तेरे मंग मंगाईआ। साचा बख्श दीदार, निज नेत्र अक्ख खुलाईआ। जुग चौकड़ी बीते वारो वार, कलयुग अन्तिम गया आईआ। शास्त्र सिमरत गए हार, वेद पुराण देण दुहाईआ। खाणी बाणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ उच्ची करन पुकार, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, नर नरायण तेरी वड्याईआ। सन्त सुहेले लै उठाल, गुरमुख गोद उठाईआ। उठ वेख मुरीदां हाल, मुर्शद हो के दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सांझा मन्न सवाल, द्वैत भाव ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वस सदा नाल, नालश अंदरों दे मिटाईआ। ब्यास कहे मेरी आसा पूरी, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। नाता छुट्टे दुनिया कूड़ी, सृष्टी संग तजाईआ। बुध ना रहे मूढ़ी, चंचल मन ना कोए चतुराईआ। इक्को लै के चरण धूढ़ी, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। रंग चढ़े अगम्मा गूढ़ी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। मिले प्रकाश

साचा नूरी, नर नरायण करे रुशनाईआ। दर सोहवां हाज़र हजूरी, गृह ठांडे डेरा लाईआ। जुग जन्म दी लेखे पए मज़दूरी, घाल वेखे चाँईं चाँईंआ। मेरी मनसा आशा विच्चों होए पूरी, पूरन ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, धुर दा मेला मेल करे ज़रूरी, ज़रूरत पिछली वेख वखाईआ।

★ १० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह बस्ती शिकार पुर ज़िला कपूरथला ★

सतलुज कहे मेरे अन्तर गोबिन्द रख्या चरण, हस्स के खुशी मनाईआ। विच्चों रोया देवता वरुन, नैणां नीर वहाईआ। साची बख्श सरन, सतिगुरू तेरी सरनाईआ। बिन हथ्थां लग्गा फड़न, आपणी आस वधाईआ। प्रेम दा कर के प्रन, प्रीती नाल सीस झुकाईआ। तूं ही तूं ही लग्गा करन, धुर दा राग सुणाईआ। साचा ढोला लग्गा पढ़न, खुशीआं गीत अलाईआ। बिन लत्तां बाहवां लग्गा तरन, आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। सतलुज कहे गोबिन्द पाया भार, सहिज नाल दबाईआ। याद आ गए जुग चार, वारता बिन अक्खां नज़री आईआ। जिन्हां विच लिख्या इज़हार, हुक्मी सिफ्त सालाहीआ। जिस वेले बीते नव नौ चार, चार यारी दए गवाहीआ। पंजां दा सिक्दार, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। वेखे जल थल धार, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। दो जहानां वड सिक्दार, शाह सुल्ताना रूप वटाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। लहिणा देणा वेख सर्ब संसार, जगत जहान खोज खुजाईआ। देवत सुर सुणे पुकार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। परदा लाहे डूँग्घी गार, गहर गम्भीर दया कमाईआ। वरुन रो ना ज़ारो ज़ार, धीरज धीर आप धराईआ। जिस दा खेल वारो वार, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। सो स्वामी सिरजणहार, धुर दा मालक आप अख्वाईआ। सब दा लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, बाकी हथ्थ ना कोए रखाईआ। पतित पापी लाए पार, पुनीत आपणे नाल कराईआ। कल कल्की लै अवतार, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। गोबिन्द शब्द कर उज्यार, शब्द गोबिन्द वड वड्याईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसार, बेसमझ करे लोकाईआ। सो खेल करे अगम्म अपार, अलख अलखना आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जगत वहिण विच्चों जन भगत लए उभार, फड़ बाहों बाहर कढाहीआ। दुखियां दा बण दिलदार, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। मेल मिला के आपणी धार, धरना पत होए सहाईआ। एका मंज़ल देवे चाढ़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। घर वखाए सच दवार, द्वारकावासी जित्थे सीस झुकाईआ। जगमग जोत जगे अपार,

नूरो नूर होए रुशनाईआ। बेआसां दा बेड़ा करे पार, ब्यास बैठा झोली डाहीआ। दोहां दा विचकार, लेखा गोबिन्द नाल रखाईआ। जिस दा लहिणा जाणे ना कोए आर पार, धार धार नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। सतलुज कहे मैथों मंग मंग के गए लोधी, सजदा काअबे वल्ल कराईआ। हिस्सा पा गए सोढी, गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। झोलीआं डाहुदे गए जोगी, जिज्ञासू राह तकाईआ। रस माणदे गए भोगी, विषयां विच हल्काईआ। ठाकर माणदे गए मौजी, मजलसां विच वड्याईआ। महात्मा फिरदे गए बोधी, बुद्धी विच सफ़ाईआ। मेरी सोच किसे ना सोची, समझ रमज़ ना कोए मिलाईआ। तिन्न वेरां नहा के गया रविदास चमारा मोची, पाटे चीथड़ अंग छुहाईआ। कबीर तक्की धुर दी जोती, नैण मूंद अक्ख बदलाईआ। नामा बण के धुर दा गोती, जै देव गया समझाईआ। सैणी फुल्लां दी तोड़ के डोडी, मेरे विच दिती वहाईआ। गनका ने वासना कढ्ढी खोटी, चुली मुख विच चुआईआ। धन्ना लै के सुक्की रोटी, जल कटोरा वण्ड वण्डाईआ। सप्त ऋषी विच धो के गए लंगोटी, लेखा पाहन उत्ते लिखाईआ। दुर्गा राख़शां दी सुट्ट के बोटी, हिस्सा नावां गई जणाईआ। रामानंद दी रुढ़ गई लोटी, जो गुरू कबीर दा रिहा अख्वाईआ। अहिल्या दी रुढ़ गई धोती, अंचल हथ्थ किसे ना आईआ। भीलणी साढे नौ साल आयू गंवाई चोखी, ध्यान ध्यान विच बदलाईआ। बाल्मीक ढाई घंटे लिखी पोथी, कलम पुट्ठी कर चलाईआ। राम राम दी रमज़ सोची, पिच्छा लकशमन वल्ल कराईआ। रावण ने धरती नवांं नाल नोची, नौ दिन बैठा डेरा लाईआ। कृष्न इकावन दिन वेखदा रिहा त्रिलोकी, बावन शब्दी धार मिलाईआ। बल भगती कीती बहुती, दिने लुक के झट लँघाईआ। वेद व्यासे दिती आहूती, हवन हरि का नाम समझाईआ। रिषीआं मिलदी रही भबूती, चित्रकुटी हथ्थ किसे ना आईआ। सतलुज कहे बिनां गोबिन्द मेरी किसे ना कीती मज़बूती, आर पार चरण ना कोए टिकाईआ। इक्क प्रेम प्यार वस्त दिती मुठ्ठी, उंगलां अंगूठे नाल दबाईआ। साचे जाम दी दिती ठूठी, प्याला कूड़ दिता भन्नाईआ। सति धर्म दी दिती बूटी, बूटा जगत विच लगाईआ। मेरी पिछली आसा झूठी, अग्गे नैण ल्या उठाईआ। उस ने घल्ल के शब्द दूती, सुनेहड़ा दिता पुचाईआ। जिस वेले पुरख अकाल भाग लगावे मेरे पोतीं, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। तेरी धारा वेखे सुत्ती, सुत्यां लए जगाईआ। सुहावे साची रुची, रचना दए वखाईआ। रमज़ ना रहे गुज्झी, परदा दए उठाईआ। जिस नूं समझे कोए ना बुद्धि, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग अन्तिम औध जाए पुग्गी, वेला वक्त दए गवाहीआ। सतलुज कहे मेरी स्वच्छ करनी बुद्धि, अक्ख देणी खुल्ाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास नाल तेरी रमज़ गुज्झी, नाता अगला इक्क जुड़ाईआ। तुहाडे मध भगतां दी होवे झुग्गी, चौंह जुगी मिले वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडी आसा मनसा होण ना देवे बुढ्ढी, नव नौ जोबन विच रंगाईआ।

★ १० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड जांगला ज़िला कपूरथला ★

सतलुज कहे मेरी जाणे कोई ना सता, सत्तया नज़र किसे ना आईआ। मेरी धार दा नहीं किसे कोई पता, पत्तन बहि बहि फेरीआं गए पाईआ। निरगुण सरगुण कर के गए मता, सलाह मश्वरे विच ल्याईआ। तन माटी वजूद खा के गए भत्ता, जल पी के शुकर मनाईआ। मेरा दुःख किसे ना सुणया रता, दर्दी दर्द ना कोए वण्डाईआ। सब कुछ वेख्या आपणी अक्खां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। की लेखा चार जुग दा दस्सां, परदा ओहला मात उठाईआ। कुछ वार गाई भट्टां, ढोला बेपरवाहीआ। कुछ साफ़ कीता फट्टां, गुरमुखां रंग रंगाईआ। कुछ दाग़ धोया पट्टां, पाटल आपणा परदा पाईआ। मैं सच सच दस्सां, भेव अभेद खुल्हाईआ। खुशीआं विच नच्चां, भज्जां वाहो दाहीआ। हो के हका बक्का, संदेसा दयां दृढ़ाईआ। शब्द धार मेरा गोबिन्द नाता पक्का, कच्चा तन्द ना कोए बंधाईआ। याद सत्थर कक्खां, यारड़ा सेज वड्याईआ। मेरे उत्ते नहा नहा गए लखां, बिन गोबिन्द चरण शांत ना कोए कराईआ। रिषीआं मुनीआं हत्थां नाल सूर्या पाणी झट्टा, बूँद बूँद टपकाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल लाहा कोई ना खट्टा, साची खट्टी हत्थ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे चरण दवारे ढट्ठा, ढहि के आपणा हाल सुणाईआ।

★ १० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ फ़कीर सिँघ दे गृह पिण्ड मजीद पुरा ज़िला कपूरथला ★

नीर कहे मैं तक्कया निराकार, निरवैर नज़री आईआ। सति नाल करे प्यार, धर्म दया आप कमाईआ। भरम भेव रिहा निवार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच नाम कर जैकार, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। भगत वछल हो गिरधार, हरिजन मेले थाउँ थाँईंआ। जन्म जन्म दा रोग निवार, कर्म कर्म दा गेड़ कटाईआ। जन्म मरन दी पैज संवार, आवण जावण पन्ध चुकाईआ। साचा दस्स धर्म दवार, घर ठांडा इक्क वखाईआ। जिस मंज़ल वसे आप निरँकार, जोती जाता सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कार, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, धुर दा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। नीर कहे मैं तक्कया उह निरँजण, जो घट घट रिहा समाईआ। चरण धूढ़ कराए मज्जन, दुरमति मैल धवाईआ। काया माटी गढ़ बणा के कंचन, सोहणा पारस रंग रंगाईआ। नेत्र नाम पाए अंजण, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। दाता बण के दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। दो जहानां हो के सज्जण, हरिजन साचे जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी विच्चों आया कढ्ढण, जम की फाँसी रिहा तुड़ाईआ। सच प्रीती पा के बन्धन, बन्दना इक्क रिहा समझाईआ। निज आत्म दे अनन्दन, अनन्द आपणा रिहा वखाईआ। शब्द डोरी पा के तन्दन, तन्द सितार आप हिलाईआ। अंगीकार हो के लाए आपणे अंगण, अकल कलधारी आपणी खेल खिलाईआ। जन भगत दवारा आए मंगण, मांगत हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। नीर कहे मैं वेख्या निराकार, निर्धन सरधन खेल खिलाईआ। लेखा जाणे तत शरीर आकार, काया गढ़ बंक सुहाईआ। साचा खोल्ह इक्क दवार, दर दरवाज़ा परदा लाहीआ। महल अटल सुहा मुनार, हुजरा हक दए वड्याईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा रिहा मुकाईआ। शब्दी शब्द दस्स प्यार, सुरती सति विच समाईआ। मंज़ल कट कूड़ दुष्वार, ठांडा घर रिहा वखाईआ। जिस घर बैठा एकँकार, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। भगतां बण के मीत मुरार, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। अमृत जल प्या के ठंडा ठार, कलयुग अग्नी तत बुझाईआ। नीर कहे जिवें मेरी सतह सदा हमवार, एसे तरह जन भगतां इक्को देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल करनेहार, करनी दा करता आपणी कार कमाईआ।

★ १० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड नूरपुर ज़िला कपूरथला ★

नीर कहे मेरा आदि जुगादी इक्को मित्र, अबिनाशी करता नज़री आईआ। जिस दा अजब निराला चलित्र, चित्र समझ सके कोए ना राईआ। मिट्टी गार विच्चों मैनूं कर पवित्र, पतित दिता तराईआ। रस धार विच्चों आया नितर, सरूप सति बणाईआ। इक्क विछोड़े दा फ़िकर, फ़िकरा एसे दा ढोला गाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां अमृत रूप बणा के मेरा कीता जिकर, आबे हयात नाउँ धराईआ। मैं कदे ना होवां भिट्टड़, जूठ झूठ करां सफ़ाईआ। बिन मेरी धार कलम शाही सके ना कोए लिखण, लेखा जगत ना कोए बणाईआ। सृष्टी सारी दिसे मिथ्थन, मेरा नीर नष्ट ना कोए कराईआ। महा परलो हो के सब नूं आवां जितण, धरनी ख़ाक करां सफ़ाईआ। जुग चौकड़ी खेल आवां नजिठ्ठण, प्रभ चरण धो खुशी मनाईआ।

जन भगतां अंदर आवां विकण, गुरमुखां कीमत नाम रखाईआ। साची धार हो के आवां दिसण, सुहञ्जणा रूप बणाईआ। कुछ लेखा लिख्या काहन कृष्न, आपणा आप छुपाईआ। पहला हिस्सा पाया ब्रह्मा विष्न, शंकर चुलीआं गंढु रखाईआ। जगत खेल बाज़ीगर तिलकण, तिल धार समझ कोए ना पाईआ। बिन मेरे दो जहान विलकण, कूक कूक देण दुहाईआ। ख़ाली भण्डारे सारे दिसण, रसीआ रस ना कोए चखाईआ। गोबिन्द मेरा पाया हिस्सन, सतलुज आपणा चरण छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए बणाईआ। नीर कहे मेरा कोए ना जाणे रूप, रंग समझ किसे ना आईआ। मेरा मालक इक्को भूप, भूपत बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म चार कूट, दहि दिशा डंक वजाईआ। सो कलयुग अन्तिम मेटे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। मन वासना करे कूच, कूचा गली करे सफ़ाईआ। द्वैती रहिण ना देवे दूज, दूआ एका एका रंग वखाईआ। भेव खुल्हाए गूझ, जन भगतां परदा ओहला आप उठाईआ। निर्मल करे बुध, शब्दी धार नाल समझाईआ। दो जहानां कारज करे सुध्ध, वदी सुदी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग अन्त साचे शब्द अस्व बहे कुद्द, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर हुक्म दा करे युद्ध, युधिष्टर कृष्न ना कोए लड़ाईआ। नीर कहे कुछ वड्याई देवे मुझ, मुजरा दीन दुनी वखाईआ। चार कुण्ट बूटा जावे सुक्क, हरयावल रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां बख्श के इक्को तुक, सोहँ ढोला दए समझाईआ। उजल कर के मुख, मुख अन्तर करे पढ़ाईआ। जन्म कर्म दा मेट के दुःख, चुरासी गेड़ा दए चुकाईआ। घर स्वामी उपजावे सुख, सांतक सति सति कराईआ। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, घर सुहञ्जणे दए टिकाईआ। नीर कहे मेरे पीर दी मौले रुत्त, पीरां दा पीर आपणी खेल खिलाईआ। मैं ओसे दा धुर दा सुत, सुत्तयां लए जगाईआ। लहिणा देणा देवे कुछ, जो कशू बाल्मीक गया दृढ़ाईआ। जिस ने आपणी पुट्ट के इक्क मुच्छ, मुश्किल कलयुग दिती वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आवे भुक्ख, भुक्ख्यां सके ना कोए रजाईआ। वक्त सुहञ्जणा आवे ढुक्क, बीस बीसा दए गवाहीआ। सति धर्म दा नाता जावे टुट्ट, प्रेम प्यार ना कोए रखाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ पवे फुट्ट, भाईआं नाल भाई करन लड़ाईआ। साचा जाम ना मिले घुट, अमृत हथ्थ किसे ना आईआ। बिन हरि नामे ख़ाली होवण बुत्त, बुत्तख़ाने देण दुहाईआ। नीर कहे ओस वेले मेरा मालक होवे खुश, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जन भगतां लए पुछ, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। परदा रहिण ना देवे लुक, लुकयां लए उठाईआ। जगत विकारा अंदरों कढ्ढे कुट्ट, काया कुटीआं करे सफ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ दस्स के साची तुक, तुरत आपणा नाम पढ़ाईआ। अग्गे आवण जावण लख चुरासी गेड़ गुरमुखां जाए मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नीर कहे मैं अमृत बण के घुट, घुट्ट गलवकड़ी

भगतां नाल पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे देवे सच सुच, आपणा नाम समझाईआ।

★ १० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड हरनाम पुर ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे किरपा करे पुरख बिधाता, सो पुरख निरँजण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग मेटे कूड़ अन्धेरी राता, हरि पुरख निरँजण शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द अगम्मी सुणावे गाथा, एकँकारा इक्को करे पढ़ाईआ। लख चुरासी जोती होए जाता, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खुल्हाए साख्याता, अबिनाशी करता परदा ओहला दए उठाईआ। नाम भण्डारा देवे अगम्मी दाता, श्री भगवान हो मेहरवान नाम अमोलक आप वरताईआ। रंग रंगाए अगम्मड़ा साचा, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दवारे सचखण्ड निवासी वेखे हक तमाशा, लाशरीक भेव आपणा आपे दए जणाईआ। थिर घर शब्दी धार गाए गाथा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दासी दासा, सच दवारे सेवक सेवक नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जोड़न हाथा, डण्डावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मन्ने आखा, सिर सर सके ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण झल्ले कोई ना ताबा, ताबेदारी सारे रहे कमाईआ। लोक परलोक दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश होए लाजवाबा, सच फ़रमान ना कोए दृढ़ाईआ। नेत्र नैणां नीर वहाए सत सरोवर आबा, समुंद सागर रहे कुरलाईआ। दरोही फिरी मक्का काअबा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ धीर ना कोए धराईआ। रूह बुत्त नज़र ना आए कोई पाका, पतित पावन भेव ना कोए खुल्हाईआ। बुद्धी समझे सच ना कोई धुर दा आका, अकल विद्या चले ना कोए चतुराईआ। चार वरन अठारां बरन अंदर मन्दिर खुल्ह्या किसे ना ताका, तकदीर तकसीर ना कोए बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सुणया किसे ना साका, जगत विद्या विच फसी लोकाईआ। सच दवारा धाम न्यारा लभ्भा किसे ना हाटा, धर्म वणजारा वणज ना कोए कराईआ। दीन दुनी चार कुण्ट दहि दिशा चीथड़ दिसे पाटा, ओढन सीस नाम ना कोए टिकाईआ। कूड़ी करनी प्या घाटा, निहकर्मी मेल ना कोए मिलाईआ। आत्म सेजा सोया कोई ना खाटा, सुहञ्जणा दर ना कोए वड्याईआ। निरगुण नूर मिल्या किसे ना लाटा, ललाट होई ना किसे रुशनाईआ। अमृत जाम हथ्थ ना आया बाटा, निजर रस झिरना ना कोए झिराईआ। जन्म मरन मंज़ल मंज़ल अगली चुक्की ना वाटा, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी जुड़या किसे ना नाता,

नातवां दिसी ख़लक ख़ुदाईआ। सदी चौधवीं ख़ालक ख़लक मख़लूक बणे कोई ना राखा, सहायता विच नाम अनायत ना कोए कराईआ। करे खेल अलखना अलाखा, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस दा धुर दा हुक्म अगम्मी शब्द किसे ना वाचा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गा गा सीस निवाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी गहर गम्भीर बेनज़ीर कलयुग अन्तिम होवे साख्याता, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान आपणा नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां सूफ़ी सन्त फ़कीरां देवे आबेहयाता, हयाती विचों हयाती दए बदलाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोए किताबा, कुतबखाने रौवण मारन धाहीआ। सो मेल मिलाए दो दो आबा, आबरू सब दी रिहा समझाईआ। जिस नूं मसलयां विच असल गाउँदे हक जनाबा, वसल देवे यार खुदाईआ। अनरस अनडिठ्ठ अनदृष्ट बख़्शे अगम्म स्वादा, रसना जेहवा बत्ती दन्द लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। ब्यास कहे मैं वेखी अगम्मी बस्ती, जित्थे छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल तक्की हस्ती, हस्त कीटां दए वड्याईआ। नाम खुमारी दे के मस्ती, मस्त दीवाने दए बणाईआ। मालक हो के धुर दा अर्शी, फ़र्शी आपणा परदा लाहीआ। जन भगतां जुग जन्म दी खोल्ह के वेखे अर्ज़ी, बिनां वरक्यों वरका आप उलटाईआ। धार जाणे कलयुग कलू कल दी, कल कल्की हो सहाईआ। खेल वेखे जल थल दी, महीअल आपणी धार प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म ना करे जलदी, भाणे नाल राणा हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल करे अछल अछल्ल दी, वल छल आपणी कार कमाईआ। जन भगतां माण वड्याई बख़्श निहचल धाम अटल दी, महल्ल इक्को दए सुहाईआ। जित्थे आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच रलदी, वजूद सबूत ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे आपणे सवाल हल्ल दी, हालत जहालत कूड़ी क्रिया दीन दुनी दए बदलाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी प्यार कौर दे गृह पिण्ड ढुड्डीआं ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे बेआसा कीता कलयुग कल्ला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा प्या प्रभ तेरा नाम वाहिगुरू अल्ला, अलैहदगी सके ना कोए मिटाईआ। निरगुण धार जोती शब्द फड़ाए कोए ना पल्ला, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा धरनी धरत धवल ख़ाली दिसे महल्ला, नाम भण्डार हरि करतार दीन दुनी ना कोए वरताईआ। मन वासना जीव जंत होया झल्ला, साध सन्त करन लड़ाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा घर दिसे ना किसे इकल्ला, मन्दिर

मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ वण्डां जगत वखाईआ। काया माटी साढे तिन्न हथ्थ अमृत रूप दिसे कोई ना फला, विख़ विकार गढ़ हँकार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी तेरी ओट तकाईआ। ब्यास कहे बेआसा होई दीन दुनी, कलयुग अन्त रही कुरलाईआ। सच पुकार किसे ना सुणी, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। आत्मक उपजे ना अगम्मी धुनी, अनहद नादी राग ना कोए सुणाईआ। सन्त सुहेला मिले कोए ना गुणी, जो अवगुण कूड़े बाहर दए कढाहीआ। माया ममता सब दी चोटी गई मुन्नी, सीस जगदीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। भाग लग्गा दिसे ना काया खेड़ा कुल्ली, काया काअबा ना कोए रुशनाईआ। तेरा ढोला गीत गाउंदे रसना जेहवा बत्ती दन्द बुल्लीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। साचे तोल आत्म दिसे कोए ना तुली, मन मति बुध नाता जगत रखाईआ। सच प्रीती धुर दी नीती अंदर घोली घोल कोए ना घुली, धायल वेखी जगत लोकाईआ। अमृत धार निजर रस बूँद स्वांती सब दी डुल्ल्ही, रसीआ रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहर नजर नाल तराईआ। ब्यास कहे दीन दुनी रही कुरला, चार वरन अठारां बरन मारन धाईंआ। सिध्धा मिले ना कोए मलाह, बिन सतिगुर शब्द पार ना कोए लँघाईआ। जगत अन्धेरा औझड़ होया राह,

१७७ रहिबर हक महबूब मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। निरगुण हो के सरगुण पकड़े कोई ना बांह, सगला साथ पुरख अबिनाश १७७

२० सदी चौधवीं तोड़ ना कोए निभाईआ। काया मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ जीवां जंतां तेरा भुल्लया नाँ, नाउँ निरँकार एकँकार २०

आपणे घर ना कोए वसाईआ। बिन तेरी किरपा गहर गम्भीर बेनज़ीर अन्तिम देवे कोए ना ठंडी छाँ, समरथ सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच गए दृढ़ा, सृष्टी दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त निरगुण निरवैर निराकार निरँकार प्रगट होवे आप खुदा, खुद मालक सालस दो जहानां नज़री आईआ। भगत सुहेले सूफ़ी सन्त फ़कीर गुरमुख सज्जण रहिण ना देवे जुदा, लख चुरासी विच्चों आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सति धर्म दा मार्ग दस्से सिध्धा, डण्डावत बन्दना नमस्ते सजदा इक्को दए समझाईआ। आपणे मिलण दी निरगुण सरगुण दस्से बिधा, बदन वजूद तन माटी ख़ाक सच सबूत आप समझाईआ। जन भगतां बण के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ आपणी गोद उठाईआ। खेले खेल वड्डउँ वड्डा निक्कयों निक्का, जोती जाता पुरख बिधाता अनडिठ्ठ अनदृष्ट जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां दा लहिणा देणा पूरब लेख धुरदरगाहों लिखा, सो सन्त सुहेला गुरू गुर चेला आपणे रंग रंगाईआ। पूरी करे इच्छा, आसा मनसा धुर दी वेख वखाईआ। भगत

वछल गिरधार बण के एथे ओथे दो जहानां करे रच्छा, रच्छक हो के पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। नाम भण्डार एकँकार कर प्यार वस्त अमोलक पावे भिच्छा, भिक्खक भिच्छक भुक्खा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद आपणा हुक्म समझाईआ। ब्यास कहे बेआसी होई कायनात, धुर दा संगी संग ना कोए बणाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, सति धर्म बैठा मुख छुपाईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक करे लड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो भविख्तां विच गए आख, सच संदेसा धुर नरेशा इक्क सुणाईआ। सो वेला वक्त भविख्तां वाला ख़ास, ख़ालस हो के पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। चार वरन अठारां बरन माया ममता मोह विकार कूड़ी पैंदी रास, रस्ता राह बेपरवाह ना कोए वखाईआ। साची वस्त बिना हस्त वस्त नाम दिसे किसे ना पास, पासा दीन दुनी गई बदलाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार चलाए आपणा हाट, जूठ झूठ जगत वणज वणजारा रिहा कराईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। जन भगतां दर्शन होवे साख्यात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे मंग मंगाईआ। ब्यास कहे दरोही फिरी सृष्ट सबाई ख़लक, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। तेरा नूर नज़र ना आवे किसे उपर फ़लक, धरनी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। इलम आलम पढ़ पढ़ थक्के ये अलिफ़, हरफां वाली वण्ड वण्डाईआ। तेरे नाल सिध्धा दिसे ना किसे तुअल्लक, नाता कूड़ ना कोए तुड़ाईआ। जलवा नूर ना दिसे झलक, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। निवास वेखे ना पिच्छे पलक, ओहले बैठा बेपरवाहीआ। बिरहु विछोड़े अंदर वज्जे कोई ना किलक, वैरागी रूप ना कोए बणाईआ। मन वासना करे इल्लत, सांतक सति ना कोए वरताईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्त तेरे अग्गे सारे करदे मिन्नत, गुर अवतार पैगम्बर सारे बैठे सीस निवाईआ। अन्त अख़ीर साडी रही कोई ना हिम्मत, ताकत सके ना कोए अज़माईआ। जगत खुआरी वेख ज़िल्लत, चार वरन अठारां बरन धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुण्ट दहि दिशा तेरी धार दी इक्को सिम्मत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी प्यारो दे गृह पिण्ड ढुड्डीआं ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे मैं वेखां जगत जहान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सच धर्म दिसे ना कोए निशान, कूड़ कुड़यारा डंक

वज्जे थाउँ थाँईआ। माया ममता होई प्रधान, नाम निधान ना कोए वड्याईआ। जगत विद्या वाला ज्ञान, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। ढोले गाउँदे नाल ज़बान, मन ज़िबह ना कोए कराईआ। झगड़ा प्या हिन्दू मुस्लिमान, मसला हक ना कोए सुणाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, धर्म धुरा ना कोए बणाईआ। ममता वधी पीण खाण, तृष्ना तृप्त ना कोए जणाईआ। बुद्धिवान मूर्ख मुग्ध होए अंजाण, हरस हवस विच लड़ाईआ। भेव खुल्ले ना अञ्जील कुरान, वेद पुराण सार कोए ना आईआ। चार कुण्ट शरअ फिरे शैतान, शरीअत आपणा नाच नचाईआ। जूठ झूठ हो प्रधान, हुक्म आपणा इक्क सुणाईआ। साचा राह दिसे ना किसे नौजवान, बिरध बाल ना कोए समझाईआ। जगत विकार दिसे तुफ़ान, रुढ़दी जाए लोकाईआ। ब्यास कहे मैं होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। गुर अवतार पैगम्बर छड्ड गए आपणी कमान, दर दरबान हो के बैठे सीस निवाईआ। मंगां मंगण अग्गे श्री भगवान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेहर कर मर्द मर्दान, मदद तेरी नज़री आईआ। जीव जंत सर्ब कुरलाण, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। साडा भविक्ख लिख्या कर परवान, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। पूरा कर ब्यान, झगड़ा चुक्के लोकाईआ। निरगुण हो के देवें फ़रमान, आप आपणी दया कमाईआ। तेरा खेल कोई समझ ना सके अंञाण, बुद्धी भेव ना कोए पाईआ। कर किरपा हो आप मेहरवान, महबूब मेहर नज़र उठाईआ।
जन भगतां कर पहिचाण, गुरमुख रंग रंगाईआ। ब्यास कहे मेरे नैण शरमाण, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन लहिणा देणा लेख ना कोए मुकाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान सिँघ दे गृह पिण्ड ढुड्डीआं ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे बिरथा दिसी मणकयां माला तसबी, जटा जूट रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवण नहावण धोवण वाले कसबी, कसबा काया घर ना कोए वसाईआ। विद्या लभ्भ ना सकी हिन्दी उर्दू फारसी अरबी, परदा मात ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी प्रभू तेरा नाम सुणदा रिहा फ़र्ज़ी, अनगिणत गए सुणाईआ। तेरे दर पाउँदे गए सारे अर्ज़ी, बेनन्तीआं विच सुणाईआ। तूं साहिब सुल्तान करदा रिहों आपणी मर्ज़ी, मुरीद गुर अवतार पैगम्बर जगत बणाईआ। खेल खेलदा रिहों आपणे घर दी, घराने ब्रह्मण्ड खण्ड वण्ड वण्डाईआ। कलयुग अन्त कर हमदर्दी, दर्द दीनां नाल वण्डाईआ। कलयुग वेख कला चढ़दी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। तेरा गीत प्रेम वासना कोए ना पढ़दी, जगत ख़ाहिश रही गाईआ। तेरी खेल नरायण नर दी, हरि

निरँकार सच्चे शहिनशाहीआ। जन भगतां साचे सन्तां तृष्ना मेट जगत प्यास जल दी, अमृत आपणा जाम प्याईआ। कूड़ी धार मिटे थल दी, अस्गाह पैंडा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्यास कहे मैं वेखे जगत वैरागी, मोह विछोड़े विच नीर वहाईआ। तेरे नालों हो के बाग़ी, बाग़बान जगत रहे अख्वाईआ। अंदरों हो के दाग़ी, बाहरों करन सफ़ाईआ। सच सुणी ना किसे आवाज़ी, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। समझ आए ना किसे माज़ी, हाल हाल कर के रहे कुरलाईआ। साचा लभ्भे ना कोए नमाज़ी, सजदा सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। रसना जेहवा दे बणे पाठी, अन्तर रंग ना कोए रंगाईआ। नहावण तीर्थ ताटी, सरोवर फेरे पाईआ। मन्दिर चढ़े कोई ना घाटी, पैंडा कूड़ ना कोए मुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। चार वरनां पट्टी दस्से ना कोए इक्क जमाती, अक्खर वक्खर ना कोए दृढ़ाईआ। तेरे नाम दी सुणाए कोए ना साखी, साख्यात दरस ना कोए कराईआ। जेहड़े गुर अवतार पैगम्बर तेरी मन्नदे गए आखी, उन्हां नूं मन्न के आपणा झट लँघाईआ। जगत वड्याई किसे दी दीवाली किसे दी वसाखी, तेरी रमज़ किसे ना भाखी, जिस दी रुतड़ी ना कोए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तन हंढा के गए माटी ख़ाकी, पंज तत नाता जगत जुड़ाईआ। तेरे नाम दी गाथा दस्स के गए साची, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। जगत खेल दस्स के काची, काची गगरीआ फोल वखाईआ। सुनेहड़ा दे के तेरा तेरे नाम दी पाती, पत्रयां वाला पतन गए बणाईआ। तेरी ओट रख पुरख अबिनाशी, नाश आपणा शरीर कराईआ। तूं साहिब सुल्तान सचखण्ड निवासी, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त परम पुरख परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पूरी कर आसी, निरासी धार रहे ना राईआ। ब्यास कहे तूं सब दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम मेट वाटी, पैंडा पन्ध देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव दो जहान तेरी मोड़ सके कोई ना आखी, अक्खीआं तों परे आखर आपणा हुक्म सुणाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड गोसल ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी वेखे लँघदे, नित नित आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार तक्के मंगदे, पैगम्बर झोलीआं डाहीआ। भगत सन्त वेखे काया माटी रंगदे, नाम भबूती ख़ाक रमाईआ। इष्ट देव स्वामी वेखे मन्नदे, जोगी जती ध्यान

लगाईआ। गढ़ हँकारी वेखे भन्नदे, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। प्रकाश तक्के अगम्मी चन्न दे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। संसे वेखे खुशी ग़म दे, राज राजानां खोज खुजाईआ। भण्डारे वेखे अतोट अतुट धन दे, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला परदा दे चुकाईआ। ब्यास कहे जुग चौकड़ी गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहिण कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चला के गए तेरी रीत, लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी तेरी वण्ड वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे गा गा गए गीत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी नाउँ प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा तेरा धाम दस्स के गए अतीत, त्रैभवण धनी तेरा भेव खुल्हाईआ। काया माटी तन वजूद कर के गए ठांडा सीत, अमृत बूँद मेघ स्वांती धुर दी इक्क चुआईआ। मुरदे मुरीद मुर्शद कर के गए सुरजीत, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। झगड़ा मुका के गए हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। सति धर्म दा मार्ग दस्स के गए मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर वण्ड वण्डाईआ। जुग चौकड़ी जगत काल गए बीत, बीती कथा कहाणी सारे रहे गाईआ। अगला भेव दस्से कोए ना ठीक, ठाकर स्वामी मन्न के तैनूं सीस रहे झुकाईआ। कलमयां वाली पढ़न हदीस, हज़रतां सईयदे कर के खुशी बणाईआ। अगला वेला वक्त समझे ना कोए करीब, बेनसीब दिसे लोकाईआ। तेरा खेल निराला अजब अजीब, परदा ओहला सके ना कोए उठाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग किस बिध देवें तरतीब, तरीका आपणा दे समझाईआ। भगत सुहेले उठावें ग़रीब, कोझे कमले अंग लगाईआ। दर्शन देवें साचे नेत्र दीद, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। धुर दे हुक्म दी कर ताईद, नाम इक्को दे समझाईआ। झगड़ा रहे ना कोए द्वैत शदीद, शमां आपणा नाम जगाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, रंग आपणा इक्क वखाईआ। जिस दी गोबिन्द दिती रसीद, सतलुज हथ्थ फड़ाईआ। ग़फ्लत रहे ना कोए नींद, आलस देणा गवाईआ। ब्यास कहे परम पुरख परमात्म तेरे नाम दी गाउँदे गए सारे तौहीद, मम मीत मेरा तेरा तेरा मेरा भेव ना कोए मुकाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दौलत सिँघ दे गृह शेख़पुरा ज़िला कपूरथला ★

ब्यास कहे बेआसा फिरे सारा जग, चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त रिहा कुरलाईआ। कूड़ विकार माया ममता तृष्ना लग्गी अग्ग, अमृत मेघ बूँद सवांत निजर धार ना कोए वहाईआ। तेरी आत्म परमात्म हो अलग, काया माटी तन वजूद ख़ाकी रही कुरलाईआ। जगत क्रिया जूठ झूठ ममता वधी हद्द, दूई द्वैती डेरा कोए ना ढाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीर श्री

भगवान होई हद्द, चार वरन अठारां बरन नेत्र रोवण मारन धाहींआ। घर स्वामी अन्तरजामी परम पुरख परमात्म सके ना कोए सद्द, उच्ची कूक होका हक ना कोए सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पिछले गए लँघ, कलयुग अन्त वेख नूर खुदाईआ। साची सेज सुहञ्जणी दिसे ना कोए पलँघ, निरगुण मेला निरगुण ना कोए कराईआ। हउमे हंगता सृष्टी दृष्टी अंदर वज्जे मृदंग, डंका डौरू शाह सुल्तान रहे वजाईआ। भेव अभेदा खोल्हे ना कोए हँ ब्रह्म, पारब्रह्म तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। मानव जाती साचा जाणे ना कोए धर्म, दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच करन लड़ाईआ। खटका प्या वरन बरन, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सांतक सति ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तूं आदि जुगादि करनी करन, कुदरत दा मालक करता इक्क अखवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी तेरे नाल शब्दी कौल कर के गए प्रन, इकरार धुर दा नाम बणाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त सब नूं बख्श इक्क सरन, सरनगति इक्क दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले सज्जण मीत लगाउणे आपणे चरण, चरणोदक धुर दा अगम्मा जाम प्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म साची तुक पढ़न, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। महल अटल उच्च मनार दरगाह साची सचखण्ड दुआर तेरे वड़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मंज़ल मंज़ल महबूब तेरी मंज़ल चढ़न, चौदां तबक चरणां हेठ दबाईआ। तेरा नूर तेरी धार तेरा सरूप तेरी जोत (वरन), दूजा कन्त ना कोए हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद सच देणा दृढ़ाईआ। ब्यास कहे चार कुण्ट दिसे अन्धेरा, आसा विच ना कोए लोकाईआ। जूठ झूठ लग्गा डेरा, कूड़ी क्रिया डंक वजाईआ। लख चुरासी शौह दरया डुब्बदा दिसे बेड़ा, नईआ नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। तुध बिन हकीकत विच्चों हक करे ना कोए नबेड़ा, लाशरीक शरअ सके ना कोए बदलाईआ। दीन दुनी दाअवे नाल देवे कोई ना गेड़ा, हुक्मे अंदर हुक्म ना कोए बदलाईआ। काया माटी साढे तिन्न हथ्थ पंज तत सरीर वसावे कोए ना खेड़ा, वस्त अमोलक काया गोलक इक्क टिकाईआ। निरवैर निराकार निरँकार तुध बिन कोई नज़र ना आवे नेरन नेरा, दूर दुराडे गुर अवतार पैगम्बर तेरे चरण कँवल बैठे सीस निवाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म उत्ते कर मेहरा, मेहरवान आपणी निगह उठाईआ। तेरा शब्दी सुत योद्धा सूरबीर बहादर धुर दा अगम्मी शेरा, जिस दी भबक ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान रवि ससि विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर झल सके कोए ना राईआ। जोती जाते पुरख बिधाते जोत सरूप तेरा कल कल्की अगम्मड़ा वेस निरवैर निराकार फेरा, आउँदा जांदा दो जहान नज़र किसे ना आईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह बेनज़ीर शाह हकीर लाशरीक तेरा भेव पावे केहड़ा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी लेखा लिख सके ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे चरण

१८२ २०

कँवल शब्दी जोती धार ला के डेरा, गृह धुर दा रहे सुहाईआ। ब्यास कहे पुरख अकाल दीन दयाल दर्द दुख भंजन कलयुग अन्त श्री भगवन्त धरत मात सति धर्म दा खुल्हा कर वेहड़ा, कूड़ी क्रिया जगत विकार जूठ झूठ धरनी धरत धवल उत्तों बाहर कढाहीआ। ब्यास कहे बेआसा होई जगत सुरती, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। नज़र ना आए जोत अकाल मूर्ती, मूर्त सूरत सच ना कोए समझाईआ। बिन कन्नां सरवण नाद सुणे ना कोए धुर दा तूरती, तुरीआ तों अग्गे तेरा भेव ना कोए खुल्हाईआ। साची रमज़ ना कोई जाणे शब्द सतिगुर दी, तत्तां वाले सरीर मन्न के आपणा झट लँघाईआ। तेरा हुक्म तेरा फ़रमान तेरा नाम निधान बाणी धुर दी, जगत अक्खरां मिले ना कोए वड्याईआ। कुछ खेल गोबिन्द अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर बैठा डेरा लाईआ। मन बुद्धी जगत विद्या जित्थे समझ विच ना उपड़दी, आकल अकल चले ना कोए चतुराईआ। जिस गृह कोई धार अलिफ ये अक्खर ना उकरदी, हिन्दसयां वाला हिन्दसा ना कोए बणाईआ। ओथे खेल पुरख अकाल तेरे शब्द पुत्तर दी, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। उस दी धार आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतारां पैगम्बरां अंदर उतरदी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे दिशा इक्को रंग वखाईआ। साची खेल दस्से तेरे शुकराने शुकर दी, खुशीआं विच रुचीआं दए दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं घड़ी सुहञ्जणी थित वार नहीं मुकरन दी, मुकम्मल आपणा हुक्म दे वरताईआ।
ब्यास कहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो मेरी आसा होई पुछण दी, बेनन्ती तेरे अग्गे दिती सुणाईआ। अग्गे लोड़ नहीं निरवैर पुरख तेरे लुकण दी, पड़दे ओहले दीन दुनी दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धार नहीं रुकण दी, भाणे अंदर भाणा इक्क वरताईआ।

१८३
२०

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरदयाल सिँघ दे गृह कपूरथला ★

ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी दिवस माह वेखे बरख, घड़ी पल खोज खुजाईआ। चिन्ता ग़म मिटया हरख, सोग विच जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखे जो रहे तड़प, जुदाई विच देण दुहाईआ। भगत सन्त रहे भटक, अन्तर अन्तर ख़ाहिश रखाईआ। जोगी जती रहे लटक, आप आपणा भेंट कराईआ। तेरा हुक्म मन्नदे रहे सख्त, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। जुग जुग तेरे हुक्म दा वेंहदा रिहा कटक, कटड़े सतिजुग त्रेता द्वापर रिहा खपाईआ। अग्गे सक्या ना कोए अटक, ज़ोर बल ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख सुहावणा वक्त, ध्यान तेरे चरण लगाईआ। किरपा कर अबिनाशी फ़कत, फ़िकरा आपणा दे सुणाईआ। निरगुण नूर होवे दरस, दर्शन तेरा इक्को पाईआ। मेहरवान हो के कर तरस, मेहर

नज़र उठाईआ। हालत वेख उत्ते फर्श, अर्श पैंडा आप मुकाईआ। सति धर्म होया ग़रक, कूड़ कुड़यार डंक वजाईआ। आत्म परमात्म मिटे कोए ना फ़र्क, फ़िकरा सच ना कोए सुणाईआ। सदी चौधवीं सारे कीते तरक, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। निरगुण निरवैर वेख परत, पत्तन बैठे ध्यान लगाईआ। कौल इकरार पूरी कर शर्त, शरअ ज़ंजीर दे कटाईआ। शरअ छुरी रहे ना करद, कदम आपणे दे वखाईआ। ममता मोह मेट गर्द, गर्दश जगत दे बदलाईआ। बेनन्ती मन्ज़ूर कर अरज़, सच दवारे दिती सुणाईआ। भगत उधारना तेरा फ़र्ज़, फ़ैसला आपणा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन होवे ना कोए नापड़द, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह कपूरथला ★

ब्यास कहे मैं जल धार वहिणां विच हो के रिहा वगदा, दिवस रैण भज्जया वाहो दाहीआ। तेरा नूर जहूर सन्तां भगतां अंदरों रिहा लभ्भदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। उच्ची कूक कूक बिरहों वैराग अंदर रिहा सद्दा, होका तेरा नाम जणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखदा रिहा कद दा, कदीम तों कुदरत दे मालक तेरा राह तकाईआ। जगत नगारा सुणदा रिहा सरगुण धार नद दा, निरगुण निरवैर निरँकार तेरी धुन ना कोए उपजाईआ। कलयुग अन्तिम वेख किनारा सदी चौधवीं हद्द दा, डण्डावत बन्दना कर के सीस निवाईआ। वेला वक्त सुहञ्जणा होया सबब दा, साहिब सुल्तान दए वड्याईआ। कलयुग नशा मेट कूड़ खुमारी मदि दा, दीन दयाला जाम प्याईआ। समाज बदल दे दीन दुनी जग दा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कूड़ अंग्यारा तपया ना रहे अग्ग दा, अमृत मेघ दे बरसाईआ। लेखा मुका दे जन भगतां नाल रहिणा अलग्ग दा, जुग जन्म दे विछड़े लै मिलाईआ। पूरब लेखा वेख शब्दी धार गोबिन्द पग्ग दा, पग बख्श सच सरनाईआ। तूं नूर इलाही धुर दरगाही रब्ब दा, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। झगड़ा मुका जीव अल्पग दा, सरबग दया कमाईआ। खेल वखा आपणा झब्ब दा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हँकार तुट्टे मन वासना हद्द दा, हमसाजण हो के दे समझाईआ। कूड़ी क्रिया तेरा नाम खण्डा बध्ध दा, खड़ग इक्को लै चमकाईआ। तेरी कीती करनी कोए ना रद्द दा, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख खेल कलयुग धार अज्ज दा, पिछला झगड़ा दे गवाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ सुखदेव सिँघ दे गृह कपूरथला ★

ब्यास कहे बेआसे होए पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड, दो जहान ध्यान लगाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट रखाईआ। दीन दुनी चाढ़ साचा रंग, आत्म परमात्म आपणी धार समझाईआ। नाम भण्डारा रहे मंग, वस्त अमोलक दे वरताईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात राउ रंक होया तंग, तंगदस्ती दे तुड़ाईआ। माया ममता जगत मारनी मारे कोए ना डंग, विख अमृत रूप दे बणाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां कट भुक्ख नंग, नाम ओढण शब्द सीस आपणा आप टिकाईआ। अमृत सरोवर वहा साची धार गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जिस नूं वेख के सोभा पाईआ। काया माटी अंदर सच प्रीती दे अनन्द, रस आपणा आप वखाईआ। सुरती शब्दी धार जोड़ अगम्मे तन्द, एथे ओथे दो जहान होए ना कदे जुदाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी रही लँघ, ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार कहिण पुरख अकाल वजा इक्क मृदंग, नाम डंका राउ रंकां दे सुणाईआ। शरअ शरीअत दूई द्वैत भरमां ढाह कंध, हँ ब्रह्म परदा दे चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स छन्द, साचा सोहला इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड मंगण धुर दी दात, नाम निधाना दे वरताईआ। धरनी धरत धवल कहे मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन कहिण दे अगम्मी नाम सौग़ात, धुर दा कलमा दे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म दस्स आपणी ज़ात, नजात कूड़ी क्रिया कोलों दवाईआ। तेरे मिलण दी सारे रखण ख़ाहिश, अबिनाशी करते पारब्रह्म परवरदिगार आपणा मेला लैणा मिलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तैनूं करे तलाश, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत साध सन्त खोजण थाउँ थाँईआ। बिन तेरी किरपा साचा मिले किसे ना साथ, पिछला अगला संग ना कोए बणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरे होए दास, सेवक हो के साची मंग मंगाईआ। वेला वक्त जगत सुहञ्जणा कर रास, रस्ता वाबस्ता हो के दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दे इक्क प्रकाश, परकाशित होवे सर्ब लोकाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी अमृत कौर दे गृह जेल गारडन कपूरथला ★

ब्यास कहे तेरा खेल वेख्या श्री भगवन्त, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। तेरी याद विच तड़पदे गए

सन्त, दिवस रैण लोकमात कुरलाईआ। मेल मंगदे गए धुर दे कन्त, साहिब सुल्तान तेरी ओट रखाईआ। नाम पढ़ के मणीआं मंत, मंत्र तेरा मुख रखाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हरि हिरदे विच वसाईआ। प्यार कर के जीव जंत, जुगत जगत गए वखाईआ। तेरे दवारे दे बण के पंडत, सिख्या शब्द नाद शनवाईआ। झगड़ा मुका के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज मंग मंगाईआ। तेरे दवारे दे बण के मंगत, भिच्छया मंगण थाउँ थाँईआ। नाम निधान चाढ़ रंगत, रंग रंगीले बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा कर अन्त, अन्तश्करन सब दा फोल फुलाईआ। कूड़ विकार वध्या अगणत, गिणती सके ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ब्यास कहे साची दिसे कोए ना नईआ, नौका पार ना कोए लँघाईआ। नाता तुटया भैण भईआ, पिता पूत मेल ना कोए मिलाईआ। साचा लेखा लिखे ना कोए धुर दी वहीआ, राए धर्म दा मूल ना कोए चुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा साचा सज्जण मिले ना कोए सईआ, साथी संग ना कोए रखाईआ। बुल्ले वांग गाए कोई ना दहीआ दहीआ, दहि दिशा रही कुरलाईआ। गोबिन्द दा पूरा होया ढईआ, बरख बैठे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे जणाईआ। साचा हुक्म दस्सदे आप, पुरख अकाल दया कमाईआ। श्री भगवान सृष्टी दा वेख पाप, दीन दुनी दए दुहाईआ। साचा भुल्लया सब नूं जाप, राग जगत वाले गाईआ। रसना दा लैण स्वाद, आत्म रस तेरा नाम ना कोए चखाईआ। विकारां विच रहे जाग, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। हँस होए काग, जूठ झूठ मुख रखाईआ। दुरमति मैल धोवे कोई ना दाग़, पतित पुनीत आपणा आप ना कोए बणाईआ। बिन तेरी किरपा किसे घर ना लग्गे भाग, गृह मन्दिर ना कोए वड्याईआ। तूं भगत उधारे जुगादि आदि, जुग चौकड़ी होएं सहाईआ। कलयुग अन्त बदल दे समाज, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को हुक्म सुणाईआ। मनसा मन ना रहे विवाद, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। हर हिरदे विच पारब्रह्म बख्श आपणी याद, झगड़ा मुके जगत लोकाईआ। तैनूं नबी रसूल गुरू अवतार पैगम्बर कहिण (वाहिद), एकँकार इक्को इक्क अख्वाईआ। जिस ने साजण ल्या साज, विष्न ब्रह्मा शिव आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां रख लाज, जो दिवस रैण साचे नैण तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा मेला सच दवारे कन्त सुहाग, साजण हो के सगला संग बणाईआ।

★ ११ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ जसवन्त सिँघ दे गृह चरखड़ी महल्ला करतारपुर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं प्रभ दा हुक्म सुणया अन्त बीसा, बीस बीसा दए गवाहीआ। छत्र रहे ना किसे सीसा, शत्रु बणे जगत लोकाईआ। साचा कलमा पढ़े ना कोए हदीसा, हज़रत हरि ना कोए मिलाईआ। झगड़ा रहे ऊँचां नीचां, ज़ात पात दए दुहाईआ। ग़रीब निमाणे मारन चीकां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। भगत सुहेले रखण उडीकां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा पए दीन मज़्हब विच शरीकां, शिरक्त सके ना कोए मिटाईआ। बदल जाण दीन दुनी दीआं नीतां, नीतीवान अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। वड्याई रहे ना शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता, चार कुण्ट दए दुहाईआ। मुहब्बत रहे ना राम सीता, काहन कृष्न बैठे मुख बदलाईआ। काग़ज़ां उत्ते तेरे प्यार दीआं लभ्भे कोए ना लीकां, लाईन पट्टी सच ना कोए पढ़ाईआ। साजण दिसे कोई ना मीता, मीत मुरारा अंग ना कोए लगाईआ। चरण कँवल रखे ना कोए प्रीता, प्रीतम परवरदिगार सांझा यार दरस कोए ना पाईआ। शाह सुतलानां राज राजानां जीव जहानां साचे नाम तों ख़ाली होवे ख़ीसा, माया ममता मोह होवे हल्काईआ। नाम निधान श्री भगवान निजर रस जगत जुगत ना जाए पीता, तृष्ना मात ना कोए मिटाईआ। पिछला वेला वक्त सारे याद करन बीता, अगला भेव ना कोए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया पंज तत चार वरन तपे अंगीठा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मन विकारी कौड़ा होवे रीठा, रसीआ रस अनरस ना कोए चुआईआ। अन्त अख़ीर सब नूं भुगतणा पए आपणा कीता, करनी दा करता कुदरत दा मालक सृष्टी दा प्रितपालक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म पतपरमेश्वर तेरी आशा इक्क रखाईआ। ब्यास कहे मैं रोंदा तक्कया जगत, जगजीवण दाता मेल ना कोए मिलाईआ। वक्त सुहजंणा समझे ना कोई फर्श, अर्श पन्ध ना कोए मुकाईआ। बिन तेरी किरपा मेटे कोई ना हरस, हवस सके ना कोए बुझाईआ। लख चुरासी विच्चों राह तक्कण थोड़े तेरे भगत, बहु ख़लक भरम विच भुलाईआ। जिन्हां कारण निरगुण निरवैर निराकार निरँकार हो के आयों परत, पतपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। चार जुग दी शरअ शरीअत विच्चों पूरी कर शर्त, गुर अवतार पैगम्बर खुशी मनाईआ। तेरे हुक्मे अंदर कदे ना आवे फ़र्क, फिरके कूड़े दे गवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर तरक, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। सच दवारे तेरे इक्को अरज़, बेनन्ती दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां तेरे कोल फ़रद, पूरब लेखा सब दा वेख वखाईआ।

१८७
२०

ब्यास कहे कोटन कोटि जुग रिहों बणाउँदा, समां समें नाल बदलाईआ। लख चुरासी घाड़त रिहों घड़ाउँदा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वण्ड रिहों वण्डाउँदा, चारे खाणी नाउँ प्रगटाईआ। भेव अभेदा रिहों खुल्हाउँदा, शब्द अगम्मी हुक्म जणाईआ। निरगुण सरगुण हो के रिहों आउँदा, गुर अवतार पैगम्बर खेल खिलाईआ। नाम निधान रिहों समझाउँदा, निरअक्खर अक्खर धार वखाईआ। धुर दा जाप रिहों जपाउँदा, रसना जेहवा बत्ती दन्द हिलाईआ। परदा ओहला रिहों चुकाउँदा, काया माटी खोज खुजाईआ। सन्त सतिगुर रिहों वड्याउँदा, भगत वछल बेपरवाहीआ। जोती नूर रिहों चमकाउँदा, दो जहानां कर रुशनाईआ। श्री भगवान रिहों अख्वाउँदा, आप आपणा नाम समझाईआ। अन्त कन्त हो के सब नूं रिहों मिलाउँदा, वेखें थाउँ थाँईंआ। चौकड़ी जुग पार लँघाउँदा, हुक्म हाकम हो वरताईआ। जो घड़या भन्न वखाउँदा, ढाह ढेरी ख़ाक बणाईआ। आपणा रंग रिहों रंगाउँदा, उजड़यां दे वड्याईआ। साधां सन्तां रिहों तरसौंदा, जगत जंगलां विच फिराईआ। पूजा पाठ रिहों कराउँदा, लारयां विच इशारे रमज़ नाल लगाईआ। तीर्थ तटां रिहों नव्हाउँदा, साचे कन्ढे दे वड्याईआ। जाम सीर रिहों पलाउँदा, अमृत रस बणाईआ। अंदरों विख रिहों कढाउँदा, सच सुच्च इक्क समझाईआ। साचा मन्दिर रिहों सुहाउँदा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। ज्ञान उपदेश रिहों सुणाउँदा, शास्त्र सिमरत वण्ड वण्डाईआ। धुर दा लेखा रिहों लिखाउँदा, बण कातब कलम चलाईआ। सब दा माण रिहों गवाउँदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। आपणा नाम रिहों वरताउँदा, सच भण्डारा इक्क दरसाईआ। साचा मार्ग रिहों लाउँदा, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। भविख्तां विच रिहों लिखाउँदा, आप आपणा परदा लाहीआ। ब्यास कहे उह वेला वक्त नज़री आउँदा, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। क्यों नहीं आपणा खेल खलाउँदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। भगत सुहेले क्यों तरसौंदा, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ। आसा मनसा क्यों नहीं पूर कराउँदा, अमावस रैण अन्धेरा दे गवाईआ। सच दवारे मंग मंगाउँदा, मागत हो के झोली डाहीआ। इक्को तेरा ढोला गाउँदा, गहर गम्भीर नाम सालाहीआ। नेत्र नैण ना अक्ख शरमाउँदा, सनमुख हो के दयां दुहाईआ। खुल्ली मींढी क्यों नहीं सीस गुंदाउँदा, कन्त सुहागी नज़री आईआ। साचा दर दुआर एकँकार क्यों छुपाउँदा, बिन छप्पर छन्न दे जणाईआ। जित्थे निरगुण जोती दीप जगाउँदा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। इक्को एक डगमगाउँदा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अगम्म अथाह आप अख्वाउँदा, अलख अगोचर शहिनशाहीआ। साची करनी कार कमाउँदा, कुदरत दा मालक आप हो जाईआ। शब्दी सुत इक्क उठाउँदा, दो जहानां वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर

कलयुग डेरा ढाउँदा, बणया रहिण कोए ना पाईआ। ब्यास कहे तेरे ठांडे दर सीस निवाउँदा, झुक झुक लागां पाईआ। नित तेरा राह तकाउँदा, सम्मत सोलां दए गवाहीआ। बेआस रहिण कोए ना पाउँदा, जो तेरे चरण ध्यान रखाईआ। जुग चौकड़ी तेरी सेवा रिहा कमाउँदा, भज्जया वाहो दाहीआ। पत्तण तट किनार रिहा वड्याउँदा, वड्डे छोटे जोड़ जुड़ाईआ। अन्तिम ढहि के सीस निवाउँदा, चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बिन तेरे भगतां मेरा साथी नज़र कोए ना आउँदा, नज़र जगत लई बदलाईआ। बेआस कर के जगत जहान गाउँदा, स्वास विच ना कोए समाईआ। अन्तश्करन अन्तर कोए ना वेख वखाउँदा, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। चार जुग दी भुल्ल ना कोए बख़्शाउँदा, बख़्शिश रहमत ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच बेनन्ती वार अनन्ती तेरे दर सुणाउँदा, सुत्तयां लैणा जगाईआ।

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिँघ दे गृह करतार पुर ★

ब्यास कहे मैं वेख्या लैहन्दा चढ़दा, पहाड़ दक्खण ध्यान लगाईआ। जगत जहान तेरा सड़दा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। कूड़ विकार विच तपदा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। माया नागणी रूप धरया डस्सणे सप्प दा, विख घर घर दिती बणाईआ। जगत भण्डारा भरया पाप दा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। लेखा मुकया रूह बुत्त पाक दा, पवित्र नूर ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या पुतला माटी ख़ाक दा, भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। नाता रिहा ना सच इत्तफाक दा, मुहब्बत मेल ना कोए कराईआ। नाता जुड़या कूड़ निफ़ाक दा, निसफ़ तों बहुते तैनूं गए भुलाईआ। वेला रिहा ना धुर इख़लाक दा, ख़लक ख़ाली नज़री आईआ। परदा बन्द ना खुल्ल्ह्या ताक दा, जगत अन्धेरा गया छाईआ। वेला वेख गोबिन्द भविख्त वाक् दा, बिन अक्खरां गया लिखाईआ। सुहञ्जणा वक्त ना रिहा प्रभात दा, संध्या कूड़ दए दुहाईआ। मुल्ल प्या ना लिख्त लिखी कलम दवात दा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अगला खेल किसे ना भाखदा, भाषा विच ना कोए जणाईआ। पंडत पांधा पत्री विच कोए ना वाचदा, वाचक ज्ञानी ना कोए समझाईआ। जगत नाता ना रिहा किसे चाक दा, चाकरी चाकरां विच गवाईआ। इख़लाक ना रिहा किसे किताब दा, करतब सच्चा गए भुलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेला दिसे अज़ाब दा, सिर दे हथ्थ ना कोए अटकाईआ। जगत सन्तां वक्त मिल्या ना कोई मुलाकात दा, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। अन्तिम वेला सब दा आया वफ़ात दा, मढ़ी गोर

१८६
२०

नाल कुड़माईआ। लहिणा मेटे ना कोई नजात दा, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। ब्यास कहे मैं रो रो अन्तिम आखदा, आख़र दयां दुहाईआ। बिन तेरे भगतां तेरे नाल मिल्या कोई ना जापदा, जप जी पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। अगला वेला तेरा प्रताप दा, गुरमुख पूत सपूते गोद उठाईआ। तेरा वहिण गहण पुरख अकाल कोई ना नापदा, मैनूं पैमानयां विच रखाईआ। एह बचन मेरा गुस्ताख़ दा, ब्यास दोए जोड़ के सीस निवाईआ। बिन तेरी किरपा जुग चौकड़ी दा पिछला लेखा किसे ना भाखदा, परदा सके ना कोए उठाईआ। मैं सदा भरया तेरे प्रेम प्यार दी आस दा, आसा विच आपणा झट लँघाईआ। हुण तेरा वक्त कयास दा, किस्मत साडी दे बदलाईआ। परदा खोलू आपणे आप दा, जलवा नूर कर रुशनाईआ। नाम दस्स आपणे जाप दा, आत्म दा मालक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सद मेला कर विछोड़े विच्चों मिलाप दा, मिल के विछड़ कोए ना जाईआ।

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ नगीना सिंघ दे गृह माडल हाऊस जलन्धर ★

गुरमुख अरज़ होवे मन्ज़ूर, जन भगत दो जहान मिले वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब गुणां भरपूर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मेहरवान हो के महबूब अन्तर निरंतर देवे अगम्मा नूर, जोती जाता जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी अनहद वजावे तूर, तुरीआ तों अगला परदा दए उठाईआ। नाता तोड़ माया ममता कूड़, विकार हँकार दए गवाईआ। नाम खुमारी चाढ़ सच सरूर, सुरती साचे शब्द मिलाईआ। कोट जन्म दे बख़्श कसूर, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। बिन चरणां तों बख़्श साची धूढ़, धूल मस्तक दए लगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मनुआ चले ना कोए चतुराईआ। जिधर वेखण नज़र आए हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा हज़रत धुर दरगाहीआ। गुरमुखां दा सदा मकरूज़, जुग चौकड़ी देवणहार हो जाईआ। जिस दा महल अटल उच्च अरूज, अर्शी प्रीतम नूर खुदाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला निरगुण निरवैर मौजूद, मुफ़लिस आपणी गोद उठाईआ। पंच विकारा कर नेस्तोनाबूद, धुन अनादी आत्मक राग सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन विच्चों रखे महिफ़ूज़, शरअ शरीअत छुरी करद कत्लगाह ना कोए बणाईआ। दीन मज़्ब दी रहिण ना देवे हदूद, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव अभेदा दए खुलाईआ। हक वखाए मंज़ल मक्सूद, सच दवारा इक्क सुहाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त करे हज़ारा दरूद, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा ढोला गाईआ। सो साहिब सुहेला गुरमुख आपणी गोद उठाए पूत, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। कलयुग अन्त सुहञ्जणी करे रुत्त, रुतड़ी आपणे

नाल महकाईआ। वेखणहारा अबिनाशी अचुत, चेतन जड़ खोज खुजाईआ। आपणी धारों पए उठ, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेखे थाउँ थाँईंआ। सूफ़ी सन्तां उत्ते जाए तुठ, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी दया कमाईआ। परदा ओहला रहिण ना देवे लुक, दूई द्वैती लेखा दए चुकाईआ। शब्द निशाना तीर कदे ना जावे उॅक, अणयाला बिन चिल्ले कमान आप चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान दस्स के तुक, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जन्म जन्म दा रहिण ना देवे कोई दुःख, लख चुरासी जम की फाँसी दए कटाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। लटकणा पए ना उलटा रुक्ख, माया वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साहिब सतिगुर शब्दी धार आपणी गोदी लए चुक्क, एकँकार आपणे घर वसाईआ। एथे ओथे मेट के तृष्ना भुक्ख, सांतक सति दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर सज्जण आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत पूरी होए आसा, मनसा आपणे विच मिलाइंदा। मेहरवान हो पुरख अबिनाशा, दीन दयाल दया कमाइंदा। चरण कँवल उपर धवल दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा मेट मिटाइंदा। शब्द नाद वजा अनादा, अगम्मी राग सुणाइंदा। अमृत निजर धार बख्श बाटा, बूँद स्वांती मुख चुआइंदा। जन्म जन्म दा पूरा घाटा, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण देवे साथा, सगला संग आप बणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के साची गाथा, गहर गम्भीर आपणा नाम जपाइंदा। दरगाह साची जोड़ के नाता, बिधाता आपणे घर वसाइंदा। कलयुग अन्त मेट अन्धेरी राता, निरगुण नूरी चन्द चमकाइंदा। जिन्ह़ां पुरख समरथ मन्नया आखा, आख़र आपणे विच टिकाइंदा। जुग चौकड़ी सिफ्तां वाला रह जाए साका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्खरां नाल प्रगटाइंदा। लेखे ला के तन वजूद माटी ख़ाका, ख़ालस आपणा रूप दरसाइंदा। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां देवणहार दलासा, समरथ सिर हथ्थ आपणा आप टिकाइंदा। करवट विच कदे ना बदले पासा, सनमुख हो के सोभा पाइंदा। मानस जन्म चुरासी विच्चों करे रहरासा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाइंदा। नाम भण्डार एकँकार देवे धुर दी दाता, दानी हो के आप वरताइंदा। मार्ग दस्स इक्को साचा, ऊँच नीच राउ रंक राह इक्क समझाइंदा। भाग लगाए काया माटी काचा, कंचन गढ़ आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाइंदा। जन भगत बेनन्ती लाए लेखे, लेखा अगला दे बणाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां कढ्ढे भरम भुलेखे, कूड़ विकार डेरा ढाहीआ। जुग जन्म दे विछड़े रखे चेते, लख चुरासी विच्चों आपणे नाल मिलाईआ। दर्शन देवे नेतन नेते, निज नैण करे रुशनाईआ। इक्को

घर बणाए सौहरे पईए पेके, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर देवे माण वड्याईआ। सच प्रीत जो साहिब स्वामी करे भेंटे, भठ्ठ खेड़ा रहिण कोए ना पाईआ। हरिजन साचे पुरख अकाल दे धुर दे बेटे, जिन्हां पिच्छे निरगुण निरवैर आपणा फेरा पाईआ। बिन अक्खां बिन लोइन बिन नैण दो जहानां वाली वेखे, वक्खरी आपणी धार समझाईआ। सन्त उधारना आदि जुगादि जिस दे पेशे, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। वसणहारा दरगाह साची सचखण्ड देसे, देस देसन्तर खोजे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे परदा ओहला दए चुकाईआ। जन भगत बेनन्ती रही हस्स, खुशीआं ढोले गीत गाईआ। मैनूं मन्जूर करे पुरख समरथ, दूसर अग्गे सीस ना कदे झुकाईआ। जिस गुर अवतार पैगम्बर सुणाई आपणी गथ, सोहले ढोले रागां नादां कर वड्याईआ। सो मार्ग सच स्वामी अन्तरजामी हो के रिहा दस्स, दहि दिशा परदा ओहला दए चुकाईआ। आदि जुगादी एका एकँकार वसे सच, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी नज़री आईआ। लूं लूं अंदर रिहा रच, रचना वेखे सर्ब लोकाईआ। सर्ब व्यापक पारब्रह्म पति परमेश्वर कमलापति, पतित पावन आपणी दया कमाईआ। जन भगतां जाणे मित गत, अंदर बाहर खोज खुजाईआ। लेखे लावे बूँद रत्त, रक्त आपणे रंग रंगाईआ। जिन्हां दे अंदर गया वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों देवे कढ्ढ, इष्टी इक्को सोभा पाईआ। नाम निधान श्री भगवान शब्द अगम्मी ला के सट्ट, सोई सुरती लए जगाईआ। सच वखा के इक्क हट्ट, नाम भण्डार दए वरताईआ। झगड़ा रहे ना किसे तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरती जन भगतां चरणां हेठ छोह के आपणी आसा पूर कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा ढोला सोहला राग नाद गीत रही रट, उच्ची कूक कूक आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रही सुणाईआ। सो भगतां वल्ल नीवीं कर के तक्के अक्ख, उपर अक्ख ना कोए उठाईआ। जिन्हां दा मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतपरमेश्वर पुरख समरथ, समें दा सज्जण नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहानां हो मेहरवाना महबूब मुहब्बत विच लए रख, घर साचे आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच घराना श्री भगवाना सचखण्ड दवारा इक्को इक्क वखाईआ। जन भगत बेनन्ती कहे मैनूं मिल्या पुरख अथाह, अगम्म अगम्मड़ा नज़री आईआ। जिस दा जुग चौकड़ी तक्कदी रही राह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नैण उठाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे गा, गुर अवतार पैगम्बर निउँ निउँ लागण पाईआ। जुग चौकड़ी भज्जण वाहो दाह, दिवस रैण घड़ी पल आपणा पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर धरनी धरत धवल वेखण थल अस्गाह, जल थल महीअल आपणी कार कमाईआ।

सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां मिल्या सहिज सुभा, सुबह शाम वक्त वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर नूर खुदा, ख़लक दा ख़ालक मालक नूर इलाहीआ। सो होवे ना कदे जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। हरिजन साचे दस्से धुर दा एका नाँ, नग़मा कलमा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहब्बत विच महबूब होवे मेहरवां, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जन भगतां जुड़े धुर दा नाता, मन चंचल ना कोए चतुराईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी राता, सतिगुर साचा शब्द करे रुशनाईआ। रूह बुत्त दोवें होवे पाका, पतित पुनीत करे सफ़ाईआ। काया मन्दिर अंदर घर ठाकर स्वामी परम पुरख मिले आका, जित्थे अकल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। घर मन्दिर गृह महल अटल मुनार वखाए ठांडा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जो सतिगुर हुक्म शब्द शब्द हुक्म सच कमांदा, करनी दी कीमत आपे लए पाईआ। लख चुरासी विच गेड़ ना कोए भवांदा, जन्म जन्म वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साहिब सतिगुर आपणा मेल मिलांदा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण आत्म परमात्म प्रेम प्यार मुहब्बत दा नूर रखे सांझा, दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच शरअ वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह जलन्धर ★

ब्यास कहे पुरख अकाल तेरे वेखे खेल तमाशे, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गुर अवतार कर के गए अरदासे, पैगम्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। निरगुण धार सरगुण मंगदे गए साथे, चरण कँवल मंग सरनाईआ। याद विच गाउँदे गए स्वासे, साह साह ध्याईआ। तेरे मन्नदे गए आखे, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। निरअक्खर धार विच्चों अक्खर लिख के गए गाथे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोड़ के गए नाते, काया माटी तन वजूद जगत हंढाहीआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वड्डे छोटे हुक्मे अंदर वण्डदे गए इलाके, अल्लाह वाहिगुरू राम कृष्न तेरा नाम समझाईआ। दीन दुनी विच चलाउँदे गए साके, साख्यात आपणी खेल वखाईआ। अन्तिम दोवें जोड़ के हाथे, दर तेरे ठांडे सीस निवाईआ। दरवेश हो के मंगदे रहे अगम्मी हाटे, सच दवारे झोलीआं डाहीआ। बिन तेरी किरपा दो जहानां कोई ना राखे, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए सहाईआ। भविख्तां विच लिख्तां विच तेरे लिखदे गए

साके, भेव अभेदा जगत खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़दे गए नाते, माया ममता मोह मिटाईआ। तेरा नाम निधान अन्तर निरंतर इक्को भाखे, भाषा जगत गए बदलाईआ। चरण प्रीती रख विश्वासे, विषयां दा डेरा गए ढाहीआ। बोल बोल के गए साचे, सुच संजम इक्क दृढ़ाईआ। भाग लगा के गए काया माटी काचे, कंचन गढ़ सुहाईआ। जगत बुझाउँदे गए आंचे, आंचल अग्न ना कोए लगाईआ। सब दी करदे रहे पड़ताल जाचे, याचक हो के सेव कमाईआ। भेव अभेदा खोल्हदे रहे पुरख अबिनाशे, अबिनाशी करते तेरा हुक्म सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जगत गए नाठे, थिर रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चार कुण्ट दहि दिशा चीथड़ दिसे पाटे, पीत पीतम्बर ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। दुरमति मैल निरवैर हो कोए ना काटे, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मंज़ल पन्ध मुके किसे ना वाटे, लख चुरासी सृष्टी दृष्टी अंदर भज्जे वाहो दाहीआ। बिन तेरे सदी चौधवीं लहिणा मुकाए कोई ना बाके, हिसाब किताब हक ना कोए समझाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा खेल समझया हासे, हस्ती मस्ती विच अर्शी रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख आपणा घर, सच दुआर परदा आप उठाईआ। ब्यास कहे तेरे दर ते वेखे मंगते, विष्न ब्रह्मा शिव झोलीआं डाहीआ। निरगुण धार आपणा आप वेखे रंगदे, सरगुण गुर अवतार पैगम्बर खुशी मनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे लँघदे, कलयुग वारी अन्तिम आईआ। झगड़े होए दीन दुनी दीन मज़्हब बन्द दे, बन्दगी हक ना कोए दृढ़ाईआ। भुलेखे गढ़ टुट्टे ना हउमे कंध दे, दूई द्वैत ना कोए मिटाईआ। सच प्रकाश दिसे ना नूरी चन्द दे, सूर्या चन्द कम्म किसे ना आईआ। रस मिले ना अगम्मी अनन्द दे, रसना जेहवा खा खा थक्की जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी दर तेरे आस रखाईआ। ब्यास कहे मैं दस्सां की की हाल, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। साहिब सतिगुर मिले ना किसे दयाल, प्रितपालक ना कोए सहाईआ। साची घाले कोई ना घाल, कूड़ कुकर्म करन कुड़माईआ। त्रैगुण तोड़े ना कोई जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। मुरीदां पुछे कोई ना हाल, मुर्शद अंग ना कोए लगाईआ। कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे ताल, सति धर्म बैठा मुख छुपाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डंक नगारा रिहा वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे अग्गे रख के गए सवाल, चार जुग दी बाणी दए गवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लैणा संभाल, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरी झोली पाईआ। हउँ बाले नढ्ढे तेरे नन्न्हे नन्न्हे बाल, हुक्मे अंदर लोकमात हुक्मी सेव कमाईआ। सार पाशा दीन मज़्हब दी दस्सदे आए चाल, लेखा तेरा नाउँ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। ब्यास कहे मैं वेख्या जगत कूड़ कुड़यार, चार वरन अठारां बरन धीरज धीर ना कोए धराईआ। साचा मिले ना किसे मीत मुरार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए खुआर, नव सत्त ना कोए वड्याईआ। परदा ओहला बण विचोला काया चोला सके ना कोए उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण तेरा नूर करे ना कोए रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिख्या दे दे गए हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सदी चौधवीं दर तेरे ठांडे करन पुकार, बीस बीसा नाल शहादत रिहा भुगताईआ। सब दे अन्तर निरंतर विसरया करतार, कुदरत दा मालक करनी दा करता कादर बैठा मुख छुपाईआ। माया ममता मोह विकार हर घट दिसे हँकार, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। बिन भगतां तेरा बणे ना कोई मीत मुरार, तेरी सृष्टी दृष्टी विच्चों तैनूं बैठी भुलाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्त श्री भगवन्त पा सार, साजण हो के आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लै उभार, गुरमुख आपणे अंग लगाईआ। दीनां अनाथां दुखियां दर्द दे निवार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरा निरगुण रूप आउणा होवे विच संसार, जुग चौकड़ी तेरी नित नवित सदा सद आस रखाईआ। एसे कारण गुर अवतार पैगम्बर तेरा कर के गए इज़हार, निहकलंक कल कल्की अवतार, अमामां दा अमाम बेपरवाहीआ। जिस दी कोई ना पावे सार, जगत नज़र ना तक्के संसार, भेव अभेदा सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा हुक्म इक्क सिक्दार, सच सिक्दारी दो जहान नर निरँकार तेरी नज़री आईआ।

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरदयाल सिँघ दे गृह जलन्धर ★

ब्यास कहे जुग चौकड़ी खेल वेख्या अगम्मी हरि दा, हरि दो जहान आपणी खेल खिलाईआ। सचखण्ड दवारे साचे तख़्त एकँकार हो के रिहों चढ़दा, तख़्त निवासी पुरख अबिनाशी आपणा डेरा लाईआ। शब्द संदेसा श्री भगवान हो के रिहों घलदा, नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना आप प्रगटाईआ। निरगुण हो के सरगुण वेस रिहों धरदा, धरनी धरत धवल उपर डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणी धार बणा के बरदा, हुक्मे अंदर हुक्म दिता समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हो के लख चुरासी जीव जंत घाड़न रिहों घड़दा, सच दवारे बहि के आपणा रंग वखाईआ। जुग चौकड़ी साची तरनी तारनहारे रिहों तरदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा भेव कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आपणा ढोला गीत राग कलमा

नबी रसूल हो के रिहों पढ़दा, कायनात धुर फ़रमान आप जणाईआ। भेव खुलाउँदा रिहों डूँघे सागर अमृत सरोवर सर दा, नीर नर नरायण आप उपजाईआ। लेखा जाणदा रिहों जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत जल थल दा, ज़िमीं असमान आपणी कार कमाईआ। खेल खलाउँदा रिहों नित नवित अछल अछल्ल दा, वल छलधारी आपणा फेरा पाईआ। प्रकाश सुहाउँदा रिहों निहचल धाम अटल दा, जोती जाता हो के जल्वागर कर रुशनाईआ। घाउ मिटाउँदा रिहों दूई द्वैती जगत जहान सल्ल दा, सलल हो के आपणा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड निवासी हो के हर हिरदा रिहों मल्लदा, घट निवासी सच सिँघासण सोभा पाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म हो के रिहों रलदा, तन वजूद ख़ाकी माटी नाता तत्तां वाला तुड़ाईआ। सति सरूप हो के निरगुण धार रिहों बलदा, दीवा बाती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सवाल वेख आपणे हल्ल दा, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बरदा तेरे दर दा, दर दरवेश हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरी आसा इक्क तकाईआ।

१६६
२०

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दर्शन कौर लौढे पतड़ ★

ब्यास कहे मैं तक्क तक्क गया थक्क, थकावट विच दयां दुहाईआ। हकीकत विच्चों मिल्या ना कोई हक, जुग चौकड़ी हकूमत गए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा सहारा गए दस्स, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। बिन अक्खां निरवैर तेरा राह रिहा तक्क, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। सदी चौधवीं प्या शक, शायद शरअ रही भुलाईआ। लभ्भयां किसे ना आवे हथ्थ, सृष्टी खोजे थाउँ थाँईंआ। चार कुण्ट दहि दिशा रहे नट्ठ, जिज्ञासू भज्जण वाहो दाहीआ। अक्खरां वाला तेरा नाम रहे रट, निरअक्खर नज़र किसे ना आईआ। नहाउँदे फिरदे तीर्थ तट, अठ्ठ सठ्ठ पन्ध चुकाईआ। तलाश करदे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, घड़ी पल वण्ड वण्डाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा जुड़या किसे ना नत्त, नातवां दिसे लोकाईआ। करवट दे के बदली आपणी अक्ख, आख़र पल्लू ल्या छुडाईआ। सिफ्तां वाला करा के जस, जिस्म जगत जहान दिती वड्याईआ। आप हो के सब तों वक्ख, वक्खरे धाम सोभा पाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, सदी चौधवीं ना कोए समझाईआ। किरपा कर के मेहरवान हो के जन भगतां पैज रख, रखक हो के वेख वखाईआ। जिन्हां तेरे मिलण दा कीता हठ, जगत नाता कूड़ तुड़ाईआ। इक्को ढोला रहे रट, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। मेल मिला कमलापति, पतपरमेश्वर हो के नज़री

आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरभजन कौर दे गृह पिण्ड रुढ़का ★

ब्यास कहे मैं वेखी दीन दुनी जहालत, जगत अन्धेरा नज़री आईआ। धुर दी समझे ना कोए इबादत, नाम निधान ना कोए शनवाईआ। चले ना कोए ल्याकत, रफ़ाकत तोड़ ना कोए निभाईआ। मन वासना जगत दिसे नज़ाकत, नाअरा हक ना कोए सुणाईआ। भरमे भुल्ले तेरी ख़लक ख़ालक, मख़लूक जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। साचा दिसे कोए ना सालस, सालसी धुर ना कोए वखाईआ। निरगुण नूर मिले ना कोई ख़ालस, ख़ालस ख़ालसा समझ किसे ना आईआ। जन भगत सुहेला लख चुरासी विच्चों तेरा बालक, पारब्रह्म प्रभ गोदी लैणा उठाईआ। सच स्वामी बण के धुर दा पालक, परवरश करनी चाँईं चाँईंआ। कूड़ी क्रिया मेट के नालश, नाम इक्को देणा समझाईआ। जन्म कर्म दा टिक्का रहे ना कालख, नूरी चन्द देणा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा देणा समझाईआ। दर ठांडा दस्सणा एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। जन भगतां बख़्शीं टेक, चरण कँवल मिले वड्याईआ। बिन अक्खां लैण वेख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। बुद्धी कर बिबेक, दुरमति मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म कर हेत, हितकारी बण के वेख वखाईआ। सचखण्ड जणा आपणा देस, परदेसी गुरमुख नाल मिलाईआ। बिन कलम शाही बदल दे लेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे मंग मंगाईआ। सच दवारे होया मंगता, दरगाह साची सीस निवाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ हंगता, हँ ब्रह्म समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडता, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर जावे लँघदा, वेला वक्त दए गवाहीआ। साचा बख़्श प्रेम आपणे अनन्द दा, निज आत्म ख़ुशी मनाईआ। प्रकाश कर आपणे चन्द दा, नूरी जोत डगमगाईआ। बिन तेरे काया माटी चोली कोए ना रंगदा, गुर अवतार पैगम्बर दर तेरे बैठे सीस निवाईआ। तेरा भगत सुहेला बिन तेरी धार कदे ना जम्मदा, लख चुरासी जून ना कोए हंढाहीआ। झगड़ा मुका दे हरख़ सोग ग़म दा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। की होया जो गुरमुखां नाता जुड़या काया माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी अंदरों दे बदलाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी गढ़ हँकारी भन्नदा, निवन सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। तेरा सन्त सुहेला बिन तेरे किसे ना मन्नदा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ।

परदा लाह दे नेत्र अन्न्ह दा, दिवस रैण होए रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना कलयुग कल दा, कूड़ मलेछ देणा मिटाईआ। सरोवर भर दे आपणे अमृत सरूपी जल दा, निजर झिरना इक्क झिराईआ। हुण वेला नहीं वल छल दा, अछल अछल्ल आपणी रीती दे बदलाईआ। जेहड़ा भगत सुहेला दर तेरा ठांडा मल्लदा, लख चुरासी गेड़ा देणा कटाईआ। अन्त कन्त भगवन्त हरिजन तेरी धार रलदा, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ।

★ १२ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बिशन दास दे गृह जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं वेखी दीन दुनी खुआरी, ख़ालक खलक रही कुरलाईआ। दृष्टी अंदर सृष्टी हारी, हरि जू तेरा भेव कोए ना पाईआ। निरगुण निरवैर तुट्टी यारी, सत्थर यार ना कोए हंढाहीआ। मुहब्बत हक ना दिसे प्यारी, नाता नाम ना कोए रखाईआ। साची धार तों हो फ़रारी, फ़रमांबरदारी गए भुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नाल तेरी इकरारी, कौल पूरब वेख वखाईआ। जिस वेले कलयुग रैण होवे अंध्यारी, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान रोवे ज़ारो ज़ारी, बिन नैणां नीर वहाईआ। सदी चौधवीं मुश्किल बणी भारी, भरम गढ़ जगत ना कोए तुड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जगत वासना मनुआ होया इशतहारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दुआर एकँकार अकल कलधारी तेरी आस रखाईआ। अकल कलधारी पुरख अगम्म, अगम्मड़े दे वड्याईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा दे भन्न, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। भाग लगा काया माटी तन, सृष्टी दृष्टी अंदर कर रुशनाईआ। जोती चाढ़ नूरी अगम्मा चन्न, सूरज चन्न तों परे जिस दा नूर डगमगाईआ। धुर दा राग सुणा बिनां कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। निहकर्मी हो के कर आपणा कम्म, कलयुग कूड़ी क्रिया कांड खपाईआ। झूठी रहे ना तृष्ना तम, अमृत जाम इक्क प्याईआ। दहि दिशा ना दौड़े मनुआ मन, मनसा आपणी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे दे वड्याईआ। ब्यास कहे तूं मालक गहर गम्भीर, हरि गवर तेरी सरनाईआ। वड दाता बेनज़ीर, जग नेत्र नजर किसे ना आईआ। मुसव्वर खिच्च ना सके कोई तस्वीर, गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। कलयुग अन्त वेख अख़ीर, आख़र आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी बदल तकदीर, तदबीर नाल वड्याईआ। नेत्र रोंदे शाह हकीर, तन सरीर पई लड़ाईआ। अंदरों बदल जगत ज़मीर, ज़ामन शब्द नाम बणाईआ। द्वैती वाला फटे ना कोए ख़मीर, हक

हकीकत दे दृढ़ाईआ। चार जुग दी शरअ दे कट ज़ंजीर, शनाख़त आपणी आप समझाईआ। साचा जुग कर तामीर, बाढी बण के सेव कमाईआ। लहिणा देणा मुका ग़रीब अमीर, अमरापद इक्क समझाईआ। तेरे हथ्थ नाम खण्डा शमशीर, चार कुण्ट भय रखाईआ। अमृत आत्म साची धारा बख़्श अगम्मा सीर, अनरस आपणा रस चखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया उत्ते फेर लकीर, हरफ़ हरूफ़ दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल आदि अख़ीर, दिलगीर वेख सृष्ट सबाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कोटली कपूरथला ★

अवतार पैगम्बर गुर हो इक्ठे, सचखण्ड दवारे मुकामे हक बैठे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच सरनाई ढठे, परवरदिगार सांझे यार निउँ निउँ लागण पाईआ। नाम अमोलक बचन दस्सण सच्चे, शब्द अगम्मी धार दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख आपणी अक्खे, पुरख अकाल दीन दयाल आपणी अक्ख खुल्हाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त काया माटी भाण्डे कच्चे, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। सच वस्त सदी चौधवीं रही ना किसे हथ्थे, चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी रही कुरलाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार सब नूं रही मथे, तन वजूद ख़ाकी माटी करे ना कोए सफ़ाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान सचखण्ड निवासी निरवैर कोई ना दस्से, दीन मज़्हब ज़ात पात झगड़ा दिसे थाउँ थाँईंआ। सदी चौधवीं सारे होए हके बक्के, हैरानी निरंतर अन्तर आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दा चला के आए हट्टे, शब्द अगम्मा हड्ड मास नाड़ी चम्मा जगत दृढ़ाईआ। अन्तिम लाहा कोई ना खट्टे, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख आपणा घर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ उठ वेख आपणी अक्ख, दो जहान ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप रिहा कोई ना सच, जूठ झूठ कूड़ी क्रिया वज्जी वधाईआ। त्रैगुण माया दीन दुनी रही मच्च, ज़ात पात भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। हकीकत विच्चों मिले किसे ना हक, वस्त अमोलक नाम निधान काया गोलक ना कोए टिकाईआ। नेत्र रोवण तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मारे धाईंआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, गुरुदुआर गुर का रूप नजर किसे ना आईआ। दुरमति मैल काया मन्दिर अंदर सके कोई ना कट, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी धुर दा संग ना कोए बणाईआ। कलयुग जगत स्वांगी खेल रचया बाज़ीगर नट, शाह पातशाह शहिनशाह

तेरा भय ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण आ वत, वतन लोकमात आपणा वेख वखाईआ। साडी अन्त अख़ीर होई बस, बिस्मिल हो के तेरे विच समाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म दस्स आपणा जस, निरअक्खर अक्खर धार दे समझाईआ। तेरा नूर तैथों रहे कोई ना वक्ख, घर स्वामी अन्तरजामी आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान तेरे अग्गे इक्क अरज़ोईआ। गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे रहे झुक, सचखण्ड दवारे सीस निवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साडा पैंडा रिहा मुक, लोकमात वेला अन्त धुर दा भविक्ख दए गवाहीआ। सृष्ट सबाई सांझा यार बण इक्को लख चुरासी कन्त, कन्त कन्तूहल आत्म सेज सुहञ्जणी लै हंढाहीआ। मन वासना कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आपणा आप दे समझाईआ। तुध बिन बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि दर बैठे सीस निवाईआ। आदि निरँजण अबिनाशी करते कुदरत दे मालक मन्न साडी मिन्नत, निमाणे हो के आपणा सीस झुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दीन दुनी दी बदल दे सिम्मत, समें अंदर भाणा दे वरताईआ। मानव ज़ाती तेरा रहे कोई ना निन्दक, दुष्ट दुराचार दे समझाईआ। कूड़ कुड़यारा करे कोई ना इल्लत, लाइलम इलम आपणा इक्को दे समझाईआ। तेरे भगतां ख़ुआरी होए कोए ना ज़िल्लत, ज़ाहर ज़हूर हो के परदा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दवारे तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जोड़ के हथ्थ, बिन हथ्थां सीस जगदीश झुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, वाली दो जहान तेरी शरनाईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा चला के आए रथ, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। निरगुण हो के सरगुण धरनी धरत धवल उपर आए वस, भेव खुल्ह्हा के शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी काग़ज़ लेखा नाल कलम शाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर साडा चले ना कोई वस, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तेरी हकीकत समझे कोई ना हक, हुक्में अंदर मन्ने ना कोए रज़ाईआ। तेरी आत्म परमात्म तेरे नालों होई अड्ड, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के साचा मेल ना कोए मिलाईआ। बिन हरि नामे पंज तत ख़ाली दिसण हड्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर कूड़ा डंक रिहा वजाईआ। सच प्रीती धुर दी रीती पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी गए छड्ड, निरंतर अन्तर तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। कृपाल किरपा निध ठाकर जगत विकार शब्दी धार नाल अंदरों कढ्ढ, मन वासना कूड़ी क्रिया मेट जगत लोकाईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रहे कोई ना हद्द, ब्रह्म मति पारब्रह्म इक्को दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ले तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल वेख वेला वक्त, थित वार दए गवाहीआ। साडा पूरा कर भविख्त, जगत ऋषीशर देण गवाहीआ। तेरा हुक्म अगम्मा सख्त, दो जहान ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले उठा भगत, गुरमुख गुर गुर आपणे अंग लगाईआ। जन्म कर्म दी मेट हरस, हवस कूड़ी दे बुझाईआ। मेहरवान हो के कर तरस, महबूब रहमत आप कमाईआ। खेल वेख उपर फर्श, परदा ओहला दे चुकाईआ। सच बेनन्ती अरदास अरज़ोई अरज़, आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। जुग बदलणा तेरा फ़र्ज़, जुग चौकड़ी तेरे हुक्म अंदर भज्जण वाहो दाहीआ। साडी आसा मनसा पूरी कर ग़रज़, ग़रीब निमाणे हो के झोली अग्गे रहे डाहीआ। तेरा खेल आदि जुगादि नित नवित असचरज, बेअन्त कहि के सारे शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर धुर दरबार दरगाह साची धाम न्यार, परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल अकल कलधारी दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर कर सजदा, कदमबोसी ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाल लाह परदा, परदानशीं आपणी दया कमाईआ। कलयुग जीव जंत आपणा आप जाए हरदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भय विच कोई ना डरदा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। सुरती शब्द कोए ना फड़दा, मंज़ल हक ना कोए पुचाईआ। घर घर वैरी मीत सज्जण लड़दा, पिता पूत संग ना कोए बणाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तेरा नूर कोए ना धरदा, धरनी धरत धवल धर्म दा रूप ना कोए दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म ढोला कोई ना पढ़दा, निरगुण निरगुण जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण हो के खेल आपे करदा, करनी दे करते कुदरत दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बर भिखारी तेरे दर दा, दर दरवेश नर नरेश ख़ादम हो के बैठे सीस निवाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ महिंदर कौर दे गृह कोटली ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग कूड़ी क्रिया दे कढ्ढ, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। अन्त अख़ीरी कर हद्द, शास्त्रां तों परे तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी भविख्तां विच गए सद्द, होका तेरा नाम सुणाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कर इक्ठ, दर ठांडे बैठे डेरा लाईआ। झगड़ा मुका तत अठ्ठ, नौ दवारे डेरा ढाहीआ।

दसवें कर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर दे चुकाईआ। शब्द अगम्मी वजा नद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत जाम प्या मध, सच खुमारी इक्क वखाईआ। तेरी आत्म रहे ना तैथों अलग, जुग जन्म दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग जीव दिसण अल्पग, मेहरवान मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जगत विकारा शब्दी भार दे दब्ब, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरा नाम नग़ारा विच संसार जाए वज्ज, राउ रंकां डंका इक्को दे सुणाईआ। त्रैगुण माया ममता मोह बुझे अग्ग, तृष्ना तृप्त दे कराईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, सति धर्म नाता नाल रखाईआ। हँस बुद्धी रहे कोई ना कग्ग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी आपणा भेव देणा खुल्ह्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मानव ज़ाती दस्स एको धर्म, अधर्मी रहिण कोए ना पाईआ। दीन मज़्ह्ब दा रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। तेरी धारों आत्म दा होवे जरम, जन्म तत्तां वाला देवे पिता माईआ। तूं आदि जुगादी करता करनी दा करन, कुदरत दा कादर इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि तेरी सरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को तेरा ढोला पढ़न, अल्ला वाहिगुरू राम नाम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साची मंज़ल हक महबूब मुहब्बत तेरी विच चढ़न, सचखण्ड दवारे बहि के तेरा दर्शन पाईआ। कलयुग अन्त सच दवारे बेनन्ती आए करन, जुग चौकड़ी दी आसा आपणे नाल ल्याईआ। दे वड्याई लोकमात चार वरन, अठारां बरन बख़्श सरनाईआ। मानस जन्म मानव ज़ाती मूल ना हरन, हिरदे वस के पतित पुनीत दे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान धरनी धरन, धवल अव्वल नूर अलाह इलाही दे वखाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिंघ, गुरचरण सिंघ दे गृह
पिण्ड झंगी ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं वेखे बहु जोगी, अनगिणत नज़री आईआ। जगत वासना रहे रोगी, हउमे मैल ना कोए धवाईआ। तृष्ना दे रहे भोगी, वासना अग्गे ना कोए मिटाईआ। हिलाउँदे रहे बोदी, बदीआं नाल कुड़माईआ। बणे रहे धारी दोधी, दोहां परदा ना कोए उठाईआ। विद्या अख्वाउँदे रहे बोधी, बुद्धी बिबेक ना कोए कराईआ। अन्तर आत्मा सब दी दिसे रोंदी, हँस मुख ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल चुक्कया किसे ना गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द गया समझाईआ। मूंड मुंडा गर्दन

कीती रोडी, रोग अंदरों ना कोए मुकाईआ। पंखड़ीआं वाली खिली किसे ना डोडी, कंडा ख़ार ना कोए कढाहीआ। साचा मिल्या ना कोई धोबी, वस्त्र धार दए बदलाईआ। लभ्भदे रहे प्रीतम चोजी, चुग़ली निंदया विच समाईआ। फिरदे रहे बण के खोजी, तट किनारयां फेरा पाईआ। भरमाउँदे रहे लोकाई लोकीं, लुक्कया भेव ना कोए खुल्ह्आईआ। त्यागदे रहे चमड़यां वाली बोकी, बुक्कल अंदरों ना कोए खुल्ह्आईआ। माला फेरदे रहे फोकी, फ़ुरना मन वस्स ना कोए कराईआ। साथी बणे रहे नाथ त्रिलोकी, तिन्नां लोकां तों बाहर ना कोए कढाहीआ। वणज करदे रहे रोकी, हट्ट सच ना कोए खुल्ह्आईआ। धार दस्सदे रहे बहुती, आपणा पन्ध ना कोए मुकाईआ। छड्डदे रहे रोटी, रट्टा रसना वाला बणाईआ। तजदे रहे बोटी, लोभ मोह ना कोए कढाहीआ। पढ़दे रहे पोथी, अक्खरीं ढोला गाईआ। सब दी धार वेखी थोथी, थिर घर बहि के खुशी ना कोए मनाईआ। मंगदे रहे मोखी, मुक्ती झोली डाहीआ। घड़ी लभ्भदे रहे सौखी, जगत विछोड़ा कर जुदाईआ। फिरदे रहे कोटी, भज्जे वाहो दाहीआ। मुनाउँदे रहे चोटी, चोटी चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। अन्त करनी हो के होछी, हुश्यिारी आपणी जाए भुलाईआ। तेरी खेल किसे ना सोची, इष्ट तत्तां वाला मनाईआ। कुछ मंग मंग के गया रविदास चमारा मोची, रम्बी आर नाल गंढु पवाईआ। जिस दी खेल सदा चोखी, चोखरवान दए वखाईआ। ओहदी करनी किसे ना जोखी, जगत तराज़ू ना कोए तुलाईआ। मंज़ल डाहढी औखी, बिन सतिगुर शब्द ना कोए चढ़ाईआ। जिस दी खेल धार ना जिसत टांक औंटी, ढईए विच ना कोए बंधाईआ। हुक्म दे के पटना पौंटी, फ़रमान विच समझाईआ। कलयुग अन्त सृष्टी दृष्टी होवे औंती, धर्म सुत नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा पए अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ख़ौंती, ख़ावंद पती समझ किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार डाह के आपणी चौंकी, चौंह जुगां दा झगड़ा दए पवाईआ। वड्याई रहे ना अक्खरां वाले नाउँ की, चार कुण्ट पए दुहाईआ। आबरू मिटे भूमिका वाले थाउँ की, थान थनंतर मारन धाहींआ। पूजा मिटे तत गुरू जगत पाउँ की, निरगुण निरवैर इक्को खेल खिलाईआ। मनसा रहे ना मैं हउँ की, हम साजण वेख वखाईआ। जगत वासना तक्के काउँ की, कूड़ी क्रिया खोज खुजाईआ। जन भगतां आस वेखे ठंडी छाउँ की, शहिनशाह हो के होए सहाईआ। ब्यास कहे नईआ चले इक्को नाउँ की, नर निरँकार आप चलाईआ। खेड मुके खेड़ा पिण्ड गराँउँ की, गहर गम्भीर दवारा इक्को दए सुहाईआ। आसा मनसा पूरी होवे चाउ की, चाउ घनेरा इक्क बणाईआ। ब्यास कहे मेरी लहर उपजे दरयाओ की, दरे दरबार सेव कमाईआ। जिस दे हथ्थ अदालत न्याउँ की, निउँ निउँ लागां पाईआ। देवे माण वड्याई पिता माउँ की, मात पित आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण

नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे समझ ना देवे आपणे आदि जुगादी सुभाउ की, सभा दे मुखीए गुर अवतार पैगम्बरां आसां विच रखाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ पाल सिँघ दे गृह ललीआं कलां ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे तैनूं खोजदे गए तपी, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। हठ्ठ रखदे गए यती, धीरज तेरा नाम नाल रखाईआ। मुहब्बत विच हुन्दे रहे सती, सति सतिवादी तेरा राह तकाईआ। नाम भण्डारा मंगदे रहे रती, रतन अमोलक दे बणाईआ। टिल्ले पर्बत चढ़दे रहे राह अक्खीं, जगत नेत्र नैण उठाईआ। घर बार छड्डदे रहे करोड़ी लखी, मन वैराग उपजाईआ। डेरे लाउँदे रहे कुल्ली कक्खीं, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तजाईआ। मर्यादा खोजदे रहे जो गुर अवतार पैगम्बरां दस्सी, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। दिवस रैण रहे नस्सी, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तैनूं दस्सदे रहे कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। निरगुण जोत जगाउँदे रहे मोमबत्ती, नूर ज़हूर परदयां विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि आपणा रंग रंगाईआ। ब्यास कहे तैनूं लभ्भदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। अग्नी सड़दे रहे हाढ़, जल धारा सीस कराईआ। दु:ख सहिंदे रहे नाड़ नाड़, नाड़ बहत्तर दए दुहाईआ। खोजदे रहे सदा जुग चार, चारे खाणी वेख वखाईआ। चारे बाणी करदे रहे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मंज़ल कटदे रहे दुष्वार, दूती दुश्मण अंदरों बाहर कढाहीआ। तेरे नाम दा मंगदे रहे प्यार, प्रीतम तेरा प्रेम वधाईआ। नाता तोड़ कूड़ संसार, सगली सृष्ट तजाईआ। जगत छड्ड घर बाहर, भज्जे वाहो दाहीआ। रह के निराधार, फ़ाकयां विच वक्त लँघाईआ। मंगदे रहे दीदार, दरस नैण उठाईआ। करदे रहे पुकार, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। अन्तिम सारे गए हार, तेरा भेव कोए ना पाईआ। गुफ़त शनीद सुणदे गए गुफ़तार, खुफीआ हो के जगत लोकाईआ। मुहब्बत विच हो ग्रिफ़तार, बन्धन तेरा नाम रखाईआ। नाम खण्डा सिर सहि कटार, टुकड़ा आपणा आप कराईआ। तेरा अन्त ना पाया किसे पारावार, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर दर बैठे रहे बण भिखार, विष्न ब्रह्मा शिव झोलीआं डाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगदे आए वारो वार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। चारे बाणी करे पुकार, चारे खाणी दए दुहाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दीन दुनी होई खुआर, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेटे कोई ना धूआँधार, सति

सतिवादी तेरा साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक अग्नी अग्ग लग्गी नाड़ नाड़, अमृत मेघ बूँद स्वांती निजर रस ना कोए चुआईआ। साचा मिले ना किसे हकीकी यार, जगत याराने कूड़े वेखे लोकाईआ। सदी चौधवीं कलयुग सन्त रोवण धाहां मार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मंज़ल पुज्जे ना कोई हक दरबार, दरगाह साची वेखण कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे तेरा करन इज़हार, अर्श अरूज समझ किसे ना आईआ। ब्यास कहे तेरा खेल वेख करतार, हैरानी मेरे अंदर आईआ। सब तों वसें हो के बाहर, हर घट आपे डेरा लाईआ। आत्म ब्रह्म तेरी धार, पारब्रह्म नूर रुशनाईआ। तेरा शब्द सच सिक्दार, हुक्म देवे बेपरवाहीआ। तेरा नूर जोत उज्यार, उजाला करे सर्ब लोकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात सृष्टी विच्चों बाहर निकाल, दृष्टी इक्को दे वखाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह लेखे ला शाह कंगाल, ऊँच नीच आपणे रंग रंगाईआ। सच दुआर एकँकार घर अगम्मे आप बहाल, जित्थे बिहबल हो के रोवे मारे कोए ना धाहींआ। अग्गे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगत सुहेले गुरमुख लै उठाल, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। दिवस रैण कर प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी जो तेरे नाम दी घालदे आए घाल, लहिणा देणा पूरा दे कराईआ। तेरा दर्शन करन बेमिसाल, मिसल विच सके ना कोए समझाईआ। अगला आपणा दस्स अहिवाल, पिछली पढ़े ना कोए पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे नन्हे निक्के बाल, सचखण्ड दवारे बैठे सीस निवाईआ। तूं भगतां साचा गृह इक्क वखाल, जित्थे विख नज़र कोए ना आईआ। अमृत आत्म अगम्मा रस प्याल, जो जगत सरोवरां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार आपणी दस्स सच्ची धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस घर वसें निरगुण नूर कर उज्यार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्यास कहे मेरी अन्त बुझा प्यास, सास स्वास समूह आपणे लेखे पाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ मल्ल सिँघ दे गृह ललीआं कलां ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं पवण भवंदे वेखे परिंदे, पवण पाउण नाल वड्याईआ। खूनख़ार वेखे दरिंदे, दहिशत विच डराईआ। सीस वेखे नविंदे, अक्ख नैण शरमाईआ। नाम वेखे जपिंदे, बिन रसना जेहवा ढोले गाईआ। देवत सुर वेखे इन्दे, सिँघासण सोभा पाईआ। अवतार पैगम्बर गुर वेखे मरगिंदे, गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। नहाउँदे वेखे पंडे, पांडे तारीआं लाईआ। बोलदे

वेखे बिंडे, तिरी तिरी आवाज़ सुणाईआ। खेल वेखे विंगे डिंगे, डूंगर थाँ ध्यान लगाईआ। जल होड़े वेखे मिघे, मच्छ कच्छ नाल वड्याईआ। ससीअर सूअर वेखे पिगे, भज्जण चाँईं चाँईंआ। जटा जूट धारी वेखे मूँह दे भार डिग्गे, दिशा कूट आपणी आप भुलाईआ। कमली वाले वेखे भिग्गे, जल धारा नाल छुहाईआ। तेरे प्यार अंदर वेखे विके, आपणा आप मिटाईआ। निशाने तीर लग्गे वेखे हिके, हनवन्त दए गवाहीआ। लव कुश आए मेरे उत्ते सिध्धे, बाल्मीक बल वड्याईआ। सप्त ऋषी पाउँदे गए गिध्धे, ताली दूज्जयां नाल वजाईआ। गोबिन्द छुपा के कल्गी जिगे, जिगरा आपणा गया रखाईआ। मेरा लेखा लिख्या वेद व्यास वेद रिग्गे, रग रग परदा रिहा उठाईआ। नाद संख धुन सुणाउँदे रहे घिग्गे, कूक कूक अल्लाईआ। उडदे रहे पंखेरू बण के पिद्दे, पदमां वाले चक्र रहे खाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे मिलण दी किसे ना लभ्भी बिधे, बदी दा बदला सके ना कोए चुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां चरण प्रीती धाम दे निग्घे, निगाहबान हो के वेख वखाईआ। सच सरनाई तेरी डिग्गे, आप आपणा गए मिटाईआ। सच दुआर एकँकार पुचा सिध्धे, साधना अवर ना कोए वखाईआ। सब तों चंगे वड्डे एडे, इस तों अग्गे होर ना कोए खुदाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बण के धुर दा पिते, पति परमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। साजण मीत धुर दे मिते, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां तेरे मिलण दे भविख्तां विच कलयुग अन्तिम दिन मिथे, मिथ्या समझ के जगत लोकाईआ। पकड़ उठा हरि सन्त सुहेला वसे जित्थे, निरगुण हो के सरगुण मेल मिलाईआ। तेरा मार्ग परम पुरख आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना घुथ्थे, रहिबर हो के रस्ता देणा जणाईआ। बिन तेरी किरपा गहर गम्भीर बेनज़ीर जन भगतां कोई ना पुछे, पसचाताप विच तड़फे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन सन्त सुहेला गोद कोई ना चुक्के, चार जुग दा पन्ध ना कोए मुकाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ नसीब सिँघ दे गृह पिण्ड बोपा राए ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी गाउँदे वेखे गीत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा नाम ध्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाउँदे वेखे रीत, हुक्मे अंदर बैठे सीस निवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा भज्जदे वेखे ठीक, ठाकर स्वामी तेरे भाणे अंदर बैठे ध्यान लगाईआ। नित नवित बदलदे रहे तारीख, तरीका तेरा नाम दृढ़ाईआ। जगत अन्धेरा मेटदे रहे तारीक, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। कलमा नाम दस्स के गए हदीस, गुर अवतार पैगम्बर संदेसा सच सुणाईआ। भविख्तां विच कर

के गए उडीक, अक्खरां विच तेरा राह तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, बिन तेरी आमद चले ना किसे चतुराईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सुत्ता गूढ़ी नींद, आलस निंद्रा विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सो साहिब सतिगुर तेरी आस रखाईआ। ब्यास कहे मैं वेखे कोटी कोट, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। बिन तेरे शब्दी लग्गे किसे ना चोट, चोटी चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। सति धर्म रहे ना किसे लंगोट, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कलयुग जीव आलणयों डिग्गे बोट, सचखण्ड दुआर ना कोए पुचाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते तेरी बेपरवाहीआ। नाम खुमारी दे मदहोश, मधुर धुन राग सुणाईआ। भेव अभेदा खोल्ह चौदां लोक, चौदां तबक वज्जे वधाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन तेरे नाम दा गाए इक्क सलोक, सोहला ढोला धुर दा इक्क समझाईआ। चिन्ता ग़म मेट हरख़ सोग, दीनां अनाथां दे माण वड्याईआ। चरण प्रीती साची रीती मिले धुर दा जोग, संजोगी हो के आपणा मेल मिलाईआ। कर्म कर्म दा मिटे रोग, जन्म जन्म दी दुरमति मैल धवाईआ। तेरे दवारे साचे गृह जाए पहुंच, सन्त सुहेले आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साजण मीत तेरे हथ्थ वड्याईआ। ब्यास कहे मैं खेल अगम्मा दस्सां की, कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग साचे रख नींह, कलयुग कूड़ी जड़ दे उखड़ाईआ। लहिणा देणा चुका साढे तिन्न हथ्थ सीं, रविदास चमारा नाल मिलाईआ। परदा लाह जगत जीअ, जीवण जुगत दए समझाईआ। नाम निधान श्री भगवान बीज अगम्मा बी, बीते जुग दा लेखा दे मुकाईआ। जन भगतां जोत जगाउणी पए ना किसे घी, अन्तर आत्म नूर कर रुशनाईआ। लहिणा देणा वेख बीस इकीह, वीह इक्की गुरदास गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहान वसीह, जगत पैमाने विच हिसाब ना कोए लगाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ लाल सिंघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मेरे कन्ढे दा काही काना, सुहञ्जणी रुत्त वखाईआ। नाता जोड़ नाल श्री भगवाना, भाग आपणा रिहा बदलाईआ। गोबिन्द दे के गया निशाना, निशाना शब्द तीर चलाईआ। जगत बुद्धी समझे ना कोए ज्ञाना, अक्खरां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। सो लेखा जाणे वाली दो जहानां, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जन भगतां देवे साचा माणा, चरण

कँवल सच सरनाईआ। पन्ध मुका के आवण जाणा, दर घर साचा इक्क वखाईआ। जित्थे बिस्तर सेज लेफ तलाई नहीं सरहाणा, ओढण नज़र कोए ना आईआ। ओथे बेआसां मिले टिकाणा, टिक्का आपणा मस्तक नाम लगाईआ। कूड़ी क्रिया वढ्ढणहारा तरखाणा, तिक्खे शस्त्र नाल ल्याईआ। जोत सरूपी पहर के बाणा, बानी हो के होए सहाईआ। लेखे लाए गोबिन्द वाला दाणा, माछूवाड़ा भुल्ल कदे ना जाईआ। नन्ही चिउँटी दा गुरसिख बणया नौजवाना, जोबनवन्ता नज़री आईआ। माया ममता मोह छड्ड जगत टिकाणा, बिन कीमत आपणा आप दिता विकाईआ। हरि शब्द समझया पीणा खाणा, तृष्ना कूड़ जगत मिटाईआ। घर वेख सच महल्ल टिकाणा, दरगाह साची खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के गाणा, जगत सहिंसा रोग चुकाईआ। बिस्तर सोहणा सेज सुहाणा, काई काना नाल वड्याईआ। जिस दी करे ना कोई पहचाना, बेपहचान बेपरवाहीआ। वशिष्ट वेले दा नकदी दिता इक्को आना, भगती रूप दिता बदलाईआ। नाम खुमारी कर के मस्त दीवाना, दीवा बाती नूर करे रुशनाईआ। अग्गे रहिण ना देवे बेगाना, घर आपणे लए वसाईआ। जन भगतां नापे ना कोए पैमाना, पैमाने लबरेज़ करे लोकाईआ। सच दवारे देवणहारा माणा, मनसा आसा पूर कराईआ। गुरमुख सतिगुर गोदी विच बाल अंञाणा, वड्डे नाल वड्डी मिले वड्याईआ। जिस ने लहिणा देणा मूल चुकाउणा, पूरब लेखा झोली पाईआ। सो वक्त करे सुहञ्जणा सुहाणा, सोहणी रुत्त बणाईआ। हरि संगत मेला कर के निरंतर देवे पीणा खाणा, खालस अमृत जाम प्याईआ। बिना हुक्म तों देह दा कदे ना होवे चलाणा, चुक्कण तों पहलां आपणा खेल वखाईआ। साचा दे के नाम तराना, तुरीआ पद तों परे लँघाईआ। जीवदयां दो जहानां विच पुराणा, शब्दी कार दए भुगताईआ। दोआबे वालयां परदा लाहणा, एसे कारण फेरा पाईआ। नवें जुग दा नवां रंग वखाणा, वसल देवे यार खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काई काना कर परवान, सीस दस्तार वेखे मार ध्यान, गल दुपट्टा निगाहवान, धूढ़ी चरण सच्चा इश्नान, मनमति दुरमति दर रहिण कोए ना पाईआ।

हार नहीं हरि संगत हिरदा, हारदिक दए वधाईआ। जोबनवन्ता आ गया फिरदा फिरदा, पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां विछोड़ा कटे चिर दा, चिरी विछुन्ने लए मिलाईआ। एहो खेल थिर घर दा, जो सचखण्ड अंदर आपणे चरणां विच वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा लहिणा देणा निबड़दा, अगला संग बणाईआ। दर हाल वेखो आए बिदर दा, जो बैठा सीस निवाईआ। जगत पता नहीं खेल किधर दा, कुदरत दा कादर होवे सहाईआ। कुछ लहिणा देणा

एधर दा, ऊधो कृष्न गया समझाईआ। नानक साढे तिन्न साल रिहा विचरदा, गोबिन्द ढाई मिन्ट पन्ध मुकाईआ। जिस दा मूल निरगुण धार विच्चों नितरदा, जगत माया ना कोए छुपाईआ। फ़िकरा अगला रहे ना फ़िकर दा, फ़कत इक्को लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हार नहीं ना कोई फूल, मोती जगत ना कोए ना वड्याईआ। साचा मेल कन्त कन्तूहल, प्रेम प्रीती रिहा दृढ़ाईआ। जुग जन्म ना जावे भूल, पूरब वेखे थाउँ थाँईंआ। शंकर मार के इक्क त्रसूल, धरनी गया जणाईआ। मालक आवे कन्त कन्तूहल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन भगतां कोलों आपणे प्यार दा मंगे मसूल, वसूली पिछली लए कराईआ। झगड़ा मुका के कातिल मक्तूल, मुकतयां तों अग्गे डेरा दए वखाईआ। जित्थे निरगुण धार मिले धूल, धूढ़ दा खहिड़ा दए छुडाईआ। सति धर्म दा बन्ह असूल, असल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। हार कहे मैं आया अज्ज हरि संगत खातर, पुरख अकाल दए वड्याईआ। शब्द सुनेहड़े देवां पात्र, नाम संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। गुरमुख सोहणे बण जाओ चातर, चार्तक धुर दे नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर खुशीआं नाल आखण, संदेश्या विच सुणाईआ। अबिनाशी करता बणया साथण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। हार कहिण सानूं पाओ गल, हथ्थो हथ्थी वण्ड वण्डाईआ। कुछ लहिणा देणा मुके बल, बावन गया समझाईआ। सृष्टी नाल छल, गुरमुखां नाल कुड़माईआ। पिछले जन्म दा मेट के सल्ल, दुखड़ा दूर दए कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के कल, कलमा इक्को दए समझाईआ। हरि संगत इक्क दूजे विच प्रेम प्यार दी धार अंदर जाणा रल, वक्खरा नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां ख़ातर ख़ातरखाह आया चल, ख़तरा अगला दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदर आपणा नूर हो के जावे बल, बली दी लोड़ रहे ना राईआ।

कुल्ली कहे मैं तक्कदी रही राह, लाल दा लालन वेख वखाईआ। जो आदि जुगादी दो जहानां मलाह, बेड़ा ब्रह्मण्ड खण्ड पार कराईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर गए गा, जुग चौकड़ी रागां नादां विच ढोले गाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी शहिनशाह, पातशाह इक्को बेपरवाहीआ। जल्वागर बण खुदा, नूर नुराना करे रुशनाईआ। वेखणहारा थाउँ थाँ, नव नौ चार खोज खुजाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़नहारा बांह, लख चुरासी विच्चों देवे माण वड्याईआ। भगत सुहेले

आपणी गोद उठा, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो दाता दानी दया कमा, देवणहार सच्ची सरनाईआ। मेरी निमाणी दे भाग दए जगा, सदी चौधवीं अक्ख खुल्ाईआ। परदा ओहला दए उठा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। वक्त सुहञ्जणा दए सुहा, सोभावन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। मैं कुल्ली कक्खां मेरी कीमत सके कोई ना पा, शाह सुल्तान समझ किसे ना आईआ। खुशीआं नाल ढोला गावां बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द करां वाह वा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआर रिहा सुहाईआ। कुल्ली कहे मैं वेख्या मार झात, दो जहानां तों परे ध्यान लगाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोई कलम दवात, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी बेअन्त कहि के शुकर मनाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला वाली दो जहानां निरगुण सरगुण तक्कया साख्यात, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख सज्जण मीत मुरारे सुणे फ़रयाद, पूरब जन्म लहिणा देणा खोजे थाउँ थाँईंआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर करदे गए याद, दिवस रैण अठ्ठे पहर घड़ी पल ध्यान लगाईआ। सो लाल दी कुल्ली इकल्ला करन आया आबाद, दूजा संग ना कोए बणाईआ। पूरी करे पूरब ख़ाहिश, आसा मनसा आपणे विच समाईआ। हरि संगत संग पावे अगम्मी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। चार जुग एसे सरदल उत्ते टेकदे रहिण माथ, मस्तक टिक्के धूढ़ी नाल रमाईआ। लाल दी लाल हो के चमके गाथ, गहर गम्भीर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, महिमा अकथ बोध अगाध दए जणाईआ।

★ १३ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ★

ब्यास कहे मेरी हस्से रेत बालू, बालम वेख खुशी मनाईआ। याद आ गया लहिणा देणा जगत पुत कालू, नानक सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण नानक बण के पालू, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। लालो दा याद आया आलू, वज़न ढाई छटांक समझाईआ। पुरख अकाल हो दयालू, दीन दयाल दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले सच्चा सतिजुग होया चालू, चालान सब दे (दए) कराईआ। गुरमुख साचे सांचे ढालू, ढईआ गोबिन्द रिहा समझाईआ। नाम ओढण दे के धुर दा सालू, परदा एकँकार इक्को पाईआ। जन भगतां अग्गे रख सच सवालू, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाईआ। ब्यास कहे मेरी रेत बालू हस्से, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। खुशीआं विच

नस्से, भज्जे वाहो दाहीआ। मैनूं हौली हौली दस्से, सुनेहड़े रही सुणाईआ। चल वेखीए गुरमुख होए इक्ट्ठे, सति संगत रूप वटाईआ। पुरख अकाल दी चरणी ढठ्ठे, जो डिग्गयां रिहा उठाईआ। विक गए ओस हट्टे, जिस हट्ट दा वणजारा ना कोए समझाईआ। जन्म मरन दे मेट के रट्टे, झगड़ा अगला रहे मुकाईआ। सच प्रीती अंदर रत्ते, रतन अमोलक नज़री आईआ। उन्हां दे कोल ओस अबिनाशी दे पते, जिस नूं पत्रयां उत्ते गुर अवतार पैगम्बर गए मनाईआ। उह निरगुण हो के निरवैर हो के निराकार हो के भगतां दी कुल्ली वसे, कुल्ली दा मालक बेपरवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत कलयुग राहों घुथ्थे, साचा राह ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा बणाईआ। बालू रेत मैं दस्सां की हाल, अहिवाल दयां जणाईआ। जिस ने मुरदे लए ज्वाल, ज्वाला जोत सेव लगाईआ। गुरमुख लभ्भे लाल, लालन रंग रंगाईआ। पूरी कर के घाल, कीती थाए पाईआ। मन्न बेनन्ती सवाल, दर आया बेपरवाहीआ। अवल्लड़ी चल के चाल, सृष्टी दिती भुलाईआ। सन्त साजण रख शब्दी नाल, जोती धार करी कुड़माईआ। फल लगा अगम्मे डाल, रुतड़ी रुत्त आप सुहाईआ। अन्तिम आपे करे संभाल, दूजा राखा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रेत कहे मैं छोटी रती, कतरा कतरा नज़री आईआ। मैं वेख के कमलापती, पत्तन बैठी डेरा लाईआ। जिस दी कथा कहाणी सच्ची, सच सुनेहड़ा रिहा जणाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्ची, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। भगतां धार रख के अच्छी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। की सार पाए मीन मच्छी, भगत सुहेला भगती तों परे आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक्क सुहाईआ। ब्यास कहे बालू रेत देवे होका, हुक्म धुर दा रही जणाईआ। मेरी सुणो कहाणी चौदां लोका, लुक्कया भेव रही जणाईआ। जिस दे कारण जुग चौकड़ी जगाउँदे रहे जोता, जोतां दा मालक फेरा पाईआ। जिस दे कारण साफ़ करदे रहे चौंका, चार जुग सेव कमाईआ। ओस नूं मिलण दा इक्को मौका, वेला वक्त रिहा दृढ़ाईआ। जिस दे कोल अगम्मे नाम दी नौका, दो जहानां पार लँघाईआ। सच दुआर सुहाए अगम्मा कोठा, कुल्ली भगत दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणा आप वखाईआ। बालू रेत कहे मैं वेख्या धुर दा दर्दी, दाअवे नाल समझाईआ। कलयुग मेटण आया अन्धेर गर्दी, गदागर नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां वेख के अर्ज़ी, आरज़ू सब दी फोल फुलाईआ। अग्गे करे आपणी मर्ज़ी, मरीज़ वेखे जगत लोकाईआ। खेल कर नरायण नर दी, नर हरि आपणा हुक्म चलाईआ। दो जहानां कला रखे चढ़दी, चढ़दा लैहन्दा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप

उपजाईआ। ब्यास कहे बालू रेत रही पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। वाजां रही मार, हाढ़यां विच जणाईआ। इक्को करो दीदार, घर साचे दर्शन पाईआ। जन भगतो तुहाडा एह विहार, दूजी खेल ना कोए रचाईआ। पिछले जमअ कीते हार, हार जित विच बदलाईआ। गुरमुख रहे ना कोए दुख्यार, दुखियां दर्द गुआईआ। जे अन्तर करो प्यार, बसन्तर बाहरों दए बुझाईआ। साचा मंत्र करो जैकार, लोक लज्जया जगत गवाईआ। एह सतिजुग दी साची धार, कलयुग रूप रही बदलाईआ। अग्गे कोई ना उतरे पार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण ना कोए सहाईआ। सहिमत होए गुरू अवतार, पैगम्बर खुशी बणाईआ। लहिणा मुक्के जुग चार, चौकड़ी बैठी सीस झुकाईआ। हुक्म चले इक्क निरँकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भगवन भगतां करे प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा देवे धुर दी रेत, बालू आपणा हाल जणाईआ। पुरख अकाल करो हेत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। जिस ने रुत्त बदलणी चेत, चेतन सुरती दए कराईआ। जगत विकारा कर के खेत, नेत नेत दर्शन देवे चाँईं चाँईंआ। कुछ लेखा बाकी जेठ, अग्नी तत रिहा तपाईआ। माण टुट्टे विकारी सेठ, हँकारी गढ़ आप तुड़ाईआ। जन भगत बणा के वक्खरा लेख, लेखे आपणे विच लगाईआ। वसा के साचा देस, देस दे मालक दए बणाईआ। इक्ट्ठे कर के बख्शे टेक, टिक्का नाम लगाईआ। जन भगतो तुसीं आदि अन्त दे एक, इके विच समाईआ। जिन्हां कारण बदलया भेख, भिखशू बण के फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा रंग रिहा रंगाईआ। बालू रेत कहे मैं भगतां वेख्या बुलाउँदा, खुशी बुल्लां उत्ते आईआ। सुत्यां आप उठाउँदा, हलूणे नाल जगाईआ। भुक्ख्यां आप रजाउँदा, अमृत जाम प्याईआ। विछड़यां आप मिलाउँदा, जन्म कर्म फोल फुलाईआ। साची धार आप रखाउँदा, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। सन्त सुहेले अंग लगाउँदा, अंगीकार आप हो जाईआ। वेला वक्त आप सुहाउँदा, सुहञ्जणी घड़ी दए वड्याईआ। गुरमुखां मातलोक वड्याउँदा, दो जहानां होवे सहाईआ। खेल करे सच न्याउँ दा, न्याँकार इक्को इक्क हो जाईआ। हरिजन साचे रंग रंगाउँदा, लाल गुलाला आप चढ़ाईआ। जिस कारण हरि संगत हार पहनाउँदा, बिनां पंनयां तों गुर अवतार पैगम्बर लिख के गए समझाईआ। आपणा माण श्री भगवान जन भगतां झोली पाउँदा, आपणी मनसा ना कोए रखाईआ। बिन भगतां अबिनाशी करता कम्म किसे ना आउँदा, दो जहान निकम्मा नज़री आईआ। एसे कारण गुरमुख कुल्ली भाग लगाउँदा, भगवन हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दे विछड़े इक्को घर वसौंदा, वक्खरा दर ना कोए बणाईआ।

२१२
२०

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बलविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं धुर दा आसावंद, आसा पूरी दे कराईआ। तेरे हुक्म दा हो पाबन्द, दिवस रैण सेव कमाईआ। अगम्मी नाम दा दे छन्द, ढोला इक्क समझाईआ। बिना रसना दे आवे अनन्द, अनन्द आपणा दे प्रगटाईआ। खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी विच तेरा नाम ध्याईआ। जुग चौकड़ी दा पिछला अगला मुके पन्ध, सफ़रां विच ना कोए भवाईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग अन्त रिहा कुरलाईआ। सेज सुहञ्जणी दिसे पलँघ, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जगत वासना दुनी होई रंड, बिन हरि कन्त खुशी ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। ब्यास कहे मैं सुणदा रिहा सलोक, महिमा वाला ढोला तेरा गाईआ। तक्कदा रिहा लोक परलोक, दो जहानां अक्ख खुल्हाईआ। तेरा भाणा कोए ना सक्या रोक, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती शब्दी धार सोच, बुद्धी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सृष्टी दुनिया कायनात कोई ना करे होश, बेहोश होई लोकाईआ। ख़ाली दिसे काया माटी चमढ़ी पोश, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लै मिलाईआ। ब्यास कहे मेरा अन्तिम कट विछोड़ा, विछड़यां लै मिलाईआ। निरगुण धार निरगुण होवे जोड़ा, सरगुण मिल के वज्जे वधाईआ। अगला वक्त रह गया थोड़ा, बिन तेरे भेव किसे ना आईआ। आपणे प्रेम दा दे भोरा, जगत भण्डारे दा लेखा दे मुकाईआ। मैं तेरा नौजवान बांका छोहरा, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। तूं सस्से उपर ला के होड़ा, हँ ब्रह्म दिती वड्याईआ। इक्को दस्स आपणा दोहरा, दोहां मिल के वज्जे वधाईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोरा, चरण कँवल ढहि के मंग मंगाईआ। झगड़ा चुक्के तोरा मोरा, मोह मुहब्बत आपणे नाल बंधाईआ। तेरा मंत्र फ़ुरना फुरे फोरा, फौरन आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी करनी अंदर पा मोड़ा, मुहरे हो के आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक्क खुल्हाईआ। ब्यास कहे मेरी आसा ना जाए बिरथी, विश्वास देणा बंधाईआ। मैनूं रलाउणा ना नाल कूड़ी सृष्टी, शरअ विच ना कोए फसाईआ। मैनूं बहाउणा ना स्वर्ग बहिश्ती, स्वर्ग बहिश्त दी लोड़ ना कोए रखाईआ। मैनूं बणाउणा ना मन वासना गृहस्ती, गृह दुनी ना कोए लोकाईआ। मैं इक्को मंगां तेरा इष्टी, इष्ट देव तूं ही नज़री आईआ। लेखा मुकाउणा टांक जिसती, नूर नूर विच टिकाईआ। तेरी मुहब्बत किसे दवारे ना मिले विकदी, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। मैं ओट रखी इक्क दी, एकँकार तेरा ध्यान लगाईआ। तेरी तार सितार अन्तर अन्तर खिचदी, प्रेम रबाब रही

वजाईआ। कुछ घुंडी खोल्ह विच दी, परदा दे उठाईआ। करवट बदल आपणी पिठ दी, सनमुख हो के सोभा पाईआ। मेरी आसा राह तक्के कित दी, केते जुग गए विहाईआ। मनसा पूरी कर मित दी, नर नरायण दया कमाईआ। ख़ाहिश रहे ना ठगौरी वाले चित दी, ठाकर हो के जोड़ जुड़ाईआ। जिधर वेखां तेरी जोत नूर धार रहे दिसदी, दहि दिशा नज़री आईआ। कुछ लेखणी वेद व्यास वाली चिट दी, चिट्टे उत्ते काला गया पाईआ। कुछ बाकी रविदास चमारे दी इट्ट दी, बहत्तरां नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहब्बत बख्श आपणी सिक दी, सिख़र चोटी चढ़ के मेला लैणा मिलाईआ। ब्यास कहे मेरी चोटी चढ़ जा सिख़र, वहिणा विच्चों पन्ध मुकाईआ। मेरा अगला मुक जाए फ़िकर, फ़ाकाकशी दे गवाईआ। मैं चल के आया इधर, पैंडा पन्ध मुकाईआ। कुछ वाइदा कृष्न नाल बिदर, भुक्ख्यां गया समझाईआ। पुरख अकाल जन भगतां पूरी करे सिधर, सध्धर आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा वखाईआ। ब्यास कहे मेरा लेखा दस्स खोल्ह, ख़ाली हथ्थ दयां दुहाईआ। आदि जुगादी सुत्ते अबिनाशी अचुते बोल, आपणी आवाज़ लगाईआ। जुग चौकड़ी मैं वहिणा विच करदा रिहा घोल, भज्जया वाहो दाहीआ। मेरा तत सक्या ना कोए विरोल, मथन विच ना कोए ल्याईआ। कोटन कोटि साध सन्त वजा के गए ढोल, डंका तेरा नाम सुणाईआ। अन्तिम रिहा कोई ना कोल, सारे कर के गए जुदाईआ। मेरे अंदर पैंदा हौल, दुक्खां दयां सुणाईआ। सप्त ऋषी दा याद आया पिछला कौल, इकरारनामा भोज पत्रां उत्ते लिखाईआ। कुछ नानक चरणां दा चरणोदक गया डोल्ह, चुले तिन्न हथ्थ उठाईआ। कुछ रविदासा मेरे अंदरों बालू रेत गया रोल, मुठ्ठी ढाई वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। ब्यास कहे मैं मंगां थोड़ा, बहुती आस ना कोए रखाईआ। राम दा फिरया घोड़ा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे विच पिछला रख के पौड़ा, अगला मुख गया बदलाईआ। कन्नां तों हो के डोरा, नेत्र तेरे वल्ल उठाईआ। वाहो दाही फेर दौड़ा, दिशा आपणी लई बदलाईआ। उच्ची कूके दस्सदा जाए पुरख अकाल धुर दा चोरा, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा देणा उठाईआ। ब्यास कहे मैं की करां तेरी गिणती, अनगिणत तेरी वड्याईआ। सीता इक्कीआं कदमां नाल मैनूं रही मिणदी, पिच्छे भौं भौं ध्यान लगाईआ। एह सेवा लग्गी रही तिन्न दिन दी, आर पार ना कोए कराईआ। धार नज़र आई तेरे चिन्ह्ह दी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अक्खां मीट अर्शां उत्ते मण्डल रास गिणदी, तार तारयां विच रखाईआ। एह खेल होई छिन दी, जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ।

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ सरवण सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मेरी आसा लम्बी, आयू समझ कोए ना आईआ। जिस नूं सुण के धरत धवल धौल कम्बी, हिल्ली वाहो दाहीआ। जिस वेले लोकमात जगत साध होए दंभी, कुटम्ब कूड़ नज़री आईआ। दीन दुनी खुशी बदले विच ग़मी, ग़मगीन देण दुहाईआ। पुरख अकाल ओस वेले आपणी धार चलावीं नवीं, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। दुनिया वल्लों गूढ़ी नींद सवीं, गुरमुख भगत लैणे जगाईआ। ग़रीब निमाणयां घर बहवीं, शाह सुल्तानां दर दुरकाईआ। उन्हां दी सार लवीं, जो जुग जन्म दे विछड़े ध्यान लगाईआ। उन्हां संग रवीं, जो तेरी ओट तकाईआ। नाम भण्डारा साची वस्त (दवीं), बिन हथ्थां आप वरताईआ। कुछ लहिणा रखीं याद जिस वेले अर्जन बैठा तवी, रावी रवी नाल सलाह पकाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आपणे शब्द दा बणया कवी, लेखा लिख्त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। ग्रन्थ शास्त्र वाक् भविख्त गुर अवतार पैगम्बर उस नूं जानण अवतार चवी, जगत दुनिया समझ किसे ना आईआ। धुर दा ढोला बण विचोला इक्को गवीं, गहर गम्भीर इक्को आपणा नाम देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। ब्यास कहे मेरी आसा बहु बहु लम्बी, मिणती विच नाप ना कोए कराईआ। प्यार दी धारों आपे जम्मी, निकली चाँईं चाँईंआ। सद जीवत बिना दमी, सास स्वास ना कोए रखाईआ। अठ्ठे पहर फिरे भन्नी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। तेरा हुक्म सुणना चाहुन्दी कन्नी, धुर फ़रमाना दे दृढ़ाईआ। तूं शाह पातशाह वड्डा धनी, धनाढ इक्को नज़री आईआ। तेरी धार हुक्म वाली मन्नी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कलयुग अन्त करीं ना अन्न्हीं, निज नेत्र देणा खुल्हाईआ। प्रीतम बण के साचा तनी, तन्द सितार देणा वजाईआ। वेख वसेरा छप्पर छन्नी, छहबर आपणा नाम लगाईआ। जेहड़ी धूढ़ भीलणी राम चरण आपणी कन्नी बन्न्ही, साढे तिन्न साल गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे विच लगाईआ। ब्यास कहे मेरी आसा ना वेखीं पुराणी, पूरबले जन्म नाल रलाईआ। जिहनूं लिख्या ना किसे पुराण पुराणी, वेदां विच ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर ना होए निगाहबानी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सारे तेरे आउण दी दस्स के गए निशानी, निशावर आपणा आप कराईआ। अक्खरां वाली गा के कहाणी, बाणी तेरा नाम प्रगटाईआ। मेरी सध्धरां वाली

जवानी मस्तानी, हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा खेल गुण निधानी, गुणवन्ते वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी मेरे नाल हुन्दी रही शैतानी, शरअ वाला संगल ना कोए कटाईआ। कलयुग अन्त कर मेहरवानी, महबूब तेरी आस रखाईआ। मेरी आसा नहीं बेगानी, बेनन्ती ओहो चली आईआ। झगड़ा केस नहीं दीवानी, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बीतदयां देर ना लग्गी राईआ। मेरे विच्चों आंचल धो के गई आदि शक्ति भवानी, दुर्गा आपणा पल्लू विच फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी आसा साचे दर कर परवानी, परम पुरख तेरी आस रखाईआ।

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मेरी आसा निक्की, निक्का हो के रिहा जणाईआ। भगत भगवान दी वेखां सिक्खी, सनमुख हो के दर्शन पाईआ। जिन्हां दी धार गोबिन्द लिखी, अगला लेखा आपणे नाल रखाईआ। साची दे के गया चिट्ठी, बिन काग़ज़ टुकड़े हथ्थ फड़ाईआ। मेला मिले धुर दी इक्की, बीस इकीसा नाल रलाईआ। ओन्हां जगत वासना जाए जिती, तृष्ना कूड़ ना कोए तपाईआ। सम्मत शहिनशाही दी होवे मिती, मित्र प्यारा वेख वखाईआ। साचे नाम दी धार दस्स के मिठ्ठी, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा दए मुकाईआ। ब्यास कहे मेरी आसा ना छोटी ना वड्डी, दोहां विच समाईआ। तेरे हुक्मे अंदर बद्धी, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। अन्त वेख वीहवीं सदी, सदम्यां वाली दए दुहाईआ। मैं कोई धार नहीं वहिण वाली नदी, जल आपणा रूप बदलाईआ। मेरी जोत ओस नाल जगी, जो जगत दा मालक इक्क अख्वाईआ। प्रीती ओस नाल लग्गी, जो कदीम दा मालक धुरदरगाहीआ। सितार ओस नाल वज्जी, जिस दा तन्द ना कोए तुड़ाईआ। ओस दुआर बहि के सजी, जित्थे सज्जण मिले शहिनशाहीआ। जिस दी बदले कदे ना गद्दी, गदागर गुर अवतार पैगम्बर लए बणाईआ। वण्ड होवे ना वदी सुदी, दिवस अमावस ना कोए बणाईआ। करनी दो जहान ना होवे रद्दी, कुदरत दा मालक इक्को अख्वाईआ। लोकमात जुगां विच निरगुण धार सरगुण हो के आवे कदी कदी, नित दरस ना किसे दिखाईआ। खेल करे अगम्मी चंगी, मार्ग आपणा आप प्रगटाईआ। सच नाम वजा मृदंगी, सोई सुरती लए उठाईआ। गुरमुखां जन भगतां पिठ्ठ होण ना देवे नंगी, परदा आपणा नाम रखाईआ। ब्यास आसा कहे सब दी कटे तंगी, जो बैठण सीस निवाईआ। उस दा योद्धा सूरबीर सुत दुलारा इक्क भुयंगी, बिनां भुजां तों

सब दी करे सफ़ाईआ। आपणा खेल करे बहु रंगी, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। निरगुण निरवैर निराकार बण के ढंगी, तरीका आपणा इक्क प्रगटाईआ। बीस बीसा धार बिक्रमी जिस वेले आवे पंझी, पंझीआं दे पंजे दए लगाईआ। अक्खर प्यार वेखे बवंजी, बावन परदा लाहीआ। खेले खेल नवीं शतरंजी, शमां गुल होवे लोकाईआ। जन भगतां प्रेम दी पा के फंदी, आत्म परमात्म नाता लए जुड़ाईआ। अग्गे मज़्हब दी रहिण देवे ना कोए पाबन्दी, शरअ विच्चों बाहर रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बणा के संगी, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार रहिण ना देवे दुरंगी, झगड़ा मुकाए खेल तरंगी, लेखा जाणे जगत जीव चुरंगी, चार जुग दा पूरब लेखा लिख्तां वाला वेख वखाईआ।

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड गांधरां ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मेरे नाल सलाह कीती भागीरथ, इकांत हो के ध्यान लगाईआ। तेरा वहिणां वाला नीरथ, जल पाणी रूप नज़री आईआ। किस बिध बणे साचा तीर्थ, तट किनार सोभा पाईआ। अमृत रस होवे सीरथ, अग्नी अग्ग बुझाईआ।
२१७ अंदरों कढु पीड़त, दुखियां दर्द मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा हर घट थाँईंआ। २१७
२० ब्यास कहे भागीरथ हौली दस्सया चुप, बिन रसन आवाज़ लगाईआ। तेरा क्यों बदले रुख़, मैनूं दे समझाईआ। क्यों नहीं २०
पैंडा जांदा मुक, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं हो के अग्गों खुश, खुशी नाल दिता दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी मेरा भेव सदा लुक, परदा सके ना कोए उठाईआ। सुहाउँदी रहे रुत्त, आपणा रूप बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सन्त भगत मेरा वण्डे कोए ना दुःख, दर्दी नज़र कोए ना आईआ। तृष्ना बुझाए ना कोई मनसा वाली भुक्ख, अन्तर तृप्त ना कोए कराईआ। मैं जुग चौकड़ी सब नूं ल्या पुछ, बेनन्ती आरज़ू अग्गे सुणाईआ। कवण तारे अपराधी सुत, दयावान दया कमाईआ। सब ने बोल के इक्को तुक, धुर दा हुक्म दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले आवे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, निरगुण हो के अंग लगाईआ। करनी दा पैंडा जाए मुक, करता होए सहाईआ। जन्म फेर मिले मानुख, तत शरीर वड्याईआ। पिछली कीती जाए टुट्ट, अग्गे आपणी गंढु पवाईआ। जल धार विच्चों पुट्ट, पटने वाले नाल जोड़ जुड़ाईआ। जित्थे सब दी जाए छुट, आवण जावण रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा सच्चा इक्क गोसाईंआ। भागीरथ कहे तैनूं कहिंदे वहिणां वाला दरया, भज्जें वाहो दाहीआ। कुछ

मैनूं दे समझा, किस बिध पैंडा लएं मुकाईआ। मेला होवे बेपरवाह, आपणे विच समाईआ। मैं वी तेरे कन्धे बहि के चलया नहा, नौ मिन्ट सिँघासण लाईआ। मैनूं थोड़ा जेहा अंदर चानण दिता पा, नूर डलक लगाईआ। थोड़ा जेहा रस गया आ, अमृत रूप बदलाईआ। धुन अगम्मी दिती सुणा, शब्दी ताल वजाईआ। पिच्छा दिता भुला, कुछ अग्गा दिता वखाईआ। सहिजे फड़ के बांह, हलूणा दिता लगाईआ। दस्स के आपणा नाँ, सो पुरख निरँजण करी पढ़ाईआ। मैं कर के अग्गों हां, सीस दिता निवाईआ। तेरी कन्धी बैठा आ, डेरा कक्खां उत्ते रखाईआ। तूं दस्स कीहनूं रिहा गा, कवण राग अलाईआ। ब्यास किहा मैं इक्को समझ के पिता माँ, पुरख अकाल रिहा ध्याईआ। दूजा इष्ट मन्नां कोई ना, चरण सीस ना किसे झुकाईआ। जो मेरी आसा रहे रखा, बिन पाणी जीवण जगत ना कोए वधाईआ। पंजां तत्तां वाले पहले गुरू लए ध्या, अन्त नाता गए तुड़ाईआ। माटी होई स्वाह, जोत विच समाईआ। मैं ओसे अग्गे अरज़ दिती सुणा, जिस मेरी बणत बणाईआ। उस सहिजे दिता जणा, हुक्मी हुक्म प्रगटाईआ। जिस वेले निरगुण धार हो के जावां आ, मैनूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जलवा कर रुशना, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा लेखा देवां मुका, मुकम्मल आपणा रंग चढ़ाईआ। जलधार विच्चों आपणे नाल लवां मिला, नाता धुर दा आप रखाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आ, भरोसे नाल रिहा दृढ़ाईआ। भागीरथ मैं ओसे दा तक्कां राह, जिस तैनूं झलक दिती चमकाईआ। झल्लां बेलयां विच मेरा होवे सहा, सहायता करे थाँईं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि इक्क मलाह, जो बेड़े पत्तन रिहा तरा, तारनहार वड्डी वड्याईआ।

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ राम सिँघ दे गृह पिण्ड सरींह ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे तेरा खेल बेपरवाही, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्त कोए ना आईआ। तेरा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी लिखे कोए ना कलम शाही, काग़ज़ नेत्र रोवण मारन धाहींआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर जिस बणाए राही, पाँधी बण के लोकमात सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरीआं गए पाईआ। तेरे नाम दी अगम्म अथाह बेपरवाह करदे गए शनवाई, सच संदेसा नर नरेशा दो जहान सुणाईआ। तेरी मंज़ल दस्सदे गए उच्च आलीशान हाई, जिस नूं जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। उच्ची कूक कूक रसना जेहवा बत्ती दन्द देंदे गए दुहाई, तेरा ढोला राग नाद नग़मा नर नरायण इक्को गाईआ। निरगुण निरगुण अन्तर अन्तर निरंतर लिव इक्को लाई, परमात्म मिल के परमात्म खेल खिलाईआ। जिस दा लहिणा देणा

कोई जाण ना सके हिन्दसयां विच इकाई, ज़ीरो सिफ़रा समझ किसे ना आईआ। भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच सृष्टी विच कर के गए लिखाई, बोध अगाधा भेव अभेदा आप जणाईआ। जिस दा परदा ओहला कोई चुक्क ना सके राई, रईयत रंक राज राजान शाह सुल्तान वेखण कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरा खेल अगम्म अथाही, अलख अगोचर तेरा अन्त ना कोए समझाईआ। नमों नमस्ते कहि के चरण कँवल सीस रहे झुकाई, डण्डावत विच आपणी खुशी बणाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच सच संदेश देणा सुणाई, अनरागी आपणा राग अलाईआ। दर दुआर ठांडा नर निरँकार इक्क वखाईं, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशी, धुर सुल्तान हो मेहरवान आपणी मेहर नज़र उठाईआ। ब्यास कहे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर गहर गम्भीर, गवर तेरा खेल नज़री आईआ। आदि जुगादी निरगुण सरगुण धार तेरी बेनज़ीर, जगत नेत्र लोचण नैण अक्ख वेखण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म परवरदिगार सांझे यार बदल दे तकदीर, तहिरीर तकरीर दोहां दा लहिणा दे मुकाईआ। तेरा नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान जिस दे हथ्थ सच तदबीर, दो जहान भेव अभेदा दे खुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर मैनूं दे के गए धीर, धरवासा लोकमात धराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो मेहरवान कलयुग अन्त सदी चौधवीं आवे अख़ीर, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा फेरा पाईआ। जिस नूं झुकदे पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी जिस दा गीत गाईआ। उह लेखा जाणे काया माटी तन वजूद लख चुरासी साढे तिन्न हथ्थ सरीर, मानुख मानुश मानस परदा दए चुकाईआ। जिस दे कोल नाम खण्डा शमशीर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जन भगतां रहिण ना देवे दिलगीर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवेश हो के धुर दी मंग मंगाईआ। ब्यास कहे मैं राह रिहा तक्कदा, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। दो जहानां रिहा लभ्भदा, खोजत खोजत वेख वखाईआ। खेल वेखदा रिहा सब दा, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जो घड़या सो रिहा भज्जदा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। बिन तेरे दीपक दीपक साचा नूर कोए ना जगदा, शमां गुल दिसे लोकाईआ। तेरा मार्ग आदि जुगादि सदा सच दा, गुर अवतार पैगम्बर गए दृढ़ाईआ। तूं लूं लूं अंदर रचदा, साढे तिन्न करोड़ तेरी शरनाईआ। तूं बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द भगतां प्रीती अंदर हस्सदा, हस्ती विच्चों हस्ती लएं प्रगटाईआ। सच इशारा दे के निज लोचण नेत्र नैण अक्ख दा, प्रतख मिले आप गोसाँईंआ। कलयुग अन्त अख़ीर वेला वक्त नहीं रहिणा वक्ख दा, विछड़े लै मिलाईआ। सच दवारा खोल्ह आपणे नाम हट्ट दा, हटवाणा हो के सेव कमाईआ। कूड़ कुड़यार जाए

नरसदा, भय विच आपणा मुख छुपाईआ। सति धर्म मार्ग लग्गे तेरे जस दा, चार वरन अठारां बरन तेरा ढोला गाईआ। सदा सदा नित नवित परम पुरख तूं भगतां पैज रखदा, कलयुग अन्त हो सहाईआ। तेरा खेल सदा समरथ दा, समरथ पुरख तेरी बेपरवाहीआ। ब्यास कहे मैं चरण कँवलां उपर बिन सीस आपणा सीस रखदा, जगदीश तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मालक आदि जुगादी घट घट दा, गृह गृह अंदर काया मन्दिर दीन दुनी कर सफ़ाईआ।

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरदयाल सिँघ दे गृह
चीमां कलां ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे याद आया मंडी मेरे विच गोबिन्द धोया भथ्था, पाणी पंज वेरां आप हिलाईआ। तेरां दा सी नाल जथ्था, गुरमुख संग ल्याईआ। मैनूं उठा के सुणाई कथा, शब्दी हुक्म दृढ़ाईआ। उठ प्यारे दुलारे प्रभ दे बच्चा, बचपन तेरा दयां समझाईआ। चार जुग तेरा खेल होया कच्चा, इट्टां पत्थरां नाल टकराईआ। आ अमृत पी रता, सज्जे हथ्थ दी उंगली दिती चटाईआ। फेर चुक्क के उत्ते पट्टां, हथ्थ छाती उत्ते रखाईआ। घास दा पुट्ट के गट्टा, मेरे विच दिता रुढ़ाईआ। उन्नी उंगलां दा फट्टा, सहिजे दिता टिकाईआ। अद्ध विचकारों फड़ के कटा, खण्डा दिता छुहाईआ। एह खेल मैनूं लग्गा अच्छा, वेख खुशी मनाईआ। गोबिन्द फड़ के आपणा भथ्था, मेरे उत्ते दिता हिलाईआ। मेरीआं खुल्ह गईआं अंदरों बाहरों अक्खां, दो जहान नज़री आईआ। बिना पुरख अकाल मिल्या कोई ना सखा, कूड़ी दिस्सी जगत लोकाईआ। मैं जोड़ के दोवें हथ्थां, बन्दना चरण लई कराईआ। कुछ दस्स अगला पता, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द खुशीआं नाल हस्सा, सज्जा चरण तिन्न वार पत्थर नाल टकराईआ। ओसे वेले वगण लग्गा ठक्का, हवा पाणी ज़ोर लगाईआ। निरगुण धार पुरख अकाल आया नठ्ठा, जोती जाता फेरा पाईआ। जिस दे कोल चार जुग दे लेख दा पटा, हिस्से गुर अवतार पैगम्बरां रिहा वखाईआ। निशाना बिन काग़ज़ नज़र आया चिट्टा, शाही वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां नालों लम्मा चिट्ठा, जेहड़ा सहिजे दिता जणाईआ। मैं हो के हका बक्का, हथ्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ। गोबिन्द सहिजे मैनूं लाया धक्का, ढाई कदम अग्गे दिता वधाईआ। जित्थे विछी अगम्मी सफ़ा, जिस दी बणत ना कोए बणाईआ। पुरख अकाल दिस्या पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। वड्डउँ वड्डा निक्कयों निक्का, दोवें धारा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

भेव अभेदा आप समझाईआ। ब्यास कहे मैं धक्का खाधा ढाई कदम, हुलार समझ कोए ना आईआ। मेरा कम्ब गया बदन, सुरती अंदरों सुरत भवाईआ। मैं हथ्थ लग्गा मल्लण, आपणे आप पछताईआ। नेत्र हन्झू लग्गा किरन, मोती छहबर लाईआ। मैं परदक्खणा, विच लग्गा फिरन, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। पुरख अकाल जोत दी दिती किरन, नूर कीता रुशनाईआ। ओधरों साढे तिन्न साल दा बच्चा आया हिरन, रंग सुनहरी रूप वटाईआ। गोबिन्द डिग्गा आ के चरण, सीस सोहणा दिता झुकाईआ। मैं ओस नाल लग्गा लड़न, गुस्सा मेरे अंदर आईआ। मैं इस दी तक्की सरन, एह मेरा धुरदरगाहीआ। दूजा एथे कोई नहीं देणा वड़न, एह मेरी वड्याईआ। आपणे विच्चों कोई नहीं देणा तरन, डूँघे वहिण दयां वहाईआ। गोबिन्द किहा मैं करनी दा करन, करते दा हुक्म दयां समझाईआ। गोबिन्द प्रेमी सारे तरन, तेरी चले ना कोए चतुराईआ। साची मंज़ल मेरी चढ़न, जित्थे मिले बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, धुर दा राग अल्हाईआ। ब्यास कहे मैं विचे विच लग्गा सड़न, अग्नी मेरे अंदर आईआ। ओधरों भज्जा आ गया देवता वरुन, निउँ निउँ लागे पाईआ। ओधरों अमृत मेघ झिरना लग्गा झिरन, बादल घनघोर रहे वखाईआ। ओधरों शंकर कैलाश उत्तों लग्गा रिड़्हन, नठ्ठया वाहो दाहीआ। मैं उहनूं वेख के लग्गा चिढ़न, तबीअत लई बदलाईआ। मेरा दिल लग्गा गिरन, हौसला रिहा ढाहीआ। उलटा गेड़ा लग्गा गिड़न, सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। ब्यास कहे जिस वेले मेरे विच भथ्था धोता, आपणी हथ्थीं साफ़ कराईआ। मैं जागया उठया सोता, सुरती अक्ख खुल्हाईआ। ओधरों नहावण आया खोता, उमर नौ साल वखाईआ। ओधरों मछली मार के गोता, जल पाणी दिता हिलाईआ। ओधरों काफ़ले विच्चों विछड़ के आ गया बोता, धौण लंमी लई कराईआ। ओधरों लक्कड़हारा हथ्थ विच फड़ के टोका, भज्जया वाहो दाहीआ। ओधरों चौदां साल दा बुढ्ढा वेख्या झोटा, अक्खां लाल कढ्ढ डराईआ। गोबिन्द सब नूं वेख के चरणां तों लाहया खोसा, पैर नंगे लए कराईआ। आओ ऋषीओ तुहाडा मेरे नाल हुण नहीं कोई रोसा, सतिजुग दे विछड़े कलयुग अन्तिम लवां मिलाईआ। प्रेम प्यार अंदर तुहाडे अंदर जगावां जोता, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। तुहाडी जन्म जन्म दी मुके सोचा, लख चुरासी दयां कटाईआ। दुःख भोगया बहुता, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फेरा पाईआ। हुण मेरे मिलण दा मिल गया मौका, राम कृष्न दए गवाहीआ। साची नईआ चढ़ावां नौका, नाम जहाज़ दयां दृढ़ाईआ। फेर ढईए दा लाउणा ढौंका, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। धाहीं मारे पटणा पौंटा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरा रूप (शब्दी) धार होवे चोटा, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। चरण लग्गण ना देवां कोई खोटा, कूड़ कुड़यारां परे हटाईआ। जन भगतां अंदर नाता जोड़ां

आपणे मोह दा, मुहब्बत इक्को घर बणाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा इक्क दो दा, एकँकार आपणे नाल मिलाईआ। खेल करां जोती शब्दी धार छोह दा, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। मंडी तों फासला तिन्न कोह दा, गोबिन्द सहिजे गया समझाईआ। जित्थे प्रकाश नहीं किसे दीपक लो दा, अन्ध अन्धेरा नज़री आईआ। एहदा लेखा लिखणा जो नाता जोड़या छब्बी पोह दा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। ब्यास कहे मेरे अंदर गुस्सा आया रोह दा, हौका लै के दिता जणाईआ। किथों मेल होया एस गरोह दा, इक्ठे कन्ढे उत्ते आईआ। गोबिन्द ओस वेले, ब्यास कहे मैनूं शब्द सुणाया सोहँ सो दा, झगड़ा अवर रिहा ना राईआ। जिस वेले चानण होवे पुरख अकाल दी लो दा, लोक परलोक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। ब्यास कहे जिस वेले गोबिन्द भथ्था मलदा, बाहरों करे सफाईआ। ओसे वेले ब्रह्मा चलदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओधरों सूरज जांदा सी ढलदा, बारां तों बारां मिन्ट लँघाईआ। ब्यास कहे मैं भरया सी जल दा, वहिणां विच आपणा अन्त वखाईआ। इक्क हुलारा आया छल दा, सत्त हथ्थ उच्चा हो के आपणी धार वगाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा एह खेल कलयुग कल दा, कूड़ विकार तेरे विच्चों बाहर कढाहीआ। तेरे प्रेम अंदर प्यार हो के रलदा, प्रीतम हो के दयां वड्याईआ। लेखा जाणां दीन दुनी जगत थल दा, अस्गाह पड़दे दयां उठाईआ। कुछ शब्द संदेसा पुरख अकाल पिच्छों घल्लदा, ब्यासे तैनूं दयां जणाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी सब नूं रिहा छल दा, उह मेरा पिता माईआ। ओस दा भाणा कदे ना टल्दा, मेरी तत्तां नालों होए जुदाईआ। मैं मालक बणना सचखण्ड दवारे अटल दा, अटल पदवी लैणी पाईआ। शब्दी धार हो के जोत विच रलदा, निरगुण निरगुण विच आपणा आप छुपाईआ। दरगाह साची रहवां पलदा, आपणा जोबन लवां वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। भथ्था कहे जिस वेले मैनूं लग्गी उंगल, मेरे तन लई अंगड़ाईआ। विच्चों निकली गुंझल, द्वैती डेरा ढाहीआ। मैनूं सब कुछ लग्गा सुज्झण, अक्ख दिती खुल्हाईआ। अगला लेखा लग्गा बुज्झण, परदा दिता चुकाईआ। कुछ कौल इकरार कीता गोबिन्द नाल बुधन, बुधू शाह ओसे वेले सनमुख हो के दए दुहाईआ। एस गोबिन्द ने आपणे वार जाणे पुत्तन, गुरमुख पुत्त गोद लए उठाईआ। ब्यास इक्क वेरां अकाल पुरख नूं जावे पुछण, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। फेर सन्त सुहेले आवे गोदी चुक्कण, भगत भगवान नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दा मेटे दुक्खण, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। कलयुग कूड़ी जड़ आवे पुट्टण, शौह दरया विच रुढ़ाईआ। ओस वेले गुरमुख विरले कोटां विच्चों उठण, जिन्हां आपणी दया कमाईआ। दुनिया तों आवां लुकण, जगत नेत्र दरस कोए ना पाईआ। फेर तैनूं आवां पुछण,

लहिणा देणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखणहारा मार ध्यान, निगाह आपणी विच रखाईआ।

★ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह जंडयाला ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मेरे वेंहदयां भज्जा आ गया ख़रगोश, सुध्ध बुध भुलाईआ। गोबिन्द चरणीं डिग्गा हो बेहोश, चारे टंगां उपर उठाईआ। सांस नाल हिल्ले पोश, खलड़ी दए दुहाईआ। साहिब सतिगुर कुछ सोच, अंदरे अंदर रिहा जणाईआ। क्यों जन्म दिता मातलोक, जूनीआं विच भवाईआ। मेरे पिच्छे शिकारी लग्गे बहुत, भट्टी ज़ात अख्वाईआ। फ़तूरीए ओनां दे दोहत, कहलूरीए नाल रलाईआ। ग्यारां दिन लुकदा रिहा रोज़, आपणा आप छुपाईआ। करदा रिहा खोज, चारों कुण्ट नैण तकाईआ। शब्दी हुक्म अंदर तूं आपणी दस्सी मौज, कन्ढे बैठा धुर दा माहीआ। ग़रीब उधारना जिस दा जोग, दीनां दया कमाईआ। मैं एथे गया पहुंच, चरण कँवल सीस झुकाईआ। बन्दना कर डण्डौत, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। ख़रगोश पिच्छे आए कुत्ते चार, सूकर नाम रखाईआ। नेत्र रो पए ज़ारो ज़ार, कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर गोबिन्द धार, तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडे नाल गोबिन्द कर प्यार, सच दईए सुणाईआ। नानक दे के गया लार, शब्दी हुक्म नाल दृढ़ाईआ। लालो दवारे दर्शन कीता आण, घरों बाहर वेख वखाईआ। निम्रता नाल कीती प्रणाम, बन्दगी सीस झुकाईआ। ओस दिता फ़रमान, भेव अभेद खुलाईआ। जिस वेले गोबिन्द भथ्था लै के आवे विच जहान, चिल्ला धुर दा हथ्थ उठाईआ। तुहानूं देवे इक्क ज्ञान, भेव अभेद खुलाईआ। होवे मेहरवान, लहिणा देणा दए मुकाईआ। कूकर कहिण उह वक्त पहुंचया आण, साडा अन्तर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा वखाईआ। गोबिन्द किहा एह सूकर आए नठ्ठे, आपणा पन्ध मुकाईआ। ख़रगोश, नाल होए कठ्ठे, लेखा पिछला रिहा दृढ़ाईआ। तुहाडा पूरब जन्म नौ नौ वार होया जोबन वाले वच्छे, पंज साल तों वध्ध उमर ना कोए भुगताईआ। इक्क वारी मानस जन्म मिल्या अच्छे, अच्छी तरां दृढ़ाईआ। तुसीं मेरी चरणी ढठ्ठे, महीने साढे तिन्न सेव कमाईआ। तुहाडे मनां ने पाए रट्टे, अंदरों दिता भड़काईआ। किस दे जाल विच फसे, डोरी ल्या बंधाईआ। चोरी चोरी मेरी खेल वेख हस्से, चुग़ली निंदया खुशी बणाईआ। जिस वेले मैं प्रगटाए पंज कक्के, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। तुसां पंजां ने चोरी कर के गुरमुखां दे कच्छे, भज्ज गए वाहो दाहीआ। ओसे वेले शब्दी धार मैनूं दस्से, सुनेहड़ा दिता

पुचाईआ। हुक्म अंदर दे के धक्के, दवारयों बाहर दिता कढाहीआ। तुहाडा लेखा केहड़ा कटे, चुरासी विच्चों कवण छुडाईआ। तुसीं ग्यारां वार आंडयां विच बणे बच्चे, घोगड़ पिछले दयां समझाईआ। तिन्न वार मेरा बाज़ तुहानूं सट्टे, छत्ती दिन तों वध्ध उमर ना किसे भुगताईआ। अन्त वेर बाज़ मेरी चरणी ढठ्ठे, निउँ के सीस निवाईआ। कुछ खेल दस्स सतिगुर सच्चे, दर तेरे मंग मंगाईआ। मैनूं ऐं दिसदा एह तेरे सिख कच्चे, कच्चा तन्द नज़री आईआ। कर किरपा बख्श एह वी तेरे बच्चे, लहिणा दे मुकाईआ। गोबिन्द किहा मेहरवान हो के करां कठ्ठे, देवां माण वड्याईआ। एनां नूं शौह दरया कोई ना सट्टे, जल धार ना कोए रुढ़ाईआ। एसे कारण ब्यास दे आए तटे, किनारे उत्ते डेरा लाईआ। गोबिन्द एनां पत रखे, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे ढक्के, जित्थे फेर ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा रिहा मुकाईआ। सवानां पिच्छे आए नौ शिकारी, टोपीआं पग्गां सिर टिकाईआ। इक्क दा नाँ विच गिरधारी, गोपी चन्द पिता रिहा बणाईआ। ओहदी पत्थर ठाकर नाल यारी, नित नित इश्नान कराईआ। ओहदे घर प्रभ दे मिलण वाली सधरां भरी लाड़ी, उमर इक्की साल जणाईआ। ग़रीबी विच सदा करे दिहाढ़ी, मेहनत कर के रोटी खाईआ। गोबिन्द वेख उह वी मंगण आ गई वाड़ी, सीस झुका के सीस निवाईआ। बांके तेरी सोहणी लग्गे दाढ़ी, दाढ़ी दा सदका कुछ खैर देणा पाईआ। असीं लोक गवार रहिणा विच पहाड़ी, बुद्धी समझ ना कोए समझाईआ। मेरे हथ्थ वेख कुहाढ़ी, बालण कट के झट लँघाईआ। नाल तिक्खी रखी आरी, सवा गिठ विच लम्बाईआ। मैनूं प्रभ दे मिलण दी बीमारी, एह दुःख अठ्ठे पहर सताईआ। एसे ब्यास विच मैं ठरां दिन दिहाढ़ी, रोज़ नहा नहा के वास्ता पाईआ। अठारां साल रही कुँवारी, कुम्भ विच पाणी रख के जल पिण्डे उत्ते वहाईआ। मेरी बद्धी ना किसे धारी, अंदरों धीरज ना कोए रखाईआ। मैं वेख के सूकर दरवेश तेरे भिखारी, बेनन्ती दिती सुणाईआ। एनां नवां विच्चों मेरा पती जिस ने मैनूं कीता दुख्यारी, पोश गोश नित रसना नाल लगाईआ। वैराग विच आ के उत्तों आपणी चुन्नी पाड़ी, टुकड़े दो दित्ते कराईआ। थल्ले वच्छा के नेत्र रो के हौका भर के धाहां मार के किहा मेरी सधरां वाली खारी, उत्तों भार देणा लुहाईआ। भुक्खी नूं फिरदयां लँघ गई अज्ज दी दिहाढ़ी, कीमत हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मैनूं ऐं दिसदा ना तूं पुरख ना तूं नारी, नर नरायण नज़री आईआ। वेखीं किते मैनूं वसदी नूं ना उजाड़ीं, सूकरां नाल शकारीआं दा लेखा मुकाईआ। मेरे उत्ते फेर मुसीबत आवे भारी, मैनूं रंडी कहे लोकाईआ। मैनूं बणावीं ना मात विभचारी, कुकरमां तों लैणा छुडाईआ। पिच्छो आ के ओस दी माँ ने वाज मारी, सदो कर के रही बुलाईआ। उठ घर नूं चलीए उत्तों रात आई काली, अन्धेरा रिहा छाईआ। सदो किहा माँ मैनूं जगदी

दिसे दीवाली, दीप माला सोहणी वेख वखाईआ। एह दुखियां दा पाली, सूरबीर बांका वड्डा बेपरवाहीआ। जे फल ला देवे मेरी डाली, अमृत रस खवाईआ। मेरी लेखे लग्ग जाए घाल घाली, जेहड़े नौ सौ चुरानवे कदम चल के एहदे पास आईआ। मेरी बुद्धी अजे बाली, नढ्ढी रूप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा रिहा मुकाईआ। सदो कहे मेरा हाढ़ा, निउँ के सीस निवाईआ। सिन्धू कहे मैं एस दा लाड़ा, जोड़ जगत वाला जुड़ाईआ। मेरे कोल नहीं कोई भाड़ा, पतण पार ना कोए कराईआ। सदो किहा एह धुर दा सिक्दारा, मैनूं नज़री आईआ। कमलया बण जा चरणां दा भिखारा, भिच्छया धुर दी देवे पाईआ। फेर लभ्भणा नहीं ब्यास किनारा, तटां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। उह कर के निमस्कारा, धूढ़ चरणां नाल चरणां उत्ते आपणा सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। ब्यास कहे ओन्हां दे पिच्छे सत्त आ गए मंडी दे सिक्दार, सुम्ब घोड़यां वाले हिलाईआ। सोहणे शस्त्र तन शृंगार, जोबन छहबर लाईआ। दूर खलो गए कदम नौ दस पंज चार, इक्क दूजे वल्ल ध्यान लगाईआ। ब्यास कहे मैं वेख्या ओन्हां दा हाल, अंदरे अंदर रहे कुरलाईआ। गोबिन्द टेडी अक्ख कर के थोड़ा जेहा दिता जमाल, जमाल दे के आपणी पिठ्ठ बदलाईआ। ओन्हां नूं नज़री आउण डहि प्या काल, तिन्नां सालां दे अंदर सब दी होणी सफ़ाईआ। जेबां विच्चों कढ्ढ के रुमाल, नेत्रां दे हन्झू साफ़ कराईआ। झट भथ्थे ने किहा अज्ज मैनूं बणाओ दलाल, मेरे कारण गोबिन्द तट किनारे डेरा लाईआ। हैरानी विच अंदरे अंदर कहिण एह की होया कमाल, सानूं कवण ख़बर सुणाईआ। ओधरों इक्क चनयां दा सौदा कराउण वाला आ गया दलाल, जो मंडी दा शाहकार अख्वाईआ। अक्ख पुट्ट के नैण तक्क के वेख्या इस दी पिठ दे उत्ते ढाल, सोहणा रंग चमकाईआ। किते सानूं ना देवे मार, खड़ग खण्डा उठाईआ। हौली जेही आण के कीता सवाल, साथीआं दिता जणाईआ। चलो भज्जीए घोड़यां वाले अस्वार, नाल मैनूं लओ टिकाईआ। झट भथ्थे किहा ख़बरदार, गोबिन्द कन्ढे आया भज्ज कोए ना जाईआ। अज्ज दा दिन मेरे वण्डे आया, जो आया पार लँघाईआ। गोबिन्द दे डण्डे चढ़ाया, पौड़ी दो जहान ना कोए वखाईआ। तुसीं मानस बन्दे तुहानूं सतिगुर नज़र ना आया, जो सब दा पिता माईआ। मारदा नहीं मोयां नूं ज्वालण आया, सद जीवत आपणे विच समाईआ। अचरज इस ने खेल कराया, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। सारयां ख़ुशी नाल सीस झुकाया, चरणीं डिग्ग के चरण चुम्म के चम्म दृष्टी लई बदलाईआ। इन्हां दे पिच्छे इक्क कसाई मछली फड़न वाला आया, जाल मोढ्यां उत्ते टिकाईआ। कुण्डीआं दा अगों मूँह भवाया, नौ सौ नड़िनवे इक्को तन्द बंधाईआ। ढाई ढाई तोले गोशत सब दे अग्गे टिकाया, कांटयां नाल दिता अटकाईआ। खुशीआं विच अंदरे

अंदर करे सलाहया, आपणा मता पकाईआ। जे किरपा करे बेपरवाहया, मेरा पूर दए भराईआ। नौ सौ नड़िनवे मीन इक्को वार दए फसाया, बच के निकल कोए ना जाईआ। फेर कहे मैं ब्यास किनारे, आया, प्रभ ने मेरी आसा पूर कराईआ। ढाई रुपईए सैंकड़ा सब दा मुल्ल देवां पवाया, पंझीआं विच्चों रकम थोड़ी लवां बणाईआ। फेर खुश होवे मेरे घर वाली जिस दा नाम माया, उमर पैंती साल हंढाहीआ। जिस ने नवां बच्चयां नूं जन्म दवाया, छोटा अठारां दिन दा नज़री आईआ। फेर कहां छोटे बच्चे ने मेरा रोज़गार बणाया, सौदा सच कराईआ। सोचां सोचदा चलदा चलदा ओसे कन्ढे आया, जित्थे गोबिन्द डेरा लाईआ। झट्ट ओसे वेले भथ्था आपणी धार नाल ओहदा हिरदा सलदा, तीर निराला दिता लगाईआ। कुछ लेखा दे कल दा, मच्छिआं दे नौ वट्टे, साढे तिन्न जूए विच लाए सट्टे, ढाई वेसवा झोली घत्ते, इक्क नाल मन दी वासना मारे फक्के, दोहां नाल बच्चयां झट लँघाईआ। छेती नाल बचन दस्स दे सच्चे, तेरे यार किथ्थे कच्चे, जिन्हां नाल चोरी अक्ख मिलाईआ। ओसे वेले माहीगीर चरणी ढठ्ठे, रो के दए दुहाईआ। मेरे पाप कौण कटे, मैं परदा दयां उठाईआ। मैं आपणे चाचे दे तिन्न पुत्त कटे, जिन्हां दे हिस्से पिच्छे आपणी कीती चतुराईआ। एसे घाट उत्ते वारो वारी आ के सुट्टे, पाणी जल दित्ते रुढ़ाईआ। ओधरों भौंक पए चारे कुत्ते, होका दे के रहे दृढ़ाईआ। ओहनूं नज़र आ गए ओसे वेले मेरे जन्म होए तिन्न पुठ्ठे, अग्गा पिच्छा नज़र कोए ना आईआ। ओधरों भथ्थे दा निशाना फेर छुट्टे, आपणा बल प्रगटाईआ। सहया ख़रगोश आपणीआं चारों टंगां उलटे, सिध्धा हो के कन्न हिलाईआ। रो के किहा गोबिन्द साडे अपराध वेख ना होवीं गुस्से, सारे दुखीए तेरे अग्गे कुरलाईआ। धन्न भाग जे तेरा दर्शन पाया साचे जुस्से, साडे जिस्म दे बदलाईआ। तेरे बिना कोई ना पुछे, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आ गए रुठ्ठे, रुसयां लै मनाईआ। किरपा कर के बणा आपणे पुत्ते, पिता हो के दे वड्याईआ। ब्यास कहे मैं खेल वेखे वेले ओसे, सनमुख हो के अक्ख खुल्हाईआ। ओधरों वणजारा वेचण आ गया इक्क धुस्से, कन्नी लाल पीली बणाईआ। सोहणी उन नाल गुंदे, डोरे ढाई उंगलां रखाईआ। ओहदे पिच्छे तिन्न आ गए गुंडे, सोटे मोढ्यां उत्ते टिकाईआ। अग्गे नौजवान सुरस्ती अस्सी कदम ते सिट्टे रही डुंगे, हथ्थ बाजरे नाल छुहाईआ। ओहदे कन्नीं सी ढाई तोले दे बुंदे, मोती नौ नौ जुड़ाईआ। वाल चोटी उत्ते पिच्छो अग्गे नूं गुंदे, लिटां मथ्थे उत्ते लटकाईआ। ओने चिर नूं चौदां कठ्ठे आ गए गुंगे, इशारयां नाल इक्क दूजे समझाईआ। जे सानूं कुझ बाजरा पा देवे झोली विच झुंगे, रूंगा कर के लईए खाईआ। ओने चिर नूं गवालण लै के आ गई दूधे, मटकी सिर दे उत्ते उठाईआ। दो बुढ्ढे आ गए डुड्डे, हथ्थां नाल चलण वाहो दाहीआ। ओधरों मैंडक नौ निकल के बाहर कुद्दे, आपणी

आपणी छाल वखाईआ। गोबिन्द सब दीआं आसां बुज्झे, कन्ढे उत्ते बैठा भार वक्खी वाला पाईआ। ओधरों किनारे तक्कया दूजे, दो गज़ देण दुहाईआ। अंदरों बड़ा दुक्खे, दर्द रहे सुणाईआ। गोबिन्द असीं इक्की जन्म दे भुक्खे, गुर हरि गोबिन्द गया समझाईआ। जंगलां विच रहे लुके, प्रभासां विच झट लँघाईआ। बिन तेरे साडा पैंडा मूल ना मुक्के, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। ओधरों ओनृां दा महावत अग्ग रख रिहा सी उत्ते हुक्के, फूक मुख नाल लगाईआ। लक्कड़ी दे थाँ ओस बाल दिते किक्करां दे तुक्के, जिनृां दे अंदर बीज देण दुहाईआ। बौहड़ी असीं अद्ध असमानों टुट्टे, धरती उत्ते आपणा आप रुलाईआ। साडी वात कोई ना पुछे, फल फुल्ल कम्म किसे ना आईआ। पता नहीं गोबिन्द किहड़ी गल्लों साडे नाल रुस्से, दूर बैठा अक्ख ना कोए खुलृाईआ। उच्ची कूक पुकार किहा बौहड़ी दरोही सतिगुर नालों कदे ना किसे दी टुट्टे, जगत जीवण कम्म किसे ना आईआ। ओधरों तिन्न चोर आ गए जिनृां जांदे राही लुट्टे, चांदी तरृेठ तोले झोली पाईआ। ओधरों इक्क सवाणी आ गई जिस ने श्रृंगार कीता आपणे सज्जे गुट्टे, चूड़ीआं मुलम्मे वालीआं पाईआ। चोर ओसे वेले ओहदे उत्ते तुट्ठे, आपणा बल वखाईआ। ओन लाह के कंगण ओनृां अग्गे सुट्टे, दो हत्थीं ताली दिती वजाईआ। औह वेखो गोबिन्द तुहाडी जड़ पुट्टे, जो मेरा पिता माईआ। मैनूं आपे गोदी चुक्के, बच्ची आपणी लए बणाईआ। ओधरों टोपी विच रो पए तुक्के, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। भैण की तूं वी साडे नाल ग़ुस्से, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। जे फड़ के साडी अग्नी अग्ग अंग्यार वाली स्वाह कर के ओहदे चरणां उत्ते सुट्टें, धूढ़ बण के खुशी लईए मनाईआ। ओधरों दो नौजवान आ गए राह घुस्से, परेशानी विच परेशान नज़री आईआ। ओनृां दे अंदर इक्को लहर उठे, हौली हौली रही हिलाईआ। तुहाडे वेले अन्त अख़ीरी चुक्के, चक्क खूह वांगूं फेर नज़र किसे ना आईआ। उह इक्क दूजे नूं रहे पुछे, आपणा आपणा हाल सुणाईआ। ओधरों सठ्ठ साल दी माई बुढ्ढी तिन्न भुन्न के आ गई भुट्टे, पाटे चीथड़ नाल रखाईआ। वे बच्चयो जे तुहानूं पार किनारे वाला पुछे, पसचाताप दए मुकाईआ। तुहाडे अंदर ओस दा प्रेम फुट्टे, फट्ट जन्म जन्म दा दए मिटाईआ। औह वेखो सूकर ओसे दे तीर नाल फट्टे, ख़रगोश खुदी गया गवाईआ। ओसे ने तारने पत्थर वट्टे, मेहर निगाह नज़र जिधर उठाईआ। ओसे वेले सारे उठ के नठ्ठे, भज्जे वाहो दाहीआ। ब्यास निमाणा हो के राह दोहां विचकारों छड्डे, जल धारा अग्गे पिच्छे ना कोए हिलाईआ। गोबिन्द किहा नेड़े आयां नूं आओ मेरे डड्डे, बच्चयो दयां वड्याईआ। अज्ज तों तुहानूं आपणे लावां अग्गे, अगला पन्ध मुकाईआ। चुरासी विच्चों कढ्ढे, जम की फाँसी दिती तुड़ाईआ। फेर जिस वेले आवां तुसीं सारे आओ सद्दे, मेरे नाल मेरा संग बणाईआ। मैं मनुष बणाउणे सन्त बणाउणे भगत बणाउणे तुसीं खोते गधे, लूले लंगड़े

टुंडे आपणे नाल मिलाईआ। मेरे प्यार अंदर बद्धे, तत्ती वा कदे ना लग्गे, सदा रहो सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। ब्यास कहे मैं परेशान हो के दोवें हत्थ बद्धे, निउँ के वास्ता पाईआ। साहिब सतिगुर तैनूं केहड़े लगदे चंगे, मैनूं दे समझाईआ। की जेहड़े नहाउँदे गोदावरी गंगे, सुरस्ती जमना तारीआं लाईआ। गोबिन्द किहा बिन मेरे प्यार सारे गंदे, नहावण धोवण कम्म किसे ना आईआ। जेहड़े मुहब्बत विच रंगे, कदे ना होवण नंगे, मंदयां दे मंदे आपणे घर वसाईआ। ब्यास किहा की फेर पाहुल देवें नाल खण्डे, जल पाणी किस बिध वण्डें, जाम केहड़ा देवें प्याईआ। गोबिन्द किहा ओन्हां दे अन्तर निरंतर हो के मेरी धार लँघे, मैं रहिण ना देवां दोरंगे, फसा के आपणे फंदे, दन्दे अगले दयां बणाईआ। सदा रख के ठंडे, बिना बन्दगी तों पार करा के आपणे बन्दे, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सुणा के छन्दे, आपणा रंग वखाईआ। ब्यास किहा की फेर वी आएं मेरे कन्ढे, आपणा चरण छुहाईआ। गोबिन्द किहा तेरे तों पार मेरे गुरमुख चंगे, जिन्हां नाल मिल के आपणा झट लँघाईआ। एसे कारण गुरमुखो तुहाडे नाते गंढे, कीता कौल भुल्ल कदे ना जाईआ। गुरमुख गुरसिख भावें मैथों कुछ मंगे भावें ना मंगे, जिस दा देणा ओसे दी झोली पाईआ। ब्यास किहा तेरी जोबन जवानी किहड़े थाँ हंढे, टिकाणा दे दरसाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास जित्थे बेआसा कोई ना लँघे, जग नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। ओथे गुरमुखां दे अंदर मेरे सिँघासण चंगे, जिन्हां दी शाल दोशाल कीमत ना कोए रखाईआ। ब्यास किहा की फेर करें जंगे, मैनूं दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा अज्ज तों एह भत्थे धो के पुरख अकाल दे चरणीं टंगे, जगत शस्त्रां वाली ना कोए लड़ाईआ। हुक्मे अंदर खण्ड ब्रह्मण्डे, जित्थे चमके कोई ना चण्ड प्रचण्डे, इक्को मेरा नूर कूड़ सारा दए मिटाईआ। मेरा खेल समझे कोई ना पंडे, ना कोई जाणे क्यों पुत्तर चारे वण्डे, खेल आपणे नाल कराईआ। ब्यास किहा तेरा गुरमुख ओस वेले की कुछ तैथों मंगे, की वस्त देवें वरताईआ। गोबिन्द किहा मैं ओन्हां दा ते उह मेरे मैं कोई हिसाब किताब नहीं वण्डे, वण्डां विच गुरमुख ना कदे रखाईआ। जो चढ़ गए मेरे डण्डे, अन्त मेरे विच बहि के मेरे डेरा लाईआ। ब्यासा चरण चुम्म ला तेरे भाग हो जाण चंगे, चंगयां गुरमुखां नाल दयां वड्याईआ। एसे कारण गुरमुखो तुसीं सतिगुर नाल लँघे, पत्तणां उत्तों दिता टपाईआ। ब्यास किहा गोबिन्द औह वेख मैनूं कुछ दस्स रिहा संजे, द्वापर अन्त अख़ीर समझाईआ। राज राजान शाह सुल्तान मैनूं सारे दिसदे सिर तों गंजे, परदा उपर ना कोए टिकाईआ। चार वरन अठारां बरन सारे हाए हाए करदे फड़ के कंधे, करमां दा भार ना कोए वण्डाईआ। मैं वेख्या जेहड़े गुरमुख तेरा पत्तण लँघे, रंगण अगली गए रंगाईआ। ओने चिर नूं सुथरे वजाउँदे आ गए डण्डे, तेरी तेरी तेरी बेपरवाहीआ। ओधरों पवण चल पई ठंडे, सिरों बोदीआं रही हिलाईआ। पवण झकोला दिता

सारे पिण्डयों हो गए नंगे, धोती हत्थ किसे ना आईआ। अक्खां मीट होए शरमिंदे, नेत्र नैण ना कोए खुलाईआ। ब्यास किहा, क्यों, मर गए जींदे, आपणा आप मिटाईआ। हौली जेही सारे रल के कूंदे, हाए हाए कर सुणाईआ। ओसे वेले डिग्ग पए भार मूँह दे, सिर गोबिन्द चरणां वल्ल नज़री आईआ। ब्यास किहा गोबिन्द एह नेड़े पुज्ज गए तेरी बरूंह दे, इन्हां नूं पता नहीं एह धुर दा सच्चा माहीआ। मैं शास्त्रां विच्चों सुणया सब कुछ हत्थ पूरे सतिगुरू दे, बिन सतिगुर मिले ना किसे वड्याईआ। गोबिन्द तेरे खेल ज़रा छूह दे, छोंहदयां सब दा बेड़ा पार कराईआ। इन्हां दे रोग मिटा दे लूं लूं दे, लोक परलोक तेरा जस गाईआ। नाद सुणा दे तूं ही तूं दे, शब्द अनादी धुन उपजाईआ। गोबिन्द किहा ब्यासा तैनूं पता नहीं एह मालक वड्डे तिन्नां माहलां वाले खूह दे, हलट पुट्ठे सिध्धे भवाईआ। एह कुत्ते ओसे जूह दे, जित्थों ख़रगोश नठ्ठ के आईआ। ओधरों कुछ संदेशे आ गए भगत ध्रू दे, धरोह करीं ना गुरू गोसाँईंआ। की होया जे एह मालक खूह दे, हुण दरवेश तेरी बरूंह दे, दर तेरे सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा मेहर निगाह नाल लेखे मुकावां ब्यास तेरी रजूअ दे, वजूह वज़्हा नाल बणाईआ। सारे कहिण पुरख अकाल सतिगुर गोबिन्द कलयुग अन्त आपणे खेल वखाउणे शुरु दे, शरअ विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेक्खयां विच्चों लेखे आपणे लेखे पाईआ।

★ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रेम सिँघ दे गृह जमशेर खेड़ा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मेरे कन्ढे आ गया बाघ, मुख खून नाल रंगाईआ। गोबिन्द दा जगदा वेख चिराग़, चरागाहां विच दिसी रुशनाईआ। गोबिन्द शब्दी अंदरों मारी आवाज़, मेरी पिछली सुरत खुलाईआ। जां वेख्या मैं बाली जिस सुगरीव दा खोहया ताज, नारी ज़ोर नाल दबाईआ। राम दा भुल्ल के राम राज, आपणा बल वधाईआ। अंदर मेरे मैनूं दिस्या दाग़, पवित्र साफ़ ना कोए कराईआ। मेरी कूक के निकली चांग, भबक दी बजाए तभक के हाल सुणाईआ। ओधरों जल दी आ गई कांग, लहर लहर नाल टकराईआ। बांस दी मोटी रुढ़दी आई डांग, साढे तिन्न हत्थ रूप बदलाईआ। ओहदे पिच्छे इक्क नज़री आई टांग, पैर अद्धा रही वखाईआ। जिस दे विच गोबिन्द मिलण दी तांघ, आसा नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा समझाईआ। ब्यास कहे जिस वेले बाघ लग्गा रोण, मैं करवट लई बदलाईआ। एथे आया कौण, नेत्र नीर वहाईआ। शब्द सुनेहा दिता पाउण, मैनूं दिता दृढ़ाईआ। ओधरों आशा नट्ठी आई

राउण, बिना सीस तों दए दुहाईआ। हथ्थ मल के आई पछताउण, पसचाताप विच दुहाईआ। पिछला हाल आई सुणाउण, परदा रही चुकाईआ। जिस वेले मैं राम नूं आया सां मुकाउण, आप मुक्क के आपणा आप मुकाईआ। ओस वेले राम ने शब्दी हुक्म नाल धफ्फा लाया मेरी धौण, मैनूं दिता दृढ़ाईआ। त्रेता द्वापर तैनूं दिता सौण, कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले शब्दी गोबिन्द दुखियां दा दर्द आया वण्डाउण, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। सचखण्ड दवारे आया पुचाउण, फड़ बाहों पार लँघाईआ। पूरब लहिणा सब दा आया चुकाउण, लेखा दए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया आया ढाउण, सच सुच्च प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ। ब्यास कहे मेरे विच रुढ़दी आई कंडयां वाली छापी, टाहणीआं नौ वण्ड वण्डाईआ। कंडयां दी नौक उत्ते नौ नौ पापी, जेहड़े सतिगुर तों मुख भवाईआ। गोबिन्द ओन्हां दी शब्द धार वखाई पाती, बिन अक्खरां दिता दृढ़ाईआ। मैं हस्स के कीती हासी, खुशीआं नाल ताली दिती वजाईआ। ओधरों मंडी वाले राजे दी आ गई मासी, जेहड़ी नौ साल पहले आपणा तन गई तजाईआ। ओहनूं अन्त अख़ीर गोबिन्द मिलण दी आसी, आसा आपणे नाल रखाईआ। जिस दे नाल नीच ज़ात दी दासी, आयू सत्तर साल वण्ड वण्डाईआ। उह जम्मीं सी विच कांसी, पिता चन्दू नाउँ धराईआ। नीवें घर दी ज़ाती, सेवा विच वड्याईआ। अन्त वेले मरन लग्गी ओस नूं गल्ल आखी, मेरा मिल्या ना गोबिन्द माहीआ। सब तों प्रीत चंगी मेरी नाल चाची, जेहड़ी राम दा इष्ट मनाईआ। जिस ने डोली विच पैण लग्गी मैनूं साबण दी दिती सी गाची, हथ्थ मेरे फड़ाईआ। जिंनां चिर नज़र ना आवे साख्याती, सनमुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ। राणी किहा एह मेरी गाची साबण, आशा विच दबाईआ। अज्ज होई वड वड भागण, गोबिन्द मिल्या बेपरवाहीआ। मैं एस नूं आई आखण, तेरी ओट तकाईआ। ओने चिर नूं गोबिन्द कच्ची लक्कड़ दी भन्न के दातण, दन्दां हेठ दबाईआ। ओहदी अंदरों सुरती लग्गी पाटण, परदा दिता उठाईआ। वेख्या खेल गोबिन्द नाल पुरख अबिनाशन, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। ब्यास कहे मेरे अंदर रुढ़दे आए कक्ख, घौंसला बणया नज़री आईआ। जिस दे विच इक्क बच्च, तिन्न दिन दी उमर वखाईआ। उस दे कोल खाण नूं कच्च, दूजी वस्त ना कोए टिकाईआ। नेड़े आ के ओन तक्कया नाल अक्ख, गोबिन्द कन्ढे बैठा सोभा पाईआ। नन्हां प्या हस्स, खुशीआं विच ताली दिती लगाईआ। सूरबीर हुण ते मैनूं रख, रुढ़दयां पार कराईआ। मैं ओह तलवण्डी वाला जट्ट, जिस दी खेती मज्झीआं दिती खवाईआ। बड़े जन्म लए कट, दुःख दर्द ना कोए वण्डाईआ। हुण आ गया तेरे

तट, किनारे उत्ते डेरा लाईआ। बौहड़ी हुण ना देवीं छड्ड, रो रो दयां दुहाईआ। एने चिर नूं पाणी विच्चों मार के छाल डड्ड, ओसे घौंसले विच बैठी आईआ। गोबिन्द मैं वी नहीं होणा अड्ड, तेरी ओट तकाईआ। मैनूं चुरासी विच्चों कढ्ड, मैं तेरी जन्म वेले दी दाईआ। जेहड़ी शरीर गई छड्ड, नाता जगत तुड़ाईआ। मैथों भुल्ल होई मैं तैनूं टेकया नहीं सी मथ्थ, बच्चा समझ के ज़मीन उत्ते दिता लटाईआ। गोबिन्द अग्गों प्या हस्स, तेरी सेवा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्यास कहे मेरे विच रुढ़दा आया बूर, भज्जया वाहो दाहीआ। ओनृां विच्चों इक्क पत्ता सी खजूर, जिस दी नोक अगों तिक्खी नज़री आईआ। ओहदे पई सी धूढ़, मिट्टी घट्टे नाल वड्याईआ। सोहणा बणया पूर, कट्ठे हो के झट लँघाईआ। ओनृां वेख्या गोबिन्द खड़ा दूर, दूर दुराडा डेरा लाईआ। नेड़े आया नूर, नूर विच रुशनाईआ। ओनृां रो के किहा मैं पत्ता नहीं खजूर, खुशी नाल जणाईआ। मैं उह पत्थर जित्थे मूसा डिग्गा उत्ते कोह तूर, आपणा आप भुलाईआ। ओस वेले मैनूं आया ग़रूर, हँकार विच सजदा ना कोए कराईआ। ओस ने हुक्म दिता ज़रूर, मैनूं दिता दृढ़ाईआ। तेरा लेखा कलयुग गोबिन्द मेटे जिस ने तारने मूर्ख मूढ़, मुग्धां पार कराईआ। मेरी सांभ के रखीं एह धूढ़, तेरे उत्ते दिती टिकाईआ। तूं उतरना ओस दे पूर, मूसे किहा मैनूं पुरी अनन्द दा वासी नज़री आईआ। ब्यास किहा मैं हैरान होया मेरा सड़ना फ़ज़ूल, पता नहीं एह क्यों सब नूं पार कराईआ। गोबिन्द हस्स के किहा ब्यास मेरा जगत अक्खरां वाला नहीं मज़मून, गुर अवतार पैगम्बरां वाला नहीं कानून, ना मालूम आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी वेखे सारे बालक बच्चे मासूम, छोटे वड्डे आपणे रंग रंगाईआ।

★ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ करतार कौर दे गृह पिण्ड खेड़ा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे फेर भथ्था प्या बोल, तिन्न वार आवाज़ लगाईआ। मैनूं सद्दया आ मेरे कोल, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। सतिगुर दे चोहल, धुर दे दयां समझाईआ। एस ने जोती धार जाणा मौल, शब्दी रूप वटाईआ। अज्ज दा याद कर कौल, इकरार दयां सुणाईआ। जिस वेले मुड़ के आया उपर धौल, निरगुण हो के फेरा पाईआ। साचे धाम बैठा रहे अडोल, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। ओस वेले ब्यास भावें शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता जगत ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी किन्नां वजावे ढोल, बिन गोबिन्द किरपा अक्ख ना कोए खुलाईआ। ब्यास कहिंदा भथ्थया मेरे दिल नूं पैंदा हौल, की एहो जेही कार

कमाईआ। भथ्था कहे तूं ना समझ मख़ौल, मैं सच दिता दृढ़ाईआ। कोई हिसाब ना ला सके पांधा रौल, पंडतां चले ना कोए चतुराईआ। इस दा भेव जाणे कौण, गुण कवण गाईआ। जिस नूं झुकदे पवण पाउण, पाणी बसन्तर सीस निवाईआ। ज़रूर गुरमुखां फेर आपणे नाल आवे मिलाउण, मेला लए कराईआ। चौह जुगां तों वक्खरा आपणा नाम आए जपाउण, ढोला इक्को दए सुणाईआ। सचखण्ड दुआर आए बहाउण, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, उजड़यां आए वसाउण, वसदयां उजाड़ के खुशी मनाईआ। ब्यास कहे भथ्थया ओह वेख उडदी आ गई भम्बीरी, खम्ब लाल रही हिलाईआ। एहदा मेल होया तकदीरी, इस दी तकदीर रही जणाईआ। उच्ची कूक के पुछण लग्गी मैनूं दस्सो किहड़ी चंगी फ़कीरी, जेहड़ी फ़िकर दए गवाईआ। ओधरों इक्क मालण रेड़्दी आ गई गडीरी, टोकरीआं फुल्लां नाल भराईआ। ओधरों मुसाफर पींदा आ गया बीड़ी, दमे दा रोग रिहा सताईआ। ओधरों फ़कीर आ गया हथ्थ विच लै ज़ंजीरी, कुल्ला सीस उत्ते टिकाईआ। ब्यास कहे मैनूं वेख के होई दिलगीरी, फेर इक्ठे हो के डेरा बैठे लाईआ। गोबिन्द खुशी नाल मेरे मस्तक उंगली फेरी, लकीर दिती खिचाईआ। ओने चिर नूं रुढ़दी आ गई टहणी इक्क बेरी, बेरां नाल भरी सोभा पाईआ। ओने चिर नूं वणजारा चूड़ीआं वाला मार के आया फेरी, होका गराँ गराँ सुणाईआ। ओने चिर नूं आवारा फिरदी आ गई वछेरी, उमर दस महीने बणाईआ। सारयां रो के किहा गोबिन्द हुण ना ला देरी, विछड़े लै मिलाईआ। ओनां विच्चों भम्बीरी किहा गोबिन्द तैनूं चंगी लग्गे किहड़ी, सानूं दे समझाईआ। किस नूं चाढ़ें आपणी बेड़ी, किस नूं वैंहदे वहिण वहाईआ। गोबिन्द किहा तुहाडी प्यार धार मेरी, विचार पिछली दयां समझाईआ। जिस तुहाडी जड़ उखेड़ी, उह वी दयां समझाईआ। सारयां रो के किहा साडे विच्चों पापां भरी किहड़ी, सब तों वड्डी नज़री आईआ। गोबिन्द किहा हुण तुहानूं बणा के आपणी चेरी, चिरी विछुंनयां दुःख गवाईआ। फिरना पए ना अण्डज जेरी, उत्भुज सेत्ज ना कोए भवाईआ। पिच्छे सज़ा भुगत लई बथेरी, सतिगुर तों भुलयां मिली सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुलाईआ। ओनां विच्चों वछेरी किहा मैं अजे दवक, बेनन्ती दयां सुणाईआ। जिस वेले बल मेरे चढ़या लक्क, आपणा आसण लाईआ। मैं तीस कोस ते जा के गई थक्क, रो रो हाल सुणाईआ। बल उतर के मैनूं मारया धक्क, मूँह दे भार सुटाईआ। मैं रो के किहा पुरख समरथ, मेरा हो सहाईआ। श्री भगवान किहा तैनूं सुणावां सच्च, हुक्म दयां दृढ़ाईआ। एह नहीं मेरे हथ्थ, नाता गोबिन्द नाल जुड़ाईआ। तिन्न जुग आपणे विच लवां रख, मात जन्म ना कोए भवाईआ। फेर कर प्रगट, आसण पलाणा ना कोए टिकाईआ। जिस वेले गोबिन्द आया ब्यास तट, किनारे डेरा लाईआ। तूं आपे आउणा

नठ्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा लहिणा मुकावे झट, जन्म जन्म दा गेड़ कटाईआ। रो के किहा नाल अक्ख, अख़ीर दिता सुणाईआ। चरणां उत्ते गई ढठ्ठ, आपणा आप मिटाईआ। गोबिन्द पिठ उत्ते फेर के हथ्थ, पिच्छो दुम्ब दिती हिलाईआ। हुण ओथे जा के वस, जित्थे मेरे गुरमुख डेरा लाईआ। मैं सब दा इक्को घर करना इक्टु, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, अकथ आपणा हुक्म जणाईआ।

★ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड खेड़ा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे गोबिन्द मेरे उत्ते छुहाया हथ्थ, पंजा पंजां नाल मिलाईआ। मेरी खोल्ह के दृष्टी वाली अक्ख, सृष्टी तों परे दिता समझाईआ। नज़री आया अगम्म अथाह बेपरवाह पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दो जहानां वाली शहिनशाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर महिमा गा के गए अकथ, रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोलयां विच सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार हुक्म देवे सच, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त होणा प्रगट, जोती जाता ज़ाहर ज़हूर निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर जिस ने इक्को खोल्हणा हट्ट, वस्त अमोलक आपणी दए वरताईआ। लहिणा देणा झगड़ा मुकाए गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, तट किनारा वेखे थाउँ थाँईआ। नौजवान मर्द मर्दान धुर दा नाम चलाए अगम्मी रथ, बण रथवाही धुरदरगाही आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी कर के गए आस, आसा मनसा सब दी वेख वखाईआ। अग्गों रो के किहा ब्यास, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कवण होवे तेरा दास, याचक कवण अख्वाईआ। गोबिन्द सहिजे किहा भगतां बणे साथ, आत्म परमात्म होवे गाथ, किनारा सोहे इक्को घाट, पतण आपणा दए वखाईआ। जित्थे दीन मज़्ह्ब ना ज़ात पात, ऊँच नीच ना कोई शाख़, दिवस रैण ना कोए रात, घड़ी पल जगत वासना वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची धार दए दृढ़ाईआ। ब्यास कहे जिस वेले गोबिन्द दे हथ्थ ने पाया भार, भव सागर पार दिता कराईआ। मैनूं नज़र आया मुहम्मद नाल चार यार, सनमुख बैठा सोभा पाईआ। परवरदिगार दा बण के ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। निउँ निउँ करे निसमकार, सजदयां विच बरदा नज़री आईआ। दर

दरवेश बण भिखार, फ़ाकाकशी वेखे जगत लोकाईआ। सदी चौधवीं दा कर इज़हार, संदेसा रिहा सुणाईआ। मेरे अमामां दे अमाम धुर दे सिक्दार, दरगाह साची तेरी बेपरवाहीआ। किस बिध अन्त नबेड़ा करें आण, कलयुग खेड़ा वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर शब्द अंदर नग़मे अंदर नाम अंदर कलमे अंदर दस्सया अगम्मी कलाम, कायनात तों परे कीती पढ़ाईआ। दो जहानां श्री भगवाना, नौजवाना मर्द मर्दाना वाली दो जहानां होवे हुक्मरान, धुर फ़रमाना आपणा आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मेटे निशान, गढ़ हँकार दए तुड़ाईआ। जन भगत सुहेले सूफ़ी सन्त फ़कीरां लए पछाण, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। ब्यास कहे भार नाल मैं गया दब्बया, हौका लै के दिता सुणाईआ। ओसे वेले मैनूं सदी चौधवीं दा अन्त लभ्भया, परदा रिहा ना राईआ। पिता पूत नाल करे दग़िआ, नार कन्त सेज ना कोए सुहाईआ। मुरीद मुर्शद लुट्टणों किसे ना छड्डया, गुरू चेला ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़यारा जूठ झूठ उडे घट्टया, सति धर्म ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणे हुक्म दा पूरा कर के पट्टया, लेखा प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। अन्तिम मेट दीनां मज़्बां वाले रट्टया, आत्म ब्रह्म सब नूं दे जणाईआ। तूं साहिब समरथ्या, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म समझा साची गथिआ, रसना जेहवा बत्ती दन्द तेरा इक्को नाम ध्याईआ। बिन तेरी किरपा मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कोए ना वस्या, वसल यार हक ना कोए कराईआ। ब्यास कहे मैं फेर खिड़ खिड़ हस्सया, खुशीआं विच खुशी लई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा नबेड़े कट्टयां, अक्खरां वाला वक्खर रहिण कोए ना पाईआ।

★ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरमीत सिँघ दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं गोबिन्द दे चरण वेखे नंगे, नंगयां उत्ते परदा रहे पाईआ। जिस दी छोह नाल तरदे जाण चंगे मंदे, सब दा लहिणा देणा मुकाईआ। प्रेम धार जाण रंगे, रंगत आपणी आप बदलाईआ। जिन्हां नाल मिल के कीते दंगे, दग़ेदार हो के दर्शन पाईआ। उह वी कीते ठंडे, अक्ख जिन्हां उत्ते टिकाईआ। हिन्दू मुस्लिम सब दी गंढे, जो चरण आवण सरनाईआ। कटी जाए चुरासी फंदे, चुराहे बैठा पार लँघाईआ। इक्को सच प्रीती मंगे, दूजी लोड़ ना कोए रखाईआ। छेती नाल फेर

आपणा हथ्थ मार के सीस फड़या आपणे कंघे, केसां विच्चों दस्मेश बाहर कढाहीआ। तेरी धार नाल दुष्ट दुराचारी तारने पंडे, जो असतीआं ब्यासा विच टिकाईआ। अग्गे रहिण नहीं देणे रंडे, नाता धुर दे कन्त नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ। ब्यास कहे गोबिन्द खुशी नाल आपणा बाहर कढ्ढया ख़ंजर, ख़ंजीर सारे देण दुहाईआ। भज्जे फिरन विच बंजर, बाज़ू बाज़ू नाल छुहाईआ। उधरों फटकारया होया आ गया कंजर, वेसवा दर दुरकाईआ। कोल दी लग्गा लँघण, अक्ख गोबिन्द वल्ल रखाईआ। गोबिन्द हथ्थों लाह के कंगण, ओहदे अग्गे दिता सुटाईआ। ओस कर के दोंह हथ्थां दी बन्दन, सीस दिता निवाईआ। धूढ़ी दा ला के चन्दन, आपणी खुशी बणाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा तूं रविदास नाल ठग्गी करन वाला उह ब्रह्मण, जिस दा बरन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। ब्यास कहे मेरे वेंहदयां रेशम दे व्यपारी आए सौदागर, गठ्ठां आपणीआं बन्द कराईआ। बणे सोहणे उच्चे लंमे बहादर, सूरबीर सोभा पाईआ। नाल चुक्की होई इक्क गागर, रुपया सैंकड़े पैंती विच टिकाईआ। उत्तों मूँह बध्धा नाल चादर, बिना ढक्कण लई उठाईआ। गोबिन्द कोल आ के कर्म होया उजागर, किस्मत दिती बदलाईआ। मेहर निगाह नाल वखाया करनी दा करता कादर, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ।
२३५ २० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। ब्यास कहे गागर मुख कीता बन्द, अंदर नज़र कुछ ना आईआ। ओधरों अन्धेरा हो गया चमकण लग्गा चन्द, चौधवीं वाला अख्वाईआ। पाउण ने कीती ठंड, सीत रही सताईआ। ब्यास कहे उह आ गए मेरे कन्ढु, कन्ढी डेरा लाईआ। ओथे नेड़े सी इक्क जंड, जीहनूं माता कहि के जगत पूजा विच रखाईआ। ओधरों सर्प आ गया खलार के फण, आपणा भय दृढ़ाईआ। जगत सौदागर सुणन ला के कन्न, कवण आवाज़ रिहा सुणाईआ। शब्दी हुक्म आया तुहाडे कोल एह धन, जेहड़ा धन दा हिस्सा गंगू गया चुराईआ। ओसे वेले गोबिन्द अग्गे गए मन्न, निउँ के सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा एह उह धन नहीं एह गंगू दा मन, दस साल पहले सरसे तों पहले दी आदत दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल बेपरवाहीआ। २३५ २०

★ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ मनसा सिँघ दे गृह फराला ज़िला जलन्धर ★

गोबिन्द कहे ब्यास मैं पिछला लेखा लिखदा, सब दा लहिणा देणा पूर कराईआ। अग्गे नवां रूप दस्सणा सिख दा,

जिस नूं चार जुग सक्या ना कोए प्रगटाईआ। जिन्हां दे अंदर प्यार बख्शणा इक्क दा, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। अन्तर हो के आप दिस दा, बाहरों रंग रंगाईआ। प्यार पा के खिच्च दा, बन्धन विच बंधाईआ। परदा लाह के विच दा, विच्चों आपणा नूर चमकाईआ। वेला ना रहे जिच दा, दु:ख विच ना कोए कुरलाईआ। किसे दा इष्ट रहिण नहीं देणा पत्थर इट्ट दा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। लेखा पूरा कराउणा भविख दा, भविश विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। ब्यास कहे की कुछ देवें सिख्या, मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द कहे अजे मैं लेख नहीं उह लिख्या, जिस नूं कोई समझ आपणी करे चतुराईआ। पुरख अकाल ने मैनूं दिती अगम्मी चिट्ठीआ, बिन काग़ज़ हथ्थ फड़ाईआ। सिर्फ़ मैं परदा लाहुणा गुरमुखां इक्कीआं, इक्कीआं दे अग्गे इक्की इक्की होर बंधाईआ। करामात वखाउणी खेल निक्किया, पुरख अकाल कदे ना भाईआ। जेहड़ीआं प्रेम प्यार अंदर विकीआं, कीमत अगली पिछली गई चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। ब्यास कहे की अंदर देवें इशारा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। शब्दी देवें हुलारा, सुत्यां लएं जगाईआ। जोत दएं चमकारा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अमृत देवें ठंडा ठारा, जगत तृष्ना अग्ग बुझाईआ। गोबिन्द किहा नहीं, बिन मेरी किरपा दिसे किसे ना पार किनारा, सच दवारे बहि के खुशी ना कोए मनाईआ। मेहरवान हो के देवां इक्क सहारा, सहायक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अछल छल मेरा खेल न्यारा, निराकार हो के साकार ना कदे समझाईआ। छोटीआं छोटीआं कथा जणा के वारां, वारस जगत दयां बणाईआ। मेरे नाम दीआं शाख़ां धारां, धरनी उत्ते चमकाईआ। प्रभ दा खेल सदा न्यारा, निरवैर हो के आप वखाईआ। जन भगतां बख्श के इक्क आधारा, अगला पैंडा दए चुकाईआ। बिन किरपा सतिगुर अग्गे कोई कढ्ढ ना सके हाढ़ा, आपणा दु:ख सुणाउण कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो लग्गे एह अखाड़ा, सोहणा रंग प्रगटाईआ। ग़मी विच खुशी दी दए बहारा, बहार विच फुहार अमृत आप चुआईआ। ब्यास किहा की खेल करे निरँकारा, की आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द किहा ओहदा रूप होवे हमारा, कुमार नाल मिल के आपणी करे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलाईआ। ब्यास कहे मेरी पूरी खुल्ही नहीं सुरती, सुरत दे खुल्हाईआ। कुछ समझ नहीं अनन्द पुर दी, पुरी अनन्द दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा जित्थे इट्ट पत्थर नाल कदे नहीं जुड़दी, मैं ओस घर विच डेरा लाईआ। एह खेल आदि जुगादि साहिब सतिगुर दी, जो मैनूं रिहा वखाईआ। अगली कथा कहाणी धुर दी, तैनूं दयां समझाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाल दीन दयाल आपणी खेल करनी चोर दी, राह जांदा नज़र किसे ना आईआ। ओथे वड्याई नहीं

चलणी किसे दे ज़ोर दी, ताकत ना कोए अज़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल आपणे मंत्र फ़ुरने फोर दी, फ़ुरती सुरती समझ ना कोए पाईआ।

★ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी चरण कौर दे गृह पिण्ड माहल गैहला ★

ब्यास कहे मैं सुण के तेरी गाथा, गुस्सा दिता गवाईआ। टेक के तैनूं माथा, मस्तक ल्या झुकाईआ। अगला बचन दस्स साचा, सच दे दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग होवे अन्धेरी राता, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। प्यार रहे ना पुत्तर माता, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। झगड़ा पए ख़ादम आका, रईयत राजे करन लड़ाईआ। धर्म रहे कोई ना नाता, अधर्म वज्जे वधाईआ। फेर किस बिध तेरा चले साका, भेद देणा खुलाईआ। गोबिन्द किहा मैं नाल लै के आवां पुरख अबिनाशा, मेला आपणे नाल मिलाईआ। चार जुग दीआं रहिण ना देवां शाखां, दीनां मज़्बां करां सफ़ाईआ। जन भगतां पूरीआं करां आसां, अर्शी हो के दया कमाईआ। मेरे कोल रहमत दीआं रासां, नयामत नाम झोली पाईआ। जे कोई बुद्धी नाल मेरीआं करे कयासां, मैनूं समझ सके ना राईआ। सिफ़ं इक्क तैनूं दस्सणा मैं सचखण्ड दवारे क्यों गया सां, तन वजूद नाता जगत तुड़ाईआ। जोत विच जोत मिल के क्यों रिहा सां, आपणा आप छुपाईआ। ओथे जा के पुरख अकाल दी चरणीं प्या सां, पूत हो के पिता मनाईआ। निमाणा हो के ढिहा सां, छड्ड माण वड्याईआ। पुरख अकाल किहा पिछला लेखा आपणा ल्या खां, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। गोबिन्द किहा मैं माछूवाड़े प्या सां, सब कुछ आपणा आप लुटाईआ। तूं बाप हो के सुत्ता क्यों रिहा सां, मेरी अक्ख तेरा राह तकाईआ। पुरख अकाल किहा शाबाश तूं मेरे भाणे विच प्या सां, सुख जगत वाला मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे ब्यास कुछ लग्गा पता, ब्यास किहा नहीं, रो के दिता सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैं लै के आया सुनेहड़ा सच्चा, सच दयां दृढ़ाईआ। जेहड़ा गुरसिख चार जुग दा रिहा कच्चा, अन्तिम कच्चयां तों पक्के दयां बणाईआ। जोती शब्दी धार हो के नठ्ठा, भज्जया वाहो दाहीआ। जगत मसख़रा मैनूं करे ठठ्ठा, सच ठठयार दी समझ किसे ना आईआ। जिस ने लहिणा देणा सब दा मुकाउणा कठ्ठा, कठ्ठे कर के रंग चढ़ाईआ। पुरख अकाल रोज़ रोज़ नहीं तपाउँदा आपणा भठ्ठा, अन्त वार कर मेहर आवयां दे आवे दाअवे नाल दए पकाईआ। की होया गुरमुखो जे तहाडा मन करदा रट्टा, मन हुक्म अंदर सेव कमाईआ। तुहाडे गल विच

पाया ओस ने शब्द अगम्मी पट्टा, जिस दी डोरी पटने वाले दे हथ्थ फड़ाईआ। तुहाडी कोई कीमत नहीं टका, पैसयां नाल विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। गोबिन्द किहा, ब्यास, दस्स की सुणया, ओस सिर दिता हिलाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द हुक्म नाल गुरमुख मेरा चुणया, शब्दी मेल मिलाईआ। ब्यास रो के किहा ओ ब्यासा अवगुणया, आपणा माण दे तजाईआ। पिछला वेला लँघ गया सरनाई हुण आ, सरनी ढहि के खुशी मनाईआ। धुरदरगाही वेख मलाह, बेड़ा तेरे विच्चों तेरा पार कराईआ। ब्यास बिना ज़बान तों कीती हां, अंदरे अंदर दिता सुणाईआ। सीस दिता निवा, चरणां उत्ते टिकाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवां, महबूब तेरी ओट रखाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास बहुता बोलणा चंगा ना, जो आया सो पार कराईआ। अग्गे उह वी तारने जेहड़े खांदे सूर गाँ, कसाई रूप बणाईआ। उह वी तारने जिन्हां माता नाल कीता जनाह, इस तों पापी परे नज़र कोए ना आईआ। उह वी तारने जेहड़े मूँह गए भवा, पिठ्ठ गए वखाईआ। उह वी तारने जिन्हां कदे नहीं जपया नाँ, प्रभ दी आस ना कोए रखाईआ। उह वी तारने जिन्हां धर्म दा वेख्या नहीं कोई थाँ, सति सच ना कोए सुणाईआ। उह वी तारने जेहड़े कुरलाउँदे वांग कॉं, निंदया मुख नाल सुणाईआ। उह वी तारने जेहड़े चोरी चोरी लाउँदे दाअ, मूर्ख हो के प्रभ नूं मूढ़ रहे बणाईआ। उह वी तारने जिन्हां दा अजे ताईं लिख्या नहीं किसे नाँ, बहुते चुरासी विच्चों नज़री आईआ। उह वी तारने जिन्हां ने मानस हो के मानस लए खा, खूनखार रूप वटाईआ। उह वी तारने जेहड़े रहज़न बणे राह, लुटेरे रूप बणाईआ। उह वी तारने जिन्हां सूफी सन्त फ़कीर दित्ते सता, आपणा हुक्म वरताईआ। उह वी तारने जिन्हां मन्दिर मस्जिद दिते ढाह, अञ्जील कुरान ग्रन्थां अग्ग लगाईआ। उह वी तारने जिन्हां याद विच कढुया नहीं कोई साह, स्वास विच ना कदे ल्याईआ। उह वी तारने जेहड़े धर्म दे चले नहीं कदे राह, जूठ झूठ नाल कुड़माईआ। उह वी तारने जेहड़े भ्रा भैणां रहे तका, अक्ख अक्ख नाल बदलाईआ। उह वी तारने जेहड़े कूकर सूकर रूप बैठे वटा, टेडीआं जूनीआं विच बहिकाईआ। उह वी तारने जेहड़े बिलां विच डेरा बैठे ला, मिट्टी खा के झट लँघाईआ। उह वी तारने जेहड़े बनास्पत रहे अख्वा, पत्त टहणी नाल लहराईआ। गोबिन्द किहा, ब्यास, मेरा पुरख अकाल मेरे साथ, जेहड़ा दोहां दी चरणी डिग्गा आ, ओन्हां दे बख्शे सर्ब गुनाह, बण के पिता माँ, कलयुग कूड़ कुड़यार विच्चों बाहर कढाहीआ। ब्यास किहा एह खेल तेरा कदों होणा रवां, मैनूं दे सुणाईआ। गोबिन्द किहा तेरे कन्न विच कुछ कहवां, होर सुणन कोए ना पाईआ। ब्यास कहे मेरा नहीं कोई माटी चम्मा, साथी संग ना कोए बणाईआ। गोबिन्द किहा तैनूं सब कुछ दस्सां बिना दमां, साह तों परे आपणी रास वखाईआ। दो तों पहले आउण वाला

समां, समाधी दयां खुलाईआ। अगला लेखा फेर दस्सां नवां, धुर दा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मेट के कूड़ी तमअ, तमन्ना इक्को दए वखाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरमीत सिंघ दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं पुछया फेर तेरे भगत जपण की जाप, जिन्हां पुरख अकाल नाल मिलाईआ। किस बिध उतरन पाप, दुरमति मैल धवाईआ। पवित्र होवण पाक, आपणी करन सफ़ाईआ। भाग लगाउण काया माटी काच, कंचन लैण बणाईआ। मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द चमकाईआ। पूरी करन आस, तृष्ना जगत बुझाईआ। लेखे लग्गे स्वास, साह साह खुशी बणाईआ। साचा जुड़े नात, चरण मिले वड्याईआ। किस नहावण तीर्थ ताट, सर सरोवर सोभा पाईआ। किस दी करन याद, किस दा नाम सालाहीआ। किस तों मंगण दाद, झोली किथ्थे डाहीआ। किस खेड़े होण आबाद, मैनूं दे सुणाईआ। की सुणन अगम्मी आवाज़, कवण करे पढ़ाईआ। किस तरह खुल्ले राज़, परदा ओहला रहे ना राईआ। की पूजा करन पाठ, कवण साज नाल खड़काईआ। की सजदयां विच पढ़न निमाज़, रोज़े रख के आस रखाईआ। की जंगलां विच करन तलाश, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। की मथ्थे टेकण मन्दिर मस्जिद माठ, शिवदवाले नक्क रगड़ाईआ। की धूंणीआँ तावण काठ, अग्नी ख़ाक रमाईआ। की भज्जण आठ साठ, बण बण पाँधी राहीआ। की जागण उठ के रात, माला मणकयां वाली भवाईआ। की किसे कोलों पुछण बात, प्रभ दा राह तकाईआ। की ओन्हां दी होवे ज़ात, मज़्हब देणा दरसाईआ। की धूढ़ी लाउण मस्तक ख़ाक, टिक्के जगत वखाईआ। किहड़ी मंज़ल चढ़न घाट, किस दवारे सीस निवाईआ। की ढोले गावण बण के भाट, भट्टां वाला रूप वटाईआ। किस बिध पूरी करन ख़ाहिश, तृष्ना जगत बुझाईआ। किस बिध लेखे लावण स्वास, साह साह ध्याईआ। की जपजी पढ़न रहरास, सोहलयां विच समाईआ। की आसा रखण किसे उत्ते किताब, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बाणी सिफ्तां वाली सोभा पाईआ। किस प्रेम दी वजावण रबाब, तन्द सतार हिलाईआ। की पीवण हयाते आब, प्रेम रस चखाईआ। किस बिध लैण आपणा स्वाद, अन्तर प्रेम वधाईआ। किस नूं कहिण गॉड, खुदा वाहिगुरू अल्ला कहि के किस दा नाम ध्याईआ। की तेरा वेखण बाज़, कल्गी तोड़ा अक्ख टिकाईआ। किस बिध दरगाह दा लभ्भण राज, पिछला पन्ध मुकाईआ। की लेखा लिख के गया भारद्वाज, सत्तां ऋषीआं विच्चों ध्यान लगाईआ।

की मनसा रखी भसुंड काग, एह वी दे सुणाईआ। केहड़ा गज नूं दस्सया जाप, तन्दूआ तन्द कटाईआ। किस बिध प्रहलाद कोल आया साख्यात, नर सिँघ रूप वटाईआ। किस बिध ध्रू दा बणया बाप, बाल अंञाणा गोद उठाईआ। किस बिध बल दा दिता साथ, वेस अनेका रूप वटाईआ। किस बिध जनक दी पुच्छीं वात, ज्ञान दृष्टी इक्क वखाईआ। किस बिध बिदर दा खाधा साग, सुदामे तन्दलां भोग लगाईआ। किस बिध नामदेव दा पूरा कीता जाप, किस बिध तारया सैण नाईआ। किस बिध जुलाहे दा ताणा बुणया आप, कबीर काया कबर विच्चों बाहर कढाहीआ। किस बिध रविदास चमारा उच्चा कीता विच्चों नीची ज़ात, पाहना गंढु के ख़ुशी वखाईआ। किस बिध नामे कीता भाग सुभाग, छप्पर छन्न छुहाईआ। केहड़ा धन्ने खोल्ह्या राज़, परदा दे चुकाईआ। किस बिध गनका मार आवाज़, सोई दिती उठाईआ। जुग चौकड़ी कीता खेल तमाश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। किस बिध कलयुग अन्त आपणा देवें साथ, सगला संग बणाईआ। की गुरमुखां देवें दात, लहिणा देणा झोली पाईआ। किस बिध भगत सुहेलयां खुल्ल्हे ताक, परदा लैण चुकाईआ। की उह साधां सन्तां दे बणन चाक, पीरां पिच्छे फेरीआं पाईआ। की उह ग्रन्थां नूं लैण वाच, वाचक हो के खोज खुजाईआ। की उह खोजण विच प्रभास, फिरन वाहो दाहीआ। की उह दीनां मज़्हबां विच तेरी लभ्भण ज़ात, एह वी देणा दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास सब बिरथा खेल तमाश, पृथमी दए दुहाईआ। की करेगा पूजा पाठ, की करेगा तीर्थ ताट, की करेगा पुस्तक किताब, की करेगा वजाया रबाब, की करेगा गाया गाथ, जिंनां चिर सतिगुर शब्द ना साथ रखाईआ। ओस वेले पुरख अकाल होवे मेरा बाप, मैं ओस दे नाल आवां आप, कोट जन्म दयां विछड़यां मेट के पाप, पुन्न सरापां तों कर के पाक, आपणी मिला के साची ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म दा दे के जाप, मेहर नज़र नाल मेहरवान हो के अन्तिम अन्त भगवन्त विच मिलाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी चरण कौर दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ★

गोबिन्द किहा ब्यास कलयुग अन्त दा दस्सां सीन, सीन शीन जिस नूं समझ कोई ना पाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई कमीन, बुध बिबेक ना कोए रखाईआ। वासना होए मलीन, ख्वाहिश कूड़ वड्याईआ। राउ रंक होवे ग़मगीन, हिरदे ख़ुशी ना कोए बणाईआ। झगड़ा पवे नर मदीन, दोहां करे ना कोए सफ़ाईआ। ओस वेले पुरख अकाल दीन दयाल लेखा जाणे आप महीन, मेहरवान धुर दा माहीआ। जन भगत उठाए जो सज्जण कदीम, कदमां दे नाल मिलाईआ। साची दे तालीम,

आत्म परमात्म दए समझाईआ। धुर दा दे यकीन, इष्ट देव इक्क वखाईआ। चाढ़ के रंग नवीन, नवां जन्म दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया लवे छीन, माया ममता मोह मिटाईआ। सच प्रेम विच करे लीन, लिव अन्तर दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगत दए रंगाईआ। ब्यास किहा की भगत गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ रखण ओट, तीर्थ तट ध्यान लगाईआ। किहड़ी ज़ात पात चंगी सोहणी गोत, वरन बरन केहड़ा दीन वड्याईआ। किहड़े इष्ट दी करन सोच, किस अवतार पैगम्बर गुरू नाल नाता लैण जुड़ाईआ। किस दी याद करन रोज़, सुबह शाम ढोला गाईआ। किस दा वेखण चोज, किस दा राह तकाईआ। केहड़ा धारन योग, कवण रंग वखाईआ। केहड़ा भोगण भोग, एह देणा समझाईआ। किस नाल होवे संयोग, नाता मात बणाईआ। किस नाल होवे वियोग, विछड़ खुशी वखाईआ। किस दा दर्शन करन अमोघ, अमृत रस चुआईआ। की खाणा होवे भोज, भोजन मिले वड्याईआ। किहड़ी खुशी विच माणण मौज, आपणा आप परचाईआ। किस बिध पैंडा मुकावण लोक परलोक, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल आपे करे ओन्हां दी खोज, लख चुरासी विच्चों आपणा मेल मिलाईआ। इक्को नाता जोड़ के निर्मल जोत, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। इक्को शब्द सोहँ सो दे के बहुत, बहुत्यां जापां तों लए बचाईआ। ओन्हां नूं कोई लभ्भणा पए ना पोप, पंडत मुल्लां अक्ख ना कोए मिलाईआ। मैं नाम भण्डारा देवां थोक, परचूनां दी गंढु ना कोए खुलाईआ। जन्म मरन दा कढु के हरख़ सोग, चिन्ता दयां गवाईआ। सच प्रीती दे के जोग, जुगती दयां दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के साची मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दर देवे माण वड्याईआ। ब्यास किहा की भगतां होवे रंग, रंगत कवण रंगाईआ। की भगतां होवे संग, सगला संग बणाईआ। की भगतां देवे अनन्द, अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। की भगतां पावे गंढु, नाता लए रखाईआ। की भगतां देवे ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। की भगतां मेटे पन्ध, चुरासी फंद कटाईआ। की भगतां दस्से छन्द, आपणा नाम समझाईआ। की भगतां खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी विच लगाईआ। की भगतां करे पाबन्द, मर्यादा आपणी इक्क जणाईआ। की भगतां अंदर जावे लँघ, जगत वासना डेरा ढाहीआ। की भगतां सेज सुहाए पलँघ, सिँघासण इक्को वेख वखाईआ। की भगतां करे आपणे मानिन्द, भेव अभेदा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्यास पुरख अकाल सदा बख्शंद, बख्शिश विच आपणे घर वसाईआ। ब्यास किहा किस उत्ते रहमत करे निरगुण धार जोती, जोत अकालण दए वड्याईआ। गोबिन्द किहा आत्मा सारी उस दी गोती, लख चुरासी विच समाईआ। ओहदा झगड़ा नहीं सुन्नत

बोदी, बोधी जैनी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बुरी नहीं तहिमत धोती, जगत लबास ना कोए भरमाईआ। जिन्हां दी अन्तर सुरत उठाई सोती, सुत्तयां लए जगाईआ। ओन्हां दी चढ़ के चोटी, चोट शब्द दए सुणाईआ। कढ्ढे वासना खोटी, खोटिउँ खरे बणाईआ। ब्यास, जिन्हां रसना मास ना लाया बोटी, जमकाल बुचढ़ां तों लए छुडाईआ। धुर दी धार पुरख अकाल भगतां वास्ते सोची, दूसर समझ ना कोए समझाईआ। एसे कारण वड्याई दिती रविदास चमारे मोची, सुक्के टुकड़े खा के झट लँघाईआ। जिस नूं गाउँदे लोक परलोकी, पुरख अकाल ओसे दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पढ़ाए आपणे नाम दी अगम्मी नाम वाली पोथी, पोथी पुस्तक छापेख़ाने वाली सफ़िआं विच ना कोए वखाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड सालार पुर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास किहा गोबिन्द कलयुग अन्त भगतां दी किहड़ी होवे कौम, कयामत तों कौण बचाईआ। किस दी गोद बहि के सौण, सिँघासण कवण वड्याईआ। की उह अग्नी पूजण कि पाउण, की शास्त्रां ओट रखाईआ। की ठाकर मन्नण कि ओम, किस नूं सीस झुकाईआ। की वाहिगुरू अल्ला राम कृष्न गाउण, किस दी जैकार सुणाईआ। केहड़ा इष्ट देव मनाउण, सच देणा समझाईआ। किस दे अग्गे भोग लगाउण, स्वार्थ आपणा पूर कराईआ। किस दी पूजा कर के झट लँघाउण, जीवण सफ़ल कराईआ। की ठाकर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ सिर झुकाउण, गुरुदुआर ख़ाक रमाईआ। की शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाणी पढ़ के मन पर्चाउण, पर्चा जीवण वाला पाईआ। की अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ जा के नहाउण, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खोज खुजाईआ। की पुन्न दान कराउण, की भेंटा जगत गोसांईआ। गोबिन्द किहा दीन दुनी दे नाते सर्ब तजाउण, छुट्टे कूड़ लोकाईआ। इक्को पुरख अकाल मनाउण, जिस ने सारे इष्ट दिते प्रगटाईआ। ओसे दी महिमा कर के सारे झट लँघाउण, बिना पुरख अकाल शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तीर्थ तट किनार गुर अवतार पैगम्बर कम्म किसे ना आईआ। एह सारे ओसे दा निशान, जिस ने रचना रची दो जहान, खेल खिला ज़िमीं असमान, रवि ससि कर प्रधान, विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, परमात्म आत्म दे के दान, त्रै पंज खेल खेल महान, लख चुरासी जेरज अंड उत्भुज सेत्ज रचन दिती रचाईआ। ओन्हां संदेसा देवे नौजवान, आदि जुगादी मर्द मर्दान, दो जहानां निगाहबान, निरवैर निराकार निरँकार आपणी दया कमाईआ। ब्यास, साचा नाअरा दस्स के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आवण जावण लेखे मुका के तमाम, निरगुण नवां नूर मिले अमाम, मानस जन्म दा सफल होवे काम, चरण धूढ़ी इक्को वार करा इश्नान, मेहर नाल दे ज्ञान, अन्ध अज्ञान अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, जिन्हां नूं आपणे दर करे परवान, तिन्हां दा लेखा होर रहे ना राईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड दैंत पुरा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास किहा कलयुग अन्त भगत किहड़ी नहावण गंग, गंगोतरी दे समझाईआ। किस दवारे मारन पन्ध, सफ़री सफ़र वखाईआ। किस दा मानण अनन्द, पुरी अनन्द वाले दे दृढ़ाईआ। केहड़ा तरीका करन ढंग, रस्ता लैण अपणाईआ। केहड़ा परदा कज्जे नंग, ओढण सीस टिकाईआ। केहड़ा युद्ध करन जंग, शस्त्र कवण उठाईआ। केहड़ा वजावण मृदंग, नगारा डंक छुहाईआ। केहड़ा लभ्भण संग, अगला संग बणाईआ। केहड़ा कसण तंग, पाखर अस्व ज़ीन सुहाईआ। किस दे होण पाबन्द, चल्लण सच रज़ाईआ। किस बिध पावण ठंड, तीर्थ कवण नुहाईआ। टुट्टी लैण गंढ, नाता आप जुड़ाईआ।
२४३ ... २४३
२० ... २०
भेव खुल्ल्हे ब्रह्म, परदा चुक्के बेपरवाहीआ। सुखाले होवण दम, साह स्वास विच समाईआ। मिटे चिन्ता ग़म, हरख सोग डेरा ढाहीआ। भण्डारा मिले धन, नाम अगम्म अथाहीआ। चमके नूरी चन्न, जोत होवे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास जे इक्को मेरा हुक्म लैण मन्न, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरी धारों पैण जम्म, पिता पुरख अकाल दयां वखाईआ। दो जहानां चाढ़ के चन्न, गुरमुखां करां रुशनाईआ। भगत उधारना मेरा कम्म, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। ब्यास किहा उह दवारे कीहदे झुकण, सीस किस निवाईआ। किसदे कोलों पुछण, किथ्थे मिले बेपरवाहीआ। किस नूं सुणावण दुक्खण, कवण दर्दी दर्द वण्डाईआ। किस बिध कूड़ कुड़यारी जड़ पुट्टण, अंदरों बाहर कढाहीआ। जगत वासना कूड़ी बाहर थुक्कण, अंदर विख ना कोए चढ़ाईआ। मनुआ खेल ना करे फफ्फे कुट्टण, तृष्ना तृप्त वखाईआ। किस बिध पैंडा ओन्हां आवे (मुक्कण), झगड़ा मुके लोकाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास जे इक्को मेरे बण जाण सुतण, मेरा सुत अपराध ना कोए कमाईआ। आपे गोदी आवां चुक्कण, कोझे कमलयां गले लगाईआ। दरगाह साची आवां सुट्टण, जित्थे बैठा बेपरवाहीआ। सोहणी सुहावां रुत्तण, रुतड़ी इक्क महकाईआ। जेहड़े एस निशान्यौं उकण, अगले लेखे दी समझ रहे ना राईआ। शब्दी धार नालों टुट्टण, टुट्टयां ना

कोए जुड़ाईआ। जन भगतां हुक्में अंदर दे के धुर दा सुखण, बचन कौल आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे आपणी दया विच रखाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ माई भागो दे गृह पिण्ड बिलगा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास किहा गोबिन्द कलयुग अन्त भगतां दी की पहिचाण, गुरमुखां दा लेख दे समझाईआ। किस दा करन ध्यान, इष्ट कवण मनाईआ। किस दा सुणन ज्ञान, कवण सच पढ़ाईआ। किस दा रखण माण, किस दी गोद सुहाईआ। किस तों मंगण दान, किस अग्गे झोली डाहीआ। किस तों लैण अमृत पीण खाण, किस दवारे रस चुआईआ। किस दा ढोला गीत गाण, किस दे अग्गे सीस निवाईआ। किस दे चरण करन प्रणाम, बन्दना डण्डावत किहड़ी थाँईंआ। किस दे होण गुलाम, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। किस दा सुणन पैग़ाम, किस दी चलण रज़ाईआ। गोबिन्द किहा, ब्यास उठ वेख निशान, निशाना दयां वखाईआ। उह शब्द अगम्मी सुणन ज्ञान, चार जुग तों वक्खरी करन पढ़ाईआ। इक्को इष्ट मन्नण श्री भगवान, जो सब दा पिता माईआ। सच प्रीती अमृत रस पीण खाण, दूजी तृष्ना ना कोए वधाईआ। सचखण्ड निवासी कर परवान, लेखा सब दा दए लगाईआ। उन्हां ने ढोला गाउणा "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान", भाग आपणा लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ केहर सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का ज़िला जलन्धर ★

ब्यास किहा उन्हां दी कवण जाणे मितगत, कवण देवे वड्याईआ। कवण समझावे ब्रह्म मत, ब्रह्म परदा कवण उठाईआ। कवण भाग लगावे पंज तत, तत्व दए दृढ़ाईआ। कवण रंग रंगाए आपणी रत्त, लाल गुलाला दए चढ़ाईआ। कवण मार्ग दस्से सच्च, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। कवण सुहाए काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए बणाईआ। कवण देवे अमृत रस, बिन रसना दए चखाईआ। कवण मनुआ करे वस्स, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। कवण खोल्हे अंदरों अक्ख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। कवण परदा देवे ढक, ओढण सीस टिकाईआ। कवण लख चुरासी विच्चों लवे कढ्ढ, राए धर्म ना दए

सज़ाईआ। कवण सच दवारे लए सद्द, दरगाह साची धाम वखाईआ। कवण हकीकत देवे हक, पूरब लेखा झोली पाईआ। कवण मेल मिलाए नठ नठ, भज्जे वाहो दाहीआ। कवण ऊँचां नीचां खोल्हे इक्को हट्ट, सच दवारा दए वखाईआ। कवण क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दीन मज़्हब खेड़ा करे भठ्ठ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। गोबिन्द किहा ब्यास एह मेहर करे पुरख समरथ, दीन दयाल दया कमाईआ। इक्को दे के आपणा जस, सारीआं सिफ्तां ओसे विच समाईआ। नाम दा खोल्ह के हट्ट, वस्त दए वरताईआ। इक्ठे कर चार वरन इक्क दवारे लए सद्द, दर दरबारा इक्क वखाईआ। ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" दस्स के छन्द, बन्द बन्द बन्दगी लेखे लाईआ। अग्गे दे के सचखण्ड दा अनन्द, जोती जोत जोत विच मिलाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भगत उधारना ओस कोल निराला ढंग, जुग चौकड़ी लए बदलाईआ। कलयुग अन्त हो बख्शंद, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, धुर दा बणा के संग, संगी हो के सगला संग निभाईआ।

२४५
२०

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

कुल्ली कहे भाग लग्गा मेरी झुग्गी, झुग्गे हरि संगत दे वसाईआ। मैनूं तेरी हथ्थ धार ना आई चौंह जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग राह तकाईआ। मेरे मालक तेरी याद विच हो गई बुढ्ढी, जोबन जवानी दिती गवाईआ। लत्तां तों हो गई डुड्डी, बलहीण अख्वाईआ। वेखदी रही वदी सुदी, किशना शुक्ला पक्ख ध्यान लगाईआ। सोचदी रही नाल बुद्धि, अकल नाल वड्याईआ। मैनूं रमज़ कोए ना सुज्झी, भेव ना कोए खुल्हाईआ। क्यों धार रखी गुज्झी, आपणा आप छुपाईआ। हुण सीर नहीं रिहा दुद्धी, धीर ना कोए धराईआ। लक्कों हो गई कुब्बी, सिर ना कोए उठाईआ। जगत वहिण विच खुभ्भी, बाहर ना कोए कढाहीआ। रोवां मार के भुब्बी, हउकयां विच जणाईआ। तेरे बिना करे कोए ना उग्घी, उगण आथण ना कोए सरनाईआ। किसे धार संसार नहीं मेटी दूजी, जगत झगड़ा ना कोए मुकाईआ। शरअ ख़त्म ना कीती तीजी, तीजे नैण ना कोए रुशनाईआ। मैं जुग जुग राह तक्कण गिज्झी, वेखां अक्ख उठाईआ। कवण मैनूं करे निग्घी, जगत ठंड विच्चों बचाईआ। बड़ी होई जिच्ची, दुक्खां दिता तपाईआ। मैं खुरक आपणी गिच्ची, धौण लई छिलाईआ। वड्डुउँ होके निक्की, आपणा आप बदलाईआ। गुर अवतारां दीआं पढ़दी रही चिठ्ठी, जो अक्खरां विच गए समझाईआ। निशान वेंहदी रही इट्टीं, पत्थरां नाल वड्याईआ। अन्त दुहथ्थड़ मार के पिट्टी, बौहड़ी कर सुणाईआ। मेरे हथ्थ ना आई उह मिती,

जिस विच मित्र प्यारे मिल के खुशी मनाईआ। समझ ना आई थित्ती, वक्त ना कोए सुहाईआ। मेरी धार ना किसे नजिठ्ठी, दर्दी दर्द ना कोए वण्डाईआ। प्रेम धार ना दिती मिठ्ठी, रसीआ रस ना कोए चखाईआ। सब दे चरणां उत्ते ढठ्ठी, जो तेरा नाम संदेसा लै के आईआ। मेरी अग्न ना होई मठ्ठी, तपश ना कोए बुझाईआ। मैनूं सारे अक्खरां वाली पढ़ा के गए पट्टी, रागां नादां विच दिल परचाईआ। मैं थोड़ी थोड़ी जगदी वेंहदी रही मोमबत्ती, तेरे नूर दी रुशनाईआ। आंचल विच्चों वेंहदी रही अक्खीं, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। बणदी रही सखी, काहन जोड़ मिलाईआ। झलदी रही पक्खी, सोहणी सेव कमाईआ। तपाउँदी रही भठ्ठी, पकवानां नाल रजाईआ। देंदी रही खट्टी, जो आपणी हथ्थीं कार कमाईआ। फिरदी रही नठ्ठी, चार कुण्ट वाहो दाहीआ। लभ्भदी रही हट्टी, जगत जहान वेख वखाईआ। खोजदी रही पती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तेरी खेल किसे ना दस्सी, बेअन्त कहि के गए सुणाईआ। मैं अन्तिम मांदी थक्की, थकावट विच कुरलाईआ। जे तूं साहिब सुल्तान हकी, हकीकत दा धुर दा माहीआ। बेदर्दा ज़रा दरस ते दे जा रती, क्यों दुक्खां विच तपाईआ। मैं तेरे उत्ते आस सट्टी, तेरी हो के नैण उठाईआ। अन्त दुहथ्थड़ा मारां उत्ते पट्टीं, पटे खोह के रही कुरलाईआ। जे कुछ नहीं देणा आपणे प्यार दी दे दे चट्टी, दुःख सहि के तेरा शुकर मनाईआ। मैं बिनां वेख्यो चार जुग तेरे सहारे वसी, दूजा कन्त ख़सम ना कोए हंढाहीआ। तूं अक्ख ज़रा ना पट्टी, नैण ना कोए खुल्हाईआ। ना मैं गवालण ना मैं जट्टी, ना घुम्यारन नज़री आईआ। ना मैं तोला मासा ना मैं रती, वज़नां विच वज़न ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। झुग्गी कहे मैं चिरां विछुन्नी, विछड़ी लै मिलाईआ। मैं वेखी तेरी दीन दुनी, दुनिया दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। मैं वेखे तेरे ऋषी मुनी, जंगलां विच फिरन मारन धाहीआ। मैं वेखे तेरे पंडत गुणी, विद्वान रहे कुरलाईआ। मैं वेखे जिन्हां चोटी मुन्नी, मुनीशर जगत विच अख्वाईआ। मैं वेखे जेहड़े बैठे विच सुन्नी, समाधी विच आपणा आप मिटाईआ। तूं पुकार किसे ना सुणी, बेपरवाह हो के सब नूं रिहा रुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत आपणी दे कमाईआ। कुल्ली कहे मैनूं झुग्गी कहे जग, जुग चौकड़ी नाम धराईआ। मैं सब कुछ दिता छड्ड, छड्डी जगत लोकाईआ। मन्दिर मस्जिदां तों हो के अड्ड, वक्खरा डेरा बैठी लाईआ। मेरे सब तों पुराणे हड्ड, हड्डीआं देण दुहाईआ। मैं तेरे प्यार दा निशाना बैठी गड्ड, जिस नूं चार युग ना कोए उखड़ाईआ। तूं जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर लोकमात विच्चों दिते कढ्ढ, हुक्मे अंदर घल्ल के हुक्मे विच आपणे विच मिलाईआ। मेरा निशाना सारे गए छड्ड, बिना झुग्गी किसे दे सिर ते परदा कोए ना पाईआ। विष्नूं मेरा गाया जस, प्रभ दा चरण झुग्गी ओस नूं नज़री

आईआ। ब्रह्मे मेरा माणया रस, प्रभ चरणां थल्ले मिली सरनाईआ। शंकर मेरा गाया जस, जिसदे उत्ते परदा दिता पाईआ। मैं जगत विच कुल्ली कक्ख, सचखण्ड विच तेरा नूर नूर रुशनाईआ। तेई अवतार अंदर गए वस, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मेरे अंदर वड़े नठ्ठ, परदा जगत विच्चों पाईआ। नानक गोबिन्द मेरे वास्ते लेख लिख के गए हक, हकीकत नाल जणाईआ। भगत सुहेले मैनूं दस्सदे रहे सच, सज्जण हो के मेरा संग निभाईआ। चार जुग तूं मैथों रिहा बच, गुरमुखां नाल मिल के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल देणा वखाईआ। झुग्गी कहे कुछ याद कर लै नामे वाला छप्पर, छुपण वाल्या दयां समझाईआ। तैनूं किसे ना ल्या पकड़, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जगत नाल जगत दी ला के टक्कर, टाकरे विच गुर अवतार पैगम्बर दिते फसाईआ। भगतां नाल भगतां विच्चों हो के वक्खर, वक्खरे हो के भगतां मेल मिलाईआ। मैं विछा के बैठी रही सत्थर, चार जुग ध्यान लगाईआ। मेरे रोंदी दे सुक्क गए अथ्थर, हन्झू रहिण कोए ना पाईआ। प्रभू तूं क्यों बणयों ऐडा पत्थर, पत्थरां दे बणाउण वाल्या आपणी पत्थरी लै हिलाईआ। मैं पढ़ना कोई नहीं अक्खर, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। मैं चढ़ना नहीं किसे सिखर, चोटीआं उत्ते ना डेरा लाईआ। रखणा कोई नहीं फ़िकर, फ़िकरयां विच तेरा नाम ध्याईआ। मैनूं लोड़ नहीं बाजां तित्तर, कल्गी सीस ना कोए टिकाईआ। मैं कोई चलाउणा नहीं ज़िकर, फ़िकरा अलिफ़ ये ना कोए पढ़ाईआ। मलम्मा नहीं बणना पित्तल, कूड़ी गंढु ना कोए वखाईआ। तेरे विछोड़े विच होई सित्थल, प्रीती सके ना कोए तुड़ाईआ। किरपा कर के मेरे अंदर वड़ के मेरे अंदरों निकल, मैं वेखां चाँईं चाँईआ। आदि जुगादि वखा आपणी शकल, जिस नूं बेशकल कहे लोकाईआ। समझे कोई ना अकल, विद्या ना कोए वड्याईआ। मेरा यकीन होवे हकल, हिकमत दे दृढ़ाईआ। विछोड़ा कर दे कत्ल, धुर दा प्रेम लै प्रगटाईआ। मैं आई तेरे पत्तन, तूं धुर दा सच्चा माहीआ। सच सुनेहड़ा आई दस्सण, इक्को वार दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। झुग्गी कहे मैं वेख होई झल्ली, झलक आपणी दए वखाईआ। मैं वैरागण फिरां इकल्ली, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। भोरी को वखावे आपणी गली, बुढ्ढी तों छोहरी लए बणाईआ। प्रभू मेरी मति ना रही झल्ली, दे माण वड्याईआ। हुण रहीं ना अछल अछल्ली, छल आपणा दे गवाईआ। मैं सीस धर के तली, चौथे जुग दवारे तेरे आईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दीआं दिन्दी रही बली, बलवान बलवानां नाल लड़ाईआ। लोकमात आई तेरी घल्ली, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। डेरा लाउँदी रही थलीं, अस्गाहां विच आपणा आप छुपाईआ। मेरे विच किसे ने बाली नहीं कदे तेल दी पली, जगत नूर ना कोए चमकाईआ। जे

कोई अंदर वड़ गया तेरा घल्लया वली, उह वी अक्खां मीट के झट लँघाईआ। सदा सदा विछोड़े दी धार मेरे उत्ते बणी, बेड़ा बन्ने ना कोए कराईआ। मैं सब दीआं फड़दी रही कन्नी, आप आपणा बल धराईआ। लाउँदी रही गल्लीं, कथा कहाणी विच वड्याईआ। कदमां नाल पिच्छे लग्ग के चली, भज्जी वाहो दाहीआ। अंदर वड़ के रली, आपणा आप छुपाईआ। अन्त पेश कोए ना चली, सारे पल्लू गए छुडाईआ। वैरागण हो के झल्ली, फिरी वांग शुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लै मिलाईआ। झुग्गी कहे कुछ वेख लै नीवां हो के झुक, असमानां तों परे डेरा दे तजाईआ। मेरा तन वजूद गया सुक्क, कक्खां वाला रूप वटाईआ। मूल ना सकां उठ, निरबल नज़री आईआ। मेरे कोल नहीं कुछ, खाली हथ्थ नज़री आईआ। बिरहों वैरागण नूं आ के पुछ, आपणा फेरा पाईआ। कोई परदा रिहा ना लुक, रो के दयां दुहाईआ। चार जुग मेरा मेटया किसे ना दुःख, दर्दी दर्द ना कोए वण्डाईआ। मेरे सारे निशाने गए उक, जगत तीर कम्म किसे ना आईआ। जो आया सो मेरे अंदर वड़ के तैथों रिहा पुछ, किरपा कर बेपरवाहीआ। सारे वेखे तेरे पुत्त, बच्चे बण के झट लँघाईआ। मैं गोदी रखे चुक्क, सोहणी सेव कमाईआ। तेरी रख के ओट, बैठी राह तकाईआ। छड्डे किले कोट, जंगल डेरा लाईआ। रही ना कोई मौज, मजलस दिती खपाईआ। तेरी करदी रही खोज, किस बिध मिले मेरा माहीआ। लेखा चुक्के मेरा मातलोक, परलोक दए वड्याईआ। ख़त्म होवे सोच, समझ दए बदलाईआ। मनसा पूरी होवे लोच, लोचन आपणे नाल रलाईआ। दर्शन करां रोज़, विछोड़ा दए कटाईआ। मेरा पूरा करे जोग, जुगती आपणी इक्क समझाईआ। आयू भोगदे बहुत, नाता लोकमात रखाईआ। अन्तिम होणा पए फ़ौत, लेखा सब दा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब विछोड़ा दे कटाईआ। पुरख अकाल किहा झुग्गी तैनूं केहड़ा दुःख, बिन रसना दे समझाईआ। केहड़ा चाहें सुख, मुक्खों दे दृढ़ाईआ। झुग्गी किहा तेरे दर्शन नाल होवां खुश, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जे बहुती बख्शिश करें मैनूं वखा आपणे सुत, जो धुर दे भगत नज़री आईआ। पुरख अकाल किहा की उन्हां गोदी लवें चुक्क, आपणी सेव कमाईआ। झुग्गी किहा मैं छाती लवां घुट्ट, प्रेम प्यार वधाईआ। मेरा सीर पए फुट्ट, अमृत रस चुआईआ। गाना बन्नां नाल गुट, मौली साहमणे नज़री आईआ। इस तों परे नहीं कुछ, जिस नूं वड्डा कर सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। पुरख अकाल किहा क्यों भगतां बन्ने गाना, झुग्गी मैनूं दे जणाईआ। झुग्गी किहा इन्हां दा मालक श्री भगवाना, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिन्हां दे ख़ातर वलीए छलीए तूं पहरया बाणा, आपणा वेस वटाईआ। छड्ड के दो जहानां, गुरमुख लए मिलाईआ। बख्श के सच्चा

माणा, चरण दिती सरनाईआ। हो के गुण निधाना, वस्त अमोलक दिती वरताईआ। रस दे के प्रेम प्यार बदामां, बद्दलां विच्चों बदली दएं कराईआ। एसे सगण नूं मन्नदे गए कृष्ना रामा, दोए जोड़ के वास्ता पाईआ। तेई अवतारां रख्या ध्याना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद हो निमाणा, अरज़ां गए सुणाईआ। नानक गोबिन्द मंगदे गए खाणा, एहो आस रखाईआ। तूं सब नूं दिता इक्क निशाना, शब्द निशाने नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले प्रगट हो के आवां वाली दो जहानां, निरगुण हो के खेल खिलाईआ। जन भगतां पहलों बन्नृ के आपणा गाना, गुरमुख साचे लवां बणाईआ। फेर दस्स के धर्म निशाना, सच निशाना दयां झुलाईआ। चरण कँवल कर परवाना, परवाने धुर दे लवां बणाईआ। उन्हां दे वास्ते रख्या सगन महाना, चार जुग तों वक्खरा मुख नूं देणा लाईआ। जिस ने सतिजुग होणा प्रधाना, प्रधानगी चार कुण्ट बणाईआ। ओसे दा लेख लिखाणा, धुर दी लिख्त दए गवाहीआ। चार वरन करन परवाना, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। पुरख अकाल कहे झुग्गी झगड़े वालीए होर की तेरी मंग, मैनूं दे समझाईआ। किसे गल्लों ना होवीं तंग, दुखड़े दयां गवाईआ। तेरे अंदर पावां ठंड, पिछली अग्नी दयां बुझाईआ। झुग्गी किहा मैं हुण खोपरे वांग नहीं रहिणा बन्द, अमृत आपणे विच छुपाईआ। भावें सूली उत्ते टंग, सीखां उत्ते दे चढ़ाईआ। रोटी दे लंङे डंग, पेट भर ना कोए खवाईआ। रुला दे विच्च वरभण्ड, ब्रह्मण्ड धक्का लाईआ। बदल लै आपणी कंड, करवट दे वखाईआ। मेरी इक्क अरज़, जिन्हां नूं तूं आप सुणाया आपणा छन्द, आपणा नाम दिता दृढ़ाईआ। ओन्हां दा लेखे ला लै बन्द बन्द, तेरी बन्दगी तों परे तेरी इक्क सरनाईआ। मैं इन्हां पिच्छे चार जुग कटदी रही रंड, रंडी हो के झट लँघाईआ। इन्हां पिच्छे पाउण लग्गी डण्ड, उच्ची कूक दयां सुणाईआ। टुट्टयां नूं आपणे नाल गंढ, तेरे नालों ना होए जुदाईआ। भावें मिन्नतां विच मेरे घस जाण दन्द, दन्दीआं पीह के फेर वी वास्ता पाईआ। वड्डा हो के छोटयाँ दे अनन्द, अनन्द विच तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। पुरख अकाल कहे की होर तेरा ख्याल, मैनूं दे जणाईआ। आपणा दस्स सवाल, आसा बाहर कढाहीआ। झुग्गी किहा जन भगत बणा आपणे लाल, लाल रंग रंगाईआ। वेखीं शहिनशाह हो के छड्ड ना जाईं कंगाल, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। बहाईं ओस सच्ची धर्मसाल, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर बहि के तेरे दर ते सीस झुकाईआ। मैं इन्हां दुखियां दा क्यों दस्सदी हाल, चार जुग दे बैठे तेरा राह तकाईआ। अग्गे थोड़ा थोड़ा दे के भगतां जमाल, छिन्न विच आया छिन्न विच गया आपणा मुख छुपाईआ। की होया जे नाता तोड़या काल, महाकाल कोलों बचाईआ। कदी साहमणे हो के जगत विच तूं

अजे तक्क किसे नूं नहीं पुछया हाल, चोरी चोरी आपणी कार कमाईआ। की एह नहीं तेरे बाल, जो तेरे पिच्छे सब कुछ बैठे गवाईआ। ग्रन्थां विच लिखाउँदा रिहां मैं बड़ा प्रितपाल, गुर अवतार पैगम्बर भय विच डराईआ। आप लुक के तड़फाउँदा रिहों अंञाण, ध्रू वरगे जंगलां विच भवाईआ। की तैनूं नहीं आउँदी आपणयां दी पछाण, क्यों अक्खां बन्द कराईआ। झुग्गी कहे इन्हां दे झुग्गे विच देदे ज्ञान, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। तूं कोई गधे चराउण वाला नहीं भगवान, सब दा पिता माईआ। झुग्गी कहे मैं ओनां चिर खाण नहीं देणे बादाम, गिरी तेरे मुख ना कोए लगाईआ। कोई गाने बन्न्ह के एन्हां व्याहुणी नहीं नार रकान, गृहस्ती हो के अग्गे मारन धाहीआ। एह ते आपणे छड्डण नूं फिरदे मकान, घरां बारां नूं जींदे अग्गां रहे लाईआ। एन्हां तेरी सिफ्तां वाली नहीं वेखणी दुकान, लारयां वाला इशारा ना नज़री आईआ। जे होणा एं ते हो मेहरवान, नहीं ते जा आपणा मुख छुपाईआ। बच्चे पालणे नहीं कोई आसान, झुग्गी कहे पुच्छ मैं जुग जुग दी बुढ्ढड़ी माईआ। सब नूं सुखाला रवाण, रोंदयां नूं हसाउणा एह वी वड्डी चतुराईआ। किरपा कर के दे आपणा दान, दाता हो के झोली पाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप अपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। झुग्गी कहे ऐंवे डर ना देवीं धर्म राए दी वहीआ, चित्रगुप्त दा भय ना कोए रखाईआ। तेरे पिच्छे नाता तोड़या भैणां भईआ, सगल कुटम्ब तजाईआ। तैनूं जाण के सच्चा सईआ, साथ तेरा ल्या बणाईआ। तूं चाढ़ आपणी नईआ, मलाह हो के सेव कमाईआ। जे भुक्खा नंगा एं आह लै गुरमुख दा इक्क इक्क रुपईआ, रुप्पए दे भुप्पे चार जुग दे भुक्खे भर लै आपणे कुप्पे, गुरमुखां दे भण्डारे कदी नहीं मुके, जो तेरे उत्तों विके, उह एथे ओथे सुक्के, सिर्फ़ तेरे विछोड़े विच दुक्खे, दूजा दुःख लग्गे ना राईआ। एह जगत माया विच्चों भुक्खे, तेरे पिच्छे माता गर्भ लटके रहे पुठ्ठे, झुग्गी कहे तूं अजे वी एन्हां नालो रुठ्ठें, जेहड़े तेरे वैराग विच गए कुठ्ठे, अन्त लग्ग के मेरी गुठ्ठे, कठ्ठे हो के बैठे आईआ। इक्क वेरां कहि दे गुरमुखो तुसीं मेरे लाडले पुत्ते, बच्चे तुहानूं ल्या बणाईआ। झुग्गी कहे फेर मैं कहां मेरे अंदर आ के सुत्ते, खुशीआं विच रैण लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। पुरख अकाल किहा झुग्गी होर की मंगणा, मंगतीए मंग ला तेरी वारी आईआ। झुग्गी कहे हुण की संगणा, जुग चौकड़ी बथेरी अक्ख शरमाईआ। इक्को मंग आपणयां भगतां नूं ला आपणे अंगणा, अंगीकार लै बणाईआ। जिन्हां तेरा दवारा लँघणा, दूजे दर कदे ना जाईआ। ओन्हां बण जा धुर दा सज्जणा, साजण हो के हो सहाईआ। तैनूं पता नहीं अन्त एह काया ठीकर सब दा भज्जणा, तन वजूद सदा ना कोए हंढाहीआ। एन्हां फेर मातलोक दी झुग्गी विच किसे नहीं वसणा, माँ पिउ भैण भ्रा साक सज्जण नार कन्त घर ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल तेरे दवारे

नस्सणा, तेरी ओट तकाईआ। जे ओस वेले इन्हां कोलों छुपणा, हुण काहनूं रिहा भटकाईआ। पुरख अकाल किहा झुग्गी मैं ज़रूर ओन्हां नूं गोदी चुक्कणा, जिन्हां नूं गोदावरी वाले नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। झुग्गी कहे मैं वेख्या पत्थर इट्टां, जगत सांझ नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निकलदा वेख्या सिट्टा, तेरा खेल खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर डिठ्ठा, अनडिठ्ठड़ी तेरी सेव कमाईआ। काग़ज़ कोरा वेख्या चिट्टा, जिस दा अक्खर ना कोए बणाईआ। तेरा खेल किसे ना दिस्सा, भुल्ली रही लोकाईआ। पुरख अकाल मेरी जुग जुग दी एहो इच्छा, आसा दयां सुणाईआ। जिंनां चिर ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां मूर्खां मुग्धां उत्ते करें ना रिच्छा, रच्छक हो के आपणी गोद उठाईआ। ओन्हां चिर तेरा छड्डणा नहीं पिच्छा, भावें घर तों दे दुरकाईआ। मैं केहड़ा अग्गे तेरा वसल जमाल डिठ्ठा, सुण सुण के झट लँघाईआ। वेदां पुराणां शास्त्रां सिमरतां कुरानां अञ्जीलां गीता ज्ञानां गुरुआं दे ब्यानां दा पढ़दी रही चिठ्ठा, चिठ्ठीआं विच सुनेहड़े सुण के तालीआं रही लगाईआ। मैनूं नहीं सी पता केहो जेहा भगवान भगतां दा पिता, जेहड़ा जन्म देवे बिना पिता माईआ। पर तेरी याद विच जुग जुग पैंदीआं रहीआं खिच्चां, सिक्कां विच अक्ख उठाईआ। आस उठदी रही ओस दे दवारे विकां, जो कीमत लए पाईआ। जुग चौकड़ी किते ना दिसा, होई ना सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। झुग्गी कहे प्रभ वेख मैं निराली जोगण, आपणा हठ्ठ ना अज्जे तजाईआ। तेरा रस आई भोगण, नाता भोगीआं नालों तुड़ाईआ। तेरे नाम दी बण के रोगण, आपणा आप दिता सुकाईआ। मैनूं ताअना देवण लोकन, बुरी कहे लोकाईआ। माढ़ी कर के सारे टोकण, बुरी कहि के परे हटाईआ। पर मेरी इक्को आस आपणे बच्चयां दे सिर उत्ते देणा ओढण, परदा आपणा नाम रखाईआ। थोड़े नज़री आए विच्चों कोट कोटन, जिन्हां तेरी इक्क सरनाईआ। तेरा दरस कर के सचखण्ड दवारे तेरे पहुंचण, पौंचयां तों फड़ के लैणा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। झुग्गी कहे प्रभू भगत तेरे कबीला, बंस सरबंस नज़री आईआ। तूं इन्हां इक्क वसीला, धुर दा सच्चा माहीआ। सिर ओढण दे दे पीला, गोबिन्द रंग रंगाईआ। सद तेरे रहिण अधीना, अग्गे ना होए जुदाईआ। ठांडा करना सीना, विछोड़ा अग्ग बुझाईआ। इन्हां मसाल नहीं जल मीना, तड़प झल्लण ना कोए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। झुग्गी कहे झगड़ा सुण के आ गए गुर अवतार, गुज्झे गुज्झे फेरा पाईआ। कक्खां सड़ीए सानूं दे वखाल, डुब्बयां नूं तारन वाला माहीआ। झुग्गी कहे जाओ वेखो आपणे मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदवाले धर्मसाल, लभ्भो बेपरवाहीआ। ग़रीबां दा मालक

२५१
२०

कदी बैठा नहीं ओढ़ के दोशाल, भुक्खा नंगा घर घर फेरा पाईआ। दो जहानां नालों उहनूं चंगे आपणे लाल, जिन्हां दे पिच्छे लाल गोबिन्द दे लेखे लाईआ। मेरा मालक बेमिसाल, मसलयां विच मसला ना कोए समझाईआ। झुग्गी कहे ओन छड्ड दिते जेहड़े झटका खांदे हलाल, गवारां धक्का दिता लाईआ। उह लए भाल, जिन्हां दी गोबिन्द शहादत दए गवाहीआ। मैनूं ऐं दिसदा इन्हां दे सदा वसणा नाल, इक्वे रह के झट लँघाईआ। झुग्गी कहे तुहानूं वी सानूं वी सारयां नूं अग्गे गया टाल, मटोल विच आपणी मटक छुपाईआ। जरा वेखो उत्ते असमान, ओस तों परे मारो ध्यान, आपणा सचखण्ड वेखो मकान, ओस तों चंगा एह निशान, जित्थे आया मेहरवान, महबूब हो के मुहब्बत विच मिलाईआ। बावन दा ध्यान, कन्या दा पकवान, भगतां दा भगवान, गुरदर्शन पिच्छे घर घर दर्शन रिहा वखाईआ। बल ने अनक कीता दान, साचे दर ना होया परवान, बाली कन्या कोल इक्क निशान, ओस वेले दा मुंदरी पंज पंज नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कुछ तुसीं दयो ब्यान, सारे कहिण श्री भगवान, साडे विच ना आवे ध्यान, तेरा खेल महान, कथनी कथ ना सके राईआ। श्री भगवान कहे हरि संगत इक्को वार दे के दान, पार करा के दो जहान, पुचा के ओस अस्थान, जिस घर आपणा डेरा लाईआ। झुग्गी कहे जुग चौकड़ी सदा नादान, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। बिना प्रभू दे एह कदे कर ना सकण पछाण, बेपहचान परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। झुग्गी कहे प्रभू मैं बड़ा वेख्या झमेला, झब्बे झब्बे ध्यान लगाईआ। दुनिया दा वेख्या मेला, सृष्टी भरी बहु लोकाईआ। तैनूं तक्कया वेहला, हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव रिहा भजाईआ। श्री भगवान कहे कमलीए मैं इक्क बणाया चेला, शब्दी धार प्रगटाईआ। जिस दे रंग खेल खेला, अचरज रचन रचाईआ। झुग्गी कहे क्यों मेरा डेरा लाया विच जंगल बेला, उजाड़ बाघ बिल्ले रहे डराईआ। जगत आशकां चाढ़ के तेला, सगन जगत वाला मनाईआ। मेरा प्यार दस्सदे रहे मजनूं लेला, शीरी फ़रहाद नाल वड्याईआ। सोहणी महीवाल कौल इकरार कीता उत्ते पत्ते केला, केला फल सब तों चंगा नज़री आईआ। हीर रांझा बण बण गए सज्जण सुहेला, जगत प्यार नाल वड्याईआ। सस्सी पुनूं वेख के रंग नवेला, मैं ताड़ी दिती लगाईआ। प्रभू चार जुग बिना तेरयां भगतां मैं सब नूं आपणे विच्चों बाहर धकेला, जगत वासना वाला मेरे अंदर रहिण कोए ना पाईआ। क्यों लक्ष्मण दा आया वेला, महीवाल हो के अन्त ध्यान गया लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। झुग्गी कहे मैनूं पाउँदे रहे विच दरख़तां वाली झंगी, वखतां नाल झट लँघाईआ। रखदे रहे नंगी, परदा पा ना कोए ढकाईआ। हुन्दी रही ठंडी, जगत सीत नाल ठराईआ। इक्क दिन गोबिन्द दादू देहिरयों जांदयां

पै गया इक्क डण्डी, आपणा कदम उठाईआ। ओथे डेरा ला के कन्ढी, जोगिंदर सिंघ बैठा धूणी ताईआ। उस दी माता चौदां दिन पहले होई सी रंडी, सोग पिता वाला सताईआ। गोबिन्द नेड़े आ के कृपान कढ्ढ के नंगी, ढाल उत्ते खड़काईआ। ओसे वेले चिन्ता वाली ओहदे अंदरों आसा नठ्ठी, भज्जी वाहो दाहीआ। डर दे नाल ओहदी मन वासना गोबिन्द चरणीं ढठ्ठी, सीस दिता झुकाईआ। भय विच निकली पेशाब टट्टी, मौत साहमणे नज़री आईआ। गोबिन्द हौली जेही ओहदे उत्ते कटार मुठ्ठ रखी, सहिजे दिती दबाईआ। जिस वेले पुरख अकाल भाग लगाउणा कुल्ली कक्खीं, तेरा मेला लवां मिलाईआ। ओस वेले तेरी नार उह बणनी जेहड़ी तेरे नाल नहीं मंगी, सरीर दोहां जाणा तजाईआ। फेर बणाउणा अगले संगी, ओस दी राम तों मंग मंगी, भीलणी दे नाल रह के झट लँघाईआ। दोहां दी जोड़ी बणा के चंगी, गुर अवतार पैगम्बरां देणी वखाईआ। मर्यादा अनुसार खाण पीण दी रहे तंगी, दादां अनुसार दाता धुर दा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी आपणा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्यास कहे झौंपड़ीए मैं वी आ गया फिरदा, नौ घर दा बणया पाँधी राहीआ। कुछ लेखा याद कर चिर दा, मैं वी दयां सुणाईआ। तैनूं पता जिस वेले गोबिन्द मेरे नालों विछड़दा, कन्ढे उत्ते होई जुदाईआ। तेरा रूप सी ओस वेले छापिआं वाली किक्कर दा, तेरा अंग अंग कट के झौपड़ी लई बणाईआ। अवधूत भंगू पहलों नहा के फेर चिक्कड़ नाल लिबड़दा, आसण तेरे विच रखाईआ। कोई बचन सुणया सी तूं मेरे मित्र दा, मैनूं दे जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द विछोड़ा कीता सी पैर वाले खोसे जूते छित्तर दा, छत्रधारी दित्ते मिटाईआ। नाता तोड़ के जगत वासना भिट्टड़ दा, कूड़ी तृष्ना बाहर रखाईआ। ओस वेले कोई साधन नहीं सी लिखण दा, बिना रविदास दे कलम हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तूं नहीं वेख्या मेरा हाल पिट्टण दा, किस तरह दिती दुहाईआ। झुग्गी किहा मैं तैथों पहलां हाल दस्सां कृष्न दा, जित्थे किशती वाला नजर कोए ना आईआ। ना कोई चेला सी सिख्या सिक्खण दा, ना सक्या किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म अंदर आपणा खेल खिलाईआ। झुग्गी कहे आ मेरे विंगे टेडे वीर, पुठ्ठे सिध्धे तैनूं दयां वड्याईआ। की तैनूं आपणे माण नीर, पाणी जल धार नाल वड्याईआ। की तेरे विच वसदा ख्वाजा पीर, वरुन तेरा संग निभाईआ। ज़रा अंदर वेख आपणी दलील, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तुहाडयां वहिणा विच रुढ़ के गए शाह हकीर, आपणा आप मिटाईआ। तुसां लिहाज़ ना कीता नाल कबीर, ज़ंजीर दिते पवाईआ। प्रहलाद ना दिती धीर, आपणी सेव कमाईआ। हुण क्यों लग्गी पीड़, भज्जया वाहो दाहीआ। भरावा अग्गे किहड़ी एथे भगतां दी भीड़, कोटां विच्चों थोड़े नज़री आईआ। जिन्हां दे सिर ते आपणे नाम दा बन्हणा चीर,

चीरा देणा सजाईआ। जिन्हां दे चरणां दी ओट तक्कण कोटन कोटि रांझा हीर, आशक माशूक मंगण शरनाईआ। इन्हां दी किसे दे हथ्थ नहीं तकदीर, नथ्थ ना किसे फड़ाईआ। झुग्गी कहे झुग्गी वाले ने चाढ़ने चोटी अख़ीर, जेहड़ी जुगीं धार हथ्थ किसे ना आईआ। वीरा ना हो दिलगीर, भैण हो के तैनूं आख्या भाईआ। एन्हां दे अग्गे आ के कढु लकीर, बिन नक्क दे नक्क घसाईआ। एह ओस प्रभू दे फ़कीर, जो बिनां फ़िकरयां तों पार लँघाईआ। एह सचखण्ड दे अमीर, दौलत दे धनी दित्ते बणाईआ। ऐथे किन्नी दिसे भीड़, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेखे पाईआ। झुग्गी कहे मैनूं बणाया लच्छू, लक्ष्मण सिँघ अख्वाईआ। मैं कुछ प्रभ दा हाल दस्सूं, दस्सण लई मंग मंगाईआ। जन भगतो एस ने तुहाडे तारने पशू, जिन्हां दा दुद्ध दोह के हलट हल जोह के पकवान रहे बणाईआ। एह लेखा लिख के गया यसू, मसीह वसीअ कर के समझाईआ। कुछ आसा रखी कच्छू, जिस वेले मिन्दिरा पिठ टिकाईआ। कलयुग अन्त कर्म धर्म शर्म जगत नट्ठू, कूड़ी क्रिया वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जगत वासना जड़ पट्टू, पटने वाला नाल मिलाईआ। गुरमुख भगत किसे दे भाड़े दा रहिण ना देवे टट्टू, ओन्हां दा भार आपणे कंध टिकाईआ। स्वांगी बणू अगम्मा नट्टू, नटुआ हो के खेल खिलाईआ। सन्त सुहेले दरगाह साची सट्टू, सट्टां सहे जगत लोकाईआ। आपणी करनी तों कदे ना हटू, हरि करता बेपरवाहीआ। हरिजन विरला लाहा खट्टू, जिस खटका दिता चुकाईआ। झुग्गी कहे जिस वेले मेरे विच बहि के गुरमुखां कहू बच्चू, तुहानूं बच्चे ल्या बणाईआ। फेर मैं खुशीआं नाल नच्चूं, टप्पूं कुद्दूं चाँईं चाँईंआ। बिनां हस्सयां तों हस्सूं, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। लहिणा देणा पूर कराउँ लच्छू, लच्छा मौली दए गवाहीआ। झुग्गी कहे जन भगतो तुहाडे नाल मिल के सदा वसूं, घर धुर दे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हिरदे सब दे नाम अणयाले तीर नाल फट्टू, फट्टड़ धायल आपे लए बचाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरमेज सिँघ दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

झुग्गी कहे गुरमुखो वसाओ आपणा झुग्गा, उजड़या रहिण कोए ना पाईआ। सब दा मालक होया उग्घा, उंगली इशारे नाल ना कोए समझाईआ। तुहाडे जीवण दा समझाए मुद्दा, मुद्दत तों विछड़े लए मिलाईआ। एसे आस नूं रख के गया बुधा, ध्यान नाल ध्यान जणाईआ। कुछ आसा रखे गोबिन्द वाला कुज्जा, परदयां विच्चों परदा फोल फोलाईआ। थोड़ी जेही मिन्नत

कर के गया बाबा बुड्ढा, तिलक देण वाला तिल नज़र उठाईआ। जिस ने भाग लगाउणा बसुध्धा, सर सुधा साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। उस दा भेव रहिणा गुज्झा, बिन भगतां समझ ना कोए समझाईआ। सरगुण तों निरगुण रूप धारना दूजा, दूजे तों बण जाए तीजा तीजे दा गिज्झा, भगत सारे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह रुढ़का कलां ★

झुग्गी कहे जन भगतो वेखो मेरे कक्ख, आपणी कीमत ना कोए रखाईआ। मैथों नहीं वक्ख, ग़रीबां दा ग़रीब मेरे अंदर डेरा लाईआ। इक्क दे होवो वस्स, दूजे दी आस मिटाईआ। दर्शन पाओ हस्स, हस्ती बेपरवाहीआ। एथे नहीं बस्स, अग्गे होए सहाईआ। अग्गे ना जावे नठ्ठ, सच दुआर टिकाईआ। सच दुआर ना पावे वट्ट, इक्को जेही दए वड्याईआ। मानस जन्म दा लाहा जाओ खट्ट, ढहि के इक्को वार शरनाईआ। जन्म मरन तों जाओ बच, चुरासी फाँसी ना कोए लटकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख समरथ, सम्यां दा मालक नज़री आईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ आत्मा सिँघ दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

झुग्गी कहे मैनूं पिच्छो इशारा देंदा चन्द, अक्खां रिहा हिलाईआ। कुछ मैनूं सुणा छन्द, जो प्रभ भगतां करे पढ़ाईआ। मैं किहा दूर दुराडा ना पा डण्ड, बिन चरणां तों मिले ना किसे वड्याईआ। उह रो के कहे मैनूं हुक्मे विच दिता टंग, बध्धा ना कोए छुडाईआ। मैं सद मंगां रिहा मंग, दर्शन दे प्रभ गोसांईआ। झुग्गी कहे मैं एसे कर के आपणे अंदर कीता बन्द, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। सब वल्ल कर के कंड, ब्रह्मण्ड रिहा भुलाईआ। थोड़्यां पा के ठंड, बहुत्यां रिहा सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी पूरो दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

चन्द कहे क्यों बैठा छुप, छप्परी अंदर डेरा लाईआ। कीता अन्धेरा घुप, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। झुग्गी कहे बस वे वीरा चुप, ऐंवें दएं दुहाईआ। सिर्फ़ तारन आया भगत आपणे पुत्त, आपणी गोद उठाईआ। सब तों बैठा लुक,

अक्खां वालयां तों अक्ख लई बदलाईआ। चन्द किहा एह मैनूं वड्डा दुःख, बिना वेक्खयां दयां दुहाईआ। झुग्गी कहे पहलों गिरधारे गोतम कोलों पुछ, जिस नाल धरोह ल्या कमाईआ। ऋषी कहे भगतां विच्चों बाहर कढ्डो कुट्ट, जो नेत्र अक्ख लए बदलाईआ। भगतां विच भगत मिल के भगतां दी मंगण सुक्ख, भगतां दा भगत वैरी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा वेख वखाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम कौर दे गृह पिण्ड माहल गैहले ज़िला जलन्धर ★

झुग्गी कहे प्रभ दस्सीं धार चंगेरी, मंदिउँ चंगे देणा बणाईआ। वेखीं किते कपड़े रंगावीं ना नाल गेरी, गर्दश विच भवाईआ। तेरी मेहर नज़र इक्क बथेरी, होर आस ना कोए रखाईआ। जे आत्मा बणा लएं आपणी चेरी, चिरी विछुन्नी नाल मिलाईआ। आपे चढ़ जाए तेरी बेड़ी, बेड़ा अग्गे ना कोए रुढ़ाईआ। साहिब सतिगुर हुण ना लाईं डेरी, डेरयां विच रह के कई जन्म दिते लँघाईआ। सज़ा भोगी बथेरी, हुन्दी रही जुदाईआ। जिन्हां पिच्छे मारी फेरी, फिर के लैणे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी ऊधी दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

झुग्गी कहे जन भगतो तुहाडा एह विहार, मैं निमाणी सेव कमाईआ। सांझा एह यार, यराने धुर दे तोड़ निभाईआ। कल्की एह अवतार, कला रिहा भवाईआ। रसूलां दा सिक्दार, अमाम नूर खुदाईआ। एहदे हुक्म दा करो इंतजार, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। चरण धूढ़ी मंगो छार, शहिनशाह शाह दए बणाईआ। जगत भुक्ख ना वेखो कंगाल, जोत जमाल करे रुशनाईआ। झुग्गी नहीं भगतां दी धर्मसाल, दीन दयाल डेरा लाईआ। जुग जन्म दे तुहाडे वेख के हाल, हुण दी हालत दए बदलाईआ। मेहरवान हो के मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सारे इक्को वार बोलो ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान दी जै"", जै जैकार दो जहान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर अवतारी खेल अपारी कृपाल दयाल हो के आपणी आप वखाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गिरदावर सिँघ दे गृह रुढ़का कलां जलन्धर ★

झुग्गी कहे मैनूं बणाउणा आसान, कीमत जगत ना कोए लगाईआ। मेरे उत्ते आप मेहरवान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ।

जन भगतां पिच्छे बणे महिमान, निरगुण हो के वेस वटाईआ। सच प्रीती देवे दान, बख्शिश आप कराईआ। जगत देवे वड्याई माण, नाता मोह तुड़ाईआ। गुरमुखां कराए पहचान, हरिजन संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। झुग्गी कहे मेरे उत्ते लग्गे कोई ना दंम, दमड़यां लोड़ रहे ना राईआ। मैं सेवा विच पूरा करां कम्म, निकम्मी हो ना झट लँघाईआ। राज राजानां घरों दे के डंन, तख्तां उत्तों लाहीआ। अगम्मी आवाज़ सुणा के कन्न, चोटीआं देवां मुनाईआ। छड्डण दौलत धन, वैरागी रूप बदलाईआ। अंदरों फेर के मन, मनसा दयां भवाईआ। अग्नी ला के तन, तत तन्दूर तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे देवे माण वड्याईआ। झुग्गी कहे राज राजानां छुडा घर बाहर, फ़कीर दयां बणाईआ। तजाउण महल अटल मनार, सुख आसण डेरा ढाहीआ। आवण विच उजाड़, जंगल डेरे लाईआ। मैं ओनां करां प्यार, छप्पर हो के सीस सुहाईआ। मेल देवां निरँकार, जो मेरे अंदर वड़ के ध्यान लगाईआ। रसां तों कर के बाहर, रसीए नाल जुड़ाईआ। कक्खां दा महल्ल उसार, लखां दे मालक आपणे विच छुपाईआ। दस्सां सच विहार, निरमाणता नाल वड्याईआ। इक्को लभ्भे परवरदिगार, सांझा यार नूर खुदाईआ। जिस दे मिलयां उतरो पार, जगत शौह ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दिता आदि जुगादी इक्को वर, वारता आपणी रही सुणाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड बिलगा ज़िला जलन्धर ★

झुग्गी कहे जो जगत त्यागी बण के आउँदे जूह, प्रभासां विच डेरा लाईआ। ओनां नूं सच्ची देवां सूह, सहिज नाल समझाईआ। जे पवित्र करना रूह, पापां पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल इक्को मन्नो सच्चा सतिगुरू, गुरदेव स्वामी बेपरवाहीआ। जिस दी धार आपणी धार विच्चों हुन्दी शुरु, शरअ समझे कोए ना राईआ। जिस ने तारे प्रहलाद ध्रू, धरोह भगतां नाल ना कदे कमाईआ। ओहदे दवारे गया कोई ना मुड़ू, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। मंत्र इक्को धुर दा फुरू, फ़ुरना अवर रहिण ना पाईआ। चुरासी विच जम्म फेर ना मरू, मर जीवत रूप वटाईआ। पुरख अकाल दे चरण फड़ू, धूढ़ी टिक्का मस्तक छुहाईआ। साची मंज़ल अगम्मी चढ़ू, जित्थे अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कन्त कन्तूहल इक्को वरू, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचा हरी दवारे सदा तरू, तारनहारा पार कराईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह रुढ़का कलां ★

झुग्गी कहे जो शाह सुल्तान मेरे अंदर आ के वसदे, वसल करावां धुरदरगाहीआ। नज़ाकत विच हस्सदे, फ़राख़त विच वड्याईआ। ल्याकत विच नस्सदे, भज्जण वाहो दाहीआ। लहिणे देणे लैण जगत हक दे, ख़ाली झोली दयां भराईआ। तू ही तू ही राग जपदे, मन दा मणका बिन माला लैण भवाईआ। लेखे मुक्कण कोट पप्प दे, पतित पुनीत दयां कराईआ। सन्त सुहेले कदे ना अक्कदे, थकावट रूप ना कोए वखाईआ। मार्ग दस्सां सच दे, कूड़ कुड़यारे पन्ध मुकाईआ। ढोले सुणावां अगम्मी जस्स दे, वेद पुराणां तों परे करां पढ़ाईआ। इशारे देवां अगम्मी अक्ख दे, निज नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। प्यार बख़्शां पुरख समरथ दे, पुरख अकाल दयां मिलाईआ। सच घराने वेखां वसदे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वखाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह
रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

२५८
२०

झुग्गी कहे जिस मेरे अंदर लाया डेरा, डेरा कूड़ा गए ढाहीआ। वस्या काया खेड़ा, खिड़की बन्द खुल्हाईआ। चुक्कया अन्ध अन्धेरा, प्रकाश जोत रुशनाईआ। सुझया तेरा मेरा, मेरा तेरा भेव खुल्हाईआ। डुब्बयां बन्न्हया बेड़ा, नौका नाम चढ़ाईआ। खुल्हा कीता वेहड़ा, काया कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। सतिगुर चरण वखाया नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कुल्ली कहे जो मेरे अंदर वड़दा, आपणा माण मिटाईआ। मंज़ल हकीकी चढ़दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। दरस अगम्मी करदा, नूरी जोत जोत रुशनाईआ। सरन चरण कँवल परदा, माण मोह तजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला पढ़दा, सो पुरख निरँजण रिहा समझाईआ। जगत जहान दुतर पार करदा, दुतीआ भाओ ना कोए वखाईआ। इक्को रूप वेखे हरि दा, हरी हर हिरदे अंदर नज़री आईआ। अगला मार्ग मिले धुर दे घर दा, गृह मन्दिर परदा दए उठाईआ। जित्थे दीपक जोत अगम्मी बलदा, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। झुग्गी कहे मेरा मित्र ओस दवारे फबदा, बहि के सोहणा आसण लाईआ। जित्थे जगत विकार नहीं कोई दब्बदा, भय देवे ना कोए लोकाईआ। प्याला नज़र ना आवे कोई मदि दा, अमृत अमर रस प्याईआ। अन्त कन्त भगवन्त सन्त बेअन्त पुरख अकाल दीन दयाल आपणे घर सद्द दा, सदके वारी हउँ घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

२५८
२०

धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पड़दे वाला लोक विहार जग दा, भगत सुहेले कोटां विच्चों लभ्भदा, सबब आपणा नाम रखाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ बीबी नछत्र कौर दे गृह गोराया ज़िला जलन्धर ★

झुग्गी कहे गुरमुखो तुहाडी झुग्गी काया माटी चम्म, हड्ड मास नाड़ी मिल के दिती सुहाईआ। तुहाडे अन्तर पवण स्वासी दम, अठ्ठे पहर साह चलाईआ। भज्जण नठ्ठण वाला मन, बुध सोचण वाली नज़री आईआ। सुणन वास्ते सरवण कन्न, अक्खां नेत्र जगत तकाईआ। सुंघण वास्ते नासका बेड़ा दिता बन्नृ, खाण पीण दा तरीका मुख दिता वखाईआ। तुसीं बणो साचे जन, भगत आपणा नाउँ धराईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा दयो भन्न, जूठ झूठ पन्ध मुकाईआ। नाम भण्डारा तुहाडे अंदर धन, अनमुल्ला नज़री आईआ। जोती नूर दिसे चन्न, दिवस रैण करे रुशनाईआ। इक्को पुरख अकाल लओ मन्न, माणस हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर आउणा पए ना किसे तन, नाता तत्तां वाला तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंक दवारा दए सुहाईआ। झुग्गी कहे जन भगतो तुहाडी काया माटी झुग्गी सोहणी साफ़, नहाती धोती नज़री आईआ। अंदरों वासना करो साफ़, सफ़ा कूड़ दयो मिटाईआ। माया ममता करो साफ़, लोभ मोह विकार तजाईआ। मन हंगता करो साफ़, निवण सु अक्खर झोली पाईआ। इक्को करो इके दा जाप, एको नाम ध्याईआ। इक्को मेटणहारा पाप, पतित पुनीत वखाईआ। इक्को निवारे रोग संताप, दुखड़े दर्द गवाईआ। इक्को करे पाक, रूह बुत्त पवित वखाईआ। इक्को खोल्हे ताक, परदा दए उठाईआ। इक्को बणे साक, सज्जण शहिनशाहीआ। इक्क दे बणो दास, दासी हो के सेव कमाईआ। इक्को मन्नो पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता सब दा पिता माईआ। इक्को वेखो रास, सुरती शब्दी गोपी काहन खेल खिलाईआ। इक्को नूर तक्को प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। इक्को मन्दिर करो वास, सचखण्ड साचा दरगाह साची रिहा सुहाईआ। श्री भगवान दे रहो साथ, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। ओसे विच मिलाओ आपणी ज़ात, जिस विच्चों होई जुदाईआ। उह मालक ख़ालक प्रितपालक आदि जुगादी आप, दूजा नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी सब दा लहिणा देणा देवे साख्यात, तरीका ढंग वक्खरा वक्खरा आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश सिँघ दे गृह चीमे कलां ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे प्रभ बख्श अगम्मी सति, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह उपजा ब्रह्म मत, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सति धर्म जुड़ा साचा नत, नाता कूड़ कुड़यार रहिण ना पाईआ। निरवैर हो के निराकार हो के निरँकार हो के खेल कर पुरख समरथ, महिंमां अकथ आप जणाईआ। तेरी आत्म परमात्म तैथों होई वक्ख, जुग जन्म दे विछड़े लै मिलाईआ। सच दवारा एकँकारा खोल्ह आपणा हट्ट, शब्द भण्डारा धुर दरबारे दे वरताईआ। निरगुण हो के चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट आपणी धार नठ, दिवस रैण अठ्ठे पहर धुर दी सेव कमाईआ। दुरमति मैल जो अठ्ठ सठ्ठ रही फैल शब्द सतिगुर हो के कट, काया कुटीआ अंदर घर घर कर सफ़ाईआ। तन वजूद हक महबूब वखा साचा तट, सर सरोवर इक्को इक्क प्रगटाईआ। मन विकार हउमे हँकार गढ़ कूड़ कुड़यार जाए ढठ्ठ, लोभ मोह हँकार रहिण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण रख, गोबिन्द हो के आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुहेले इक्क इकेले सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी ओट इक्क तकाईआ। तेरी ओट रखी अकाल, अकल कलधारी वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई बेहाल, बेवा रूप होवे खुदाईआ। साचा मिले ना किसे जलाल, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा लेखे लग्गे किसे ना घाल, कीती घाल थाएं कोए ना पाईआ। दुनिया अंदर दुनीदार होए कंगाल, नाम वणजारा साचा वणज ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुखियां दर्द वेख आण, छुरी करद शरअ बणी कसाईआ। शरअ कहे मेरा कलयुग अन्त फ़तूर, फ़तवा सब उत्ते दिता लाईआ। घर घर बणा के गढ़ ग़रूर, हँकार दिता प्रगटाईआ। नाता जोड़ के कुड़यार कूड़, कुटम्ब मूढ़ दिता वखाईआ। किसे दे अन्तर निरंतर उपजे ना नाम तूर, तुरीआ दी मंज़ल हक ना कोए वखाईआ। समरथ पुरख तों सारे होए दूर, करवट सके ना कोए बदलाईआ। साहिब सतिगुर देवे ना किसे धूढ़, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। निरगुण धार आत्म जोती वेखे कोए ना नूर, वरन गोती झगड़ा प्या लोकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण निरवैर निराकार किरपा कर हाज़र हज़ूर, हज़रत स्वामी हो के अन्तरजामी आपणा परदा दे उठाईआ। अन्तरजामी पुरख बिधाते, तेरी इक्क सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ नाते, सच सुच्च मेल मिलाईआ। चौथे जुग दे वेख अन्तिम खाते, सदी बीसवीं खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लिख के गए गाथे, कलम शाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। प्रगट हो पुरख समराथे, परदा ओहला दे चुकाईआ। तेरा शब्द कोई ना वाचे, वाचक ज्ञान

रिहा कुरलाईआ। मानस जन्म होवे ना किसे रासे, रस्ते चल के तेरा दरस कोए ना पाईआ। मेहरवान हो पुरख अबिनाशे, अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम मेट वाटे, वट्टा लग्गा नाम खुदाईआ। सति धर्म चला साचा राथे, धुर दा हुक्म आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेल मिला आपणे सन्त गुरमुखां पूरे कर घाटे, किसे दी मंज़ल रहे ना अधवाटे, चरण कँवल उपर धवल साहिब सतिगुर पुरख अगम्म एकँकार इक्को बख्श हक सरनाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ सन्तोख सिँघ दे गृह पिण्ड सोढ्ढीआं ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे गोबिन्द दे के गया संदेसा, सदीआं दा पहले भेव चुकाईआ। कलयुग अन्त खेले खेल नर नरेशा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म चले आदि जुगादि जुग चौकड़ी हमेशा, गुर अवतार पैगम्बर सके ना कोए उलटाईआ। सीस झुकाउँदे ब्रह्मा विष्न शिव गणपति गणेशा, देवत सुर ध्यान लगाईआ। पैगम्बर सजदयां विच करन आदेसा, ख़ाक कदमां धूढ़ रमाईआ। सो जुग चौकड़ी नित नवित बदले आपणा भेसा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। लख चुरासी जीव जंत नबेड़नहारा लेखा, ब्रह्मण्ड खण्ड लहिणा देणा दए चुकाईआ। दो जहानां बण के आवे नेता, नर निरँकार सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं सारे करन आदेसा, डण्डावत नमस्ते विच सीस झुकाईआ। सो वेख वखाणे लोकमात परदेसा, परदयां तों परे आपणी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। निरगुण निरवैर आपे (आप), प्रभ कल कल्की नाउँ धराईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी शब्दी शाख़, जोत धार रुशनाईआ। नित नवित दस्से अगम्मा पाठ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान बाणी जिस दी महिमा वाली गाउँदी गाथ, ढोले सिफ्तां वाले सुणाईआ। सो खेल खिलाए पुरख समरथ, स्वामी अन्तरजामी परदा आपणा दए उठाईआ। करना कराउणा जिस दे सब कुछ हथ्थ, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। निरगुण धार होवे प्रगट, जोती जाता वड्ड वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन खोल्ले इक्को हट्ट, नाम निधान श्री भगवान दए वरताईआ। जन भगतां निज नेत्र खोल्ले अगम्मी अक्ख, लोचन धुर दे करे रुशनाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। दीन दुनी नालों कर के वक्ख, वक्खरा धाम इक्क वखाईआ। जिस गृह दीपक जोत जगे लट लट, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। शब्द सुणा अगम्मी अनहद, नादी नाद दए जणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती

जाता अन्त होवे प्रगट, कन्त सुहागी वेस वटाईआ। कन्त सुहागी आवे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जन भगतां बख्शे टेक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया करे खेत, सच सुच्च इक्क समझाईआ। दरस वखावे नेतन नेत, निज नैण अक्ख खुलाईआ। लख चुरासी विच्चों लए वेख, वेखणहारा परदा लाहीआ। जन्म जन्म दी बदल देवे रेख, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। जिस दी याद कर के गया गोबिन्द दस दस्मेश, शब्द तरानयां विच गाईआ। सो धार अवल्लड़ा वेस, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सम्बल वसे अगम्मे देस, जिस नगरी दी वण्ड ना कोए कराईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, जोती जाता बेपरवाहीआ। जन भगतां करे सदा हेत, हितकारी धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले रखे धुर दी साया हेठ, कलयुग अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला जलन्धर ★

अग्नी अग्ग ना सके पोह, साहिब सतिगुर दए वड्याईआ। जो पुरख अकाल दा गया हो, हरि हिरदे विच समाईआ। करे प्रकाश साची लो, लोआं पुरीआं तों बाहर डेरा दए वखाईआ। धार रहिण ना देवे दो, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। शब्द सुणावे अगम्मी सो, हँ ब्रह्म देवे दृढ़ाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, मालक मिले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सिर रखे हथ्थ निरँकार, कलयुग अन्तिम दया कमाइंदा। निरगुण नूर जोत उज्यार, उजले गुरमुख वेख वखाइंदा। सच प्रीती दे आधार, पूरब लेखा झोली पाइंदा। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ बाहर, जम की फाँसी आप तुड़ाइंदा। मण्डल रासी कर के पार, सचखण्ड निवासी सच दवारा इक्क सुहाइंदा। जोत प्रकाशी एकँकार, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। साची मंज़ल घाटी भगतां करे पार, अधवाटी पन्ध ना कोए जणाइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी राती मेटे विच संसार, निरगुण नूर चन्द चमकाइंदा। जागत सोवत देवे दरस दीदार, मेहरवान मेहर निगाह नाल पार कराइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण, जन भगत कराए धूढ़ी मज्जन, दुरमति मैल धोवे अंदर बाहर बदन, बदला जन्म जन्म दा दए चुकाईआ। ग़रीब निमाणे आए रखण, दीन दुनी विच्चों करे वक्खण, नाम भण्डारे भरे सक्खण, नाम अगम्मा आए दस्सण, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ जाप हरिजन जपण, जगजीवण दाता पुरख बिधाता जागरत जोत बिन वरन गोत काया कोट साचे मन्दिर अंदर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा जाणे लोक परलोक, गुरमुखां मिटा के हरख़ सोग, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर रखाईआ।

★ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड दुसांझ खुरद ★

झुग्गी कहे प्रभ जन भगतां वल झाकीं, अनडिठ आपणा परदा आप उठाईआ। परमात्म हो के आत्म खोल्हीं बन्द किवाड़ी ताकी, परदा ओहला काया चोला रहिण कोए ना पाईआ। भाग लगाउणा काया माटी ख़ाकी, ख़ालक प्रितपालक हो के आपणी दया कमाईआ। नाम भण्डारा अमृत देणा बण के धुर दा साकी, सज्जण सुहेला इक्क इकेला नज़री आईआ। किरपा कर मेहरवान महबूब पुरख अबिनाशी, परवरदिगार सांझे यार तेरी आस रखाईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाशी, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। शब्द अगम्मी नाद सुणा अनहद नादी, धुन आत्मक राग सुणाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कर बरबादी, जगत विकार हँकार रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ जाण त्यागी, सति सच दे उपजाईआ। बिन तेरी किरपा सोई सुरत किसे ना जागी, जोती शब्दी गंढ ना कोए पवाईआ। रूह बुत्त दोवें कर पाकन पाकी, दुरमति मैल अंदरों बाहरों दे धवाईआ। तेरी खेल दो जहान किसे ना जाती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। झुग्गी कहे प्रभ जन भगतां दे अगम्मी दरस, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। अगली पिछली मिटे हरस, तृष्ना कूड़ी दे बुझाईआ। मिले वड्याई उत्ते फर्श, अर्शी प्रीतम हो सहाईआ। मन्ज़ूर कर बेनन्ती अरज़, ख़ाहिश दलील दिती दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी कर तरस, रहमत आपणी आप कमाईआ। दीनां अनाथां वण्ड दर्द, दुखियां दुःख गवाईआ। शरअ छुरी ना कोहे करद, कत्लगाह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा वेख वखाईआ। झुग्गी कहे जन भगतां खोल्ह दे अंदरला राज़, रहमत आप कमाईआ। पढ़नी ना पए कोए निमाज़, रोज़्जया विच झट ना कोए लँघाईआ। बदल दे समाज, समग्री सच दे वरताईआ। सोए जावण जाग, आलस निंद्रा डेरा ढाहीआ। उपजे इक्क वैराग, वैरी अंदरों दे कढाहीआ। हँस बुद्धी ना रहे काग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। लोकमात कर वड वडभाग, भाग हिस्सा आपणा दे वरताईआ। जो चरण सरन सरनगति सरनाई गया लाग, जगत तृष्ना आग दे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दवारे इक्को मंग मंगाईआ। झुग्गी कहे जन भगतां अंदर दे दे आपणे नाम दी तूर, तुरीआ तों परे तुरत आपणा दरस दिखाईआ। इक्को जलवा तक्कण

तेरा नूर, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। आसा तृष्ना मेट कूड़, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, पुरख अकाल दीन दयाल आपणे धन्दे लाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी किरपा कर ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। तेरा हुक्म सदा मन्ज़ूर, सिर सके ना कोए उठाईआ। काया माटी अग्नी तत ना तपे तन्दूर, त्रैगुण लेखा देणा मुकाईआ। मनुआ पाए ना कोए फ़तूर, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। गढ़ रहे ना कूड़ ग़रूर, हंगता देणी मिटाईआ। जिधर वेखण ओधर हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। झुग्गी कहे साहिब स्वामी धुर दे गुरदेव, गुरदेव आत्मा तेरा ध्यान लगाईआ। नाम भण्डारा दे आपणा मेव, अनरसीए रस दे चखाईआ। तेरा लेखा लख ना सके कोई जिहव, सिफ्तां विच ना कोए वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक सद निहचल धाम वसें निहकेव, सिँघासण आसण पुरख अबिनाशण सोभा पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खोल्ह आपणा भेव, परदा अन्तर निरंतर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ले देणा प्रगटाईआ। इक्क इकल्ला खोल्ह दरवाज़ा, झुग्गी ताक बन्द ना कोए कराईआ। तेरा नाम ग़रीब निवाजा, रखक हो के हो सहाईआ। शाहो भूप बण राजन राजा, रईयत गुरमुख वेख वखाईआ। बिन तेरी किरपा किरपा निधान कोए ना जागा, आलस निंद्रा विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। कर किरपा कृपाल हो के जन भगतां दुरमति मैल धो दाग़ा, दग़यां तों लैणा बचाईआ। तेरे नाम दा रस मानण सच स्वादा, सदा दा अमृत देणा मुख चुआईआ। जो चरण सरन हरि सरनाई लागा, लग्न इक्को इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सक्या ना कोए उलटाईआ।

★ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ रजिंदर सिँघ प्यारे लाल दे गृह पिण्ड दुसांझ खुरद ★

भगत झुग्गी कहे मेरी बदल दे रेखा, ऋषीआं मुनीआं दा नाता देवां तजाईआ। तेरा मीत मुरारा इक्को वेखां, जिस अंदर तेरा नूर नज़री आईआ। रहे ना कोई भुलेखा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। तूं मालक नर नरेशा, नर नरायण तेरी सरनाईआ।

कुछ लहिणा देणा चुका दस दस्मेशा, गोबिन्द मंग मंगाईआ। सच प्यार दी कबूल कर भेंटा, भिट्टड़ हो ना मुख भवाईआ। मैं तेरा अगम्मी नूर निराला देखां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। नाता तुट जाए मुल्लां शेखां, दस्तगीर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला दे मिलाईआ। भगतां नाल जोड़ नाता, नातवां हो के दयां दुहाईआ। दीन दुनी वट्टे (पासा), संगी जाण तजाईआ। तेरा खेल वेखां पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करते परदा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शब्द अगम्मी करन बातां, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी राता, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। अन्त अख़ीरी पूरीआं कर आसा, आहिस्ता आहिस्ता वेला गया आईआ। दीन दयाल तेरे उत्ते भरवासा, पुरख अकाल दे वड्याईआ। तेरा गृह मन्दिर वेखां साचा, जिस घर वज्जे इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला देणा मिलाईआ। साचा मेल मिलाउणा आप, आपणी दया कमाईआ। कोट जन्म दे मेट के पाप, दुरमति मैल धवाईआ। दरस दिखाउणा साख्यात परदा ओहला ना कोए रखाईआ। अमृत बूँद प्याउणा सवांत, रस रसीए देणा चखाईआ। नाम निधान वजाउणा नाद, अनरागी राग अलाहीआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, कूड़ अन्धेरा देणा मिटाईआ। बेनन्ती तेरे चरण कँवल पास, धवल उपर मंग मंगाईआ। लभ्भया हथ्थ ना आवें किसे प्रभास, टिल्ले पर्बत देण दुहाईआ। जुग चौकड़ी जगत दी पैंदी वेखी रास, गोपी काहन नाच दएं नचाईआ। सीता राम कटदे वेखे बनबास, बाल्मीक सिफ्तां करदा रिहा कलम नाल शाहीआ। बिन तेरी किरपा पूरी होई ना आस, सांतक सति ना कोए कराईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर दर ठांडे दरगाह साची मेरी इक्क अरदास, अरज़ बेनन्ती दिती सुणाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच दया करनी आप, जगत सुनेहड़े दी लोड़ ना कोए रखाईआ। तेरा नाउँ पुरख अबिनाश, घट घट रखें वास, वेखणहारा स्वास स्वास, साह साह आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला लैणा मिलाईआ। मेल विच दरस मुहब्बत प्यार, प्यारे प्रीतम आपणा रंग रंगाईआ। तेरी सुणां अगम्म गुफ़तार, गुफ़त शनीद देणा जणाईआ। परदा ओहला दे उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण होए रुशनाईआ। जुगां दे विछड़े यार, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मैनूं तेरे उत्ते इक्क एतबार, बेएतबारा बण के तूं आपे फेरा पाईआ। दुक्खां विच तेरा इज़हार, सुक्खां विच तेरी पुकार, मनुक्खां विच दयां सुणाईआ। किरपा कर परवरदिगार, लोकमात दे अधार, अदने आहला वेख वखाईआ। भगत सुहेले सन्त सज्जण गुरमुख गुरसिख सूफ़ी कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। तेरी मंज़ल वेखण उच्च मनार, जित्थे निरगुण नूर जोत उज्यार, दीवा बाती कमलापाती तेरा आपणा आप सोभा पाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुश्वार, सतह अन्तर कर

हमवार, बिन अक्खां दे दीदार, सनमुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। झुग्गी कहे भाग लगा जन भगत काया गढ़, गढ़ी चमकौर याद कराईआ। जेहड़ी मंग मंगी गोबिन्द दक्खण दिशा खड़, बिन आवाज दिती सुणाईआ। उह पाती पत्रका बिन अक्खरां वाली पढ़, जिस दा हरफ़ हरूफ़ ना कोए जणाईआ। मेहरवान हो के किरपा कर, कृपाल तेरी इक्क सरनाईआ। भगत सुहेले मेल आपणे दर, दरगाह साची दे वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जाए झड़, हंगता गढ़ दे तुड़ाईआ। नाम चिल्ला शब्दी तीर कमान अगम्मा फड़, जिस नूं वेखे कोए ना जगत लोकाईआ। आर पार आपे कर, बजर कपाटी दे चिराईआ। तेरा निशाना नरायण नर, दो जहान ना कोए खपाईआ। पड़दे विच्चों वखा आपणा घर, घराने कूड़े दे छुडाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आवे डर, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। गढ़ी कहे मैं की दस्सां हालत चमकौर, चम्म दृष्टी समझ किसे ना आईआ। गोबिन्द तक्कया नाल ग़ौर, पुरख अकाल अक्ख मिलाईआ। तेरा खेल अगम्मा होर, अवर का और दिता वखाईआ। तेरे हथ्थ इन्नां दी डोर, जिन्नां भेंटा रिहा चढ़ाईआ। लग्गी प्रीती निभाउणी तोड़, टुट्टी गंढु पवाईआ। पुरख अकाल तेरी लोड़, लोड़ींदे सज्जण आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। गढ़ी चमकौर कहे मैं की दस्सां हाल, हालत विचली दयां जणाईआ। अग्गों संदेसा दिता पुरख अकाल, अकल कलधारी दिता जणाईआ। गोबिन्द मेरे लाल, तेरे लाल आपणी गोद उठाईआ। इन्नां नाल खेल करां कमाल, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जिस वेले बण के आवां दीन दयाल, जोती जाता वेस वटाईआ। तेरी शब्दी धार रखां नाल, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सच बणा सच्ची धर्मसाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। दे के नाम सुखाल, तूं मेरा मैं तेरा परदा ओहला अंदरों दयां चुकाईआ। जोती जलवा दे जलाल, नूरो नूर करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गढ़ी कहे गोबिन्द दस्सया फेर, शब्द अगम्मी अगम्म सुणाईआ। किस बिध करें आपणी मेहर, महबूब देणा जणाईआ। कितनी लावें देर, वेला वक्त कवण अख्वाईआ। किस बिध गेड़ें गेड़, चक्र फिरे लोकाईआ। लहिणा देणा दएं नबेड़, धुर दा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द हुण तैनूं जाणा पए नंदेड़, नाता पिछला देणा चुकाईआ। कलयुग अन्तिम फेर ल्यावां घेर, शब्दी जोत गंढु पवाईआ। गृह मन्दिर घर रखां नेड़, दूजा धाम ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। गढ़ी कहे गोबिन्द खुशी नाल प्या हस्स, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। मैं सब कुछ कर

के तेरे वस्स, आपणा पल्लू ल्या छुडाईआ। अग्गे नंदेड़ जावां नस्स, पिछला पन्ध चुकाईआ। ओथे ख़ाक कर के आपणी भस्स, भस्म कसम नाल बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के जस, तेरे विच समाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, की तेरी बेपवाहीआ। कुझ अगला भेव दस्स, थोड़ा समां बहुती मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा सुण गोबिन्द, शब्दी सुत दयां जणाईआ। फिर मात पिता दी होवें कदे ना बिन्द, तत वजूद ना कोए वखाईआ। तेरा मालक इक्क मरगिंद, महबूब नूर खुदाईआ। जेहड़ा मालक नहीं इक्क हिन्द, ब्रह्मण्डां खण्डां दा दाता नज़री आईआ। तेरी मेटे चिन्द, सगला सुख वखाईआ। भाग लगा के जीउ पिण्ड, सम्बल नगरी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल किहा सुण अगम्मी राज़, बिन अक्खरां दयां सुणाईआ। तेरे नाल मिल के बदल देवां समाज, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सतिजुग सच रिवाज, रईयत आपणे नाम रंग रंगाईआ। किसे सीस रहिण ना देवां ताज, राज राजान देण दुहाईआ। दीन मज़्हब करां लाजवाब, शरअ सिर ना कोए उठाईआ। जगत मिले ना किसे हयाते आब, आबरू सब दी ख़ाक मिलाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हो के खोल्हां इक्को ताक, दो जहान श्री भगवान परदा दयां उठाईआ। अज्ज दा पूरा करां वाक्, कोई रहिण ना देवां गुस्ताख़, बिनां भगतां होए ना कोए मुआफ़, सज़ा सब नूं दयां भुगताईआ। जो कुछ कहिणा सो हुण आख, गोबिन्द किहा मैं तेरे चरण कँवल दास, तूं मालक ख़ालक प्रितपालक आप, पारब्रह्म तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी भगत सुहेला इक्क इकेला एकँकार हरि निरँकार करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणा खेल खिलाईआ। गढ्ढी कहे मैं कीती आप निमस्कार, निउँ के सीस झुकाईआ। वाहवा तेरा होया दीदार, दीद होई रुशनाईआ। रो के किहा पुकार, उच्ची कूक सुणाईआ। कुछ भेव दस्स सांझे यार, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जेहड़े झूजे नाल तलवार, फट्ट घाउ खा के खुशी मनाईआ। किस बिध इन्हां नाल करें प्यार, मुहब्बत कवण जणाईआ। गोबिन्द किहा ज़रा कर ख्याल, तैनूं दयां समझाईआ। सदा बण दलाल, विचोला हो के सेव कमाईआ। मेलां नाल पुरख अकाल, अकलां तों परे जिस दी पढ़ाईआ। सचखण्ड बहावां सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को दयां वखाईआ। जिस वेले पतिपरमेश्वर बदले आपणी चाल, निरगुण हो के वेस वटाईआ। ओस वेले इन्हां ल्यावां नाल, मानुख जन्म दवाईआ। अन्तर दे के शब्द ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। चरण प्रीती सच ध्यान, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। नाउँ रखा के भगत मेलां विच जगत श्री भगवान, भाग अगला दयां सुणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लहिणा देणा मुकावे आण, पूरब लेखा सब दा लेखे पाईआ।

★ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड डाडीआं ज़िला हुशियारपुर ★

गड़ी चमकौर किहा मैं अन्त सुणया संदेश, जो पुरख अकाल गोबिन्द दिता सुणाईआ। जिस दा लिख्या किसे ना लेख, कातब कलम ना कोए उठाईआ। भेव पा ना सके ब्रह्मा विष्न महेष, शंकर सार कोए ना आईआ। सुण सके ना देस प्रदेश, ब्रह्मण्ड खण्ड समझ किसे ना आईआ। अबिनाशी करते दयावान हो के किहा मैं खेल करां सदा हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हो नरेश, दरगाह साची सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां देवां भेज, हुक्में अंदर हुक्म मनाईआ। जोती जलवा दे के तेज, काया माटी करां रुशनाईआ। निरगुण हो के लवां वेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तेरी सेवा दस दस्मेश, दो जहानां पूर कराईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम जोती जाता धर के आवां भेस, कल कल्की नाउँ धराईआ। सम्बल वसां अगम्मे देस, जिस दी बणत समझ किसे ना आईआ। शब्दी जोती धार खेलां खेड, निरवैर निराकार निरँकार हो के आपणी कार कमाईआ। लभ्भ सकण ना चारे वेद, शास्त्र सिमरत ना कोए समझाईआ। अञ्जील कुरान ना पावे भेद, चारे बाणी परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। धुर संदेसा दे निरँकार, निरगुण धार दिता जणाईआ। जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता हो के खेल खिलाईआ। मैं वेख्या तूं वारे सुत चार, चार यारी झूठे जुग दी जड़्ह पुटाईआ। अन्तिम लहिणा देणा देवां निवार, कीती घाल लेखे लाईआ। प्रगट हो विच संसार, संसा अगला पिछला दयां मिटाईआ। तेरा शब्दी कर जैकार, जोती जलवा करां रुशनाईआ। महल अटल उच्च मनार, सच दुआर दयां सुहाईआ। धुर संदेसा दे के एका वार, अगम्म अथाह करां पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम कर खुआर, कूड़ी क्रिया देवां ढाहीआ। सतिजुग साचा कर प्यार, सति सतिवादी हुक्म सुणाईआ। धरनी धरत धवल उपर कर प्यार, मेहरवान हो के दयां रखाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्क सुणा के नाम जैकार, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म करां पढ़ाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, औखी घाटी पार कराईआ। सदी चौधवीं मेट अंध्यार, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जो कर के गए गुफ़तार, गुफ़त शनीद दयां जणाईआ। साचा मार्ग अगम्म अपार, अपरम्पर हो के दयां दृढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दस्स के

इक्क मनार, धुर दा मन्दिर दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द किहा मेरी वेख अगम्मी गढ़ी, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। जिन्हां तेरे प्रेम दी पट्टी पढ़ी, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। सीस कदमां उत्ते वेखे धरी, धरती नालों करन जुदाईआ। तूं सचखण्ड दवारे इन्हां खड़ीं, दरगाह साची सोभा पाईआ। परमात्म हो के इन्हां आत्म वरीं, विचोला हो के दयां जणाईआ। मुहब्बत विच प्रेम दी लाउणी झड़ी, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। मंज़ल हक महबूब खड़ीं, परवरदिगार धुर दरगाहीआ। आवण जावण लख चुरासी विचों करना बरी, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। मेरे कोलों एनी सेवा तेरी सरी, सरहंद शहादत दए गवाहीआ। पुरख अकाल किहा तेरी घाल चार जुग नालों बड़ी, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। मेहरवान हो के मैं भाग लगावां तेरे गुरमुखां घरीं, गृह गृह वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं नहीं किछ लोड़, ख़ाली हथ्थ दिते वखाईआ। मेरी प्रीती निभे तोड़, आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख साचे लैणे जोड़, जोड़े धुर दे देणे वखाईआ। बाहर कढुणे विच्चों मढ़ी गोर, गहर गम्भीर आपणे घर वसाईआ। तूं कुछ होर नहीं मैं कुझ नहीं होर, तूं मेरा मैं तेरा तेरा नूर मेरी जोत रुशनाईआ। मैं तेरे हुक्मे अंदर रिहा दौड़, मातलोक भज्जां वाहो दाहीआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाल दीन दयाल मेरे गुरमुखां जाईं बौहड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरे हथ्थ अगम्मी डोर, शब्दी तार तन्द नाल बंधाईआ।

★ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ संसार सिँघ दे गृह पिण्ड डविड्डा ज़िला हुश्यिारपुर ★

झुग्गी कहे जन भगतां कर संयोग, धुर संयोगी दे वड्याईआ। विछोड़ा जन्म ना रहे रोग, कर्म दा डेरा ढाहीआ। दे दरस इक्क अमोघ, स्वच्छ सरूप नज़री आईआ। जन्म जन्म दा पूरा कर जोग, जुग चौकड़ी तेरी आस रखाईआ। साचे नाम दी बख्श मौज, खुशी काया मन्दिर प्रगटाईआ। आत्म रस रसीए दे भोग, कूड़ी वासना बाहर कढाहीआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती नूर डगमगाईआ। बन्द किवाड़ी खुल्ले सोत, सोई सुरती लै उठाईआ। भाग लगा काया कोट, कंचन गढ़ सुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां तेरी ओट, तेरे हो के तेरी आस रखाईआ। नाता तुट्टा दीन दुनी लोक, सृष्टी ना कोए वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण सच सलोक, नाम निधाना इक्क ध्याईआ। स्वामी अन्तरजामी

हो के कर चोज, काया चोली अंदर भाग लगाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के खोज, गुरमुख आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र तेरी भगवान, भाग सब दा दए बदलाईआ। गुरमुखां उपर हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट जहान, जहालत अंदरों दे कढाहीआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण तेरा नाम गाण, गा गा शुकर मनाईआ। निज नेत्र लोचन दर्शन पाण, वज्जे सच वधाईआ। काया काअबा वखा सच मकान, मन्दिर इक्को नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा देणा वसाईआ। साचा खेड़ा वसे काया बंक, गृह वज्जे नाम वधाईआ। घर स्वामी मिले कन्त, ठाकर आपणा फेरा पाईआ। चोली चाढ़े रंग बसन्त, दुरमति मैल धवाईआ। नाम जणाए बण के पंडत, बोध अगाध समझाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, चरण प्रीती इक्क बंधाईआ। दर ठांडे तेरे मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। झगड़ा तुड़ा नालों निन्दक, गुरमुख सज्जण लै मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ रख स्वामी, हरिजन साची मंग मंगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अन्तरजामी, इक्क तेरी ओट रखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स अगम्मी बाणी, सोहला ढोला विचोला इक्क रखाइंदा। अमृत रस निजर झिरना सांतक सति दे पाणी, कलयुग कूड़ी क्रिया अग्न बुझाइंदा। सुरती शब्दी मेल मिला धुर दा हाणी, चारे खाणी तेरा राह तकाइंदा। साची मंज़ल दस्स आसानी, अग्गे हो ना कोए अटकाइंदा। तूं परम पुरख शाह सुल्तानी, शहिनशाह दर तेरे अलख जगाइंदा। हरिजन साचे दर ठांडे कर परवानी, परम पुरख परमात्म तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। मानस जन्म बिन तेरी किरपा कीमत ना कोए दवानी, माटी ख़ाक जगत रुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साची मंज़ल दे रुहानी, दर ठांडा आपणा आप वखाइंदा।

★ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड रिहाणा कलां ज़िला हुशियारपुर ★

जन भगत कहे मैं तेरा बरदा, बन्दीखाना दे तुड़ाईआ। भेव खुल्हा आपणे घर दा, परदा ओहला दे चुकाईआ। अमृत जाम प्या अगम्मी सर दा, रस रसीए दे चुआईआ। नित नवित तेरी आसा करदा, भरवासा बख़्श सच सरनाईआ। सिर चरण कँवलां धरदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर मर्दा, जीवण तेरी झोली पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरा सति सरूप लभ्भदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर सिर

मेरे हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी इक्को आस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन्म जन्म दी तृष्ना बुझा प्यास, अग्नी अग्ग दे बुझाईआ। आत्म हो के परमात्म हो के निरगुण निरगुण दे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। जग जीवण दाते पुरख बिधाते साची मंज़ल दस्स आपणा घाट, तट किनार एकँकार इक्को देणा वखाईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर खड़े जोड़ के हाथ, सच दवारे ख़ाली झोली आपणी डाहीआ। उह मण्डल तेरा निरँकार वेखणा ख़ास, जित्थे ख़ालस गुरमुख सोभा पाईआ। ना कोई गोपीआं वाली रास, ना कोई काहन नाच नचाईआ। ना कोई सीता राम वाला बनबास, जंगल जूह उजाड़ ना कोए भवाईआ। ना कोई संसारी विद्या वाली तलाश, अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई पर्बत दिसे कैलाश, सिँघासण रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को तेरा मंगा नूर जोत प्रकाश, जिस विच मिल के आपणा आप छुपाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार पुरख अकाल दीन दयाल घर ठांडा देणा आप, दूजे दर दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा जन भगत कहे मन चाउ घनेरा मैं सोहँ जपया जाप, कोट जन्म दे उतरे पाप, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आया इक्को बाप, पिता पूत गोद लैणा उठाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा राख, तेरा दरस करां साख्यात, सति सतिवादी आपणा परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचा दर ठांडे मंग मंगाईआ। हरि भगत कहे मेरी अरदास, प्रभ बेनन्ती इक्क जणाईआ। सद सेवक रखणा दास, गढ़ हँकार देणा तुड़ाईआ। दिवस रैण वसणा पास, जागत सोवत होणा सहाईआ। शब्द अगम्मी दस्सणी बात, नाम निधाना इक्क दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द नूर कर रुशनाईआ। समरथ स्वामी साहिब सतिगुर मैं तेरे नाम दी गा के गाथ, चढ़या ओस राथ, जिस दा रथवाही बेपरवाहीआ। कलयुग डूँग्घा वहिण सृष्टी किसे ना आवें हाथ, भाग वेखे ना कोए माथ, नाथ त्रैलोकी बैठे मुख छुपाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कर किरपा आप, दुरमति मैल काट कीमत पा आपणे हाट, जगत वणजारे लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब कुछ तेरे हाथ, हर हिरदे वस के धाम अगम्मा दस्स के, घर ठांडा देणा वखाईआ।

★ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह पुराणी डरोली ★

ब्यास कहे मेरे सुल्तान, सो पुरख निरँजण तेरी बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, मिहबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। एकँकारे दे दान, दाते दानी तेरी आस रखाईआ। आदि निरँजण हो प्रधान, जोती जाते जलवा नूर कर

रुशनाईआ। अबिनाशी करते धुर दे काहन, लख चुरासी गोपी लै प्रनाईआ। श्री भगवान सच झुला इक्क निशान, दो जहानां आपणा आप प्रगटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेल आण, निरवैर निराकार आपणी कार कमाईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, परदा ओहला आप उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा दे के गए ब्यान, लेख अलेखे नाल दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गा गा थक्के गाण, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। तूं बेअन्त बेपरवाह किरपा कर वाली दो जहान, जहालत कूड़ी क्रिया दे कढाहीआ। वरन बरन दीन दुनी होई हैरान, हर हिरदे नज़र किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया शरअ फिरे शैतान, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान हो मेहरवान, दर ठांडा इक्क वखाईआ। ब्यास कहे किरपा कर मेरे भगवन्त, भगवन तेरी ओट रखाईआ। कलयुग भुल्ले जीव जंत साध सन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा भेव कोए ना आईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव अभेदा सके ना कोए दृढ़ाईआ। बोध अगाधा दिसे कोए ना पंडत, चारे खाणी चारे बाणी नेत्र रोवे मारे धाहींआ। गुर अवतार पैगम्बर भिख्या मंग के गए अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। तुध बिन सदी चौधवीं बणाए कोई ना बणत, सच स्वामी अन्तरजामी साचा राह ना कोए जणाईआ। सच दुआर एकँकार मिले कोई ना संगत, दूई द्वैती शरअ शरायती डेरा कोए ना ढाहीआ। दर दरवेश तेरे दर करन मिन्नत, मेहरवान महबूब मेहर नज़र लैणी उठाईआ। जुग चौकड़ी मेटणी चिन्नत, जगत ग़म ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्यास कहे मेरे पतिपरमेश्वर मीत, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रीत, सतिजुग साचा दे प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना शिवदवाला मठ्ठ मन्दिर मसीत, गुरूदवारा इक्को दे दृढ़ाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, राउ रंक वण्ड विच वरभण्ड ब्रह्मण्ड दे दृढ़ाईआ। काया माटी मानव जाती सब दी कर ठांडी सीत, अग्नी तत दे बुझाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दस्स आपणा गीत, अगम्म अथाह बेपरवाह साचा मंत्र दे दृढ़ाईआ। तेरा खेल वेखीए अनडीठ, करवट बदल आपणी पीठ, सनमुख हो के नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहानां सांझा तेरा गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा राग अलाहीआ। इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीस, जगदीस दो जहान तेरी शहिनशाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा निशाना दे के गए ठीक, वाक् भविख्तां विच दृढ़ाईआ। सो आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, निरगुण हो के हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। ब्यास कहे किरपा कर गुण निधान, गुणवन्ते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच झुला इक्क निशान,

निशाने जगत दे गवाईआ। इक्को तेरा नाउँ गावे रसना जेहवा ज़बान, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। लख चुरासी नज़री आ धुर दा काहन, मेहरवान आपणा परदा दे उठाईआ। हर घट वस्या नज़री आ राम, सचखण्ड निवासी आपणा फेरा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा सुणदे रहे पैग़ाम, कलमा नग़म्यां विच सुणाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक जल्वागर वड अमाम, नूर ज़हूर दे चमकाईआ। नानक गोबिन्द जिस नूं करदे गए प्रणाम, मंत्र दृढ़ाउँदे गए सति नाम, वाहिगुरू कहि के वाहवा ताल वजाईआ। सो दीन दुनी दा बदल दे नज़ाम, झगड़ा रहे ना विच अवाम, इक्को गावण तेरा नाम, नाउँ निरँकार इक्क समझाईआ। शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, निरगुण हो के वेख मार ध्यान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड परदा ओहला आप चुकाईआ। जुग बदलणा तेरा हुक्म आसान, ना कोई मेटे विच जहान, गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी आस रखाईआ। ब्यास कहे किरपा कर परवरदिगार, जल्वागर तेरी वड्याईआ। कूक सुण मुहम्मद यार, चार यारी दए दुहाईआ। उम्मत उम्मती हाहाकार, निमाज़ां रोज़यां विच दुहाईआ। मुहब्बत मिले ना किसे दवार, दर दरबार ना कोए वड्याईआ। ख़ाली दिसे भण्डार, हकीकत हक ना कोए वरताईआ। कायनात होई गवार, अकल अकलमंद ना कोए बणाईआ। गुप्त सुणे ना कोए गुफ़तार, बातन दरस कोए ना पाईआ। बाहरों वेखदे जगत मज़ार, निरगुण मीआं नज़र किसे ना आईआ। मुख़ातब करे ना कोए संसार, तुआकब हक ना कोए जणाईआ। चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ार, साचा सबक ना कोए पढ़ाईआ। चौदां सदीआं दा इज़हार, खेल वेख दुखियां दे दिलदार, बेदर्दी आपणी दया कमाईआ। वेला वक्त विचार, कूड़ी क्रिया वेख संसार, साचा चन्द ना कोए उज्यार, नूराना नूर ना कोए चमकाईआ। तेरे चरण कँवल निमस्कार, ब्यास कहे मैं रोवां ज़ारो ज़ार, गोबिन्द दिसे किसे ना धार, गुरमुख थोड़े पावण सार, लख चुरासी गूढ़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तुध बिन लाए कोई ना पार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रेम प्रीती अंदर पीआ प्रीतम हो के आपणे रंग रंगाईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह आदमपुर ★

ब्यास कहे किरपा कर सूरे सरबंग, हरि करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर चाढ़ अगम्मा रंग, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नाम निधान वजा मृदंग, काया मन्दिर अंदर गृह गृह कर शनवाईआ। भेव खुल्हा हँ ब्रह्म, पारब्रह्म

प्रभ परदा दे चुकाईआ। दीन दुनी दा इक्को दस्स धर्म, वरन बरन रहे ना कोए लड़ाईआ। साची पूजा तेरा चरण, इष्टदेव स्वामी धुर दा नज़री आईआ। आदि जुगादी करनी दा करन, करता पुरख नाउँ धराईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाम दा ढोला पढ़न, तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग जीव जगत वासना विच लड़न, धीरज धीर ना कोए धराईआ। अन्तर नेत्र खोल्ह हरन फरन, साचे लोयण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दुनी दी धारा दे बदलाईआ। नेत्र लोचण नैण खोल्ह प्रभ अक्ख, दृष्टी सृष्टी दे बदलाईआ। सारे गावण तेरा नाम जस, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी मस, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। सब कुछ तेरे हथ्थ, परम पुरख तूं देवणहार गोसाईंआ। दुरमति मैल कट, पतित पुनीत दे बणाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दस्स के आपणा हट्ट, नाम निधान श्री भगवान दे वरताईआ। झगड़ा रहे ना अठ्ठ सठ्ठ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ ना कोए लड़ाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख समरथ, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट घट नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा लेखा गए दस्स, दहि दिशा कर जणाईआ। निरगुण धार हो प्रगट, जोती जाते फेरा पाईआ। सति धर्म सतिजुग लगा सति, कलयुग कूड़ कुड़यार जड़ उखड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दे ब्रह्म मत, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे हथ्थ वड्याई धुर निरँकार, सचखण्ड निवासी तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं सारे होए खुआर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करे पुकार, दरगाह साची कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर परवरदिगार, बेपरवाह आपणा परदा देणा उठाईआ। लोकमात बण सिक्दार, हुक्म आपणा इक्क चलाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। हउँ बालक ख़िदमतगार, तेरी सेवा आए कमाईआ। सब नूं दस्स के तेरा इक्क इंतज़ार, लेखा लिख्तां विच लिखाईआ। अमामां दे अमाम दीन दुनी दे सिक्दार, खुशी ग़मी दे बदलाईआ। चौदां तबक हाहाकार, चौदां विद्या दए दुहाईआ। साचा इस्म नज़र ना आवे हकीकी यार, शरीकत विच दिसे लोकाईआ। मेहरवान महबूब आपणा खेल कर अपार, करनी दे करते कुदरत दे मालक कादर कदीम दे तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। धुर दा हुक्म दे दे पुरख समरथ, शब्दी शब्द फ़रमान जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों जावे नस्स, धरनी धरत धवल रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स, आत्म आपणा रंग रंगाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान सच जैकार लग्गे अलख, अलख अगोचर परदा ओहला बण विचोला दे उठाईआ। हर हिरदे अंदर प्रगट कर

सच्च, हर घट अंदर निरगुण नूर कर रुशनाईआ। दुरमति मैल चार वरनां अंदर कट, घट घट आपणा रंग रंगाईआ। सब कुछ तेरे हथ्थ, करन करावणहार तेरी वड्याईआ। जोड़ के दोवें हथ्थ, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर एकँकार नव नौ चार वखा एको हट्ट, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ तारू सिँघ दे गृह पिण्ड जंडीरे ★

सति कहे कलयुग कूड़ी क्रिया लग्गा दुःख, चार वरन अठारां बरन रहे कुरलाईआ। अन्तर आत्म मिले ना किसे सुख, सांतक सति ना कोए कराईआ। फिरी दरोही मानस देही मानुख, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे कोए ना पुट्ट, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। सज्जण मीत रहे लुट्ट, प्रेम मुहब्बत नाता गए तुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आई फुट्ट, इष्ट हरि ना कोए मनाईआ। तृष्ना मोह विकार लग्गी भुक्ख, आसा ममता विच हल्काईआ। परदा ओहला काया मन्दिर किसे ना चुक्के लुक, सति जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग कूड़ा लेखा देणा मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीता अन्ध, निज नेत्र लोचण नैण ना कोए रुशनाईआ। मन वासना मुके किसे ना पन्ध, दीन दुनी भज्जे वाहो दाहीआ। आत्म सेजा सुहाए ना कोए पलँघ, सच सिँघासण बैठ खुशी ना कोए मनाईआ। धुन अनादी सुणे ना कोए मृदंग, शब्द अगम्मी आवाज़ ना कोए जणाईआ। जोती नूर चमके कोए ना चन्द, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। सच समावे ना कोए परमानंद, निजानंद ना कोए रसाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द गा गा थक्के छन्द, ढोले रागां नादां विच अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर परदा दे उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख परम पुरख समरथ, साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरी आस रखाईआ। सच वस्त रही किसे ना हथ्थ, चार कुण्ट दहि दिशा ख़ाली दिसे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो मार्ग गए दस्स, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ गए थक्क, थकावट विच बैठे ढेरीआं ढाहीआ। मन वासना किसे ना होवे वस्स, मनसा मोह ना कोए मिटाईआ। हकीकत विच्चों मिले किसे ना हक, शाह हकीर परदा ना किसे उठाईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रगट, काया माटी हट्ट भाग ना कोए लगाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे कोए ना सट्ट, सोई सुरती ना कोए उठाईआ। दुरमति मैल देवे कोई ना कट, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। दीनां

मज़्बां ज़ातां पातां वरनां बरनां कढे कोए ना वट्ट, आत्म अन्तर निरंतर रंग ना कोए रंगाईआ। जगत निशान मिले ना सुच्च सच्च, जूठ झूठ घर घर डेरा लाईआ। कंचन रूप दिसे ना काया माटी कच्च, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे ना सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणा प्रेम दे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट जग, जगजीवण दाते तेरी ओट तकाईआ। तृष्ना लग्गी मेट अग्ग, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। हँस बुद्धी रहे कोई ना कग्ग, माणक मोती धुर दा नाम दे चुगाईआ। आपणे मिलण दी ज्ञान नेत्र खोल्ह अक्ख, प्रतख हो गोसांईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को तेरा नाम जैकार बोलण अलख, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। आत्म परमात्म धार रहे कोई ना वक्ख, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। तेरा मार्ग आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सदा सच्च, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दे जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा भेव गए दस्स, ढोलयां गीतां कलमयां नग़म्यां विच गाईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, बुद्धी समझ सके ना राईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां हकीकत विच्चों दिसे हकीकी हक, लाशरीक परवरदिगार सांझे यार दर ठांडे मंग मंगाईआ। निजर धार अमृत बूँद स्वांती दे रस, रस्ता वाबस्ता हो के आपणा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त, आत्म परमात्म मेला करना नार कन्त, तेरा मेरा मेरा तेरा भेव रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना लोकमात, मातर भूमी कर सफ़ाईआ। सति धर्म दी बख्श दात, सतिजुग साचा राह चलाईआ। हर हिरदे अंदर कर प्रकाश, परदा दूई द्वैती लाहीआ। अमृत रस दे आब, हयाती विच्चों हयाती दे बदलाईआ। मानव जाती इक्को करे आदाब, सजदा हक दे दृढ़ाईआ। सच मन्दिर अगम्म वखा महिराब, महबूब आपणा परदा लाहीआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर गुर अवतार पैगम्बर तेरा दस्स दे गए हिसाब, लेखा लिख के कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख जहान, जहालत विच दिसे जगत लोकाईआ। धर्म रिहा ना कोए निशान, कुकर्म विच वड्याईआ। वरन बरन होए हैरान, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ कुरलाण, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। तीर्थ तट नेत्र नैणां नीर वहाण, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती धीर ना कोए धराईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण भरमे भुल्ला सर्ब इन्सान, हकीकत हक ना कोए जणाईआ। तेरा मंत्र निरंतर फ़ुरनयां तों परे दस्से ना कोई बिना कान, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। माया ममता सब नूं कीता बेईमान, बेवा दिसी जगत लोकाईआ। सच प्रीती धुर दी नीती निरगुण मिले कोए ना आण, सरगुण रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल दीन दयाल साहिब समरथ परवरदिगार सांझे यार, जोती जाते वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दिसे संसार, संसारी सिर ना कोए उठाईआ। अन्तर दिसे ना किसे प्यार, प्रीती प्रेम ना कोए वधाईआ। मंज़ल मिले ना किसे हक नज़र आए ना हकीकी यार, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। निर्मल जोत ना कोए उज्यार, बिनां तेल बाती नूर डग ना कोए मगाईआ। दुक्खां विच दुखी होए दुख्यार, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ढांडे आस रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना धरत, धरनी धवल धौल मिले वड्याईआ। चिन्ता सोग मिटा हरख, सांतक सति दे वरताईआ। मेहरवान कर तरस, ग़रीब निमाणे देण दुहाईआ। तूं मालक वाली आहला अर्श, प्रीतम नूर खुदाईआ। निरगुण धार वेख परत, पतिपरमशेवर बेपरवाहीआ। जूठ झूठ मन वासना कूड़ क्रिया सब नूं करे ग़रक, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा भय ना कोए रखाईआ। गुर अवतारां दी सिख्या सारयां कीती तरक, पैगम्बरां सीस ना कोए झुकाईआ। दीन मज़्हब पै गया फ़र्क, ज़ात पात करे लड़ाईआ। सृष्टी विच दृष्टी विच अगला साल दिसे बड़ा सख्त, दुक्खां विच रोवे लोकाईआ। राज राजान शाह सुल्तान पैणा बखत, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। उत्तर पूरब चढ़ना कटक, पच्छिम हाहाकार रखाईआ। कुछ लहिणा देणा फ़रीदी खटक, मसूदी नाल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखण उपर अर्श, जो भविख्त गए लिखाईआ। खेल होणा उत्ते फर्श, धरती ख़ाकी दए दुहाईआ। मेहरवान कर तरस, रहमत तेरी बेपरवाहीआ। छुरी चले जगत मूल ना करद, कत्लगाह ना कोए बणाईआ। प्रगट हो मर्दाने मर्द, मद्दद तेरी मंग मंगाईआ। सच बेनन्ती नमस्ते विच अरज़, आरज़ू दिती सुणाईआ। बिनां भगतां साचे सन्तां सूफ़ी सन्त फ़कीरां तेरी किसे नहीं ग़रज़, बेग़रजी विच लोकाईआ। तेरा खेल होणा असचरज, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लख चुरासी जीव जंत आत्म परमात्म धार तेरे कोल फ़रद, फ़रद ज़ुल्म शब्दी धार हुक्मे अंदर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर माया तत तन वजूद कर प्यार, विच संसार सांझे यार देणा सुणाईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ मिरजईआं नाल पिण्ड कादीआं ज़िला गुरदासपुर ★

गोशे ना जुदा, सजदा खुदा रहमते इलाहीआ। मिटे कायनाते वटा मिले हयाते अबा, आबे हयात तेरी रहमत नज़री आईआ। मुहब्बते ग़िज़ा सुहबते सदा, ज़मीरे ज़मां कर रुशनाईआ। अवले अज़ां बेख़बरे नवां, महबूबे मुहब्बत जल्वागर तेरी रुशनाईआ। नूरे निज़ा ज़हूरे जहां अज़ीमे अशां, आलीशान दरे दरबार सोभा पाईआ। मिरज़ाए महबूब मुहब्बते अरूज मंज़ले मक्सूद, दरगाह साची परदा दए उठाईआ। लेखे लग्गे तन वजूद, ख़ाकी कलबूत तेरा जलवा सबूत, ग़मे ग़म दे मिटाईआ। नूरे सबी, राज़क रिज़क रहीम अख्वाईआ। मिटाए सदी गंवाए खुदी वबाए रदी, जलवा नूर करे रुशनाईआ। चौधवीं सदी महबूबे मैहदी मिरज़ाए मालकान वाहिदे वाली दो जहान, सबक इलहाम, चौदां तबके कलाम, कायनात एका रंग वखाईआ। तन ख़ाकी माटी वजूदे ग़ुलाम, मुहब्बते इस्लाम, हज़रते पैग़ाम, वसीअते मैदान, सलाम इक्को नूर खुदाईआ। बुत्त परसती हराम, वाहिदे अमाम, दीन दुनी दा मालक इक्को नज़री आईआ। दौलत ख़ाना दुआ घर, डाकखाना रहमत बेपरवाहीआ। तहसील ज़िला ओसे दी बिना पर, जिस रूह बुत्त विच टिकाईआ। ओस नूं मुल्को मज़्हब माई बाप पिसर पिदर वाहिद खुदा कर, खुद आपणा आप ओसे दी झोली पाईआ। जिस जुदा कर के कीता गदागर, कायनात सृष्टी दुनिया जगत वासना गली गली दिता फिराईआ। अन्त ओसे उत्तों आपणा आप फ़िदा कर, वाहिद अग्गे दुआ कर, मुफ़लिसां रज़ा कर, नमाज़ तेरे दर कबूले कुदरत कादर कादीआं नूर नज़री आईआ। कादीआं कुदरत नूरे मिरज़ा, मज़ार वेखे जगत लोकाईआ। संसार वाली ना मस्जिद ना गिरजा, गृह बैठा नूरे खुदाईआ। जिस दी चार जुग गुर अवतार पैगम्बर करदे गए चर्चा, चर्चा विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। जिन्हां नूं सच कलाम दा सच नाम दा सच पैग़ाम दा सच अमाम दा धुरदरगाही मिल गया ख़र्चा, कायनात विच्चों कायम नज़री आईआ। जीवण विच ज़िंदगी विच महबूब मिलण दा सदका, पंज तत ख़ाकी वजूद तन मिली बुत्त वड्याईआ। जिस नूं उडीकदा संसार कद दा, कदीम दा राह तकाईआ। उह वक्त सुहावणा करे अज्ज दा, अज़ल तों इक्क ग़ज़ल नाल सारे लए बचाईआ। नबीआं नाल मेला मुर्शदां नाल मुरीदां जोड़ हुंदा सबब दा, सदीआं दे विछड़े मेहर निगाह पार कराईआ। जो मुहब्बत विच प्यारा आपणा महबूब काया काअबे अंदर सद्द दा, उस दे अंदर अगम्मी अर्शी उह रबाब वज्जदा, जिस नूं तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। मालक ओन्हां प्यारयां सद्द दा, जिन्हां दा वजूद वजद विच दए वखाईआ। सो सूफ़ी ओस दी मुहब्बत खुशी विच नच्चदा, मलंग हो के अंदर रंग चढ़ाईआ। सब दा लेखा पूरा होणा हज्ज दा, हाज़र हो के मिरज़े दा महबूब मिरज़े राहीं सब नूं दरस वखाईआ। जो हर इक्क अंदर वसदा,

शरीर अंदर बेनज़ीर बैठा आपणा नूर करे रुशनाईआ। बिना मुर्शद तों तलाश कीत्यां खोजयां लभ्भयां किसे नहीं लभ्भदा, रहमत नाल सहिमत हो के अहिमक पार कराईआ। दूई द्वैती शरअ शरीअत झगड़ा मुका के जग दा, प्यारयां फेर हकीकत वाले दवारे सद्द दा, लाशरीक हो के हुक्म अगम्मी इक्क सुणाईआ। एसे कारण सच्याई दा सच सदा वधदा, सदा सदा मिलदी रहे वड्याईआ।

★ मिरज़े दे मज़ार उत्ते ★

मिरज़ा साहिब हक ज़िआरत, ज़ईफ जवां एका नजरी आईआ। जिस दी सिफ्त करे ना कोए इबारत, जगत तालीम ना कोए वड्याईआ। सब तों पाक काया इमारत, जिस विच महबूब मिल के मुहब्बत लई निभाईआ। लभ्भणी पई ना कोए सफ़ारश, विचोला विच ना कोए रखाईआ। जोती जलवे होया तुआरफ़, नूर नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल खेल विच्चों समझाईआ। हक ज़िआरत मुकामे हक, मुहब्बत दा मालक नज़री आईआ। जगत आशा रहे कोए ना शक, शिकवा मन ना कोए चतुराईआ। मिल के वाहिद एक यक्क, यकतरफ़ हो के खुशी मनाईआ। वेख अनोखी अक्ख, प्रतख बेपरवाहीआ। कहकहा लगा के अंदर गया हस्स, बाहरों मुस्कराहट नजर किसे ना आईआ। प्यार मुहब्बत विच होया बेवस्स, वास्ता इके नाल जुड़ाईआ। आबे हयात मिल्या अगम्मा रस, रस्ते विच्चों रस्ता दिता नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। मिरज़ा तन माटी ख़ाकी नहीं मज़ार, जगत रंग ना कोए वड्याईआ। मिल के हकीकी यार, हिकमत दीन दुनी गया समझाईआ। पैगम्बरां दा सरदार, मुकामे हक हक बैठा डेरा लाईआ। जिस दा सारे करदे गए इंतज़ार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां विच इज़हार, संदेशे देंदे गए गुर अवतार, पैगम्बर पैग़ाम विच सुणाईआ। सो नूरी नूर निराकार, साढे तिन्न हथ्थ करे उज्यार, महल अटल सुहाए इक्क मनार, महबूब हो के मुहब्बत विच रखाईआ। बिन अक्खां कर दीदार, कदमबोसी धुर प्यार, ख़ामोशी विच आपणा हाल सुणाईआ। अन्त छड्डणा पए संसार, रूह बुत्त सदा ना रहे प्यार, तेरा नूर तेरे इख्त्यार, इख़तलाफ़ विच रहिण कदे ना पाईआ। तेरा बरखुरदार तेरे कलमे दा आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूरे नूरां वाली दो जहान, इस्म अज़ां मेहरवान आलीशान शहिनशाह आप आपणे रंग रंगाईआ। अच्छा सो जो अच्छी तरह जाए जाण, अकल तों अग्गे ध्यान लगाईआ। जित्थे वसे निगाहबान, महबूब बेपरवाहीआ। पैगम्बर जिस दा जगत निशान, कलमे कायनात पढ़ाईआ। रसूलां दा अमाम, सदा बदलणहार इंतज़ाम, नज़ाम आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं वेखे मार

ध्यान, अगम्मी कलमे दा दए कलाम, कायनात सिख्या इक्क अवाम उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण इक्को हुक्म वरताईआ। मिरज़ा मिरज़े करे प्रणाम, जिस दा निवास हक मुकाम, खेल ज़िमीं असमान, आहला अदना वेख वखाईआ। सो अच्छा जिस मुर्शद मुरीद बणा के दीद विच दिता इक्क निशान, ईद विच आहला मिल्या आण, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। एहनूं सदा लिखीए खुशख़त, ख़तूत ख़ता विच ना कोए ल्याईआ। अंदर खाते आपणे रख, आलमां फ़ाज़लां अग्गे टिकाईआ। जो मुहब्बत जानण हक, हकीकत दा राह तकाईआ। ओन्हां नूं देईए हथ्थ, जिन्हां नूं वसल मिले यार खुदाईआ। दीन मज़्हब तों हो के वक्ख, शरअ ज़ंजीर तुड़ाईआ। खुदावंद करीम रहीम रहमतां दा मालक समझ के सच्च, इक्को ओट रखाईआ। जिस दे सब कुछ हथ्थ, वस्स ख़लक खुदाईआ। नबी रसूल पैगम्बर गुर अवतार सूफ़ी ओसे दा भेव रहे दस्स, परदा रहे उठाईआ। रल मिल के मिरज़े दे महबूब दा मज़ार उत्ते गाईए जस्स, जो हाज़र हो के हज़ूर धुर दा नूर नूर नुराना करे रुशनाईआ। शुक्रिए विच सदा नवाज़श, नवाज़िश विच्चों शुकरीआ शुकर मनाईआ। अंदर मन करे कोई ना साज़िश, जगत वासना ना कोए लड़ाईआ। बुज्झे लग्गी आतिश, सांतक सति वखाईआ। प्यार मुहब्बत होवे ख़ालस, इक्को रंग रंगाईआ। कुछ थोड़ा लेखा मिरज़ा साहिब आयू बालक, चौदां वरख तिन्न मास नाल वण्डाईआ। पैग़ाम दिता ख़लक ख़ालक, खुद हुक्म हुक्म विच्चों जणाईआ। जिस नूं समझ ना सके कोई अणजाणत, जगत अक्खरां ना कोए लिखाईआ। कलम शाही उठी ना किसे कातब, कुतबखाने देण दुहाईआ। जिस वेले खुदा ने मिरज़े दा कीता आप तुआकब, पिच्छे हो के पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। भेव खोल्ह आपणी माअरफ़त, मुआफ़ कर के गुस्ताख़ गुस्सा तन रिहा ना राईआ। आपणे कलमे दी दे के नयामत, अगला भेव खुल्हा के कयामत, मित्र दोस्त मुरीद खुदा दी दस्स के अमानत, झोली सहिजे दिते टिकाईआ। नाल किहा मिरज़ा तेरे नाल महबूब मिल के देवे इन्हां दी ज़मानत, बरी घरीं घरीं कराईआ। एन्हां करे ना कोए ममानत, जिन्हां दा अंदर सही सलामत, साबत मुर्शद जिन्हां नूं नज़री आईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मज़्हब परसती रहे ना कोए अलामत, सच नाल सच दा मेल मिलाईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम कौर दे गृह ठीकरी वाला ज़िला गुरदासपुर ★

झुग्गी कहे मेरी पूरी होवे आस, जुग जन्म दी आस रखाईआ। कूड़ी तृष्ना बुझे प्यास, ममता मोह तृप्त कराईआ। घर ठाकर स्वामी मिले पुरख अबिनाश, करनी दा करता बेपरवाहीआ। साचे मण्डल वखावे रास, बिन गोपी काहन नचाईआ।

जन भगतां लहिणा देणा देवे ख़ास, ख़ालस आपणे रंग रंगाईआ। लेखे ला के पवण स्वास, निरंतर अन्तर आपणा नाम दए समझाईआ। काया मन्दिर धुर दे काअबे कर के वास, निवास अस्थान इक्को दे दृढ़ाईआ। जिस गृह होवे जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। अमृत रस निजर दे के आबे हयात, हयाती दए बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा राह वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो गए आख, भविख्तां विच लिख्त दृढ़ाईआ। सो लहिणा देणा लेखा पूरा करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी दया कमाईआ। हरिजन सन्त सुहेले पार कराए जगत घाट, पत्तण एकँकारा इक्को इक्क वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स अगम्मी गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर नाम निधाना श्री भगवाना इक्क दृढ़ाईआ। कोट जन्म दे पूरब मेट के पाप, पतित पुनीत दए बणाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोती जाता दर्शन देवे साख्यात, काग़ज़ात दा झगड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवे माण वड्याईआ। झुग्गी कहे मेरे जागण भाग, मिले मातलोक वड्याईआ। निरगुण दीपक जोत जगे चिराग़, कूड़ अन्धेरा दए गवाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए नाद, धुन अनादी आप प्रगटाईआ। निजर रस दए स्वाद, अमृत बूँद सवांत चुआईआ। नाम निधान सुणाए राग, अनरागी ताल वजाईआ। जन भगतां सोई सुरती जाए जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया मेटे आग, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। हँस बुद्धी बणाए काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। घर स्वामी ठाकर दुरमति मैल धोवे दाग़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। झुग्गी कहे मेरे अन्तर होवे प्रकाश, प्रकाश्त वेखां जगत लोकाईआ। मैं जुग जुग बणी रही दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां गई आख, अन्तर आशा इक्क दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रही भाख, मनसा मनसा विच्चों बाहर कढाहीआ। कवण मेरी करे नजात, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। कूक कूक रही आख, दरोही दरोही कर खुदाईआ। सारे पा के गए वफ़ात, तन माटी होई जुदाईआ। हरि शब्द सुणाई अगम्मी बात, बिन अक्खरां दिता पढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता आवे आप, पाक पवित्त पवित्र आपणा फेरा पाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार सम्बल रखे वास, महल अटल बिन छप्पर छन्न आप सुहाईआ। एथे ओथे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेखे खेल तमाश, चौदां लोक चौदां तबक भेव अभेदा आप खुलाईआ। जन भगत सुहेला इक्क इकेला निरगुण सरगुण धार नज़र आए साख्यात, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर अन्तर परदा आप उठाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त लभ्भे ना विच्चों किसे लुग़ात, कातब कलम

२८२ २८२

२० २०

शाही लिखे ना नाल कलम दवात, काग़ज़ भेव ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जगत पट्टी पढ़ा जमात, हुक्म संदेसा शब्दी दिता आख, आख़र अख़ीर निरअक्खर धार वक्खर हो के आपणे विच छुपाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी प्रभ मिलण दी निक्की जेही जाच, तरीका ढंग थोड़ा थोड़ा समझाईआ। एस तों परे जन भगतां दस्से आपणा वाक्यात, वाकिफ़कार आपणे लए बणाईआ। जिन्हां नूं पढ़नी ना पए कोई किताब, कुतबख़ान्यां तों परे सबक बिन अक्खरां आप जणाईआ। सच मनारा हुजरा हक वखा महिराब, महबूब हो के मुहब्बत आपणी दए दृढ़ाईआ। दो जहानां मित्र प्यारा बण अहिबाब, रबाब बिन तन्द सतार, दे वजाईआ। झुग्गी कहे मेरा वसदा खेड़ा होवे आबाद, मिले माण जगत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। झुग्गी कहे मैं भगतां वेखां चढ़दा रंग, रंगत मिले बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म होवे संग, वज्जे नाम वधाईआ। आत्म सेजा सोहे पलँघ, सिँघासण, पुरख अबिनाशन दए सुहाईआ। धुन आत्मक वज्जे मृदंग, अनहद नादी राग अलाहीआ। भेव खुल्ले ब्रह्म हँ, परदा दए चुकाईआ। करे प्रकाश बिना सूरज चन्न, नूर नुराना नज़री आईआ। राग सुणाए बिना कन्न, अगम्मी आवाज़ जणाईआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पंच विकारे देवे डंन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। देवे माण वड्याई पंज तत वजूद तन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। वस्त अमोलक नाम भण्डारा देवे धन, दौलत धुर दी झोली पाईआ। खुशी नाल मिलाए ग़म, चिन्तां रोग ना कोए सताईआ। लेखे लावे पवण स्वास दम, दामनगीर हो के पल्लू आपणा नाम फड़ाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहे ना भरम, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। लहिणा देणा रहे ना कोई कांड कर्म, निहकर्मी होए आप सहाईआ। झगड़ा मुकाए वरन बरन, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। निज नेत्र खोल्ह के हरन फरन, फ़ुरने मन दे बन्द कराईआ। साची मंज़ल दस्से चढ़न, अन्तर अन्तर पैंडा दए मुकाईआ। सच दवारे दस्से खड़्हन, डण्डावत बन्दना सजदा इक्क समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला दस्से पढ़न, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। जीवदयां जग जीवत दस्से मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। संसार सागर पार किनारा दस्से तरन, तारनहार होए सहाईआ। झुग्गी कहे मैं ओसदे पकड़ां चरण, जो चरणोदक धुर दा दए प्याईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सईयदे करन, निउं निउं लागण पाईआ। विष्न ब्रह्म शिव मस्तक टिक्का धूढ़ी ला के दर्शन करन, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर डरन, रवि ससि सूरज चन्द भज्जण वाहो दाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां नाल पूरा करे प्रन, परम पुरख परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि सतिगुर नूर ख़दाईआ। झुग्गी कहे मैनूं अमृत देवे रस, रस्ता अगला दए वखाईआ। मेरी मनसा करे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। मेरे ख़ाली वेखे हथ्थ, वस्त अगम्मी दए वरताईआ। मेरी खोल्ह़े नेत्र अक्ख, जलवा नूर करे रुशनाईआ। मेरा लहिणा देणा जगत धार कक्ख, कीमत ना कोए रखाईआ। सब नालों हो के वक्ख, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। महल अटल उच्च मनार राज राजानां शाह सुल्तानां जावण ढठ्ठ, जन भगतां कुल्ली सदा मिले माण वड्याईआ। सोहणा लग्गे तीर्थ तट, किनारा इक्को देणा वखाईआ। जित्थे नाम तेरे दा हट्ट, हटवाणे गुर अवतार पैगम्बर बैठे खुशी मनाईआ। तूं साहिब सतिगुर मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख समरथ, साहिब सतिगुर तेरी आस रखाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, सरन सरनाई गई ढठ्ठ, मेरा वजूद नहीं तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए रखाईआ। लक्कड़ी काठ मेरी कट, उत्ते मिट्टी ख़ाक दिती सट्ट, परदा पा के झटपट, पटणे वाले तों कीती जुदाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं रख, तेरे कोल हकीकत हक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी शाह पातशाह शहिनशाह तुद्ध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। झुग्गी कहे प्रभ दस्स आपणा राह, रहिबर हो के दे वखाईआ। कोट जन्म दे बख़्श गुनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मालक हो के बण मलाह, ख़ालक हो के ख़लक पार लँघाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरा गया छा, चार कुण्ट ना कोए रुशनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर हुन्दे गुनाह, तीर्थ तट ना रही सफ़ाईआ। तेरा नाउँ सृष्टी दृष्टी विच्चों गई भुला, मन वासना होई हल्काईआ। आत्म परमात्म नालों होई जुदा, निरगुण निरगुण मेल ना कोए मिलाईआ। भगत उधारना सन्त उभारना गुरमुख संवारना गुरसिख उठालणा सूफ़ीआं चलाउणा आपणी रज़ा, रहमत विच रैहम दे कमाईआ। तेरे प्यारयां राए धर्म ना देवे सज़ा, चित्रगुप्त लेख ना सके वखा, लाड़ी मौत ना सके खा, तन माटी ख़ाक तन वजूद आपणे लेखे लाईआ। तूं परवरदिगार खुदा, कदे ना होवीं जुदा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच परदा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी घट घट तेरा नूर नज़री आईआ। झुग्गी कहे किरपा कर मेरे स्वामी, सम्बल सोहणी रुत्त सुहाईआ। अकल कल अन्तरजामी, अन्तर वेख ख़लक खुदाईआ। चार वरन भुल्लया धुर दी बाणी, माया ममता होई हल्काईआ। झगड़ा प्या जगत खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दए दुहाईआ। तेरे नाम दी होई बदनामी, अल्ला वाहिगुरू राम नाम गॉड कहि के करे लड़ाईआ। सच धर्म ना रही निशानी, निशाना आपणा गए भुलाईआ। मन वासना होई अभिमानी, मन का मणका ना कोए भवाईआ। हंगता

हउमे भरे ज्ञानी, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाईआ। जलवा मिले ना किसे नुरानी, रुहानी मंज़ल ना कोए वखाईआ। झगड़ा प्या जगत जिस्मानी, गुलामी सके ना कोए कटाईआ। सारे कहिंदे असीं वसदे देस अनामी, बदनामी तेरी रहे कराईआ। बिना सतिगुर शब्द मालक बणया ना कोए ज़िमीं असमानी, जगत कलामी जगत दुनी वड्याईआ। झुग्गी कहे मेरी झोली पा नेकनामी, जन भगतां नाल मेरा नाता लैणा जुड़ाईआ। मेरी जूह ना रहे बेगानी, गृह मन्दिर देणा वखाईआ। तेरा निरगुण नूर दिसे नुरानी, ज़हूर बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मैं देंदी रही कुरबानी, सेवक हो के सेव कमाईआ। कलयुग अन्त होई निमाणी, ढहि के चरणी सीस निवाईआ। जन भगतां साचे सन्तां गुरुमुखां गुरसिखां सूफ़ीआं साची मंज़ल दे रुहानी, आत्म परमात्म नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे मंग मंगाईआ। झुग्गी कहे मेरा अन्तर आ के वेख, विछोड़े विच दयां दुहाईआ। बदल दे मेरी रेख, किस्मत दे उलटाईआ। धर के आ भेख, अवल्लड़ा वेस वटाईआ। तेरा लेखा लिख के गया गोबिन्द दस दस्मेश, पुरख अकाल दीन दयाल गुरमुखां नालों ना होए जुदाईआ। तैनूं झुकदे विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर सीस निवाईआ। पैगम्बर गुरू अवतार करन आदेस, निउँ निउँ लागण पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान देवे संदेश, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन जुग चौकड़ी मंगण टेक, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। तूं आदि जुगादी साहिब सतिगुर एक, एकँकार तेरी ओट रखाईआ। सच सुहा आपणा देस, सम्बल सोभा पाईआ। गुरमुखां दे भेत, परदा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, दर ठांडे परदा लाहीआ। झुग्गी कहे मेरा खुल्ला करदे वेहड़ा, साहिब सतिगुर दे वड्याईआ। भागां भरया होवे खेड़ा, खिड़की कुण्डी दे खुलाईआ। नज़री आवें नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। झगड़ा रहे ना तेरा मेरा, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। परमात्म आत्म खेल गुरू चेरा, चेला गुर इक्को घर वसाईआ। लख चुरासी जीव जंत तेरे हुक्मे अंदर गेड़ा, चुरासी विच भवाईआ। सदी चौधवीं हकीकत विच्चों कर हक नबेड़ा, परदा ओहला आप उठाईआ। कूड़ी क्रिया डोब बेड़ा, जूठ झूठ दे मिटाईआ। सतिजुग साचा चार वरन अठारां बरन इक्को राह बथेरा, बहु मज़्बां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। झुग्गी करे मेरा कर्म कर मुआफ़, दु:ख रहे ना राईआ। पूरब लहिणा कर साफ़, कूड़ रोग मिटाईआ। मैं सदा रहवां दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। जो पैगम्बर गुरू गए आख, अवतारां नाल मिलाईआ। ओस दा खोलां राज़, परदा दयां उठाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। सच दुआर कर निवास, निवास अस्थान

२८४
२०

इक्को दे समझाईआ। जिस गृह मन्दिर घर स्वामी ठाकर करता निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को रंग रंगाईआ। नाम निधान श्री भगवान जन भगतां दे के साची दात, दाता दानी ख़ाली झोली दए भराईआ। झुग्गी कहे मेरी अन्त अख़ीरी बात, पूरा कर आपणा वाक्, भगत सुहेले बणा साक, सज्जण धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, पुरख अकाल आपणा दे विशवास, विषयां विच्चों जगत विशेषता नाल बाहर कढाहीआ।

★ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ पाल सिँघ दे गृह मुंडा पिण्ड ज़िला अमृतसर ★

ब्यास कहे पुरख अकाल कोल अगम्मी चिट्ठी, जिस नूं वाचण वाला नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द शब्द धार अगम्मी लिखी, हरफ़ हरूफ़ समझ कोए ना पाईआ। सम्मत शहिनशाही मिती, मित्र प्यारा रिहा दृढ़ाईआ। जिस दी धार अनोखी इक्की, एकँकार दिती समझाईआ। वरन बरन तों बाहर सतिगुर सिक्खी, सिख्या साख्यात दृढ़ाईआ। जेहड़ी आदि जुगादि जाए ना भिट्टी, वरन बरन ना वण्ड वण्डाईआ। खेल अगम्मी अनडिठ्ठी, जग नेत्र ना कोए रुशनाईआ। जगत दुआर कदे ना विकी, कीमत करता आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। ब्यास कहे मैं वेख्या अक्खर निराला, निरगुण निरवैर निराकार दिता दृढ़ाईआ। मार्ग दस्सया पुरख अकाला, दीन दयाल दिता समझाईआ। सतिजुग साची अवल्लड़ी चले चाला, दो जहान वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता पारब्रह्म पतिपरमेश्वर होए रखवाला, परवरदिगार सांझा यार दीन दयाल दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले सच बहाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआर एकँकार इक्को इक्क प्रगटाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं परदा दए उठाईआ। नाम निधान श्री भगवान नौजवान सुणाए अगम्मी तराना, तुरीआ तों परे तार सतार आपणी आप हिलाईआ। धुन आत्मक राग अगम्म अथाह जणाए गाणा, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोला आप अलाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा कलमा कलाम देवे इक्क पैग़ामा, नग़मा इक्को इक्क जणाईआ। खेल वखा के हक मुकामा, नूर नुराना नूर दए चमकाईआ। साचा मार्ग दस्स आसाना, महल अटल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। ब्यास कहे धुर दी चिठ्ठी धर्म फ़रमान, फुरनयां तों बाहर करे पढ़ाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, सन्त सुहेले धुर दे मेले लए मिलाईआ। अन्तर आत्म दे के ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म

ब्रह्म विद्या इक्क समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, धर्म ईमान इक्को इक्क वखाईआ। सच दवारा एकँकारा नाम निधाना दे के दान, कूड़ अभिमान दए गवाईआ। चरण धूढ़ मूर्ख मूढ़ करा इश्नान, दुरमति मैल दए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडा इक्क वखाईआ। ब्यास कहे मैं तक्के गुरमुख गुरसिख, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जिन्हां दा लेखा गया लिख, पूरब लहिणा जोड़ जुड़ाईआ। परमात्म हो के आत्म करे हित्त, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग चढ़ाईआ। अबिनाशी करता हो के वसे चित, मन चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। निरवैर हो के दर्शन देवे नित, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। ठाकर स्वामी पुरख अकाल बण के पित, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। पूरा कर भविख, भविख्त लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्को इक्क वड्याईआ। ब्यास कहे मैं गुरमुखां वेखणा चढ़या रंग, रंगत इक्को नज़री आईआ। शब्दी गोबिन्द देवे संग, संगल शरअ ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल लावे अंग, अंगीकार बेपरवाहीआ। नाम निधान वजावे मृदंग, नाद इक्को इक्क सुणाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म परदा दए चुकाईआ। भाग लगाए काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के तृष्ना तम, अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। जन्म मरन हरख सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए बणाईआ। जन भगतां लेखे लाए पवण स्वासी दम, दामन हो के ज़ामन हो के पल्लू आपणे नाल गंढ्ढाईआ। झगड़ा रहे ना मनुआ मन, मन का मणका दए भवाईआ। साचा नाम सुणा के बिनां कन्न, करनी दा करता आपणा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी सच दवारा इक्क सुहाईआ। ब्यास कहे मैं गुरमुख तक्कणे आप, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां दे अन्तर इक्को जाप, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। पुरख अकाल मन्न के बाप, पिता पूत गंढ्ढ पवाईआ। जन्म जन्म दा मेट रोग संताप, संसे गए चुकाईआ। रूह बुत्त कर के पाक, पवित्र हो के सीस झुकाईआ। सच दवारे बण के दासी दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। जन्म मरन दी पूरी कर के आस, आसा विच भरवासा, भरवासे विच मिल के सर्ब गुणतासा, गुण धुर दा झोली पाईआ। जुग चौकड़ी वेखदा रिहा खेल तमाशा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए पन्ध मुकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सदी चौधवीं पूरी करे ख़ाहिशा, मेहर नज़र आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्यास कहे मैं गुरमुखां तक्कां राह, रस्ता वेखां जगत लोकाईआ। रूप बणा के थल अस्गाह, भज्जां वाहो दाहीआ। इट्टां पत्थरां नाल टकरा, आपणा पन्ध मुकाईआ। साचे भगतां वेखां आ, आप आपणी

अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां दा पुरख अकाल मलाह, बेड़ा गोबिन्द कंध टिकाईआ। जोती शब्दी सच सलाह, मार्ग इक्को इक्क प्रगटाईआ। दूसर जाणे कोई ना, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। सन्त सुहेला रहे जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं कहिंदे वाहिद खुदा, जल्वागर लाशरीक नूर खुदाईआ। अमाम अमामा बेपरवाह, कदे ना होवे बेवफ़ा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो जन भगतां भगवन हो के रिहा मिला, करे खेल अल्ला अलाह, आलमीन आपणी धार समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वाह वाह, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। ब्यास कहे जिस (सुहाया) अगम्मा सच्चा थाँ, धरनी धरत समझ कोए ना पाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला जोती जामा रिहा पा, शब्दी धारा खेल खिलाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले जन भगत रिहा उठा, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। परदा ओहला बण विचोला शब्दी रिहा चुका, चार कुण्ट दहि दिशा बिन नेत्र लोचण नैण करे रुशनाईआ। अमृत रस धुर दा जाम हकीकी रिहा प्या, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बूँद स्वांती आप चुआईआ। ब्यास कहे मेरे तट किनारे डेरा ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर आपणी कार कमाईआ। ब्यास कहे मैं वेखां हाज़र हज़ूर, हरि दाता बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म सदा मन्जूर, सिर सके ना कोए उठाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलयुग मेटे क्रिया कूड़, जूठ झूठ करे सफ़ाईआ। जन भगतां बख्श के आपणा नूर, नूर नुराने चन्द चमकाईआ। शब्द अगम्मी दे के तूर, तुरत आपणी करे पढ़ाईआ। मनुआ रहे ना कोए मफ़रूर, डोरी शब्दी तन्द बंधाईआ। गढ़ हँकार तोड़ ग़रूर, गुरबत अंदरों दए कढाहीआ। नाम खुमारी दे सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। आसा मनसा जन भगतां कर पूर, पूरब लहिणा झोली पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सेवक बण मज़दूर, चाकर हो के साची सेव कमाईआ। गुरमुखां चाढ़ के रंग गूढ़, दुरमति मैल दए धवाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़, बन्दे आपणे लए प्रगटाईआ। जन्म जन्म दे बख्श कसूर, लख चुरासी विच्चों पार लँघाईआ। जेहड़ा जलवा दिता मूसे कोहतूर, सो नूर गुरमुखां अंदर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्को इक्क वखाईआ। ब्यास कहे मेरे तट किनारे लग्गा भाग, सदी चौधवीं खुशी मनाईआ। गुरमुख जगदा वेख्या चिराग़, चरागाहां होवे रुशनाईआ। जिस दे अंदर धुन अनाद, अनादी आप वजाईआ। सुण अगम्मी आवाज़, खुशीआं ढोला गाईआ। बदल के जगत समाज, साची सिख्या दिती दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म इक्को जाप, जग जीवण दाता दए दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर मुआफ़, धर्म इक्को दे समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के आपणी जात, ज़ात पाती डेरा ढाहीआ। पूरा कर गोबिन्द

भविख्त वाक्, वाकिफ़कार गुरमुख आपणे लए बणाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, परदा अंदरों दए चुकाईआ। साहिब सतिगुर निरगुण निरवैर निराकार निरँकार नज़री आए साख्यात, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। ब्यास कहे मैं वेखां खेल कायनात, चार कुण्ट दहि दिशा बिनां अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। ब्यास कहे गुरमुख सोहणे सुहावणे लग्गण चंगे, चार वरनां विच्चों सोभा पाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर निरगुण धार हो के लँघे, सच सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउँदे छन्दे, साचा ढोला बेपरवाहीआ। तिन्हां सुहाए मेरे कन्ढे, कंडयां विच्चों मैनूं बाहर कढाहीआ। गुरमुखां नाल मेरे तट ठंडे, अग्नी कूड़ जगत बुझाईआ। कोटां विच्चों थोड़े आए मेरे वण्डे, गिणती अंकड़यां विच ना कोए गणाईआ। अंदरों दिसदे नूर खुदाई बन्दे, बाहरों पंजां तत्तां वाले सोभा पाईआ। मैं तक्कया पुरख अकाल उहनां संगे, सगला संग बणाईआ। गोबिन्द चाढ़े चन्दे, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। जुग जन्म दे विछड़े आपणे नाल गंढे, बिन डोरी तन्द बंधाईआ। सच प्रीती चरण धूढ़ी नाल रंगे, मस्तक टिक्के आप छुहाईआ। मंज़ल हकीकी लाशरीकी हरिजन प्यारे लँघे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा धुर दरबारा इक्को इक्क वखाईआ। ब्यास कहे मैं दवारा तक्कया एक, एकँकार दिता जणाईआ। जित्थे सब नूं मिले टेक, टकयां वाली कीमत ना कोए पाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहानां नर नरेश, शाह पातशाह शहिनशाह पुरख अकाल डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा अवल्लड़ा वेस, गुर अवतार पैगम्बर आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी याद विच फ़रयाद कर के गया दस दस्मेश, दहि दिशा अक्ख खुल्हाईआ। सो साहिब सतिगुर आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहे हमेश, हमसाजन भगतां नज़री आईआ। जिस नूं झुकदे विष्न शिव ब्रह्मा महेष, हमेशां सीस निवाईआ। सो वसणहारा सचखण्ड अगम्मड़े देस, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जामा धार के भेख, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदले रेख, ऋषी मुनी सारे देण दुहाईआ। ब्यास कहे जिस दा किसे नहीं पाया भेत, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। जन भगतां बख़्श के चरण प्रीती साची टेक, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मेहर नज़र उठाईआ। ब्यास कहे मैं सब कुझ रिहा वेख, भाग लग्गा माझे देस, परदेसी होई जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल करे विशेष, विषयां वाला समझ कोए ना पाईआ।

२८८
२०

★ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह बस्ती तेगा सिँघ ज़िला फ़िरोज़पुर ★

झुग्गी कहे मेरा वासा अगम्मी जंगल, जिस दी जगह ना कोए समझाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे धुर दा मंगल, नाद अनादी धुन उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बहि के मंगण, दर ठांडे सीस निवाईआ। सच प्रेम दी चाढ़ के रंगण, रंग रंगीला तक्कण धुरदरगाहीआ। डण्डावत कर के बन्दन, सजदयां विच सीस झुकाईआ। लग्ग के ओस दे अंगण, अंगीकार अख्वाईआ। रस लै के परमानंदन, निजानंद खुशी बणाईआ। धुर दा ढोला गा के छन्दन, राग अगम्मी इक्क सुणाईआ। सच संदेसा नर नरेशा दस्सण, दहि दिशा कर शनवाईआ। प्यार मुहब्बत विच हस्सण, हस्ती आपणी लैण बदलाईआ। सद मेरे अन्तर निरंतर हो के वसण, रूप रंग रेख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। झुग्गी कहे मेरा घर अवल्ला, जुग चौकड़ी नज़र किसे ना आईआ। जिस गृह वसे पुरख अकाल इक्क इकल्ला, एकँकार डेरा लाईआ। शब्दी धार फड़ाए पल्ला, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। धुर संदेश नर नरेश एकँकार एका घल्ला, नाम निधान श्री भगवान दए दृढ़ाईआ। गृह वखा के निहचल धाम अटला, महल अटल करे रुशनाईआ। जोती धार हो के बला, दीपक नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दए सुहाईआ। झुग्गी कहे मेरा गृह निराला, निराकार दिता बणाईआ। सच दुआर सच्ची धर्मसाला, दवारा इक्को दिता वड्याईआ। मुरीदां पुछे मुर्शद हाला, अहिवाल सब दा वेख वखाईआ। लेखे लाए सब दी घाला, कीमत करता इक्को पाईआ। मार्ग दस्स धर्म सुखाला, परदा ओहला दए चुकाईआ। सन्त सुहेला बण रखवाला, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। झुग्गी कहे मेरा दवारा धुर दा भगत, लोकमात नज़री आईआ। सब तों उजल दिसे जगत, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। वड्याई मिले फर्श, अर्श वज्जे वधाईआ। पूरी होवे हरस, हवस दए बुझाईआ। किरपा कर अबिनाशी करता करे तरस, रहमत आप कमाईआ। निरवैर हो के आवे परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। पूरी कर के शर्त, शरअ दीन दुनी दए बदलाईआ। अमृत मेघ अंमिउँ रस देवे वरख, विख कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले लए परख, नाम कसवट्टी लए लगाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के देवे दरस, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। झुग्गी कहे जन भगत मेरा दवार, दर ठांडा नज़री आईआ। जिस गृह वसे आप निरँकार, निरवैर हो के सोभा पाईआ। जोती जोत कर उज्यार, महल अटल करे रुशनाईआ। शब्द अनाद दे धुन्कार, अगम्मी राग सुणाईआ।

बिना सखियां तों मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, हक हकीकत दए समझाईआ। झगड़ा चुक्के जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत डेरा ढाहीआ। जिधर वेखां तक्कां समरथ फिरे सदा नाल, धुर दा संगी आपणा संग निभाईआ। लहिणा देणा मुका के शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे कोझे कमले आपणे रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी करदी रही भाल, वैरागण हो के भज्जी वाहो दाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण नूर तक्कया पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणा खेल खिलाईआ। सच दवारा जिस दी सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। जन भगतां चरण प्रीती देवे दान, दयावान झोली पाईआ। मनसा मन रहिण ना देवे अभिमान, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भाग लगा के काया सच मकान, मुकामे हक दए वखाईआ। साची झुग्गी जुगीं करे परवान, मेरी आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडा दए वखाईआ। झुग्गी कहे जन भगतां वेखां घर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। दर स्वामी सोहे हरि, हिरदे अंदर डेरा लाईआ। शब्दी धार लए फड़, सुरती आपणे नाल जुड़ाईआ। बिन पौड़ी डण्डे अंदर जाए चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपणी किरपा देवे कर, करनी दा करता परदा दए उठाईआ। अमृत नुहा अगम्मे सर, दुरमति मैल दए धवाईआ। भगत भगवान इक्को सोहे दर, दरवाज़ा अंदरों दए खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया पुट्ट के जड़्, चेतन सुरती दए वखाईआ। खुशीआं नाल देवे वर, वारस हो के होए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। झुग्गी कहे जन भगतां वेखां काया झुग्गी, कुल्ली कलाधारी आप बणाईआ। जिस विच खेल कर के मन मति बुद्धि, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो दिती वड्याईआ। शब्दी रमज़ रख के गुज्झी, इशारा नाम निधान छुपाईआ। आपणी धार रख के गुंगी, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। कलयुग अन्त जिस वेले औध पुग्गी, वेला वक्त गया आईआ। अबिनाशी करते आपणी खेल आपे सुज्झी, बिना सोच समझ दिती खिल्हाईआ। जन भगतां आपणे नाल मेल के रुची, रचना आपणी दिती वखाईआ। काया माटी कर के सुच्ची, सच संजम दिता दृढ़ाईआ। निरगुण धार जोत निरँकार रहे ना लुकी, परदा ओहला दिता उठाईआ। जन भगत बणा के धुर दे मुक्खी, मुखीए आपणे अग्गे लगाईआ। भाग लगा के माता कुक्खीं, आवण जावण दिता कटाईआ। एथे ओथे रख के सुखी, आत्म परमात्म विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मंज़ल दे के उच्ची, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह सचखण्ड दुआर एकँकार निराकार निरँकार आपणे घर वसाईआ।

★ पहली पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गोबिन्द कहे प्रभ वेख खेल कलयुग कल दी, निरवैर निराकार निरँकार आपणा ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी हुक्म दे जलदी, शाह पातशाह शहिनशाह धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच चार कुण्ट दहि दिशा अग्ग बुझावां बलदी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान वेख वखाईआ। धार वेखां समुंद सागर टिल्ले पर्बत चोटी जल थल दी, अस्गाह पड़दे दयां उठाईआ। माया ममता जगत तृष्ना सृष्टी दृष्टी फिरे छलदी, हउमे हंगता कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। जगत तकदीर बेनज़ीर शाह हकीर किसे ना टल्दी, मेहरवान महबूब तेरा दरस कोए ना पाईआ। आपणी खेल छड्ड अछल अछल्ल दी, धार दस्स अगम्म अटल दी, ऊँचो ऊँच दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ कलयुग वेख कूड़ कुड़यार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं गुर अवतार पैगम्बर अन्त अख़ीरी गए हार, तेरे दर बैठे सीस निवाईआ। हुक्म संदेशे अंदर इक्को सुत दुलार कर त्यार, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते आपणा हुक्म वरताईआ। मैं योद्धा सूरबीर बलकार, नौजवाना मर्द मर्दाना दो जहानां तेरी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां वाला मेरा तेरा करदे गए इज़हार, परदा चुक्क के हक हकीकत ना कोए दृढ़ाईआ। किरपा कर सिरजणहार, तेरे दर करां निमस्कार, हुक्म दे एका वार, बण के जावां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के तेरी सेव कमाईआ। दीन दुनी दी बदलां धार, झगड़ा मुकावां विच संसार, दीन मज़्हब दी रहे कोए ना खार, ज़ात पात राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच संदेसा नर नरेशा एका देवां एका वार, दूजी दस्सां ना कोए गुफ़तार, मेल मिला के सांझे यार, झगड़ा द्वैत देवां मिटाईआ। सचखण्ड तेरा दरबार, जित्थे झुके गुरू अवतार, पैगम्बर सईयदे कर कर गए हार, धूढ़ी ख़ाक चरण कँवल रमाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सब कुछ तेरे अख्त्यार, बेअख्त्यार कलयुग अन्त दिसे लोकाईआ। साडा भविख्तां वाला पूरा कर विहार, उच्ची कूक कूक गए पुकार, कल कल्की तेरा इक्क अवतार, जिस नूं समझे ना कोए संसार, बुद्धी करे ना कोए इज़हार, आकल अकल ना कोए चतुराईआ। उच्ची कूक कहां पुकार, सुण स्वामी धुर दे यार, पिता पूत दे प्यार, मेहरवान हो के मेहर अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ मेरा माछूवाड़े वाला वेख हुक्मनामा, जो बिन अक्खरां दिता लिखाईआ। जिस दी अक्खरां वाली नहीं कलामा, कायनात ना कोए

२६१
२०

जणाईआ। जिस विच झगड़ा नहीं दीन इस्लामा, मज़्हबां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कोई नाम नहीं वड्याया कृष्ना रामा, ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द धार ना कोए जणाईआ। इक्को मंगया तेरा सति सरूप दा अगम्मी जामा, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा फेरा लैणा पाईआ। वेखीं किते गोपीआं वाला बणीं ना कान्हा, लख चुरासी तेरा निशाना, निरगुण नूर जोत महाना, शब्दी गोबिन्द सूरा सुत तेरा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल मैनूं आउँदा जोश, शब्दी हो के चैन लैण ना पाईआ। सचखण्ड निवासी क्यों बैठा ख़ामोश, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सृष्टी अंदर वेखां दोष, निर्दोष लख चुरासी अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा काया माटी चमढ़ी पोश, पिछला लेखा देणा मुकाईआ। एका नाम दी ला के चोट, चोटी चढ़ के सारे देणे उठाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना अंदरों कढ्ढ के खोट, ममता मोह देणा गवाईआ। हउमे हंगता कट के रोग, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा होवे जोग, जगत जोगीशर मुनीशर तपीशर आपणा राह ना कोए वखाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दस्स के धुर दी खोज, मार्ग राह पन्ध देणा समझाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा चौदां लोक, चौदां तबक दयां समझाईआ। आत्म परमात्म दस्स के अगम्म सलोक, सुल्हकुल देणा मिलाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ मैं सौदा करना रोक, जगत उधार ना कोए जणाईआ। छड्ड के तेरा सचखण्ड धुर दा कोट, किला आपणा लैणा प्रगटाईआ। जित्थे तेरा नूर जगे अगम्मी जोत, दीपक अवर ना कोए रुशनाईआ। तत्तां वांग फेर मरना पए ना सृष्टी वाली मौत, अग्नी भेंट ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म देणा समझाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द ना कर जलदी, शब्दी शब्द जणाईआ। मेरी खेल आदि जुगादि वल छल दी, अछल छलधारी आपणा नाउं धराईआ। किसे नूं ख़बर ना दिती आपणे पल दी, पलकां दे पिच्छे बहि के आपणा हुक्म सुणाईआ। जेहड़ी धार गुर अवतार पैगम्बर सुनेहड़ा घल्लदी, नबी रसूलां कलमयां नाल समझाईआ। ओस दी खेल कदे ना टल्दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव आपणा रिहा खुल्हाईआ। गोबिन्द मैनूं पुच्छ लैण दे तेई अवतार, दर ठांडे आप बहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर के त्यार, तऱां तऱां दयां जणाईआ। वेख खड़े चरण दवार, बिन सीस सीस झुकाईआ। मैं हुक्म देण लग्गा आपणी धार, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। उठो वेखो आपणा संसार, दीन दुनी राह तकाईआ। आपणे वेखो मित्र प्यार, सज्जण लओ उठाईआ। किस नूं देंदे रहे दीदार, सनमुख हो के सोभा पाईआ। अग्गे केहड़ा करे संभाल, मैनूं दयो जणाईआ। क्यों कूड़ी क्रिया बदली चाल, चालाकी समझ सके

कोए ना राईआ। जेहड़ा कलमा नाम आए तुसीं सिखाल, क्यों भुल्ली सृष्ट लोकाईआ। की तुसीं जाण ना सको सब दा हाल, घट घट ना वेख वखाईआ। मोड़ के मैनूं जवाब दे थाँ दस्सो सवाल, हुक्मे अंदर तल्ब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्कठे पए बोल, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। साडा पूरा होया कौल, अग्गे लेखा रिहा ना राईआ। तेरा हुक्म संदेसा सुणा के आए उपर धौल, धरनी धरत धवल सेव कमाईआ। किसे नाल नहीं मारया रोल, सति सच सच समझाईआ। तूं बैठा रिहों आप अडोल, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। तोलदा रिहों अगम्मा तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। अवष्तार पैगम्बर कहिण साडी सुण इक्क अरदास, अरज़ बेनन्ती देईए जणाईआ। तेरा नाम शब्द कलमा सुनेहड़ा दे के ख़ास, ख़ालस तेरा नाम आए जणाईआ। आप बण के दासी दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, शब्दी ढोला डंक सुणाईआ। अन्त आ गए तेरे पास, नाता तत जगत तुड़ाईआ। भविख्तां विच लिख के वाक्, लेखा तेरा आए जणाईआ। सो वेला वक्त वेख आप, की साथों पुच्छ पुछाईआ। साडे उत्ते रिहा ना किसे विश्वास, विषयां विच लोकाईआ। शास्त्र सिमरत अंजील कुरान वेद पुराण समझ किताब, कुतबखानयां विच टिकाईआ। मंज़ल रही ना हक महिराब, महबूब तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। तेरे हुक्मे अंदर कलयुग रहिण दिता कोए ना पाक, पवित्त रूप ना कोए वखाईआ। बिन तेरी किरपा खुल्ल्हे किसे ना ताक, पाक चाक रूप ना कोए बदलाईआ। असीं छड्ड के सब दा साथ, तेरे चरण ध्यान लगाईआ। वस्त रही ना साडे पास, तूं आपे दे के आपे आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैगम्बर केहड़ा मारे फेरा, लोकमात दयो समझाईआ। कवण मिटावे अन्त अन्धेरा, कलयुग कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। कवण भेव खुल्ल्हाए तेरा मेरा, परदा अंदरों दए चुकाईआ। तेई अवतार दस्सो कर के वड्डा जेरा, हुक्म श्री भगवान आप सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तुहाडे विच्चों केहड़ा करे नबेड़ा, उम्मत जा के वेखे चाँईं चाँईंआ। चौदां तबकां केहड़ा सुहञ्जणा करे खेड़ा, सुहावणी रुत्त बणाईआ। केहड़ा बन्न्हे बेड़ा, आपणा बल प्रगटाईआ। कवण करे मेहरा, दीन दुनी लए बचाईआ। धरत मात दा पवित्र होवे वेहड़ा, पाक साफ़ दए कराईआ। पैगम्बर कहिण साडा वक्त बीतया बथेरा, अग्गे हिम्मत रही ना राईआ। बिन तेरे सुहाए कोई ना वेला, जगत अन्धेरा ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़रमान इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मैं फेर कहवां वार दूजी, पैगम्बरां रिहा सुणाईआ। दस्सो किस नूं कला सुज्झी, आपणी आपणी धार

दयो दृढ़ाईआ। कवण जा के पवित्त करे बुद्धि, सृष्टी अंदरों दए बदलाईआ। सच प्रेम दी लावे रुची, रचना इक्को दए वखाईआ। वासना मन रहे ना दुखी, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जीव जगत तृष्ना विच रहे ना भुक्खी, तृप्त दए कराईआ। मेरी रमज़ रहे ना लुकी, परदा दए उठाईआ। उठो कोई ता दयो मुच्छीं, मुश्किल जगत हल्ल कराईआ। अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साडी औध मुकी, मुकम्मल देईए दृढ़ाईआ। साडी सफा जगत चों उठी, लोकमात नज़र ना आईआ। तूं सब दे अंदर मति पा के पुट्ठी, कलमे दिते भुलाईआ। शब्दी धार तेरे नालों रुठ्ठी, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। सन्तां नूं भरम भुलेखा पा के त्रैकुटी, विद्या विच लड़ाईआ। थोड़ी जेही अमृत धार निजर किसे फुट्टी, फुट्ट दीन मज़्ब विच फसाईआ। दस्म दुआर दी मामूली पहु फुट्टी, फट्टयां उत्ते दिते सवाईआ। आपणे नाम दी निक्की जेही दस्स के हट्टी, जगत वणजारे वण्डां विच रखाईआ। एसे कारण अन्तिम सब नूं भरनी पई चट्टी, सज़ा विच लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं दस्स के अक्खरां वाली पट्टी, इबारतां विच आपणा नाम दिता समझाईआ। अंदर रख के जोत दी मोमबत्ती, घट कीती रुशनाईआ। दे के निक्की अक्खी, आख़र आपणा आप छुपाईआ। तन माटी सब दा साड़ के कक्खीं, मिट्टी गोर विच दबाईआ। असीं कथा कहाणी दस्सीए सच्ची, साहिब तेरे अग्गे सुणाईआ। चार जुग साडी प्रीती जगत नाल कच्ची, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। एसे कारण तेरे आउण दी रमज़ दस्सी, कलयुग वेला वक्त दृढ़ाईआ। असीं सब कुछ वेखदे आपणी अक्खीं, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले फोल फुलाईआ। किसे दवारे मिले ना कमलापती, पतिपरमेश्वर नज़र किसे ना आईआ। मन वासना दुनिया फिरदी नठ्ठी, तृष्ना विच हल्काईआ। दुरमति मैल साथों जावे ना कटी, बौहड़ी कर के देईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल देणा समझाईआ। पुरख अकाल कहे मैं कहिंदा तीजी वारी, वारता सब नूं रिहा दुहराईआ। अवतार पैगम्बर करो कोई हुशियारी, धुर फ़रमाना रिहा सुणाईआ। आत्म परमात्म दी जोड़ो मात विच यारी, याराना मेरे नाल लगाईआ। दीन मज़्ब रहे ना कोए संसारी, इक्को ब्रह्म देणा जणाईआ। सुरती रहे ना कोए कुँवारी, शब्दी कन्त देणा वखाईआ। अग्न रहे ना बहत्तर नाड़ी, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। धुर दी दस्सणी इक्क सिक्दारी, शहिनशाह इक्को देणा वखाईआ। जिस दी खेल अगम्म न्यारी, दो जहानां आप कराईआ। साचे नाम दी करो कोई जैकारी, जेहड़ा नाम चार जुग ना किसे समझाईआ। आपणी मेटो जा के आप बेएतबारी, एतबार आपणा लओ बणाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण दोए जोड़ तेरे चरण निमस्कारी, नमों कहि के सीस निवाईआ। कुदरत दे कादर तेरे कदमां बलिहारी, सजदा कर के खुशी बणाईआ। असीं अन्त अख़ीर कहि के आए आपणी वारी, भविख्तां विच समझाईआ। वड्ड अमाम आवे

सिक्दारी, दो जहानां शहिनशाहीआ। सब दी मेटे मात लाचारी, कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेख आपणी लोकाईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैगम्बरो कोई धारो जा के जुस्सा, पंज तत दयां वड्याईआ। दीन दुनी वेख के क्यों नहीं तुहानूं प्रेम दा आउँदा गुस्सा, आपणा बल वधाईआ। सारे कहिण अबिनाशी करते तूं क्यों हुण आपणी वारी लुका, असीं दे के आए शहादत तेरी गवाहीआ। बिन तेरी किरपा पैंडा किसे ना मुक्का, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। सो वेला वक्त जहान ढुक्का, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। पुरख अकाल कहे अवतार पैगम्बरो कर लओ सौदेबाज़ी, सब नूं दयां समझाईआ। जे कोई तहाडे विच्चों मातलोक जावे मैं खुशी होवां राज़ी, राज़क रहीम हो के दया कमाईआ। इक्क संदेसा देवां ख़ासी, ख्वाहिश सब दी वेख वखाईआ। वेख्यो लोकमात जा के बणयो ना कोई निमाज़ी, निमाज़ां विच ना ध्यान लगाईआ। वेदां पुराणां दा बणयो कोई ना पाठी, मन्दिरां विच डेरा लाईआ। स्वांगी ना बणयो कोई तीर्थ ताटी, जलां नाल वड्याईआ। राम कृष्न दी गायो कोई ना साखी, पिछला लेखा ना कोए दुहराईआ। चार जुग दी पड़िओ कोई ना पाती, ग्रन्थां फोल फुलाईआ। जगत मंज़ल ना वेख्यो घाटी, पुराणे राह ना फेरा पाईआ। पिछले साथी ना लभ्भयो जमाती, अक्खरां गणत ना कोए गणाईआ। इक्को जा के मेरे नाम दी महिमा दस्सणी साची, सज्जण इक्को देणा समझाईआ। कोई पूजे ना पंजां तत्तां वाला बुत्त ख़ाकी, निरगुण जोत इष्ट मनाईआ। मनुषां वाली जा के ना हंढायो कोए हयाती, खाण पीण दा सन्बंध ना कोए बणाईआ। वेख्यो किते जा के मन्न ना ल्यो संध्या प्रभाती, अठ्ठे पहर इक्को रंग वखाईआ। किसे दी बणयो ना जा के दासी, सीस ना किसे झुकाईआ। आसरा तक्कयो ना कलम दवाती, शरअ ना वण्ड वण्डाईआ। निक्की जेही दीन मज़्बां वाली फेर ना खोल्ह्यो हाटी, हटवाणे बण के जाणा चाँईं चाँईंआ। अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ की कथा कहाणी आखी, साडी समझ विच ना आईआ। असीं देण वाले संदेशे तेरे नाम दी पाती, बिना तेरी पत्रका साडी चले ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाल सचखण्ड निवासी बिन तेरे कोई ना दिसे कमलापाती, पतिपरमेश्वर दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म देणा वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो, मैं इक्को हुक्म सुणाईआ। तुसीं वेखो हक सुअम्बरो, की हरि जू कल वरताईआ। पुरख अकाला वड भरतम्बरो, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। मेरी धार निकले किसे ना अम्बरो, समझ विच ना कोए समझाईआ। अन्त अख़ीरी वेला जे कुछ मंगणा मंग लओ, मांगत हो के झोली डाहीआ। आपणा आप रंग लओ, रंगत दयां चढ़ाईआ। जे लोड़ ते मेरा संग लओ, दो जहानां संग

निभाईआ। आपणी प्रीती मेरे नाल गंढ लओ, गंढी फेर ना कोए तुड़ाईआ। जे सुख लैणा मेरी धार विच मिल के अनन्द लओ, बिना सचखण्ड दूजा धाम ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू सानूं कुछ आ गई याद, बेनन्ती कर के देईए जणाईआ। असां सब ने वेख्या तक्कया गोबिन्द कीती इक्क फ़रयाद, माछूवाड़े सूलां सेज हंढाहीआ। चार जुग दे सुत्तयां दी सचखण्ड दवारे खुल्ह गई सब दी जाग, नेत्र अक्ख बन्द ना कोए कराईआ। ढोला गाया तेरा विच वैराग, वैरी मित्र सज्जण सर्ब तजाईआ। मेरा होया वड वड भाग, बंस सरबंस तेरी झोली पाईआ। खुशी होई आज, पाटे चीथड़ दित्ते वखाईआ। तेरे नाम दा वजा के नाद, खुशी आपणी लई बणाईआ। ओस वेले पुरख अकाल तूं मार अगम्मी आवाज़, हुक्म दिता सुणाईआ। गोबिन्द शब्दी धार अगम्मे सुत तेरा मेरे अंदर राज़, दूजा समझे कोए ना राईआ। कलयुग अन्त तेरे नाल मिल के दीन दुनी दा बदलां रिवाज, कलयुग झगड़ा कूड़ दयां मिटाईआ। हुक्मे अंदर दस्सया गोबिन्द समझीं ना ख्वाब, सच फ़रमाना आप जणाईआ। गोबिन्द ओसे वेले तेरा हुक्म प्यार नाल लिख ल्या ओस विच किताब, जिस दा हरफ़ समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं प्रभू वेखणा चाहुन्दे तेरा गोबिन्द वाला समाज, खुशी नाल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल देणा वखाईआ। पुरख अकाल कहे तुसां सोहणी दिती दलील, बच्चयो नढुयो तुहानूं दयां वड्याईआ। तुहाडी अरज़ बेनन्ती मन्नां इक्क अपील, अपरम्पर स्वामी हो के दया कमाईआ। जिस कारण वस्त्र पहने नील, गोबिन्द रंग चढ़ाईआ। शब्दी धार कहि के आमीन, अमलां तों रहत दिती वखाईआ। बंस सरबंस वार ना होया ग़मगीन, चिन्ता दिती गवाईआ। मेरी धुर दी लै तालीम, चार वरनां करी पढ़ाईआ। सच दवारा दस्स अज़ीम, आलीज़ाह दिता दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं भविख्त दा लेखा लिखदे आए कदीम, जो कुदरत दा मालक रिहा दृढ़ाईआ। जे सारे करो तसलीम, निउँ के सीस दयो झुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल तेरे असीं अज़ीज़, बाले नढे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म प्रगटाईआ। गुर अवतार कहिण पैगम्बर सानूं मन्ज़ूर, खुशीआं नाल सुणाईआ। दर ठांडे तेरे हज़ूर, हज़रत सीस निवाईआ। कलयुग अन्त बदल दस्तूर, सतिजुग सच्चा राह चलाईआ। झगड़ा रहे ना ममता कूड़, कूड़ वासना दे गवाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, धुर दा नाम इक्क जणाईआ। तेरे चरणां दी सारे मंगण धूढ़, गीत गोबिन्द दे अल्हाईआ। धुर दा जोती बख्श नूर, अन्ध अन्धेर दे गवाईआ। अमृत रस दे सरूर, तृष्ना तृखा दे बुझाईआ। हंगता गढ़ तोड़ ग़रूर, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। असीं सारे तेरे मशकूर, शुक्रिए विच

खुशी बणाईआ। मूसा कहे जिस तरह मैनूं नूर दिता उत्ते कोहतूर, ज़हूर विच आपणा आप वखाईआ। ईसा कहे मैनूं होणा ना पए मजबूर, मजबूरी पिछली देणी कटाईआ। मुहम्मद कहे हुक्म बदलणा तेरा दस्तूर, दस्त बदस्त सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो फेर ना करयो रोसा, मैं सब नूं दयां समझाईआ। मैं कोई चिल्ला तीर नहीं रखणा गोशा, कमान टंक कंध ना कोए उठाईआ। मैं कोई वण्ड वण्डण नहीं जाणा लोक परलोका, हिस्सा मज़्हब ना कोए बणाईआ। मैं कोई सिफ्त वाला नहीं सुणाउणा सलोका, अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ओम अंक मेरे नाम सिफ्तां विच वड्याईआ। एसे कारण झगड़ा प्या लोका, अन्तर सब दा दिता हिलाईआ। प्रेम प्यार तों कर के खोखा, खुदी विच दिता लड़ाईआ। एसे कारण मैनूं आपणे जाण दा मिल्या मौका, मंग तुहाडे कोलों मंगाईआ। जे अजे वी तुहाडे विच्चों जाण दा रखे कोई शौंका, सिर देवां हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्क दूजे नाल हौली हौली करन सलाह, बिना रसना जेहवा बत्ती दन्द रहे सुणाईआ। दस्सो साडे विच्चों केहड़ा बणे मलाह, बेड़ा जगत जहान बन्ने लाईआ। कवण बणे सहा, सहायता करे थाउँ थाँईंआ। कूड़ी क्रिया दए गवा, सच सुच दए प्रगटाईआ। तेई अवतार नैण रहे शरमा, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद मूँह विच उंगलां रहे पा, तोबा तोबा तोबा कर जणाईआ। निरगुण नानक वेखे अक्ख उठा, लोचण आपणा इक्क खुल्हाईआ। इशारे नाल गोबिन्द दिता समझा, उठ मेरे नूर रुशनाईआ। गोबिन्द योद्धा बांका अग्गे गया आ, सब नूं रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मैं सब तों छोटा तुहाडा निक्का भ्रा, पिता पुरख अकाल मनाईआ। तुसीं भरावो क्यों राम आपणा आप आए अख्वा, काहन बण के गोपीआं जगत हंढाहीआ। क्यों वण्डां आए पवा, इष्ट जगत बदलाईआ। मूसे जे तूं तक्कया जल्वागर खुदा, क्यों आपणी दस्सी चतुराईआ। ईसा जे फाँसी आयों लटका, क्यों खुदा नूं खुद आपणा रूप समझाईआ। मुहम्मदा जे चार यारी आयों जणा, दाअवा चौदां तबक वण्डाईआ। चौदां सदीआं दी हद्द बणा, आपणा आप ल्या मिटाईआ। गोबिन्द किहा मैं नानक नूर कर रुशना, सब नूं दिता समझाईआ। पिता पुरख अकाल आप बणा, सेवक हो के सेव कमाईआ। जेहड़ा मैनूं कहे खुदा, परमेश्वर कर के ढोला गाईआ। ओस नूं देवां उह सज़ा, चुरासी विच्चों ना कोए छुडाईआ। इक्को पुरख अकाल दी मंगदा रिहा दुआ, इक्को ओट तकाईआ। हुण तुसीं सारे कठ्ठे होए आ, बैठे थाउँ थाँईंआ। कोई उठो बल धारो कलयुग विच्चों सतिजुग करो रवां, मार्ग सति वखाईआ। कोई प्रभ दा नाम दस्सो जा के नवां, जिस दी ग्रन्थ देण ना कोए गवाहीआ। मैं सब नूं पुरख अकाल दे साहमणे कहवां,

परदा ओहला ना कोए रखाईआ। सच करनीउँ कदे ना भवां, एह सिख्या मेरे अंदर आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द प्रभ दे छोटे सुत, सुत्तयां दे जगाईआ। असीं सारे बड़े खुश, खुशीआं विच रहे जणाईआ। आपणे आपणे नाम कलमे वल्लों असीं हो गए चुप, अग्गे करे ना कोए पढ़ाईआ। दीन दुनी दा मेट जा के दुःख, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। ओधरों बोल प्या प्रभ अबिनाशी अचुत, परवरदिगार नूर खुदाईआ। सारे गोबिन्द नूं मिलो जफ्फी पा के घुट्ट, प्रेम नाल गले लगाईआ। मुक्खों आखो ईसा मूसा मुहम्मद दीनां मज़्बां दी कढ्ढ दे जा के फुट्ट, झगड़ा द्वैत रहे ना राईआ। विकार कुड़यार अंदरों कढ्ढ कुट्ट, खण्डा शब्द नाम खड़काईआ। झगड़ा रहे ना काया पंज तत सब दी इक्को मौले रुत्त, रुत्तड़ी आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ तेरा मैं इक्क भुयंगी, भूमी उपर सोभा पाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख नंगी, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। मन वासना होई गंदी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सच मिले ना किसे अनन्दी, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्ब ना मिटे वण्डी, झगड़ा ज़ात पात ना कोए गवाईआ। मन कामना फिरे पखण्डी, भज्जे वाहो दाहीआ। साचे हुक्म दी समझे ना कोए पाबन्दी, भय सिर ना कोए रखाईआ। किरपा कर सूरे सरबंगी, प्रभू तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं खेल वेखां विच वरभण्डी, ब्रह्मण्डी खोज खुजाईआ। इक्को चाढ़ के तेरे नाम दी रंगी, रंगत अगली दयां वखाईआ। दुरमति मैल कढ्ढ दुर्गन्धी, सुगंधी सच नाम समाईआ। इक्को ढोला दस्स के छन्दी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करां पढ़ाईआ। दीनां मज़्बां दी निक्की निक्की डण्डी, डण्डावत सिक्खो पुरख अकाल सच्चे शहिनशाहीआ। जिस दे दवारे कदे ना होवे तंगी, दुःख दर्द ना लागे राईआ। देवे वस्त सदा अणमंगी, देवणहार बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मैनूं नज़री आ गया कुछ लेखा लहिणा देणा छब्बी पोह देणा गुरमुख पंझी, पंजे पंज पंज पंज वार उठाईआ। एह धार नर निरँकार ओस वेले मेरे नाल गंढी, जिस वेले माछूवाड़े डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कहे वेख्यो गुर अवतार पैगम्बरो मेरा तत ना समझयो वजूद, हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोए वखाईआ। मेरा वसेरा विच महबूब, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस दा सब तों निराला जोत अकाला कलबूत, कलमयां तों परे करे पढ़ाईआ। मैनूं एथे ओथे दो जहानां रखे महिफ़ूज़, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हुण मैं कोई नहीं जा के पढ़ना हज़ारा दरूद, कलमयां वाला कलाम ना कोए सुणाईआ। जिधर वेखो ओधर सदा मौजूद, मुफ़लिसां पार कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, सतिजुग साचा दयां वखाईआ। इक्को डंका वजा के चारे कूट, नाम

निरँकारा दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरा मालक इक्क गोसाईंआं। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं खेल दस्सां अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। साचा हुक्म वरते विच संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरा संग निभावे आप करतार, कुदरत दा मालक करनी दा करता करीम कादर नूर खुदाईआ। मैं लेखा लिखाउणा भेव खुल्हाउणा परदा लाहुणा विच संसार, संसारी भण्डारी जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द की दरसावेंगा, सच दे समझाईआ। गोबिन्द कहे मैं तुहाडे खोल्हणे उह नैण, जिन्हां नैणां तों परे बेपरवाह नज़री आवेगा। इक्क प्रभू दे नाम दी दस्स रसायण, दुखियां दुःख दर्दीआं दर्द एको एक मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरतावेगा। गुर अवष्तार पैगम्बर कहिण गोबिन्द तूं दस्स दस्सणा की कुछ, थोड़ा जेहा दे समझाईआ। गोबिन्द कहे जिस ने नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तुहानूं दे के काया वाले बुत्त, बुत्तखानयां विच दिता भवाईआ। प्यार नाल विहार नाल मैनूं बणा के सुत, सुत्तयां दिता उठाईआ। हुण झोली पा के मेरी सब कुछ, कच्छू मच्छू हैरान सारे दिते कराईआ। तेई अवतार पैगम्बरो भावें तुसीं सारे जावो रुठ, मैं सब नूं दिता समझाईआ। मेरा पुरख अकाल दीन दयाल मेरे उत्ते रिहा तुठ, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। हुण मैं नहीं रहिणा चुप, रहिण देणा नहीं अन्धेरा घुप, नूर नूर देणा चमकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो सम्मत शहिनशाही दो तों छब्बी पोह नूं पहली वार हुण खुश, खुशीआं दा रंग देणा वखाईआ। इस तों पिच्छो सृष्टी दे मुख विच पैणा थुक्क, दुक्खां विच दए दुहाईआ। आप फेर जाणा लुक, बिन गुरमुखां नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की ओस वेले असीं नेड़े आईए ढुक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द किहा जे मेरे कोल आ के शेर वांगू जाणा बुक्क, फेर लैणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गोबिन्द कहे हुक्म चंगा कि फ़रमान, मैनूं दयो समझाईआ। सतिगुर शब्द चंगा कि तत्तां वाला इन्सान, केहड़ा सतिगुरू लओ मनाईआ। प्रभ दा दर्शन चंगा कि पढ़ना ज्ञान, अक्खरां नाल रखाईआ। लैणीआं टक्करां प्रभ दे भेजे लभ्भणे कि मिलणा भगवान, एह वी देणा सुणाईआ। वस्त लैणी कि खोजणी दुकान, हट्टो हट्ट फोल फोलाईआ। मंजल लैणी कि बन्द करनी ज़बान, कन्नां विच उंगलां पा के अन्धेरे विच अन्धेरा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैगम्बर दस्सो यार, चार युग दा पिच्छे ध्यान लगाईआ। किहड़ी चंगी सब तों कार, करनी दयो दृढ़ाईआ।

की जंगलां विच्चों लभ्भे निरँकार, पहाड़ां पर्बतां उत्ते मिले गोसाईंआ। की थलां विच दिसे दीदार, कि जलां विच जोड़ जुड़ाईआ। की मन्दिर मस्जिद शिवदवालयां मठ्ठां विच करे प्यार, कि गुरूदवारयां विच गोदी रिहा उठाईआ। की तटां किनारयां उत्ते दुरमति मैल रिहा उतार, निर्मल रूप बणाईआ। की शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां विच्चों होवे ज़ाहर, ग्रन्थां विच्चों प्रगट हो के आपणा रंग वखाईआ। सारे दस्सो बोल बिना ज़बान, कलाम आपणी आपणी जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तोबा साडी उह मालक सब दा अमाम, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। असीं चार जुग दे ओहदे गुलाम, सेवा कर कर झट लँघाईआ। जुग जुग साडे हथ्थों खोह के इंतज़ाम, इक्क तों दूजे दूजे तों तीजे तीजे तों चौथे हथ्थ फड़ाईआ। आपे सानूं घल्ल के आपे करे बदनाम, अचरज खेल रचाईआ। आपे कलमा नाम दे के सुणाए आपणी कलाम, आपे करे पढ़ाईआ। आपे सजदा दस्स सलाम, सीस दए झुकाईआ। असीं हार थक्के, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ बणा अक्के, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान अंदर ढक्के, परदा पत्थरां इट्टां वाला पाईआ। दरोही जे मिल्या ते मिल्या आपणे पते, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग अन्त असीं हो गए हके बक्के, हैरानी साडे अन्तर आईआ। पता नहीं किहड़े दवारयों आ के जन भगत बणा लए आपणे सके, सज्जण आप अख्वाईआ।

३०० २० साचा मार्ग इक्को दस्से, तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गाईआ। मुसीबत विच किसे ना घत्ते, पढ़न लिखण दा लेखा दिता मुकाईआ। शब्द तीर निराले अणयाले नाल फट्टे, फट्टड़ कर के पट्टी आपणा नाम बंधाईआ। सच पुछो गोबिन्द दे शरीर बदले शब्दी रूप बण के आया ओसे दे वटे, वटांदरा समझ किसे ना आईआ। विचोला विच कोई नहीं जेहड़ा सौदा करावे नाल टके, कीमत जगत वाली पाईआ। हिसाब किताब नहीं कोई जमअ तफ़रीक लेखा विच बटे, कसर नाल कसर ना कोए उडाईआ। आपणी खेल आपणे हथ्थ रखे, अगला भेव अभेद किसे ना दस्से, सारे गुर अवतार पैगम्बर दर ते कर के इक्ट्ठे, इक्ट्ठयां कोलों परदा अग्गे पाईआ। पोह छब्बी सब ने लै के आउणे चार जुग दे पिछले सांभे होए भत्ते, जेहड़े जन्म तों पहलों गुर अवतार पैगम्बरां दित्ते छकाईआ। कुछ लेखा दस्सणा त्रै दत्ते, दत्तार्तें हाल सुणाईआ। कुछ हुक्म मिलणा अगले कत्ते, कत्तक कटक नाल वड्याईआ। कुछ दर्शन सिँघ ने हथ्थ विच रखणे तिन्न गत्ते, नौ अठारां वण्ड वण्डाईआ। लाल सिँघ ने ल्याउणे पंज टके, टांक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पंझी सिँघ आउणे नठ्ठे, नाँ इक्की पोह दृढ़ाईआ। छब्बी पोह हरि संगत नौ सौ चुरानवे कदम भगत दुआर तों पिच्छे कर इक्ट्ठे, वक्त चार जोड़ जुड़ाईआ। किशन सिँघ ने हथ्थ विच रखणे निक्के निक्के पंज वट्टे, पुरख अकाल दे उत्तों देणे सुटाईआ। गुरमुख सिँघ ने कपड़े पाउणे फटे, रविदास आपणा

३०० २०

रूप बदलाईआ। अमरजीत धागा पा के सूई दे विच नक्के, साढे तिन्न हथ्थ लम्बा लैणा कराईआ। गुरमेज सिँघ चौदां बादाम लै के पक्के, पक्की गंढु लाल टाकी नाल रखाईआ। तेज भान लिख के छे खक्खे, सिर पगड़ी उत्ते सुहाईआ। सुरिंदर सिँघ मस्तक धूढ़ ला के घट्टे, पंज निशान लैणे उपजाईआ। सरूप सिँघ दो सेब कट के अद्धे, टुकड़े गल लैणे लटकाईआ। मंगल सिँघ रंग के कन्नी झग्गे, चार उंगलां नीली देणी वखाईआ। मोता सिँघ नंगी पैरीं नठ्ठे, कदम पंझी पन्ध मुकाईआ। गुरदर्शन वस्त्र लै के चिट्टे, चंगे गोबिन्द चरण भेंट चढ़ाईआ। जसबीर कौर सवा रती केसर रखे, सपुत्री प्रीतम सिँघ अख्वाईआ। हरबंस कौर खण्ड दे मार के तिन्न फक्के, मिठ्ठा मुख दए सुहाईआ। तारा सिँघ ढाई कदमां रविदास नूं अग्गे धक्के, हथ्थ सिँघ गुरमुख पिठ टिकाईआ। बख्शीश सिँघ लै के चढ़ू वट्टे, गंढी हलदी पंज रखाईआ। सुरजीत सिँघ नौ ग्लास पाणी झट्टे, हथ्थ चुली नाल भराईआ। अंग्रेज़ सिँघ चढ़ के उत्ते यक्के, ढोले याद विच गाईआ। चेला सिँघ पहन के कपड़े अच्छे, नौ कदम पुट्ठे पैरीं चले वाहो दाहीआ। आसा सिँघ लै के चिट्टे वच्छे, दोहां नाल धूढ़ दए धुमाईआ। कश्मीर कौर कच्चा तन्द इक्क कटे, पिछले जन्म दा छोटा वीर नाल सुहाईआ। पाल सिँघ कापी लै के हथ्थे, नवां ढोला लए गाईआ। अमीर चन्द गोले नौ छड्डे, ज़मीन उत्तों असमान चढ़ाईआ। दलीप सिँघ प्रीतम सिँघ जरनैल सिँघ जोअ के तिन्न गड्डे, नथ्थां हथ्थ विच अटकाईआ। सुरजन सिँघ अमरीक सिँघ सौ सौ मीटर चुक्क के सिर डग्गे, सौ सौ जन्म दा लेखा लैण गवाईआ। खुशीआं वाले अग्गे आउण नठ्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। खेल सारे होणे इक्ठे, सुण के भुल्ल कोए ना जाईआ। हरचरण फोटू नौ खिच्चे, नौ मोख नाल वड्याईआ। इक्की कौडीआं भर के नाल सिक्के, सौदागर सिँघ भेंटा दए चढ़ाईआ। तिन्नां दातरीआं दे दन्दे कर के तिक्खे, सुरजीत सिँघ बटाल्यों लै के आईआ। माझा मालवा दवाबा जम्मू इक्क दूजे नूं प्यार नाल खिच्चे, मुहब्बत सांझी दए बणाईआ। साहिब सतिगुर फिरे पिच्छे अग्गे, विचे विच आपणा आप घुंमाईआ। ऊधम सिँघ काला धागा बन्नृ के गिट्टे, तेड़ कच्छहिरा देणा वखाईआ। सब तों शौकीन गुरमुख मस्सा सिँघ घट्टे विच लिटे, धूढ़ मस्तक नाल छुहाईआ। एसे कारण हरि संगत इक्को वार पुरख अकाल दी चरणी विके, कीमत इक्को जेही पाईआ। पार करा के वड्डे निक्के, बिरध बालां दए वड्याईआ। जन भगतो तुहाडे जन्म जन्म दे कर्म कर्म दे लेखे कर के चिट्टे, साफ़ सुथरे दयां बणाईआ। तुहानूं जम्मण वाली माँ कदे ना पिट्टे, नेत्र नैण नीर ना कोए वहाईआ। तुसीं ओस थाँ टिके, जित्थे टकयां वाला गुरू नज़र कोए ना आईआ। ओस दी गोदी लिटे, जित्थे लिटां वाला ठहर कोए ना पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दे गुरमुखो इक्को वार कढ्ढ के सिट्टे, सिट्टेबाज़ी जगत तों लैणा बचाईआ। तुहाडे

लेख किसे कलम शाही नाल नहीं लिखे, धुर दे हुक्म नाल बदलाईआ। क्यों तुसीं मेरी सिख्या इक्को सिक्खे, नाते जगत वाले तुड़ाईआ। तुसीं अग्गे ते मैं तुहाडे पिच्छे, सेवा कर के खुशी मनाईआ। फेर मुड़ना नहीं किसे पिच्छे, मातलोक ना फेरा पाईआ। अक्खां बन्द ना जाणयो दो जहान ऐवें पए दिसे, निक्की जेही खेड नज़री आईआ। तुहाडा नूर नुराना सोहणा दिसे, दहि दिशा करे रुशनाईआ। तुसीं गुरमुखो प्रभू प्रेम प्यार दी चढ़ गए चिखे, जगत चिखा ना कोए जलाईआ। जुग चौकड़ी लभ्भदे रहे जिसे, जिस्म तों बाहर इस्म आपणा दए वखाईआ। तुहानूं नहीं पता किहड़ी धार नाल तुहानूं अंदरों खिच्चे, रसना वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। खेल कर के तुहाडे विचे विचे, विचोला हो के आप जुड़ाईआ। लेखे ला के लहू मिझे, बूंद रक्त दए वड्याईआ। एह रमज़ केहड़ा बुज्झे, चार युग अग्गे हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कोई नाम भगती पूजा पाठ सिमरन दे लैण नहीं आया भुग्गे, मेहर नज़र नाल नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ।

३०२
२०

★ २ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्मी काज, चार जुग तों वक्खरी धार समझाईआ। सतिजुग साचे सति धर्म दा वड्डा रिवाज, चार वरन अठारां बरन इक्को घर कुड़माईआ। सच प्रीती धुर दी भगती नाम अनमुल्ला देवां दाज, जगत वासना कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। साची नईआ धुर दे नाम चढ़ा जहाज़, जीवण जगत पार लँघाईआ। आत्म परमात्म दस्स सच समाज, तन माटी ख़ाक मात संग बणाईआ। नाम अगम्मी सुणा इक्क आवाज़, सोई सुरती शब्द उठाईआ। हुक्मे अंदर खोल्ह के राज़, परदा ओहला दयां चुकाईआ। जन भगतां साची साजन साज, साजण हो के दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म रिहा वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देणा उह अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। निरगुण चाढ़ के नूरी चन्द, जोती जोत करां रुशनाईआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म हँ, पारब्रह्म देणा मिलाईआ। नाता जोड़ के सृष्टी तन, मन आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुखां बेड़ा बन्न्ह, खेवट हो के कंध उठाईआ। नाम भण्डारा दे के धन, धनी साचे दए वखाईआ। हुक्मे अंदर बणा के जन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी अगम्मी धार, धरनी धरत धवल जुग जुग आप चलाईआ। हुक्म देवे नर निरँकार, शाह पातशाह शहिनशाह धुर दरगाहीआ। सतिजुग साची करनी कार, कुदरत कादर हुक्म सुणाईआ।

नौ खण्ड दा इक्क बिवहार, दीप सत्त वज्जे वधाईआ। मार्ग दस्स अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए समझाईआ। बिन सतिगुर शब्द कोई ना लावे पार, जगत खाणी खहिड़ा ना कोए छुडाईआ। साचा होवे ना कोए मंगलाचार, गीत गोबिन्द ना कोए अलाईआ। धुर दा हुक्म सच्ची सरकार, पुरख अकाल आप दृढ़ाईआ। भगत भगवन्त दा खेल अपार, बुद्धी जगत ना कोए समझाईआ। समाज विच्चों मंज़ल दुष्वार, रिवाज विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा गुरमुख इक्को दूल्हा, दुलन धुर दी प्रीती नज़री आईआ। लहिणा देणा पूरब चुकावां मूला, पिछला लेखा झोली पाईआ। भगत भगवान दा आदि जुगादी इक्क असूला, गुर अवतार पैगम्बर सके ना कोए बदलाईआ। जगत खेल सृष्टी दृष्टी विच असूला, हुक्मे अंदर वण्ड वण्डाईआ। बिना हरि किरपा हरि मिले ना कन्त कन्तूहला, अनडिठड़ा रंग ना कोए चढ़ाईआ। अबिनाशी करता दीन दयाल मेहर अंदर देवे आपणा झूला, हुलारा एकँकारा इक्को इक्क वखाईआ। चरण प्रीती बख्श के धूला, धूढ़ी ख़ाक दए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे नव नौ चार पिच्छो जन भगतां जोड़ जोड़ां, दो जहान मिले वड्याईआ। आपणी पूरी करां लोड़ा, लोड़ींदे सज्जण वेख वखाईआ। बाकी जवाब मिले कोरा, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुरमुखां आपणे हथ्थ रखे डोरा, डोरी शब्दी तन्द बंधाईआ। हरिजन वेखे बांका छोहरा, सूरबीर सोभा पाईआ। जिस दा नाता जुड़या मोरा तोरा, मैं ममता गया मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शे इक्क सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा हुक्मी इक्क मिलाप, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। सांझा दस्स के जाप, तूं मेरा मैं तेरा करी पढ़ाईआ। सतिजुग दा मार्ग थाप, थापी जन भगतां पुश्त पनाह लगाईआ। नाता जोड़ के धुर दा साक, सज्जण साजण वेख वखाईआ। निरंतर दोहां दी इक्को ज़ात, ब्रह्म पारबहम दृढ़ाईआ। जो गुर अवतार पै.गम्बर गए आख, संदेसे हुक्मे अंदर दृढ़ाईआ। सो पूरा करे वाक्, वाकिफ़कार धुरदरगाहीआ। चार वरन अठारां बरन इक्क दवारे वसे साथ, सगला संग बणाईआ। जिस आशा नूं रख के गया त्रैलोकी नाथ, रामा वशिष्ट नाल सलाह पकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करदे गए झाक, नैण नकाब विचों उठाईआ। नानक निरगुण सरगुण कहि के गया साख्यात, बिन हरि कन्त ना कोए वड्याईआ। गोबिन्द सब नूं दे जवाब, डोरी पुरख अकाल हथ्थ फड़ाईआ। सो लहिणा देणा लेखा चुकावे बण के माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। साची वस्त अमोलक देवे रास, भण्डारा धुर दा इक्क वरताईआ। मुहब्बत विच प्रीती अंदर प्यार कर के दासी दास, सेवा सेवक नाल जुड़ाईआ। सांझा इक्को गृह वास, निज घर वजदी रहे वधाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बख्श इक्क धरवास, धर्म दा धर्म दए बणाईआ।

★ २ पोह शहिनशाही सम्मत २ अर्जन सिँघ जगजीत सिँघ सलीमपुरा ज़िला हुश्यिारपुर ★

शब्द गोबिन्द कहे खेल होवे महाना, महिमा गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत जगे दो जहानां, नूर नुराना करे रुशनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पहर के बाणा, बानी हो के वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से के गाणा, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा ओहला दए उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दस्से इक्क तराना, नाम निधाना सच दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन परवाना, खुशीआं अंदर खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे प्रभ अगम्मी दस्से गीत, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी बदल के रीत, धुर दा मार्ग दए वखाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, मस्त खुमारी दए चढ़ाईआ। मानव जाती बदल के नीत, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। अग्नी तत कर के ठांडा सीत, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। सच दुआर बख्श प्रीत, प्रीतम इक्को दए मिलाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। साचा कलमा दस्स हदीस, हाज़र हो के करे पढ़ाईआ। साचे नाम दी कर तबलीक, तमअ तृष्ना दए गवाईआ। आसा मनसा गुर अवतार पैगम्बरां पूरी कर उम्मीद, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे साचा उपजे इक्क जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लावे नाअरा, गुर अवतार पैगम्बर खुशी मनाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां लग्गे प्यारा, दो जहानां सोभा पाईआ। धरनी धरत धवल मिले सहारा, धौल परदा दए उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत बन्ने धारा, धर्म दुआर इक्क वखाईआ। अमृत रस बख्शे अगम्म फुहारा, निरवैर निराकार निरँकारा आप उपजाईआ। गृह मन्दिर दस्स इक्क दवारा, परदा ओहला दए चुकाईआ। ठाकर स्वामी मेल गिरवर गिरधारा, परवरदिगारा दस्से जलवा नूर खुदाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पतिपरमेश्वर कर प्यारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सति सरूपी वजा इक्क नगारा, सोई सुरती दए उठाईआ। भेव अभेदा खोल्हे खोल्हणहारा, ख़ालक ख़लक दए जणाईआ। साची सखियां गृह मन्दिर अंदर होवे मंगलाचारा, नाद वज्जे बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया मिटे विच संसारा, सच सुच्च दए प्रगटाईआ। अन्ध अन्धेर ना रहे गुबारा, गुरबत मिटे जगत लोकाईआ। परवरदिगार मिले सांझा

यारा, पुरख अकाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क सुहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे साचा खेल दस्सां अगम्म, ख़ालक ख़लक पलक दए खुल्हाईआ। तृष्ना कूड़ मेट के तम, तमो रजो सतो वेख वखाईआ। हरख़ सोग मिटा के ग़म, चिन्ता अंदरों बाहर कढाहीआ। लेखे ला के पवण स्वामी दम, दामनगीर हो के पल्लू लए फड़ाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्मदृष्टी दए बदलाईआ। घर साजण मिले हम, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ लोड़ींदा लए जुड़ाईआ। निहकर्मी हो के करे आपणा कम्म, कर्म कांड दा लेखा दए चुकाईआ। सृष्ट सबाई दे के इक्को नाम, नमस्ते धुर दी दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अगम्मी सुणा के राग साचे कन्न, करनी दा करता परदा दए उठाईआ। संसार सागर विच्चों बेड़ा देवे बन्न्ह, नईआ नौका आपणी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। गोबिन्द शब्द कहे दीन दुनी बदल जावे तकदीर, तबअ सब दी वेख वखाईआ। शरअ रहे ना कोए ज़ंजीर, शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। चार वरनां इक्को दए तालीम, तुलबे सारे लए बणाईआ। दीन मज़्हब वण्ड ना रहे तक्सीम, हिस्सा दिसे ना जगत लोकाईआ। भेव खुल्हावे मालक आदि कदीम, कुदरत दा कादर दया कमाईआ। महल अटल वखा के इक्क अज़ीम, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द खेल अवल्ला, अल्ला अलाह दए गवाहीआ। लेखा जाणे पुरख अकाल इकल्ला, दूजा संग ना कोए रखाईआ। पावे सार जलां थलां, समुंद सागर फोल फुलाईआ। फेरा पाए विच झल्लां, डल्लां गारां खोज खुजाईआ। कर के वल छला, अछल छल आपणी चाल चलाईआ। दीपक जोत हो के बला, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। शब्दी धार अंदर रला, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। परमात्म हो के आत्म फड़ाए पल्ला, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। सच संदेस नर नरेश आपणे हुक्म अंदर घल्ला, धायल करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे साचा धर्म दा होवे कानून, जगत धार ना कोए दृढ़ाईआ। साचे नाम दा होवे मज़मून, करे हक पढ़ाईआ। सतिजुग बाला नढ्ढा उठावे मासूम, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणा हुक्म दस्से ना मालूम, भेव अभेदा दए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों हूंझ, हुजरा हक दए वखाईआ। नीती रहे ना कोए दूज, दुतीआ भाउ ना कोए बणाईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार सृष्टी दृष्टी अंदर लए बूझ, बुझया दीपक आप जगाईआ। सच वखा के मंज़ल हक मक्सूद, महबूब आपणा दए मिलाईआ। चार कूंट दहि दिशा दिसे मौजूद, महिफ़ल प्रेम प्यार बणाईआ। शब्दी

धार दे सबूत, साबत सूरत दए दिड़ाईआ। लेखे लावणहारा तन वजूद, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं सब दा बणना वारस, लेखा इक्को घर बणाईआ। कदीम दी याद विच भारत, भावना सब दी खोज खुजाईआ। साचे नाम दी बदल के इबारत, अक्खरां नाल अक्खर देणे प्रगटाईआ। इक्को वार करा के ज़िआरत, जज़ीए टैकस तों लैणे छुडाईआ। जन भगतां सच प्रेम दी बख्श ल्याकत, मूर्ख मूढ़ मुग्ध लैणे तराईआ। आत्म परमात्म दस्स रफ़ाकत, निफ़ाक अंदरों देणा कढाहीआ। मन मलेछ ना रहे मिलावट, प्रदेश देश देणा वखाईआ। चार वरनां इक्क डण्डावत, बन्दगी धुर दी देणी समझाईआ। जित्थे मिले नाम सख़ावत, बख़्शिश रहमत झोली पाईआ। जगत वासना रहे ना कोए अलामत, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी वेख वखाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मेरा इक्को इक्क होका, हुक्म धुर दा इक्क जणाईआ। श्री भगवान दा सच सलोका, सोहला सब नूं रिहा दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म मिलण दा मौका, पूरब लेखा दए मुकाईआ। भाग लगाए काया माटी कोठा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जन भगत रहे कोई ना सोता, सुत्तयां दयां उठाईआ। पूरब जन्म मेट के रोसा, रुठ्यां लवां मनाईआ। प्यार दस्स के परम पुरख दे मोह दा, मुहब्बत
३०६ इक्को नाल बंधाईआ। खेल कर के आत्म परमात्म छोह दा, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जाप दस्स के सोहँ सो दा, ३०६
२० सुरती शब्द विच समाईआ। कर प्रकाश आपणी लो दा, लोयण धुर दा दिता खुल्ह्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २०
आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं दस्सणा ढोला एक, एकँकार दयां दृढ़ाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर रखण टेक, निउं निउं लागण पाईआ। जुग चौकड़ी बदले भेख, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। कलयुग देवे हक संदेस, धुर फ़रमाना हक सुणाईआ। मालक बण के नर नरेश, दो जहानां वेख वखाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन ना वण्ड वण्डाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी खोल्हे भेत, अभेव दए दृढ़ाईआ। जन भगतां कर के हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए कोटन कोटि केती केत, कितयां विच फेरा पाईआ। इशारा कर के गोबिन्द दस दस्मेस, दहि दिशा गया दृढ़ाईआ। सो मालक रहे हमेश, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सदी चौधवीं जोती जाता पुरख बिधाता निराकार धार के वेस, भेख आपणे विच छुपाईआ। सच सुनेहड़ा देवे संदेश, हुक्म हुक्मराना आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे वेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्ह्हाईआ। भाग लगा साचे देस, वज्जी हक वधाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ खेलया खेल वार अनेक, अनक कल धारी आपणा फेरा पाईआ। कलयुग

अन्त श्री भगवन्त सम्बल वस्या धुर दे देस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती शब्दी धार करे हेत, हितकारी हो के निरँकारी हो के निराकारी हो के निराधारी हो के पैज संवारी हो के आपणी कार कमाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत अमरीक सिँघ दे गृह पिण्ड सराईं ज़िला हुश्यिार पुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ कलयुग क्रिया साफ़ कर कूड़ा, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म ज्ञान दे मूर्ख मुग्ध मूढ़ा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्क सुणाईआ। चरण प्रीती धुर दी नीती सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बख्श चरण कँवल धूढ़ा, मस्तक टिक्का एकँकारे इक्को दे लगाईआ। अमृत रस निजर झिरना सति सतिवादी बख्श सरूरा, साहिब स्वामी अन्तरजामी तृष्ना भुक्ख दे मिटाईआ। निरगुण जोत बिन वरन गोत निराकार निरँकार बख्श आपणा नूरा, परवरदिगार सांझे यार जलवा आपणा कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वाक् भविख्त कर पूरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। जन भगतां साचे सन्तां सूफ़ी फ़कीरां नाम अमोला रंग चाढ़ गूढ़ा, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मर्द मर्दान श्री भगवान योद्धा बण सूरा, सूरबीर बेनज़ीर आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी जगत वासना ममता मोह कीता मजबूरा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गृह गृह करे लड़ाईआ। धुर दे मालक ख़ालक प्रितपालक पन्ध मुका दूरन दूरा, नेरन नेरा हो के आपणा रंग रंगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित समरथ स्वामी हाज़र हज़ूरा, हज़रत हो के परदा ओहला दे उठाईआ। साचा नाद सुणा आपणी तूरा, तुरीआ तों परे तुरत आपणा मेला लै कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिगुर शब्द मंग मंगाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ अमरीक सिँघ दे गृह पिण्ड सराईं ज़िला हुश्यिारपुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ पारब्रह्म अगम्मी ठाकर, गहर गम्भीर तेरी ओट रखाईआ। दीन दुनी वेख गहरा सागर, जगत वासना डुब्बी विच लोकाईआ। किरपा निधान किरपा कर भाग लगा काया गागर, साढे तिन्न हत्थ भेव आपणा दे खुल्हाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल अंदरों बाहरों दे धवाईआ। साचे नाम दा वणज करा सृष्ट सबाई बण सौदागर, सौदा इक्को हट्ट विकाईआ। तेरे प्यार दी हर हुजरे अंदर उपजे इक्क इबादत, मुजरे कूड़े दे मिटाईआ। अकल तों परे आपणी दस्स नाम वाली ल्याकत, गुणवन्त गुण आपणा दे दृढ़ाईआ। सच मुहब्बत हक तौफ़ीक बख्श इक्क

नयामत, नर नरायण प्रतख आपणी अक्ख उठाईआ। बिन तेरी मेहर किरपा कूड़ी क्रिया करे ना कोए ममानत, सृष्टी अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तुध बिन होए ना कोए सहाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ सराईं प्यारा सिँघ दे गृह ज़िला हुशियार पुर ★

सतिगुर शब्द कहे मेरे भगवान, आदि निरँजण तेरा राह तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट मेट निशान, निशाना आपणा दे समझाईआ। चार वरन अठारां बरन हिरदे अंदर तेरा ढोला गाण, फिरदे फिरदे तेरा राह तकाईआ। जगत वासना झगड़ा रहे ना कोए जहान, जहालत अंदरों दे कढाहीआ। तूं मालक काया मकान, काअबा घर दा दे वखाईआ। जित्थे दीपक जोती जगे महान, शब्द नाद करे शनवाईआ। अमृत रस मिले अगम्मा पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। झगड़ा रहे ना शरअ शैतान, मन चंचल ना कोए चतुराईआ। सच प्रेम दा दस्स इक्क विधान, विद्या तों परे कर पढ़ाईआ। तूं सब दा मालक एकँकार आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा गा के गए गाण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरि साजण तेरी बेपरवाहीआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ बलदेव कौर दे गृह कंधाला शेखा ★

सतिगुर शब्द कहे मेरे मालक पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दयाल दया निध ठाकर, आपणा फेरा लैणा पाईआ। जगत वासना सृष्टी विच्चों निकाल, काल महाकाल तेरे दर ते बैठे सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादी दो जहानां हुक्मरान, शाह सुल्ताना इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां देंदा रिहों दान, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग झोली आप भराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान हो मेहरवान, मिन्नत करके दर ठांडे सीस निवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा एका हुक्म कर प्रधान, प्रधानगी इक्को दे वखाईआ। तूं लख चुरासी सखियां दा परमात्म आत्म दा काहन, धुर दा दाता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ भजन कौर दे गृह पिण्ड बैरम पुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरे अग्गे मेरी अरज़, बेनन्ती कर के दयां सुणाईआ। सब नूं दिसे तेरी ग़रज़, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। सदी चौधवीं पूरा कर आपणा फ़र्ज़, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। कलयुग दिशा वेख होई असचरज, कथनी कथ ना सके राईआ। झगड़ा प्या ज़नो मर्द, मदद विच होए ना कोए सहाईआ। दीनां अनाथां दुखियां वण्डे कोई ना दर्द, भव सागर पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति पुरख निरँजण दर्द दुःख भय भंजन, सब तेरा राह तकाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ तरसेम सिँघ दे गृह पिण्ड खुरदा ★

सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब स्वामी, सुल्तान धुरदे दे वड्याईआ। तूं घट निवासी अन्तरजामी, लख चुरासी खोज खुजाईआ। तेरा नाम अगम्मा धुर दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। झगड़ा मुका दे चारे खाणी, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा पद इक्क निरबानी, निरवैर हो के देणा समझाईआ। मनुआ करे ना कोए शैतानी, शरअ तों लैणा बचाईआ। साची मंज़ल दस्स रुहानी, आत्म परमात्म नाता लैणा जुड़ाईआ। लख चुरासी झगड़ा रहे ना कोए दीवानी, पूरब लेखा देणा मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ तुध बिन करे ना कोए मेहरवानी, महबूब हो के मुहब्बत विच गोद ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सदा सदा सद चरण ध्यान लगाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान चन्द दे गृह मिरज़ा पुर धारीवाल ★

सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल वेख धरनी धरत धौल, धवल दए दुहाईआ। पूरा कर आपणा इकरार कौल, वेला वक्त दए गवाहीआ। सुरती अंदर सतिगुर हो के मौल, शब्दी आपणी रुत्त इक्क सुहाईआ। मानव जाती कर मानस रहे कुरलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स अगम्मा बोल, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। काया मन्दिर अंदर बिन जगत नगारिडुं वजा दे ढोल, डंका इक्को कर शनवाईआ। घट स्वासी वस कोल, ओहला परदा दे उठाईआ। माया ममता रहे कोए ना घोल, झगड़ा दूई रहे ना राईआ। तेरा भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, मुल्ला शेख़ समझ किसे

ना आईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक हमदर्दी हो के आपणा परदा खोल्ह, हक जनाब नकाब रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी तोल आपणे तोल, नाम कंडा सच तराज़ू एका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमाना दो जहानां वाली हो के आपे फोल, घट घट अन्तर निरंतर मंत्र आपणा नाम जणाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड रूपोवाली ज़िला हुश्यिार पुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ साची दे सिख्या, लख चुरासी जीव जंत आत्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक पा भिच्छया, निरंतर अन्तर मंत्र आपणा दे समझाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह धाम वखा इक्क अनडिठया, सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची दे दृढ़ाईआ। दीन दुनी जगत संसार दस्स मिथ्या, लोकमात थिर रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां धुर दे सन्तां पूरी कर इच्छया, माया ममता मोह कूड़ मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे परम पुरख करतार, करनी दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा कर एकँकार, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। नाम निधाना बोल सति जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म दे आधार, उदर अंदर विद्या दे पढ़ाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहे ना कोए विभचार, विकार पंच दुष्ट दूत ना कोए सताईआ। हर हिरदे उपजे तेरी धार, तूं ही तूं ही सारे राग अल्हाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म घर स्वामी ठाकर दे वखाल, परदा ओहला बण विचोला शब्दी धार चुकाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण वेख आपणे लाल, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो बैठे राह तकाईआ। साहिब स्वासी अन्तरजामी मुर्शद हो वेख मुरीदां हाल, बेऐब खुदा जल्वागर तेरी आस तकाईआ। सदी चौधवीं सृष्ट सबाई करे हाल हाल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलमा हक ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा देणा चुकाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ सुरिंदर सिँघ ख्याल सिँघ दे गृह रूपो वाली ज़िला हुश्यिारपुर ★

सतिगुर शब्द कहे किरपा कर अन्तिम वार एक, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। दीन दुनी बख्श आपणी टेक,

टिकटिकी इक्को नाम लगाईआ। सच मुहब्बत हरि मेहरवान महबूब हो के मुरीदां कर भेंट, मुर्शद हो के मुफ़लिसां पार लँघाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां खेवट खेट, नईआ नौका नाम इक्क जहाज़ देणा वखाईआ। निरगुण हो के सरगुण चार वरन अठारां बरन वेख, परदा ओहला बण विचोला आप उठाईआ। भाग लगा दया कमा लोकमात सम्बल देस, जिस घर रहें सदा हमेश, विष्नूं शेष सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दे चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ निरगुण हो के कट दे बिप्पता, सरगुण बख़्श माण वड्याईआ। इष्ट देव पुरख अकाल इक्क दा, एकँकार सब नूं नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना कूड़ी विख दा, विख अमृत दे बणाईआ। चार वरन अठारां बरन रूप बणा साचे सिख दा, सिख्या शब्द नाम पढ़ाईआ। नाता जोड़ आपणे हित दा, हितकारी हो के वेख वखाईआ। बिन तेरी किरपा मानस जन्म कोए ना जित दा, चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा लेखा गया लिखदा, सिफ्तां विच सिफ्ती कर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सति सरूप अगम्मी पित दा, पतिपरमेश्वर हो के पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ।

३११
२०

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ धन्ना सिँघ दे गृह पिण्ड कुल्लीआं ज़िला हुशियारपुर ★

पुरख अकाल दीन दुनी मेट दुःख, संसे रोग विच दिसे जगत लोकाईआ। अन्तर आत्म परमात्म दे साचा सुख, नाम निधाना झोली पाईआ। जगत तृष्ना माया ममता रहे कोई ना भुक्ख, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण निरगुण निरवैर हो के गोदी चुक्क, चार वरन अठारां बरनां विच्चों आप उठाईआ। दूई द्वैत शरअ शरायत ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंकां दस्स आपणी इक्को तुक, नाउं निरँकारा आप दृढ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे कोल सब कुछ, अनडिठ्ठी दौलत दे वरताईआ। कलयुग जीव बख़्श अपराधी अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती सब दी दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दवारे ठांडे मंग मंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ दीन दुनी उत्ते कर मेहर, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लहिणा देणा नबेड़, हर हिरदे विच्चों बाहर कढाहीआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ धुर दे खेड़, महल अटल इक्को सोभा पाईआ। नज़री आ दूर दुराडे नेरन नेर, निज आत्म परमात्म परदा दे उठाईआ। शब्द अगम्मी घर आ केहर, शेर भबक इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी दर तेरे ठांडे अलख जगाईआ।

सतिगुर शब्द कहे प्रभ दीन दुनी दस्स दे इक्को राह, एकँकार आप समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म वखा सच्चा राह, रहिबर हो के परदा लाहीआ। धुर दा नाम निधान श्री भगवान इक्क सुणा, अनसुणत सच संदेसा दे दृढ़ाईआ। कलयुग जीवां बख्श गुनाह, रहमत विच आपणा तरस कमाईआ। तैथों होए सारे बेवफ़ा, मन वासना भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सब दे अन्तर अमृत आबे हयात प्या, निजर रस धुर दा झिरना दे झिराईआ। तूं वाहिद अल्ला वाहिगुरू राम गॉड इक्क खुदा, खुदी दा झगड़ा दे चुकाईआ। जुग बदलणा तेरी सदा अदा, कलयुग विच्चों सतिजुग दे प्रगटाईआ। ग़रीब निमाणयां निरवैर हो के हो सहा, सहायता कर के अनायत नाम भण्डारा दे वरताईआ। हरि भगत सुहेले तैथों रहिण ना मातलोक जुदा, वक्खरा सत्थर ना कोए विछाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां कर किरपा लै मिला, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। तेरी जोत अंदर बिन वरन गोत जाण समा, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचा मन्दिर धुर दरबारा सचखण्ड दरगाह साची देणा वखा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पीर पैगम्बर सन्त भगत जुग चौकड़ी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सब तेरा तक्कण राह, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द रहे ध्या, ध्यान विच अन्ध अज्ञान बैठी जगत लोकाईआ।

३१२
२०

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ वतन सिँघ दे गृह सरींह पुर ज़िला हुश्यिारपुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ मेरी इक्क अरदास, आदि जुगादि दयां सुणाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख खेल तमाश, लोकमात ध्यान लगाईआ। सति वस्त रही किसे ना पास, ख़ाली दिसे जगत लोकाईआ। दीन दुनी होई उदास, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो रख के आए तेरी आस, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। किरपा कर के निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे गवाईआ। बिन तेरी किरपा कारज कदे ना होवे रास, रस्ता रहिबर बण के ना कोए समझाईआ। साडा रिहा ना किसे विश्वास, विश्यां विच वेखी लोकाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, बेअन्त बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। हउँ सेवक बालक नढ्ढे बचपन विच तेरे दासी दास, आदि जुगादि सेव कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बिन तेरे कारज आवे कोई ना रास, रख्या करे ना कोए थाउँ थाँईंआ। लख चुरासी जीव जंत लेखा वेख पवण स्वास, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे खोज खुजाईआ। साहिब स्वामी पुरख अकाले दीन दयाले चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप

दस्स आपणी गाथ, कथा कहाणी दो जहानी धुर दी बाणी दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल मेरे अन्तर आई हैरानी, खुशीआं नाल दयां दृढ़ाईआ। तेरे हुक्मे अंदर कलयुग खूब हंढाई जवानी, जोबन आपणा दिता वखाईआ। रंक राजानां अंदर भर के बेईमानी, शरअ शैतानी नाल वड्याईआ। चार जुग दा झगड़ा दीन मज़ूब दा प्या दीवानी, दाअवेदार गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे अख्वाईआ। तेरा जलवा दिसे ना किसे नुरानी, नूरो नूर ना कोए रुशनाईआ। चार जुग दी पिछली गाथा पढ़ पढ़ थक्के कहाणी, कहकहा लगा के सारे मुख रहे भवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे नाम दी होवे बदनामी, बदला दे जगत लोकाईआ। प्रगट हो शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। मंज़ल दस्स इक्को रुहानी, रूह बुत्त मिल के वज्जे वधाईआ। शब्द संदेसा दे अगम्म पैग़ामी, पैगम्बरां तों परे सिख्या दे समझाईआ। जगत जीव रहे ना कोए हरामी, कामी क्रोधी देणे खपाईआ। बिना तेरे किसे दी करनी ना पए गुलामी, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। आपणे मिलण दी मंज़ल दस्स आसानी, एहसान सिर ना किसे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा दो जहानी, जहालत कूड़ी क्रिया जगत दे गवाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत २ हेम सिँघ दे गृह पिण्ड डमाणा ज़िला हुशियार पुर ★

सतिगुर शब्द कहे सुण धुर दे ठांडे यार, परवरदिगार दयां दृढ़ाईआ। हुक्मे अंदर दीन दुनी कर दे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। वाहिद मालक धुर दे वाकिफ़कार, वाक्य वेख जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे दस्स के गए तेरी धार, निरगुण निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी धरत धवल रोवे धाहां मार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर सिरजणहार, सिर कदमां उत्ते टिकाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा निवार, नविरती प्रकृती दे कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर बिन रसना जेहवा करन पुकार, शब्दी धार कूक इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब कुछ तेरे अख्त्यार, बेअख्त्यारी दे मुकाईआ। दुनिया विच रहे ना कोई दुराचार, दुरमति मैल सब दी दे धवाईआ। स्त्री मर्द करे ना कोए विभचार, जगत कुड़यार नाता ना कोए जुड़ाईआ। साची सिख्या इक्क सिखाल, भगत सुहेले वेख आपणे लाल, दीन दयाल दया कमाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदल दे आपणी चाल, सोई सुरती दे उठाईआ। अमृत जाम दे प्याल, पीआ प्रीतम हो के दे वखाईआ।

सब दे सिर ते कूके काल, सज्जण मीत दिसे कोई ना नाल, साक सज्जण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सतिगुर शब्द इक्को आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब सज्जण समरथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरी सरनाईआ। निरगुण धार वेख खेल हो प्रगट, घट घट अन्तर खोज खुजाईआ। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। झगड़ा प्या मन मत, गुरमति सारे गए गवाईआ। हकीकत मिले किसे ना हक, वस्त अगम्म ना कोए वखाईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, गुरुदुआर ना कोए वड्याईआ। नेत्र रोंदे अठ्ठ सठ्ठ, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। कर किरपा दीन दुनी दे सच्च, सति नाल कर कुड़माईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर कमलापति, तूं इक्को नज़री आईआ। ज्यों भावें त्यों लैणा रख, सदी चौधवीं चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या बैठी नैण शरमाईआ। एकँकार एको दस्स आपणा जस, मनुआ सब दा होवे वस, विकारी रहे कोई ना रस, हँकारी बुरज जाण ढठ्ठ, निरँकारी तेरी जोत जगे लट लट, नूर नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाअरा एका दस्स अलख, जिसनूं कोई ना सके लख, चार युग तों हो के वक्ख, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ।

★ ४ पोह शहिनशाही सम्मत २ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड डड्डां ज़िला हुश्यिारपुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ जन भगतां अंदर दे आपणा रस, रस्ता भुल्ली सृष्ट सबाईआ। दिवस रैण इक्को तेरा गावण जस, सो पुरख निरँजण ढोला बेपरवाहीआ। आपणे मिलण दी खुल्ली रख अक्ख, नेत्र लोचन परदा लाहीआ। नज़री आ सदा प्रतख, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। तेरे नालों रहिण कदे ना वक्ख, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को दे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। वस्त अमोलक झोली पा सच्च, कूड़ी क्रिया देणी तजाईआ। तेरा नाम जैकारा बोल के अलख, आप आपणी खुशी बणाईआ। साचा मार्ग धुर दा दस्स, दहि दिशा ना कोए भवाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, वणजारे आपणे लै प्रगटाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रतन अमोलक हरिजन हीरे लै उपजाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों तेरा खेल पुरख समरथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान लगाईआ। बोध अगाध महिमा दस्स अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। घर स्वामी तीर्थ वखा अठ्ठ सठ्ठ, अमृत सरोवर इक्क प्रगटाईआ। गुण निधान वजा नद, अनहद आपणी आवाज़ सुणाईआ। साची जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। कलयुग माया ममता मोह विच्चों रख, रखक

हो के हो सहाईआ। करवट दे ना जावीं नठ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तेरा राह दूर दुराडे रहे तक्क, नेरन नेरा हो के परदा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत हरिजन हिरदे वस के हरि मन्दिर दे सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ भगतां नाल कर आपणा प्रेम, प्रीती आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सन्त उधारना तेरा नेम, निरँकार तेरी बेपरवाहीआ। कुछ याद कर कीता कौल इकरार कुण्ट हेम, हेम कुंड दए गवाहीआ। इक्को बण साक सज्जण सैण, दूजी आस ना कोए तकाईआ। तेरा नूर नज़री आवे ऐन, ज़हूर आपणे कर रुशनाईआ। तूं मालक आहला यामुबैन, अज़ीम तेरी वड्याईआ। भगतां समझीं ना कदे तरफैण, दुतीआ भाओ ना कोए रखाईआ। सदा तेरे वैराग अंदर रहिण, वैरी अंदरों देणे कढाहीआ। आपणे नाम दी दस्स के रसैण, पारस लैणे प्रगटाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर नेत्र रो के सारे पाउँदे वैण, वहिणां विच रुढ़ाईआ। मैं सच दवारे आया तेरे कहिण, सति बेनन्ती दिती सुणाईआ। बिन तेरी किरपा आवे किसे ना चैन, सुख सागर ना कोए समाईआ। झगड़ा मुका जगत हिन्दवैण, जिस कारण गोबिन्द धार प्रगटाईआ। कुछ लेखा लिख्या बाल्मीक विच रमायण, राम परथाए राम होए सहाईआ। कुछ वेद व्यासा दस्स के गया राह सुखैण, बिंदू विच बिन्दराबन समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतां नाल होवीं ना वक्खरा, दूजा दर ना कोए सुहाईआ। लारा देवीं ना नाम अक्खरां, आपणा मेला लैणा मिलाईआ। पट्टी पढ़ावीं ना नाल उंगलां सतरां, वरके फोल फुलाईआ। भोरी नाम ना देवीं कतरा, कातब बण ना लेख समझाईआ। युद्ध विच बणीं ना अथ्थरा, आपणी आदत लैणी बदलाईआ। मेरा लेखे लाउणा विछाया सथरा, यारड़े तेरी सेज हंढाहीआ। कुछ ब्यान दिता कृष्न जमन किनारे मथरा, मथन कर के दिता दृढ़ाईआ। कुछ लेखा दस्सया अहल्लया बणी पत्थरा, सिला राम चरण छुहाईआ। मेरे साहिब स्वामी सज्जणा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगतां तेरा दुआर कदे नहीं तजणा, तेरे नालों ना होवे जुदाईआ। बिना भगतां तेरा दीप कदे नहीं जगणा, लोकमात ना कोए रुशनाईआ। सतिजुग साचा लोकमात नहीं लग्गणा, बिन गुरमुखां तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। तेरे हुक्म अंदर किसे नहीं बज्झणा, शरअ विच सृष्टी होई हल्काईआ। इक्को करनी नहीं किसे बन्दना, गुर अवतार पैगम्बरां राह ना कोए तजाईआ। अबिनाशी करते तेरा दवारा बिना भगतां सचखण्ड किसे नहीं लँघणा, साथी हो के संग ना कोए बणाईआ। भिखारी हो के नहीं मंगणा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। तेरे नाम दा पनिहणा नहीं किसे कंगणा, कन्त सुहाग ना कोए हंढाहीआ। बिना भगतां तों तैनूं सारा जग पैणा दझणा, डंका तेरा हुक्म सुणाईआ। चुरासी वाला पा के फंदना, फाँसी सब दे गल लटकाईआ। खेल विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ।

तेरी प्रीती कोई कच्चा तन्द नहीं तन्दना, जगत डोरी ना कोए कटाईआ। बिन भगतां दस्स किस नूं तूं आपणा प्रेम वण्डणा, किस दी झोली देवें भराईआ। किस दा चोला रंगणा, साहिब देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे भगतां नाल करीं ना चोरी, वल छल ना खेल खिलाईआ। मैं गल्ल दस्सां कोरी, सच दिता दृढ़ाईआ। पुरख अकाल जिन्हां ने तेरे उत्ते रखी डोरी, डण्डावत कर के सीस झुकाईआ। तूं उन्हां नूं आपे बौहड़ीं, तैनूं लभ्भण कोए ना जाईआ। जगत विकारा उन्हां अंदरों होड़ीं, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। नाता आत्म परमात्म जोड़ीं, होवे ना कदे जुदाईआ। प्रभू तेरी किरपा हो नहीं जाणी थोड़ी, अणगिणत भण्डारा नज़री आईआ। सच दवारे दा सच स्वामी बणीं घोरी, घर घर अंदर फोल फुलाईआ। जन भगत लोकमात बणा आपणे मुहरी, मोहर आपणा नाम लगाईआ। साचे मार्ग जावीं तोरी, तुरत आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन ना कदे विछोड़ीं, विछड़यां आपणा मेल कराईआ। सतिगुर शब्द कहे भगतां नाल कदी ना करीं द्वैत, भावना अवर ना कोए वखाईआ। साचा प्रेम करना इनायत, बख्शिश झोली पाईआ। चरण कँवल दे रिहाइश, रहमत अक्ख उठाईआ। इन्हां दी करीं ना कदे अज़माइश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचे नाम दी करीं हदायत, जगत वाली ना कोए पढ़ाईआ। चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढीं कर के रयायत, भजन बन्दगी हिसाब ना कोए लगाईआ। तेरे चरण दवारे आ के रहे ना कोई नालायक, लायक मूर्ख मुग्ध लैणे बणाईआ। इक्को तेरी मंगण हमायत, हम साजण हो के वेखणा थाउँ थाँईंआ। राए धर्म दी पए ना कोई जरायत, जुरम विच बन्धन कोए ना पाईआ। झगड़ा रहे ना कोई शरअ शरायत, शरीअत विच ना किसे फसाईआ। तेरे उत्ते इक्क उम्मीद, उमैद आसा लई रखाईआ। तेरा बदले ना कदे कानून कवाइद, काइदा आपणा देणा दृढ़ाईआ। तूं मालक पुरख अकाल परवरदिगार वाहिद, वाइदे ख़िलाफ़ ना कदे अख्वाईआ। तेरा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग फेर आउणा ना होवे शायद, पिछला लेखा सब दा देणा मुकाईआ। तेरे दरस दा इक्को होवे मुफ़ाइद, मुफ़लिसां पार कराईआ। लेखा लिखीं ना नाल किसे कलम दवायत, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चार वरन दी वेख बैठी जमायत, तुलबे धुर दे नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म करदे इक्को वार सच हदायत, हद्दां तों पार देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपणे घर वसाईआ।

★ ४ पोह शहिनशाही सम्मत २ हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुशियार पुर ★

सतिगुर शब्द कहे प्रभ वेख कलयुग अन्धेरी राती, रुतड़ी रुत्त अबिनाशी अचुत ना कोए सुहाईआ। सति पुरख निरँजण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म परमात्म दिसे कोए ना साथी, सति सतिवादी साचा रंग ना कोए रंगाईआ। साची मंज़ल अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी चढ़े कोई ना घाटी, महबूब मुहब्बत विच मिल के दरस कोए ना पाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी किरपा कर कमलापाती, गहर गम्भीर बेनज़ीर दयावान आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कलमा लिख के गए कलम दवाती, भविक्ख लिक्ख इष्ट दृष्ट सृष्ट विच समझाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झगड़ा प्या ज़ात पाती, दीन मज़्हब राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सांतक सति ना कोए कराईआ। किरपा कर दीनां नाथ नाथ अनाथी, दयाल ठाकर मेहरवान साहिब सतिगुर आपणा हुक्म वरताईआ। ग़रीब निमाणयां जगत कोझयां पुछे कोए ना वाती, वातावरन बदलया सर्ब लोकाईआ। अमृत वेला किसे ना सुझे सच प्रभाती, तेरा नाउँ निरँकार रसीआ रसक ना कोए चखाईआ। गृह मन्दिर अंदर दीपक जोत जगे ना बाती, साढे तिन्न हथ्थ डूँघी कंदर अन्ध अन्धेरा नज़री आईआ। किरपा कर परवरदिगार सांझे यार सचखण्ड निवासी, सति पुरख निरँजण आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी कर आखी, आख़र अक्खर नाम वक्खर आपणा इक्क दृढ़ाईआ। जगत जीवां जिज्ञासूआं बदल दे हयाती, जीवण विच्चों जीवण दे बदलाईआ। आत्म परमात्म सगल बणा साथी, जगत विछोड़ा देणा कटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा खेल वेख्या बहु भांती, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब समरथ महिमा अकथ बोध अगाध देणी जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल साचा दिसे कोई ना नूर, धुर दा चन्द ना कोए चमकाईआ। अगम्मी नाद ना उपजे तूर, तुरीआ तों परे तुरत तेरा मेल ना कोए कराईआ। सृष्टी दृष्टी गढ़ बणया हँकारी ग़रूर, ग़ुरबत अंदरों ना कोए कढाहीआ। नाता जुड़या जूठ झूठ कूड़, मुरख मूढ़ चतुर सुघड़ सुचज्जे बैठे तैनूं भुलाईआ। मन वासना सारे करन कसूर, तेरी कसम खा के जगत विहार बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा भुल्ल गए दस्तूर, साचे मार्ग चल तेरा दरस कोए ना पाईआ। मानस जन्म सब दा जांदा दिसे फ़ज़ूल, फ़ज़ल रहमत आपणी दे कमाईआ। किरपा कर धुर दे कन्त कन्तूहल, जीव जंत श्री भगवन्त तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशी पुरख अबिनाशी तेरी ओट रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग मेट कूड़ा धुँदूकारा, धर्म दुआर एकँकार इक्को दे खुल्हाईआ। तेरे नाम दा चार कुण्ट

उपजे जैकारा, तूं ही तूं ही सारे राग अलाईआ। बिन तेरी किरपा दिसे ना कोए किनारा, संसार सागर नईआ पार ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ारा, हज़रत मुहम्मद चार यारी नाल मिलाईआ। ईसा मूसा कढुण हाढ़ा, तोबा तोबा रहे सुणाईआ। साचा दिसे ना कोए दवारा, दरवेश नैणां नीर वहाईआ। कर किरपा श्री भगवान वेख आपणा संसारा, निरगुण हो के फेरा पाईआ। ज़िमी असमानां ब्रह्मण्डां खण्डां साचा दे आधारा, सच दवारा इक्क वखाईआ। कलयुग मूर्ख मूढ़ जीव रहे ना कोए गवारा, बुध बिबेक विशेष नर नरेश देणी कराईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को बख्श सहारा, सिर साहिब सतिगुर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पतिपरमेश्वर बेपरवाह कलयुग कूड़ी क्रिया सुट्ट डूँघी गारा, गहर गम्भीर बेनज़ीर शाह हकीर परदा दे उठाईआ। बिन तेरे दूजा कोई ना करे पार उतारा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण सारे तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया ममता मोह विकार जगत हँकार त्रैगुण पंज तत लग्गा अखाड़ा, अग्नी अग्ग सूरे सरबग तुध बिन मात ना कोए बुझाईआ।

★ ४ पोह शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड पंज ढेरा ज़िला हुश्यार पुर ★

पुरख अकाल गुर अवतार पैगम्बरां करे इशारा, सचखण्ड दुआर दरगाह साची रिहा उठाईआ। उठो वेखो कलयुग कूड़ी क्रिया विच संसारा, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप रहे कुरलाईआ। चार जुग दा तुहाडा साचे नाम वाला भुल्ले सर्ब जैकारा, प्रेम प्रीती अंदर ढोला हक ना कोए गाईआ। साची मंज़ल वेखे ना कोई निरगुण जोत नज़ारा, शब्द नाद धुन ना कोए शनवाईआ। माया ममता मोह वध्या विकारा, गढ़ हँकारा दीन दुनी नज़री आईआ। वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान पावे कोए ना सारा, समझ विच रमज़ ना कोए लगाईआ। बाणी बोध खोल्हे ना कोए किवाड़ा, परदा ओहला अंदरों ना कोए चुकाईआ। अठ्ठ सठ्ठ रोवे ज़ारो ज़ारा, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। धरनी धरत धवल करे पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सति धर्म ना रिहा मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवारा, मन वासना दीन दुनी फिरे हल्काईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तक्को वेखो खेल अपर अपारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा दृढ़ाईआ। धुर दा सजदा करे ना कोए निमस्कारा, डण्डावत विच बन्दना विच बन्दगी ना कोए कमाईआ। मानस जन्म मानव ना किसे सुधारा, मनुक्खां अंदर मानुखता नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी हुक्म इक्क सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर वेख के रह गए हके बक्के, लोकमात बिना अक्खां अक्ख खुलाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी अंदर पैंदे धक्के, धरनी धरत धवल धीर ना कोए धराईआ। नाते तुट्ट गए पिता पूत सके, मात गोद ना कोए सुहाईआ। सच दवारे कोई ना वसे, कूड़ी क्रिया बैठे सारे डेरा लाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सारे पढ़ पढ़ थक्के, मक्के मदीने भज्जे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरा परदा कोई ना चुक्के, चाकरी विच रोवण मारन धाहींआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा वेख वेख हस्से, हस्ती सब नूं दिती भुलाईआ। नौ दवारयां अंदर नौजवान हो के वसे, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। मन वासना विच सारे फसे, फ़रमांबरदार नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मुकया ना तत अठ्ठे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए दृढ़ाईआ। हउमे हंगता विक गए हट्टे, कीमत करता ना कोए पाईआ। मानस जन्म रुल गया घट्टे, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सतिगुर दर्शन साचे नेत्र नाल ना कोई तक्के, तकदीर सक्या ना कोए बदलाईआ। सच सरनाई कोई ना ढठ्ठे, ढाह ढेरी ख़ाक आपणा आप मिटाईआ। जगत विकार हँकार लोभ विभचार विच सारे फसे, भरमां विच ममता रही कुरलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेख के इक्क दूजे नूं रहे दस्से, सच इशारे नाल जणाईआ। सब कुछ लहिणा देणा फड़ाईए पुरख अकाल दे हथ्थे, आपणा पल्लू लईए छुडाईआ। जिन्हां ने साडे नाते प्यार वाले छड्डे, मुहब्बत धुर दी गए तुड़ाईआ। ओन्हां नूं दरस नहीं देणा कदे, कदमां दे उत्ते सीस ना कोए झुकाईआ। कोटां विच्चों थोड़े गुरमुख भगत सुहेले लभ्भे, जिन्हां अन्तर आत्म इक्क ध्यान नज़री आईआ। सच दवारे बहि के सजे, सज्जण वेखण बेपरवाहीआ। धुर फ़रमाने अंदर बद्धे, बन्दना अंदर सीस झुकाईआ। सच दवारे सोहणे सजे, सच स्वामी मिल के खुशी बणाईआ। दीपक जोत हो के जगे, नूर नूर नाल रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तक्कया जगत जहान, वेखी सर्ब लोकाईआ। सति धर्म दिसे ना कोए निशान, निशाना अगला गए भुलाईआ। साची सखी मिल्या कोई ना काहन, सीता सुरती राम ना कोए प्रनाईआ। बनवासी बणया जीव इन्सान, सन्यासी बैरागी वैरागी त्यागी सारे मारन धाहींआ। जलवा तक्कया ना हक अमाम, मुल्ला शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। साचा कलमा ना सुणया धुर कलाम, अलिफ़ ये दा लेखा ना कोए मुकाईआ। मन वासना दुनिया होई गुलाम, कायनात बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। वेख के होए हैरान, परेशान दिसे ख़लक ख़ुदाईआ। विगड़या दिसे नज़ाम, हकूमत हक ना कोए कमाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं वक्त पहुंचया आण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। गोबिन्द कहे बीस बीसा होया प्रधान, हुक्मरान धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा करे श्री भगवान, मेहरवान दया कमाईआ।

३१६
२०

लेखा जाणे जीव जहान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म आप मनाईआ।

★ ४ पोह शहिनशाही सम्मत २ लाल सिँघ दे गृह पंज ढेरा ज़िला हुश्यिार पुर ★

पुरख अकाल वेख सृष्टी दी दृष्टी अन्तर, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। फ़ुरना फुरे ना कोए अगम्मे मंत्र, मंतव हल्ल ना कोए कराईआ। दीपक जोत ना जगे निरंतर, निराकार ना कोए रुशनाईआ। भाग लग्गे ना काया मन्दिर, काअबा हक ना कोए जणाईआ। मन वासना दहि दिशा भवे बन्दर, बन्दगी विच बन्दा बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। नेत्र रोंदे सूर्या चन्द्र, रवि ससि रहे कुरलाईआ। धाहीं मारे आकाशां वाला अम्बर, सुअम्बर सच ना कोए रचाईआ। कूक पुकारे उपर मंगल, दरोही नूर खुदाईआ। ममता कटे कोई ना संगल, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे कोई ना दंगल, दग़ा चुक्के ना जगत लोकाईआ। साचे लाए कोई ना अंगण, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। नाम निधान चढ़े ना रंगण, रंगत कूड़ी दए मिटाईआ। साचा मिले ना परमानंदन, निजानंद ना कोए वखाईआ। टुट्टी आवे कोई ना गंढुण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। साचा ढोला गीत अनोखा नग़मा नाम सुणाए कोई ना छन्दन, कलमा कायनात ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तक्को धरनी धवल धरत, धर्म दवारा दयो वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ साडी पूरी होई शर्त, वेला वक्त दए गवाहीआ। पुरख अकाल कहे योद्धे सूरबीर मर्दाने बणो मर्द, मद्दद देवां थाँईं थाँईंआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण अबिनाशी करते तुध बिन वण्डे कोई ना दर्द, दुखियां दुःख ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो अगला खेल करो असचरज, अचरज अगम्मी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां हथ्थों सुट्ट दिती दीनां मज़्बां वाली छुरी करद, कत्लगाह ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे अग्गे इक्को अरज़, बेनन्ती कर के सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सृष्टी विच्चों कढु मर्ज़, बीमारी खुआरी रहिण कोए ना पाईआ। धुर दे नाम दी मार रमज़, इशारा इक्को इक्क वखाईआ। सब दी बदल दे समझ, बुध बिबेक दे बणाईआ। तेरे हथ्थ सतिजुग दा जन्म, कर्म कूड़ दे गवाईआ। सब दी चिन्ता मेट भरम, भय आपणा इक्क वखाईआ। तेरे नाम दा चार कुण्ट दहि दिशा होवे इक्को धर्म, मानव जाती देणा समझाईआ। झगड़ा रहे ना किसे वरन, बरन करे ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल तेरी इक्को सरन, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर मंग के गए भविख्तां विच

तेरा राग अलाईआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा मालक सब नूं बख्श आपणी सरन, चरण धूढ़ी दे रमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म सारे मिल के ढोला पढ़न, इक्को तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरी मंज़ल चढ़न, सचखण्ड दवारे साचे वड़न, जोती जोत बिन वरन गोत आपणे विच लैणा समाईआ।

★ ५ पोह शहिनशाही सम्मत २ राम सिंघ दे गृह पिण्ड गाल्ड़ीआं ज़िला हुशियार पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरे नाम दी कर के आए लिख्त पढ़त, परदयां विच्चों पारब्रह्म तेरा भेव खुलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान तेरे नाम दा लैंदे सारे धड़त, धड़वाई साध सन्त बैठे डेरा लाईआ। कीता अहिद पूरा होया शर्त, कौल इकरार तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं योद्धा सूरबीर एकँकारा इक्को मर्द, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। ग़रीब निमाणयां लोकमात वण्ड दर्द, दीनां अनाथां दुखियां हो सहाईआ। सब नूं तेरी दिसे ग़रज़, राह तक्के जगत लोकाईआ। धुर बेनन्ती मन्न अरज़, चरण कँवल विच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दे मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी रही रो, जागत सोवत रहे कुरलाईआ। साचे नाम दा तुट्टा मोह, मुहब्बत कूड़ जगत वड्याईआ। तेरा भेव ना जाणे को, काग बुद्धी होई हल्काईआ। सच प्रकाश ना दिसे लो, अन्ध अन्धेरे भज्जण वाहो दाहीआ। आत्म परमात्म भेव समझण दो, दूआ एके विच ना कोए समाईआ। तेरा कोई ना जावे हो, होका हक ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई अन्तर आत्म वेख सब, परदयां विच्चों पड़दे दे फुलाईआ। मेहरवान हो के फेरा पा झब्ब, दूर दुराडे देर कोए ना लाईआ। घर घर गृह गृह तैनूं रहे लभ्भ, सन्त सुहेले भज्जण थाउँ थाँईआ। नाउँ निरँकार एका एकँकार वजा नद, नादी धुन दे शनवाईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों बध्ध, बदला चुक्के ख़लक खुदाईआ। सन्त सुहेले सज्जण सद्द, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। की होया जे तेरा प्यार मुहब्बत प्रेम नेम अंदर गए छड्ड, वासना विच समझी वस्त पराईआ। तूं साहिब सुल्तान समरथ स्वामी सूरा सरबग, बख्शणहार एकँकार इक्को इक्क अख्वाईआ। जन भगत सुहेले बणा आपणी यद, याद पिछली खोज खुजाईआ। किरपा कर के अन्तर आत्म दे अनन्द, रस अगम्मा मुख चुआईआ। तेरे हुक्म दे होवण सारे पाबन्द, शरअ ज़ंजीर दे कटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावण सारे छन्द,

सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। सृष्टी दृष्टी रहे कोई ना रंड, मेला निरगुण निरगुण लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी सतिगुर पूरे पुरख अकाल दीन दयाल तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दस्सीए धुर दा हाल, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। साचा जलवा दिसे ना किसे जमाल, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। सच दवारा वेखे ना कोए अगम्मी धर्मसाल, धुर दी मंज़ल चढ़ तेरा दरस कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया प्या जंजाल, जीवण बन्धन बन्द ख़लास ना कोए कराईआ। सब दे सिर ते कूके काल, ताल आपणा रिहा वजाईआ। बिन मुर्शद मुरीदां कोए ना पुछे हाल, पूरब लेखा ना कोए मुकाईआ। सच बेनन्ती तेरे अग्गे सवाल, सवाली हो के सीस निवाईआ। वेला वक्त सुहञ्जणा साहिब समरथ संभाल, सभना लहिणा देणा दे चुकाईआ। तूं आदि जुगादी दीन दयाल, मालक ख़ालक प्रितपालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण भगत भगवन्त हो के भाल, काया माटी साचे अन्तर वेख वखाईआ।

३२२
२०

★ ५ पोह शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कालू चांग ज़िला हुशियार पुर ★

जुग चौकड़ी प्रभ होए दयाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेहर नज़र उठाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले जन भगत लभ्भे आपणे लाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार तोड़े जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। काया माटी साचा मन्दिर वखावे सच्ची धर्मसाल, शिवदवाला मठ इक्को धुर दा नज़री आईआ। जिस गृह मेला मिले श्री भगवान, अबिनाशी करता जोड़ जुड़ाईआ। नाम अनमुल्ला वस्त अमोलक देवे दान, गहर गम्भीर गुणी गहिंद सदा बख़्शंद आप वरताईआ। चरण धूढ़ करा के मजन इश्नान, पतित पापियां दुरमति मैल धवाईआ। घर सुरत सवाणी शब्द मेल के धुर दा काहन, मण्डल रास इक्क वखाईआ। आत्म परमात्म मेला होवे धुर दे राम, रमईआ नईआ लोकमात पार कराईआ। पारब्रह्म प्रभ हो के देवे अमृत रस अगम्मा जाम, ज़ामन हो के जमां तों लए छुडाईआ। साची मंज़ल जन भगतां चढ़नी दस्से आसान, औखी घाटी सृष्टी नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म सति सतिवादी वखाए इक्क निशान, सचखण्ड दवारा आप खुल्हाईआ। चरण प्रीती धुर दी रीती दस्स के इक्क ध्यान, मन हँकार विकार दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां बख़्शे माण वड्याईआ।

जन भगत प्रभ तारे मातलोक, लुक्कया भेव आप खुल्हाईआ। मानस मानस विच्चों कर के खोज, मानुख आपणा परदा लाहीआ। चरण प्रीती दे के धुर दा जोग, जोगीशर साचे लए प्रगटाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स सलोक, सोहँ ढोला दए समझाईआ। मन बुद्धी दी रहिण ना देवे सोच, समझ रमज़ विच छुपाईआ। भाग लगा के काया माटी साचे मन्दिर धुर दे कोट, कंचन गढ़ अंदर वड़ पुरख अकाल आप सुहाईआ। हउमे हंगता माया ममता कूड़ी क्रिया रहे ना रोग, सति धर्म दा सच्चा राह इक्को दए वखाईआ। नाम निधान श्री भगवान दे के साची चोग, चुग़ली निंदया तों लए बचाईआ। चरण कँवल उपर धवल दस्स के एका ओट, ओड़क आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां प्रभ देवे नाम खुमारी, मदिरा रस ना कोए वखाईआ। महल अटल वखाए उच्च अटारी, सचखण्ड साचा नज़री आईआ। जिस घर जगे जोत निरँकारी, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। शब्द सुणाए धुन बिन ताल तलवाड़े आपणी धारी, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती देवे ठंडी ठारी, ठाकर हो के सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत वछल बण गिरधारी, मुकन्द मनोहर आपणा रंग चढ़ाईआ। जागत सोवत देवे दरस दीदारी, निज नेत्र कर रुशनाईआ। मानस जन्म अन्त होणी ना पए खुआरी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना कोए वख़ाली, पूरब लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां जुग जुग प्रभ साचे पैज संवारी, कलयुग अन्त होए आप सहाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर दिती नाम जैकारी, धुर दा ढोला इक्क दृढ़ाईआ। तिन्हां संसार सागर विच्चों जाए पार उतारी, घाट किनारा तट इक्को चरण कँवल वखाईआ। जन भगत सुहेला गुरमुख कोई ना जन्मे दूजी वारी, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। मात गर्भ अग्न कोए ना साड़ी, जगत कुण्ड ना कोए तपाईआ। किरपा करे आप निरँकारी, नर नरायण धुर दरगाहीआ। कलयुग अन्त भगत उधारना प्रभ दी वारी, वारता गुर अवतार पैगम्बर गए लिखाईआ। सो लहिणा देणा पूरब कर्ज मकरूज हो के सब दा रिहा उतारी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण हरि भगत सुहेले वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा नाम शब्द आधारी, आधार आपणे सब नूं पार कराईआ।

★ ५ पोह शहिनशाही सम्मत २ दलजीत सिँघ दे गृह तलवाड़ा ज़िला हुशियार पुर ★

श्री भगवान कहे जन भगत उधारां कलयुग अन्तिम आप, निरगुण निरगुण हो के दया कमाईआ। पुरख अकाल हो

के देवां सच्चा साथ, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। आत्म नूर जणा के आपणी ज़ात, ज़ाहर ज़हूर करां रुशनाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, साक सज्जण सैण इक्क अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द नाम चमकाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के आस, तृष्ना कूड़ दयां गवाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी हो के वसां पास, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। सब दा लेखे लावां स्वास स्वास, जो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा ढोला गाईआ। सच दवारा खोल्ह के ताक, धुर मन्दिर दयां वखाईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर रहे झाक, राह लोकमात वेख वखाईआ। कवण भगत जिन्हां देवे प्रभ अबिनाशी आपणा साथ, निराकार हो के साकार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। श्री भगवान कहे जन भगतां रहिण ना देवां तोट, त्रिकुटी दा लेखा दयां मुकाईआ। गुरमुख आलणयों डिग्गा रहे कोई ना बोट, फड़ बाहों गोद बहाईआ। साचे नाम दी ला के चोट, चेटक आपणा इक्क जणाईआ। अंदरों कढ्ढ के क्रिया खोट, घर सच करां रुशनाईआ। प्रेम प्यार दी दे के मौज, मौजूदा हो के दरस दिखाईआ। सब तों वक्खरा दस्स के जोग, जुगती आपणा नाम समझाईआ। जन्म मरन दा रहिण ना देवां बोझ, भार सब दा आपणे कंध उठाईआ। अग्गे होवे ना कदे वियोग, विछड़यां मेल मिलाईआ। पिच्छे बहु आयू लई भोग, प्रभ दा राह तकाईआ। अग्गे आत्म परमात्म कर संयोग, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत कदे ना होवे निरास, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। अंदर वड़ देवां विश्वास, विश्व आपणी खेल वखाईआ। साचे मण्डल वखावां रास, सुरती शब्दी गोपी काहन रंग रंगाईआ। सब दे पुज्जां निरगुण हो के पास, सरगुण परदा आप उठाईआ। इसे धरती दा लहिणा कुछ ख़ास, हुक्मे विच जणाईआ। राम कट के हुक्म वाला बनबास, पंचवटी दा वट्टा एथे गया लगाईआ। उस दे उत्ते लिख के सच्ची गाथ, "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान (दी) जै" जैकार समझाईआ। धर्म दुआर दी कर अरदास, बेपरवाह नाल सलाह पकाईआ। हुक्म दे सर्ब गुणतास, की तेरी बेपरवाहीआ। ओधरों रो के किहा ब्यास, धाहीं मार जणाईआ। मैं पुरख अकाल दा दर्शन करना साख्यात, वेला वक्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे धुर दे राम दा राम लेखा नाल भगत राम बनबासी, अबिनाशी अगला राम आपणी धार समझाईआ। जिस वेले राम किसे ना मिल्या पंडत काशी, तट किनारे नज़र किसे ना आईआ। कलयुग होवे अन्धेरी राती, प्रभाती वज्जे ना कोए वधाईआ। नूर नज़र ना आए आकाशी, धरनी धवल ना कोए रुशनाईआ। ओस वेले खेल करे आप सर्ब घटवासी,

निवासी आपणी दया कमाईआ। बचन सुण के ब्यास दी निकल गई हासी, खुशीआं विच सीस निवाईआ। वेला वक्त केहड़ा आसी, कवण घड़ी वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले साची भगती दी चढ़े कोई ना घाटी, मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। साध सन्त मुकावे कोई ना वाटी, वटयां विच रुल के सारे आपणा आप देण तजाईआ। ओस वेले खेलां खेल आपणी ज़ाती, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जन भगत सुहेला सज्जण होवे दास दासी, जिस दी दास्तान अग्गे ना किसे लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी धार अगम्म अपार आपे वाची, वचन परवचन अवर ना कोए समझाईआ।

★ ५ पोह शहिनशाही सम्मत २ बूआ दित्ता मल दे गृह तलवाड़ा ★

ब्यास कहे प्रभ जन भगतां खोलू परदा, अन्तर ओहला रहे ना राईआ। हरिजन तेरी मंज़ल जाए चढ़दा, मन वासना सके ना कोए अटकाईआ। दर्शन पावे तेरे घर दा, जिस गृह निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तूं ही तूं ही रहे पढ़दा, परमात्म तेरा ढोला गाईआ। अमृत रस लवे तेरे सरोवर सर दा, बूँद स्वांती देणी मुख चुआईआ। कलयुग कूड़ा लेखा मुका कल दा, ममता मोह रहे ना राईआ। जन भगतां झगड़ा रहे ना कपट छल दा, अछल छलधारी देणी माण वड्याईआ। बिन तेरी किरपा नाम संदेसा काया मन्दिर कोई ना घल्ल दा, रसना पढ़ पढ़ सरवण सुण सुण थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लैणे जगाईआ। ब्यास कहे श्री भगवान मैं तक्कां कलयुग चार कुण्ट अन्धेरा, निरगुण नूरी जोत चन्द ना कोए रुशनाईआ। जगत वासना ममता मोह गिड़या उलटा गेड़ा, मार्ग सच सति ना कोए वखाईआ। तृष्न विकार प्या झेड़ा, हंगता गढ़ विच लड़ाईआ। दीन मज़ूब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक करे ना कोई हक नबेड़ा, पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। ब्यास कहे प्रभ भगतां दी अन्तर वेख ख़ाहिश, बाहरों समझ किछ ना आईआ। जेहड़े दिवस रैण तेरी करन तलाश, अट्ठे पहर बिहबल हो के ढोले गाईआ। तूं ही तूं ही मारन इक्क आवाज़, आप आपणा गए गवाईआ। ओनूां दा अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के काया काअबे खोलू राज़, रिज़क रहीम दे वड्याईआ। अन्तर मिटे अन्धेरी रात, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। साचे नाम दी बख्श अगम्मी दात, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां रिहा वरताईआ। बिना रसना जेहवा तों दस्स आपणी गाथ,

निरअक्खर विच्चों आपणा नाम दृढ़ाईआ। औखी मंज़ल रहिबर हो के मिटा वाट, जीवण जुगती साची भगती सति सच इक्क समझाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, सब किछ तेरे हाथ, जन भगत सुहेले तेरे दास, सेवक धुर दे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। श्री भगवान कहे ब्यास मैं आपणी दया कमावांगा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हो के वेख वखावांगा। घट निवासी निरगुण धार वेस वटावांगा। जुग जन्म दी पूरी कर के आसी, भगत सुहेले आपणे रंग रंगावांगा। मानस जन्म कर रहरासी, रस्ता धुर दा इक्क वखावांगा। जित्थे इक्को पवे रासी, गोपी काहन आपणी खेल प्रगटावांगा। जन्म जन्म दी मेट के वाटी, लख चुरासी पन्ध मुकावांगा। नाता जोड़ के निरगुण धार कमलापाती, पतिपरमेश्वर हो के नज़री आवांगा। गुर अवतार पैगम्बरां जो लेखा लिख्या कलम दवाती, शहादत विच वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी सर्ब भुगतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखावांगा। साची करनी प्रभ कार कमाएगा। कलयुग अन्त पावे सार श्री भगवन्त, दीनां अनाथां दीन दयाल आप उठाएगा। महिमा दस्से अगणत, धुर दा ढोला मणीआं मंत, सति सतिवादी आप सुणावेगा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हरिजन मेल के साची संगत, सगला संग सूरा सरबंग आप अख्वावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठावेगा। ब्यास कहे मेरी पिछली इक्क अरज़ोई, बेनन्ती कर के दयां सुणाईआ। पुरख अकाल तुध बिन मिले कोई ना ढोई, धुर दी धार ना कोए बंधाईआ। कलयुग सृष्टी गूढ़ी नींद सोई, सोई सुरती ना कोए उठाईआ। जूठ झूठ लोभ विकार फिरी दरोही, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। जन भगत सुहेला दिसे लोकमात ना कोई, जो तेरा नाम तेरे कोलों सुण के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। ब्यास कहे कुछ मेरी पिछली दास्तान, पूरब लेखा दयां दृढ़ाईआ। कुझ लहिणा देणा कृष्ना काहन, श्री भगवान भगवन तेरे दर सुणाईआ। जिस दा लिख्या नहीं किसे ब्यान, कलम शाही ना वण्ड वण्डाईआ। उस ने उंगलां दा ला के निशान, पंजा मेरे विच फिराईआ। मैनूं समझ के बाल नादान, अगला हुक्म दिता जणाईआ। शब्द अगम्मी बोल के बिना कान, मेरे अंदर दिता टिकाईआ। मैं सुण के होया हैरान, परेशानी विच अक्ख खुल्हाईआ। निउँ के लग्गा सीस झुकाण, चरणां उपर आपणा आप टिकाईआ। अग्गों सुण होर फ़रमान, फ़रमांबरदार कहि के मैनूं दिता सुणाईआ। तेरा वहिण वगदा रहे विच जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी खेल रिहा वखाईआ। ब्यास कहे मैं हस्स के किहा कुछ दे दे मैनूं दान, दाता हो के झोली पाईआ। काहन किहा मैं भेव खोल्हां महान, महिमा कथ दृढ़ाईआ। जिस वेले

कलयुग अन्त अख़ीर सति धर्म दा रिहा ना कोए निशान, कूड़ कुड़यार वज्जे वधाईआ। ओस वेले निरगुण धार एकँकार खेल करे श्री भगवान, विश्व आपणा परदा लाहीआ। तेरा लहिणा देणा अन्त अख़ीर चुकाए आण, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख परमात्म हो के आत्म धार दए वड्याईआ।

★ ५ पोह शहिनशाही सम्मत २ जीआ लाल दे गृह तलवाड़ा ★

ब्यास कहे मेरी आसा बहु पुराणी, पुराण शास्त्र वेद मेरी देण गवाहीआ। गुर अवतार तेरे बण के आए बानी, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। सन्त भगत तेरी दस्सदे रहे कथा कहाणी, खुशीआं वाले ढोले गाईआ। महिमा कहिंदे रहे पवण पाणी, संदेसे धुर दे अगम्म जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा करदे गए ध्यानी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कातब लेख लिखदे गए बण बहु विद्वानी, तेरी महिमा सिफ्त सिफ्त समझाईआ। ऋषी मुनी तपी हठी मेरे तट किनारे तेरी लभ्भदे गए निशानी, निछावर आपणा आप कराईआ। जोग अभ्यास अंदर तेरी खोजदे रहे जोत नुरानी, निरगुण निरवैर तेरा राह तकाईआ। जीव जंत मंगदे रहे मेहरवानी, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तूं बेपरवाह हो के सचखण्ड वसदा रिहों शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा आसण लाईआ। मेरे अन्तर जुग जुग आउँदी रही हैरानी, परेशानी अन्तर अन्तर वधाईआ। कोई भेव ना आया परवरदिगार तेरी खेल महानी, अबिनाशी करते तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे मुकाईआ। ब्यास कहे मैं वेंहदा रिहा जल जल धार, पाणी आपणा रूप वखाईआ। रुढ़दा रिहा टिल्ले पर्बत उच्चे वेंहदा रिहा डूंघी गार, थलां विच आपणा फेरा पाईआ। खोजदा रिहा पुरख अकाल अबिनाशी करता धुर दा यार, आपणी आसा आपणे नाल रखाईआ। वेखदा रिहा गुरू अवतार, पैगम्बरां ध्यान लगाईआ। करदा रिहा शब्दी तकरार, पुछदा रिहा भेव अलाहीआ। मैनूं सारे संदेसा दे के गए आपणी वार, अवतार तेई गए दृढ़ाईआ। पैगम्बरां वेख्या आपणी धार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। गुरू कर के गए इज़हार, एतबार तेरे उत्ते रखाईआ मेरी किसे ना सुणी पुकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गोबिन्द अन्त संदेसा दिता एका वार, शब्द अनादी नाद वजाईआ। आलस निंद्रा विच्चों कर के ख़बरदार, हुक्म दिता जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर खेल खेले निराकार, जोती जाता पुरख बिधाता शब्दी धार आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं जगत बुद्धी समझे ना कोए संसार, अकल विद्या चले ना कोए चतुराईआ। अपरम्पर

स्वामी आपणा खेल करे अपार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा परदा ना कोए उठाईआ। सो दीन दयाला वड कृपाला अगम्म अगम्मढ़ी करे कार, करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए मुकाईआ। ब्यास कहे कोट कोटन तपीशर मेरे आउँदे रहे किनारा, तट बहि के खुशी मनाईआ। गाउँदे रहे सुणाउँदे रहे परम पुरख दीआं वारा, वारता तहिरीर विच तकरीर विच दृढ़ाईआ। मैं करदा रिहा निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुछदा रिहा दवारा, कवण गृह मिले बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर शब्दी धार करदे गए इशारा, धुर दी सैनत नाल समझाईआ। जिस वेले कल कल्की लए अवतारा, अमाम अमामां आपणा वेस वटाईआ। सो दो जहानां पावे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेख वखाईआ। चार युग दा पूरब कर्ज़ा लाहे उधारा, लेखा सब दा दए मुकाईआ। घट भीतर वेखे विगसे पावे सारा, अन्तर खोजे थाउँ थाँईंआ। सच स्वामी हो के देवे सहारा, समरथ हो के आपणी दया कमाईआ। तेरी धार विच्चों आपणी धार दा दए फुहारा, अमृत मेघ बूँद स्वांती मुख चुआईआ। जिस दा जाणे ना कोए नज़ारा, जगत विद्‌वानां समझ कोए ना आईआ। सो खेल करे निरँकारा, हरि करता धुरदरगाहीआ। निरगुण हो के पावे सारा, साहिब स्वामी आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। ब्यास कहे मैं कोटन कोटि वेखे जती सती, तपीशर धूंणीआँ गए तपाईआ। मीटदे रहे नेत्र लोचण नैण अक्खीं, जगत वासना दृष्टी बन्द कराईआ। प्यार मुहब्बत विच बणदे रहे सख़ी, सेवक हो के साची सेव कमाईआ। रैहन्दे रहे झुग्गी पा के कक्खीं, महल अटल जगत तजाईआ। घाल घालदे रहे हत्थीं, दिवस रैण हथ्थ जोड़ सीस निवाईआ। पढ़दे रहे नाम अक्खरां वाली पट्टी, सतरां वाला जोड़ जुड़ाईआ। माला मणकयां वाली खट्टदे रहे खट्टी, खटका अंदरों ना कोए चुकाईआ। सच वस्त दी लभ्भदे गए हट्टी, वणजारे बण के फिरे चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेल होया ना किसे कमलापती, पत्तण बैठे सारे रोवण मारन धाहींआ। शब्दी धार किसे ना नेत्र तक्की, सच समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पूरब लेखा दे वखाईआ। ब्यास कहे मेरे तट किनारे लाउँदे गए ध्यान, सुन्न समाधीआं विच समाईआ। करदे गए इश्नान, अमृत सर सरोवर बणाईआ। खोजदे गए राम, रमता हो के भज्जे वाहो दाहीआ। लुकदे गए काहन, घनईया अक्ख उठाईआ। तोड़दे गए माण, अभिमान गए मिटाईआ। राह तक्कदे गए तेरा भगवान, दिवस रैण अक्ख खुल्हाईआ। मैं वेख के हुन्दा रिहा हैरान, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। सनमुख हो के किसे दरस ना दिता आण, स्वच्छ सरूप ना कोए वटाईआ। थोड़ा भगत दे के गए फ़रमान, नाम संदेसा

इक्क जणाईआ। इष्ट देव स्वामी तेरा उत्तम सृष्ट विच जहान, शास्त्रां तों अग्गे तेरी पढ़ाईआ। जिन्हां उपर होवें मेहरवान, महबूब हो के दया कमाईआ। सो सहिजे मिलण आण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, चौथे जुग दयां दुहाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा फिरे शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। हिरदे दिसे ना किसे वस्या राम, मुक्खों राम राम सारे गाईआ। घर नज़र ना आवे सख़ियां दा काहन, धुर दे काहन दरस कोए ना पाईआ। हक पैगम्बर मिले कोई ना आण, महबूब मुहब्बत विच हुजरे ना कोए सुहाईआ। रसना जेहवा वाले ढोले गाण, मन वासना झट लँघाईआ। सतिगुर करे ना कोए परवान, परम पुरख ना कोए मिलाईआ। भरमे भुल्ले जगत विद्वान, विद्यार्थी सच नज़र कोए ना आईआ। ब्यास कहे मैं मंगां एको चरण ध्यान, अभिमान अवर ना कोए रखाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेरा पूरब लेखा चुक्के विच जहान, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूसर अवर नज़र कोए ना आईआ।

★ ५ पोह शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर दे गृह तलवाड़ा ★

ब्यास कहे प्रभ सब दी पूरी कर भावना, भावी भय भउ ना कोए जणाईआ। निरगुण हो के आत्म पकड़ दामना, दामनगीर हो के आपणा मेल मिलाईआ। मन हँकारी दुष्ट रहे ना रावणा, राम रमईआ हो के दे वड्याईआ। इक्को नाम निधाना तेरा सब ने गावणा, गहर गम्भीर बेनज़ीर देणा समझाईआ। पतिपरमेश्वर इक्को रावणा, रंगत धुर दी देणी चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत विकार पन्ध मुकावणा, लोकमात धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। काया माटी साचा मन्दिर धुर मुकाम इक्क सुहावणा, सोभावन्त दीपक जोत करे रुशनाईआ। अमृत रस जन भगतां जाम प्यावणा, नाम खुमारी देणा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। ब्यास कहे प्रभ बख्श दे आपणा नूर, नूर नुराने हरिजन साचे दे बणाईआ। आपणे नाम दी दे दे तूर, तुरीआ तों परे मेला लै मिलाईआ। झगड़ा रहे ना क्रिया कूड़, मोह विकार देणा गवाईआ। साचे चरणां बख्श के धूढ़, दुरमति मैल देणी धवाईआ। आपणा दरस देणा ज़रूर, स्वच्छ सरूप बदलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे हाज़र हज़ूर, परदा ओहला देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। ब्यास कहे जुग गए बीत, तेरा ध्यान लगाईआ। गा गा थक्का गीत, ढोले डंक वजाईआ। सौं सौं थक्का नींद, ग़फ्लत विच आपणा आप मिटाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलदी वेखी रीत, रीतीवान तेरी वड्याईआ। नज़ारा वेख्या मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ खोज खुजाईआ। जलवा तक्कया ऊँच नीच, हस्त कीट परदा लाहीआ। कलमा नाम सुणया हदीस, हज़रत गए सुणाईआ। किरपा कर अन्त जगदीश, जगदीशर तेरी ओट तकाईआ। भगत सुहेले बणा आपणे मीत, मित्र प्यारा हो के दे वड्याईआ। तेरे उत्ते इक्क उम्मीद, आमद विच प्रीतम हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। रहमत विच कर बख़्शीश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। दया कमा दे स्वामी मेरे, बेआस रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां अन्तर होवण चाउ घनेरे, भगवन हो के मिलणा चाँईं चाँईंआ। भाग लगाउणा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ खेड़े, गृह मन्दिर अंदर खुशी देणी वखाईआ। तेरे तट किनारे ला लए डेरे, मेरा तट किनारा गए तजाईआ। पुरख अकाल जे पुछें किहड़े किहड़े, कोटां विच्चों बहु थोड़े नज़री आईआ। जिन्हां ढोले गाए तेरे मेरे, तेरा मेरा राग रहे अल्हाईआ। अन्त हकीकत विच्चों हक कर नबेड़े, समरथ आपणी मेहर नज़र उठाईआ। शब्द अगम्मी चाढ़ बेड़े, नईआ नौका जगत ना कोए डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेनन्ती तेरे अग्गे सुणाईआ। ब्यास कहे मेरी अन्तिम इक्को लोड़, लोड़ींदे सज्जण पूर कराईआ। हरिजन विछड़े आपणे नाल जोड़, पूरब विछोड़ा दे कटाईआ। गुरमुख रहे ना कोई अन्धेरे घोर, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। सचखण्ड निवासी आपे बौहड़, पुरख अबिनाशी हो के दया कमाईआ। जन भगतां साचे सन्तां सदा तेरी लोड़, आसा विच बैठे ध्यान लगाईआ। हिरदे अंदर निरंतर हो के वस कोल, बसन्तर अग्नी दे बुझाईआ। सुरती शब्दी जा मौल, मौला हो के आपणा भेव खुल्हाईआ। पिछला याद कर कौल, राम रामा गया दृढ़ाईआ। लेखा लहिणा देणा मुका धरनी धरत धौल, वास्ता रही पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कर अडोल, डोलदी दिसे सर्ब लोकाईआ। ब्यास कहे वेख कौल इकरार, करनी करते परदा आप उठाईआ। जिस दे विच भगतां नाल प्यार, भगवन हो के खुशी बणाईआ। सन्त सुहेले लै उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति सतिवादी बणना यार, यारड़ा हो के रंग रंगाईआ। तेरा करदे रहे इंतज़ार, बिन अक्खा अक्ख खुल्हाईआ। तूं कीता आण बेदार, सुत्तयां ल्या उठाईआ। मानस जन्म पैज संवार, सुरती शब्द मिलाईआ। हरिजन रहे ना कोए गवार, मूर्ख मूढ़ां दे वड्याईआ। तेरा नाउं सच्चा निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। मेरा लहिणा देणा कर्ज़ा दे उतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ब्यास कहे आपणा लेखा वेख ओस अगम्मी पत्थर, जिस दा रूप नज़र किसे ना आईआ। जिस दे कारण गोबिन्द सुत्ता सत्थर, तेरी सेज सुहाईआ। जन भगतां नालों रहीं कदे

ना वक्खर, दूजे दर ना डेरा लाईआ। ओन्हां तेरी चोटी चढ़ना सिख़र, मंज़ल तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल ओन्हां दा कर फ़िकर, जो तेरे नाम दा फ़िकरा गाईआ। ओन्हां दी आत्म धारों निकल, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। कलयुग जीव चार कुण्ट दहि दिशा पिट्टण, नेत्र रोवण मारन धाईंआ। बिन तेरे भगतां लेखा कोई ना आवे नजिठ्ठण, जुग चौकड़ी रही समझाईआ। सब दी पूरी कर दे मणसा आसा इच्छण, इच्छया विच भिच्छया दे पाईआ। तेरा बोध अगाधा बोध किसे लेख (विच) ना आवे लिखण, कलम शाही चले ना कोए चतुराईआ। लख चुरासी विच्चों जगत निराले तेरे भगत दिसण, दिशा विच्चों आपणा हिस्सा रहे वण्डाईआ। जो सिध्धे तेरे धर्म दवारे आ के विकण, कीमत उन्हां लैणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख बिधाते दात आपणी देणी वरताईआ। ब्यास कहे जन भगतां अंदरों कढुदे विक्ख, अमृत रस दे चुआईआ। मालक हो के पओ दिस, दीद अंदर कर रुशनाईआ। बिन कलम शाही लेखा दे लिख, निरअक्खर धार मेल मिलाईआ। अग्गे जुग बीतड़े कित, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। तेरा खेल होवे नित नवित, जुग चौकड़ी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त जन भगतां कर हित, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। जिन्हां तेरी सिख्या लई सिख, सच्चा ढोला तेरा नाम गाईआ। ओन्हां दा मालक बण पित, पूत आपणी गोद उठाईआ। भेव अभेदा खोल्ह अनडिठ, जगत नेत्रां तों परे कर रुशनाईआ। सद रहिण तेरी साया हेठ, कलयुग अग्नी तत ना कोए तपाईआ। ब्यास कहे मेरा अन्त अख़ीरी लेखा मुकाउणा महीना जेठ, सम्मत तिन्न शहिनशाही नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत वसा आपणे देस, परदेसी गुरमुख रहिण कोए ना पाईआ।

३३१
२०

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

इक्की पोह कहे मैं चढ़या अच्छा, चार जुग दी इच्छया पूर कराईआ। हुक्म संदेसा देवां सच्चा, ज़िमीं असमानां आप सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा इक्को बच्चा, शब्दी सुत दुलारा खेल खिलाईआ। जिस दा हुक्म आदि जुगादि कदे ना होवे कच्चा, धुर दा पक्का रंग देणा चढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां इक्को हुक्म दस्सा, दिशा तों बाहर दिता जणाईआ। सच प्रेम प्यार दा त्यार कर लओ भत्ता, सुघड़ सुचज्जी सवाणी रूप बणाईआ। जिस दा रस जुग चौकड़ी कदे ना चक्खा, रसना जेहवा ना कदे लगाईआ। हाण्डी विच कदे ना पक्का, अग्नी ताअ ना कोए तपाईआ। नेत्र नैण जगत

ना लभ्भा, सृष्ट दृष्ट विच ध्यान ना कोए रखाईआ। जिस नूं खावणहारा आदि जुगादी इक्को अब्बा, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जिस दी कदे ना बदले तबअ, तबीअत सब दी दए बदलाईआ। भय विच रखे दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो लहिणा देणा मूल चुकाए हभ्भा, हरि सज्जण शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। इक्की पोह कहे मेरी कोई ना जाणयो वदी सुदी, सुध बुध दे जणाईआ। माण वड्याई करे ना कोई जगत बुद्धि, बुद्धिवानां दयां समझाईआ। आपणी रमज़ रखे कोए ना गुज्झी, घोरीआं दयां उठाईआ। प्रभ दी धार रहे ना लुकी, लोक परलोक वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां धार उठावे सुत्ती, एकँकारा इक्को दए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा वखाईआ। आपणा लेखा दस्से हरि निरँकार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेंहदा रिहा संसार, संसारीआं तों परे डेरा लाईआ। हुक्मे अंदर करदा रिहा विहार, विवहारीआं दा मालक नूर खुदाईआ। संदेसे देंदा रिहा वारो वार, शब्दी धार अक्खरां विच प्रगटाईआ। सिफ्तां विच सलाहां दा करदा रिहा इज़हार, मलाहां दा रूप गुर अवतार पैगम्बर जगत अख्वाईआ। देंदा रिहा भण्डार, भोरा भोरा झोली पाईआ। करदा रिहा उज्यार, नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी हुक्मे अंदर हरि करता आप वरताईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ सन्तोख सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर करन त्यारी, निरगुण धार सचखण्ड दुआर खुशी बणाईआ। जोती नूर परम पुरख दी बण नारी, अगम्म अगम्मड़े धाम आपणा हार श्रृंगार बणाईआ। सेवा करन अलख अगोचर अगम्म अपारी, पतिपरमेश्वर बेपरवाह अगम्म अथाह वेखणा चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी जिस दी बणी रही पनहारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चाकर हो के सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ज्ञान गीता अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा सिफ्तां वाला मंगदी रही भण्डारी, दर दरवेश हो के सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर निरगुण सरगुण धार जिस नूं करदे रहे निमस्कारी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सीस निवाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजुआना मर्द मर्दाना निरगुण जोत करे उज्यारी, वाहिद लाशरीक हक महबूब बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर हुक्म संदेसा शब्दी सतिगुर देवे एको वारी, इक्क इकल्ला सच दवारा दरगाह साची धाम न्यारा सच दवारे आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड

निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारे लैण अंगड़ाई, जोती धार विच्चों जोत प्रगटाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं रुत्त सुहञ्जणी लोक मात आई, धरनी धरत धौल वेखण अक्ख उठाईआ। नव नौ चार जिस दी याद विच आपणी आसा मनसा जगत लँघाई, ब्रह्मण्डां तों परे जिस दा ध्यान लगाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी खेल रिहा रचाई, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म संदेसा नर नरेशा देवणहारा थाउँ थाँइ, थान थनंतर गगन गगनंतर आपणा भेव खुल्हाईआ। तेई अवतार कहिण साडी वारी आई, वारता पिछली याद कराईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे मेरा हज़रत बेपरवाह नूर अलाही, लाशरीक शरअ तों बाहर आपणा हुक्म जणाईआ। नानक गोबिन्द कहे चरण कँवल मिले सरनाई, साहिब सुल्तान श्री भगवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच संदेसे अंदर रिहा बुलाई, मेहरवान महबूब आपणी कार कमाईआ। रल मिल सारे गाउणा चाँईं चाँईं, तूं मेरा मैं तेरा ढोला अगम्म अथाहीआ। पिछला लहिणा देणा देणा मुकाई, चार जुग दा लेखा प्रभ दी झोली पाईआ। अग्गे चलणा एका हुक्म रज़ाई, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा मालक प्रितपालक ख़ालक इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण बणना सच सवाणी, सुहञ्जणी धुर दी नज़री आईआ। समरथ स्वामी लभ्भणा इक्को हाणी, जो धुर दा बानी बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाणी, देवत सुर बैठे सीस निवाईआ। खेल रचया चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड वण्डाईआ। सिफ्तां विच बोल के बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दिती गाईआ। लख चुरासी जीव जंत निशानी, त्रैगुण माया पंज तत कुड़माईआ। जोती शब्दी खेल महानी, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दे चरण कँवल करदे आए ध्यानी, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सो हुक्मरान शहिनशाह शाह सुल्तानी, दो जहानां वाली इक्क अख्वाईआ। हुक्म संदेसे अंदर दे के कुरबानी, फ़रमांबरदार सारे रिहा उठाईआ। बिन अक्खां लोकमात मार ध्यानी, चार कुण्ट दहि दिशा जीव जंत सर्ब कुरलाईआ। जगत वस्तू रसना जेहवा बत्ती दन्द पेट अधार खांदे रहे महिमानी, शुकर मेहरवान कराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लहिणा देणा चुकावे दो जहानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल कराईआ। सेवा लाए आदि शक्ति धुर दी धर्म भवानी, दुर्गा इष्ट रूप नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा नाता तुट्टा पंज तत तन वजूद नज़र ना आवे कोए आलमे जावदानी, शरअ शरीअत दीन मज़्हब ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को हुक्म देवे पुरख अकाला दीन दयाला जिस नूं समझ ना सके कोई बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण

ग्रन्थ अन्त कहिण कोए ना पाईआ। बुज्झ ना सके कोए विद्वानी, चौदां लोक चौदां विद्या रही कुरलाईआ। जिस दे पिच्छे दे के आए कुरबानी, करबलयां विच आपणा आप मिटाईआ। सो समरथ स्वामी साचा मार्ग दस्से असानी, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्क इकल्ला सच महल्ला सति सतिवादी आप सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड इक्क दूजे नूं करन इशारे, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उठो वेखो लोकमात जगत नज़ारे, बेनज़ीर सब दी नजर रिहा बदलाईआ। सदी चौधवीं जगत दीन दुनी पहुंची ओस किनारे, जिस दा घाट पत्तन नजर कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जिस दी याद अंदर असीं लिखदे आए भविक्ख सारे, कागद कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। सो लेखा मुक्कण लग्गा धुर दरबारे, दरगाह साची आपणा हुक्म वरताईआ। करना खेल विच संसारे, सृष्टी दृष्टी तों बाहर आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर निराकार आपणा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्क दूजे नूं रहे दस्स, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। इक्क दे होईए वस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सब कुछ इक्को दे हथ्थ, देवणहारा बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो चलाया रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जिस दा नाअरा ढोला गाउँदे रहे अलख, अलख निरँजण सिफ्तां नाल वड्याईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला खोल्ह अगम्मा हट्ट, वणजारे सब नूं रिहा बणाईआ। झगड़ा मुका के चार वरन अठारां बरन दीन दुनी नालों कर के वक्ख, वक्खरा हुक्म रिहा सुणाईआ। साची रचना रिहा रच, कलयुग कूड़ी क्रिया ढाहीआ। लेखा मुका के मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, गुरूदवारे तों बाहर आपणा घर बणाईआ। जित्थे निरगुण नूर जोत होवे प्रकाश, हक महबूब जगत ना कोए वखाईआ। भगत सुहेले इक्क अकेले लख चुरासी विच्चों कर के दासी दास, सेवा विच सेवक धुर दी सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बरां कर के सवाधान, सचखण्ड दुआर निरगुण जोत बिन वरन गोत आलस विच रहिण कोए ना पाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ बीबी प्यारो दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण श्री भगवाना, पाहब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्मा हुक्म दे जणाईआ। तेरे हुक्मे अंदर खेल वेखदे रहे दो जहानां, जुग चौकड़ी तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सुणया धुर फ़रमाना, अगम्म अगम्मड़े दिता

जणाईआ। सम्मत शहिनशाही लोकमात प्रधाना, इक्क नालों दो वज्जे वधाईआ। असां करना त्यार तेरा पकवाना, कच्चा पक्का रूप ना कोए वटाईआ। किस वस्त दा होवे खाणा, सरगुण रूप ना कोए समझाईआ। असीं खोज खोज थक्के दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। साचा लभ्भया ना कोए निशाना, निशाने जगत गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी बेनन्ती कर परवाना, परवरदिगार सांझे यार हक खुदा वाहिद तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। किरपा कर श्री भगवान, तेरी बेपरवाहीआ। किस वस्त दा पक्के सचखण्ड दवारे परवान, जिस नूं रसना जेहवा बत्ती दन्द स्वाद ना कोए बणाईआ। सदा सदा सद नित नवित तैथों लै के दान, लोकमात मार झात पंज तत तन ख़ाक जगत वजूद हंढाहीआ। साडी इच्छया तेरी भिच्छया बिन तेरी किरपा करे ना कोए परवान, निगाहबान दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तीर्थ तट शरीअत विच फिरे शैतान, शाम अन्धेरा वरन बरन नज़री आईआ। हुजरे हक हक महबूब तेरा पढ़े ना कोए कलाम, कायनात कुदरत दे मालक तेरा दरस कोए ना पाईआ। लिख्तां विच भविख्तां विच दस्स के आए धुर अमाम, अमाम दा अमाम नूर खुदाईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा नज़ाम, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहिण कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव जाती मानुश मानुख दस्सणा एको नाम, एकँकारा गृह मन्दिर अंदर काया माटी इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर करो सुरती, सुर धुर दी दयां जणाईआ। दर्शन करो अकाल मूर्ती, जो अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जिस दी खेल सदा हाज़र हज़ूर दी, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी आवाज़ शब्द अगम्मी तूर दी, तुरीआ तों परे आपणा हुक्म दए जणाईआ। जिस दे कोल वस्त अमोलक चरण धूढ़ दी, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दात बख्श के जोत अगम्मी नूर दी, नूर नुराना करे रुशनाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल मेटे क्रिया कूड़ दी, कूड़ कुटम्ब दए गवाईआ। धार चलाए आपणे दस्तूर दी, दस्त बरदार सारे दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जाओ जाग, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को तक्को कन्त सुहाग, दीन मज़्ब दा लेखा दयो तुड़ाईआ। दुनिया दा छड्डो रिवाज, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तों बाहर करे पढ़ाईआ। तुहाडी सृष्टी सदा मुहताज, तुहाडे उत्ते पुरख अकाल दा राज, रईयत हो के सीस देणा झुकाईआ। अन्त अखीर बेनज़ीर लाशरीक वाहिद मारी इक्क

आवाज़, अज़ां बांग ना कोए सुणाईआ। चरण कँवल उपर धवल सारे हो मुमताज, नवाज़श विच सीस देणा झुकाईआ। परदा ओहला खोल्हे तुहाडा राज़, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। छब्बी पोह जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां बदल देणा समाज, समग्री तुहाडी तुहाडे कोलों आपणी झोली पाईआ। हुक्मे अंदर शब्द अंदर चार जुग दा पूरब पिछला पुछे जवाब, अगला हुक्म आप सुणाईआ। जिस धार विच्चों अक्खरां वाली बणाई किताब, सो निरअक्खर तुहाडे दीन दुनी तुहाडी करे लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को हुजरा इक्को वखाए महिराब, गुरूदवारा इक्को सोभा पाईआ। जिस गृह मन्दिर अंदर महल्ल उच्च अटल मनार शाह पातशाह शहिनशाह वसे हक नवाब, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बैठा सोभा पाईआ। ओथे लोड़ नहीं अप तेज वाए पृथमी आकाश, रजो तमो सतो गुण कम्म किसे ना आईआ। सो स्वामी साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला आपणा वरते स्वांग, स्वांगी हो के आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी धार प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण, धुर फ़रमाने सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी चुक्के साडा लहिण, देणा देवे बेपरवाहीआ। समरथ स्वामी असां दर्शन तक्कणा ऐन, हाज़र हज़ूर नज़री आईआ। जिस नूं लभ्भ ना सके शास्त्र सिमरत वेद पुराण बाल्मीक वाली रमायण, रविदास चमारा जिस दी दए गवाहीआ। जुग चौकड़ी जिस दा नाम इक्क रसायण, रसीए गुरमुख भगत लए प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जिस वहाया वहिण, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्ट धार बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे अन्तर आई हैरानी, निरंतर हुक्म रिहा जणाईआ। कलयुग शरअ दिसी शैतानी, साचे मार्ग चले ना कोए लोकाईआ। जगत जिज्ञासूआं अंदर आई बेईमानी, सन्त भगवन्त मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। साचा नाम निशाना तीर मारे कोई ना कानी, दूई द्वैती परदा पार ना कोए कराईआ। अमृत रस निजर झिरना देवे कोए ना पाणी, बूँद स्वांती जाम ना कोए प्याईआ। अनहद नादी धुन आत्मक राग सुणाए कोई ना बाणी, धुर संदेसा ना कोए दृढ़ाईआ। निरगुण जोत जगे ना कोए नुरानी, दीआ बाती ना कोए रुशनाईआ। रसना जेहवा परम पुरख परमात्म तेरी पढ़दे सारे कहाणी, ढोले रागां नादां विच सुणाईआ। मंज़ल हक चढ़े ना कोई तेरा दरस करे नुरानी, इन्सानी जवानी कम्म किसे ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होई बदनामी, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। धरनी धरत धवल आई हानी, हार विच दिसे लोकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ कलयुग झगड़ा चार युग दा अन्त मेट दीवानी, गुर अवतार पैगम्बर शहादत सारे रहे भुगताईआ। सदी चौधवीं अन्त अखीर बेनज़ीर तेरी लाशरीक नज़री आए उह निशानी, जिस नूं

ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द हुक्मे अंदर गए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सच दुआर एकँकार आपणा खेल प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर करो याद, पूरब लहिणा देणा जणाईआ। जिस कारण तुहाडा पंज तत खेड़ा कीता आबाद, तत तत्तां नाल मिलाईआ। शब्द अगम्मी अंदर दे के आवाज़, सुरती आपणे रंग रंगाईआ। दीन मज़्ब दा कर के काज, करनी दा करता गया समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अकाला दीन दयाला समरथ स्वामी खेल करे बदल देवे समाज, समां समाप्त आपणे हथ्थ रखाईआ। तुसीं लेखा लिख के आए नाल कलम दवात, शाही शहादत रिहा भुगताईआ। उस दा सब दे कोलों मंगणा जवाब, जवाब तल्बी लए कराईआ। किस बिध कट्ठे हो के सारे करो आदाब, सजदा सीस झुकाईआ। लेखा दस्सो आपणा आप, सलाहगीर दूजा नज़र कोए ना आईआ। कवण जीव मेट के रोग संताप, संसे गया गवाईआ। कवण इष्ट देव स्वामी कर के आपणा जाप, जग जीवण दाते मिल के तुहाडी करे वड्याईआ। कवण रूह बुत्त कर के पाकी पाक, पतित पुनीत आपणा आप दए वखाईआ। कवण बिस्मिल हो के होया विस्माद, हम बिस्तर सोभा पाईआ। कवण अनरस देवे स्वाद, रस इक्को इक्क चखाईआ। हुण लेखा नहीं बिदर दा खाणा साग, स्वांग होर दिता बदलाईआ। अग्गे भगत सुहेले तुहाडी रखदे तांघ, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। हुण तुहाडे कोलों पुरख अकाल ने खाणा खाज, जिस दी ख़ाहिश समझ सके ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा हुक्म दए फ़रमाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

धुर शब्द कहे सुणो गुरू अवतार, पैगम्बरां दयां दृढ़ाईआ। छब्बी पोह दा दिवस लैणा विचार, जिस दा लेख ना कोए समझाईआ। पूरब जन्म दी भविख्तां वाली आपणी वेखो विचार, अक्खरां तों बाहर जिस दी पढ़ाईआ। जिस इच्छया नाल मंगां मंगदे गए कल प्रगट होवे कल्की अवतार, निहकलंक कलंक सब दे दए गवाईआ। अमामां दा अमाम होए सिरजणहार, झगड़े तमाम दए चुकाईआ। निरगुण नूर जोत दा करे उज्यार, जिस नूं जन्मे कोई ना पिता माईआ। जगत दवारा रखे ना कोए आधार, ग्रन्थां ओट ना कोए तकाईआ। मन्दिरां करे ना कोए प्यार, इट्टां पत्थरां ना कोए वड्याईआ। इक्को आपणा नाम शब्द करे जैकार, जिस शब्द नाल गुर अवतार पैगम्बर लए बणाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म कर लेखा जाणे सर्ब

३३८
२०

संसार, संसारी भण्डारी दीबाण वाले आपणा हुक्म मनाईआ। खेल करे आप करतार, करनी दा करता वेस वटाईआ। जिस नूं खोजदे गए लभ्भदे गए सदा जुग चार, चौकड़ी ओट तकाईआ। जिस दा गृह मन्दिर टिकाणा सचखण्ड दवार, दरगाह साची बैठा सोभा पाईआ। बिन दीवे बाती कमलापाती हो उज्यार, निरगुण नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। बेख़बरां कर के ख़बरदार, जगत सुत्तिआ लए उठाईआ। तिस स्वामी दा समां बदलण दा सोहणा जेहा तिवहार, बिवहार देणा दृढ़ाईआ। कुछ लेखा दिता ईसा नूं ऐतवार, अनायत विच बख़्शिश झोली पाईआ। सोम दा समां मंगदे गए जुग चार, वस्त हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। वक्त सुहेला रख्या आपणे हथ्थ निरँकार, निरगुण आपणे विच छुपाईआ। अन्त संदेसा दे के एका वार, एकँकार रिहा दृढ़ाईआ। सारयां मिल के आउणा सच दरबार, दर दरबार इक्क जणाईआ। तुहाडे नाल भगतां दा करे प्यार, विचोला बण के आपणी खुशी बणाईआ। मिलणी दा वक्त होणा चार, सूर्या चढ़दे तों लैंहदे मुख भवाईआ। चार जुग तों वक्खरा होणा विहार, जिस नूं बुद्धी ना कोए समझाईआ। तुसां बण के आउणा होणहार, नौजवान रूप वटाईआ। जे कन्त तक्कणा होवे बणके आउणा नार मुटयार, जोबनबंती रूप सुहाईआ। बिन दीवे बाती निरगुण जोत दा वेखणा उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। खेल करे आप करतार, कारीआ कर्म आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल अनोखा इक्क वखाईआ। गुर अवतार कहिण की रचना आप रचावेंगा, हरि शब्द कहे कलयुग वेख झूठा वहिण, की निरगुण जोत प्रगटावेंगा। पुरख अकाल कहे मैं तुहाडा चुकावां लहिण देण, अगला लेखा सब नूं आप समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा भेव आप खुल्हवांगा। धुर दा भेव आप खुल्हावांगा। परदा ओहला हक चुकावांगा। गुर अवतार पैगम्बरां आप समझावांगा। सच सुअम्बर इक्क रचावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, धर्म दवारा इक्क प्रगटावांगा। सोहणा सुहा के धुर दा मन्दिर, सचखण्ड दुआर वड्यावांगा। बिन भगतां जिस दे लँघे कोई ना अंदर, लख चुरासी जूनीआं विच फिरावांगा। कर प्रकाश अन्धेरी कंदर, जोती नूर डगमगावांगा। गुरमुखां तोड़ के बजर कपाटी जंदर, चिन्ता ग़म सर्ब गवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दहि दिशा इक्को हुक्म मनावांगा। दहि दिशा दया कमाएगा। पुरख अबिनाशी खेल रचाएगा। जीव जंत समझ कोए ना पाएगा। साध सन्त सर्ब तड़फाएगा। जल मीन विछोड़ा आएगा। साची तलकीन इक्क कराएगा। बिन भगतां यकीन किसे रहिण ना पाएगा। गुर चेला रहे ना कोए अधीन, फ़रार सब नूं आप कराएगा। झगड़ा पए नर मदीन, कन्त सुहाग ना कोए हंढाएगा। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी धार चले महीन, महीना पोह खुशी मनाएगा। गुरमुखां दे के साची

तालीम, सिख्या संथा सबक इक्को इक्क पढ़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर मन्दिर दस्स इक्क अज़ीम, आली तों आलाशानां दी शान बेपहचान मेहरवान इक्को दया कमाएगा।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ मिलखा सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर वेखो इक्क निशान, निशाना धुर दा दयां जणाईआ। जित्थे मेला भगत भगवान, गुर चेला इक्को रूप नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाण, वज्जे सच वधाईआ। परमात्म आत्म करे परवान, परवाना धुर दा दए फड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे के इक्क ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क समझाईआ। इक्को मन्दिर दस्स मकान, मकबरयां तों खहिड़े दिते छुडाईआ। धुर दा मालक नज़री आए अमाम, हुक्मरान शहिनशाहीआ। जिस नूं सारे करदे आए सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सुण के धुर पैग़ाम, कलमे मातलोक सुणाईआ। सो मालक दो जहान, निरगुण निरवैर आपणा खेल खलाईआ। जन भगतां देवे नाम निधान, गुणवन्ता झोली पाईआ। उठ के वेखो राम काहन, सब नूं दयां जणाईआ। अबिनाशी करता खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। हरि शब्द कहे भगत भगवान दा वेखो सगला रंग, रंगत इक्को रिहा चढ़ाईआ। आत्म सेजा बैठ पलँघ, सच सिँघासण दए वड्याईआ। नाम निधान वजा मृदंग, कूड़ी इच्छया बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म हो के संग, सगला संग निभाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़ के बन्दीख़ाना बन्द, बन्दगी इक्को रिहा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाउणा छन्द, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं जाणा लँघ, सचखण्ड दुआर वड़ना चाँईं चाँईंआ। जगत कटार करना पए ना कोए जंग, शब्द सूरबीर दए बणाईआ। अन्तर अन्तर निरंतर दे के इक्क अनन्द, परमानंद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक्क सरनाईआ। हरि शब्द कहे भगत भगवान दा हुन्दा वेखो मिलाप, मिल मिल खुशी मनाईआ। मिलयां रहे कोई ना पाप, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म बणे साक, सृष्ट सबाई सगला संग तजाईआ। जो भविख्तां विच आए आख, आख़र ओहो कार कमाईआ। दुनिया नूं परदा पा के साफ़, ओहला ल्या रखाईआ। जन भगतां कर मुआफ़, जन्म जन्म दी दुरमति मैल धवाईआ। साचा सोहला धुर दा ढोला सोहँ दस्स के जाप, आत्म परमात्म नाता दिता जुड़ाईआ।

साची धीरज दे विश्वास, विश्व आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दिता मिटाईआ। मानस जन्म कर के रास, रस्ता अगला दिता वखाईआ। गुरमुख चढ़न आपणे घाट, दूजे पतण कोए ना जाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी मिटे वाट, गृह मन्दिर साचे दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पूरी कर के आस, आसरा इक्को दिता वखाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ रूप सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे जन भगतां होए सदा कृपाल, कृपानिध आपणी दया कमाईआ। सच दुआर वखा इक्क धर्मसाल, धुर दे धाम दए वड्याईआ। जित्थे सोहण शाह कंगाल, राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख अकाला वसे नाल, दीन दयाल दया कमाईआ। मानस जन्म लेखे लाए घाली घाल, धायल कर के कूड़ कुड़यारा दए मिटाईआ। आपे वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के पुछे चाँईं चाँईंआ। जिन्हां दे अंदर सच प्रीती दा वज्जे ताल, प्रीतम हो के दए वड्याईआ। नाता तोड़ के जगत जंजाल, जागरत जोत दए समझाईआ। अन्त पोह ना सके काल, जम का भय ना कोए डराईआ। सब दा पूरा करे सवाल, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर दे के गए अहिवाल, सो दाता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल मेहरवान, सद मेहर नज़र उठाईआ। जुग जुग देंदा आया दान, सन्त सुहेला नाम वरताईआ। बणदा आया काहन, गुरमुख गोपी जगत हंढाहीआ। झुलाउँदा आया निशान, कूड़ निशाने जगत बदलाईआ। गाउँदा आया गान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाम शनवाईआ। करदा आया हैरान, हैरानी विच करे लोकाईआ। कलयुग अन्त पूरा करे जो देंदा आया परवान, परवाने पिछले वेख वखाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी फेरा पाईआ। सो लहिणा देणा चुकाए आण, अनक कलधारी वेस वटाईआ। जन भगतां कर कल्याण, कलम शाही तों परे लेखा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चढ़ावणहारा सच बिबाण, मेहरवान हो के महबूब आपणी सेव कमाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे जुग जुग जन भगत सुहेला चंगा, चंगी प्रभ दे नाल वड्याईआ। जिन्हां दे चरण चुंमे गंगा, गोदावरी खुशी मनाईआ। जगत ढोला गाए छन्दा, साचा राग सुणाईआ। लेखे लग्गा जन्म दा कीता धन्दा, बन्दगी बन्दना वाली

दृढ़ाईआ। पार किनारा नज़री आवे कन्ढा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पुरख अकाल देवे इक्क अनन्दा, निज आत्म खुशी बणाईआ। अमृत मेघ बरसे ठंडा, कूड़ी तप्त बुझाईआ। टुट्टयां पावे गंढां, विछड़यां लए जुड़ाईआ। लेखे लाए मंदा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे जम दा तोड़ के फंदा, फाँसी दए गवाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म आपणे विच मिलाईआ। लेखे लग्गे जन्मा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान परवान करे काया माटी चम्मा, चर्म दा जरम कुकर्म दा कर्म आपणे लेखे पाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर करनी त्यार रसोई, रसूआ जिस दा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा रस जाणे ना कोई, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। जेहड़ी वस्त किसे नहीं बोई, उत्भुज रूप ना कोए वटाईआ। पाणी धार किसे नहीं चोई, रसीआ रस ना कोए बणाईआ। कुछ आसा मंग मंगी लोई, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। कुछ मुहम्मद कीती दरोही, खुद खुदाए ध्यान लगाईआ। अन्त गोबिन्द कीती अरज़ोई, बेनन्ती गया सुणाईआ। तुध बिन मिले कोए ना ढोई, ढोआ हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। चार जुग जिस सृष्टी दृष्टी अंदरों टोही, घट घट वेख वखाईआ। आपणी जोत इक्क बलोई, लोयण दित्ते खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे की वस्त करो त्यार, वास्तक देणा समझाईआ। किस बिध भोग लगाओ निरँकार, निराकार हो के देणा दृढ़ाईआ। की ओढण देवो उत्ते आहार, परदा कवण रखाईआ। की अरज़ दयो गुज़ार, बेनन्ती सच सुणाईआ। किस बिध करो नमस्कार, बिन सीस सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच समग्री की वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे की वस्त जो सब तों होवे अच्छी, अच्छी तरह देणा समझाईआ। किस दवारे होवे रखी, कवण घर वड्याईआ। किहड़ी लै के आवे सखी, सुखन पिछला पूर कराईआ। कवण वेखे अक्खीं, बिन नेत्र नैण खुल्हाईआ। साचे मार्ग आवे नठ्ठी, बण के पाँधी राहीआ। किहड़ी सिफ्तां वाली पड़्हे पट्टी, की पटने वाला गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा कवण वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर कवण बणे रसोया, रसम अगली दए समझाईआ। कवण रूप एका एकँकार होया, होका दे के दयो दृढ़ाईआ। कवण सच प्रकाश करे लोया, लोक परलोक परदा दए उठाईआ। कवण साची नींद बिन ग़फ़लत सोया, आलस बाहर कढाहीआ। कवण किस

बिध लै के आए ढोया, ढोला गावे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिच्छों तों अग्गे होया, अग्गे तों पिच्छा सब नूं याद कराईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ सुभागवन्ती दे गृह जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दा भोजन अगम्मा रस, रसना रस ना कोए चखाईआ। जिस नूं आसा नहीं कोई रवि ससि, सूरज चन्द दा तेज ना कोए वड्याईआ। जगत जहान ना आवे हथ्थ, सृष्टी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आपणे अन्तर रखे पुरख समरथ, दूसर मिले ना कोए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लभ्भ लभ्भ गए थक्क, खोजया वाहो दाहीआ। हकीकत विच्चों मिल्या कोई ना हक, लाशरीक आपणे विच समाईआ। थक्के मांदे सारे गए अक्क, अकल बुद्धी दी चली ना कोए चतुराईआ। अन्त कन्त भगवन्त चरणां उत्ते सीस दिता रख, जगदीस तेरी बेपरवाहीआ। निरगुण धारों सानूं कर के वक्ख, लोकमात सरगुण तत दिता हंढाहीआ। सिफ्तां वाला गवाउँदा रिहों जस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी राह चलाईआ। आपणा नाउं दस्स अलख, ढोले घर घर दित्ते सुणाईआ। असीं दस्स के आए पुरख अकाल होवे प्रगट, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोती जोत करे रुशनाईआ। सच धर्म दा खोले हट्ट, दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। जित्थे राउ रंक जाण वस्स, ऊँच नीच ज़ात पात झगड़ा रहे ना राईआ। इक्को नाम भण्डारा दस्से सच, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप वरताईआ। आपणा खेल करे प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म दा मालक हो गोसांईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए ओस दी रोज़ी, राज़क रहीम रहमान अखवाइंदा। प्रभ मालक धुर दा चोजी, जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर बणा के खोजी, आप आपणा आप छुपाइंदा। हुक्म संदेसा दे के लोक परलोकी, ब्रह्मण्ड खण्ड डंक वजाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के इक्क सलोकी, विष्न ब्रह्मा शिव धार प्रगटाइंदा। पंज तत बणा के कोटन कोटी, कोट गढ़ बंक दवारा आप सुहाइंदा। अन्तिम सब दी चढ़ के चोटी, चोट शब्द नाम लगाइंदा। आत्म परमात्म बण के गोती, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप समझाइंदा। जन भगतां मंज़ल दस्स के सौखी, अगला पैंडा पन्ध मुकाइंदा। साचा मेल मिला के निरगुण नूर जोती, जोती जाता दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी आपे दस्से रोज़ी, वस्त आपणी आप दृढ़ाइंदा।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ वरयाम सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे मैं वेखी धरनी भूमी, भूमिका सोहणी नज़री आईआ। जिस नूं समझे ना कोए नजूमी, विद्या विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। भगत दुआर कोई खेल नहीं मामूली, नामालूम आपणी कार कमाईआ। चरण धूढ़ जिन्हां मस्तक देवे धूली, धर्म दुआर इक्क वखाईआ। इन्साफ़ विच कदी ना करे बेअसूली, असल दी नसल दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। धरनी कहे मैं होई वड्डी, वड वड्डे दिती वड्याईआ। मैं सृष्ट सबाई छड्डी, छड्डी जगत लोकाईआ। वस्त अमोलक जन भगतां प्रेम धार लभ्भी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दे वहिण विच वहिन्दी नौ सौ नड़िनवे नदी, नदीआं तों पार समझ किसे ना आईआ। ओसे दे हुक्म अंदर बद्धी, बन्दना विच बैठी सीस निवाईआ। सच प्रीत प्रीतम वाली लग्गी, पीआ पिरीआ कर के रही बुलाईआ। ओसे दी भगतां दी भगती वाली वेखी धार सजी, सज्जण मिल्या धुर दरगाहीआ। मेरे उत्ते पवण ठंडी वगी, सांतक सति रही कराईआ। चार जुग दी बुझी अग्गी, कूड़ी तप्त ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र रिहा उठाईआ। धरनी कहे मैं वेख्या सच्चा धर्म, दवारा धुर दा नज़री आईआ। मेरा उच्चा होया कर्म, निहकर्मी होया सहाईआ। संसा गया भरम, भाण्डा दिता भन्नाईआ। वड्याई दिती तेरे उत्ते भगतां ल्या जरम, जन्म प्रभ दे लेखे लाईआ। इक्को ढोला पढ़न, साचा राग अल्हाईआ। इक्को दी रखण सरन, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। सो तेरे उत्ते चरण आया धरन, धवल रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले आया फड़न, पाँधी हो के फांदी हो के नाम डोरी तन्द बंधाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ गुरमीत सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगत सुहेले प्रभ दे तक्के बाल, बाली बुध मिली वड्याईआ। जिन्हां दे अन्तर बदल गई चाल, चाल निराली दिती वखाईआ। इक्को मन्नदे पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। अठ्ठे पहर खुशीआं विच वजाउँदे ताल, तल्ब अवर ना कोए रखाईआ। बेनन्ती अंदर आपणा दस्सदे हाल, अहिवाल पिछला नाल मिलाईआ। पूरब जन्म दी पूरी कर के घाल, करमां दा लेखा रहे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां विच्चों बोले द्वारका वासी, फ़रमान इक्क सुणाईआ। जन भगत दी सेवा खासी, ख़ालस

रंग रंगाईआ। जिस दा इष्ट इक्क अबिनाशी, जन्म मरन विच ना आईआ। सो उतरे पार घाटी, मंज़ल मुके जगत जुदाईआ। जिस पूरब मन्नी आखी, द्वापर दए गवाहीआ। इकलोता बेटा जिस नूं जन्मया बिदर दी चाची, लहिणा ओसे दा वेख वखाईआ। उह विद्या पढ़ के कांशी, कश्मीर बैठा डेरा लाईआ। निरगुण दर्शन होया रातीं, नूर नूर जोत रुशनाईआ। उस मंगी इक्क दाती, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जिवें सुदामा तेरा साथी, अंदरला संग बणाईआ। जे मेरी करें राखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं गावां तेरी साखी, सुख़न बचन रसना नाल अलाईआ। तूं धुर दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। श्री भगवान किहा मैं मन्नां आखी, कलयुग अन्त अख़ीर आपणे रंग रंगाईआ। तेरी बदल के जीवण वाली हयाती, हज़रतां दे पिच्छों तेरा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र करे निरँकार, निरवैर दया कमाईआ। सुदामे दा चचाज़ाद प्यार, पूरब लेख प्रगटाईआ। भगवन दे आधार, अदल आप कमाईआ। जुग विच्चों जुग दी बदली कर संसार, समुंद सागर खेल वखाईआ। भगत सुहेला बण मुरार, मुरारी हो के वेख वखाईआ। पिछला कीता कौल इकरार, आपणा तोड़ निभाईआ। करमां दा जन्म सुधार, देवे माण वड्याईआ। कल कल्की लै अवतार, कल कलेश गवाईआ। बाला नढ्ढा नन्हा निक्की दस्स गुफ़तार, गुप्त आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा चुकावे भगत भगवान कृष्न सुदामे यार, यार दा उधार, चचाज़ाद विचार, विचार दा पसार, हरी का दवार, तन दा शृंगार, गुरमीत नज़री आईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ बीबी चरणी दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे भगतो तक्को मूल, मुल्ल कीमत कोए ना पाईआ। पिछली करनी जाओ भूल, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। हरि मार्ग इक्क असूल, अपनाओ थाउँ थाँईंआ। जिस दा हुक्म इक्क माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शंकर मस्तक ला के धूल, खुशी रिहा बणाईआ। हथ्थों सुट्ट त्रिसूल, त्रैभवण धनी दर्शन पाईआ। जिस दा पंघूड़ा हरि भगत रहे झूल, हुलारा दो जहानां बाहर वखाईआ। बण के कन्त कन्तूहल, सेज सुहञ्जणी रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे हरि भगती वेखो रंग, रंगत अगम्मी दयां दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म माणो अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। साचा ढोला गावो बिन रसना जेहवा दन्द, तूं

मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, आवण जावण दए चुकाईआ। खुशीआं दा इक्को दस्से छन्द, नाम विचोला बण आप समझाईआ। निरगुण सरगुण वसे संग, सगला संग बणाईआ। जन भगत दवारा जाए लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। प्रेम रंगीला वेख पलँघ, बिन पावा चूल दए सुहाईआ। सच नाद वजा मृदंग, राग आपणा दए उपजाईआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म हँ, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता ठांडा सीता सदा अतीता सद भावना सब दी वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे तक्को कलयुग अन्तिम रीती, रीतीवानां दयां दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो ध्यान मारो मन्दिर मस्जिद मसीती, गुरूदवारे वेख वखाईआ। काया दिसे ना कोए ठांडी सीती, अग्नी तत सब नूं रही जलाईआ। मन वासना हँकारी होई नीती, विकारां विच लड़ाईआ। आत्म दिसे ना कोए ठांडी सीती, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी आपणी दया कीती, जन भगतां होया सहाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़ी ला बाग़ीची, बाग़बान हो के टहणी रिहा महकाईआ। गुरमुख धार कर अतीती, त्रैगुण लेखा रिहा चुकाईआ। हरिजन आत्मा सदा जीती, जित हार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां अन्तर निरंतर साचे नाम मंत्र दी देवे प्रीती, प्रीतम हो के तोड़ निभाईआ।

३४५
२०

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ पाल सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे खेल वेखो करनी दा करता, की की आपणा रंग वखाईआ। मालक बण के धुर दा भरता, दाता दयावान हो जाईआ। माण वड्याई देवे साचे भगतां, भाग आपणा आपणे विच्चों वखाईआ। एका रंग रंगाए साची संगता, संगल शरअ ज़ंजीर कटाईआ। झगड़ा रहे ना द्वैत भाव मन दा, मनसा कूड़ी रिहा गवाईआ। लहिणा दे के साढे तिन्न हथ्थ तन दा, सरीर अख़ीर आपणे रंग रंगाईआ। गृह सुहा के गुरमुख जन का, जन आपणे घर वसाईआ। भय रिहा ना कोई डंन का, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। मेल मिलाया पारब्रह्म ब्रह्म का, नाता निरगुण निरगुण नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग वखाए छप्पर छन्न का, अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ बीबी मायो दे गृह जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे हरि साहिब गुण निधान, आदि जुगादि वड्डी वड्ड वड्याईआ। मेहरवान हो के देवे अगम्मा दान, वस्त अमोलक नाम भण्डारा आप वरताईआ। प्रेम प्रीती अंदर भगत सुहेले कर परवान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धर्म दवारे दा इक्क वखा सच्चा निशान, निशाने कूड़े दए बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अन्तर आत्म दस्स के सच ज्ञान, निरंतर रूप अनूप दरसाईआ। सो सन्त सुहेले गुरमुख सोहँ ढोला गाण, जिन्नां आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अथाह, अकल कलधारी हरि अखवाइंदा। जुग चौकड़ी चलाए राह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर बणाए मलाह, नईआ नौका नाम हथ्थ फड़ाइंदा। सिफ्त सालाह बेपरवाह आपणी आप जणा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण लोकमात वड्याइंदा। अन्तिम सब दी ख़ाकी माटी कर स्वाह, निरगुण निरगुण रंग चढ़ाइंदा। सो सोहला ढोला रहे गा, तूं ही तूं ही राग अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर ढोला गावण सोहँ सो, दूजी करन ना कोए पढ़ाईआ। जिस धार विचों निकले अन्तिम ओसे विच गए सौं, आलस निंद्रा ना कोए बणाईआ। सति सरूप गए हो, होका दे के जगत लोकाईआ। दीनां मज़्हबां नालों तोड़ के मोह, मुहब्बत प्रभ दे नाल रखाईआ। निरगुण धार हो के निरगुण गए छोह, शहिनशाह विच आपणा आप समाईआ। जो भगतां अंदर जुगा जुगन्तर करे लो, लोयण अन्तरला दए खुल्लाईआ। दूजा अवर ना जाणे को, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला लै के आया ढोआ ढो, नाम निधाना रिहा वरताईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती देवे चो, चार जुग दे विछड़े लए मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जोत सरूप वड भूप आपे हो, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत सन्त सुहेले पार कराईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग अन्त अन्धेर होया अन्ध, साचा नाम हरि का चन्द ना कोए चमकाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना मन विकारी दिसे गंद, आत्म परमात्म प्रभ दा ढोला कोए ना गाईआ। साचा सोहला नाद अनादी बिन रसना जेहवा सुणे कोई ना छन्द, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्लाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी सब नूं सुत्ता दे कर कंड,

काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सरीर आपणी करवट ना कोए बदलाईआ। नेत्र रोंदी वेखी जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ देण दुहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ वज्जे ना कोई हक मृदंग, नाम नगारा एकँकारा ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दुआर दर ठांडे बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग वेखी अन्धेरी रात, भिन्नड़ी रैण ना कोए सुहाईआ। किसे दा लेखे लग्गा दिसे ना पूजा पाठ, सिमरन जोग अभ्यास विच तड़प रही लोकाईआ। सच सरोवर अमृत आत्म मारे कोई ना ठाठ, निजर रस धुर दा झिरना ना कोए झिराईआ। सच दुआर एकँकार सदी चौधवीं मिले ना किसे हाट, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ सारे रोवण मारन धाहींआ। सति सन्तोख धीरज सृष्ट सबाई तुट्टा यति, सांतक सति ना कोए वरताईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वरन बरन दीन मज़्ब ज़ात पात झगड़ा पाया मनमत, गुरमति गहर गम्भीर बेनज़ीर सारे गए भुलाईआ। तेरे मिलण दी पुरख अकाल खुल्ही किसे ना अक्ख, जगत नेत्र हुंदयां तेरा दरस कोए ना पाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख समरथ, कलयुग अन्त कूड़ी रेख जगत भेख दे गवाईआ। जुग बदलणा तेरे हथ्थ, सतिजुग साचा लै प्रगटाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर इक्को नाम आपणा दस्स, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। इक्को तेरा दवारा सब नूं सुज्झे हक, लाशरीक जलवा नूर कर रुशनाईआ। भविख्तां अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा आउणा आए दस्स, निहकलंक कल कल्की आपणा नाउँ प्रगटाईआ। मोह विकार जगत हँकार खेड़ा कर भठ्ठ, सति सच धर्म इक्क प्रगटाईआ। हर हिरदा तेरा नाम लए जप, कोट जन्म दा पप देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाअरा दस्स अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा परदा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दीन दुनी वेखी सड़दी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। तेरी मंजल कोए ना चढ़दी, रूह बुत्त दोवें रहे कुरलाईआ। अन्तिम बाज़ी दिसे हरदी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। एह खेल कलयुग कल दी, जिस ज्ञानी ध्यानी विद्वानी दित्ते भुलाईआ। कोई समझे ना धार नरायण नर दी, विषयां वाले गुरू सारे रहे मनाईआ। समझ आई ना तेरे घर दी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बाणी पढ़ के झट लँघाईआ। जो आत्म परमात्म तेरा दर्शन करदी, जोती जोत जोत विच रुशनाईआ। उह मन वासना कदे ना लड़दी, झगड़ा करे ना जगत लोकाईआ। सचखण्ड दवारे इक्को चढ़दी, जिस दी मंज़ल बेपरवाहीआ। बिन सीस सीस चरणां उत्ते धरदी, धरनी धरत धवल दा लेख मुकाईआ। वसनीक बणे ओस घर दी, जिस घराने विच्चों गुर अवतार पैगम्बर लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब

सतिगुर तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सारी सृष्टी वेखी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कोटन कोटि बणे भेखी, वेस गुरुआं वाला वटाईआ। कलम शाही नाल बणे लेखी, लेख तेरा रहे जणाईआ। जंगलां विच बण परदेसी, भज्जण वाहो दाहीआ। माटी खेह नाल खेड रहे खेडी, धूणी ख़ाक रमाईआ। तेरा दिसे कोए ना भेती, भवजल विच दिसे लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी जाणे कोई ना नेकी, जिस लख चुरासी विच्चों मानस जन्म दिता बणाईआ। निरगुण आत्मा आपणी बणा के बेटा बेटी, घर साचे दिती वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू अमाम, अमलां तों रहत वेख वखाईआ। दीन दुनी दा बदलया वेख्या नज़ाम, नौबत हक ना कोए वजाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया सारे होए ग़ुलाम, ग़ुरबत अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। साचा सजदा करे ना कोए सलाम, हक महबूब ना कोए मनाईआ। जिधर तक्कीए वेखीए घर घर दिसे हराम, हरि के पौड़े चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू सानूं सब ने कीता बदनाम, बदी नेकी सब तेरी झोली पाईआ। सदी चौधवीं असीं बण गए आम, अवाम विच ना कोए वड्याईआ। अन्तिम दीन दुनी दा खहिड़ा छड्ड के तमाम, तेरी चरणी बैठे सीस निवाईआ। कलयुग मेटणा सतिजुग लाउणा पुरख अबिनाशी तेरा काम, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी मेहरवान, श्री भगवान मेहर नज़र उठाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ बाल कौर दे गृह जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरे भगतां जाईए बलिहार, जो सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार तेरा ध्यान लगाईआ। असीं सिख्या देंदे आए सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चौकड़ी जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी नाल समझाईआ। तेरा नाम ढोला गीत संगीत गाउँदे रहे अगम्मी वार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग अल्हाईआ। हुक्मे अंदर सुनेहड़ा देंदे रहे जगत सृष्टी संसार, कायनात मख़लूक ख़लक सुणाईआ। वाहिद लाशरीक तेरा करदे रहे इज़हार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा परदा मात उठाईआ। तेरे नाम दा बोल के इक्क जैकार, नाउँ निरँकार रहे सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सृष्ट सबाई सारी होई बेहाल, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, शाह पातशाह शहिनशाह धीरज धीर ना कोए धराईआ। बिन तेरी किरपा साचा नाम मिले ना किसे सच्चा धन माल, अतोट अतुट वस्त

ना कोए वरताईआ। जगत माया तोड़े ना कोए जंजाल, शरअ शरीअत विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। सच दुआर एकँकार तेरा दिसे ना धुर दा धर्मसाल, जिस गृह छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर चार जुग दे बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल समर्थे, साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर साडे किछ नहीं हथ्थे, दोवें ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। नाता तुट्टया तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ सारे होए हके बक्के, हकीकत नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी भुल्ल गई धुर दे मार्ग दस्से, शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ के तेरा शुकर ना कोए मनाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया सति धर्म दी करके हत्ते, अतयाचारी दुष्ट विकारी जगत जीव बणे गोसाँईंआ। तेरे नाम प्यार मुहब्बत विच बिन भगतां रंग कोई ना रत्ते, रुतड़ी रुत्त ना कोए महकाईआ। जगत जिज्ञासू जगत रसां विच सुत्ते, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे पंजां तत्तां वाले नहीं प्रभू कोई जुस्से, वजूद नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल दीन दयाल दया निध ठाकर स्वामी धुर दा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरे अग्गे अरदास, बेनन्ती हक सुणाईआ। मेहरवान सृष्टी दा वेख तमाश, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। साची वस्त ना किसे पास, कलयुग कूड़ी क्रिया नाल करे लड़ाईआ। तेरे उत्ते रिहा नहीं कोई विश्वास, विषयां विच डुब्बी सर्ब लोकाईआ। शाह कंगाल सारे दिसण उदास, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़े कोई ना घाट, सच दवारा लँघ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कर कर पाठ, पाठशाला विच्चों दीन दयाल नज़र किसे ना आईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी पारब्रह्म कमलेपात, पतित उधारन दीनन आपणे रंग रंगाईआ। बिन भगतां साचे सन्तां तेरा देवे कोई ना साथ, सृष्ट सबाई नाता बैठी तुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चार जुग विच तूं मेरा मैं तेरा जुगो जुग सब ने गाई तेरी गाथ, सोहँ ढोला धुर दा राग अल्हाईआ। अल्ला राम वाहिगुरू ओम कृष्न तेरा अक्खरां वाला जाप, निरअक्खर विच्चों जगत दिता प्रगटाईआ। आत्म परमात्म तेरा धुर दा साक, बिन आत्म परमात्म तेरा रूप ना कोए वखाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्ट सबाई पिता बाप, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। तेरा दर्शन करीए साख्यात, स्वच्छ सरूप शाहो भूप आपणा आप देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ कर दे रच्छया, रच्छक हो के वेख वखाईआ। चार वरन अठारां बरन पा भिच्छया, नाम निधान श्री भगवान इक्को दे वरताईआ। साडा पूरा कर भविख्त लिख्या, कलयुग अन्तिम लहिणा देणा दे मुकाईआ। सृष्ट सबाई दीन दुनी दिसे मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। बिन तेरी किरपा जगत जहान ना जावे जित्तया, गुर अवतार पैगम्बर कोटन कोटि गए फेरीआं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी वक्त सुहञ्जणा दे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा चले ना कोई ज़ोर, जोरू ज़र होया हल्काईआ। कलयुग वेख अन्ध घोर, अन्धेरा चारों कुण्ट छाईआ। मन वासना पाया शोर, शरअ विच शरअ करे लड़ाईआ। पुरख अकाल अन्त अख़ीरी तेरी लोड़, लोड़ींदा साजण इक्को नज़री आईआ। बिन तेरी किरपा विछड़यां कोई ना सके जोड़, नाता हक ना कोए जुड़ाईआ। दीन मज़्ह़ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक चार कुण्ट दहि दिशा सारे मचावण शोर, हौकयां विच दिसे लोकाईआ। लेखा मुके ना मोर तोर, तुरीआ पद तों अग्गे तेरा राह ना कोए दसाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तैनूं कोई ना सके बौहड़, तेरीआं सिफ्तां वाले ढोले गा के सारे शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरी सब नूं लोड़, बिन लोड़ इक्क तूं ही नज़री आईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ बीबी नंती दे गृह जेठूवाल ★

जुग चौकड़ी प्रभ बदलदा आया आप, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी दया कमाईआ। नित नवित जीव जंत साध सन्त दस्सदा आया जाप, जग जीवण दाता नाउँ निरँकार इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां देंदा आया साथ, निरगुण हो के सरगुण संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दस्सदा आया गाथ, चार जुग दी सिख्या इक्क समझाईआ। इक्क इकेला जन भगतां देंदा आया साथ, सदा सदा संग आपणा आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब समरथ महिमा अकथ कथ सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू कट शरअ ज़ंजीर, दीन मज़्ह़ब लेखा दे मुकाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, हुक्म आपणा दे समझाईआ। सदी चौधवीं बदल दे तकदीर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। सारे बैठे तेरी लँघ दहिलीज़,

दर दवारे सीस झुकाईआ। हउँ बाले नढ्ढे तेरे अज़ीज़, बाले धुर दे नज़री आईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत दी इक्को दस्स तमीज़, तमन्ना दीन मज़्हब दे चुकाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा खाणा वेखीए लज़ीज़, जिस दा रस रसना ना कोए चखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग एसे आशा विच करदे गए उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल आ गई तरीख़, तरीका आपणा देणा जणाईआ। सचखण्ड दवारे दे असीं वसनीक, दरगाह साची सोभा पाईआ। क्यों लोकमात विच आए बण गए शरीक, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रूप वटाईआ। सब नूं दे इक्क तौफ़ीक, ताब्यादारी तेरी मन्नण चाँईं चाँईंआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, ज़िमी असमानां इक्को कर रुशनाईआ। तेरा हुक्म चले ठीक, ठाकर हो के लैणा मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप गावण गीत, सोहँ ढोला इक्क अलाईआ। जिस विच झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म तेरी उपजे प्रीत, दूजी रीत ना कोए वखाईआ। सदा रहीए अतीत, त्रैगुण डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साचे नाम दा बख्श भण्डारा, भण्डारी विष्नूं मंग मंगाईआ। साचे प्रेम दा दे कटारा, शंकर सँघारी ध्यान लगाईआ। साचे नाम दा कर उज्यारा, ब्रह्मा ब्रह्म वेता नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। चार जुग तेरा प्यारा, चारे खाणी तेरी सेव कमाईआ। चारे बाणी गावे तेरी वारा, ढोले सिफ्तां वाले सिफ्त सालाहीआ। हुक्मे अंदर तेई अवतारा, जुग जुग फेरीआं गए पाईआ। सिर निवावण ईसा मूसा मुहम्मदी यारा, सजदयां विच मिले वड्याईआ। नानक गोबिन्द करे तेरा इज़हारा, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। भविख्तां विच दे के गए इशारा, लिख्तां विच वड्याईआ। कलयुग अन्त कल कल्की लए अवतारा, अन्तरजामी बेपरवाहीआ। जिस दे सब कुछ होवे अख्त्यारा, बेअख्त्यार होवे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर ओसे दा मंगण दवारा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी दे के ग्यों लारा, हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। सो वेला वक्त सुहञ्जणा दिसे संसारा, सच स्वामी गया आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा मन्न हाढ़ा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। छब्बी पोह सुहाग वेखीए दिहाढ़ा, विहार खुशीआं नाल मनाईआ। छड्ड के जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत डेरा ढाहीआ। इक्को तक्कीए भगत दवारा, जिस घर भगत भगवान मिल के खुशी मनाईआ। भगतां लै के आईए आपणी धारा, बिन हथ्थ सीस रखाईआ। बिन तेरे कोई ना वेखीए परवरदिगारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी तेरा बणया रिहा पनहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चारे खाणी चारे बाणी अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ पाणी तेरे चरण कँवल उपर धवल धर्म दवारे आस रखाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर विच पिण्ड जेठूवाल ★

इक्की पोह कहे मैं होया परवान, प्राण अधारी दए वड्याईआ। संदेसा दे के धुर फ़रमान, फरमांबरदार ल्या बुलाईआ। दस्स के सच ज्ञान, अंदरों करी पढ़ाईआ। हो के मेहरवान, मेहर अक्ख खुल्हाईआ। बख्श के धुर दा दान, धूढ़ी मस्तक दिती छुहाईआ। तोड़ के माण अभिमान, निरमाणता विच वसाईआ। मैं वेख के होया हैरान, हैरानी मेरे अन्तर आईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी आपणी कल वरताईआ। लहिणा देणा देवे दो जहान, पूरब सब दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। इक्की पोह कहे मेरा इक्कीआं दा सिरताज, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जिस दा आदि तों इक्क समाज, अन्त इक्क वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेख खेल तमाश, शरअ जगत उपजाईआ। गुर अवतारां दे के दात, पैगम्बरां आप समझाईआ। जोड़ के धुर दा नात, साजण इक्क अख्वाईआ। दस्स के आपणी गाथ, करे हक पढ़ाईआ। बण के दासी दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। इक्की पोह कहे याद आई गोबिन्द मंग मंगी, वक्त सुहञ्जणा रिहा सुहाईआ। जिस वेले सृष्टी दृष्टी होवे नंगी, परदा सके कोए ना पाईआ। साचे नाम दी चार कुण्ट होवे तंगी, तंगदस्त दिसे लोकाईआ। अग्नी करे कोए ना ठंडी, जगत तपश ना कोए बुझाईआ। मेरे लेख दी वेखणी संधी, सनद तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तैनूं वेखण तों पुरख अकाल दुनिया हो जाए अन्धी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। वासना हो जाए गंदी, सुगंधी सके ना कोए प्रगटाईआ। गुरुआं चेलयां विच पए भंडी, वरभण्डी दए दुहाईआ। साफ़ रहे कोए ना डण्डी, डण्डावत सच ना कोए कराईआ। साध सन्त होण पखण्डी, भेखाधारी रूप बदलाईआ। गोबिन्द किहा मेरी धार बख्शणी पंझी पंझी, पंझी पिछली याद कराईआ। जेहड़ी वस्त हरि भगत दुआर पहले साल वण्डी, अमोलक आपणी गोलक विच्चों बाहर कराईआ। उस दा रस जाण सके ना कोए पखण्डी, बिन गुरमुखां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। इक्की पोह कहे मैं वेखां गोबिन्द सूरा, सुरती तों परे ध्यान लगाईआ। जिस दा बचन होवे पूरा, बच्चयां नूं वार खुशी बणाईआ। पुरख अकाल जिस दे हाज़र हज़ूरा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। कलयुग

नाता तोड़े कूड़ा, कूड़ कुटम्ब दए मुकाईआ। जन भगतां चाढ़ के रंग गूढ़ा, दुरमति मैल धवाईआ। नाम निधान दे सरूरा, खुमारी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंच आपणे रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरे गुरमुख पंच उठण जवान, जोबनवन्ते नज़री आईआ। सठ्ठां सालां तों उपर सारे करां परवान, नंदेड़ तों लेखा अगला अगले आपणे हथ्थ रखाईआ। हथ्थ डंगोरीआं वाले निशान, पाल सिँघ ललीआं तों चल के आईआ। आत्मा सिँघ मार ध्यान, डण्डा साढे तिन्न हथ्थ उठाईआ। जीवण सिँघ पिछला लेखा आवे चुकाण, पूरब लहिणा पूर कराईआ। देवे हुक्म हुक्मरान, भगवान सिँघ नाल मिलाईआ। अबिनाशी करता वेखे आण, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। बंता सिँघ कर परवान, पंज गराईंआ विच्चों लए उठाईआ। गोबिन्द कहे मेरे पंज होर तरखाण, बाडी पिछले नज़री आईआ। जिन्हां मैनूं ल्या पहिचाण, मेरे हो के मेरा ढोला गाईआ। दिवस रैण करे ध्यान, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां विच्चों हरभजन सिँघ होया परवान, नौ वार कर इश्नान, नौ जन्म दा पिछला लेख मुकाईआ। मल सिँघ नाल निधान, बिशन सिँघ होए परवान, बलवन्त सिँघ कर बलवान, प्रगट सिँघ प्रगट हो के नाता लए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मेरे पंज होर जवान, सोहणे बांके नज़री आईआ। बली सिँघ वड बलवान, अजीत सिँघ बटाल्यों नाल मिलाईआ। नाज़र सिँघ माढ़ी मुसतफ़ा कर परवान, बूटा सिँघ जोड़ जुड़ाईआ। पंजवां नाल होवे परवान, हरबंस सिँघ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। गोबिन्द किहा मेरे पंज होर पंजे, पंजां दयां जणाईआ। जिन्हां विच्चों अद्धे सिरों होण गंजे, तेजा सिँघ पहला नज़री आईआ। गिरधारा सिँघ ओसे नाल बज्झे, पिछली गंढु पवाईआ। भणता सिँघ निमाणा हो के आस रखे, आसा सब दी वेख वखाईआ। भाग सिँघ जम्मू विच्चों नट्ठे, भज्जे वाहो दाहीआ। हरचरण सिँघ चरण आ के ढट्ठे, मिले माण वड्याईआ। सब दे नाते जुड़ गए सके, शक पिछला रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र रिहा उठाईआ। गोबिन्द कहे मेरे मेहरवान, मैं सब कुछ दयां जणाईआ। सच दस्स कवण चुक्के सच निशान, निशाना कंधिआं उत्ते टिकाईआ। होवे वड बलवान, सूरबीर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा निशाना उठावे भगत, दूजा हथ्थ कोए ना लाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा नहीं वक्त, वेला सब दा गया विहाईआ। आत्म परमात्म दा डंका वज्जे जगत, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। भगत भगवान दा रहिण नहीं देणा फ़र्क, फ़िरका अंदरों देणा बदलाईआ। जगत विहारा कर के तरक, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। सनमुख हो के देणा दरस,

हरस देणी मिटाईआ। जेहड़ा निशाना उपर अर्श, उह फर्श देणा झुलाईआ। सम्मत शहिनशाही दा सुहाना होवे बरस, सुल्ताना इक्को सोभा पाईआ। जन भगतां वण्डे दर्द, दुखियां रोग मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द कहे सच निशाने लावे कौण हथ्थ, पुरख अकाल दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं देवां दस्स, धुर दा हुक्म जणाईआ। तिन्न मालविउँ आवण नस्स, दोआबा दो वण्ड वण्डाईआ। तिन्न माझे विच्चों करन झट्ट, आपणी लै अंगड़ाईआ। कानपुरों इक्क आवे नस्स, अगला पन्ध मुकाईआ। साचा करे इक्ठ, शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ। मालविउँ आवे सिँघ गज्जण, सज्जण कपूर नाल रलाईआ। जागीर सिँघ आवे नाल हस्सण, खुशीआं ढोला गाईआ। दोआबे विच्चों गुरदेव आवे टप्पण, सेव पिछली पूर कराईआ। तारू सिँघ साचा नाम आवे जपण, सोहँ ढोला धुर दा गाईआ। पिशोरा सिँघ मैल आवे कटण, नाल गुरनाम बन्धन पाईआ। अवतार अमृत रस आवे चक्खण, शमां बुझी फेर जगाईआ। अवतार सिँघ कानपुरों आवे नच्चण, मुख घूँगट लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। इक्की पोह कहे मैं बोलां कूक गज्ज, सच सच जणाईआ। क्यों पिच्छे दिते छड्ड, साथी होर नज़री आईआ। जिन्हां दे सिर ते नहीं पग्ग, चोटी सीस रहे गुंदाईआ। प्रेम अंदर रहे लभ्भ, तक्कण थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाल किरपा कर झब्ब, पिछला अगला पन्ध मुकाईआ। हुक्में अंदर आपणे सद्द, सधने दे साथी नज़री आईआ। जिन्हां कसाईआ घर लँघाया झट्ट, रोज़गार जगत वाला बणाईआ। ओन्हां दे अंदर लग्गा फट्ट, टुकड़ा टुकड़ा दए दुहाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, तेरी इक्क सरनाईआ। पुरख अकाल करीं ना वक्ख, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। बोल के दस्सीए सच्च, सुनेहड़ा सच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। इक्की पोह कहे मैनूं याद आई वशिष्ट वाली सोटी, जो राम हथ्थ फड़ाईआ। जिस दी लाल सिँघ नाल जोटी, पिछला संगी वेख वखाईआ। राज नरैण सिर रख के काली टोपी, टप्पा इक्को नाम सुणाईआ। प्रभ दे हुक्म दी सोच किसे ना सोची, समझ चले ना कोए चतुराईआ। हुक्मे अंदर सुरस्ती नूर दी मुंनणी नहीं चोटी, वासना खोटी देणी (गवाईआ)। पुरख अकाल दवारे होवे कोई ना दोषी, निर्दोष दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। इक्की पोह कहे मैनूं तेरे दिसदे सारे पुत्तर धी, ध्यान सब दे वल्ल लगाईआ। तेरा लहिणा देणा जीअ जीअ, जग जीवण दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरी हद्द पार करे कोई ना लीह, लायक बण के दस्से ना कोए चतुराईआ। सतिजुग साचे सांझी रखणी नींह, स्त्री पुरुष इक्को जेही देणी वड्याईआ। प्रेम प्यार दा बरखे मींह,

मेघला आपणी धार वहाईआ। अग्गे दस्स करना की, समझ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे मैं देवां हक सलाह, हकीकत विच्चों दृढ़ाईआ। भगतां बण मलाह, बेड़ा पार कराईआ। जित्थे स्त्री पुरुष दा लेखा ना, आत्म ब्रह्म सर्ब समझाईआ। दर आयां बख्श के सर्ब गुनाह, पतित पुनीत दयां कराईआ। साची मंज़ल दयां चढ़ा, जित्थे सके ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। इक्की पोह कहे प्रभ पंझी दस्स होर सेवादार, जेहड़े सेवा सच कमाईआ। जिन्हां दे गल विच इक्क इक्क होवे हार, हिरदे तेरा नाम ध्याईआ। पुठ्ठी सिर ते बद्धी होवे दस्तार, पिच्छा अग्गे नाल बदलाईआ। हथ्थां विच होवण हथियार, मर्ज़ी आपो आपणी उठाईआ। एह कुछ दुर्गा दा विहार, अष्टभुज वेखे चाँईं चाँईंआ। पुराणे मित्र ओहदे यार, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। पंज मालविउँ लैणे उठाल, चार दोआबा सोभा पाईआ। छे माझे विच्चों मद्दगार, पंज जम्मू जोड़ जुड़ाईआ। दो दिल्लीउँ लैणे भाल, गुड़गाउँ विच्चों इक्क रलाईआ। इक्क इटारसीउँ लैणा उठाल, पूने दी वण्ड इक्क समझाईआ। आदि शक्ति जोड़ के हथ्थ कर निमस्कार, धुर दी भवानी रही जणाईआ। इन्हां दा नाँ गोबिन्द दी निकले विच्चों धार, कलम शाही लेख ना कोए लिखाईआ। गुप्तां नाल गुप्तां दा होवे प्यार, पिछला लेखा वेख वखाईआ। तेरे दवारे मंगी मंग बण भिखार, भिच्छया देणी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हथ्थ रखाईआ। इक्की पोह कहे जे स्त्री मर्द दा सांझा हक, लेखा सब दा पूर कराईआ। पंझी मर्दां नाल पंझी स्त्रीआं रख, रखक हो के वेख वखाईआ। चिट्टे रुमाल सब दे होवण हथ्थ, महा सिँघ दा लेखा नज़री आईआ। सज्जे खब्बे हरि संगत दे लैण नठ्ठ, सेवा करन चाँईं चाँईंआ। माझे विच्चों उह लैणे जेहड़े बेदावा लै के आए झट्ट, मर्दां तों स्त्री रूप बदलाईआ। उन्हां दा पिछला जामा गोबिन्द देणा कट, एह तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे दर्शन दा लाहा जाण खट्ट, तरस विच बेड़ा पार कराईआ। जेहड़ा नौ सौ चुरानवे कदम तेरी धार आवे टप्प, टप्पे पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा ओन्हां नाल नाता जुड़े पक्क, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। भगत भगवान इक्को रूप नज़री आवे सच्च, कच्च दा वणज ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। इक्की पोह कहे मैनूं आ गया फ़रमान, हरि फ़ुरना दिता बदलाईआ। जेहड़े पंजे लिखे तरखाण, बाढी जगत जणाईआ। ओन्हां दे हथ्थ विच होवे तीर कमान, रंग लाल काला देण वखाईआ। जेहड़े पंजे होण बलवान, गल कमीज़ ना कोए छुहाईआ। जेहड़े प्यारे होए परवान, वस्त्र पीले रंग रंगाईआ। जेहड़े गंजे नौजवान, पगड़ीआं कच्छां विच टिकाईआ। पंज करन इक्क ध्यान,

हथ्थ छाती उत्ते रखाईआ। नौ फड़ के सच निशान, सज्जी रान उत्ते टिकाईआ। पंझी पंझी सुण सच्चा फ़रमान, सेवा करन चाँईं चाँईंआ। सब दा खेल वेखे भगवान, भगतां दी चाल निराली दए वखाईआ। इस तों वड्डा युद्ध होणा नहीं कोई घमसान, दो जहानां दी घुंमण घेरी विच्चों बाहर कढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर नौ सौ चुरानवे कदम तुहानूं पिच्छे मिलण आण, धुर दे भत्ते सीस उठाईआ। हरि संगत दा इस तों पहलों पक्कया होवे पकावन, पक्का रिध्धा कच्चा पक्का प्रभ आपणे लेखे पाईआ। स्वाद रस दस्से ना कोए ज़बान, माढ़ा चंगा कहि ना कोए सुणाईआ। गुरमुख मिल के सारे इक्को वार खाण, अड्डो अड्डी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दी राखी करे श्री भगवान, निगाहबान हो के वेख वखाईआ। भोजन वेले पंजे प्यारे बाहर खिच लैण कृपान, मुख बाहर वल्ल तकाईआ। हरि भगत सुहेले सोहँ ढोले गाण, नाअरा इक्को इक्क जणाईआ। पुरख अकाल होवे मेहरवान, शब्द संदेसा दए दृढ़ाईआ। खाण पीण दा सोहणा सजया होवे दीवान, दीवानख़ाने सारे दए खपाईआ। खेले खेल नौजवान, मर्द मर्दाना आप कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर हरि भगतो तुहानूं ख़ुशीआं नाल वरताण, वर्तमान दी वारता नालों नाल लिखाईआ। झुक के वेखण ज़िमीं असमान, बेज़बान ध्यान लगाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले परम पुरख दे बणने सर्ब महिमान, महिमानी इक्को वार खवाईआ। जिस ने खाधा उस फेर नहीं आउणा विच जहान, जन्म मातलोक ना कोए रखाईआ। सब दा आउणा करे परवान, गुरमुख तेरा गोबिन्द वाला निशान, दो जहानां नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह नर नरायण, नारी पुरख परख आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ फ़ौजा सिँघ दे गृह पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

दरगाह साची मुहम्मद कर सजदा, नेत्र बिन नैण नीर वहाईआ। परवरदिगार सांझे यार खेल वेखणा तेरे घर दा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। मैं दरवेश तेरा बरदा, बन्दगी विच बन्धन गया तुड़ाईआ। तेरा कलमा आया पढ़दा, कायनात जगत सुणाईआ। सिर कदमां उत्ते धरदा, कदीम दे कादर सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अरज़ोई करदा, आजज़ हो के मंग मंगाईआ। जगत जहान वेख्या सड़दा, अग्नी तत तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। मुहम्मद कहे मेरे परवरदिगार, जल्वागर नूर अलाहीआ। मैं तेरा ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सदा ख़ुशीआं दा इज़हार, ज़ाहर ज़हूर तेरी वड्याईआ। पिच्छे नव नौ चार बीते विच संसार, जुग चौकड़ी

पन्ध मुकाईआ। तेरा होणा सच विहार, पोह छब्बी राह तकाईआ। मैं अरज़ रिहा गुज़ार, गुज़ारश विच सीस झुकाईआ। अद्ध विच बैठे मेरे चार यार, मंज़ल चढ़ दरस ना पाईआ। तेरा हुक्म विच दुष्वार, दुश्मण अवर ना कोए जणाईआ। उह रोवण ज़ारो ज़ार, दरोही करन खुदाईआ। जे किरपा करे मीत मुरार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। असीं वी संग चल के लोकमात ओन्हां दा करीए दीदार, जिन्हां दी दीद पुरख अकाल वेख वखाईआ। छड्ड गए मकबरे मज़ार, मसीतां मन्दिरां तों हो के बाहर, कलंदरां तों पल्ले गए छुडाईआ। इक्को ढोला गा के तेरा वेखण सच दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बेनन्ती दिती सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरे (महिराब), धूढ़ी ख़ाक इक्को इक्क रमाईआ। सच प्रीती बख्श आब, आबेहयात तेरा प्रेम नज़री आईआ। मैं भुन्न नहीं खाधा कोई कबाब, काअबे विच दे के आया दुहाईआ। इक्को तेरा सजदा इक्को तक्कया अहिबाब, सच रबाब तेरा नाम वजाईआ। तेरी सिफ्त दी लिख के किताब, तीस बत्तीसा ढोला गाईआ। अन्तिम हो के लाजवाब, सिर कदमां उपर टिकाईआ। जिस चार यारी नूं दिता ख़िताब, मुख़ातब हो के सारे देण दुहाईआ। बिन तेरी किरपा मन्ज़ूर होए ना किसे आदाब, दूर दुराडे बैठे ध्यान लगाईआ। तेरे हथ्थ लहिणा देणा हिसाब किताब, कुतबख़ाना ना कोए छपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा दृढ़ाईआ। परवरदिगार कहे सुण मुहम्मद नन्न्हे, हमद आपणी दया जणाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर जिस ने आपणी धारों जणे, जनक सपुत्री नाल मिलाईआ। भगतां धार पिच्छे पुरख अकाल मन्ने, खुशीआं रंग वखाईआ। उह आवण तेरे कन्ने, धूढ़ी छार सीस टिकाईआ। डण्डावत विच पैण लंमे, भुजां उंगलां तक्क वधाईआ। स्वास लए कोई ना दमे, दामनगीर इक्को वेख वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार साहिब स्वामी अन्तरजामी एकँकार इक्को मन्ने, मनसा सब दी पूर कराईआ। मुहम्मद कहे मेरे अन्तर आया इज़हार, जीवोज़ल दयां जणाईआ। तेरी सुण अगम्मी गुफ़तार, गुफ़त शुनीद वेख वखाईआ। चार जुग तों वक्खरा तेरा समाचार, सदीआं दा लेखा रिहा मुकाईआ। कदीम दे कादर परवरदिगार, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल वेखां अपर अपार, दर घर ठांडे खुशी मनाईआ। नाल सोहवण चार यार, भगत सुहेले संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ आत्मा सिँघ दे गृह मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

ईसा कहे मैं आसावंद, जोहना आपणे नाल मिलाईआ। तेरे हुक्म दा हो पाबन्द, पाकीज़ा तेरी सेव कमाईआ। माणदा रिहा अनन्द, सलीब लैके खुशी बणाईआ। गाउँदा रिहा छन्द, ढोला धुरदरगाहीआ। लभ्भदा रिहा संग, जल्वागर खुदाईआ। मंगदा रिहा मंग, सदी बीसवीं दए गवाहीआ। पुरब लेखा गया लँघ, अग्गे सोहणी रुत्त सुहाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंग, मैं सब नूं गया दृढ़ाईआ। जिस वेले आवे मालक मेरा ख़ावंद, बाप प्रताप लए प्रगटाईआ। मैं नच्चां बण मलंग, भज्जां वाहो दाहीआ। सेज सुहावणी होए ना कोए पलँघ, खटीआ खाट ना कोए वड्याईआ। गाउँदा आवां छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जित्थे तेरे भगत सुहेले होवण चन्द, नूर नूर नाल रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। ईसा किहा जिस वेले तेरे नाम दा वज्जे घड़याल, मेरी घड़ी दए वड्याईआ। सुत्यां लए उठाल, निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। हुक्म दे दीन दयाल, दयानिध आप जणाईआ। अन्त अखीरी कर के भाल, जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। सम्बल सुहा के सच अस्थान, थान थानंतर वेख वखाईआ। भगत सुहेले लभ्भे विच जहान, जहालत विच्चों आपणी अमानत बाहर कराईआ। कट्ठे कर इक्क मैदान, जगत मैदानां दा डेरा देवे ढाहीआ। मैं खेल वेखां महान, मेरी आसा पिछली चली आईआ। दो जहानां युद्ध होवे घमसान, घुंमण घेर विच लोकाईआ। मैं उत्तों आवां असमान, ज़िमीं उत्ते वेखां गुरमुख नौजवान, धुर दे चेले सोभा पाईआ। जिन्हां दी अंदरों इक्को रस बोले ज़बान, तूं ही तूं ही ढोला गाईआ। मैं सिर्फ़ जोहना नूं दस्सया मैनूं हुक्म देवे रहमान, मेरा मालक बेपरवाहीआ। जिस दा कलयुग अन्त ढोला होणा ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"", जै जै जैकार कर के गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। जिस भगतां नाल मिल के होणा जगत नालों बेपहचान, संसारी अक्ख ना कोए तकाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, मेहरवान देणी वड्याईआ। छब्बी पोह दा दिवस महान, वक्त चार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, परवरदिगार मेरे महबूब, परवरश कीती तेरी विच हदूद, हद्दां तों बाहर तेरा खेल सोभा पाईआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

मूसा कहे मैं वेखण आवां अगम्मी इस्म, असमानां तों परे पन्ध मुकाईआ। जलवा तक्कां बिना चश्म, नूर नूर नाल वड्याईआ। मेरा दिसण वाला होणा नही कोई जिस्म, वजूद कलबूत ना कोए रखाईआ। मैं ओस नूर दी किस्म, जिस

नूं कसम खा के खुदावंद कहे लोकाईआ। जिस दी मेहर नाल भगत सुहेले मैनूं दिसण, सन्त सुहेले नज़री आईआ। कुछ होर मंगां मंगदे ब्रह्मा विष्न, शंकर सीस झुकाईआ। गुर अवतार कातब बण के लिखण, सिफ्तां नाल सालाहीआ। सब दी पूरी करे इच्छन, मालक बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम खेल बाज़ी तिलकण, पैर सम्भल कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सारे विलकण, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले थोड़े निकलण, निक्के वड्डे इक्को रंग नज़री आईआ। जिन्हां दा पुरख अकाल धुर दा दिसे मितन, साथ रघुनाथ रिहा निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा खेल आप वरताईआ। मूसा कहे मेरा हल्ल होए मसला, दलायल मसायल ना कोए रखाईआ। हकीकी यार दा होए वसला, वसफ़ अवर ना कोए वड्याईआ। भेव खोल्हे असला, असलीअत दए जणाईआ। जिस मैनूं हुक्म दिता मूसा इक्क वार खुशी नाल हस्स ला, फेर वेला कदे ना आईआ। मैं सईयदे विच किहा ज्यों भावे त्यों रख ला, रखक हो के दया कमाईआ। परवरदिगार हुक्म दिता मेरे हक अलाह, आलम तों परे दिता समझाईआ। जिस वेले मालक बण के आवां हक खुदा, खुदी दा डेरा देवा ढाहीआ। फेर रहिण ना देवा जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। खुशीआं दा समां दयां वखा, वक्त सुहञ्जणा सोभा पाईआ। धुर दे कलमे नाल दयां समझा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। जिस वेले धुर दा हुक्म होया रवां, फ़रमान इक्को इक्क दृढ़ाईआ। ओस वेले तैनूं कहवां, मूसा हस्स के खुशी लैणी मनाईआ। उह वेला वक्त आ गया समां, छब्बी पोह दए गवाहीआ। तूं दरगाह साची चों जन भगतां विच आण के लैणा दमा, राह विच ना कोए अटकाईआ। मेरे नूर दी नूर उपजे शमां, दूजी अवर ना कोए रुशनाईआ। चिन्ता सोग रहे ना ग़मा, ग़फ्लत निंद्रा ना कोए वखाईआ। आपणी रखणी कोई ना तमअ, तमन्ना उम्मत वाली ना कोए जणाईआ। जिस कारण गुर अवतार पैगम्बर करने जम्हां, जमात सब दी इक्को देणी वखाईआ। दीन मज़्हब दा तोड़ना बन्ना, तुहाडा लेखा तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। मूसा कर के नमस्कार मन्ना, धुर दे यार तेरे हथ्थ तेरी सब वड्याईआ। बिन तेरी मेहर गुर अवतार पैगम्बर निकम्मा, लोकमात चले ना कोए चतुराईआ। तेरी धारों नूरी पुत्त जम्मा, कोहतूर दिती सरनाईआ। अन्त अख़ीरी आवां भन्ना, भज्जां वाहो दाहीआ। किरपा कर मेरे भगवना, भगवन तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आदि जुगादी धार भगत भगवान सुहाए समां, संमण सब दे रिहा कढाहीआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ दरबारा सिँघ दे गृह मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

पैगम्बर कहिण असीं बैठे रहे करके सिदक, सबर विच तेरी आस रखाईआ। तेरा नाम कलमा दे के आए सबक, सिख्या कायनात दृढ़ाईआ। हद्द वण्ड के आए चौदां तबक, शरअ ज़ंजीर पवाईआ। नूर दा नूर नालों पा के फ़र्क, फ़िरकयां वाला राह वखाईआ। सदी चौधवीं ला के शर्त, शर्तीया तेरा नाम समझाईआ। परवरदिगार आवे परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। सो निवासी उपर अर्श, फर्श दए सुहाईआ। सब दे उत्ते करे तरस, रहमत करे नूर खुदाईआ। छुरी कसाई दिसे कोए ना करद, कत्लगाह दए मिटाईआ। ग़रीब निमाणयां वण्डे दर्द, दुखियां दुःख दए मिटाईआ। आपणा खेल करे असचरज, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार जुग दी पिछली वेखे फ़रद, गुर अवतार पैगम्बर सारे लए बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां वेख्या ना तेरा गृहस्त, सच दुआर सेव ना कोए कमाईआ। लोकमात आउँदे रहे तेरी विच फ़रिसत, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। मजाजी विच्चों हकीकी दस्सदे रहे इश्क, आशक माशूक आत्म परमात्म रूप दरसाईआ। अन्तिम सारे तन वजूद छड्ड के आए खिसक, थिर रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त आपणी धारों सारे गए तिलक, सच दवारे नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार एसे कारण रहे विलक, बिन अक्खां नेत्र रो रो देण दुहाईआ। साडी खुआरी होई ज़िलत, हमसवारी समझ कोए ना पाईआ। तेरे धुर दरबार साडी मिन्नत, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सानूं बख्श उह हिम्मत, हौसला दे वखाईआ। असीं आ के वेखीए तेरे भगतां दी साची सिम्मत, जिस दवारे बैठे सोहणे नज़री आईआ। अन्तर ग़मी ना होवे चिन्नत, रोग सोग ना कोए वखाईआ। उन्हां विच होवे कोई ना निन्दक, सारे तेरा ढोला गाईआ। प्रेम प्यार नाल असीं ओन्हां नाल जाईए चिमट, गलवकड़ी सोहणी पाईआ। एह समां होणा चार तों उत्ते इक्क मिनट, घड़ी ईसा कलाक वाली खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। पैगम्बर कहिण साडे अमाम, आमद विच तेरा दर्शन पाईआ। बरदे होईए गुलाम, सेवक सेवा सच कमाईआ। तेरा खेल वेखीए तमाम, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। तेरे झुलदे होण निशान, निशाने गुरमुख सोभा पाईआ। गाउँदे होण गान, ढोला बेपरवाहीआ। नच्चदे होण विच मैदान, सोहणी खुशी बणाईआ। स्त्री मर्द दोवें होण परवान, इक्को माण देवे वड्याईआ। पंच वेखीए नौजवान, हरिजन सोहणे सोभा पाईआ। पंज तेरे बाढी उह तरखाण, जो धर्म दवारे सोभा पाईआ। पंज तेरे उह बलवान, जेहड़े ज़ोर ज़ेर ज़बर दुनियां वाली बैठे गवाईआ। तेरे पंज

उह निशान, जेहड़े निशाने आपणे गए बदलाईआ। पंजां कर परवान, देवें माण वड्याईआ। नौवां बण के काहन, सोहणा रंग चढ़ाईआ। पंझीआं मेला आण, पंझीआं कर कल्याण, धुर दी बणत बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां वेखणा एह घमसान, धूढ़ उडे चाँईं चाँईंआ। तूं सानूं करना परवान, श्री भगवान तेरी बेपरवाहीआ। असीं वसणा नहीं किसे मकान, शरे मैदान तेरा दर्शन पाईआ। बोलणा नहीं नाल ज़बान, धुर दी धार नाल शनवाईआ। ठीक समें नाल पहुंचीए आण, सिर देणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वेला वक्त देणा वखाईआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ जीवण सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं पहुंचणा विच कदमां, कदीम दी आसा पूर कराईआ। अन्त अख़ीर मेटणा सदमा, पिछला रोग चुकाईआ। जन भगत थोड़े दिसणे विच्चों पदमां, अरबां खरबां ना कोए वड्याईआ। जिन्हां दे कारण पुरख अकाल ने सानूं सद्दणा, लोकमात दया कमाईआ। नाम नगारा इक्को वज्जणा, साची खुशी लैणी प्रगटाईआ। भगत भगवान मिल के सोहणा सजणा, हरि सज्जण रंग रंगाईआ। धुर दा दीपक बिन तेल बाती जगणा, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। इक्को रंग वेखणा आहला अदना, जो आयण प्रभ सरनाईआ। पुरख अकाल ने छुपणा विच बदना, तत्तां वाला परदा पाईआ। बाहरों वेख्यां किसे ना लभ्भणा, भरमे रहे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां गुरमुखां दे नाल अगांह वधणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कदमां नाल पूर कराईआ। अन्त पहुंचणा ओस पतणा, जिस पत्तण दा मालक इक्क अख्वाईआ। सिर ते चुक्कया होया होणा भतना, भत्ता अगम्म अथाहीआ। जा के भगत दवारे रखणा, आपणी भेंट चढ़ाईआ। जिस दा रस हरि संगत चक्खणा, गुरमुखां खुशीआं नाल खवाईआ। असां सेवा करदयां मूल नहीं हटणा, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जिस छड्डया पौंटा पटणा, पट्टी आपणी दए दृढ़ाईआ। गुरमुखां चाढ़ के साचा वटणा, मस्तक टिक्का दए छुहाईआ। अंदर वड़दयां सारयां सोहँ ढोला रटणा, ज़बान बन्द ना कोए कराईआ। एह ऐहो जेही होणी घटना, चार जुग पिच्छे वेखण विच कदे ना आईआ। इस नूं कोई कहि ना सके रसना, विद्या विच विद्वान ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा उह पूरा होणा बचना, जेहड़ा बिन कलम दवात शाही दिता लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग इक्क दस्सणा, दसे तों अगला अंक आप बदलाईआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ गुरे शाह दे गृह मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं मस्ती विच होईए खीवे, खेवट खेटा वेख बेपरवाहीआ। जिस दा नाम रस दो जहान पीवे, जुग चौकड़ी खुशी मनाईआ। जिस दे नूर नाल लोकमात जुग जुग जगे दीवे, दीपक अन्ध कर रुशनाईआ। उस दे कारण अर्शां दे उत्तों आए धरनी उत्ते होए नीवें, निउँ निउँ दर्शन पाईआ। उस दा भगत सुहेला आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा जग जीवे, चुरासी विच कदे ना आईआ। बलिहारी ओसे दे कदमां खीवे, इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क वखाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां मेला वेख होया धुर दा, वज्जे सच वधाईआ। ओधरों ध्यान आया दुर्गा, अष्टभुज अक्ख खुल्हाईआ। जिस दा मंत्र सदा फुरदा, उह मालक बेपरवाहीआ। जिस दा रूप सच्चे सतिगुर दा, सति सतिवाद विच समाईआ। उह लहिणा देणा चुकावे सब दा धुर दा, पूरब दए मुकाईआ। उस दा हुक्म कदे ना मुड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उह भण्डारा गुण भरपूर दा, अवगुण दए चुकाईआ। ओहदा दर्शन हाज़र हज़ूर दा, हज़रतां करे पढ़ाईआ। ओहदा प्रकाश अगम्मी नूर दा, निरगुण नूर डगमगाईआ। उस दा खेल सदा दस्तूर दा, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। सब दी मनसा पूरदा, भवानी कहे मैनूं निशानी याद पिछली आईआ। गढ़ तोड़े सदा ग़रूर दा, ग़ुरबत दए गवाईआ। रूप धार आप मज़दूर दा, सेवा भगतां जगत कमाईआ। झगड़ा मेटे कलयुग कूड़ फ़तूर दा, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। वेस वटा के हक महबूब दा, मुहब्बत सब दी आप प्रनाईआ। झगड़ा मुका के तन वजूद दा, वजह आपणी दए समझाईआ। आदि जुगादि जिस नूं कूकदा, देवे इक्क दुहाईआ। ओहदा खेल वेखणा मौजूद दा, किस बिध भगतां होए सहाईआ। जिस दा निशाना नहीं किसे तीर बन्दूक दा, नाम अणयाला तीर चलाईआ। जिस दा हुक्म नहीं चूक दा, लेखा चुक्के जगत लोकाईआ। उह मालक दिसे दो जहानां कूट दा, कुटीआ साढे तिन्न हथ्थ आपणे रंग रंगाईआ। वल छल कर के पंज तत काया भूत दा, भूत भविख सारे वेख वखाईआ। लेखा जाणे आपणी मंज़ल मक्सूद दा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। मेरी आशा ओहो बूझ दा, मनसा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। दुर्गा कहे मेरा इष्ट भवानी, सृष्टी विच सुणाईआ। मेरी कलयुग एह निशानी, दीवे बाती नाल रुशनाईआ। मेरी बात किसे ना मानी, मन्नण विच किसे ना आईआ। हरि दा तक्के ना कोए नूर नुरानी, जलवे विच ना कोए समाईआ। मेरी जूह होई बेगानी, वैरी दिसे लोकाईआ। मैं बेनन्ती इक्क सुणानी, वेला अन्त वेख वखाईआ। पुरख अकाल कर मेहरवानी, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सुघड़ दिसे ना कोए सवाणी, सुचज्जी रूप ना कोए बदलाईआ।

३६२
२०

मेरी आशा दिसे पुराणी, नवां रंग ना कोए रंगाईआ। तूं धुर दा हुक्मरानी, एका हुक्म दे सुणाईआ। मैं वेखां नैण ध्यानी, अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा पूर कराईआ। दुर्गा कहे मेरा लहिणा कर दे पूरा, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। सच प्रकाश बख्श के नूरा, नूर इक्को इक्क वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के कूड़ा, कूड़ कुटम्ब देणा गवाईआ। तेरे चरण दी मंगां धूढ़ा, धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। मैं सोहणा पावां रंगला, चूड़ा, लाल रंग तेरा रूप दरसाईआ। तूं वेखीं हाज़र हज़ूरा, हरि आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा आपणे लेखे लाईआ। दुर्गा कहे मैं वसां सच दरगाह, सच दवारे ध्यान लगाईआ। मैं छड्डे थल अस्गाह, बैठी मुख भवाईआ। मैं पर्बतां विच्चों मारी हा, होका दे के रही सुणाईआ। सुण मेरे बेपरवाह, तेरे हथ्थ वड्याईआ। अन्त होईं सहा, सहायता मंगण दर ते आईआ। जेहड़ीआं कंजकां नूं कुँवारीआं रख के खाणा रही खवा, ख़ाह मख़ाह आपणी कार कमाईआ। हो के बेवफ़ा, वफ़ादारी दिती चुकाईआ। अन्तिम रो के मारां धाह, उभे साह सुणाईआ। सत्तां सतवन्तीआं तों दीवे लईं जगा, चार मुख चार चार टिकाईआ। मैं ढोला लवां गा, सोहणा राग सुणाईआ। पिछला लेखा तेरी झोली देवां पा, कदमां उत्ते सीस निवाईआ। सिध्धी भगत दवारे जावां आ, सेवा कर के झट लँघाईआ। अंदर चरण रखण लग्गयां प्रेम दे दीपक लैणे जगा, माचस गुरमुख सिँघ हथ्थ फड़ाईआ। पाटे चीथड़ां दा रविदास दा लहिणा देणा चुका, चिट्टे वस्त्र ओथे देणे बदलाईआ। मैं वेखां नाल चा, चाओ घनेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन तेरे चरणां होर किते नहीं बचा, बचया नज़र कोए ना आईआ।

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ किशन सिँघ दे गृह मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर नाल मिल भवानी दुर्गा, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। वेखणा खेल अगम्मी सतिगुर दा, सति सतिवादी पुरख अबिनाशी रिहा दृढ़ाईआ। जेहड़ा विछोड़ा होया अनन्द पुर दा, भज्जे वाहो दाहीआ। ओहो शब्दी धार आया मुड़दा, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। जिस दा सोहणा संग जुड़दा, गुरमुख सज्जण नाल मिलाईआ। राग दस्स अगम्मी सुर दा, सुत्तयां ल्या उठाईआ। करे खेल होर दे होर दा, होका दे के जगत जणाईआ। लशकर जुड़ना नहीं कोई ठग्ग चोर दा, भगत सुहेले नज़री आईआ। नाता जुड़ना इक्को डोर दा, गंढु आपणा नाम रखाईआ। किशन सिँघ इक्क टहणा भन्न के ल्याउणा बोहड़ दा, पत्ते इक्की रंग वखाईआ। उत्ते परदा होवे दोहर दा, दो जहान मिले वड्याईआ। कलयुग लेखा मुक्के

अन्ध घोर दा, साचा नूर करे रुशनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे खेल आपणी लोड़ दा, दूजे समझ किसे ना आईआ। नाद शब्द वज्जे घनघोर दा, हरि संगत ढोला गाईआ। दुनिया वक्त दिसे मख़ौल दा, मुखीए गुरमुख पार लँघाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं डंका वजाउणा ओस ढोल दा, जो अनहद तों परे आपणी आवाज़ सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं धुर दे बणे साथी, सगला संग बणाईआ। पुरख अकाल साडी मन्नी आखी, बेनन्ती लेखे पाईआ। सुनेहड़े वाली पाती, गोबिन्द देणी जणाईआ। सुहञ्जणी होणी राती, भिन्नड़ी रैण मिले वड्याईआ। करे खेल कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख नौ बणाउणे भाटी, भट्टां वांग आपणा राग सुणाईआ। पंजां हथ्थ फड़ाउणी उह बाटी, जेहड़ा बाटा गोबिन्द आपणे विच गया छुपाईआ। जल उत्ते जगाउणी उह बाती, जिस नूं बेवतन समझ सके कोए ना राईआ। गोबिन्द दे अंगीठे वाली इक्क सौ इक्क नाल रखणी पाथी, भेव अगला दए जणाईआ। एह सेवा करे तत्तां वाले दी चाची, बसन्त कौर वड वड्याईआ। आंच लावे राम कांशी, कश्मीर दा पिछला नज़री आईआ। करे खेल पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। पंज गुरमुख गेरू कपड़यां नाल बणाए वेदांती, विद्या दा भण्डारा आप जणाईआ। पंज धर्म दे बणाए पाठी, जो सब दे अग्गे मिल के नाअरा लाईआ। लेखा जाणे हरि साहिब कमलापाती, कामल मुर्शद नूर खुदाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्मे अंदर नवीं दस्सी जाए साखी, सुख़न पिछले वेख वखाईआ। जन भगतां रहिण ना देवे बाकी, बाकायदा पिछला मूल चुकाईआ। अठ्ठे पहर इक्को जेही कर प्रभाती, भावना आपणे नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दा सच्चा मिल गया साथी, जिस ने अस्व उपर पाउणी काठी, काठ गढ़ तों जगीर कौर दा जन्म देणा बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कुछ अग्गे दिसे घाटी, मंज़ल सोहणी दिती बणाईआ। सोहणी वण्ड होणी इलाकी, तन ख़ाकी रंग रंगाईआ। एह खेल दिसे इत्तफाकी, अग्गे समझ ना किसे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतो सारे मिल के खुशीआं विच लँघाईए राती, जमाती हो के इक्को नाम ध्याईआ।

३६४
२०

★ २२ पोह शहिनशाही सम्मत २ गुरबख्श सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां अगली वस्त लैणी विच झुंगे, भगतां दे पिच्छो झोली डाहीआ। कुछ गोबिन्द दा लेखा नाल गुंगे, पुत्त सन्ता सिँघ दा नज़री आईआ। जिस दे साथी होणे इक्की मुंडे, इक्की साल तों वध्ध उमर ना कोए रखाईआ।

सब ने पगड़ीआं विच रुमाल होणे टुंगे, लड़ दो बाहर वधाईआ। इक्क इक्क फुल्ल गुलाब सब ने लैणे सुंघे, वेला वक्त चार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वस्त लैणी चंगी, चंगी तरा्ं जणाईआ। इक्की गुरमुख हथियार पहनण जंगी, खण्डे कृपान हथ्थ उठाईआ। बुढ्ढा ओना्ं दा कोई ना बणे संगी, इक्की चाली दे अंदर नज़री आईआ। सब ने रखणे उत्ते कंधी, मोढ्ढुयां उत्ते टिकाईआ। जैकारयां विच पाउणी भंडी, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। इक्की कदम ते जा के तलवार सब ने करनी नंगी, हथ्थ उपर लैणा उठाईआ। दुर्गा वेखे आपणी चण्डी, चण्डाल रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुख पूजे कोई ना जंडी, जटा जूट ना कोए मुन्नाईआ। इक्क दूजे दे सारे बणन सन्बंधी, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखणे सच्चे लाड़े, हरिजन बांके नज़री आईआ। जिना्ं दे मोढ्ढुयां उत्ते होण कुहाढ़े, वण्ड सत्तां वाली गणाईआ। खुल्ल्हे छड्डे होण दाहड़े, साफ़ सुथरे आप बणाईआ। वट्ट मुच्छां नूं होण चाढ़े, अक्ख लाल रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दे कढ्ढुण हाढ़े, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किसे नूं दुःख ना लग्गे जाड़े, हवा पवन ना कोए ठराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणे हथ्थां नाल दबाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा पूरा होवे हज्ज, हाजत अवर रहे ना राईआ। सत्तां बीबीआं कोल होण छज्ज, नवें नकोर नज़री आईआ। सत्तां दे हथ्थ विच होण पाणी दे जग, अमृत भर के खुशी मनाईआ। सत्तां दा एह नाअरा होवे तूं ही रब्ब, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। सत्तां दा सोहणा होवे इक्को जेहा कद्द, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं चाहुन्दे करना आदर, खुशीआं सेव कमाईआ। सत्तां बीबीआं दे सिर ते ख़ाली होवे गागर, अमृत धुर दा लै के आईए चाँईं चाँईंआ। सत्तां कोल होवे उत्ते चिट्टी चादर, नेत्र थोड़े नज़री आईआ। सत्तां कोल लिख्या होवे प्रभू तेरे नाम दे सर्ब सौदागर, वणजारे गुरमुख नज़री आईआ। सत्तां दा लेखा चुक्के जेहड़ा कौल इकरार कीता नानक नाल बाबर, बन्धन बदीआं लईं छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दईए सच्चे होके, हुक्म इक्क सुणाईआ। सत्तां गुरमुखां दे हथ्थ विच होवण टोके, तिक्खी धार बणाईआ। सत्त चढ़े होण उत्ते खोते, छंभ दा लेखा पिछला दए चुकाईआ। सत्तां ने फुलकारीआं पाईंआ होवण उत्ते झोटे, नथ्थां हथ्थां विच टिकाईआ। सत्तां कसे होण लंगोटे, नच्चण टप्पण कुद्दण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दे बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं

३६५
२०

पिछली होर उडीक, लेखा दईए जणाईआ। सत्त बीबीआं लड़दीआं होण वांग शरीक, ताअने हौली हौली सुणाईआ। सत्तां मथ्थे विच ला के लाल लीक, सज्जे तों खब्बे लैण बणाईआ। सत्त ग्लासां विच पाणी पीण ला के झीक, इक्को वार देण मुकाईआ। सत्त सूई धागे नाल प्रभ दा नाम लिखणा ला के नीझ, सोहणा तन्द पवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए ठीक, ठाकर दी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सत्तां बीबीआं दे कसे होवण कमरकस्से, दुपट्टे लक्क नाल बंधाईआ। सत्तां दे कोल साढे तिन्न हथ्थ दे होवण रस्से, वध्ध घट्ट ना कोए जणाईआ। सत्त मठयाई दे लाउँदीआं आउण गफ्फ़े, खुशीआं नाल खाईआ। सत्तां दी सोहँ सोहँ धार जपे, इक्को नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सत्त वेखणे सूरे, भूरे मोढे उत्ते लटकाईआ। सत्तां दे खुल्ल्हे होवण जूड़े, वाल पिठ उत्ते लटकाईआ। सत्तां दे मथ्थे लाल होवण गूढ़े, सोहणा रंग चमकाईआ। सत्तां दे मस्तक होवे धूढ़े, मिट्टी ख़ाक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दए बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सत्तां दे हथ्थीं होवण कड़े, सज्जे हथ्थ लगाईआ। सत्तां दे सत्त छापे होवण फड़े, कंडयां वाले कंध टिकाईआ। सत्तां दे हथ्थ लिख्त वाले नाम होवण फड़े, लाल शाही नाल रंगाईआ। सत्त इक्क दूजे नाल होवण जड़े, हथ्थकड़ी पग्गां वाली बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखीए मार झाक, सोहणी खुशी बणाईआ। सत्तां बीबीआं दे सिर ते होवे इक्क इक्क परात, ख़ाली मुख उपर रखाईआ। सत्तां दे हथ्थां विच होवे इक्क इक्क दात, लोहा लक्कड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सत्तां दे हथ्थ विच होवे इक्क इक्क चाक, नाम लिखण दी खुशी अंदर प्रगटाईआ। सत्तां दे हथ्थां विच होवे इक्क इक्क किताब, पढ़ पढ़ प्रभ दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए अग्गे आ के, आपणा पन्ध मुकाईआ। सत्त गुरमुख तक्कीए निक्के काके, उमर नौ साल तों वड्डी ना कोए बणाईआ। सत्तां दे वक्खरे होण इलाके, घराना इक्क ना कोए वखाईआ। सत्त सवेर तों भुक्खे रहिण फ़ाके, रसना अन्न ना कोए लगाईआ। सत्त खुशीआं नाल चलाउण पटाके, आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सत्तां बीबीआं बन्न्ही होवे धोती, साड़्ही जगत कहि के गाईआ। सत्तां दे हथ्थ विच होवे इक्क इक्क रोटी, वड्डी छोटी ना कोए समझाईआ। सत्तां ने लाह के बांह उत्ते टंगी होवे कोटी, बटन पड़दे विच छुपाईआ। सत्तां दे हथ्थ विच साढे तिन्न हथ्थ दी होवे सोटी, ज़िमीं नाल ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं गुरमुख वेखणे सत्ते, जो सत्तयां विच नज़री आईआ। हत्थां विच होण ख़ाली नौ पाणी वाले बत्ते, दोहां कोल दो पंजां नाल पंज सोभा पाईआ। सत्तां ने सिरां ते चुक्के होण फट्टे, सोहणी वण्ड वण्डाईआ। सत्तां ने ख़ाली बोतलां विच्चों पुट्टे होण गट्टे, हथेलीआं उत्ते टिकाईआ। सत्तां ने फड़े होवण वट्टे, पत्थर हत्थां विच दबाईआ। सत्तां दे खुल्ले होवण छत्ते, बोदीआं वाले नाल मिलाईआ। सत्तां ने जैकारे बुलाणे फ़तहि, हुक्म धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अजब खेल आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सत्तां बीबीआं दा रंगला होवे चूड़ा, सुहाग सब दा देणा बणाईआ। सत्तां दे हत्थ विच इक्क इक्क होवे मूढ़ा, बैठण विच वड्याईआ। सत्तां दे उत्ते होवे दुपट्टा लाल रंग दा गूढ़ा, दुर्गा वेख खुशी मनाईआ। सत्तां दे कोल होवे इक्क इक्क निक्का जेहा कतूरा, रस्सी नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी पूरी होवे तांघे, आसा खुशी बणाईआ। सत्तां दे हत्थ विच होवण सांघे, सज्जे खब्बे हत्थ उठाईआ। सत्तां दे कोल लंमे होवण ढांगे, दस फुट्ट तों घट्ट ना कोए लम्बाईआ। सत्तां ने जुत्तीआं नूं लाए होवण गांढे, नवें नकोर ना कोए पाईआ। सत्तां दे मूँह विच होण मूल ना दांदे, बुढ्डे जगत सोभा पाईआ। सत्त बणे होवण पांधे, बग़लीं किताब कच्छां विच लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वण्ड दे वण्डाईआ।
३६७
२०
गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल वेखीए तेरी मरजी, मज़ा वेखीए चाँईं चाँईंआ। सत्तां बीबीआं दे हत्थ विच होवे इक्क इक्क कड़छी, कुच्छड़ बच्चा ना कोए उठाईआ। सत्तां दे हत्थ विच होवे इक्क इक्क बरछी, बुरछा गर्दी देण मिटाईआ। सत्तां दे कोल होवे इक्क इक्क पर्ची, जिस उत्ते लिख्या होवे गोबिन्द तूंही पिता माईआ। सत्तां ने ढाके चुक्की होवे चरखी, तकला सिध्धा नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी आसा होवे पूरी, पूरे साहिब देणी कराईआ। इक्क मज्झ होवे विच बूरी, हरजीत सिँघ उस दे अग्गे सोभा पाईआ। सुलखण सिँघ सिर ते चुक्की होवे फूड़ी, सफा सब दी बन्द कराईआ। सुरजीत कौर अग्गे पिच्छे आपणी कीती होवे जूड़ी, रिषीआं दा माण गवाईआ। वरयाम कौर छन्ना कुट्ट के चूरी, चूरमा प्रभ नूं देवे खवाईआ। भान सिँघ झाड़ू नाल करे मज़दूरी, साफ़ सुथरा थाँ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जेहड़े गुरमुख रैहन्दे बुध्धे, आसण चरण कँवल रखाईआ। उन्हां दे हत्थ विच ख़ाली होवण कुज्जे, चप्पणी ढक्कण ना कोए टिकाईआ। दरबारा सिँघ कटोरा लै के दुद्धे, पहुंचे सहिज सुभाईआ। गुरू अवतार

पैगम्बर कहिण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दीआं रमजां बुज्झे, गुज्झा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लाए बाल जवान सारे बुढ्ढे, बुड्ढापे विच्चों आपा आप प्रगटाईआ।

★ २६ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल अमृतसर ★

छब्बी पोह कहे मेरा पूरा होया सवाल, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा सवाली खुशी मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण होए असीं खुशहाल, खुशीआं विच मिल के धुर दा ढोला गाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेखे आपणे लाल, भगत सुहेले सोहणे सोभा पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के पुच्छया हाल, आत्म ब्रह्म लेखा दिता चुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो घालदे रहे घाल, सरगुण हो के निरगुण सेव कमाईआ। सो सन्त सुहेले लोकमात वेखे आण, बेपहचान फेरा पाईआ। जिन्हां दा दृष्ट इष्ट सृष्ट विच एका मालक श्री सुल्तान, शाह पातशाह शहिनशाह नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण खुशीआं वेख्या दिहाढ़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणा ताल वजाईआ। जुग चौकड़ी साडा पूरा होया हाढ़ा, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार अग्गे जो रहे वास्ता पाईआ। पुरख अगम्मा बिन माटी चम्मा दीन दयाल समरथ स्वामी सांझा यार वेख्या उह लाड़ा, जिस दा तन वजूद तत कलबूत समझ किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा देंदे गए लारा, कल कल्की आपणी कल अन्त वरताईआ। भगत सुहेला लख चुरासी विच्चों आप वेखे आपणा लाड़ा, दूल्हा दूल्हो आपणे नाल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के इक्क प्यारा, दीन मज़्हब वरन बरन विच्चों बाहर दिता कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं लै के आए उह भत्ता, जिस विच भरम रहे ना राईआ। जुग चौकड़ी किसे ना डिठ्ठा, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। रस कोए ना जाणे फिक्का मिठ्ठा, जेहवा चले ना कोए चतुराईआ। जन भगतां ख़ातर गोबिन्द दे के गया चिठ्ठा, माछूवाड़े सच समझाईआ। मेरा परम पुरख परमात्म आवे इक्को पिता, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। जिस दा रूप ना वड्डा ना निक्का, जोत सरूपी सोभा पाईआ। शब्दी धार एकँकार करे खेल हरि समर्था, शाह पातशाह शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर कहिण असीं वेखी सारी खेल, हरि ख़ालक ख़लक खिलाईआ। आत्म परमात्म करदा जाए मेल, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। शब्दी सतिगुर चाढ़दा जाए तेल, सच स्वामी अन्तरजामी आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी आवण जावण पतित पावन कटदा जाए जेल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जिस दा सोहणा वक्त होया सुहेल, सुहञ्जणे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं लै के आए खाणा, धुरदरगाहों धुरदरगाही दिता पुचाईआ। जन भगतां रल मिल साचा खाणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अग्गे मन्नणा पए सब नूं भाणा, कत्तक धुर दी दए गवाहीआ। झगड़ा पैणा राजा राणा, शाह सुल्तानां दए हिलाईआ। लेखा कोए ना जाणे जीव जहाना, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कहिण कोए ना पाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर सूफ़ी सन्त फ़कीर मन्नदे गए भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी परवरदिगार सांझा यार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर छब्बी दिवस करे सुहाना, रुतड़ी सुहञ्जणी आप सुहाईआ। जोत सरूप शाहो भूप निरगुण धार एकँकार अकल कलधारी पहर के आपणा बाणा, निहकलंक राउ रंक डंका इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण शाबास, गुरमुख वड वड्याईआ। सब दी पूरी पुन्नी आस, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दा विहार ख़ास, चार जुग ना कोए समझाईआ। लेखा लिखे ना नाल कोई कलम दवात, कातब चले ना कोए वड्याईआ। जिस दा खेल ओसे दे साथ, सो स्वामी आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगतो तुहाडा वेख्या अगम्मी यार, गुर अवतार पैगम्बर ख़ुशी मनाईआ। जैकारयां विच सारे उपर खड़े कर दयो आपणे हथियार, हथ्थो हथ्थ मिले वड्याईआ। इक्क इकल्ला मिल्या मीत मुरार, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। दुर्गा चरण कँवल जिस दे करे नमस्कार, दर ठांडे सीस झुकाईआ। बण के झाड़ू बरदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणे ना कोए गुफ़तार, चौदां लोक चौदां तबक ना कोए शनवाईआ। अग्गे एका हुक्म चले निरँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मीं सत्त दीप सोहँ शब्द होणा जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। उच्ची कूक जन भगत बांह दयो हुलार, जो धुर दा मालक बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बर जिस दे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सो खेल करन आया विच संसार, संसारी भण्डारी सारे बैठे सीस झुकाईआ। सोहणा वेला वक्त ल्या विचार, सम्मत शहिनशाही दो वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं भत्ते कर के ल्याए त्यार, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखो सवा अठ्ठ नूं सब ने होणा त्यार, खाणा

३६९
२०

इक्को वार खवाईआ। ग़फ्लत विच रहे कोई ना बाहर, हुक्म विच हुक्म ना कोए बदलाईआ। खाण तों पहलों इक्की लावो जैकार, पंज प्यारे मुख बाहर रखाईआ। नंगी कढ्ढ लैणी तलवार, तोबा तोबा ख़लक दए दुहाईआ। सम्भल सके ना पैर कोई सरकार, जगत सियासत दए दुहाईआ। एह खेल करे करतार, कुदरत दा मालक आपणा खेल कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेख्या सब दा अक्खीं हाल, हालात प्रभ ने दिता जणाईआ। जिन्हां नूं लख चुरासी विच्चों ल्या भाल, सृष्टी नालों वक्खरे दित्ते बणाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच दा डेरा ढाहीआ। अल्ला वाहिगुरू नाम सति राम दा इक्को दस्स जैकार, आत्म परमात्म दिता समझाईआ। जिस विच दीन मज़्हब दा नहीं कोई विचार, दुतीआ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं निउं निउं करीए नमस्कार, दर ठांडे सीस निवाईआ। जन भगतो तुहाडा भगतां दा दरबार, बिना श्री भगवान ख़ाली नज़र कदे ना आईआ। जिन्हां ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"" बोलया पंज वार, लोकमात जन्म विच ना आईआ। झगड़ा मुका के तीर्थ तट किनार, आत्म सरोवर दिता नुहाईआ। काया मन्दिर दस्स के सच्चा गुरदवार, काअबा इक्को दिता दृढ़ाईआ। जित्थे अट्ठे पहर होवे शब्द धुन्कार, दिवस रैण अगम्मी नाद सुणाईआ। अमृत आत्म मिले ठंडा ठार, अनडिठड़ा जाम प्याईआ। निरगुण दीआ बाती कमलापाती जोत करे उज्यार, बाहर वेखण दी लोड़ रहे ना राईआ। काया मन्दिर साचे अंदर सवाल, साचे अंदर डेरा लाईआ। सोई सुरती लए उठाल, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। गुरमुखो तुहाडे नेड़ नहीं आउणा काल, महाकाल ना अक्ख वखाईआ। तुहाडा दवारा इक्को सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जित्थे दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी सारे करदे आए इज़हार, सिफ्तां नाल सालाहीआ। जिस वेले कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता पुरख बिधाता इक्क इकल्ला आवे एकँकार, परवरदिगार सांझा यार अमामां दा अमाम नूर खुदाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब जन्म दा लए विचार, लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले गुरमुख आप उठाईआ। सो वेला वक्त सुहञ्जणा सोहणा ल्या संभाल, सभा सोहणी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द रंग अपार, अपरम्पर स्वामी दिता वखाईआ। माछूवाड़े वाली धार, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। जिस पुरी अनन्द दिता उजाड़, उजड़यां दए वसाईआ। सब दी अंदरों अक्ख उग्घाड़, परदा दए चुकाईआ। साची मंज़ल चाढ़, सच दवारे दए टिकाईआ। मेला कर के एका एकँकार, नाता जगत देवे तुड़ाईआ। जन भगतो तुसां खुशीआं नाल खाणा अज्ज आहार, जो तुहाडा अमृत रूप नज़री आईआ। चार जुग दा सांभ के रख्या जो प्यार, मुहब्बत विच तुहाडी अन्तर आत्म दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

३७० २०

किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतो तुहाडी उह अगम्मी रोटी, जेहड़ी चार जुग हथ्थ किसे ना आईआ। सृष्टी खा खा थक्की जगत बोटी, आत्म रस ना कोए चखाईआ। बाहरों जगदी वेंहदे जोती, अंदर नूर ना कोए रुशनाईआ। अक्खां नाल अक्खरां वाली पढ़दे पोथी, निरअक्खर वेखण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप संख्या वधी कोटन कोटी, बहु गिणती नज़री आईआ। जन भगतो तुहाडे बिना चढ़या मंज़ल कोई नहीं चोटी, सारे अद्धविचकार बैठे डेरे लाईआ। किरपा कर के जे किसे नूं थोड़ा जेहा दस्सया दस्म दवारी कोटी, इशारे नाल समझाईआ। उह हउमे दा हो गया रोगी, हंगता विच आपणा आप मिटाईआ। गुरमुखो तुहाडे अंदरों निरंतर हो के कढ्ढे दुरमति मैल वासना खोटी, खोटयां तों खरे लए बणाईआ। तुहाडे मनुषा जन्म वास्ते अज्ज दी इक्को दिहाढ़ी बहुती, बहुती भगती दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तुसीं सोहणे दिसे जवान, जोबनवन्ते नज़री आईआ। जिन्हां दा इक्को इक्क ईमान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। नाता जोड़ श्री भगवान, घर साचे सोभा पाईआ। मिल्या गृह जित्थे दीपक जोत जगे महान,
३७१ दूसर अवर ना कोए रुशनाईआ। जन भगतो तुसीं सारे अज्ज गुर अवतारां पैगम्बरां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दे बणे महिमान, ३७१
२० महिमानी खा के खुशी बणाईआ। अन्त बोलो जैकारा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। २०
सारे प्रेम नाल आपणा सांभ लओ सामान, समें अंदर सब कुछ पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परम पुरख होया मेहरवान, मेहरवान हो के मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा करी श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साडी बेनन्ती करी परवान, अरज़ अरज़ोई जुग चौकड़ी लेखे लाईआ। साडा लेखे लाया दर पकवान, जो धुर दरगाह तों लै के आईआ। जेहड़ा जन्म तों पहलों सचखण्ड अंदर देंदा दान, मातलोक हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग असां ओस दा कीता नहीं ब्यान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सके ना कोए समझाईआ। नव सत्त चार कुण्ट दहि दिशा ना दिसे कोई निशान, सति सरूप ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं असीं हो गए हैरान, हैरानी साडे अंदर आईआ। करया हुक्म शाह सुल्तान, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। चार जुग दे पिछले उठो मेरे बाल निधान, नन्न्हे बच्चे लवां जगाईआ। प्रेम अंदर होवो सवाधान, हुक्म विच्चों हुक्म सुणाईआ। धरती उत्ते वेखो मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग जीव सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। तुहाडे नाम दी लुट्टी गई दुकान, अल्ला राम वाहिगुरू ओम कृष्न भय

ना कोए रखाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होए बदनाम, बदी कर कर सारे शुकर मनाईआ। तीर्थ तट सच ना कोए इश्नान, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। तुहाडा रिहा ना कोई ग़ुलाम, सेवा सच ना कोए कमाईआ। अन्तर जपे कोई ना नाम, रसना सारे करन पढ़ाईआ। मनुआ शरअ विच हो शैतान, चार कुण्ट रिहा सताईआ। हकीकी सुणे ना कोए पैग़ाम, पैगम्बरां सीस ना कोए निवाईआ। झगड़ा प्या पीण खाण, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। सति धर्म ना रिहा निशान, निशाने सारे गए गवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां हुक्म सुणया बिना कान, अबिनाशी करते दिता दृढ़ाईआ। छड्डो वसेरा उपर असमान, चलो ज़िमीं उत्ते ख़ुशी मनाईआ। तुहानूं सांझा दस्सां कलाम, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्ह़ाईआ। जो भविख्तां विच दे के आए पैग़ाम, संदेशे मात सुणाईआ। उस दा वक्त पहुंचया आण, बेख़बरां ख़बर जगाईआ। ज़रा वेखो मार ध्यान, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। साचे चढ़े ना कोए बबाण, कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। करे खेल श्री भगवान, बिना समझ सहिज समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म दिता अगम्मी, शब्दी धार जणाईआ। सृष्ट सबाई होई निकम्मी, निकरमण रूप बदलाईआ। मन वासना फिरे भन्नी, भज्जे वाहो दाहीआ। झगड़ा प्या ग़रीब धनी, सांझा घर ना कोए दसाईआ। संसार अक्ख होई अन्ह़ी, पुरख अकाल दरस कोए ना पाईआ। अक्खर पढ़दे सफ़िआं उत्ते पंनीं, पंजां दा मालक वेख ना ख़ुशी मनाईआ। दीन मज़्ह़ब पई बन्नी, हद हदूद ना कोए तुड़ाईआ। चिक्कड़ भरी दिसे कन्नी, पतित पुनीत रूप ना कोए वखाईआ। साची खेल किसे ना मन्नी, मनसा मोह विच वधाईआ। धुर दा राग सुणे कोई ना कन्नीं, सिफ्तां वाले ढोले पढ़ पढ़ वक्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म दिता अथाह, भँवरी आपणी विच भवाईआ। उठ के तक्को बेपरवाह, जो बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी आए ध्या, अल्ला वाहिगुरू राम कहि के ढोले गाईआ। सो खेल करे खुदा, ख़ुद आपणी कार कमाईआ। जन भगतां मेल करे सिध्धा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। इक्को रंग रंगाए वड्डा निक्का, बिरध बाल ना कोए जणाईआ। जन भगतां बण के धुर दा पिता, गुरमुख साचे गोद उठाईआ। निरगुण हो के करे हिता, सरगुण आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं हुक्मे अंदर आए भज्जे, चले वाहो दाहीआ। साडे पड़दे ओहो कज्जे, जो आदि जुगादी धुरदरगाहीआ। सदा रहे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे होए सहाईआ। उस दे चरणां विच सारे सजे, सोहणा दर वड्याईआ। प्रेम प्रीती अंदर मधे, मधुर धुन अगम्मी गाईआ।

लोकमात आ के उस दे भगत सुहेले लभ्भे, जो बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म दिता जलदी, छेती दिता उठाईआ। लोकमात वेखो अग्ग बलदी, कलयुग अन्त ना कोए बुझाईआ। सारी खेल दिसे छल दी, कपट विकार विच लोकाईआ। प्रभ दी धार निहचल धाम अटल दी, धुर संदेसा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म दिता निरँकार, निरगुण आप जणाईआ। अमृत भत्ता लै के जाओ विच संसार, भज्जो वाहो दाहीआ। वक्त सुहञ्जणा होवे चार, छब्बी पोह मिले वड्याईआ। तुहाडा लहिणा देणा देवां कर्ज उतार, आदि शक्ति भवानी बाकी रहिण कोए ना पाईआ। अष्टभुज दुर्गा तेरा लेखा तेरी झोली देवां डार, पूरब मूल चुकाईआ। सारे हो जाओ ख़बरदार, सच दुआर लओ अंगड़ाईआ। निरगुण जोत हो उज्यार, जगत रूप ना कोए वखाईआ। सच दवारे पहुंचणा आण, बेपहचान हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार कहिण सानूं हुक्म दिता भत्ता चुक्को उह, जेहड़ा जन्म तों पहलों दयां खवाईआ। जिस नूं खा के मेरी धार जावो हो, निरगुण सरगुण रूप बदलाईआ। आत्म हो के परमात्म जाओ छोह, परमात्म छोह के गुर गुर शब्द जणाईआ। जुग चौकड़ी जो मंगदे रहे मोह, मुहब्बत दयां समझाईआ। सारे नेत्र खोल्ह के तक्को अगम्मी जोत दी लो, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तों बाहर दयां समझाईआ। ग़ौर नाल वेखो जित्थे भगत भगवान इक्क नहीं दो, दोहां दी धार इक्को नज़री आईआ। दिहाढ़ा होवे सुहञ्जणा सम्मत शहिनशाही छब्बी पोह, वदी सुदी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दी वस्त अगम्मी पिछली खोह, अमृत रस रूप दयां बदलाईआ। साचे भगतां अंदर देवां चो, सेवा तुहाडे कोलों कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म आवे होका, अगम्मी आवाज़ जणाईआ। झगड़ा छड्ड दयो चौदां लोका, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। कोई वाचे ना पिछला पोथा, पुस्तक सब दे हत्थ फड़ाईआ। सारे मेरा नाम सुण लओ सौखा, जेहड़ा चार युग ना किसे जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मेरे भगतां नाल सब नूं मिले मौका, पहलों दिती ना किसे वड्याईआ। धुर दा हुक्म किसे ना रोका, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। प्रभ दी सोच कोई ना सोचा, समझ विच समझ ना कोए बदलाईआ। आओ उठो सब दी पूरी करां लोचा, लोचन नैणां दयां दरसाईआ। जिन्हां दी ख़ातर तुहाडा वक्त बीतया चोखा, चारे जुग लँघाईआ। सब नाल करदा रिहा धोखा, आपणा भेव ना किसे खुल्हाईआ। सिफ्ती नाम दा लवाउँदा रिहा घोटा, सहिज सहिज समझाईआ। आपणे आप दा करदा रिहा टोटा,

अल्ला तों वाहिगुरू वण्ड वण्डाईआ। कदी बणदा रिहा छोटा, राम दो अक्खरां विच जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म दिता नाल ज़ोर, खुशी नाल उठाईआ। हुक्मे अंदर तोर, तुरत दिता दृढ़ाईआ। धुर दा भत्ता लै जाणा कोल, कुल भगतां दिती वखाईआ। रहिणा सदा अडोल, डुल कोए ना जाईआ। रहे ना कोई अनभोल, भुल्लयां रिहा समझाईआ। तोले कोई ना तोल, अतुल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म आया शताबी, शरअ विच्चों सब नूं बाहर दिता कढाहीआ। मेरे नाम दी लै जाओ साची भाजी, भजन बन्दगी इक्को दिती समझाईआ। मैं नवीं साजणा साजी, हरिजन भगत लए उठाईआ। वेख्यो गुर अवतार पैगम्बरो कोई ढोला जा के गायो ना आपणा माज़ी, पिछला राग ना कोए अल्हाईआ। मेरा नाम सच्चा चार जुग दा ताजी, जिस दी तहिरीरी तकरीर ना कोए बदलाईआ। जिस दी समझे ना कोए आवाज़ी, धुनां विच ना कोए शनवाईआ। वसे ना किसे महिराबी, बन्द ना कोए कराईआ। चक्खे ना कोए स्वादी, रस ना कोए दृढ़ाईआ। गिणती वाली ना होवे आबादी, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गावे कोई ना ढाडी, रबाब सुर ना कोए सुणाईआ। जाणे कोई ना गाडी, गुर अवतार पैगम्बर रहे कुरलाईआ। इक्को धार मेरी आदी, आदि पुरख रिहा समझाईआ। जिस वेले नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दी करनी होवे बरबादी, बदला सब दा देवां चुकाईआ। मेरी खेल अगम्मी डाहढी, डण्डौत करन वाला समझ कोए ना पाईआ। मैं सब तों वक्खरा बाढी, घड़न भन्नुणहार हो जाईआ। सब तों वक्खरा स्वांगी, मेरी समझ किसे ना आईआ। शब्द संदेश्या विच तुहाडी वधाउँदा रिहा तांघी, आशा भविख विच बदलाईआ। तुहाडी धार मेरी बांदी, बन्धन प्रेम विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं इक्को दिता धक्का, खुशीआं नाल हिलाईआ। सारे नाता बाहमी जोड़े सका, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो सच पकवान पक्का, सचखण्ड दवारयों लओ उठाईआ। वेख्यो कोई लै के जायो ना मदीना मक्का, मन्दिरां मठ्ठां विच टिकाईआ। कोई गुरदवारे फिरे ना नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अकाल कहे मैं दस्सां बचन सच्चा, हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। जिन्हां भगतां नूं जगत जहान करे ठठ्ठा, कूड़ कहि समझाईआ। उह मेरा धुर दा बच्चा, जो सोहँ ढोला गाईआ। मैं लूं लूं अंदर रचा, रचना आपणी दिती वखाईआ। जेहड़ा प्रीती अंदर कच्चा, चरण कँवल ना लागे राईआ। जो जुग जन्म दा अच्छा, तुहाडा विछड़या आपणे नाल मिलाईआ। जे तुहानूं नहीं अगला पता, आओ इक्को वार समझाईआ। बिन अक्खां वेखो भगत दुआर इक्को सजा,

सज्जण बैठा धुर दरगाहीआ। जिस दे प्रगट होण दी जाणे कोई ना वजह, नामालूम सारे रहे सुणाईआ। कोई जैकारा लावे फ़तिह, कोई अल्लाह कहि के रिहा गाईआ। कोई राम कहे साडा सका, कोई ओम कहि के झट लँघाईआ। कोई कृष्न टेके मथ्था, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। कोई दुर्गा अष्टभुज सेवा करे हथ्थां, आपणी सेव लगाईआ। पुरख अकाल कहे मैं इक्को हुक्म दरसां, अन्त अख़ीरी आप जणाईआ। मैं ओन्हां दे अंदर वसां, जेहड़े मेरा ध्यान लगाईआ। लोकमात पत रखां, रक्ख्या करां थाउँ थाँईंआ। वसेरा वेखां विच कक्खां, कुल्लीआं विच्चों लवां उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो ओन्हां लई लै के जाणा भत्ता, भरम देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं भत्ता लै के गए आ, पहुंचे चाँईं चाँईंआ। वेख्या खेल बेपरवाह, शाह पातशाह शहिनशाह दिता दृढ़ाईआ। खुशीआं अंदर ढोला ल्या गा, भगतां नाल वज्जी वधाईआ। पिछला बोला ल्या बदला, विचोला इक्को नज़री आईआ। जिस ने चोला ल्या बदला, जोती नूर करे रुशनाईआ। परदा ओहला ल्या रखा, नज़र किसे ना आईआ। वेला वक्त रिहा सुहा, सुहञ्जणी रुत्त वज्जे वधाईआ। सो वेला गया आ, जिस दा जुग चौकड़ी राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर दा भत्ता भगत दवारे ल्या टिका, टकयां वाली कीमत कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दे हुक्मे अंदर दिता वरता, गुरमुख साचे खावण चाँईं चाँईंआ। जिस दा भेव जाणे कोई ना, परदा सके ना कोए उठाईआ। सारे करन वाले हां विच हां, धुर फ़रमान ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गुरमुखां खुशीआं नाल छके प्रशादे, प्रशाद भगतां दिता वरताईआ। लहिणे देणे चुकाए गोबिन्द पुरख अकाल वाले दादे, दाअवा पिछला पूर कराईआ। अगले खेल आपणे संग गांढे, दूजी गंढु ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी सेवा दिती लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सेवा कीती नाल प्रीत, प्रीतम वेख खुशी मनाईआ। भगतां दी सोहणी वेखी रीत, चार वरन इक्को दर ते सोभा पाईआ। झगड़ा छड्ड मन्दिर मसीत, काया काअबे खुशी बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। सारे अंदरों दिसे सीत, बाहरों अग्न ना कोए तपाईआ। मन वासना आए जीत, जिती जगत लोकाईआ। प्रेम दा ढोला गावण गीत, गोबिन्द तूं ही पिता माईआ। बैठ के इक्क अतीत, त्रैगुण लेखा ल्या मुकाईआ। श्री भगवान कर बख्शीश, रहमत दिती कमाईआ। खुशीआं नाल दिती असीस, अशीर्वाद इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साडी इक्क अरदास, अरज़ोई सच सुणाईआ। असीं तेरे भगत वेखणे ख़ास, सानूं सारे दे वखाईआ। नौ सौ

३७५
२०

चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो आई एह रात, रुतड़ी वड वड्याईआ। तेरी वरताई अगम्मी दात, दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं तेरी निक्की जेही शाख, छोटे बाले नढ्ढे नज़री आईआ। तेरा लेखा लिखदे आए कलम दवात, काग़ज़ नाल शाहीआ। इशारयां नाल दस्सदे आए जगत जमात, दीनां मज़्बां विच पढ़ाईआ। खा के आए रसना जेहवा भात, भोजन जगत वड्याईआ। करदे आए पाठ, सिमरन विच सिमरन तेरा नाम बणाईआ। खोल्हदे आए हाट, वस्त वरताई धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल तेरी समझी इक्क ना बात, परदा अंदरों ना कोए चुकाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रिहों रिवाज, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र देणी उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखणे भगत दुलारे, दूल्हे धुर दे नज़री आईआ। जिन्हां दे पिच्छे साडे पूरे कीते लारे, जुग चौकड़ी लेख चुकाईआ। सोहणे सुचज्जे दिसण लाड़े, नारी पुरुष रूप ना कोए बदलाईआ। जिन्हां दा खेल वेख्या दिन दिहाढ़े, दरगाह साची वज्जी इक्क वधाईआ। ओन्हां दा मानस जन्म लग्गा कारे, करते कीमत आपे पाईआ। साडे पूरे होए हाढ़े, हौके दित्ते मिटाईआ। खुशीआं नाल बीते जुग चारे, अग्गे समझ किसे ना आईआ। साडे ढिड्डां दे उतरे अफारे, अंदरला दुःख दिता गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू दस्स, किहड़े चंगे किहड़े मंदे, सानूं दे दसाईआ। केहड़े वसदे तेरे संगे, किहड़े बैठे मुख भवाईआ। किहड़े मानुश ते केहड़े बन्दे, किहड़ी स्त्री रूप बदलाईआ। किहड़े सचखण्ड दवारे टंगे, किहड़े जूनीआं विच रखाईआ। किहड़े तेरा दुआर लँघे, चरण बहि के सोभा पाईआ। पुरख अकाल किहा गुर अवतार पैगम्बरो जेहड़े चढ़ गए मेरे नाम दे डण्डे, डण्डउत बन्दना तों खहिड़े दित्ते छुडाईआ। उह एथे ओथे दो जहान सारे चंगे, बुढ्ढे नढ्ढे इक्को रंग रंगाईआ। सच्चे घर विच पुरख अकाल वण्ड कोए ना वण्डे, शाह हकीरां इक्को घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू सानूं प्या कुछ शक, शक दे मुकाईआ। असीं किधर लईए तक्क, कवण अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा पहलों चरण जाओ ढठ्ठ, फेर दयां दृढ़ाईआ। पिछला लेखा छड्डो मन्दिर मठ, शिवदवाले ध्यान ना कोए लगाईआ। फिर मेरयां भगतां दा वेखो इक्ठ, जो चारों कुण्ट सोभा पाईआ। एह सारयां तों उत्तम ते सृष्ट जिन्हां दे अंदर मेरे नाम दा सच, दूजी करन ना कोए पढ़ाईआ। इक्को तूं ही तूं ही रहे जप, आप आपणा भेंट कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं वेख लैण दे एन्हां दे मस्तक मथ, तेरे अंदर वड़ के वेख वखाईआ। तेई अवतार कहिण एह बैठे उत्ते कक्ख, कक्खां उत्ते बैठे लखां दा डेरा गए ढाहीआ। पीर पैगम्बर कहिण एह सब तों होए वक्ख, कलमयां कलामां तों

पल्लू गए छुडाईआ। गुरू गुरदेव कहिण इन्हां दे अंदर वड़ गया सच, झूठी क्रिया गए तजाईआ। पुरख अकाल नूं मन्न के बाप, पूत सपूते बण के सोभा पाईआ। झगड़ा रिहा ना किसे पाप, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं चढ़दी जाए मस्ती, गुरमुख नज़री धुर दे आईआ। नौ खण्ड विच्चों भगत दवारा जगत नूं दिसे छोटी बस्ती, अग्गा सके ना कोए समझाईआ। असीं कथा कहाणी दस्सीए सच दी, सारे रहे दृढ़ाईआ। जित्थे पुरख अकाल दी इक्को जोत जगदी, दूजी होवे ना कोए रुशनाईआ। ओथे कीमत कोए ना लगदी, दर्शन कीत्यां पार लँघाईआ। एह कोई धार नहीं क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाई कमीने जट्ट दी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। एह कोई खेल नहीं नटूए भट्ट दी, जगत स्वांगी वेस ना कोए बदलाईआ। एह कोई नज़र नहीं बैरूनी अक्ख दी, प्रतख खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो भगतां दे अंदर प्रभ दी धार वेखो नच्चदी, जो नच्चे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। इन्हां नूं लोड़ नहीं किसे सेज वाले खट्ट दी, पटणे दा मालक इक्को नज़री आईआ। जिस नूं मदद पुरख समरथ दी, दूजे आस ना कोए तकाईआ। उह जाणे घट घट दी, घाटे सब दे पूर कराईआ। गुरमुखो संसार सृष्टी विच दुक्खां दी अग्ग मच्च दी, तुहाडा दुःख आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण आह कुझ बैठे दिसण अन्धेरे, क्यों अक्खां बन्द कराईआ। पुरख अकाल कहे एन्हां दे राम चन्द्र तो पहलां दे डेरे, रामा दए गवाहीआ। कृष्न कहे ऐथे मेरे दवारे खेड़े, खिड़की कुण्डा दयां खुल्हाईआ। मूसा कहे इक्कीआं दे अंदर मेरे झेड़े, जो मैनूं नज़री आईआ। ईसा कहे एन्हां विच्चों थोड़े बथेरे, जो गिणती विच सत्त सोभा पाईआ। मुहम्मद कहे बत्तीआं दे मेरे नाल रहे झेड़े, कदी मन्नण ते कदी मुख जाण भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुरू नानक कहे एहनां विच्चों दिसदे सौदेबाज़, खोटे खरे आपणा खेल वखाईआ। गोबिन्द किहा एहनां विच्चों दिसदे चूरी खवाउँदे मेरे बाज़, चोरी चोरी मैथों आप छुपाईआ। कुछ ऐथों दसां दी खुल्ही जाग, जिन्हां नूं अनन्दपुरी तों बाहर आपणा मेल कराईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दी साजण लई साज, सज्जण सारे लए बणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो चला के आपणा रिवाज, रवादारी सारी दिती मिटाईआ। किशन सिँघा की खाज दा आया स्वाद, सच देणा सझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरा किड्डा चंगा समाज, जो समें विच्चों आपणा समां बैठे बदलाईआ। साडे होए धन्न भाग, भगवान तेरे नाल चल के तेरयां दा दर्शन पाईआ। सानूं ऐं दिसदा एन्हां दे अंदर उह स्वाद, जेहड़ा सम्यां तों हथ्थ किसे ना आईआ। इन्हां दा खुशीआं वाला मजाज़, मज़ाक

विच हस्से जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू एहनां दा वेख के झगड़ा फ़साद, अज्ज दा वेला सानूं रिहा बतलाईआ। सृष्टी दी किसे नहीं करनी इमदाद, दिमाग़ सारे फेल कराईआ। चलदे डुब्बणे जहाज़, बेड़े देणे रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दी रखणी लाज, लाजावन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखणे वड्डे छोटे, सारे इक्को रंग नज़री आईआ। सब ने सूरबीरां वाले कसे लंगोटे, जगत भय बैठे चुकाईआ। अंदरो अंदर सब ने आपणे नाम प्रभू वाले सोचे, माता पिता वाले नाम सारे गए भुलाईआ। ओस दुआर पहुंचे, जित्थे पुजिआं किसे पूजा पाठ दी लोड़ रही ना राईआ। गुरमुखो वेख्यो किते भा ना विक जायो दूजे, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड विच रखाईआ। किते बन्द ना हो जायो दीन मज़्ब वाले निक्के जेहे कुज्जे, ब्रह्मण्ड खण्ड तुहाडे चरणां हेठां दबाईआ। तुहाडी रमज़ कोई ना बुझे, प्रभू दा दुआर कोई ना सुझे, बिन भगवान तों भगतां नूं करे कोई ना उग्घे, गुंगे दिसी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी धुर दा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गुरमुखो ऐवें अग्गे करदे ना रिहो अरदासे, मथ्था ख़ाक नाल रगड़ाईआ। सारे डर गए तुहाडे हथ्थां विच वेख के तिक्खे गंडासे, धार धार गए बदलाईआ। सानूं खुशी अबिनाशी करते साडे बचन कीते साचे, सच्चयां सानूं जगत विच दिता बणाईआ। जे रविदास दे वस्त्र ना हुन्दे पाटे, ग़रीबां नूं कदे ना गल लगाईआ। गुरमुखां दे कदी खुल्ल्हे ना करदा झाटे, जंगलां विच फिरन दी लोड़ रही ना राईआ। तुसीं सुत्ते तुहाडा पुरख अकाल इक्को जागे, घर घर विच्चों फड़ के आपणे कोल ल्याईआ। तुसां क्यों फड़े दो सूतां वाले सांघे, दोंह राहां उत्ते पैर ना कोए टिकाईआ। तुहाडे लंमे लंमे कोई वेखण वाले नहीं सी ढांगे, दीनां मज़्बां दे ढंगयां तों दिता छुडाईआ। तुसीं जुग जन्म दे थक्के मांदे, भजन बन्दगीआं कर कर आपणा आप ल्या सुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरी किड्डी वड्डी तड़प, मुरदयां दएं तड़फ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं तुहाडे पिच्छे आया परत, पतिपरमेश्वर हो के खुशी मनाईआ। मेरी कोई बच्चयां वाली नहीं शर्त, शरअ दे असूल दयां बदलाईआ। बिना भगतां कदे किसे नूं मिलण नहीं आया उत्ते धरत, धरनी उत्ते फेरा ना पाईआ। कदी ना लभ्भा किसे नूं विच्चों चर्च, चरखयां वालीआं देण गवाहीआ। गुरमुखो तुहाडे जन्म दा मेरे कोल खर्च, खावो खट्टो ते खुशीआं नाल आपणा झट लँघाईआ। जिधर वेखोगे ओधर वण्डां दर्द, दुखियां दा मालक नज़री आईआ। भगत उधारना प्रभू दा फ़र्ज़, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर कहिण प्रभू वेख्या तेरा अजब तरीका, तक्कया खेल बेपरवाहीआ। श्री भगवान कहे जन भगतां सिक्खीआं मेरे कोलों प्रीता, प्रीतम इक्को रहे मनाईआ। जिन्हां दा अंदर होया ठांडा सीता, सीता राम ओन्हां दे घर विच सोभा पाईआ। भगती दा भण्डारा भर दिता ओन्हां दी जेब विच खीसा, बीसा दए गवाहीआ। जिस दवारे ते चरण धूढ़ी मंगे मूसा ईसा, इच्छया आपणी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरे भगत रज्जे कि भुक्खे, अंदरों वेखीए ध्यान लगाईआ। सुखी कि दुक्खे, दुखी हो के रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं तुहाडे लारयां दे पिच्छे आपणी गोदी चुक्के, कुँवारे आपणे नाल प्रनाईआ। तुसीं हुण हो जाओ परे सिँघासण दी गुठ्ठे, मैं चारों कुण्ट सब नूं गोदी लवां टिकाईआ। जिस मेरा नाम जपया ओहनूं धर्म राए कदी ना टंगे पुठ्ठे, जन्मां विच ना कोए भवाईआ। जगत माया कोई ना लुट्टे, लुटेरे सारे अंदरों दिते कढाहीआ। ओन्हां दी प्रीती पतिपरमेश्वर नालों कदे ना टुट्टे, जिन्हां दी टुट्टी लई गंढाईआ। अठ्ठे पहर इक्को नाम जुट्टे, जोटीआं गुरमुखां नाल रखाईआ। ओ गुरसिखो तुहानूं वी नहीं रहिण देंदा सुक्के, सारे इक्को घर वसाईआ। बिना मेरी किरपा गुर अवतार पैगम्बर कोई ना किसे नूं पुछे, पिच्छा परत के वेखण कोए ना आईआ। जिन्हां ने अज्ज ताअ दित्ते उत्ते मुच्छे, अक्खां लाल कढु डराईआ। जिन्हां दे तुट्टे जुत्ते, ओन्हां ने आपणी मंज़ल लई मुकाईआ। सारयां नूं दर आयां नूं इक्को जेहा पुछे, फ़र्क विच ना कोए जुदाईआ। अजे वी इक्क सौ उणानवे इन्हां विच्चों रुस्से, जे नाँ लवां ते रोवण मारन धाहींआ। बिन प्रभ दी किरपा किसे कम्म नहीं आउँदा पंज तत दा बुत्ते, मिट्टी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। अग्गे गयां कोई ना पुछे, सच दुआर ना कोए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग नाल रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतो रोटी खाधी कि दाल, सारे दयो सुणाईआ। ग़मी खुशी दा दस्सो हाल, परदा देणा चुकाईआ। पुरख अकाल कहे जिन्हां दे मैं वसां सदा नाल, अन्तर हो के निरंतर रूप दरसाईआ। ओन्हां उत्ते कोई ना करे सवाल, जवाब तल्बी ना कोए कराईआ। उह मेरा तक्क के जमाल, जन्म मरन दा लेखा गए चुकाईआ। सदा करां ओन्हां दी प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। जेहड़े तुहाडे उह तुहाडे चले गए नाल, भगत भगवान नाल आपणा झट लँघाईआ। एह अवल्लड़ी जेही चाल, भगतां नूं पता नहीं आपे ओन्हां दी सुरत रिहा संभाल, माँ प्यो नूं पता नहीं ते आपे रिहा उठाल, प्यो पुत्त नूं रमज़ नहीं आपे बणाए आपणे लाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किहड़े बैठे नाल पावे, खब्बा सज्जा दे समझाईआ। गोबिन्द किहा पहलों मैनूं मेट लैण दयो जिन्हां दिते बेदावे, बदली दयां

कराईआ। पुरख अकाल कोलों सारे करा देवां सांवे, कंडे इके दयां तुलाईआ। जन्म जन्म दे बदल के नावें, नवां जन्म दयां वखाईआ। जो सोहँ ढोला गावे, गा गा खुशी बणाईआ। उह पुरख अकाल पतिपरमेश्वर इक्को रावे, दूजी सेज ना कोए हंढाहीआ। गोबिन्द कहे प्रभू ओए तेरे भगत कोई कट्टे वच्छे नहीं लावें, जम्मण वाली होर ना कोई माईआ। तेरे बिना इन्हां दी आत्मा ना कोई बणावे, परमात्मा बिना तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। बिन तेरी किरपा पत सर्ब गवावे, चले ना किसे चतुराईआ। मुरदे मर्द ना कोए जवावे, जीवण जुगत ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं खड़ीए किस दरवाज़े, दरबान हो के खुशी बणाईआ। किहड़े वक्त सुहञ्जणे जागे, आलस निंद्रा ना कोए बणाईआ। पुरख अकाल कहे पहलों मेरे भगतां नूं मारो इक्क आवाज़े, वाजा ढोलक ना कोए खड़काईआ। ओन्हां दे साफ़ करो इरादे, पवित्र लओ कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं मातलोक विच्चों डरदे भाजे, पल्लू आए छुडाईआ। सानूं पता लग्गा तूं प्रगट होया देस माझे, जो गोबिन्द आया दृढ़ाईआ। रचया अगम्मी काजे, खेल नूर खुदाईआ। उह कढ्ढ लए जेहड़े विच दोआबे, दग़ा किसे नाल नहीं कमाईआ। कुछ लेखा लिख्या नानक बाबे, हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ। कुछ गोबिन्द हथ्थ उत्ते रख के बाज़े, वाज दिती लगाईआ। मेरे ग़रीब निवाज़े, तेरे अग्गे दुहाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले मेरे सीस उत्ते होवे ताजे, ताजां वाले दयां मिटाईआ। भगतां नाल चले इक्क रिवाजे, रज़ा विच सारे लवां चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किस बिध करावें हाजे, हज़रत दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा जो भगतां दी रल जाए जमाते, जमां तों दयां छुडाईआ। जो पकवान खा लए मेरयां भगतां दीआं सिर ते चुकीआं होईआं पराते, पतणां तों पार दयां लँघाईआ। जिस तरह वड्डुउँ छोटा चीर के करदा दाते, असल दा रूप दए बदलाईआ। एसे तरह गुरमुखो तुहाडे पूरे करदा घाटे, घट्टयां विच रुलदयां सचखण्ड दुआर दयां बहाईआ। तुहाडे खा के प्रेम वाले बाटे, अमृत रस दयां चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरे भगत किहड़े, ओन्हां दी किस्म दे वखाईआ। पुरख अकाल किहा जेहड़े मेरे भगत दुआर दे आ गए विच वेहड़े, सारे इक्को जिहे दयां बणाईआ। जन्म जन्म दे चुक्के झेड़े, झगड़ा रहे ना राईआ। आवो तक्को हो के अग्गे नेड़े, निउँ निउँ दयां वखाईआ। जेहड़े मेरे हुक्म दे आ गए घेरे, घरयां तों बाहर टपाईआ। उह सज्जण बण गए मेरे, मैं ओन्हां दा पिता माईआ। जिन्हां दे जुग चौकड़ी वड्डे जेरे, सदी चौधवीं राह तकाईआ। फड़ के बाहों माँ पिउ विच्चों नखेड़े, भैणां भाईआं नाते दिते तुड़ाईआ। दे के आपणे गेड़े, नारीआं नाल कन्त दिते लड़ाईआ। उह आ गए

ऐस वेहड़े, जिन्हां नूं बुरा कहे लोकाईआ। पुरख अकाल ओन्हां पिच्छे बुड्ढा नड्ढा हो के मारे फेरे, आपणा जोबन आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे सिँघासण दी किहड़ी चूल, प्रभ सहिजे दे समझाईआ। किथे बहें कन्त कन्तूहल, कन्त धुर दरगाहीआ। पुरख अकाल कहे मेरे रहिण दा मेरे बहण दा भगतां दे अंदर मूल, जित्थे वेखण कोए ना जाईआ। ओथे वड़ां ओथे चढ़ां जित्थे मैनूं कोई ना जाए भूल, भुलयां नूं आपणे नाल रलाईआ। आदि जुगादि भगत उधारना बणया इक्क असूल, असल नाल वसल यार कराईआ। हुक्म इक्क माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं कदे ना जावां भूल, भुल्लयां आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा बिन लेख ना किसे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरी किथ्थे उह लिख्त, जेहड़ी बिन अक्खरां दएं पढ़ाईआ। सानूं संदेशे दित्ते नाल भविख्त, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। पुरख अकाल कहे जे पुछणा पहलों आपणयां दीनां मज़्बां नूं मेरा दस्सो इष्ट, फेर नीवें हो के सीस निवाईआ। मैं कोई गुरू नहीं जो भोगां जगत गृहस्त, गृहस्तीआं दा मालक ख़लक दा ख़ालक प्रितपालक सब दा पिता माईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परमात्मा असीं एसे कर के मंगदे आए वक्त, बेवक्त मंग ना कोए मंगाईआ। पुरख अकाल कहे हुण वेख लओ सुहञ्जणा मेरा भगत, जो बिन भगती दिता बणाईआ। जिन्हां दे कारण आया फ़कत, फ़िकरा आपणा नाम सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जेहड़ी तुसां लयांदी वस्त, प्रेम नाल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतो श्री भगवान जुग जुग डाहढा, डण्डउत बन्दना सजदा सब नूं दए समझाईआ। पुरख अकाल कहे नहीं मैं प्रेम प्यार मुहब्बत विच सब नालों ठांडा, भुलयां नूं अग्नी विच तपाईआ। मैं दो जहानां सांझा, वण्ड विच हिस्सा ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तूं की पींदा खांदा, की वस्त तेरी भेंट चढ़ाईआ। अबिनाशी करता कहे जेहड़ा मेरा नाम गांदा, मैं ओसे नूं आपणा आप तृप्त वखाईआ। मैं कोई पंडत नहीं मुल्ला नहीं ग्रन्थी नहीं ना जगत वाला पांधा, ना कोई हिसाब किताब समझाईआ। मैं कोई मंगदा नहीं गऊ ढांडा, सीरा मंडां खा के ख़ुशी ना कोए बणाईआ। मैं कोई जल पाणी नाल नहीं नहांदा, आपणा आप पवित्र धोती कच्छहिरे नाल ना कोए रखाईआ। मैं कोई पहनदा नहीं तेड़ सलवार पजामा, चीथड़ गल ना कोए रखाईआ। मैं किसे दा ताया चाचा ते फुफड़ नहीं मामा, जगत सज्जण साक ना कोए अख्वाईआ। मैं कोई मज्झीआं गाईआं चारन वाला नहीं कामा, बेलयां विच आपणा फेरा पाईआ। मैं कोई ढोलक खड़काउण वाला रख्या नहीं दमामा, दमां तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। मैं कोई दीनां मज़्बां वाला रख्या

नहीं विधाना, विद्या नाल आपणा झट ना कोए लँघाईआ। जद आवां ते वक्खरा पहर के जामा, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा भुलया उह बेगाना, गुर अवतार बुढे उफ़ लक्क धूह धूह आह आह भार सिहा ना जांदा, दीन मज़्ह्ब कंध ना कोए उठाईआ। गुरमुखो किते समझ ना ल्यो डरामा, धुर दा निशाना रिहा जणाईआ। किते जाण ना ल्यो एह पंजां तत्तां वाला इन्साना, पूरन सिँघ कहि के सारे रहे गाईआ। जे समझो ते एह विष्नूं भगवाना, तुहाडा पिता माईआ। तुहाथों कोई खाण नूं मंगदा नहीं बदाना, बदामां नाल आपणा बल ना कोए वधाईआ। ना एह गोपीआं वाला शामा, ना बनां वाला रामा, ना पढ़न वाला कलामा, ना सलामां विच सीस झुकाईआ। जे वेखो शहिनशाहां दा शहिनशाह शाहां दा सुल्ताना, सुत्यां नूं रिहा जगाईआ। अज्ज गुर अवतार पैगम्बरो उठो मैं भगतां नूं देण आया इनामा, नाम वण्ड के हथ्थ रख के कंड, कंडयां तों बाहर लँघाईआ। कोई ना देवे दंड, कोई ना करे भेख पखण्ड, दूती दुष्ट देणे खपाईआ। एह गुरमुख मेरे चन्द, चन्द्रमा सूर्या जिन्हां दा दर्शन पाईआ। दर्शन सिँघ फेरके वेख कंड, एह कोई भेख नहीं पखण्ड, इन्हां दा मालक इक्क बख्शंद, धुर दा साहिब इक्क गोसाँईआ। की आखोगे बुढ्ढा, की आखोगे नढ्ढा, की आखोगे डुड्ढा, सुत्ता कि जागदा, सब दे साहमणे नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हाए उफ़ सदी चौधवीं कोई ना मिले ढोई, ढोआ लै के मिलण कोए ना आईआ। साडा रिहा ना कोई, कोटी कूक कूक कुरलाईआ। पता नहीं एस भगतां दी आत्मा किस तरह मोही, मुहब्बत विच लए फसाईआ। किहड़ी धार अंदर बोई, बीज धुर दा ल्या प्रगटाईआ। जो एहदे वरगी होई, सोहँ ढोला रहे गाईआ। श्री भगवान कहे मेरे भगतां दी आत्मा सदा नवीं नरोई, निरगुण नज़री आईआ। क्यों मेरा भेत जाणे कोई, सब कुछ कोल हुंदयां सारे दिते भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं ना दे डर, डरदयां नूं होर ना दे डराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू पिच्छे वी तैथों आए डरदे, चार जुग ध्यान लगाईआ। तेरा नाम आए पढ़दे, परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। बणे रहे बरदे, सेवा जगत कमाईआ। दुनिया नाल आए लड़दे, डांगा सोटे कुहाढ़ीआं बरछे दिते वखाईआ। एह तेरे खेल सी पिछले साल पर दे, थोड़े अग्गे दित्ते कराईआ। हुण वेख्यो घराने घरानयां नाल सारे लड़दे, लड़दयां ना कोए छुडाईआ। जन भगतां काज एसे तरह सरदे, जगत शरअ विच्चों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ साडा धुर दा आया लंगर, तेरे हुक्म नाल ल्याईआ। किसे रख्या नहीं मन्दिर, मठ्ठां मसीतां ना कोए पुचाईआ। सिध्धा रख्या भगतां दे अंदर, सहिजे दिता टिकाईआ। अग्गे हुण तूं खोल्ह दे ओन्हां दा जंदर, तेरी वारी आईआ। पुरख अकाल कहे

मैं भगत नहीं ओनां दे तार देणे पशू डंगर, जेहड़े मेरे गुरमुखां दा दर्शन पाईआ। मैं हुण नहीं आया किसे कोलों संगण, जगत वाला शर्म हया सारा दिता गंवाईआ। ज़रूर तोड़ांगा भगतो तुहाडे बन्धन, बन्दगी तों बिना आपणे बन्दे बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जे प्रभू किरपा करे असीं वी इक्क दात आए गुरमुखां कोलों मंगण, बण के पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी बेनन्ती देणी करवाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो आपणी दस्सो ख़ाहिश, सारे भगत ध्यान लगाईआ। सारे कहिण प्रभू चार जुग दी साची आस, तेरे अग्गे रखाईआ। जिन्हां ने पीता इक्क इक्क ग्लास, ओनां गोबिन्द दी नौ नौ साल सेव कमाईआ। जिन्हां खोतयां उत्ते मारे पलाक, उह मुहम्मद दे यार देण गवाहीआ। अरब विच्चों होया इत्तफाक, इथे लहिणे दा बणया साथ, साथी झोटयां वाले नानक दे वेले दे कसाई, जिन्हां अन्तिम नानक दे नाम दी पाई दुहाई, हथ्थों छुरी कढ्ढ परे रखाई, आस इक्को रहे तकाईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ आई, हुण होणी पए जुदाई, जिस वेले आवे धुर दा माही, तुहाडा बेड़ा दए तराईआ। लाल रंग दए चढ़ाई, हथ्थ वागां दए फड़ाई, जिन्हां नूं मारदे रहे बण कसाई, कसम तुहाडी पिछली दए गवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू क्यों मोढ्ढुयां उत्ते रखाए भूरे, क्यों हथ्थां विच फड़ाए कतूरे, क्यों लाल चढ़ाए चूड़े, क्यों वेस वटाए मूढ़े, क्यों मस्तक लाए धूढ़े, क्यों रंग चढ़ाए गूढ़े, क्यों इक्क दूजे नाल जूड़े, सानूं दे दरसाईआ। पुरख अकाल कहे एह सरसे दे संगी, गोबिन्द नूं छड्ड गए विच तंगी, अद्ध विच जा के मंग इक्क मंगी, अन्धेरी रात जिस वेले भुल्ली डण्डी, अंदरों वासना निकली मंदी, दुहाई दे के किहा असीं फेर बणीए तेरे संगी, शब्द गोबिन्द किहा तुहाडी बात चंगी, गोबिन्द दे दवारे कोई डंगराँ वाली नहीं मंडी, सौदा हथ्थो हथ्थ ना कोए विकाईआ। जिस वेले आवे मेरा सूरा सरबंगी, मैं ओस दा होवां भुयंगी, उह वी तुहाडे नाल रलावां जिन्हां दे मूँह विच नहीं दन्दी, उह वी साथी जिन्हां ने चरखे तन्द ना पाई तन्दी, सब दा लहिणा दयां मुकाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ दस्स अगम्मी बात, भेव दे खुल्हाईआ। जिन्हां फ़ाका कटया दिवस रात, तेरा ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल किहा एह साथी त्रिलोकी नाथ, द्वापर दए गवाहीआ। ओस वेले जंगल विच आई इक्क रात, बनवास विच झट लँघाईआ। अगले दिन घनईआ शाम वेले मिल्या आप, आपणे भण्डारे विच्चों उन्हां नूं दिता खवाईआ। नाले किहा शाबाश, तुहाडा अगला लेखा दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले आया शामां दा शाम आप, तुहाडा बणे बाप, भगतां दा वधाए प्रताप, सोहँ जपाए जाप, सब नूं करे पाक, अंदरों खोल्हे ताक, शब्द सुनेहड़ा देवे बिना डाक, सब दा पूरा करे भविख्त वाक, जगत कलाक सब नूं दए गवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जिन्हां हथियार पहने जंगी, जंगजू लए बणाईआ।

३८३
२०

दुर्गा कहे मैं ओनां दे भेंट कीती आपणी डण्डी, कन्नां दा बुंदा नाल रलाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त आवे सरबंगी, बिना सुरां तालां तों आपणा नाम दए जपाईआ। जेहड़ा ओस दी हद्द गया लँघी, लँघदयां पार कराईआ। जित्थे दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच रहे ना कोए पाबन्दी, पाबन्द बिना रसना जेहवा बत्ती दन्द आत्मा परमात्मा दा दए कराईआ। जिस दे नाल जुग चौकड़ी हंढी, गुर अवतारां धार गंढ्ढी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतो कुछ आया सबर, कि भुक्खे बैठे ऐवें प्रभू ध्याईआ। जन भगत कहिण असीं ओसे दा टब्बर, ज्यों भावे त्यों आपणे नाल लए चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मैं शेर बब्बर, भुक्ख्यां नूं सदा रजाईआ। क्यों भगतां दे फिरां सदा मगर, तकड़ा हो के पासे मार के अंदरों तोड़ के जंदर, मन बन्न के बन्दर, मिट्टी दा सुहा के मन्दिर, दाढ़ी खोल् के आपणा रूप ना कोए वखाईआ। मैं कोई लाउँदा नहीं मत्थे नूं चन्दन, किसे दी करदा नहीं बन्दन, जे आवां ते भगतां नूं सचखण्ड दवारे टंगण, अद्ध विचकार ना कदे रखाईआ। जिनां ने खब्बे तों सज्जे कीते कंगण, ओनां दा मानस जन्म अगला बदल गया बदन, जामा बाकी दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण क्यों गुरमुख लड़दे वेखे वांग शरीकां, धक्का इक्क दूजे नूं रहे लगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो उह ऐं लड़दे हुण असीं दीनां मज़्बां दीआं भुगतणीआं नहीं तरीकां, किसे अदालत विच जा के सलाम दुआ ना किसे जणाईआ। असीं रहिणा नहीं विच ऊँचां नीचां, इक्को प्रभ दे रंग समाईआ। जे लग्गण ते ओस दे नाल प्रीतां, जो प्रीतम हो के तोड़ निभाईआ। जिस दा भगत फुलवाड़ी गुंचयां तों बाहर गुलशन वाला बग़ीचा, सोहणा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं पता लग्गा लिखारी ने फड़ लए तिन्न गत्ते, वण्ड हुक्म वाली वण्डाईआ। पुरख अकाल कहे तुहाडे तिन्नां लोकां दे पाड़ दिते पटे, पटेदारी रहिण कोई ना पाईआ। सब नूं सवा के उत्ते फट्टे, गुरमुखां दे कोलों सचखण्ड टिकाईआ। जेहड़े उत्तों लाल ने सुट्टे टके, टकयां दी कीमत सतिगुर नाम दए चुकाईआ। जिस ने मारे वट्टे, वटणा धुर दा दए चढ़ाईआ। जिस ने सूई तागा पाया नक्के, जगत चुरासी विच्चों बाहर रखाईआ। जिस ने तन्द कटया नाल हत्थे, पिछले जन्म दा लहिणा देणा चुकाईआ। जिनां ने फड़े ख़ाली बत्ते, नौ जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। जिनां ने पुट्टे डक्के, एह गोबिन्द दे बाहरों दुश्मण ते अंदरों प्रेम वधाईआ। एह सारे मुस्लिमान चाचे तायां दे भ्रा सके, मलेर कोटले विच सोभा पाईआ। जिनां दा अंदर सोहँ धार जपे, उह रविदास दे गवांढी सोभा पाईआ। भुक्खे नंगे जिस ने कर लए पक्के, कच्चे तन्द दे गांढे

ना कोए तुड़ाईआ। जिन्हां ने तूं ही साडा माई बाप ढोले जपे, सुत्तयां लए जगाईआ। जिन्हां दे हथ्थ विच रस्से, रसत्यों घुथ्थे फड़ के बन्न् के राहे लए पाईआ। जिन्हां दे दस्तारे सिर उत्ते पुठ्ठे, मात गर्भ दे विच पुठ्ठा सिर ना कदे लटकाईआ। जिन्हां दे सिरां उत्ते रुमाल चिट्टे, चिट्टी धारों पार लँघाईआ। जिन्हां प्रभ मिलण दी सिक्के, तिन्हां हार गल छुहाईआ। जन भगतो एह वेला मिलदा कदी ते किते, कीमत विच हथ्थ कदी ना आईआ। प्रभू नूं कदी ना भाउँदे दग़े, दग़यां वाल्लयो अंदरों दग़े लैणे कढाहीआ। जिन्हां दे हथ्थ फड़ाई चिट्टे, चेटक अगला लए लगाईआ। जिस दे तागा बध्धा काला गिट्टे, उह गोबिन्द दे तेरां साल चरण घुट के झट लँघाईआ। जेहड़े साचे दवारे आए सिध्धे, मुख अक्खां ध्यान लगाईआ। जिन्हां दे मोढ्यां उत्ते बरछे तिक्खे, सूली उपर ना कोए टंगाईआ। जिस ने सिर ते रखे छे खक्खे, छेआं शास्त्रां तों विद्या बाहर दिती समझाईआ। एह सब कुछ वेख के जगत लोकाई दी बाहरली धार पिट्टे, हाए हाए कर सुणाईआ। माया ममता मोह कहे असीं जाईए किथ्थे, कवण घर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे हुण ना लग्गो पिच्छे, पिच्छा ल्या छुडाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल सब दी करे रच्छे, आदि दा बुढ्ढा मध दा डुड्डा, अन्त दा जोबनवन्ता सोभा पाईआ। ओए गुरमुखो कोई मन्नोगे गुग्गा, किसे कोलों लवोगे भुग्गा, याद रखो मेरा शब्द सरूपी चुग्घा, जुगां दा लेखा रिहा मुकाईआ। तुहाडा नाम शब्द नाल बन्न्हां गुड्डा, जेहड़ा दो जहानां उडा, उच्चा हो के तुहाडे अंदर वड़ के कुद्दा, जिस दी याद कर के गया बुधा, गोतम बड़ दे थल्ले सीस निवाईआ। पुरख अकाल ने ओस दा स्वार दिता पंज तत दा झुग्गा, नाम भण्डारा दे के सुधा, सिद्धीआं तों परे दिता वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तूं किहड़े कम्मे रुज्झा, कुझ सानूं भेत दस्स गुज्झा, पुरख अकाल कहे ओए गुर अवतार पैगम्बरो मेरा खेल कदे ना मुक्का, मैं सब नूं रखां सुक्का, बड़ा खुश होवां ते भगतां नाल तुहानूं भण्डारा खवावां रुक्खा, खाण पीण वाला गुरू मेरे दर ते कदे ना पाईआ। मेरा नूर इक्को फुट्टा, जिस दा जोबन कदे ना टुट्टा, जगत जहान जाए ना लुट्टा, फुट्टां जगत विच्चों दए कढाहीआ। जिन्हां ने उत्तों कीतीआं सुट्टां, ओन्हां दे अंदर हो के पुछां, रुसयां नाल कदी ना रुस्सां, विछड़यां लवां मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज करनी रिहा कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गुरमुखो असीं सारे इक्को अकाल दी जोती, जोतां वाली दए दुहाईआ। सवेरे सांझी करीए सारे रोटी, खाणा भगत मैनूं देण खवाईआ। रीत चले ना साधां दी जींदयां देण वाली मोछी, मोछयां दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडे इक्क डंग दी प्रीती बहुती, जुगां दा गेड़ गवाईआ। एह कोई देणी नहीं आहूती, पाउणी नहीं भबूती, एह खेल सब तों कसूती, जिस दी किस्म ना किसे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर

कहिण सानूं दिती सूचना सूची, साडी अंदरों बदल गई रुच्ची, असीं वेखण आए किस बिध भाग लग्गा हरि भगत दवारे प्रभ दे पुत्तीं, पत्तण बैठे सारे पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करमां दा लेखा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो की हुन्दा कर्म, ज़रा भगतां दयो सुणाईआ। भगत कहिण साडी आत्मा दा परमात्मा दे विच्चों होया जन्म, निहकर्मी विच समाईआ। तत्तां वाला शरीर माता पिता दा भरम, रक्त बूँद जोड़ जुड़ाईआ। पुरख अकाल कहे भगतो मेरा तुहाडे नाल प्रन, पारब्रह्म हो के ब्रह्म आपणे विच समाईआ। तुसीं इके दी लग्गे सरन, जो चुकावे मरन डरन, तरनी तरन दाता बेपरवाहीआ। गुरमुख कहिण प्रभू असीं तेरा ढोला लग्गे पढ़न, दूजे दवारे कदी नहीं लग्गे वड़न, रस्ता अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू की तेरे भगत, साडा संग बणाउणगे। पुरख अकाल किहा एह मेरा अगम्मी वक्त, उह सोहणा वक्त सुहाउणगे। जे तुसीं निरगुण धार आए जगत, तुहाडी जोत रंग रंगाउणगे। शहिनशाही दा दूजा सम्मत, समें दा वक्त सुहाउणगे। रहे ना कोई फ़र्क, फ़िरका अंदरों सर्ब तजाउणगे। इक्क दूजे दा कर के दरस, तृष्ना तृप्त कराउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर के इक्क वखाउणगे। जन भगत साचा मेल मिलाउणगे। तुसीं आए उत्तों अर्श, जोत धार आपणा खेल खिलाउणगे। उह वेखण उपर धरत, भगत दवारे सोभा पाउणगे। एह खेल होवे असचरज, अचरज लीला इक्क दृढ़ाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे दर सोभा पाउणगे। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा सांझा होवे भोजन, घर इक्को वज्जे वधाईआ। हंगता दा रहे कोई ना रोगण, कूड़ गढ़ देणा तुड़ाईआ। मन वासना कट कलजोगण, कलमा धुर दा देणा समझाईआ। नाम दस्स अगाध बोधन, बुद्धी बिबेक देणी कराईआ। सुणा के सच सलोकण, सोहला हक आपणा नाम दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। धुर दा हुक्म कहे सारे भगत गुरमुख गुरसिख खुशीआं नाल सवेरे त्यार करन प्रशादा, सेवा सच सच कमाईआ। पूरा होवे गुर अवतार पैगम्बरां इरादा, हरस हवस रहे ना राईआ। खाण पीण दा लेखा होवे सादा, जगत वाली ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे शाहो भूप राजन राजा, धुर दरगाह दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बरां भगतां संग खवावे पकवान, पकवान तों बाद देवे दाद अंदर इमदाद, सोई सुरती जाए जाग, मिले महबूब इक्क वाहिद, जिस दा सब दे नाल पूरा होवे अहिद, मुआइदा अगला ना किसे समझाईआ।

★ २७ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुरमुखो तुसीं खट्टण आए, नेड़े हो के बोले बुल्ला। मुर्शद दी मैं सार ना पाया, आपणे अंदर भुल्ला। कूड़ा जगत वेस वटाया, वेस वटाया चुल्हा। हथ्थो हथ्थ ना किसे कुछ फड़ाया, ममता विच रुला। वेख हैरान होया, शब्द नूं मिल्या सुहला। गुरमुख सोहणे नच्चे टप्पे कुद्दे, खुशीआं विच कोई ना थक्के। पिछला लहिणा मूल चुकाया, कोई ना जाए मदीने मक्के। चरण धूढ़ इश्नान कराया, खहिड़ा छुडाया तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे। काया मन्दिर शब्द उपाया, झगड़ा मुक्कया मन्दिर मठ्ठे। चार जुग दे विछड़े, कर किरपा कीते इक्ट्ठे। वक्त अख़ीर ते, प्रभ कदे ना तुहाथों नठ्ठे। जन भगतो खुशीआं नाल नच्चो, नच्च नच्च खुशी बणावां। लख चुरासी गेड़ चों बचो, कदमां नाल पार लँघावां। अग्गे पिच्छे नठ्ठो, दो जहानां पन्ध चुकावां। जे सोहँ ढोला रटो सचखण्ड सदा बहावां। इक्को इक्को नाम जपो, इक्को इक्को जाप जपो, दूजा जाप ना कदे सुणावां। भंगड़ा वेख आया शंकर, तन रमा भबूती। चार जुग दे छड्ड के मन्दिर, छड्डी धूंणीआँ वाली आहूती। नाम जप के सूर्या चन्द्र, लुक के वेखण चारे कूटी। धुर दे सिलसिले दी सार ना आई, भोला नाथ कहे मैं किथों बूटी पीती। आ शंकर तैनूं सच वखावां, की पीता इन्हां प्याला। तुहाडे हथ्थां विच ना कदे फड़ावां, ना कदे रखां किसे धर्मसाला। धुरदरगाहों जिन्हां दा लग्गा नावां, ओन्हां दा बण के दीन दयाला। चार जुग दे लेखे मुकावां, इक्को दस्सया सोहँ नाम सुखाला। जन भगतो खट्टण आए खट्ट के जाणा, सनमुख सोहणा दरस। जन्म जन्म दा लेख चुकाए, मेटे अगली पिछली हरस। ग़रीब निमाणे रंग रंगाए, देवे वड्याई उपर धरत। गुर अवतार पैगम्बरां लेखा पूर कराए, पूरी करे शरत। बिना पुरख अकाल तों, कोई ना आवे परत। गुरमुख कहिण तूं की देणा, सानूं दे दरस। असीं तक्कदे आपणयां नैणां, विच्चों बहुते गए नरस। औखा हो गया मन्नणा तेरा कहिणा, जिंनां चिर अंदर ना जावें वस। मुश्किल हो जाए भाणा सहिणा, धीरज रहे ना किसे हठ्ठ। किरपा कर के जे बख्शण आयों, वस्त भण्डारा इक्को घत। पुरख अकाल कहे, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी फेर नहीं आउणा परत। गुरमुख कहिण असीं वेखण नहीं आए ढोल ढमक्का, जगत डग्गा ना कोए वड्याईआ। साडा नाता जोड़ लै पक्का, अग्गे होए ना कोए जुदाईआ। दरस करा दे बिना अक्खां, रातीं सुत्यां लै मिलाईआ। जे पुरख अकाल सच्चा, दर आयां पार कराईआ। जेहड़ा तेरे चरणों नठ्ठा, ओहदा हो सहाईआ। सानूं दुनिया करे ठठ्ठा, चरणी लग्गयां दी तोड़ निभाईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगत सुहेला कीता इक्ट्ठा, अग्गे होवे ना कदे जुदाईआ। भंगड़ा पाउँदे हो जाओ बाहर, ख़ाली मैदान दयो कराईआ। अग्गे दा कुछ होर विहार, मनी सिँघ दी मनसा पूर कराईआ। लहिणा देणा सदा

जुग चार, धुर दी धार चली आईआ। करे खेल आप निरँकार, दूजे समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

मेहर नज़र कहे सुणो सच फ़रमान, धुर दा धर्म दयां जणाईआ। चुरासी बीबीआं मर्दां दी जगाह अग्गे आउण विच मैदान, बत्ती साल तों छोटी अग्गे कदम ना कोए उठाईआ। सुणन हुक्म श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आए फिरदे तुरदे, जुग चौकड़ी आपणा बैठे पन्ध मुकाईआ। हुक्म दित्ते मालक धुर दे, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। कलयुग खेल वेखणे कल दे, कुल मालक आप समझाईआ। जेहड़े गोबिन्द बचन कीते मुल्ल दे, कीमत करता दए चुकाईआ। जो जुग चौकड़ी आए रुलदे, थोड़ी भगती सेव कमाईआ। संसारी धार अंदर आए भुल्लदे, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। उह खेल वेखण निरगुण दे, निरवैर दए समझाईआ। एह लेखे सारे अनन्दपुर दे, जिस नूं समझ सके कोए ना राईआ। जिस वेले गोबिन्द वहीर तुरदे, किला कोट तजाईआ। ओस वेले माता गुजरी दे अंदर फ़ुरने फुरदे, विचे विच दबाईआ। कुछ बचन कीते लोड़ दे, सुत दुलारे आप दृढ़ाईआ। अगला भेव खोल्ह दे, मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द किहा एह खेल अगम्म अतोल दे, जिस दा तोल ना कोए तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखण आए नज़ारा, जुगां दा लहिणा मुकाईआ। पूरबला लैण आए उधारा, इकरार प्रभ नाल कराईआ। अज्ज खा भगतां दा भण्डारा, लहिणा रहे समझाईआ। इक्को गोबिन्द सुत दुलारा, पुरख अकाल दा गया जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम होवे अन्ध अंध्यारा, जग नूर नज़र ना आईआ। हाहाकार करे संसारा, सृष्टी दृष्टी अंदर कुरलाईआ। धर्म रहे ना किसे दवारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पिता पूत ना करे प्यारा, नार कन्त ना सोभा पाईआ। साध सन्त करन विभचारा, मुल्लां शेख़ कूड़ कुड़माईआ। पंडत पांधे प्रभ दे नाम दा मंगण भाड़ा, कीमत टकयां वाली पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दा घर घर लग्गे अखाड़ा, सृष्टी दृष्टी दए नचाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चले कोई ना चारा, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। खेल करे अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जिस दा सारे मंगदे गए सहारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भविख्तां विच लेख चव्हीआं अवतारा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। काग़ज़ कलम ना लिखणहारा, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। करे खेल गुप्त ज़ाहरा, चोरी ठग्गी विच लोकाईआ। वक्खरा हो के सब तों न्यारा, निरगुण आपणी कल वरताईआ। इक्क बणाए भगत दवारा,

धुर दरबारा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आए धुर दे नठ्ठे, भज्जे वाहो दाहीआ। साडे पिठे चुक्के थक्क गए गर्दन वाले पठ्ठे, नाड़ी नाड़ी दए गवाहीआ। जन भगत सुहेले वेखे लोकमात सच्चे, प्रीती साहिब सतिगुर नाल रखाईआ। आ गए ओसे दे कोल नस्से, जिस दी मंज़ल अग्गे ना कोए वखाईआ। इक्क मुहब्बत विच फसे, दूजी करन ना कोए पढ़ाईआ। विक गए इक्को हट्टे, कीमत जगत वाली रहे गवाईआ। तुल गए इक्को वट्टे, दूजा तराज़ू ना कोए उठाईआ। करया खेल पुरख समर्थे, छब्बी पोह वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की माता गुजरी आई विचार, गुज़रया हाल देणा सुणाईआ। जिस नूं समझ ना सके वेद चार, पुराण अठारां ना परदा लाहीआ। गीता ज्ञान ना अक्ख सकी उग्घाड़, शास्त्र छे ना कोए वड्याईआ। अञ्जील कुरान ना सक्या कोई उठाल, बाहों फड़ ना कोए उठाईआ। ग्रन्थां विच्चों ना आई भाल, पन्थां वाले देण दुहाईआ। जिस दा जगत खेल कमाल, कामल मुर्शद बेपरवाहीआ। उह जाणे मुरीदां हाल, धुर दा मालक नज़री आईआ। हुक्म दिता धुर करतार, कुदरत दा मालक आप जणाईआ। गोबिन्द हो के आप त्यार, कदम आपणा ल्या उठाईआ। साचा फ़तिह बोल जैकार, जैकारा इक्को दिता लगाईआ। गुजरी उठ के देण लग्गी प्यार, पुत्तर कहि के हथ्थ उठाईआ। गोबिन्द किहा मेरे अंदर पुरख अकाल, तूं हुण नहीं मेरी जम्मण वाली माईआ। मैं छड्ड जाणा घर बार, झगड़े देणे मिटाईआ। मैं बण जाणा कंगाल, गुरमुखां दे अंदर वड़ के झट लँघाईआ। मैं इक्को दा बणना लाल, जिस दा जमाल ना कोए मिटाईआ। मेरे कदी नहीं मुकणे साल, मेरी आयू ना कोए गवाईआ। मैं वसणा ओस धर्मसाल, जित्थे वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गुजरी फेर किहा आ मेरे लाडले लाल, गलवकड़ी लवां पाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं पुरख अकाल गोदी ल्या बठाल, सुख बहुता रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुजरी कहे सुण मेरे बांके नौजवान, बचन निक्का दयां सुणाईआ। एह सोहणे दिसण मकान, जो सिक्खां लए बणाईआ। एह वड्डे वड्डे पहलवान, जो भुक्खे मर के झट लँघाईआ। उह वड्डे वड्डे प्रधान, माझे वाले गए मुख भवाईआ। उह सुणन वाले फ़रमान, नीवीआं रहे पाईआ। बाहर हुन्दी कत्लेआम, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। पुरख अकाल खेल करे कमाल, आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द किहा धनभाग जे छुटण लग्गा जंजाल, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। फल लग्गण लग्गा मेरे डाल, चार कुण्ट महक दए महकाईआ। मेरा अन्त इक्क सवाल, सुण लैणा मेरी जगत वाली माईआ। मैनूं अज्ज तों नहीं कहिणा मेरा लाल, पुत्तर आख ना कदे बुलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। गुजरी किहा गोबिन्द औह वेख हाथी घोड़े, बद्धे नजरी आईआ। गोबिन्द किहा मैं हथ्थों लाह दिते कंगणां दे जोड़े, ख़ाक विच रलाईआ। मैं सुणे उह दोहरे, जो दोहरा रंग चढ़ाईआ। क्यों तेग बहादर प्या रिहा विच भोरे, भोरा खा के झट लँघाईआ। क्यों गुरू ग्रन्थ विच काग़ज़ रखे कोरे, बिन अर्जन समझ किसे ना आईआ। इक्क पुरख अकाल दी लोड़े, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुजरी कहे हुण चलणा किहड़े राह, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। की बन्धन लवां बंधा, भार सिर उठाईआ। गोबिन्द किहा मैं सब कुछ जाणा लुटा, जगत वस्त दी लोड़ रहे ना राईआ। सब नूं ख़ाली हथ्थ देणे वखा, आप गुरमुखां दे अंदर वड़ के झट लँघाईआ। जे कोई प्यार नाल आपणी मुहब्बत देवे खवा, ओहनूं खा के झट लँघाईआ। तूं अज्ज तों मेरी नहीं नूरी माँ, तत्तां वाली दयां समझाईआ। मेरी ओस ने पकड़ी बांह, जिस नालों ना होवे जुदाईआ। हौके विच गुजरी दी निकल गई धाह, हथ्थ छाती उत्ते रखाईआ। क्यों पुरी अनन्द दिता छुडा, दोहथ्थड़ मार के दिती दुहाईआ। जेहड़ा ख़ुशीआं नाल दिता वसा, उह आपे दिता ढाहीआ। अग्गे सरसा वगे दरया, पवण ठंडी नाल रलाईआ। गोबिन्द किहा सब कुछ दे भुला, हवस ना कोए वधाईआ। बेड़े पार कराउण वाला मैं इक्को बड़ा मलाह, जो आदि जुगादि पत्तण ते बैठा नज़री आईआ। मेरे बिना कदी कम्म ना आवे किसे दे ख़ुदा, परमात्मा मिलण किसे ना आईआ। मैं शब्द गोबिन्द हो के पहलों सब दा साफ़ करां राह, रस्ता दयां बणाईआ। फिर ओन्हां लवां उठा, जिन्हां आपणा रंग चढ़ाईआ। सच दवारे लवां मिला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। तैनूं अगला लेखा दयां सुणा, बिना लिख के कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल इक्क उठाईआ। गुजरी कहे मैं वेखां चार चौफेर, अन्त अख़ीरी ध्यान लगाईआ। छड्डुण लग्गयां नहीं लग्गी देर, धुर दा हुक्म दिता समझाईआ। गोबिन्द किहा एह मैं छेड़ी निक्की जेही छेड़, छेकड़ सब नूं दयां खपाईआ। मेरा समझे कोई ना गेड़, लख चुरासी रिहा भवाईआ। पुरख अकाल मेरे उत्ते रखणी मेहर, महबूब इक्को नज़री आईआ। मैं किसे दी चलण देणी नहीं ज़बर ज़ेर, जोरू ज़र देणा मुकाईआ। मैं बब्बर होणा शेर केहर, घेरे विच रखां लोकाईआ। लहिणे देणे देवां नबेड़, झगड़ा दयां चुकाईआ। एह मेरी निक्की जेही खेड, पुरी अनन्द तों शुरु कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। गुजरी दे अंदर आया इक्क उतशाह, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। नेत्र हन्झू दिता वखा, मुख नाल हौका इक्क सुणाईआ। ओसे वेले गोबिन्द रुमाल चिट्टा हथ्थ विच दिता फड़ा, जल धार साफ़ कराईआ। जे तैनूं माँ बणन दा

चा, दूजी वारां फेर भी नाल मिलाईआ। मैं लभ्भणा किसे नहीं थाँ, ऐवें करनी नहीं झूठी हां, इशारे नाल दृढ़ाईआ। मैं मन्दिर अगम्मी रहां, जित्थे जोबन मिलदा नवां, बुड़ापा रूप ना कोए बदलाईआ। पुरख अकाल दस्से जे समां, जे हुक्म करे ते भगतां सब कुछ देवां, देंदयां तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुजरी किहा मैनूं अंदर भुल्ल गई इक्क ज़ंजीरी, जेहड़ी सोहणी नज़री आईआ। गोबिन्द किहा ओहदी कड़ी वेख अख़ीरी, जो नज़र किसे ना आईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल मेरे नाल आ गया तकदीरी, तकदीर भगतां दए बदलाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी मीरी पीरी, लेखे सब दे देणे मुकाईआ। भगतां नूं वखाउणी नहीं कोई गली भीड़ी, खुल्ल्हे राह पार लँघाईआ। की हो गया जे वल कर के प्रहलाद नूं तारन दा बहाना बणाया कीड़ी, ओसे कीड़ी ने माछूवाड़े विच आ के मेरा खेल वेखणा अख़ीरी, अख़ीर विच ओसे नूं गुरमुख लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। गुजरी किहा मेरा अंदर रह गया इक्क दुपट्टा, जो तेरे पिता दिता बणाईआ। गोबिन्द किहा मैं ओस दे कारण मुड़ के आवां नट्ठा, अचरज खेल बणाईआ। भेख धारां जगत वाला जट्टा, जटां जूटां समझ किसे ना आईआ। गुरमुखां दे हिरदे फट्टां, तीर निराला इक्क चलाईआ। वस्त अमोलक अंदर घत्तां, अनमुलड़ी आप वरताईआ। लख चुरासी कोलों बचां, पड़दे ओहले परदा आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुजरी किहा मेरे अन्तर इक्क प्यासा, सच दयां समझाईआ। गोबिन्द हुण तूं क्यों नहीं लँघया ब्यासा, चार जुग दा लेखा दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा इक्क कदम चुक्कण नाल प्रभू दे भगतां नूं पवे घाटा, एसे कर के कदम ना अग्गे टिकाईआ। जिस वेले कलयुग दी मुकाउणी वाटा, झगड़ा मुकाउणा लोकाईआ। अगम्मी अमृत दा ल्याउणा बाटा, गुरुआं पैगम्बरां सिर उठाईआ। रविदास दा वेख के चीथड़ पाटा, पारब्रह्म दा मेला लैणा मिलाईआ। नवां बणा के साका, साख्यात करां रुशनाईआ। तूं हुण मेरा मन्न लै आखा, अग्गे अक्खरां वाला, गोबिन्द फट्टयां उत्ते सौण वाला, खा पी के नहाउण वाला, रसना नाल गाउण वाला, फ़ारसी पढ़ाउण वाला, कांशी विच गुरसिख पुचाउण वाला, हथ्थां विच किताबां फड़ाउण वाला, सतरां उत्ते उंगलां चलाउण वाला, वरके उलटाउण वाला, अरदासे सुधाउण वाला, फिर कदे ना आईआ। जे आवां ते सब दा लेखा मुकाउण वाला, इक्को पुरख अकाल दा ढोला गाउण वाला, दूजा जाप ना कोए जपाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां फड़ के बाहों सचखण्ड दुआर पुचाउण वाला, जूहां जंगलां दा गेड़ मुकाईआ। पुरी लोअ आकाश पाताल ब्रह्मण्ड खण्ड हिलाउण वाला, हलूणा शब्द इक्क दृढ़ाईआ। रुस्सयां नूं मनाउण वाला, पुट्ठयां टंगयां नूं बचाउण वाला, लंगड़े

३६१
२०

अंधिआं नूं राहे चलाउण वाला, जगत विकारा गंदे मंदयां नूं गोदी बहाउण वाला, बिना बन्दगी तों बंदयां नूं बन्दे बणाउण वाला, बिना डंडयां तों गुरमुख प्रेम दी मंजल टपाउण वाला, पारब्रह्म आपणा रंग वखाईआ। गुजरी किहा ओ गोबिन्द किहो जेहा वेला गुज़रा, मेरा अंदर दए दुहाईआ। गोबिन्द किहा एह मेरयां भगतां दा वेखीं फेर मुजरा, मुझ मिल के मिलणी भगवान नाल कराईआ। इन्हां दा सोहवे हुजरा, जिन्हां नूं हुज्जत करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुजरी किहा मेरे अंदर पैंदा हौल, हौली हौली दयां जणाईआ। गोबिन्द किहा मेरा पुरख अकाल नाल कौल, दुष्ट दमन दयां दृढ़ाईआ। तूं ना बण अनभोल, अगली अक्ख खुल्हाईआ। मेरा विगड़या नहीं कुझ रती चौल, कोटां गुण बहुता नज़री आईआ। मेरा प्रकाश होणा उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। हुण मैं सिर्फ़ पंजां नूं दे के जाणी पाहुल, अमृत रूप दरसाईआ। जिस वेले श्री भगवान नाल मिल के आवां भगतां कोल, नेड़े हो के दरस दिखाईआ। ओथे की कोई ढोली वजावे ढोल, डग्गयां नाल डंका ना कोए खड़काईआ। मैं हर घट जावां मौल, एह मेरी बेपरवाहीआ। बिन कंडिउँ तोल के तोल, आपणे तक्कड़ दयां चढ़ाईआ। सब दा कर के भार हौल, आप भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। गुजरी किहा मैनूं कुछ हो गया संसा, सहिज नाल जणाईआ। गोबिन्द मैनूं ऐं जापया मेरा विछड़ जाणा बंसा, सरबंस संग ना कोए निभाईआ। गोबिन्द किहा एह मेरे साहिब दी बणता, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। कोटन कोटि वार मैं आया विच जंता, जगत जीव वेख वखाईआ। मेरा लेखा नहीं कोई गणता, अगणत देण दुहाईआ। मैं इक्क नहीं गुरमुख चार जुग दे इक्ठे तारने बणा के प्रभू दी संगता, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। ओ गुजरी तेरा पुत्त नहीं होवे किसे दा मंगता, मंगण दवारे किसे ना जाईआ। हुण थोड़ा जेहा खेल वेखणा इशारे वाले जंग दा, जंगजू गुरमुख लए बणाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां उत्ते वेला आया तंग दा, तंगी सके ना कोए कटाईआ। दुनिया विच झगड़ा प्या भुक्ख नंग दा, भुख्या ना कोए रजाईआ। सतिगुरू पातशाह हो के ग़रीबां दे घर पुरख अकाल फिरे मंगदा, घर घर झोली डाहीआ। एह खेल ओहो पुरी अनन्द दा, जिस दा अनन्द हथ्थ किसे ना आईआ। जो तुटयां गंढुदा, गंढुणहार गोपाल स्वामी सब नूं दए सुणाईआ। उह जिस ने खेल करना ब्रह्मण्ड खण्ड दा, नव खण्ड आपणा डंक वजाईआ। एह लेखा नहीं किसे कच्चे तन्द दा, तन्दी तन्द सतार ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हिरदे अंदर आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द असीं सुणया इक्क सलोक, जो सुल्हकुल दिता समझाईआ। गोबिन्द किहा वेख्यो होयो

कोई ना डरपोक, दीनां मज़्बां वाल्लयो आपणा पैंडा लैणा मुकाईआ। सारे गुरू अवतार पैगम्बर बिना गोबिन्द तों मथ्थे उत्ते हथ्थ रख के करन लग्गे सोच, सोची सोच समझ किसे ना आईआ। गोबिन्द खोल्ह के आपणा नेत्र लोचण लोच, लोचा सब दी रिहा दरसाईआ। ओ जे तुसीं भगत दवारे गए पहुंच, पोचा पा के करे ना कोए सफ़ाईआ। एथे कोई मारया नहीं जांदा निर्दोष, दोषीआं दर आयां पार कराईआ। वेख्यो कोई संग विच रिहो ना ख़ामोश, आपणा हाल देणा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां झगड़ा पाया चमढ़ी वाला पोश, दस्स के चौदां लोक, चौदां तबक फिरदे रहे मार के लंगोट, अल्ला वाहिगुरू राम गा गा साडे थक्क गए होंट, अन्त मिल के निर्मल जोत, जित्थे वरन ना कोए गोत, बिना पुरख अकाल दे कोई ना ओट, जिस नूं गोबिन्द पिता ल्या बणाईआ। गुरसिखो एस तों परे होर नहीं कोई जोग, बिना सतिगुर शब्द तों किसे नाल ना करया संजोग, बिना पारब्रह्म ब्रह्म नाल भोगे कोई ना भोग, धुर दा रस अंदर वस ना कोए चखाईआ। गुजरी कहे गोबिन्द मेरे आ नेड़े, तैनूं दयां दरसाईआ। पुरी अनन्द नूं पए घेरे, ज़ोर दुश्मण रहे जणाईआ। गुरसिख वेख तेरे किहड़े किहड़े, बैठे बल वधाईआ। गोबिन्द किहा मेरे दो चार बथेरे, जिन्हां दे मेरे नाल नबेड़े, इन्हां नूं मार मुकावे हुक्म किहड़े, हुक्म दा मालक पुरख अकाल नज़री आईआ। जेहड़े चढ़ गए मेरे बेड़े, उह वसदे सदा साहिब दे नेड़े, घेरे विच कदे ना आईआ। थोड़ा समां रख लै जेरे, प्रकाश होणा विच अन्धेरे, कलयुग रैण अन्धेरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गुजरी कहे गोबिन्द इन्हां दा कदों होणा औंतरयां दा स्यापा, सफा दएं मिटाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं नाल लै आउण दे आपणा बापा, जिस दी आपा भेंट कराईआ। अजे मैं ओस दा निक्का जेहा काका, काया कंचन अंदर डेरा लाईआ। जिस वेले मेरे पुरख अकाल दा दीन दयाल दा होणा वड प्रतापा, प्रतापी रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा दस्सणा जापा, जग जीवण दाता हो के वेख वखाईआ। ओस वेले फेर वेखीं खेल तमाशा, खुल्ही अक्खीं दयां वखाईआ। सारी दुनिया दा उलटा के पासा, पुश्त पनाह भगतां हथ्थ टिकाईआ। नाले देवां आप शाबाशा, चारों कुण्ट वेखां चाँईं चाँईंआ। बण के दासी दासा, सब दी सेवा लवां कमाईआ। मेरा नूर दा इक्को होणा प्रकाशा, जोती जोत डगमगाईआ। साथ होवे पुरख अबिनाशा, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। सब दा पूरा करां घाटा, ख़ाली झोलीआं देवां भराईआ। जेहड़ा अमृत चखाया विच बाटा, ओहदा लहिणा कलयुग दयां मुकाईआ। अगला दे के साथा, सगला संग बणाईआ। जो रखी अंदर आसा, उह वी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द किहा छड्ड दे दीन दुनिया, दुनी वल्ल ध्यान ना कोए लगाईआ। मेरा मालक

इक्क वड गुण गुणीआ, जो दाता बेपरवाहीआ। जिस ने पुकार मेरी सुणीआ, फड़ बाहों ल्या उठाईआ। लख चुरासी रिहा पुणीआ, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, झगड़ा मुकाए ऋषीआं मुनीआं, मुरीदां नालों मुर्शद मुर्शदां नालों मुरीद सारे दए समझाईआ। गुजरी किहा दस्स किस तरह भुल्लणा, भुल्ल विच होए लोकाईआ। गोबिन्द किहा बिन गुरमुखां तों साचे कंडे किसे नहीं तुलणा, कंडे हथ्थ ना कोए रखाईआ। बिना सतिगुर शब्द किसे दा पैणा नहीं मुलणा, दीन दुनी दए दुहाईआ। इक्क जगत विकारी अन्धेर झुलणा, चारों कुण्ट दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुजरी किहा हाए किस तरह पार करां दरवाज़ा, पिच्छे मुड़ मुड़ ध्यान लगाईआ। गोबिन्द किहा अग्गे वेख तेरा ग़रीब निवाजा, सचखण्ड निवासी बैठा डेरा लाईआ। जेहड़ा तेरे पुत्त नालों पोतरयां नूं पहलों मारे वाजां, शब्दी हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। जिस ने रचणा नवां काजा, स्वार्थ परमारथ आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा सुनेहड़ा दे के आया नानक विच बग़दादा, बदी वाले सर्ब समझाईआ। उस दा खेल वेखणा तमाशा, तमाशबीन हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वखाईआ। गुजरी कहे किड्डा सोहणा पुर अनन्द, सोहणयां दिता बणाईआ। अज्ज कर दरवाज़े बन्द, कीती सर्ब जुदाईआ। गोबिन्द किहा ओ जगत माता गाईए ओस दा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने दिता एह जीउ पिण्ड, पंज तत करी कुड़माईआ। दे के धारा अमृत सिन्ध, सागर वहिण दिता वहाईआ। उह गुजरीए हुण नहीं तेरी बिन्द, पुरख अकाल मेरा पिता माईआ। एह तत्तां वाली तेरे पिच्छे भेज देणी आपणी जिंद, ज़िंदगी गुरमुखां लेखे आईआ। फेर प्रगट हो के आउणा विच हिन्द, हिन्दू तुरक दा लेखा देणा मुकाईआ। जेहड़ी रबाब सतिगुर नानक वजाई किंग, किंगरे किंगरे देणी खड़काईआ। जगत माता इक्क गल्ल पहलों मेरी सारयां करनी निन्द, निन्दक बणे लोकाईआ। जिस वेले मेरा मालक पुरख अकाल हुक्म देवे मरगिंद, फ़रमान धुर वड्याईआ। फेर ना मैनूं ना मेरे भगतां नूं किसे नूं रहे कोई चिन्द, चिन्ता देणी गवाईआ। चरणां हेठ बहि के कोटन कोटि सुरप्त राजा इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव उुंगली दे इशारे नाल भवाईआ। पर भगतां गुरसिखां साचे सन्ता दा बण बख़्शंद, बख़्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन दुनी चार कुण्ट दहि दिशा नव खण्ड सत्त दीप इक्क लगाए हुक्म दी निक्की जेही चिणग, सारी सृष्टी देणी जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आ गए भज्जे, भजन बन्दगी छड्डी सर्ब लोकाईआ। उह पुरख अकाल परवरदिगार सांझा यार साडे पड़दे कज्जे, ओढन आपणा सीस टिकाईआ। फिर असीं ओसे दे हुक्म दे बद्धे, चलीए सच रज़ाईआ।

ओसे दे हुक्म नाल आ गए सद्दे, बैठे पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे कहिण असीं अज्ज खा खा बड़े रज्जे, उठण दी वाह ना राईआ। साडे पेट भर भर थप्पे, चरणां भार ना कोए उठाईआ। गोबिन्द किहा ज़रा तक्को सारे अग्गे, पंज तत बैठा रघुपति नज़री आईआ। भज्जो नठ्ठो दौड़ो जेहड़े मार्ग तुहानूं दस्से, जा के वेखो थाउँ बाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वारता इबारतां वाली ना कोए लिखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो कोई हुण पढ़नी नहीं अलिफ़ ये, कलम शाही ना रंग रंगाईआ। सिध्धा लाउणा परवरदिगार नाल नेंह, दूजे संग अंग ना कोए जुड़ाईआ। तन माटी उह किथ्थे गई जेहड़ी कीती खेह, ख़ालस रूप निरगुण जोत बिन वरन गोत बिन काया किले कोट सचखण्ड दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार आपणे विच मिलाईआ। दस्सो तुहाडे किधर गए यार, जेहड़े बणाए होणहार, जगत दे सिक्दार, तत्तां दे दिलदार, सच्चे दरबार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं दस्सीए कीहनूं, होर कोई सुणन वाला नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे ओ की लभ्भण चले मैनूं, ते ममता जगत खोज खोजाईआ। गोबिन्द किहा नहीं मैं सब दीआं हद्दां भंनूं, वण्ड रहे ना कोए लोकाईआ। जो अड़या ओसे नूं शब्द दे हुक्म नाल डंनूं, डंका वज्जे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गुजरी कहे ज़रा आजा नेड़े झुक, कन्न नाल मुख लगाईआ। की साडा दाणा पाणी एथों गया मुक, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा नहीं नहीं एह खेल ओसे दा जिस दा मैं बणया पुत्त, पिता पुरख अकाल नज़री आईआ। तूं पढ़ लै ओसे दी तुक, कन्न विच गोबिन्द सोहँ ढोला दिता सुणाईआ। गुजरी सुण के हो गई चुप, अनन्द विच, परमानंद विच, सति दे चन्द विच, दीन दयाल बख़्शंद विच, बिन ध्यान गई समाईआ। बाहर सुणे ना कोई डण्ड, सूरमे इक्क दूजे दी वढ्ढुण कंड, नाले गावण ढोले छन्द, गोबिन्द उच्ची चढ़ के वेखे जंग, जगत नज़र किसे ना आईआ। एह सोहणा पुर अनन्द, जिस ने भगतां दी मंगी मंग, जिन्हां कारण आवे सूरा सरबंग, सुत्तयां लए जगाईआ। गुजरी किहा उह केहड़ा ढंग, तरीका दे दरसाईआ। गोबिन्द किहा जिधर वेख वेख वेख जगत माता तिन्न वार बचन कहि के दिता दस्स, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। की होया जे तूं मैनूं शिकम विच्चों तत्तां वाला गोबिन्द जम्मया भार उठाया पेट, खेवट खेट पुरख अकाल इक्को धुर दा माहीआ। जिस नूं मैं अंदर रिहा चेत, ओस नाल मेरा हेत, मैं ओस दे रण विच होणा खेत, खित्तयां दा लेखा देणा मुकाईआ। गुजरी किहा अज्ज चल्यों किहड़े परदेस, कर फ़क़ीरी वेस आपणा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द किहा मैं वसण चलया भगतां दे देस, जित्थे रहवां

सदा हमेश, ना कोई कल ना कलेश, जुग चौकड़ी सारे याद रखे दस्मेश, दहि दिशा दा मालक हो के नज़री आईआ। मेरा शब्द सरूपी पेच, पेचादारी जगत दयां गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला रंग रिहा रंगाईआ। गुजरी कहे दस्स किहड़े चलीए राह, रस्ता दे समझाईआ। गोबिन्द पिच्छा ल्या भवा, हां हूं ना कोए सुणाईआ। जिधर खड़े बेपरवाह, ओधर जाणा चाँईं चाँईंआ। मैं अज्ज तों ओसे दी भेंटा दिता करा, आपणा संग ना कोए बणाईआ। नाता ल्या तुड़ा, कीती जगत जुदाईआ। अगला खेल करे जिस नूं जाणे कोई ना, लेखा लिख्त ना कोए दृढ़ाईआ। हुक्मे अंदर दयां सुणा, शब्द नूर खुदाईआ। दोहां नूं नीहां हेठ देणा दबा, तेरी झोली पाईआ। दोहां नूं मैदान विच सूरबीर दयां बणा, सुर नर झुकण थाँईं थाँईंआ। आप आपणा आपणे दे लेखे ला, लायक पुत्तर हो के सेव कमाईआ। गुरमुख सज्जण सारे देणे तजा, लशकर घोड़ा नज़र कोए ना आईआ। नंगी पैरीं भज्जणा वाहो दाह, चीथड़ पुराणे रिहा वखाईआ। सूलां सेज सत्थर लैणा हंढा, यारड़ा सेज इक्क बणाईआ। इक्क सुनेहड़ा देणा सुणा, अनसुणत आप समझाईआ। तेरी खेल मेरे शहिनशाह, खुशीआं नाल पूर कराईआ। जे सुणें ते चढ़े चा, चाओ घनेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुजरी किहा एह की दस्सया हाल, वाज पुच्छ पुच्छ दिती लगाईआ। वेखीं मैनूं अक्खां नाल ना देंई वखाल, मैथों झल्ली ना जाए जुदाईआ। गोबिन्द किहा छड्ड दे कूड़ा जंजाल, ममता मोह ना कोए वधाईआ। धुर दा हुक्म लैणा पाल, पाल सिँघ दा लेखा फेर बणाईआ। तत्तां वाला ओसे दा बाल, बण बहादर तेग़ चलाईआ। फेर फल लग्गे साचे डाल, डाली डाली रंग चढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग सब दे सिर ते कूके काल, हुक्म सारे जाण भुलाईआ। धर्म रहे ना किसे धर्मसाल, गुरदुआर दुआर ना कोए वड्याईआ। किसे कम्म ना आवे ढाल तलवार, दग़ेदार दिसे लोकाईआ। गोबिन्द किहा मेरा बचन कोई ना सके पाल, सच रूप ना कोए समाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होए बेहाल, चारों कुण्ट कूक कुरलाईआ। जेहड़ा सतिगुर शब्द दलाल, उह मेरा रूप नज़री आईआ। भगत सुहेले लए भाल, चुरासी विच्चों लए उठाल, सब दा पूरा करे सवाल, जो सवाली दर ते आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां रहे ना कोई मजाल, सिर सके ना कोए उठाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा सांझा वज्जे ताल, तलवाड़ा इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा मेरे सूरबीर बहादर, योद्धे गुरमुख नजरी आईआ। जिन्हां नूं जंग बहादर देवे आदर, सब तों पहलों शहीदी पा के उम्मीदां विच आस रखाईआ। ओस दे उत्ते चिट्टी चादर, ओस दा मालक करीम कादर, कुदरत दा करता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। अनन्द पुरी विच्चों गोबिन्द तुरन लग्गा, लग्गे बद्धे नाल मिलाईआ। पुरख अकाल ने दिता सद्दा, धुर फ़रमान दृढ़ाईआ। गलों चोला लाह दे झग्गा, अन्त अख़ीरी तेरा वेख वखाईआ। आपणा आप कर दे नंगा, सोहणा रंग चढ़ाईआ। मेरे प्रेम दा लै मज़ा, रस वेख नूर खुदाईआ। तेरे कोल नहीं आउणी कज़ा, दो जहान तेरे चरणां हेठ दबाईआ। गोबिन्द तूं मेरा इक्को नूर दीपक जोत जगा, दो जहान करे रुशनाईआ। वेखीं मेरयां भगतां नाल कदे ना करीं दग़ा, दग़ेबाज़ी दीन दुनिया विच्चों देणी कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। गोबिन्द किहा प्रभू मैं तेरा पुत्तर बाल जवान, सोहणा बांका नज़री आईआ। जदों वेखें नौजवान, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। सृष्ट सबाई बणावां इक्क मैदान, मध विच दूजा संग ना कोए रलाईआ। हुक्म तेरा मेरा होए फ़रमान, फ़ुरना सब दा बन्द कराईआ। तूं मेरा रहिणा निगाहबान, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। मैं किसे दी मन्नणी नहीं आण, गुर अवतार पैगम्बर उुंगलां नाल भवाईआ। एह कोई कथा नहीं आया सुणाण, जो वरते वर्तमान, सो लेखा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द दे डंके नाल सृष्ट सबाई लए उठाईआ। गोबिन्द कहे गुज़री ना कर अन्तर कलेश, झगड़ा दे मुकाईआ। गोबिन्द तेरा रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। मैं हो गया ओस दे पेश, जो पुश्त पनाह मेरी हथ्थ टिकाईआ। मैं हुण वसणा ओस दे देस, जिस नूं सचखण्ड कहि के सारे रहे गाईआ। मैं आदि जुगादि जद वेखो इक्क दा एक, जो भगतां देवां टेक, गुरमुखां बुध करां बिबेक, त्रैगुण माया ना लावे सेक, अंदर वड़ के देवां भेत, ओ जगत माता गुजरी क्यों अर्जन सिर विच पाई रेत, खुल्हड़े केस दित्ते वखाईआ। वेख साडे ओस ने लिखे लेख, जिस दा ना कोई रूप ते ना कोई रेख, तत्तां वाला तत ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एडा रंग रिहा रंगाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं नैण लैण दे नप्प, गुजरी दयां जणाईआ। दो जहान लैण दे घत्त, पंड कूड़ लोकाईआ। नाता जोड़ लैण दे पक्क, कदे ना होवे जुदाईआ। प्रकाश कर लैण दे सच्च, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मैं मुड़ के नहीं आउणा तत्तां वाला शरीर कच्च, कंचन गढ़ भन्न के खुशी मनाईआ। ओस दा लैणा रस, जो रस्ते रिहा भवाईआ। ओस दे नाल मिल के जन भगत दवारे जाणा वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुजरी किहा गोबिन्द मैनूं तेरा बड़ा आवे मोह, मुहब्बत नज़री आईआ। तैथों सब कुछ ल्या खोह, अनन्द पुरी ख़ाली दए वखाईआ। गोबिन्द किहा जगत माता तूं वेखीं मेरे शहिनशाह दा शहिनशाही सम्मत दो, दो जहानां तों परे नज़री आईआ। जिस दी वार थित

३९७
२०

वदीआं सुदीआं वाली नहीं धारना वाली छब्बी पोह, पोह दा महीना तेरा ठर ना जाए सीना, तेरा गोबिन्द इक्क नगीना, जिस दी कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग रिहा रंगाईआ। गुजरी कहे मेरी दुद्धीं आ गया सीर, हस्स के हाल सुणाईआ। गोबिन्द किहा मेरी बदल गई तकदीर, तदबीर प्रभ जणाईआ। मैं चढ़ गया चोटी अख़ीर, जित्थे मंज़ल इक्को नज़री आईआ। ओथे गुर अवतार पैगम्बरां दी लग्गी कोई नहीं भीड़, थल्ले बैठे सीस निवाईआ। ओथे मेरे सिर ते नहीं कोई चीर, सीस दस्तार ना कोए सुहाईआ। ना कोई कमान नज़री आवे तीर, खण्डा कटार ना कोए लटकाईआ। ना कोई मज़्हबां वाली ज़ंजीर, जगत हद्द ना कोए वण्डाईआ। ना कोई दु:ख दर्द ना भीड़, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। ना कोई शास्त्रां ग्रन्थां दी बन्न्हणी पए बीड़, ना ग्रन्थां करे पढ़ाईआ। मैं ओस दा पीता सीर, जिस नूं श्री भगवान कहि के सारे सीस निवाईआ। फेर कढ्ढ के गात्रे विच्चों शमशीर, शब्द रूप जणाईआ। मैं पहनणे वस्त्र नील, नीले वाला रूप वटाईआ। फेर पुरख अकाल दे अग्गे करनी इक्क अपील, दिती सच सुणाईआ। मेरे नाल सांझी करे दलील, अग्गे नूं पुछण गिच्छण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जिस वेले असीं पुरी अनन्द पुज्जे, वेला वक्त वेख वखाईआ। साडे अंदर भेव ना रहे दूजे, दुतीआ रूप ना कोए जणाईआ। सानूं इक्को दवारा सुज्झे, जित्थे वसे धुर दा माहीआ। जिस भेव खुल्हाए गुज्झे, फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। असीं ओहले रहे लुके, मैदान विच कोए ना आईआ। सारयां दे बुल्ल सुक्के, करबले वाले रहे कुरलाईआ। बणां वालयां दे बणां वाले माण तुट्टे, तीर कमान कंधिआं उत्ते उठाईआ। रथवाहीआं दे रथ किसे ना जुते, अस्व रास हथ्थ ना कोए फ़ड़ाईआ। गलों फाँसी वाले रस्से किसे ना टुट्टे, लटकदे ओसे तरह नज़री आईआ। मुहम्मद वरगे वेखे जुस्से, तोबा तोबा देण दुहाईआ। पुरख अकाल उत्तों वेखे नाल गुस्से, क्यों बैठे अक्ख शरमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो ताअ दयो मुच्छे, मुश्किल सब दी वेख वखाईआ। हुण किसे दे रहिण नहीं देणे न्हेरने उसतरे विच कच्छे, लबां सके ना कोए कटाईआ। वक्त वेला अख़ीरी ढुक्के, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं अजे तक इक्क दूजे नाल (रुस्से), दीन मज़्हबां विच वड़ के झगड़े विच लोकाईआ। जिस वेले गोबिन्द दा शब्दी नूर फुट्टे, होवे इक्क रुशनाईआ। ओस वेले भगत बणने सच्चे, सच संजम इक्क रखाईआ। गुरसिख रहिण नहीं देणे लुके, लुकयां लए जगाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण पार करने सुक्के, आपणे कंध उठाईआ। आप वड़ के दूजे दे जुस्से, जिस्म दा इस्म इस्म दी किस्म बिन चश्म देणी बदलाईआ। लेखे लाउणे अनडिठ्ठे, जेहड़े लेख किसे नहीं डिठ्ठे, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं हो गए ओहले, चोरी चुपके वेख वखाईआ। गोबिन्द किस तरह आपणे भगत जुड़ाउँदा पुत्ते, बच्चे छोटयाँ हुक्म शब्द कराईआ। किस तरह टुकड़ खावे रुक्खे, भुक्खे रह के झट लँघाईआ। जां तक्कया गोबिन्द सूरा इक्को बुक्के, बुक्कल विच सारे लए छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। गुजरी कहे गोबिन्द मैं इक्क नौ दिन दी सुका के रखी मूली, तुरन लग्गयां मुख सगन देवां लगाईआ। गोबिन्द किहा वेखीं जगत माता भोली, भरम विच ना पाईआ। एह तेरी मूली नहीं मेरे गुरमुखां दी कटी जाए सूली, जम की फाँसी रहिण कोए ना पाईआ। बेशक एह बड़ी सी कूली, तूं चीर फाड़ के टोटे करके धुप्पे धर के अंदरों बाहरों दिती सुकाईआ। मैं मंज़ल वेखां चढ़ के जित्थों मेरे भगत सुहेले आउणे पढ़ के, इक्को धुर दा नाम ध्याईआ। हुण तुसां सारयां ने भाणे जाणे जर के, पुरी अनन्द नूं छड्ड के, मैनूं कहु मैं वारी घोली सदके, सेवक सेवादार खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग विच आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेख्या उह समां, सोहणा नज़री आईआ। गोबिन्द नूं कहिंदी की अम्मां, जो अम्मढ़ी जगत अख्वाईआ। जिस ने जन्म दिता माटी चम्मां, तन वजूद वखाईआ। साह वाला वेखदी दमा, नैणां नाल तकाईआ। चिन्ता विच करे ग़मा, ग़मगीन हो के आपणा अंदर आपणे विच वखाईआ। गोबिन्द किहा गुजरी कोई ना करीं तमअ, तमन्ना जगत ना कोए रखाईआ। मेरा पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं करदा मन्ना, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। ओ उठ मेरे लाडले चन्ना, मेरा नूर तेरी रुशनाईआ। तेरे कोल भण्डारा मेरे नाम दा धना, धनाड धुर दा दिता बणाईआ। जिस दे विच रहे कोई ना बन्ना, लेखा सब दा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चले हुक्म रजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेख के कीती सलाह, इक्ट्ठे हो के मता पकाईआ। की हुक्म देवे बेपरवाह, धुर दा मालक शहिनशाहीआ। गोबिन्द किहा जाओ आपणा पकड़ो राह, प्रभ चरण दवारे बहि के झट लँघाईआ। मैं कदी नहीं होण वाला फ़नाह, फल सब नूं दयां खवाईआ। हुक्मे अंदर कदे करां ना नांह, योद्धा हो के खुशी मनाईआ। मैनूं पुरख अकाल ने दस्सया उह दाअ, गुर अवतार पैगम्बरो चार जुग ना किसे समझाईआ। मैं कोई हत्थ विच माला नहीं लैणी फड़ा, मणका मणका ना कोए भवाईआ। तटां उत्ते नहीं देणे बहा, वहिणां विच नुहाईआ। जंगलां विच नहीं देणे भजा, टिल्लयां उत्ते चढ़ाईआ। गुफ़ा दे अंदर नहीं देणे धका, अन्धेरे घुप छुपाईआ। सिर विच पाउणी नहीं स्वाह, अग्नी ना कोए तपाईआ। मेहर नज़र नाल सब दे इके वार बख्श गुनाह, तिन्नां गुणां दा डेरा देणा ढाहीआ। अंदर वड़ के सब

दे रहवां, रिहाइश नज़र किसे ना आईआ। सदा प्रभ दा हुक्म लै के आवां नवां, पिछली करां ना कोए पढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगतां दे विच बहवां, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जिस वेले पैगम्बरां दा अन्त बदलया समां, समझ तों बाहर रमज़ दयां लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द किहा गुर अवतार पैगम्बरो जाओ चले, एह चलित्र बेपरवाहीआ। वसो आपणे जा महल्ले, महिफ़ल लओ लगाईआ। तुसीं सदा आए सुण लओ कल्ले कल्ले, कलमयां विच प्रभ नूं गए गाईआ। मेरा दवारा एकँकारा परवरदिगारा हरि निरँकारा सांझा यारा सांझा यार हो के मल्ले, इक्क तों दो दो तों इक, दोहां दी पूरी सिक, जिस दा लेखा सके ना कोए लिख, लिख्तां विच बन्द ना कोए कराईआ। तुहानूं दे के अक्खरां वाली निक्की जेही चिट्ट, समझा के इक्क दूजे नूं दयो भिट, पिट्ट पिट्ट मरदी रहे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर परमानंद गोबिन्द वल्ले तक्कण बिट बिट, अक्खां अक्खां पिच्छे छुपाईआ। गोबिन्द आउण लग्गयां अनन्द पुरी दी पुट्ट के इक्क इट्ट, आपणे चोले अंदर लई छुपाईआ। सरसे विच्चों आ के ओहदे उत्ते पाई इक्क छिट, तुबका उंगली नाल चुआईआ। उह रो के पई पिट्ट, दिती अन्त दुहाईआ। मेरा लेखा अगला दे लिख, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैनूं दिसदा तैथों विछड़ जाणे सारे सिख, अगला साथ ना कोए दसाईआ। गोबिन्द किहा नहीं मेरी मेरे गुरमुखां नाल नहीं कोई विथ, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गोबिन्द ने कमरकसा ल्या खिच्च, सज्जा चरण तिन्न वार ठुकराईआ। तैनूं ओथे देवां सुट्ट, जित्थे चार वरन सीस निवाईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोई भिट, भगत दवारा कहि के सारे ढोला गाईआ। फिर आवां ओहदे विच, नाल पुरख अकाल मिलाईआ। गुरमुख रहिण ना देवां कोई ज़िच, चुरासी दा गेड़ ना कोए भवाईआ। सब दे अंदर बिना मन्दिर अन्धेरी कंदर तोड़ के जंदर, आपणे नाम दी लकीर देवां खिच्च, लाईन ऐन ग़ैन शास्त्र सिमरत वेद पुराण रमायण अञ्जील कुरान वखा ना सके तिस, ग्रन्थां विच्चों गिरह ना कोए समझाईआ। कढ्ढ के विच्चों कूड़े वहिण, साची संगत विच दस्सां बहण, ऊँच नीच रहे ना कोए तरफ़ैन, सारे बणा के भाई भैण, आपणे रंग दयां रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो जाओ ओस दे पास, जो पारब्रह्म अख्वाईआ। एह मेरा इकल्ले दा कम्म ख़ास, कमरकस्सा दिता खिचाईआ। मैनूं किसे दी लोड़ नहीं सब नूं दिता जवाब, पहुंचो धुरदरगाहीआ। मैं इक्को नूं करना आदाब, इक्को नूं सीस निवाईआ। इक्को रखे लाज, इक्को बेपरवाहीआ। ओसे ने रचया काज, ओहो वेख वखाईआ। जिस दा आदि जुगादि शब्द इक्क समाज, दूजा सच ना कोए जणाईआ। मैं ओसे दा मुहताज, दूजा संग ना कोए रखाईआ। मैनूं खुशी होई आज, सब नूं दयां

दृढ़ाईआ। ओ गोबिन्द किहा गुर अवतार पैगम्बरो मैं कोई लूला लंगड़ा नहीं अपहाज, सूरबीर सोहणा बांका नज़री आईआ। बिना मेरे पुरख अकाल दा, कोट सचखण्ड दा, ब्रह्मण्ड दा, जेरज अंड दा, उत्भुज सेत्ज दा, आत्मा परमात्मा दा, निरगुण सरगुण दा, तत सरीर दा, बेनज़ीर दा, शाह हकीर दा, पंज पीर दा, कदे ना चले राज, हकूमत करन वाला सतिगुर शब्द बिना नज़र कोए ना आईआ। एह कोई लेखा नहीं चालाक दा, कोई हिसाब नहीं कलम दवात दा, एह कोई झगड़ा नहीं शिवदवाले मन्दिर मस्जिद मठ महिराब दा, एह कोई हुक्म नहीं दोज़ख़ बहिश्त पुन्न सवाब दा, एह खेल ओस हकीकी जनाब दा, जो लाशरीक आदि जुगादि नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी अन्तिम फ़तिह, गोबिन्द चले पीठ भवाईआ। गोबिन्द किहा प्रभ दा सुत दुलारा इक्को गज्जे, गजां दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा नूर दो जहान जगे, मेरे अंदर करे रुशनाईआ। मैं कोई गोबिन्द सतिगुर बण के सौण नहीं आया उत्ते किसे मंजे, सत्थर यारड़ा सेज हंढाहीआ। जिस ने मेरे पड़दे कज्जे, कायम मुकाम बैठा दरगाह साची सोभा पाईआ। सारे ओसे दे हुक्म अंदर तुसीं आए बद्धे, बन्दना कर के आपणा झट लँघाईआ। जिस ने गोबिन्द किहा पुरी अनन्द छड्डुण तों पहलों मेरे गलों लुहाए झग्गे, परदा आपणा उत्ते पाईआ। ओस दे हुक्म अंदर फेर आए सद्दे, वस्त्र पहन वेख नैण आपणी अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गोबिन्द किहा माता गुजरी जगत वाली उठ, चलीए चाँईं चाँईंआ। मैनूं गाना बन्नृ सज्जे गुट, फड़ बाहों खुशी मनाईआ। मैं इन्हां दी जड़्ह देवां पुट्ट, जेहड़े दुखियां रहे दुखाईआ। मैं भगतां गुरमुखां सब कुछ, पहले आपणा घराना दयां लुटाईआ। जे पुरख अकाल मैनूं लए पुछ, ते आपणा आप ओसे दे अग्गे टिकाईआ। माता जगत इक्क वेरां फेर सुण ला अनन्द पुर छड्डुण लग्गयां तूं पढ़ लै इक्क तुक, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। माता गुजरी जगत वाली खोल्ह दे आपणी गुत्त, ध्यान पुरख अकाल वल्ल लगाईआ। गोबिन्द ताअ दे के सज्जी मुच्छ, मुश्किल भगतां पार कराईआ। कलयुग अन्त जिस वेले कवेले दा वेला गया ढुक्क, भरमे भुल्ले लोकाईआ। प्यार रहे ना मात पुत्त, पिता पूत होए जुदाईआ। मन वासना लग्गे दुःख, तृष्ना ना कोए बुझाईआ। बिन प्रभ दी किरपा जननी भगत जणे ना आपणी कुक्ख, साचा नूर ना कोए प्रगटाईआ। साध सन्त सति विच मिलण वाले सारे जाणे लुक, कथा करन वाले पढ़ पढ़ आपणा झट लँघाईआ। मैं ओस धारों फेर आउणा उठ, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे लुक, आपणा आप छुपाईआ। निरगुण धार बण के सुत, सुहाउणी साची रुत्त, अबिनाशी अचुत आपणे नाल मिलाईआ। भगत सुहेले गोदी लैणे चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

गुजरी किहा मैनूं इक्क वेरां नैणां विचो वहा लैण दे नीर, अक्खां हौलीआं लवां कराईआ। मैनूं दुःख लग्गे जिस वेले गुरमुख घत्ती जाण वहीर, अंदरों बाहर चाँईं चाँईंआ। गोबिन्द किहा खण्डा खिच्च के मैं फेर दिती लकीर, एथे दा लेखा एथे दिता मुकाईआ। अग्गे बदल देवां तकदीर, हुक्म सुणावां धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। जगत माता सच दृढ़ावांगा। हुक्म धुर दा इक्क सुणावांगा। अगला लेखा वेख वखावांगा। शब्दी धार गोबिन्द अख्वावांगा। पुरख अकाल नाल रलावांगा। साचा देस इक्क सुहावांगा। नर नरेश हो के फेरा पावांगा। पिछला मेट के लेख, नूरी राह इक्क धरावांगा। भाग लगा के सम्बल देस, डंक वजावांगा। फेर कर अगम्मी खेड, सम्मत शहिनशाही वरतावांगा। जेहड़े अनन्द पुरी विच्चों दिते भेज, फेर आपणे नाल रलावांगा। खुशीआं नाल दे के इक्क संदेश, सोहणा स्वांग आप प्रगटावांगा। सारे कर के एक दे एक, इक्को ढोला राग सुणावांगा। चरण प्रीती बख्श के टेक, टिक्के धूढ़ी मस्तक सब दे ख़ाक रमावांगा। मैं छड्ड के सचखण्ड देस, परदेसी हो के मातलोक भगत सुहेले रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमावांगा। जगत माता तैनूं कहिंदे सारे गुजरी, दुद्ध प्यावण वाली बणना माईआ। तेरी अनन्द पुरी बाहरों उजड़ी, अंदरों वसदी नज़री आईआ। जे मेरी रमज़ किसे बुज्झ लई, बुझारत जुग अग्गे रखाईआ। एथे खेल मेरी नहीं मुक गई, अगला लेखा रिहा समझाईआ। फेर मैं परत के आउणा इक्क पुरख अकाल दे नाम दी तुक लई, दूजा ढोला कोए ना गाईआ। इस देह अंदर बेनज़ीर अंदर बाहरों आ के भगत दवारे विच सुख लईं, जित्थे भगत सुहेले हो के ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर एह भज्जे आउणे ओथे भगतां दे टुक लई, पहलों टोकरे सिरां उत्ते भार उठाईआ। गुजरी ओसे वेले ख़ुश होई, ख़ुशी विच ताली दिती लगाईआ। प्रेम प्रीती दे नशे विच गुट्ट होई, दुखड़ा ल्या गवाईआ। गोबिन्द ने अंदर वखाया वेख दीन दुनी दी लुट्ट होई, तेरा पुत्त लुट्टय कदे ना जाईआ। जे आवां ते गुरमुखां दे सुख लई, आपणी लोड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द दा उह वक्त वेख्या सुहावणा, सोहणी ख़ुशी बणाईआ। भगतां दा पकड़या दामना, दामनगीर नज़री आईआ। पूर कराई कामना, भावना वेख वखाईआ। छब्बी पोह रंग रंगावणा, रंगत चढ़े नूर ख़ुदाईआ। सताई पोह सब ने खाधा खावणा, खा खा मिली वड्याईआ। ख़ुशीआं विच गुर अवतार पैगम्बरां भगतां दे अंदर वड़ के किहा तुसां प्रेम दा भंगड़ा पावणा, धुर दे ढोले गाईआ। जिस कारण गोबिन्द वेस वटावणा, परदा दए चुकाईआ। साडी अन्त अख़ीरी इक्को कामना, उच्ची कूक दईए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सब दे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं बेनन्ती लग्गे सुणाण, सुण बेपरवाहीआ। वेख्या खेल महान, खुशी धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ लग्गा पछताण, रोवे मारे धाहींआ। कूड़ राजा कूड़ी प्रजा कूड़ा दिसे जहान, कूड़ी सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द जे सब दी इक्को वार लाहवें मुकाण, घर घर रोण दी लोड़ रहे ना राईआ। स्यापे करन ज्यों मापिआं दे पुत्त मरे जवान, बौहड़ी बौहड़ी जगत विच दुहाईआ। असीं वेखीए खुशीआं नाल किस बिध वज्जे दोहथ्थड़ां वाला ताल, तलवाड़ा तेरा नाम बणाईआ। माझे वालयां दा जे बेदावा दिता पाड़, एन्नां दा सुण हाढ़, हाढ़े कर के रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे कलयुग कूड़ी क्रिया करो स्यापा, माझा पहली वण्ड वण्डाईआ। दूजा हुक्म मिले दोआबा, दोहरा ताल वजाईआ। तीजा मालवे पूरा होवे ख्वाबा, जो डल्ले गोबिन्द गया समझाईआ। चौथे जम्मू उच्ची कूक मारे चांगां, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडीआं पूरन होवण तांघां, आसा मनसा पूर कराईआ। गोबिन्द शब्द कहे मेरे पुरख अकाल दा एह स्वांगा, दूजा समझे कोए ना राईआ। जन भगतां भंगड़ा पाया फड़ के सोटे डागां, खण्डा खड़ग नाल चमकाईआ। बीबीआं पिट्टण नाल ज़ोरां मार के चांगां, सोहणा संग वखाईआ। एह गोबिन्द दे प्रेम दीआं तांघां, अमृत रस इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणा खेल वखाईआ।

★ २८ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म आया जवाबी, सवाल करन दा वक्त रिहा ना राईआ। शरअ तों बाहर दस्सो जित्थे इश्क हकीकी होवे ना मजाज़ी, दोहां तों अगली धार समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखो बण के पाँधी, बिन कदमां कदम उठाईआ। क्यों बिना पुरख अकाल सब दी पत जांदी, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। वड्याई दस्सो नवखण्ड पृथमी सच्चे थाँ दी, थनंतर दयो दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म आ रिहा शताबी, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश समझ सके ना राईआ। चार कुण्ट दहि दिशा क्यों होण दिती ख़राबी, खोटे खरे वण्ड ना कोए वण्डाईआ। क्यों झगड़ा पै गया हिन्दी उर्दू अंग्रेज़ी फ़ारसी पंजाबी, पंजां तों बाहर समझ ना कोए समझाईआ। क्यों जगत अन्धेर झुलया आंधी, अन्धी होई जगत लोकाईआ। क्यों लालच वध्या सवरन

चांदी, क्यों सूर्या चन्द सीस निवाईआ। क्यों शास्त्र सिमरत वेद पुराणा सुरती बांधी, क्यों इष्टां विच्चों इष्ट बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म आउँदा छेती छेती, शायद दा वक्त रिहा ना राईआ। मैनूं दस्सो किहड़े किहड़े अंदर दे भेती, मन्दिरां तों परे डेरा लाईआ। किहड़ी दिसे बदी नेकी, निक्कयां वड्डयां विच दयो समझाईआ। किहड़ी खेल अगम्मी वेखी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। क्यों कलयुग कूड़ कुड़यार होया भेखी, पखण्डी वज्जे वधाईआ। क्यों सच दवारयों होए परदेसी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गा के खुशी मनाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी होई वहिशी, इन्सान हैवान रूप बदलाईआ। क्यों साध सन्त जगत मारन शेख़ी, मन हँकार नाल चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा साचा हरि, क्यों तृष्ना वधी मन राजे दी बेटी, घर घर रही प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे उत्ते आउँदी जावे ज़रदी, ज़रा ज़रा भेव ना आईआ। साथों सांभ होई ना आपणे घर दी, दीन मज़्ब ना कोए समझाईआ। साडी उम्मत ना सिध्धी चलदी, चलित्तरां विच लोकाईआ। एह खेल कलयुग कल दी, इकल्ले पुरख अकाल वरताईआ। चार कुण्ट अग्नी बलदी, चार वरन ना कोए बुझाईआ। एह खेल अछल अछल्ल दी, जिस दे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म छेती रिहा भेज, भजन बन्दगी दी सुद्ध रही ना राईआ। जोती जलवा दे के तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दा खहिड़ा रिहा छुडाईआ। आपणे हथ्थ रख धुर दा लेख, लिख्त भविख्त विच्चों प्रगटाईआ। दो जहानां रिहा वेख, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। इक्क होर दे दिता संदेश, धुरदरगाही आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर हुक्म आवे वेखो खेल अंदर जन का, गुरमुख केहड़ा नज़री आईआ। जिस दा प्यार ना होवे तन का, तत्तां वाली ना सेव कमाईआ। अन्तर इक्को पुरख अकाल होवे मन्नदा, लोक लज्जया परे हटाईआ। पुजारी रहे ना सूर्या चन्न दा, ढोला अवर ना कोए गाईआ। सरोता रहे ना सवरण कन्न दा, अन्तर अन्तर खुशी बणाईआ। जुग चौकड़ी अन्त अख़ीर जावे लँघ दा, कलयुग कूड़ कूड़ मिटाईआ। रस लवे कवण अगम्मी पलँघ दा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। आत्म अन्तर कवण रंगदा, रंग अगम्मा इक्क चढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाला दीन दयाला भुक्खा नहीं माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी तों परे इष्टी इक्को इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण इक्क हुक्म होर दिता सुखाला, जलदी जलदी दिता दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी प्रभ दा खेल निराला, निराकार

आप समझाईआ। अन्तिम आ के पुरख अकाला, अकल कलधारी दए समझाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर चार जुग दे के गए हवाला, अहिवाल आपणा दए समझाईआ। सतिजुग सच बदल के चाला, चाल निराली दए वखाईआ। इक्की मणकयां दी सब गुरमुखां दे हथ्थ विच होवे माला, मणके मणके उत्ते सोहँ धार लिखाईआ। ख़ाली रहे ना कोई बुढ्ढा बाला, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं दस्से अगला वक्त, झट पट जणाईआ। खेल वेखणा विच जगत, हरि करता आप वखाईआ। किस बिध तुरदे फिरदे भगत, भगवन सेवा इक्क कमाईआ। अबिनाशी मिलण आवे उत्तों अर्श, अर्शी प्रीतम फेरा पाईआ। माण रखाए उपर धरत, धवल दए वड्याईआ। गोबिन्द दी पूरी करे शर्त, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। दीन मज़ब दी रहे कोई ना तड़प, कलमा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कसाई बणे कोई ना करद, कातिल मक्तूल लेखा दए चुकाईआ। नानक निरगुण धार दी मन्न के अरज़, पूरब लहिणा झोली पाईआ। सब दा पूरा कर के फ़र्ज, फ़र्ज आपणा नाल रखाईआ। गुरमुखां नाल वण्डे दर्द, दर्दीआं दुःख गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म देवे नाल गुस्से, ज़ोर नाल जणाईआ। सारे फिर फिर वेखो लख चुरासी जुस्से, हिस्से बन्ने वण्डां विच फिराईआ। किहड़े मिले ते किहड़े रुस्से, लेखा देणा जणाईआ। किहड़े मेरे प्रेम प्यार मुहब्बत विच जुट्टे, आत्म परमात्म जोड़ी रहे बणाईआ। किहड़े गूढ़ी नींद सुत्ते, सुत्तयां ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं हुक्म आया इक्क अख़ीर, आख़र दिता जणाईआ। उठो भज्जो नठ्ठो चल्लो घत्त वहीर, फिरो वाहो दाहीआ। मेरे मिलण दी जो दस्स के आए तदबीर, तरीके लओ अज़माईआ। किस बिध लेखा मुक्के शाह हकीर, आहला अदना बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे अन्तर लावे चोट, चोटी चढ़ के आप जगाईआ। सोलां हाढ़ देणी रिपोट, ज़बानी कलाम ना कोए बणाईआ। इस तों पहलां सब कुछ लैणा सोच, फेर गुंजाइश रहे ना राईआ। खोल्ह के वेखणे आपणे चौदां लोक, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। जेहड़े लिख के आए सलोक, उह सोहले फोल फुलाईआ। सब ने जाणा पहुंच, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां अज्जो जाणा नठ्ठ, भज्जणा वाहो दाहीआ। वेखणे मन्दिर मस्जिद मठ, शिवदवाले खोज खुजाईआ। फेरा पाउणा तीर्थ तट, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। जगत विद्या खोल्ह के हट्ट, हटवाणे अंदरों खोज खुजाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं जा के वेखणा पर्बत चोटी, जंगल जूहां खोज खुजाईआ। सब दे अंदर तक्कणी वासना खोटी, खोटे खरे फोल फुलाईआ। कवण बणया प्रभ दा गोती, गौतम कहे एह सेवा मेरी बण आईआ। किस दा मेल होया नाल जोती, जोतां वाले जिस दे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं चढ़ना उपर पहाड़, बिन कदमां कदम उठाईआ। वेखणी डूँघी ग़ार, भँवरी भँवरी फोल फुलाईआ। सानूं किसे उत्ते रिहा नहीं एतबार, बेएतबारी विच दुहाईआ। सारे इक्ठे हो के कर देईए निमस्कार, निउँ के सीस झुकाईआ। तूं करें कराएं करनेहार, करता पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, तेरी सेव कमाईआ। अन्तिम गए हार, चल्ले ना कोए चतुराईआ। एहो बेनन्ती करनी सोल्हां हाढ़, दूजी आस ना कोए बणाईआ। कर किरपा जे देवें इक्क अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा वेखीए खुशी दा मंगलाचार, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चार कुण्ट वेखीए पाप, पतित होई जगत लोकाईआ। तन रिहा ना कोई पाक, नेत्र नैण ना कोए शरमाईआ। सगला बणे कोई ना साथ, अद्धवाटे दिसे लोकाईआ। असीं हुणे दईए आख, आख़र तेरी ओट तकाईआ। बिन तेरी किरपा सारे रहिण गुस्ताख़, प्रेम प्रीती ना कोए बणाईआ। कलयुग होई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। बिन तेरी मेहर झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। सानूं इक्को चाओ तेरे भगतां दी वेखीए जमात, जित्थे दूजी पट्टी ना कोए पढ़ाईआ। इन्हां दा दर्शन करीए साख्यात, जो तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल कहे जे भगत वेखणे मेरे, मैं ममता दयो गवाईआ। दीन मज़्हब दे रखयो कोई ना झेड़े, झगड़ा नज़र ना आवे नूर खुदाईआ। प्रेम प्यार दे चढ़ के बेड़े, साचा बेड़ा देणा सुहाईआ। सतारां हाढ़ आउँदा नेड़े, भज्ज भज्ज आपणा पन्ध मुकाईआ। परम पुरख दे भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख इक्को रंग रंगे होए जेहड़े, चेला गुर भेव रहे ना राईआ। इक्की कदम ते गुरमुख इक्क इक्क मणका फेरे, इक्कीआं इक्कीआं दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगत फेरन आपणा मणका, मणका मन प्रभ दए भवाईआ। एह लेखा बाहरों सरीर तन का, अंदरों जन जन का खेल वखाईआ। थाँ होवे ना छप्पर छन्न का, महल अटल ना कोए वड्याईआ। खेल होवे पुरख अगम्म का, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। लेखा लावे स्वास दम का, दामन आपणा नाम फड़ाईआ। नाता तुड़ा

के काया माटी चम्म का, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। भेव खुल्हा अगम्मी ब्रह्म का, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेख्यो आप, प्रभ आपणी खुशी वखाईआ। भगतां दे अंदर होवे इक्को जाप, रसना ओहो ढोला गाईआ। हथ्थां विच इक्क इक्क माला होवे साफ़, खब्बे तों सज्जे हथ्थ लटकाईआ। इक्क इक्क मुंदरी होवे छाप, लोहा कंगण पाईआ। पुरख अकाल बणाए वड्ड प्रताप, प्रतापी बेपरवाहीआ। मेहर नज़र नाल बणाए पारजात, ज़ाती तों परे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे गुर अवतार पैगम्बर वेख्यो सौदा नकदी, उधार दा खाता ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल बण के दर्दी, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। जेहड़ी रसना सोहँ ढोला आवे पढ़दी, उस दा कर्म दए गवाईआ। सदा मंज़ल देवे चढ़दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभ दयां भगतां माला इक्को दिन फड़नी, मुड़ के फड़न दी लोड़ रहे ना राईआ। मंज़ल उह अगम्मी चढ़नी, जित्थे चढ़ चढ़ कोटन कोटि थक्के, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। माझा मालवा दोआबा जम्मू दिल्ली इटारसी कान्हपुर वक्खो वक्खरे होणे जथ्थे, सोहणा रूप वखाईआ। वस्त्र होणे चिट्टे, चेटक प्रभ दा अंदरों नज़रीं आईआ। खुल्ल्हे दाढ़े सब ने होण छड्डे, गोबिन्द दए गवाहीआ। जे आउणा ते गुरमुखो घरों हो के पक्के, नहीं ते आउण दी लोड़ रहे ना राईआ। फेर काहनूं ऐवें ख़र्च करने टके, टकयां वाली आपणी कीमत पाईआ। सो गुरमुख सूरा जो अन्तर अन्तर जपे, धुर दा नाम अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा फेर दए समझाईआ। पुरख अकाल कहे जिस वेले भगत सुहेले आउणगे, हरि भगती कर वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणगे, गावत वज्जे वधाईआ। दरस अनोखे रूप विच पाउणगे, जिस दा वेस ना कोए समझाईआ। साढे पंज दा वक्त सुहाउणगे, सुहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण एह करना क्यों विहारा, प्रभ सानूं दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे चार जुग तों वक्खरा सतारां हाढ़ा, भगतां पिच्छे मनाईआ। जिस दा माण रहिणा अग्गे जुग चारा, चार जुग मन्ने सर्ब लोकाईआ। सांझा लग्गणा सब तों नाअरा, नर नरायण देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। जन भगतो सब ने आउणा नाल प्रेम, प्रीती इक्क बणाईआ। सतिजुग दा साचा नेम, तुहाडे नाल मिल के दए जणाईआ। एह उह माला माला जेहड़ी गोबिन्द ने इक्कीआं मणकयां वाली फड़ी उत्ते कुण्ट हेम, हिमाचल दे आंचल विच डेरा लाईआ।

वेख्या कँवल नैण, बिन नैण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा वखाईआ। जन भगतो बण के आउणा प्रेम प्यार दे भुयंगी, खुशीआं विच ढोला गाईआ। तुहाडे नाल मिल के सदा खेल करनी बहुरंगी, जिस दा रंग ना कोए समझाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी कोई बन्दी, बन्दीख़ाने देणे तुड़ाईआ। चार वरन अठारां बरन दी सिध्धी कर के डण्डी, डण्डावत इक्को देणी समझाईआ। कोई गुरमुख सवाणी हरि संगत विच रहिण नहीं देणी गंदी, कूड़ कुड़यार विच वड़न कोए ना पाईआ। कोटां विच्चों भगत दी प्रेम प्यार दी धार इक्को चंगी, जिस दा यार नूर खुदाईआ। मैं ओस दा जो अंदरों मेरा संगी, बाहरों जफ्फीआं पाउण वालयां नूं हथ्थ कदे ना आईआ। मेरे कोल किसे वस्त दी नहीं कोई तंगी, वेले नाल सब नूं दयां वरताईआ। अजे पाउण लग्गा विच संसार दे भंडी, भंडां वांग आपणा खेल कराईआ। तुहानूं तुटयां नूं जांदा गंढ्ढी, गंढ्ढ आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को वस्त मुहब्बत वाली तुहाथों वण्डी, गुरमुखां दी गुरमुखां अंदर टिकाईआ। तुहानूं नहीं पता सचखण्ड पुरख अकाल नाल किहड़ी कीती संधी, उह सनद मेरे अंदर दिती टिकाईआ। हुक्म दी ला के पाबन्दी, बिना हुक्म तों बाहर ना कदे कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए वखाईआ। जन भगतो जागणा जागण वेला आया, सुत्तयां विच सुत्ता रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने लख चुरासी जन्म दवाया, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। उह भगतां दा सदा पिता माया, सन्त सुहेले आपणी गोद उठाईआ। दिवस रैण जिस दा दाई दाया, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। ओस आपणा वेस वटाया, कलयुग वेसवा धार रहिण कोए ना पाईआ। सम्मत तों सम्मत बदलदा जाए बदली विच अदली आपणा हुक्म सुणाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दे आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित कर कर हित सदा सदा सद कारज करदा आया।

★ २८ पोह शहिनशाही सम्मत २ हरबंस कौर चक मुआफ़ी ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ लोकमात वेखीए कि स्वर्ग बहिश्तीं, चौदां लोक ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल कहे जित्थों तक मेरे नाम दी दीनां मज़्हबां विच चला के आए किशती, नौका जीव जगत जणाईआ। कलमे वाली आपणी जा के वेखो सृष्टी, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। साची धार वेखो ब्रह्म गृहस्त दी, पारब्रह्म मिल के सेज सहंजणी कवण सुहाईआ। सच वस्त अमोलक नाम जिस जिस दी, तिन्हां दी झोली देणी पाईआ। नव खण्ड पृथमी सत्त दीप ख़बर

सुणावां पुरख अकाल इक्क दी, परवरदिगार सांझा यार जल्वागर नूर ख़ुदाईआ। जिस दी कथा कहाणी आदि जुगादि जित दी, हार विच कदे ना आईआ। जिस नूं सतिजुग त्रेता दआपर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाणी लिख्तां विच आई लिखदी, कलम शाही काग़ज़ सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की कुछ वेखीए जा, पुरख अगम्मे दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवारे तक्को आपणे आपणे थाँ, जो पाक पवित आए बणाईआ। जित्थे अक्खरां वाला मेरा रख के आए नाँ, सतरां विच समझाईआ। तीर्थ तटां जा के वेखो पिछला गराँ, पूरब लहिणा दए दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों कौण पकड़े तुहाडी बांह, सज्जण हो के संग निभाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर तुहाडे कोलों मंगे इक्क न्याँ, अनयाए दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म धुर दा इक्क मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जा के वेखो आपणा दीन, दयानिध दृढ़ाईआ। साची मन्ने कोई ना ईन, हुक्मे अंदर सीस ना कोए निवाईआ। तुहाडा कलमा करे ना कोए तसलीम, साची तसबी बिन मुतस्सबी हथ्थ ना कोए उठाईआ। हकीकत उत्ते किसे ना रिहा यकीन, यामबीन रसना ढोले गाईआ। नेत्र तक्को सब नूं भुल्ली सच ताअलीम, जगत ध्याए वड्याईआ। महल अटल अगम्म अथाह वेखे ना कोए अज़ीम, दरगाह साची मुकामे हक सचखण्ड दुआर जोती धार मिल के आपणा मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ।

४०६ २०

★ २८ पोह शहिनशाही सम्मत २ चतर कौर पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू दस्स दे अगम्मी रस्ता, निरगुण हो के जाईए चाँई चाँईंआ। साडा पुस्तकां वाला बंनया रहे बस्ता, बिना अक्खरां तों निरअक्खर देणा दृढ़ाईआ। दिवस रैण तेरी ख़ुशी अंदर धार दी धार हो के जावे नस्सदा, भज्ज भज्ज आपणा पन्ध मुकाईआ। जो इक्को तेरा नाम पुरख अकाल जपदा, जगजीवण दाते राह तकाईआ। सदा भेव खुल्हाउणा अंदरली अक्ख दा, बाहर लोचन चले ना कोए वड्याईआ। तक्कणा भण्डारा अगम्मी सच दा, जो अंदर दिता वरताईआ। लहिणा देणा वेखणा हकीकत हक दा, धुर दे हाकम तेरे हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा अन्त अख़ीरी राह तक्कदा, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। लहिणा देणा वेखणा पुरख समरथ दा, पारब्रह्म की आपणी रचन रचाईआ। इक्को ढोला सोहला सुणना सतिगुर शब्द सच दा, कलयुग कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। मनुआ मन वासना दहि दिशा वेखणा नच्चदा, नटुआ हो के आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तक्कीए की, सब कुछ दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे पहलों वेखो सब दी साढे तिन्न हथ्थ सीं, जो मानव मानुख वण्ड वण्डाईआ। फेर वेखो जो आपणा बीज के आए बी, नाम कलमा जगत समझाईआ। कवण बणया शब्दी धार तुहाडा पुत्तर धी, नाता तत्तां वाला माता पिता दी झोली पाईआ। साचे मार्ग चल के वेखी इक्को लीह, जिस दी लीक नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां दे कारण लोकमात खाणा आंदा परीह, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा खेल वेखीए वसीह, जो वसीअत विच सब कुछ तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे मैं तुहाडी पिठ्ठ देवां ठोक, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। जा के वेखो मातलोक, कलयुग की की करनी कार कमाईआ। सति प्रेम दा गाए ना कोए सलोक, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भाग लग्गे ना किसे काया कोट, कंचन गढ़ ना कोए वड्याईआ। शब्द नाद ना वज्जे चोट, आत्मक धुन राग ना कोए सुणाईआ। मन वासना दूर ना होवे खोट, खोटे खरे ना कोए उपजाईआ। मिले प्रकाश ना निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दिसे लोकाईआ। झगड़ा प्या वरन गोत, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। प्रभ मिलण दी किसे ना आवे सोच, बेसमझ हो के मानस जन्म रहे गवाईआ। जाओ गुर अवतार पैगम्बरो आपणे आपणे कुराहे जांदे लओ रोक, जे नहीं रुकदे ते मैनूं दयो सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल साडी नमस्ते, जगदीस सीस झुकाईआ। असीं लोकमात जाईए हस्सदे, निरगुण नूर नूर समाईआ। खेल वेखीए सृष्टी दुनिया कायनात जग दे, चारे खाणी फोल फुलाईआ। भेव खुल्हाईए आपणी वण्डी हद्द दे, परदा ओहला आप उठाईआ। तेरे हुक्म अंदर जुग चौकड़ी कोटन कोटि लद गए, आपणा वक्त विहाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर पुरख अकाल दीन दयाल आपणा संग दे, सगला संग बणाईआ। तेरे खेल हँ ब्रह्म दे, पारब्रह्म तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं माटी भाण्डे वेखीए चम्म दे, तत्तां अंदर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा तेरा सुण खुशी मनाईआ। पुरख अकाल कहे सारे जावो उठ, बणो पाँधी राहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखो लुट्ट, चार कुण्ट होई हल्काईआ। मन वासना सब नूं लग्गा दुःख, जगत तबीब शफ़ा ना कोए कराईआ। भरमे भुल्ला मानव जाती मनुक्ख, पारब्रह्म ब्रह्म मेल खुशी ना कोए बणाईआ। परदा ओहला अग्गे रहे कोई ना लुक, लुक्कया भेव देणा जणाईआ। कवण इक्को पुरख अकाल दे नाम दी पढ़े तुक, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क समझाईआ।

★ २८ पोह शहिनशाही सम्मत २ अदालत सिँघ आंडलू ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण उठो सारे चलीए, चलत प्रभ दा वेख वखाईआ। सच सुनेहड़ा सब नूं घल्लीए, हुक्म देवे शहिनशाहीआ। नव सत्त डेरा मल्लीए, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धार हो के विच संसार दे रलीए, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोबन जवानी विच कदे ना ढलीए, इक्को रंग प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरे दर मौजूद, मुफ़लिस हो के सीस निवाईआ। पहलों किहड़ी जाईए कूट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण राह तकाईआ। पुरख अकाल कहे चारे कुण्ट बण के जावो दूत, आपणा बल रखाईआ। जा के वेखो पंज तत काया कलबूत, काअबे वाल्लयो काया हुजरा फोल फुलाईआ। साचे नाम दा दयो सबूत, सबर सबूरी खोज खुजाईआ। हुक्म नाल दस्सणा सब दा मालक इक्क महबूब, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतारां लँघणी आपणी हदूद, वरनां बरनां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। खोज के वेखणी हकीकी मंज़ले मक्सूद, शिरक्त विच्चों बाहर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर चार कुण्ट दा वेखो राह, चौथा जुग दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई मन वासना होई तबाह, ताब्यादारी सच ना कोए कमाईआ। रसना नाल अल्ला वाहिगुरू राम सारे रहे गा, जेहवा नाल ढोले गाईआ। आत्म परमात्म कर के चढ़े किसे ना चा, चाउ घनेरा ना कोए जणाईआ। जगत वासना दुनिया दुनी मज़ाक रही उडा, इख़लाक दिता तजाईआ। पुरख अकाल नाल दग़ा रहे कमा, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ बहि के कूड़ी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कलयुग कूड़ कुड़यारी पई वबा, रोग सके ना कोए गवाईआ। अन्त अख़ीर हुक्म देवे ख़ुदा, खुदग़रजी विच्चों बाहर कढाहीआ। जा के वेखो चार कुण्ट दहि दिशा किस दवारे लग्गी सभा, जो सिध्धा प्रभ दा नाम ध्याईआ। नाता तोड़ कूड़ कुड़यार हवा, प्रभ साजण हो के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ।

★ २६ पोह शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड सभरा ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं जाईए ज़रूर, ज़रूरत प्रभू तेरी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी तेरे नाम दे सेवा विच मज़दूर, चाकरी कर के तेरी खुशी मनाईआ। पन्ध मुकाईए नेड़े दूर, दो जहान चरणां हेठ दबाईआ। तेरी जोत दा करीए नूर, नूर ज़हूर इक्क रुशनाईआ। मूसा कहे मैं हुण नहीं जाणा उत्ते कोहतूर, बिन चश्मां चश्म देणी खुल्हाईआ। ईसा कहे

मैनूं तेरा इस्म इक्को कबूल, दूजा नामालूम खेल ना कोए जणाईआ। मुहम्मद कहे तेरा हुक्म शब्द कलमा नबीआं रसूलां दा कातिल मक्तूल, जन्म खड़ग खण्डा कटार धार तेरी नज़री आईआ। पहलों आपणयां चरणां दी दे धूल, सचखण्ड दवारे दया कमाईआ। फेर अगला दस्स आपणा सच असूल, असलीअत दे दृढ़ाईआ। साडे जाण आउण दा वक्त ऐवें ना जाए फ़ज़ूल, कीमत आपणे घर रखाईआ। पुरख अकाल कहे तुसीं बच्चे नन्ने मासूम, बाले चार जुग दे नज़री आईआ। इस खेल नूं समझे ना कोए अलूम, इलम दे विच ना कोए दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दा सब तों वखरा कानून, काइदे वाली धार ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ।

★ २६ पोह शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिंघ पिण्ड दबुरजी ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी पुश्त पनाह दे दे थापी, थपकी इक्को दे लगाईआ। जे साडा लहिणा देणा मुकाउणा बाकी, दीन दयाल वेख वखाईआ। हुण असीं जाणा नहीं पा के तन ख़ाकी, तेरा नूर जोत रुशनाईआ। पढ़नी नहीं कोई जा के साखी, ढोला अक्खरी ना कोए गाईआ। दीनां मज़्बां अंदर मार के आउणी झाकी, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के फोल फुलाईआ। याद करा के आउणी गोबिन्द वाली अन्त अख़ीरी पाती, जिस दा लेख समझ कोए ना पाईआ। तक्क के आउणा जो प्रभू तेरे दर दा बणया फ़सादी, फ़ैसला तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां बणया रिहों इमदादी, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सांझे कन्त दीन दुनी दी वेख के आईए बरबादी, बदले विच अदल तेरा मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारे रिहा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे उत्ते रखीं हथ्थ, निगाह मेहर इक्क उठाईआ। पुरख अकाल साहिब समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब कुछ तैनूं आण के दईए दस्स, दहि दिशा फोल फुलाईआ। कवण भुल्ला कवण गाए तेरा जस, कवण तेरी ओट रखाईआ। कवण खोल्ह के अंदरों अक्ख, नेत्र लोचन नैण जगत नालों पिच्छे हटाईआ। किस दवारे मिले सति, सच नाल वज्जे वधाईआ। खोज के आईए पंज तत, चारे कुण्ट फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ।

★ २६ पोह शहिनशाही सम्मत २ सुंदर सिंघ पिण्ड रोसे ज़िला गुरदासपुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल तेरे चरणां हउँ वारी घोली, घोल घुमा के सीस निवाईआ। आपणी धार बणा

नाल विचोली, विचला परदा दे उठाईआ। सब तों उत्तम सृष्ट आत्म परमात्म परमात्म आत्म नूं दस्स सच बोली, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। नाम कंडा दे जिस नाल सृष्ट सबाई जाए तोली, अतोल अतुल तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा कर करनी दे करते असीं वेखे खेल कुल, ख़ालक तेरी ख़लक फोल फोलाईआ। तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शब्द नाम अनमुल्ल, दो जहानां कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर नाम निधान इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे हुक्म दी अन्त उडीक, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। सो वेला वक्त होया ठीक, ठाकर धुर दे तेरी बेपरवाहीआ। अग्गे तेरी दस्स के आए ताअरीफ़, सिफ्तां विच सालाहीआ। अक्खरां राहीं दस्सदे आए प्रीत, प्रीतम मेल ना किसे मिलाईआ। तूं हर घट वसें चीत, चेतन सुरती लएं कराईआ। बदल देवें रीत, रीतीवान तेरी वड्याईआ। तैनूं लभ्भदे मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ खोजण थाउँ थाँईंआ। तेरा खेल अणयाला अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मैनूं आ के देणा जवाब, मंग इक्को वार मंगाईआ। जगत महल्ल वेखणा उच्च महिराब, दवारा दरां वाला फोल फुलाईआ। सज्जण मीत वेखणा अहिबाब, तन रबाब कवण वजाईआ। सजदयां विच करे कवण आदाब, नमस्ते कहि के शुकर कवण मनाईआ। सब ने आ के दस्सणा साफ़, सच सच दृढ़ाईआ। जेहड़े तुहाडा नाम लैंदे होवण स्वास स्वास, उह वी देणे जणाईआ। मेहर निगाह नाल कर देवां मुआफ़, मुआफ़ी मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हउँ बालक तेरे दास, जाचक हो के सेव कमाईआ। शब्द रजाई तेरा खेल तमाश, बुद्धी तों परे तेरी वड्याईआ। तूं रचना रची आदि जुग चौकड़ी जुगादि, जुग दा मालक सोभा पाईआ। नूरी अल्ला बण के वाहिद, वाहिगुरू आपणा नाम धराईआ। कलयुग अन्त अख़ीर आपणे आप नूं कर के इंतख़ाब, ख्वाब सब दे पूर कराईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं गगन पातालां बण के माई बाप, पिता पुरख अकाल रूप वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सब कुछ तेरे हाथ, समरथ तेरी बेपरवाहीआ। भविख्तां विच जो आए आख, आख़र सब कुछ तेरी झोली पाईआ। अन्त लहिणा देणा मुका दे हिसाब किताब, बाकी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दवारे इक्क आदाब, डण्डावत बन्दना गुरू महाराज, आत्म ब्रह्म बणा समाज, जगत समग्री लेखा देणा मुकाईआ।

४१३
२०

★ ३० पोह शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह मैसम पुरा ★

वरुण कहे मेरी एह लोहड़ी, देवतयां विच्चों प्रभ दिती वड्याईआ। सब तों कर के चोरी, बूँद स्वांती मेरी झोली पाईआ। वस्त दिती ज़ोरी, ज़ोरावर बेपरवाहीआ। हथ्थ फड़ के डोरी, मेहर नज़र उठाईआ। देवत वेख एह लग्गी धार कौड़ी, धार असुर करे लड़ाईआ। खुदी हँकार दी रली जोड़ी, झगड़े विच वड्याईआ। साची वस्त किसे ना मिली भोरी, भरमां विच आपणा आप गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल दया कमाईआ। वरुण कहे साचे दिवस मिली वड्याई, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। बूँद स्वांती प्रभ ने झोली पाई, भण्डारा दिता भराईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ सुणाई, संदेसा धुरदरगाहीआ। सृष्टी नाल नाता रिहा जुड़ाई, जग जीवण दाता आपणी दया कमाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच वज्जदी रहे वधाई, साचा घर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। वरुण कहे मैं अमृत लै के रस, रसीआ हो के सीस निवाईआ। जोड़ के दोवें हथ्थ, बन्दना विच खुशी मनाईआ। खोल्ह के आपणी अक्ख, तक्कया बेपरवाहीआ। सो खुशीआं विच गया हस्स, ग़मी रूप ना कोए बदलाईआ। शब्द अगम्मी दिता सच, सच दिती सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाईआ। वरुण कहे साचे दिवस मोहे दिता दान, देवणहार दया कमाईआ। मेरे अन्तर बख्श ज्ञान, भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। तेरा लहिणा देणा ज़मीन तों उत्ते थल्ले असमान, हुक्मे अंदर बन्धन पाईआ। ऊँचां नीचां रहिणा विच दरम्यान, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। बिन तेरी धार उपजे ना कोए पकवान, राज़क रिज़क रहीम तेरे हथ्थ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। वरुण कहे हुक्म दिता धुरदरगाह, धुर दी धार जणाईआ। सच संदेसा इक्क सुणा, मेरी बणत लई बणाईआ। वस्त अमोलक इक्क वखा, वक्खरी धार दृढ़ाईआ। वायू अंदर जल मिला, थलां देणी वड्याईआ। खेल करना विच जहां, हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। तेरी पुश्त पनाह सदा रहवां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदा जुग बदलदा रहवां नवां, चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आप वरताईआ। वरुण कहे मैनूं सद्द के पास, आपणे विच्चों आपा दिता जणाईआ। साची वस्त पूंजी लै रास, वस्त अमोलक आप वरताईआ। मेरी मेहर तेरे साथ, जल पाणी रूप वटाईआ। धरत तों जावे आकाश, आकाश तों धरत उत्ते सुहाईआ। अगम्मा खेल तमाश, तैनूं दिता दृढ़ाईआ। वरुण कहे उह पोह दा दिन अख़ीरी ख़ास, अगली थित ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। वरुण कहे मैनूं आई

अगम्मी बाणी, बलहीण दिती जणाईआ। खेल वखाया पवण पाणी, बसन्तर भेव चुकाईआ। नज़री आई अगम्म निशानी, निशाना दिता दृढ़ाईआ। मेरा खेल धुर जगत जहानी, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। बख्शिश कर के अमृत रस जीवत जुग पाणी, झोली दिती भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप समझाईआ। वरुण कहे मेरे उत्ते किरपा करी, कृपाल दिती वड्याईआ। मेरे अन्तर लो दिती हरी, लो हरी आप कराईआ। एह वेख देवतयां औखी होई घड़ी, दुःख अंदरे अंदर मनाईआ। झगड़े विच लड़ाई होई बड़ी, मूर्ख हो के झगड़ा पाईआ। पुरख अकाल कोलों मंग मंगी खरी, झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। वरुण कहे मैं मंगते कीती आस, अन्तर ध्यान लगाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब नूं दे दात, झगड़ा करे कोई ना राईआ। दूसर होवे ना कोई घात, घाउ अवर ना कोए लगाईआ। सब किछ तेरे हथ्थ पुरख अबिनाश, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल किहा वरुण दोवें जोड़ हाथ, भुजां अग्गे वधाईआ। तेरी झोली पावां दात, साढे तिन्न सेर वण्ड वण्डाईआ। जुग चौकड़ी रहवे तेरे साथ, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। वरुण किहा किथे रखां सांभ, सच दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा एह जल साढे तिन्न सेर, कहावत जगत वाली बणाईआ। बख्शिश वाली मेहर, तेरी झोली पाईआ। बिन मेरे भगतां सब दा हुन्दा रहे भेड़, खुशी ग़मी विच बदलाईआ। देवतयां कोलों छिड़ाई छेड़, सुघड़ स्याणे मूर्ख देणे बणाईआ। वरुण किहा की लेखा दएं नबेड़, हुक्म इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल किहा नहीं लहिणा चुकावां फेर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त हंढाहीआ। चार जुग दा रख के गेड़, गेड़े विच वेखां लोकाईआ। कलयुग अन्तिम बण के आवां सिँघ शेर, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। शब्दी धार जन्म लवां ना विच्चों किसे जेर, जेरज अंड ना वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वरुण कहे मेरे अन्तर कीती लो हरी, लोड़ींदा सज्जण पाया। खुमारी बेअन्त चढ़ी, खुशीआं रंग रंगाया। सुहञ्जणी होई घड़ी, दीन दयाल दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया। वरुण किहा तेरी बख्शिश साढे तिन्न सेर पाणी, पवण पाणी जिस दी सेव कमाईआ। पुरख अकाल शब्द सुणाई अगम्मी बाणी, बाण निराला दिता लगाईआ। एह लेखा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नाल रलाईआ। बिन इस दे होए वैरानी, साचा सुख ना कोए उपजाईआ। वरुण कहे मेरे अंदर आई हैरानी, परेशान हो के सीस झुकाईआ।

किरपा कर मेरे शाह सुल्तानी, मेहर नज़र उठाईआ। इस जल दी की कहाणी, मैनूं दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे जिस वेले मैं भगतां दा बण के आया बानी, पारब्रह्म हो के वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। पारब्रह्म कहे मेरा खेल तमाश, समझ कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम आउणा ख़ास, ख़ालस आपणा नूर करां रुशनाईआ। भगतां बणां दास, साचा रंग रंगाईआ। तेरी पूरी करां आस, मनसा नाल मिलाईआ। भगतां हो के दास, साची सेव कमाईआ। धर्म प्रीती दे विश्वास, आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। वरुण कहे प्रभू मेरे अंदर कीती लो, आपणी दया कमाईआ। शब्दी धार ल्या मोह, मुहब्बत विच जुड़ाईआ। साचा जाप दे के सोहँ सो, सुरती दिती बदलाईआ। विरक्कत कर निर्मोह, आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। वरुण कहे मैनूं कीती लो हरी, आपणी दया कमाईआ। बाकी ते औखी आई घड़ी, देवत करन लड़ाईआ। मैं प्रभ दे अग्गे मिन्नत करी, एह की खेल दिता रचाईआ। पुरख अकाल किहा मूल ना डरीं, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। एह खेल करनी कलयुग घर घरीं, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सृष्टी करनी दीन मज़्हब शरई, शरअ विच हल्काईआ। साबत रहे ना कोए सही, सति सच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। वरुण किहा प्रभ हरी कीती लो, हरि मन्दिर दिता वखाईआ। अमृत रस चो, बूँद सवांत पिलाईआ। मार्ग दस्स के दो, झगड़ा प्रेम वण्ड वण्डाईआ। सृष्टी नाल कर के धरोह, भगतां रंग रंगाईआ। धुर फ़रमाना हुक्म दिता उह, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वरुण कहे मैं अग्गे हो, सीस दिता झुकाईआ। प्रभू तेरा खेल जाणे को, कवण वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा मैं जिन्नां बख़्शां आपणा मोह, आपणे रंग रंगाईआ। सो मेरा चरण कँवल पीवण धो धो, आपणी मैल गवाईआ। सृष्ट सबाई लड़े हो के दो दो, झगड़ा रहे लोकाईआ। सुख रहे ना किसे गरोह, हंगता विच दुहाईआ। जो मेरे जावण हो, हिरदे वड़ के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। वरुण किहा भगतां किहड़ी होवे धार, प्रभ साचे दे जणाईआ। केहड़ा वक्त होवे संसार, कवण थित वड्याईआ। कवण दर होवे दरबार, दरवाज़ा कवण खुल्हाईआ। कवण गावे मंगलाचार, धुर दा गीत सुणाईआ। कवण वेखे विगसे पावे सार, मेहर नजर अक्ख उठाईआ। पुरख अकाल किहा मैं सब कुछ करनेहार, करनी दा करता बेपरवाहीआ। जिस वेले जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम डंक वजाईआ। चारों कुण्ट होवे धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। अमृत मेघ बरसे ना कोई नाल प्यार, दुखियां दर्द ना कोए वण्डाईआ। सृष्टी

दृष्टी विच्चों आपणा इष्ट जाए हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उच्ची कूक करन पुकार, सच सच सुणाईआ। किरपा कर पुरख अकाल, तेरे हथ्थ वड्याईआ। ओस वेले आवां निरगुण धार, जोती जोत कर रुशनाईआ। जन भगत सुहेले लवां उठाल, सुरती शब्दी आप जगाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, एका रंग रंगाईआ। भगत दुआर बणा सच्ची धर्मसाल, दर इक्को दयां वखाईआ। तूं मेरा जल रखणा संभाल, जुग चौकड़ी ना किसे फड़ाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर जन भगतां दयां प्याल, अमृत रस बणाईआ। दीन दुनी होए बेहाल, बिहबल हो के मात कुरलाईआ। वरुण कहे मैं फेर कीता नहीं कोई सवाल, सिर दे के आपणा सिर बचाईआ। तेरे हथ्थ तेरी अवल्लड़ी चाल, तूं दाता बेपरवाहीआ। दीनां बंधप होणा दीन दयाल, दयानिध तेरी ओट रखाईआ। वरुण कहे मैं कहवा लो हरी लोहड़ी कहे जहान, लोहड़ी कहिण वाला लोड़ींदा सज्जण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नवीं फुलवाड़ी दा दे के दान, वाड़ी आपणी आप सुहाईआ।

★ पहली माघ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

ब्रह्मा कहे शंकर दस्स खेल पूरी, शंका विच ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी जेहड़ी खेल रही अधूरी, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। बणी रही कूड़ी, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। भेव दस्स क्यों तन भबूत लाएं धूढ़ी, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। क्यों जटा जूट बद्धी जूड़ी, वल हथ्थां वाला पवाईआ। तेरा नूर अगम्मी नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। किस बिध खेल होई ज़रूरी, ज़रूरत दे जणाईआ। किस दी करें मज़दूरी, किस बिध सेव कमाईआ। किस दी सरन रहें हज़ूरी बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा कहे शंकर कुछ खोल्ह के दस्स भेत, चार जुग समझ किसे ना आईआ। किस बिध परमात्म रिहा चेत, चेतन आपणा आप कराईआ। केहड़ा लग्गा हेत, हितकारी दे दृढ़ाईआ। किस बिध दिसे नेतन नेत, घर साचे सोभा पाईआ। की डण्डावत करें आदेस, संदेश की सुणाईआ। की तक्के नर नरेश, शहिनशाह शाह पातशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। शंकर कहे सुण ब्रह्मा, ब्रह्म तों परे दयां जणाईआ। जित्थे रहे कोई ना भरमा, भरम गढ़ ना कोए वखाईआ। जगत कांड ना होवे करमां, निहकर्मी रंग रंगाईआ। नाता होवे ना माटी चर्मा, चम्म दृष्टी ना कोए वखाईआ। इक्को पुरख अकाल दी मिले सरना, सरनगति इक्क जणाईआ। नमस्कार होवे उपर चरणां, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ।

भय भउ रहे ना डरना, निर्भय होए सहाईआ। अक्खर पए कोई ना पढ़ना, निरअक्खर धार जणाईआ। पौड़ी डण्डा पए कोई ना चढ़ना, मंज़ल सच दए वखाईआ। खड़ग कटार पए ना लड़ना, शब्दी डंक इक्क वजाईआ। हुक्मे अंदर भाणा पए जरना, दूजा राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा दृढ़ाईआ। शंकर कहे ब्रह्मे की खोलॢ के दस्सां, दस्सण विच ना कोए वड्याईआ। मेरीआं आपणीआं नहीं कोई अक्खां, अक्खां उह जेहड़ीआं दितीआं बेपरवाहीआ। ओसे दे दर ते वसां, घर ठांडे सीस निवाईआ। सिर चरणां उत्ते घत्तां, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। ब्रह्मा कहे शंकर तूं तक्कदा, जो तक्कया दे जणाईआ। मैं खेल समझणा हक दा, हकीकत दे दृढ़ाईआ। ओथे इशारा नहीं कोई अक्ख दा, प्रतख रूप गोसाँईंआ। खेल अगम्मा सच दा, कूड़ा रूप ना कोए वटाईआ। मार्ग इक्को दस्सदा, दहि दिशा तों परे करे पढ़ाईआ। की प्रभ तेरा तेरे विच्चों तैनूं दस्सदा, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। किस बिध पैज तेरी रखदा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। की ढोला दस्सया जस्स दा, सिफ्तां नाल सालाहीआ। किहड़ी मंज़ल अंदर रखदा, कवण धाम दए टिकाईआ। किस वेले आप चकदा, चुक्क के गोद सुहाईआ। किस वेले वक्खरा वसदा, वेंहदयां नज़र ना आईआ। किस वेले भण्डारा देवे रस दा, अगम्मी जाम प्याईआ। खेल दस्स पुरख समरथ दा, सचखण्ड निवासी की की खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शंकर कहे मैं करां की ब्यान, रसना जेहवा कम्म किसे ना आईआ। मेरा परम पुरख सुल्तान, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जिस दी भूमिका अगम्म अस्थान, सिंघासण आसण आपणा आप सुहाईआ। एका नाम सुणाए अगम्मी धुनकान, अनरागी राग जणाईआ। मेरे उत्ते हो के मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। बिन अक्खरां तों दे के ज्ञान, सहिजे दिता पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दिता खुल्ॢाईआ। शंकर कहे ब्रह्मे की दस्सां भगवन्त, ब्रह्मे सार कोई ना आईआ। मालक धुर दा कन्त, सज्जण धुरदरगाहीआ। मैं वेख ना सक्या अन्त, बेअन्त कहि के सीस निवाईआ। किरपा कर के मेरे अन्तर वड़ के मैनूं दस्सया आपणा मंत, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द दिता समझाईआ। लेखे विच नहीं कोई गणत, अक्खरां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सस्सा हाहा नहीं कोई बणत, टिप्पी होड़ा ना कोए वड्याईआ। विद्या वाला नहीं कोई पंडत, ब्रह्मे तेरी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दिता सुणाईआ। शंकर किहा ब्रह्मे मैं की बोलया बोल, मैनूं दे जणाईआ। ब्रह्मे किहा एहो वस्त मेरे कोल, प्रभ धुर दी झोली पाईआ। दोवें तुल गए ओसे तोल, जिस दा तराज़ू नज़र

४१८
२०

किसे ना आईआ। ब्रह्मे किहा शंकर की होर वस्त तेरे कोल, परदा दे उठाईआ। शंकर किहा मेरा मेरे अंदर गया मौल, दूजा रूप ना कोए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एहो दस्स के बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। ब्रह्मे किहा शंकर आ दोवें करीए कौल, इकरार आपणे विच छुपाईआ। कुछ रीती चले उपर धौल, तेरी मेरी गंढु नज़री आईआ। पुरख अकाल सचखण्ड दवारे बैठा रहे अडोल, जगत दवारे वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। शंकर किहा तेरा मेरा होया इकरार, नाता आपणा ल्या जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा परम पुरख दा जैकार, जैकार विच्चों प्यार, प्यार विच्चों विहार नज़री आईआ। खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर रिहा जणाईआ। दोहां नूं कर के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग एह बचन अंदरों नहीं कढ्ढणा बाहर, चार जुग ना किसे जणाईआ। जिस वेले निरगुण हो के आवां विच संसार, जोती जामा वेस वटाईआ। तुहाडा पूरब लहिणा लवां विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा ब्रह्मा विष्न, विशा नज़र किसे ना आईआ। आपणी धार आपे दिसण, आपणा नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल कोलों पुछण, बेपरवाह देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ। ब्रह्मा कहे शंकर की सुणी होर ख़बर, छेती दे सुणाईआ। शंकर किहा उह जबर, जाबर बेपरवाहीआ। ब्रह्मे किहा नहीं उह ज़रूर साडी पूरी करे सध्धर, साडी आसा आपणे नाल रखाईआ। जगत विहार चलणा नाल अदल, अदालत आपणी इक्क रखाईआ। तत वजूद बणना सज्जण, पंच मिले वड्याईआ। मन मति बुध पदार्थ देणा रतन, अमोलक विच टिकाईआ। जगत खेल करना आपणे यतन, यथार्थ सेव कमाईआ। आत्मा दा बणा के वतन, ब्रह्म देणा टिकाईआ। मन दा सुहा के पत्तण, खेल देणा कराईआ। आपे सब दी पैज आवे रखण, बेपरवाह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साची कार कमाईआ। शंकर कहे ब्रह्मे मैनूं पै गई ठंड, सीतल धार नज़री आईआ। ब्रह्मे किहा मेरे नाल पा लै गंढु, गंढु सके ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा जिस दे नाल तुहाडी जावे हंढ, उह ज़ामन विच रखाईआ। शंकर किहा मैं तेरा लाडला चन्द, आपणी धारों ल्या प्रगटाईआ। ब्रह्मे किहा मैं तेरा स्वच्छ सरूप दा अगम्मी दम, दामन फड़ के ख़ुशी मनाईआ। कुछ सानूं दस्स आपणा कम्म, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धुर फ़रमाने किहा श्री भगवन, अगम्मी हुक्म सुणाईआ। मेरे नाल कन्नी लओ बन्न्ह, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। जित्थे चले ना चतुराई कोई वासना मन, ममता मोह रहे ना राईआ। कुछ सुणना पए ना सरवण कन्न, हिरदे अन्तर दयां दृढ़ाईआ। कुछ लभ्भणा पए ना धन, जगत वणज ना वण्ड

वण्डाईआ। राह तक्कणा ना पए सूर्या चन्न, इक्को नूर जोत होवे रुशनाईआ। तुहाडा सब तों उत्तम श्रेष्ठ कम्म, गंढु आपणे नाल जुड़ाईआ। दे सके ना कोए डंन, सज़ा विच ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। ब्रह्मे शिव गंढु लई पा, पारब्रह्म नाल मिलाईआ। खुशी लई मना, ढोला इक्को गाईआ। तूं मालक बेपरवाह, हउँ याचक सेव कमाईआ। इस दा कुछ भेव दे खुल्हा, किस बिध कार कमाईआ। अग्गों किहा शहिनशाह, धुर फ़रमाना दिता दृढ़ाईआ। शंकर भबूती मल चरण कँवल स्वाह, स्वार्थ तेरा दयां बणाईआ। इस गंढु नूं आपणा हथ्थ ला, हथ्थ ला के हथ्थ नाल छुहाईआ। फेर नेत्रां अग्गे टिका, चारों तरफ़ भवाईआ। गाउँदा जा बिन रसना ज़बां, सोहणा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। शंकर फड़ के गंढु अपार, आपणीआं अक्खां अग्गे टिकाईआ। वेख्या आर पार, नज़र नज़र नाल बदलाईआ। ओहदे विच्चों आया जैकार, ढोला धुरदरगाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दूजा जाणे कोए ना कार, करनी दा करता आप समझाईआ। नैण खोल्ह के वेख्या ओथे मिली अगम्मी धार, धर्म दी धार आप समझाईआ। सो पुरख निरँजण कर त्यार, हँ ब्रह्म दिता दृढ़ाईआ। सोहँ रूप नज़र आया जोत नाल जोत होई उज्यार, उजाला दीन दयाला सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शंकर किहा ब्रह्मे मैं वेख्या एह जोड़, जो गंढु लई पवाईआ। अंदर होर ते बाहरों होर, दोवें खेल खिलाईआ। हुक्मे अंदर सानूं रिहा तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। इस दे अग्गे नहीं ज़ोर, ज़ोरावर शहिनशाहीआ। सानूं इस दी सदा लोड़, सिर साडे हथ्थ टिकाईआ। लग्गी निभावे तोड़, गंढु आपणे नाल पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। ब्रह्मे किहा शंकर पुच्छ गंढु दा की भा, भगवन दे जणाईआ। श्री भगवान किहा मैं तुहानूं ल्या अपना, आपणे रंग रंगाईआ। एह गंढु विच गवाह, शहादत दिती रखाईआ। सोहँ अक्खर दिता लिखा, जो लेखा बिन कलम शाहीआ। जिस नूं जाणे कोई ना, निरगुण निरगुण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शंकर किहा प्रभू एह मणका दिसे इक, एकँकार दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा इस दी धारों सब कुछ लैणा सिख, सिख्या देवे धुरदरगाहीआ। लेखा बणे पिता पित, पूत सपूते गोद उठाईआ। निरगुण करे हित, सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जिस दा लेखा ब्रह्मे देणा लिख, चार जुग वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दिता चुकाईआ। ब्रह्मे किहा शंकर पुच्छ इस गंढु दा की विचार, प्रभ साचे दे समझाईआ। शंकर कर के निमस्कार, बन्दना अंदर सीस झुकाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, किछ मोहे दे दृढ़ाईआ। क्यों गंढु पाई

अपार, अपरम्पर स्वामी भेव खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा मैं खेल खेलणा निरगुण सरगुण इक्क तों दो हो उज्यार, दो तों इक्क आपणा रूप वटाईआ। दो इक्क दा मेला विच संसार, दूआ एका जोड़ जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी वरते कार, करनी दा करता आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म संदेसा इक्क समझाईआ। हुक्म दे श्री भगवान, भगवन दया कमाईआ। शंकर तैनूं दिता दान, मेहर नज़र उठाईआ। तूं इस नूं कर परवान, तेरी झोली दिता पाईआ। चार जुग रहे निशान, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। शंकर किहा इस दा कारज दस्स, हरि करते भेव खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा इस दे नाल जुग चौकड़ी मेरा करन जस, सिफ्तां वाला नाम सालाहीआ। अन्तर लभ्भण रस, खोजण चाँईं चाँईंआ। खुल्हावण ख़ातर अक्ख, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा आप चुकाईआ। धुर दा परदा खोल्ह आदि निरँजण, हरि करता आप जणाईआ। शंकर तैनूं दस्सां करना भजन, आपणा नाम दृढ़ाईआ। तेरे अन्तर मेरे प्रेम दे नाद वज्जण, दूजी अवर ना कोए शनवाईआ। इक्को नज़री आवां सच्चा सज्जण, नाता कूड़ अवर दरसाईआ। सच प्रीती अंदर रहिणा मग्न, सति सन्तोख विच समाईआ। जुग चौकड़ी काल मात लँघण, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ। शंकर किहा दस्सया खेल सुखाला, मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अकाल किहा एह मणका नहीं तेरे प्रेम दी माला, मालक हो के तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जगत रीती चले चाला, मानस मानुख राह वखाईआ। सिफ्ती धार बणे दलाला, दयावान नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्में अंदर हुक्म वरताईआ। शंकर किहा केहड़ा करना जाप, जगजीवण दाते दे जणाईआ। पुरख अकाल किहा तूं मेरा मैं तेरा सोहँ थापण दिता थाप, बिना परमात्मा आत्मा दूजी वस्त रहिण कोए ना पाईआ। सदा सुहेला हो के वसां साथ, सगला संग बणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रसना वाले जेहवा वाले सिफ्तां वाले लिख्तां वाले भविख्तां वाले बदलदे जाणे पाठ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। मणका मणका सब ने भवाउणी गांठ, उंगली पोटे नाल मिलाईआ। शंकर बिन मेरी किरपा किसे दी मुकणी नहीं वाट, जगत रीती विच जगत दयां भवाईआ। शंकर किहा दस्स पुरख समराथ, एह क्यों आपणी रचन रचाईआ। पुरख अकाल किहा एह मेरा खेल तमाश, धन्दे विच रखां लोकाईआ। नित नवित जुग चौकड़ी भगत सुहेले उठावां ख़ास, ख़ालस आपणे रंग रंगाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के देवां धुर विश्वास, विशा आपणा दयां समझाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दयां मिटाईआ। शंकर

४२२
२०

कहे मैं वेखां तेरा हुक्मे वाला कैलाश, जिस दा रूप रंग नज़र किसे नाँ आईआ। हउँ सेवक दासी दास, याचक हो के सेव कमाईआ। इक्क अगम्मी दस्स बात, मेरे साहिब मंग मंगाईआ। तूं कोई लेखा लिख्या नहीं नाल कलम दवात, हुक्मे अंदर दिता दृढ़ाईआ। अबिनाशी करते किहा शंकर मेरा सब तों वक्खरा भण्डारा काग़ज़ात, जिस दा रूप रंग रंगत विच ना कोए वखाईआ। ओस दे उत्ते सारे लिखां हालात, हालत दो जहानां आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। शंकर किहा मेरे जगदीश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल किहा ज़रा नेत्र मीट, तैनूं दयां वखाईआ। अन्तर पढ़ इक्क हदीस, सोहँ ढोला गाईआ। पढ़न नाल शंकर दी निकली चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। अगलयां जुगां दे आउण वाले निरगुण तों सरगुण गुर अवतार पैगम्बर प्रभ वखाए ठीक, बिना समें तों समां आप जणाईआ। नज़री आए नज़दीक, बैठे पन्ध मुकाईआ। अबिनाशी करते उत्तों अक्खां दितीआं नपीट, उंगलां नाल दबाईआ। नूरी नज़र आया वाहिद लाशरीक, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े विच दए वड्याईआ। अक्खां नूं होर दबाया शंकर नूं ऐं जापया जिवें नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए बीत, देर लग्गी ना राईआ। चार कुण्ट अन्धेरा दिस्या तारीक, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। अबिनाशी करते नालों तुट्टी वेखी प्रीत, बिप्परीत विच लोकाईआ। किसे दी करे ना कोए तस्दीक, धर्म दी शहादत ना कोए भुगताईआ। जगत वासना सब नूं रही घसीट, माला मणके सारे देण दुहाईआ। आत्म परमात्म होए ना कोए करीब, दूर दुराडे रोवण मारन धाहींआ। एह खेल वेख अजीब, शंकर अंदर वास्ता दिता पाईआ। पुरख अकाल किहा एह मेरी तरतीब, जुग चौकड़ी रिहा भवाईआ। शंकर किहा कुछ मेरी उम्मीद, आसा विच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दिता सुणाईआ। शंकर कहे ब्रह्मे एस गंढु दी कर पड़ताल, आपणा ध्यान लगाईआ। ब्रह्मे किहा मैं मंग मंगां कोलों पुरख अकाल, दर ठांडे सीस निवाईआ। बण के बच्चा नन्हा लाल, चरण कँवल सेव कमाईआ। रो के दस्सां हाल, बिहबल हो कुरलाईआ। किरपा कर दीन दयाल, मेहर नज़र उठाईआ। एह तेरी वस्त किस बिध रखणी संभाल, समें दे मालक देणा जणाईआ। मन्न बेनन्ती मेरा सवाल, सवाली हो के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। पुरख अकाल किहा ब्रह्मे कर ख्याल, पारब्रह्म दए जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल कमाल, हरि करता आप कराईआ। मणके मणके नाल मेरी घालणी घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। ब्रह्मा कहे मैं गंढु वेखी अवल्ली, अव्वल नज़री आईआ। मैनूं नज़र आई इकल्ली, दूजा संग ना कोए बणाईआ। पुरख

अकाल किहा ब्रह्मे एहनूं रख शंकर दी उत्ते तली, उत्तों आपणी तली नाल दबाईआ। मेरे प्रेम दी दे दयो बली, भेंटा मुहब्बत विच रखाईआ। फेर वेखो मेरी अगम्मी गली, जित्थे होका मिले धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। ब्रह्मे गंढु शंकर तली दिती रख, रख के खुशी मनाईआ। उत्तों दिता दब्ब, सहिजे भार टिकाईआ। दोहां नूं नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा अख़ीर दिस्या झब्ब, मध दा लेखा दिता मुकाईआ। इस दे दरम्यान गुर अवतार पैगम्बर सारे मणकयां वाले प्रभ नूं रहे भज्ज, भजन दी भाजी झोली पाईआ। आप वक्खरा हो के जग, रीती मात विच प्रगटाईआ। खेल कर सरबग्ग, निरगुण नूर धार समझाईआ। मणका माला खेल वासना जग, हरि करता दए वड्याईआ। ब्रह्मे वेख किहा औह शंकर वेख लग्गी अग्ग, चारों कुण्ट ना कोए बुझाईआ। साचा दर किसे ना पए लभ्भ, नेत्रहीण होए लोकाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल परदा कोई ना सके कज्ज, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा ब्रह्मे उत्तों दब्ब नाल ज़ोर, शंकर उपर दे उठाईआ। दोहां नूं नज़री आया होर दा होर, निरगुण निरवैर नूर खुदाईआ। जुग चौकड़ी बणया दिस्या चोर, चोरी चोरी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रिहा तोर, धुरदरगाही हुक्म सुणाईआ। आपणे हत्थ रख के डोर, डोरी आपणे नाल बंधाईआ। अन्तिम मेल के आपणा जोड़, दोंह दा इक्क दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा ब्रह्मे उत्तों चुक्क लै हत्थ, शंकर आपणा हत्थ दे वखाईआ। दोहां हत्थां उत्ते लिख्या नज़र आया वक्ख वक्ख, सोहँ रूप अलाहीआ। हत्थ नाल हत्थ मिला के प्रभ चरण गए ढठ्ठ, हत्थ चरणां उत्ते छुहाईआ। प्रभ ने चरण चुक्के झट, दोहां ने थल्ले दित्ते टिकाईआ। अबिनाशी करते किहा तूं मेरा मैं तेरा लवो रट, रोटीन रिटन लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। एह मेरा आदि दा जस, अन्त मेरे नाल समाईआ। अग्गों ब्रह्मा बोलया झट, बेनन्ती दिती सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इस तों अग्गे होर कुछ दस्स, सिख्या सच जणाईआ। शंकर किहा जोड़ के दोवें हत्थ, तेरी बेपरवाहीआ। सानूं वस्त दे वथ, धुर दी झोली पाईआ। जो तेरा नाम अकथ, उह पुरख अकाल दे समझाईआ। अबिनाशी करता प्या हस्स, सिर दोहां दे हत्थ टिकाईआ। बच्चयो हुण जाओ नस्स, सेवा कर के झट लँघाईआ। इक्क सृष्टी करो उत्पत, इक्क सँघार के साफ़ दयो कराईआ। एह हुक्म दिता सच, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। खेल करां नाता जोड़ के पंज तत, लख चुरासी वण्ड वण्डाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वक्ख वक्ख, भाण्डे आपणे दयां घड़ाईआ। निरगुण नूर धार अंदर रख, नाता धुर दा आप जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण

हो के आवां प्रतख, अवतार पैगम्बर गुरू रूप बदलाईआ। धुर दा नाम संदेसा देवां झट, शास्त्र सिमरत वेद पुराणां विच जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल कर जगत वणजारे हट्ट, लोकमात वणज वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मे किहा की रखीए तेरी याद, धुर फ़रमान जणाईआ। शंकर किहा खोल्ह दे राज़, परदा आप उठाईआ। पुरख अकाल किहा एह मणका रखणा सांभ, नव नौ चार ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। शंकर किहा इस मणके दा की भेत, मनुक्ख नूं लोड़ रहे ना राईआ। ब्रह्मे किहा मैं कुछ लेखा लिखणा विच चार वेद, विद्या तों परे कर पढ़ाईआ। शंकर किहा की इस दा होवे हेत, हितकारी दे जणाईआ। ब्रह्मे किहा मैं तक्कणा नेत नेत, निरगुण नूर अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा एह मेरा तुहानूं वज्जा पेच, दोहां नूं गंढु दिती पवाईआ। इस दे विच नहीं छेक, सुराख आर पार ना कोए बणाईआ। जगत नेत्र सके कोए ना वेख, तुहाडे विच दिता छुपाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी नव नौ चार पिच्छो तुसीं मैनूं करना भेंट, आपणे विच्चों बाहर कढाहीआ। मैं बण के खेवट खेट, साची करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप सुणाईआ। अबिनाशी करता कहे एह मणका नहीं गंढु, धुर दी धार आप जणाईआ। जुग चौकड़ी एसे दा जगत रीती बणया रहिणा पखण्ड, साची मंज़ल ना कोए वखाईआ। इस दे नाल कम्म करदे रहिणे रसना बत्ती दन्द, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। शंकर ब्रह्मे इक्को तुहानूं दरसया ढंग, तुहानूं अग्गे दरसण दी आज्ञा ना कोए रखाईआ। जिस वेले नव नौ चार जावण लँघ, पाँधी आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं निरगुण हो के आवां सूरा सरबंग, लोकमात फेरा पाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगत बणावां आपणा संग, दूजा संग ना कोए रखाईआ। नाम भण्डारा देवां वण्ड, एकँकारा हो के आप वरताईआ। ब्रह्मे तुहाडी लेखे लावां आपणी दिती गंढु, गंढु भगतां नाल पवाईआ। दो इक्क दी कर के वण्ड, इक्कीआं दा जोड़ जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लिख के छन्द, सोहँ ढोला देणा समझाईआ। मेरा नूर चमकदा वेख्यो मेरा भगत सुहेला चन्द, मेरी जोत जोत रुशनाईआ। जिन्हां दे अंदर देणा इक्को परमानंद, दूजा रस ना कोए वखाईआ। खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी इक्क दृढ़ाईआ। रसना नाल पाउणी नहीं डण्ड, उच्ची कूक ना कोए अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा पूर कराईआ। शंकर किहा प्रभ भगतां दी की होवे पहचान, कलयुग अन्त दे समझाईआ। ब्रह्मे किहा उह ब्रह्म मेरा महान, नूर नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले झगड़ा पए शरअ शैतान, शरीअत विच दुहाईआ। साचा सुणे ना कोए फ़रमान, कलमे कायनात

जाए भुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दुआर सर्ब कुरलाण, बैठण सीस निवाईआ। योद्धा सूरा रहे ना कोए बलवान, बलधारी बल ना कोए प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी जो मंगदे गए दान, आसा मनसा नाल रखाईआ। सो देवां विच जहान, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सन्त सुहेले विष्न ब्रह्मा शिव वेखणे नाल ध्यान, हरि ध्यानी दए दृढ़ाईआ। जेहड़ा तुहानूं नहीं दस्सया ब्यान, उह भेव दयां खुल्हाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो मेरा ढोला हुन्दा ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"", बिन मेरे मात सके ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे ब्रह्मा शंकर अक्खीआं लवो घुट्ट, पुट्ठीआं मुट्ठीआं नाल दबाईआ। बोलणों हो जाओ चुप, चरण ध्यान रखाईआ। वेखो अन्धेरा घुप, कलयुग अन्त दयां समझाईआ। कोटां विच्चों मेरे भगत सुहेले धुर दे पुत्त, नन्न्हे बच्चे सोभा पाईआ। जिन्हां पढ़नी मेरी इक्को तुक, जो तुहानूं दिती समझाईआ। तुसां गंढु बन्न्ही घुट्ट, ओन्हां दी झोली देणी पाईआ। अंदरों धार पैणी फुट्ट, तूं ही तूं ही ढोला गाईआ। परदा ओहला रहे ना लुक, भेव दयां खुल्हाईआ। इक्क मणके नाल दूए एके दा होवे सुख, इक्कीआं गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ। पुरख अकाल किहा अक्खां होर दयो दब्ब, आपणा बल वधाईआ। दब्बदयां नव नौ चार दी पार दिसी हद्द, नव नौ चार रिहा ना राईआ। चारों कुण्ट लग्गी अग्ग, गुर अवतार पैगम्बर ना कोए बुझाईआ। संदेश्यां विच गए सद्द, भविक्खतां विच मंग मंगाईआ। एह खेल वेख पुरख समरथ, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। शंकर किहा प्रभू साडी होई बस्स, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। ब्रह्मा चरण कँवल गया ढठ्ठ, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जो किछ सो तेरे वस्स, चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा गाउँदे वेखे जस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान लगाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला वस्या घट घट, गृह गृह डेरा लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब कुछ तेरे हथ्थ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा मणका सांभ के रखीए ढक्क, अंदरों बाहर ना कदे कढाहीआ। जिस वेले हुक्म देवें यक्क, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। असीं लै के आईए नठ्ठ, जिस दवारे मंग मंगाईआ। तेरी भेंटा करीए झट्ट, चरणां विच टिकाईआ। सानूं भगतां दिसे वथ, नव नौ चार दए गवाहीआ। जिन्हां तेरा ढोला गाउणा जस, तेरा नाम ध्याईआ। तूं ओन्हां होणा वस, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। सोहँ धार उपर रख, मन का मणका जोड़ जुड़ाईआ। आप नाल होणा प्रतख, आदि तों अन्त नज़री आईआ। किसे नूं समझ नहीं आउणी कक्ख, कक्खां तों हौली करे लोकाईआ। तेरी महिमा सिफ्त कोई गा ना सके भट्ट, बिना भगतां तों भट्ट रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शंकर कहे मैं तक्कया की अगाड़, अग्गा नज़री आईआ। ब्रह्मे किहा सम्मत शहिनशाही अपार, नज़री आए त्रिलोकी तों बाहर, तिन्नां गुणां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। भगत सुहेले लैणे उठाल, झगड़ा मुका के शाह कंगाल, दीन दयाल दया कमाईआ। दिवस दिसे सतारां हाढ़, लेखा जाणे गुरू करतार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जन भगतां दए अधार, अंदर बाहर करे प्यार, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। सोहँ शब्द दी चले धार, तूं मेरा मैं तेरा होवे जैकार, दो जहान सुण सुण खुशी मनाईआ। वेखण आउण गुरू अवतार, पैगम्बरां लै के नाल तसबीआं लैण उठाल, कसबीआं कसब देण समझाईआ। चलो तक्कीए इक्क जमाल, जिस दा नूर बेमिसाल, जन भगतां रिहा वखाल, वक्खरी कार कमाईआ। जिस दी करदे रहे भाल, भेंटा करदे रहे वाल वाल, निक्का वड्डा समझ किछ ना आईआ। सो सच दुआर सुहा के धर्मसाल, जन भगतां करे संभाल, गुरमुख वेख के आपणे लाल, बिना लालच तों आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल किहा विष्न ब्रह्मा फड़ो आपणे कन्न, हलूणे ज़ोर नाल लगाईआ। वेखो मेरी मंजल चढ़, सहिजे दयां वखाईआ। निरगुण धार विचों लैणा पढ़, करां सच पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा प्यार लैणा वर, वस्त तुहाडी झोली पाईआ। खेल वखावां अगम्मे घर, घराना दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल किहा विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने कन्न आपणे खिचो, बिन हथ्थां ज़ोर लगाईआ। ओसे वेले सोहँ धार निकली ओनां विच्चों, जोत जोत विच घुंमाईआ। पुरख अकाल किहा तिन्ने दोहथ्थड़ां नाल पिट्टो, आपणा बल धराईआ। ओसे वेले फड़ के किहा मेरे चरण टिको,, टिक्के धूढ़ी देवां लगाईआ। कुछ अगली सिख्या सिक्खो, सहिजे दयां समझाईआ। कुछ लिखणा मैथों सिखो, लेख दयां दृढ़ाईआ। आह लै लओ मेरी चिटो, चिट्टी धार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। शंकर कहे मेरे कन्न नूं हुन्दी पीड़, बहुता ल्या खिचाईआ। ब्रह्मा कहे मेरे अंदर ना रही धीर, दर्द ना कोए वण्डाईआ। विष्नूं किहा साडी बणी तकदीर, तदबीर दिती समझाईआ। पुरख अकाल किहा तिन्ने नक्क नाल कढ्ढो लकीर, लाईन सिध्धी सिध्धी पाईआ। मुखो कहो तूं पातशाह असीं तेरे वज़ीर, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। तूं शहिनशाह असीं फ़कीर, दर मंगते झोली डाहीआ। तिन्ने कहिण असीं होए अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल किहा कहो तेरे हुक्म दा सानूं यकीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। सारे मन्नो सोहँ तेरी सच ताअलीम, इस तों परे ना कोए पढ़ाईआ। मार्ग इक्क महीन, बिन किरपा रहिबर चल सके कोए ना राईआ। एह खेल आदि कदीम, कदमां

उत्ते ढहुयां रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी करना तबदील, विचोला आपणा नाम बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाईआ। शंकर कहे मेरा मणका देवे हुलारा, सहिज सहिज मैनूं रिहा हिलाईआ। कलयुग आया अन्त किनारा, वेला वक्त वक्त नाल वड्याईआ। आपणा पूरा कर उधारा, कर्ज़ा दे चुकाईआ। पुरख अकाल लै अवतारा, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसारा, संसारी रो के दए दुहाईआ। होए जीव गवारा, सँघारी मारे धाहींआ। कर नमस्कारा, धूढ़ी रहे रमाईआ। पुरख अकाल कहे ना करयो गिरयाज़ारा, आपणा आप कुहाईआ। मेरा आदि जुगादि विवहारा, जुग चौकड़ी खेल वखाईआ। सृष्टी जुग जुग ला ला कारा, धन्दे विच वड्याईआ। कलयुग अन्त खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मा शिव कहिण प्रभ असीं मणका करना पेश, पिछला लै के आईआ। जिस दे उपर तेरा लेख, सोहँ सति समाईआ। कुछ लेखा दस्स के गया दस्मेस, गोबिन्द धुर दा माहीआ। पुरख अकाल मेरे गुरमुखां करे हेत, नेतन नेत वेख वखाईआ। लिख के अगम्मा लेख, सानूं गया फड़ाईआ। इस दा किसे ना दस्सयो भेत, बिना पुरख अकाल दूसर अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। ब्रह्मा कहे

गोबिन्द मेरे नाल कीती बात, राह जांदयां मिल के खुशी मनाईआ। उह माछूवाड़े दी रात, मैनूं पिछली नज़री आईआ। शंकर किहा मैनूं याद आ गया वाक्, जो गोबिन्द गया सुणाईआ। तुसीं खोल्ह के रखो जाग, आलस निंद्रा ना कोए बणाईआ। पुरख अकाल खोल्हण आउणा ताक, लोकमात फेरा पाईआ। जिन्हां चौंह वरनां नूं वड्याई दिती मैं पहली विसाख, इक्क सत्त पंज छे जोड़ जुड़ाईआ। ओन्हां दा झगड़ा बिना पुरख अकाल ना मिटणा ज़ात पात, धर्म दुआर ना कोए सुहाईआ। ब्रह्मे किहा गोबिन्द आह वेख साख्यात, मैं सेवा विच दयां वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा प्रभ लिख के दिता बिना कलम दवात, मेरी शंकर नाल गंढु पवाईआ। सो तूं वी दिता आख, सच दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द खुशीआं नाल कर के हासा, अग्गे भज्जा वाहो दाहीआ। सच प्रेम दा बख्श दलासा, धीरज नाल मिलाईआ। मैं पुछण चलया कोलों पुरख अबिनाशा, आपणा पन्ध मुकाईआ। किस वेले सृष्टी दा वेखें खेल तमाशा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। मैनूं रखणा सदा साथा, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। बण के रहिणा राखा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। टेकां जा के माथा, चरणां सीस झुकाईआ। इक्क दो कर के बातां, फेर आवां एसे थाँईंआ। मैं बहुतीआं मारनीआं नहीं वाटां, पाँधी रूप ना कोए बणाईआ। मैं सच सुनेहड़ा आखां, इक्को वार समझाईआ। जिस पूरा करना भविख्त

वाक्, वाकिफ़कार लोकाईआ। उस नाल जोड़ना नाता, छड्डणी कूड़ लोकाईआ। उस ने तुहाडा वेखणा खाता, ब्रह्मे शिव भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं रिहा भाख, राह जांदा दयां जणाईआ। तुहानूं जावां आख, सहिजे सच समझाईआ। जिस वेले आवे कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। ओस होणा भगतां साथ, दूजे दर नज़र ना आईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़्हब ना वण्ड वण्डाईआ। आत्म परमात्म बणावे सच्चा साक, सज्जण होवे नूर खुदाईआ। सब दी पूरी करे आस, तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गोबिन्द कहे विष्न ब्रह्मा शिव करयो ना कोए चालाकी, चाल निराली दयां समझाईआ। पुरख अकाल लुकणा साढे तिन्न हथ्थ तत ख़ाकी, सम्बल मिले वड्याईआ। मेरी निक्की जेही पाती, सुनेहड़यां विच वड्याईआ। भगतां दा होणा साथी, अगला संग बणाईआ। जिस दे गुरमुख धर्म दे होणे पाठी, नाम जैकारा इक्क लगाईआ। तुहाडी दोहां दी लेखे लावे प्यार वाली गाठी, गंढु भगतां नाल पवाईआ। इक्की इक्की दी मेट के वाटी, दूआ एका आपणा रूप समझाईआ। एह खेल होवे बहु बिध भांती, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। बड़ी सुहञ्जणी दिसदी ब्रह्मे शिव सम्मत शहिनशाही तिन्न दी उह राती, जिस नूं हाढ़ सतारां कहि के गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करना खेल शब्दी शब्द जज़बाती, आज़ादी गुरमुखां नाल प्रनाईआ।

४२८ २०

★ २ माघ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

मणका कहे मैं माला बण के रिहा फिरदा, जुग जुग भज्जया वाहो दाहीआ। मेरा गेड़ा रिहा गिड़दा, पुठ्ठा सिध्धा रूप बदलाईआ। घर लभ्भदा रिहा प्रीतम पिर दा, दिवस रैण खोज खुजाईआ। मैं विछड़या रिहा चिर दा, ब्रह्मा शिव देण गवाहीआ। मैं किसे ना वस्या हिरदा, आसण सच ना कोए लगाईआ। कल्ला कल्ला हो के रिहा किरदा, उपरों नीचे राह बणाईआ। हुक्मे अंदर रिहा रिड़्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप बणाईआ। मणका कहे मेरी बण गई माला, शंकर जगत दिती वखाईआ। किसे खेल समझया ना माज़ी हाला, रिवाजी जगत लोकाईआ। ओम शंकर दी जपदे रहे जाप वाली धारा, धरनी धरत धवल ध्यान लगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विसरया रिहा करतारा, करता मेल ना कोए मिलाईआ। सिफ्ती नाम दा लैंदे रहे सहारा, इशारा देवे धुरदरगाहीआ। सब तों बाहर जिस दा किनारा, नईआ

नौका ना किसे वखाईआ। सो खेल करे अगम्म अपारा, आपणा हुक्म वरताईआ। वक्त लँघा के नव नौ चारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण निरवैर लै अवतारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्तर आत्म कर उज्यारा, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। मेल मिला के धुर दरबारा, दरगाह साची दए वखाईआ। जिस गृह बैठा परवरदिगारा, हरि करता शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। मणका कहे क्यों बणी माला अठोतरी, अठ्ठां तत्तां नाल कुड़माईआ। इस नूं जाणे ब्रह्मा दी छोकरी, ब्रह्मवेता जिस समझाईआ। शंकर दी आसा वाली पोतरी, पतण बहि के ध्यान लगाईआ। ब्रह्मे दी मनसा वाली दोहतरी, दोहरा रंग रंगाईआ। शंकर ने सांभ के रखी विच जोदड़ी, ब्रह्मा गोदड़ी विच्चों बाहर कढाहीआ। थोड़ा जेहा इशारा दिता श्री भगवान दामोदरी, त्रेते जुग शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी खेल खिलाईआ। मणका कहे क्यों माला होई उजागर, मणका मणका वण्ड वण्डाईआ। विष्न ब्रह्मा प्रभ दे बणे सच सौदागर, नाम वस्त झोली पाईआ। बैठ के अन्त इकागर, प्रेम वाली गंढु पवाईआ। पार किनारा कर के डूँग्घे सागर, दर साचे सोभा पाईआ। बिना स्वास चले आवाज़ बिन आंदर, अन्तश्करन ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रूप दिता समझाईआ। मणका कहे मेरा उह रूप, गंढु धुर दी नज़री आईआ। ब्रह्मा शंकर जिस नूं जानण सति सरूप, सो मालक इक्क अख्वाईआ। जिस दस्स के आपणी कूट, गृह मन्दिर दिता दृढ़ाईआ। बणा के आपणे पूत, शब्दी हुक्म सुणाईआ। लेखा रखणा नाल पंज भूत, तत जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। मणका कहे मेरी माला रही जुग चार, चौकड़ी सेव कमाईआ। हथ्थ फड़ी गुरू अवतार, पैगम्बरां गल लटकाईआ। करदे रहे पुकार, अन्तर अन्तर ढोला गाईआ। वाह वा कुदरत दे यार, तेरी बेपरवाहीआ। मैं खेल वेखदा रिहा संसार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। सब मंगते वेखे भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। मंगदे रहे दीदार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। रीती दस्सदे गए संसार, मन्दिर मसीती सोभा पाईआ। अन्त कहि के कूक पुकार, उच्ची ढोला गए जणाईआ। नव नौ चार दा इक्क सरदार, शहिनशाह अख्वाईआ। जो आवे आपणी धार, जोती नूर करे रुशनाईआ। सब दी देवे पैज संवार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पूरब लहिणा देणा दए निवार, नविरती विच प्रकृती दए बदलाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हो के वेखे थाओं थाँईंआ। जन भगतां लाहे उधार, कर्ज़ा मूल चुकाईआ। थित सुहञ्जणी इक्क विचार, वेले वक्त नाल वड्याईआ। गुरमुखां कर प्यार, भगतां दए सालाहीआ। मणका कहे साचे सन्तां दे मन दा बण के यार,

४२६
२०

याद आपणी विच रखाईआ। मेरा कर्ज़ा दए उतार, पूरब झोली पाईआ। ब्रह्मा शिव कर निमस्कार, निउँ के सीस झुकाईआ। भगत सुहेले तूं मेरा मैं तेरा करन जै जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २ माघ शहिनशाही सम्मत २ भजन सिँघ दे गृह पिण्ड जीउ जुलाई ज़िला गुरदासपुर ★

मणका कहे मेरा किसे ना आया हिसाब, चार जुग भेव ना कोए खुल्हाईआ। मेरी महिमा लिखी नहीं किसे किताब, ग्रन्थ शहादत ना कोए भुगताईआ। साचा दे सके ना कोए जवाब, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जेहड़े माला मणका फेरदे गए आप, हथ्थीं कंगणां वांग सजाईआ। करदे गए प्रभू दा जाप, तूं ही तूं ही ढोला गाईआ। मंगदे गए कर के हाथ, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। लै के धुर दी दात, थोड़ी थोड़ी मात वरताईआ। बण के दासी दास, सेवा जगत कमाईआ। मणका फेर के स्वास स्वास, साह साह ध्याईआ। अन्त मिलण दी रख के आस, सारे गए सुणाईआ। प्रभ निरगुण नूर जोत प्रकाश, आदि जुगादि रुशनाईआ। कदे ना होवे विनास, जन्म मरन विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। मणका कहे मैनूं गुर अवतार पैगम्बर रहे रखदे, माला मेरी नाल बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला रहे जपदे, बिना सोहँ तों दूजा सास ना कोए कढाहीआ। हिरदे उत्ते मैनूं रहे रखदे, प्रीती नाल टिकाईआ। भण्डारे भरदे रहे जस दे, सिफ्तां नाल सालाहीआ। मैं वेखे खेल पुरख समरथ दे, जो अगम्मी कार कमाईआ। जिस ने जुग जुग राह चलाए सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रथ दे, रथवाही हो के हुक्म वरताईआ। सारे ओसे दे चरणां हेठां वसदे, ओसे दा नाम जप के झट लँघाईआ। मणका कहे जिस वेले नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग टपदे, टप्पे पढ़ पढ़ थक्के लोकाईआ। उस वेले नाअरे सुणने पैंदे इक्क अलख दे, अलख अगोचर आप जणाईआ। जन भगतां दर्शन होण प्रतख दे, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला जपदे, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। मणका कहे असीं बचन दस्सीए सच दे, सच सच सुणाईआ। जो प्रभ दी चरणी वसदे, दर ठांडे डेरा लाईआ। असीं ओथों दूर दुराडे नस्सदे, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जो मार्ग सानूं दस्स दे, दहि दिशा सेव कमाईआ। जिन्हां दे अन्तर प्रेम रस दे, रस्ता आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाईआ। मणका कहे जुग चौकड़ी रहे लँघे, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक्क माला फेरी संजे, संध्या वक्त सुहाईआ। इक्क मणका वखाया गोबिन्द माधो दास बन्दे, वखा के आपणे विच छुपाईआ। इशारे नाल किहा एह सारा खेल हथ्थ सूरे सरबंगे, दूजा

सार कोए ना पाईआ। जिस वेले सदी बीसवीं लँघे, आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी विद्वानी होण अन्धे, जगत विद्या अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मुल्लां शेख मुसायक पंडत ग्रन्थी होवण गंदे, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। सच प्यार दे वज्जण जंदे, कूड़ी क्रिया दर खुल्हाईआ। माला मणके सब दे रहिण टंगे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बिन ओढण सीस होणे नंगे, परदा सके कोए ना पाईआ। फिरे दुहाई विच वरभण्डे, ब्रह्मण्ड जगत कुरलाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना डण्डे, अद्धवाटे दिसे लोकाईआ। ओस वेले लख चुरासी विच्चों पुरख अकाल दीन दयाल भगत सुहेले बणाउणे चंगे, चंगी तरह आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल सदा बख्शंदे, बख्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ जरनैल सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

४३१ गोबिन्द कहे मैं पुर अनन्द तों होया वक्खरा, वक्खरी धार चलाईआ। मैं ओहले हो के नालों अक्खरां, अक्खीआं तों परे डेरा लाईआ। फूड़ीआं तों दूर वछा के सथरा, सत्थर यारड़ा इक्क सुहाईआ। नेत्र हन्झू छड्ड के अथ्थरा, सति सरूपी धार वहाईआ। जगत निशाना छड्ड के पत्थरा, पत्तण मिल्या बेपरवाहीआ। खोजयां हथ्थ ना आवां जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रकड़ा, थलां विच अक्ख ना कोए मिलाईआ। सिफ्त दस्सां ना विच सतरां, महिमा गणत ना कोए वड्याईआ। सृष्टी नालों हो के बेवतना, वतन मल्लया धुरदरगाहीआ। जिस दा चार जुग करदे रहे यतना, यथा योग आपणी सेव कमाईआ। मैनूं चंगा लग्गा ओथे वसणा, जित्थे वसल नूर खुदाईआ। मेरा रूप समझया किसे ना असला, असल भेव ना कोए चुकाईआ। रस अगम्मी जाणे कोई ना रसना, रस्ता लभ्भे ना किसे लोकाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द करे कोई ना जसना, सिफ्तां विच ना सिफ्त सालाहीआ। मैं तज्जया दुनी वाला पटना, घर इक्को वेख वखाईआ। जिस गृह दी कोई ना जाणे घटना, घाटी चढ़ ना पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा धुर दा संग बणाईआ। गोबिन्द कहे मेरा कोई ना जाणे पुर अनन्द विछोड़ा, विशा समझ किसे ना आईआ। मेरा जाणे कोई ना जोड़ा, जोड़ी किस दे नाल बणाईआ। मेरा तक्के कोई ना घोड़ा, जो चले वाहो दाहीआ। मैं ओस दा बांका छोहरा, जिस नूं शहिनशाह कहि के सारे गाईआ। जिस निरगुण तों सरगुण सस्से उपर लाया होड़ा, सोहणी वण्ड वण्डाईआ। हँ ब्रह्म बणा के पौड़ा, मंज़ल आपणी दिती

वखाईआ। मुहब्बत प्यार दी रख के लोड़ा, नाता दुनी नालों तुड़ाईआ। हुक्म दे के इक्को कोरा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। माण दे के बांका छोहरा, शुहरत आपणी इक्क समझाईआ। कर प्रकाश अन्धेर घोरा, नूर नूर नाल चमकाईआ। साचा बल दे के ज़ोरा, जोरू ज़र ज़ेर कराईआ। परदा लाह के तोरा मोरा, आप आपणे अंग जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। गोबिन्द कहे क्यों पुरी अनन्द छड्डी, नाता ल्या तुड़ाईआ। क्यों गोबिन्द चल्ली ना गद्दी, अग्गे गुरू तत ना कोए वड्याईआ। क्यों शब्दी धार बद्धी, हुक्मी हुक्म शनवाईआ। क्यों खेल कीता यदी, यक्क नाअरा इक्क सुणाईआ। एह वेला वक्त आउँदा कदी, कदीम तों प्रभ दी रीती चली आईआ। मेरी धार ओस नाल बद्धी, जिस नूं बन्दना कर के सारे सीस झुकाईआ। जिस दा हुक्म कदे ना होवे रद्दी, बदली विच ना कोए बदलाईआ। ओस दे प्रेम दी सच्ची सदी, सद्दे दे के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म मेरे अंदर वरताईआ। गोबिन्द किहा क्यों होया पुर अनन्द अलग्ग, समझ किसे ना आईआ। खोज सके ना कोए जग, भेव सके ना कोए दृढ़ाईआ। राज़ सके ना कोए लभ्भ, समझ विच ना कोई चतुराईआ। जगत वासना मेट के हद्द, माया ख़ाहिश दिती तजाईआ। पुरख अकाल दा कर के हज्ज, हाजत आपणी वेख वखाईआ। सच दवारे मंग के मंग, मंगी खुशी राईआ। किरपा कीती सूरे सरबंग, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। शब्द अगम्मी हुक्म दिता अस्व नीले नहीं कसणा तंग, ज़ीन पाखर खुशी नाल टिकाईआ। हुक्मे अंदर दे के ढंग, तरीका अगला दिता समझाईआ। जगत गोबिन्द तेरा शस्त्रां वाला जंग, जगत खेल लोकाईआ। तेरा भगतां वाला अनन्द, आपणे विच छुपाईआ। गुरमुखां वाला संग, जोत शब्द वड्याईआ। निरगुण नूर दस्स के हँ, पारब्रह्म परदा लाहीआ। जिस धारों आए जम्म, तन वजूद मिले वड्याईआ। भाग लग्गे माटी कच्च चम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गोबिन्द कहे क्यों तजया घर बार, घराना दिता तजाईआ। ओट रख के इक्क यार, याराने कूड़े दित्ते मुकाईआ। प्रेम प्रीती पहन हथियार, हथ्थ जोड़ सीस निवाईआ। पुरख अकाल खिच्च कटार, करतब आपणा दिता दृढ़ाईआ। इस दा लहिणा देणा बरस दो चार, पंज सत्त तों वध्ध ना वण्ड वण्डाईआ। अगला खेल नाल निरँकार, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा बणे हथियार, जिस दी समझे कोए ना धार, कटार तलवार कम्म कोए ना आईआ। लहिणा देणा मुकावे सर्ब संसार, कूड़ी क्रिया करे खुआर, गुरमुख सज्जण लए उबार, अन्तर बाहर करे प्यार, निरंतर नूर कर उज्यार, मंत्र इक्क जैकार, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कर के निमस्कार, मंगी मंग दर भिखार, सब किछ तेरे अख्त्यार, देवणहारे सिरजणहार, बेपरवाह

तेरी बेपरवाही तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे आपणी कार, करनी दा करता कायनात आपणा खेल वखाईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ करनैल सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गोबिन्द कहे पुरख अकाल जाणे वज्जया, शास्त्र सिमरत समझ किसे ना आईआ। जिस कारण पुरी अनन्द तज्जया, नाता कूड़ तुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे साचे सजया, सज्जण पाया बेपरवाहीआ। जिस दा नाम दमामा वज्जया, चोट अगम्मी लाईआ। ओसे दा आया सद्दया, घर ओहो वेख्या चाँईं चाँईंआ। सच प्रेम दा वेख के मज्जया, अनन्द आपणा ल्या बणाईआ। जिस मेरा परदा कज्जया, ओढण सीस दिता टिकाईआ। ओस दे हुक्म अंदर आदि जुगादि लग्गया, दिवस रैण सेव कमाईआ। सच मुहब्बत दी पी के मध्या, मधुर धुन ओसे दा नाम ध्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सज्जण मीत मुरारा इक्को लभ्भया, जिस नाल मिल के आदि जुगादि झट लँघाईआ। एथे ओथे निरगुण सरगुण कदे ना करे दग़िआ, दग़ा फ़रेबी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा आपणा रंग चढ़ाईआ। गोबिन्द कहे क्यों छड्डुया जगत मन्दिर, मंतव समझे कोए ना राईआ। मैं लँघया ओस अंदर, जिस दा कुफ़ल बन्द ना कोए कराईआ। अगम्मी वेखी रंगण, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कोटन मंगण, अनगिणत विष्न ब्रह्मा शिव झोलीआं डाहीआ। पुरी अनन्द नालों मैनूं आया चंगा अनन्दन, अनन्द वेख्या धुरदरगाहीआ। साची धूढ़ी दी ला के चन्दन, मस्तक आपणी रेख बदलाईआ। बिना हथ्थां तों कर के बन्दन, बन्दे दी बन्दगी तों परे पारब्रह्म विच समाईआ। गा के ढोला छन्दन, सोहँ सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। गोबिन्द कहे क्यों पुरी अनन्द विच्चों होया भगौड़ा, भाजड़ दिती पाईआ। इक्को हथ्थ फड़ा के डोरा, डोरी ओसे नाल जुड़ाईआ। जिस दा खेल ब्रह्मण गौड़ा, ब्रह्मा वेता समझ ना राईआ। जुग चौकड़ी जिस दा नाम वरतया भोरा भोरा, भोर भोर गुर अवतार पैगम्बर गए खाईआ। बिना तत्तां तों ओस दा बणया छोहरा, बांका नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म अंदर खेल वरताईआ। गोबिन्द कहे क्यों पुरी अनन्दों नट्ठा, खुशीआं ढोला गाईआ। क्यों गुरसिखां सरसे खेल खेलया इक्ठा, ख़लक परदा ना कोए उठाईआ। क्यों दे के धीरज हट्ठा, सति सन्तोख दिता बंधाईआ। पुरख अकाल किस बिध मारे मेरे अंदर सट्टां, शब्दी शब्द हुक्म सुणाईआ। तेरे शरीर दा होणा वटा, बदली शब्द नाल बदलाईआ। मुड़ के करना पए ना रट्टा, झगड़ा झगड़ना पए

ना नाल लोकाईआ। जेहड़ा मेरा नाम नूर लभ्भदे रता, भोरा भोरा सर्ब वरताईआ। फेर सब कुछ देवां तेरे हथ्थां, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। हुण छड्ड दे मन्दिर मुनारे इट्टां, कक्खां नाल ना कोए वड्याईआ। फेर मैं तेरे अंदर वसां, जिस नूं समझे ना कोए जगत शास्त्र शरअ वाली दुहाईआ। आपणी रचना तेरे नाल मिल के वेखां बिना अक्खां, रखक हो के रक्ख्या करां थाउँ थाँईंआ। कौल इकरार करां सच्चा, सच सच दयां जणाईआ। असल विच वसल विच तूं मेरा शब्दी पूत पक्का, सुत दुलारा निरगुण नज़री आईआ। एह काया दा भाण्डा कच्चा, अन्त नाता जाए छुडाईआ। गोबिन्द सीस नवा के किहा अच्छा, तेरे हुक्म अंदर तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुर छड्डदयां कीती फ़रयाद, फ़रमांबरदार हो के सीस निवाईआ। मैनूं रस दे जो अगम्मी आदि जुगादि, जुग बदल कदे ना जाईआ। पुरख अकाल मार आवाज़, धुर दी धार अंदर जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एह गा आपणा राग, दूजा सुणन कोए ना पाईआ। सच मुहब्बत विच सदा रखणी आस, आसा विच भरवासा दिता बंधाईआ। मेरी पवण तेरा स्वास तेरा स्वास मेरा प्रकाश, विच पृथ्मी आकाश सीस निवाईआ। दस्सां खेल बिन तत्तां मेल निरगुण निरगुण तमाश, खालक हो के खलक विच खिलाईआ। मेहरवान हो के देवां शाबाश, शाह पातशाह शहिनशाह हो के दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र तों परे, करे खेल आपणा हरे, हरी हरि हरि हरि गोबिन्द हुक्म वरताईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी महिंदर कौर दे गृह शाहवाला ज़िला फ़िरोजपुर ★

गोबिन्द कहे पुरी अनन्द दा आया चेता, चेतन हो के दयां जणाईआ। हुक्म सुणया पुरख अकाल होणा सब दा नेता, नर निरँकार धुरदरगाहीआ। लख चुरासी वेखे आपणे खेतां, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। ब्रह्मण्डा खण्डां करे वेंता, पुरीआं लोआ हुक्म वरताईआ। लख चुरासी जाणे लेखा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे भेखा, इक्को डंका नाम सुणाईआ। परदा लाहे देस परदेसा, दो जहानां भेव चुकाईआ। शाहो भूप बण नर नरेशा, नर नरायण हुक्म वरताईआ। जिस नूं सारे करन आदेसा, सच दवारे सीस झुकाईआ। सो सदा रहे हमेशा, जुग जौकड़ी आपणी कार कमाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, गुरमुख आपणे गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दए उठाईआ। गोबिन्द किहा पुरी अनन्द अगम्मी आई खबर, धुर संदेस सुणाईआ। जिस दा प्रकाश दो जहानां

उत्ते अम्बर, आदि अन्त सदा रुशनाईआ। ओस दिता प्याला सबर, मधुर जाम प्याईआ। रूप दस्स अगम्मी बब्बर, बाबर शाही दिती खपाईआ। लेखे ला आपणा बंस सरबंस टब्बर, लेखा पिछला मूल चुकाईआ। जेहड़ी मंग मुहम्मद मंगी वड़न लग्गे विच कबर, काअबे दे मालक कायल हो के तेरी आस तकाईआ। सदी चौधवीं देणी बदल, बदल विच अदल तेरा नज़री आईआ। जगत वासना कर कत्ल, नाम खण्डा शमशीर शरअ करे सफ़ाईआ। ओस दा करना यतन, यथार्थ गोबिन्द सेवा लाईआ। जिस दा इक्को आदि जुगादी वतन, बेवतन हो के बेवतनां आपणे घर पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गोबिन्द किहा मेरी अन्त अन्तर सध्धर, सदीआं दी पिछली दयां जणाईआ। कूड़ी क्रिया वेख ग़दर, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। बेनन्ती विच किहा किरपा कर कर अदल, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले आवें मेरे वतन, घराने डेरा लाईआ। फेर बणा के तेरा पत्तण, किनारा धुर दा दयां सुहाईआ। नज़ारा वेखां बिन नेत्र अक्खन, अक्खीआं पक्खीआ तों डेरा परे लाईआ। पैज मात आवा रखण, सहिज सहिज आपणी कार कमाईआ। सच देहुरे आवां वसण, मन्दिर महबूब हो के महल्ल दयां सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। गोबिन्द कहे शब्द अगम्मी काया अंदर फिरया, भज्जया वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दी दस्सी साची क्रिया, परदा दिता उठाईआ। गेड़ा इक्को वार गिड़या, गर्दश रही ना कोए लोकाईआ। प्रेम प्रीती फुल्ल खिड़या, पंखड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। घर वेख अगम्मा थिरया, सच दुआर सोभा पाईआ। जो जुग चौकड़ी चिरीं विछड़या, सहिजे वेख वखाईआ। आपणी धार विच्चों निकलया, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। हुक्म नाल किहा गोबिन्द आपणे सिख ल्या, जिन्हां देवां माण वड्याईआ। गोबिन्द किहा पहलों मैनूं भिक्ख पा, गुरमुखां नूं रस दयां चखाईआ। जन्म जन्म दी तृख मिटा, तृष्ना दयां गवाईआ। साचा मार्ग इक्क लगा, इक्को रंग रंगाईआ। हुण अमृत जाम जावां प्या, अमृत रस चखाईआ। दूजी वार तेरी चरणी दयां टिका, टिक्के मस्तक आपणा नाम लगाईआ। पुरख अकाल किहा कुछ खुशी नाल खवा, आपणी वस्त वरताईआ। गोबिन्द किहा मैनूं सद्द लैण दे गवाह, बावन आवाज़ लगाईआ। ओस आ के सीस दिता झुका, चरण धूढ़ी छार छुहाईआ। प्रभू उह वेला वक्त लैण दे आ, मर्यादा परशोतम तेरी मर्यादा धुर दी चली आईआ। जिस वेले निरगुण नूर जोत करें रुशना, गोबिन्द शब्दी धार आपणा नाम डंक लएं वजा, गुरमुख गुरसिख हरिभगत सुहेले सहिजे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल खला, खेल विच आपणा आप खिलाईआ।

४३५
२०

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ मक्खण सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फिरोजपुर ★

गोबिन्द कहे क्यों छड्डुया जगत अनन्द पुर किला, चार दीवारी दिती तजाईआ। पुरख अकाल हुक्म इक्को मिला, धुर फ़रमाना दिता दृढ़ाईआ। शब्दी धार रहिणा ना ढिल्ला, तत सुख ना कोए चतुराईआ। मेरे हुक्म दा कटणा छिला, चिल्ला तीर कमान सुहाईआ। सुहञ्जणा होए वेला, धुर दे वक्त वज्जे वधाईआ। तेरा मालक इक्क इकल्ला, सचखण्ड निवासी नज़री आईआ। जो मंगणा मंग के लै ला, देवणहार दया कमाईआ। जो कहिणा रसना नाल कहि ला, हरि सुण के ख़ुशी बणाईआ। गोबिन्द किहा मैं तेरा भाणा सहिणा, दूजी आस ना कोए वधाईआ। तेरे चरण कँवलां रहिणा, एहो मेरी वड्याईआ। तेरे धाम दवारे बहणा, अस्थान इक्को सोभा पाईआ। दरस करां बिन नैणां, तेरी अक्ख मेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा लैणा बणाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं अगम्मी लग्गा टिक्का, बिन हथ्थां दिता किसे लगाईआ। मेरा रूप हो गया निक्का, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। लेख अनोखा लिखा, लाईन सतर ढाई वण्ड वण्डाईआ। पुरख अकाल किहा उठ मेरया सिक्खा, सिख्या तैनूं दिती दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा धुर दे बिन धरनी तों मेरे पिता, धर्म दा साक ना कोए बणाईआ। सदा मेरा पूरीं पिच्छा, पच्छोता रहे ना कोए लोकाईआ। मैं तेरे दवारे विका, कीमत आपे लैणी पाईआ। पुरख अकाल कर के हिता, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अगला कराया चेता, परदा दिता चुकाईआ। जिस वेले होवां इक्को नेता, नर नरायण वेस वटाईआ। तेरा मेरा मेरे घर होवे एका, एकँकार हो के खेल खिलाईआ। सिख उधारने तेरा मुहब्बत वाला होवे ठेका, दूजी शरअ ना कोए बणाईआ। तेरा गुरमुख फेर जन्मे ना माई पेटा, अग्नी अग्न ना कोए तपाईआ। तूं शब्दी गोबिन्द सति सच दा खेवट खेटा, मलाह धुर दा दयां वखाईआ। आदि दा उपज्या, हुक्म दा बेटा, शब्द दी शब्दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दे के सति सच दी भेंटा, गोबिन्द भाव भेंटा आपणे विच रखाईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फिरोजपुर ★

गोबिन्द कहे क्यों छड्डुया गोबिन्द खेड़ा, अखाड़ा जगत वाला बणाईआ। क्यों प्या द्वैती झेड़ा, झगड़े विच लड़ाईआ। क्यों सरसे डोब्या बेड़ा, आपणा लेखा भेंट कराईआ। क्यों आपणा बंस निखेड़ा, धुर दी वण्ड वण्डाईआ। क्यों जगत होया अन्धेरा, रैण अन्धेरी छाईआ। क्यों अन्तिम होया फेरा, अग्गे गुरू ना कोए वड्याईआ। क्यों गोबिन्द बण के चेरा, चिरी

४३६
२०

विछुंने जोड़ जुड़ाईआ। क्यों नाउुं धराया सिँघ शेरा, शरअ तों बाहर प्रगटाईआ। क्यों बण वड्ड दलेरा, दो जहानां रिहा भवाईआ। क्यों छुपा के आपणा चिहरा, जलवा नूर कीता रुशनाईआ। क्यों शब्दी बण के केहरा, भबक दिती सुणाईआ। क्यों निरवैर हो के करे मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कहे क्यों पुर अनन्द छड्डया गराँ, गिरह आपणी वेख वखाईआ। शब्दी सतिगुर शब्द कराई हां, रसना जेहवा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। की सिख्या दिती माँ, जगत माता हो के रमज़ लगाईआ। क्यों हलूणी फड़ के बांह, बच्चयां वांग जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कहे याद आई पुराणी, पूरब दयां जणाईआ। जिस वेले निरगुण नानक सरगुण नानक पहली वार सुणाई आपणी बाणी, आपणा नाम जणाईआ। खेल दस्स के परे चार खाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे ढोला गाईआ। शब्द सतिगुर दस्स हाणी, इक्को रंग रंगाईआ। आपणा प्रेम अमृत पाणी, जाम धुर दा दिता पिलाईआ। घर बणा सुघड़ सुचज्जी सवाणी, सोहणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल कर मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। दस जामे बण के रहिणा बाल अंञाणी, तत्तां वाला शरीर हंढाहीआ। फेर निरगुण धार आवे जवानी, जोबन अगला लैणा हंढाहीआ। जिस दी चार जुग दस्स ना सकण निशानी, भेव सके ना कोए खुल्ल्हाईआ। ओस वेले तेरा प्यार नाम मुहब्बत मेरी होवे महिमानी, रस अगम्मा इक्क वखाईआ। एह खेल परे दो जहानी, सृष्टी दा रचेता ब्रह्मा भेव कोए ना पाईआ। कोई जलवा नहीं जिस्मानी, तत्तां नाल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जाण जाणी, जानणहार आपणी खेल खिलाईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ गुरदास सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गोबिन्द कहे पुर अनन्द प्या रो, बिंन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तुध बिन मेरी वात ना पुछे को, सहायक नायक नज़र कोए ना आईआ। क्यों नाता तोड़या मुहब्बत मोह, भेव अभेदा दे खुल्ल्हाईआ। मेरे अंदर तेरा चरण गया छोह, सरन मिली सरनाईआ। धरनी ने आपणा पाप ल्या धो, दुरमति मैल गवाईआ। तेरे प्रकाश दी होई लो, बिन लोचन नज़री आईआ। क्यों सब कुछ ल्या खोह, ख़ाली भण्डारे दित्ते बणाईआ। मेरे नाल कर के धरोह, धुर दा नाता ल्या जुड़ाईआ। कुछ अमृत रस आपणा चो, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक्क कराईआ।

४३८
२०

गोबिन्द कहे पुर अनन्द वहाए नीर, छहबर प्रेम लगाईआ। क्यों बदल दिती तकदीर, तदबीर की बणाईआ। मैं बण के हकीर, शहिनशाह तेरे चरणां सीस झुकाईआ। साचे प्रेम दा दे सीर, अमृत रस चखाईआ। एह तेरा विरसा तेरी जागीर, तेरे नाम लगाईआ। जित्थे गुरमुखां दी रैहन्दी भीड़, उह ख़ाली दवारे रहे कुरलाईआ। बिरहों विच मेरी अंदरों निकले पीड़, धीरज धीर ना कोए आईआ। वास्ता पावां कढु लकीर, निउं निउं सीस झुकाईआ। तूं लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह नूर खुदाईआ। तेरे अग्गे वास्ता हक आमीन, कामल मुर्शद हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर गोबिन्द कहे पुर अनन्द मारी धाह, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं दिसे कोई ना राह, रहिबर तेरी झल्ली ना जाए जुदाईआ। तेरे बिना कम्म ना आवे खलक खुदा, ख़ादम हो के झोली डाहीआ। मेरा लेखा दे बदला, बदली विच अदली रूप वटाईआ। ठांडे दर हो सहा, सहायता अनायत विच झोली पाईआ। क्यों बैठा मुख भवा, बिन करवट लै अंगड़ाईआ। मैं वास्ता रिहा पा, तेरे चरणां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गोबिन्द कहे पुर अनन्द मारी चीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हुण कद रखां उडीक, धुर दे मालक दस्सणा माहीआ। कवण वेला वक्त तारीख़, तरीका देणा जणाईआ। मेरा अन्तर होवे ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले तेरा मेरा सांझा होया गीत, पुरख अकाल, इक्को ढोला दए समझाईआ। तूं बैठा रहिणा अतीत, त्रैगुण विच्चों आपणा मुख छुपाईआ। आपणे अन्तर रखणी मेरी प्रीत, बाहर सृष्टी होए हल्काईआ। साचे नाम दी दे वसीअत, असलीअत दिती दृढ़ाईआ। जिस वेले दीन दुनी दी बदली नीअत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां रहे ना कोए अहिमीअत, माण चले ना कोए चतुराईआ। ओस वेले सच प्यार दी बदला वलदीअत, वेस अवेसा रूप वटाईआ। सच अनन्द दी बणा मलकीअत, पूर पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि; निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ।

★ १८ माघ, शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फिरोजपुर ★

गोबिन्द कहे पुर अनन्द कढुया हाढ़ा, हाए हाए कर सुणाईआ। किथ्थे चलया धुर दा लाड़ा, लाड़ी मौत जगत करे कुड़माईआ। मैनूं दे के लारा, बैठा मुख भवाईआ। अगला दे सहारा, सहिजे रिहा जणाईआ। जिस वेले आवां निरगुण धारा, निरवैर नाल मिल के वेस वटाईआ। डंक वजावां अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी खुशी बणाईआ। हुक्म देवां विच

संसारा, महासारथी हो के आप समझाईआ। तेरा पूरब लहिणा देणा लेखा जगत विचारां, विचला परदा आप चुकाईआ। भाग लगावां ओस दवारा, जिस दवारे आपणा रंग वखाईआ। साचा अनन्द कर उज्यारा, पुर पुरीआं तों बाहर प्रगटाईआ। जित्थे भगतां मिले सहारा, सब नूं आपणे घर वसाईआ। मेल मिला के सिरजणहारा, सिर सिर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया कर के पार किनारा, अनन्द आपणा दए वखाईआ।

★ १८ माघ शनिशाही सम्मत २ बचन कौर दे गृह पिण्ड पदरी ज़िला फिरोजपुर ★

गोबिन्द किहा पुर अनन्द रो के कढ्ढे तरला, तरह तरह समझाईआ। साहिब सतिगुर सद रख आपणे चरणां, चरण धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। गोबिन्द किहा इक्को धुर दा ढोला पढ़ ला, बिन विद्या दयां जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा याद कर ला, याददाशत आपणी लै बणाईआ। सच दुआर इक्को मल ला, कदीम दा अगला पन्ध मुकाईआ। सच अनन्द अनन्द ओस कर ला, जित्थे मुक कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणा भेव खुल्हाईआ।

★ १८ माघ शहिनशाही सम्मत २ गुरचरण कौर दे गृह फ़िरोज़पुर ★

गोबिन्द किहा पुर अनन्द हाए, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। तुध्ध बिन दूजा नज़र कोए ना आए, नईआ नौका पार ना कोए लँघाईआ। धरनी धरत धवल उपर पकड़े कोए ना बांहे, सगला संग ना कोए बणाईआ। साचा रंग ना कोए वखाए, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा गीत कोए ना गाए, अनरागी राग ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल ना वेखण आए, बिन गोबिन्द गृह ना कोए वड्याईआ। पुर अनन्द कहे क्यों बैठा मुख छुपाए, छप्पर छन्न दे सुहाईआ। गोबिन्द किहा एह हुक्म बेपरवाहे, देवणहारा धुर दरगाहीआ। हुण तेरा मेरा संग रहे ना राए, अगला संग इक्क बणाईआ। जिस वेले मेहरवान महबूब किरपा करे खुदाए, खुद मालक आपणा फेरा पाईआ। निरगुण धार गोबिन्द शब्द नाल रलाए, लोकमात निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सच अनन्द पुर इक्क वसाए, जिस विच भगत बहि के सोभा पाईआ। वरन बरन ना वण्ड वण्डाए, ज़ात पात ना कोए रखाए, ऊँच नीच ना कोए अख्वाए, रंक राजान ना कोए चतुराईआ। इक्को ढोला सब नूं

दए सुणाए, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। वेला वक्त दए वड्याए, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। तेरी आसा मनसा पूर कराए, अमावस अन्धेर दए गवाईआ। साचा नूरी चन्द चमकाए, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भगत सुहेले संग रखाए, गुरमुख आपणे घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार जोत उज्यार, सच विचोला आप अख्वाए, जगत रौला रहिण कोए ना पाईआ।

★ १६ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी करतार कौर दे गृह, रटौल रोही वाले, ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गोबिन्द किहा मेरा सच्चा अनन्दपुर, पुरीआं लोआं तों परे नज़री आईआ। जित्थे पुरख अकाल वसे धुर, सचखण्ड निवासी बैठा सोभा पाईआ। दर दरवेश मंगते अवतार पैगम्बर गुर, दर ठांडे सीस झुकाईआ। राह तक्कण देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख उठाईआ। निरगुण निराकार निरवैर नाल जुड़, आपणा आप बदलाईआ। वस्त भण्डारा रहे कोई ना थुड़, अतोट अतुट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह साचा इक्क दरसाईआ। गोबिन्द किहा मेरा अनन्द पुर अगम्मा अहाता, चार दीवारी नज़र कोए ना आईआ। छप्पर छन्न ना कोई छाता, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। ना कोई नज़री आवे ताका, कवाड़ बन्द ना कोए कराईआ। ना कोई वेख सके ख़ाका, रूप रंग ना कोए समझाईआ। जिस घर वसे पुरख अबिनाशा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सच प्रीती दे भरवासा, नाम सबूरी सिदक बणाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ। सब तों वखरा रख्या आपणा खाता, दूजा वण्ड ना कोए कराईआ। सो वसदा रहे आदि जुगादा, जुग चौकड़ी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अनन्द आपणा इक्क वखाईआ। गोबिन्द किहा मैं अनन्द पुर वेख्या अगम्मी चंगा, चंगयाईआं बुरयाईआं विच्चों बाहर नज़री आईआ। जित्थे बैठा सूरा सरबंगा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा आसण लाईआ। इक्को नाम वज्जे मृदंगा, दूजा ताल ना कोए सुणाईआ। इक्को ढोला इक्को छन्दा, कलमा इक्को इक्क सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैं वेख्या अनन्दपुर आहला, आलीशान नज़री आईआ। जिस दा मार्ग सच सुखाला, भगतां दिता दृढ़ाईआ। जित्थे नूर इक्क निराला, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। जित्थे वसण शाह कंगाला, राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे रिहा टिकाईआ। गोबिन्द किहा मैं वेख्या

४४०
२०

अनन्द पुर अनोखा, परम पुरख दिता जणाईआ। जिस घर होवे कोई ना धोखा, भरम विच ना कोए भुलाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, अक्खरां अक्ख ना कोए तकाईआ। मार्ग दिसे सौखा, अबिनाशी करता दए चढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोकां, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। ओथे इक्को अगम्मी सुणया सलोका, तूं मेरा मैं तेरा नाम ध्याईआ। शब्द धार सतिगुर होका, हुक्म फ़रमाना इक्क सुणाईआ। होए प्रकाश साची जोता, नूर नुराना डगमगाईआ। दो जहान तों वक्खरा कोठा, कायनात तों बाहर दिता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैं अनन्द पुर तक्कया बिना अक्खां, सति सुहञ्जणा नज़री आईआ। जित्थे पुरख अकाल बैठा सखा, सहायक नायक धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर मंगदे लखां, खाली झोली अग्गे डाहीआ। इक्को नाम जैकारा लग्गे सच्चा सोहँ धुन इक्क शनवाईआ। काया माटी दिसे कोए ना भाण्डा कच्चा, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। करे खेल पुरख समर्था, मेहरवान आपणा डेरा लाईआ। देवे हुक्म अलखना अलखा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। चुकणा पए ना तीर कमान भथ्था, जगत कटार ना कोए उठाईआ। इक्को मिले अगम्मी वथा, वस्त अमोलक दए वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब तों उत्तम होवे कथा, रसना कथनी कथ्थे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समर्था, समरथ स्वामी अन्तरजामी घर आपणे सोभा पाईआ। गोबिन्द कहे मैं अनन्द पुर दा वेख्या अनन्द, अनन्द धुर दा नज़री आईआ। जित्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई शस्त्र ना कोई संद, संध्या रूप ना कोए वखाईआ। ना कोई दीन मज़्हब पाबन्द, शरअ शरीअत ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। ना कोई द्वैत दूई कंध, भरमां विच ना कोए भरमाईआ। ना कोई सिफ्तां वाला छन्द, इक्को ढोला रिहा गाईआ। ना कोई जगत कटार जंग, मन वासना ना कोए लड़ाईआ। इक्को नजरी आए सूरा सरबंग, धुर दा दाता बेपरवाहीआ। प्रेम प्रीती चाढ़े रंग, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद देवे सगला संग, साथी हो के आपणा साथ निभाईआ।

★ १६ माघ शहिनशाही सम्मत २ खेम सिँघ दे गृह कोट कपूरा ★

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अगला वेख्या सुख, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तजाईआ। जगत वासना दीन दुनी रिहा कोई ना दुःख, ममता मोह तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार उजल

कीता मुख, दुरमति मैल दीन दयाल पारब्रह्म प्रभ आपणी आप धवाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणी गोदी ल्या चुक्क, सचखण्ड दुआर एकँकार आपणा रंग चढ़ाईआ। परदा ओहला निरगुण सरगुण रिहा कोई ना लुक, जोती जाते पुरख बिधाते आपणी दया कमाईआ। दरगाह साची सच दवारे ल्या पुछ, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच बुलाईआ। मैं निरगुण धार होया खुश, शब्दी ढोला राग सुणाईआ। अकल कलधारी तूं मेरा मैं तेरा पुत्त, बिना पतिपरमेश्वर दूजा संग ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तुट्टा पंज तत काया बुत्त, सृष्टी दृष्टी विच्चों बाहर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या घर अगम्मा, अलख अगोचर दिता वखाईआ। जिस धारों बिन मात पिता दे जम्मा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सद जीवत रहां बिना दमां, जन्म मरन ना रूप वटाईआ। वसदा रहां बिन काया माटी चम्मा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। नित जोबन हंढावां जुग चौकड़ी नवां, रूप रंग रेख भेख प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। खेल विच वेखदा रहां समां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धुर दी कार कमाईआ। लेखे ला के सुत दुलारे चौहां, चार जुग दा लहिणा दिता मुकाईआ। माया ममता रही ना कोई तमअ, घर गृह घराने दिते तजाईआ। लोड़ रही ना तेल बाती वाली शमां, शमशान भूमी विच्चों बाहर डेरा लाईआ। सद इक्को ढोला कहवां, तूं मेरा मैं तेरा पुरख अकाल पिता माईआ। सोहँ धार विच रहवां, दूजा रंग ना कोए बदलाईआ। सच सिँघासण अगम्मी सेजे सवां, सत्थर यार इक्क हंढाहीआ। अमृत रस प्रेम प्रीती अंदर पीवां, तृष्ना भुक्ख जगत ना लागे राईआ। बिन सीस जगदीस दवारे रहवां नीवां, सचखण्ड दवारे दरगाह साची सोभा पाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार ढोला गावां, गीत गोबिन्द इक्को नाम बणाईआ। साची सेजा साहिब स्वामी अन्तरजामी इक्को रावां, नार भतार कन्त, कन्त कन्तूहल सुत दुलारा इक्को खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दिता वखाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अगला वेख्या गृह, मन्दिर धुर दा नज़री आईआ। जित्थे सो पुरख निरँजण निरगुण हो के बहे, हरि पुरख निरँजण हो के आपणी कार कमाईआ। एकँकार हो के आपणी धार वहे, आदि निरँजण हो के निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता हो के आपणा हुक्म कहे, श्री भगवान हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के आपणी वस्त आपे दए, दाता दानी दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोटन कोटि कीते लै, सरगुण निरगुण आपणे विच छुपाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी सरनी ढहे, दर दवारे भिक्खक हो के मंगण थाउँ थाँईंआ। कोटन कोटि जुग शब्दी धार इच्छया अंदर जिस ने

कीते लै, उत्पत विच उपमां जगत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों खेल वेख्या अगला, भेव अभेदा कहिण कोए ना पाईआ। जित्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को चार मंगला, दूजा राग नाद ना कोए सुणाईआ। शरअ ज़ंजीर रहे कोई ना संगला, दीन मज़्ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धुर दा सजदा इक्को होवे बन्दना, नमों नमस्ते रूप ना कोए बदलाईआ। मस्तक धूढ़ी जगत ललाटी लाए कोई ना चन्दना, सरगुण धार ना बन्धन पाईआ। दीन दयाल समरथ स्वामी पुरख अकाला इक्को एक एक बख्शंदना, बख्शिश रहमत आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा दवारा बण भिखारा लाल दुलारा हो के मंगणा, खुशीआं नाल वस्त अमोलक धुर दी झोली आप भराईआ। सति सतिवाद आपणी धार दी चाढ़े रंगणा, रंगत विच रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्क इकल्ला सुहाए आपणा अंगणा, अंगीकार इक्को नज़री आईआ। जिस दी चरण धूढ़ गुर अवतार पीर पैगम्बर करन मजना, भगत सन्त गुरमुख गुरसिख सूफ़ी बैठे राह तकाईआ। जिस दा नाम नगारा दो जहानां ताल वज्जणा, वाजब आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क वड्याईआ।

★ १६ माघ शहिनशाही सम्मत २ दौलत सिँघ दे गृह पंज गराईं ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या नूर, नूर नुराना नज़री आया। पुरख अकाला हाज़र हज़ूर, हरि जू बैठा सोभा पाईआ। मेरी अरज़ बेनन्ती कर मन्ज़ूर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जुग चौकड़ी भगत उधारना मेरा दस्तूर, नित नवित निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। प्रेम प्रीती अंदर होवां मजबूर, मुश्किल विच खुशदिल हो के रंग रंगाईआ। नाम खुमारी देवां सरूर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। सच भण्डारा भरां भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। सन्त सुहेले वेखां ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर हो के करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार धुर दरबारा इक्क वखाईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या धुर दा घर, मन्दिर सोहणा नज़री आईआ। जित्थे वसे निरगुण हरि, हरी बैठा सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां देवे वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हुक्मे अंदर सब कुछ रिहा कर, करनी दा करता खेल खिलाईआ। महल अटल उच्च मनारे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। साची सिख्या बिन लिखयां सब दे अग्गे देवे धर, धुर फ़रमाना इक्को इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव तूं

मेरा मैं तेरा लैण पढ़, सोहँ ढोला सारे गाईआ। निरगुण नाल निरगुण दी लग्गे जड़, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे तक्कया राह, दो जहानां परे नज़री आईआ। जिस दा अबिनाशी करता इक्क मलाह, बेड़ा आपणा नाम चलाईआ। सूफ़ीआं जिस नूं किहा खुदा, पैगम्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस दा नाम तराना धुर दी सदा, रागां नादां बाहर सोभा पाईआ। उस दी समझे कोई ना वजह, वाहिद आपणी कार कमाईआ। निरगुण धार सब दा अब्बा, बाल अंञाणे वेखे थाउँ थाँईंआ। दो जहान जिस ने हुक्मे अंदर बध्धा, बन्दगी विच सारे सीस निवाईआ। गोबिन्द कहे मैं ओस दा सुणया सद्दा, शब्दी हुक्म विच शनवाईआ। सचखण्ड दुआर गया भज्जा, मातलोक विच्चों आपणा पन्ध मुकाईआ। किसे नाल नहीं कीता दग़ा, कूड़ फ़रेब ना कोए हल्काईआ। सच दवारा धुर दा लभ्भा, नाता तुट्टा कूड़ लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल प्रीती विच लग्गा चंगा, सच स्वामी अन्तरजामी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच गृह दए वड्याईआ।

४४४
२०

★ १६ माघ शहिनशाही सम्मत २ दलीप कौर दे गृह समालसर ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अगला वेख्या हक महल्ला, जिस दी बाढी बणत ना कोए बणाईआ। परवरदिगार वस्या इक्क इकल्ला, अल्ला जिस नूं कहि के सारे गाईआ। धाम सुहा के निहचल अटला, देवणहार सर्ब वड्याईआ। शब्दी धार फड़ा के पल्ला, आपणी गंढु पवाईआ। ओस दी धार विच रला, जग नेत्र नैण वेखण कोए ना पाईआ। एह खेल अछल अछल्ला, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी समझ ना कोए समझाईआ। सच दुआर दरगाह साची मुकामे हक इक्को मल्ला, मालक महबूब वेख खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों बाद, अनन्द अनन्द विच समाईआ। निरगुण धार हो आज़ाद, दो जहानां भज्जां वाहो दाहीआ। जन भगतां करा पिछली याद, याददाशत अगली रिहा जणाईआ। भेव अभेदा खोल्ह आग़ाज़, परदा ओहला आप चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के राज़, रहमत हक कमाईआ। धुर दा शब्द अगम्मी मार आवाज़, सोई सुरती सुत्ती आप उठाईआ। भेव खुल्हा पुरख अबिनाश, राह मार्ग रिहा वखाईआ। जिस दा हुक्म पृथ्मी आकाश, हर घट रखे निवास, निरगुण नूर जोत प्रकाश, आत्म परमात्म आपणी धार जणाईआ। ओस घर गृह मन्दिर सुहावणे

कीता निवास, छड्डी सेज जगत प्रभास, यारड़े पूरी कीती आस, नाता तोड़ के पवण स्वास, पन्ध मुका के पृथ्मी आकाश, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे कर आबाद, निरगुण धार निरगुण करी इमदाद, आमद विच आपणे विच समाईआ।

★ १६ माघ शहिनशाही सम्मत २ राज सिँघ दे गृह मुक्तसर ज़िला फ़िरोज़पुर ★

अनन्द पुर तों अगला घर दिस्या सुहञ्जणा, गोबिन्द वेख ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाल मिल्या आदि निरँजणा, अबिनाशी करता धुर दरगाहीआ। सति प्रीती कराया मजना, सरोवर अगम्म अथाह नुहाईआ। ठाकर हो के मिल्या सज्जणा, सगला संग बणाईआ। बन्दगी दस्स के आपणी भजना, भाउ भेव परदा दिता उठाईआ। सचखण्ड दवारे सदा वसणा, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। करना खेल पृथ्मी आकाशना, दो जहानां सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाशना, शब्दी आपणा डंक सुणाईआ। निरगुण धार वेखणा खेल तमाशना, तमअ तृष्ना कूड़ मिटाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए उपासना, लोकमात ध्यान लगाईआ। सो लेखा जाणे सर्ब गुण तासना, गहर गम्भीर नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अगला वेख्या संग, हरि संगी धुर दरगाहीआ। चाढ़ अगम्मी रंग, रंगत दिती बदलाईआ। आसा मनसा पूरी कर उमंग, तृष्ना दिती मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणा के छन्द, सोहँ ढोला दिता जणाईआ। नूर विच नूर चाढ़ चन्द, नूर नूर विच समाईआ। सच दुआर दा दे अनन्द, अनन्द पुरी दा लेखा दिता मुकाईआ। झगड़ा रिहा ना कोई जंग, खड़ग खण्डा ना कोए खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे घर सोभा पाईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुरी दा कर किनारा, पत्तण पिछला दिता तजाईआ। वेख्या खेल नर निरँकारा, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। जोत सरूप अगम्म अपारा, अलख अगोचर सोभा पाईआ। सच सिँघासण शाह सिक्दारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी शब्द इक्क जैकारा, धुर संदेसा राग अलाईआ। मन्दिर महल अटल उच्च मनारा, दरगाह सच मुकामे हक सोभा पाईआ। कोटन कोटि दर दरवेश खड़े गुर अवतारा, पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, धूढ़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी देवणहारा, दे दे आपणी ख़ुशी बणाईआ। गोबिन्द कहे मैं वेख्या सच्चा घर बारा, पिछला भुल्ल गया प्यारा, अग्गे आपणा आप प्रभ दे विच समाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे विहारा, बिवहारी हो के धार आपणी आप बदलाईआ।

★ १६ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी प्रीतम कौर दे गृह पिण्ड मदरसा ★

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों वेखी धार अगली, दो जहानां परे ध्यान लगाईआ। नाता तोड़ सृष्टी सगली, धुर स्वामी अन्तरजामी मिल के खुशी मनाईआ। फेर सत्थर यार सेज विछाउणी पए ना विच जंगलीं, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। वस्त अगम्म अथाह इक्को मंग लई, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणे रंग रंग लई, रंगत इक्को इक्क चढ़ाईआ। सच दवारे साचे सद्द लईं, सदके वारी हउँ घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। गोबिन्द कहे पुर अनन्द तों अगला वेख्या रस्ता, जगत जहान पगडण्डी दिती तजाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तक्कया हस्सदा, हस्ती विच मस्ती रिहा चढ़ाईआ। नाम प्याला देवे आपणे रस दा, रसना तों बाहर सिफ्त सालाहीआ। इशारा दे अगम्मी अक्ख दा, जग लोचणां तों नैण ल्या बदलाईआ। खेल दस्स सचखण्ड प्रतख दा, दरगाह साची धाम न्यारे परदा दिता उठाईआ। भण्डारा खोल्ह नूर नुराने हट्ट दा, वणजारा हो के वणज दिता कराईआ। परदा लाह के लख चुरासी अन्तर आत्म घट घट दा, चारे खाणी लेखा दिता समझाईआ। नाद वजा के अनहद आपणे नद दा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी लहिणा दिता मुकाईआ। हुक्म दे के खेल दस्सया अलग्ग दा, तत्तां वाला नाता दिता तुड़ाईआ। जोड़ा दस्सया सूरे सरबग्ग दा, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे ल्या तक्क, हरि करता नज़री आईआ। निरगुण धार साहिब समरथ, परवरदिगार बेपरवाहीआ। हकीकत विच्चों दस्से हक, प्रतख रूप गोसाँईआ। सच जैकारा बोल अलख, अलख अगोचर आपणा आप दिता दृढ़ाईआ। मैं चरण कँवल बिन धवल गया ढठ्ठ, बिन धूढ़ी मस्तक टिक्का साचा ल्या रमाईआ। साहिब सतिगुर पकड़ उठाया झट्ट, बिन हत्थां हत्थ लगाईआ। तैनूं रहिण नहीं देणा वक्ख, अड्डरा घर ना कोए बणाईआ। नाता तोड़ के मास नाड़ी हड्ड, जोती धार विच समाईआ। की होया पुरी अनन्द आया छड्ड, सचखण्ड सोहणा मन्दिर इक्क सुहाईआ। जित्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित मेरी चले यद, पुश्त पनाह आपणा हत्थ टिकाईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कोई ना सके

लभ्भ, खोज विच खोजण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर आप सुणाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे तक्कया एकँकार ओह, ओड़क जिस दी सारे ओट तकाईआ। सृष्टी दृष्टी नालों बैठा हो निर्मोह, मोह मुहब्बत निरगुण निरगुण नाल रखाईआ। जिस दा लेखा अवर ना जाणे को, कोटन कोटि जुग समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी सुणदे रहे सो, सो साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणा भेव खुल्हाईआ। सच प्रकाश कर अगम्मी लो, लोइन तों परे करे रुशनाईआ। जिस दी धार सदा दो, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। परमात्म हो के आत्म जावे छोह, शहिनशाह हो के वस्त अमोलक नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी घट जोत प्रकाशी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे तक्कया इक्क अकाल, अकल कलधारी नज़री आईआ। जिस मैनूं बणाया लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत विच समाईआ। मेरी लेखे ला के घाल, कीती घाल थाएँ पाईआ। सचखण्ड दवारा वखा सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण आसण दिता लगाईआ। झगड़ा मुका के काल महाकाल, दीन दयाल दिती वड्याईआ। मेरा हल्ल होया सवाल, मनसा मोह दिता चुकाईआ। तत्तां विच्चों ल्या ज्वाल,
४४७ अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। बाला नढ्ढा बणा नौजवान, जोबन आपणा दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ४४७
२० आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण आप सुणाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द २०
पुर तों अग्गे खुल्ल्हया वेख्या ताक, ताकतवर परदा आप उठाईआ। जिस दा दे के आए भविख्त वाक्, वाक्य वेखे चाँईं चाँईंआ। साहिब स्वामी हो के देवे साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, सोहँ ढोला दिता दृढ़ाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए जिस दा जाप, जगजीवण दाता जुगती जोग इक्क जणाईआ। गोबिन्द कहे जिस दी सिफ्त विच सिफ्त गए आख, आख़र आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम देवे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द नूर रुशनाईआ। जन भगत बणाए सच जमात, जुमला अक्खर वक्खर इक्को नाम पढ़ाईआ। महल अटल उच्च मनारा सुहाए इक्क महिराब, महबूब हो के मुहब्बत विच आसण लाईआ। सच सुनेहड़ा सतिगुर हो के देवे आप, गुरमुख गुर गुर आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां देवे धुर दा साथ, संगी साथी हरि करता इक्को नज़री आईआ।

★ २० माघ शहिनशाही सम्मत २ मल सिँघ दे गृह अकाल गढ़ ★

गोबिन्द कहे पुर अनन्द तों चंगा सचखण्ड, दरगाह साची वज्जे सच वधाईआ। जिस गृह मन्दिर अंदर बैठा निरगुण रूप सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह परवरदिगार सांझा यार नूर खुदाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नहीं कोई वण्ड, तत वजूद नज़र कोए ना आईआ। अक्खरां वाला नहीं कोई गावण वाला छन्द, राग नाद गीत संगीत वज्जे ना कोए वधाईआ। इक्को जोत नूर अगम्मी चढ़या चन्द, रवि ससि सूर्या मुख ना कोए वखाईआ। झगड़ा नहीं कोई दीन मज़्हब ऊँच नीच राउ रंक, ज़ात पात विच वरभण्ड, लोक परलोक गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार इक्क इकल्ला सच सिँघासण सोभा पाईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या मुकामे हक, हकीकत इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित पुरख अकाल मिले समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस दा चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे जस, रसना जेहवा बत्ती दन्द सोहले ढोले राग सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सच दवारे रिहा वस, जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। कोटन कोटि देवत सुर रिख मुन साध सन्त सूफ़ी फ़कीर बेनज़ीर चरणी रहे ढठ्ठ, बिन सीस जगदीश सारे रहे झुकाईआ। चारे खाणी चारे बाणी अन्तर निरंतर मंत्र जिस दा नाम रहे रट, बोध अगाध शब्द अनाद धुर दी धुन करे शनवाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाला पुरख अकाला मार्ग लावे सच्च, कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट चार वरन अठारां बरन दए गवाईआ। कर प्रकाश काया माटी पंज तत कच्च, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव अभेदा अछल अछेदा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या अगम्म दवार, जिस दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जिस नूं समझ ना सके वेद चार, शास्त्र सिमरत कहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दर दे भिखार, भिक्खक हो के बैठे झोलीआं डाहीआ। सो दवारा एकँकारा रखे ठंडा ठार, अग्नी तत आदि जुगादि ना कोए तपाईआ। निरगुण सरगुण वस्त देवे दाता दानी बण थार, थिर घर परदा ओहला दए चुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर निराकार निरँकार, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस दी आदि अन्त जुगा जुगन्त पावे कोई ना सार, महासार्थी हो के दो जहानां श्री भगवाना आपणा रथ चलाईआ। कूड़ क्रिया जगत माया ममता मेटे विभचार, दुरमति मैल अग्नी तत बुझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन दस्से

इक्क प्यार, सुरती शब्दी नाता दए जुड़ाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक साध सन्त इक्को घर दए वखाल, जिस गृह शाह पातशाह शहिनशाह सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा शब्दी नाद वजाईआ। गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे मंज़ल हकीकी चढ़या, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। बिन अक्खां बिन अक्खरां निरअक्खर इक्को पढ़या, जिस ने भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। सच वखाया धुर दा घरया, गृह मन्दिर वज्जदी दिसी वधाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश परवरदिगार इक्को करया, ज़ाहूर ज़हूर विच्चों प्रगटाईआ। चरण कँवल सच सरनाई बिन सीस धड़ पड़या, जोती जोत जोत भेंट कराईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच हुक्म अगम्मा करया, करनी दे करते कुदरत दे मालक दिता समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन मन वासना सृष्टी दृष्टी अंदर क्यों लड़या, भावना ममता मोह वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेश नर नरेश निरगुण धार आप सुणाईआ। गोबिन्द कहे मैं सुण अगम्मी फ़रमाना, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द जो प्रभ ने दिता जणाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दो जहानां, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं गगन गगनंतरां परदा दिता उठाईआ। जिस विच सतिजुग दा सति वखाया इक्क निशाना, सति धर्म दा सच्चा राह जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे विच जहानां, माया ममता मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दूसर दिसे ना कोए बेगाना, तत शरीर तन वजूद माटी ख़ाक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एका नाम एका दान देवे धुर श्री भगवाना, सति सतिवादी आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन आपणा रंग चढ़ाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल दिता धुर संदेसा, संधी हथ्थ किसे ना आईआ। तख़्त निवासी बण नरेशा, नर नरायण दिता समझाईआ। गोबिन्द शब्द सतिगुर पूरा आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन जगत वजूद खेल बणाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित मेटे लेखा, भरम भुलेखा कूड़ी क्रिया दए कढाहीआ। कलयुग अन्त चौदां सदीआं मुहम्मद ठेका, ठाकर स्वामी अन्तरजामी सब दा पूरब लहिणा दए मुकाईआ। जूठ झूठ रहिण ना देवे भेखा, सच सुच्च लोकमात दए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धर्म दवारा इक्को इक्क वखाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल देवे धुर फ़रमान, हुक्म अंदर हुक्म बदलाईआ। झगड़ा मेट ज़िमीं असमान, दीन दुनी दए बदलाईआ। चार वरन अठारां बरन मानव जाती शब्दी सतिगुर इक्क ज्ञान, मन वासना ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म भेव खोल्ह महान, महिमा अकथ पुरख समरथ दे समझाईआ। एका नाम दस्से

गुण निधान, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी दस्से करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात निवार, माया ममता मोह मिटाईआ। सच सुच सति धर्म डंक वज्जे संसार, राउ रंक कर शनवाईआ। इक्को पुरख अकाल दा होवे जैकार, गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा ढोला गाईआ। सच दवारे आत्म करे निमस्कार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वेखे विगसे वेखणहार, घट घट अंदर काया मन्दिर फोल फुलाईआ। गोबिन्द विचोला शब्दी शब्द शब्द संसार, सुरती सुरत अकाल मूर्त अकल कलधारी आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कर खुआर, बीस बीसे दे अधार, सतिजुग सच कर उज्यार, कलयुग अन्ध अन्धेर कूड़ी क्रिया दे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां निरगुण रूप श्री भगवाना, सृष्ट सबाई दृष्टी अंदर देवे दाना, दयावान दीनन दीन इक्को इक्क अख्वाईआ।

★ २० माघ शहिनशाही सम्मत २ अच्छर सिँघ दे गृह पिण्ड सेखा ★

गोबिन्द कहे मेरा मेला नर निरँकार, सचखण्ड निवासी धुर दा पिता माईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा सेवादार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल विच संसार, लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी फोल फुलाईआ। चारे बाणी शब्द अगम्मा बोल जैकार, नाम निधाना श्री भगवाना ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां आप सुणाईआ। लेखा जाण पैगम्बर अवतार, भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। शब्द अनाद बोध अगाध शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी बोल जैकार, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को नाम सच शनवाईआ। सच सुहेला इक्क इकेला परम पुरख परमात्म आत्म खेल खिलाए अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाह आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धुर दी सेव लगाईआ। गोबिन्द कहे सचखण्ड निवासी मेरा इक्को मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस दी समझ ना सके कोए रीत, रीतीवान बेपहचान बिन रूप रंग रेख सच दवारे सोभा पाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला बैठा रहे अतीत, कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर आपणी सेव लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दस्स अगम्मा गीत, सोहला ढोला धुर दा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे सचखण्ड निवासी मेरा इक्को सज्जण, साहिब सतिगुर नज़री आईआ। जिस दे ताल नगारे शब्द अगम्मी वज्जण, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। जिस दा तन वजूद माटी ख़ाकी नहीं कोई बदन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मुकामे हक बैठा आपणी मंज़ल, महबूब हो के मुहब्बत विच खेल खिलाईआ। जिस दे दीपक गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण धार जगण, जागरत जोत बिन वरन गोत निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदा सदा सद आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २० माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरजिंदर कौर दे गृह पिण्ड सेखा ★

गोबिन्द कहे सचखण्ड मैं वेख्या पुरख अकाला, अकल कलधारी बैठा सोभा पाईआ। जिस दा निरगुण नूर जोत उजाला, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी नित नवित हुक्मे अंदर बदलदा रहे चाला, चाल निराली आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन दुनी नाम संदेसा देंदा रहे सुखाला, पारब्रह्म ब्रह्म भेव अभेद आपणा आप खुल्ह्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
४५१ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ला सच महल्ला दरगाह साची इक्क वड्याईआ। ४५१
२० गोबिन्द कहे सचखण्ड दवारे तक्कया परवरदिगार, परम पुरख परमात्म नज़री आईआ। जो इक्क इकल्ला वाहिद सर्ब स्वामी २०
मित्र यार, दरगाह साची हक मुकामे डेरा लाईआ। मेहरवान हो के मैनूं बणाया आपणा ख़िदमतगार, ख़ादम हो के खुद साची सेव कमाईआ। निरगुण सरगुण दे आधार, काया माटी पंज तत तन वजूद आपणा रंग रंगाईआ। शब्द अनादी बोल जैकार, धुर फ़रमाना श्री भगवाना आपणा दिता सुणाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक विच्चों कर के बाहर, एका रंग धुर दा दिता रंगाईआ। साची सिख्या दे के भिख्या सचखण्ड दवारे दिता सिखाल, मन मति बुद्धी तों परे कीती पढ़ाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच निरगुण धार बणा के आपणा लाल, जोती जोत आपणी गोद उठाईआ। एथे ओथे दो जहानां साहिब समरथ हो के करे संभाल, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा धुर दा नाम इक्क दृढ़ाईआ।

★ २० माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरविंदर कौर दे गृह पिण्ड रखाला ★

गोबिन्द किहा सचखण्ड दवारे तक्कया पुरख अबिनाशी, परम पुरख बैठा सोभा पाईआ। सृष्टी विच वेख्या हर घट

निवासी, गृह गृह अंदर आपणा निरगुण जोत करे रुशनाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां वेख्या अगम्म जोत प्रकाशी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा बणया दासी, सेवक हो के धुर दी सेवा मंग मंगाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला मेरी पूरी करे आसी, आसा विच आशा आपणी नाल मिलाईआ। लोकमात कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल वखाए आपणी घाटी, पत्तण किनारा तट दूजा रहिण कोए ना पाईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक मेटे वाटी, निरवैर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। नव सत्त देवे नाम संदेसा अगम्मी पाती, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सब नूं दए सुणाईआ। झगड़ा मुके ऊँच नीच राउ रंक दीन मज़्हब ज़ात पाती, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव मानुख जाती दए जणाईआ। निजर धारा अमृत बूँद देवे स्वांती, अमिउँ रस आपणा आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना मेट अन्धेरी राती, निरगुण निरगुण जोत नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे हुक्म वरताईआ। गोबिन्द कहे सचखण्ड दवारे वेख्या शहिनशाह, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे सारे बेपरवाह, बेअन्त कर के रहे गाईआ। जो हुक्मे अंदर हुक्म रिहा वरता, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार बणे मलाह, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर बेड़ा आप चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस नूं भविख्तां विच आए गा, लिख्तां विच शहादत गए भुगताईआ। सो निरगुण नूर जोत करे रुशना, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस नूं जन्मे कोई ना माँ, पिता पूत ना गोद उठाईआ। सो लहिणा देणा लेखा जाणे दो जहां, परदा ओहला आपे दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर पुरख अकाल अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द कहे सचखण्ड दवारे वेख्या श्री भगवान, भगवन बैठा सोभा पाईआ। जिस दा झुलदा धर्म निशान, ज़िमीं असमान सीस झुकाईआ। कोटन कोटि बैठे काहन, सीता दे राम देण दुहाईआ। कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद मंगण दान, दरवेश हो के अलख जगाईआ। नानक निरगुण कर प्रणाम, नरायण मिल के वज्जे वधाईआ। गोबिन्द किहा मैं उस दा योद्धा सूरबीर सुत बलवान, शब्दी आपणा नाउँ जणाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं लोकमात होवां प्रधान, परम पुरख ठाकर स्वामी देवे माण वड्याईआ। कूड़ी क्रिया मोह ममता माया विकार हँकार मेटां विच जहान, सच सुच्च धर्म मार्ग इक्क लगाईआ। बुद्धी बदल देवां इन्सान, शरअ रहे ना कोए शैतान, चार वरन अठारां बरन इक्को धर्म दस्सां ईमान, नाम भजन बन्दगी इक्को दयां समझाईआ। सब दा इष्ट इक्को होवे श्री भगवान, दूजे मन्ने कोई ना आण, कलमा कायनात करे ना कल्याण, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म

भेव अभेद अनुभव दृष्टी दयां खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित बदलदा आया विधान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २० माघ शहिनशाही सम्मत २ टहिल सिँघ दे गृह हसपताल रोड अबोहर ★

गोबिन्द कहे सचखण्ड वेख्या अगम्मा धाम, दो जहानां वक्खरा सोभा पाईआ। जिस गृह वसे सब तों न्यारा राम, पारब्रह्म प्रभ आपणा आसण लाईआ। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी बदल देवे नज़ाम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दे के दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण सरगुण कर प्रधान, तन माटी ख़ाकी वेख वखाईआ। अमृत रस प्या के जाम, सच खुमारी शब्द चढ़ाईआ। धुर दा कलमा दे पैग़ाम, कायनात करे शनवाईआ। सो लेखा जाणे जीव जहान, लख चुरासी फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं हुक्म देवे हुक्मरान, धुर संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख हराम, मन वासना ममता खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक्क समझाईआ। गोबिन्द कहे सचखण्ड निवासी साहिब मेरा सुल्तान, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जो कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया मेटे निशान, सतिजुग साचा मार्ग चार वरन अठारां बरन इक्क वखाईआ। शरअ शरीअत विच रहे ना कोई बेईमान, आत्म परमात्म बोध अगाध धुर दा नाद दए सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के ईमान, धर्म दवारा एकँकारा सृष्टी दृष्टी अंदर दए प्रगटाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर साची दस्स अगम्मी कलाम, कायनात दए समझाईआ। शब्दी गोबिन्द योद्धा सूरबीर मर्द मर्दान, नौजवान हुक्म मनाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा लेखा करे जो दे के गए भविख्तां विच ब्यान, मालक ख़ालक प्रितपालक वेख वखाईआ। दीन मज़्ब दा रहिण ना देवे कोई गुलाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा रंग इक्क रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरा परम पुरख पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना लए जरम, जोती जाता जल्वागर नूर खुदाईआ। जिस दा समझे कोई ना वरन बरन, ज़ात अजाती रूप ना कोए वटाईआ। सो कुदरत दा मालक करनी करन, करता पुरख आप अख्वाईआ। कलयुग अन्त धर्म वेखे उपर धरनी धरन, धवल धौल खोज खुजाईआ। साचा रिहा ना किसे प्रन, परम पुरख ओट ना कोए तकाईआ। मन वासना जीव हँकारी लड़न, निवण सु अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। साची मंज़ल कोए ना आवे चढ़न,

काया मन्दिर अंदर परदा ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे अन्धेरी कंदर, सच नाम निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। गोबिन्द कहे चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी अंदर दिसे नग्न, ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक कोए ना लावे चन्दन, लख चुरासी विच्चों जम की फाँसी ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर दीन दयाल दया निध ठाकर स्वामी अन्तरजामी हर घट अन्तर वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे सचखण्ड निवासी मेरा महबूब, मुहब्बत विच सदा समाईआ। जिस दा उच्च अर्श अरूज, मुकामे हक नूर रुशनाईआ। सो लेखा जाणे काया कलबूत, पंज तत फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया वेख वजूद, हुक्मे अंदर हुक्म दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया दिस्से चारे कूट, दहि दिशा होई हल्काईआ। जीव जंत साध सन्त मन वासना मारन झूठ, सति सुच सके ना कोए अपनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सदी चौधवीं अन्त करे नेस्तोनाबूद, ना मालूम आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जीव जंत घट घट अन्तर निरंतर जाणे मंज़ले मक्सूद, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ २० माघ शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह रते वाल ज़िला गंगा नगर राजस्थान ★

गोबिन्द शब्द कहे पुरख अकाल रिहा दस्स, दो जहानां वाली दीन दयाल दया कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रिहा किसे ना कोई वस्स, मन वासना दीन दुनी होई हल्काईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोले कोई ना अक्ख, प्रतख मिले ना किसे गोसाँईंआ। हकीकत विच्चों खोजे कोई ना हक, परदा ओहला सके ना कोए उठाईआ। जगत विद्या पढ़ पढ़ गए थक्क, मन वासना बन्धन कोए ना पाईआ। नाड़ बहत्तर घर घर उबले रत्त, रतन अमोलक हीरा नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी दृष्टी सृष्टी सति नालों होई वक्ख, सति सरूप सति सतिवादी संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे की दस्सां ब्यान, बेअन्त बेपरवाह आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा दो जहान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा हुक्म वरताईआ। सच संदेसा नर नरेशा धुरदरगाही देवे फ़रमान, हुक्म हाकम इक्क दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन अन्तर निरंतर निरवैर हो के करे पहचान, मन मति बुद्धी तों परे खोज खुजाईआ। लहिणा देणा झगड़ा मिटाए ज़िमीं असमान, चौदां

लोक तबक सबक बिन अक्खरां इक्क दृढ़ाईआ। कृपानिध ठाकर स्वामी खेल करे श्री भगवान, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं दस्सां की, कहिण कुछ ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिजुग बन्नणहारा नींह, कलयुग कूड़ी क्रिया जड़्ह रिहा उखड़ाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जंत जी, जीवण जुगत ब्रह्मण्ड खण्ड दए बदलाईआ। झगड़ा मुका के साढे तिन्न हथ्थ रविदासे सीं, सहिज स्वामी अन्तरजामी भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। अमृत मेघ बरसे अगम्मा मींह, बूँद स्वांती कमलापाती पतिपरमेश्वर आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हो सहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे धुर दा हुक्म देवे दयाल, दीन दयाल दया कमाईआ। जिस गुर अवतार पैगम्बर आपणी धारों लए उठाल, निरगुण विच्चों निरगुण लए उपजाईआ। सति दवारा खोल्ह के इक्को धर्मसाल, धर्म दा मार्ग रिहा प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देणी चाल, माया ममता मोह विकार रहिण कोए ना पाईआ। नाम निधान दो जहान देणा बेमिसाल, जिस दी मिसल पिछली नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन इक्को ढोला गाण, धुर दा राग ब्रह्म ब्रह्माद दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। गोबिन्द शब्द कहे देवे हुक्म हुक्मरान, हरि करता वड वड्याईआ। वस्त अमोलक दे के दान, दाता हो के रिहा समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेट विच जहान, जहालत रहिण कोए ना पाईआ। मानव मानुख मानस मेल होवे इन्सान, हैवान बुद्धी ना कोए बणाईआ। हर घट अन्तर निरंतर नूर जगे महान, दीपक दीआ बिन बाती तेल डगमगाईआ। शब्दी नाद सुणाए सच्ची धुनकान, अनहद नादी राग सुणाईआ। अमृत रस देवे पीण खाण, जगत कूड़ी तृष्ना भुक्ख दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त धुर दा कन्त, लेखे लाए हरिजन गुरमुख साचे सन्त, भगत भगवन्त आपणे घर वसाईआ।

★ २१ माघ शहिनशाही सम्मत २ अर्जन सिँघ दे गृह रतेवाल ★

गोबिन्द शब्द कहे मेरा मालक पुरख अबिनाश, आदि जुगादी धुरदरगाहीआ। जो दो जहानां करे प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण आपणा करे खेल तमाश, हरि पुरख निरँजण लए प्रगटाईआ। एकँकार मण्डल मण्डप पा के धुर दी रास, आदि निरँजण दीवा बाती कमलापाती आप जगाईआ। अबिनाशी करता वेखे खेल तमाश, श्री भगवान प्रगट

हो के आपणी धार चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणी पूरी करे आस, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी कल वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणा के साथ, सगला संग उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मेरा स्वामी, परम पुरख प्रभ दया कमाईआ। घट निवासी अन्तरजामी, दो जहानां वेख वखाईआ। साचे नाम दी धर्म निशानी, निरगुण सरगुण आप वरताईआ। कलयुग अन्त भेव अभेदा खोल्हे कूड़ी क्रिया मेटे बेईमानी, शरअ शैतानी डेरा ढाहीआ। जन भगतां मंज़ल दस्से इक्क आसानी, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। नव जीवन दी नाम निधान दे जवानी, नाता तोड़ के हउमे हंगता हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बख्श के पद निरबाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे रंग आप रंगाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं परम पुरख दी वेखां कार, करनी करता आप कमाईआ। जिस नूं वेखदे रहे सदा जुग चार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। दर दरवेश हो के मंगदे रहे बण भिखार, नर नरेश देवणहार निरँकार आपणी कार कमाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता प्रगट हो के विच संसार, महासार्थी धर्म रथ आप चलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आत्म परमात्म दस्से इक्क प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। दुतीआ भाउ ना रहे जगत दुतर धार, अलख निरँजण अगम्म अथाह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक्क समझाईआ। गोबिन्द शब्द कहे प्रभ देवणहारा सिख्या, अगम्मढ़ी करे पढ़ाईआ। जिस दा लेख किसे ना लिख्या, कातब चले ना कोए चतुराईआ। दीन दुनी दस्से मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। प्रेम प्रीती प्यार मुहब्बत विच बणे धुर दा मितया, मित्र प्यारा हो के आपणा संग बणाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित नजिठ्ठया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जग नेत्र चार वरन अठारां बरन मन वासना जगत दृष्टी अंदर किसे ना दिस्या, भरमे भुल्ली लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल वरताईआ। गोबिन्द शब्द कहे प्रभ करे खेल आपणी धार, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। निरगुण निरवैर हो उज्यार, उजाला करे जगत लोकाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे धूआँधार, धरत धवल धर्म दए सुहाईआ। साचे नाम दा सति जैकार, हर हिरदे दए वसाईआ। मन वासना रहे ना कोए विकार, ममता मोह दए चुकाईआ। मानव मानव दे आधार, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। नव नौ चार दा कर्ज़ा दए उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जाता पुरख बिधाता करनी दा करता खेल करे अपार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां सचखण्ड निवासी सदा सिक्दार, नाम संदेसा फ़रमाना धुर दो जहानां आप सुणाईआ।

★ २१ माघ शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह १ सी० सी० ज़िला गंगानगर ★

गोबिन्द कहे मैं वेख्या गहर गम्भीर गुण सागर, अगम्म अथाह नज़री आईआ। जिस दा नाम वणजारा इक्क सौदागर, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां वणज कराईआ। निरगुण धार योद्धा सूरबीर बहादर, निर्भय भउ सर्ब वखाईआ। दीन दुनी वेखे आपणा सागर, लख चुरासी जीव जंत फोल फुलाईआ। निरगुण सरगुण निरवैर निराकार निरँकार दो जहानां सदा हाज़र, हज़ूर हज़रत आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आप चुकाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ वेख्या सर्ब गुणां भरपूर, ऊणता नज़र कोए ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दा नूर, देवत सुर चमक चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा पूर, जुग चौकड़ी बेड़े रिहा चढ़ाईआ। लोकमात नित नवित मेटे कूड़ो कूड़, सच सुच दए वड्याईआ। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, गृह गृह अंदर सोभा पाईआ। चतुर बणाए मूर्ख मूढ़, भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। साचे सन्तां दे के चरण धूढ़, धूढ़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। मन वासना तोड़ ग़रूर, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। नाम खुमारी दे सरूर, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। मुहब्बत विच बणे मज़दूर, चाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग सदा समाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ वेख्या दयाल दीन, दयानिध अख्वाईआ। जिस दा मार्ग आदि जुगादि महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। निरअक्खर सचखण्ड दवारयों दए तालीम, अक्खरां वाली लोकमात पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदा आया तरमींम, बदली विच अदली इक्को इक्क अख्वाईआ। दीन मज़्ब करदा रिहा तक्सीम, हिसयां विच आपणा हुक्म चलाईआ। जन भगतां बख्शदा रिहा यकीन, यक आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ तक्कया बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जिस दी समझ सके ना कोए तस्वीर, तसव्वर मुसव्वर ना कोए कराइंदा। मंज़ल चढ़े ना कोए अख़ीर, चरण कँवल गुर अवतार पैगम्बर बहि बहि शुकर मनाइंदा। सो झगड़ा मुकावे शाह हकीर, ऊँच नीच इक्को घर वसाइंदा। कलयुग विच सतिजुग साची बदले तकदीर, तदबीर आपणा हुक्म वरताइंदा। झगड़ा रहे ना किसे पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी हुक्मे अंदर आप समझाइंदा। सईयदे करन शाह फ़कीर, हकीर आपणे धन्दे लाइंदा। दीन

दुनी बदल देवे ज़मीर, मन वासना कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। शरअ रहे ना कोए ज़ंजीर, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रूप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। गोबिन्द कहे प्रभ तक्कया अन्तरजामी, लख चुरासी वेख वखाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर गाउँदे आए बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान नाउँ धराईआ। जिस रचना रची चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज वण्ड वण्डाईआ। जिस सर सरवोर अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ बख्श्या पाणी, अमृत रस आपणा आप वखाईआ। सुरत शब्द शब्द सुरत सति दुआर बणा हाणी, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। लेखा जाणे दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जिस दा भेव समझे ना कोए जगत विद्वानी, नेत्र अक्ख तक्क सके कोए ना राईआ। सो शाह पातशाह शहिनशाह पुरख अकाल धुर दा हुक्म देवे फ़रमानी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कल वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धरनी धरत धवल उपर रिहा ख़ाक छाणी, चार कुण्ट दहि दिशा मिले माण ना कोए वड्याईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सदी चौधवीं मेटे झूठ निशानी, सति सच धर्म आपणा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां उपर करे मेहरवानी, मेहरवान हो के महबूब आपणी मुहब्बत विच रखाईआ।

४५८
२०

★ २१ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी लच्छो दे गृह ३ सी० सी० ज़िला गंगा नगर ★

गोबिन्द कहे पुरख अकाल बैठा निहचल धाम अटल, सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण नूर दीपक जोत रिहा बल, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी डगमगाईआ। शब्द अगम्मी धुर संदेसा रिहा घल्ल, नाम निधान श्री भगवान इक्को इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जाओ रल, दुतीआ रूप ना कोए वटाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर वेखो घड़ी पल, मन वासना परदा देणा उठाईआ। पन्ध मुकाओ जल थल, महीअल आपणा फेरा पाईआ। लेखा वेखो कलयुग कूड़ी क्रिया कल, वरन बरन रोवण मारन धाहींआ। माया ममता कपट विकार करे छल, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। पंच विकारा घर घर दिसे दल, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। दूई द्वैत शरअ शरायत मेटे कोए ना सल, साहिब स्वामी मिल के खुशी ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नाम संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर रिहा सुणाईआ। गोबिन्द किहा वेख्या सचखण्ड उच्च मनारा, बिन छप्पर छन्न

सोभा पाईआ। जिस गृह वस्या सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, हरि पुरख निरँजण डेरा लाईआ। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता जाणे आपणी धारा, श्री भगवान सति सतिवादी कार कमाईआ। पारब्रह्म बण सिक्दारा, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कारा, मस्तक टिक्के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। खाणी बाणी करे पुकारा, जुग चौकड़ी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर पुरख समरथ कलयुग कूड़ी क्रिया वेख पसारा, चार कुण्ट दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। साचा सज्जण मिले ना कोए मीत मुरारा, परम पुरख परमात्म आत्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां, रागां नादां सोहलयां ढोलयां विच गाईआ। भेव खुल्ल्हे ना वाली दो जहानां, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार दरस कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन होए वैराना, वैरी घर घर आपणा डंक वजाईआ। बिन तेरी किरपा साची दिसे ना कोए धर्मसाला, धर्म दुआर एकँकार आपणा दे वखाईआ। जित्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग झुलदा रहे नाम निशाना, लोआं पुरीआं नज़री आईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तूं नज़री आएं इक्को कान्हा, मालक ख़ालक प्रितपालक बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे ज़माना, सतिजुग सच्चा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द कहे परम पुरख दा तक्कया एका धाम, दवारा धुर दा सोभा पाईआ। जित्थे कदे ना होवे शाम, बिन सूरज चन्द होए रुशनाईआ। जिस दा बदल ना सके कोए नज़ाम, आदि जुगादि इक्को हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरां देवे पैग़ाम, शब्द संदेसा नाम सुणाईआ। दीन दुनी करे इंतजाम, लख चुरासी आपणे कारे लाईआ। आत्म परमात्म कर ग़ुलाम, मुहब्बत विच आपणा रंग चढ़ाईआ। हर घट होवे जाणी जाण, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त महिमा अगणत सारे गाण, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। मंज़ल चढ़ के मन्दिर वड़ के दरस कोए ना पाण, हरस विच हवस सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा, धुर दी मंग मंगाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ दा वेख्या घर अगम्म, अगम्मढ़ी खेल वखाईआ। जित्थे हड्ड मास नाड़ी नहीं चम्म, चम्म दृष्टी रूप ना कोए बदलाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। हरख सोग ना कोए ग़म, चिन्ता वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई मरे ना पए जम्म, जननी गोद ना कोए सुहाईआ। ना कोई पवण स्वास दम, साह साह ढोला ना कोए गाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार आपणा आप बैठा मल्ल, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पुरख समरथ महिमा अकथ, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ दवारा तक्कया एक, इक्क इकल्ले दिता वखाईआ। जित्थे सब नूं मिले टेक, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। निरगुण दा साचा देस, परदेसी सरगुण आपणे विच समाईआ। जुग चौकड़ी करे अवल्लड़ा वेस, लोकमात फेरा पाईआ। नाम निधाना दे संदेश, सोई सुरती दए उठाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया मेटे कलेश, कायनात कलमा हक हकीकत इक्क समझाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म सुणाए देस परदेस, दो जहानां आप जणाईआ। सृष्ट सबाई दृष्टी अंदर लए वेख, अन्तर निरंतर मंत्र आपणा इक्क उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित रहे हमेश, जन्म मरन कर्म कांड विच कदे ना आईआ।

★ २१ माघ शहिनशाही सम्मत २ काबल सिँघ दे गृह १८ बी० बी० ज़िला गंगा नगर ★

गोबिन्द शब्द कहे सदी चौधवीं करे पुकार, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। किरपा कर परवरदिगार, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। नाता तुट्टा मुहम्मदी यार, सगला संग ना कोए बणाईआ। धुर दा कलमा सके ना कोए विचार, कायनात परदा ना कोए उठाईआ। अमृत रस मिले ना तेरी धार, आबे हयात जाम ना कोए प्याईआ। साचा रिहा ना कोए ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव ना कोए कमाईआ। उम्मत उम्मती गई हार, रसूल पैगम्बर देण गवाहीआ। नबीआं सुणे ना कोए गुफ़तार, गुफ़त शुनीद करे ना कोए पढ़ाईआ। सच बेनन्ती तेरे अग्गे निरँकार, निरगुण निरवैर दिती सुणाईआ। मुकामे हक खोल्ह किवाड़, दरगाह साची परदा दे उठाईआ। तेरा इक्को नज़री आए सचखण्ड दवार, जिस गृह बैठा सोभा पाईआ। जोत नूर कर उज्यार, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्ध अंध्यार, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। मन वासना करे ना कोए विभचार, आत्म परमात्म भेव दे खुल्हाईआ। साची मंज़ल मिले हकीकी यार, लाशरीक आपणा फेरा पाईआ। सदी चौधवीं तेरी तल्बगार, पैगम्बर तेरे तालब इलम गए समझाईआ। अञ्जील कुरान करे इज़हार, सिफ्तां विच तेरा ढोला गाईआ। अमामां दे अमाम सिक्दार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गोबिन्द शब्द कहे सदी चौधवीं रही कूक, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। झगड़ा प्या चारे कूट, दहि दिशा साचा रंग ना कोए रंगाईआ। कूड़ विकारा वध्या झूठ, माया ममता होई हल्काईआ। सति धर्म कर

के कूच, धरनी धरत धवल तों परे डेरा लाईआ। साची दिसे ना कोए बूझ, सूझ समझ ना कोए वड्याईआ। झगड़ा प्या एक दूज, एका रंग ना कोए समाईआ। परदा लाह काया पंज तत भूत, तन माटी ख़ाकी कर सफ़ाईआ। दीन दुनी कर सलूक, सुल्हकुल तेरी इक्क शरनाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी मुहब्बत दा महबूब, सच महिराब दे सुहाईआ। जिधर तक्कां ओधर मौजूद, हाज़र हज़ूर वेस वटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, सति धर्म दा सच्चा राह वखाईआ। सतिजुग सच्चे सच्चा दे वजूद, वसल आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन मज़्ह़ब ज़ात पात वरन बरन कलयुग अन्त अख़ीरी मेट हदूद, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द शब्द कहे सदी चौधवीं नेत्र रही खोल्ह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावे बोल, राग अगम्मा इक्को गाईआ। धुर दे मालक आ मेरे कोल, लोकमात फेरा पाईआ। दुनी सुत्ती जगत अनभोल, तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। धुर दा डंका वजा ढोल, नगारा इक्को हथ्थ उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा पूरा कर कौल, जो भविख्तां विच गए समझाईआ। हर घट अन्तर आ के मौल, मौला हो के आपणा फेरा पाईआ। तेरा भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, मुल्ला शेख़ मुसायक समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दीन दयाल तेरी आस रखाईआ। गोबिन्द शब्द कहे सदी चौधवीं मंगां रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट भेख पखण्ड, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म ब्रह्म दस्स छन्द, साचा राग इक्क अलाहीआ। द्वैत रहे कोए ना कंध, सति सतिवादी राह चलाईआ। निरगुण नूर जोत चाढ़ चन्द, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। मेहरवान हो बख़्शंद, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। गोबिन्द शब्द कहे सदी चौधवीं आपणी दस्से ख्वाहिश, भेव रही खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा दस्स के गए साथ, सगला संग बणाईआ। भविख्तां विच गए आख, प्रगट होवे निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जिस दी वरन बरन नहीं कोई ज़ात, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। सो कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। तेरी तृखा मेटे प्यास, बेआस दए गंवाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। झगड़ा मेटे ज़ात पात, दीन दुनी वज्जे वधाईआ। साची मंज़ल दस्से आपणा घाट, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे सदी चौधवीं बिन नेत्र रही तक्क, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। किस वेले मेरा देवे हक, पूरब लहिणा झोली पाईआ। पुरख अकाल होवे प्रगट,

अमाम आपणा वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। सति धर्म दा खोल्हे हट्ट, चार वरनां अठारां बरनां इक्को घर वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे नाम लैण जप, जीवण जुगती दए बदलाईआ। कर प्रकाश धुर दा सच्च, सति सतिवादी रंग चढ़ाईआ। लेखा जाण काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। करे खेल पुरख समरथ, परवरदिगार धुर दरगाहीआ। आपणा नाअरा दस्से अलख, जैकारा इक्को इक्क जणाईआ। जिस तों आत्म रहे कोए ना वक्ख, ब्रह्म पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। दोहां दा सांझा होवे जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगला मार्ग देवे दस्स, जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कहिण कोए ना पाईआ।

★ २१ माघ शहिनशाही सम्मत २ रतन सिँघ दे गृह २५ बी० बी० ज़िला गंगा नगर ★

हरि शब्द अगम्मी सुत, आदिन अन्ता इक्क उपजाईआ। जिस दी धार अबिनाशी अचुत, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। थिर घर सुहावे साची रुत्त, सचखण्ड बैठा सीस झुकाईआ। प्रगट होए बिन काया तत बुत्त, निरगुण निरवैर बणत बणाईआ। जिस नूं जननी रखे कोई ना कुक्ख, पुरख अकाल इक्को पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी कल वखाईआ। साचा शब्द हरि दुलारा, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। जिस दा मालक एकँकारा, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। सच प्रगटाए आपणी धारा, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा परदा आप उठाईआ। साचा शब्द अगम्म अथाह, बेपरवाह आप प्रगटाइंदा। इक्को पुरख अकाल देवे सलाह, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। निरगुण निरवैर बण मलाह, बेड़ा धुर दे कंध टिकाइंदा। सच वखा के एका थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। दीन दयाल बण के पिता माँ, पूत सपूता गोद टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। धुर दा शब्द आदी एक, एकँकार बणत बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे टेक, टिक्के मस्तक आप लगाईआ। त्रै पंज खेले खेड, आपणी कार कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वसाए देस, प्रदेश आपणा भेव चुकाईआ। मालक हो के धुर नरेश, हुक्म देवे चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आदि जुगादी

आपणी कार कमाईआ। साचा शब्द आदि जुगादि, जुग करता दए वड्याईआ। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मंड आपणी कार कमाईआ। धुर वजाए एका नाद, अगम्मी राग सुणाईआ। चारे बाणी देवे दाद, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। चारे खाणी खोल्हे राज़, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। साचा शब्द निरगुण धार, निरवैर पुरख उपजाईआ। जिस दा खेल अगम्म अपार, करनी करता आप दृढ़ाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी लै अवतार, गुर अवतार पैगम्बर रूप वटाईआ। सच संदेसा देवे वारो वार, हुक्म एका धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द नाउँ प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द दीन दयाल, दयानिध अखवाइंदा। जिस दे हुक्मे अंदर काल महाकाल, राए धर्म सेव कमाइंदा। त्रैगुण माया जगत जंजाल, पंज तत बन्धन आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परदा ओहला आप चुकाइंदा। शब्द गुरू सदा बलवान, इक्क इकल्ला इक्क अखवाइंदा। जुग चौकड़ी झुलाए निशान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। सृष्टी दृष्टी अंदर देवे ज्ञान, विद्या अगम्म अथाह समझाइंदा। निरअक्खर विच्चों अक्खर कर प्रधान, कायनात वण्ड वण्डाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द इक्को इक्क सोभा पाइंदा। सतिगुर शब्द नूर हरि दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना जम्मे ना मर्दा, मर जीवत रूप ना कोए रखाईआ। ना कोई अक्खर विद्या पढ़दा, ना कोई सलोक सोहले ढोले राग नाद जणाईआ। जो चाहे सो जुग चौकड़ी करदा, करनी दे करते दिती माण वड्याईआ। निरगुण तों सरगुण रूप धरदा, वेस वटावे चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी अंदर वड़दा, घट घट वेखे थाउँ थाँईंआ। सुरत सवाणी हाणी बण के फड़दा, सोई मोई आप जगाईआ। भेव खुल्हावे साचे घर दा, थिर घर देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी शब्द गुर इक्क अख्वाईआ। शब्द गुरू गहर गम्भीर, गवर आपणी कार कमाइंदा। जिस दा लेखा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना पाइंदा। जिस ने भगत सुहेले बणाए शाह हकीर, कबीर उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जो बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी आप प्रगटाइंदा। कट देवे शरअ ज़ंजीर, लाशरीक मेल मिलाइंदा। बख्शिश कर इक्क तौफ़ीक, तोहफ़े घर घर आप पुचाइंदा। आत्म दा बण के धुर रफ़ीक, मन फ़रीक परे हटाइंदा। जिस दी खेल अंदर जुग चौकड़ी गए बीत, सो सतिगुर शब्द आपणी कार कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलणहारा नीत, नीतीवान आपणा हुक्म वरताइंदा। सतिगुर शब्द किसे हथ्थ ना

आवे मन्दिर मसीत, गुरुदुआर वेखण कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। साचा शब्द पतित पावन, पुनीत इक्क अख्वाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे गावण, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर पकड़न दामन, दामनगीर दो जहान बण जाईआ। जो सरगुण बणे निरगुण ज़ामन, सो शब्द वड्डी वड्याईआ। तृष्ना मेट के कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द इक्को इक्क समझाईआ। साचा शब्द सदा सद एक, इक्को इक्क अखवाइंदा। जिस दी दो जहानां टेक, टिक्के मस्तक सर्ब लगाइंदा। सब नूं करनहार बिबेक, दुरमति मैल धवाइंदा। नित नवित वटाए वेस, आपणी कल धराइंदा। सच वखाए अगम्मा देस, दर दरवाज़ा आप खुलाइंदा। जन भगतां अंदरों खोल के भेत, परदा ओहला आप उठाइंदा। पुरख अकाल दसावे नेतन नेत, निज नेत्र अक्ख खुलाइंदा। तिस शब्द गुरू दा ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुंडाया ना रूप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आप उठाइंदा। सतिगुर शब्द सदा बहु रंगा, रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। निरगुण धार सरगुण संगा, सगल सृष्ट समाईआ। प्रेमीआं देवे अगम्म अनन्दा, घर अमृत रस चखाईआ। बजर कपाटी तोड़ जंदा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी दए बदलाईआ। रस वखा के परमानंदा, परम पुरख नाल मिलाईआ। मुहब्बत विच चढ़ाए डण्डा, डण्डावत इक्को दए समझाईआ। जगत विकारा कढ्ढे गंदा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। आत्म परमात्म दस्से धुर दा छन्दा, साचा ढोला इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द खेल कराईआ। सतिगुर शब्द खेल अनोखा, जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा। किसे नाल ना करे धोखा, धुखदयां पार कराइंदा। आदि जुगादि कदे ना सोता, आलस निंद्रा वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। इक्को प्रकाश तक्के निर्मल जोता, जोती विच्चों आपणा आप प्रगटाइंदा। जिस दा खेल ब्रह्मण्ड खण्ड कोटन कोटा, पुरी लोअ हुक्म वरताइंदा। जो घर घर अंदर लावे चोटा, सोई सुरती मात उठाइंदा। सो सतिगुर शब्द आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित इक्को बहुता, बहुते गुरूआं वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जिस दा नाम निधाना होका, हुक्म धुर दा इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो शब्द इक्क प्रगटाइंदा। साचा शब्द आदि पुरख दी धार, परम पुरख वड्याईआ। जिस नूं झुकदे गुरू अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, मंगण चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी बण पनहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेवा रहे कमाईआ। सो लहिणा देणा जाणे नव नौ चार, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। जिस दी शास्त्र

सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां विच करे इज़हार, ढोले सोहले रागां नादां विच गाईआ। सो शब्द सब दा सांझा यार, मुहब्बत आत्मा नाल रखाईआ। मंज़ल दूर करे दुश्वार, पैंडा अगला दए चुकाईआ। बिना सतिगुर वेख सके ना कोई विच संसार, जग नेत्र लभ्भण कोए ना पाईआ। किसे हथ्थ ना आवे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, समुंद सागर देण दुहाईआ। जिस उपर किरपा करे आप करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। तिस बिन अक्खां दए वखाल, घर ठांडे मेल मिलाईआ। धुर दा शब्द जुग चौकड़ी धुर दा दस्से कलाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। पैगम्बरां दए पैग़ाम, संदेसा इक्क सुणाईआ। बदल देवे नज़ाम, हुक्मे हुक्म भवाईआ। जिस शब्द ने कलयुग अन्त मेटणी अन्धेरी शाम, जूठ झूठ दए मिटाईआ। उह शब्द सदा मेहरवान, मेहर विच समाईआ। सुणया जाए ना किसे कान, रसना नाल ना कोए वड्याईआ। धुन आत्मक सच्ची धुनकान, धुर दी धार शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे दिता वर, आप आपणा विच टिकाईआ। साचा शब्द बिन गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना सके समझ, बुद्धी विच ना कोए वड्याईआ। अनुभव इशारे वाली रमज़, राज़क रिज़क रहीम आप सुणाईआ। जेहड़ा चलदा नहीं किसे नाल कदम, मंज़ल दो जहानां पन्ध मुकाईआ। एथे ओथे दो जहानां करे अदल, इन्साफ़ आपणा हुक्म वरताईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देवे बदल, बदली सब दी दए कराईआ। जिस दे अग्गे चले ना कोई यतन, यथार्थ सारे बैठे सीस निवाईआ। जिस ने लख चुरासी कीती बेवतन, वतन आपणा आप छुपाईआ। जुग जुग उह जन भगतां पैज आवे रखण, शब्द गुरू वेस वटाईआ। सन्त सुहेले आवे चुक्कण, बिन गोदी गोद उठाईआ। ग़रीब निमाणयां आवे पुछण, जो बैठण ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया आवे जड़्ह पुट्टण, झगड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुरू वड्याईआ। शब्द गुरू आदि जुगादी सच्चा, जिस दा साजण बेपरवाहीआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बर सुहाया काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़्ह वखाईआ। कीता प्रकाश पंजां तत्तां, त्रैगुण आपणा रंग रंगाईआ। धुर संदेश दिता पता, पतिपरमेश्वर दिता दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म बणाया सका, नाता दिता जुड़ाईआ। उह सतिगुर शब्द नज़र ना आवे जगत वालीआं अक्खां, निज लोचण नूर करे रुशनाईआ। ओस शब्द नूं कदे कहो ना अच्छा, जो मंज़ल मंज़ल घर ना धुर पुचाईआ। साचा चन्द इक्को पुरख अकाल दा बच्चा, जिस नूं दूजी जन्मे कोई ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समर्था, समरथ स्वामी अन्तरजामी घट भीतर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ।

★ २२ माघ शहिनशाही सम्मत २ महा सिँघ दे गृह २५ बी० बी० ★

जो गुर गोबिन्द दा सिख, सिख्या विच सदा समाईआ। उह ज़रूर अन्तर आपणा जाणे भविख, बाहरों पुछण दी लोड़ रहे ना राईआ। उस दे निरगुण धार अंदर निज सरूप पए दिख, परदा ओहला रहे ना राईआ। प्रीतम हो के मालक इक, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नाम निधाना दे के चिट, धुर संदेसा आप प्रगटाईआ। गोबिन्द सदा गुरमुखां दे रैहन्दा विच, विछोड़े विच कदे ना आईआ। आदि जुगादी धुर दा पित, बालक गुरमुख गोद उठाईआ। जिस दा खेल नित नवित, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। जो गोबिन्द सिख ल्या अपना, उपमां आपणी विच लगाईआ। उस दा विछोड़ा रहे ना रा, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। सुरती शब्द लए समा, समाप्त करे बाहरों लोकाईआ। निरगुण नूर करे रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी नाद धुन शनवा, अगम्म करे पढ़ाईआ। भेव अभेदा आप खुल्हा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। सो सूरा बेपरवाह, हाज़र हज़ूरा हर घट बैठा डेरा लाईआ। दूर दुराडा पन्ध मुका, लोकमात आपणा परदा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग सदा समाईआ। गोबिन्द सतिगुर कदे ना विछड़े, विछोड़े विच कदे ना आईआ। सद गुरमुखां दी प्रेम धारों निकले, बाहरों हथ्थ किसे ना आईआ। उह पूरब लेखे जाणे पिछले, करमां दा डेरा ढाहीआ। पड़दे खोल्हे विचले, हउमे रोग गवाईआ। जो गोबिन्द दी सिख्या साची सिख लए, सो सिख सतिगुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ। गोबिन्द सतिगुर सदा मेला, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। सुरती शब्दी खेल गुरू गुर चेला, तत्तां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एथे ओथे दो जहानां अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर धुरदरगाही बण के सज्जण सुहेला, साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। बिन गुरसिखां तों गोबिन्द कदे ना बैठे वेहला, सद गुरमुखां अंदर वड़ के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। जेहड़ा गोबिन्द दा सिख बणया, आप आपणा गया बदलाईआ। उह निरगुण धारों जणया, नाता मात पित तुड़ाईआ। ओस निरअक्खर इक्को पढ़या, जिस दी विद्या धुरदरगाहीआ। त्रैगुण विच कदे ना सड़या, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। सरन सरनाई ओस दी पड़या, जित्थे मिले माण वड्याईआ। रहे भउ कोई ना डरया, भयानक रूप ना कोए प्रगटाईआ। अमृत नहावे साचे सरया, दुरमति मैल धवाईआ। गोबिन्द दा सिख सदा गोबिन्द दे घर वड़या, विछोड़ा रहिण कदे ना पाईआ। ना जींदा ना मरया, मर जीवत ओसे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर दए वखाईआ। गोबिन्द दा सिख बणना

बड़ा औखा, चार वरनां समझ कोए ना आईआ। उह झगड़ा छड्ड जाए चौदां लोकां, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। उह सुण लए इक्क सलोका, दूजा बचन सरवण सुणन कदे ना जाईआ। उह रखे इक्को ओटा, ओड़क इक्को ध्यान लगाईआ। ओहदे अंदर गोबिन्द दी नाम लग्गे चोटा, चोटी चढ़ के दरस दिखाईआ। तेरे विच नौ जन्म दी खोटा, खोट अंदरों ना कोए कढाहीआ। गोबिन्द दे आहलणे विच्चों बाहर डिग्गा बोटा, फड़ के विच ना कोए रखाईआ। तूं पोसती हो के अनन्द पुरी तों बाहर घोटन घोटा, भंग पी के झट लँघाईआ। इक्क दिन गोबिन्द शब्द दा तेरे अंदर वज्जा सोटा, तेरी सुरती दिती हिलाईआ। तूं घर जा के ढाह दिता पिउ दा बणाया कोठा, वसदा घर बरबाद दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परदा ओहला दे चुकाईआ। गोबिन्द सिख सदा मिलाप, मिलणी विच वड्याईआ। जिस दे अन्तर निरंतर मंत्र आपणा देवे जाप, कराए सच पढ़ाईआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, संताप दए गवाईआ। सच सुनेहड़ा जाए आख, बिन अक्खरां आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए मुकाईआ। गोबिन्द सिख सदा प्यासा, अन्तर ध्यान लगाईआ। गोबिन्द उस दा सदा राखा, दिवस रैण सेव कमाईआ। दोहां दे अन्तर खेल करे पुरख अबिनाशा, आप आपणी वण्ड वण्डाईआ। गोबिन्द मिलण दी एस जन्म अजे ना आई जाचा, मंज़ल राह ना कोए वखाईआ। उह लभ्भया ना पूजा पाठा, जेहड़ा बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। अजे खुल्ह्या ना अंदरों ताका, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। गल्लां बातां वाला सुणया साका, साजण मिल के खुशी ना अंदर प्रगटाईआ। गोबिन्द सतिगुर सच्चे सिक्खां दे सदा साथा, संगी हो के आपणा संग बणाईआ। अन्तर प्रेम दा दे भरवासा, भरमां विच्चों बाहर कढाहीआ। गुप्त ज़ाहर देवे साथा, सगला संग बणाईआ। जिस ने गोबिन्द शब्द वाचा, शमां आपणी गया जगाईआ। मन वासना कदे ना नाचा, तृष्ना जगत ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नित नवित आपणी खेल खिलाईआ। गोबिन्द जिस सिख नूं दए प्यार, प्रीतम हो के दया कमाईआ। ओहदे अन्तर कर उज्यार, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। विछोड़े विच विछड़या रहे ना कोई दिन चार, सदा गुरमुखां मिल के खुशी मनाईआ। प्रीती अंदर कदे ना करे उधार, वस्त हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ। पिछले जन्म दा खेल न्यार, ऐस जन्म विच वेखणा ध्यान लगाईआ। अंदर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, तृष्ना ममता ना कोए मिटाईआ। कूड़ी क्रिया नाल प्यार, जगत नाल वड्याईआ। जिन्हां दा नाता गोबिन्द जोड़या नाल, उह विछोड़ा सहि ना सकण राईआ। उह सदा सुहेला इक्क इकेला गुरमुखां दए जमाल, जोती नूर कर रुशनाईआ। मुर्शद हो के मुरीदां पुछे हाल, दर घर साचे फेरा

पाईआ। गोबिन्द तों विछड़यां गुरसिखां नूं कदे ना बीते कोई साल, मनमुख कोटन जन्म जाण बिताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा देवे थाउँ थाँईंआ। गोबिन्द कहे मेरा गुरमुख मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस दे नाल मेरी चले रीत, लोकमात वज्जे वधाईआ। मैं ओस नूं मिलां ठीक, ठाकर हो के दरस दिखाईआ। उह झगड़ा मुकाए ऊँच नीच, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। गुरसिखां दा काया मन्दिर करां ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। चरण प्रीती बख्श के धुर दी प्रीत, मेला धुर दा लवां मिलाईआ। जगत विछोड़ा कट धाम वखावां इक्क अतीत, त्रैगुण लेखा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द गोबिन्द सिख सिख गोबिन्द गोबिन्द सिख विच समाईआ।

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत २ तरलोक सिंघ दे गृह २० ज़ैड ज़िला गंगा नगर ★

जन भगत कहे प्रभ तेरी ओट, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरा ध्यान लगाईआ। जग वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढु खोट, पारब्रह्म ब्रह्म भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी ला गृह मन्दिर अंदर चोट, सोई सुरती सति जगाईआ। होवे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। मन बुद्धी दी रहे कोई ना सोच, अनुभव आपणी धार देणी जणाईआ। झगड़ा रहे ना दीन दुनी लोक परलोक, तेरा नूर नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावां सच सलोक, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। भाग लग्गे काया माटी काचे कोट, कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। बाहर करनी पए ना खोज, निरंतर मेला लैणा मिलाईआ। ममता रहे ना कोई रोग, हंगता गढ़ देणा तुड़ाईआ। सच प्रीती बख्श अगम्मी जोग, जग जीवण दाते आपणी जुगत इक्क जणाईआ। आत्म परमात्म मिल के मिले धुर दी मौज, अनन्द परमानंद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरे समरथ, सच स्वामी तेरी आस रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख अग्न रथ, चार वरन अठारां बरन सड़दी दिसे लोकाईआ। मन वासना दीन दुनी दृष्टी अंदर रही नस्स, जगत वासना भज्जे वाहो दाहीआ। साचा तेरा नाम किसे ना आवे हथ्थ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ तीर्थ तट देण गवाहीआ। नाड़ बहत्तर काया माटी साढे तिन्न हथ्थ काअबा निरगुण नूर मिले किसे ना सच्च, प्रतख तेरा दरस कोए ना पाईआ। तेरी आत्म तेरे नालों हो के वक्ख, पंजां तत्तां अंदर वड़ के तेरा नाम भुलाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच खोल्ह आपणी अक्ख, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। तेरा भगत सुहेला सच दवारे तैनूं लभ्भ, ठाकर

स्वामी मिल के वज्जे वधाईआ। जगत विकारा कूड़ कुटम्ब ममता मोह देवे छड्ड, नाता जोड़े धुरदरगाहीआ। गृह मन्दिर अंदर नाम निधान श्री भगवान तेरा जावे वज्ज, नाद अनादी आपणी धुन सुणाईआ। निजर धारा अमृत अंमिओं आपणा दे रस, रसना जेहवा चक्खण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच्चा दवारा देणा वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरे दातार, दीन दयाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा कर सिरजणहार, सिर सिर रिज़क सबाईआ। तेरा लहिणा देणा दस्सदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर सिफ्तां विच सालाहीआ। भगत सुहेले मंगदे रहे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे अग्गे झोलीआं डाहीआ। कलयुग अन्त वेख विचार, श्री भगवन्त दया कमाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिरदे अंदर वध्या विभचार, कूड़ी क्रिया विच जगत लोकाईआ। साचा मंत्र सके ना कोए उच्चार, उजरत विच पंडत पांधे मुला शेख़ मुसायक ग्रन्थी पन्थी तेरी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरे धुर दे स्वामी, पुरख अकाल दीन दयाल तेरी बेपरवाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तरजामी, घट निवासी तेरी शहिनशाहीआ। शब्द अगम्मी सुणा आपणी बाणी, अणयाला तीर चलाईआ। चरण प्रीती बख्श धुर दा पद निरबाणी, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। गाथा रहे ना चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी मंज़ल देणी मुकाईआ। झगड़ा चुके चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लख चुरासी विच ना कोए भवाईआ। आपणे धुर दे नाम दी दे निशानी, जो एथे ओथे दो जहानां तेरा गृह वखाईआ। किरपा कर पुरख समरथ मेहरवान महबूब दो जहानी, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा बणे ना कोए ब्रह्म ज्ञानी, जगत विद्या विच रुली लोकाईआ। आपणी मंज़ल हकीकत वाली दस्स आसानी, असल विच वसल यार देणा खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मेल कर जोत नूरानी, आत्म परमात्म आपणे रंग समाईआ।

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत सिँघ दे गृह बनवाली ★

जन भगत कहिण प्रभ अबिनाशी उठ, सचखण्ड निवासी हो सहाईआ। कलयुग अन्तिम आ के तुठ, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। सृष्टी अंदर रिहा कोई ना सुच, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। सति धर्म दा पैंडा गया मुक, कलयुग कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। भरमे भुल्ला मानव मनुक्ख, परदा दूई ना कोए चुकाईआ। अन्तर आत्म मिले किसे ना सुख,

जगत तृष्ना अग्ग रही तपाईआ। शब्द अगम्मी लग्गे कोई ना चोट, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। मिले प्रकाश ना निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। मन वासना सारे रहे सोच, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। झगड़ा प्या नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। साची बख्शे कोई ना ओट, सिर समरथ हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अंदरों निकले किसे ना खोट, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के दया कमाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया मेट पखण्ड, धर्म दवारा दे खुल्हाईआ। सच प्रेम दा बख्श अनन्द, दुःख दर्द डेरा ढाहीआ। तेरे नाम दा गाईए छन्द, दूजी विद्या ना कोए वड्याईआ। खेल वेख आपणा वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। बिन तेरी किरपा साचा चढ़े ना कोए नूरी चन्द, कलयुग अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। मेहरवान हो के आत्म परमात्म आपणे नाम रंग, दुरमति मैल दे धवाईआ। गुप्त ज़ाहर वस संग, सगला संग बणाईआ। भेव खुल्हा ब्रह्म हँ, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तृष्ना मेट भुक्ख नंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत दे बणाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दीनां उत्ते दया कर, दयाल हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आवे डर, कलयुग ममता मोह रही डराईआ। विकार अग्नी विच रहे सड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। दिवस रैण पुकार रहे कर, सच बेनन्ती इक्क सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर दित्ते घल्ल, नाम संदेसा इक्क सुणाईआ। सदी चौधवीं कलयुग सब दे नाल करे छल, कपट विकारी रूप वटाईआ। झगड़ा प्या जल थल, टिल्ले पर्बत रहे कुरलाईआ। किसे ना दिसे निहचल धाम अटल, साची मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ निरगुण हो के आ, सरगुण दया कमाईआ। सदी चौधवीं बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सति धर्म दी साची दे सलाह, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। कूड़ कुड़यारा डेरा ढाह, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। साचा मंत्र नाम इक्क दृढ़ा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मिल के ढोला गाईआ। डंका दो जहान वजा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल कर शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर समझा, कायनात कलमा इक्क सुणाईआ। भेव अभेदा परदा लाह, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दे गवाईआ। तेरा लेखा बेपरवाह, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। चार वरन अठारां बरन रोवण मारन धाह, हाहाकार कर सुणाईआ। साची मंज़ल हकीकी चढ़े कोई ना, निरगुण तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। किरपा कर महबूब मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुणवन्ते तेरा ढोला रहे गा, गीत गोबिन्द इक्क अल्हाईआ। तूं सब दा मालक प्रितपालक अल्ला

राम वाहिगुरू खुदा, खुदी दा डेरा दे ढाहीआ। महल अटल इक्क सुहा, जन भगतां अंदर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ लोकमात आ के वेख, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। चारों कुण्ट वध्या भेख, कूड़ पखण्ड करे लड़ाईआ। मालक दिसे ना किसे नरेश, नर नरायण ना नज़री आईआ। जेहड़ी धार बन्नू के गया गोबिन्द दस दस्मेश, पंचम इक्को रंग रंगाईआ। तिस दा पावे कोई ना भेत, परदा सके ना कोए उठाईआ। जिस कारण अर्जन सतिगुर सिर विच पाई रेत, अग्नी तत तपाईआ। तिस दा समझे कोई ना खेल, ख़ालक ख़लक भेव ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच वर, भगत सुहले तेरा राह तकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ अन्तिम वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्ह्ब ज़ात पात, पतिपरमेश्वर तेरा मेल ना कोए कराईआ। सच धर्म दे चढ़े कोई ना राथ, मंज़ल हक ना कोए पुचाईआ। आत्म परमात्म जोड़े कोए ना नात, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के ख़ुशी ना कोए मनाईआ। साची मिले किसे ना दात, धुर दी वस्त ना कोए वरताईआ। कलयुग भेख वेख्या बहु भांत, चार कुण्ट होई हल्काईआ। तूं मेरा मैं तेरा निरगुण निरवैर आ के दस्स आपणी गाथ, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख समरथ, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। सतिजुग साचा दस्स, अगला रंग दे रंगाईआ। मन वासना कर दे वस, बुद्धी बिबेक आप बणाईआ। सच धर्म दा खोलू हट्ट, नाम वणजारा दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा सच्चा वर, भगत सुहेले दर ठांडे सीस निवाईआ। जन भगत कहिण प्रभू किरपा निधान, पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। सचखण्ड निवासी हो निगाहबान, निरवैर आपणी दया कमाईआ। कलयुग भुल्ले जीव बाल अंञाण, माया ममता मोह हल्काईआ। घर घर शरअ होई शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। आत्म ब्रह्म भुल्लया ज्ञान, विद्या विच जगत जीव हल्काईआ। धर्म दिसे ना किसे निशान, निशाना तेरा गए भुलाईआ। काया काअबा नज़र ना आए हक मकान, मुकामे हक चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। किरपा कर योद्धे सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दाने तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगत सुहेले तेरा राह तक्काण, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहाना धुर दा काहन, अबिनाशी करता नज़री आईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर नाम निधाना दे दान, वस्त अमोलक काया गोलक दे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभू दे दे वस्त अपार, नाउँ निरँकारा दे समझाईआ। अन्तर निरंतर कर प्यार, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। साचा मन्दिर दे वखाल, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। झगड़ा

रहे ना शाह कंगाल, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। किरपा कर दीनां बंधू दीन दयाल, दयानिध तेरी आस रखाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आयों चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं दीन दुनी होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। बिन मुर्शद मुरीदां कोए ना पुछे हाल, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। भगत सुहेले वेख आपणे लाल, गुरमुख गोदड़ी विच्चों आपणी गोदी लै टिकाईआ। तूं आदि जुगादी सदा प्रितपाल, प्रितपालक तेरी बेपरवाहीआ। सच बेनन्ती मन्न सवाल, सारे झुक के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि सन्त सुहेले जन भगत तेरा बैठे राह तकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर ठाकर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत जहान वेख डूँग्घा सागर, बिन तेरे पार ना कोए लँघाईआ। भाग लग्गे ना काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे ना कोए वधाईआ। नाम वणजारे कर सच्चे सौदागर, वस्त अमोलक दे वरताईआ। कोझे कमलयां निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, जन भगत सुहेले दर तेरे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ किरपन हो कृपाल, निर्धन सरधन दया कमाईआ। तूं आदि जुगादी दीन दयाल, ठाकर धुर दा बेपरवाहीआ। सच प्रीती निभे तेरे नाल, एथे ओथे दो जहानां सोभा पाईआ। तेरा शब्द गुरू होवे दलाल, नाम विचोला लै बणाईआ। अंदर बाहर वस नाल, खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे नाम दा वज्जे ताल, अनहद नादी राग दे सुणाईआ। निजर झिरना अमृत रस बूँद स्वांती दे प्याल, नाम खुमारी इक्क चढ़ाईआ। जलवा जोत दा दे जमाल, नूरो नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, हरि साजण तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा तक्कया इक्क सहारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर पार किनारा, भव सागर बेड़ा दे तराईआ। तेरी ओट रख के गए गुरू अवतारा, पैगम्बर भविख्तां विच गाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कल कल्की लै अवतारा, अमाम अमामा फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे धुँदूकारा, साचा नूर करे रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को बख्शे चरण प्यारा, प्रीतम हो के आपणा रंग रंगाईआ। अंदर खोल्ह के बन्द किवाड़ा, परदा ओहला दए चुकाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़ा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, जन भगत सुहेले भिक्खक हो के आपणी झोली डाहीआ। जन भगत कहिण प्रभ आ के वेख, निरवैर दया कमाईआ। मातलोक तक्क आपणा देस, परदेसी गुरमुख तेरा राह तकाईआ। जोती जामा धार भेख, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। तेरा कोई ना जाणे रूप रंग रेख, परदा सके ना कोए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म

दे संदेश, सोहला सच दे समझाईआ। तैनूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरे चरण कँवल आदेस, मस्तक धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां नाल कर हेत, हितकारी हो के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। तेरा दर्शन तक्कीए नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। नाम निधाना दे संदेश, कलयुग सुत्तयां लै उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर लै वसाईआ। जन भगत कहिण असीं वेख वेख थक्के, दूर दुराडे ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कौल इकरार कर सच्चे, निरगुण हो के फेरा पाईआ। तुध बिन पत कोए ना रखे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सब दे चीथड़ पुराणे फटे, नव जोबन रंग ना कोए रंगाईआ। दुरमति मैल ना कोई कटे, पतित पुनीत ना कोए वखाईआ। साचा मार्ग चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म कोई ना दस्से, दहि दिशा भेव ना कोए खुल्ह़ाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी वेख मस्से, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जन भगत कहिण असीं तेरे चरण कँवल ढठ्ठे, इष्ट इक्को रहे मनाईआ। किरपा कर पुरख समर्थे, साहिब सतिगुर तैनूं मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सिफ्तां वाला जसे, जस वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा रही गाईआ।

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत २ मलकीअत सिँघ दे गृह पिण्ड बनवाली ★

पुरख अकाल कहे जन भगतो गोबिन्द सूरा रिहा जाग, आलस निंद्रा जगत ना कोए रखाइंदा। तुहाडे अन्तर निरंतर धुर मंत्र उपजावे इक्क वैराग, वैरी कूड़े अंदरों बाहर कढाइंदा। बिन रसना जेहवा अमृत रस देवे स्वाद, मन वासना कूड़ी क्रिया अग्नी तत बुझाइंदा। मेहरवान हो के मुहब्बत दी देवे दाद, आदि अन्त सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नव नौ चार दी रखे याद, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना आइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया करे बरबाद, सच सुच लोकमात प्रगटाइंदा। तुहाडे काया मन्दिर अंदर वजाए रबाब, बिन तन्द सतार आप हिलाइंदा। साची बन्दना सजदा दस्से इक्क आदाब, नमों नमस्ते धुर दी आप दृढ़ाइंदा। सच सरनाई जाओ लाग, लागत करता ना कोए लगाइंदा। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर गोबिन्द सब दी पकड़े वाग, चार वरन अठारां बरन आपणा हुक्म सुणाइंदा। पतित पापीआं दुरमति मैल धोवे दाग़, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाइंदा। पुरख अकाल कहे जन भगतो गोबिन्द सतिगुर रखो टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी दए लगाईआ। अन्तर बाहर करे

बिबेक, पतित पुनीत लए बणाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंचम पंच ना कोए हल्काईआ। सचखण्ड दुआर वखाए एको देस, जिस घर विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को रिहा वेख, वेखणहारा दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पर्दा ओहला आप उठाईआ। पुरख अकाल कहे साचे सन्तो सच दी वेखो धार, गोबिन्द इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा हंढाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण प्रगट होवे विच संसार, त्रै पंज मेला सहिज सुभाईआ। दीआ बाती कमलापाती करे आप उज्यार, मन्दिर अंदर एका सोभा पाईआ। सो तुहाडी लेखे लाए जन्म जन्म दी कीती कार, पूरब लहिणा झोली पाईआ। मानस जन्म ना जावो हार, हार जित विच बदलाईआ। मेल मिलाए नाल एकँकार, इक्क इकल्ला धुर मलाहीआ। खेवट खेटा बण के ख़बरदार, बेख़बरां लए उठाईआ। साची मंज़ल देवे चाढ़, घर घराने विच्चों बाहर कढाहीआ। साचा दे के दरस दीदार, दीद ईद करे रुशनाईआ। मेला मिल्या रहे अगम्म अपार, अथाह आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर मीता सज्जण इक्को इक्क जणाईआ। पुरख अकाल कहे गुरमुखो गोबिन्द करो ध्यान, सुरती सुरत विच्चों बदलाईआ। जो देवणहारा सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। धर्म वखावे इक्क निशान, जो दो जहानां रिहा झुलाईआ। गोपी काहन जिस नूं सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो योद्धा सूरबीर बलवान, इक्क इकल्ला हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त करे पहचान, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। सच प्रीती धुर दी नीती देवे अगम्मा दान, दाता हो के आप वरताईआ। गुरमुख मूर्ख मूढ़ रहे ना कोए अंञाण, सुघड़ सुचज्जे दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुहेला इक्क इकेला अकल कलधरी आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल कहे गुरसिखो गोबिन्द सिख्या जाओ सिख, साख्यात दए वड्याईआ। उस दा पूरा होणा भविख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दो जहानां होवे जित, फ़तिह डंका इक्क वजाईआ। जन भगतां करे हित, गुरमुखां आपणे रंग रंगाईआ। धुर दा मालक बण के पित, पूत सपूते आपणे घर वसाईआ। परदा लाह के घर निज, निज नेत्र करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक आपणी दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द तक्को बेनज़ीर, जो नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। जो हर घट मंज़ल चढ़ के बैठा अख़ीर, आखर आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दी जिस बदल देणी तकदीर, तकब्बर मेटे ख़लक खुदाईआ। जिस दे हथ्थ नाम खण्डा शमशीर, कूड़ी शरअ दा डेरा देवे ढाहीआ। जन भगतां

प्या के अमृत रस सीर, रसना तों बाहर आपणा रस चखाईआ। झगड़ा रहे ना कोए अमीर ग़रीब, सब दा बणे पिता माईआ। जो गुरसिख होया अज़ीज़, आजज़ आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द शब्दी धार गुरमुखां करे आप तस्दीक, दूजी शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ।

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी दानो दे गृह बनवाली ★

पुरख अकाल कहे गोबिन्द शब्द सूरा सरबंगा, सब दा मालक नज़री आईआ। जिस दा वसदा रहे सदा पुर अनन्दा, अनन्द आपणी धार प्रगटाईआ। प्रकाश हुन्दा रहे बिन सूर्या चन्दा, बिन मण्डल मण्डप सोभा पाईआ। लगदा रहे दो जहानों चंगा, साचा नूर कर रुशनाईआ। मेटदा रहे भेख पखण्डा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। गुरमुखां नाम अगम्मी देवे डण्डा, साचे पौड़े आप चढ़ाईआ। दीन दयाल बण बख़्शंदा, बख़्शिश रहमत सदा कमाईआ। मन वासना मेट के धन्दा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंधा, कन्त कन्तूहल दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग विच समाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द शब्द इक्को पूजा, सिल पूजस कम्म किसे ना आईआ। भाउ रहे ना दुतीआ दूजा, घर इक्को वज्जे वधाईआ। सदा सहारा इके सतिगुर दा, जो सति सति विच समाईआ। जिस दा मंत्र दो जहान फुरदा, फ़ुरने मन दे दए गवाईआ। उह सुख वखाए सच अनन्दपुर दा, जो पुरीआं लोआं तों बाहर ल्या बणाईआ। जिस गृह गया गुरमुख कदे ना विछड़दा, विछड़यां सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। करे प्यार साचे मित्र दा, मित्र प्यारा जिस यारड़े सेज हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द शब्द सब दा सिरताज, सिर सिर रिज़क सबाईआ। ग़रीब निमाणयां ग़रीब निवाज़, कोझे कमलयां गले लगाईआ। नाम वस्त अमोलक देवे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। धुर धर्म दी दस्से गाथ, वाहवा इक्को नाम समझाईआ। जिस दी महिमा करदे कोटन जाप, सिफ्तां विच सालाहीआ। सो शब्द गुरू गुर गोबिन्द आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सब दा बण के माई बाप, गोदी धुर दी लए सुहाईआ। गुरमुखां चरण प्रीती जोड़ के नात, कूड़ कुटम्ब दए तजाईआ। जिधर वेखण ओधर वसे साथ, सगला संग बणाईआ। निरगुण हो के वसे पास, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां दी मन्न सदा अरदास, हिरदे अंदर डेरा

लाईआ। शब्द सुणा अगम्मी अनहद अनाद, नादी धुन उपजाईआ। अमृत रस दे स्वाद, कूड़ी तृष्ना दए चुकाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। रूह बुत्त दोवें करे पाक, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे सोभा पाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द शब्द सर्ब दा मीता, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जुग चौकड़ी जो बदलदा आया रीता, नित नवित आपणा हुक्म वरताईआ। एथे ओथे दो जहानां ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जिस दी सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अठारां ध्याए गीता, सो गोबिन्द धुर दा सच्चा माहीआ। जो लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परखणहारा नीता, नीतीवान आपणी खेल खिलाईआ। गुरमुखां नाल सदा लगाए आत्म धार प्रीता, प्रीतम हो के आपणा रंग रंगाईआ। सो कलयुग अन्त झगड़ा मुकाए मन्दिर मसीता, मसला इक्को दए समझाईआ। शरअ रहे ना दूई शरीका, शिरक्त कूड़ी दए कढाहीआ। इक्को ताज वेखे साहिब जगदीसा, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। भेव अभेदा खोल्हे बीस बीसा, परदा ओहला दए उठाईआ। पन्ध मुका के ऊँचां नीचां, मानव आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे वसणहार नज़दीका, निज घर निज आत्म निज गृह निज मालक हो के सोभा पाईआ।

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी तेज कौर दे गृह बनवाली ★

गोबिन्द शब्द कहे मैं जुग जुग लेखा मेटां जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ। गुरमुखां दर्शन देवां उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। फड़ फड़ हँस बणावां कग्ग, मन वासना काग ना कोए कुरलाईआ। ममता मोह मेटां अग्ग, तृष्ना तृखा ना कोए तपाईआ। सच दवारे लवां सद्द, घर साचा इक्क समझाईआ। प्रेम प्रीती अंदर दस्स के अगम्मा पद, पतिपरमेश्वर दयां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं गुरमुख सज्जण देवां तार, तारनहारा इक्क अख्वाईआ। जुग चौकड़ी पावां सार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म मनाईआ। भगत सुहेले सज्जण लवां उठाल, सन्तन आपणा परदा लाहीआ। गुरमुख बणा के धुर दे लाल, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। गुरसिखां माया तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, राउ रंकां इक्को घर वसाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण बणां आप दलाल, शब्द विचोला आपणा वेस वटाईआ।

सचखण्ड दुआर वखावां धुर दी सच्ची धर्मसाल, जित्थे पुरख अबिनाशी बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं भगतां चाढ़ां रंग, गुरमुखां दयां वड्याईआ। सुहावां आत्म सेज पलँघ, जिस दी बाढी बणत ना कोए बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावां छन्द, निरंतर अन्तर आपणा नाम जपाईआ। बिन सूर्या चन्द चाढ़ के चन्द, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। खुशी करावां बन्द बन्द, बन्धन कूड़ा दयां तुड़ाईआ। नंगी होण ना देवां कंड, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। जो गुरमुख गुरसिख मेरा दवारा आवे लँघ, शौह दरया ना कोए डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा घर इक्क सुहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं गुरसिख पार उतारां पूर, पूरब लहिणा सदा चुकाईआ। सद वसां हाज़र हज़ूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सच सुच्च विच समाईआ। प्रेम प्रीती बख्श चरण धूढ़, दुरमति मैल दयां धवाईआ। रंग चाढ़ अगम्मा गूढ़, लालन लाल लवां उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना दे के तुरीआ तों परे तूर, तुरत आपणा घर वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं गुरमुखां दा आदि जुगादी सज्जण, मीत प्यारा धुर दा नज़री आईआ। चरण धूढ़ करावां मजण, पतित पुनीत दयां बणाईआ। लोकमात लज्जया आवां रखण, कलयुग होवां आप सहाईआ। बेड़ा लावां पतण, खेवट खेटा हो के सेव कमाईआ। गुरमुखां दे अंदर आवां वसण, निज आत्म बहि के सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा मेला आवां दस्सण, सगला संग बणाईआ। तीर अणयाला आवां कसण, चिल्ला धुर दा नाम बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी मेहरवान महबूब मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे जन भगत गुरमुख मेरा मीत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। घर वखा के ठांडा सीत, सचखण्ड दुआर दयां जणाईआ। जित्थे बैठा रहवां अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। इक्को पुरख अकाल दा सोहणा सुहञ्जणा गीत, गा गा शुकर मनाईआ। आत्म परमात्म दरस अगम्मी प्रीत, पतिपरमेश्वर दयां मिलाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गोबिन्द सतिगुर कहे गुरमुख आ वस मेरे नेड़े, नेरन नेरा नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मुकावां झेड़े, झगड़ा अवर रहे ना राईआ। गृह वखावां साचे खेड़े, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। पुरख अकाल चढ़ावां बेड़े, नईआ नौका इक्को नाम वखाईआ। कलयुग कूड़ी रैण मिट जाण सर्ब अन्धेरे, अन्ध अज्ञान दयां गवाईआ। घर इक्को वसण गुरू

गुर चेरे, चेला गुर आपणा खेल वखाईआ। भेव रहे ना तेरे मेरे, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रंग दयां रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण आप समझाईआ। गोबिन्द कहे गुरसिख तेरा मेरा इक्को रूप, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा मालक सब दा भूप, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दा खेल चारे कूट, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे झूठ, सति धर्म दए उपजाईआ। गुरमुख बणाए आपणे पूत, धर्म सपूते गोद उठाईआ। गृह वखाए ऊँचो ऊँच, महल अटल होवे रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना दुतीआ दूज, दूआ एका परदा दए चुकाईआ। गुरमखां देवे साची सूझ, रमज़ समझ विच लगाईआ। कर प्रकाश काया पंज भूत, पंचम शब्द धुन करे शनवाईआ। घर स्वामी करे बिबेक बुध, ठाकर हो के आपणी दया कमाईआ। वस्त अमोलक देवे सब कुछ, नाम निधाना झोली पाईआ। जिस गोबिन्द नूं याद करदे रहे चारे जुग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त अख़ीर ध्यान लगाईआ। सो साहिब सुहेला इक्क इकेला शब्दी धार निराकार निरवैर हो के भगतां जाए पुज्ज, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के दीन दुनी नालों बदल देवे रुख़, रहिबर हो के रस्ता आपणा आप समझाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच गोदी लए चुक्क, चार वरन अठारां बरन डेरा ढाहीआ। सच दुआर बणा के आपणा सुत, सोई सुरती लए जगाईआ। नाल मिला के अबिनाशी अचुत्त, गुरमुख चार्तक तृखा दए बुझाईआ। गोबिन्द सतिगुर गुरमुखां सदा देवे सुख, जगत दुक्खां डेरा ढाहीआ। दीन दुनी विच्चों उजल करे मुख, जो गुरमुख गोबिन्द गाईआ। सफ़ल करे जननी कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। अन्त दे के साची ओट, ओड़क आपणा रंग चढ़ाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आवण जावण लख चुरासी जन्म मरन गुरमुखां मेटे सोच, आसा मनसा पूरी कर के लोच, लोचन आपणे नाल जुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां सचखण्ड दवारे देवे धुर दी मौज, मजलस प्रभ दे नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर प्रकाश निर्मल जोत, जन भगतां गुरमुखां गुरसिखां साचे सन्तां पार कराए चौदां लोक, परलोक तों परे निरगुण हरे निरवैर निराकार आपणे घर लए वसाईआ।

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड पिपली ज़िला फिरोजपुर ★

धुर संदेसा देवे श्री भगवान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी अगम्मी शब्द अलाईआ। निरगुण धारों गुर अवतार

पैगम्बर होवो सवाधान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख मारो ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल मातलोक ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सृष्टी दी दृष्टी अंदर रिहा ना सति ज्ञान, माया ममता मोह विकार होई हल्काईआ। चार वरन अठारां बरन सिदक सबूरी दिसे ना कोए इमान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दरस कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्का जीव जंत जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत गृह मन्दिर अंदर वेखण कोए ना पाईआ। दीन दुनी ऊँच नीच राउ रंक ज़ात पात शरअ होई शैतान, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भविख्तां विच जो दे के आए ब्यान, धुर संदेसा नाम निधाना श्री भगवाना इक्क जणाईआ। तिस कलमे दी करे ना कोए पहचान, मंज़ल हकीकी चढ़ चोटी जड़्ह भेव ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात वेखो मार झात, झाकी धुर दी आप जणाईआ। मानव मानव दिसे ना कोए इत्तफाक, प्रेम प्रीती सच ना कोए निभाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे अन्धेरी रात, निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जो लेखा लिख के आए नाल शाही कलम दवात, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। सच प्रेम दी पा के आए रास, निरगुण सरगुण गोपी काहन नचाईआ। सिमरन दस्स के आए पूजा पाठ, जोग अभ्यास जगत जुगत जणाईआ। सच सरोवर दस्स के आए तीर्थ ताट, अमृत रस सोभा पाईआ। कलयुग जीव जंत अन्तर निरंतर करे ना कोई वास, नाता सारे रहे तुड़ाईआ। जा के वेखो खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। धरनी धरत धवल सदी चौधवीं होई उदास, बिहबल हो के दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो दीन दुनी, नव सत्त खोज खुजाईआ। सच पुकार किसे ना जाए सुणी, शाह कंगाल रोवण मारन धाईंआ। मंज़ल चढ़या दिसे ना कोए रिषी मुनी, भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। काया मन्दिर अंदर किसे ना उपजे अगम्मी धुनी, आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। जगत विद्या सृष्टी बणी गुणी, परदा ओहला अन्तर ना कोए उठाईआ। माया ममता मोह विच रुली, धीरज धीर नज़र कोए ना आईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे काया कुल्ली, महल अटल सोभा कोए ना पाईआ। मन वासना दृष्टी भुल्ली, सृष्टी इष्ट हक ना कोए मनाईआ। जेहड़ी नाम वस्त दे के आए अनमुल्ली, बिन कीमत मात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरवैर निराकार निरँकार आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो आपणे दीन

मज़्ब, महबूब मुहब्बत विच सुणाईआ। नव सत्त दिसे ग़ज़ब, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब नूं कीता तुअज्जब, हैरानी विच लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ्ठ शिवदवाले गुरुदुआर रिहा कोए ना अदब, सीस जगदीस ना कोए निवाईआ। सच दवारे चले किसे ना कदम, कुदरत दा कादर मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। मन वासना सारे करन तसादम, अदल इन्साफ़ हथ्थ किसे ना आईआ। धुर दे नाम दी निरअक्खर धार पढ़े कोई ना ग़ज़ल, नग़मा नाम ना कोए सुणाईआ। सदी चौधवीं सब दे सिर ऊते कूके अज़ल, काल नगारा रिहा वजाईआ। जा के दीन दुनी दी आदत इबादत विच दयो बदल, कूड़ी क्रिया मेटो कूड़ी शाहीआ। लेखा चुक्के मक्तूल कातिल, कत्लगाह डेरा ढाहीआ। दरगाह साची धाम न्यारा सचखण्ड वखाओ इक्को पतण, जित्थे खेवट खेटा बैठा बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण जन भगतां आवे पैज रखण, वेस अनेका आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर नौ खण्ड पृथ्मी वेखो दीप सत्त, सति सतिवादी आप जणाईआ। किसे हिरदे अंदर रही ना ब्रह्म मत, ब्रह्म पारब्रह्म मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अग्नी तत सर्ब जलाईआ। निज नेत्र ज्ञान खुल्ले किसे ना अक्ख, प्रतख मिले ना प्रभ गोसाँईआ। आत्म परमात्म तों होई वक्ख, परदा दूई ना कोए चुकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार खोल्या हट्ट, मन वणजारा तृष्ना रिहा वरताईआ। दूई द्वैत शरअ शरायत मेटे कोई ना फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। दुरमति मैल चार वरन अठारां बरन सके कोई ना कट, कटाकश तीर ना कोए चलाईआ। धुर फ़रमाना सच संदेसा साचा दयो दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा नर नरेशा निरगुण इक्को इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो जा के मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवार, धरनी धरत धवल उपर खोज खुजाईआ। पंडत पांधे मुला शेख ग्रन्थी पन्थी पावो सार, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के खोज खुजाईआ। सब दे अन्तर काम क्रोध लोभ मोह हँकार, सति विच सति ना कोए समाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद चार, पुराण अठारां ढोला गाईआ। गीता ज्ञान कर उच्चार, अठारां ध्याए डंक वजाईआ। अञ्जील कुरानां बोल नाअर, हकीकत हक हक सुणाईआ। बाणी बाण अणयाला दस्सण जगत हठयार, मन का मणका ना कोए भवाईआ। सब दे अन्तर विसरया करतार, कुदरत दा मालक नज़र किसे ना आईआ। चार कुण्ट दिसे विभचार, झगड़ा प्या पुरख नार, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म मिल के होए ना कोए मंगलाचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो

कलयुग जा के कूड़ पखण्ड, चारों कुण्ट नज़री आईआ। आत्म सब दी होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाहीआ। धुर दा मिले ना परमानंद, निजानंद ना कोए रसाईआ। जोती नूर ना चमके चन्द, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोए ना छन्द, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। दूई द्वैती ढाहे कोई ना कंध, परदा अंदरों ना कोए उठाईआ। काया चोली चढ़े किसे ना रंग, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। आवण जावण लख चुरासी मुके किसे ना पन्ध, लेखा अगला ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कलयुग अंदर सतिजुग दस्सो साची धार, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। साचा शब्द बोलो इक्क जैकार, नाम निधाना देणा सुणाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान झगड़ा रहे ना विच संसार, आत्म ब्रह्म ब्रह्म वेता जणाईआ। मानव मानव होवे इक्क प्यार, मनुक्खता विच मनुक्ख करे ना कोए लड़ाईआ। सब दा इष्ट होवे एका एकँकार, अकल कलधारी इक्को नज़री आईआ। जिस दा नूर ज़हूर तेई अवतार, ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द जोत करे रुशनाईआ। भगत अठारां दे आधार, सूफ़ी सन्त मेल मिलाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी सर्ब जीआं दा सांझा यार, परवरदिगार नूर खुदाईआ। सतिजुग साचा सच धर्म करे जैकार, कलयुग कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहीआ। हुक्म अंदर हुक्म वरते अगम्म अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी ब्रह्म ब्रह्माद देवणहार सच्चा फ़रमान, हुक्मरान इक्को नज़री आईआ।

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत २ जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड डूमवाली ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो कलयुग कूड़ी क्रिया वेखो समाज, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खोज खुजाईआ। मायाधारी भरमे भुल्ले सन्त साध, मुल्ला शेख़ पंडत पांधा हकीकत विच ना कोए समाईआ। दुरमति मैल अंदरों धोवे कोई ना दाग़, बाहरों बग बप्पड़ा रूप सर्ब वटाईआ। मन वासना चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दी दृष्टी करे नाच, सांतक सति ना कोए वरताईआ। हउमे हंगता लग्गी आंच, तन वजूद रही जलाईआ। दवारे वसे किसे ना साच, जूठ झूठ घर घर डेरा लाईआ। सतिगुर शब्द सके कोई ना वाच, रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे ना कोई अन्धेरी रात, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो दस्स के आए गाथ, सो सिमरन हिरदे

हरिजन ना कोए वसाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म मिले ना कोए पुरख अबिनाश, करनी दा करता नाता ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हुक्मे अंदर हुक्म समझाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो जा के वेखो बिन अक्खां अक्ख खोल्ह, धुरदरगाही आप जणाईआ। साचे कंडे तुल्या ना कोए तोल, आप आपणा बैठे गवाईआ। जो मेरे नाम दा मार के आए ढोल, दीन दुनी जगत सुणाईआ। सो वस्त रही ना किसे कोल, काया माटी भाण्डे ख़ाली नज़री आईआ। कलयुग मन वासना मारया रोल, ममता विच दुनी कीती हल्काईआ। इस दा भेव कोई समझ ना सके पांधा रौल, मुल्लां शेख़ां रमज़ ना कोए लगाईआ। तुसीं हर घट अन्तर जा के वेखो मौल, धुर दा मौला हुक्म सुणाईआ। जो भविख्तां विच सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तुहाडे नाल कीता कौल, इकरारनामा रिहा वखाईआ। झगड़ा प्या उपर दीन दुनी धौल, धरत धवल धर्म दा राह तकाईआ। कोई करे ना भार हौल, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो धरती दी सुणो कूक, कूक कूक सुणाईआ। जगत तृष्ना दिता फूक, अग्नी तत तपाईआ। सांत रिहा ना चार कूट, कूड़ कुटम्ब वज्जी वधाईआ। सति धर्म कर गया कूच, कूचा गली देवे गवाहीआ। प्रेम रिहा ना किसे काया पंज तत भूत, भविख्त आपणी शहादत रिहा भुगताईआ। तुहाडा प्रेम प्यार सब दे अंदरों गया रूठ, करवट सके ना कोए बदलाईआ। चार वरन अठारां बरन नाता जुड़या जूठ झूठ, पंच विकारा नाल हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जा के वेखो मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, बचया रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा वेखो तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। साधां सन्तां वेखो धीरज जत, सति सतिवादी रिहा समझाईआ। मानव जाती वेखो ब्रह्म मत, कवण प्रभ नूं मिल के आपणा रंग बणाईआ। मन वासना अग्ग लग्गी वेखो अठ्ठ तत, तत्व तत रही जलाईआ। हुक्म देवे पुरख समरथ, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आ के मैनूं दस्सणा सच्च, परदा ओहला ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो उठ के जाओ नठ, वेला वक्त गया आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेड़ा करना भठ्ठ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सति धर्म दा नवां खोल्हणा हट्ट, सतिजुग साचा इक्क उपजाईआ। चार वरनां अठारां बरनां इक्को नाम देणा दस्स, बिना पुरख अकाल दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। जो गोबिन्द दे के आया मत, सो परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण

सरगुण आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जाओ बिना कदम, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। तुहाडा नहीं कोई तत्तां वाला बदन, जोती शब्दी धार खेल खिलाईआ। जा के मातलोक वेखो वतन, बेवतनां दयो समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लग्गी अग्न, अन्त अख़ीर ना कोए बुझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ करन बहु यतन, यथार्थ धुर दा रंग ना कोए रंगाईआ। बिन किरपा अन्तर आत्म लग्गे किसे ना लग्न, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए रुशनाईआ। कूड़ नगारे हर घट अंदर वज्जण, सति धर्म ना कोए शनवाईआ। सच प्रेम दी इक्को जा के दस्सो बन्दन, बन्दगी सजदा मेरा नाम समझाईआ। दीन दयाल साहिब पुरख अकाल सदा बख़्शंदन, बख़्शणहार बख़्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर हुक्मे अंदर करे ना कोए उलँघण, भाणे विच सारे बैठण सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, सति धर्म दा जणाए इक्को भजन, भाओ भाव भगती आपणे विच्चों प्रगटाईआ।

४८३ ★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत २ जागीर कौर दे गृह पिण्ड खोपर ★ ४८३

२० २०

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो करो सलाह, मशवरा निरगुण धार जणाईआ। सृष्ट सबाई दस्सो राह, रहिबर हो के परदा देणा चुकाईआ। दीन दुनी बणो मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सच जैकारा देणा सुणा, अनसुणत राग अलाईआ। घर घर अन्तर वेखणा जा, निरंतर पन्ध मुकाईआ। चार जुग दी बाणी बणे गवाह, शहादत धुर दी दए भुगताईआ। लेखा वेखणा थाउँ थाँ, थान थनंतर फोल फुलाईआ। पुरख अकाला रिहा दृढ़ा, दीन दयाला दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा आप जणाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां हुक्म देवे साख्यात, ज़ाहर ज़हूर करे शनवाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखो रूह बुत्त माटी ख़ाक, तन वजूद खोज खुजाईआ। कवण दवारे खुल्हा ताक, कवण गृह वज्जे सच वधाईआ। कवण करे कूड़ बलास, कवण ममता विच हल्काईआ। कवण रखे इक्को आस, प्यास प्रेम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पुरख अकाला दीन दयाला ठाकर स्वामी धुर दी धारा इक्क जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहिण देणा कोई ना परदा, ओहला नज़र कोए ना आईआ। हाल वेखणा गृह गृह घर घर दा, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। कौण साचा मंत्र नाम पढ़दा, हिरदे हरि वसाईआ। कौण भय विच फिरे डरदा, सीस जगदीश झुकाईआ। कौण

अग्नी तत होवे सड़दा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। कौण जगत विकारे होवे लड़दा, खुदी तकब्बर जोड़ जुड़ाईआ। कौण मेरी मंज़ल होवे चढ़दा, साचे पौड़े आपणा कदम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा खेल इक्क जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर किसे दी रहिण ना देणी खुदी, ख़ादम वेखणे चाँईं चाँईंआ। पतित रहे कोई ना बुद्धि, विवेकी भेव देणा खुलाईआ। अन्तर फोल के वेखणी रुची, परदा ओहला आप उठाईआ। कलयुग धार रहे ना दूजी, दुतीआ भाउ देणा मिटाईआ। धुर प्यार विच रहे कोई ना दुखी, दुःख सुख विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो धुर दी सिख्या, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। पूरब वेखो आपणा लिख्या, भविख्त दए गवाहीआ। मन वासना जग जीव कवण जित्तया, जागरत जोत विच समाईआ। पुरख अकाल मन्न पितया, पतिपरमेश्वर ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा साचा वर, हरि साजण दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उठ के जाओ जलदी, जल थल महीअल वेख वखाईआ। दीन दुनी अग्ग बलदी, बालू रेत रही तपाईआ। मन वासना सब नूं छलदी, अछल छल समझ किसे ना आईआ। धार दस्सो निहचल धाम अटल दी, मार्ग इक्को इक्क वखाईआ। औध मुक्के अन्तिम कलयुग कूड़े कल दी, अग्गे अवर ना कोए वड्याईआ। धार प्याओ अमृत रस अगम्मी जल दी, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। किसे ख़बर नहीं अज्ज कल्ल दी, भरमां विच्चों भरम ना कोए मिटाईआ। जो आत्म परमात्म नाल रलदी, तिस दा रस्ता देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल जाणे जल थल दी, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २५ माघ शहिनशाही सम्मत २ बलबीर सिँघ सरेस वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

कलयुग कूड़ी क्रिया वेखो करनी, आपणी कार कमाईआ। प्रभ दी पए कोए ना सरनी, ओट इक्क ना कोए तकाईआ। झगड़ा प्या वरनी बरनी, ब्रह्म मति ना कोए समझाईआ। आत्म परमात्म मिले तुक ना पढ़नी, शास्त्र सिमरत ढोले गाईआ। मंज़ल हकीकी मिले ना चढ़नी, जगत वासना पन्ध ना कोए मुकाईआ। साची तारी तरे ना कोई तरनी, जगत सागर पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वेख वखाईआ। साचा खेल कलयुग कूड़ी धार, कूट कूट कुरलाईआ। कूड़ कूड़ पसार, कुटम्ब दए दुहाईआ। किसे मिले ना मीत मुरार, हरि सज्जण धुर

दरगाहीआ। दीन दुनी रोंदी ज़ारो ज़ार, गिरयाज़ार लोकाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, भरमीआं भरम भुलाईआ। मस्तक धूढ़ी किसे ना मिले छार, टिक्का नाम ना कोए लगाईआ। सच दवारे देवे ना कोए आधार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप खिलाईआ। साचा खेल खेलण जोग, जुगती आपणी आप बणाईआ। हउमे ला के सृष्टी रोग, हंगता विच फसाईआ। घर घर दे के चिन्ता सोग, ग़मी विच तपाईआ। साची मिले ना किसे मौज, हरि का प्रेम ना कोए कमाईआ। बुद्धी होए ना कोई बोध, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। मन वासना दुनिया चुगे चोग, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। पुरख अकाल मिले किसे ना ओट, साची सरन ना कोए लगाईआ। बिन हरि किरपा अन्तर निकले किसे ना खोट, खोटे खरे ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खेले निरगुण जोत, जगत जुग जग जीव समझ किसे ना आईआ।

★ २५ माघ शहिनशाही सम्मत २ चरणजीत कौर दे गृह बहाउँदी ज़िला हिसार ★

गुर अवतार पैगम्बर पूरब वेखो भविख्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार आप जणाईआ। भेव अभेदा खोल्हो सबाई सृष्ट, परदा ओहला काया माटी तन वजूद रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म समझाउणा एका इष्ट, इष्ट देव आत्मा परमात्म नाल मिलाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहे ना कोए भृष्ट, बुध बिबेक देणी कराईआ। निज नेत्र निज घर अंदर मन्दिर वड़ के लैणा वेख, परदा ओहला काया चोला देणा उठाईआ। भरमे भुल्ला रहे ना कोई पंडत पांधा मुल्लां शेख़, जगत विद्या वासना विच ना कोए हल्काईआ। चार कुण्ट दहि दिशा लख चुरासी मन्दिर वड़ के वेखो जा दरवेश, दर दर घर घर एका अलख जगाईआ। जन भगतां संग करना अगम्मा हेत, गुरमुख गुरसिख हरिजन सूफ़ी सन्त फ़कीर आपणे रंग रंगाईआ। जो सच प्रीती अंदर आपणा आप कर के बैठा भेंट, भजन बन्दगी सिमरन पूजा आपणे अन्तर रिहा दसाईआ। जिस नूं जोती जलवा निरगुण धारा देणा तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंजां तत्तां करनी रुशनाईआ। आत्म परमात्म सुहाउणी साची सेज, शब्द अनादी धुन आत्मक राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणा भविख्त लओ विचार, मन मति बुद्धी तों परे दसाईआ। जो लिख के आए सदा जुग चार, चौकड़ी

आपणा हुक्म वरताईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, दो जहान देण गवाहीआ। हुक्म संदेसा सुणो श्री भगवान, हरि करता आप दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया मेटो निशान, सच धर्म दा मार्ग दयो लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दृष्टी अंदर दे ज्ञान, एका दूजा भउ देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर ठांडा सीता, धुर दा मीता इक्क इकल्ला एकँकार करनी आपणी आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग दीन दुनी बदल दयो रीत, मन्दिर मसीत भेव खुल्हाईआ। सच सुनेहड़ा दस्सो गीत, गोबिन्द गुर गुर इक्क जणाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। त्रैगुण माया विच्चों करना अतीत, त्रैभवन धनी हुक्म सुणाईआ। काया माटी तन वजूद करना ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मन वासना सब दी लैणी जीत, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। एका रंग रंगाउणा हस्त कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीन दयाला पुरख अकाला परवरदिगार सांझा यार दरगाह साची मुकामे हक आपणी साची कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के करो ख्याल, हुक्म हुक्म विच जणाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना कोए दलाल, शब्द विचोला इक्क बणाईआ। हकीकत दस्सणी हक हलाल, बेमिसाल धुर दा राह समझाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदल देणी चाल, चाल निराली इक्क वड्याईआ। जो सन्त सुहेले सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धुर दे नाम दी घालणा आए घाल, कीती घाल लेखे लैणी लगाईआ। सचखण्ड दुआर वखाउणा इक्को धर्मसाल, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर हरि आपणा इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के लैणा खोज, हरि खोजी रिहा जणाईआ। प्रेम प्यार दा दस्सणा चोज, चोजी प्रीतम दए वड्याईआ। निज नेत्र खोल्हणा लोच, लोइन इक्को देणा वखाईआ। आत्म परमात्म देणी मौज, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्सणा इक्क सलोक, सोहला धुर दा इक्क दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोक, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। चौदां विद्या सके कोई ना रोक, अलिफ ये वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सचखण्ड दवारा दस्सणा इक्को धुर दा कोट, बंक दवारा सच्चा सोभा पाईआ। नाम निधाना घर घर अंदर लाउणी चोट, सोई सुरती जगत उठाईआ। निर्मल प्रकाश करना जोत, जोती जाता रिहा जणाईआ। कलयुग अन्त आलणयों कलयुग जीव डिग्गे बोट, शब्दी धार कर प्यार लैणे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लोक परलोक, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे आपणा हुक्म सुणाईआ।

★ २५ माघ शहिनशाही सम्मत २ फुलजीत सिँघ दे गृह चंधड़ कलां ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो जा के वेखो मेरे दास, जो दास्तान मेरी रहे सुणाईआ। जिन्हां दे अंदर गुप्त ज़ाहर वसां पास, दिवस रैण घड़ी पल आपणा रंग रंगाईआ। निर्मल नूर जोत करां प्रकाश, अन्ध अन्धेरा कूड़ मिटाईआ। शब्द अगम्मी सुणावां नाद, अनहद नादी धुन उपजाईआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म हो के नज़री आईआ। बिन रसना जेहवा करावां याद, सिफ्तां विच सिफ्त वड्याईआ। कूड़ी क्रिया कर बरबाद, सति सच झोली पाईआ। त्रैगुण बुझावां आग, अग्नी तत गवाईआ। घर मेल मिलावां स्वामी कन्त सुहाग, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। साचा खेड़ा होवे आबाद, रुत्त बसन्त आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क समझाईआ। जन भगत वेखो मेरा दास दासी, दहि दिशा खोज खुजाईआ। देवे हुक्म पुरख अबिनाशी, करनी दा करता बेपरवाहीआ। मण्डल मण्डप वेखो रासी, दो जहानां खोज खुजाईआ। हर घट अंदर मंज़ल चढ़ो घाटी, नव दवारे पन्ध मुकाईआ। अमृत बूँद वेखो स्वांती, निजर झिरना झिरे किस किस थाँईंआ। मेल मिलावा कमलापाती, पति पतवन्ता धुरदरगाहीआ। नाम संदेसा देवो धुर दी पाती, निरअक्खर अक्खरां विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ। दासी दास वेखो मेरा भगत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिस दा सुहञ्जणा होवे वक्त, वेला वक्त दए वड्याईआ। लेखे लग्गी होवे बूँद रक्त, पंज तत मिले वड्याईआ। अन्तर होवे इक्को वस्त, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। बिन अक्खां निज नेत्र देणा दरस, तृष्ना कूड़ जगत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जो जन होवे प्रभ का दास, आप आपा भेंट कराईआ। चरण कँवल मिले निवास, जगत भूमिका रहे ना राईआ। लेखा मुके पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। अन्तिम लहिणा देणा देवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता हो सहाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, प्रकाश प्रकाश विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। गुरमुख दास साहिब सतिगुर दा चेला, चेला गुर इक्को रंग समाईआ। सुहञ्जणा होवे गृह मन्दिर वेला, वाहवा वज्जे नाम वधाईआ। धाम वखाए इक्क नवेला, जिस घर बैठा सोभा पाईआ। आदि निरँजण चाढ़ के तेला, जोत निरँजण दए वड्याईआ। लेखा जाणे इक्क इकेला, एकँकारा नूर खुदाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण सदा सज्जण सुहेला, संगी साथी इक्क अख्वाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत बेला, समुंद सागर लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। जो सन्त

सुहेला साहिब सतिगुर पुरख अकाल दा बणे दास, दस्त बदस्त लहिणा दए चुकाईआ। पूरब जन्म कराए याद, लेखा धुर दा आप दृढ़ाईआ। दुनी विच्चों बदल देवे समाज, आत्म परमात्म भेव खुल्हाईआ। नाम निधान सुणा नाद, अनहद अनरागी राग सुणाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, मानुख मानव दया कमाईआ। परदा लाह के ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक्क उपजाईआ। दास बणन दा जिस अन्तर देवे चा, चाओ घनेरा इक्क समझाईआ। साहिब सतिगुर बणे मलाह, खेवट खेटा धुरदरगाहीआ। लख चुरासी विच्चों लए तरा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, पतित पुनीत लए उठाईआ। लहिणा देणा दए मुका, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। दास बणे जो सतिगुर मीता, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। तन माटी करे ठांडा सीता, अग्नी तत ना लागे राईआ। दया कमाए त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया अंदर सति बदल दए रीता, रीतीवान परदा आप चुकाईआ। लेखे लाए पिछला पूरब जन्म बीता, अग्गे चरण कँवल दए सरनाईआ। साचा कलमा नाम दस्स धुर हदीसा, हज़रत हो के करे इक्क पढ़ाईआ। लहिणा देणा मुका के ऊँचां नीचां, ज़ात अज़ाती आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सुहेला इक्क इकेला एकँकार आपणी कार कमाईआ। दास बणन दा जिस अन्तर प्यार, प्रेमका रूप लए बदलाईआ। तिस दा मेला मिले नर निरँकार, निराकार आपणा जोड़ जुड़ाईआ। काया काअबे खोल्ह किवाड़, कुदरत दा कादर भेव चुकाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। मंज़ल दूर करे दुष्वार, घर ठाकर स्वामी मिल के खुशी बणाईआ। गुरमुख दास संसार सागर होवे पार, निर्मल कर्म उजागर करे हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे विच संसार, महासार्थी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण रथवाही रथ चलाईआ।

★ २६ माघ शहिनशाही सम्मत २ रघबीर सिँघ दे गृह चंधड़ कलां ★

गुर अवतार पैगम्बर साचे भगतां करनी पहचान, कलकाती विच्चों वेख वखाईआ। जिन्हां दे अन्तर इक्क ध्यान, निज नेत्र राह तकाईआ। मालक मन्न श्री भगवान, दर ठांडे सीस झुकाईआ। नाता तोड़ दुनी जहान, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ।

तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाण, सोहँ सच वधाईआ। तिन्हां लेखा मुकाउणा ज़िमी असमान, दरगाह साची सच दवारा देणा जणाईआ। झगड़ा रहे ना आवण जाण, चुरासी पन्ध मुकाईआ। सच वखाउणा मन्दिर मकान, जिस गृह निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। अमृत रस देणा पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गवाईआ। चरण प्रीती धुर दी नीती देणा दान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। झगड़ा रहे ना जगत शैतान, मन वासना ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगत वेखो लोकमात जग, जगजीवण दाता रिहा जणाईआ। जो राह तक्कण सूरे सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह ध्यान लगाईआ। दरस लोचण उपर शाह रग, नौ दवारे जगत लोकाईआ। मंज़ल हकीकी चढ़ के हद्द, कूड़ी क्रिया डेरा रहे ढाहीआ। धुर दे नाम दा गाउँदे सद, छन्द आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल दी बण गए यद, पुश्त पनाह हथ्थ देणा टिकाईआ। गुरमुख रहिण नहीं देणा कोई अलग्ग, जुग जन्म दा विछड़या लैणा मिलाईआ। सच दवारे शब्दी हुक्म अंदर लैणा सद्द, होका इक्को इक्क सुणाईआ। नाम भण्डारा दे के मदि, मधुर धुन देणी सुणाईआ। शब्द अगम्मी वजा नद, अनहद नादी राग उपजाईआ। बिन रसना जेहवा देणा स्वाद, बूँद स्वांती मुख टपकाईआ। जिस धार विच्चों निकले आदि, अन्त ओसे विच देणा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
४८६ किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर साचे भगतां वेखो मात, धरनी धरत ४८६
२० धवल खोज खुजाईआ। जिन्हां दे अन्तर मेरी याद, निज आत्म ध्यान लगाईआ। बिरहु विच मारन आवाज़, कूक कूक सुणाईआ। २०
ओन्हां दे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के खोल्हणा राज़, परदा दूई रहिण ना पाईआ। पंच विकारा करना बरबाद, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए ना कोए हल्काईआ। झगड़ा मुकाउणा सवाल जवाब, हुक्म इक्को देणा सुणाईआ। शब्द गुरू कर इमदाद, सतिगुर पुरख अकाल देणा मिलाईआ। सचखण्ड दवारा बिना भगतां कदे ना होवे आबाद, दूजा वड़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दी दाद, वस्त अमोलक हथ्थ फड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात सन्त सुहेले लैणे लभ्भ, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जिन्हां दे अंदर दीन मज़्हब दी कोई ना दिसे हद्द, मंज़ल तक्कण बेपरवाहीआ। खुशीआं विच होवण गद गद, गदागर मन ना कोए भवाईआ। प्रेम प्रीती अंदर कूड़ी वासना करनी बध्ध, नाम खण्डा इक्क खड़काईआ। कर प्रकाश मास नाड़ी हड्ड, तत्व तत नूर रुशनाईआ। ओन्हां वड्याई देणी लोकमात जग, सदी चौधवीं खोज खुजाईआ। नाम प्याला देणा मध, अमृत रस देणा चखाईआ। पोह ना सके अग्नी अग्ग, त्रैगुण डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर साचे भगतां अंदर जाणा वड़, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। सच दवारे जाणा खड़, निज घर आपणा कदम टिकाईआ। धर्म दवारा खोल्ह के दर, परदा ओहला देणा चुकाईआ। इक्क जैकारा बोल के हरि, हिरदे अंदर हरि जू देणा प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा प्यार मुहब्बत कर, कर्म कांड दा झगड़ा देणा चुकाईआ। आत्म परमात्म फड़ाउणा लड़, पल्लू धुर दी गंढु बंधाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला जन भगत लैणा वर, नाता धुर दा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा इक्क लिखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गुरमुख गुरसिख कोए ना वेख्यो ग़रीब, जगत माया ना कोए वड्याईआ। उह मेरा नन्हां बच्चा अज़ीज़, जो दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मनुषा जन्म जिस नूं आई तमीज़, तमन्ना कूड़ी गया गवाईआ। इक्को झुका सीस जगदीश, सर सिर आपणा भेंट चढ़ाईआ। इक्को नाम सुणे हदीस, इक्को ढोला रिहा गाईआ। सद बैठा रहे अतीत, त्रैगुण पन्ध मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावे गीत, हरि हिरदे विच समाईआ। मानस जन्म जावे जीत, जग जीवण दाता आपणे रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं शब्द सुनेहड़ा दस्सणहारा ठीक, ठाकर हो के आपणा हुक्म मनाईआ। भगत सुहेला सन्त साजण गुरमुख गुरसिख जिस दे अन्तर निरंतर लग्गी आत्म परमात्म प्रीत, तिस प्रीतम देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ।

★ २६ माघ शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिँघ दे गृह चंधड़ कलां ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर जन भगतां दीन दुनी मेटो सोग, चिन्ता ग़म ना रहे राईआ। जगत नाता तुटे वियोग, कूड़ कुड़यारा पन्ध देणा मुकाईआ। आत्म परमात्म होवे सच संजोग, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। चरण प्रीती दस्स के योग, साची जुगती देणी समझाईआ। भाग लगाउणा काया माटी कोट, बंक दुआर देणा सुहाईआ। धुर दे नाम दी ला के चोट, सोई सुरती देणी उठाईआ। अंदर रहे कोई ना खोट, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। आलणयों डिग्गे उठाउणे बोट, फड़ बाहों गले लगाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा देणा चुकाईआ। अमृत रस देणा अगम्मा भोग, भोग बलासां विच्चों बाहर कढाहीआ। सच दवारे दी बख्शणी मौज, मेला महबूब नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगतां चाढ़ो अगम्मी रंग,

रंगत नज़र किसे ना आईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगां आए मंग, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। तिन्हां माणस जन्म बिरथा मात जाए ना लँघ, मानव परदा देणा उठाईआ। हुक्म देवे सूरा सरबंग, हरि करता धुर दरगाहीआ। सच प्यार मुहब्बत विच बख़्श इक्क अनन्द, अनन्द आत्मा विच्चों प्रगटाईआ। साचा नूरी चढ़े चन्द, रवि ससि तों बिना कर रुशनाईआ। गुरमुखां ख़ुसी होए बन्द बन्द, बन्दी दे बन्धन दयो तुड़ाईआ। सच दवारा वेखणा लँघ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आत्म सेज सुहाउणी पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। करवट लै बदलणी कंड, सनमुख हो के सोभा पाईआ। किरपा करे दीन दयाल साहिब बख़्शंद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा सति सतिवादी आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगत वेखो मेरे चार्तक, जो अन्तर रहे बिल्लाईआ। जा के कूड़ी तृष्ना मेटो तृख, तृप्त दयो कराईआ। सच दुआर मिलयो धुर दे सिख, जो सिख्या अंदर साख्यात प्रभ दा राह तकाईआ। जिन्हां दा लहिणा देणा सचखण्ड दवारिउं दिता लिख, लोकमात सके ना कोए बदलाईआ। ओन्हां दा मालक प्रितपालक एकँकारा इक, अकल कलधारी नज़री आईआ। जो अन्तर आत्म परमात्म हो के करे हित, नित नवित वेख वखाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लहिणा देणा दए नजिठ्ठ, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति पुरख निरँजण रिहा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगतां अंदर तक्को मंज़ल अख़ीर, पौड़ी पौड़ी राह ना कोए वखाईआ। जिस गृह मिले पीरां दा पीर, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। गृह मन्दिर बदल देवे तकदीर, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। साची दस्स आप तदबीर, तरीका तरह तरह समझाईआ। शरअ कट ज़ंजीर, शाम अन्धेरा दए गवाईआ। जिस मंज़ल ते चाड़्हया कबीर, काया कबर विच्चों बाहर कढाहीआ। रविदास दे वेख के पाटे चीथड़ चीर, दरगाह साची दिती माण वड्याईआ। लेखा मुका के शाह हकीर, हज़रत आपणे रंग रंगाईआ। परदा खोल्हो बेनज़ीर, जगत नज़र तों परे देणा वखाईआ। जित्थे सच नाम दी दौलत धर्म ख़ज़ाना जागीर, अतोट अतुट रखाईआ। देवणहारा शाह अमीर, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहे पुरख अकाल जा के वेखो भुक्खे नंगे, विष्नूं सेवा कम्म किसे ना आईआ। ब्रह्मे तेरी ब्रह्म धार करे दंगे, मन वासना नाल लड़ाईआ। क्यों धर्म राए फड़ फड़ टंगे, देवे जगत सज़ाईआ। चुरासी विच्चों खोजो मंदे चंगे, जिन्हां अंदर प्रेम गोसाईंआ। जो रस माणे परम पुरख अनन्दे, सांतक सति विच समाईआ। जा के कटो करमां दे फंदे, कुकर्मी रहिण कोए ना पाईआ। कुछ लेखा लिख्या विच द्वापर संजे, ध्यान

४६१
२०

प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात जा के वेखो जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत जल थल, बनां विच आपणा फेरा पाईआ। क्यों सृष्टी ख़ाक विच गई रल, दृष्टी विच हल्काईआ। रोग सोग किसे ना सके टल, तकदीर सके ना कोए बदलाईआ। कलयुग कलूआ करे छल, मन चंचल नाल मिलाईआ। किसे ना दिसे निहचल धाम अटल, सचखण्ड दवारे सोभा कोए ना पाईआ। क्यों करनी दा करता भुगतावे फल, पूरब लेखा नाल मिलाईआ। क्यों हर हिरदे अंदर जगत अग्नी रही बल, अमृत मेघ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो क्यों दीन दुनी गई भुल्ल, अभुल समझ कोए ना पाईआ। दुक्खां विच गई रुल, सुख साधन ना कोए बणाईआ। मानस जन्म ना पए मुल्ल, साधना साध ना कोए कराईआ। साचे कंडे कोई ना जावे तुल, नाम वणजारा रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां गगन गगनंतरां सुल्हकुल, सही सलामत साहिब सतिगुर इक्को नज़री आईआ।

★ २६ माघ शहिनशाही सम्मत २ आसा सिँघ दे गृह पिण्ड खांग ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर लोकमात लओ तक्क, सन्त भगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ी फ़कीर खोज खुजाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखणा हकीकत हक, लाशरीक परवरदिगार सांझा यार सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म मनाईआ। कवण अन्तर निरंतर हो के मेरा नाम रिहा जप, पुरख अकाला दीन दयाला इक्को राह तकाईआ। हिरदे अन्तर निर्मोह हो के वसाए सच्च, सति सतिवादी सीस झुकाईआ। परदा लाह के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ रूप रिहा बणाईआ। कवण मन वासना जगत तृष्ना रिहा नच्च, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सृष्टी दी दृष्टी वेख सब कुछ आ के देणा दस्स, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। कवण आत्म अन्तर निजर माणे रस, बूँद स्वांती कवण टपकाईआ। धुर दा दर्शन करे निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, आख़र मंज़ल चढ़ के वेखो ढोला गाईआ। कवण कूड़ी क्रिया विके जगत वणजारे हट्ट, परदा ओहला देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ला एकँकार इक्को एक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगत सुहेले लैणे लभ्भ, गुरमुख गुर गुर खोज खुजाईआ। जिन्हां

दे अन्तर वज्जे मेरे नाम दा नद, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। दीन दुनी दा नाता बैठे छड्ड, छुट्टी कूड़ लोकाईआ। होया प्रकाश काया माटी हड्ड, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। मिल के मेल सूरे सरबग्ग, दर घर ठांडे खुशी मनाईआ। नूर तक्कण उपर शाह रग, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। त्रैगुण पोहे कोए ना अग्ग, ममता मोह ना कोए सताईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउँदे धुर दा सद, छन्द इक्को नाम बणाईआ। परम पुरख दी बण के यद, यदी मेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी इक्क जणाईआ। जा के तक्को पैगम्बर गुर अवतार, अवतर धारी आप जणाईआ। कवण हकीकी करे प्यार, लाशरीकी शिरक्त रिहा गवाईआ। साचे कलमे दा करे इज़हार, नाम निधाना धुरदरगाहीआ। मंज़ल दूर कर दुष्वार, दूती दुश्मन अंदरों रिहा भजाईआ। मेला मिला के धुर निरँकार, निरगुण सरगुण विच समाईआ। बिन तेल बाती धुर दा दीआ कर उज्यार, कमलापाती मिल के वज्जे वधाईआ। सो सन्त सुहेला गुरमुख सज्जण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त विच्चों लैणा भाल, गृह गृह अंदर परदा ओहला चुक्क के वेखणा चाँईं चाँईंआ। भेव रहिण देणा ना कोई शाह कंगाल, शहिनशाह सुल्तान मालक ख़ालक प्रितपालक आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं चौदां तबक दिसण बेहाल, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। साची घाले ना कोए घाल, धायल दिसे सृष्टी सिर सिर चोटां खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे लभ्भणे गुरसिख सज्जण, साजण धुर दा आप जणाईआ। जो धूढ़ी करदे मजन, दुरमति मैल धवाईआ। जिन्हां दे अंदर नूरी दीपक जगण, जोती जोत होवे रुशनाईआ। सच प्रीती पुरख अकाल दीन दयाल कोलों मंगण, चरण कँवल मिले सरनाईआ। काया माटी चोला तन वजूद ख़ाकी रंगण, रंगत इक्को देणी वखाईआ। हुक्म देवे सूरा सरबंगन, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी जा के इक्को दस्सो बन्दन, बन्दगी विच मुछन्दगी रहिण कोए ना पाईआ। धुर दी चरण धूढ़ी टिक्का लावो चन्दन, जोत ललाटी कर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग करनी खण्डन, खण्डां पुरीआं विच इक्को हुक्म वरताईआ। किरपा करे दर्द दुःख भय भंजन, ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां इक्को घर वसाईआ। साचे सन्तां नेत्र नाम पाउणा अंजन, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। करे प्रकाश जोत निरँजण, आदि निरँजण परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा मालक दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गुरमुख लैणे जोड़, जोड़ी धुर दी आप बणाईआ। सच प्रीती निभाउणी तोड़, अद्ववविचकार ना कोए अटकाईआ। कूड़ विकारे विच्चों सृष्टी देणी मोड़, मन वासना ना कोए हल्काईआ। करना प्रकाश अन्ध घोर, जलवा नूर

कर रुशनाईआ। ज़ोर रहे ना पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया ममता तृष्न अग्न ना कोए लगाईआ। मानुश रहे ना कोई ढोर, रविदास चमारा दए गवाहीआ। मेरा नाम साची वस्त लै जायो कोल, कुल मालक रिहा सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा डंका वजाउणा अगम्मी ढोल, दो जहानां देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धरनी धरत धवल भार करना हौल, हौली हौली धुर दा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखणे साचे सन्त, सति सतिवादी भेव चुकाइंदा। जिन्हां दा परम पुरख परमात्म इक्को कन्त, कन्तूहल साची सेज सुहाइंदा। साची चोली चाढ़े रंग बसन्त, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे आपणी बाणी धार जणाइंदा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाइंदा। झगड़ा मुका के बहिश्त जन्नत, सचखण्ड दवारा इक्क वखाइंदा। जित्थे खेल करे श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। दूजे करनी पए ना किसे मिन्नत, सिर समरथ हथ्थ आप टिकाइंदा। गुर अवतार पैगम्बरो सदी चौधवीं अन्त अख़ीर प्रेम प्यार मुहब्बत विच सारे कर लओ हिम्मत, हौसला आपणा नाम बन्न्हाइंदा। शरअ शरीअत विच करे कोई ना इल्लत, आलम फ़ाज़ल भरमे भरम ना कोए भुलाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार सचखण्ड दवारे सारे करन पुरख अकाल दीन दयाल अग्गे मिन्नत, निउँ निउँ दर ठांडे सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ खुआरी मेटणी ज़िल्लत, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगत उधारना तेरी सिफ्त, महिमा अगणत सके ना कोए गाईआ।

★ २६ माघ शहिनशाही सम्मत २ बीबी निहाल कौर दे गृह कमाल पुर ज़िला लुधियाणा ★

हरि किरपा होए सच्चा सन्बंध, गुर शब्द दए वड्याईआ। मेहरवान महबूब देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, संसा काया मन्दिर अंदर दए गवाईआ। नाम डोरी टुट्टी प्रीत गंढु, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म होए सहाईआ। मेट के तृष्ना तम, काम क्रोध दए चुकाईआ। झगड़ा रहे ना ख़ुशी ग़म, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। जिन्हां दे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के करें आपणा कम्म, दामन हो के ज़ामन हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित आत्म परमात्म नाता निरगुण सरगुण साची धार बंधाईआ। पुरख अकाला देवे शक्त, शख़्सीअत अंदरों दए बदलाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा वेला वक्त, नित नवित खेल खिलाईआ। दया कमावे साचे भगत, भगवन आपणा

रंग चढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, दृष्टी अंदरों दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मेला लए मिलाईआ। सो पुरख निरँजण करनहारा मिलाप, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। मेहरवान हो के देवे आपणा जाप, जगजीवण दाता परदा ओहला दए उठाईआ। त्रैगुण माया मेटे ताप, तृष्ना तृप्त दए कराईआ। रूह बुत्त आपे करे पाक, पतित पुनीत बणाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर होवे साथ, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। आत्म परमात्म करे मेला, मिलणी जगदीश आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को रंग रंगाए गुरू गुर चेला, गोबिन्द आपणी दया कमाईआ। साहिब स्वामी सदा सुहेला सज्जण इक्को इक्क अखवाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल अवेला, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। आत्म परमात्म मेलण दा ढंग, हरि करता आप दृढ़ाईआ। अंदर प्रेम प्रीती चाढ़ के रंग, तृष्ना सच वल वधाईआ। सो आत्म निरगुण निरवैर कोलों मंगे मंग, आपणी झोली आप फलाईआ। देवणहार सूरा सरबंग, सहिजे सहिज दए वरताईआ। कूड़ वासना रहे ना कोए गंद, परमानंद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा अछल अछेदा घर साचे आप खुल्हाईआ। आत्म देवे आप प्यार, मुहब्बत इक्क जणाईआ। चोट अगम्मी मारे निरँकार, निरगुण निरवैर आप उठाईआ। जुग चौकड़ी खेल करनेहार, करता पुरख बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, दस्स के आपणी धार, धर्म दवारा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर लए जुड़ाईआ। पुरख अकाल कहे सो आत्म जुड़दा, जिस जोड़ी धुर बणाईआ। एह खेल अगम्मी शब्द सतिगुर दा, जिस दे हथ्थ दिती वड्याईआ। उह लहिणा देणा मुकावे अन्ध घोर दा, घोर अन्धेर करे रुशनाईआ। लेखा मुकावे मन ठग चोर दा, चौरसत्यां विच्चों बाहर कढाहीआ। हुक्म दृढ़ाए आपणे ज़ोर दा, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। हिरदे अंदर आपे बौहड़ दा, बौहड़ी करदे लए छुडाईआ। जिन्हां नूं आपणे भाणे अंदर तोरदा, तुरीआ तों परे लए मिलाईआ। एह लेखा धुर संयोग दा, जुग चौकड़ी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बिधी आप समझाईआ। साची बिधी सतिगुर फ़रमान, फ़ुरने अंदरों बन्द कराईआ। चरण प्रीती इक्क ध्यान, बेनज़ीर नज़र दए उलटाईआ। आत्म मिलावा होवे साचे काहन, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। सुरती मेला धुर दे राम, काया बन विच्चों आप कराईआ। पैगम्बरां वाला अगम्म पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे आप सुणाईआ। निरगुण सरगुण सतिनाम, वाहवा गुरू आप प्रगटाईआ। सतिजुग बदल देवे विधान, धुर दी करनी कार कमाईआ। मन तों परे इक्क निशान, सहिजे दए प्रगटाईआ।

बिन अक्खरां दे ज्ञान, अक्खीआं दी अक्ख खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा नाता विच जहान, जीवण विच्चों जीवण दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म मिलण दा मिलाप आदि जुगादी आप, शब्द दा प्रताप, अगम्म दा वाक, वाकिफ़कार करनी दा करता, कुदरत दा मालक, ख़लक दा ख़ालक, दृष्ट दा इष्ट, सृष्ट दा राह, आत्म दा मलाह बेपरवाह आपणे नाल जुड़ाईआ।

★ २७ माघ शहिनशाही सम्मत २ हरचरण कौर दे गृह पिण्ड रौली ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर सृष्ट सबाई वेखो आप, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। कवण गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत देवे धुर दा साथ, सगला संग बणाईआ। कवण आत्म परमात्म जपे जाप, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। कवण रूह बुत्त करे साफ़, पतित पुनीत रूप वटाईआ। कवण बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, निज नेत्र अक्ख उठाईआ। कवण कूड़ी क्रिया जूठ झूठ नाता जोड़ सज्जण साक, माया ममता विच हल्काईआ। कवण मन वासना होया गुस्ताख, भय भउ ना कोए रखाईआ। कवण जगत विकारे विकया हाट, जूठ झूठ झोली पाईआ। जा के वेखो पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड ध्यान लगाईआ। कवण धुर दा शब्द रिहा वाच, हरि हिरदे विच टिकाईआ। कवण सेवक बण के धुर दा दास, धर्म दवारे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआर एकँकार आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सृष्ट सबाई वेखो हालत, भेव अभेदा दयां जणाईआ। सच करे ना कोए इबादत, बन्दगी विच बन्दा ना कोए समाईआ। ममता मोह लग्गी अलामत, आलम उल्मा सच अमल ना कोए कमाईआ। धुर दा नाम मिले ना किसे नयामत, अमृत रस निजर झिरना बूँद सवांत ना कोए प्याईआ। कूड़ी क्रिया करे बग़ावत, बग़लगीर कूड़ लोकाईआ। सति धर्म पई अदावत, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। सदी चौधवीं सब दे सिर ते कूके कयामत, काल नगारा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा वेखो जा के धर्म, सिदक ईमान नज़र कोए ना आईआ। मन वासना सृष्टी दृष्टी अंदर होया भरम, शरअ द्वैत पन्ध ना कोए मुकाईआ। जन्म कर्म दा पूरब लेखा चुक्के ना किसे वरन, बरन अठारां रहे कुरलाईआ। दरगाह साची हक मुकाम मिले कोई ना सरन, सरनगति मातलोक ना कोए जणाईआ। सच दवारा दिसे ना कोए सच्चा चरण, चरणोदक

रस मुख ना कोए चुआईआ। नेत्र खुल्लया नहीं किसे हरन फरन, कलयुग जीव जंत साध सन्त रहे कुरलाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी अक्खरां वाले ढोले पढ़न, निरअक्खर वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा वेखो भोग, कामना विच लोकाईआ। साचा दिसे ना कोए संयोग, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। ब्रह्म धार पारब्रह्म नालों होया वियोग, विछड़यां अग्गे ना कोए मिलाईआ। साचा गाए ना कोए सलोक, सोहला हरि ना कोए समझाईआ। झगड़ा प्या चौदां लोक, चौदां तबक रिहा कुरलाईआ। चौदां विद्या करे कोए ना खोज, अनुभव परदा ना कोए उठाईआ। सच दवारे माणे कोए ना मौज, मजलस हक ना कोए वखाईआ। हउमे हंगता सृष्टी दृष्टी अंदर लग्गा रोग, द्वैत दूर ना कोए कराईआ। नाम निधान रस मिले किसे ना चोग, चुग़ली निंदया अंदरों बाहर ना कोए तजाईआ। सच प्रीती बख्शे कोए ना जोग, जगत जोगीशर नज़र कोए ना आईआ। भाग लावे ना कोई बंक दवारी कोट, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए वड्याईआ। शब्द लग्गे ना किसे चोट, चोरी ठग्गी सारे रहे कमाईआ। नज़र ना आए किसे निर्मल जोत, वरन गोत पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
४६७ करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो दीन दुनी दा दर्द, दुक्खां ४६७
२० विच रोवे लोकाईआ। सच बेनन्ती सुणे कोए ना अरज़, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। कलयुग रिषी मुनी मन वासना रख २०
के ग़रज़, घर बार रहे तजाईआ। एह खेल प्रभ दा असचरज, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। आपणी भविख्तां वाली वेखो फ़रद, जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दिती समझाईआ। सदी चौधवीं शरअ कसाई होवे करद, तिक्खी धार हरि दृढ़ाईआ। कोई ना मेटे दीन दुनी गर्द, अन्ध अन्धेर ना कोए चुकाईआ। योद्धे सूरबीर मर्दाने बणो मर्द, लोकमात मारो झात वेखो थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा वेखो झगड़ा, मानव मानव करे लड़ाईआ। मूर्ख मुग्ध होया जिज्ञासू सगला, जागरत जोत ना कोए जगाईआ। लेखा जाणे ना कोए अगला, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। सच वस्त नाम अमोलक किसे हथ्थ ना आवे जंगला, जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत सारे रोवण मारन धाईंआ। किसे काया गढ़ होवे ना चार मंगला, गीत गोबिन्द ना कोए शनवाईआ। सच डण्डावत समझे कोए ना बन्दना, सईयदे विच सीस जगदीस ना कोए निवाईआ। कायनात सृष्ट सबाई अन्तर मिले किसे ना परमानंदना, निजानंद दा रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुरदरगाही रिहा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो दीन मज़्ब सारे रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सच प्रकाश दिसे किसे ना लो, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। अगला लेखा समझे ना को, कूक कूक रहे कुरलाईआ। दुरमति मैल सके कोए ना धो, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। अमृत रस निजर झिरना सके कोए ना चो, चोर यार ठग्ग विकार घर घर डेरा लाईआ। सृष्टी नालों करे ना कोए निर्मोह, मुहब्बत प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। आत्म परमात्म सके कोए ना छोह, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना एका राणा एकँकार इक्को इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के वेखो काया मन्दिर, मानव जाती खोज खुजाईआ। परदा चुक्को अन्धेरी कंदर, निरगुण नूर करो रुशनाईआ। बजर कपाटी तोड़ो जंदर, ताला रहिण कोए ना पाईआ। मनुआ दहि दिशा भज्जे ना बन्दर, बन्दगी इक्को देणी समझाईआ। आत्म रस देवो परमानंदन, परम पुरख समझाईआ। धुर दी प्रीत टुट्टी सारे गंढुण, नाम गंढु देणी पवाईआ। देवे हुक्म सूरा सरबंगन, शाह पातशाह शहिनशाह आप जणाईआ। सच हुक्म दी हुक्म अंदर गुर अवतार पैगम्बर करे ना कोए उलँघण, भाणे अंदर साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित साहिब सुल्तान सूरा सरबंगन, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार, जल्वागर नूर खुदाईआ।

★ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदा सीस झुकाईआ। सचखण्ड निवासी आदि जुगादी एकँकार, सो पुरख निरँजण तेरी बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण तेरा वेख ठांडा दरबार, एकँकार वज्जे वधाईआ। आदि निरँजण तेरा अगम्म अथाह जोत नूर उज्यार, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। श्री भगवान तेरा हुक्म सदा सिक्दार, पारब्रह्म तेरा भेव कोए ना आईआ। शब्दी सुत तेरा दुलार, दूल्हा धुर दा नजरी आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। असीं चार जुग दे पनहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। तेरा नाम संदेसा देंदे रहे वारो वार, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। नाम अगम्मी बोलदे रहे जैकार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव खुल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा इज़हार, सिफ्तां विच सोहले ढोले राग अल्हाईआ। चार कुण्ट

दहि दिशा फिरदे रहे विच संसार, पृथ्म पृथ्मी उपर सेव कमाईआ। लेखा वेखदे रहे लख चुरासी जीव जंत अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी तेरी इक्क सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण अन्त अन्त इक्क निमस्कार, बेअन्त सीस जगदीस झुकाईआ। असीं निकलीए तेरी विच्चों धार, जनण वाली नज़र कोए ना आईआ। पंज तत होवे ना कोए आकार, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेखीए अगम्म अपार, अपरम्पर तेरी सेव कमाईआ। तेरा हुक्म फ़रमाना धुर दरबार, दरगाह साची नज़री आईआ। मुकामे हक हक इकरार, अकल कलधारी तोड़ निभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो संदेसा भविख्तां विच दे के आए पुरख अकाल, साहिब स्वामी तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरे आदि जुगादी बरदे, बन्दगी विच सदा सीस निवाईआ। असीं सेवक तेरे घर दे, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। ना जम्मदे ना मरदे, जीवण मरन रूप ना कोए वटाईआ। तेरा नूर हो के काया तत सरीर अंदर वड़दे, काया माटी सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण निरवैर ढोला पढ़दे, दूजा गीत ना कोए अलाईआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशन अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी सेजा चढ़दे, दूजा कन्त ना कोए हंढाहीआ। निरवैर निराकार निरँकार मूर्त अकाल तेरा दर्शन करदे, दूजी दीद नज़र ना आईआ। मालक रहे निहचल धाम अटल दे, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। तेरे हुक्म अंदर सदा रहे पलदे, बिरध बाल जवान रूप ना कोए बदलाईआ। अन्त वेखीए खेल कलयुग कल दे, अकल कलधारी तेरे अग्गे दुहाईआ। परदा लाह दे महीअल जल थल दे, टिल्ले पर्बत चोटी समुंद सागर डूँग्घी धार भँवर तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, गृह मन्दिर मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक हाज़र हज़ूर, नबी रसूल तेरी शरनाईआ। गुर अवतारां कर कबूल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। चरण कँवल दे दे आपणी धूल, धूढ़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। तेरा आदि समझया ना किसे मूल, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तूं सचखण्ड निवासी कन्त कन्तूहल, हरि करता धुरदरगाहीआ। जुग बदलणा तेरा असूल, असलीअत आपणे विच्चों प्रगटाईआ। तेरा नाम शब्द हुक्म माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सदी चौधवीं कोए ना जाए भूल, अभुल देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर पुरख समरथ, साहिब स्वामी तेरी ओट तकाईआ। निरगुण धार निरगुण

धारों कर वक्ख, लोकमात बन्धन पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहानां गा के आईए जस, सिफ्तां विच तेरा राग अलाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अंदर खोल के आईए अक्ख, प्रतख तेरा नूर दरसाईआ। मन वासना तेरे नाम करीए वस, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। सति धर्म दा खोलीए हट्ट, चार वरनां इक्को वस्त वरताईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश द्वैती रहे कोए ना वट्ट, हद्द हदूद वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सतिजुग साचा मार्ग आईए दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। हकीकत विच्चों तेरा लभ्भे हक, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भगत सुहेले गुरमुख सन्त साचा राह रहे तक्क, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी मेहरवान महबूब मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर आओ नेड़े, सहिजे दयां जणाईआ। पहलों दीन मज़्हब दे छड्डो झेड़े, दुतीआ भाउ ना कोए रखाईआ। निरगुण धार वसो मेरे खेड़े, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जेहड़ा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हकीकत हक नबेड़े, कूड़ी क्रिया डेरे ढाहीआ। सो स्वामी अन्तरजामी लेखा जाणे ज़ाहर गुप्त अन्धेरे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर आओ अग्गे, बिन कदमां कदम उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर नेत्र नीवें अग्गे वधे, बिन चरणां सीस झुकाईआ। निरगुण धार दीपक जगे, जोती जोत होवे रुशनाईआ। कोई करे ना किसे नाल दग़े, जगत फ़रेब ना वण्ड वण्डाईआ। तुसीं सारे मेरे हुक्मे अंदर बद्धे, बन्दना सब नूं दयां समझाईआ। इक्को दे के परमानंदे, निजानंद विच रखाईआ। जो लोकमात आत्म परमात्म प्रीती टुट्टी जा के गंढे, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। सांझा नाम जा के वण्डे, अक्खरां वक्खरी धार ना कोए समझाईआ। जन भगत सुहेले चुक्के आपणे कंधे, खेवट खेटा हो के सेव कमाईआ। सन्त सुहेले चाढ़े अगम्मे डण्डे, पौड़ी पौड़ा मेरा नाम लगाईआ। गुरमुख नेत्र रहिण मूल ना अन्धे, निज नेत्र नैण अक्ख खुलाईआ। आत्म परमात्म धुन आत्मक राग सुणावे छन्दे, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। गुरसिखां तन वजूद काया माटी जावण रंगे, जगत भबूती लोड़ रहे ना राईआ। सब दी आसा इक्को पुरख अकाल दी प्रेम प्रीती मंगे, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। वेखो खेल सूरे सरबंगे, हरि करता आप समझाईआ। बजर कपाटी तोड़ो जा के जंदे, ज़िंदगी विचों ज़िंदगी देणी बदलाईआ। धरनी धरत धवल पाप अपराधां नाल कम्बे, नेत्र रो रो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन सलाह, बिन मश्वरे मश्वरा इक्क बणाईआ। सारे उठो तक्को वेखो लोकमात दा राह, बिन नेत्र नैण खुलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी वेखो गवाह, जो शहादत अन्त दए भुगताईआ। जो भविख्तां

विच लिख्तां विच इष्टां विच दृष्टी विच सृष्टी आए समझा, नाम निधाना श्री भगवाना कलमा वाहिद इक्क जणाईआ। जिस दे नाल बख्शे जाण सर्ब गुनाह, कूड़ी क्रिया होए फ़नाह, मेला मिले धुरदरगाहीआ। ओस दा रिहा कोई ना थाँ, तीर्थ तट रोवण मारन धाह, अठ्ठ सठ्ठ रिहा कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ सिर सके ना कोए उठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अबिनाश, हरि करते तेरी शरनाईआ। हउँ बालक नन्न्हे तेरे दास, बच्चे बचपन तेरी गोद टिकाईआ। जुग चौकड़ी वेख्या खेल तमाश, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रख के वास, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। तूं मालक दाता गहर गम्भीर सर्ब गुणतास, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख पृथ्मी आकाश, चौदां लोक देण दुहाईआ। चौदां तबक सच वस्त ना किसे पास, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। चौदस चन्द ना देवे कोई साथ, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। रसना जेहवा पढ़ पढ़ थक्के सिमरन पूजा पाठ, शास्त्र वेद पुराण फोल फुलाईआ। तेरा नाम ख़ज़ाना किसे ना मिल्या हाट, वणज करन कोए ना आईआ। आत्म परमात्म जोड़े कोई ना नात, प्रीतम प्रेम ना कोए निभाईआ। सदी चौधवीं कोई ना पुछे किसे वात, गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं पल्लू आए छुडाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा प्या ज़ात पात, ऊँच नीच करे लड़ाईआ। आत्म सेजा साचा बिस्तर मिले किसे ना खाट, सुखआसण सुख ना कोए उपजाईआ। अमृत बूँद ना देवे कोए सवांत, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ रहे कुरलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरा दरस पाए ना कोई इकांत, सच सरूपी मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे तेई अवतार होवो ख़बरदार, ख़बर अगली दयां सुणाईआ। जिस नूं समझे नहीं जुग चार, चारे वेद सार ना आईआ। ब्रह्मा बोल ना सक्या बिना ज़बान, अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं समझे ना कोई ज्ञान, विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। सो संदेसा देवां हो के वाली दो जहान, निरगुण निरवैर करां पढ़ाईआ। वेखो परे ज़िमीं असमान, बेपहचान खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी निरगुण धारों उठया सुत्ता, आलस रिहा कोए ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साडा अन्त अख़ीरी पैंडा मुका, अग्गे वक्त रिहा ना राईआ। तेरा सुहञ्जणा वेला ढुक्का, जो दीन दुनी आए समझाईआ। हुण भेव रहे ना लुका, परदा देणा उठाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अंदर लख चुरासी भरया दुक्खा, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। मन वासना होया भुक्खा, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। जननी भगत जणे कोई ना कुक्खा, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। दस दस मास

सब नूं लटकणा प्या पुट्ठा, अग्नी तत तत तपाईआ। तूं किरपा कर अबिनाशी अचुता, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। सृष्टी अन्तर तेरा मंत्र कोई ना दिस्सा, दहि दिशा कूड़ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणी चिट्ठी, बिन अक्खरां दयां वखाईआ। जेहड़ी कलम शाही काग़ज़ नाल कदे ना लिखी, अक्खरां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिस दी धार अंदर गुर अवतार पैगम्बर प्रभ दी सिक्खी, सिख्या गोबिन्द इक्क दृढ़ाईआ। उह खेल सदा अनडिट्ठी, जग नेत्र बाहर रखाईआ। पुरख अकाल दी सब तों वक्खरी मिती, मित्र प्यारा गोबिन्द दस्स के आया सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेख लओ चार जुग दा पिछला लेख, हरि करता आप जणाईआ। जिस शब्दी धार अंदर बदलदे रहे भेस, वेस अनेका रूप वटाईआ। आउँदे रहे लोकमात देस, दिशा आपणी डेरा लाईआ। दर्शन करदे रहे नेत नेत, निज नेत्र अक्ख खुल्लाईआ। साचे नाम दा पुछदे रहे भेत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। उस दा लेखा अन्त अख़ीर बेनज़ीर दस्स के गया गोबिन्द दस दस्मेस, दुष्ट दमन आपणा रूप बदलाईआ। जिस दा मालक इक्क नरेश, नर निरँकारा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा आप उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पिछली चिट्ठी दा वेखो मज़मून, मजमूआ समझ किसे ना आईआ। जिस दा दो जहानां तों वखरा कानून, काइदा रमज़ ना कोए लगाईआ। ओस दे अन्तर इक्क असूल, असलीअत रिहा समझाईआ। जिस दे विच्चों हुक्म निकले माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तुहाडा मालक इक्को कन्त कन्तूहल, हरि करता धुर दरगाहीआ। जो कुछ लैणा सो ओसे तों करना वसूल, वसल यार इक्को नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा फ़िकरा इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा नाम कलमा सुणया कलाम, कायनात आए दृढ़ाईआ। तैनूं दस्स के सब तों वक्खरा राम, न्यारा रहे जणाईआ। चुरासी लख दा मन्न के काहन, गोपी हो के सेव कमाईआ। मुकामें हक दा मन्न के इक्क अमाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। बरदे बण गुलाम, ख़ादम हो के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सिदक सबूरी रख ईमान, भरोसा आए बंधाईआ। तेरे नाम दा नग़मा बोल ज़बान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी करी पढ़ाईआ। लेखा दस्स के जीव जहान, जहालत अंदरों दिती गवाईआ। तेरा समझा के इक्क निशान, निशाने कूड़े आए बदलाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दे के ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वस्त अमोलक देवां सोहँ सो, सोई सुरत देणी जगाईआ। निरगुण

धार जाणा हो, तत बन्धन ना कोए पाईआ। तुहाडा भेव ना जाणे को, बुद्धी समझ सके ना राईआ। आपणी धार निर्मल जोत देवां लो, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तों बाहर करां रुशनाईआ। सृष्ट सबाई किसे नाल ना करयो धरोह, द्वैत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लख चुरासी काया मन्दिर अंदर वड़ के लैणी टोह, आत्म सेजा फोल फुलाईआ। अमृत रस निजर धारा देणा चो, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार नालों कर निर्मोह, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणो हुक्म बेनज़ीर, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग करना अन्त अख़ीर, आख़र दयां समझाईआ। दीन दुनी दी बदल देणी तकदीर, तदबीर इक्को इक्क वखाईआ। पहलों आपणे शरअ दे कटो ज़ंजीर, शरीअत जगत रहे ना राईआ। पुरख अकाल सब दा सांझा पीर, जो पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। जिस दी जगत नेत्र नज़र ना आए तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए समझाईआ। कूड़ी क्रिया झगड़ा मेटो हस्त कीड़, ऊँच नीच रहे ना राईआ। मन विकार रहे ना भीड़, दुरमति मैल दयो धवाईआ। काया कपड़ मैला रहे कोए ना चीर, पवित्त पाक दयो बणाईआ। बिना तुहाडे मातलोक विच दिसे ना कोए फ़कीर, जो फ़िकरा धुर दा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर झुक के करन सलाम, नमस्ते सीस झकाईआ। प्रभू सुणया तेरा पैग़ाम, पैगम्बरां रहे ना कोए चतुराईआ। सीस निवाए बनां वाला राम, बंसरी वाला काहन नैण उठाईआ। नानक निरगुण करे प्रणाम, गोबिन्द सीस झुकाईआ। पुरख अकाल कलयुग अन्त बदल नज़ाम, अदल अदालत इक्क लगाईआ। साडे नाम होए बदनाम, बदीआं विच लोकाईआ। तैनूं सके ना कोए पहचान, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। नेत्र रोंदे वेख वेद पुराण, अञ्जील कुरान रही कुरलाईआ। खाणी बाणी होई हैरान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जगत विद्या होई प्रधान, मन अन्तर करे लड़ाईआ। तेरा दिसे ना कोए सच निशान, निशाने कूड़े जगत शाहीआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन दया कमाईआ। योद्धे सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दाने तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा दे दे पुरख अगम्म, अगम्मड़ा हुक्म जणाईआ। सृष्टी वेख तृष्णा तम, कामना विच हल्काईआ। झगड़ा दिसे खुशी ग़म, चिन्ता सोग ना कोए मिटाईआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना हिरदे वसाए कोई ना जन, जन्म विच्चों जन्म ना कोए बदलाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डा सके कोई ना भन्न, भरम भउ ना कोए मिटाईआ। भाग लग्गा दिसे किसे ना तन, कोटन कोटि कलयुग साध बैठे डेरे लाईआ। लेखा जाणे ना कोए हँ ब्रह्म,

पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्त अख़ीर सदी चौधवीं ठांडे दर पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार तेरे दवारे दरोही दरोही रोईए छम छम, छहबर बिन अक्खां नीर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख आपणी लोकाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर होवो जवान, जोबन इक्को दयां रंगाईआ। सारे मेरा इष्ट मन्नों ईमान, कामल मुर्शद बेपरवाहीआ। जिस दा सचखण्ड दवारा धर्म झुल्ले निशान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। थिर घर खेल करे महान, गुरमुख गुर गुर मेल मिलाईआ। सो संदेसा देवे धुर फ़रमान, फ़रमांबरदारां आप जणाईआ। जा के वेखो जगत जहान, नव सत्त खोज खुजाईआ। सब दे अंदर शरअ वड़ी शैतान, छुरी कूड़ जगत कसाईआ। माया ममता कीता बेईमान, बेवा दिसे लोकाईआ। तृष्ना मेटे कोई ना ताम, तमन्ना पूर ना कोए कराईआ। घर घर हुन्दा वेखो हराम, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। जो आपणी दे के आए कलाम, कलमा मेरा नाम समझाईआ। उस दी करे ना कोई पहचान, प्रीतम प्रेम ना कोए लगाईआ। आपणा वेखो विगड़या होया विधान, बदीआं विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू की करीए धरती जा, जगह नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा प्या थाउँ थाँ, थान थनंतर दए दुहाईआ। प्यार रिहा ना पुत्तर माँ, पिता पूत करे लड़ाईआ। नारी कन्त नाता रही तुड़ा, साचा संग ना कोए बणाईआ। एह की खेल कीता खुदा, खुदी तकब्बरी विच लोकाईआ। तूं आदि जुगादी मेहरवां, महबूब तेरी सरनाईआ। गोबिन्द कहे जुग बदल दे नवां, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाले तेरी सेजे सवां, सुहञ्जणी रुत्त बणाईआ। मैं वेखां घनेरा चवां, चाउ घनेरा नज़री आईआ। सच सिँघासण तेरे हुक्म अंदर इक्को बहवां, जित्थे दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर दरवेश हो के मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे गोबिन्द सुत दुलार, सुत्यां दयां जगाईआ। उठ वेख मेरे हुलार, ब्रह्मण्डां खण्डां तों पार दयां वखाईआ। जिस मंज़ल चढ़या ना कोए चुबार, घर बहण कोए ना पाईआ। तक्कया ना किसे किनार, नईआ तट ना कोए लगाईआ। सो खेल करे निरँकार, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दे हुक्म अंदर विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीस देवत सार, गुर अवतार पैगम्बर भज्जण वाहो दाहीआ। सेवा करन सदा जुग चार, चारे खाणी चारे बाणी चारे वरनां दए जणाईआ। सो लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति पुरख निरँजण दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणी फोल के वेखो पुस्तक, पुश्त पनाह हथ्थ लगाईआ। जिस विच मेरे नाम दी करदे आए उस्तत, अक्खरां

नाल जोड़ जुड़ाईआ। मैनूं वेख के दस्सो मनुषां विच्चों केहड़ा तेरा गुरसिख, गुरमुख रूप बदलाईआ। जिस दे अंदर तुहाडे विछोड़े दा दुःख, दर्द प्रेम वधाईआ। मेट के तृष्ना भुक्ख, आसा इक्क जणाईआ। वेख्यो परदा ओहला ना रखयो लुक, मैं हर घट वेखण वाला इक्क गोसाँईंआ। नौ सौ चुरानवे चौंकड़ी जुग गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं ल्या मूल ना पुछ, धार विच्चों ना फेर प्रगटाईआ। हुण रहिण देणा नहीं चुप, लहिणा सब तों मंग मंगाईआ। उठो वेखो जा के कलयुग अन्धेरा घुप, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। तुहाडी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान वाली धुर दी बाणी गई लुक, परदा सके ना कोए उठाईआ। क्यों मैं तुहानूं बणाया सुत, तुहाडे सुत गुरसिख दित्ते समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बिन अक्खां तों अक्खां रहे पुट्ट, लोकमात वेख वखाईआ। जिधर तक्कण ओधर मनमुख, गुरमुख कोटां विच्चों विरला नज़री आईआ। सब दी अन्तर निरंतर प्रीती धार गई टुट्ट, रसना वाली बाहरों दिसे पढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नाल मिल के होया कोई ना खुश, पढ़ पढ़ विद्या झट लँघाईआ। पंच विकार अंदरों कढ्ढ़ुया किसे ना कुट्ट, नाम खण्डा ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी धार जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो लोकमात धरो ध्यान, दया धर्म नज़र ना आईआ। साचा रिहा ना कोए ज्ञान, रसना गोष्ट विच लोकाईआ। मन्दिर वेखे ना कोई चतुर सुजान, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। नादी सुणे ना कोई धुनकान, अनहद नाद ना कोए जणाईआ। निर्मल जोत जगे घर ना किसे महान, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म मिले कोई ना आण, विछोड़ा पन्ध ना कोए चुकाईआ। सुहाए मन्दिर ना कोए मकान, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे ना कोए वधाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे गाण, अनरागी राग ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो क्यों काया मन्दिर अंदर कलयुग कूड़ा वड़या शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। क्यों दीन दुनी होई बेईमान, बेवा रूप बणाईआ। क्यों बदलदा जाए नज़ाम, नौबत हक ना कोए सुणाईआ। इक्को वार इक्ठे दे दयो मैनूं ब्यान, शब्द इशारे मंग मंगाईआ। नहीं ते अन्त अख़ीरी चरणी कर सलाम, सईयदे विच आपणा आप मिटाईआ। कहि दयो सब कुछ तेरे हथ्थ भगवान, सदी चौधवीं साडी चले ना कोए चतुराईआ। असीं दे दे आए बलीदान, जुग जुग सेव कमाईआ। एसे कर के तेरे आगमन विच दस्स दे आए जहान, भविख्तां विच अल्लाईआ। कलयुग अन्त कन्त भगवन्त प्रगट होवे वाली दो जहान, जो सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पूर देणा कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी दी कर बदली, बदला चुक्के जगत लोकाईआ। तूं पुरख अकाल धुर दा अदली, इन्साफ़ तेरे हथ्थ नज़री आईआ। भगत सुहेले गुरमुख सज्जण सन्त दुलारे कढ्ढ़ु लईं, लख

चुरासी खोज खुजाईआ। शब्दी हुक्म अंदर सच दवारे सद्द लईं, सद्दा धुर दा इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल ओनूं परदा कज्ज लईं, जो तेरा नाम ध्याईआ। आपणी प्रेम प्रीती अंदर बन्नू लईं, बन्दगी आपणी देणी समझाईआ। निरगुण हो के निरगुण धारों जम्म लईं, तत्तां वाली ना बणीं जणेंदी माईआ। गुरसिखां जन्म पाया नहीं किसे चम्म लईं, आत्म परमात्म लैणा जुड़ाईआ। पुरख अकाल कल कल्की तूं कलयुग अन्तिम आउणा आपणे कम्म लईं, कल कलेश देणा गवाईआ। सब नूं आपणे (प्रेम) अंदर रंग लईं, रंगत इक्को देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर इक्को इक्क जणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर जावो मात, आपणी भूमी वेख वखाईआ। जित्थे वण्डां वण्ड के आए दीन मज़्हब ज़ात, तत वजूद हद्द बणाईआ। लेखा लिख के कलम दवात, कातब बण के सेव कमाईआ। अगला दस्स हालात, हर हिरदे आए जणाईआ। सो वेखो आपणा जा के भविख्तां वाला वाक्, वाकिफ़कार रिहा समझाईआ। आपणे आपणे दीन मज़्हब दा खोल्हो अंदरों ताक, बजर कपाटी परदा रहिण कोए ना पाईआ। सब दी पूरी करनी आस, निरासा नज़र कोए ना आईआ। वेख्यो बणयो ना कोई गुस्ताख़, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। सो पुरख निरँजण हर घट अन्तर लए वाच, वाचणहार थाउँ थाँईंआ। वेखणहारा काया माटी पंज तत काच, कंचन गढ़ फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर जाओगे, कलयुग अन्तिम आपणा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी वेख वखाउगे, निरगुण हो के फोल फुलाईआ। दीन मज़्हब दा पन्ध मुकाउगे, झगड़ा ज़ात रहे ना राईआ। सब नूं इक्को इष्ट समझाउगे, अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को ढोला गाउगे, जैकारा इक्क सुणाईआ। इक्को सजदा सीस झुकाउगे, डण्डावत बन्दना इक्को इक्क दृढ़ाईआ। इक्को गृह बहि खुशी मनाउगे, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला वण्ड हद्द ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल इक्क प्रगटाउगे। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू लोकमात जावांगे, जग जीवण दाते तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गावांगे, गा गा जगत सुणाईआ। निरवैर निराकार निरँकार जोत सरूपी तेरा दर्शन पावांगे, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरे ठांडे दर खुशी बणावांगे, दूजे महल अटल ना कोए रुशनाईआ। सचखण्ड दवारा इक्क सुहावांगे, मुकामे हक सोभा पाईआ। परवरदिगार तेरा नूर चमकावांगे, अबिनाशी करते तेरी मात रुशनाईआ। पहली चेत्र उठ उठ धावांगे, चार कुण्ट पन्ध मुकाईआ। सम्मत शहिनशाही दा शाहाना रंग चढ़ावांगे, दो जहानां वज्जे वधाईआ। त्रिलोकी नूं फड़ हलावांगे, तीजा साल दए गवाहीआ। देवत सुर सर्ब जगावांगे,

बचया रहिण कोए ना पाईआ। लोकमात चारे कुण्ट फोल फुलावांगे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण परदा लाहीआ। तेरे नाम दा डंका इक्क वजावांगे, अगम्मी राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया जन भगतां नाता आप तुड़ावांगे, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। तेरा रंग मजीठी हरि करते इक्क रंगावांगे, दूजी वार उतर ना जाईआ। चारे वरनां जोड़ जुड़ावांगे, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब स्वामी तेरे सरन मिले सरनाईआ। तेरी सरन इक्क तकावांगे। प्रभ तेरा ढोला गावांगे। शब्द विचोला नाम रखावांगे। परदा ओहला सर्ब उठावांगे। गुरमुखां दे अंदर वड़ के, अमृत जाम इक्क प्यावांगे। सूफ़ीआं दे दर ते खड़् के, सुख़न इक्क सुणावांगे। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़ के, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगे। अल्ला हू अन्ना हू इस तों परे तेरा दर्शन कर के, कुल्लीआं दे डेरे ढावांगे। जो शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी लोकमात आए धर के, धर्म अस्थान वेख वखावांगे। जो जीव प्राणी जगत विद्वानी तेरे प्यार तों गए हर के, हिरदे सब दे फोल फुलावांगे। जो तेरी प्रीती अंदर परमात्म आए मरदे, मुरदे जीवत जगत करावांगे। सारे बण के तेरे बरदे, बन्दे बन्दगी वाले उठावांगे। जेहड़े मन वासना लड़दे, सब नूं धर्म राए नाल जुड़ावांगे। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सम्मत शहिनशाही विच तिन्न असां शाह सुल्तान वेखणे लड़दे, सुलह दी सलाह परे हटावांगे। एह खेल पुरख अकाल तेरे घर दे, दूजे ख़बर ना किसे जणावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवावांगे। गुर अवतार पैगम्बरो जे दर मेरे सीस निवाउगे। इष्ट इक्को इक्क मनाउगे। सृष्ट सबाई वेख वखाउगे। लिस्ट आपणी वेख पछताउगे। क्यों पंज तत शरीर अंदर आए भोग के गृहस्त, वजूद पाक ना कोए बणाउगे। अन्तिम कर के ओस नूं नष्ट, निशाना मेरे नाल चलाउगे। मेरा हुक्म आदि जुगादी सख़्त, सिर अग्गे ना कोई उठाउगे। अगले सम्मत दा वेख्यो वक्त, वाकिफ़कार हो के पड़दे लाहोगे। की हालत होवे जगत, जुगां दे विछड़े गुरमुख मेरे नाल मिलाउगे। जिन्हां नूं धुर दी धार कहे भगत, बिन भगतीउँ पार कराओगे। मेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार अगम्मी शर्त, शरअ दे विच्चों सन्त सुहेले बाहर रखाउगे। जिन्हां दे कारण निरगुण निरवैर हो के आवां परत, पतिपरमेश्वर मन्न के सीस झुकाउगे। ना कोई सोग रहे ना हरख, चिन्ता ग़म डेरा ढाउगे। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तुहाडी लैण लग्गा परख, किस बिध आपणा पूरा तोल तुलाउगे। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल तेरा खेल असचरज, अचरज विच अचरज हो के बिन सीस सीस निवाउगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ला एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा धुर दरबारा आप

दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे लोकमात करो तस्दीक, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। कलयुग अन्धेरा वेखो तारीक, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। साचे नाम दी जो पा के आए भीख, ख़ाली हथ्थ दिसे लोकाईआ। झगड़ा प्या ऊँच नीच, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म समझे ना कोए प्रीत, परम पुरख मेल ना कोए मिलाईआ। सोहँ गाए कोए ना गीत, नानक निरगुण नालों होई जुदाईआ। लेखा मुके ना किसे सीस, सिर सर देवे ना कोए वड्याईआ। घर मिले ना किसे अतीत, त्रैगुण पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ सब नूं तेरी उडीक, पिछला लेखा गए भुलाईआ। किस वेले आवे लाशरीक, शिरक्त कूड़ी दए गवाईआ। शब्द विचोला बणाए बीच, दो जहानां भेव चुकाईआ। लख चुरासी बदले नीत, मन वासना डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ की इशारा दिता पहली चेत, चार्तक हो के ध्यान लगाईआ। सानूं सच दा आवे हेत, हितकारी हो के देणा समझाईआ। बिन तेरी किरपा खोल्ह कोई ना भेव भेत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान चारे खाणी चारे बाणी परदा अग्गे ना सके उठाईआ। की खेल करना लोकमात दे देस, दसन्तर देणा समझाईआ। की हुक्म करना नरेश, नर नरायण आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। पुरख अकल कहे गुरू अवतार पैगम्बर नन्न्हे बच्चे, बाले पिछले नज़री आईआ। तुसीं मुहब्बत विच सच्चे, प्यार विच वड्याईआ। काया माटी भाण्डे भन्न के आए कच्चे, तन वजूद कर जुदाईआ। मेरे घर विच आ के वसे, सचखण्ड जोत विच समाईआ। जित्थे कोई प्रकाश नहीं रवि सस्से, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दुनीदारी दे पटे, संसारी भण्डारी संग ना कोए वखाईआ। ना कोई मन वासना खुल्ल्हे हट्टे, कूड़ वणजारा वणज ना कोए जणाईआ। इक्को मिल के जोत पुरख समर्थे, सचखण्ड बैठे सोभा पाईआ। उठ के वेखो अन्त अख़ीर कलयुग तुहाडे दीनां मज़्हबां दे रट्टे, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। कुछ लेखा दस्सणा जो छब्बी पोह लिखारी हथ्थ फड़ाए त्रै गत्ते, गति मित तुहाडी दयां जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तुसीं सृष्टी दुनिया कायनात दे बणे रहे चच्चे, अग्गे तुहानूं सब दा बापू दयां वखाईआ। तुहाडे भविख्त करने सच्चे, सच नाल मिलाईआ। इक्को धार कर के पक्के, धुर दी गंढु देणी पवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीनां मज़्हबां विच फेर कोई ना फसे, लोकमात अक्ख ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल ने सब तों लैणा अगला हके, हक आपणा लैणा जणाईआ। जो हर हिरदे विच वसे, सो सब दा बणे पिता माईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सब नूं इक्को नेत्र तक्के, अक्ख विचो अक्ख ना कोए बदलाईआ। जुग

चौकड़ी सिफ्तां वाले सालाहां विच गा के आए टप्पे, गा गा खुशी मनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साहिब सुल्तान वाली दो जहान लख चुरासी जीव जंत साध सन्त निरगुण सरगुण धार पैज रखे, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जन भगतां चीथड़ पुराणे रहिण ना देवे फटे, ओढन नाम दुशाला आपणा सीस टिकाईआ। दूजी वार किहा शब्द आया गोबिन्द दे वट्टे, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। सतिगुरू दी कीमत कोई ना पावे टके, हट्टां विच ना कोए विकाईआ। किरपा कर के मेहरवान जिस वल तक्के, तकदीर दए बदलाईआ। गुरमुखां सिमरन पूजा पाठ दे करन ना देवे रट्टे, रोटीन विच आपणा नाम जपाईआ। किसे ने मन्नणे नहीं सिल पत्थर वट्टे, अक्खरां तों बाहर निरअक्खर धार समझाईआ। जिन्हां दे अंदर पुरख अकाल वसे, उह दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। जो अमृत नाम सतिगुर रस चक्खे, तिस दी रसना ना होए हल्काईआ। जो साहिब दा दर्शन करे आपणी अक्खे, उह अक्ख ना जगत बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समर्थे, धुर स्वामी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरा हुक्म चंगा, चार जुग सरनाईआ। ओधरों धाहां मार के रो पई गंगा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जमना सुरस्ती मुख कर के नंगा, कूक कूक सुणाईआ। गोदावरी कहे गोबिन्द मेरे अंदर हुन्दा दंगा, दग़ेबाज़ बणी लोकाईआ। कुछ मेरा लेखा लिख के आयों उपर कन्ढा, नंदेड़ गंढु पवाईआ। पंज वेरां फेर के खण्डा, मेरी अंदरों सुरत खुल्हाईआ। मैं तैनूं पहलों समझण लग्गी तत्तां वाला बन्दा, बन्दगी विच ना सीस निवाईआ। तूं ढोला गाया सोहँ छन्दा, मैं आपणा आप गई भुलाईआ। मेरे अन्तर आया इक्क अनन्दा, जो अनन्दपुरी तों बाहर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सवाधान होया शंकर, आपणी लै अंगड़ाईआ। मेरा डंका वज्जे ना किसे कंकर कंकर, किनका नज़र कोए ना आईआ। कलयुग धरया रूप भिअंकर, भूपत भूप ना कोए चतुराईआ। साचा रिहा कोए ना मंत्र, मंतव हल्ल ना कोए कराईआ। पुरख अकाल बणाई बणतर, सब दा माण रिहा मिटाईआ। आपणा हुक्म दे निरंतर, सृष्टी दी दृष्टी दिती बदलाईआ। प्रकाश होवे ना किसे अन्धेरी (कंदर), निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। भबूती मलयां टुट्टे किसे ना जंदर, ख़ाक कम्म किसे ना आईआ। मन वासना भवे बन्दर, बन्दगी तों बाहर वखाईआ। मस्तक धूढ़ी लग्गे किसे ना चन्दन, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। साची करे कोई ना बन्दन, बन्दीख़ाने विच दिसे लोकाईआ। बिना पुरख अकाल तों कोई ना आवे टुट्टी गंढुण, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा संदेसा इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण उठ खलोता ब्रह्मा, पारब्रह्म ध्यान लगाईआ। साचा रिहा कोई ना धर्मा, धरनी

धरत धवल कुरलाईआ। झगड़ा प्या वरनां बरनां, अवरन ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दी रहे कोई ना सरना, कोटन इष्ट जगत मनाईआ। साचे राह किसे ना चढ़ना, भरमे भुल्ली लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला किसे ना पढ़ना, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। मिले वड्याई ना प्रभू दे चरणां, सरन (ना) मिले सरनाईआ। कलयुग अन्त सर्ब कुछ सब ने हरना, चले ना किसे चतुराईआ। ब्रह्मा कहे मैं ओस दा पल्लू फड़ना, जो आदि जुगादी पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। विष्नूं कहे मैं वेखां की विशाल, विश्या विच लोकाईआ। साचा दिसे ना कोई लाल, जो नादी सुत अख्वाईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, मातलोक ना कोए तुड़ाईआ। मानव जाती होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। साची दिसे ना कोई धर्मसाल, धर्म दवारा सोभा कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई होई कंगाल, नाम धन ना कोए वरताईआ। फल रिहा ना किसे डाल, सिंमल रुख लहराईआ। अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, कलू नगारा रिहा वजाईआ। पुरख अकाल बदलण वाला चाल, चाल निराली आपणी इक्क समझाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लए भाल, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के खोज खुजाईआ। किरपा करे दीना बंधप दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल करनी करदा, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। कलयुग अन्त वेस अगम्मा धरदा, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। जिस दे अग्गे चारा कोई ना चलदा, चारों कुण्ट सीस निवाईआ। सो खेल करे अगम्म अथाह अटल दा, बेअन्त बेपरवाहीआ। जन भगत अन्तर आत्म सिंघासण मलदा, सोहणी सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। झगड़ा मुका के कूड़ विकार अछल छल दा, सति सच दए समझाईआ। साचा मन्दिर वखावे जित्थे जोती दीपक बलदा, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। अमृत रस देवे अगम्मे जल दा, पवण पाणी तों बाहर लए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो लेखा देणा पए अख़ीर, आख़र शब्दी धार समझाईआ। लोकमात घत्त के वेखो वहीर, चारों कुण्ट भज्जो वाहो दाहीआ। साचा खेल बेनज़ीर, नज़र तों परे रिहा जणाईआ। आपणे दीन मज़्ब दी वेखो जागीर, जो तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। मार के शरअ लकीर, हद्द दिती दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, (वर दाता) सर्ब सहिज सुखदाईआ। गुर अवतार पैग़ंरब जा के वेखो आपणे कोट, बंक दवारे फोल फुलाईआ। दीन दुनी दी आ के देणी रपोट, लेखा हको हक सुणाईआ। किस गृह वज्जे सच नाम दी चोट, डंका शब्द

५१०
२०

शनवाईआ। किस अंदर भरया हँकार विकार खोट, मन वासना हल्काईआ। किस मन्दिर जगे अगम्मी जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। किस घर हरख सोग दी सोच, चिन्ता ग़म सताईआ। किस दवारे प्रभ मिलण दी मौज, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। किस दवारे जगत वासना भोग, तृष्ना विच हल्काईआ। किस दवारे झगड़ा मुकया चौदां लोक, चौदां तबक डेरा ढाहीआ। किस दवारे मेल मिलावा होवे निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता मिले चाँईं चाँईआ। लोकमात गुर अवतार पैगम्बर सब दे अंदर करो खोज, बाहर वेखण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण साहिब समरथ तेरी महिमा अकथ सानूं इक्को तेरी ओट, ओड़क तेरे अग्गे सीस निवाईआ। साडी रहवे कोई ना सोच, समझ तेरे विच समाईआ। तेरा धुर दा हुक्म इक्को बहुत, फ़रमाना दिसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाम दा लै के जोग, जगत जिज्ञासूआं आए जणाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

धरनी धरत धवल कहे मेरे कट गुनाह, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी दया कमाईआ। तेरा नाम निधान मर्द मर्दान नौजवान श्री भगवान इक्क सुणां, चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त वज्जे वधाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद ब्रह्म ब्रह्माद सुणा आपणी धुना, अनहद नादी आत्मक राग सुणाईआ। जुग चौकड़ी पिछले बख्श गुनाह, सीस जगदीस तेरे कदम टिकाईआ। सदी चौधवीं अन्त ना रुला, मूर्ख मुग्धां तों पल्लू देणा छुडाईआ। मैं तेरा नाम नहीं गाउणा उत्ते बुल्ला, हिरदे अंदर इक्क आवाज़ उठाईआ। मेहरवान महबूब तूं साहिब सुल्ताना सुलह कुला, कुल मालक धुरदरगाहीआ। जगत जिज्ञासू तेरी धार भुल्ला, अभुल्ल वेख वखाईआ। तेरा नाम भण्डारा अमृत रस सब दे अंदरों डुल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरी अरज़, आरज़ू पिछली दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी सब नूं तेरी रही ग़रज़, गुर अवतार पैगम्बर ओट तकाईआ। तूं ग़रीब निमाणयां कोझे कमलयां वण्डदा रिहों दर्द, दीनां अनाथां हो सहाईआ। भगत उधारना तेरा फ़र्ज़, धुर दी खेल चली आईआ। साचे सन्तां मकरूज़ लाहुणा कर्ज़, हिसाब बेबाक देणा कराईआ। शब्द अगम्मी आपणा नाम दस्स अनादी तरज़, तुरीआ तों परे कर पढ़ाईआ। सच जैकारा तेरा सुणां शब्द अनादी बोल गरज़, कूक रहिण कोए ना पाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मदद तेरी इक्क तकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेरा लेखा देणा बदलाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरी सुण पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। राह तक्कदी रही तेरा जुग चार, चारे कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। संदेसा देंदे गए गुर अवतार, पैगम्बर राह जणाईआ। लेखा लिखदे गए आपणी वार, वारता विच लेख बणाईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसार, संसारी भण्डारी देण दुहाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेख अन्ध अंध्यार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा रिहा ना कोई धर्म दवार, कूड़ी क्रिया घर घर आपणा डंक वजाईआ। जनो मर्द करे विभचार, माया ममता मोह हल्काईआ। सृष्टी शरअ तों होई बाहर, शायद तैनूं मिलण कोए ना आईआ। खेल वखा दे गुप्त ज़ाहर, परदा ओहला दे चुकाईआ। सदी चौधवीं तेरी वार, वाहवा तेरे हथ्थ वड्याईआ। कुदरत दे कादर करनी दे करते तूं आदि जुगादी मुख्त्यार, मुफ्त आपणी दया दे कमाईआ। मैं रो रो बिन अक्खां करां गिरयाज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। डण्डावत विच करां निमस्कार, बन्दना विच सीस झुकाईआ। बेनन्ती सुण मेरी सरकार, जुग जुग तेरी शहिनशाहीआ। कूड़ी क्रिया दे निवार, झगड़ा जूठ रहे ना राईआ। बेनन्ती तेरे सच दरबार, दरगाह साची इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा हौला भार कराईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरी सुण लै कूक, निहकर्मी कर्म कमाईआ। कलयुग माया दिता फूक, बिन अग्नी अग्ग लगाईआ। धर्म रिहा ना किसे कूट, काया कुटीआ ना कोए सुहाईआ। साचा नज़र ना आए कोए सपूत, पिता पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। झगड़ा प्या काया पंज भूत, तत वजूद होवे लड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के तुठ, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जो जुग चौकड़ी तेरे नालों गए रुठ, सो भगत सुहेले लै मिलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक अबिनाशी अचुत, चेतन धार तेरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, मेरी रेखा दे बदलाईआ। धरनी धरत धवल कहे मैं करां पुकार आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तेरे दर खड़ी मुहताज, लोड़वंद धुर दी चली आईआ। निरगुण हो के रचया काज, सरगुण साचा राह वखाईआ। मेरी अन्त अख़ीरी रख लाज, लज्जया दीन दुनी गवाईआ। तूं शाह सुल्तान गुरू महाराज, पातशाह तेरा नाम सालाहीआ। मेरा डुब्बदा बेड़ा पार कर जहाज़, जहालत कूड़ी दे मिटाईआ। सति धर्म दा दस्स इक्क रिवाज, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड रहे ना राईआ। प्रेम प्रीती अंदर प्रगटा आपणा समाज, सच समग्री झोली पाईआ। भगतां भगती अंदर कर काज, कुदरत आपणा रंग रंगाईआ। शब्द अगम्मी अंदर दे आवाज़, बाहरों सरवण सुणन दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरी धूढ़ी ख़ाक वेख भस्म, तेरे

चरणां छोह के खुशी मनाईआ। मैं आदि जुगादी समझया इक्को इस्म, आलीशान तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी सौगंद खा के गए कसम, काइदे नाल दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा दूल्हा इक्को होणा कन्त दुनिया दी धार ख़सम, जिस्म नज़र कोए ना आईआ। मैं राह तक्कां तेरे प्रेम प्रीती वाले चश्म, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ। कवण वेला पत आवें रखण, धुर दे मालक धुर दरगाहीआ। लोकमात वेख आपणा वतन, बेवतनां लै उठाईआ। सदी चौधवीं किसे ना चले कोई यतन, यथार्थ दयां जणाईआ। किसे दा पूरा होए ना सिमरन भजन, भजन बन्दगी विच पन्ध ना कोए मुकाईआ। कोटन कोटि घर बार जगत दवारे तजण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां फेरा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बिन तेरी किरपा कोई ना रखे लज्जन, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। मन वासना सृष्टी होई कगन, काग हँस ना कोए बदलाईआ। कोटां विच्चों तेरे भगत सुहेले थोड़े लभ्भण, जो तेरा राह तकाईआ। काया मन्दिर अंदर दीपक जोत हो के जगण, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा इक्को मंगदे सगन, सगला संग बणाईआ। आत्म परमात्म लग्गी रहे लग्न, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आई मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। धरनी धरत धवल कहे कलयुग वक्त दिसे थोड़ा, बैठा पन्ध मुकाईआ। साहिब स्वामी मेट अन्धेरा घोरा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। झगड़ा रहे तत ना चोरा, चारों कुण्ट कर सफ़ाईआ। भेव खुल्ह्हा दे तोरा मोरा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म बणया रहे सच्चा जोड़ा, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। शब्द अगम्मी बख़्श अनादी घोड़ा, लोआं पुरीआं बाहर दौड़ाईआ। मेरा भाग कर मथोरा, मिथ्या दिसे सर्ब लोकाईआ। बसुधा कहे मेरा गोबिन्द वाला काग़ज़ अजे कोरा, जो मैनूं गया फड़ाईआ। इकरार कौल कीता जिस वेले आवां बण के बांका छोहरा, नवजोबन रूप बदलाईआ। भेव खुल्ह्हा के गावां इक्को दोहरा, दोहां जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतां आपणे हत्थ विच रखां डोरा, डोरी पुरख अकाल नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सरन मंगी इक्क सरनाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरी अरदास, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। किरपा कर शाहो शाबाश, शहिनशाह तेरे हत्थ वड्याईआ। दीन दुनी दी मंज़ल कर दे रास, रस्ता इक्क उपजाईआ। तेरे उत्ते तेरी सृष्टी करे विश्वास, कूड़ विषयां दा डेरा ढाहीआ। मेरी पूरी होवे आस, तृष्ना देणी मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्क दूजे दा देवण साथ, मज़्ह्ब दीन ना कोए लड़ाईआ। तेरे नाम दा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप होवे इक्को पाठ, पूजा इक्को दे जणाईआ। इक्को तट किनारा दिसे घाट, इक्को पतण बैठा दिसे धुर दा माहीआ। मेरी अन्त अख़ीरी मेट दे वाट, वातावरन दे बदलाईआ।

५१३
२०

तेरे गृह नहीं कोई घाट, घाटा मेरा पूर कराईआ। जन भगतां नाल जोड़ के नात, रिश्ता इक्को दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। धरनी धरत धवल कहे मैं तेरी याचक, यके बाद दीगरे सेव कमाईआ। मैं छड्डे विद्या दे वाचक, अन्तर ध्यानी वेख वखाईआ। कलयुग मिटा दे कूड़ा नाटक, नटूए आपणा स्वांग बदलाईआ। इक्को रूप दस्स दे वास्तक, वसल दस्स यार खुदाईआ। तेरे तों बिना रहे कोई ना आशक, माशूक मश्वरा ना कोए बणाईआ। लेखे ला सर्ब स्वासथ, पवण पवण खोज खुजाईआ। मानुख रहे कोई ना नास्तिक, परदा ओहला दे चुकाईआ। तेरा धर्म दवारे इक्को पाठक, शब्दी सतिगुर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मार्ग दे समझाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरा कर पूरा इकरार, इक्क इकल्ले बेपरवाहीआ। जिस तेरा सत्थर हंढाया यार, याराने विच गया समाईआ। मेरी रोंदी दी सुण पुकार, पूरन ब्रह्म गया दृढ़ाईआ। कल कल्की लए अवतार, आउणा चाँईं चाँईआ। वेखणा जगत जीव मँझधार, चारे कुण्टां खोज खुजाईआ। तेरी आसा मनसा पूरी करे संसार, संसा रोग दए चुकाईआ। सोई सोई करे ख़बरदार, मोई मोई आप उठाईआ। जिस वेले दरोही दरोही करे चार यार, संग मुहम्मद नाल बणाईआ। चौदां तबक हाहाकार, साचा सबक ना कोए पढ़ाईआ। मंज़ल सब नूं दिसे दुष्वार, दुश्मण दूती घर घर डेरा लाईआ। सतिगुर शब्द ना करे कोई विचार, विचला भेव ना कोए खुल्हाईआ। ओस वेले किरपा करे आप निरँकार, नर नरायण धुर दरगाहीआ। धरनी कहे सो वक्त पहुंचया आण, वेला दए गवाहीआ। किरपा कर मेरे भगवान, भाग हिस्सा तेरी झोली पाईआ। साचा बख्श इक्क दान, दौलतमंद दे वरताईआ। तूं सब दा मालक इक्को काहन, लख चुरासी आदि जुगादि प्रनाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स जहान, परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर देणा वखाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरे उत्ते कर दे रहमत, चरण कँवल सरनाईआ। मेरी आशा तेरे प्यार विच सहिमत, सहिम अगला दे चुकाईआ। झगड़ा रहे ना धोती तहिमत, जगत वण्ड ना कोए वड्याईआ। मूर्ख रहे कोई ना अहिमक, सब नूं साची सिख्या दे जणाईआ। तेरे नाम दी अगम्म नयामत, सृष्टी दृष्टी अंदर दे टिकाईआ। तूं मालक सही सलामत, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेट अलामत, ममता मोह डेरा ढाहीआ। सतिजुग सच बणा बनावट, घड़न भन्नृणहार समरथ तेरी ओट रखाईआ। दीनां मज़्हबां रसम रिवाजां अंदर मेरी होई थकावट, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी जुग जुग दस्स के गए कहावत, शब्द इशारे नाल समझाईआ। जिस वेले पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार आ के मेटे अदावत, अदल इन्साफ़ इक्क कमाईआ। झगड़ा मज़्हब

ना दीन करे बग़ावत, बग़लगीर सब नूं लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सब दी शब्दी धार दे ज़मानत, ज़ामन हो के चुरासी विच्चों पार कराईआ।

५१५
२०

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलविंदर कौर पिण्ड सरेस वाला ★

धरनी धरत धवल धौल कहे प्रभ वेखां तेरे मीत, मित्र प्यारे नर निरँकारे खोज खुजाईआ। जो कलयुग अंदर बदलण तेरी रीत, खेल अगम्मा इक्क प्रगटाईआ। सद बैठे रहिण अतीत, त्रैगुण लेखा जगत चुकाईआ। ढोला गावण ठांढा गीत, तूं मेरा मैं तेरा रहे सुणाईआ। धुर दा कलमा सुण हदीस, हज़रत इक्को सीस झुकाईआ। तेरा खेल वेख जगदीस, जगदीशर वज्जे वधाईआ। जन भगतां अंदर सच प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म तेरे नाल रखाईआ। मैं नित नवित रखदी रही उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो कर के गए नसीहत, हुक्म संदेसा धुर जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट करे अगम्मी असलीअत, असल आपणा खेल वखाईआ। जिस ने आत्म धार सब दी बदल देणी वलदीअत, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। साचे भगतां आपणे नाम दी कर वसीअत, हक हकूक अगला इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड जेठू नंगल ★

धरनी धरत धवल कहे तेरे भगतां मंगां संग, साथी साचे दे उपजाईआ। कलयुग औध रही लँघ, बीती सदी दए गवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर वजा के गए मृदंग, नाम ढोला सोहला तेरा राग समझाईआ। शब्दी धार दौड़ा के गए तरंग, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ। खेल खेल के गए सूरबीर भुयंग, भुजां आपणा बल प्रगटाईआ। तेरे नाम दा दस्स के गए अनन्द, निजानंद विच समझाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंध, निहकर्मी गए वड्याईआ। सच प्रकाश चाढ़ के चन्द, चन्द चांदनी इक्क जणाईआ। तेरा खेल सूरे सरबंग, सद तेरे विच समाईआ। मैं मंगदी इक्को मंग, धरनी धरत धवल धौल वास्ता पाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। साचा ढोला सोहला नग़मा नाम दस्स दे छन्द, गीत सुहागी इक्क सुणाईआ। मेरा ख़ुशी होवे बन्द बन्द, बन्दना विच सीस निवाईआ। तेरी सरन सरनाई आवां लँघ, निम्रता

विच बेनन्ती इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर देणा प्रगटाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड भोले के ★

धरनी धरत धवल कहे मेरा भगतां जोड़ना नाता, नातवां हो के दयां दुहाईआ। प्रेम प्रीती रखण साका, सज्जण मेला सहिज सुभाईआ। मेरा खुल्ल्या रहे ताका, बन्द किवाड़ ना कोए कराईआ। तेरा खेल वेखां पुरख समराथा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तेरे नाम दी सुण के गाथा, मेरे अन्तर निरंतर बिन फ़ुरने वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दे चढ़ाईआ। धरनी धरत धवल कहे मैं भगत सुहेला वेखां तेरा सज्जण, धुर दा मीता नज़री आईआ। जिन्हां दे पड़दे आवें कज्जण, नित नवित वेस वटाईआ। तेरी धूढ़ी करन मजन, जगत सरोवर नहावण कोए ना जाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रहिण मग्न, मार्ग इक्को दए समझाईआ। तेरा तक्क अगम्मा वतन, वारता तेरी रहे गाईआ। कलूआ करे कोई ना यतन, ज़ाहर ज़हूर होवें सहाईआ। जिन्हां पत आयों रखण, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। धरनी धरत धवल धौल कहे मेरा भगतां होवे मेल, मिलणी जगदीस कराईआ। वेखां प्रकाश बिन बाती तेल, जोती जोत डगमगाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले सज्जण सुहेल, मीता अतीता धुरदरगाहीआ। जो वसे धाम नवेल, जिस दा अचरज अगम्मा खेल, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा दे चुकाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड शाहपुर थेड़ी ★

धरनी धरत धवल कहे तेरे गुरमख वेखां बिन अक्खां खोल्ह के अक्ख, आख़र इक्को ध्यान लगाईआ। जिन्हां दे अन्तर होवें प्रतख, घर स्वामी मिल्या साहिब गोसाँईंआ। आत्म कर के आपणे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। ढोला सांझा कर के जस, वेद पुराणां परे करें पढ़ाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, तेरी महिमा सदा अकथ, जुग चौकड़ी गा गा थक्की तेरा अन्त कहिण ना पाईआ। जन भगतां होवें वस, अमृत देवें आपणा रस, शब्द तीर अणयाला मारें कस, जगत किवाड़ा पार कराईआ। निरगुण धार हो प्रगट, काया मन्दिर अंदर खोल्ह के हट्ट, वस्त अमोलक देवें घत, मेहरवान महबूब हो

के आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल सदा अकथ, रसना जेहवा बत्ती दन्द कहिण कोए ना पाईआ। धरनी कहे तेरे भगतां अंदर वेखां परदा, पारब्रह्म प्रभ भेव देणा खुल्हाईआ। जिन्हां नूं मार्ग मिल्या तेरे घर दा, घराने कूड़े गए तजाईआ। सो सन्त सुहेला तेरी मंज़ल चढ़दा, जगत दुआर ना कोए अटकाईआ। सच दवारे एकँकारे तेरे खड़्दा, बन्द किवाड़ा कुंडा लाहीआ। झगड़ा रहे ना सीस धड़ दा, लेखा मुके नारी नर दा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। लेखा मुक्के कलयुग कूड़ी कल दा, मनुआ फिरे कोई ना छलदा, अछल अछल्ल तेरी सेव कमाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैग़ंबर घल्लदा, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म बदलाईआ। तेरा खेल निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनिहाला ★

धरनी कहे मैं तेरे गुरमुख वेखे लाल, अनमुल्ले नज़री आईआ। लेखा मुका के काल महाकाल कल कल्की राह तकाईआ। पूरब जन्म दी घाल घाल, सेवा तेरी झोली पाईआ। शब्द गुरू बणा दलाल, वणज धुर दा वण्ड वण्डाईआ। सदा वेखें मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्त बदल दे चाल, चलत रहिण कोए ना पाईआ। सब दा हल्ल कर सवाल, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। इक्क वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना जगत जंजाल, जीवण जुगत दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सज्जण धुरदरगाहीआ। धरनी धरत धवल कहे मैं तेरे भगत तक्कां सूरे, सूर्या चन्द जिस नूं सीस निवाईआ। ओन्हां दे अन्तर जोती नूरे, नूर नुराने डगमगाईआ। नाता तोड़ सृष्टी वाले कूड़े, कूड़ कुटम्ब गए तजाईआ। तेरा चरण कँवल मस्तक ला के धूढ़े, धूल धुर दी ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ सुजान वेखे मूढ़े, मूर्ख नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दे कौल इकरार बचन सुख़न कीते पूरे, पूरब जन्मां वेख वखाईआ। शब्द अनाद वज्जे तेरी तूरे, तुरीआ तों परे तेरी सिखलाईआ। जिधर तक्कां जन भगतां हाज़र हज़ूरे, सनमुख बैठा सोभा पाईआ। काया माटी तत वजूद चोली चाढ़े रंग गूढ़े, रंग अवल्लड़ा आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारा एकँकारा परवरदिगारा सांझे यारा देणा वखाईआ। धरनी धरत धवल कहे मैं तेरे सन्त सुहेले वेखे, वक्खरी धार चलाईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को सुरती चेतन हो के चेते,

चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। सुत अनादी बण के बेटे, पिता पूत गोद सुहाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन सेज अगम्मी लेटे, आलस निंद्रा नज़र कोए ना आईआ। रूप नज़र ना आए कोई रेखे, अलेखे विच तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ समिन्दिर कौर दे गृह पिण्ड चीमा ★

पुरख अकाल कहे उठ धरनी धरत धवल सवाणी, सुतड़ी दयां उठाईआ। तूं चार जुग दी सुणदी आई बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी वेख वखाईआ। भार चुकदी रही चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे कंध टिकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणाउँदी रही कहाणी, कहावत धुरदरगाहीआ। अठ्ठ सठ्ठ सरोवर सीने उत्ते टिकाउँदी रही पाणी, जल जल विच्चों प्रगटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लभ्भदी रहीउँ शब्द अगम्मी हाणी, जिस दी आयू सके ना कोए समझाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण खेल वखाईआ। जिस दे कारण गुर अवतार पैगम्बर तेरे उत्ते दे के गए कुरबानी, कबरां वाले देण गवाहीआ। पुरख अकाल दा खेल वेख बिना जिस्म इस्म असमानी, बिन चश्म दीद रुशनाईआ। साची मंज़ल तक्क रूहानी, रहमत विच दृढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल सदी चौधवीं तेरी मुहब्बत होई बेगानी, मीत प्यारा मित ना कोए बणाईआ। नेत्र रो के कहे आदि शक्ति भवानी, भुजां वाली दए गवाहीआ। तेई अवतार तेरे उत्ते खा के गए महिमानी, लोकमात फेरा पाईआ। पैगम्बर रख के गए निशानी, मकबरे काअबे वाले बणाईआ। गुरू उपदेशक बणे ज्ञानी, विद्या ब्रह्म समझाईआ। पुरख अकाल दा खेल जुग चौकड़ी सदा महानी, महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस नूं समझे ना कोए विद्वानी, विद्या विद्वत ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल एका एकँकार कटणहार गुलामी, ग़ुरबत विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे दर आप सुहाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश कौर दिल्ली ★

पुरख अकाल कहे सुण धरती, धर्म दवारा दयां वखाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी विछोड़े अंदर ढोले रही पढ़दी, गीतां नाल वड्याईआ। वैरागण हो के रही मरदी, बिरहों विच कुरलाईआ। अनतारू हो के रही तरदी, जगत जहान वेख वखाईआ।

उह खेल वखावे कलयुग कूड़ कुड़यारे कल दी, कलमयां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस गृह इक्को जोत बलदी, बल बावन दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा गृह आप सुहाईआ। धरनी धरत धवल उठ वखावां नेड़े, नेरन नेर जणाईआ। लख चुरासी भगत सुहेले किहड़े, जो भगवन विच समाईआ। चढ़ के शब्दी बेड़े, बिन वञ्झ मुहाणे तारीआं लाईआ। अन्तर होवण चाउ घनेरे, खुशीआं ढोले गाईआ। मैं सद वसां ओन्हां दे वेहड़े, दूजे दर नज़र कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक्क सुहाईआ। धरनी धरत धवल तेरे उत्ते सुहाया मन्दिर, गुरमुख साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जिस दे वसां सदा अंदर, अन्तश्करन डेरा ढाहीआ। चाढ़ अगम्मी रंगण, दुरमति मैल धवाईआ। सिखा के इक्को बन्दन, बन्दा बन्दीखानिउँ बाहर कराईआ। झगड़ा मुका के जूह जंगल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। घर सच सुणा के मंगल, मंगलाचार दयां वड्याईआ। शरअ तोड़ के संगल, संग आपणे नाल बणाईआ। करे खेल सूरा सरबंगन, हरि करता धुरदरगाहीआ। धरनी धरत धवल साची धूढ़ी दा लै लै चन्दन, मस्तक आप रमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे नंगन, परदा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। कुछ लहिणा देणा वेख रविदासे वाले कंगण, पंडत नाल वड्याईआ। सो सूरा खेल करे वरभण्डन, ब्रह्मण्डन खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह मन्दिर इक्क सुहाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे भगतां दा गुरूदवार, गोबिन्द शब्द नज़री आईआ। जित्थे दिसे ना कोई चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूर्या चन्न ना कोए उज्यार, रवि ससि ना कोए वड्याईआ। पिता पूत ना कोए गुफ़तार, गुफ़त शनीद ना कोए पढ़ाईआ। रसना जेहवा ना कोई जैकार, ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। कलमा नग़मा करे ना कोए उज्यार, उजरत मंगे कोए ना थाउँ थाँईंआ। करे खेल आप करतार, करनी दा करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। चरण प्रीती बख्श प्यार, रीती आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क वसाईआ। धरनी धरत धवल वेख मेरयां भगतां घर, मन्दिर सोहणा नज़री आईआ। जित्थे वसे नरायण नर, धुर कन्त बेपरवाहीआ। भय चुकाए भउ डर, भरमां गढ़ तुड़ाईआ। सुरती शब्दी फड़ाए लड़, पल्लू गंढु नाम पवाईआ। निर्मल दीआ बाती कमलापाती इक्को धर, जोती जाता करे रुशनाईआ। लहिणा देणा मुकाए तेई अवतर, पूरब लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। पुरख अकाल कहे धरनी धरत धवल साचे भगत दी महिमा करदे पैगम्बर गुरू अवतार, शास्त्रां नाल वड्याईआ। जिन्हां दा नाउँ सदा जुग चार, चौकड़ी करे रुशनाईआ।

५१६
२०

सो सज्जण सुहेले वेखीं विच संसार, हरि करता आप वखाईआ। जिन्हां दे अंदर मेरा दरबार, दरगाह साची रूप बदलाईआ। अठ्ठे पहर नाद धुन जैकार, अनरागी राग सुणाईआ। सद अमृत मिले ठंडा ठार, प्रेम रस नाल वरताईआ। निरगुण जोत होवे उज्यार, नूरो नूर करे रुशनाईआ। साचा भगत भगवन दे आधार, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला देवणहारा सदा दीदार, नैण निराला इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ समरथ हो टिकाईआ। धरनी धरत धवल साचे भगतां ला चन्दन, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तेरी लेखे लग्गे बन्दन, बन्दगी इक्क जणाईआ। सच दवारे आई मंगण, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दी टुट्टी आया गंढ्ढण, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। नाम वजावण आया मृदंगन, संदेसा इक्को इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साचे हुक्म दी करे ना कोए उलँघण, भाणे अंदर भाणा मन्न के शुकर मनाईआ। एह खेल विच वरभण्डन, भंडी विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल कहे धरनी धरत धवल वेख मेरे लाडले लाल, गुरमुख नज़री आईआ। जिन्हां दी लख चुरासी विच्चों कीती भाल, खोजे थाउँ थाँईंआ। लेखा रिहा ना शाह कंगाल, कमले कोझे गले लगाईआ। पूरा कर सवाल, अगला परदा दए उठाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी करदे रहे भाल, सो निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा एको रंग चढ़ाईआ। धरनी धरत धवल उठ वेख जन भगतां अलग्ग तरीका, तरह तरह समझाईआ। जिन्हां दा मार्ग नीकन नीका, चढ़न कोए ना पाईआ। प्रेम प्यार अंदर भुगतण तरीकां, तारीकी अन्धेरा ना कोए चुकाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे शब्दी हुक्म दा इक्क वसीका, लेखक इक्को सोभा पाईआ। जिस अग्गे वास्ता पाए कुरान मज़ीदा, मज़बूरी आपणी रही सुणाईआ। प्रभ भुल्ली तेरी सर्ब हदीसा, हज़रत रंग ना कोए रंगाईआ। तेरा खेल वेखणा बीस बीसा, सदी चौधवीं आपणा रंग चढ़ाईआ। तेरा भगत सुहेला सदा रहे जग जीता, जगजीवण दाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सिर झुके इक्क जगदीसा, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ।

★ ५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड नूर पुर ★

आदि जुगादि जुग चौकड़ी पुरख अकाल दी मर्ज़ी, मर्ज़ी अंदर गुर अवतार पैगम्बर लोकमात रूप धराईआ। लख चुरासी आत्म धार जिस नूं सदा रहे ग़रज़ी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। नित नवित साचे सन्तां धुर दे भगतां आसा मनसा सुणे अर्ज़ी, ख़्वाहिश ख़सूसीअत विच्चों प्रगटाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लोकमात आवे बण के दर्दी, दीन दयाला हरि गोपाला आपणा वेस वटाईआ। जग वासना कूड़ी क्रिया ममता मोह विकार हँकार रहिण ना देवे फ़र्ज़ी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन आत्मक राग सुणाईआ। नौ खण्ड पिथमी सत्त दीप खेल वेखे सृष्ट सबाई जग दी, चार वरन अठारां बरन अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे मन वासना हद्द दी, हदूद महिदूद इक्को आपणा नाम समझाईआ। जिस दी खेल सदा सचखण्ड दुआर अलग दी, सो पुरख अबिनाशी घट निवासी करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणी कार कमाईआ। सच खुमारी देवे नाम अगम्मी मदि दी, मधुर धुन आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी मर्ज़ी करे निरँकार, दो जहान हुक्मे अंदर फिराईआ। सेवा ला गुरू अवतार, पैगम्बरां कलमे दए पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर कर के ख़बरदार, धुर संदेसा नाम दृढ़ाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी निरगुण नूर जोत कर उज्यार, दीआ बाती कमलापाती इक्को इक्क डगमगाईआ। शब्द अगम्मी दे अनादी धुन्कार, अनहद अनुरागी राग सुणाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले प्रेम प्रीती अंदर लए उठाल, मेहर मुहब्बत विच आपणे रंग रंगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर एकँकार इक्को इक्क जणाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा दए खुल्हाईआ। मर्ज़ी अंदर मरीज़ां दी मर्ज़ करे बहाल, जन्म मरन दा लख चुरासी गेड़ा दए मुकाईआ। साची मर्ज़ी सदा चले श्री भगवान, मानव मर्ज़ी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण, अन्जाणत आपणा भेव खुल्हाईआ।

★ ५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सन्तोख सिँघ दे गृह नूर पुर ★

साची मर्ज़ी करे भगवान, हरि करता वड वड्याईआ। जन भगतां देवे नाम दान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। अमृत रस बख़्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। चरण प्रीती बख़्श इक्क ध्यान, आसा मनसा विच समाईआ।

आवण जावण चुका के काण, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। धर्म दवारा वखा निशान, सचखण्ड साचा दए सुहाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेला कर परवान, परम पुरख परमात्म आत्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मर्ज़ी करे हरि भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी धुर दा कन्त, जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे कलयुग अन्त, श्री भगवन्त लहिणा सब दा वेख वखाइंदा। जन भगतां गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। मेल मिला के साची संगत, पंचम नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित बोध अगाधा बण के पंडत, निरअक्खर धार अक्खरां विच समझाइंदा।

★ ५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ उत्तम सिँघ दे गृह नाभा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ कवण बिध धरीए रूप, रेख भेख समझ किसे ना आईआ। पुरख अकाल कहे मेरी निरगुण जोत होणा सति सरूप, चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त आपणी धार जणाईआ। हुक्मे अंदर करना कूच, कूचा गली लख चुरासी काया माटी वेखणी थाउँ थाँईंआ। सेवा करनी बण के सच सपूत, पिता पुरख अकाल इक्क समझाईआ। परदा ओहला रहे ना काया पंज भूत, आत्म परमात्म लेखा देणा समझाईआ। हर घट अन्तर वेखणहारा मेरा शब्द अगम्मी दूत, दो जहानां वाली आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण राह दस्स अगम्म सुखाला, सुखसागर दया कमाईआ। झगड़ा मुक्के शाह कंगाला, दीन दयाला हो सहाईआ। त्रैगुण माया ममता तुट्टे जंजाला, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दीन दुनी रहे ना कोए बेहाला, बिहबल हो ना कोए कुरलाईआ। काया मन्दिर अंदर वखा सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआर इक्को दे प्रगटाईआ। जित्थे निरगुण दीप होए उजाला, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। फेरनी पए कोई ना माला, मन का मणका दे भवाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन जन भगत वेख आपणा बाला, बाली बुध लै उठाईआ। नाम अगम्मी रस हकीकी जाम दे प्याला, पीआ प्रीतम हो के दया कमाईआ। तेरा नूर ज़हूर दिसे जगत निराला, निरवैर निराकार निरँकार आपणा

भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हथ्थ रख साडी पुश्त पनाह, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तेरा मार्ग दस्सीए राह, रहिबर हो के सेव कमाईआ। सर्ब दा मालक परमात्म जल्वागर नूर खुदा, ज़हूर विच तेरी वड्याईआ। रमज़ इशारा आईए ला, लाशरीक तेरा भेव खुल्हाईआ। सो पुरख निरँजण बण बेपरवाह, हरि पुरख निरँजण परदा दे उठाईआ। तेरा लेखा दो जहानां थाउँ थाँ, थान थनंतर तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे जगत मलाह, खेवट खेटा तूं ही नज़री आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दर्दीआं दर्द वण्डा, दुःख कलेश डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर नाम संदेसा देवां धुर दा ढोला, बिन ढोलक छैणे लैणा गाईआ। जो भाग लगावे काया पंज तत चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा बोला, अनबोलत राग सुणाईआ। चार जुग दा करां पूरा इकरार कौला, धरनी धरत धवल दया कमाईआ। हर घट रमिआ दस्सो जा के मौला, गृह गृह बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्क जणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर सुणो धुर दा वाक् फ़रमान, फुरनयां तों परे करे पढ़ाईआ। अनुभव दृष्टी विच कर परवान, परवाना धुर दा दयां जणाईआ। जिस दा लिख्तां विच दिसे ना कोए ब्यान, इष्टां विच्चों इष्ट सब दा पिता माईआ। सो खेल करे वाली दो जहान, प्रितपालक नूर खुदाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे जागरत जोत जीव जहान, घट भीतर वेखे थाउँ थाँईआ। हुक्मे अंदर हुक्म कर बलवान, कूड़ी क्रिया मेटे निशान, निशाना आपणा नाम समझाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां हउमे हंगता गढ़ तोड़ो अभिमान, काया मकबरे करो सफाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म देणा सच ज्ञान, सो स्वामी अन्तरजामी साहिब सुल्ताना रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर एकँकार इक्को इक्क दरसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वस्त अगम्मी दे दे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। तेरे विच्चों तेरा उपजे जाप, जग जीवण दाते दातार आपणा भेव खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे पाप, पतित पुनीत दए बणाईआ। चिन्ता रोग रहे ना कोए संताप, सोई सुरती शब्द उठाईआ। भविख्तां विच जो आए आख, आख़र सब दा लहिणा देणा मुकाईआ। तूं साहिब पुरख समराथ, सचखण्ड निवासी धुर दा पिता माईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी गाउँदे आए गाथ, गा गा राग अल्हाईआ। कलयुग अन्त दोए जोड़ के हाथ, चरण कँवल सीस झुकाईआ। लहिणा देणा दे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते आपणा रंग रंगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को रखण धुर दी आस, आसा विच भरवासा परम पुरख आपणा देणा समझाईआ।

★ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त सिँघ दे गृह पटयाला ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण खेल तेरा अकथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भेव ना कोए खुल्हाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार नाम निधान श्री भगवान साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरा आए दस्स, बोध अगाध नाद धुन धुन आत्मक राग सुणाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा गुणवन्ते तेरा गा के आए जस, सिफ्तां विच लिख्तां विच तेरी कर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साचे शाह सुल्तान, सो पुरख निरँजण तेरी इक्क सरनाईआ। हुक्मे अंदर वेखीए दीन दुनी जगत जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत फेरा पाईआ। भेव खुल्हाईए काया माटी चाम, दृष्टी अंदर सृष्टी परदा आप चुकाईआ। तेरा सुण अगम्मी फ़रमान, निरगुण धार होए सवाधान, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा इक्को हुक्म धुर फ़रमाना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण धार एकँकार परवरदिगार देणा जणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर सुणो संदेसा अगम्म, अगम्मढ़ी खेल जणाइंदा। नाम निधाना चीनणा बिना रसना जेहवा बत्ती दन्द, दम स्वास स्वास वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। खेल करना बिना हड्ड मास नाड़ी चम्म, चम्म दृष्टी डेरा ढाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत वासना खेड़ा देणा भन्न, पारब्रह्म भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। लेखा जानणा तन वजूद सरवण सुणे कोई ना कन्न, कायनात अंदर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला दयानिध ठाकर आपणा हुक्म सुणाइंदा। हुक्म सुणाए श्री भगवन्त, हरि भगवन दया कमाईआ। एका दृढ़ाउणा धुर दा मंत, गृह गृह अंदर ताल वजाईआ। भेव चुकाउणा जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म देणा उपजाईआ। दूजे दर होवे कोई ना मंगत, वस्त अमोलक काया गोलक देणी टिकाईआ। शब्दी धार महिमा दस्स अगणत, निरअक्खर विच्चों अक्खर धार देणी समझाईआ। गुरमुख वेखणा धुर दा सन्त, साहिब सतिगुर परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

सच संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ला सच महल्ला सचखण्ड दरगाह साची धाम न्यारे इक्को इक्क जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वड दाते बेपरवाह, बेपरवाही तेरी नज़री आईआ। तूं आदि जुगादी इक्क खुदा, खुदी सब दी दे मिटाईआ। तेरे चरण कँवल ध्यान रहे लगा, सीस जगदीस इक्क निवाईआ। तेरा लेखा लिखे कोई ना कलम शाह, कातब रूप ना कोए धराईआ। तूं जल्वागर इक्क रुशना, लख चुरासी रिहा समाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म दे बदला, बदली होवे ख़लक खुदाईआ। सच संदेसा नर नरेशा नग़मा इक्को दे सुणा, गीत गोबिन्द तेरी वज्जे वधाईआ। हर घट रमिआ राम नज़री आ, शाम हो के बंसरी इक्क सुणाईआ। जीव जंत धुर दी गोपी लै प्रना, आत्म परमात्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे खपा, माया ममता मोह विकार लोकमात रहिण ना पाईआ। तेरे अग्गे करीए सर्ब दुआ, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तूं ख़ालक ख़लक आदि जुगादी रहनुमा, रहमत तेरी नज़री आईआ। नित नवित सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे बणदे रहे पेशवा, पेशतर तेरा हुक्म आए सुणाईआ। सो वेला वक्त दो जहानां श्री भगवाना गया आ, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ सरन सरनाई सरनगति तेरी रहे तका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे कँवल चरण चरण कँवल ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तूं साहिब पुरख अगम्म, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर सदी चौधवीं बेड़ा बन्न्ह, खेवट खेटा हो के आपणी कार कमाईआ। कर प्रकाश काया माटी साचे तन, तन वजूद कर रुशनाईआ। नाम संदेसा नर नरेशा इक्क सुणा बिना कन्न, सरवणां तों परे दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान मेहरवान महबूब मुहब्बत विच इक्को मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर धुर दे मालक, मलकीअत दीन दुनी तेरी नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल आदत, अदल अदालत आप कमाईआ। हिरदे अंदर बख़्श इबादत, नाम निधाना दे जणाईआ। तूं सदा सदा सही सलामत, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। ममता मोह मेट अलामत, आलम उल्मा इलम इक्को दे समझाईआ। धुर दा अमृत बख़्श नयामत, अग्नी तत दे बुझाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट भीतर काया मन्दिर अंदर गृह आपणे नाम दी दे ज़मानत, दीन दयाल दयानिध आपणी दया कमाईआ। पंजां तत्तां अंदर तेरा आत्म तेरी अमानत, दूजी वस्त नज़र कोए ना आईआ। तेरी रहमत नाल मनुआ करे ना कोए बग़ावत, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर हरि जगदीश दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख परमात्म, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। तेरे

नाम दा समझे ना कोए महातम, महिमा कहिण कोए ना पाईआ। परदा खुल्लया ना किसे सनातम, सति दुआर परदा ना कोए उठाईआ। दरस करे कोई ना बातन, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। साचा घाट लभ्भे किसे ना पातण, नईआ नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मनसा मोह ना मिटे वासन, वसल यार ना कोए वखाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करते तेरी ओट रखाईआ। झगड़ा मुका पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर तेरी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे अरज़ोई अंदर आखण, बेनन्ती हक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सुणां अगम्मी अरज़, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। निरगुण धार वण्डां दर्द, दर्दी हो के फेरा पाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, बदला सब दा दयां चुकाईआ। चार जुग दा रहिण ना देवां कर्ज़, मकरूज़ हो के लहिणा झोली पाईआ। दीन दुनी दा लेखा करां नपड़द, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। साचे नाम दा लए कोई ना धड़त, गुर गुर हट्ट ना कोए विकाईआ। सब दी पूरी करां लिख्त पढ़त, भविख्तां विच्चों भविख्त दयां समझाईआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां ज़िमीं असमानां मन्नणा पए इक्को इष्ट, इष्ट आत्मा परमात्मा इक्क जणाईआ। कुछ लेखा लहिणा देणा राम नाल वशिष्ट, विषयां तों परे जिस दा विशा समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा सति सतिवादी इक्को इक्क सुणाईआ। सुणो संदेसा धुर फ़रमान, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जा के वेखो जीव जहान, घट घट अन्तर फोल फुलाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन हो के वेस वटाईआ। जो लिख के आए ब्यान, नाता जोड़ कलम शाहीआ। उस दा लहिणा देणा मुकाए श्री भगवान, भाग हिस्सा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहानां घट निवासी सर्ब जीआं दा जाणी जाण, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना आईआ।

५२६
२०

५२६
२०

★ ७ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलदेव किशन दे गृह पटयाला ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ असीं कर कर थक्के यतन, कलयुग अन्त श्री भगवन्त सृष्टी दृष्टी ना कोए बदलाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार तक्के कोई ना आपणा वतन, बेवतन बेपरवाह होई तेरी लोकाईआ। सच किनारा धर्म दवारा वेखे कोई ना पतण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जगत विकारी हस्सण, हउमे

हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। जूठ झूठ अपराध मोह विकार ममता विच वसण, वसल यार करे ना कोए ख़ुदाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश उठ उठ नस्सण, धीरज धीर सति सन्तोख सांतक सति ना कोए कराईआ। त्रैगुण माया पंज तत शरीर बेनज़ीर लाई अग्न, अग्नी तत बुझा ब्रह्म मति ना कोए दृढ़ाईआ। बिन साचे नाम ओढण दीन दुनी होई नग्न, समरथ स्वामी अन्तरजामी सीस जगदीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दे मालक ख़ालक प्रितपालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं सदी चौधवीं चार वरन अठारां बरन फिर फिर थक्के, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर तक्के, निरगुण हो के गृह गृह फोल फुलाईआ। पन्ध मुका के वेखे मदीने मक्के, धुर फ़रमाने अंदर सेव कमाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले थोड़े दिसदे सच्चे, दीन दुनी ममता मोह विच हल्काईआ। निरगुण धार जोत सरूप निज नैण कोई ना तैनूं तक्के, ज्ञान नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सब दे चीथड़ दिसण फटे, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे चरण कँवल सीस ना कोए निवाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान दिसण रट्टे, झगड़ा द्वैत ना कोए मिटाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर जीवां जंतां साधां सन्तां पत कोई ना रखे, मेहरवान महबूब तुध बिन होए ना कोए सहाईआ।
सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरे दर दुआर आए नस्से, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दा सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी लोकमात खोल्ह इक्को हट्टे, जगत वणजारा सृष्टी दृष्टी अंदर लै बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भाण्डे रहिण ना दे कच्चे, कंचन गढ़ गृह मन्दिर दे सुहाईआ। मन वासना ममता विच मूल ना नच्चे, मन का मणका दे भवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सब किछ तेरे हथ्थे, सच स्वामी अन्तरजामी तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सतिगुर तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग चारों कुण्ट वरती कल, कलमा हक नज़र किसे आईआ। सज्जण मीत कपट विकार करे छल, अछल छलधारी तेरी समझ कोए ना पाईआ। पूरब लहिणा देणा लेखा संदेसा कुछ दे के गया बावन बल, भेव अभेदा अगम्म अथाह खुल्हाईआ। जिस दा लेखा परे चार वेदा, ब्रह्म वेता अन्त कहिण ना पाईआ। लिख्या ना जाए किसे कितेबा, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल मन्दिर अंदर चढ़ के खोल्ह आपणा भेदा, भेव अभेद देणा दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार किस बिध खेलें खेडां, ख़ालक ख़लक आपणा हुक्म वरताईआ। आदि निरँजण अबिनाशी करते मेहरवान मुहब्बत विच दीन दुनी दस्स आपणा देसा, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को इक्क समझाईआ।

५२७
२०

तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित रहें हमेशा, मर जीवत रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां पृथ्मी आकाश गगन गगनंतर तेरे हथ्थ लेखा, लिख्त भविख्त इष्ट दृष्ट विच दे बदलाईआ।

★ ७ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सतवंत कौर दे गृह पटयाला ★

गुर अवतार पैगम्बर गाओ ढोला, नव सत्त अगम्मी राग सुणाईआ। चार वरनां दस्सो इक्को बोला, अनबोलत रिहा दृढ़ाईआ। सोहँ शब्द आत्म परमात्म बणाओ विचोला, विचला भेव जगत खुल्हाईआ। तन माटी वजूद रहे कोई ना ओहला, परदा देणा उठाईआ। हर घट रमिआ नज़र आवां मौला, अमोलक वस्त देणी वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे कोई ना गोला, सच प्रीती देणी समझाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सति धर्म दा जा के खेलो होला, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा सति सतिवादी इक्को इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरे नाम दा गाओ गीत, ढोला दीन दुनी दयो जणाईआ। लख चुरासी काया माटी करो ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा परदा देणा उठाईआ। पुरख अबिनाशी नज़री आए त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी आपणा भेव खुल्हाईआ। लेखा मुके ऊँच नीच, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच नाम दा करो जैकार, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। सुरती शब्द होवे प्यार, प्रेम प्रीती इक्क वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना कोए विभचार, दुरमति मैल देणी धवाईआ। साचे मन्दिर दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, निरगुण नूर देणा दृढ़ाईआ। अनहद नाद धुनी सुणे जैकार, शब्द अगम्म शनवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नाता जोड़ सर्ब संसार, सृष्टी दी दृष्टी देणी बदलाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण होवे ना कोए खुआर, ख़ालस इक्को रंग देणा रंगाईआ। सतिजुग साचा सति करे प्यार, धर्म दवारा धुर दा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर साचे नाम दा दस्सो स्वाद, अनरस दए जणाईआ। जिस ने खेल रचया आदि, सो वेखणहार ब्रह्माद, जुगादि जुग आपणा हुक्म वरताईआ। वस्त अमोलक देवे दाद, हरि करता आप वरताईआ। सृष्ट सबाई मालक ख़ालक प्रितपालक दस्सो नाम इक्को गॉड, राम रहीम इक्को नज़री आईआ।

बिन सोहँ शब्द सतिजुग अंदर दूजी रहे ना कोए आवाज़, अजां बांग ना कोए सुणाईआ। हँस बुद्धी रहे ना कोई काग, काग हँस रूप देणा बदलाईआ। मन्दिर वड़ के अंदर चढ़ के आत्म परमात्म खोल्हो राज़, पारब्रह्म ब्रह्म भेव देणा खुल्हाईआ। सति धर्म दा बदल देणा रिवाज, समाज इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना धुर दा राणा इक्को इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरे नाम दा दयो होका, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोका, चौदां तबक भेव देणा खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सच सलोका, सोहँ ढोला बिन ढोलक छैणे देणा खड़काईआ। सतिजुग अन्तर निरंतर पढ़ना पए किसे ना पोथा, बिन पुस्तक उस्तत मेरी देणी समझाईआ। शब्द नगारे तन वजूद ला के चोटा, चोटी चढ़ के परदा देणा उठाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत माया ममता मोह विकार अंदर रहे कोए ना खोटा, कूड़ कपट अंदरों देणा कढाहीआ। निर्मल प्रकाश कर के जोता, दीआ बाती कमलापाती देणा डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार गुर अवतार पैगम्बरां देवे मौका, हुक्मे अन्तर हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के दस्सो रमज़ हकीकी, हकीकत विच्चों दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दी सच प्रीती, बिना प्रीत प्रीतम पार ना कोए कराईआ। कलयुग अन्तिम औध रही बीती, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। झगड़ा चुकणा हस्त कीटी, ऊँच नीच इक्को रंग वखाईआ। माया ममता मोह ना रहे पतित पनीती, पतित पावन होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जीव जंत परखणहारा नीती, नीतीवान श्री भगवान आदि जुगादि इक्को इक्क नज़री आईआ।

★ ७ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी काको दे गृह पिण्ड चुपकी ज़िला पटयाला ★

गुर अवतार पैगम्बर साचा नाम वजाओ नगारा, सोहँ ढोला देणा समझाईआ। चार जुग तों वक्खरा दस्सणा नाअरा, नर नरायण रिहा दृढ़ाईआ। आत्म दा प्रेमी प्रीतम दस्सणा प्यारा, पारब्रह्म प्रभ ब्रह्म सज्जण देणा समझाईआ। निरगुण धार अगम्मी दे इशारा, सोई सुरत देणी उठाईआ। सृष्ट सबाई करे वणज सच व्यपारा, नाम वस्त अमोलक देणी वखाईआ। दर ठांडा वखाउणा धुर दरबारा, दरगाह साची परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के ढोला गाओ गहर गम्भीर गुणी गहिंद, सरगुण धार

दयो समझाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी आदि जुगादि सदा बख्शिंद, बख्शणहारा रहमत आपणी आप कमाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख बणो नादी बिन्द, जो बिन्दराबन वाला काहन गया समझाईआ। निजर धार अमृत रस पीओ सागर सिन्ध, धुर प्याला इक्को जाम प्याईआ। मन कामना रहे ना कोई चिन्द, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। भाग लगाओ काया माटी साचे पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे गहर गम्भीर गुणी गहिंद, धुर दा ठाकर बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर साचा नाम दस्सो एक, एकँकार रिहा दृढ़ाईआ। सृष्ट सबाई बुद्धी होए बिबेक, दुरमति मैल धवाईआ। सुरती शब्द शब्द सतिगुर धार लए चेत, चार्तक तृखा बुझाईआ। परदा लाहो नेतन नेत, निज नैण होवे रुशनाईआ। सच प्रीती इक्को दस्सो हेत, हितकारी हो के सेव कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे रेख, भेख पखण्ड देणा मिटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को देवे सच संदेश, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे सदा हमेश, सति सतिवादी आपणा हुक्म हुक्म विच समझाईआ।

★ ७ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलदेव सिँघ, अजैब सिँघ दे गृह पिण्ड बूटा सिँघ वाला ज़िला पटयाला ★

गुर अवतार पैगम्बर वेखो हरि हज़ूरी, हरि करता रिहा दृढ़ाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश तक्को नूरी, नूर नुराना डगमगाईआ। अकल कलधारी सचखण्ड निवासी देवे मन्ज़ूरी, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। लोकमात चार कुण्ट दहि दिशा पन्ध मुकाउणा नेड़ दूरी, नव सत्त आपणा फेरा पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों क्रिया वेखणी कूड़ी, पड़दे उहल्यों परदा देणा चुकाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां जन भगतां मस्तक लगाउणी अगम्मी धूढ़ी, टिक्का इक्को नाम रमाईआ। नाम घालणा सब दी लेखे लाउणी मजदूरी, दीन मज़्ब दा झगड़ा रहे ना राईआ। आसा मनसा दर घर साचे करनी पूरी, पूरन ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धुर दा राणा श्री भगवाना सच फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दे अंदर जा के वड़ना, काया काअबे वेख वखाईआ। सच प्रकाश इक्को करना, नूरी जलवा नूर रुशनाईआ। नाम निधान श्री भगवान नग़मा इनायत वाला पढ़ना, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। सच दुआर एकँकार दस्सणी इक्क सरना, सरनगति ब्रह्ममत इक्को समझाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात दीन मज़्ब वरनां बरनां, भेव अभेदा निरंतर अन्तर देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन सर्ब निमस्कार, सचखण्ड दवारे सीस निवाईआ। निरगुण धार होए ख़बरदार, आलस निंद्रा ग़फ्लत नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साडा लहिणा देणा वखा पूरब जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग परदा दे उठाईआ। तेरे हुक्म अंदर फिरीए सर्ब विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव आपणे नाल मिलाईआ। गृह गृह अंदर मन्दिर वड़ के वेखीए तेरी धार, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त खोज खुजाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी गृह मन्दिर घट भीतर पावणहारा सार, सर्ब कला समरथ महिमा अकथ तेरी वड्याईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणा दे आधार, पुश्त पनाह हरि जगदीश आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरे दर मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो गुर अवतार पैगम्बर परम पुरख दी धार, बिन अक्खरां दयां समझाईआ। दो जहानां तों वक्खरा लेखा भेव खोल्हां अगम्म अपार, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। जागरत जोत जोती जाता करे उज्यार, नूर नुराना श्री भगवाना इक्को इक्क डगमगाईआ। लोकमात मार झात इक्क इकांत सृष्ट सबाई पावे सार, सार शब्द सार्थी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे करन ध्यान, इक्त्ते हो के सीस निवाईआ। किरपा कर मेहरवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखीए विच जहान, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। भेव खुल्हाईए शास्त्र सिमरत वेद पुराण, खाणी बाणी परदा मात उठाईआ। संदेसा देईए इक्क फ़रमान, फ़ुरनयां तों बाहर होवे पढ़ाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, हिंसा अहिंसा दोवें लेखा दए चुकाईआ। एका नाम तेरा होवे प्रधान, प्रधानगी मिटे कूड़ी शाहीआ। तेरा आदि जुगादी कलमा नौजवान, नौबत हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे दवारे धुर दी मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंगण, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी देवणहारा अनन्दन, अनन्द इक्को इक्क दे जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ढाहीए कंधन, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साचा छन्दन, सोहँ करें सच पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण टुट्टी आवें गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। तेरे सन्तां भगतां गुरमुखां गुरसिखां जोती धार मलीए चन्दन, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। लख चुरासी जीव जंत चार वरन अठारां बरन इक्को करन बन्दन, सजदा सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

५३१
२०

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी महिमा तोहे बण आईआ। पुरख अकाल कहे सुणो गुर अवतार पैगम्बर मेरे नढ्ढे बाल, धुर संदेसा दयां जणाईआ। लोकमात मार झात दीन दुनी दा वेखो हाल, अन्तरगत सब दी फोल फुलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे ताल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होई हल्काईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सरसती रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर रही वहाईआ। किरपा कर पुरख अकाल, सच बेनन्ती मन्न सवाल, अहिवाल भविख्तां वाला दृढ़ाईआ। दीन दुनी होई बेहाल, सब दे सिर ते कूके काल, लेखे लग्गे किसे ना घाल, धायल हो के सारे रहे सुणाईआ। फल दिसे किसे ना डाल, जगत रीती अवल्लड़ी चाल, शब्द सतिगुर ना मिले दलाल, जगत वणजारा कम्म किसे ना आईआ। सतिगुर सूरा इक्क उठाल, जो सतिजुग साचा करे बहाल, चरण प्रीती निभाए तेरे नाल, दूजा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर मालक धुर, नेत्र रोवण देवत सुर, सुरती शब्द बिन दीन मज़्ह्ब अदब नाल तेरे नाल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी तक्कीए की, करते कीमत तेरी कोए ना पाईआ। सति धर्म दी दिसे कोए ना नींह, निउँ निउँ सीस जगदीस ना कोए झुकाईआ। झगड़ा किसे ना मुके साढे तिन्न हथ्थ सीं, भगत सुहेला बण के इकेला दरस कोए ना पाईआ। कलयुग कूडी क्रिया मन वासना पई लीह, मार्ग हक ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दे मालक सदा प्रितपालक ख़ालक ख़लक तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए जगत, जुगां दे विछड़े ध्यान लगाईआ। कोटां विच्चों थोड़े धुर दे भगत, जो भगवन विच समाईआ। नाम खुमारी विच होए मस्त, मस्त दीवाने कहे लोकाईआ। झगड़ा मुका के कीट हस्त, हस्ती इक्को विच समाईआ। निरगुण धार निरवैर तेरा करन दरस, जोती जाते पुरख बिधाते मिल के वज्जे वधाईआ। पन्ध मुका के फर्श अर्श, अर्शां तों परे निरगुण हरे दर तेरा नज़री आईआ। जन्म कर्म दी मेट के हरस, दिवस रैण रहे तड़प, भटकणा जगत दिती गवाईआ। तिन्नां उत्ते कर तरस, चिन्ता सोग रहे ना हरख़, गुरमुख बिन कसवटीउँ लैणे परख, नाम निधाना श्री भगवाना आपणी रगड़ लगाईआ। तेरी मंज़ल चढ़दयां सन्त सुहेला कोई ना जावे अटक, पंच विकारा कटक डेरा देणा ढाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार ख़ालक ख़लक साडी पूरी करनी शर्त, निरगुण धार आयों परत, लेखा मुकाउणा धरनी धवल धरत, धौल लहिणा देणा चुकाईआ। दीन दयाले हरि गोपाले तेरा खेल वेखीए अचरज, अचरज विच्चों अचरज आपणा खेल देणा प्रगटाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, इक्को धुर दी तेरी मद्दद मंग मंगाईआ। कलयुग

कूड़ी क्रिया मेट तशदद्, तसव्वर आपणा आप दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बर कहिण निरगुण धार सारे होए तअज्जब, हैरानी विच परेशानी, परेशानी विच बेईमानी, दीन दुनी दामन हथ्थ किसे ना आईआ।

★ ८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ मोहर सिँघ दे गृह पिण्ड बूटा सिँघ वाला ★

सो कहे मेरा खेल समर्था, सदा सदा सद वड्याईआ। हँ कहे मैं गावां तेरी गाथा, खुशीआं विच सोहला गाईआ। सो कहे मैं वेखां बिना अक्खां, रचना आपणी परदा लाहीआ। हँ कहे मैं तेरे चरण दवारे वसां, दूजा दर नज़र ना आईआ। सो कहे मैं खोल्हां अगम्मी हट्टा, वस्त अमोलक आदि जुगादि वरताईआ। हँ कहे मैं प्रेम प्रीती लाहा खट्टां, खटका अवर रहे ना राईआ। सो कहे मैं साचा दस्सां जस्सा, वेद पुराणां मात उपजाईआ। हँ कहे मैं टेकां मथ्था, सीस जगदीश झुकाईआ। सो कहे मैं हर घट अन्तर वसां, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हँ कहे मैं तेरे अग्गे वास्ता घत्तां, निम्रता विच मंग मंगाईआ। किस वेले मेल होवे कठ्ठा, जोड़ा जुड़े धुरदरगाहीआ। प्रेम प्यार होवे सच्चा, सति विच समाईआ। भाग लग्गे काया माटी कच्चा, कंचन गढ़ सुहाईआ। सो कहे एह खेल आपणे हथ्थ रखां, दूसर चले ना कोए चतुराईआ। नव नौ चार भेव किसे ना दस्सां, दहि दिशा ना कोए शनवाईआ। ज्यों भावे तां आपणी खेल वखावां बिन अक्खां, आखर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हँ कहे मैं तेरा नूर, अवर कोए ना पिता माईआ। सो कहे मैं सर्ब कला भरपूर, देवणहारा अगम्म अथाहीआ। दोहां मिल के बणे एका पूर, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा हज़ूर, हाज़र हो के खुशी बणाईआ। झगड़ा रहे ना कोए कूड़, कूड़ कुटम्ब देवां मिटाईआ। साची दे के अगम्मी धूढ़, धुर दा लेखा दयां बणाईआ। सच प्रीती बख्श सरूर, सुरती आपणी धार मिलाईआ। तूं रहिणा सदा मशकूर, शुक्रिए विच ढोले गाईआ। तेरा दिसे ना कोए कसूर, झगड़ा तत ना कोए चतुराईआ। नव नौ चार पिच्छों होवे मन्ज़ूर, महबूब हो के आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो कहे मैं साहिब स्वामी, सर्ब कला अख्वाईआ। हँ कहे मैं तेरा नूर निशानी, जगत जहान सोभा पाईआ। दोहां मिल के खेले खेल दो जहानी, तत वजूद वज्जे वधाईआ। सच संदेसा अगम्मी बाणी, बावन अक्खरां बाहर पढ़ाईआ। बोध अगाध अकथ कहाणी, सिफ्ती ढोला गाईआ। लहिणा देणा वेखां तेरी तरल जवानी, जोबन धुर दा

इक्क वखाईआ। जूह दिसे ना कोए बेगानी, घर इक्को इक्क प्रगटाईआ। जित्थे झगड़ा नहीं ज़िमीं असमानी, ब्रह्मण्ड वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तेरा मेरा नूर इक्क नुरानी, निरगुण जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वखाईआ। हँ कहे मैं तेरा हाजी, हुज़रा दे वखाईआ। सो कहे मैं मालक आदी, अदल इन्साफ़ कमाईआ। दोहां मिल के झगड़ा चुक्के हकीकी इश्क मिज़ाजी, मज़े तों बाहर आपणा आप प्रगटाईआ। सिफ्त गावे ना कोए रबाबी, तन्द सतार ना कोए चतुराईआ। मेला किसे ना अवर अहिबाबी, सज्जण इक्को नज़री आईआ। लेखा मुके सवाल जवाबी, नूर नूर विच समाईआ। जिस दी आसा रखी नानक विच बग़दादी, बग़लगीर हो के गया दृढ़ाईआ। सो होवे हँ इमदादी, दूजा साथी ना कोए समझाईआ। महल्ल सोहे इक्क महिराबी, मुहब्बत महबूब वाली प्रगटाईआ। अक्खर वड्याई ना कोए किताबी, शाही तों परे सच्ची शहिनशाहीआ। जोड़ दिसे ना कोए लुआबी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। सो कहे मेरा हक संदेसा, हकीकत दए जणाईआ। हँ कहे मैं सब कुछ देखा, तेरी बेपरवाहीआ। जोती धार बदली रेखा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। अन्तर रख्या आपणा भेता, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। नव नौ चार ना कीता चेता, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। फिर के वेख्या देस परदेसा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चुकया ठेका, पटेदारी पन्ध मुकाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम ओम रिहा कोई ना नेता, नित नवित आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रिहा वेसा, भेखा धारी बेपरवाहीआ। हँ कहे बिन मेरे तेरी करी किसे ना भेंटा, भट्ट सारे गए गाईआ। मैं आदि जुगादी शब्दी धार विच्चों निकलया तेरा बेटा, जिस नूं दूजी जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुरदरगाही तेरी आस रखाईआ। सो कहे मैं सर्ब स्वामी मीत, मालक इक्क अख्वाईआ। हँ कहे मेरे बिना चल्ले ना कोए रीत, चुरासी कम्म किसे ना आईआ। दोहां मिल के बणे इक्को गीत, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। बिन भगतां किसे ना बणे मीत, सज्जण संग ना कोए रखाईआ। झगड़ा रखे ना ऊँच नीच, राउ रंक आपणे घर वसाईआ। सब नूं करे ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। इक्को दस्से हक प्रीत, प्रीतम धुर दा दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो पुरख निरँजण हँ करे आप बख्शीश, बख्शिश दी धार बख्शिश विच आपणे नाल रखाईआ।

★ ८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ चानण सिँघ दे गृह पिण्ड हंडोला ज़िला करनाल ★

आत्म परमात्म मिलाप होवे इस हिसाब, जिस हिसाब नूं कुतबखाना ना कोए छपवाईआ। जिस दा हिस्सा वण्ड ना होवे कोई बाब, हिन्दसयां वाला रूप ना कोए प्रगटाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोई कलम दवात, शाही शाहकार ना कोए वड्याईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी महिमा सिफ्त गाउँदे कोटन कोटि जाप, रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोला राग अलाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी लेखा धुर दा जाणे पाकी पाक, पतित पुनीत नूर खुदाईआ। आत्म परमात्म मेला मिले हरि जगदीशर आप, आप आपणा परदा अंदरों दए उठाईआ। त्रैगुण माया पंज तत विकारा त्रै रहे कोई ना ताप, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। गृह मन्दिर अंदर निरंतर नूरी दरस देवे साख्यात, मन साजश डेरा देवे ढाहीआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर जोती जाता पुरख बिधाता करे प्रकाश, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जो साहिब सतिगुर जन होवे दासी दास, हँकारी गढ़ जगत जुग ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे मेला लए मिलाईआ। आत्म परमात्म मिलणा हिसाब नीकण नीका, ख़तो खताबत दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को सतिगुर नाल लग्गे सच प्रीता, प्रीतम हो के आपणा घर वखाईआ। तन माटी करे ठांडा सीता, सीतल धार निजर बूँद स्वांती दए टपकाईआ। ठाकर हो के मिले अगम्मी मीता, अलख अगोचर अगम्म अथाह निहकर्मी कर्म कांड दए खपाईआ। साचा दे के निरगुण धार अगम्मी कलमा हक हदीसा, हज़ूर हज़रतां इक्क पढ़ाईआ। लहिणा देणा मुकाए हरिजन जीव जी का, जीवत जन्म मरन विच बदलाईआ। मन वासना रहिण ना देवे कोए शरीका, शिरक्त अंदरों दए कढाहीआ। इक्को शब्द सतिगुर हथ्थ हक तौफ़ीका, तोहफ़ा देवे धुरदरगाहीआ। आसा मनसा पूरी करे उम्मीदा, आमद विच खुशामद विच मुर्शद मुरीदां रंग रंगाईआ। जे प्यार नाल विहार नाल धार नाल इक्को वार अंदरों बाहरों सिध्धा कर लओ दीदा, दीदा दानिस्ता जोती जाता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। हिसाब अंदर दस्से आपणी करनी, करते हथ्थ वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा जिन्हां तुक अनादी पढ़नी, ब्रह्मादी वेख वखाईआ। साहिब स्वामी ला के आपणी सरनी, सरनगति दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों झड़नी, मन विकारा देवे मुकाईआ। मंज़ल इक्को हकीकी चढ़नी, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे विच समाईआ। हिसाब कहे आत्म परमात्म वेखां मिलदा चंगा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। ज्यों त्रबैणी दी धार गंगा, जमना सरसती आपणा

आप आपणे विच छुपाईआ। सो साहिब सतिगुर गुरमुखां देवे इक्क अनन्दा, निज आत्म अनन्द वखाईआ। बिन सूरज चन्द चाढ़ के चन्दा, जोती चन्द करे रुशनाईआ। बिन बन्दगीउँ बणा के बन्दा, बन्दना धुर दी दए समझाईआ। मन विकारी रहिण ना देवे गंदा, दुरमति मैल दए धवाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म विच समाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि बणाया आत्म परमात्म छन्दा, शाम सुंदर जिस नूं कहि के झट लँघाईआ। जिस दी धार नाल गुर अवतार पैगम्बर तोड़ के बजर कपाटी जंदा, ज़िंदगी आपणी गए बदलाईआ। सो साहिब सुल्ताना श्री भगवाना नाद अनादी धुन उपजंदा, अनरागी राग सुणाईआ। जो सच सरनाई बेपरवाही चरण कँवल तकंदा, ताकत नाल सदाकत नाल बिन इबादत पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म जावे मिल, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। झगड़ा रहे ना तीजे तिल, लोयण तीजे परदा दए उठाईआ। प्रेम प्रीती साची रीती अंदर जगत विकारा जाए हिल्ल, दर घर ठांडे मुख छुपाईआ। जो रस मानण दी करदे ढिल, मन वासना उन्हां हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग मेला भगतां नाल रखाईआ। आत्म परमात्म आदि जुगादी जोड़ा, जोड़ी हरि जगदीस बणाईआ। जिन्हां करे भाग मथोरा, मिथ्या सृष्टी दए गवाईआ। लेखा मुका के पंजां चोरा, चोरी चोरी आपणा घर उपजाईआ। पन्ध मुका के अन्धेर घोरा, सुखमन टेडी बंक पार कराईआ। कर प्रकाश थोड़ा थोड़ा, जोत निरँजण डगमगाईआ। अमृत बूँद स्वांती रस दे के भोरा भोरा, भरम भाण्डा दए भन्नाईआ। साचे भगतां दी सद आपे रख के लोड़ा, लोड़ींदा साजण लए मिलाईआ। जिन्हां किरपा कर के ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान"" देवे साचा दोहरा, दूए दा एका एके दा एकँकार इक्को रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म काया पंज तत वजूद निरगुण धार ना होए विछोड़ा, सरगुण नाता तुट्टे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे तोरा मोरा, मैं ममता डेरा देवे ढाहीआ।

★ ८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ करनैल सिँघ, जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड खरका ज़िला करनाल ★

गुर अवतार पैगम्बर संदेसा सुणो धुर दा, धुरदरगाही करता आप जणाईआ। झगड़ा रहे ना किसे देवत सुर दा, रिख मुन मुनीश्र तपीश्र वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच सुनेहड़ा इक्को पुरख अकाल सतिगुर दा, गुरू गुरदेव स्वामी अन्तरजामी आप सुणाईआ। जिस दा मंत्र आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित फ़ुरना फुरदा, सुरती शब्दी मेला मेले सहिज सुभाईआ।

सो नाता तोड़े कलयुग कूड़ कुड़यारी क्रिया कूड़ दा, सति धर्म देवे माण वड्याईआ। वेखो खेल पुरख अबिनाशी करते हाज़र हज़ूर दा, हज़रत हो के करे अगम्म पढ़ाईआ। वक्त सुहञ्जणा तक्को अबिनाशी अचुत नूर दा, नर नरायण रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो खेल धुर दे ख़ालक, साहिब स्वामी आप वखाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्क इकल्ला ला अदालत, परवरदिगार सांझा यार परदा ओहला दए उठाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना रहे ना कोए अदावत, अदल इन्साफ़ लेखा जाणे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो खेल पुरख अथाह अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी फोल फुलाइंदा। लेखे लावे आत्म परमात्म पवण स्वामी दम, दामनगीर बेनज़ीर आपणी कार कमाइंदा। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले मेल मिला के हरिजन, भगत भगवन्त आपणे रंग रंगाइंदा। कर प्रकाश तन वजूद काया माटी चम्म, चन्द चांदना इक्को इक्क डगमगाइंदा। भेव खुल्हाए अन्त अख़ीर आत्म परमात्म हँ ब्रह्म, धर्म दी धार एकँकार आपणी कल प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर निराकार निरँकार इक्को इक्क सुणाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर सुणो हुक्म अंदर फ़रमान, फ़ुरनयां तों बाहर दयां जणाईआ। जिस दी करे ना कोए पहचान, सो बेपहचान आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाण दो जहान, जीवण जुगत रिहा दृढ़ाईआ। हुक्म संदेसा नर नरेशा देवणहारा इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढाइंदा। मन मनसा रहे ना कोए अभिमान, बेईमान शरअ शैतान आप मिटाइंदा। लेखा जाणे हर घट वस्या राम, शब्द संदेसा देवे इक्क पैग़ाम, पीर पैगम्बर हुक्मे अंदर हुक्म इक्क वरताइंदा। नाम हकीकी लाशरीकी शायद मुशाहिद विच देवे इक्क जाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कुदरत दा कादर आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरी वेखी हक हकीकत, हुक्म सुणया धुरदरगाहीआ। दीन दुनी दी मेटे कवण शरीकत, शरअ विच्चों शरअ दए बदलाईआ। साचे नाम दी दस्से असलीअत, असल वसल यार तेरा प्यार नज़री आईआ। जुग चौकड़ी असीं कर के आए वसीअत, लेखा भविख्त विच समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अख़ीर बेनज़ीर पुरख अकाल दीन दयाल लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सब दी बणे इक्क वलदीअत, वलद वालदा दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर दरवेश दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मातलोक

५३७
२०

वेखी तेरी झलक, झल्ली कीती जगत लोकाईआ। सति रिहा ना किसे ख़लक, ख़ालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। बदल ना सक्या पलक, पलकां दे पिच्छे तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। नाम खुमारी चढ़ी किसे ना मस्त, दीवाना दर ना कोए सुहाईआ। मन विकारा करे ना कोई नष्ट, नश्यां विच डुब्बी कूड़ लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दोए जोड़ के हस्त, हस्ती विच मस्ती दे वखाईआ। तेरा खेल उपर अर्श किरपा कर उपर फर्श, सदी चौधवीं आवे तरस, रहमत विच रैहम देणा कमाईआ। जो सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण जन भगत बिरहों विछोड़े विच रहे तड़प, तिन्नां अन्तर मेला लैणा मिलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अबिनाशी घट निवासी निरगुण जोत खेल वेखणा परत, पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे रहे भटक, अन्त अख़ीर पूरी कर शर्त, लेखा मुका धरनी धरत धवल उत्ते फर्श, फ़ैसला धुर दा हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी वण्ड दर्द, दुखियां दु:ख आपणे विच समाईआ।

★ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह कौमी फ़ारम ज़िला करनाल ★

पुरख अकाल गुर अवतार पैगम्बरां देवे थापी, पुश्त पनाह बेपरवाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार जुग दा पूरब हुक्म संदेसा देवे सुणाए अगम्मी साखी, साख्यात हो के परदा ओहला आप उठाईआ। निरगुण निरवैर निराकार दो जहानां परदा लाह के ताकी, भेव अभेदा अछल अछेदा अगला दए चुकाईआ। निरगुण निरगुण निरवैर मन्नो आखी, आख़र आपणा खेल दृढ़ाईआ। लोकमात मार झाते जीव जंत साध सन्त वेखो पतित पापी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार आप समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त वेखणी अन्धेरी राती, प्रभाती भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा नर हरि नरायण इक्को इक्क जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जा के करयो अगम्म ख्याल, जगत बुद्धी ना कोए चतुराईआ। जो संदेसा दे के आए अहिवाल, अवल अल्ला नूर खुदाईआ। तिस दा तक्कणा जा जमाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। साचे भगतां वेखणी कीती घाल, जो घायल हो के धुर दा नाम ध्याईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत देणी समझाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक इक्को घर प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को दस्सणी सच्ची धर्मसाल, धर्म आत्म परमात्म देवे माण वड्याईआ। कलयुग अंदर सतिजुग करना बहाल, बेहाल वेखणी कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

५३८ २०

साचा हरि, सच संदेसा साहिब सतिगुर अकल कलधारी आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लख चुरासी अंदर जाणा वस, वसल वेखणा यार खुदाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पार जाणा नस्स, रहिबर हो के रिहा जणाईआ। नव नौ चार तक्कणा एका अक्ख, एकँकार हुक्मे अंदर हुक्म समझाईआ। किस गृह नूर होवे प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले जोती जोत डगमगाईआ। हकीकत विच्चों खोजणा हक, सति सच नाल समझाईआ। देवे हुक्म पुरख समरथ, साहिब स्वामी अन्तरजामी भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। मनुआ स्वांगी स्वांग करे कोई ना नट, जगत कूड़ ना कोए लड़ाईआ। परदा लाहुणा अठ्ठ सठ्ठ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले वेखणा मठ्ठ, काया बंक दुआर कूट गृह फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकारा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सृष्टी दी दृष्टी लैणी फोल, फ़ुरना वेखणा थाउँ थाँईंआ। हर घट अंदर जाणा मौल, मौला धुर दा हुक्म सुणाईआ। जो पूरब सब दे नाल कीता कौल, इकरार पिछला याद कराईआ। सो लहिणा देणा चुकाउणा उपर धौल, धरनी धरत धवल रोवे मारे धाहींआ। धुर फ़रमाना श्री भगवाना एकँकार इक्को सुणाए बोल, अनबोलत आपणा नाम जणाईआ। चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दहि दिशा धर्म दवारे वज्जे ढोल, डंका दस्से धुर दरगाहीआ। सच दुआर विच संसार सति समग्री नाम देणा खोल्ह, ख़ालक ख़लक बिन धार पलक दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी लैणी भाल, भज्जणा वाहो दाहीआ। वासना वेखणी शाह कंगाल, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सब दा दस्सणा सचखण्ड दवारे हाल, हाल अहिवाल विच्चों बदलाईआ। सदी चौधवीं बण दलाल, परदा ओहला देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दीन दुनी बदलदा आया चाल, चाल निराली जोत अकाली अकल कलधारी आपणे हथ्थ रखाईआ।

५३६
२०

५३६
२०

★ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रण सिँघ दे गृह अजीत नगर ज़िला करनाल ★

गुर अवतार पैगम्बर आपणी वेखो नाम दी कुंजी, सदी चौधवीं कम्म किसे ना आईआ। जो खेल दस्सदे आए चौंह जुगीं, जुग चौकड़ी कर वड्याईआ। अन्त ओस दी औध पुग्गी, समां रिहा समझाईआ। क्यों काया मन्दिर अंदर धार होई दूजी, नाम नालों हराम आपणा ज़ोर वखाईआ। एह रमज़ दस्सो गुज्झी, गुर अवतार पैगम्बर आपणा परदा लाहीआ। क्यों

दीन दुनी बदली रुची, मन वासना होई हल्काईआ। आत्म रही कोई ना सुच्ची, सच मार्ग ना कोए दसाईआ। वस्त अमोलक गई लुट्टी, ख़ाली भण्डारे नज़री आईआ। सवाणी रही क्यों सुरत सुत्ती, शब्दी जाग ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी रिहा जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपणा आपणा अक्खरां वाला ज्ञान, सिफ्तां वाला जो सिफ्तां विच सालाहीआ। कलयुग अख़ीर कूड़ी क्रिया होई प्रधान, शरअ विच शैतान करे लड़ाईआ। कलमा रिहा ना किसे ज़बान, नाम निधान ना कोए ध्याईआ। माया ममता करे हैरान, लोभ मोह करे लड़ाईआ। किधर गए हुक्मरान, दीन मज़्हबां सार कोए ना पाईआ। वेखो आपणा कायनात कलमा कलाम, कायम मुकाम रिहा जणाईआ। क्यों पुरख अकाल होण लग्गा बदनाम, बदी नेकी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। क्यों भेंटा अंदर हो के आए कुरबान, हुक्में सीस कटाईआ। ज़रा वेखो जगत निशान, शमशान दिसे लोकाईआ। फ़र्क रिहा ना इन्सान हैवान, गुण निधान मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों दुनिया भुल्ली, भरम विच भरमाईआ। क्यों वस्त अमोलक डुल्ह्ली, हरि रस ना कोए चखाईआ। क्यों अग्ग लग्गी काया कुल्ली, त्रैगुण माया रही तपाईआ। क्यों ममता मोह विच रुली, हँकार विकार विच लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दे हुक्म नाल डराईआ। गुर अवतार पैगम्बर क्यों दीन मज़्हब होए बेदीन, साबत धर्म ना कोए रखाईआ। क्यों तुहाडे उत्तों गया यकीन, यके बाद दीगरे वेखो ध्यान लगाईआ। क्यों ना मैनूं करन तसलीम, सिर सजदयां विच झुकाईआ। क्यों बुद्धी होई मलीन, मलेछ रूप वटाईआ। क्यों नेत्र होए नाबीन, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। क्यों झगड़ा नर मदीन, मुद्दा समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर क्यों दीन दुनी होई बेडर, ख़तरा ख़ौफ़ रिहा ना राईआ। क्यों तुहाडा छुट्टा लड़, पल्लू शब्द ना कोए फड़ाईआ। क्यों हँकारी बणया गढ़, घर घर कूड़ वज्जी वधाईआ। क्यों अग्ग लग्गी बहत्तर नड़, तृष्ना मोह हल्काईआ। क्यों भुल्लया धुर दा दर, साचा राह ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर क्यों दीन दुनी प्या भरम, हँकारी गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। क्यों झगड़ा प्या कर्म, कांड ना कोए गवाईआ। क्यों नेत्र रोंदे वरन, बरन रहे कुरलाईआ। क्यों भुल्ली प्रभ दी सरन, सीस जगदीस ना कोए झुकाईआ। क्यों तुहाडे छुट्टे चरण, चरणोदक हथ्थ किसे ना आईआ। क्यों जगत आशा ढोले पढ़न, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। क्यों मंज़ल धुर दी सच

दुआर ना चढ़न, कूड़ी क्रिया बन्धन पाईआ। क्यों निरगुण धार दरस ना करन, इष्ट अक्खरां वाला मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच फ़रमाना इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों सृष्टी होई थोथी, सति नज़र कोए ना आईआ। क्यों अख़ीरी ओट रखी उत्ते पोथी, परम पुरख दा दरस कोए ना पाईआ। क्यों अक्खरां वाली सोच सोची, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। क्यों आशा रखी उत्ते नाथ त्रलोकी, त्रलोकी तों बाहर ध्यान ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लोक परलोकी, जगत जहान निरगुण धार वेख वखाईआ।

★ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत कौर दे गृह अजीत नगर ★

गुर अवतार पैगम्बर वेखो दीन दुनी दवार, चार कुण्ट दहि दिशा नव खण्ड फेरा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तक्को रैण अंध्यार, सति धर्म सच निशाना नज़र कोए ना आईआ। वरन बरन मन वासना सृष्टी दृष्टी अंदर होया विभचार, कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। आत्म परमात्म निरगुण जोत बिन वरन गोत नज़र ना आए निरँकार, पुरख अबिनाशी घट निवासी मिल के वज्जे ना किसे वधाईआ। हउमे हंगता कूड़ी क्रिया गृह गृह दिसे विभचार, तन माटी ख़ाक पंज तत वजूद अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा सचखण्ड निवासी एकँकार एको एक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन मज़्ब वेखो लोकमात, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। अमृत रस किसे मिले ना बूँद सवांत, कूड़ कामना होई हल्काईआ। सति धर्म रिहा ना किसे जमात, साचा नाता अबिनाशी करते ना कोए जुड़ाईआ। जो नाम संदेसा कलमा दे के आए पैग़ाम, हज़रत पीर पैगम्बर गुर अवतार ढोला गाईआ। शब्द हकीकी दे के आए जाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल बेपरवाह, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण सेवा आए कमा, हुक्मे अंदर तेरा हुक्म सुणाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा तेरा ढोला आए गा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी लोकमात समझाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म भेव आए खुल्ह, परदा ओहला जीव जगत जगदीशर तेरा इक्क सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तूं बेअन्त माया दिती पा, ग़फ़लत विच भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सति धर्म रिहा किसे ना थाँ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर रहे कुरलाईआ।

पाक पवित पवित्र भूमका रिहा कोई ना थाँ, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रो रो रही कुरलाईआ। जीव जंत साध सन्त सदी चौधवीं मन वासना भरी गुनाह, पवित पाक पुनीत नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सारे तेरा तक्कदे राह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत अंदर जोती जामा वेस वटा, लोकमात कर रुशनाईआ। तूं सचखण्ड निवासी दरगाह साची मुकामे हक कुल मालक शहिनशाह, हुक्मरान इक्को नज़री आईआ। कलयुग अंदर सतिजुग साचा मार्ग दे ला, माया ममता मोह जगत विकार डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन अरदास, बिन सीस सीस झुकाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। सदी बीसवीं चार वरन अठारां बरन कूड़ी क्रिया वेखी रास, मन वासना नटुआ नाच नचाईआ। सच वस्त तेरा नाम रही किसे ना पास, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। पिता पूत करे घात, नार कन्त ना देवे साथ, सज्जण मीत संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरी रात, साची रही ना कोई जमात, दीन दुनी करे लड़ाईआ। पुरख अकाल कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेख आपणा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक उपर फ़लक ज़िमी ज़मां ध्यान लगाईआ। मेहरवान महबूब हो के जन भगतां सन्तां उत्ते कर तरस, गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत प्रेम प्रीती अंदर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरे अग्गे झोली डाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं दस्सीए हरि जू कूक, कूक कूक सुणाईआ। झगड़ा प्या काया पंज तत कलबूत, दीन मज़्हब भरम ना कोए मिटाईआ। वाहिद लाशरीक तेरा देवे ना कोए सबूत, एकँकार इक्क इकल्ला नज़र किसे ना आईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी कलयुग कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, नव नौ चार दा लेखा दे मुकाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म दा दे वजूद, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया हुक्मे अंदर कर मौकूफ़, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। साचे नाम दा चार वरन अठारां बरन वास्ते बदल दे हरूफ़, मसरूफ़ आपणे नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान श्री भगवान दर तेरे ठांडे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल साडा चुक्कया जाए वक्त, वार थित दए गवाहीआ। तेरा लेखा होवे विच जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरमुख सज्जण वेख भगत, सन्त सुहेले आप उठाईआ। निरगुण धार आ परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण मर्द, मदद तेरी मंग मंगाईआ। कूड़ कसाई बणी करद, कत्लगाह दिसे लोकाईआ। दीनां अनाथां वण्डे कोई ना दर्द, दुखियां

५४२ २०

दु:ख दूर ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट दिसे तशदद्, सांतक सति ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देणा धुर दा दान, दयावान दीन दयाल मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणा रंग देणा रंगाईआ।

★ ६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह गढ़ी लांगरी ज़िला कुरकशेतर ★

हरचरण सिँघ दी इक्को पुरख अकाल पिता माता, जगत जननी तत्तां सेव कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस दा देवे साथा, जुग चौकड़ी साचा संग निभाईआ। शब्दी धार चढ़ाए आपणे राथा, मंज़ल पार कराए बेपरवाहीआ। गुरमुख गुरसिख कदे आवे ना विच घाटा, कमी रहिण कोए ना पाईआ। धन्न भाग जो भगत सुहेला आपणे जन्म दी पूरी कर के जाए वाटा, तन वजूद माटी ख़ाक विच रुलाईआ। जा के मिले विच निरगुण नूर जोत प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश विच समाईआ। जे तुसां हरचरण दी बणना माता, अंदरों ग़मी देणी कढाहीआ। ओस दा ओस दे नाल नाता, जो भगतां सदा गोद विच टिकाईआ। दीन दुनी दा मन्नणा नहीं आखा, पतिपरमेश्वर तुहाडा सदा सहाईआ। एह फल लग्गा जगत डाल मिली अगम्मी दाता, दातार हो के देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। हरचरण सिँघ जगत नहीं मरया, मर जीवत रूप वटाईआ। भगतां विच भगती रूप हरया, हरि मिल्या सज्जण बेपरवाहीआ। जगत जहान दुतर तरया, सचखण्ड बहि के खुशी मनाईआ। जिस ने इक्क वार सोहँ ढोला पढ़या, मात गर्भ फेर कदे ना आईआ। मंज़ल हकीकी चढ़या, आवण जावण पन्ध चुकाईआ। खेल अगम्मा पुरख अकाल दीन दयाल आपणा आपे करया, करनी दे करते आपणे घर ल्या बुलाईआ। माता दा जन्मया होया सरीर अग्नी विच सड़या, आत्मा परमात्मा विच समाईआ। ओस मंज़ल ते चढ़या, जित्थे बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे दर ठांडे लए टिकाईआ। गुरमुख कदे ना जम्मदा मर्दा, मर्द मर्दाना नज़री आईआ। एह खेल पुरख अकाल दे घर दा, रीती गुरमुखां नाल बणाईआ। जो अंदर वड़ के फड़दा, नाता धुर दा मेल मिलाईआ। दरवाज़ा खोलृ के आपणे घर दा, गुरमुख सहिजे लए लँघाईआ। एह लहिणा देणा नाता नरायण नर दा, नार कन्त जीव जंत समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे घर वसाईआ। हरचरण सिँघ दी सदा जोबन वरगी जवानी, वरग जगत ना कोए लगाईआ। ओस दा नाम चार जुग दी भगतां

विच रहे निशानी, निशाने कूड़े जगत मिटाईआ। बख्शिश विच रहमत विच दान दिता धुर दे दानी, दयावान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अंदरों कढ्ढ के जाए परेशानी, परमानंद आपणा अनन्द वखाईआ। हरचरण सिँघ दा पिछला लेखा, लिख्त विच वड्याईआ। एह राए बुलार दा बेटा, गंढ्ढ नानक नाल रखाईआ। जिस ने निमस्कार विच आपणा आप पेश कीता, प्रेम अंदरे अंदर वधाईआ। निरगुण धार करके हेता, हितकारी हो के दिता समझाईआ। तूं वसणा ओस देसा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा ल्या जाण, हरि करता वड वड्याईआ। गुरमुख बाली बुध ना होवे अंञाण, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। जिस दा मन्दिर इक्क मकान, सचखण्ड दवारा नज़री आईआ। जोती जोत मिल के मेला मिल्या वाली दो जहान, जगत जहान नाता गया तुड़ाईआ। मात पित कोई ना होवे हैरान, भैण भईआ भाणा मन्न के खुशीआं विच शुकर मनाईआ। अग्गे बच्चयां उत्ते पुरख अकाल होवे मेहरवान, छोटयाँ दुःख ना लग्गे राईआ। सुखी सुख शांत मिले विच जहान, निशान धर्म दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरध बालां नौजवानां जीवण हयाती दा दे के जावे दान, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी अग्गे होर बदलाईआ।

★ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ मोहण सिँघ दे गृह गढ़ी लांगरी ज़िला कुरकशेतर ★

गुर अवतार पैगम्बर टुट्टी देणी गंढ्ढ, पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड निवासी रिहा जणाईआ। गुरमुख साचे सन्तां अंदर बख्शणा इक्क अनन्द, सूफ़ीआं धुर दा मेल मिलाईआ। निरगुण नूर जोत चाढ़ना चन्द, रवि ससि दा लेखा देणा मुकाईआ। भेव खुलाउणा पारब्रह्म हँ, आत्म परमात्म झगड़ा देणा चुकाईआ। मन विकारा कूड़ी क्रिया गृह अंदर करना खण्ड खण्ड, जूठ झूठ अपराध डेरा देणा ढाहीआ। सच भण्डारा अमृत रस निजर धार देणा वण्ड, बूँद स्वांती इक्क इकांती दर ठांडे आप चुआईआ। सच दुआर एकँकार मंज़ल हकीकी जाणा लँघ, नव दुआर ईड़ा पिंगल सुखमन टेडी बंक झगड़ा देणा मुकाईआ। प्रेम प्रीती मुहब्बत विच देणा परमानंद, निजानंद विच आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा धुर दा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सन्त सुहेले लैणे खोज, मातलोक ध्यान लगाईआ। जो अन्तर आत्म परमात्म लोचा रहे लोच, लोचन नैण ज्ञान नेत्र देणा खुल्हाईआ। शब्द अनादी धुन देणी

अगाध बोध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा दस्स सलोक, सोहला ढोला इक्को देणा समझाईआ। परवरदिगार सांझा यार पुरख अकाल दीन दयाल दस्स के अगम्मी ओट, सच दवारा धुर दा देणा वखाईआ। काया माटी अंदर निरंतर प्रकाश करना निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता रिहा समझाईआ। झगड़ा रहे ना कोई वरन गोत, दीन मज़्ब ऊँच नीच करे ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा अन्तर करो पाक, पतित पुनीत दयो बणाईआ। बन्द किवाड़ी खोलो ताक, परदा ओहला दयो चुकाईआ। शब्द अगम्मी अनहद नादी वजाओ नाद, अनरागी राग सुणाईआ। अमृत बूँद दयो सवांत, अग्नी तत दयो बुझाईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। हँस बुद्धी कोई ना होवे काग, विष्टा कूड़ ना कोए फुलाईआ। भेव खुलाओ काया माटी ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड इक्को रंग रंगाईआ। साचा सजदा डण्डावत बन्दना दस्सो हक आदाब, हकीकत विच लाशरीक देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुरू अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा अंदर वेखो मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। शरअ कूड़ रहे ना कोए शैतान, सति धर्म देणा प्रगटाईआ। पुरख अकाल होवे सब दा निगाहबान, निरवैर हो के वेख वखाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा होई हैरान, हैरानी अंदर सर्ब लोकाईआ। जा के सिदक सबूरी दस्सो हक ईमान, धर्म दवारा इक्को दयो वखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी संदेसा देवे धुर दा हुक्मरान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा अंदर करो साफ़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, बुद्धी बिबेक देणी कराईआ। चार वरन अठारां बरन अंदर वड़ के खोलो ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अमृत बूँद दयो सवांत, तृष्ना तृप्त कराईआ। निर्मल जोत करो प्रकाश, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचे घर वखाओ साथ, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। झगड़ा रहे ना तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध एका रंग देणा रंगाईआ। एह खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आप समझाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कूड़ी क्रिया सृष्टी दी दृष्टी अंदरों देणी धो, दुरमति मैल रहे ना राईआ। माया ममता मोह विकार विच्चों करना निर्मोह, मुहब्बत पुरख अकाल नाल समझाईआ। पंच विकारा घट भीतर रहे कोई ना गरोह, गृह

५४५
२०

गृह मेटणा चाँईं चाँईंआ। सच प्रकाश दी करनी लो, लोयण नेत्र निज देणा खुल्हाईआ। साचा बीज देणा बो, मेहरवान महबूब रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हुक्मे अंदर हुक्म रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लख चुरासी काया कपड़ अन्तर वेखो होया पलीत, पवित पाक देणा कराईआ। कलयुग अंदर साची बदल के रीत, मार्ग धुर देणा समझाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। इक्को रंग वखाउणा मन्दिर मठ्ठ शिवदवाला मसीत, गुरूदवारा इक्को इक्क बेपरवाहीआ। जिस घर झगड़ा रहे ना कोए ऊँच नीच, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचे नाम दी ईसा मूसा मुहम्मद करो तबलीक, पैग़ाम पैगम्बर हो के इक्क सुणाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करां उम्मीद, सदी चौधवीं लेखा लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे हथ्थ इक्क तौफ़ीक, वाहिद आपणा हुक्म सुणाईआ। तुसीं जुग चौकड़ी बाले नढ्ढे बच्चे मेरे अज़ीज़, जोत नूर विच्चों होए रुशनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचा कलमा इक्को दस्से हदीस, हज़रतां दा हज़रत करे अगम्म पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आपणा इक्क प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सृष्ट सबाई दयो इक्क सिख्या, साख्यात श्री भगवन्त रिहा जणाईआ। आपणा पूरब भविख्त वेखो लिख्या, वेला वार वक्त थित नाल वड्याईआ। सब दी पूरी करनी इच्छया, तृष्ना देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धारों आपे फुट्टया, एथे ओथे दो जहानां तत वजूद तन माटी ख़ाक जन्म कर्म निहकर्मी कर्म ना कोए वण्डाईआ।

जन्म कर्म दा लेखा पार, आवण जावण लख चुरासी रहे ना राईआ। चारे खाणी विच्चों होया बाहर, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धर्म राए ना वेखे कोए दवार, चित्रगुप्त ना लेख जणाईआ। लाड़ी मौत ना करे शृंगार, दूल्हा व्याहवण कोए ना आईआ। जिन्हां नाता जुड़या नाल करतार, करनी दा करता दए वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर पावे सार, साढे तिन्न हथ्थ परदा दए उठाईआ। अमृत रस देवे ठंडा ठार, नाम निधाना जाम प्याईआ। कूड़ी क्रिया देवे निवार, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। मंज़ल अगली कट दुष्वार, दूती दुश्मण दए खपाईआ। आत्म परमात्म दस्से के इक्क जैकार, नाअरा धुर दा आप अलाईआ। मरन तों पहलां मानस जन्म पैज दए संवार, कर्म दा लेखा दए चुकाईआ।

अन्त कन्त भगवन्त वेखे विगसे वेखणहार, दो जहानां वाली प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। शब्द सतिगुर अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सदा वसे नाल, विछोड़े विच जोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। मेहरवान महबूब सचखण्ड लै के जावे सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची इक्को धाम वसाईआ। जित्थे झगड़ा नहीं शाह कंगाल, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिन भगतां किसे ना मिले उह दवार, द्वारका वासी जित्थे बैठे आसण लाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित आदि जुगादि निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पुरख अकाला दीन दयाला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार, सूफ़ी सन्त फ़कीरां जन भगतां आपणी गोदी लए उठाल, एथे ओथे दो जहानां सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म वसण इक्क मकान, काया मकबरे विच्चों महबूब हो के आपणे नाल मिलाईआ।

★ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड सतौरा ज़िला करनाल ★

गुर अवतार पैगम्बर साचा तक्कणा भगत घराना, नव सत्त विच्चों खोज खुजाईआ। जित्थे दिसे ना कोए बेगाना, इक्को रंग रंगाईआ। झुल्ले धर्म निशाना, सच दुआर प्रगटाईआ। दरस श्री भगवाना, हरस कूड़ी दए गवाईआ। गुण गाउणा नाम निधाना, सोहँ ढोला इक्क समझाईआ। जिस नूं नापे ना कोए पैमाना, वज़न विच तोल ना कोए तुलाईआ। विद्या तों बाहर ज्ञाना, अक्खरां तों दूर पढ़ाईआ। कलमयां दा हक कलामा, कायनात उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखणा दवारा एक, एकँकारा जणाईआ। जिस गृह भगतां मिले टेक, सहारा धुरदरगाहीआ। कूड़ा मिटे भेख, सति वज्जे वधाईआ। गुरमुखां करे हेत, गुरसिखां रंग रंगाईआ। सच दवारे दा खोल्ह्‌े भेत, परदा आप उठाईआ। नज़री आवे नेतन नेत, हरि ठाकर शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कारे आप लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखणा दवारा सच्च, हरि सज्जण आप समझाईआ। जित्थे भाग लग्गे काया कंचन कच्च, गढ़ इक्क सुहाईआ। किरपा करे पुरख समरथ, साहिब स्वामी बेपरवाहीआ। नाम भण्डारा दए वथ, अमोलक आप वरताईआ। भगतां सांझा कर के जस, सोहँ राग अल्ह्‌ाईआ। दे के नाम रस, रस्ता इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साजन वड वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो वक्त सुहावणा, रुतड़ी नाल वड्याईआ। भगतां पूरी होवे भावना, परम पुरख दया कमाईआ। मेघ

बरसे अगम्मी सावणा, निगाह नर नरायण उठाईआ। मातलोक बणे ज़ामना, दामन आपणे गंढु पवाईआ। कूड़ी क्रिया मेट शामना, शरअ शरीअत विच्चों बाहर रखाईआ। जुग जन्म दी पूरी कर के भावना, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस गुरमुख सज्जण रावणा, तिस दा लेखा जगत वासना विच रहे ना राईआ।

★ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सौदागर सिँघ दे गृह पिण्ड भट्ठ माजरा ज़िला करनाल ★

जन भगतां अन्तर वेख प्रेम रस, गुर अवतार पैगम्बर खुशी बणाईआ। सुणदे पुरख अकाल दा जस, देवण चार कुण्ट वड्याईआ। किरपा कीती पुरख समरथ, आपणी बूझ बुझाईआ। नाम भण्डारा दे के वथ, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, अन्ध अन्धेरा दिता गवाईआ। प्रगट साख्यात नज़र आए प्रतख, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। रैण अन्धेरी मेट के मस, नूरी चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महिमा दस्स नाम अकथ, धुर दी सिख्या इक्क समझाईआ। जन भगतां वेख प्रेम प्यार, गुर अवतार पैगम्बर खुशी मनाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे धार, वेद पुराणां तों परे सच शनवाईआ। शास्त्रां तों दूर जिन्हां इज़हार, मंज़ल हकीकी राह तकाईआ। जित्थे अक्खर सके ना कोई विचार, निरअक्खर धार दृढ़ाईआ। सो लेखा जाणे अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। भगत सुहेले रिहा उभार, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। मंज़ल कट कूड़ दुष्वार, ममता मोह रिहा मिटाईआ। साची सिख्या इक्क सिखाल, सोहँ सोहला राग अलाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच आपणे घर वसाईआ। शब्द सतिगुर बणा दलाल, जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। पुच्छणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के दया कमाईआ। सच दवारा समझा सच्ची धर्मसाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगतां अंदर वेख हकीकी प्रेम, परम पुरख सीस निवाईआ। जन भगत पूरा निभावण नेम, साचा संग निभाईआ। जो गोबिन्द सिख्या मिली उत्ते कुंड हेम, हिमाचल आंचल दए गवाहीआ। जो नाद सुणया चौदां रतनां विच्चों कामधेन, धर्म दी धार इक्क दृढ़ाईआ। जो उपदेस दिता निरगुण धार भगत बेण, बैणी पट्टी इक्क पढ़ाईआ। सो खेल वेखीए नैण, कलयुग चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतां अंदर वेख्या नूर, नुराना नूर चमक चमकाईआ। बेड़ा भरया वेख्या पूर, पारब्रह्म प्रभ आपणे कंध उठाईआ। जग नेत्र तक्कया

हज़ूर, हज़रत धुरदरगाहीआ। नाता तोड़ के क्रिया कूड़, गुरमुख कुटम्ब रिहा तराईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, घर साचा इक्क सुहाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा कट कुसूर, कामल मुर्शद आपणा रंग रंगाईआ। अग्नी तत ना तपे तन्दूर, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। साचा शब्द भण्डारा दे भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतां अंदर वेखी धार अनोखी, सृष्टी दृष्टी नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरीआं पाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल चढ़ के बैठा चोटी, सच दवारे सोभा पाईआ। अंदरों कढ्ढे वासना खोटी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। करे प्रकाश निर्मल जोती, अन्ध अन्धेरा रिहा मुकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां लेखा लिखदा जाए रवीदास चमारा मोची, जन्म जन्म दा गेड़ मुकाईआ। साची मंज़ल दस्स के सौखी, रहिबर हो के रस्ते पाईआ। किसे नूं पढ़नी पए ना पोथी, पुस्तक आपणा नाम समझाईआ। झगड़ा मुका के चौदां लोकी, नाम शब्द सलोकी इक्क सुणाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सचखण्ड दवारे बख्शे इक्को ओटी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणा घर वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जन भगतां अंदर मार के वेखणी झात, बहु रंगा भेख वटाईआ। जिन्हां दा मेला अन्तर निरंतर कमलापात, पतिपरमेश्वर मिल के वज्जी वधाईआ। दीन दुनी दा रिहा कोई ना दास, झगड़ा छड्डया जगत लोकाईआ। पन्ध मुका के पृथमी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। इक्को तक्क निर्मल जोत प्रकाश, नूर नूर विच समाईआ। आवण जावण लख चुरासी कर के बन्द ख़लास, बन्दीख़ाना रहे तुड़ाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला पुरख अकाल दीन दयाल सदा वसे पास, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा देणा लेखा पूरब पूरा करे काग़ज शाही नाल कलम दवात, अक्खरां नाल अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन सुहेला इक्क इकेला घर साचे रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़ंम्बर कहिण गुरमुखां अंदर वेख्या इक्को रंग, रंगत नज़र किसे ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउँदे छन्द, संसा रोग रहे मुकाईआ। निज आत्म परमात्म लै के धुर दा अनन्द, रस इक्को वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के कूड़ी क्रिया मन वासना गंद, सुगंध प्रभ का नाम हिरदे रहे टिकाईआ। सच प्रकाश दा तक्क के चन्द, नूर नूर विच रुशनाईआ। ख़ुशी कर के बन्द बन्द, बन्दगी विच इक्को सीस झुकाईआ। जिन्हां दा लहिणा देणा लेखा देवे दीन दयाल पुरख बख्शंद, बख्शिश विच रहमत आप कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जुग जन्म विछड़ी लख चुरासी विच्चों लए गंढ, शब्द डोरी तन्द निरगुण सरगुण धार आप

बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी मेटे पन्ध, पाँधी हो के गृह गृह घर घर सब दा पन्ध मुकाईआ।

★ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड ठीकरी ज़िला करनाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरे भगतां वेख्या अंदर, बंक दवारा एकँकार सोहणा नज़री आईआ। प्रकाश तक्कया नूर ज़हूर बिना सूर्या चन्द्र, चन्द चांदना इक्को नज़री आईआ। सोभावन्त सुहावणा दिस्या अगम्मी मन्दिर, मंद वासना रूप ना कोए वखाईआ। भाग लग्गा वेख्या डूँग्घी कंदर, गंध सुगंध हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बजर कपाटी खुल्ला तक्कया जंदर, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी रहे बदलाईआ। मनुआ मन ना भटके बन्दर, बन्दना बन्दगी इक्को धुर दी नज़री आईआ। पुरख अकाल दे लग्गे अंगण, अंगीकार इक्को धुरदरगाहीआ। सच प्रीती धुर दी दौलत मंगण, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। काया माटी अन्तर वेखी अनोखी रंगण, बाहरों रंगत ना कोए समझाईआ। तेरे विच समाए परमानंदन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी पन्ध गए मुकाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार बण के संगण, सगला संग इक्को इक्क रखाईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे भगतां तक्कया इक्क मुनार, मुनी ऋषी समझ कोए ना पाईआ। जिस घर निरगुण जोत दीआ बाती इक्क उज्यार, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। सच दुआर एकँकार सोभया तेरे नाल, नालश ममता दिती चुकाईआ। इक्को रंग तक्के शाह कंगाल, सूरे सरबंगे तेरी याद विच ढोला गाईआ। जल्वागर वेख्या अगम्म जमाल, प्रकाश दा प्रकाश सोभा पाईआ। जिस दा दे ना सके कोई अहिवाल, कथनी कथ ना सके राईआ। सो सच दवारा वेख्या जन भगतां अंदर धर्मसाल, धर्म दवारा धुर दा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि करते तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतां अंदर तक्कया नूर नुराना, चश्म तों बाहर इस्म नज़री आईआ। जिस घर रिहा ना कोए बेगाना, वैरी मित्र तेरे विच समाईआ। गा के धुर तराना, तुरीआ तों अगला पन्ध मुकाईआ। वेख के धर्म निशाना, बैठे सीस झुकाईआ। लख चुरासी दा इक्को पुरख अकाल बण के कान्हा, सखी हो के साख्यात सेव कमाईआ। मस्त खुमारी विच हो दीवाना, दीदा दानिसिता तेरा दर्शन पाईआ। तूं साहिब स्वामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेहरवाना, मुहब्बत विच महबूब दए शरनाईआ। तेरा सन्त सुहेला नौजवाना, जोबनमता सोहणा नज़री आईआ। जो तेरे नाम दा वजाए इक्क दमामा,

दमां दा डंका नाल उपजाईआ। तिन्हां दा लहिणा देणा चुकाउणा विच जहाना, जहालत कूड़ रहे ना राईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सुल्ताना, सति धर्म तेरी सरनाईआ। जन भगतां दा वेख्या आश्याना, सच दवारे चरण कँवल सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर मनसा विच कुरलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साचे भगतां अंदर ल्या तक्क, झगड़ा तकदीर रिहा ना राईआ। मिल के हकीकत हक, हुक्म धुर दा मन्नण चाँईं चाँईंआ। निशाना वेख के यक, सिर सर बैठे झुकाईआ। शब्द अगम्मी सुण के ख़त, ख़ता आपणी मुआफ़ कराईआ। तूं जानणहारा मित गत, धुर दा मालक नूर खुदाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिस दी रखे पत, पतिपरमेश्वर मेहर नज़र उठाईआ। तेरा भगत कदे ना होवे तैथों वक्ख, वक्खरा घर ना कोए सुहाईआ। बिन भगतां तों तेरा गाए कोई ना जस, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। अबिनाशी करता खुशीआं विच प्या हस्स, हस्ती विच्चों आपणी हस्ती बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो कलयुग अन्त हरि भगत सुहेले लवां रख, रखक हो के रच्छया करां थाउँ थाँईंआ। जो तूं मेरा मैं तेरा गाउंदे जस, वेद पुराणां तों परे दयां समझाईआ। सो साचे गृह मन्दिर अंदर धुर घराने रहे वस, जित्थे छप्पर छन्न नज़र ना आईआ। तेज नहीं कोई रवि ससि, जोती नूर डगमगाईआ। जन भगतां दे के पूरब हक, हकीकत अगली दयां समझाईआ। मेल मिला के नाल पुरख समरथ, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार हो प्रगट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग जन भगतां आप चढ़ाईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ वरयाम सिँघ दे गृह ठीकरी ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दे वस्त अनमुल्ली, बिन कीमत करते वरताईआ। गुरमुख धार रहे कोई ना भुल्ली, अभुल्ल देणा समझाईआ। भाग लगाउणा काया कुल्ली, मंज़ल देणी वड्याईआ। सृष्ट सबाई मन वासना रुली, कूड़ी क्रिया विच हल्काईआ। सच नाम दी अमृत धार दे अगम्मी चुली, चोला काया रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी दात अगम्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वस्त दे आपणी दात, दाते दानी दया कमाईआ। आत्म परमात्म बज्झे नात, इष्ट इक्को देणा वखाईआ। तेरा नूर सब नूं नज़री आए जात, वरन बरन ना कोए रखाईआ। तत सरीर कर पाक, वजूद महबूब होवे सफ़ाईआ। जन भगतां खेड़ा कर आबाद,

बूटा धुर दा नाम लगाईआ। सुत्यां मार आवाज़, जागदयां रंग चढ़ाईआ। बदल दे समाज, समें नाल आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगतां शौह दरया डुब्बे कदे ना जहाज़, भार आपणे कंध उठाईआ। तूं आदि जुगादी शहिनशाह पातशाह महाराज, परवरदिगार तेरी इक्क सरनाईआ। जुग चौकड़ी तेरे मुहताज, लोड़वंद दिसे लोकाईआ। तेरा हुक्म बोध अगाध, विद्या तों परे पढ़ाईआ। तेरे नाम दा इक्क रबाब, रमज़ धुर दी दे लगाईआ। निरगुण धार साजण साज, सज्जण हो के हो सहाईआ। कूड़ कुटम्ब ना रहे विवाद, विख अमृत दे बणाईआ। जो सरनाई तेरी जाए लाग, लग्न आपणे नाल बणाईआ। सिर स्वामी रखणा हाथ, पुश्त पुनाह टिकाईआ। आत्म परमात्म गाउँदे रहिण गाथ, गा गा खुशी बणाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। तेरा खेल अलखणा लाख, लख सके कोए ना राईआ। जो सिफ्तां विच गए आख, आखर सब दा पूर कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रिहा झाक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जन भगतां चरण धूढ़ी दे ख़ाक, मिट्टी ख़ाक विच्चों बाहर कढाहीआ। सदा खोल्ह के रख ताक, बन्द किवाड़ी कुंडा लाहीआ। निरगुण जोत होवे प्रकाश, सच उजाला इक्क प्रगटाईआ। पूरी करनी आस, असल विच आपणा भेव खुल्हाईआ। सदा सुहेल वसणा पास, जगत विछोड़ा देणा कटाईआ। तेरे प्यार दी रहे इक्क प्रभात, संध्या रूप ना कोए बदलाईआ। एथे ओथे बणया रहे नात, नातवां हो के सके ना कोए तुड़ाईआ। नाम भण्डारा तेरा डूंग्घा खात, देंदयां तोट कोए ना आईआ। हउं सेवक तेरे मुहताज, मुहब्बत विच समाईआ। साडी कबूल करनी नमाज़, रोज़ा रज़ा विच रखाईआ। साडा लेखे लाउणा आदाब, अदब नाल वड्याईआ। साचे नाम दा दे स्वाद, रस कूड़ा देणा कढाहीआ। जन भगतां रखणी लाज, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुरमुख लूल्हा लंगड़ा रहे ना कोए अपाहज, दूजे दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट अंदर होणा विस्माद, लूं लूं अंदर आपणा प्रेम रंगाईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रणधीर सिँघ दे गृह अरनाए ज़िला करनाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण शरअ छुरी कसाई बणी करद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कत्लगाह दिसे लोकाईआ। दीन दुनी वेख होए असीं असचरज, अचरज लीला पुरख अकाल दीन दयाल आपणी की वरताईआ। चार वरन अठारां बरन ग़रीब निमाणयां वण्डे कोए ना दर्द, रोग सोग चिन्ता ग़म ना कोए मिटाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना नज़र आए कोए ना मर्द, भरमे

भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मेहरवान महबूब जुग चौकड़ी पूरब साडी पूरी कर शर्त, शरीअत दे मालक ख़ालक प्रितपालक आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरे अग्गे अगम्मी अरज़, निहकर्मी आपणा कर्म देणा जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दो जहानां मेटणी गर्द, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची कूक पुकार कहीए गरज, बिन तेरी गर्ज मनसा पूर ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख प्रीतम धुर दे यार, आदि निरँजण दर्द दुःख भंजन दीनां नाथ तेरी वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सरगुण धार होया अंध्यार, निरगुण नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर चार कुण्ट दिसे दुख्यार, दीन दयाल हरि गोपाल अमृत रस निजर धार ना कोए चुआईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नाम सति होई हाहाकार, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक सच तौफ़ीक दे विच संसार, रफ़ीक हो के आपणा संग बणाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। करनी दे करते कुदरत दे मालक बेख़बरां कर ख़बरदार, शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी अबिनाशी करते आपणी मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तुध बिन दूजा दिसे ना कोए मीत, कूड़ कुटम्ब होया लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दीन दुनी दी बदल दे रीत, मेहर नज़र नैण अक्ख उठाईआ। तन माटी ख़ाकी कर ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी करदे गए उडीक, भविख्तां विच तेरा ध्यान लगाईआ। अन्त आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद खुशामद तेरे अग्गे तेरी वस्त वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण आपणे नाम दा खोल्ह राज़, राज़क रिज़क रहीम तेरी इक्क सरनाईआ। साचे शब्द दा कर आग़ाज़, ग़रज़ पिछली पूरब रहे ना राईआ। झगड़ा चुक्के जगत नमाज़, सजदयां तों परे सिख्या देणी समझाईआ। रसूलां तों बाहर दिसे तेरा आदाब, जिस नूं कलमा कायनात ना कोए समझाईआ। सच महिराब महबूब हो के वजा इक्क रबाब, नाम तन्दी तन्द सितार हिलाईआ। सच दुआर एकँकार बख्श इक्क अगम्मी आवाज़, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी पतिपरमेश्वर परम पुरख आपणी धार बताईआ। गुर अवतार पैगम्बर वसल मंगण तेरा ज़ाहर बातन, सृष्टी दृष्टी अंदर दे जणाईआ। सचखण्ड दवारे कूक कूक आखण,

बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाशण, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी ओट वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंज़ल पूरी करदा रिहों घाटन, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म बदलाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर कूड़ी क्रिया मेट वाटन, सतिजुग सच्चा मार्ग दे वखाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले तेरे ममता मोह विच्चों जागण, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया तन वजूद लग्गी बुज्झे आगन, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म मिल के होए सच सुहागण, नार कन्त भगवन्त इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सच बणा साजन, सति धर्म दा मार्ग इक्क वखाईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ निरँजण सिँघ दे गृह फ़ारम ★

गुर अवतार पैगम्बर तक्कण सृष्टी भुल्ली ब्रह्म मत, पारब्रह्म प्रभ ध्यान ना कोए लगाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मार्ग आए दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। शब्दी धार ज्ञान नेत्र खोल्ह के आए अक्ख, नैण इक्को इक्क वड्याईआ। नाम निधान वसा के आए काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सुहाईआ। सो साची वस्त रही किसे पास ना वथ, माया ममता मोह विच सृष्टी हल्काईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मिले कोई ना सच्च, जूठ झूठ रिहा डंक वजाईआ। मन वासना दीन दुनी रही नच्च, जगत तृष्ना मोह हल्काईआ। भाग लग्गे किसे ना काया माटी रत्त, रतन अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्ब लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। फिरी दरोही नव सत्त, नव नौ चार जुग बौहड़ी बौहड़ी कूक कुरलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त किरपा कर पुरख समरथ, दीन दयाल सर्ब प्रितपाल तेरी आस रखाईआ। सति सन्तोख धीरज रिहा कोई ना यति, यथार्थ तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। आत्म परमात्म हो के वक्ख, परदा अन्ध अन्धेर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नाम भण्डारा खोल्ह हट्ट, दयावान दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सृष्टी अन्तर भरया विख, रस अमृत ना कोए चखाईआ। तामना लग्गी तृख, तृष्ना ना कोए बुझाईआ। साचा रिहा कोई ना सिख, सिख्या सतिगुर गए गवाईआ। जो शब्द धार गोबिन्द गया लिख, पंचम मिल वज्जे ना कोए वधाईआ। इष्ट बणया पत्थर इट्ट, दृष्ट अक्खरां विच फसाईआ। मानस जन्म लए कोई ना जित, हरदी दिसे लोकाईआ। दीन दयाल मन्ने कोई ना इक, एकँकार मिलण कोए ना जाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया भार चुक्कया पिठ, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी होई पग़ली, बौरी दुनिया नज़री आईआ। कोई सार ना पावे अगली, परदा कूड़ ना कोए उठाईआ। मन वासना गल विच पाई बग़ली, बग़लगीर कूड़ नज़री आईआ। पुरख अकाल तेरे बिना करे कोए ना बदली, कलयुग पन्ध ना कोए चुकाईआ। शरअ तोड़े कोए ना संगली, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सृष्ट सबाई नेत्र होई हीण, कँवल नैण नज़र किसे ना आईआ। झगड़ा प्या नर मदीन, आत्म मुद्दा समझे कोए ना राईआ। राउ रंक होए ग़मगीन, सांतक सति ना कोए कराईआ। जगत वासना हो अधीन, दिवस रैण भज्जण थाउँ थाँईंआ। सच दुआर दी भुल्ली इक्क तालीम, चौदां विद्या चार वरन हल्काईआ। माया ममता बुद्धी कीती मलीन, मुलम्मा कंचन रूप ना कोए वटाईआ। सच दवारा करे ना कोए तसलीम, तसबीआं माला वाले रहे कुरलाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदीम, कुदरत दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। साडा भरोसा सच यकीन, याद विच तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त रंग दे अगम्म नवीन, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दे उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा नाम दिसे ना सच्च, रसना जेहवा जगत हल्काईआ। भाग लग्गे ना किसे काया माटी कच्च, कूड़ा परदा दे उठाईआ। धर्म दवारे दिसे कोई ना सति, सति पुरख निरँजण तेरा राह ना कोए तकाईआ। नाड़ी नाड़ी उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जो मार्ग आए दस्स, गुर अवतार पैगम्बर कहिण तिस चले ना कोए रज़ाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी आस रखाईआ। दीन दुनी कर आपणे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेट मस, निरगुण नूरी जोत कर रुशनाईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी दे अक्ख, अक्खरां तों बाहर विद्या दे समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण सारे जस, सिफ्तां विच तेरा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, महिमा अकथ इक्क प्रगटाईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरमेज सिँघ दे गृह थानेसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण आत्म परमात्म तेरा ढोला होवे पढ़दी, गीत गहर गम्भीर इक्को गाईआ। सदा दरवेश मंगती रहे तेरे दर दी, दूसर घर कदे ना जाईआ। बिरहु विछोड़े अंदर भाणा रहे जरदी, नेत्र लोचण नैण अक्ख राह तकाईआ।

प्यार मुहब्बत विच मंज़ल अगम्मी रहे चढ़दी, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। ठांडे दर दरवेश हो के बणे बरदी, बन्दगी विच आपणा आप निवाईआ। सार पावे पुरख अकाल तेरे घर दी, गृह मन्दिर वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी आत्मा तेरा रखे इष्ट, दूसर सीस ना कदे निवाईआ। नाता कूड़ा तोड़ सृष्ट, मुहब्बत तेरे नाल बंधाईआ। तूं मेहरवान हो के खुल्ही रखीं दृष्ट, मेहर निगाह नाल पार कराईआ। झगड़ा रहे ना किसे स्वर्ग बहिश्त, दोज़ख़ अग्ग ना कोए तपाईआ। नाम खुमारी इक्को देवीं मस्त, मुश्किल सारी हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल दीन दयाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी आत्मा तेरी मन्ने ईन, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। झगड़ा रहे ना मज़्हब दीन, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। सच दवारे कर यकीन, याद विच आपणा आप लगाईआ। परवरदिगार सांझा यार कर तसलीम, तसबी माला मणके दए गवाईआ। तेरा वेखे महल अटल शान अज़ीम, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे निरगुण नूर जोत प्रकाश कदीम, कुदरत दे मालक तेरी इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दरवेश ढहि पए सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी आत्मा तेरा माणे रस, रसना रस ना कोए वड्याईआ। तेरा नूर तेरा प्रकाश, तेरे विच समाईआ। तेरा मार्ग तेरी अक्ख, निज नेत्र देणा खुल्हाईआ। तूं साहिब सर्ब कला समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक्को नाम निधाना दस्स, जीव आत्मा तेरा ढोला गाईआ। हिस्सा करे कोई ना वक्ख, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी अन्त किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दा खोल्ह हट्ट, दर दरवाज़ा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी आत्मा इक्को जपे जाप, बहु वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं धुर दा बणना साक, सज्जण नूर अलाहीआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, बुध बिबेक देणी कराईआ। निहकर्मी हो के करमां लैणा वाच, परदा ओहला देणा उठाईआ। तुझ बिन दूजा नज़र ना आवे कोई साक, सज्जण होणा धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी तेरे अग्गे अरदास, बेनन्ती दिती सुणाईआ। हर घट अंदर निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। सर्ब व्यापी तेरा वेखीए वड प्रताप, लख चुरासी जीव जंत इक्को तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानव जाती तत सरीर वजूद अन्तर निरंतर कर पाक, पतित पुनीत दे बणाईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ भान सिँघ दे गृह नानक पुरा ज़िला करनाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल आपणे नाम दी दे अगम्मी चमक, नूर नुराने नूर कर रुशनाईआ। कर प्रकाश ज़िमीं असमान उपर फ़लक, दो जहानां डगमगाईआ। लख चुरासी अन्तर निरंतर वेख आपणी ख़लक, खुद मालक वेस वटाईआ। जोत सरूप मेहरवान महबूब खोल्ह पलक, पतिपरमेश्वर आपणी करवट लै बदलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दी मेट हरस, हवस तपश जगत दे बुझाईआ। सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीर रहे तरस, मिहबान बीदो जल्वागर आपणा नूर कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा रहे कोई ना अटक, नाम खण्डा तेज प्रचण्डा ब्रह्मण्डां दे चमकाईआ। सच सुहञ्जणा आदि निरँजणा निरवैर कर आपणा वक्त, जगत दुहेला वेला रहे ना राईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहानां उपर अर्श, अज़ीम आज़म तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी मेहरवान दीन दुनी वेख आपणा जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गोद उठा गुरमुख गुरसिख सुहेले भगत, भगवन हो के भाग काया माटी दे लगाईआ। ऊँच नीच राउ रंक रहे कोई ना फ़र्क, फ़िकरा ढोला सोहला नाम इक्को दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साजण दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण आपणी खेल दस्स करतार, कुदरत कादर धुर दा धर्म दे जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा नूर ज़हूर लभ्भदे रहे विच संसार, संसारी भण्डारी बण बण पाँधी राहीआ। खोजदे रहे सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पड़दे मात उठाईआ। सिफ्तां विच करदे रहे इज़हार, कथनी कथ कथ ढोले गाईआ। सच दवारे मंगदे रहे भिखार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लोकमात वेस वटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को मन्नदे रहे मद्ददगार, दूजा संग ना कोए बणाईआ। दर दरवेश हो के कूक रहे पुकार, दरोही दरोही नाम खुदाईआ। जगत वासना मेट अन्ध अंध्यार, दुर्गन्धी सुगंधी विच बदलाईआ। चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म दस्स इक्क जैकार, हाहाकार रहे ना कोए लोकाईआ। नव सत्त दिसे तेरा ख़िदमतगार, सीस जगदीस सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साचे नाम दी दे दे धीर, धीरज धर्म नाल बंधाईआ। शरअ कट ज़ंजीर, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। कूड़ कुड़यारा मेट अख़ीर, आख़र आपणा रंग रंगाईआ। मुहब्बत विच बदल दे तकदीर, तदबीर दीन दुनी समझाईआ। इक्को रंग रंगा शाह हकीर, बेनज़ीर मेहर नज़र उठाईआ। सदी चौधवीं कटी जाए भीड़, औखी घाटी पन्ध मुकाईआ। नेत्र रोवे कोए ना नीर,

छहबर कूड़ ना कोए लगाईआ। अमृत रस निजर धारा बख्श आपणा सीर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। तूं दाता दानी मालक ख़ालक प्रितपालक गहर गम्भीर, धुर दा ठाकर इक्को नज़री आईआ। हउँ बालक तेरे अधीन, सेवक सेवक हो के सेव कमाईआ। तेरा लेखा यामबीन, मुफ़लिसां लै उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को दे तालीम, साचा नाम सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदीम, कादर करते करनी तेरी इक्को नज़री आईआ।

★ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सोहण सिँघ दे गृह नानक पुरा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे धुर दे मुर्शद, मुरीद दीद अंदर तेरा राह तकाईआ। जन भगत लोकमात तेरी करदे उल्फ़त, सिफ्तां अंदर तेरा नाम वड्याईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणे मिलण दी ओन्हां दे फ़ुरसत, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। कोटां विच्चों विरला दिसदा कोई गुरमुख, गुरसिख तेरे विच समाईआ। जन्म कर्म दा सदा मेटणा दुःख, दुखियां दर्द आप वण्डाईआ। जगत तृष्ना रहे ना भुक्ख, सांतक सति देणा कराईआ। तूं साहिब सुल्ताना अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। बिन तेरी किरपा किसे मिले ना सुख, सच विच ना कोए समाईआ। सन्त सुहेले रख के तेरी ओट, आसा कूड़ी गए तजाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते डगमगाईआ। राह तक्कण तेरा मातलोक, नित नवित वेख वखाईआ। गा के ढोला सोहँ सच सलोक, आपणी खुशी बणाईआ। नाम खुमारी अंदर कर मदहोश, जगत सोच दी समझ रहे ना राईआ। जिन्हां दी अन्तर आशा रही लोच, लोचन नैण दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सगला संग बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगत सुहेले वेख आप, निरगुण हो के दया कमाईआ। बिन तेरी किरपा होए कोई ना पाक, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। कृपाल दयाल हो के खोल्ह ताक, परदा अंदरों दे उठाईआ। तूं आदि जुगादी आत्म परमात्म सज्जण साक, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। बिन तेरे नाम अवर दिसे कोई ना गाथ, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। सच प्रीती जोड़ दे नात, नर नरायण बख्श इक्क सरनाईआ। भविख्तां विच तेरा फ़रमाना आए आख, संदेसा दे के धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेखा जाणे कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दरबारी मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतां आस चिर दी, चिरीं विछुन्ने लै मिलाईआ। तेरी खेल अगम्मी धुर

दी, थिर घर साचे लैणे टिकाईआ। सच प्रीती देणी प्रीतम पिर दी, पीआ हो के वेख वखाईआ। जोत तक्कणी धार निर दी, निरवैर नूर देणा चमकाईआ। अमृत बूँद स्वांती होवे किरदी, निजर झिरना देणा झिराईआ। सुरती मन वासना चार कुण्ट दहि दिशा ना होवे फिरदी, आत्म परमात्म मेला लैणा मिलाईआ। बिन तेरे दीन दयाल कोई ना बणे दर्दी, दुखियां दर्द ना कोए वण्डाईआ। असीं आसा रखी तेरे घर दी, घराने आपणे गए तजाईआ। इक्को मेहर महबूब मंगीए साचे हरि दी, हिरदे अंदर आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी कलयुग अन्त वेख सड़दी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। शरअ मुके ना चोटी जड़ दी, मध भेव ना कोए खुल्हाईआ। जो आत्म परमात्म तेरा नाम सोहँ ढोला पढ़दी, तिन्हां आपणा गृह मन्दिर देणा वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी अछल छल दी, अछल अछल्ल आपणा हुक्म देणा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी साची धार सदा निहचल धाम अटल दी, अटल पदवी जन भगतां झोली देणी पाईआ।

★ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सन्ता सिँघ तरन तारन ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगत दवारे दीपक जगया दीआ, तेल बाती बाहरों नज़री आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी आपणा कर हीआ, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच दया कमाईआ। निर्मल कर भगत भगवान अन्तर निरंतर जीआ, जीवण जुगत जागरत जोत कर रुशनाईआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सीआ, साहिब स्वामी अन्तरजामी मेहर नज़र उठाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां पीआ, प्रीतम प्यारा धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ की कहे दीआ बाती, बातन आपणा हाल सुणाईआ। सुहञ्जणी दिसे लोकमात राती, रुतड़ी जगत वाली बदलाईआ। संदेसा सुनेहड़ा देवे गोबिन्द वाली पाती, पतण बैठा वेखे धुर दरगाहीआ। मंज़ल औखी पूरी करे कोई ना घाटी, हक हकीकत नज़र किसे ना आईआ। तेरा नूर नजर ना आए साख्याती, साहिब स्वामी अन्तरजामी दरस कोए ना पाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच बदल दे हयाती, गुरमुख गुरसिख हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के निरगुण धार बण इमदादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की कहे दीपक वाली बत्ती, पारब्रह्म भेव देणा जणाईआ। मालक मंगदी इक्को कमलापाती, पतिपरमेश्वर हो के लैणा

प्रनाईआ। गुरमुखां निरगुण धार बणाउणी आपणी सखी, साजण हो के संग बणाईआ। दरस दिखाउणा निज नेत्र लोचन नैण अगम्मी अक्खी, ज्ञान नूर कर रुशनाईआ। साचे मन्दिर गृह वहीर देणी घत्ती, निरवैर हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। नाम भण्डारा अनमोल बख्शणा रती, रतन अमोलक हीरा गुरमुख लैणा उपजाईआ। मन वासना चार कुण्ट दहि दिशा जन भगत रहे ना नठ्ठी, शब्द डोरी तन्द लैणा बंधाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा दिसे हट्टी, वणजारा मनुआ मनसा आपणी संग रलाईआ। तेरे नाम दी पढ़े कोई ना पट्टी, निरअक्खर धार समझ किसे ना आईआ। किरपा कर पुरख समर्थी, मेहरवान दया कमाईआ। तेरी सिफ्त ढोला गाए कोई ना भट्टी, कातब कलम ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी ओट तकाईआ।

★ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ अवतार सिँघ चबेवाल ज़िला हुशियार पुर ★

५६० गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीवा बत्ती करे लो, लोआं पुरीआं तों बाहर तेरी रुशनाईआ। निरगुण धार आपे आयों हो, होका शब्द नाम समझाईआ। जन भगतां संग आपणा कर मोह, मुहब्बत आत्म परमात्म लैणा जुड़ाईआ। तुध बिन भेव जाणे अवर ना को, कोट ब्रह्मण्ड खण्ड रोवण मारन धाईंआ। तेरा नाम संदेसा सुण के सोहँ सो, सर्ब स्वामी अन्तरजामी तेरी याद इक्को दो जहानां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाले दीन दयाले घट निवासी तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीआ रखे ख़ाहिश, भेव अभेद जणाईआ। पुरख अकाल पूरी करनी आस, आसा मनसा आपणे विच समाईआ। साचे भगतां कर तलाश, ताला अंदरों देणा तुड़ाईआ। किसे नूं शिव तक्कणा ना पए उपर कैलाश, ब्रह्मे दा ब्रह्म परदा देणा उठाईआ। निरगुण धार अंदर कर के वास, वास्ता आपणे नाल कराईआ। बाहर दे दीपक नालों तेरी जोत दा सदा रहे प्रकाश, दिवस रैण इक्को नूर रुशनाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी होवे आस, असल विच वसल यार देणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

★ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ दीदार सिँघ दे गृह भाम ज़िला गुरदासपुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीवा बाती करे की चमक, चन्द चांदना नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख

चार कुण्ट अहिमक, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कोटां विच्चों तेरी किरपा नाल तेरा भगत सुहेला तेरे नाल होवे सहिमत, समें दे मालक मेहर नज़र लैणी उठाईआ। ख़लक दे ख़ालक करनी रहमत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग जन्म दी लेखे लाउणी मेहनत, सच मज़दूरी मुद्दतां दी झोली पाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया रहे ना कोई अलामत, सही सलामत आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचा इक्को इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग कूड़ी क्रिया दीपक होण लग्गा गुल्ल, अन्ध अन्धेरा दए दुहाईआ। सृष्टी दी दृष्टी अंदरों तेरा नाम गया भुल्ल, भरम विच भरम रिहा कुरलाईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे कुल, कुल मालक कलमा हक ना कोए सुणाईआ। भण्डारा हथ्थ ना आवे वस्त अनमोलक अनमुल्ल, कीमत कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जगत दे मालक, जुग चौकड़ी तेरा खेल अभुल्ल, भुल्लयां मार्ग रस्ते लैणा पाईआ।

★ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सरूप सिँघ दे गृह ढुड्डी ज़िला फ़रीदकोट ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत (दीपक) वेख्या जगदा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। सति प्रकाश बणावे लोकमात जग दा, जगत जिज्ञासू जीवां राह जणाईआ। रस्ता वखावे धुर दरगाह सच दा, सति धर्म इक्क अपनाईआ। लेखा मुकावे मक्के काअबे वाले हज्ज दा, हज़रत घर विच इक्क प्रगटाईआ। चार वरनां अठारां बरनां राह दस्सदा, तूं मेरा मैं तेरा कर पढ़ाईआ। गृह वेखे हकीकत हक दा, मन्दिर धुर दे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण बिन भगतां होए ना कदे प्रकाश, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। पुरख अकाल उत्ते करे ना कोए विश्वास, विश्व रंग ना कोए रंगाईआ। साचा बणे ना कोई सेवक दास, याचक ख़ादम रूप ना कोए वटाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़े कोई ना घाट, जगत दवारा पन्ध ना कोए मुकाईआ। आत्म परमात्म बणाए ना कोए साथ, सगला संग ना कोए जुड़ाईआ। सोहँ ढोला गाए कोई ना गाथ, अक्खरां वाली जगत पढ़ाईआ। पुरख अकाल मन्ने ना कोई पिता मात, पतिपरमेश्वर कन्त कन्तूहल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां आपणा भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतां बिना चले कोए ना राह, रहिबर मिले ना कोए वड्याईआ। धुर दी सिफ्त सके कोई ना गा, नाम

निधान ना कोए शनवाईआ। पुरख अकाल निरगुण धार ना जावे आ, लोकमात ना कोए रुशनाईआ। शब्दी गुर ना बणे मलाह, बेड़ा शौह ना पार कराईआ। कोट जन्म दे बख्शे ना कोए गुनाह, पतित पुनीत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ।

★ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिंघ दे गृह रूपो वाल ज़िला हुश्यिार पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण बिन भगतां चले ना कोए चाल, दीन दुनी ना कोए समझाईआ। पुरख अकाल बिना मुरीदां पुछे किसे ना हाल, दर दरवेश ना रूप वटाईआ। झगड़ा मुके ना शाह कंगाल, इक्को रंग ना कोए समाईआ। साचे मन्दिर करे कोई ना भाल, तन माटी खोजण कोए ना पाईआ। तन वजूद वेखे ना कोए धर्मसाल, नव नौ पन्ध ना कोए मुकाईआ। घर स्वामी मिले ना किसे आण, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। नाता तोड़े ना कूड़ जहान, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। बिन भगतां कम्म ना आए श्री भगवान, साचे घर ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सन्त सुहेले इक्क इकल्ला आपणे घर मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साची करे कोई ना भगती, बिना भगतां भगवन मिलण कोए ना आईआ। जगत खेल वेखी जुग जुग दी, जीवण दाता परदा ना कोए उठाईआ। तामस वेखी काम क्रोध लोभ मोह हँकार अग्नी अग्ग दी, अगला भेव ना कोए चुकाईआ। धुन सुणे ना कोए अगम्मी नद दी, अनरागी राग ना कोए अल्हाईआ। हदूद मुके ना जगत वासना जग दी, जागरत जोत करे ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जो आत्मा परमात्मा नाल लग्गदी, लग मातर दा लेखा जाए चुकाईआ। सद ओसे धार वसदी, जिस विच्चों विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। वेखण खेल सदा प्रतख दी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को होए सहाईआ। कलयुग अन्त घड़ी जिस दी जस दी, वेद पुराणां तों बाहर सिफ्त सालाहीआ। नाम खुमारी देवे आपणे नाम मदि दी, मधुर धुन आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मन्दिर दए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण बिन भगतां रखे कोई ना आस, मेला मिले ना बेपरवाहीआ। राह तक्के ना कोए पुरख अबिनाश, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। साचा बणे कोई ना साथ, सगला संग ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावे कोई ना गाथ, चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। निरगुण सरगुण धार बदले ना कोए समाज, समग्री सच ना कोए वरताईआ। अंदर वड़ के खोल्हे कोए ना राज़, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। अगम्मी सुणाए कोई

ना नाद, अनहद नादी नाद वजाईआ। सोई सुरती किसे ना जावे जाग, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। बिन भगतां लोकमात मिटे ना किसे अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे गृह वसाईआ। जन भगत कहिण गुर अवतार पैगम्बर सुणो मीत, धुर दी धार दईए जणाईआ। प्रभ दी किरपा नाल बदलीए रीत, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। इक्क दी प्रीती अंदर भुल्ल गया मन्दिर मसीत, मन्दिर मस्जिद मठ्ठ आस रही ना राईआ। सुण के अगम्मा गीत, गोबिन्द विच समाईआ। झगड़ा मुक गया हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। मज़्बां वाली दूर कीती लीक, लकीर फ़कीर ना कोए अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं साडी करो तस्दीक, शहादत आपणी दयो भुगताईआ। पुरख अकाल नूं जा के दस्सो ठीक, ठाकर तेरे भगत तेरे विच समाईआ। जिन्हां दा इक्को कलमा नाम हदीस, इक्को नग़मा नाम सुणाईआ। सद बैठे रहिण अतीत, त्रैगुण भय ना कोए जणाईआ। पंज तत काया माटी कर के ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। सदा इक्को रख के चीत, चेतन सुरती आप कराईआ। असीं वेख के ओन्हां दी नीत, खुशीआं अंदर आपणी खुशी बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साडी पूरी कर वसीअत, पूरब लहिणा लेखा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडा धुर दा नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण बिन जन भगतां कोए ना खोल्हे भेव, राज़ गुफ़त शनीद ना कोए शनवाईआ। बिना भगतां तों पुरख अकाल नाम देवे किसे ना मुफ्त, भजन बन्दगीआं विच लाई लोकाईआ। सन्त सुहेला रहिण ना देवे कोई सुसत, सुत्तयां लए जगाईआ। नाम निधाना दे दरुस्त, दूर दुराडे मेल मिलाईआ। कूड़ विकार रहिण ना देवे कुष्ट, कंचन काया गढ़्ह सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वस्त अमोल अमुल्ल अतुल आपणी आप वरताईआ।

★ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बिशन सिँघ, सेवा सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ★

जन भगत कहिण प्रभ किरपा कीती आप, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। स्वच्छ सरूपी दर्शन दिता साख्यात, निरवैर निराकार निरँकार निरगुण जोत कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्सया पाठ, सोहँ ढोला शब्द विचोला इक्क उपजाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ के धुर दा नात, दुई द्वैती शरअ शरायती लेखा रिहा चुकाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनां नाथां दीन दयाल आपणे रंग रंगाईआ। साची मंजल चढ़ा के धुर दे घाट, पतण दवारा इक्को इक्क वखाईआ।

कलयुग कूड़ी क्रिया मेट रैण अन्धेरी रात, निरगुण साचा चन्द नूर करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां लेखे लावे पवण स्वास, दमां दम दामन आपणा लए फड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया माटी अंदर पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन रूप दरसाईआ। मुहब्बत विच महबूब मेहरवान पूरी करे आस, जगत निरासा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। जन भगत कहिण प्रभ पूरी कीती आस, आसा पुन्नी नज़री आईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत करना ना प्या तलाश, चार कुण्ट दहि दिशा उठ ना कोए धाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला घट भीतर काया मन्दिर अंदर गृह वस्या पास, परम पुरख परमात्म आत्म आपणा संग बणाईआ। धर्म दुआर एकँकार इक्क इकल्ला दे सच्चा विश्वास, विष्न ब्रह्मा शिव लेखा रिहा मुकाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोल्हे बिना कलम दवात, लेख अलेखा धुर दा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे सच दवारे आप मिलाईआ। जन भगत कहिण प्रभ मेहर करे मेहरवान, नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ। बिना भूमिका तों देवे आपणा धूढ़ी दान, बिन मस्तक लेखा लिखे कलम शाहीआ। सति दुआर एकँकार वखाए हक निशान, हकीकत लाशरीक आपणी आप समझाईआ। धुर संदेसे अंदर देवणहार फ़रमान, फुरनयां तों परे परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणी सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची कल आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ देवणहारा देवण योग, जुग चौकड़ी जिस दे हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। जन भगत सुहेले कर के धुर संयोग, जन्म कर्म दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। सच जैकारा दस्स अगम्मा सलोक, सुल्हकुल कुल मालक आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म दृष्टी अंदर पोश, सोच तों परे आपणी समझ दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के धुर दी मौज, मजलस भगतां विच रखाईआ। भाग लगा के काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मुनारे कोट, धुर दरबारा इक्को इक्क समझाईआ। कर प्रकाश नूर नुरानी निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगत सुहेले कहिण अबिनाशी करता करे गुरमुख साचे सन्त जनां दी खोज, खोजी हो के चोजी हो के चोला आपणा लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, नाम निधान देवे अगाध बोध, बोध बुद्धी आपणे रंग रंगाईआ।

५६४
२०

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिँघ दे गृह औजला ज़िला कपूरथला ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगत सुहेले थोड़े विच्चों खरब अरब, चार कुण्ट नज़री आईआ। जिन्हां दा पुरख अकाल एकँकार वण्डे दर्द, दीनां नाथ दर्द दु:ख भय भंजन आपणी दया कमाईआ। माया ममता मोह छुडा के लालच दरब, दग़ा दीन दुनी दा लेखा रिहा मुकाईआ। मन हँकार तोड़ के गरब, गर्भवास दा झगड़ा रिहा चुकाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मुदतां दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। पूरब जन्म दी आसा मनसा बेनन्ती मन्न के अरज़, आजज़ अज़ीज़ आपणी गोद उठाईआ। जिन्हां छुरी हलाल करे कोई ना करद, लख चुरासी कत्लगाह विच्चों बाहर कढाहीआ। एका नाम संदेसा देवे गरज, ग़रूर दीन दुनी दए मुकाईआ। मानस जन्म मेहर विच होण ना देवे हर्ज, हिरदे अंदर वस के आपणा रंग रंगाईआ। कर खेल जगत असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। जुग चौकड़ी पिछली कढ्ढ के फ़रद, लेखे सब दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रतन सिँघ हरनाम सिँघ दे गृह नूर पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतां अंदर वेखी निर्मल बुध, बुध दी आसा पूर कराईआ। लेखे ला के कृष्न वाला युद्ध, झगड़ा दीन दुनी चुकाईआ। राम दी रमज़ जाणे कुछ, जो बनवासी हो के अन्तर अन्तर सुणाईआ। बल दी धारा रही कुद्द, बावन नाल लए अंगड़ाईआ। दुर्गा दस्स रही कुझ, इशारा पिछला याद कराईआ। मूसा चरणां विच्चों उठ, नेत्र नीर वहाईआ। ईसा कहे लेखा दे कुछ, कशमकश दिस्से जगत लोकाईआ। मुहम्मद कहे मेरी पूरी कर तुक, सदी चौधवीं वण्ड वण्डाईआ। नानक निरगुण कहे कलयुग धार वेख लुट्ट, तेरा नाम लुट्टे कूड़ लोकाईआ। गोबिन्द कहे मेरी आसा मनसा कर खुश, निरगुण हो के वेख वखाईआ। लेख चुका जन भगत लाडले सुत, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। सब दा अन्त अख़ीर पैंडा रिहा मुक्क, अग्गे हुक्म ना कोए वड्याईआ। सृष्ट सबाई मेट दु:ख, दुखियां दर्द वण्डाईआ। जन भगतां उजल कर मुख, मुखीए आपणे घर वसाईआ। परदा रहे ना ओहला लुक, लोक परलोक डंका दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि ठांडे तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा वक्खरा वेख ज्ञान, अज्ञानता दिती मिटाईआ। धर्म दा वेख निशान, निशाने गए भुलाईआ। जोती नूर महान, रवि ससि शरमाईआ। कागद कलम ना देवे कोए ब्यान, आगमन तेरा समझ कोए ना पाईआ। तूं वाली दो जहान, निरगुण सरगुण दोहरी खेल प्रगटाईआ। तेरा

वक्खरा अक्खरां तों कलाम, कायनात कलमा समझ कोए ना पाईआं। कोटां विच्चों सन्त सुहेले तेरे गुलाम, सेवक हो के सेव कमाईआ। असीं सारे होए बदनाम, बैठे मुख भवाईआ। कूड़ी क्रिया करनी दे करते कर कत्लेआम, कातिल मक्तूल आपणा रूप धराईआ। मन वासना सृष्ट सबाई करदे नीलाम, ख़रीददार गुर अवतार पैगम्बर तेरे दर ते बैठे सोभा पाईआ। बदल दे नज़ाम, नौबत आपणा नाम सुणाईआ। तेरे हथ्थ दो जहानां इंतज़ाम, हुक्म धुर दा इक्क मनाईआ। तेरा संदेसा नव सत्त होए परवान, परवाना आपणा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ भगवान सिँघ उड़मुड़ टांडा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे भगतां वेखी अंदर प्रीत, बाहरों समझ किसे ना आईआ। तेरी धार सदा अतीत, त्रैगुण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं मालक सृष्ट सबाई जग जीत, जगजीवण दाता कहि के तेरा शुकर मनाईआ। तूं हुक्मरान जगदीश, जगदीशर दो जहान अख्वाईआ। लख चुरासी परखें नीत, नीतीवान नूर खुदाईआ। कलयुग अन्त सतिजुग धारा बदल बीच, विचला परदा दे उठाईआ। जो गंढु रखी पीच, विष्न ब्रह्मा शिव तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जिस दी चार जुग करदे रहे उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। सो वेला वक्त वेख तारीख़, तवारीख़ जिस नूं सके ना कोए समझाईआ। सारे दर ते मंगदे भीख, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे भगत वेखे अंदर दे खोजी, खोजत खोजत ध्यान लगाईआ। तूं मालक तक्कया चोजी, काया चोला रिहा सुहाईआ। तेरा झगड़ा नहीं जञ्हू बोदी, टिक्का वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चार वरन अठारां बरन रखीं गोदी, गोबिन्द हो के आपणी गोद उठाईआ। बिन गुरमुखां किसे ना दिती सोझी, सोच समझ विच रखी सर्ब लोकाईआ। तेरी याद करदे गए वेदी सोढी, नाअरा जैकारा तेरा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भय भउ दिस्से लोक परलोकी, सलोक इक्को देणा सुणाईआ।

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रेशम सिँघ दे गृह खहिरा मजा ज़िला जलन्धर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ आसा मनसा पूरी कर दे मंग, मांगत भिखारी दरवेश धुर दे ध्यान लगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीत गए लँघ, बण बण नित नवित पाँधी राहीआ। सिफ्ती नाम ढोले गा गा लोकमात अगम्मी छन्द, अक्खर काग़ज़ शाही नाल जोड़ जुड़ाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह तेरा माण के गए अनन्द, निजानंद विच्चों परमानंद दिता वखाईआ। भेव खोल्ह्या ब्रह्म हँ, हमसाजण हो के आपणा घर वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर होए तंग, सगला संग दीन दुनी ना कोए बणाईआ। साडा अन्त अख़ीर बेनज़ीर ना होवे भंग, ब्रह्मण्ड खण्ड मिल के तेरा वास्ता पाईआ। निरगुण जोत अगम्म प्रकाश नूरी चाढ़ चन्द, सुकला किशना पक्ख वण्ड ना कोए वण्डाईआ। शब्द अनाद धुन ब्रह्माद जणा बिना बत्ती दन्द, रसना तों बाहर आपणा रस दे वखाईआ। करवट लै करनी दे करते बदल आपणी कंड, सनमुख हो के बिना मनुष मनुक्ख आपणा दरस वखाईआ। सच प्रीत ठांडे सीत तेरे नाल गई हंढ, बख्शंद हो के बख़्शिश रहमत साडी झोली पाईआ। याद आई विष्न ब्रह्मा धार प्रेम वाली गंढु, निरगुण अंदर निरगुण सोभा पाईआ। निरवैर हो के सच मुहब्बत विच महबूब प्यारे रंग, धुर दे मालक आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर बैठे आस लगाईआ।

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ मंडयाणी ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर दे मालक वेख मंगीए की, कीमत पिछली ना कोए चुकाईआ। झगड़ा प्या साढे तिन्न हथ्थ माटी ख़ाकी सीं, साँवल सुंदर तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। अमृत धार निजर रस बरखे ना कोए अगम्मा मींह, जगत प्यास तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। निर्मल करे ना कोए जीआ जी, जीवत जीवण मृत्य तों पहलों मिरतक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण, साडा होया मांगत वेला, जुग चौकड़ी आसा मनसा लहिणा पूर कराईआ। जोत शब्द धार गुरू गुर चेला, चेला गुर एका रंग समाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी नज़र आ धुर सुहेला, धर्म दुआर एकँकार इक्को इक्क प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी सद वस्या रिहों नवेला, चुरासी अंदर वड़ के, मन्दिर चढ़ के आपणा नूर जोत छुपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी धार कुदरत दे यार आए फड़ के, वाहिद लाशरीक तेरा ढोला गाईआ। तत वजूद माटी

ख़ाक छड्ड के जीवत होए मर के, जीवण तेरी झोली पाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही खोल्ह भेव आपणे घर दे, घराना गृह मन्दिर निज दुआर एकँकार आपणा इक्क प्रगटाईआ। जो कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर भगत सुहेले तेरा सोहला पढ़दे, नाम निधान नौजवान मर्द मर्दाना तेरा राग अल्हाईआ। सीस जगदीस तेरे चरण कँवलां धरदे, धरनी धरत धवल उपर तेरी आस रखाईआ। ओन्हां दे कारज आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के कर दे, कदीम दे मालक कुदरत दे ख़ालक ख़लक दे सालस ज़ामन हो के वेख वखाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान रवि ससि सूर्या चन्द तैथों डरदे, लोक परलोक सलोक सिर सके ना कोए उठाईआ। श्री भगवान जीव जहान नाम निधान नवां घाड़त घड़ दे, घड़न भन्नणहार समरथ महिमा अकथ दे के वथ, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। तेरे खेल वेखीए आदि जुगादी निहकलंक नरायण नर दे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ।

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ राज कौर दे गृह जलौद ज़िला लुधियाणा ★

५६८
२०

गुर अवतार पैगम्बर कहिण जुग चौकड़ी तेरा जप जप थक्के जाप, अक्खां अक्खरां नाल मिलाईआ। तैनूं दस्सदे आए पवित्त पाक, पतितां पुनीत बणाईआ। शब्द अगम्मी मारदे आए आवाज़, बिन रागां नादां शब्द राग अल्हाईआ। मेहरवान मेहर नज़र कर वेख अन्धेरी रात, कलयुग काली धार चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दहि दिशा साची दिसे ना कोए जमात, सच मिलाप साचे घर ना कोए रखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जन भगतां वस्त अमोलक कर अनायत, गुफ़त शनीद आपणी आप टिकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धुर दा हुक्म कर हदायत, हदीस कलमा अबलीसां दे समझाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर साडी पूरी होई शरायत, शरअ शरीअत तेरी झोली पाईआ। तेरा नूर नज़र आए एकँकार इक्को वाहिद, वाहिद कलमा नग़मा नाम निधान देणा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा होया अहिद, अहिदनामा श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना मेहरवाना तेरे अग्गे टिकाईआ। तेरा हुक्म बदल देवे तरीका कानून कवाइद, काइदा बाकायदा अलैहदा आपणे हुक्म विच समाईआ। वक्त समां अग्गे होर ना होवे ज़ाइद, ज़ाहद मशाहद धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। पुरख अकाले दीन दयाले जुग चौकड़ी अन्त अख़ीर कढ्ढ नताइज, अदल अदालत आपणी इक्क लगाईआ। लख चुरासी जीव जंत किसे नाल करीं ना कोई रयायत, बेअसूली अंदर करीं ना कुछ अनायत, असल विच

आपणा वसल यार देणा कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरी मंगदे हमायत, हमसाजण वड्ड राज राजन शाहो भूप शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। तेरा भगत सुहेला गुरमुख गुरसिख सन्त साजण रहे ना कोई नालायक, नालिश विच आतश जगत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण लहिणा देणा मुका दे सब दा मूल, अमुल्ल मुल्ल कीमत आपे पाईआ। तेरा हुक्म कोई ना जावे भूल, अभुल्ल भुलयां देणा समझाईआ। सतिजुग साचा मार्ग इक्को दस्स असूल, असल विच तेरी नसल आत्म नूर नज़री आईआ। तेरा नाम संदेसा हुक्म इक्क माअकूल, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त लहिणा देणा झगड़ा मुकाउणा कातिल मक्तूल, फ़ज़ूल वक्त ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार तेरा करदे हित, तूं ठाकर स्वामी एथे ओथे दो जहानां पित, जन भगतां अंदर प्रेम धार एकँकार शब्दी लाउणी खिच्च, निरगुण धार काया माटी मन्दिर वड़ना विच, विचला भेव वड देवी देव बिन सेव गुरमुखां लेखे देणा लाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हँस राज दे गृह मकेरीआं ज़िला हुश्यिार पुर ★

शब्द कहे मैं तेरा सुत दुलार, आदी नादी इक्क अख्वाईआ। थिर घर मेरा दवार, सचखण्ड तेरा दर्शन पाईआ। विष्न कहे मेरी विश्व धार, धुर दी सेवा नज़री आईआ। ब्रह्मा कहे मेरा ब्रह्म पसार, तेरा जोत नूर रुशनाईआ। शंकर कहे मैं खेल खेलां धूआँधार, सँघार करां लोकाईआ। त्रैगुण कहे मैं बख्शीश रहमत विच करां प्यार, प्रीतम तेरी आस रखाईआ। पंज तत कहिण तेरे हुक्म दा आकार, अकल कलधारी तेरा खेल धुरदरगाहीआ। प्रकृती कहे मैं वेखां वेखणहार, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरअक्खर कहे मेरे उत्ते कीता उपकार, अगम्मी आवाज़ जणाईआ। बख्शीश कर अगम्म अपार, अपरम्पर दिती वड्याईआ। समां कहे जावां बलिहार, जुग चौकड़ी मेरा अंग बदलाईआ। विद्या कहे तेरा आधार, वेदां नाल सालाहीआ। सरगुण कहे तेरा जोत नूर उज्यार, अन्ध अन्धेरा अन्ध ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल कहे पृथ्मी आकाश मेरा संसार, जल थल बूँद स्वांती चरण धूढ़ी छार, शहिनशाह आपणी इक्क प्रगटाईआ। धरनी धरत धवल दे आधार, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप समझाईआ।

शब्द कहे मैं तेरा नाद, अनादी इक्क अख्वाईआ। विष्न कहे मैं तेरी याद, हर घट सेव कमाईआ। ब्रह्मा कहे मैं तेरा राज़, जलवा नूर अख्वाईआ। शंकर कहे मैं तेरा साध, साधना करां जगत लोकाईआ। त्रैगुण कहे मैं तेरी दाद, दाअवे नाल मंग मंगाईआ। पंज तत कहिण असीं काया खेड़ा करीए आबाद, सोहणी बणत बणाईआ। प्रकृती कहे मेरे बिना बणे ना कोए स्वाद, रसना रस ना कोए जणाईआ। निरअक्खर कहे मेरे बिना आए ना कोए आवाज़, जगत बणत ना कोए बणाईआ। विद्या कहे मैं साची साजणा लई साज, सज्जण मिल्या बेपरवाहीआ। सरगुण कहे मेरा निरगुण देवणहारा दात, दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेले खेल तमाश, पुरख अकाल एका नूर इलाहीआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ मुलख राज दे गृह मकेरीआं ज़िला हुशियार पुर ★

शब्द कहे मैं आदी सुत, जागत सोवत रूप ना कोए वटाईआ। विष्न कहे मैं धार अबिनाशी अचुत, चात्रक हो के इक्को आस रखाईआ। ब्रह्मा कहे मैं हुक्मे अंदर सृष्टी करां उत्पत, चारे खाणी सोभा पाईआ। शंकर कहे मैं रहिण ना देवां कोई दु:ख, काया माटी तन वजूद करां सफ़ाईआ। त्रैगुण माया कहे मैं किसे दवारे कदे ना जावां मुक, प्रधान हो के भज्जां वाहो दाहीआ। पंज तत कहिण बिन साडे बणे कोई ना बुत्त, तन सरीर ना कोए रखाईआ। प्रकृती कहे मेरे नाल सब कुछ, पंञ्जी मिल के वज्जे वधाईआ। धुर आवाज़ कहे प्रभ दा पैंडा कदे ना जावे मुक, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण धार आपे उठ, अकल कल आपणी कार कमाईआ। खेल अंदर खेले खेल सब कुछ, भेव अभेदा आपणे विच लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप चढ़ाईआ। शब्द सुत कहे मैं एकँकार दा इक्क दुलारा, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। विष्न कहे मैं विश्व करां प्यारा, वास्तक आपणा आप सेव लगाईआ। ब्रह्मा कहे मैं वेख ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म निउँ निउँ लागां पाईंआ। शंकर कहे मैं लहिणा देणा चुका विच संसारा, संसारी भण्डारी आपणे नाल मिलाईआ। त्रैगुण कहे मेरा सुहावा सदा रहे दिहाढ़ा, दिवहाढ़ी सौ सौ वार पुरख अकाल मनाईआ। पंज तत कहे मेरा लग्गे एह अखाड़ा, तन माटी ख़ाक वजूद मन दयां नचाईआ। प्रकृती कहे मेरा लेखा नौ दवारा, वासना विच आसां दयां मिलाईआ। मेरे हुक्म दा होर नज़ारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार उपाईआ। मेरे प्रेम दा इक्क इशारा, आसा मनसा हिंसा विच वेखां जगत लोकाईआ। बुद्धी तों परे खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी दिता समझाईआ। निरअक्खर धारों जिस वेले सुणां जैकारा, मूरछा हो के आपणा आप मिटाईआ। एह लेखा लिखण तों बाहरा, जुग चौकड़ी सक्या

ना कोए प्रगटाईआ। खोजदे गए गुर अवतारा, पैगम्बर आपणी अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। कागद कलम शाही नाल दे के गए इशारा, शरअ विच शरीअत आपणी बन्द कराईआ। विद्या दा लेख अक्खरां दवारा, बुद्धी दा माण नेकी बदी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी धुर दा करता आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ प्रेम दयाल दे गृह मेरठ ★

शब्द सुत कहे मैं धुर दा दूल्हा, आदि जुगादी एक ल्या उपजाईआ। विष्न कहे मैं हुक्मे अंदर कदे ना भूला, अभुल हो के सेव कमाईआ। ब्रह्मा कहे ब्रह्म धार मेरा मूला, मूल मंत्र मिल्या धुर दा नाम जो धुरदरगाही दिता दृढ़ाईआ। शंकर कहे मेरे कोल शरअ दी त्रिसूला, त्रैभवन धनी आपणी दात मेरी झोली पाईआ। त्रैगुण कहे मेरा गुंचा सोहणा फूला, पत्त पंखड़ी नज़र किसे ना आईआ। पंज तत कहिण मेरा आदि आपणा इक्क असूला, असल नसल दिती जणाईआ। प्रकृती कहे मेरा रंग वेखे कन्त कन्तूहला, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म इक्क माअकूला, मुकंमल आपणी कार कमाईआ। निरअक्खर धारों सच प्रेम दा देवे झूला, झलक आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेश नर नरेश एकँकार इक्को इक्क समझाईआ। शब्द सुत कहे मैं सति सतिवाद, सति धारा विच समाईआ। विष्न कहे मैं सेवा करां आदि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्मे सीस निवाईआ। ब्रह्मा कहे मेरा नूर प्रकाश, ब्रह्म ब्रह्माद पारब्रह्म दिती माण वड्याईआ। शंकर कहे मेरे तों परे नहीं कोई जलाद, जो घड़या भन्न वखाईआ। त्रैगुण कहे मेरे बिना पंज तत कदे ना होण आबाद, खेड़ा घर ना कोए सुहाईआ। निरअक्खर धार कहे मेरे बिन खोल्हे कोई ना राज़, अगम्म आवाज़ ना कोए प्रगटाईआ। विद्या कहे मेरे बिना करे ना कोए सवाल जवाब, लिख्त पढ़त बिना शहादत अवर ना कोए भुगताईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब नूं देवणहारा दात, दाता दानी धुर दा इक्क अख्वाईआ। सारे मेरा निक्का जेहा समाज, समाज विच्चों खोल्ह के राज़, गुर अवतार पैगम्बर लवां प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण देवां दात, दानी हो के आप वरताईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी सारे वेखो हुक्मे अंदर पई रैण अन्धेरी रात, रुतड़ी रुत्त ना कोए बदलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बिन अक्खां लवो झाक, माया तत मन मति बुध पई लड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो साख्यात, साहिब सुल्ताना इक्क समझाईआ। विद्या दा लेखा लिख्या कलम दवात, कलयुग अन्तिम कम्म किसे ना आईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, इक्क इकल्ला एकँकारा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्मे अंदर हुक्म कर राइज, राजन राज आपणा हुक्म वरताईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ निरँजण सिँघ दे गृह अजितवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ★

सुत शब्द कहे मैं धुर दा संगी, मांगत इक्को दर दा नजरी आईआ। विष्नूं कहे मेरा भण्डारा मिल्या वस्त अनमंगी, पुरख अकाल दिता वरताईआ। ब्रह्मा कहे मेरी ब्रह्म धार विच वरभण्डी, सृष्टी दा सरूप नज़री आईआ। शंकर कहे मैं जीवण ढाह लवां कन्ढी, थिर रहिण कोए ना पाईआ। त्रैगुण कहे मैं पावां जगत फंदी, तन्द सके ना कोए कटाईआ। पंज तत कहिण साडा अगम्मा ख़ानाबन्दी, बांदी होवे जगत लोकाईआ। प्रकृती कहे मैं सब तों चंगी, बिन मेरे चले ना कोए चतुराईआ। निरअक्खर धार कहे मेरी धार धुर सुगंधी, सति सरूप विच्चों प्रगटाईआ। सरगुण कहे इक्को हुक्म दी वेख पाबन्दी, आप आपणा भेंट कराईआ। पुरख अकाल कहे मेरी आदि जुगादी खेल जुग चौकड़ी डण्डी, मार्ग इक्को इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा आदि अनादी एका रंग, रंगत सके ना कोए बदलाईआ। धुर दवारयों मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाल बण बख़्शंद, रहमत आपणी दिती कमाईआ। परमात्म आत्म बख़्श के सोहँ धार छन्द, साचा मेला ल्या मिलाईआ। सुरती शब्दी पा के गंढु, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। निरवैर हो देवे ना कंड, करवट आपणी ना कोए बदलाईआ। सदा सुहेला हो के संग, आपणा साथ वखाईआ। सच प्रेम दा दे के अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। सच नूर दा चाढ़ के चन्द, चन्द चांदनी अक्ख बदलाईआ। सच दवारा एकँकारा लँघ, गृह आसण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शब्द सुत कहे मैं आदि जुगादी सतिगुर सच्चा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेरा पुरख अकाल नाल कौल पक्का, कच्ची गंढु ना कोए पवाईआ। एथे ओथे दो जहानां लोकमात ब्रह्मण्ड खण्ड सच्चा, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। मैं भाग लगावां जन भगतां काया माटी कच्चा, कंचन गढ़ दयां सुहाईआ। किसे हथ्थ ना आवां मन्दिर मसीत मदीना मक्का, गुरदवारे वेखण कोए ना पाईआ। मेरा खेल अगम्म अथाह बेपरवाह रखाया हका, हकीकत आपणे विच्चों समझाईआ। मैं निरगुण धार जोत निरँकार नाल कर के मता, मति मतांतर जगत दयां चुकाईआ। मेरा किसे नूं समझ ना आवे पता, पतिपरमेश्वर सच सिँघासण उपर आप टिकाईआ। जिस दे चार जुग शास्त्र वेद पुराण जगत ज्ञान

करदे कथा, कथन तों बाहर कथ सके कोए ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर सेवा करदे यथार्थ यथा, यदप आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। कलम शाही अक्खर काग़ज़ मिल के मेरी करदे कथा, कथनी नाल अकथ कहाणी सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। धुर शब्द कहे मैं धुर दा धर्म, वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निहकर्मी धार जगत वासना नहीं कोई कर्म, कांडां दा हिस्सा ना कोए बणाईआ। मेरा इक्को परम पुरख नाल प्रन, परमात्म आत्म देणा मिलाईआ। दीन दुनी दे मालक ख़ालक प्रितपालक तेरे तकणे चरण, चरणोदक आपणे मुख चुआईआ। तूं ख़ालक ख़लक दा मालक करनी करन, कुदरत दा करता नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा सोहँ ढोला पढ़न, जो अन्तर आत्म परमात्म मेला रिहा मिलाईआ। बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल साची चढ़न, बिन भजन बन्दगी दर्शन दे के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी बदलदी जाए पूजा, पूजस पूजस समझ किसे ना आईआ। मेरे अन्तर दुतीआ भाउ नहीं कोई दूजा, वेस अनेका रूप वटाईआ। धुर दा फ़रमान शब्द अगम्म नाम निधान दस्सां गूझा, अनुभव आपणा परदा आप चुकाईआ। सच दवारा एकँकारा हरि निरँकारा जन भगत विरले सूझा, जिस अन्तर निरंतर आपणा परदा दिता उठाईआ। रसना रस दस्स ना सके ज्यों रस गूंगा, अनरस आपणी धार आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मेरा रूप रंग रेख नज़र ना आए जगत ढूंडा, ढूंड ढूंड थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे बुत्त रूह दा, मसीह दा मालक वसीअ हो के आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी समझे ना कोए कालम, हिस्सा नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी बहु विद्या वाले आलम, इलम नाल आपणा अमल बणाईआ। प्रेम प्रीती मुहब्बत विच दस्स के गए बालम, बाली बुध समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी वेस अनेका मेरी वक्खरी चालन, चार जुग दी धारा, आपणे विच छुपाईआ। मेरा खेल सदा निरालम, निराकार हो के आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सूफ़ी सन्त फ़कीर सजदयां विच मुर्शद मन्न के मैनूं भालण, मुरीद हो के मुर्दा रूप बणाईआ। मेरा लेखा लहिणा देणा दो जहानन, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान हुक्मे अंदर फिराईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोटां विच्चों जन भगतां अन्तर देवां चानण, जोती जाता पुरख बिधाता, मिल के आपणा नूर करां रुशनाईआ। निरगुण धार सरगुण फड़ावां दामन, दामनगीर हो के दमां दा लेखा दयां मुकाईआ। झगड़ा मुकावे हो के पतित पावन, पुनीत पवित्त पतित दए कराईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर सिफ्तां

रागां नादां कलमयां विच गावण, नग़म्यां विच नाम निधान शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रहिमण्ड खण्ड जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सीस झुकावण, लोक परलोक बैठे ध्यान लगाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ प्रेमी देवी दे गृह झण्डे कैंप जम्मू ★

शब्द कहे मेरा लेख अगम्मी लिख्या, अक्खरां वाला रूप ना कोए वखाईआ। जित्थों गुर अवतार पैग़म्बरां मिलदी सिख्या, धुर अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। सच भण्डारा देवां भिच्छया, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। नेत्र नैण किसे ना वेख्या, लोचण अक्ख दरस कोए ना पाईआ। भेव रख सदा अनडिठया, अनडिठड़ी कार कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दे के चिठ्ठीआं, संदेसे लोकमात जगत जुगत समझाईआ। भेव रखावां वड्डयां निक्कयां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग आप रंगाईआ। शब्द सतिगुर कहे मेरा कोई ना जाणे ओहला, परदा सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भाग लगावां काया माटी चोला, सृष्टी अंदर दृष्टी दयां बदलाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द सुणावां अगम्म सोहला, सो स्वामी हो के अन्तर आत्म परदा लाहीआ। इक्क इकेला संगी बहु रंगी हो के वसां कोला, नेरन नेरा आपणा पन्ध मुकाईआ। नव नौ चार पिच्छो पुरख अकाल दीन दयाल नाल मिल के ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" सुणावां ढोला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा धुर दा इक्क जैकार, जै जै कार गुर अवतार पैगम्बर रहे गाईआ। मेरा आदि जुगादी इक्क दवार, गुर अवतार पैगम्बर दर दर आपणी अलख जगाईआ। मेरा इक्क इकल्ला सच मनार, गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी तन माटी ख़ाक हंढाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा लख चुरासी इक्क दीदार, गुर अवतार पैगम्बर इष्ट देव सिफ्तां वाले ढोलयां विच अलाईआ। शब्दी धार कहे मेरा लेखा अगम्म अपार, अलख अगोचर देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयां विच करदे निमस्कार, नमस्ते विच डण्डावत डण्डावत विच आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। मैं कुदरत दा मालक ख़लक दा ख़ालक मेरा यार, ज़ाहर ज़हूर आपणा खेल वखाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित हुक्मे नाल बदल देवे संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क

दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देवणहारा दान, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर झोलीआं अग्गे डाहण, ख़ाली भण्डारे लैण भराईआ। मैं बणया रहवां काहनां दा काहन, बंसरी वाले काहन सारे सीस निवाईआ। सब घट वस्या राम, राम न्यारा मेरी धार धार विच्चों प्रगटाईआ। मेरा रूप अगम्मा मेरा लेखा घनईया शाम, साँवल सुंदर मेरा हुक्मी वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म करे इंतज़ाम, बदनाम वेखे जगत लोकाईआ। शरअ दा कलाम कलमयां दा अमाम, कायनात दा मालक दाता धुरदरगाहीआ। सति दा इस्लाम सच दा पैग़ाम, पैगम्बरां रसूलां नबीआं नाइब हो के करां सिखलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ भगवान, आदि जुगादी दरगाह साची सचखण्ड दवारे इक्क निशान, निशाने अंदर आपणा नाउं शब्द सतिगुर रूप प्रगटाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ अमरजीत कौर जगजीत सिंघ सरमैल सिंघ सलीम पुर ज़िला हुश्यिार पुर ★

सतिगुर शब्द कहे कोटन कोटि खोजी बणे हिसाबी, मेरा भेव किसे ना आईआ। मेरी तक्क के मंज़ल महिराबी, महबूब मन्न के सीस निवाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर बणे रहे इनकलाबी, फ़रमांबरदार हो के सेव कमाईआ। दीन दुनी दी आपणे हुक्मे अंदर रख के बाज़ी, बाज़ीगर हो के दो जहान डंक वजाईआ। आसा मनसा जगत धार बणा समाजी, समां समें नाल टकराईआ। जुग चौकड़ी नित नवित साची वस्त बिन भगत किसे ना लाधी, लभ्भ लभ्भ थक्के सर्ब लोकाईआ। मैं आदि जुगादि नित नवित ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल निरगुण सरगुण बणया रहां पाँधी, बिन कदम कदीम दा पैंडा आप मुकाईआ। मेरी धार एकँकार नाल बांधी, बन्दना विच्चों बन्दना गुर अवतार पैगम्बरां दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी खोज किसे ना आवे हथ्थ, खोजत खोजत जुग चौकड़ी गए विहाईआ। मेरी महिमा जाणे ना कोए अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पैगम्बर इशारे नाल समझाईआ। जगत विद्या गा ना सके जस, कलम शाही लेख ना कोए प्रगटाईआ। मेहरवान हो के जिस देवां आपणा रस, रस्ते दा रहिबर हो के अन्तर अक्ख खुलाईआ। तिस दा मेला होवे जगत क्रिया तों बाहर झब, जब आपणा रंग रंगाईआ। आसा मनसा लहिणा देणा लेखा पूर करां हब्ब, हुब्बे वतन दा यार महबूब इक्को नज़री आईआ। सच दुआर कदे ना करां अलग्ग, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। जन भगतां काया मन्दिर अंदर चढ़ के तूं मेरा मैं तेरा सुणावां छद, ढोला इक्को इक्क प्रगटाईआ। जगत विकारा कूड़ हँकारा

करां बध, बन्दना विच बन्दगी इक्को इक्क उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर आदि जुगादी मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। सच प्रीती अंदर सरगुण धार आपणा रंगदे, निरगुण निराकार वेख के खुशी बणाईआ। कर प्रकाश अगम्मी चन्द दे, सूर्या चन्द दा लेखा देणा मुकाईआ। ढोले गा सोहँ छन्द दे, संसारी नाम सिफ्तां विच वड्याईआ। रस माण अगम्मी सेज पलँघ दे, बिन पावा चूल सच सिँघसण सोभा पाईआ। झगड़े मुका के कूड़ कुड़यारे मन दे, मनसा मोह विकार हँकार जगत नाता कूड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे भेव खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा लेखा उच्च महिराबी, महबूब मिल के वज्जे वधाईआ। मेरा परम पुरख दा इक्क आदाबी, अदब नाल गुर अवतार पैगम्बर दयां समझाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित बदल दयां शताबी, शायरां वाली शरअ दयां उलटाईआ। लेखा रख के परे हकीकी ते मिजाजी, मजार तों परे मज़ा आपणा दयां चखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो जन भगतां आपणे मिलण दी सिध्धी देवां आज़ादी, मेहर नज़र नाल मेहर विच समाईआ। तन वजूद माटी ख़ाकी होण ना दयां बरबादी, उजड़ा खेड़ा नेड़न नेड़ा हो के आपे वेख वखाईआ। गुरमखां अंदर धार रख के सादी, साधना साची दयां जणाईआ। जिन्हां दा मेला आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरा आदी, आदम हवा जिस नूं सीस निवाईआ। कुछ लहिणा देणा पिछला लेखे विच रिहा जिस वेले मुहम्मद दी होई शादी, वक्त सुहञ्जणा आपणा रंग रंगाईआ। इक्क गावण वाला ढाडी, राग आपणा रिहा सुणाईआ। तेरा कोई चंगा नहीं जापदा जांञी, लाड़े तेरा लाड़ा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह खेल अपारा, तीस बत्तीस सके कोए ना गाईआ। कुरान शरीफ़ विच इशारा, ब्यान देवे तेईवां सपारा, शपरो सीला नज़री आईआ। खेल होया अपारा, वेखण वाला नज़ारा, मुहम्मद दा इशारा, महबूब वल ध्यान लगाईआ। कुदरत दा अखाड़ा, फ़ुरसत दा दिहाढ़ा, उल्फ़त दा वाड़ा, मंगण आया चाँई चाँईआ। लक्कड़हारा जिस दे मोढे उत्ते उत्ते कुहाढ़ा, मस्तक खिड़ी होई गुलज़ारा, महक प्रेम प्रीती विच्चों प्रगटाईआ। उस दा साथी सज्जण जो रंगदार ललारा, इक्की साल उमर कुँवारा, रफ़ीक नाम लै के सारे गाईआ। ओस दे अन्तर आई विचारा, मुहम्मद दे सिर ते बन्न्हां दस्तारा, मेरा अग्गे वधे प्यारा, रंग अक्खां विच छुपाईआ। किरपा करी परवरदिगारा, फ़ुरना दिता धुर दरबारा, वेख नूर जोत इशारा, अजे बण ना वणजारा, तेरा लेखा होर उधारा, जन्म लैणा दूजी वारा, प्रगट होवें विच संसारा, अमाम अमामां होवे सिक्दारा,

कल कल्की लै अवतारा, जिस दा मुहम्मद नूं सहारा, उह तेरा लेखे लाए वाड़ा, रंग चाढ़ अपर अपारा, हुक्म आपणा इक्क वरताईआ। सो लहिणा देणा देवे विच संसारा, निरगुण जोत नूर उज्यारा, भेव खुल्हाए धुर दरबारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे दर लेख मुकाईआ। मुहम्मद अंदर आई याद, महबूब दिता सुणाईआ। मैं सुणी अगम्मी आवाज़, राज़ दयां खुल्हाईआ। बिन कलमिउं पढ़ नमाज़, सजदा दिता कराईआ। परवरदिगार खोल्ही जाग, सदी चौधवीं दिती वखाईआ। जिस दे उत्ते तेरा नाज़, उह खेल करे आप जिस नूं मूसा मन्नया बाप, ईसा कर के ओसे दा जाप, नूर खुदा खुद विच समाईआ। सो बुत्त करे पाक, रूह करे साफ़, अंदर खोल्हे ताक, मेटे पिछली वाट, मंज़ल पूरी करे घाट, लेखा धुर दा दए चुकाईआ। मुहम्मद अंदर आई आसा, इच्छया लई प्रगटाईआ। एह खेल अगम्म तमाशा, वेला वक्त दए गवाहीआ। पुरख अकाल किहा मैं जुग चौकड़ी नित नवित लहिणा देणा सब दा पूरा करां घाटा, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। करनी दा करता हो के लोकमात मारां वाटा, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। मुहम्मद किहा मेरा ओस दे नाल प्यार, जो प्रीती अंदरों रिहा वखाईआ। जिस ने खुशीआं नाल लयांदी दस्तार, दस्त आपणे रिहा उठाईआ। परवरदिगार किहा एह तेरे अग्गे दा उधार, वाधा तेरे नाल मिलाईआ। जिस वेले प्रगट हो के आवां सांझा यार, चार यारी लेखा दयां चुकाईआ। मेहरवान हो के महबूब हो के मुहब्बत विच ओसे दे सिर बख्शां एह दस्तार, जिस दी दस्ती दस्तावेज़ हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख पूरब लहिणे दे कर अज़ीज़, अज़ीम आज़म देवे माण वड्याईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बिकर्म सिँघ दे गृह तखाण वध ज़िला फ़िरोज़पुर ★

सतिगुर शब्द कहे हुक्म देवे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार बणो मलाह, खेवट खेटा धुर दा बेटा लए उपजाईआ। अग्गे करो ना कोई सलाह, मशवरयां विच मता ना कोए पकाईआ। हुक्मे अंदर सीस दयो झुका, अक्ख प्रतख साहमणे ना कोए उठाईआ। सजदयां विच करो दुआ, कबूल करे धुर गोसाँईंआ। निरवैर हो के पकड़े बांह, बल आपणा नाल रखाईआ। जा के वेखो ज़िमीं असमां, आसण सिँघासण रिहा उठाईआ। सृष्टी दृष्टी विशेष बुद्धी होई कॉँ, मनमति रही कुरलाईआ। पाक पवित पतित करे ना कोई नाँ, नाम निधाना हथ्थ किसे ना आईआ।

सज्जण सुहेला बण के सिर देवे ना कोई ठंडी छाँ, कलयुग अग्नी तत रही तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी धुर फ़रमाना इक्को इक्क दृढ़ाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ निरवैर सिँघ निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा कूचा नम्बर ६ ★

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर आपणा आपणा बन्नो भार, भारत खण्ड पहली वण्ड वण्डाईआ। नव नौ खोलू किवाड़, परदा ओहला रिहा चुकाईआ। जंगल जूह वेखणा पहाड़, टिल्ले पर्बत फोल फोलाईआ। हुक्मे अंदर करनी सच्ची कार, करनी दा करता आप समझाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो बाकी रिहा उधार, लहिणे विच्चों लहिणा देणे विच्चों देणा वेख वखाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह खेल करे सच्ची सरकार, करनी दा करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दुआर सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणे आपणे वेखो बस्ते, बस्ती लोकमात फोल फोलाईआ। जो मार्ग रहे दस्सदे, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। इशारे करदे रहे अगम्मी अक्ख दे, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। वणजारे बणदे रहे मेरे नाम हट्ट दे, धर्म तराज़ू हथ्थ उठाईआ। भेव खुलाउँदे रहे पुरख समरथ दे, खाणी बाणी नाद जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण भरे जस दे, ढोलयां विच्चों सोहले सोहणा राग अलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन तन वजूद वेखो तपदे, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार इक्क समझाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड अजनौद ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बर इक्को वार करो त्यारी, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। नाल रलाओ ब्रह्मा विष्न शिव संसारी, भण्डारी सँघारी बचया रहिण कोए ना पाईआ। उत्तर पूरब पच्छण दक्खण चार कुण्ट दहि दिशा वेखो इक्को वारी, एकँकारा धुर दरबारा दर घर साचे रिहा समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वरन बरन अंदर वेखणी जूठ झूठ यारी, ममता दा मोह विकार हँकार बचया रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया रैण मेटणी कलयुग अन्त अंध्यारी, ज्ञान नेत्र निज लोचन देणा खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा ठाकर स्वामी हो के हुक्म सुणाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड दबुरजी ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर अग्गे करनी नहीं देर, दूर दुराडा नेरन नेरा हो के रिहा जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला समरथ स्वामी करे मेहर, महबूब मुहब्बत विच माअकूल हुक्म सुणाईआ। हुक्मे अंदर सवाधान हो दलेर, भय भउ भयानक नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ कुटम्ब मेटणा गेड़, गेड़ा धुर दा देणा दवाईआ। मन वासना करे कोई ना हेर फेर, फुरती नाल सुरती देणी जगाईआ। तुहाडा मालक ख़ालक प्रितपालक सतिगुर शब्द इक्को शेर, भबक विच चौदां तबक रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी करता हो के आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उठो बलधार, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। लहिणा देणा जीव जंत वेखो संसार, लख चुरासी फोल फोलाईआ। जिस दी याद विच बीते जुग चार, फ़रयाद विच बेनन्तीआं कर सुणाईआ। सो लेखा जाणे धुर दरबार हरि करतार, करनी दा करता इक्क अख्वाईआ। सदी चौधवीं सब दी करे संभाल, लेखा जाणे शाह कंगाल, दीन दुनी खोज खुजाईआ। गुरमुख भगत सुहेले सन्त साजण वेखे आपणे लाल, बेहाल कूके कूड़ लोकाईआ। दीनां बंधप दया विच होए दयाल, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मार्ग दस्से इक्क विशाल, विषयां विच्चों विशा साचा नाम धुर दा इक्क जणाईआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड पुरीआं ज़िला गुरदासपुर ★

पुरख अकाल कहे सब दी आसा मनसा करां पूर, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेख वखाईआ। निरगुण धार जोती जाता पुरख बिधाता हो के रहां हाज़र हज़ूर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल वखाईआ। मन वासना हउमे हंगता कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ां ज़रूर, विकार हँकार दीन दुनी लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी विच्चों जीव जंत साध सन्त आत्म रसीए करां कबूल, काया काअबा हक दोआबा इक्को इक्क एकँकार हो के दयां जणाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार हो के करां मन्ज़ूर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद मानव बन्नां इक्क असूल, असल वसल देवां यार खुदाईआ। आत्म परामतम नाता जोड़ के कन्त कन्तूहल, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन घट निवासन एका एक दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा नर नरेशा दो जहान श्री भगवान परवरदिगार सांझा यार इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे मैं आदि जुगादि सचखण्ड निवासी अदली, अदल अदालत मुकामे हक इक्को इक्क लगाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण करदा आवां बदली, तबादले विच धरनी धरत धवल आपणी खेल खिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त अख़ीर पन्ध मुके मज़लो मज़ली, मंज़ल हकीकी लाशरीकी इक्को दयां वखाईआ। जिस कारण गुर अवतार पैगम्बरां धार सद लई, धुर संदेसा नर नरेशा नाम निधाना श्री भगवाना इक्को इक्क समझाईआ। हुक्मे अंदर खेल खेलणा समरथ पुरख सृष्ट सबाई जग लई, जागरत जोत बिन वरन गोत निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह मन्दिर तन माटी काया वजूद वेखे थाउँ थाँईंआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बावा सिँघ दे गृह पिण्ड पुरीआं ★

पुरख अकाल कहे साचे नाम दा वज्जे इक्क नग़ारा, नौबत धुर दी दयां सुणाईआ। जिस नूं कागद कलम शाही कोए ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बैठे सीस निवाईआ। लहिणा देणा जीव जंत साध सन्त कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेखे लाउणा विच संसारा, संसारी भण्डारी (सँघारी) मिल के सारे देण गवाहीआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत कर इक्क उज्यारा, चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। लेखा जाणे सचखण्ड निवासी धुर दरबारा, दरगाह साची मुकामे हक इक्को इक्क करे शनवाईआ। जो आदि जुगादि नित नवित हुक्म संदेसा देंदा रिहा गुरू अवतारा, पैगम्बरां कलमा कायनात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन घट निवासन इक्को इक्क वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा हुक्म अगम्म अथाह, दो जहान ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। साचा शब्द एकँकार इक्क बणा मलाह, खेवट खेटा हो के लख चुरासी दीन दुनी खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक दस्से इक्क राह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि निरँजण एका जोती नूर कर रुशनाईआ। वेखे विगसे टिल्ले पर्बत चोटी जल थल अस्गाह, समुंद सागर डूंघी खाई फोल फोलाईआ। घट निवासी काया मन्दिर अंदर निरंतर हो के परदा देवे लाह, पारब्रह्म ब्रह्म भेव आपणा दए जणाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सृष्टी दृष्टी अंदर दए सुणा, सरवण सरोता सुणन दी लोड़ रहे ना राईआ। दीआ बाती कमलापाती इक्को जोती जाता दए जगा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अमृत रस बूँद स्वांती गुरमुख

ठांडे दर दए पिला, पीवत जीवत रूप लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लेखा जाणे दो जहां, मेहरवान महबूब आपणी कल वरताईआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड चन्द पुराणा ज़िला फ़िरोज़पुर ★

जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर आप, आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दा रहे कोई ना पाप, पतित पुनीत दे बणाईआ। भाग लगा तन माटी वजूद ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण हो साथ, धुर दा संग बणाईआ। आत्म परमात्म दस्स जाप, जगजीवण दाते भेव खुल्लाईआ। झगड़ा मुके त्रैगुण माया तीनों ताप, तपश अग्नी दे गवाईआ। मेहर निगाह विच महबूब रख हाथ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। सब दा पूरा कर भविख्त वाक्, लेखा चुका धुरदरगाहीआ। चरण प्रीती इक्को रहे नात, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ।

५८१
२०

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ चन्दा सिँघ दे गृह ललतों कलां ज़िला लुधियाणा ★

जन भगत कहिण आपणा बख्श आपे नाम, नाउं निधाना दे जणाईआ। सच हकीकी दे जाम, रस खुमारी नाम चढ़ाईआ। महबत्त दे तुआम, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। हउं बरदे तेरे ग़ुलाम, सेवक धुर दे नज़री आईआ। साची मंज़ल दस्स आसान, औखी घाटी ना कोए चढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा राम, रमईआ हो के मेल मिलाईआ। तेरे चरण कँवल इक्क प्रणाम, बन्दगी विच सीस झुकाईआ। हउं बालक नढ्ढे नादान, बाली बुध रहे कुरलाईआ। तूं आदि जुगादी देवणहारा दान, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। सच संदेसा नर नरेशा दे फ़रमान, फुरनयां विच्चों सुरती बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड वाहगे ज़िला हुश्यािर पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर तेरे अग्गे करन अरदास, जन भगत रहे जणाईआ। सन्त सुहेले तक्कण तेरी आस, राह अगम्मड़ा

दे वखाईआ। तूं साहिब स्वामी हो के वसणा पास, अन्तरजामी परदा देणा उठाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया करनी घात, घर आपणा देणा जणाईआ। जित्थे वज्जे अगम्मी नाद, धुन नाद शनवाईआ। सो लहिणा देणा मुकाउणा कूड़ी क्रिया जगत रिवाज, समाज अगला देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दवारयों झोली देणी भराईआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ राजा राम दे गृह लाजपत नगर, दिल्ली ★

जन भगत कहिण सच भण्डारा कर भरपूर, ऊणता रहिण कोए ना पाईआ। तूं मालक साहिब हज़ूर, शहिनशाह अख्वाईआ। साडे बख्श सर्ब कुसूर, मन ग़रूर दे तुड़ाईआ। जुग जन्म दे तेरे मज़दूर, नाम अगम्मी सेव कमाईआ। कलयुग ममता रहे कोई ना कूड़, जूठ झूठ देणा मिटाईआ। साची बख्श के चरण धूढ़, दुरमति मैल देणी धवाईआ। लेखे मुकाउणे मूर्ख मूढ़, मुग्ध लैणे समझाईआ। आसा मनसा करनी पूर, पूरन ब्रह्म देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचा देणा समझाईआ।

५८२
२०

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ जगत सिँघ दे गृह पिण्ड चमनाउुं, पौड़ी गढ़्वाल ★

जन भगत कहिण पुरख अकाल बख्श दे दात, दयावान दया कमाईआ। अन्त अख़ीरी पुच्छ वात, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बिना रसना तों अंदर बख्श आपणी गाथ, अठे पहर वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण साडी लेखे ला सुरती, कलयुग सुत्तयां आप जगाईआ। तेरी खेल वेखीए धुर दी, सचखण्ड निवासी देणी वखाईआ। मेहर होवे पूरे सतिगुर दी, साहिब स्वामी दया कमाईआ। मुहब्बत रहे ना कोई कूड़ दी, जूठ झूठ डेरा देणा ढाहीआ। आसा मनसा पूरी होवे बख्शिश करनी चरण धूढ़ दी, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। बुध बिबेक करनी गुरमुख मुग्ध मूढ़ दी, मूर्ख रहिण कोए ना पाईआ। बेड़ी पतण पार कराउणी जन भगतां दे पूर दी, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। असीं खेल वेखणी हाज़र हज़ूर दी, हरि करते देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सफ़ा अन्त उठाउणी कलयुग मलेछ कूड़ दी, कुटम्ब मोह रहिण ना पाईआ।

★ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ अवतार सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर नगर ★

जन भगत कहिण प्रभ पूरी कर मनसा, मानस मानुख जन्म आपणे लेखे पाईआ। सोहँ साची धार रूप बणा हँसा, हस्ती विच्चों हस्ती दे बदलाईआ। परमात्म आत्म तेरा नूर नूरानी अंसा, जोती जाते पुरख बिधाते कर रुशनाईआ। तूं ठाकर स्वामी धुर दा निरगुण धार कन्ता, कन्त कन्तूहल सच असूल आपणा दे समझाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया गढ़ रहे ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म परदा ओहला देणा चुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा लहिणा देणा भगत सुहेले जन का, जन्म मरन दा लेखा दे मुकाईआ। लेखा वेख काया माटी साढे तिन्न हथ्थ तन का, त्रैगण अतीता ठांडा सीता अग्नी तत देणी बुझाईआ। कर प्रकाश अगम्मी चन्न का, रवि ससि सूर्या चन्न लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा रहे ना जगत वासना छप्पर छन्न का, महल अटल उच्च मनार सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्को देणा वखाईआ। लेखा रहे ना चिन्ता सोग हरख ग़म का, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विकार अंदरों देणा कढाहीआ। इक्को नाम जैकारा शब्दी धारा दे धन्न धन्न धन्न का, धर्म दुआर धुर दरबार इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत सुहेले दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण ठाकर स्वामी धुर दे मीत, जागरत जोत बिन वरन गोत रुशनाईआ। तेरा नाम कलमा धुर दा सुणीए इक्क हदीस, हज़रतां दे हज़रत पैगम्बरां दे पैगम्बर इक्को दस्स हक पढ़ाईआ। आसा मनसा जुग चौकड़ी पूरी कर उम्मीद, आमद विच तेरे गृह वज्जे वधाईआ। तेरा जलवा नूर नूराना तक्कीए बिना अक्ख दीद, निज नेत्र लोचण इक्को देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सिफ्तां विच तेरी रख के गए उडीक, भविख्तां विच आपणा ध्यान लगाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग अन्धेरा मेट तारीक, चार वरन अठारां बरन इक्को रंग दे रंगाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सोहला ढोला तेरा नाउं निरँकारा गावे गीत, गीत गोबिन्द गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक सच तोफ़ीक विच देणा समझाईआ। झगड़ा मुक्के जगत वासना काया मन्दिर मसीत, काया काअबा हक दोआबा आबे हयात जाम प्याईआ। एकँकार निरगुण धार आत्म परमात्म सज्जण सच प्रीत, प्रीतम हो के प्रेमी प्रेमिका आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत सुहेले दर ठांडे सीस निवाईआ। जन भगत कहिण प्रभ बख्श दे नाम अमुल्ला रस, रस्ता इक्को नजरी आईआ। जगत वासना मनुआ होवे वस, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसें प्रतख, निरगुण जोत डगमगाईआ। तेरे नाम दा वज्जे नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख मीत मुरारे ठांडे दरबारे लैणे सद्द, सद्दा इक्को नाम संदेसा हुक्म जणाईआ। पूरब लहिणा

देणा चुकाउणा सदी चौधवीं लोकमात जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तूं मेहरवान महबूब मुहब्बत विच खेल करें सूरा सरबग, बेअन्त कन्त भगवन्त तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नूर नूराना शाह सुल्ताना तक्कीए उपर शाह रग, धुर दरबारे एकँकारे आपणा परदा देणा उठाईआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ, हड्ड नाड़ी नाड़ी निरगुण नूर कर रुशनाईआ। हउं सेवक बालक ख़ालक प्रितपालक तेरी दिसदे यद, यथार्थ पदार्थ नाम धुर दा झोली देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत सुहेला रहे ना कोए अलग्ग, आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता आपणे घर जुड़ाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वस्त अमोलक पा के झोली, झलक आपणी दे वखाईआ। हउं सेवक आत्म तेरी गोली, आदि जुगादी नित नवित तेरा राह तकाईआ। धन्न भाग कलयुग अन्तिम दस्सी आपणी बोली, तूं मेरा मैं तेरा परदा ओहला देणा चुकाईआ। चरणगत सरनाई सरनगति घोल घोली, आप आपा वार वखाईआ। काया भाग लगा दे चीथड़ चोली, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। तेरी धार प्यार मुहब्बत विच आत्म परमात्म मौली, मौला हो के मेल मिलाउणा सहिज सभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान, भगत सुहेले तेरा राह तकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर किरपा निधान, किरपन हो के सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आयों विधान, हुक्में अंदर हुक्म समझाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया वेख शैतान, शरअ शरीअत विच दए दुहाईआ। शिंशटी दी दृष्टी इष्टी इष्ट देव सके ना कोए पहचान, महबूब मिल के तन वजूद करे ना कोए सफ़ाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा जाणें दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश पाताल गगन गगनंतर जिमीं असमान खोज खुजाईआ। धुर संदेसा एका एका वार दे दे नौजवान, मर्द मर्दान हुक्मे अंदर आपणा हुक्म लोकमात दे बदलाईआ। भगत सुहेले सन्त सज्जण गुरमुख गुरसिख सूफ़ी फ़कीर बेनज़ीर दर तेरे मंगदे दान, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त अख़ीर होणा मेहरवान, निगाहबान हो के आपणा रंग रंगाईआ।

★ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ किरपा सिँघ दे गृह कानपुर ★

पुरख अकाल कहे जन भगतां आदि जुगादि देवां नाम सन्तोख, सति धर्म विच समाईआ। चिन्ता मिटा के हरख सोग, ग़मी विचों ग़मख़ार लवां बणाईआ। प्रेम प्रीती दे के आत्म परमात्म जोग, जुगती जगत जहानां बाहर दृढ़ाईआ। हउमे हंगता

कट के रोग, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। सच दवारे कर संजोग, सोई सुरती शब्द मिलाईआ। ठांडे दर बख्श के मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। भाग लगा के काया माटी साचे कोट, कूड़ कुटम्ब दयां गंवाईआ। तृष्ना तृखा ना रहे खोट, सोच समझ दा डेरा ढाहीआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां सच दसा के धीरज धर्म, दयावान दया कमाईआ। लेखा मुका के कांड कर्म, क्रिया धुर दी इक्क वखाईआ। लेखे ला के मानस जन्म, झगड़ा अगला दयां मुकाईआ। सच प्रीती तोड़ निभा के प्रन, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। इक्क सरनाई बख्शे एकँकारा चरण, चरणोदक धुर दा जाम प्याईआ। सो सन्त सुहेले हकीकी मंज़ल चढ़न, जगत दवारे पार कराईआ। बिन वरन गोत दर्शन करन, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां अन्तर बख्शां एका रंग, रंगत धुर दी आप चढ़ाईआ। नाम निधान वजा मृदंग, मुरदे मुरीद विच समाईआ। मुर्शद हो के लावां अंग, अंगीकार इक्क अख्वाईआ। सन्त सुहेला बणा धुर दा फ़र्ज़ंद, फ़रमांबरदार फ़रमाने विच कराईआ। निज आत्म दे के सच अनन्द, तृष्ना कूड़ी भुक्ख मिटाईआ। झगड़ा मुका के जीउ पिण्ड ब्रह्मण्ड, घर ठांडा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे दर देवे वड्याईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां चिन्ता ग़म ना रहे सोग, हरख नज़र कोए ना आईआ। भेव मुका के लोक परलोक, ओहला अंदरों दयां चुकाईआ। सति सतिवादी दस्स सलोक, सोहला इक्को इक्क सुणाईआ। मुक्ती तों परे दे के मौज, मौजूदा हो के वेख वखाईआ। जन भगतां करनी पए ना खोज, खोजत खोजत आपणे रंग रंगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित परम पुरख परमात्म आत्म करदा रहे चोज, निराली आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क सुहाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां कट के माया ममता, हम साजण लवां बणाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगता, निवण सु अक्खर करां पढ़ाईआ। अंगीकार कर के आपणे अंग दा, अंगण आपणे लवां टिकाईआ। भण्डारा दे के अगम्मी अनन्द दा, निजानंद करां रसाईआ। प्रकाश दे अगम्मी चन्द दा, सीतल धारा इक्क समझाईआ। भेव खुल्हा के बन्दगी विच्चों बन्द बन्द दा, बन्दना इक्को दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक अमिउँ रस आपणा इक्क चुआईआ। पुरख अकाल कहे जन भगत तृष्ना पूरी करां तृप्त, त्रैगुण अतीता दए वड्याईआ। सच स्वामी बण के इष्ट, इष्ट आत्मा इक्क

५८६
२०

समझाईआ। तत वजूद खेल सृष्टी गृहस्त, काया माटी वज्जे वधाईआ। मेहरवान हो के मुहब्बत विच खोल्हां दृष्ट, दीद ईद करां रुशनाईआ। शब्दी धार लेखा लिख्त, वशिष्ट राम गुण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां निरंतर दस्सां राम, रहमत आपणी इक्क कमाईआ। घर दा बण के घनईया शाम, शाम सुंदर सोभा पाईआ। पैगम्बर बण अमाम, धुर दा अमल दयां दृढ़ाईआ। कलमा दे कलाम, नग़मा इक्क सुणाईआ। भाग लगा के काया बंक मकान, मकबरयां विच्चों बाहर कढाहीआ। प्रेम प्रीती अंदर करना सच इंतजाम, जुग चौकड़ी गुर गुर धार दे के नाम, नमस्ते विच्चों नमो दयां प्रगटाईआ। मंज़ल दस्स आसान, असल वसल यार कराईआ। कुदरत दा कर दाम, दामन हो के गंढु पवाईआ। हुक्म संदेसा नर नरेशा दे ब्यान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत वड्याई देवे माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां अन्तर आत्म करां ठंडा, मेघ धुर दा इक्क बरसाईआ। लख चुरासी अन्तिम पार कर के कन्ढा, कन्ढी बैठी बैठा सब नूं पार कराईआ। दीन दयाल बण बख़्शंदा, बख़्शिश रहमत आपणी इक्क वरताईआ। आदि अन्त मध नित नवित देंदा आया छन्दा, सोहँ ढोला बण विचोला इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण धार एकँकार इक्को इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे भगतां दे के धीरज जत, यथार्थ आपणा भेव खुल्हाईआ। बिना विद्या दे के ब्रह्म मत, बिना अक्खरां अक्खर दयां पढ़ाईआ। नाम चढ़ा के आपणे रथ, रथवाही हो के सेव कमाईआ। प्रेम प्रीती अंदर दस्स के जस, वेद पुराणां खहिड़ा दयां चुकाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, सृष्टी दृष्टी देवां बदलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब कुछ मेरे हत्थ, करन करावणहार करता कुदरत दा मालक नज़री आईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, रखक हो के रछक हो के रक्ख्या करां थाँईं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी सति दवारा इक्को इक्क वखाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां अंदर दे के धीरज धीर, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। रविदासा वेख के पाटड़ चीर, अंदर निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच नाम दी खिच्च लकीर, राह इक्को इक्क वखाईआ। जिस गृह बदल जाए तकदीर, तकब्बर दए चुकाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, इक्को रंग रंगाईआ। नज़री आए बेनज़ीर, निगाह नज़र दए बदलाईआ। लेखे ला के दर मांगत फ़कीर, फ़िकरा आपणा इक्क सुणाईआ। जन भगतां अंदर बदलण ना देवे ज़मीर, गम्भीर हो के गहर गवर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि अन्त अख़ीर, आख़र आपणी कार आपणे विच समाईआ।

★ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरदित सिँघ दे गृह कानपुर ★

जन भगत कहिण प्रभ इक्को भुक्ख प्यास, बेआस दए गवाहीआ। धुर सुहेले वसणा सदा पास, इक्क इकल्ले आपणी दया कमाईआ। चरण प्रीती पूंजी बख़्शणी रास, रस्ता मार्ग आपणा देणा दरसाईआ। लेखे लाउणा पवण स्वास, साह साह तेरी याद नज़री आईआ। तूं दाता दानी सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। अगम्म अथाह अलखणा अलाख, बेअन्त बेपरवाह शहिनशाहीआ। चरण प्रीती जोड़ना धुर दा नात, निधान आपणे रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म तेरी ज़ात, दूजा वेस ना कोए वटाईआ। सो सिमरन दस्सणा जो तेरी अगम्मी गाथ, जिस नूं बदले ना कोए लोकाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी करे ना कोई घात, कातिल मक्तूल ना रूप वटाईआ। सदा बणया रहे विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। रूह बुत्त दोवें करे पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। गृह मन्दिर अंदर खोल्हे ताक, परदा तन वजूद चुकाईआ। तेरा दरस होवे साख्यात, सखियां दा रूप लैणा अपणाईआ। महल अटल वेखीए महिराब, महबूब मिल के वज्जे वधाईआ। समरथ स्वामी पढ़नी पए ना कोए किताब, कुतबख़ान्यां दा लेखा देणा चुकाईआ। कोई वजाउणी ना पए रबाब, तन्द सितार आपणी देणी हिलाईआ। कोई वेखणा ना पए हिस्सा बाब, नाम निधान श्री भगवान देणा समझाईआ। अग्गे मंगे ना कोए जवाब, सिर आपणा हथ्थ देणा टिकाईआ। चुरासी विच आउणा ना पए जन्म तों बाद, आबाद खेड़ा देणा कराईआ। साचा रस अगम्मी देणा स्वाद, अनरस आपणा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर ठांडे आस रखाईआ। जन भगत कहिण वस्त दे अलाह बी ख़ैर, मिहबान बीदो तेरी इक्क सरनाईआ। निरगुण धार बख़्शिश विच कर मेहर, मुहब्बत दे महबूब आपणा रंग रंगाईआ। तेरे दवारे दी दो जहानां तों परे होवे सैर, दर दरवाज़ा देणा खुल्हाईआ। जगत वासना संग रहे ना कोए ऐर ग़ैर, कूड़ी क्रिया डेरा देणा ढाहीआ। तेरे प्रेम प्यार दी उपजे इक्को लहर, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना कोई ग़ैर, विकार हँकार देणा खपाईआ। खुशी बख़्शणी अठ्ठे पहर, घड़ी पल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दी आसा मनसा पूर कराईआ। जन भगत कहिण प्रेम प्रीती दे वथ, वास्तक इक्को मंग मंगाईआ। तेरा नाम सुणीए अकथ, कथनी

कथा करन दी लोड़ रहे ना राईआ। निराला आहला आलम तों बाहर दस्स रस, रस्ता वाबस्ता हो के आपणा दे समझाईआ। हकीकत विच्चों हुक्म नाल दे हक, मेहरवान हो के मेहर निगाह उठाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण तेरा राह रहे तक्क, प्रतख रूप मिल गहर गम्भीर गोसाईंआ। तेरा नूर ज़हूर नज़री आए सच, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भाग लग्गे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सच महल्ले चढ़ देणा सुहाईआ। मनुआ चार कुण्ट दहि दिशा जगत वासना मूल ना पए नच्च, नटुआ स्वांगी आपणा स्वांग ना कोए वरताईआ। करनी दे करते कुदरत दे मालक सब कुछ तेरे हथ्थ, देवणहार दे दे खुशी बणाईआ। जन भगत कहिण किरपा कर पुरख समरथ, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी गृह मन्दिर अंदर परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत सुहेला तेरा दासन दास, सेवक हो के आपणी सेव कमाईआ। जन भगत कहिण देंदयां आवे कोई ना तोट, अतुट भण्डार दे वरताईआ। तेरे नाम दी लग्गे चोट, सोई सुरती दे उठाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना अंदर वासना खोट, मन का मणका दे भवाईआ। तेरा इक्को नाम जैकारा बिन सरवणां सुणयां जाए सलोक, सोहला ढोला इक्को नाद कर शनवाईआ। बिन नेत्र लोचण नैण तेरा जलवा तक्कीए जोत, प्रकाश नाल प्रकाश देणा वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी रखदे आए ओट कोटी कोट, जगत विकार डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जगत विछोड़ा मेटणी सोच, समझ रमज़ नाल बदलाईआ। जन भगत कहिण साची वस्त अमोलक दे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। असीं कोई मंगदे नहीं वड्याई वाली करामात, करमां दा लेखा देणा मुकाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर प्रेम प्यार दी रहे प्रभात, संध्या रूप नजर कोए ना आईआ। सोई सुरती शब्दी धार पए जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया अग्नी तत जलाए ना कोई आग, माया ममता डेरा देणा ढाहीआ। अन्तर अन्तर तेरा उपजे इक्क वैराग, वैरी दूत दुष्ट काया मन्दिर अंदर बाहर कढाहीआ। दीन दुनी होवे त्याग, सच सरनाई जाईए लाग, लागत बिन स्वागत करना चाँई चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगत बणन तेरा समाज, समें दे याचक हो के मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण आपणी दे दे प्रेम प्यार दी झलक, झल्ली दिसे जगत लोकाईआ। परदा लाह उपर फ़लक, नूर नुराना कर रुशनाईआ। तेरा लेखा वेखीए विच ख़लक, ख़ालक मख़लूक खोज खुजाईआ। विछोड़ा होवे ना घड़ी पलक, पलकां दे पिच्छे बहि के आपणा नूर कर रुशनाईआ। खेल वखा फर्श अर्श, अर्शी प्रीतम आपणी दया कमाईआ। जन भगतां जन्म मरन दी रहे कोई ना हरस, हवस अगली देणी मिटाईआ।

रहमत विच रहमान आ के कर तरस, पुरख अकाल दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म दोहां इक्को जेही सांझी ग़रज़, ग़रज़वंद दोवें नज़री आईआ। जन भगतां भगवन्त हो के मन्न अरज़, आरज़ू अरदास बेनन्ती तेरे अग्गे सुणाईआ। सन्त उधारना तेरा फ़र्ज़, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं खेल वेख असचरज, चार कुण्ट दहि दिशा नव नौ चार रिहा कुरलाईआ। दीनां अनाथां वण्डे कोई ना दर्द, दुखियां दु:ख ना कोए मिटाईआ। योद्धा सूर मर्दाना बण मर्द, बीर रस आपणा दे चखाईआ। छुरी शरअ हलाल करे किसे ना करद, कत्लगाह दा लेखा देणा मुकाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार आपणी बिन अक्खरां वाली वेख फ़रद, बिन हरफ़ हरूफ़ दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरवैर हो के वेख परत, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म ब्रह्म मेला गुरमुख धार लैणा मिलाईआ।

★ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिँघ दे गृह लाल बंगला कानपुर ★

जन भगत कहिण दीन दयाल पुरख समर्थे, साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी ओट तकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव नौ चार फिर फिर थक्के, सरगुण निरगुण तेरे बणे पाँधी राहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार होए हके बक्के, हकीकत हक ना कोए दृढ़ाईआ। सच निशाना श्री भगवाना एकँकार तेरा कोई ना दस्से, दहि दिशा दीन दुनी हल्काईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठे, गुरदुआर गुर गुर नूर ना कोए रुशनाईआ। फिरी दरोही गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे, अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती मुख ना कोए चुआईआ। मणका मणका मन वासना जगत साधू तेरा नाम रहे रटे, रतन अमोलक काया गोलक हथ्थ किसे ना आईआ। मानस जन्म मानुख जाती मिलदा जाए घट्टे, करनी दे करते कीमत अन्त कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तुध बिन पैज कोई ना रखे, सिर हथ्थ समरथ चार कुण्ट ना कोए टिकाईआ। हउँ बालक सेवक सरन सरनाई इक्को तेरी ढठ्ठे, सिर सर तेरी भेंट चढ़ाईआ। आदि निरँजण जोत प्रकाशे कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार मेट रट्टे, नाम निधाना मर्द मर्दाना नौजवाना इक्को दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार दर तेरे अलख जगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ देवणहारे धुर दे स्वामी, सवाली हो के अलख जगाईआ। लख चुरासी जीव जंत अन्तरजामी, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी आपणा हाल दस्से बेज़बानी,

५८६
२०

ऊँची कूक कूक सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया प्रधान होई माया ममता राणी, हँकार विकार घर घर आपणा डंक वजाईआ। सति धर्म दिसे ना कोए निशानी, निशाना सृष्टी दृष्टी अंदर आपणा गई भुलाईआ। सिँघ सवार हौका लए अष्टभुज भवानी, शस्त्र वस्त्र आपणे आप वखाईआ। किरपा कर शहिनशाह शाह पातशाह धुर सुल्तानी, सुल्हकुल मेहर नज़र उठाईआ। साधां सन्तां अंदर मंज़ल रही ना कोई रुहानी, रूह बुत्त पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द मन वासना सारे पढ़दे बाणी, बाण अणयाला तीर बजर कपाटी पार ना कोए कराईआ। झगड़ा वेख्या चारे खाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दीन दुनी दी वेख अन्तर धार बुद्धि, बिबेक नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई होई दुखी, वरन बरन रहे कुरलाईआ। आसा तृष्ना विच भुक्खी, तृप्त कर ना कोए समझाईआ। भाग लग्गे ना किसे कुक्खी, भगत जन्मे कोए ना माईआ। मन विकारा कूड़ा जाम पींदे घुट्टीं, अनरस हथ्थ किसे ना आईआ। समरथ स्वामी तेरे कोलों कोई धार नहीं गुज्झी, परदा ओहला ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाले दीन दयाले मेहरवान महबूब आपणा फेरा पाईआ। जन भगत कहिण प्रभ आपणे नाम दा दे इक्क इशांरा, ऐशो इशर्त कूड़ा दे मिटाईआ। कलयुग अन्त अखीर दिसे किनारा, नईआ नौका डोले थाउँ थाँईंआ। खेवट खेटा बण परवरदिगारा, बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ। साचा मार्ग दीन दुनी दस्स अपारा, अपरम्पर स्वामी हो के दे समझाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा गावण इक्क जैकारा, जैकारे अंदर तेरी धार नज़री आईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो लहिणा देणा वेख सर्ब संसारा, सृष्टी दृष्टी अंदर परदा लाहीआ। भगत वछल तेरा नाउँ गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर आपणी दया कमाईआ। जन भगत सुहेला इक्क इकेला दर ठांडे तेरे करे निमस्कारा, नमों नमों जगदीश सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। जन भगत कहिण प्रभ आ के वेख दीन दुनी लोकमात, मातर भूमी दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई बुद्धी होई काग, हँस रूप ना कोए वखाईआ। निज नेत्र खुल्ही किसे ना जाग, आलस निंद्रा परदा ना कोए उठाईआ। धुर दा नज़र आए ना कोई साध, जो संदेसा तेरा नाम सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वध्या विवाद, विख अमृत रूप ना कोए बणाईआ। पवित्र रिहा ना कोई समाज, अगम्म शब्द सुणे ना कोए नाद, बोध अगाध करे ना कोए पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया बदल दे राज, इक्को सीस जगदीस तेरे सोहे ताज, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म देणा वरताईआ। जन भगतां रख लाज, कूड़ी क्रिया

बेड़ा डोब जहाज़, शौह दरया धक्का देणा लगाईआ। सति धर्म धरनी धरत धवल चला रिवाज, आत्म परमात्म होवे काज, सुरती शब्द पवे रास, गोपी काहन आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर दो जहान श्री भगवान तेरी मंगण इमदाद, गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सब बैठे सीस निवाईआ।

★ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी मायो अमीं शाह खालड़ा ★

जन भगतां पोह ना सके त्रैगुण माया, ममता मोह विकार रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल होए सहाया, समरथ स्वामी अन्तरजामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण कँवल कँवल चरण उपर धरती धवल दए सरनाया, सरनगति इक्को इक्क वखाईआ। काया मन्दिर अंदर दए सुहाया, सोभावन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। शब्दी दामन पल्लू लए फड़ाया, आत्म परमात्म आपणी गंढु पवाईआ। आवण जावण लख चुरासी फंद दए कटाया, राए धर्म दए ना कोए सज़ाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार एका मन्दिर दए वखाया, जिस गृह मन्दिर अंदर वसे बेपरवाहीआ। आदि अन्त सगला संग आपणे नाल रखाया, नाता तोड़ कूड़ा दीन दुनी जगत जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। जन भगतां नेड़ ना आवे ममता मोह कूड़, जगत विकारे विच्चों बाहर कढाहीआ। चरण प्रीती बख्श साची धूढ़, मस्तक टिक्का नाम ख़ाक रमाईआ। काया चोली चाढ़े आपणा अगम्मा रंग गूढ़, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कोट जन्म दे मुआफ़ करे कुसूर, पतित पुनीत दए कराईआ। आत्म जोती बख्शे साचा नूर, अन्ध अन्धेरा अंदरों बाहर कढाहीआ। नाम खुमारी निजर झिरना अमृत रस देवे सच सरूर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल वखाईआ। जन भगत सुहेला रहिण ना देवे कोई दूर, दूर दुराडा नेरन नेरा दर घर ठांडे जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता ठांडा सीता आपणा घर वखाईआ। जन भगतां वक्खरा रूप ना जाणे कोए नर नारी, नर नरायण आपणे रंग रंगाईआ। एका आत्म जोत आदि पुरख निरँकारी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी नित नवित वेखे विगसे धुर दरबारी, हरि करता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान महबूब ग़रीबां निमाणयां कोझयां कमलयां जाए तारी, तारनहार समरथ शब्द सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जन्म कर्म दा रहे ना कोए गुनाहगारी, जो चरण सरन करे निमस्कारी, कोट जन्म दी दुरमति मैल दए

धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर इक्को इक्क वखाईआ। जन भगतां दुरमति मैल देवे कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। सच दुआर वखा के हट्ट, नाम वणजारे लए कराईआ। निजर धारा अमृत दे के रस, रस्ता आपणा दए वखाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच खोल् के अक्ख, प्रतख रूप मिले गोसाईंआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादी सोहँ ढोला दस्स, दहि दिशा तों वक्खरा मार्ग दए जणाईआ। मन वासना शब्दी धार करे वस्स, वसल देवे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगतन मीता इक्को इक्क एकँकारा नज़री आईआ। जन भगत उधारे बिरध बाल, जोबनवन्ता आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक इक्को घर वसाईआ। नाम भण्डारा दे के धुर दा माल, अनमुलड़ी दौलत आप वरताईआ। गुरमुखां पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां परम पुरख पतिपरमेश्वर वसे नाल, दिवस रैण सगला संग बणाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को दस्स के सच्ची धर्मसाल, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर जन भगतां चरणां हेठ दबाईआ। त्रैगुण माया जगत रीती रहे ना कोए जंजाल, मन्दिर मसीती लेखा दए मुकाईआ। घर ठाकर स्वामी मालक मिले आण, ख़ालक प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। जो जन्म जन्म पूरब घालणा आए घाल, तिन्हां कर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं बण प्रितपाल, दीन दयाल हो के वेख वखाईआ।

★ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सतवन्त कौर दे गृह कानपुर ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो जन भगतां देवां अगम्मी दान, दाता हो के आप वरताईआ। बिना अक्खरां तों दे के शब्द ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दयां मिटाईआ। बिना जगत नेत्रां तों बख्शां नूर महान, जोती जोत डगमगाईआ। बिन रसना तों अमृत रस देवां पीण खाण, निजर झिरना इक्क झिराईआ। बिन निशान्यौं धर्म निशाना वखावां झुलदा दिसे दो जहान, सृष्टी तों परे दृष्टी तों बाहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगत सुहेले करां ठंडे ठार, अग्नी तत बुझाईआ। लहिणा देणा चुका के पूरबले जुग चार, निहकर्मी हो के आपणा कर्म कमाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, दीन दुनी विच्चों खोज खुजाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। मुर्शद हो के मुरीदां पुछे हाल, अहिवाल पिछला दए गवाहीआ।

५६२
२०

सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा सब दे सिर ते कूके काल, कूड़ नग़ारा रिहा वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारे करन सर्ब सवाल, सवाली हो के आपणा हाल सुणाईआ। लेखा जाणे सचखण्ड निवासी पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साडी आदि अनादी मंग, ब्रह्माद खोज खुजाईआ। तूं दाता दानी देवणहार सूरा सरबंग, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर कलयुग कूड़ी क्रिया कर भंग, भगवन हो के आपणी अक्ख उठाईआ। तेरा नाम शब्द अगम्म अथाह बेपरवाह वेखीए तरंग, तुरीआ तों परे तुरत आपणा हुक्म दे सुणाईआ। दो जहान शब्द दमामा वज्जे मृदंग, ब्रह्मण्डां खण्डां आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले वेख आपणे चन्द, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगत सुहेले वेखां लोकमात जग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले हँस बणावां कग, माणक मोती सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया पार कर के हद्द, महबूब हो के मुहब्बत विच मिलाईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान हो के वजावां नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार हो के गुरमुख गुर गुर चेले लवां सद्द, धुर संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क जणाईआ। भगत सुहेला इक्क इकेला जीव जगत रहे ना कोए अल्पग, कूड़ी क्रिया कुकर्म कर्म चर्म विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी आपणा खेल वखाईआ। जन भगत कहिण तेरा खेल अनोखा पुरख अकाल लैणा तक्क, तकदीर देणी बदलाईआ। चार जुग दा गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा देणा झोली पाउणा हक, हकीकत विच्चों लाशरीक आपणा परदा देणा उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंज़ल मंज़ल सारे गए थक्क, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। किरपा कर मेहरवान श्री भगवान पुरख समरथ, महिमा अकथ इक्क समझाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी अंदर तेरे नाम दा इक्को होवे जस, सिफ्तां विच तेरा ढोला गाईआ। तेरा मानव तैथों रहे कोई ना वक्ख, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा रस, रसीआ हो के अंमिउँ आपणा देणा बरखाईआ। पुरख अकाल कहे मैं देवां नाम अगम्म अथाह, कातब लिखण कोए ना पाईआ। जिस नाल दीन दुनी दा बदल जाए राह, रहिबर हो के वेख वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर दीन दुनी दा बणां मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सतिजुग साचा मार्ग ला के नवां, नव सत्त करां रुशनाईआ। जन भगतां दी आत्म सेजे निरगुण धार हो के सवां, सार शब्द आपणा

हुक्म वरताईआ। पवण स्वास जन भगतां लेखे लावां दमां, दामन हो के ज़ामन हो के आपणी गंढु पवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहानां ढोला कहवां, लख चुरासी दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे एका माण, अभिमान कूड़ा अंदरों बाहर कढाहीआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरबख्श सिँघ दे गृह महू ज़िला लखनऊ ★

धरनी धरत धवल धौल कहे मेरे वड वड भाग, वडभागी पाया बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारयों आओ भाज, निरगुण नूर निरवैर हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर छड्ड के आओ समाज, दो जहानां आपणा पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पुरख अकाल दा वेखो समाज, साची धार इक्क दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सुणो अगम्मी आ के नाद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एकँकारा इक्क वजाईआ। ज़िमीं असमान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल खोल्ह्हो जाग, जागरत जोत बिन वरन गोत इक्क इकल्ला रिहा वखाईआ। पंज तत त्रैगुण आपणी बुझा के आउणा आग, अमृत मेघ बेपरवाह आपणी धार रिहा वखाईआ। भगत सन्त सूफ़ी फ़कीर वेखो आ के धुर दा कन्त सुहाग, शाह पातशाह शहिनशाह परवरदिगार सांझा यार जल्वागर नूर खुदाईआ। जिस ने खेल खेलया अगम्म अथाह बेपरवाह आदि, जुग चौकड़ी ब्रह्म ब्रह्माद आपणी धार चलाईआ। शब्द अगम्मी बोध अगाध सुणावणहारा अनरागी राग, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द सोहले ढोले धुर दे आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। धरनी धरत धवल धौल कहे मेरी पुरख अकाल खोल्ह्ही अक्ख, बिन नेत्र नैण दिता खुल्ह्हाईआ। मैं अन्तर धारा बोलां सच्च, सुनेहड़ा देवां धुरदरगाहीआ। जिस नूं जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार गुर अवतार पैगम्बर गए सद्द, नाम संदेसा दे के दो जहानां ध्यान लगाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक करे खेल सूरा सरबग, शाह सुल्ताना निगाहबाना आपणा भेव खुल्ह्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। धरनी कहे गुर अवतार पैगम्बरो क्यों सोही मेरी धरत, धर्म दवारा नज़री आईआ। कुछ राम वशिष्ट पाई शर्त, शरअ समझ किसे ना आईआ। सप्त ऋषी कर के एथे दरस, आपणी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। ब्रह्मा नव दिन रिहा भटक, शंकर छे दिन अक्ख ना कोए उठाईआ। विष्नूं विश्व धार अमृत बरख, विशेष आपणा गुण

दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा रिहा समझाईआ। धरनी कहे मेरे अन्तर वेखो चाउ घनेरा, घनईया धुर दा दए वड्याईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठी रही कर के जेरा, चार जुग इक्क ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैनूं दे के गए सुनेहड़ा, शास्त्र सिमरत वेद पुराणां तों बाहर कर पढ़ाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं कलयुग अन्त अखीर होया अन्धेरा, चार वरन अठारां बरन निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। परम पुरख परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती जाता पुरख बिधाता मारे आपणा फेरा, अकल कलधारी आपणा वेस वटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मेरा धर्म दुआर खुल्हा करे वेहड़ा, कूड़ कुड़यार जगत विभचार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा आदि पुरख अबिनाशी करता दस्से नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणा परदा आप उठाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरा अन्तर होया खुशहाल, खुशी दो जहान नज़री आईआ। किरपा करी दीन दयाल, दयानिध वेख वखाईआ। जिस दी याद विच जुग चौकड़ी बीते काल, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे अग्गे करदे गए सवाल, भिक्खक हो के धुर दी मंग मंगाईआ। सो लेखा जाणे सच स्वामी आदि जुगादी मेरे दवारे सच्ची धर्मसाल, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा दए समझाईआ। धरनी कहे मैनूं आई याद, चार जुग दा लेख समझाईआ। राम वशिष्ट कीती फ़रयाद, अन्तर अन्तर इक्क सुणाईआ। जिस खेड़े नूं कर सक्या ना कोई आबाद, आबादी जगत ना कोए वधाईआ। गा सक्या कोई ना राग, छत्ती राग रहे कुरलाईआ। सुण सक्या ना कोई नाद, जगत ताल ना कोए वड्याईआ। समझा सक्या ना कोई समाज, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। सो खेल वेख्या तमाश, पुरख अकाल रिहा वखाईआ। जिस दा लेखा बोध अगाध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता धुरदरगाहीआ। वशिष्ट किहा सुण दसरथ बेटे राम, सच संदेसा दयां दृढ़ाईआ। तेरा रूप होणा घनईया शाम, साँवल सुंदर खेल खिलाईआ। वेस वटाउणा पैगम्बरां देणा पैग़ाम, ईसा मूसा रंग चढ़ाईआ। मुहम्मद देणा जाम, कलमा हक समझाईआ। नानक निरगुण देणा इक्को नाम, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। इक्क दस दा खेल महान, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। गोबिन्द सूरा नौजवान, सुत दुलारा इक्क प्रगटाईआ। जिस दा लहिणा देणा होणा विच जहान, दीन दुनी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता आप वड्याईआ। वशिष्ट किहा सुण राम दुलारे, अगला लेखा दयां दृढ़ाईआ। जिस

वेले लोकमात बीते जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। चार वरन अठारां बरन होणे दुख्यारे, धीरज धीर ना कोए धराईआ। माया ममता गढ़ बणना हँकारे, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। जूठ झूठ साध सन्त होणे वणजारे, हकीकत हक ना कोए वखाईआ। कागद कलम लेखा लिख सके ना कोए निरँकारे, भेव अभेद सके ना कोए खुल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी अन्त देवे ना कोए सहारे, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। राम किहा दस्स वशिष्ट, विषयां तों बाहर समझाईआ। की लेखा होणा सृष्ट, दीन दुनी परदा देणा लाहीआ। की पुरख अकाल दा होणा इष्ट, देव आत्मा देणा समझाईआ। केहड़ा लेखा भविख्त, भविख्त दा बिन अक्खरां देणा लिख्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, परदा ओहला देणा चुकाईआ। वशिष्ट किहा मेरा इक्क संदेश, संध्या तों बाहर दयां जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस धार बदलया भेस, वेस अनेक वटाईआ। ओसे दा अन्त अख़ीर जामा होणा दस दस्मेश, दहि दिशा करे शनवाईआ। चार वरनां देणी टेक, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बण के खेवट खेट, बेड़ा जगत जहान चलाईआ। पुरख अकाल दा बणना बेट, पिता इक्को इक्क मनाईआ। निरगुण धार करना हेत, तत्तां वाली जगत जुदाईआ। खेलणा खेल अगम्मे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जित्थे अक्खां वाला लए कोई ना वेख, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सो देवे सच संदेश, नाम निधाना इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। धरनी कहे जिस वेले राम वशिष्ट कीती बात, भूमिका एहो नज़री आईआ। ना दिवस ना रात, घड़ी पल समझ कोए ना पाईआ। ना कोई कलम शाही काग़ज़ लिखे गाथ, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई तीजा दिसे साथ, सगला संग ना कोए बणाईआ। एह खेल अगम्म अथाह पुरख अबिनाश, हरि करता आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। धरनी कहे मैं सुण के बात ल्या पुछ, राम वशिष्ट देणा जणाईआ। तुसां दोहां ने जाणा उठ, तन वजूद पन्ध मुकाईआ। मैनूं अगला भेव दस्सो कुछ, हो निमाणी सीस निवाईआ। दोहां ने मिल के सांझी पढ़ी तुक, सोहँ ढोला दिता गाईआ। धरनी तेरा पुरख अकाल मेटे दुःख, कलयुग वेला अन्तिम नज़री आईआ। जिस ने गोबिन्द सूरा बणाउणा आपणा सुत, सुत दुलारा इक्को लए प्रगटाईआ। एह खेल अबिनाशी अचुत, हरि करता आप कराईआ। सम्मत शहिनशाही सुहाऐ तेरी रुत्त, वार थित समझ किसे ना आईआ। राम वशिष्ट किहा धरनी हुण कर जा चुप्प, अग्गे बचन ना कोए बणाईआ। तेरा लेखा साडे

नालों जावे टुट्ट, टुट्टी गंढु पुरख अकाल नाल पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। धरनी कहे मैनूं होर दयो दिलासा, धीरज धीर इक्क बन्हाईआ। मैं वेखां खेल तमाशा, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। मेरी पूरी होवे आसा, मनसा मनसा विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। राम वशिष्ट किहा सुण दईए धीर, धर्म दुआर वखाईआ। कलयुग अन्त वेख अख़ीर, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले रिहा ना कोई पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चले ना कोए चतुराईआ। शरअ तोड़े ना कोए ज़ंजीर, चार कुण्ट हल्काईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा देवे बेनज़ीर, मेहर नज़र आपणी इक्क उठाईआ। बदल देवे तकदीर, तदबीर इक्क समझाईआ। तेरा कुछ लेखा लिख के जाणा कबीर, जुलाहा फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धरनी कहे मैनूं दस्सो इक्क कहाणी, कहावत जगत रहे ना राईआ। की खेले खेल शाह सुल्तानी, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। वशिष्ट किहा गोबिन्द दा गुरमुख तेरी इक्क निशानी, निशाना अगला इक्क समझाईआ। जिस दे अंदर बिरहों कानी, तीर अणयाला आप चलाईआ। ओन्हां दा मालक ख़ालक प्रितपालक बणे आप बानी, सहारा किनारा तेरा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। राम किहा मैं होर कुछ ल्या तक्क, लेखा अगला दयां समझाईआ। धरनी खेल करना पुरख समरथ, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गोबिन्द धार कर प्रगट, जोती जाता जलवा नूर करे रुशनाईआ। वस्त अमोलक दे के वथ, नाम भण्डारा इक्क भराईआ। भेव अभेदा खोल्ह के सच्च, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जैकारा बोल के इक्क अलख, अलख अगोचर आप समझाईआ। दीन दुनी तों खेल करना वक्ख, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पुरी अनन्द दे अंदर जाणा वस, वास्ता पुरख अकाल नाल जुड़ाईआ। अन्तिम सब कुछ जाणा छड्ड, ख़ाली हत्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क उपजाईआ। धरनी कहे कुछ होर अगला दस्स भेव, परदा रहे ना राईआ। तूं वड्डा देवी देव, देवत सुर तेरी सरनाईआ। मैं वेखां धाम निहचल निहकेव, अटल महल्ल मिले वड्याईआ। जिस नूं गा ना सके कोई रसना जिहव, कलम शाही बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर फ़रमान श्री भगवान इक्क इकल्ला एकंकरा अगम्म अपारा अलख अगोचर आपणा आप जणाईआ। राम कहे सुण धरती अगला दस्सां हाल, लिखण पढ़न विच कदे ना

आईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया होई काल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जगत हल्काईआ। सच दवारे रिहा किसे ना नाम, नाम निरँकारा नज़र किसे ना आईआ। पैगम्बरां सुणे ना कोई पैग़ाम, सुल्हकुल मेल ना कोए मिलाईआ। चार वरन अठारां बरन होए हराम, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कूड़ी क्रिया करना कत्लाम, कातिल मक्तूल सके ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस लए प्रगटाईआ। धरनी कहे किवें वेला होए सुहञ्जणा, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। किस बिध मिले दर्द दुख भय भंजना, वड्ड दाता बेपरवाहीआ। मेरे नेत्र पावे अगम्मी नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर स्वामी ठाकर वेखां सज्जणा, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। त्रेता द्वापर जिस दे हुक्मे अंदर लँघणा, कलयुग वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किस बिध आपणा खेल कराईआ। राम किहा मैनूं ऐउँ रिहा जाप, सच दयां सुणाईआ। पुरख अकाल करना प्रकाश, गोबिन्द जलवा नूर रुशनाईआ। भेव खोल्हणा काया माटी ख़ाक, पंज तत वज्जे वधाईआ। नज़री आउणा साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। रूह बुत्त करने पाक, पतित पुनीत बणाईआ। जन भगतां होणा दास, गुरमुखां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। धरनी कहे मैनूं आया नहीं यकीन, धीरज मेरी दे धराईआ। मैनूं दस्स उह तालीम, जिस नूं सिख के ख़ुशी मनाईआ। राम किहा तूं इक्को कर तसलीम, दूजे नज़र किसे ना आईआ। कदे ना होवे ग़मगीन, हरख सोग वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना नर ना मदीन, जोती जलवा नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। धरनी अग्गों फेर किहा बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी परदा खोल्ह, भेव रहे ना राईआ। किस बिध पुरख अकाल आवे उपर धौल, निरगुण हो के नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पंडत पांधा रौल, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। जिस दा गुर अवतर पैगम्बरां वजाउणा ढोल, संदेशे निरगुण सरगुण आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। राम किहा धरनी ज़रा कर ध्यान, अगला लेख दयां समझाईआ। की खेल करे श्री भगवान, गोबिन्द सूरा भेजे नौजवान, मर्द मर्दाना सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरी अनन्द किला बणाए महान, महिमा कथ कथ समझाईआ। गुरमुख सूरे नौजवान, सन्त सुहेले गोद टिकाईआ। अन्त संदेसा देवे आप मेहरवान, धुर दी धार जणाईआ। दीन दुनी दा कूड़ छड्ड निशान, निशाने पुरख अकाल बणाईआ। ममता मोह विकार रहे ना नाल, हँकार गढ़ दए तुड़ाईआ। इक्को ओट रख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। राम

किहा धरनी सुण होर बचन अमोल, अमुल दयां जणाईआ। जिस दा तोले कोई ना तोल, अतोल अतुल आपणे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द वजाउणा अगम्मी ढोल, डंका वज्जे धुरदरगाहीआ। सब दे पड़दे देणे खोल्, सोया कोई ना रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। राम कहे इक्क होर आई विचार, विचरण दी लोड़ रही ना राईआ। धरनी रो के करी निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। कुछ किरपा कर मेरे गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर परदा दे चुकाईआ। की खेल करे गोबिन्द प्रभ दा सुत दुलार, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। राम किहा एह हुक्म अगम्म अपार, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जिस ने छड्ड देणा संसार, नाता कूड़ देणा तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग इक्क रंगाईआ। धरनी किहा बचन इक्क दस्स अखीर, आखर मंग मंगाईआ। किस बिध आए मैनूं देवे धीर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे उह मालक गहर गम्भीर, बेनज़ीर बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी बदल सर्ब तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस ने खण्डा हथ्थ फड़ाउणा गोबिन्द इक्क शमशीर, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। एकँकार इक्को पा लकीर, शाह हकीर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा देणा तेरी झोली पाईआ। धरनी कहे मैनूं अज्जे नहीं आया सन्तोख, सति दे समझाईआ। किस बिध मेटे मेरा हरख सोग, चिन्ता ग़म गवाईआ। राम किहा एह प्रभ दा सब तों वक्खरा चोज, चोजी प्रीतम हो के दया कमाईआ। जिस दा खेल लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। तूं रखणी ओस दी ओट, अन्तिम ओड़क ओहो लेखे लाईआ। जिस दा होणा इक्क सलोक, सोहँ ढोला शहिनशाहीआ। तेरी करनी दा करता जाणे जोग, जो जोगीशरां तेरे दर बहाईआ। मेहरवान हो के जावे पहुंच, पारब्रह्म आपणा फेरा पाईआ। जिस दा भाणा हुक्म कोई ना सके रोक, गुर अवतार पैगम्बर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। राम कहे आह वेख लिख्या लेख, बिन अक्खरां दयां समझाईआ। निरगुण धार आवे तेरे देस, दिशा दसन्तर फोल फुलाईआ। लेखा बणावे गोबिन्द दस दस्मेश, आप आपणा परदा लाहीआ। जिस ने सुत दुलारे करने भेंट, बंस सरबंस लेखे पाईआ। नज़री आउणा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाईआ। धरनी कहे मैनूं अगला दे भरोसा, भरम रहे ना राईआ। राम किहा पुरख अकाल दे हथ्थ विच मौका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जिस दा लहिणा देणा लोक परलोका, ज़िमीं असमानां होए सहाईआ। मंज़ल चढ़ के वेखे अगम्मी कोठा, चोटी आपणी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र

इक्क उठाईआ। राम किहा गोबिन्द सूरा खेल खिलावेगा। पुरख अकाला दीन दयाला इष्ट मनावेगा। पुरी अनन्द सूरा सरबग इक्क वसावेगा। चाढ़ के जोती चन्द, अन्ध अन्धेर मिटावेगा। अन्तर आत्म परमात्म गा के छन्द, सोहँ नाद वजावेगा। जन भगतां चाढ़ अगम्मी रंग, दुरमति मैल आप धवावेगा। अन्त अख़ीरी छड्ड के संग, माता गुजरी बचन अलावेगा। जिन्हां दे नाल मेरी गई हंढ, ओन्हां दा लेखा पुरख अकाल बणावेगा। कोई ना पावे बन्दी बन्द, बन्दना इक्को इक्क समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठावेगा। मेहर नज़र हरि उठाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। पुरी अनन्द वक्त सुहाएगा। गोबिन्द सूरा खेल रचाएगा। माता गुजरी बचन सुणाएगा। दास दासीआं वण्ड वण्डाएगा। मण्डल रासीआं खोज खुजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताएगा। धरनी कहे राम उह किहड़ी होवे दासी, गोबिन्द दी मैनूं दे समझाईआ। किहड़ी चढ़े घाटी, मंज़ल वेखे बेपरवाहीआ। किस बिध मन्नी आखी, साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। राम किहा गोबिन्द दासी इक्क परिवार, सत्त अठ्ठ दा नज़री आईआ। चार गुजरी दे सेवादार, तिन्न चार गोबिन्द सेव कमाईआ। ओन्हां दी सुण पुकार, देवे माण वड्याईआ। जिन्हां नूं वेखण आउणा गुरू अवतार, पैगम्बर फेरा पाईआ। जिस वेले अनन्दपुरी तों होणे बाहर, सब ने तन जाणे तजाईआ। गोबिन्द ने खण्डे नाल मस्तक धूढ़ी लाउणी छार, मस्तक टिक्का आपणा नाम बणाईआ। ओदों धरती तूं करीं पुकार, खुल्ह्ड़ी मेंढी केस वखाईआ। कुछ लहिणा देणा दुर्गा दा उधार, अष्टभुज राह तकाईआ। एह खेल दस्सां अपार, अपरम्पर हो के आप जणाईआ। मंगी मंग चरण दवार, निमाणी हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप सुणाईआ। धरनी कहे उह केहो जेहा होवे वेला, राम मैनूं दे समझाईआ। वशिष्ट किहा जिस वेले नाता टुट्टण लग्गा गुरू चेला, चेला गुरू बैठण मुख भवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्को होवे सज्जण सुहेला, दूजा संग ना कोए रखाईआ। अबिनाशी करता खेले खेल हो नवेला, निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। राम कहे उह वेला आउणा जलदी, जुग बीतदयां वक्त ना लग्गे राईआ। चार कुण्ट अग्ग होणी बलदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। खेल वेखणी कलयुग कल दी, कलकाती राजे होण कसाईआ। एह धार निहचल धाम अटल दी, पुरख अकाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। धरनी कहे की मंगां मंग, मोहे दे जणाईआ। राम किहा जिस वेले अनन्दपुरी तों बाहर होवे जंग, खण्डा खड़ग सार टकराईआ। गुजरी ने रो के पाउणी डण्ड, कूक कूक सुणाईआ।

सत्तां अठ्ठां दास दासीआं दा होणा संग, चलण वाहो दाहीआ। दरवाज़यों नौ कदम ते सब दा पूरा होणा दम, स्वास साह रहिण कोए ना पाईआ। नाता तुट्टे माटी चम्म, तन वजूद संग ना कोए निभाईआ। धरनी तूं रो के छम्म छम्म, गोबिन्द चरणां सीस देणा झुकाईआ। मेरी मेट दे तृष्ना ग़म, चिन्ता देणी चुकाईआ। मैनूं दस्स के गया वशिष्ट राम, संदेसा इक्क सुणाईआ। तेरा लहिणा देणा चुकाए श्री भगवान, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। दर तेरे मंगण आई दान, वस्त अमोलक दे वरताईआ। गोबिन्द किहा नौजवान, सूरबीर समझाईआ। मैं होया मेहरवान, महबूब नाल मिल के वस्त दयां वरताईआ। मेरे गुरमुख मेरे दर होए परवान, परवाने धुर दे हथ्थ फड़ाईआ। फेर मानस जन्म दयां तत्तां वाला इन्सान, हिंसा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धरनी तेरे दवारे चल के आवण झुलावण सच निशान, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। वड्डे छोटे बाल अंञाण, इक्को रंग रंगाईआ। जिन्हां मुहब्बत विच दिता बलीदान, बल दे पिछले विछड़े बावन धार नज़री आईआ। कुछ लहिणा देणा नाल कृष्न काहन, सुदामे दे सज्जण रहे अख्वाईआ। सो गुरमुख होणे परवान, बेपरवाह दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। धरनी वहा के अक्खों नीर, हाल बेहाल सुणाईआ। गोबिन्द किहा कलयुग वेख वक्त अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। शांत रहे ना कोए ज़मीर, सांतक सति ना कोए कराईआ। चार वरनां ना दिसे धीर, लोभ मोह हँकार होए हल्काईआ। सब दे पाटे बाहर दिसण चीर, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जगत वेखण वहीर, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। गुरू गोबिन्द किहा आह लै जा मेरी प्रीत, प्रीतम हो के दयां जणाईआ। जिस वेले कलयुग विच्चों सतिजुग बदली रीत, पुरख अकाल नाल मिल के वज्जी वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला होणा गीत, दूजा नाद ना कोए शनवाईआ। साचे सेवक तैनूं करां बख्शीश, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। तूं उन्हां दी रखीं उडीक, नेत्र लोचन अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरा होया तारीक, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। पिता पुत्त बणे शरीक, नार कन्त करे लड़ाईआ। तिस वेले गुर अवतार पैगम्बर सारे करन आउण तस्दीक, शहादत लोकमात भुगताईआ। सो धरनी तेरी झोली पावां भीख, गुरमुख गुर गुर आपणी गोद उठाईआ। जिन्हां दा अन्तर करनां ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर निकलनी चीक, रो रो खुशी बणाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करनी उम्मीद, लेखा अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। धरनी कहे मैं होई खुश, खुशीआं ढोला गाईआ। पुरख अकाल सुहाउणी रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। गुरमुख भेजणे आपणे सुत, जिन्हां गोबिन्द

नाल कुड़माईआ। जोती धारों पैणे उठ, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। पुरख अकाल जाणा तुठ, दीन दयाल होए सहाईआ। अमृत आत्म निजर झिरना दे के घुट्ट, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। उन्हां बदल के आपणा रुख़, मेरे गृह जाणा आईआ। मैं गोदी लवां चुक्क, खुशीआं नाल उठाईआ। फिर गोबिन्द कोलों लवां पुछ, भेव दस्स धुर दे माहीआ। क्यों साथों ग्यों रुठ, दूर दुराडा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गोबिन्द किहा नाल प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जाह वेख आपणा घर बार, घराना तेरा दयां बणाईआ। गुरमुख मेरा सदा त्यार, सूरबीर नज़री आईआ। मैनूं इक्को जेहा पुरख नार, नारी पुरख वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एहो सत्तां अठ्ठां दा परवार, सेवादार धुर दा नज़री आईआ। एह गुलशन दी बहार, फुलवाड़ी महके धुरदरगाहीआ। धरनी तेरा कर्ज देणा उतार, पूरब लहिणा झोली पाईआ। वशिष्ट राम वेखे अक्ख उग्घाड़, घड़ी सुलखणी सोभा पाईआ। जिस दी आई अन्तिम वार, वारता सब दी रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा दए वखाईआ। धरनी कहे मैं वेख्या आपणा परिवारा, परम पुरख दिता वखाईआ। जिस दा गोबिन्द नाल उधारा, सोहणा झोली पाईआ। वड्डुयां निक्कयां इक्को जेहा सहारा, भेव अभेदा विच ना कोए रखाईआ। बच्चयां दा रोणा अनन्द पुरी दा अख़ीर नज़ारा, नज़र विच्चों नज़र दिती बदलाईआ। खुशीआं दा दिहाढ़ा, गुरमुखां दा अखाड़ा, गुर अवतार पैगम्बरां दा विहारा, धर्म दवारा धरती दिता सुहाईआ। नाम दा वणजारा, प्रेम दा सहारा, जोत दा उज्यारा, शब्द दा नग़ारा रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरा पूरा होया कौल, इकरार पिछला रिहा ना राईआ। मेरी फुलवाड़ी गई मौल, मौला हो के वेख वखाईआ। परदा रिहा कोई ना ओहल, अन्ध अन्धेरा दिता गवाईआ। दूर दुराडा चल के आया कोल, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। अमृत रस निजर धारा अगम्मी दे के जाए पाहुल, बूँद स्वांती गोबिन्द आप चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधान नौजवान काया मन्दिर अंदर वजा के जाए अगम्मी ढोल, सोई सुरती आप उठाईआ। धरनी कहे क्यों वड्डुयां छोटयाँ निकली चीक, बिहबल हो के कुरलाईआ। गोबिन्द दी धार गोबिन्द आमद दी उम्मीद, अमलां तों बाहर दए वखाईआ। बिन नेत्रां तों निज नैण दी दीद, दर्शन इक्को धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे मैं वेख्या खेल अपार, अपरम्पर स्वामी दिता वखाईआ। जिस दा राह तक्कदी रही जुग चार, चौकड़ी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जिस दे मंगते गुर अवतार, पैगम्बर सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भिखार, दर बैठे अलख जगाईआ।

सो कुदरत दा कादर वेख्या विच संसार, निरगुण दाता जोती जाता डगमगाईआ। भगतां दा लहिणा देणा देवण आया उधार, गोबिन्द विचोला शब्दी सोभा पाईआ। गुरबख्श सिँघ एह तेरा नहीं पुरख अकाल दा परिवार, पतिपरमेश्वर अन्तर अन्तर आत्म होए सहाईआ। दिवस रैण जागत सोवत आपणा दरस दए दिखाल, फर्श उत्ते हरस दए मिटाईआ। धरनी उत्ते धर्म दवारा सचखण्ड दी सच्ची बणी रहे धर्मसाल, धुर दा लेखा आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले वेखे आपणे लाल, दीन दयाल हो के आपणी गोद उठाईआ।

★ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ महल सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर ★

सो पुरख निरँजण देवे माण, हरि करता वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण होए मेहरवान, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। एकँकारा बख्शे दान, दाता दानी दया कमाईआ। आदि निरँजण हो मेहरवान, जोती जाता जोत नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान मर्द मर्दान, धुर दा योद्धा इक्क अख्वाईआ। अबिनाशी करता बण के काहन, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। पारब्रह्म हो प्रधान, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हुक्म संदेसा दे के इक्क फ़रमान, फरमांबरदार लए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के सवाधान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखो आण, धुर दा मालक आप सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बिन अक्खां करो पहचान, निज नेत्र अक्ख खुलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान वेखो ज्ञान, भेव अभेद आप खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, हरि करता आप जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपणी रीता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खोज खुजाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परखो नीता, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वेख वखाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीटा, आत्म ब्रह्म भेव कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया पंज तत तपे अंगीठा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सति धर्म दी दिसे कोई ना रीता, कलयुग कूड़ वज्जे वधाईआ। तन वजूद करे ना कोई पतित पुनीता, पतित पावण मेल ना कोई मिलाईआ। रसना जेहवा गा गा थक्के राम सीता, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण कहे वेखो दीन दुनी दा हाल, गुर अवतार पैगम्बरां अक्ख खुलाईआ। साची दिसे ना कोए धर्मसाल,

धर्म दवारा धर्म ना कोए प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चली अवल्लड़ी चाल, साचा मार्ग नज़र किसे ना आईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कूड़ नगारा रिहा वजाईआ। जीव जंत होए बेहाल, साध सन्त रहे कुरलाईआ। फल दिसे ना किसे डाल, लख चुरासी सिम्मल रूप लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। एकँकार कहे गुर अवतार पैगम्बर सुणो संदेसा एक, एकँकारा हो के दयां दृढ़ाईआ। साची दिसे किसे ना टेक, धूढ़ी टिक्के मस्तक ना कोई लाईआ। बुद्धी दिसे ना किसे बिबेक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना वध्या भेख, परदा ओहला सके ना कोए उठाईआ। सच स्वामी किसे ना दिसे नेतन नेत, निज लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। माया ममता मोह विकार खेडन खेड, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। जिस कारण तुहानूं दिता भेज, सृष्टी दी दृष्टी क्यों लोकमात विच भरम भुलाईआ। साची माणे कोई ना सेज, पतिपरमेश्वर अंग ना कोए लगाईआ। जोती जलवा मिले ना तेज, अन्ध अन्धेरे दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। आदि निरँजण कहे गुर अवतार बिन नेत्र लोचन नैण लओ तक्क, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पाँधी बण बण गए थक्क, अन्त अख़ीर रहे कुरलाईआ। हकीकत मिले किसे ना हक, लाशरीक जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। साचा वणज कराए कोई ना हट्ट, कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट नज़री आईआ। नेत्र रोवण मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, गुरदुआर देण दुहाईआ। दरोही तेरे नाम किरपा कर पुरख समरथ, वाहिद तेरी ओट तकाईआ। झगड़ा प्या दीन दुनी जग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। मन वासना लग्गी अग्ग, त्रैगुण तत ना कोए बुझाईआ। बिन काअब्यों काया मन्दिर अंदर कराए कोए ना हज्ज, हक महबूब मिलण कोए ना पाईआ। धुन आत्मक सुणे कोई ना नद, जगत सुरंगे सारे रहे गाईआ। लेखा जाणे पुरख समरथ, वड दाता धुरदरगाहीआ। जिस दी महिमा सदा अकथ, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्को इक्क सुणाईआ। अबिनाशी करता कहे सुणो हुक्म फ़रमान, फरमांबरदारां दयां जणाईआ। सृष्टी दृष्टी कोलों गया ज्ञान, सिख्या सच नज़र ना आईआ। कूड़ी क्रिया वधी शैतान, शरअ कर्म करे लड़ाईआ। दीआ बाती नूरी जोत जगाए कोई ना आण, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। साचा छन्द सुणे ना कोई धुनकान, आत्मक अन्तर ना कोए उपजाईआ। अमृत रस किसे ना मिले पीण खाण, वरन गोत दहि दिशा फिरे हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगारा

साझे यारा खेल इक्को इक्क दरसाईआ। अबिनाशी करता कहे सुणो सच संदेश, सचखण्ड दवारयों दयां जणाईआ। तुसीं चार जुग दे लोकमात बणे नरेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। दीनां मज़्बां विच करदे रहे हेत, आत्म परमात्म खोज खुजाईआ। पुरख अकाल दस्सदे रहे नेतन नेत, हर घट बैठा डेरा लाईआ। अंदर वड़ के मंज़ल चढ़ के काया काअबे दस्सदे रहे भेत, साढे तिन्न हथ्थ बंक दवारा इक्क सुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कलम शाही काग़ज़ अक्खरां नाल लिखदे गए लेख, कातब हो के मेरी सेव कमाईआ। क्यों कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा वध्या भेख, माया ममता मोह होया हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप जणाईआ। पारब्रह्म कहे सुणो हुक्म हुक्मरान, धुरदरगाही आप जणाईआ। लोक परलोक वेखो मार ध्यान, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। जो कलमा दे के आए कलाम, कायनात विच सुणाईआ। जो दस्स आए शरअ इस्लाम, इस्म साचा इक्क समझाईआ। जो जपा के आए नाम, रसना जेहवा मन का मणका भवाईआ। जो दे के आए पैग़ाम, संदेसा धुरदरगाहीआ। जो करके आए इंतज़ाम, हुक्मे अंदर हुक्म जणाईआ। क्यों सदी चौधवीं सारे होए बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। हुक्म संदेसा देवे श्री भगवान, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। उठो वेखो जीव जहान, काया माटी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुणया हुक्म अगम्म, अगम्मड़े दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर समझणा आपणा कम्म, निहकर्मी दिता समझाईआ। असीं मंगदे नहीं काया माटी चम्म, पंज तत तत ना कोई वड्याईआ। लहिणा देणा नहीं पवण स्वासी दम, तन वजूद ना वेस वटाईआ। किरपा करनी श्री भगवन, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर जगदीश, जगदीशर तेरे हथ्थ वड्याईआ। धुर दे करते कर बख्शीश, रहमत मेहर नज़र धुर दी झोली पाईआ। दो जहानां ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेखीए ठीक, ठाकर तेरी साची सेव कमाईआ। दीन दुनी अन्तर निरंतर तक्कीए अतीत, त्रैगुण अन्तर परदा फोल फुलाईआ। कवण सन्त सुहेला जन भगत तेरा गावे गीत, आत्म परमात्म राग अलाईआ। गृह गृह वेखे मन्दिर मसीत, मुल्लां मुसायक पंडत पांधे खोज खुजाईआ। कवण तेरी मन्ने हदीस, हज़रत सीस निवाईआ। अन्तर आत्म रख के बैठा उडीक, मनसा मनसा विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए आपणा जग, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। निरगुण धार जोत सरूपी जाईए

६०६
२०

भज्ज, बिन कदमां आपणा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगत सुहेले लईए लभ्भ, सूफ़ी सन्त फ़कीर फोल फुलाईआ। जो जगत वासना कूड़ी क्रिया पार कर के बैठे हद्द, दर ठांडे अलख जगाईआ। तेरा नूर ज़हूर तक्कया उपर शाह रग, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। नाम खुमारी पी के मद, मधुर धुन सुण के खुशी मनाईआ। मन वासना कर अलग्ग, समरथ तेरे दर ते बहि के तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखीए कलयुग लोकमात, सदी चौधवीं अन्त अख़ीर खोज खुजाईआ। क्यों चार कुण्ट दहि दिशा होई अन्धेरी रात, साचा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ात पात, कलमा कायनात हक ना कोए समझाईआ। क्यों आत्म सेजा सोए कोई ना खाट, सच सिँघासण नज़र किसे ना आईआ। क्यों आवण जावण लख चुरासी मेटे कोई ना वाट, तेरे धर्म दवारे चढ़ के तेरा दर्शन पाईआ। क्यों रसना जेहवा बत्ती दन्द हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पढ़ पढ़ थक्के गाथ, आत्म अन्तर निजानंद परमानंद विच ना कोए समाईआ। क्यों कूड़ कुड़यारा चार कुण्ट दहि दिशा खुल्ल्या हाट, ममता मोह विकार घर घर डेरा लाईआ। क्यों खेल होया स्वांगी बाज़ीगर नटुआ नाट, साचा राह नजर ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल असीं वेखीए खेल तमाश, तबा कूड़ी फोल फुलाईआ। पतिपरमेश्वर परवरदिगार साडी पूरी करनी आस, आहिस्ता आहिस्ता सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों तेरे भगत करीए तलाश, काया मन्दिर फोल फुलाईआ। जिन्नां दे अन्तर निरंतर तेरे मिलण दी आस, प्यास प्रेम वाली वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेखो लोकमात दी धार, धरनी धरत धवल दयां समझाईआ। साचा रिहा ना किसे प्यार, मुहब्बत कूड़ी किसे लोकाईआ। नाता तुट्टया कन्त भतार, सज्जण यार संग ना तोड़ निभाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, माया ममता मोह हल्काईआ। जो संदेसा दे के आए वारो वार, भविख्तां विच सुणाईआ। सो लहिणा देणा लेखा जाणे आप निरँकार, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दे ख़ाली दिसण मज़ार, मकबरे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे जा के वेखो दीन दुनी दी अंदरो अंदर हालत, अहिवाल पहलां दयां जणाईआ। मन कामना कूड़ी लग्गी अलामत, आलम इलम सके ना कोए मिटाईआ। मन हँकारी करे बग़ावत, गृह गृह करे लड़ाईआ। साचा दिसे ना कोई सही सलामत, जो साहिब मिल के खुशी मनाईआ। जा के वेखो दीन मज़्हब सब दी ज़बत होई ज़मानत, अक्खरी नाम संग ना कोए बणाईआ। अन्त अख़ीर आउण वाली कयामत, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा हुक्म प्रभू आदि जुगादी सच, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। असीं लख चुरासी वेखीए काया माटी भाण्डे कच्च, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जो मार्ग दीन दुनी आए दस्स, क्यों मानव जाती गई भुलाईआ। निज नेत्र खुल्ले किसे ना अक्ख, लोचण होए ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म कर के वक्ख, कूड़ घराना रहे वसाईआ। बिन तेरी किरपा पुरख समरथ, सच दवारे मिले ना कोए वड्याईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बुरज हँकारी जाणा ढठ्ठ, चार कुण्ट निशाना नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे मेरा हुक्म अगम्म अथाह, आदि जुगादि दयां समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए मलाह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म वरताईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिखा, संदेश नरेश धुर फ़रमाने आप सुणाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी भुल्ली राह, रहिबर हो के क्यों बैठे मुख छुपाईआ। आपणे आपणे दीन मज़्ब अन्त अख़ीरी लओ बचा, बचपन आपणे रंग रंगाईआ। इक्को ढईआ बाकी दिसे हुक्म देणा बेपरवाह, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सब दी सफा देणी उठा, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। अगला जुग चलणा नवां, सतिजुग साचे मिले वड्याईआ। धुर फ़रमाना इक्को कहवां, संदेसा धुरदरगाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर पुरख अकाल दीन दयाल इक्को रहवां, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सब दी आत्म सेजे सवां, जोती जाता हो के डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए बन्दे ख़ाकी, ख़ालस तेरा हुक्म समझाईआ। की खेल होणा इत्तफाकी, बेपरवाह दिता दृढ़ाईआ। औखी मंज़ल दिसे घाटी, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। तेरी याद करदे रहे पुरख अबिनाशी, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। तूं नूर नुराना हर घट निवासी, गृह गृह सोभा पाईआ। कुछ लेखा साडे कोल तेरा गोबिन्द वाली पाती, पत्रिका धुर दी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्लाईआ। गोबिन्द पाती दस्से की, कागज कलम लिखण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया जड़ उखेड़ी (नींह), लोकमात रहिण ना पाईआ। साचे धर्म दा धर्म दवारे बीजणा बी, उत्पत आपणा नाम कराईआ। झगड़ा मुका के साढे तिन्न हथ्थ सीं, महल अटल करे रुशनाईआ। धरनी धरत धौल घराना कर वसीह, नौजवाना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दे ठाकर तेरी ओट तकाईआ। चिठ्ठी कहे मेरा लेख पत्र, पत्तरयां तों बाहर जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण धारों

आवे उतर, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस ने शब्द दुलारा इक्को बणाउणा पुत्तर, पूत सपूता नाउुं धराईआ। धुरदरगाही चुक्के कुच्छड़, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। आपणी करनी करे करतार, हरि करता बेपरवाहीआ। शब्द सुत इक्क उठाल, हुक्में अंदर हुक्म मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखा वेख शाह कंगाल, बचया रहिण कोए ना पाईआ। भगतां दस्स सच सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा इक्क वखाईआ। जिस गृह दीपक जगे बेमिसाल, मिसल विच ना कोए समझाईआ। दे सके ना कोए अहिवाल, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चिट्ठी दा अनोखा लेख, जगत लिख्त ना कोए वड्याईआ। जिस विच अगम्मड़ा भेत, अनुभव दृष्टी आप दृढ़ाईआ। दीन दयाल भगतां करना हेत, जोती जाता वेस वटाईआ। सच स्वामी सुहावणी सेज, सिँघासण आसण इक्क रखाईआ। जोती जलवा दे के तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वरताईआ। धुर दी खेल कहे मेरा समझे कोई ना समां, समाप्त हुन्दी वेखे लोकाईआ। मैं जुग बदलदी आई नित नवां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहिण कोए ना पाईआ। मैं शब्द धार बदलदी आई अक्खरां विच दमां, दामनगीर हो के पन्ध मुकाईआ। मैं सदी चौधवीं फिरां नाल चवां, चाउ घनेरा इक्को नज़री आईआ। करनी कहे मैं वेख्या करता, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादी खेल करदा, नित नवित वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी ढोला पढ़दा, अनरागी राग सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात धरदा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जो सांझा यार कदीम चिर दा, जिस दा अन्त कोए ना पाईआ। उह भेव खुल्हावे घर थिर दा, सन्त सुहेले आप उठाईआ। लेखा जाणे धुर दे पिर दा, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। जन भगतां दस्स के साचा हिरदा, हर घट वस्या नज़री आईआ। जित्थे अमृत झिरना झिरदा, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। अन्ध अन्धेर लेखा निबड़दा, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। लहिणा देणा मुका दे गोबिन्द वाले टब्बर दा, दास दासी सोभा पाईआ। एह खेल अगम्मी शेर बब्बर दा, जिस दी भबक झल्ले ना कोए लोकाईआ। कलयुग अन्तिम समां वेखे अदल दा, इन्साफ़ आपणे हथ्थ जणाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग जन भगतां वेखणा बदलदा, बदी दा लेखा दए मुकाईआ। प्रभ दा भेव पाउणा कोई माण नहीं वड्याई वाली अकल दा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। प्रभ दा रूप रंग नहीं किसे शकल दा, शक विच रखे सर्ब लोकाईआ। जिन्हां दा नाता जोड़े आत्मा परमात्मा तुअल्लक दा, नाता आपणे नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

मेहर नज़र कहे मैं खोल्लणी आपणी अक्ख, अक्खरां तों बाहर करां पढ़ाईआ। वेखणा पुरख समरथ, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जुग चौकड़ी चलावे रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, जोती नूर करे रुशनाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। सन्त सुहेले मेल के सच, सज्जण धुर दे लए बणाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। लेखे ला के पंज तत रत्त, रतन अमोलक हीरे दए बणाईआ। गुरमुखां आपे जाणे मित गत, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। देवणहारा ब्रह्म मत, विद्या इक्को इक्क जणाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नत, कूड़ी सृष्टी विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। रंग कहे मैं भगतां जोगा, जोगी जतीआं सतीआं नज़र कोए ना आईआ। प्रभ दी किरपा नाल सद रंगदा रिहा चोग़ा, रूप रंग सके ना कोए बदलाईआ। कलयुग अन्त लख चुरासी विच्चों थोड़यां दिता मौका, जिन्हां मिल के आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ। रंग कहे मैं चढ़ां चलूल, चार वरनां समझ किसे ना आईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक एका कन्त कन्तूहल, करनी दा करता नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित कदे ना जावे भूल, भुल्लयां मार्ग लाईआ। जुग चौकड़ी बदलणा जिस दा सच असूल, असलीअत विच आपणा हुक्म वरताईआ। कोझयां कमलयां ग़रीब निमाणयां करे कबूल, जो जन चल आए सरनाईआ। मस्तक टिक्का धूढ़ी देवे धूल, धर्म दवारा एकँकार इक्को इक्क वखाईआ। सब दा आदि अन्त जुगा जुगन्त जाणे मूल, मुरदे मुरीद आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुख साचे सन्त जन सच दवारयों आपणी करनी करन वसूल, देवणहार धुरदरगाहीआ। जिस दा शब्द नाम हुक्म माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं वेख्या आदि जुगादी एक, एकँकारा नज़री आईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर रखदे गए टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जन भगतां करे बुध बिबेक, बुद्धी आपणा भेव खुल्हाईआ। त्रैगुण माया लाए ना सेक, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जन्म कर्म दी बदल देवे रेख, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सदा वसे सचखण्ड आपणे देस, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस कलयुग अन्त जोती धार जा के दिती भेज, गोबिन्द रंग रंगाईआ। माछूवाड़ा दस्स के सुहञ्जणी सेज, यारड़ा दए सुहाईआ। कुछ पुरी अनन्द दा लेख, अन्त अन्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पुरी अनन्द कहे मैनूं याद

आई दिस्या वक्त सुहेला, करया खेल बेपरवाहीआ। रंग चढ़या गुरू गुर चेला, चार कुण्ट पई दुहाईआ। सज्जण संग ना कोए अलबेला, लेखा जाणे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। पुरी अनन्द कहे मैं वेखां ओह वक्त, सुहञ्जणा नज़री आईआ। जिस वेले गोबिन्द लेखा दिता दास दासीआं फ़कत, चार तिन्न चार वज्जी वधाईआ। ओह बंस सरबंसा सोहणा लग्गे जगत, जगजीवण दाता वेख वखाईआ। जिस नूं आदि कहिंदा भगत, जुगादि दए वड्याईआ। लेखे लग्गे बूंद रक्त, तन वजूद सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरी अनन्द कहे जिस वेले दासी दास विछड़न लग्गा परिवार, बंस सोहणा नज़री आईआ। किले तों बाहर बोल जैकार, नाअरा इक्को दिता सुणाईआ। उन्नी साल दा नौजवान, बच्ची बच्चा ना कोए वड्याईआ। उस दे अन्तर आई विचार, ध्यान अंदरे अंदर टिकाईआ। गोबिन्द दा सोहणा दिसे श्रृंगार, कल्गी तोड़ा सोभा पाईआ। तन शस्त्रां वाले हथियार, वस्त्र तन चमकाईआ। किस वेले गल इस दे पावां इक्क हार, आपणी खुशी बणाईआ। चरणां उत्ते करां निमस्कार, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। अग्गों गोबिन्द शब्दी कर प्यार, सहिजे दिता दृढ़ाईआ। बच्चयो तुहाडा मेरा रिहा उधार, लहिणा पुरख अकाल हथ्थ फड़ाईआ। जिस वेले आवां दूजी वार, निरगुण नूरी जोत कर रुशनाईआ। राम वशिष्ट दा लेखा पूरा करना विच संसार, जो धरनी धरत गया समझाईआ। सब दा लहिणा देणा देवां वारो वार, वारता पिछली आप दुहराईआ। तुहाडा इक्ठा करां परिवार, पिछले साथी मेल मिलाईआ। ओन्हां विच्चों महल सिँघ रह गया बाहर, जिस कारण हार हथ्थ ना आईआ। एह खेल अपर अपार, प्रभ आपणे विच छुपाईआ। सब नूं मंज़ल पौड़े इक्को चाढ़, दर ठांडे दए वड्याईआ। अगला लेखा होर करतार, गोबिन्द दा साथी शाह अस्वार, जो सगला संग बणाईआ। उस दा थोड़ा जेहा इज़हार, लेखे विच करना ज़ाहर, अगला लेखा लिखे कोए ना कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। शाह अस्वार सूरा गोबिन्द दा सिख दुलारा, नाम गुप्त विच रखाईआ। ओस दे अंदरों आया इक्क इशारा, फ़ुरने विच मंग मंगाईआ। जे दास दासीआं कीता पार किनारा, मेरा लेखा दे मुकाईआ। जे तूं आउणा निरगुण धार दूजी वारा, मेरा नाता जोड़ जुड़ाईआ। मेल मेलणा अगम्म अपारा, अलख अगोचर खेल खिलाईआ। देणा सीस जगदीस प्यारा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे विगसे वेखणहारा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सब दा पूरा करे शब्दी दिता लारा, लेखा लेखे विच रखाईआ। सुरस्ती दा नूर कर प्यारा, वस्ती भगतां विच बणाईआ। ओसे हार दा हार श्रृंगारा, श्रृंगार आपणा हुक्म जणाईआ। एसे कारण खिच्च के ल्याए विच

दवारा, दूजे समझ किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहानां पावे सारा, महासार्थी धुर दी सेवा आपणी आप कमाईआ।

★ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ ओम प्रकाश कालरे दे गृह जंग पुरा नवीं दिल्ली ★

जन भगतां बख्शे चरण धूढ़ी, नाम टिक्के मस्तक लाईआ। नाता तुट्टे ममता मोह विकार आसा कूड़ी, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सच प्रीती रंग चढ़ा दे तन माटी ख़ाक गूढ़ी, दुरमति मैल अंदरों बाहर कढाहीआ। नाम निधान श्री भगवान अमृत रस सच देवे सरूरी, बिन दीन मज़ुब आपणे रंग रंगाईआ। स्वच्छ सरूप शाहो भूप एकँकार दिसे हाज़र हज़ूरी, निरगुण निरँकार निराकार सनमुख हो के सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त भगत सुहेले तारे ज़रूरी, ज़रूरत जगत जन्म जुग चौकड़ी पूरब वेख वखाईआ। गुरमुखां करे बुध बिबेक मन मति बुध मूर्ख रहे ना कोए मूढ़ी, सुचज्जे धुर दे दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ।

६११ २०

★ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे घर शकूर बस्ती नवीं दिल्ली ★

जन भगतां बख्शे नाम निधान सति, सति सति दया कमाईआ। बिन शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दे के ब्रह्म मत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा भेव दए खुल्हाईआ। भाग लगा के तन वजूद काया माटी साढे तिन्न हथ्थ कच्च, कंचन गढ़ महल अटल चढ़, सच दवारे खड़, घर इक्को दए समझाईआ। मनुआ जगत वासना दहि दिशा चार कुण्ट ना जाए नच्च, शब्दी डोरी इक्को नाम बंधाईआ। इक्को नाम जैकारा सच दवारा इक्को दस्स अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी दया कमाईआ। भेव खुल्हाए गृह मन्दिर हर घट, परदा ओहला बण विचोला धुर दा सोहला राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ।

★ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सवरण सिँघ दे गृह पिण्ड खेड़ी ज़िला पटयाला ★

जन भगतां होए कृपाल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। काया मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ वखाए

सच्ची धर्मसाल, बंक दवारा एकँकारा इक्को दए वड्याईआ। चरण प्रीती साची रीती दस्से जित्थे पोह ना सके काल, महाकाल बैठे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित जो बदलदा आया चाल, चाल निराली जोत अकाली अकल कलधारी आपणी बणत जणाईआ। मुर्शद हो के मुरीदां वेखे हाल, मुद्दतां दे विछड़े विछोड़े विच्चों आपणे नाल मिलाईआ। सब दी लेखे लाए पूरब जन्म कर्म दी कीती घाल, मेहरवान हरि नज़र बिन नैण अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी साचे रंग आप रंगाईआ।

★ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह अर्जन नगर जलन्धर ★

जन भगतां प्रभ देवे आदि जुगादी एका जोग, जुग चौकड़ी बदली वेखे जगत लोकाईआ। साचे सन्तां कर के धुर संयोग, आत्म परमात्म लेखा सहिज सुभाईआ। गुरमुखां कट के आत्म हउमे रोग, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। गुरसिखां कर प्रकाश निर्मल जोत, वरन गोत डेरा ढाहीआ। मौजीआं दस्स के आपणी मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। निरगुण निराधार निराकार शब्दी दस्स के आपणी गुहज , जगत विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्सणहारा इक्क सलोक, सोहला ढोला बण विचोला आपणा आप सुणाईआ। जन भगतां देवे नाम अनडिठी वथ, वस्तू बाहर नज़र किसे ना आईआ। जिस दी महिमा गुर अवतार पैगम्बर गए दस्स, दस अठ्ठ वण्ड वण्डाईआ। सो भगत सुहेले भगती अंदर मेले हस्स हस्स, हस्ती विच मस्ती नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया मोह विकार खेड़ा कर के भठ्ठ, अग्नी तत दए बुझाईआ। सच किनारा एकँकारा इक्को दस्से तट, नईआ नौका नाम इक्को इक्क समझाईआ। दर आया दुरमति मैल देवे कट, नाम निधाना श्री भगवाना तीर अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सो पुरख निरँजण दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर काया गागर विच्चों पार कराईआ।

★ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरचरण सिँघ दे गृह पिण्ड जटूआ ज़िला संगरूर ★

जन भगतां आपणा दस्से सच घराणा, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा ओहला दए चुकाईआ। जिस गृह धुर दा झुलदा सच निशाना, निशावर गुर अवतार पैगम्बर आपणा आप कराईआ। इक्को नूर जोत प्रकाश श्री भगवाना, भाग हिस्सा दूजा

वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सरूप दिसे कान्हा, नाम बंसरी अगम्म अथाह इक्को इक्क सुणाईआ। निराकारा नर निरँकारा न्यारा दिसे रामा, रमईआ राम सब नूं रिहा समझाईआ। सो लहिणा देणा लेखा जाणे कलयुग जीव जगत जहाना, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जन भगत वेखे लोकमात मार ध्याना, साचे सन्तां परदा आप उठाईआ। गुरमुखां दे के आत्म परमात्म धुर दा गाणा, नाद अनादी नाद सुणाईआ। गुरसिखां बण के जाणी जाणा, अन्जाणत आपणा भेव खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता गढ़ तोड़ अभिमाना, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। शरअ रहे ना कोए शैताना, शरीअत असलीअत विच्चों समझाईआ। अमृत रस दे के पीणा खाणा, कूड़ी क्रिया अग्न बुझाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान महबूब भगत वछल श्री भगवाना, पुरख अकाला होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा, जानत अनजानत अनडिठ्ठ आपणी खेल कराईआ।

६१३
२०

★ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड भगवान पुरा ज़िला जलन्धर ★

जन भगतां मंज़ल दे के अगम्मी चोटी, चेटक आपणा आप लगाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, जोत जोत रुशनाईआ। अन्तर कढ्ढ के वासना खोटी, खोटे खरे लवां बणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को गृह बणा के गोती, वरन बरन डेरा ढाहीआ। गुरमुख आत्म रहे कोई ना सोती, शब्द इशारे नाल उठाईआ। नाम निधान सुणा के धुर सलोकी, सुल्हकुल दयां मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत सूफ़ी सन्त फ़कीर माणक मोती, अनमुलड़ा लाल आपणी झोली पाईआ। जिस दी शहादत दिवस रैण देवे रविदास चम्यारा मोची, मौजूदा हो के आपणी कार कमाईआ। साहिब समरथ ओन्हां बणया खोजी, जिन्हां दा मालक इक्को चोजी, प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ। हउमे दा रहे कोई ना रोगी, चिन्ता ग़म रहे ना सोगी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए धुर संजोगी, वियोग जन्म जन्म दा गए गवाईआ।

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड शरीफ़ गढ़ ज़िला करनाल ★

जन भगत कहिण प्रभ कूड़ी क्रिया कलयुग मेट दे दुःख, माया ममता मोह विकार दे गवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त

दीप जगत वासना पूरी कर भुक्ख, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते आपणी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले निरगुण निरवैर आपणी गोदी चुक्क, परम पुरख परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को एका एहनां आपणे नाम दी दस्स तुक, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। झगड़ा रहे ना चार कुण्ट दहि दिशा मानव मनुक्ख, मानस आपणा परदा दे उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर कलयुग कूड़ी क्रिया पैंडा जाए मुक, सतिजुग साचा धर्म दर दवारे लै प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, समरथ स्वामी अन्तरजामी दर तेरे आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ आपणी सृष्टी अंदर आ के वेख, कलयुग कूड़ रिहा कुरलाईआ। जूठ झूठ वध्या भेख, सति धर्म निशान ना कोई झुलाईआ। ममता मोह विकार वध्या हेत, गढ़ हँकार ना कोए तुड़ाईआ। तेरा दरस कोई पाए ना नेतन नेत, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दिते भेज, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गए लिखाईआ। तिन्हां मिल के सच सिंघासण पुरख अबिनाशण तेरी माणे कोई ना अगम्मी सेज, सचखण्ड दुआर एकँकार नज़र किसे ना आईआ। किरपा निधान हो के वेख लोकमात आपणा देस, धरनी धरत धवल नेत्र रो रो रही कुरलाईआ। पिता पूत ना रिहा हेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण दीन दुनी दी सुण पुकार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होए दुख्यार, विभचार करे लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ करन हाहाकार, धुर दा धर्म ना कोए प्रगटाईआ। काग़ज़ कलम शाही लेखा लिख के गए निरगुण सरगुण तेरी धार, बोध अगाध शब्द नाद शनवाईआ। सरगुण दा लहिणा देणा सके ना कोए विचार, बुद्धी बिबेक ना कोए कराईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हउमे हंगता वध्या हँकार, भगत प्रेम पारब्रह्म तेरा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी सच दुआर इक्को तेरा नज़री आईआ। जन भगत कहिण प्रभ सदी चौधवीं वेख अन्त अख़ीर, आख़र तेरा ध्यान लगाईआ। मानव जाती अंदरों बदल गई ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर तेरा दरस कोए ना पाईआ। शरअ शरीअत कटे ना कोए ज़ंजीर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई झगड़ा प्या थाउँ थाँईंआ। अमृत रस निजर झिरना झिरे कोए ना नीर, बूँद स्वांती मुख ना कोए चुआईआ। हउमें हंगता सृष्टी लग्गी पीड़, दीनां अनाथां ग़रीब निमाणयां दर्द ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दवारे धुर दरबारे दर तेरे अलख जगाईआ।

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ संता सिँघ दे गृह पिण्ड शरीफ़ गढ़ ज़िला करनाल ★

पुरख अकाल कहे जन भगत ना कर गिरयाज़ार, गृह गृह वेख वखाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर पावां सार, सर्ब कला समरथ महिमा अकथ दयां दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवां विच संसार, माया ममता मोह विकार दयां मिटाईआ। लहिणा देणा पूरब लेखा चुकावां गुरू अवतार पैगम्बरां कोलों परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी फोल फुलाईआ। क्यों दीन दुनी दीनां मज़्बां वाली गई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। इष्ट देव अंदर मिले ना मीत मुरार, मंत्र निरंतर सच ना कोए समझाईआ। साचा ढोला बण विचोला शब्दी धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो प्रभ वेखणहारा लोकमात, दो जहानां खोज खुजाईआ। अन्त कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के सोहँ गाथ, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना दीन मज़्ब ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा दिसे एकँकार इक्क इकल्ला कमलापात, परवरदिगार सांझा यार दो जहानां नजरी आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी रखदे गए आस, सो स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां बुझाए जन्म कर्म दी लग्गी प्यास, तृष्ना तृखा तृप्त विच बदलाईआ। निरगुण नूर जोती जाता कर प्रकाश, कलयुग अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लेखे लावे पवण स्वास, साह साह जो हरि हरि रहे ध्याईआ। पुरख अकाल कहे जन भगत वेला वक्त वेख अन्त, अन्तश्करन प्रभ सब दा वेख वखाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, पारब्रह्म आपणा हुक्म चलाईआ। झगड़ा रहे ना जीव जंत, मानव मानव आपणा भेव खुल्हाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क दरसाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, चार वरन अठारां बरन दए समझाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी मिल के धुर दा कन्त, सुरती शब्द मेला दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा अछल अछेदा चार वेदां तों बाहर दए समझाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर जन भगत तक्कण राह, रहिबर धुर दा इक्को नज़री आईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब लेखा देणा चुका, पूरबला रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग साचा मार्ग देणा ला, दीन दुनी दी रीती नीती विच्चों देणी बदलाईआ। नाम संदेसा धुर फ़रमान इक्क सुणा, चार कुण्ट करनी इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा धर्म आदी कर्म ब्रह्मादी वरन

देणा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो अन्त अख़ीर सब दी सुणां पुकार, लख चुरासी अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। जो संदेसा दे के गए गुर अवतार, पैगम्बर सुनेहड़यां विच सुणाईआ। सो लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दयां उतार, मकरूज हो के आपणा फ़र्ज़ निभाईआ। कलयुग भेख कूड़ी क्रिया मेट विच संसार, ऊँच नीच राउ रंक इक्को करे धर्म जैकार, धुर दरबार इक्क वखाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप सुणा के हाहाकार, हउमे हंगता गढ़ दए तुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के सति जैकार, इष्ट देव स्वामी आत्म परमात्म आपणा रूप दरसाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर लेखा लिखणहार, बेअन्त बेअन्त कहि के सारे सीस निवाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सांझा यार कल कल्की लए अवतार, निहकलंक आपणा नाउं डंक दए वजाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों करे खबरदार, आलस नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना श्री भगवान इक्को इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो शब्दी हुक्म करे ख़बरदार, बेख़बरां आप सुणाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, उजाला करे सर्ब लोकाईआ। भगत वछल बण ख़िदमतगार, ख़ादम हो के आपणी सेव कमाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए उठाल, गुर शब्दी मेला धुरदरगाहीआ। कलयुग अंदर सतिजुग देवे अवल्लड़ी चाल, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। लेखा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक इक्को घर बहाईआ। चार वरनां अठारां बरनां धर्म दवारा वखा के सच्ची धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ लहिणा देणा दए मुकाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी गृह भीतर काया मन्दिर तोड़ के जंदर निज आत्म परमात्म हो के मिले आण, पवण स्वासी मण्डल रासी खेल पुरख अबिनाशी मेटे पिछली वाटी, घाटी अगली मंज़ल आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदर निर्मल जोत बिन वरन गोत जगा के कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ।

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बंता सिँघ दे गृह पिण्ड मुग़ल माजरा ★

जन भगत कहिण प्रभ मेट कूड़ी शाही, कलयुग क्रिया दे खपाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेला दे सुहाई, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान लगाईआ। साचे सन्त कहिण दीन दयाल हो सहाई, समरथ स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। गुरमुख कहिण गुर शब्द सतिगुर दे गवाही, सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर दया दे कमाईआ। गुरसिख

६१७
२०

६१७
२०

कहिण गोबिन्द सूरे तेरी आस तकाई, चार वरन अठारां बरन डेरा (दे) ढाहीआ। निरगुण निरवैर निराकार धुर दी जोत कर रुशनाई, अन्ध अज्ञान दे मिटाईआ। साचा नाम शब्द धुन उपजे शनवाई, अनहद अनादी आपणा राग सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन दए दुहाई, सांतक सति ब्रह्म मति पारब्रह्म पतिपरमेश्वर काया माटी अंदर नज़र किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जन भगत सहि ना सकण जुदाई, निज नेत्र लोचन नैण राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाल मेहर नज़र नैण उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया शौह दरया दे रोड़, सतिजुग साचा मात दे उपजाईआ। सुरती शब्दी अन्तर निरंतर कर जोड़, मन वासना मोह विकार डेरा ढाहीआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, दीवा बाती कमलापाती इक्को दे टिकाईआ। झगड़ा रहे ना काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन वासना चोर, माया ममता हउमे हंगता कूड़ा गढ़ दे तुड़ाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाले दीन दयाले तेरी प्रीती लग्गी निभे तोड़, मँझधार अद्धविचकार विच संसार ना कोए तुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां तेरे हथ्थ विच डोर, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर पैंडा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब साजण मीत मुरार, इक्क इकल्ले एकँकार, अकल कलधारी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कूड़ा मेट पसारा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाईआ। तेरा एका नाम नूर होवे उज्यारा, चार वरन अठारां बरन खुशी मनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरे नाम दा इक्को होवे जैकारा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तेरा नाम ध्याईआ। दीन मज़ब ज़ात पात झगड़ा रहे ना जीव गवारा, बुध बिबेक शब्द टेक दे कराईआ। मानस जन्म मानुख जाती मनुक्खता विच जाए संवारा, स्वार्थ परमारथ आपणा नाम दे दृढ़ाईआ। दीन दुनी अन्तर निरंतर काया मन्दिर अंदर मेट धुंदूकारा, दीपक दीआ कमलापाती इक्क इकांती दे जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर सुहेले साजण मीत ठांडे सीत दर तेरे इक्क अरज़ोईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया अन्त अखीरी कर खत्म, खता सब दी मुआफ कराईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आ वेख आपणा पतण, पतिपरमेश्वर गुर अवतार पैगम्बर सारे बैठे ध्यान लगाईआ। अन्त अखीर बेनज़ीर चारे खाणी चले कोई ना यतन, यथार्थ तेरा मेल ना कोई मिलाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश नेत्र कलयुग जीव मूल ना तक्कण, पुस्तक पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले सचखण्ड तेरे दवारे वसण, वास्ता वाबस्ता हो के तेरे नाल जुड़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार आदि

निरँजण उनां पत आया रखण, रखक हो के हो सहाईआ। चरण धूढ़ धुर दा करा मजन, माटी खाक बिन जोत ललाटी कर रुशनाईआ। दरगाह साची धाम न्यारे इक्को दर्सीं धुर दा सज्जण, दूजा मीत मुरारा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत सुहेले लोकमात आत्म परमात्म रस चक्खण, होका सच सलोका तेरा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चार कुण्ट दहि दिशा माया ममता दे गवाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग चारों कुण्ट पाया ज़ोर, जोरू ज़र करे लड़ाईआ। मन वासना मेट सके कोई ना शोर, शरअ विच शरीअत होई हल्काईआ। पंज विकारे खेल करया अन्धघोर, निरगुण साचा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। बिन तेरी किरपा आत्म परमात्म सके कोई ना जोड़, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे हत्थ फड़ा के गए डोर, जुग चौकड़ी लोकमात सेव कमाईआ। तूं कलयुग अन्त श्री भगवन्त निगाहवान हो के कर ग़ौर, गहर गम्भीर बेनज़ीर नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सृष्टी दृष्टी वेख वखाईआ। ठांडे दर धुर दरबार तेरी साची लोड़, लोड़ींदे साजण आपणा मेला लैणा मिलाईआ। निरगुण धारों निरँकार निरवैर हो के बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी कर के गुरमुख सन्त सुहेले तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्तर धुर दा फ़ुरना फुरे फोर, मन वासना चार कुण्ट दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ।

६१८
२०

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ आसा सिँघ दे गृह पिण्ड कलसाणी ज़िला करनाल ★

सतिगुर शब्द नाम प्रीती देवे गफ्फा, अनमुल्ली दात वस्त अमोलक काया झोली अंदर टिकाईआ। बदलणा पए ना कोई पढ़ के वरका सफा, मेहरवान महबूब हो के नाद धुन शब्द करे शनवाईआ। प्यार मुहब्बत विच कर के गुरमुख पक्का, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। भाग लगावे साढे तिन्न हत्थ काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ अंदर वड़ मन्दिर चढ़ सच दुआर दए सुहाईआ। गुरमुखां नाम भण्डारा दे के रती नालों रतन अमोलक रत्ता, रुत्त अगली दए उपजाईआ। अंदर बाहर गुपर ज़ाहर साजण मीत बण के सखा, साहिब सुहेला इक्क अकेला आपणा रंग रंगाईआ। बिना साहिब सतिगुर जगत वणज विच्चों किसे ना होवे नफा, कोटन कोटि व्यपारी खुआरी विच बैठे रोवण मारन धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर शब्द गफ्फा देवे धुर दा नाद, अनादी नाद सुणाईआ। गुरमुख सुरती जाए जाग, जग जीवण दाता आप उठाईआ। बिरहु विछोड़े देवे इक्क

वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढाहीआ। मन मनका फेर के काया मन्दिर अंदरों आपणा वखाए इक्क त्याग, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दा झगड़ा दए मुकाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, काग हँसा माणक मोती सोहँ चोग चुगाईआ। रीती नीती अंदरों दूजा बदल देवे समाज, समग्री जोत इकग्री आपणी इक्क वखाईआ। सतिगुर पूरा अंदर वड़ के, नौ दवारे पार कर के, ईड़ा पिंगल सुखमना पैरां हेठ छड़ के, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप समझाईआ। गफ्फा कहे मैं सुणा नाद अगम्मा शब्द, अनरागी दए सुणाईआ। झगड़ा रहे ना दीन मज़्हब, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल आत्म परमात्म करना सिक्खे अदब, आदाब विच सजदयां सीस झुकाईआ। साहिब सतिगुर सूरा हाज़र हज़ूरा लेखा जाणे पूरब अदम, आलमीन आलम धुरदरगाहीआ। किरपा निधान हो के अन्तर अन्तर कूड़ी धार देवे बदल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप लिखाईआ।

६१६
२०

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सरैण सिँघ दे घर पिण्ड कलसाणी ज़िला करनाल ★

गफ्फा कहे मैं सतिगुर हथ्थ, दूसर नज़र कदे ना आईआ। सदा देवे भगतां वथ, गुरमखां झोली पाईआ। जो बिन रसना लैण चख, रस धुर दा दए वखाईआ। हकीकत विच्चों नज़री आए हक, नाअरा अलख इक्क लगाईआ। मन वासना कर के वक्ख, बुध बिबेक दए प्रगटाईआ। धुन आत्मक राग सुणा के अनहद, नादी नाद करे शनवाईआ। निर्मल जोत पए जग, नूर नुराना डगमगाईआ। त्रैगुण माया मेटे अग्ग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। दरस वखा के उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा भेव खुल्हाईआ। जाम प्या के धुर दी मदि, नाम खुमारी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राग इक्क अल्हाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ दे गृह पिण्ड चिबाह करनाल ★

अनहद शब्द कहे मेरी आदि जुगादी धुर दी धुनी, जगत हद्द तों बाहर करां शनवाईआ। मेरी आवाज़ राज़ अंदर बिन भगतां किसे ना सुणी, सो वक्त वेख जगत लोकाईआ। रसना नाल गाउँदे गए गावत गावत गुणी, सिफ्तां विच ढोले गाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले शब्द सतिगुर लए चुनी, लख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। जिस खेल नूं समझ सके

ना कोई ऋषी मुनी, परदा ओहला ना कोई उठाईआ। ओह सतिगुर धार दी साची धुनी, प्यार प्यार विच्चों प्रगटाईआ। गाई जाए कदे ना बुल्लीं, रसना नाल ना कोए चतुराईआ। सुणी जाए ना सरवन कन्नीं, अनबोलत नाद वजाईआ। खेल होवे काया कुल्ली, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। एह वस्त सदा अनमुल्ली, बिन सतिगुर पूरे काया झोली ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेव आप खुल्ाईआ। अनहद शब्द अनादी धुर दा, हरि करता आप सुणाईआ। गुरमुख मुरीद होवे मुर्दा, मर जीवत रूप वटाईआ। राग सुणे अगम्मी सुर दा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। एह संदेसा गोबिन्द दस्सया अनन्दपुर दा, गुरमुखां परदा आप चुकाईआ। जो साहिब सतिगुर प्रीती अंदर जुड़दा, ममता मोह विकार गवाईआ। उस दे अन्तर निरंतर शब्द अनादी फ़ुरना फुरदा, मनुआ मन ना कोए वड्याईआ। एह लेखा आदि जुगादि सतिगुर दा, जन भगतां झोली पाईआ। जिन्ां दा लेखा बणया धुर दा, धुर मस्तक दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द नाद इक्क उपजाईआ। अनहद शब्द सदा वैरागी, बिरहों विच्चों नज़री आईआ। जगत वासना रहे त्यागी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। सुणे अगम्मी आवाज़ी, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। जिस नूं गाए कोए ना ढाडी, जगत ताल ना कोए शनवाईआ। एह खेल सतिगुर बाज़ी, बाज़ां वाला गुरमुख अंदर सहिजे गया टिकाईआ। जो गुरसिख सच्चे सतिगुर नूं प्यार नाल कर लए राज़ी, रमज़ नाल समझ दए बदलाईआ। अनहद शब्द सुणे नाल आज़ादी, बन्धन रहिण कोए ना पाईआ। सो होवे वड वडभागी, भाग पूरब लेखा लहिणा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुन अनहद्द नादी नाद दर आदि जुगादी, रबाबी अहिबाब बिन तन्द सितार सुरती शब्द ताल वजाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह कलोनी नम्बर १ हज़ारी बाग ★

जन भगतां लेखा करे पूर, पूरब सब दा लेखे लाईआ। सच दुआर कर मन्ज़ूर, घर बाहर दए वड्याईआ। नाता रहे ना क्रिया कूड़, परमात्म आत्म वज्जे वधाईआ। जन्म जन्म दा कट कसूर, कुकर्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़, नाम निधाना इक्क सुणाईआ। सोहँ शब्द सति सरूर, सोई सुरती आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हाज़र हज़ूर मेहर नजर इक्क तकाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सरदारा सिँघ दे गृह, पिण्ड राउणी ज़िला लुधियाणा ★

जन भगतां लहिणा देणा पूरब लेखे लावे, लागत लग्गे कोए ना राईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे दाअवे, दावत गुरमुखां घर खाईआ। राउ रंक कर के सांवें, गुरमुख रंग चढ़ाईआ। साची चरण धूढ़ी जो सन्त सुहेला नहावे, दुरमति मैल धवाईआ। सच दुआर चरण प्रीती मल्ल के जावे, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला इक्को गावे, गा गा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे घर आप वसाईआ। जन भगतां प्रभ पूरब देवे लेखा, लेख आपणे हुक्म बणाईआ। मेहर करे बण के धुर दा नेता, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्यार दस्से धुर दा हेता, साचा नाम इक्क समझाईआ। जुग चौकड़ी विछड़यां कीता चेता, चेतन कर के आपणा भेव खुल्हाईआ। भाग लगा के काया माटी साचे देसा, दिशा धुर दी दए समझाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रवेशा, परमेश्वर आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे घर आप वसाईआ। जन भगतां प्रभ इक्को देवे माण, वड्डा छोटा रहिण कोए ना पाईआ। सब दा सांझा बण श्री भगवान, भाग हिस्सा धुर दा आप वरताईआ। जो साचा ढोला धुर दा गाण, रसना जेहवा रस चखाईआ। धरनी धरत धर्म झुलाए सच निशान, निशाना आपणा इक्क उपजाईआ। बिरहु वैराग अंदर देवे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सन्त सुहेले कर परवान, परम पुरख प्रभ आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ काका सिँघ दे गृह पिण्ड लिभड़ा ★

जन भगतां देवे पूरब धार, धरनी धरत धौल धवल वड्याईआ। लहिणा देणा वेख सर्ब संसार, सृष्टी विच्चों गुरमुख रंग रंगाईआ। मानस जन्म ना आवे हार, हिरदे (हरि) वसाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जाता खोल्ह किवाड़, परदा अंदरों दए उठाईआ। सदा सुहेला हो के वसे नाल, घर ठांडे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप चढ़ाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही संमत २ इन्द्र सिँघ दे गृह हरबंस पुरा ज़िला पटयाला ★

साचा रंग चाढ़े अगम्मी, अलख अगोचर दया कमाईआ। भाग लग्गे काया माटी चम्मी, चार वरन वज्जे वधाईआ।

लेखा मुकावे हरख सोग़ ग़मी, ग़मख़ार हो के दया कमाईआ। अगली धार दस्से नवीं, नव जोबन आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे दर दए वड्याईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरमेज सिँघ दे गृह पिण्ड हरबंस पुरा ज़िला पटयाला ★

साचा दर सुहञ्जणा, गुरमुखां दए आधार। परम पुरख आदि निरँजणा, जोती जाता नूर उज्यार। दीनां अनाथां दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर करे पार। चरण धूढ़ दे के मजना, दुरमति मैल दए उतार। जिस आदि अन्त जुगा जुगन्त परदा कज्जणा, सो स्वामी वेखे विगसे पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख हरिजन पैज दए संवार।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड हरबंस पुरा ज़िला पटयाला ★

पैज संवारे आप प्रभ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरमुख सुहेले लोकमात विच्चों लभ्भ, खोजत खोजत आपणे रंग रंगाईआ। नाम खुमारी दे के धुर दी मदि, मधुर धुन इक्क सुणाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक मेट के हद्द, घर सांझा दए समझाईआ। जित्थे बोध अगाध शब्दी वज्जे नद, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साजण धुरदरगाहीआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ नसीब कौर दे गृह पिण्ड हरबंस पुरा ज़िला पटयाला ★

हरि सज्जण साहिब धुर दा मीता, मरन जीवण विच कदे ना आईआ। जन भगतां लेखा देवे धुर दा कीता, करनी करता दया कमाईआ। झगड़ा मुका के ऊँचा नीचा, राउ रंकां होए सहाईआ। धुर दवारा दस्स के अनडीठा, अग्नी तत बुझाईआ। भेव खुल्ला के त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी परदा दए उठाईआ। जन भगतां मार्ग दस्स सृष्ट सबाई अगम्मी रीता, रहिबर हो के आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा मालक इक्क अख्वाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी अमरो दे गृह पिण्ड हरबंस पुरा ज़िला पटयाला ★

धुर दा मालक कहे भगत मेरा नूर, नूरी चन्द नज़री आईआ। जिन्हां दा लेखा मात ज़रूर, ज़र्रे ज़र्रे विच्चों समझाईआ। काया माटी कर भरपूर, भरम भुलेखा बाहर कढाहीआ। सति सच माटी कच्च अमृत रस देवे सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। गढ़ रहे ना हँकार ग़रूर, गृह मन्दिर अंदर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां पार कराए नाम बेड़े चाढ़ के आपणे पूर, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां लेखा दए मुकाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड रोड़ा ज़िला पटयाला ★

जन भगत सदा जग जीवे, जस शब्द नाम मिले वड्याईआ। नाम निधान अंमिओं रस पीवे, पीवत जीवत जग तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। हरि सरनाई साची थीवे, सरनगति साची नज़री आईआ। जुग चौकड़ी जन भगत प्रभू दे दीवे, प्रकाश करे दीन दुनी लोकाईआ। साची मस्ती अंदर रहिण खीवे, खेवट खेटा हो के होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत प्रभू दा निशाना सच्चा, सच भगतां विच समाईआ। भाग लगावे काया माटी कच्चा, कच्चे पक्के दए बणाईआ। नाम भण्डारा दे के वथा, वस्तू आपणी इक्क वरताईआ। भेव खोल् के योग यथा, यथार्थ आपणे रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ दस्से के कथा, कथनी दा लेखा दए चुकाईआ। मेल मिला के पुरख समर्था, सच दुआर आप सुहाईआ। जन भगत चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना फिरे ना नठ्ठा, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन बणाए आपणा बच्चा, पूत सपूता आपणे घर वसाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड बरक्त पुरा ज़िला पटयाला ★

जन भगतां प्रभ बदल देवे जन्म, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। लेखा रहे ना कोए कांड कर्म, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। प्रभ प्रीती दस्से साचा धर्म, वरन बरन ज़ात पात पन्ध मुकाईआ। अबिनाशी करता धुर दी सरन, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साची सिख्या धुर दा नाम देवे पढ़न, सोहला ढोला इक्को इक्क सुणाईआ। सो गुरमुख सज्जण सन्त सुहेले धुर दी मंज़ल

चढ़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार पुरख अकाल दर्शन करन, जोती जाता वेख ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार दर वड्याईआ। जन भगत प्रभ दा आदि जुगादि संगी, जुग जुग लोकमात मिले वड्याईआ। मंज़ल हकीकी जाए लँघी, कूड़ दवारे डेरा ढाहीआ। मनुआ झगड़ा करे ना कोए फ़रंगी, सांतक सति दए कराईआ। नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, दिब लोचन दए खुल्हाईआ। रस दे के परमानंदी, सुख आत्म परमात्म प्रगटाईआ। आवण जावण लख चुरासी रहे ना कोए पाबन्दी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। काया माटी सदा रखे ठंडी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे सन्बंधी इक्को नज़री आईआ। जन भगत सद प्रभ दा रहे सेवादार, सिर सिर सेव कमाईआ। बणया रहे बरखुरदार, बाला नढ्ढा रूप वटाईआ। अमृत रस पींदा रहे अपर अपार, निजर झिरना बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। गाउँदा रहे तूं मेरा मैं तेरा जैकार, वज्जदी रहे वधाईआ। साची मंजल चढ़ के वेखे अगम्म अपार, अलख अगोचर इक्को नज़री आईआ। जिस दी सिफ्त करदे रहे गुरू अवतार, पैगम्बर ढोलयां विच गाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा करदे रहे इज़हार, सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां काया मन्दिर दए सुहाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, अन्ध अज्ञान दए गवाईआ। सच दवारे कर प्यार, सचखण्ड एकँकारा इक्को दए वखाईआ। शब्द अगम्मी अनहद नादी धुन देवे जैकार, जगत राग ना कोए सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां उपर होए आप दयाल, दीनन आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां प्रभ सदा सुहाए रुत्त, पत्त टहणी आप महकाईआ। धर्म दुआर बणा के सुत, अपराधां विच्चों बाहर कढाहीआ। उलटा होण ना देवे गर्भ रुक्ख, नौ दस अग्न ना कोए तपाईआ। लेखे लाए जामा मानस मनुक्ख, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। जन्म कर्म दा रहिण ना देवे दु:ख, दुखियां आपणा दर्द वण्डाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निजर धारा साचा देवे सुख, सुख सागर विच समाईआ। उजल करे तत वजूद मात मुख, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अबिनाशी अचुत, चार जुग जन भगत सुहेले आपणी गोदी चुक्क, सुख धुर दा इक्क वखाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ मेवा सिँघ दे गृह पिण्ड कलाउँदी ज़िला अम्बाला ★

आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत मिलदे श्री भगवान, दूजा संग ना कोए बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सिख के सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा अंदरों देण कढाहीआ। सति धर्म दा सचखण्ड दवारे झुलदा वेखण निशान, कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार डेरा ढाहीआ। खुशीआं विच सदा गाउँदे रहिण गाण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक्क सरनाईआ। स्वच्छ सरूप शाहो भूप घर स्वामी दर्शन पाण, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत खोजण कोए ना जाईआ। अमृत रस काया मन्दिर अंदर मिले पीण खाण, मन वासना मोह विकार हँकार तृष्ना दए बुझाईआ। आवण जावण लख चुरासी झगड़ा मुक्के ज़िमीं असमान, पारब्रह्म पति परमेश्वर जोती जोत जोत समाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण वेखे आण, जोती जाता पुरख बिधाता हो के फेरा पाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर शब्दी दे के गए ब्यान, धुर फ़रमाना भविख्तां विच दृढ़ाईआ। सो लहिणा देणा लेखा चुकावे विच जगत जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दरगाह साची धाम न्यारे सचखण्ड देवे माण, कूड़ अभिमान अंदरों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत भगवान वसदे रहिण इक्को गृह, सच दुआर सोभा पाईआ। धुन नाद अगम्मी आवाज़ इक्को कहे, सोहँ ढोला साचा गाईआ। कूड़ी क्रिया ममता मोह विकार कर के लै, सति सच धर्म इक्क उपजाईआ। करे प्रकाश शक्ती शवै, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। झगड़ा मेटे द्वैती दवै, ममता मोह विकार मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे दर रखाईआ। भगत भगवान निरगुण सरगुण धार रहिण वसदे, वसल असल देवे यार खुदाईआ। नाम भण्डारे मिलण रस दे, रस धुर दा इक्क चवाईआ। शब्दी गीत ढोले गाउँदे रहिण जस दे, सोहँ राग अगम्म अथाहीआ। खेल वेखदे रहिण परम पुरख समरथ दे, पतिपरमेश्वर आपणा परदा दए उठाईआ। सच प्रीती अंदर रहिण हस्सदे, हस्ती विच्चों हस्ती लैण बदलाईआ। तक्क प्रकाश निज नेत्र लोचन नैण अक्ख दे, आख़र मंज़ल चढ़ के प्रभ दा दर्शन पाईआ। वणजारे बणे रहिण साचे हट्ट दे, जिस गृह इक्को नाम ख़ज़ाना रिहा वरताईआ। जन भगतां मजे मुक जाण तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ दे, अमृत आत्म सच सरोवर इक्क इश्नान कराईआ। पैंडे रहिण ना मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ दे, काया काअबा कुदरत दा मालक इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। भगत भगवान कलयुग अन्त अख़ीर राह रहे तक्क, वेला वक्त दए गवाहीआ। सदी चौधवीं गई थक्क, मुहम्मद रो के

मारे धाहींआ। गुर अवतार पैगम्बर उच्ची कूक दस्सण सच, सचखण्ड दवारे हाल हाल कर सुणाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों जुग जन्म दे विछड़े जन भगत सुहेले रख, रक्ख्या करे थांओं थाँईंआ। जो तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला रहे जप, तिन्हां जन्म मरन आपणे लेखे पाईआ। झगड़ा रहे ना दीन मज़ब ज़ात पात कूड़ी क्रिया करनी वक्ख, माया ममता मोह अंदरों देणा कढाहीआ। सच दुआर एकांकर निरगुण धार जोत सरूप शाहो भूप तेरे चरण कँवल जाण ढठ्ठ, बाहों फड़ अंदर वड़ मंजल चढ़ सच दुआर देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी महिमा सदा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव अभेदा कहिण कोए ना पाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ पंजाब कौर दे गृह पिण्ड कलाउँदी ज़िला अम्बाला ★

जन भगत पुरख अकाल दा इक्को जाप, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सके ना कोए बदलाईआ। अन्तर आत्म देवे सच्चा साथ, सगला संग काया मन्दिर अंदर आप निभाईआ। अमृत धार बख्शे निजर बूँद सवांत, कूड़ी क्रिया पंच विकारा अग्नी तत बुझाईआ। धुन आत्मक उपजाए साचा राग, अनहद नादी धुन करे शनवाईआ। निर्मल नूरी जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेरा अंदरों दए कढाहीआ। लेखे लाए पवण स्वास स्वास, साह साह आपणे विच समाईआ। वस्त देवे धुर दी दात, दीन दयाल दयावान निरगुण धार झोली पाईआ। झगड़ा मुका के दीन मज़्ब ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां इक्को घर वखाईआ। सच संदेसा नर नरेशा धुर दी देवे गाथ, सोहँ ढोला शब्द विचोला दो जहानां नज़री आईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म मेले कमलापात, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म अगम्म अथाह जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अन्धेरी रात, सति धर्म दा सच्चा राह शब्दी सतिगुर बण मलाह इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या धुर दी भिच्छया नाम भण्डारा अनमोल अमुल्ल जन भगतां झोली पाईआ। जन भगत दर ठांडे देवे माण वड्याई, हरि वड्डा वड वड्याईआ। अन्तर आत्म निरंतर परमात्म कदे ना होवे जुदाई, धुर संजोगी मेला मेले सहिज सुभाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा हरि निरँकारा घट भीतर करे रुशनाई, रोशन ज़मीर बेनज़ीर आपणे दर वखाईआ। नाम धुन शब्द अनाद वज्जदी रहे वधाई, चिन्ता ग़म हरख़ सोग नेड़ कोए ना आईआ। जन भगत सुहेले हरि जस गाउँदे चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा काया मन्दिर अंदर नज़री आईआ। जिन्हां कारण पुरख अकाल

दीन दयाल निरगुण सरगुण हो के मारे फेरा, पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कटणहारा लख चुरासी गेड़ा, आवण जावण पतित पावण आपणे लेखे पाईआ। जन भगतां गेड़ा रहिण ना देवे जम दी फाँसी, फ़ैसला धुर दा हक सुणाईआ। चारे खाणी नाता तोड़ लख चुरासी, चार कुण्ट आप होए सहाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मंज़ल देवे साची, आत्म परमात्म मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। भाग लगाए काया माटी, साढे तिन्न हथ्थ देवे माण वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अन्धेरी राती, सति प्रकाश पुरख अबिनाश निरगुण जोत नूर करे रुशनाईआ। जन भगत सुहेले सच दुआर एकँकार परवरदिगार सांझा यार बणा के सेवक दासन दासी, दास्तान अगली दए समझाईआ। पूरब जन्म लहिणा देणा लेखा देवे बाकी, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक मानस जन्म मंज़ल चढ़ाए एका घाटी, सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को दए वखाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ चैंचल सिँघ दे गृह पिण्ड महाउण ज़िला लुधियाणा ★

सतिगुर किरपा पूजा सिमरन सच्चा ढंग, चार वरन अठारां बरन इक्को रूप दरसाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच अन्तर आत्म चाढ़े रंग, निरवैर निराकार निरँकार आपणा भेव खुल्हाईआ। शब्द नाद धुन अनहद अनादी वजाए मृदंग, भेव अभेदा अछल अछेदा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सरीर बेनज़ीर आपणा नूर करे रुशनाईआ। मन का मणका फेर परदा लाहे हँ ब्रह्म, आत्म परमात्म परमात्म आत्म घर साचे नज़री आईआ। पंज विकारा गढ़ हँकारा तन माटी ख़ाकी वजूद करे कोई ना जंग, तृष्ना तृखा अग्नी जगत ना कोए सताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बिन पुरख अकाल दीन दयाल किसे ना ढाही अन्धेरी कंध, माला मणके सारे देण दुहाईआ। कोटन कोटि साध सन्त जीव जंत रसना जेहवा गा गा थक्के बत्ती दन्द, शास्त्र सिमरत पूजा पाठ जोग अभ्यास तत साधन विच लोकाईआ। एका एक देवे टेक करे बुध बिबेक अमृत रस देवे निजर धार वगाए परमानंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी साची पूजा, सिमरन स्त्री पुरुष समझ कोए ना पाईआ। जिस दे अंदर भाओ रहे ना कोई दुतीआ दूजा, मन वासना दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। घर स्वामी अन्तरजामी नेत्र लोचण नैण खोल्हे तीजा, त्रैगुण माया परदा दए उठाईआ। बिन सतिगुर शब्द कोई ना बणे साचा

मीता, सगला संग ना कोए निभाईआ। गा गा थक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी ध्याए अठारां गीता, सोहले ढोले रागां नादां जगत विच शनवाईआ। माला मणका सिमरन पूजा जगत वासना गुर अवतार पैगम्बरां जगत चलाई रीता, रीतीवान श्री भगवान अन्तर निरंतर आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस उपर मेहरवान होवे जगत जगदीसा, लेखा मुकावे हस्त कीटा, देवे नाम सदा अनडीठा, जिस नूं अक्खर सारे रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम सच दवारयों आप प्रगटाईआ। नाम सिमरन पूजा पाठ पढ़ पढ़ थक्के, मानव मनुक्ख मानस चार कुण्ट दहि दिशा रहे कुरलाईआ। सच वस्त किसे ना मिले हकीकत हके, असल विच्चों वसल यार ना कोए कराईआ। निज नेत्र लोचण नैण जल्वागर नूर कोए ना तक्के, स्वच्छ सरूपी नज़र किसे नाँ आईआ। जगत अधार विच रसना जेहवा लाए रट्टे, गा गा आपणा राग अलाईआ। साचा सिमरन जिस नूं रसना जेहवा कोई ना जपे, माला मणका हथ्थ ना कोए उठाईआ। जिस दी धार विच्चों पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी परवरदिगार सांझा यार काया मन्दिर अंदर निज गृह आपे लभ्भे, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। अमृत रस नाम निधान देवे सच वस्त जाम प्याला मदे, मधुर धुन अनरागी आपणा राग सुणाईआ। कोटां विच्चों सन्त भगत गुरमुख गुरसिख सतिगुर शब्द पूरब जन्म आपणे कारण आप लभ्भे, खोजत खोजत वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा सिमरन सिमरतीआं तों बाहर दए समझाईआ। सिमरन पूजा जगत माला, हथ्थां पोटयां नाल सेव कमाईआ। बिन साहिब सतिगुर कोए तोड़ ना सके जगत जंजाला, बिन गुरू गुरदेव अन्तर आत्म परदा ना कोई लाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा जीव जहान होया अंदरों काला, कालख टिक्का दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। बण वैरागी जगत त्यागी जिंनां चिर जीव ना होए बेहाला, कन्त सुहागी मिलण किसे ना आईआ। मन विकार कूड़ विचार छड्ड हँकार काया मन्दिर अंदर बणावे सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को इक्क सोभा पाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से राह सुखाला, साचा मंत्र निरंतर जुगां जुगन्तर आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सिमरन अनदृष्टी दृष्ट विच्चों प्रगटाईआ। सच सिमरन पूजा पाठ जिस करन दा चाउ, अन्तर अन्तर इक्क ध्यान लगाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला इक्क मनाओ, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द विचोला शब्द भीतर भीतर विच रखाओ, सुरती सोई लए उठाईआ। मन वासना मोह विकारा सतिगुर झोली पाओ, बुध चले ना कोए चतुराईआ। बिन माला मणके सिमरन अजपा जाप वेख वखाओ, समाप्त

होवे विच लोकाईआ। पुत्तर धी जगत वासना विच ना कदे भरमाओ, बाहरों दृष्टी आपणे विच समाईआ। काया मन्दिर साचा काअबा इक्क सुहाओ, मुकामे हक वज्जे वधाईआ। चरण कँवल प्रीती आदि जुगादी रीती धुर दी नीती इक्क अपणाओ, अपरम्पर स्वामी आपणा भेव दए खुल्हाईआ। जगत दवारे नौ तजाओ, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल मूँह दे भार सुटाईआ। सुरती डोरी शब्द सतिगुर हथ्थ फड़ाओ, अमृत रस निजर धारा चख, बूँद स्वांती कँवल नाभ टपकाओ, अनहद नादी धुन बिन सरवण कन्न घर साचे सुण के खुशी मनाओ। निरगुण जोती कमलापाती आत्म प्रकाश ब्रह्म निवास मण्डल रास गोपी काहन खेल खिलाओ। सच सिँघासण आत्म सेजा, प्रेम प्रीती वस्त्र इक्क विछाओ। माण मोह अभिमान तज, परम पुरख परमात्म चरण ध्यान लगाओ। तूं ठाकर दीन दुनी वेख गहर गम्भीरा डूँग्घा सागर, तुध्ध बिन देवे कोई ना आदर, वासना आपणी इक्क रखाओ। बिन माला मणके मन्दिर आपणे चढ़ के, दरस करो सचखण्ड दवारे खड़्ह के, जित्थे मिले वड्याईआ। मानस जन्म लख चुरासी विच्चों मिल्या चारे खाणी जूनीआं विच फिर के, सतिगुर शब्द मिलावा करो वास वेखो घर थिर के, थिर घर वासी पुरख अबिनाशी हरिजन साचे आपे मेल मिलाईआ।

६२६ ६२६
२० २०

जन भगतो जे मन का मणका लओ फेर, मनसा मोह जगत मिटाईआ। साहिब तक्को नेरन नेर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आवण जावण जो कटणहारा गेड़, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। सो सतिगुर दीन दयाला गुरमुखां उत्ते करदा सदा मेहर, जो अठ्ठे पहर दिवस रैण इक्को ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट मेटे अन्धेर, सति धर्म सति सति जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पूजा सिमरन कहे असीं आदि जुगादी दास, जुग जुग प्रभ दी सेव कमाईआ। जिंनां चिर किरपा करे ना पुरख अबिनाश, साडी चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाम निधाना शब्द अगम्मी गए आख, अक्खरां विच सिफ्त सालाही ढोले गाईआ। जिस दी सिफ्त नाल साचे रंग दा होवे प्रकाश, धौल आकाश पन्ध मुकाईआ। साचे सन्त गुरमुख गुरसिख अन्तर अन्तर प्रेम प्यार दी रखण इक्क आस, तृष्ना मुहब्बत विच बदलाईआ। उन्हां दा लेखे लावे साहिब जाप, जग जीवण दाता वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के त्रैगुण तीनों ताप, तपदे हिरदे शांत कराईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना पाप, दुरमति मैल धवाईआ। दर्शन वखाए साख्यात, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। ओन्हां माला मणकयां दा रहे ना कोए पश्चाताप, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर अग्गे भेंटा कीता आपणा आप, वस्त अमोलक

ओसे दी झोली पाईआ। सो किरपा कर के अंदर देवणहारा प्रकाश, प्रकाशित हो के वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूह बुत्त पुनीत करे पवित पाक, पतित उधारी दया कमाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ भाग सिँघ, पाखर सिँघ दे गृह पिण्ड फराला ज़िला जलन्धर ★

जन भगतो प्रभ बख्शे चरण कँवल इक्क ध्यानी, ध्यान ज्ञान जुग चौकड़ी जिस दा राह तकाईआ। सच प्यार धुर मुहब्बत नाम वस्त देवे इक्क निशानी, नाउँ निरँकारा परवरदिगारा इक्क इकल्ला आप प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित जोबनवन्त सदा चढ़दी रखे जवानी, बिरध बाल रूप ना कोए बदलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दी सिफ्त होवे दो जहानी, सो सरगुण निरगुण आपणी खेल वखाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती जन भगतां देवे ठंडा पाणी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाह अगम्म अथाह आपणी दया कमाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी, ख़ालस आपणा रूप दए समझाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा परदा लाहे शाह सुल्तानी, शाह पातशाह भूप बिन रंग रूप अनडिठ आपणी कार कमाईआ। गुरमुखां काया मन्दिर अंदर गढ़ तोड़े अभिमानी, धुर दी बाणी साचा राग सुणाईआ। मेहरवान मेहर निगाह नाल बख्शे पद निरबाणी, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर कौर दे गृह पिण्ड खेड़ा ज़िला जलन्धर ★

जन भगतां प्रभ देवे नाम अतुट, दूसर दर मंगण कोए ना जाईआ। अमृत जाम प्याए अगम्मा घुट, मन वासना कूड़ी तृष्ना दए मिटाईआ। आवण जावण लख चुरासी नाता जाए छुट्ट, लिव छुटकी फेर लगाईआ। अमृत जाम श्री भगवान निजर धारों देवे घुट, बूँद स्वांती कमलापाती आप चुआईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दरस्स के साचा सुख, सुखन सज्जण इक्को दए समझाईआ। परदा ओहला रहिण ना देवे कोई लुक, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत दवारा ठांडा दरबारा धाम न्यारा इक्को इक्क सुहाईआ। जन भगतो प्रभ देवे नाम खुमारी शब्द प्रीती मद, मंद भाग दए मिटाईआ। साचा ढोला सुणा के धुन आत्मक राग छद,

छन्द सद आप सुणाईआ। जगत वासना कूड़ी मेट के हद्द, हदूद महबूब उच्च अरूज आपणी दए वखाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत उपर शाह रग, सच दुआर निर्मल जोत करे रुशनाईआ। बिन मक्के काअब्यों करा के धुर दा हज्ज, महबूब मुहब्बत विच साचा हुजरा दए सुहाईआ। जन भगत रहिण ना देवे कदे अलग्ग, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मेला लेखा जाण गुरू गुर चेला, चेला गुरू गोबिन्द धार वखाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ सुरिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ★

जन भगतां प्रभ देवे इक्को वस्त बिन रूप रेख रंग, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आत्म सेजा सुहा धुर पलँघ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। बिन ताल तलवाड़यों वज्जे धर्म मृदंग, सुर समझ कोए ना पाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के तृष्ना तम, तामस सांतक राजस रजो तमो सतो आपणा खेल वखाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डा भरम देवे भन्न, परम पुरख परमात्म आत्म आपणा घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेश धुर दरबार देवणहार इक्क अख्वाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बलबीर कौर दे गृह पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ★

जन भगतां नाम भण्डारा दे के होवे खुश, खुशहाली अंदर लाली लालण इक्को आपणा नाम चढ़ाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर चार वरनां विच्चों जन भगत सुहेले लए पुछ, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। परदा ओहला रहिण ना देवे लुक, लायक नालायक वेखे थाउँ थाँईंआ। सच दुआर एकँकार जन भगत सुहेले बणा के आपणे सुत, सोई सुरती आप उठाईआ। उजल करे मात मुख, दुरमति मैल पापां दए धवाईआ। जिन्हां प्रेम प्यार मुहब्बत विच कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पढ़ी तुक, तुरत दरगाह साची धाम न्यारे सचखण्ड दए वड्याईआ। जन भगत मंज़ल मंज़ल राह विच कदे ना जाए रुक, रुकावट विच बनावट, बनावट विच थकावट, थकावट विच रूप ना कोए बदलाईआ। दरगाह साची धाम न्यारे पुरख अकाल बणा के आपणे सुत, सोवत जागत जागत सोवत आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां नाम भण्डारा दे के घुट, ओट आपणी इक्को इक्क समझाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गणेशा सिँघ दे गृह पिण्ड कोट कलां ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे प्रभ तेरे बलि बलि जावां, बलिहारी सीस निवाईआ। ढोला गीत खुशी दा गावां, गा गा शुकर मनाईआ। जन भगतां वेखां नाल चावां, चाउ घनेरा देणा प्रगटाईआ। सच बेनन्ती इक्क सुणावां, पिछली याद आईआ। गुरमुखां दा तोल कर दे सावां, ऊणा रहिण कोए ना पाईआ। तेरे उपर सब दा दाअवा, झगड़े कूड़े दिते तजाईआ। कर प्यार ज्यों पुत्तरां मावां, माँ पुत्तर तों परे तेरी धार नज़री आईआ। जित्थे मिलदीआं ठंडीआं छावां, सिर समरथ हथ्थ देणा टिकाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल वेखण आवां, नित नवित ध्यान लगाईआ। गुरमुखां पकड़ीं आपे बाहवां, बल आपणा आप प्रगटाईआ। कोई रह ना जावे निथावां, जो दर तेरे सीस निवाईआ। दुनीदार ना वेखीं कावां, गुरमुख हँस लैणा तराईआ। ब्यास कहे मैं आस विच तेरा राह तकावां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा धुर दा इक्क सुहाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ धर्मजीत सिँघ दे गृह पिण्ड ठक्करवाल ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं तक्क तक्क थक्का, थकावट मेरे अन्तर आईआ। जुग जुग मैनूं मिलदा रिहा धक्का, सगला संग ना कोए बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर फेर गए अक्खां, धुर दा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मैं कलयुग अन्त वास्ता घत्तां, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सच विथ्या आपणी दस्सां, दहि दिशा तों बाहर दयां सुणाईआ। इक्को ओट तेरी रखां, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। किरपा कर पुरख समर्था, साहिब स्वामी धुर दा आया धुरदरगाहीआ। मैं कोई सेवा नहीं कर सकदा हथ्थां, लत्तां नाल पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं कोई वधाईआं नहीं जटां, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। मैं कोई लवाईआं नहीं इट्टां, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मेरे अंदर तेरे प्रेम दीआं खिच्चां, अठ्ठे पहर राह तकाईआ। मैं मुहब्बत विच निक्का, प्रेम विच आपणा आप वटाईआ। तूं पुरख अकाल धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर शहिनशाहीआ। मेरी पूरी कर के इच्छा, जन भगत लै तराईआ। चार कुण्ट बिन भगतां सच कोई ना दिसा, जो इष्ट तेरा लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी ठाकरी दे गृह पिण्ड फ़राला ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं आदि आदि दा आसावंद, तृष्ना पूर ना कोए कराईआ। मेरे गा गा थक्क गए बिना दन्दां तों दन्द, बिना जेहवा तों जेहवा रसन हल्काईआ। मैनूं समझ ना आया तेरा अगम्मी छन्द, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा नाउं गए बदलाईआ। अन्त मेट के आपणा पन्ध, सारे बैठे मुख छुपाईआ। किरपा कर बदल आपणी कंड, करवट आपणे विच्चों बदलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गया लँघ, वक्त अख़ीरी हो सहाईआ। जन भगतां बेड़ा डुब्बे ना किसे धार मंझ, मौजूदा हो के लै तराईआ। नेत्रहीण रहे कोई ना अन्ध, अन्धे आपणे लेखे पाईआ। कर प्रकाश धुर दे चन्द, चांदना आपणा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ रणजीत सिँघ दे गृह पिण्ड वडाला ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं वेखणी भगतां दी निक्की जेही बस्ती, जिस दा वासदेव ध्यान लगाईआ। जिस दी आस रखी सुकदेव मुनी विच आपणी हस्सती, हस्सदयां हस्सदयां प्रभ तों मंग मंगाईआ। वेद व्यास पलक उठाई अक्ख दी, प्रतख परदा इक्क चुकाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर घड़ी वेखी जस दी, सिफ्तां नाल ढोले गाईआ। ब्यास कहे उह खेल सुहावणी होवे अज्ज दी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कुछ धारा राम जाणे वेद रिग दी, रघुपति हो के आप समझाईआ। कुछ लेखणी दिसे बिधना दी बिध दी, बन्दगी विच सीस निवाईआ। कुछ आसा दुर्गा दी ज़िद्द दी, खण्डे खड़ग भगौतीआं विच समाईआ। कुछ आसा गोबिन्द दी अन्तर विचार गिध्ध दी, जो निउं के सीस निवाईआ। खेल वेखणी अन्त अख़ीर पुरख अकाल इक्क दी, जो एकँकार आपणा नाउं प्रगटाईआ। ब्यास कहे मेरी मनसा पुराणी सिक्क दी, सिख़र चोटी चढ़ के दयां दुहाईआ। जन भगतां मेला मेलीं आपणे हित लई, हित्तकारी हो के आपणे अंग लगाईआ। जिन्हां लख चुरासी सृष्टी दृष्टी विच जित लई, हार तेरे चरणां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दरबारे मंग मंगाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ तलविंदर सिँघ दे गृह, पिण्ड वडाला ज़िला जंलधर ★

ब्यास कहे जन भगत रहे कोई ना बेवा, आत्म परमात्म लैण प्रनाईआ। पिछले चार जुग दी सेवा, कलयुग अन्तिम

लेखे पाईआ। तूं वसणहारा सचखण्ड धाम निहचल निहकेवा, नर नरायण तेरी बेपरवाहीआ। अमृत रस आपणी धार विच्चों दे मेवा, मालक हो के आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैनूं मन्नदे गए अलख अभेवा, कथनी कथ सके कोए ना राईआ। जन भगतां सिफ्तां विच गाए कोई ना जेहवा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। तूं आदि जुगादि दो जहानां देवी देवा, देवत सुर तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साहिब तेरी इक्क सरनाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ गुरदीप कौर दे गृह पिण्ड पब्बमा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी रखी उडीक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जिस कारण गोबिन्द दे अनन्दपुर छड्डण लग्गयां सवा पहर गलों लाही कमीज, तन ख़ाकी नग्न वखाईआ। कोई कर ना सक्या ओसदी तमहीद, ब्यान विच ब्यान ना कोए सुणाईआ। की गुरमुखां कीती वसीअत, बिन अक्खरां दिती लिखाईआ। ओहदा लेखा जाणे ना कोए असलीअत, कागज़ कलम शाही चल्ले ना कोए चतुराईआ। ब्यास कहे तेरी आदि जुगादि भगतां नाल मेरी वलदीअत, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। साची सिख्या नाम निधाना दे नसीहत, नालायक लायक आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धर्म दवारा वेख वखाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड ढड्डे ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं की दस्सां दास्तान, आपणा खेल आपे वेख वखाईआ। जन भगतां तेरे उत्ते माण, अभिमान अंदर ना कोए वखाईआ, तेरे नाम दा गाउँदे गाण, गा गा शुकर मनाईआ। अट्ठे पहर रखण ध्यान, सुरती सुरत विच्चों बदलाईआ। तैनूं मन्नदे धुर दा काहन, गुरमुख गोपी हो के सेव कमाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तान, दाता दानी धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्त कर परवान, परम पुरख आपणी गोद उठाईआ। अट्ठे पहर रहिणा निगहवान, दिवस रैण हो सहाईआ। नेड़े आवे ना कोए शैतान, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। जन भगतां एका आपणा राग सुणा धुर दी धुनकान, धर्म दवारा इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे सीस निवाईआ। ब्यास कहे सब दी पूरी कर के शर्त, शरतीआं आपणा लेखा दे मुकाईआ। जेहड़ी मंग मंगी राम कोलों भरत, बनबास जादयां

सीस निवाईआ। ग़रीब निमाणयां वण्डणा दर्द, दुखियां दुःख गवाईआ। जन भगतां कबूल कर अरज़, दर ठांडे सीस निवाईआ। विछोड़ा रहे कोई ना मर्ज़, मरीज़ शफ़ा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। ब्यास कहे मैं बहु कुछ वेख्या तक्क, पूरबले जुग ध्यान लगाईआ। किसे पूरा ना कीता हक, हुक्म विच सारे गए तेरी सेव कमाईआ। कुछ वेद व्यासा पा के गया शक, संदेसा हौली जेही उपजाईआ। लकीर कढुके नाल नक्क, धरती उत्ते सति निशान बणाईआ। जिस वेले धर्म दा रिहा कोई ना जस, वेद पुराण ना कोए वड्याईआ। उस वेले आवे पुरख समरथ, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जग नेत्र सके कोई ना लभ्भ, खोजत खोजत सृष्ट सबाईआ। सो भगतां लए सद्द, किरपा करके मेल मिलाईआ। लहिणा देणा मूल चुकावे हभ्भ, हमवतन हमसाजण लए बणाईआ। अग्गे रहिण ना देवे अलग, वक्खरा दर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क चढ़ाईआ। ब्यास कहे आपणी बख्शिश कर बख्शीश, बख्शिश विच लहिणा दे मुकाईआ। कुछ लेखा याद आया मुहम्मद दस्सी हदीस, हज़रत हक करी पढ़ाईआ। उस नूं नज़र आया ख़फीफ, कफीफ कफ़न तों बाहर सोभा पाईआ। तूं बणाके आपणा अजीज़, इस्म आज़म दिता समझाईआ। उस वेले मुहम्मद ने ढाई मिन्ट गलों लाही कमीज़, सजदा तेरे मस्तक सीस निवाईआ। अंदरों बिरहों दी निकली चीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आपणे हुक्म दी कर तस्दीक, तोबा तोबा दए दुहाईआ। पुरख अकाल किहा पुट्ठे सिध्धे नक्क दी कढु लीक, सत्त सत्त चौदां अंक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। ब्यास कहे मेरा लेख कुछ तेरे विच ख़ीसा, जेब जिस नूं कहे लोकाईआ। ओस दे उत्ते ब्यान दिता कुछ ईसा, इष्ट तेरा इक्क जणाईआ। सदी बीसवीं सब ने पाउणा आपणा कीता, करनी दा करता दए सज़ाईआ। बिन भगतां कोई ना रहे जीवण विच्चों जीता, ज़िंदगी वाली दुनिया अन्त फ़नाह नज़री आईआ। तूं सुणाई इक्क कुनीता, कुन दिता दृढ़ाईआ। कुछ लहिणा मसीह नालों मूसा होर वधीका, वाधा दयां जणाईआ। आस रख के बैठा उम्मीदा, आमद विच नैण उठाईआ। राज़ खोलू पोशीदा, पुष्कर दा लेखा नाल मिलाईआ। नूर तक्कां तेरा दीदा, दास्तान अगली दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। ब्यास कहे प्रभ आपणी फोल के वेख जेब, जाइज़ लेखा दे समझाईआ। जिस नूं समझे ना कोई कतेब, ग्रन्थ गृह ना कोए प्रगटाईआ। जिस दे विच नहीं कोए फरेब, दग़ा रूप ना कोए वटाईआ। कुछ लेखा याद आया सप्त ऋषीआं कटया इक्क सेब, सभा आपणी इक्क लगाईआ। ओस विच्चों आवाज़ आई प्रभ दा नाम समझ सके ना कोई

चार वेद, ब्रह्मा कहिण कोई ना पाईआ। चारों कुण्ट होया जोती तेज, नूर नूर रुशनाईआ। सोहणी दिसी सेज, सिँघासण बेपरवाहीआ। जिस धारों गुर अवतार पैगम्बर देवें भेज, परदा दिता उठाईआ। अन्त कर के आपणा हेत, अगम्म शब्द दिता सुणाईआ। कुछ लहिणा देणा वेखो लोकमात देस, चारे दिशा फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। ब्यास कहे मैनूं याद आई पिछली तेरी शब्द कहाणी, शमां धुर दी होए रुशनाईआ। कुछ आसा रखी हरी चन्द दी सवाणी, राणी तारा ध्यान लगाईआ। कुछ सुणी ध्रू ने तेरी अगम्मी बाणी, बाली बुध मिली वड्याईआ। कुछ शंकर बख्श्या निजर अमृत पाणी, आपणा रस दिता वखाईआ। तेरा खेल दो जहानी, जैंह जैंह वेखां सोभा पाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां रहे ना कोए परेशानी, प्रशन सब दे वेख वखाईआ। तेरी आत्मा नहीं बेगानी, दर आपणे लैणा जुड़ाईआ। तेरी सध्धरां भरी जवानी, जुग चौकड़ी जोबनवन्ती नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी निशानी, निशाने जगत गए समझाईआ। कलयुग अन्त कर परवानी, महबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरे मिलण दी अख़ीर मंज़ल इक्क रुहानी, तेरे दर्शन विच वड्याईआ। तेरे दवारे दी तेरे घर मन्ज़ूर होए महिमानी, महिमान गुरमुख नज़री आईआ। सब दा लेखा वेख मस्तक विच पेशानी, पेशतर आपणा भेव खुलाईआ। जगत जन्म दी लेखे ला कुरबानी, करमां दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सच दुआर बणा धुर दे अनामी, इनाम विच पैग़ाम आपणा आप सुणाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ करतार कौर दे गृह पिण्ड जंडयाला ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे जन भगतां पिच्छे मारी वाटा, पाँधी बण के पन्ध मुकाईआ। जन्म कर्म दा पूरा कर दे घाटा, देंदयां तोट कोए ना आईआ। जन भगतां किरपा कर दे दीन दयाल पुरख अबिनाशा, आपणी दया कमाईआ। वस्त अमोलक पा दे काया बाटा, भण्डारी हो के वेख वखाईआ। जन भगत रहे ना कोई निरासा, आसा सब दी पूर कराईआ। तेरा बणया रहे भरवासा, भरम गढ़ देणा तुड़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा मन्नदे आखा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं सब दीआं पुछणहारा वाता, वाकिफ़कार दीन दुनी धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सरन विच साचा सीस निवाईआ। ब्यास कहे तेरे कोल भण्डारा अमुल्ल, अनमुल्ल दे वरताईआ। भाग लगा भगतां कुल, कुल तेरी वज्जे वधाईआ। जन्म जन्म दी बख्श भुल्ल, अभुल्ल हो सहाईआ। सन्त सुहेला कोई ना जावे रुल, रुलदयां

लै उठाईआ। सच तराज़ू तोल दे तोल, वज़न महिसूस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत फुलवाड़ी तेरे टहिकदे फुल्ल, बिनां भगतां तेरी कुल ना अग्गे चलाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ मक्खण सिँघ, तेजइन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड वडाला ज़िला जलन्धर ★

जन भगतां किरपा करे दीन दयाल, सो स्वामी अन्तरजामी वेख वखाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, मानस मानुख आपणे रंग रंगाईआ। काया मन्दिर अंदर वखा सच्ची धर्मसाल, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क समझाईआ। मुहब्बत विच उपजा गुरमुख आपणे लाल, नाम निधाना रंग चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह मेट जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। निरगुण सरगुण वसे सदा नाल, सदा सुहेला इक्क अकेला आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लहिणा देणा लेखे लाईआ। जन भगत एका रंग रंगे सदा सदा सद, मजीठी आप चढ़ाईआ। धुन राग सुणा अनहद, जगत शास्त्रां तों बाहर करे पढ़ाईआ। अमृत जाम प्याए निजर झिरना घट, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। दिब्ब नेत्र ज्ञान खोल्हे अक्ख, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। घर साहिब स्वामी पुरख अकाल दीन दयाल मिले सच, जन भगतां परदा ओहला अन्तर दए उठाईआ। मिले वड्याई तत वजूद काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सुहञ्जणा आदि निरँजणा दए कराईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला जन भगतां सिर ते रखे हथ्थ, बाल बिरध जवान भय रहिण कोए ना पाईआ। नाम भण्डारा दे के साची वथ, धन ख़ज़ीना इक्क प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर सदा रख, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जाप जपाईआ। लख चुरासी जम दी फाँसी कट, राए धर्म डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त हरिजन वेखे सज्जण सन्त, श्री भगवन्त परदा ओहला आप उठाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी समा कौर दे गृह पिण्ड सुनड़ ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी तक्कदा रिहा साध, जो साधना विच निरगुण सरगुण तेरा ध्यान लगाईआ। अन्तर निरंतर तेरा मंत्र करदे रहे याद, रसना जेहवा दन्द ना कोए हिलाईआ। आसा तक्कदे रहे शब्द वज्जे अगम्मी नाद, धुन आत्मक

राग सुणाईआ। पुरख अकाल भेव खुल्हा बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना अंदरों निकले विवाद, जगत हँकारा गढ़ दे तुड़ाईआ। साचे मन्दिर डूँघी कंदर खोल्ह देवे राज़, राज़क रहीम मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पतिपरमेश्वर तेरा ध्यान लगाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी बचन कौर दे गृह पिण्ड बोपाराए ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे मैं जुग चौकड़ी तक्कदा रिहा सन्त, साहिब सतिगुर साजन जो तेरा ध्यान लगाईआ। जलधार वड़ वड़ खोजदे गए कन्त, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के तेरा अक्खरां वाला मंत, मंतव हल्ल ना कोए कराईआ। गढ़ तुट्टा ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव कोए ना पाईआ। साचे नाम दी मिली किसे ना सनद, साचा रंग ना कोई रंगाईआ। झगड़ा प्या रिहा बहिश्त जन्नत, स्वर्गां डेरा कोए ना ढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे अग्गे करदे गए मिन्नत, निउँ निउँ सजदयां विच सीस झुकाईआ। चार जुग दी खाणी बाणी तेरी सिफ्तां वाली लिख्त, संदेश्यां विच सद्दा होका नाम सुणाईआ। तेरा लभ्भ सक्या कोई ना इष्ट, इष्ट आत्मा परमात्मा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी पुरख अबिनाशी घट निवासी हरिजन साचे लेखे लैणे लाईआ। ब्यास कहे मैं जुग जुग तेरे तक्कदा रिहा सन्त फ़कीर, फ़िकरा तेरा ढोला गाईआ। घत्तदे रहे वहीर, चार कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। बदलदे रहे ज़मीर, मन मति बुद्धी तों परे अक्ख खुल्हाईआ। लभ्भदे रहे तदबीर, तेरा तरीका नाम धुरदरगाहीआ। झगड़ा तक्कदे रहे शाह हकीर, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। किस बिध तेरी नज़र आवे तस्वीर, बिन रूप रंग रेख सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार अकल कलधारी जोत निरँकारी जोती जाते पुरख बिधाते तेरी ओट तकाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ बीबी भजन कौर दे गृह जमशेर ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे प्रभ कलयुग अन्त अख़ीर तोड़ दे बन्धन, बन्दगी आपणी दे समझाईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक नाम ला अगम्मा चन्दन, परदा ओहला काया मन्दिर अंदर दे चुकाईआ। लख चुरासी आवण जावण पतित पावन रहे कोई ना फंदन, फाँसी

जम गल ना कोए लटकाईआ। तूं साहिब समरथ दीन दयाल सदा बख्शंदन, बख्शिश रहमत आपणी दे कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त दर ठांडे तेरे वस्त अमोलक मंगण, नाम निधान श्री भगवान आपणा देणा वरताईआ। दरगाह साची धाम न्यारा दर दरवाज़ा तेरा लँघण, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान चरणां हेठां दब्बण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडा देणा सुहाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस कौर दे घर पिण्ड काला संघा ज़िला जलन्धर ★

ब्यास कहे जन भगत लै जा आपणे दवार, द्वारका वासी जित्थे बैठे सीस निवाईआ। बन्दना डण्डावत सईयदे करदे गुरू अवतार, पैगम्बर सिर ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, दर तेरे अलख जगाईआ। निरगुण जोत कमलापाती तेरी होए उज्यार, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस घर कागद कलम कोई ना लिखणहार, कातब रूप ना कोए धराईआ। सो महल अटल उच्च अगम्म अथाह दए वखाल, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊँच नीच ज़ात पात भरम ना कोए भुलाईआ। धर्म दवारा इक्को दिसे धुर दी धर्मसाल, चार वरनां अठारां बरनां जिस धार विच मिल के तेरा रूप समाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद हो के आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदल दे चाल, चाल निराली जोत अकाली आपणी कल दे प्रगटाईआ। जीव जंत मुरदे सारे दे ज्वाल, नाम रस अमृत अंमिउँ जाम प्याईआ। जन भगतां पूरब जन्म दी लेखे ला घाल, लहिणा देणा धुर दा झोली पाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां जो भविख्तां विच दिता अहिवाल, हाल सब दा खोज खुजाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीना बंधप दीन दयाल, रखक हो के आप होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम दा डंका इक्को वज्जे ताल, तार सतार निरगुण निरँकार निराकार सुरती शब्दी शब्द सुरत देणा हिलाईआ।

शहिनशाही सम्मत २ (२०२३ बिक्रमी) दी लिख्त ख़त्म

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ (२०२४ बिक्रमी) हरि भगत दुआर जेठवाल ★

पहली चेत कहे पुरख अकाल गुर अवतार पैगम्बर आ गए तेरे बच्चे, सम्मत शहिनशाही तिन्न त्रिलोकी आए तजाईआ। जुग चौकड़ी तेरे हुक्म अंदर कौल इकरार कीते पक्के, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। नाम संदेसे लोकमात दे के आए सच्चे, धुर फ़रमान श्री भगवान तेरा इक्क समझाईआ। काया माटी नाता तोड़ के भाण्डे कच्चे, जोती जाते पुरख बिधाते तेरी धार विच समाईआ। दर दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार वेख सर्ब इक्ठे, दुतीआ रूप ना कोए वटाईआ। सच सरनाई बेपरवाही धुरदरगाही तेरी ढठे, माण वड्याई नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीगरे बाद यके, याद विच नाद तेरा गए वजाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी दर ठांडे आए सद्दे, हुक्म सुणया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे खुशी मनाईआ। पहली चेत कहे आह आ गए गुर अवतार पैगम्बर तेरे सूरबीर, बीरता आपणी चार जुग वखाईआ। सचखण्ड दवारे आए घत्त के बिन कदमां वहीर, बेनज़ीर तेरा पन्ध मुकाईआ। पिछली साफ़ करदे लकीर, फ़कीर रहिण कोए ना पाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म बदल तकदीर, तदबीर आपणी इक्क दृढ़ाईआ। शरअ दा रहे ना कोए जंजीर, मज़्हब वण्ड ना कोए वखाईआ। तूं शाह सुल्तान श्री भगवान गहर गम्भीर, गहर गवर तेरे हथ्थ वड्याईआ। पिछला लहिणा मुका कदीम, कुदरत दे मालक आपणा हुक्म सुणाईआ। तेरा मन्दिर रंगीए सच अज़ीम, आलीशान दो जहान नज़री आईआ। जिस विच करे ना कोए तरमीम, धारा विच ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पहली चेत कहे गुर अवतार पैगम्बर वेखे तेरे सुत दुलारे, सुत्यां ल्या उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैं तक्कदा रिहा नज़ारे, निरगुण तेरा खेल वेख खुशी

मनाईआ। मेरे इशारयां विच कोटन वार मेटे जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। अनगिणत वेखे विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर वणजारे, नित नवित आपणी दया कमाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पैगम्बर काग़ज़ कलम शाही कादर कुदरत विच काग़ज़ बणे लिखारे, अक्खरां वण्ड वण्डाईआ। हुक्मे अंदर चलदे वेखे सूरज चन्द सितारे, सताह बिन पता आपणी कार कमाईआ। जल थल समुंद सागर वेखे पर्बत टिले उच्च मनारे, पनघट तेरा राह तकाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत जन दर दरवेश तक्के भिखारे, इच्छया विच भिच्छया मंग मंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे आदि मध पूरे होए ना लारे, सहारे विच खेल खिलाईआ। कलयुग अन्त खेल न्यारे, जिस दी पावे कोई ना सारे, गुर अवतार पैगम्बर खड़े दवारे, दोए जोड़ सीस निवाईआ। चारे बाणी कूकां मारे, चारे खाणी वेख अखाड़े, चारे जुग कढुण हाढ़े, निउं निउं सीस निवाईआ। तेरा लेखा धुर दरबारे, जित्थे जगे जोत अगम्म अपारे, शाह पातशाह नज़री आए इक्क सरकारे, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए समझाईआ। पहली चेत कहे मैं जुग चौकड़ी सब दी वेखी चिन्ता चिखा, ग़मख़ार ग़म दूर ना कोए कराईआ। तेरा हुक्म संदेसा नर नरेशा जुग चौकड़ी तेरे हुक्मे अंदर लिखा, नाता जगत नाल जुड़ाईआ। तेरे नूर ज़हूर चमतकारयां विच दिसा, बेअन्त आपणा परदा ना मूल उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे चाढ़ के उत्ते चिखा, अग्नी तत दिता तपाईआ। सब दे अंदर आपणे आउण दी प्रगट करके इच्छा, आसा होर वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगदे गए भिच्छा, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। तेरा हक दवारा एकँकारा चरणा तों अग्गे किसे ना डिठा, बेअन्त कहि के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सारे मन्न के गए पिता, जिस ने तन वजूद माटी जोती शब्द धार दिता, जन्म जन्म नाल मिलाईआ। थोड़ा थोड़ा हिस्सा वण्ड के कित्ता, केती हुक्म गए सुणाईआ। अन्त अख़ीर दे के पिच्छा, पसचाताप विच्चों बाहर कढाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी जगत निशानी वाला चिठ्ठा, अक्खरां नाल सुणाईआ। जो टकयां नाल जगत वणजारयां हथ्थ विका, कीमत ठग्गां वाली रखाईआ। जगत शाही दा बदलदा रिहा सिक्का, हकूमत हुक्म विच वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैनूं दस्स के गए हिका, इक्का नाउं जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए समझाईआ। पहली चेत कहे गुर अवतार पैगम्बर वेख आपणे योद्धे, बांके सोहणे नज़री आईआ। जिन्हां ने नित नवित तेरे अरदासे सोधे, कलमयां विच सीस निवाईआ। तन सरीर वस्त्र पा के चोग़े, वजूद गए हंढाहीआ। गा के सच सलोके, सोहले जगत सुणाईआ। चरण कँवल तेरे धो के, चरणोधक रसना मुख लगाईआ। निरगुण निरगुण धार हो के, एका तेरा नाम सुणा अन्त सृष्टी

विच्चों गए रो के, भाणा मन्न धुरदरगाहीआ। सब नूं इक्ठे दिते मौके, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। जिस वेले प्रगट होवां निर्मल जोत हो के, तन शरीर ना कोए रखाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा सब तों खोह के, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी जो बीज आए बो के, सब दा लहिणा वेख वखाईआ। जो ढोआ आए ढो के, लोकमात धराईआ। सब नूं अन्तर वेखां जोह के, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पहली चेत कहे आपणे गुर अवतार पैगम्बर वेख सूरबीर सुल्तान, महाराजे पलकां वाले नज़री आईआ। तेरी मन्नदे रहे आण, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। तेरे नाम दा दस्सदे गए विधान, जगत विद्या नाल कुड़माईआ। अक्खरां वाला दे के ज्ञान, सिफ्तां नाल सालाहीआ। संदेसयां विच कहि के गए मेहरवान, महबूब धुरदरगाहीआ। दीन मज़्हब वण्ड विच जहान, मानव मानव नाल लड़ाईआ। तैनूं दस्स के बेपहचान, रूप रंग तों बाहर गए दृढ़ाईआ। चक्र चिन्न्ह ना कोए निशान, नेत्र नैण ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्ह्आईआ। पहली चेत कहे आपणे गुर अवतार पैगम्बर वेख जो करदे गए याद, यद तेरी नज़री आईआ। जिस कारण तूं रचना रची आदि, मध आपणा हुक्म वरताईआ। अन्त दस्सया ना किसे जुगादि, परदा अग्गे ना कोए उठाईआ। हुक्मी सुण तेरी आवाज़, शब्दी ढोले गाईआ। बिन किरपा खोल्ह्या किसे ना राज़, बिन रहमत रंग ना कोए चढ़ाईआ। बिन हुक्म सुणे कोई ना नाद, धुन धर्म ना कोए जणाईआ। बिन संदेसे कोई ना जाए जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। तेरा सोहणा जेहा समाज, गुर अवतार पैगम्बर नज़री आईआ। जेहड़ा कदे ना होवे बरबाद, जड़्ह सके ना कोए उखड़ाईआ। तेरे नाम दा करदे सिमरन पूजा पाठ, नाम न्याज़ तेरा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे उठाईआ। पहली चेत कहे क्यों गुर अवतार पैगम्बर सद्दे, सच दे जणाईआ। क्यों विष्न ब्रह्मा शिव दस्त बद्धे, बन्दना सीस निवाईआ। क्यों दीपक निर्मल जोत जगे, तत सरीर ना कोए वड्याईआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बर लोकमात कोई ना भज्जे, चार कुण्ट फेरा पाईआ। क्यों मंजल चढ़े ना कोई उपर शाह रगे, पर्दा सके ना कोए हटाईआ। क्यों आत्म रस मिले ना मज़े, रसना स्वाद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला भरम देणा मिटाईआ। पुरख अकाल कहे सुण चेत मेरे सपूते, धुर शब्द दयां सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरे बूटे, चोटी जड़्ह आपणे हथ्थ रखाईआ। मातलोक हुक्मे अंदर घल्लां अंदर धरती वाली कूटे, कुटीआ तन वजूद बणाईआ। सच प्रेम दे दे के हूटे, हुलारा दो जहान रखाईआ। आपणे नाम दी भिच्छया पावां एहनां दे ठूठे, वस्त अगम्म वरताईआ। बन्द करा के काया वाले कूज़े, हुक्मे अंदर फिराईआ।

भेव खुल्हा के गूझे, शब्दी धुन शनवाईआ। एसे कारण मेरीआं सिफ्तां अंदर कूके, कूक कूक सुणाईआ। किसे समझ ना आई दूजे, परदा सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरी जोत धार दा नूर, नुराना इक्क चमकाईआ। नाम भण्डारा कर भरपूर, भरम गढ़ तुड़ाईआ। प्रेम खुमारी दे सरूर, सति विच रखाईआ। साची दे तूर, धुन नाद शनवाईआ। हुक्मे अंदर कर मजबूर, भाणा सृष्ट मनाईआ। अन्तिम नाता तोड़ के काया पंज तत कूड़, आपणे विच समाईआ। जो लेखा लिख के जाण ज़रूर, ज़रूरत धुर दी इक्क समझाईआ। इक्क अकाल कर मशहूर, मश्वरे शब्द गुरू दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वासी मेरे घर दे, घराना इक्को नज़री आईआ। जुग चौकड़ी बण के बरदे, बन्दगी लोकमात दृढ़ाईआ। साची मंज़ल दीन दुनी दी चढ़दे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण पन्ध मुकाईआ। हुक्म दा ढोला इक्को पढ़दे, जो हुक्म विच समझाईआ। जगत विकारे नाल लड़दे, हँकारा गढ़ तुड़ाईआ। इक्को सच संदेश विचरदे, विचला भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला खेल इक्क सुणाईआ। अगला खेल बण सरोता,
६४३ पुरख अकाल दए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरी धार विच ला ला थक्के गोता, आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। ६४३
हुक्मे अंदर दे के गए होका, संदेसा धुरदरगाहीआ। इक्को गा के गए सलोका, सोहला ढोला इक्क जणाईआ। कलयुग
२० अन्त अख़ीर नव नौ चार पिच्छो पुरख अकाल आपणे हथ्थ रखे मौका, दूसर चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप २०
हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। साची खेल करे हरि करता, मालक धुरदरगाहीआ। निरवैर हो के नूर धरदा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा नाम ढोला गीत कलमा गुर अवतार पैगम्बर पढ़दा, सरगुण हो सलाहीआ। सो पूरब लेखा लहिणा पिछला वेखे चिर दा, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। कुछ कौल इकरार शब्दी सुत घर थिर दा, सचखण्ड निवासी दए दृढ़ाईआ। जिस कारण निरवैर हो के फिरदा, निराकार वेस वटाईआ। उस दा गेड़ा अग्गे गिड़दा, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। पहली चेत सुण, गुर अवतार पैगम्बर दर होए इक्क्ठे, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सब दे खोल्ह चौंह जुगां दे हुक्मदारी दे पटे, पटने वाला सब दी करे अगवाईआ। उच्ची कूक सुणावे गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडी कीमत पै गई विच टके, अक्खरां वाले गुरू हट्टां विच विकाईआ। सब दे चीथड़ वेखो फटे, धुर दा रंग ना कोए रंगाईआ। तुसीं गुर अवतार पैगम्बर बण गए बाणीआं वाले वट्टे, योद्धा सूरबीर ना कोए अख्वाईआ। आपणयां दीनां मज़बां नूं वेखो तुहाडयां सिक्खां मुरीदां दे अंदर

मन ने पाए रट्टे, झगड़े विच लोकाईआ। तुहाडे हुंदयां उन्हां दी मैल कोई ना कटे, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। नूर दिसे ना किसे अक्खे, लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जे तुसीं मुर्शद उन्हां दे पक्के, मुरीद पक्के लओ बणाईआ। काहनूं सदी चौधवीं सारे खांदे धक्के, मक्के मदीने सार कोए ना पाईआ। वेखो आपणे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठे, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। ठग चोर यार अंदर फिरदे नठ्ठे, हरामखोर अक्ख बदलाईआ। बहू बेटीआं रहे तक्के, पंडत पांधे मुल्ला शेख ग्रन्थी पन्थी पई दुहाईआ। अग्गे बणो ना कोए गुर अवतार पैगम्बर कच्चे, कच्ची यारी ना कोए निभाईआ। एसे कारण मैं अन्त अख़ीर पुरख अकाल दे फ़ैसले दस्से, जो माछूवाड़े गया समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सारे करने इक्ट्ठे, लेखा मंगे थाउँ थाँईंआ। हुण किहड़ी कूटे जावो नठ्ठे, भज्जयां राह नज़र ना आईआ। चारों कुण्ट अग्नी मच्चे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। औखी धार विच फसे, फसयां ना कोए छुडाईआ। विच्चों मुहम्मद उठ के हस्से, ताली हथ्थां दिती वजाईआ। सदी चौधवीं मेरी उम्मत पई डूंघे खते, आपणा हिसाब रिहा मुकाईआ। असीं इन्हां कोलों अक्के, जिन्हां नूं परवरदिगार रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो हुण खेल दस्सो अगली, पिछली कीती प्रभ ने मंग मंगाईआ। टिल्ले पर्बत तक्को जंगलीं, कूटां दिशां फोल फुलाईआ। आपणी आपणी फोलो बग़ली, बग़लगीर रिहा सुणाईआ। जिस कारण तुहानूं भेजया जगत लई, जुगत जगत दृढ़ाईआ। मुरीदां ल्याउणा मुर्शद दे हज्ज लई, साचा काअबा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा आपणा हुक्म जणाईआ। पहली चेत सुण उठ सुत्या जाग, हरि करता आप जगाईआ। गोबिन्द कहे इक्क मेरी सुण आवाज़, बेपहचान दयां सुणाईआ। पहली चेत कहे मैनूं खोल्ह के दस्सो राज़, परदा इक्क उठाईआ। मैनूं पूरब लहिणा सब दा याद, भुल्ल कोए ना जाईआ। मैं सब दे सुणे नाद, जो धुनां विच शनवाईआ। उस दा खेल वेखणा आज, जो भविख्तां विच दृढ़ाईआ। तक्कां सच तमाश, हुक्म धुरदरगाहीआ। आपणी दस्सो सारे ख़ाहिश, आसा की वधाईआ। की कुछ तुहाडे अन्त कोल पास, वस्त दयो जणाईआ। मेरा दिहाड़ा आया ख़ास, ख़ालस हो के समझाईआ। मैं रख के बैठा रिहा विश्वास, विश्व अंदर ध्यान लगाईआ। जिस वेले मेरा कीता प्रकाश, ब्रह्मे दे मुख विच्चों कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पहली चेत कहे मैनूं दिसदी पिछली याद पुराणी, पूरब दयां दृढ़ाईआ। एह शब्द सतिगुरू कहाणी, तत्तां वाली ना कोए चतुराईआ। एहनूं समझे ना विष्नूं वाली लक्ष्मी सवाणी, स्वांग आपणा जो वटाईआ। ब्रह्मे पारब्रह्म तों सुणी कहाणी, सुरस्ती रो के दए दुहाईआ। पार्बती शंकर दी बण के राणी, शम्भू

अग्गे वास्ता पाईआ। त्रैगुण बण वड्डी विद्वानी, आपणे गुणां विच समझाईआ। पंज तत खेल महानी, तत्व तत विच समाईआ। पहली चेत कहे मेरी मंज़ल उह रुहानी, रूह बुत्त तों बाहर नज़री आईआ। मैं जद वसां तद वस्सा जूह बेगानी, हूबहू प्रभ दे विच समाईआ। मेरा लेखा जाणे कोई ना कलम कानी, कायनात ना कोए सुणाईआ। मेरी उह कलाम अमामी, अमलां तों रहत नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा लेखा सुणदा रिहा जबानी, जेहवा नाल चतुराईआ। मैं फिरदा रिहा ज़िमीं असमानी, आसण आपणा सद बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं रिहा सुणाईआ। चेत कहे तुसीं कल्ल होए तेई अवतार, भलक समझ किसे ना आईआ। तुसीं भलक छड्ड गए संसार, मैं साल बसाला आपणा रंग वखाईआ। मेरी नित खिड़दी रहे गुलज़ार, खिज़ां बसन्त रूप बणाईआ। तुसीं पैगम्बर बणदे रहे यार, परवरदिगार इक्क मनाईआ। फेर छड्ड के गए संसार, साथी नज़र कोए ना आईआ। गुरू दस कर के गए इंतज़ार, निमस्कार सीस झुकाईआ। तत सरीर पूरा कर इकरार, बेनज़ीर विच समाईआ। मैं सब दे नाल करदा रिहा तकरार, हुक्मे विच हुक्म बदलाईआ। मेरा उह सुहञ्जणा वार, जिस वार दी वारता अजे तक्क ना किसे लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चेत कहे मैं आया मंगलवार, आपणा मंगलाचार दयां दृढ़ाईआ। प्रभ नूं निमस्कार करदे रहे तेई अवतार, मेरा त्योहार सारे जगत मनाईआ। मूसा तूं एसे दिन होया उज्यार, ईसा इस्म इक्क समझाईआ। मुहम्मद नूं खाब दिता वखाल, हमद इक्क शनवाईआ। नानक मेल निरगुण धार, जोत नूर रुशनाईआ। गोबिन्द आपा ल्या संभाल, पुरख अकाल वज्जी वधाईआ। दुष्ट दमन एसे दिवस नहाता ओस ताल, जिस नूं सुहावा आप बणाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी करदे गए भाल, सेवक हो के सेव कमाईआ। मन्नदे आए सवाल, बेनन्ती सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा इक्क समझाईआ। चेत कहे मेरी आई मंगलवारी, वारता दयां जणाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल रिहा इशतयारी, चार जुग फड़न कोए ना पाईआ। खोजी खोज खोजदे रहे वारो वारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। कागद कलम शाही लिखदे रहे लिखारी, कातब हो के सेव कमाईआ। जिस दा नूर आदि जुगादि सदा उज्यारी, नित नवित डगमगाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अपारी, अपरम्पर स्वामी बेपरवाहीआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, सति दवारे सोभा पाईआ। जिस दा गोबिन्द शब्द अधारी, तन वजूद मिली वड्याईआ। पूरन पूरन ब्रह्म पसारी, पारब्रह्म खेल खिलाईआ। गोबिन्द लहिणा देणा उधारी, पूरब झोली पाईआ। अग्गे खेल होणी अपारी, अपर अपार दए दृढ़ाईआ। सम्मत शहिनशाही तिन्न करे त्यारी, त्रैगुण दाते सेव कमाईआ। ख़बरदार कर संसारी

भण्डारी, सोया रहिण कोए ना पाईआ। शंकर करे ना कोए ग़द्दारी, जो घड़या भन्न वखाईआ। बचया रहे ना कोए अवतारी, पैगम्बरां लए जगाईआ। गुरुआं कर उसारी, शुरु दी खेल बणाईआ। नव नौं चार पिच्छों आई वारी, सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। रसना दा रहे ना कोए प्रचारी, पर्चा शब्द देणा पाईआ। दीना मज़बां लैणा उठाली, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। अगले खेल दी वेखो चाली, चाल निराली आप जणाईआ। जो गोबिन्द घाल घाली, तिस दा लहिणा देणा मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणे सवाली, दर ठांडे सीस निवाईआ। तेरा खेल जोत अकाली, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी अंदर बुद्धी बाली, अकल शकल चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म देणा सुणाईआ। सुणाए हुक्म धुर स्वामी, समें समें वड्याईआ। लेखा जाणे अन्तरजामी, अन्तरगत वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणी पूरी करो भविख्त बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। लोकमात वेखो जा के चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ वेखो पाणी, तट किनारे रहिण कोए ना पाईआ। सुरती शब्दी वेखो हाणी, गृह गृह परदा लाहीआ। चतुर सुघड़ सुचज्जी वेखो सवाणी, जो पतिपरमेश्वर कन्त हंढाहीआ। प्रेम प्रीती अंदर वेखो नढ्ढी बाली, अंजाणी रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणा वेखो कौल इकरार, इक्क इकल्ला रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग नाल करयो ना कोए तकरार, झगड़े विच ना कोए लड़ाईआ। दीन दुनी वेखो आपणा संसार, संसारी भण्डारी नाल मिलाईआ। पहली चेत रुत्त आ गई बहार, सुहञ्जणी रूप बदलाईआ। इक्को हुक्म देणा अन्त अख़ीरी वार, वारस बण के जाओ चाँईं चाँईंआ। एह खुशीआं दा त्योहार, करो आपणा विवहार, लोकमात साची कार कमाईआ। आपणे आपणे लओ उठाल, झगड़ा छड्ड के शाह कंगाल, मेल होणा दीन दयाल , दीन दुनी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सुणो हुक्म बिन कलम शाही लेख, दस्त वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जा के वेखो दीन मज़्हब दा देस, जो दिशा आए वण्डाईआ। मूंड मुंडाए तक्को धारी केस, बोदी जंञू सब दा फोल फुलाईआ। शरअ सुन्नत तक्को तक्को झूठा भेस, भेख अंदरों खोज खुजाईआ। लेख तक्को आपणा जो लिख के आया दस दस्मेश, अग्गे सके ना कोए मिटाईआ। हुक्म देवे इक्क नरेश, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हुक्म इक्को इक्क सुणाईआ। पहली चेत सच जणावांगा। अन्त अख़ीरी हुक्म दृढ़ावांगा। गुर अवतार पैगम्बर मात घलवांगा। कूड़ी क्रिया वेख के आवण अडम्बर, हिसाब किताब सर्ब वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणावांगा। गुर अवतार पैगम्बरो होवो ख़बरदार, पिछली ख़बर सुणाईआ। योद्धे सूरबीर बणो सरदार, सद्दा देवे धुरदरगाहीआ। लख चुरासी वेखणी अंदर बाहर, निरगुण सरगुण फोल फुलाईआ। चोटी पर्बत टिल्ले तक्कणा जंगल पहाड़, जूहां कंदर फेरा पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तक्कणे पुरख नार, स्त्री मर्द वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लेखा लिखणा पापी अपराधी गुनाहगार, जूठा झूठा बचया रहिण कोए ना पाईआ। सन्त भगत खोजणे नाल प्यार, प्रेम विच्चों प्रेम प्रगटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखणा आपणी धार, धरनी धरत धवल वेस वटाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दे सिर ते दए प्यार, प्रीतम हो के प्रेम जणाईआ। पिछला लेखा वेखो जिस दे विच थित मिली सोलां हाढ़, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सुणो सच नाम दी थापी, पुश्त पनाह दयां लगाईआ। तुहाडा हुण नहीं तन खाकी, पंज तत ना वण्ड वण्डाईआ। हुक्मे वाली गोबिन्द पाती, पत्रका दिती सुणाईआ। शब्दी घोड़े चढ़ो राकी, रकबा ख़लक ख़ुदाई देणा मिटाईआ। साची चाल रखणी बांकी, कदम कदम ना कोए बदलाईआ। तुहाडी पूरी करां भविख्त वाकी, वाक्फकार अगले दयां बणाईआ। जेहड़ी कथा अजे नहीं वाची, सो वाचक ज्ञान दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कार, नमस्ते सजदा सीस निवाईआ। तेरी रहमत परवरदिगार, ख़िदमतगार मंग मंगाईआ। मेहर नज़र लैणी उठाल, शाह कंगाल लैणे तराईआ। हडुं बालक तेरे लाल, नन्न्हे बच्चे सोभा पाईआ। खेल वेखीए जगत जंजाल, लोकमात फेरा पाईआ। सन्त सुहेले लईए भाल, गुरमुख खोज खुजाईआ। जगत अवल्लड़ी वेखीए चाल, कूड़ कूड़यार परदा लाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ तक्कीए धर्मसाल, अठ्ठ सठ्ठ भज्जीए वाहो दाहीआ। कवण हुक्म धुर दा रिहा पाल, कवण मनमति विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे तुसीं वेखो दीन दुनी दा हाल, मैं हालत दयां बदलाईआ। झगड़ा पावां शाह कंगाल, नौ खण्ड दए दुहाईआ। फल रहिण ना देवां किसे डाल, पत्त टहणी आप हिलाईआ। शाह सुल्तान होए ज़वाल, बेहाल देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तुसां भज्जणा वाहो दा, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। मैं दीन दुनी दयां हिला, दीनां मज़्हबां विच लड़ाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम इक्क दूजे नाल दयां लड़ा, खुदा खुद खुदी विच आपणा फेरा पाईआ। कलयुग जोबन दयां वधा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कूड़ नग़ारा दयां वजा, डंका झूठ नाल शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म सुण लओ सख्त, सख्ती नाल दृढ़ाईआ। बड़ा औखा सम्भलणा वक्त, व्यक्ति देण दुहाईआ। कोटां विच्चों चोटां विच्चों प्रभ दा विरला होणा भगत, जिस आपणा रंग रंगाईआ। साधां सन्तां अंदर रहिण नहीं देणी किसे शक्त, शक सब नूं देणा पवाईआ। पूरी दीन दुनी दा उलटा कर के तख्त, गुरू बच्चे देणे बदलाईआ। लहिणा देणा दस्त बदस्त, जगत उधार ना कोए रखाईआ। जन भगत कट के जन्म मरन दा कष्ट, कष्ट रोग देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पहली चेत कहे क्यों आया सम्मत तिन्न, शहिनशाही नाउं धराईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दा लहिणा देणा लैणा गिण गिण, दो जहानां वेख वखाईआ। सतिजुग दा साचा प्रगट करना चिन्न, धुर दा नूर कर रुशनाईआ। दीन दुनी धरनी धरत धवल लैणी मिण, पैमाइश गुर अवतार पैगम्बरां हथ्थ फड़ाईआ। हुक्मी खेल आपणा करना खिन, ख़ालक ख़लक समझे कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार जणाए तिन्न दिन, त्रैभवन धनी आपणा हुक्म वरताईआ। पहली चेत कहे की खेल होवे सृष्टी, श्रेष्ठ दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे झगड़ा पैणा टांक जिसती, इक्क दो समझ किसे ना आईआ। धुर दी धार किसे ना दिसदी, जगत विद्या होए हल्काईआ। अग्गे सफा उठणी किस किस दी, किस्मत कवण बदलाईआ। जगत लोकाई वेखणी पिटदी, पटने वाला खुशी मनाईआ। जिस दी धार अगम्मी चिट दी, बिन अक्खरां लेख वखाईआ। कुछ खेल रविदास दी इट्ट दी, जिस मिली माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। साची करनी कार कमवांगा। गुर अवतार पैगम्बर खेल रचावांगा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कल वरतावांगा। भगत सुहेले गुरमुख चुण, साचा नूर जोत चमकावांगा। लख चुरासी वेख गुण अवगुण, परदयां अंदरों पड़दे आप उठावांगा। गुर अवतार पैगम्बरां कीमत पा के मुल्ल, अमुल्ल आपणी कार कमावांगा। चार वरन अठारां बरन समझा इक्को कुल, आत्म परमात्म आपणे रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणावांगा। साचा हुक्म इक्क सुणाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। हो कृपाल वेख वखाएगा। बेमिसाल वेस वटाएगा। जगत अवल्लड़ी चाल चलाएगा। जगत दलाल रहिण कोए ना पाएगा। गुर अवतार पैगम्बर छड्ड जगत धर्मसाल, सचखण्ड साचे सच विच समाएगा। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाएगा। धुर दा हुक्म इक्क सुणावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। सतिजुग साचा राह चलावांगा। आपणा तोल आपे तोलो, कंडा तराज़ू नाम हथ्थ फड़ावांगा। सारे मिलके इक्क धुर दा नाम बोलो,

सोहँ सोहला इक्क सुणावांगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बरन अठारां परदा खोल्हो, दीनां मज़्बां झगड़ा मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा दर इक्क दरसावांगा। साचा दर इक्क दरसाएगा। दरगाह साची भेव चुकाएगा। सचखण्ड दवारे परदा आप उठाएगा। मुकामे हक सोभा पाएगा। लाशरीक नूर चमकाएगा। पुरख अकाल नज़री आएगा। परवरदिगार सांझा यार अख्वाएगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती जाता डगमगाएगा। चार कुण्ट दहि दिशा नाम संदेसा इक्क सुणाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल वण्डे कोई ना हिस्सा, हिसाब किताब पिछला सर्ब मुकाएगा। प्रेम प्रीती साची रंगत सब दे अंदर ला के खिच्चा, खिच्च आपणी इक्क समझाएगा। पुरख अकाल बण के पिता, पतिपरमेश्वर जोड़ जुड़ाएगा। जेहड़ा मार्ग किसे नहीं डिठ्ठा, सो अगला राह वखाएगा। फड़ के बाहों वड्डा निक्का, घर इक्को इक्क सुहाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा शाह सुल्ताना इक्क सुणाएगा। सच सुनेहड़ा इक्क सुणावांगा। सरसे उपर होड़ा भेव खुल्हावांगा। हँ ब्रह्म आपे बौहड़ा, पारब्रह्म जोत चमकावांगा। शाह सुल्तानां धक्का लग्गणा थोड़ा, रूसा चीना डण्ड पवावांगा। डूँग्घी धार फेर के घोड़ा, फरंगी वागां नाल हिलावांगा। मुहम्मद दस्स के जवाब कोरा, सदी चौधवीं भेव चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल इक्क वखांवागा। चेत कहे की खेल प्रभू करावेंगा। पुरख अकाल कहे जन भगतां कर के हेत, हितकारी हो के वेख वखावांगा। दीन दुनी दा होणा खेत, खेल आपणी इक्क रचावांगा। सच दुआर प्रगटा के देस, दिशा आपणी इक्क समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणावांगा। सच संदेश दी सुण के बात, बावन लई अंगड़ाईआ। सुण साहिब मेरे कमलापात, तेरा मेरा मेरा तेरा रूप इक्को नज़री आईआ। पिछला लेखा कर याद, बल नगरी विच समझाईआ। बच्चयां वाली फ़रयाद, तेरी झोली पाईआ। तेरां सौ सतासी साध, बैठे राह तकाईआ। जेहड़ा तेरा नाँ अल्ला वाहिगुरू राम याद नहीं करदे लै के नाउँ गॉड, होर दा होर बैठे बदलाईआ। उहनां दी भगती मूल ओहनां दी आवाज़, जो सृष्टी विच्चों वक्खरी दिती समझाईआ। सच बणा समाज, धुर समग्री दिती टिकाईआ। ओहनां दे लहिणे दा दे जवाब, मंगणहारे मांगत बैठे डेरे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। चेत कहे मैं भरदा हामी, हमसाजण हो के रिहा जणाईआ। तूं पुरख अकाल अन्तरजामी, घट भीतर वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी सदा निहकामी, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बरां कोलों तेरी सिफ्तां वाली सुणी बाणी, जो ढोलयां रागां नादां विच सुणाईआ। इशारयां

विच तेरी दस्सदे गए निशानी, भविख्तां विच अलाईआ। सो साहिब सुल्तान कलयुग अन्तिम कर मेहरबानी, महबूब तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। बावन कहे मेरे बावन, बावन बावन नज़री आईआ। जेहड़े बाले नढ्ढे तैनूं गावण, तेरे विच समाईआ। तेरा ध्यान लगावन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरा प्रेम प्यार खावण, जगत भोजन ना कोए वड्याईआ। तूं बण के बुढ्ढा ब्राह्मण, बल दवारे डेरा लाईआ। पिछले रिषी बणे विच ज़ामन, जम्मू वाले देण गवाहीआ। तेरा नाउँ पतित पावन, पुनीत दे कराईआ। इक्क होर वेख निशानन, निशानी दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दे चुकाईआ। बावण कहे राजे बल दा वेख चोबदार, कलीआं वाला कमीज़ नज़री आईआ। हथ्थ विच नेज़ा ओह हथियार, जो दरबानां दए फड़ाईआ। अग्गे हो के हो जा ज़ाहर, जिस नूं शब्द विच ल्या मंगाईआ। एह कोई रसना दा नहीं तकरार, लिख के हुक्म ना कोई पुचाईआ। पिछला उधार, साहमणे रिहा चुकाईआ। ओह पंजे हो जाओ ख़बरदार, भैण भाई लओ अंगड़ाईआ। तुहाडे नाल बणी बहार, सोहणा रूप वखाईआ। तुहाडा कर्ज़ा दयां उतार, बाकी आपणे विच ना कोए छुपाईआ। जिन्हां पिच्छे गुरमुखो तुहाडे घर घर दा खाधा आहार, दर दर फेरा पाईआ। एस वेले नूं तक्कदे रहे गुरू अवतार, पैगम्बर अक्ख खुलाईआ। इस तों अगला वेखो साल, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। रोंदे फिरने शाह कंगल, शरअ विच दुहाईआ। ओहनां दी करां संभाल, जिन्हां सुत्तयां ल्या उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। बावन कहे कुछ होर कीता कौल, अजे तक ना कोए समझाईआ। जिस वेले निरगुण हो के आवें उपर धौल, धर्म दा रूप बदलाईआ। कुछ लेखा रख्या गोबिन्द नाल जो जद अन्तर दिती पाहुल, अमृत रस चुआईआ। कुछ लहिणा देणा जो हरबंस सिंघ ने बन्न्ह के लयांदे चौल, जो गोबिन्द दा जोड़ा झाड़ के खुशी मनाईआ। किसे नाल मारना नहीं रोल, रौले विच्चों भगत लैणे तराईआ। सब दा लहिणा देणा फोल, कुतबखाना सब दा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला खेल आप जणाईआ। बावन कहे वेख पंजे नन्न्हे बच्चे, बाल अवस्था नज़री आईआ। उह अन्तिम होए सच्चे, साजण मिल्या धुरदरगाहीआ। तेरे राह रहे तक्के, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। लेखे लाउणे तत अठ्ठे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध भेव ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। बावन कहे ओह वड्डी कन्या, जगत मिली वड्याईआ। जिस दा प्यार मुहब्बत विच मन्नया, मोह विच सरनाईआ। फेरा माराया घर घर छप्पर छन्नया, कोझे कमलयां ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। भेव समझाया नहीं जगत नेत्र अन्न्हयां,

विद्वानां परदा आप रखाईआ। जिस दा विवहार त्योहार सदा जुग चलया, चलत करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। बावन कहे चार भैणां ते इक्क वीर, पंजां रंग रंगाईआ। जन भगतां घर घर घत्त वहीर, दूती दुश्मण मेल मिलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कट शरअ जज़ीर, ऊँच नीच रंग रंगाईआ। अंदरों बदल सर्ब तकदीर, तदबीर इक्क समझाईआ। सतिगुर शब्द बण अगम्मा पीर, परा पसन्ती मधम बैखरी तों परे कीती पढ़ाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़या कबीर, कबरां दा लेखा गया मुकाईआ। सो मार्ग दिता भगतां अख़ीर, दो अक्खरां नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरनगति इक्क समझाईआ। बावन कहे वेख बाली बाला, बचपन खोज खुजाईआ। उह बच्चे नढ्ढे तेरे प्रेम दी अन्तर रखदे माला, मन का मणका आप भवाईआ। जिन्हां दे कारण मार्ग कर सुखाला, गुरमुखां दे वड्याईआ। रहे ना जगत जंजाला, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। झगड़ा रहे ना काल महाकाला, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। उन्हां दा दस्से अहिवाला, जो बावन भोजन त्यार कर के ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। पुरख अकाल कहे सुण बावन मेरे सति सरूप, बहुरंगा दयां जणाईआ। उह बाले मेरे मेरे पूत, पिता पुरख अकाल मनाईआ। जिन्हां ने प्यार दी माला ब्रह्मे शिव दा सति बणना सूत, सूत्रधारी आप दृढ़ाईआ। लेखे लाउणे शाह कंगाला, कोझे कमले गोद उठाईआ। सोहँ दस्स के नाम सुखाला, मंत्र अन्तर दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। बावन कहे मेरी अन्त पुकार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरा लहिणा दिता उतार, कर्ज़ा मूल चुकाईआ। की भगतां दिता आधार, धुर दी भेंट चढ़ाईआ। की आया तैनूं स्वाद, सच देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। श्री भगवान कहे सुण बावन सच प्यारे, सति दयां समझाईआ। जो भगतां दिता अहारे, आहर विच दिता लगाईआ। मैनूं स्वाद नहीं आया कोटन कोटि जुग विच संसारे, रसना रस ना कोए वड्याईआ। जन भगत राह तक्कदे रहे आपणी अक्ख उग्घाड़े, दिन दिहाढ़े वेख वखाईआ। जेहड़े पदार्थ विष्नूं कर नहीं सक्या त्यारे, जगत बीज ना कोए उपजाईआ। उह मिले भगतां दे प्यारे, मैं खा खा ख़ुशी मनाईआ। सिर्फ़ इक्क वार सताई पोह थोड़ा खा के गए गुर अवतारे, विष्न ब्रह्मा शिव तुहाडे हत्थ कुछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। बावन एह खाणा शब्दी धार, जो शब्द विच सुणाईआ। रविदास दा घर वेख अपार, गुरमुख गृह वज्जे वधाईआ। संदेसे विच दिता सिख़ाल, सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। कुछ खाणा दयो खवाल, गिणती गणत गणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सच खाणा इक्क अगम्मा, आगमन विच सुणाईआ। जिस नूं गाए कोई ना दमा, रसना ना कोए वड्याईआ। रस माणे कूड़ ना चम्मा, चम्म दृष्टी ना कोए समझाईआ। समझा सके कोई ना अम्मां, दूसरी मति ना कोए अख्वाईआ। भेव पा ना सके ब्रह्मा, ब्रह्म मति अन्त ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। बावन की खाणा दस्सां पकवान, भगतां पक्का ल्या बणाईआ। खुशीआं अंदर ढोले गाण, तूं मेरा मैं तेरा वज्जे वधाईआ। चरण कँवल ध्यान लगाण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नाता तोड़ के जीव जहान, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। बाकी रुस्स गए सर्ब महिमान, गुरमुखां नाल प्रेम वधाईआ। एह खेल बड़ा महान, जुग चौकड़ी ना कदे वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो निरगुण निरवैर निरँकार हो के करे आन, दूजे समझ ना कोए समझाईआ। बेनन्ती कर परवान, परवाने पिछले वेख वखाईआ। दे के धुर फ़रमान, धर्म दी धार दिती दृढ़ाईआ। शब्दी दे के ज्ञान, सुरती सुरत खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा झोली पाईआ। बावन कहे मैं वेख्या खेल अपारा, अपरम्पर दिता वखाईआ। जुग चौकड़ी न्यारा, शास्त्रां बाहर पढ़ाईआ। पूरब दे अधारा, लेखा आप मुकाईआ। पंचां मेल धुर दरबारा, दरगाह साची रंग चढ़ाईआ। जन्म जन्म दा कर्ज उतारा, मकरूज खुशी मनाईआ। बख्शिश विच बख्श चरण प्यारा, चरणोदक जाम प्याईआ। काग़ज़ कलम बण लिखारा, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। ऋषीआं दा अधारा, सब दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। बावन कहे जन भगतो वेख्या विवहार, विवहारी दिता वखाईआ। करया खेल अपार, अपरम्पर बेपरवाहीआ। पाँधी बण के आया पन्ध मार, पैंडा जगत मुकाईआ। जिन्हां दे गृह खाधा आहार, प्यार अगला ल्या बणाईआ। जन्म लैणा पए ना दूजी वार, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। इक्क नाल तारे परिवार, परम पुरख बेपरवाहीआ। भगतां दा श्रृंगार, सोहणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे देवे वड्याईआ। जन भगतो तुसीं दो जहानां विच अमीर, अमरापद दयां वखाईआ। पुरख अकाला बण ग़रीब, घर घर फेरी आया पाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां पूरी कर उम्मीद, आसा मनसा विच समाईआ। सिध्धी कर के दीद, दीद नूर करे रुशनाईआ। गृह गृह सोहँ ढोला गाया गीत, मन्दिर मसीत पन्ध मुकाईआ। अग्गे मार्ग दस्स अख़ीर (ठीक), त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। जिन्हां दी विछोड़े अंदर प्यार अंदर मुहब्बत विच निकली चीक, चाकर हो के सेव कमाईआ। गुरमुख रिहा कोई ना नीच, नीचों ऊँच दए बणाईआ। शब्दी डोरी गंढु लई पीच, सुरती नाता ल्या जुड़ाईआ। जन भगतो किसे दवारे मंगण ना जायो भीख,

बिनां पुरख अकाल तों देवण वाला नज़र कोए ना आईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए उडीक, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। सो ठाकर आया ठीक, ठोकर नाम दए लगाईआ। थोड़ा जेहा समां कट लओ वट कसीस, कसर सारी दए कढाहीआ। तुहाडी अंदरों साफ़ कर दए नीत, निगाहवान हो के करे सफ़ाईआ। गुरमुख रहिण नहीं देणा कोई पुनीत, पवित्र देणा बणाईआ। इक्को नाम दी कर बख्शीश, भण्डारा देणा भराईआ। भगत उधारन दी प्रभ नूं सदा रीझ, बिन भगतां मिलण कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। बावन कहे की खाधां रुक्खा सुक्का, सच दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेख के आपणयां पुत्तां, सब कुछ दिता भुलाईआ। ओनां नूं आपणी गोदी चुक्कां, जिनां नूं कमला कहे लोकाईआ। मेहरवान हो के तुठां, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। अग्गे भेव रहिण नहीं देणा गुज्झा, शाह सुल्तानां दयां हिलाईआ। वेख्यो दीन दुनी विच पैणीआं पुछां, किथ्थे वसे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। बावन कहे प्रभू तेरा किस बिध भगतां थाल परोसा, परम पुरख दे दृढ़ाईआ। की खाणा दिता कोसा, अग्नी नाल तपाईआ। श्री भगवान कहे मैनूं प्रेम प्यार मिल्या बहुता, जिस दा तोल ना कोए तुलाईआ। मैं छड्ड के चौदां लोकां, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। छड्ड के मन्दिर मस्जिद शिवदवाले कोठा, तट किनारा पन्ध मुकाईआ। गुरमुखां दे अंदर वड़ के दिता होका, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सोहँ दस्स सलोका, धुर दी करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पिछला रिहा चुकाईआ। बावन कहे मैं नहीं मन्नदा, मेरी तसल्ली दे कराईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगत पहलों आपणी धारों जणदा, जोती नूर विच्चों प्रगटाईआ। फेर मालक बणा तन दा, ब्रह्म नाल वड्याईआ। छड्ड वसेरा छप्पर छन्न दा, दर घर ठांडे डेरा लाईआ। प्रकाश दे के आपणे नूरी चन्न दा, जोती जोत डगमगाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म रूप प्रगटाईआ। मेरा कोई नाता नहीं माटी चम्म दा, आत्म परमात्म रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा धुर दरबारा परवरदिगारा सांझा यारा इक्क सुणाईआ। बावन कहे दस्स उनां दा हिसाब, कुछ लेखा दे वखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणी कढ्ढ उह किताब, जो बिन अक्खरां दिती लिखाईआ। रखी किस महिराब, कवण दवारे दिती टिकाईआ। जिस विच्चों शब्द अगम्मी निकले आवाज़, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। पुरख अकाल कहे ना सवाल ते ना जवाब, ना दिशा ते ना महिराब, ना अक्खर ते ना हिसाब, ना सितार ना रबाब, जो कुछ वेखे ते आपा आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भगतां दा भगवान भगवान भगतां दा

बाप, बाप दा नाम उन्हां दा जाप, प्रभू दा प्रताप, प्रताप धर्म दा साक, इखलाक आपणा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा रिहा चुकाईआ। चेत कहे मेरे अंदर आ गई चिन्ता, कुछ मैनूं दे दृढ़ाईआ। की अग्गे कुछ साधां विच रहिण देवें किणका, कि ख़ाली भाण्डे कर वखाईआ। पुरख अकाल कहे बावन एह मेरा खेल सिर्फ़ तिन्न दिन दा, सृष्टी दी दृष्टी विच्चों इष्ट दयां बदलाईआ। मैं कोई कदमां नाल पैमानयां नाल डिगरीआं नाल कदे नहीं मिणदा, मेरा पैमाना बेइमाना नज़र किसे ना आईआ। जगत बदलना मेरा खेल छिन दा, गुर अवतार पैगम्बर एसे कर के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। चेत कहे मेरा लेखा आवे पिछला अग्गे अक्खां, नैण मूंद दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले गोबिन्द सुत्ता सेज उत्ते कक्खां, खुशीआं आसण लाईआ। मैं वेख वेख हस्सां, दोहां हथ्थां ताली वजाईआ। वेखो पुरख अकाल दा बच्चा, माछूवाड़े डेरा लाईआ। ओसे वेले गोबिन्द ने मेरे (सिर ते हथ्थ रखा), मेरी सुरत दिती बदलाईआ। जां मैं एधर तक्कया प्रेम दा मिल गया गफ्फा, गुफ़त शनीद दी लोड़ रही ना राईआ। मैं कौल विच इकरार विच प्यार विच यार दे नाल हो गया पक्का, पक्की अगली लई कराईआ। गोबिन्द तूं गुरू नहीं होणा कच्चा, पुरख अकाल किहा मैं तेरे कोलों कदे ना नस्सा, विछोड़ा विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहणी रुत्त सुहाईआ। चेत कहे मेरी आ गई रुत्त बसन्ती, मैं देवां माण वड्याईआ। मैं वेखां धुर दा कन्ती, हरि कन्ता बेपरवाहीआ। जिस दी धार खेल बेऐब नूर विच बेअन्ती, बेवा समझ कोए ना पाईआ। विद्या विच पढ़े क्या कोई पंडती, गुर अवतार पैगम्बर की समझाईआ। जिन्हां दी धार ओसे विच्चों जम्मदी, अन्त ओसे विच समाईआ। उह ख़बर की जाणण ओस प्रभ दे कम्म दी, जो दोए जोड़ वास्ता पाईआ। जिन्हां दी धार माटी चम्म दी, तन वजूद नाल कुड़माईआ। उह की खेल समझण श्री भगवन दी, जो भगतां दे अंदर रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अछल अछल्ल दी, वल छल आपणे विच्चों प्रगटाईआ। बावन कहे पुरख अकाल ना बण बावा, भेखाधारी भेख बणाईआ। तेरे उत्ते सब ने रख्या दाअवा, गुर अवतार पैगम्बर उडीक रखाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा पूरब लेखा वेख लै नावां, नव नौ चार खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं थोड़ीआं दिसीआं मांवां, जो भगत सुहेले जण के तेरी झोली पाईआ। उन्हां दा तोल आपणे नाल कर दे सावां, कंडा तराज़ू अवर ना कोए वटाईआ। मैं वेखां नाल चावां, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। बावन किहा जिस वेले तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गावां, ढोल मिलदा धुर दा माहीआ। जिस दीआं भगतां थल्ले बाहवां, भुजां उत्ते रखाईआ। उह तक्के उन्हां दयां राहवां,

रस्ते खोज खुजाईआ। जन भगतो तुहानूं कढुयां विच्चों डार कावां, कागां तों हँस दिता बणाईआ। जिन्हां बच्चयां दे पिच्छे तुहाडे घर घर जा के खावां, दर दर भोग लगाईआ। उन्हां नूं दरगाह सचखण्ड दुआर सवावां, जित्थे सुत्तयां ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गोबिन्द किहा एह मैनूं नहीं मन्ज़ूर तेरी मज़दूरी, जो भगतां सेव कमाईआ। बाहरों तन दी प्रीत कूड़ी, जफ्फीआं दी लोड़ ना कोए रखाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी खाधी तली होई पूड़ी, घृत नाल चतुराईआ। जिंनां चिर पुरख अकाल दीन दयाल गुरमुखां दे अंदर चाढ़े रंगत ना गूढ़ी, निरगुण जोत ना करें रुशनाईआ। आपणा दरस ना देवें नूरी, रातीं सुत्यां आप उठाईआ। ओनां चिर आसा नहीं हुन्दी पूरी, तृष्ना सके ना कोए बुझाईआ। एह दुनिया होवे कूड़ी, नाता तुट्टे लोकाईआ। जे मस्तक लावें टिक्का धूढ़ी, दुरमति मैल अंदरों बाहर धवाईआ। प्रभू तैनूं सारे याद करदे तेरे बिनां भगतां दी करे ना कोए मशहूरी, लज्जया रखण कोए ना आईआ। की होया जे मूसे नूं सुट्टया कोहतूरी, मूँह दे भार गिराईआ। जन भगत चाहुन्दे सानूं मंज़ल इक्को जेही कर दे नेड़ दूरी, विछोड़ा रहे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं खलोते कद दे, रैण रही विहाईआ। पुरख अकाल कहे तुसीं किस नूं लभ्भदे, मैनूं दयो समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं भुक्खे तेरे नद्द दे, आपणा नाम दे जणाईआ। पुरख अकाल कहे वेखो वणजारे ना बणयो जग दे, तत्तां नाल प्रीत वधाईआ। पुजारी ना बणयो अग्ग दे, तृष्ना नाल रखाईआ। तुसां हुक्म सुणने हकीकत हक दे, संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। पहलों दीन मज़्बां दे झगड़े जाणे छड्ड के, लोकमात फेर फेरा पाईआ। अग्गे लेखे रहिण नहीं देणे अड्ड अड्ड दे, वण्डां वण्ड ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जाओगे किहड़ी कूट, सच संदेसा दयां दृढ़ाईआ। सारे कहिण असीं सारे तेरे सपूत, पिता पूत तेरे (अग्गे) इक्क अरज़ोईआ। तेरे हुक्म नाल करनी खोज गली (कूच), खोज वेखीए जगत लोकाईआ। साडे विच रहे ना कोई दूज, दुतीआ भाउ ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दवारे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आह लओ अगम्मी पाती, बिन पत्रका दयां जणाईआ। जा के वेखो अन्धेरी राती, कलयुग कूड़ वज्जी वधाईआ। साचा दिसे कोए ना साथी, धुर दा संग ना कोए बणाईआ। तुहाडे नाम दा रिहा कोए ना पाठी, कलमा हक ना कोए दृढ़ाईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, अधवाटे बैठी लोकाईआ। कलयुग खेल बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। बिरहों तीर निशाने मारे कोए ना काती, कूड़ी क्रिया कत्ल ना कोए

कराईआ। किसे घर दिसे ना दीवा बाती, कमलापाती मिलण कोए ना आईआ। जा के घर घर मारो झाती, नौ दवारे परे फोल फुलाईआ। वस्त हथ्थ आवे किसे ना साची, सुच संजम बैठी मुख छुपाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल करे ना कोई किसे दी राखी, चोबदार ख़बरदारी दा डंक ना कोए वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग थोड़े समें दे करके भेजे अलाटी, आरडर धुर दा इक्क सुणाईआ। दीनां मज़्बां दे बण के गाडी, रस्ता छोटा एह प्रगटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दे बण के ढाडी, ढोले रागां नादां विच सुणाईआ। जीवां जंतां दे बण इमदादी, मदद कर के ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की करना लोकमात, सानूं दे समझाईआ। कुछ पहले लिख के आए कलम दवात, ग्रन्थां वण्ड वण्डाईआ। दीन दुनी की कर के आए बात, मज़्बां रंग रंगाईआ। शरअ दी दे के आए दात, आपणा हुक्म मनाईआ। मंज़ल मुक्की ना किसे वाट, परदा अग्गे ना कोए चुकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के रसना जेहवा ते (वध्या वाद विवाद), विद्या विच हल्काईआ। घर स्वामी ठाकर अन्तरजामी किसे ना मिल्या कमलापात, पतिपरमेश्वर दरस ना किसे वखाईआ। दरोही झगड़ा पा के आए ज़ात पात, मानव मानव नाल लड़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार तन माटी ख़ाकी वजूद होया ना किसे पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जिधर वेख्या जिधर तक्कया तेरा झगड़ा फ़साद, फ़ैसला सच ना कोए कराईआ। कुछ लेखा लिख्या नानक ने विच बग़दाद, बग़ल विच बग़लगीर छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शहिनशाही सम्मत दे चेत, तिन्नां लोकां तों बाहर दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले ब्रह्मे सुत ने कीता हेत, सन्त कुमार अक्ख खुल्हाईआ। बराह ने तक्कया नेत, यगैपुरुष हाव ग़रीब नरायण दिती वड्याईआ। कपल मुन कर के भेंट, दत्तात्रे ध्यान लगाईआ। रिखवदेव दस्सया भेत, पिरथू परदा लाहीआ। मत्स वखाई खेड, कच्छप रंग रंगाईआ। धनंतर लिख्या लेख, बावन हुक्म सुणाईआ। बावन मंगण आया कर के हेत, पूरब आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार दए प्रगटाईआ। बावन कहे मेरा कोई नहीं होर चर्चा, इक्को मंग मंगाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां अग्गे जो आपणे नाम दा पाया पर्चा, जुग चौकड़ी हल्ल ना कोए कराईआ। एसे नूं समझ के आपणा खर्चा, लोकमात झट लँघाईआ। मैनूं आया कुछ हरखा, बावन रिहा सुणाईआ। ओह पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगारे सांझे यारे कुछ भेव खोल्ह आपणे घर दा, भेद दे दृढ़ाईआ। किस बिध भगतां दी आत्म वरदा, रूप धरे नरायण नर दा, साची मंज़ल उत्ते चढ़दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दा, सुरती शब्द विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, क्यों खाणा खावें घर घर दा, दर दर आपणी अलख जगाईआ। बावन कहे क्यों घर घर अलख जगाउना एं। दर दर डंक वजाओना एं। राउ रंक समझाउना एं। इक्को नाद वजाओना एं। ब्रह्माद आप उठाउना एं। भगतां राज़ खुल्हाउना एं। बन्धना विच्चों कढाउना एं। फंदना मात तुड़ाउँदा एं। नूरी चन्दना इक्क चमकाउँदा एं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगउँदा एं। बावन, नव नौ चार पिच्छो आपणी दया कमावांगा। जेहड़ा भेव तुसां ना खुल्हवाया, आपणा नाम समझावांगा। जिस दे दवारे सारे विको, हट्ट ओहो इक्क खुल्हावांगा। जिस दर ते जुग चौकड़ी सर्ब नजिठो, सो परदा आप उठावांगा। जिस नूं याद करना नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो, सो निहकलंक अखवावांगा। जिस दा नाम कलमा गा के दोहथ्थड़ा मार के पिटो, पटने वाले नाल जोड़ जुड़ावांगा। जिस दे चरणां विच लिटो, लिटां वाल्लयो लटकदे फड़ उठावांगा। एह खेल मेरा अनडिठ्ठो, अनडिठ्ठड़ी कार कमावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूजा संग ना कोई रलावांगा। क्यों संग नहीं दूजा रखदा, प्रभ साचे दे दृढ़ाईआ। मैनूं रहिणा चंगा वक्ख दा, घर ठांडे डेरा लाईआ। मेरा

६५७ नबेड़ा हकीकत हक दा, हुक्मे विच समझाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरो झगड़ा पै जाए दीन मज़्हब शक दा, शंकर ६५७

ब्रह्मा विष्न चले ना कोए चतुराईआ। चार जुग मेरा राह तक्कदा, चारे खाणी अक्ख खुल्हाईआ। चारे बाणी खेल करे भट्ट

२० दा, रागां नादां विच शनवाईआ। ओस वेले पुरख अकाल दा सादा जेहा रूप हुन्दा किसे जोबन वाले जट्ट दा, जिस दा २०

भेव कोए ना पाईआ। एह भण्डारा एह ख़ज़ाना ओसे दे हट्ट दा, जित्थे तोट रहे ना राईआ। बिन भगतां तों लाहा कोए ना खटदा, खटके विच लोकाईआ। कलयुग जीवां नशा दिता कूड़े गट गट दा, हलक तों थल्ले हलका दिता कराईआ। गुरमुखां प्याला दिता अगम्मे तीर्थ तट दा, निजर धारा विच्चों प्रगटाईआ। जन भगत ओसे दा रस चट्टदा, जिस दा रस्ता वेखे खुदाईआ। एह खेल अलखणे अलख दा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जो नित नवित हर घट अंदर वसदा, वसल देवे यार खुदाईआ। जन भगतां पैज रखदा, होए अन्त सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। बावन कहे की परोसे थाल, की तैनूं दिता खवाईआ। क्यों कलयुग अंदर सतिजुग बदली चाल, चाल निराली इक्क प्रगटाईआ। क्यों भगत सुहेले लए उठाल, सृष्टी दृष्टी अंदर सवाईआ। क्यों एका रंग रंगाए शाह कंगाल, दीनां मज़्हबां डेरा ढाहीआ। क्यों मार्ग दस्सया सुखाल, सोहँ ढोला दिता पढ़ाईआ। क्यों तोड़ के माया जंजाल, जन भगतां नाता ल्या जुड़ाईआ। पुरख अकाल आपणा खोल्ह के दस्स अहिवाल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान

कहिण कोए ना पाईआ। क्यों भगतां ने छड्ड दिती इट्टां पत्थरां वाली धर्मसाल, मिट्टी उत्ते मस्तक ना कोए घसाईआ। पुरख अकाल कहे उह बण गए मेरे लाल, जिन्हां दा मुख गोबिन्द पूंझया नाल रुमाल, शाह कंगाल रहिण कोए ना पाईआ। वड़ गए ओस सच्ची धर्मसाल, जित्थे दीपक जोत जगे बेमिसाल, सूरज चन्द नज़र कोए ना आईआ। उन्हां दा इक्को बड़ा दलाल, बण वणजारा लए भाल, लख चुरासी विच्चों आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी नित नवित कर कर हित, अबिनाशी अचुत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार लाशरीक हक तौफ़ीक, आपणा रंग रंगाईआ। पैगम्बर कहिण परवरदिगार तेरा कलमा पढ़दे नबी रसूल, रसम धुर दी चली आईआ। तेरा सजदा कर कबूल, किबल, तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा फ़रमाना सुण माकूल, मुकम्मल कायनात दृढ़ाईआ। तेरे चरणां दी लै के धूल, मस्तक टिक्के नाम छुहाईआ। क्यों बदलदा जाएं असूल, असल दे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं समझ ना सके कौण कातिल ते कौण मक्तूल, मुक्तियां विच मुक्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क दृढ़ाईआ। चेत कहे मैनूं चाउ घनेरा, घनईआ शाम गया दृढ़ाईआ। जिस वेले ठाकर स्वामी आए मेरा, मेहरवान वेस वटाईआ। उस दा भेव जाणे केहड़ा, परदा सके ना कोए उठाईआ। जिन गुर अवतार पैगम्बर इक्ठा पूर कर के इक्क चढ़ाउणा बेड़ा, नईआ नौका जगत रहिण कोए ना पाईआ। दीन मज़्हब दा रहिण ना देवे झेड़ा, झगड़ा मुके जगत लोकाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्क वसावे खेड़ा, दर ठांडा इक्क सुहाईआ। आत्म परमात्म नूं नेड़े कर के कहे तूं मेरा मैं तेरा, घर दोहां दा इक्को डेरा, अग्गे हो जाए हक नबेड़ा, वेहड़ा सांझा नज़री आईआ। पुरख अकाल दा नाम बथेरा, जित्थे ना कोई गुरू ना कोई चेरा, जोती जोत जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल कहे ना कोई मुरीद ते ना कोई मुर्शद, मुर्दा नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दे कोल पुरख अकाल दी उल्फ़त, इक्को नाम ध्याईआ। उन्हां नूं जन्म मरन दी नहीं फ़ुरसत, जूनीआं विच ना कदे भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। ना कोई नाम ना कोई कलमा, ढोला रसना कोए ना गाईआ। ना कोई वहिम ते ना कोई भरमा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। ना कोई ज़ात ना कोई बरना, ना कोई वरनां वण्ड वण्डाईआ। जिन्हां नूं इक्को पुरख अकाल दी मिल गई सरना, दूजे सीस ना कोए निवाईआ। ओस मंज़ल उत्ते भगतां चढ़ना, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे राह तकाईआ। ओथे अल्ला वाहिगुरू राम किसे नहीं पढ़ना, अक्खरां नाल ना कोए लिखाईआ। भगतो बिना अकाल

जोत विच किसे नहीं रलणा, तत्तां वाला गुरू कम्म किसे ना आईआ। गुरमुख कदे मात नहीं मरना, मर जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच सरनाईआ। चेत कहे क्यों आया भज्जा, आपणा पन्ध मुकाईआ। कुछ इस दी दस्स वजह, भेव दे खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं तेरी मन्नदे रज़ा, हुक्मे विच सीस निवाईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगतां दे दवारयों उन्हां दे पकवान दा लैण आया मज़ा, मज़ाक दुनिया नाल उडाईआ। जिन्हां नूं देणी किसे नहीं सज़ा, धर्म राए ना अक्ख उठाईआ। ओन्हां दे प्रेम प्यार दा बध्धा, चलया धुरदरगाहीआ। दरस दे के उपर शाह रगा, नौ दवारे लेखा दिता मुकाईआ। गुरसिखां पढ़ना पए ना क ख ग, घर इक्को देणा समझाईआ। जित्थे ना कोई पिच्छा ते ना कोई अग्गा, इक्को रंग समाईआ। दीपक जोत प्रकाश इक्को जगा, आकाश तों बाहर रुशनाईआ। जन भगतां उथ्थे दिता नहीं कोई दग़ा, एथे फ़रेबां तों बाहर कढाहीआ। दुआबे वाल्लयो रहिण नहीं दिन्दा इकल्ला, मालवे वाल्लयो बहुता विच गफ्फा, मुल्ल सब दा बिन कीमत दयां चुकाईआ। जम्मू वाल्लयो तुहाडा तेरां सौ सतासी दा जथ्था, बावन वेले दा सोभा पाईआ। माझे वाल्लयो तुसीं गोबिन्द दा भुल्लया भथ्था, तीर कमान नज़र ना आईआ। ब्यास कर के ठठ्ठा, हउकयां नाल जणाईआ। धुर दा शब्द आदि दा सतिगुर दो जहानां दा सका, सज्जण आपणे वेख वखाईआ। ज़रा खोल्ह के वेखो अक्खां, भेव तुहाडा तुहाडे विच्चों दस्सां, बाहरों लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। प्रेम विच हिरदे अंदर वसां, हँकार विच मनुआ हो के नच्चां, विभचार विच नाता कर के कच्चा, ध्यान विच बणा के आपणा बच्चा, लेखा अगला दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। बावन कहे कुछ पुकार करे थाली ग्लास, जिस विच जल अन्न दयां टिकाईआ। कुछ इस दा लेखा दस्स ख़ास, सहिजे दे समझाईआ। क्यों आया तेरे उत्ते विश्वास, विषयां तों बाहर वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल कहे बावन एह बल दे अंदर दी बात, जिस दे चरण विच इक्को लेखे लग्गी रात, बाकी जीवण जीवण विच गवाईआ। जिस वेले वेला आया प्रभात, निरगुण धार ने कीती बात, ज़रा वेख उठ इकात, इक्क अकल्ला नज़री आईआ। जिस दे कोल अगम्मी आंच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना बेपरवाहीआ। सम्मत शहिनशाही कहे मैं आया तीजा, त्रैगुण वेख वखाईआ। कलयुग लाड़ा सोहणा बणया जीजा, घर घर फेरा पाईआ। जूठ झूठ जगत विकार ओस दा दिसे गीगा, बचपन विच खेल खिलाईआ। माया ममता मोह विकार करे ओस दीआं रीझां, गढ़ हँकार सोहणा घर बणाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच पतीजा, पतिपरमेश्वर गया भुलाईआ। पिछला समां पिच्छे बीता, अग्गे बदलदी जाए रीता, ना कोई

सज्जण रहे ना मीता, चारों कुण्ट तपे अंगीठा, कौड़ा मनुआ होवे रीठा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला रिहा जणाईआ। लेखा अगला आवे अग्गे, अग्गों पिच्छे ध्यान लगाईआ। जिस दा खेल ओसे नूं फब्बे, दूजा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बावन कहे तेरे आए सद्दे, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा दे मुकाईआ। सब दा लेखा करदे पूरा, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कारज रहे ना अधूरा, अद्धवाटे ना कोए रखाईआ। झगड़ा मेट दे क्रिया कूड़ा, कूड़ कुटम्ब देणा गवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, बुध बिबेक आप कराईआ। सच प्रीत बख्श दे धूढ़ा, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। नज़री आ हाज़र हज़ूरा, हज़रत हो के धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म कहे सुणो अगम्मी आवाज़, अज़ां बांग तों बाहर नज़री आईआ। जिस दे अन्तर निरंतर दा राज़, मंत्र इक्क दृढ़ाईआ। भेव बोध अगाध, बुद्धी तों परे समझाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ वेख समाज, समग्री सच दे वरताईआ। जन भगतां दा लेखे ला के खाज, आहार पवित्र दे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला आप मिलाईआ। धुर दा मेला करे मिलाप, मिलणी जगदीश कराईआ। सतिजुग सच दा दे के साचा जाप, जग जीवण दाता होए सहाईआ। सच संदेसा दे के आप, आप आपणा भेव चुकाईआ। धुरदरगाही बण के बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। एथे ओथे दे के साथ, सगला संग निभाईआ। सब दी पूरी कर के आस, तृष्ना दए मिटाईआ। लेखे ला के जल दा इक्क ग्लास, तृष्ना तृखा दए गवाईआ। जो पकवान ल्या चाख, चसका अगला दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा आपणा आप चुकाईआ। आपणा लहिणा देणा देवण योग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां घर घर ला के भोग, गुर दर्शन मिले माण वड्याईआ। कश्मीर दा मेला धुर संयोग, जगजीत वज्जे वधाईआ। जिस दा नाम गाया इक्क सलोक, सुखवन्त सुख उपजाईआ। दविंदर गया पहुंच, बाली बाला सोभा पाईआ। जन भगतां दी मेट के जन्म मरन दी सोच, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र कहे प्रभ देवीं तार, तुरत आपणी दया कमाईआ। भगतां दे घर दा पूरा कर विहार, विवहारी होणा सहाईआ। तेरा अगला खेल न्यार, निरँकार नज़री आईआ। जो वक्त सुहाउणा सतारां हाढ़, वदी सुदी विच ना कोए रखाईआ। जन भगत सुहेले लैणे उभार, अन्तर आपणा नाम दृढ़ाईआ। कर के ख़बरदार, आलस निंद्रा विच्चों लैणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म साख्यात, निरगुण

६६१ २० धार सोभा पाईआ। जो दुष्ट दमन गया आख, हेम कुण्ड आवाज़ सुणाईआ। माला मणका जिस दे विच ना कोए सुराख, उपर सुरख रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सच्चा साथ, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। अंदर बाहर करना पवित्र पाक, पुनीत पतित रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सोहँ धार कहे मेरा फेर माला मणका, मन दी करां सफ़ाईआ। कुछ लेखा सरीर तन का, उह वी दयां दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना जीवण जन का, जम दंड ना कोए लगाईआ। सुणना पए ना राग कन्न का, सरवणां तों परे करां शनवाईआ। होवे प्रकाश अगम्मी चन्न का, नूर जोत डगमगाईआ। भरम रहे ना हँ ब्रह्म का, बरन इक्को नूर दरसाईआ। नाता तोड़ के माटी चम्म का, वरन बरन पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा होर सुणाईआ। सोहँ कहे मेरा रूप कमलापाती, पतिपरमेश्वर दिता बणाईआ। मैं नाता जोड़ना भगतां दी उत्ते छाती, शहिनशाह हुक्म रिहा सुणाईआ। अगला बणना साथी, पिछला पन्ध मुकाईआ। मंज़ल चढ़ना घाटी, पौड़ा इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सोहँ धार कहे मैनूं कोई ना जाणउँ अक्खर, अक्खरां तों परे नज़री आईआ। जिस दवारे गोबिन्द विछाया सत्थर, सूलां सेज हंढाहीआ। जिस दी ज़ात पात कोई चिहन् नहीं चक्र, वरन बरन ना कोए अख्वाईआ। सोहँ कहे मैं ओसे दा महबूब ओसे दा फ़क्कर, ओसे दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। सोहँ धार कहे जिस वेले गोबिन्द करी आरज़ू, अरज़ दिती सुणाईआ। सज्जा उपर करके बाज़ू, बाज़ां वाले आवाज़ लगाईआ। पुरख अकाल तेरे हथ्थ तराज़ू, तोलणहारा नानक गया दृढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा बणे कोई ना साधू, साधना सके ना कोए कराईआ। जगत भेख वेखणे वाधू, वाधा होवे लोकाईआ। कुछ बचन दस्स के गया दादू, गोबिन्द इशारे नाल दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बणना जादू, साध सन्त जगत वासना होए हल्काईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर ना कोई पैगम्बर ना पीर ना कोई देवे किसे धीर ना कोई रहे आगू, आगमन विच राह तक्के सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। सोहँ कहे मैनूं ना समझयो अक्खरां वाला शब्द, जेहवा नाल गाउण वाला मैनूं ना कोए वड्याईआ। ना कोई मेरा दीन ना कोए मज़्ह़ब, ज़ात विच शरअ ना कोए बणाईआ। मैं इक्को पुरख अकाल दा करां अदब, आदाब विच सीस झुकाईआ। ओस दे वेखां चरण कदम, कदीम तों मेरी रीती चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। सोहँ धार कहे मैं कदे नहीं सुत्ती, जुग चौकड़ी चली आईआ। मेरी इक्को नाल रुची, जिस रचना दिती रचाईआ।

मैं आत्मा ओस दी सुच्ची, सोहणी सवाणी सोभा पाईआ। मैं मातलोक करन आई बुत्ती, तन वजूद सेव कमाईआ। तत्तां अंदर लुकी, वेखण कोए ना पाईआ। धन्न भाग जे मेरी वात पुच्छी, चल के आया धुरदरगाहीआ। मैं हुण नहीं जाणा लुट्टी, ठग्ग चोर सारे देणे भजाईआ। मैं हुण नहीं रहिणा रुठ्ठी, प्रभ मिल के वज्जे वधाईआ। मैं किसे नहीं लुकणा गुठ्ठीं, पड़दे विच ना कोए छुपाईआ। मैं फिरना अड्डी उच्ची, दो जहानां भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी आसा मनसा पूर कीती अग्गे रहवां मूल ना दुखी, दर्दां दा डेरा ढाहीआ। जन भगतो तुसीं वसणा सदा सुखी, सुख सागर विच समाईआ। प्रभ नाल मिल के फेर आउणा नहीं किसे दी कुक्खी, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सोहँ धार कहे जन भगतो क्यों हथ्थ नूं पाउणा छल्ला, भेव दयां खुल्हाईआ। जिस वेले मुहम्मद नूं आपणा नाम दस्सया अल्ला, नूर कीता रुशनाईआ। पुरख अकाल इशारा दिता चौदां तबक निक्का जेहा महल्ला, उंगली पहली लई उठाईआ। मुहम्मद ने बेसुरती विच किहा तेरा हो जाए भला, जिस मैनूं कुछ दिता दृढ़ाईआ। परवरदिगार किहा मेरे हुक्म दा पैणा हल्ला, हुक्म चले धुरदरगाहीआ। ओस वेले जगत जहान होणा झल्ला, सुरती कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। मुहम्मद किहा एह की कीता ब्यान, मालक दे जणाईआ। मैं नन्हा तेरा अंञाण, अल्ला तेरी वड्याईआ। परवरदिगार किहा तैनूं देवां इक्क निशान, उंगली गंढु पवाईआ। एहनूं चुम्म नाल ज़बान, रसना चारों तरफ घुंमाईआ। फेर तैनूं लिखणी दस्सां कुरान, कलम एथे एसे हथ्थ फड़ाईआ। कलम दे पिच्छे रखां शैतान, शरअ विच फसाईआ। तेरा नाता जगत जहान, इस्म विच जणाईआ। कसम विच महिबान, बीदो आपणी खेल खिलाईआ। बी खैर या अल्लाह अलाही नूर रहमान, रहमत दए कमाईआ। साबत रहे ना कोए ईमान, अमल छड्डे लोकाईआ। सुण मेरा फ़रमान, कलमा इक्क जणाईआ। अक्खीं मीट मार ध्यान, अग्गा दयां वखाईआ। सदी चौधवीं नज़र आई होया हैरान, हैरानी विच कुरलाईआ। दीन दुनी होई बेईमान, बेवा रूप वटाईआ। पीर पैगम्बर छड्ड गए मैदान, शाह अली ना कोए सहाईआ। महीना रोंदा वेख्या रमज़ान, नेत्र नीर वहाईआ। बीस तीस नैण शरमाण, अक्ख ना कोए उठाईआ। हो के निगाहबान, परवरदिगार दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमान आया एह छद ना वेख छाप, जगत मुंदरी ना रूप वटाईआ। सृष्टी विच वधणा पाप, पतित होवे लोकाईआ। अवतार पैगम्बरां दा भुल्लणा जाप, अगलयां गुरुआं दी ना कोए वड्याईआ। रूह बुत्त रहिणा कोए ना पाक, कूड़ी क्रिया होए हल्काईआ। गुर गुर तुटणा साक, जिस्म जिस्म खुशी मनाईआ। इस्म इस्म ना कोए इत्फिाक, अज़ीज़

सिर ना कोए झुकाईआ। मुरीद होणे गुस्ताख़, मुर्शद बैठण सिर छुपाईआ। ओस वेले कुछ मुहम्मदा खेल करना आप, ठोकर तेरे सीस टिकाईआ। तुसीं मेरे फ़रमानयां दी मातलोक भेजण वाले डाक, चिठ्ठी रसैण नज़री आईआ। उह कुरान मजीद ख़त्त नहीं ख़तूत नहीं सति नहीं सबूत नहीं निक्का जेहा काट, छोटे जिहे कटड़े विच देणा सुणाईआ। जिस वेले बेईमानी दी वधी जमात, फेर मेरे आउण दा होवे इत्तफाक, दीन दुनी विच होवे नफ़ाक, गुस्ताख़ सारे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। मुहम्मद किहा दस्स मेरे महबूब, मुहब्बत विच जणाईआ। तेरे आउण दा की सबूत, भेव दे खुल्हाईआ। तेरा अर्श इक्क अरूज, दरगाह साची सोभा पाईआ। परवरदिगार किहा मैं कर के आपणा कूच, कूचा गली दो जहान वेख वखाईआ। पकड़ उठावां आपणे पूत, सपूते नाल मिलाईआ। मुहम्मदा जबराईल मेकाईल इज़राईल असराफ़ील फेर मैं रखणे नहीं कोई दूत, सिध्धा आपणा नाम जपाईआ। जिधर वेखण ओधर मौजूद, तुहाडे सारे हुक्म करने मौकूफ़, पिछला लेखा रहे ना राईआ। मेरा मुरीद दीद विच रहे ना कोए बेवकूफ़, बेवा नूं सेवा विच लगाईआ। हज़रत ईसा कहे तेरे कोल की परूफ़, मैनूं दे दृढ़ाईआ। नूर इलाही किहा तुहाडे सारे लै के हकूक,
६६३ हुक्म नाल हकूमत दयां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ। छल्ला ६६३
कहे क्यों मेरा बणया नाता, भगतां नाल वड्याईआ। जिस वेले गोबिन्द पंजां छकाया अमृत बाटा, लोहा छल्ला उंगली नाल
२० छुहाईआ। कर के पूरा घाटा, लहिणा झोली पाईआ। पिछली मुका के वाटा, अगला हुक्म दृढ़ाईआ। जिस वेले आवे २०
पुरख समराथा, मेरा दाता धुरदरगाहीआ। दीन दुनी दा बदलणा साका, साची कार कमाईआ। धुर दे नाम दा दस्स के पाठा, पूजा देणी समझाईआ। लहिणा मुका के अठ्ठ साठा, अमृत सरोवर देणा नुहाईआ। कर प्रकाश जोत ललाटा, नूर नूर देणा चमकाईआ। मार के मंज़ल वाटा, पन्ध देणा खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग दए रंगाईआ। गोबिन्द कहे एह छल्ला पाणा लोहा तार, तारनहारा वेख वखाईआ। जिस ने लहिणा देणा मुकाउणा जुग चौकड़ी वारो वार, वारता आपणी दए जणाईआ। भगतां करे प्यार, मेहरवान हो सहाईआ। सब किछ आपणे कर अख़्त्यार, मुखत्यारनामे हुक्म विच दृढ़ाईआ। कर के खेल अपार, बदल के जगत विकार, बोल के इक्क जैकार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए कमाईआ। छल्ला कहे मैनूं पायो सज्जे हथ्थ, उंगली पहली नज़री आईआ। इस दा लहिणा नाल जो बेटा राम दसरथ, बनवासी नज़री आईआ। उह रखे सदा साथ, आपणे नाल वड्याईआ। जिस वेले गया भीलणी पास, उंगली उत्तों दिता लाहीआ। ओस बचन पुछया

ख़ास, शब्द इशारे मंग मंगाईआ। राम किहा मैं भगतां दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। साची दस्सां बात, बातन आप दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त अख़ीर आवे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले जन भगतां प्रभ बख़्शिश करे दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा खेल वखाईआ। छल्ला कहे मैनूं कोई ना कहो रिंग, प्रेम प्रीत विच बणाईआ। मैं बदल देणे दुनीदार दे किंग, किंगरे किंगरे मृदंग वजाईआ। कूड़ी क्रिया दा करना ऐंड, हुक्म धुरदरगाहीआ। भगतां दे भगत बणाउणे फरैंड, ईसा दए गवाहीआ। जिस दा निशाना जाणे कोई ना हैड, हैट टोप दए ना कोए गवाहीआ। धुर संदेसा करना सैंड, सैड सटारम विच जणाईआ। कोई परदा ओहला रहिण नहीं देणा बीहाईंड, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। ना कोई माईनस करे ना माईंड, मिडल दा लेखा देणा चुकाईआ। ईसा कहे मैनूं याद आई इक्क लाईट, गौड ने हुक्म दिता कुआईट, जिस नूं कोई लिख ना सके राईट, अन्तर अन्तर निरंतर निरंतर मंत्र दी होणी फ़ाईट, डाईड वेखणी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह आपणी कार कमाईआ। रिंग कहे मैनूं कोई ना किहो राउँड, मेरी समझ किसे ना आईआ। मेरा खेल होणा विच गराऊंड, गौड गुड हुक्म सुणाईआ। दुनिया सृष्टी कायनात वर्ल्ड वेखणी विच ग्राऊँड, फराग डाग वांग नचाईआ। किसे ने सुणया नहीं आवाज़ कि साउँड, सुन तों मुन मुन तों धुन धुन तों गुण ना कोए जणाईआ। सारे हुक्म तों होणे आऊट, पीर पैगम्बर रहिणा कोई नहीं टाऊट, टक्कयां वाले सारे देणे भजाईआ। दीन दुनी होई बलाईंड, रिंग कहे मेरा लेखा नाल रघुपति, रघुबंसीओ दयां जणाईआ। मैनूं लभ्भदा गया सुरप्त, इन्द इन्द्रासण उत्ते खोज खुजाईआ। मेरे विच भरी उह गुरमति, जेहड़ी गोबिन्द गुरमुखां दे विच टिकाईआ। अग्गे धीरज देणा उह सति, जो सतिगुर शब्द नाल जुड़ाईआ। दुरमति मैल अंदरों कढ्ढ, कूड़ी क्रिया लेखा दए गवाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर पत लए रख, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। छल्ला कहे मैं बोलां सच, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए वखाईआ। सोहँ धार कहे जन भगतो आयो सोहणे बण के चिट्टे, शब्दी रंग रंगाईआ। आपणे जन्म जन्म दे निकलदे वेख्यो सिट्टे, सिट्टेबाज़ी रहे ना जगत लोकाईआ। इक्को रंग रंगाए वड्डे निक्के, बिरध बाल मिले वड्याईआ। तुहाडे कारण चढ़ के चिखे, चिन्ता तुहाडी दिती गवाईआ। जे गुरमुख आ के इक्को नाअरा सिक्खे, दूजी पढ़नी ना पए पढ़ाईआ। मंज़ल ओस हकीकी टिके, जित्थे सके ना कोए उठाईआ। सच सिँघासण धुर दे लिटे, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली चेत रुत्त सुहाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैं नव नौ चार पिच्छो

६६४
२०

आया भाउँदा, भवजल विच वेखां जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी आपणी नींदे सौंदा, मैनूं सके ना कोए उठाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आपणा ढोला गाउँदा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकार लगाईआ। लेखा मुकावे जुग चौकड़ी मैं हउँ दा, हँकार गढ़ तुड़ाईआ। मैं वेखां खेल चाउ दा, चाउ घनेरा इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा दिती लगाईआ। सम्मत कहे मेरा कोई ना जाणे समाचार, गुर अवतार पैगम्बर धुर दा ऐडीटर सके ना कोए समझाईआ। ना कोई टीचर सिख्या सके सिखाल, वन टू थ्री फोर होर दा होर ना कोए समझाईआ। पढ़न वाले सारे दिसदे चोर, चोरी चोरी याद कर के मसले जगत जणाईआ। जन भगतो जिस वेले प्रभ नूं पए तुहाडी लोड़, निरगुण हो के आवां चाँईं चाँईंआ। जद तक्को ते नवां नकोर, बुढ्ढा बाला रूप ना कोए वटाईआ। जिस नाल लाई ओस नाल निभावे तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। जुग चौकड़ी विछड़यां नाता ल्या जोड़, लोड़ींदा साजण हो के जोड़ जुड़ाईआ। ज़रा तक्क के वेखो नाल ग़ौर, पलकां तों पिच्छे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ। सम्मत कहे मैं कलयुग कूड़ करना समाप्त, सब नूं दयां जणाईआ। सति धर्म करना सथापत, संसथा जगत जणाईआ। ममता मोह रहिण नहीं देणी अलामत, आलमां इलम देणा गवाईआ। जन भगतां दे के नाम नयामत, नर निरँकार नाल मिलाईआ। जन भगतो कदी किसे दी करयो ना खुशामद, जगत दवारा मंगण कोए ना जाईआ। दीनां मज़्हबां विच बग़ावत, सही सलामत धुरदरगाहीआ। तुहाडी सतिगुर शब्द दी दे के जमानत, बरी अग्गे तों अग्गे लए कराईआ। ओथे एथे किसे दी क्या चले ल्याकत, बुद्धी वाली सोझी कम्म किसे ना आईआ। जिन्हां दी आप करे रफ़ाकत, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग दए रंगाईआ। सम्मत कहे मेरा इक्को संदेसा, सदीआं दयां विछड़यां दयां सुणाईआ। भगत उधारना प्रभ दा पेशा, पेशीनगोईआं विच अवतार गुरू पैगम्बर गए समझाईआ। जिस दा इक्को सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग अन्त वटा के वेसा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दा पूरा कर के ठेका, ठाकर हो के अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी भेंटा, बेटा गोबिन्द शब्द इक्को सोभा पाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा खेवट खेटा, खटके तों पार दए लँघाईआ। जिस नूं याद कीता अर्जन जिस वेले सिर विच पई रेता, नेता धुर दा मन्न के ध्यान लगाईआ। ओस दिता इक्क संदेसा, शब्द शब्द विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतां करन आवां हेता, गुर अवतार पैगम्बर भाणे विच समाईआ। जगत निराली शास्त्र सिमरत वेद पुराणां तों बाहर अगम्मी धुर दी खेडा, खिलाड़ी हो के आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस कारण लोकमात जन भगतां भेजा, सो भजन बण सज्जण साचा दए समझाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ महिंदर सिँघ पिण्ड झंमट ★

सम्मत शहिनशाही कहे प्रभ भगत उधार, उदर विच फिर ना कोए आईआ। जिन्हां तेरे नाम दा बोलया जैकार, नाअरा दिता लगाईआ। जन्म मरन तों कर बाहर, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। निज नेत्र लोचन दिन्दा रिहा दीदार, अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। धुर दा बण के सज्जण मीत मुरार, मित्र प्यारा हो के आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ बचन कौर पिण्ड झंमट ★

६६६ जन भगतां दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पतिपरमेश्वर सांझे यारा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे नाम दा ६६६

२० इक्क अधारा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। ठांडा दे धुर दरबारा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप २०

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा हरि, सच तेरी सरनाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ कुलवन्त सिँघ बस्ती पठाणा ★

सम्मत कहे जन भगतां दे माण, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तेरे नाम दा आए इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दे चुकाईआ। तेरे धर्म दा वेखण निशान, निशाने जगत जाण भुलाईआ। तेरा गीत ढोला भगत इक्को गाण, प्रीत तेरे विच समाईआ। तूं दाता दानी आदि जुगादी मेहरवान, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला देणा मुकाईआ। अगला लेखा मुकावे भगत, भगवान हो सहाईआ। झगड़ा रहे ना कूड़े जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तेरा निवास उत्ते अर्श, फर्श तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान कर तरस, रहमत विच रैहम दे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा हरि, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरबंस कौर पिण्ड चब्बा ज़िला अमृतसर ★

दर ठांडा तेरा दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे वसे इक्क इकल्ला एकँकारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण जोत होवे उज्यारा, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। तख्त निवासी शाह सिक्दारा, शहिनशाह हो के डेरा लाईआ। तेरा हुक्म चले सदा जुग चारा, चौकड़ी मेटे ना कोए मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा हरि, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ जुगिंदर कौर लोटे कलोनी ज़िला अम्बाला ★

तुध बिन दूजा दिसे ना अवर, रूप अनूप ना कोए प्रगटाईआ। तूं मालक गहर गवर, गम्भीर तेरी सरनाईआ। जन भगत कर के बैठे सबर, सन्तोख तेरा नाम प्रगटाईआ। तूं सूरबीर बहादर शेर बब्बर, भबक नाम दे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुकाउणा काया माटी कबर, काअबा इक्को देणा सुहाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ बाल सिँघ पिण्ड भगवां ज़िला अमृतसर ★

तेरा काअबा हक महिराब, महबूब बेपरवाहीआ। जित्थे नज़र ना आए कोई आफ्ताब, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई मित्र दिसे अहिबाब, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। ना कोई तन्द सितार वज्जे रबाब, सुर ताल ना कोए जणाईआ। ना कोई भुन्न खाए कबाब, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे नाम दा देणा इक्क स्वाद, अनरस आपणा आप चखाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ उत्तम चन्द पिण्ड तलवाड़ा ज़िला हुशियार पुर ★

अनरस तेरा सदा अनडिठ्ठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां देवे कर के हित, प्रेम प्यार विच बुलाइंदा। मन ठगौरी करे ना चित, चेतन सुरती आप उठाइंदा। दर्शन दे के नित नवित, आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देणा सब किछ, धुर दी साची मंग मंगाइंदा।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ मुणशी राम पिण्ड म्यानी ज़िला हुशियार पुर ★

धुर दरगाह दी साची मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरे नाम दा मिले अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी देणी समझाईआ। परदा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुकाउणा खुशी ग़म, चिन्ता देणी बाहर कढाहीआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी प्रकाशो पिण्ड सालोवाल ज़िला गुरदासपुर ★

चिन्ता ग़म ना रहे हरख़, सोग विच ना कोए समाईआ। निरगुण धार देणा दरस, जोती जोत डगमगाईआ। भगतां उपर करना तरस, मेहरवान होणा सहाईआ। बेनन्ती मन्ज़ूर करनी अरज़, आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार आउणा परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी पुन्नी सालोवाल ज़िला गुरदासपुर ★

६६८
२०

पतिपरमेश्वर दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। तूं ठाकर हउँ कंगाल, सेवक आपणा लैणा बणाईआ। नाम भण्डारा देणा सच्चा धन माल, मालक, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ मनजीत सिँघ दीदारे वाला फ़िरोज़पुर ★

दर तेरे रखी आस, आसा पूर देणी कराईआ। ममता मन ना रहे प्यास, प्रेम प्याला जाम देणा प्याईआ। मनुआ मन ना रहे गुस्ताख़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस देणा साख्यात, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ जरनैल सिँघ पिण्ड सलां वाली तलवण्डी ज़िला हुशियार पुर ★

निरगुण जोत तेरा नूर, नूर नुराने सोभा पाईआ। आसा मनसा भगतां पूर, पूरन ब्रह्म देणा समझाईआ। नाद उपजा

साची तूर, तुरीआ तों परे कर पढ़ाईआ। सूली चढ़ना ना पए वांग मनसूर, मनसा विच अंस लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरचरण सिँघ जम्मू ★

सिर हथ्थ रखणा स्वामी, सदा सदा ध्यान लगाईआ। तेरा लेखा कोई ना जाणे पार ग्रामी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी समझ कोए ना आईआ। तूं मालक धुर अमामी, सच दवारे सोभा पाईआ। जन भगतां कट सर्ब ग़ुलामी, चाकर आपणे लैणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा नज़री आईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ अजीत सिँघ जम्मू ★

दर तेरा दिसे सुहञ्जणा, सोभावन्त सतिवादी सति। किरपा कर आदि निरँजणा, जन भगतां दे ब्रह्म मत। तूं दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, वस्त अमोलक दे सच। तेरे नाम दा नेत्र पए अंजना, कूड़ी क्रिया दुरमति मैल कट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान पुरख समथ।

६६६
२०

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ सन्त राम पिण्ड गोकले चक जम्मू ★

समरथ स्वामी अन्तर बिध जाण, तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगत सुहेले मात पछाण, बेपछान दया कमाईआ। आपणे नाम दी पा आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला सारे गाण, गा गा खुशी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदी नादी होणा मेहरवान, मेहर नज़र नाल तकाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरदीप कौर फ़तहि नंगल गुरदासपुर ★

मेहर नज़र तक्क महबूब, मुहब्बत विच सरनाईआ। तेरा इक्को अर्श अरूज, आलीशान सोभा पाईआ। जित्थे भगत रहिण महिफ़ूज़, दुःख दर्द ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वासना मेट हदूद, हद्द आपणी दे समझाईआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरदित सिँघ पिण्ड राम दवाली ज़िला अमृतसर ★

साची हद्द दस्स हदूद, जित्थे वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा रहे ना कोए तन कलबूत, जिस्म इस्म ना कोए बदलाईआ। इक्को रंग दिसे चारे कूट, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा चुकाउणा काया पंज भूत, भुलेखा अंदरों बाहर कढाहीआ।

★ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी महिंदर कौर पिण्ड सूसाणा ज़िला हुशियार पुर ★

भुलेखा रहे ना काया अंदर, अन्तश्करन देणा बदलाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ के जंदर, जीवण विच्चों जीवण देणा समझाईआ। मनुआ मन ना रहे बन्दर, शब्द डोरी देणा बंधाईआ। भाग लगाउणा काया कंदर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जन भगत सुहेले दर तेरा आए मंगण, दर ठांडे सीस निवाईआ। कृपाल हो के चाढ़ रंगण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी मन्ज़ूर कर बन्दन, बन्दगी विच बन्दना बन्दी छोड़ आपणे लेखे पाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी गुरनाम कौर पिण्ड सूसाणा ज़िला हुशियार पुर ★

कलयुग आयू लख चार हज़ार बत्ती, शास्त्रां वाले देण गवाहीआ। जिन्हां अक्खरां ने पुरख अकाल वेख्या नहीं कमलापाती, निरगुण नूर ना दरस पाईआ। संदेश्यां वाली समझाउँदे जगत पाती, पत्रका धुर दी इक्क उपजाईआ। एह खेल साहिब समर्थी, हरि करता आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। कलयुग आयू अक्खरां वण्ड, शास्त्र शरअ विच समझाईआ। भेव जाणे ना कोए सूरा सरबंग, परदा सके ना कोए उठाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी रहे लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जसवंत सिँघ पिण्ड भाम ज़िला हुशियार पुर ★

कलयुग आयू दस्स रहे बेअन्त, सिफ्तां नाल वड्याईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि अन्त, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ।

जो भगत उधारे साचे सन्त, सतिगुर आपणी दया कमाईआ। जो लेखा जाणे जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जो आदि जुगादा बोध अगाधा पंडत, धुर दी सिख्या दए समझाईआ। सो लेखा जाणे बेअन्त, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस वेले अर्जन लिखण लग्गा गुरू ग्रन्थ, जगत नेत्र बन्द कराईआ। मेला मिल्या नाल कन्त, पतिपरमेश्वर जोड़ जुड़ाईआ। ओधरों मिली इक्को संथ, सिख्या इक्क सुणाईआ। कूड़ी क्रिया लहिणा चुक्के चार लख सहँस, भेव अभेव विच्चों प्रगटाईआ। जिस वेले गोबिन्द वारया आपणा बंस, सरबंस दए लुटाईआ। वर देवे चार वरनां पन्थ, बरन अठारां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी प्रीतम कौर बुढे कोट गुरदासपुर ★

साची करनी करे करतार, कलयुग आयू दए समझाईआ। शब्द संदेसा धुर दरबार, नर हरि साचा आप सुणाईआ। गोबिन्द सूरा कर त्यार, डंका इक्को इक्क वजाईआ। कलयुग हो के ख़बरदार, आपणे बल लए अंगड़ाईआ। पुरख अकाल वेखणहार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी वक्खरी कार, शास्त्र सिमरत समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार करन निमस्कार, पैगम्बर सीस झुकाईआ। सो लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ प्रताप सिँघ पिण्ड सणीआं वाला ★

धुर संदेसा कहे जिस वेले गोबिन्द कस्या कमरकसा, कासद शब्दी नज़री आईआ। जिस दीआं वेखण वालीआं नहीं अक्खां, मुख दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। फ़रमाना देवे धुर दा सच्चा, सुनेहड़ा इक्क जणाईआ। सुण मेरे लाडले बच्चा, बच्चया लेखा तेरी झोली पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भाण्डा कच्चा, तेरे चरणां हेठ दबाईआ। गोबिन्द खिड़ खिड़ा के हस्सा, तली तली नाल ठकराईआ। पुरख अकाल आया नस्सा, निरगुण निरवैर नूर जोत कर रुशनाईआ। उठ वेख मदीना मक्का, काअबे परदा लाहीआ। मुहम्मद सुख़न कहे सच्चा, कूक कूक सुणाईआ। परवरदिगार सोलां सहँस जो लेखा तेरा ढका, गोबिन्द चिल्ले नाल उठाईआ। शब्दी मैनूं लिख दे पटा, फ़रमांबरदारी सेव कमाईआ। चौदां सद तेरा लाहा खट्टा, खटका मेट कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देणा आप समझाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सरदारा सिँघ पिण्ड रोडे फ़िरोज़पुर ★

कलयुग कहे मेरी आयू हज़ार बत्ती लख चार, चारे वेद देण गवाहीआ। चारे कुण्ट करे पुकार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण कूक सुणाईआ। चारे वरन हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चारे खाणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारे बाणी करे पुकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दए दुहाईआ। मेरा लहिणा देणा पूरा करना विच संसार, संसारी भण्डारी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा देणा पूर दए कराईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ शाम सिँघ पिण्ड नंगल ज़िला फ़िरोज़पुर ★

कलयुग कहे मेरी आयू तेरे हुक्म वाली लम्बी सच्ची, कर्म धार दे समझाईआ। जो तैनूं भावे अच्छी, चंगी तरह दृढ़ाईआ। कुछ लेखा जाण जिस वेले मत्सय रूप वटाया मच्छी, धड़ मानव नज़री आईआ। कुछ लेखा वेख जिस वेले मूसे पई ग़शी, कोहतूर वड्याईआ। कुछ परदा खोल्ह जिस वेले मुहम्मद बवन्जा साल दाढ़ी कीती रती, अगला रंग रंगाईआ। कुछ संदेसा बोल जिस वेले नानक पांधे पढ़ाई पट्टी, बिन अक्खरां अक्खर वड्याईआ। कुछ पूरा तोल तोल जिस वेले अर्जन गुर कलम काग़ज़ उत्ते रखी, दर साचे सीस निवाईआ। कुछ परदा फोल जिस वेले गोबिन्द मंग मंगी, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। जिस कारण खेल होणा बहुरंगी, भेव कोए ना पाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग तेरा लेख हुक्मे अंदर मुकावां लख चार हज़ार पंजी, निरगुण हो के आपणे विच छुपाईआ। करां खेल सूरा सरबंगी, प्रगट हो के धुरदरगाहीआ। कलयुग तेरी धार मेटां दो रंगी, कुड़ंगी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ तेज कौर पिण्ड वलूर, ज़िला फ़िरोज़पुर ★

कलयुग कहे सुण मेरे धुर दे यार, दर तेरे सीस निवाईआ। मैथों भोगे नहीं जाणे लख चार, बत्ती हज़ार ना सेव कमाईआ। मैं सूरबीर बणां सिक्दार, दर ठांडे मंग मंगाईआ। झगड़ा रखां नाल गुरू अवतार, पैगम्बरां दयां हलाईआ। शास्त्रां दी शरअ करां खुआर, एह देणी माण वड्याईआ। पढ़न सुणन वाले करन विभचार, सांतक सति धीरज धीर ना कोए रखाईआ। साधां सन्तां अंदर वाड़ दयां काम क्रोध लोभ मोह हँकार, सिँघासणां उत्ते आसण देवां डुलाईआ। दृष्टी

सर्ब करां विभचार, कुकर्म नाल कुड़माईआ। सुहावे कोई ना सच्चा ताल, धर्मसाल ना कोए वड्याईआ। पूरी होवे ना किसे घाल, कोटन कोटि भज्जण वाहो दाहीआ। त्रैगुण पा के सर्ब जंजाल, जगजीवण दाता दयां भुलाईआ। प्रभू तेरी सेवा करां कमाल, बहुता समां थोड़े विच भुगताईआ। तूं मन्न बेनन्ती मेरा सवाल, दर ठांडे दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी गुरमेज़ कौर पिण्ड मक्खण विण्डी ज़िला अमृतसर ★

कलयुग कहे मैं वेखां तेरी धुर दी पुरी, मेहरवान दया कमाईआ। आपणे नाम दी दे दे इक्क पुड़ी, अंदर मेरे दे टिकाईआ। हथ्थ फड़ा दे द्वैत वाली छुरी, सृष्ट ज़िबह दयां कराईआ। अबिनाशी करते मैं दुनिया करनी निगुरी, शास्त्रां दी चल्लण ना देवां कोए चतुराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठां अंदर धी भैण कोई ना जाणे कुड़ी, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। ओस वेले मेरी बेड़ी जावे रुढ़ी, बहुता पन्ध ना कोए ना वखाईआ। कोटां विच्चों तेरे भगत दी सुरती होवे जुड़ी, जोड़ी धुर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सुरिंदर कौर ऐच ऐम टी पंचूआ डिसपैंसरी
पिण्ड छीना वाली ज़िला अमृतसर ★

कलयुग कहे प्रभू मैं बणना मंगता, मेरी झोली देणी भराईआ। मैं दीन दुनी गढ़ बणावां हंगता, हँ ब्रह्म सर्ब भुलाईआ। मेरा झगड़ा तन वजूद काया माटी होवे जंग दा, योद्धे अंदरों लवां प्रगटाईआ। किसे दे अंदर रस रहिण ना देवां अनन्द दा, सुख विच ना कोए समाईआ। निशाना अंदरों मिटावां सूर्या चन्द दा, तारा मण्डल ना कोए रुशनाईआ। परदा पा के द्वैती कंध दा, भरमां विच दयां भुलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कूड़ी क्रिया विच चार लख मैथों ना लँघदा, हज़ार बत्ती ना सेव कमाईआ। मैनूं रस्ता दस्स मेरे पन्ध दा, छेती दयां वखाईआ। तूं सदा टुट्टीआं गंढुदा, वड दाता बेपरवाहीआ। तेरा लेखा कोट ब्रह्मण्ड दा, पुरी लोअ खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ मिलखा सिँघ ३६ जे० बी० पिण्ड गंगा नगर ★

पुरख अकाल किहा सुण कलयुग मेरे नन्हे बाल, हुक्म दयां सुणाईआ। जगत चलणी अवल्लड़ी चाल, निराली इक्क दरसाईआ। दृष्टी करनी बेहाल, सृष्टी सुध रहे ना राईआ। झगड़ा पाउणा नाल गुरू अवतार, पैगम्बरां देणा हिलाईआ। ग्रन्थां सके ना कोए विचार, विद्या जगत कर हल्काईआ। शास्त्रां रहे ना कोए प्यार, अस्तिक नास्तिक रूप वटाईआ। ममता विच करने ग्रिफ़तार, मोह विच फसाईआ। संनयासी रहे ना कोए आचार, सुरत शब्द ना कोए जुड़ाईआ। चार कुण्ट सति धर्म दा थोड़ा अख्त्यार, मुखत्यार मैनूं दिता बणाईआ। मुहब्बत रहे ना किसे यार, नार कन्त पवे लड़ाईआ। मात पित पिता पूत कोए ना देवे धार, धर्म दवारा ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। सुण के बचन लख चार प्या रो, हजार बत्ती दए दुहाईआ। कलयुग अग्गे गया हो, होका दे सुणाईआ। पुरख अकाल किहा तुसां दोहां होणा निर्मोह, मुहब्बत जगत ना कोए बणाईआ। मैं साचा ढोआ देवां ढोअ, वेले वक्त नाल देवां वड्याईआ। सति धर्म ईमान इष्ट दृष्टी विच्चों सब दा लवां खोह, ख़ाली करां लोकाईआ। गुरू चेला इक्क दूजे नाल करे धरोह, दरोही दरोही खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ वचिन्त कौर पिण्ड रुढ़का ज़िला जलन्धर ★

सच संदेसा सुणावे इक्क इकल्ला, इक्को वार दृढ़ाईआ। जिस नूं मन्नदे धुर दा अल्ला, आलमीन अख्वाईआ। सच संदेसा तिस ने घल्ला, मुहम्मद दिता जणाईआ। सदी चौधवीं फड़ लै पल्ला, गंढु निरगुण धार पवाईआ। फेर होणा अछल अछल्ला, वल छल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ अजीत कौर पिण्ड कड़ाला ज़िला कपूरथला ★

चार लख बत्ती हज़ार रो के मारे धाह, हाए उफ़ सुणाईआ। शास्त्र सिमरत साडा भेव जाणे कोई ना, परदा अंदरों ना कोए उठाईआ। बाहरों लिख्ती बणे गवाह, निरगुण धार लहिणा देणा ना कोए भुगताईआ। बौहड़ी प्रभ ने आपणा हुक्म देणा वरता, साडी चले ना कोए चतुराईआ। लेखा जाणे नूरी खुदा, खुद मालक धुरदरगाहीआ। जितनी आयू चाहे उतनी लए भुगता, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। जिवें पापियां तों भगत लए बणा, मेहर नज़र उठाईआ। एसे तरह कलयुग दी

दुरमति मैल छेती दए धवा, जो चल आया सरनाईआ। जिस ने चार लख हज़ार बत्ती दिते लिखा, ओसे ने अग्गे सब दा लेखा देणा मुकाईआ। मुहम्मद बणाया गवाह, नानक निरगुण नाल रला, गोबिन्द शहादत इक्क बणाईआ। जिस नूं समझे कोई ना रा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप कराईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हज़ारा सिँघ पिण्ड पंडोरी ज़िला अमृतसर ★

शास्त्रां उत्ते जो लिख्या, उह लेख अग्गे ना कुछ बताईआ। ओसे नूं पढ़ पढ़ आप लैंदे सिख्या, साख्यात प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। जिस ने जगत जहान दस्सया मिथ्या, जिस वेले चाहे जुग दए बदलाईआ। आपणा खेल आपे नजिठया, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी चरणो पिण्ड भुस्से ज़िला अमृतसर ★

जे पुछो प्रभ क्यों करे जलदी, छेती वक्त मुकाईआ। हुक्मे अंदर चार कुण्ट अग्ग बलदी, शास्त्र सके ना कोए समझाईआ। किसे ख़बर नहीं अगले पल दी, परदा सके ना कोए उठाईआ। एह धार निहचल धाम अटल दी, दरगाह साची सच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ।

६७५
२०

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरबंस सिँघ चौंक मोनी करोड़ी गली बूटा सिँघ वाली ज़िला अमृतसर ★

साचा हुक्म कहे मैं आ गया, आया धुरदरगाह। कलयुग सिख्या जो सिखा गया, निरगुण सरगुण बण मलाह। गुर अवतारां जो लड़ा गया, पैगम्बरां झगड़ा पा। शास्त्रां दे पिच्छो अञ्जील बाईबल जो लिखा गया, सिफ्तां नाल सालाह। गुरू ग्रन्थ गंढु पवा गया, अगला रंग चढ़ा। जो गोबिन्द वेस वटा गया, वरनां बरनां डेरा ढाह। जिस तरह क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सब दे उत्ते चोटी आप रखा गया, मुच्छ दाढ़ी केस सुहा। एसे तरां कलयुग विच्चों सतिजुग आप बदला रिहा, जिस नूं समझे कोई ना। ओसे दा हुक्म जो हुक्मे अंदर सब कुछ लिखा रिहा, लेखा अगला मेटे कोई ना। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच सब कुछ बणा रिहा, आपे सब दे पड़दे दए उठा। क्यों हर घट दे अंदर डेरा ला ल्या, ब्रह्म रूप रुशना। धुर दा शब्द इक्क आवाज़ सुणा रिहा, लख चुरासी नाल आपणा इक्क उपा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमा।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ महिंदर सिँघ पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ★

जे पुछो कलयुग दी की निशानी, अन्त दयां समझाईआ। सब दी जूह होई बेगानी, घर दा मालक नज़र कोए ना आईआ। आपणा भेव समझे ना कोए प्राणी, शास्त्र पुराण पढ़ के निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। जेहड़ी मंज़ल प्रभ ने रखी आसानी, तिस पिच्छे दीवानी होए लोकाईआ। एह खेल निर्मल निरवैर रुहानी, रूह बुत्त मिल के वज्जे वधाईआ। शास्त्र रूप जिवें तत वजूद जिस्मानी, जो होवण वाला फ़ानी, जो विद्या दा विद्‌वानी, ब्रह्म ज्ञानी दी परे धार ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ भजन सिँघ पिण्ड धंगाली ज़िला जम्मू ★

कलयुग दे अन्तिम की होवे विहार, सारे मस्तक हथ्थ रख के सोचां विच सोच रहे टिकाईआ। कोई अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दवारे पावे कोई ना सार, महासार्थी की की आपणी बणत बणाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन कोटि उतरे पार, लेखा सब दा दए मुकाईआ। कर्म कुकर्म धर्म अधर्म वेखे वेखणहार, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क उपजाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी सवरनो पिण्ड किरतो वाल ढाए वाल ज़िला अमृतसर ★

कलयुग अन्त अखीरी क्यों आया आखर, अक्खर देण दुहाईआ। जिस वेले गोबिन्द पहले दिन नीले उत्ते पाई पाखर, आसण इक्क सुहाईआ। ओस वेले पुरख अकाल बण के कातब, बिन अक्खरां जोड़ दिता जुड़ाईआ। निरगुण धार बण के वाकफ, भेव अभेदा दिता खुल्लाईआ। कूड़ी क्रिया वधाउणी ताकत, ज़ोर बल नाल उपजाईआ। जिस ने छेती छेती विद्‌वानां दी बदल देणी ल्याकत, अकल दी चले ना कोए चतुराईआ। दीन दुनिया करनी साकत, निन्दक दुष्ट दुराचार बदलाईआ। सच्चा रहे कोई ना आशक, माशूक मश्वरा ना कोए समझाईआ। कुछ होर लेखा जिस वेले विष्नूं चरण धरया उत्ते बाशक, शेष दिती दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ तारा सिँघ पिण्ड गुंमटी ज़िला बठिंडा ★

कलयुग कहे बाशक मार रिहा फूक, सांगोपांग रिहा हिलाईआ। कलयुग थल्ले रिहा कूक, कूक कूक सुणाईआ। वेखो खेल पंज भूत, तत वजूद होवे लड़ाईआ। झगड़ा दिसे चारे कूट, सांतक सति ना कोए कराईआ। शास्त्र सिमरत जिस दा देंदे गए सबूत, सिफ्तां विच सालाहीआ। उह मालक महबूब, मेहरवान अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे हो मौजूद, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। अन्त करके नेस्तोनाबूद, जड़्ह दए उखड़ाईआ। सतिजुग उठावे आपणा पूत, सपूता इक्क जगाईआ। नाल दे के शब्द दूत, दो जहानां दए फिराईआ। पिछला लेखा कर मौकूफ़, कुफ़ल अंदरों ताले दए खुल्ह्हाईआ। भाग लगा के काया कूट, कुटीआ साची करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के जूठ झूठ, सति सच विच समाईआ। मेहरवान आपे तुठ, दयावान दया कमाईआ। भाग लगा के काया माटी बुत्त, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ किशन जीत सिँघ पिण्ड लुहारा ज़िला जलन्धर ★

पुरख अकाल कहे मेरा खेल अनोखा, अनुभव विच रखाईआ। सिफ्तां वाला शास्त्र सिमरत वेद पुराण धुर दा पोथा, ग्रन्थां नाल वड्याईआ। मेरे नाम दा देवणहारा होका, जो संदेसा दयां सुणाईआ। अग्गे दा जाणे कोई ना मौका, की करता कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्टी दृष्टी दए बदलाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ मोहण सिँघ पिण्ड कादीआं ज़िला गुरदासपुर ★

जुग बदलणा धुर दी रीत, रीतीवान जणाईआ। राती सुत्यां दिने उठदयां सब दी बदल देवे नीत, बदली विच देर ना कोई लगाईआ। स्वामी हो के वसे चीत, चेतन कर के लए जगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, सोहँ धार विच समाईआ। निरगुण निरवैर निराकार अतीत, ठांडे सीत दए कराईआ। मन वासना गुरमुख जावणा जीत, जगत जोग जुगत दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ ज्ञान चन्द पूना शहर ★

चार लख हज़ार बत्ती हुक्मे अंदर मुके पन्ध, साल बसाल रूप ना कोए वटाईआ। एह खेल सूरे सरबंग, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचा दए अनन्द, अनन्द आत्मा विच प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दा होवे छन्द, नौ खण्ड दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे पन्ध, सति सच जगत प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए प्रगटाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ नरिंदर जीत कौर पिण्ड खत्यार पुर ज़िला शाहजहान पुर यू० पी० ★

सतिजुग साचा मातलोक जावे लग्ग, लागत नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां अंदर प्रेम सतार जाए वज्ज, अनहद नादी नाद सुणाईआ। बिन मक्के काअब्यों काया काअबे होवे हज्ज, हज़रत मिले धुरदरगाहीआ। अमृत जाम निजर धार प्याए रज्ज, कूड़ी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका रूप रंग, रंगत आपणी दए चढ़ाईआ। सेज सुहञ्जणी वेख पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शब्द अनाद वजा मृदंग, मर्द मर्दाना करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम संदेसा इक्क सुणाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सरजीत कौर पिण्ड वेगे पुर ज़िला अमृतसर ★

नाम संदेसा देवे हर घट भीतर, गृह गृह आप जणाईआ। कंचन सोना करे पीतल, पीत पीतम्बर आप सुहाईआ। धुरदरगाही ठाकर मीतल, मित्र प्यारा दया कमाईआ। साचे नाम दा दस्स कीर्तन, किरतीआं किरत इक्क समझाईआ। हुक्मे अंदर लख चार हज़ार बत्ती बीतन, बैतुल धार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सोहणा इक्क उपजाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरदास मल पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ★

घर सोहणा सुहञ्जणा, ठांडा धुर दरबार। जिस गृह प्रकाश होवे आदि निरँजणा, निरगुण नूर नूर उज्यार। ठाकर स्वामी वसे दर्द दु:ख भय भंजना, पतिपरमेश्वर परवरदिगार। ओसे दे हुक्मे अंदर कलयुग मात लँघणा, सिर सके ना कोए

उठाल। सतिजुग साचा दीपक जगणा, अन्ध अन्धेरा मिटे गुबार। डंका वज्जे विच ब्रह्मण्डना, वरभण्ड करे ख़बरदार। लेखा धुर सूरे सरबंगना, खेल करे निरगुण निरवैर निराकार। सच प्रकाश देवे चन्दना, काया माटी हो उज्यार। सृष्ट सबाई दस्से बन्दना, बन्दीखाना तोड़ गढ़ हँकार। नाम भण्डारा साचा वण्डना, दीन दुनी बणाए यार। पिछली क्रिया मुक्के बन्दना, अगला सति धर्म होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार।

६७६

२०

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ रोशन लाल पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ★

करतार कहे मैं करनी दा करता, कुदरत मेरी धार नज़री आईआ। जुग चौकड़ी मेरा बरदा, दर ठांडे सीस निवाईआ। हुक्मे अंदर घलदा, हुक्मे अंदर सद वखाईआ। जिवें माता कुक्खों बाल जम्मदा, आयू वड्डी छोटी कर वखाईआ। जिवें भरवासा नहीं किसे माटी चम्म तन दा, आयू मानव सौ साल तोड़ ना कोए निभाईआ। एसे तरां कलयुग कूड़ी क्रिया हुक्मे अंदर भन्नदा, हुक्मरान धुरदरगाहीआ। जो पुरख अकाल कच्चा नहीं कन्न दा, आपणी करनी कार कमाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर मन्नदा, नाम निधान ढोला गाईआ। ओह खेल करे आपणा कम्म दा, दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ माया राम पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ★

सतिजुग साचा जो करे आप प्रचलत, चलित्तं मेटे कूड़ लोकाईआ। सो लेखा जाणे हलत पलत, अन्तर बाहर वेख वखाईआ। सृष्टी नूं ज्ञान देवे फ़ुरने तों पहलों पलक, पलक विच्चों ख़लक दए समझाईआ। जो करे प्रकाश उत्ते फ़लक, धरनी धरत धवल सुहाईआ। भगतां नाल कर के सांझा तुअल्लक, नाता बिधाता लए जुड़ाईआ। जोती नूर दी दे के डलक, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मेहर कर निरगुण निगाहवान आउण नहीं दिन्दा अगली भलक, छिन विच आपणा भेद चुकाईआ। जिस वेले सतिजुग साचे सच धर्म दा दिता तिलक, टिक्का देणा लगाईआ। भगत सुहेला कोई ना जावे खिसक, शब्द डोरी नाल जुड़ाईआ। जो संदेसा दे के गया राम वशिष्ट, भेद अभेद खुल्हाईआ। सृष्टी दी खोल्हे दृष्ट, परदा आप चुकाईआ। भावें कोई साधू सन्यासी वैरागी त्यागी बैरागी जटा जूट धारी भावें कोई भोगण वाला गृहस्त, समझ सहिजे दए समझाईआ। जे मेहरवान मेहर करे पार करे मूर्ख मूढ़े निन्दक, पतित पापियां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे हुक्म नाल समझाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सुरिंदर पाल पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ★

साचा हुक्म धुर दा फ़ुरना, फुरती नाल सर्ब उठाईआ। सतिगुर शब्द नूं कदे पए ना तुरना, लख चुरासी अंदर वड़ के सुत्यां लए उठाईआ। जिस दुआर जाए ओस घरों ख़ाली कदे पए ना मुड़ना, प्रेम प्रीती लै के आईआ। साचे सन्तां भगतां सति नाल सदा पए जुड़ना, जो सति विच समाए प्रभ दा दर्शन पाए, तिन्हां दे कलयुग नेड़ ना आए, सतिजुग रूप ना कोए बदलाए, इक्को रंग वखाईआ। मूर्ख मुग्ध समझाए, पतित पापी तराए दुष्ट दुराचारी उठाए, गुरमुख करमचारी कर्म कांड तों बाहर लेखे लाईआ। सतिजुग साची रुत्त सुहाए, अबिनाशी अचुत्त वेख वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाईआ।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जुगिंदर कौर पिण्ड भोले ज़िला जलन्धर ★

सतिजुग साचा मार्ग दस्से धर्म, दवारा इक्को दए दृढ़ाए। मानव जाती तेरा नूर निराला ब्रह्म, पारब्रह्म रुशनाए। साची प्रीती तेरा कर्म, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाए। कूड़ा गढ़ रहे ना भरम, परदा आप चुकाए। सतिजुग साचे दे के जन्म, आप बणे जणेंदी माए। लेखा मेट के वरन बरन, साचा रंग इक्क रंगाए। हरि करता करनी करन, कुदरत वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक्क खुल्हाए।

★ २ चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरतख्त सिंघ पिण्ड लौड़ूवाल ज़िला लुधियाणा ★

सच्च दवारा खोल्हणा, हरि करते हो दयाल। नाम जैकारा इक्क बोलणा, नाल रला के भगत सुहेले लाल। साचे कंडे तराज़ू तोलना, सन्त सुहेला सज्जण उठाल। कोई रहे ना परदा ओहलना, झगड़ा मुकणा शाह कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच धर्म आप विरोलना, मथ्थ सर्ब संसार। कलयुग आयू कूड़ी क्रिया नाल रही लुक, जगत अपराधां दिता खपाईआ। जिस दा लेखा ओसे दा सुख, सागर गहर गम्भीर प्रगटाईआ। कलयुग बदलण विच सतिजुग प्रगटाउण विच करे ना कोई दु:ख, कलेश विच कल्पणा ना कोए वधाईआ। एह लेखा ओहदा जिस ने लख चुरासी जीव जंत बणाए नाल मानस मनुक्ख, तत वजूद माटी ख़ाक दिती वड्याईआ। सो धर्म दवारा एक एकँकारा वखाए सच सुच, सति सति नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ

विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण निरवैर निराकार परवरदिगार सांझा यार धुर दरबार धर्म निशान्यौं कदे ना जावे उक, अणयाला तीर चलाईआ।

★ ३ चेत शहिनशाही सम्मत ३ साधू सिंघ
पिण्ड झामके ज़िला अमृतसर ★

मेहर करे प्रभ इक्को दाता, दूजा नजर कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी जीव जंत ज्ञाता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गाउँदी गाथा, अक्खर सोहले ढोले रागां नादां विच करन शनवाईआ। तिस दा हुक्म संदेसा निरगुण सरगुण दो जहानां होवे साचा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हुक्म सुणाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां अन्तर आत्म मिटे अन्धेरी राता, दूई द्वैती परदा लाहीआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा पूरब लेखे विच्चों पूरा करे घाटा, मेहर नज़र निगाहबान आप उठाईआ। आवण जावण लख चुरासी पतित पावण मेटे वाटा, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ला एकँकार धुर दरबार आप दृढ़ाईआ। मेहर नज़र करे भगवान, हरि करता वड वड्याईआ। सन्त सुहेले मात पछाण, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। गुरसिखां दे के धुर दा दान, नाम भण्डारा झोली पाईआ। धुन आत्मक राग देवे धुनकान, अनहद नादी नाद वजाईआ। अमृत रस बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। घर स्वामी ठाकर मिले आण, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान महबूब मुहब्बत आपणी इक्क दृढ़ाईआ। मेहरवान मेहर कहे सर्ब स्वामी, नर नरायण नज़री आईआ। जो लख चुरासी काया मन्दिर अंदर घर भीतर अन्तरजामी, गृह लेखा वेख वखाईआ। सो सच सुहेला इक्क अकेला अगम्म अथाह सुणाए आपणी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। धर्म दुआर एकँकार वखाए सच निशानी, जगत निशाना कूड़ा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर मेहर नज़र उठाईआ। करे मेहर धुर दा सज्जण, हरि करता धुरदरगाहीआ। सच प्रीती बख्शे धुर दा मजन, कूड़ी दुरमति मैल धवाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां पड़दे आवे कज्जण, लोकमात वेस अनेका रूप वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा मार्ग आवे दस्सण, सति सतिवादी सति करे पढ़ाईआ। गृह मन्दिर अंदर निज आत्म परमात्म देवे सच अनन्दन,

रस इक्को इक्क वखाईआ। आवण जावण पतित पावन तोड़े बन्धन, जम की फाँसी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहरवान मेहर करे हरि करतार, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। जिस दवारे विष्न ब्रह्मा शिव खड़े भिखार, देवत सुर सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन दीदार, कागत कलम शाही लिखणहार, कातब आपणी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पनिहार, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। त्रैगुण माया पंज तत देवणहार आधार, सच स्वामी आपणी दया कमाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक देवे डार, नाम निधाना श्री भगवाना इक्को इक्क वरताईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ठग्ग चोर यार, काम क्रोध लोभ मोह अंदरों बाहर कढाहीआ। नौ दवारे पैंडा मुके भार, सुखमन टेडी बंक झगड़ा दए मुकाईआ। ईड़ा पिंगल होवे शरमसार, अज्ञान अन्धेर नज़र कोए ना आईआ। अमृत रस दे के ठंडा ठार, बूँद स्वांती कमलापाता इक्क चुआईआ। शब्द नाद दे सच्ची धुन्कार, अनबोलत राग अलाईआ। जोती नूर कर उज्यार, सच ज़हूर दए वखाईआ। मेहर विच सब कुछ बख्शणहार, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आदि निरँजण नूर करे रुशनाईआ। मेहर प्रभ दी जो रिहा लोड़, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। तिस सतिगुर शब्द जोड़े जोड़, सुरती अकाल मूर्त नाल मिलाईआ। लग्गी प्रीत निभावे तोड़, कूड़ी क्रिया कर सफ़ाईआ। झगड़ा रहे ना मोर तोर, ब्रह्म पारब्रह्म विच मिलाईआ। करे प्रकाश अन्धेरे घोर, नूरी चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह इक्क वखाईआ। मेहर अंदर करे मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। सच दुआर वखाए सच्ची धर्म निशानी, निशाना तेरा इक्क चलाईआ। बख्शणहार पद निरबाणी, त्रैगुण अतीता धुरदरगाहीआ। जिस दा खेल जगत महानी, महिमा अकथ ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़ालक प्रितपालक इक्क अख्वाईआ। मेहर करे हरि मेहर दा दाता, दयावान वड्याईआ। दरस वखा के इक्क इकांता, घर साजन बेपरवाहीआ। मन वासना कूड़ी क्रिया तोड़े नाता, सति सच इक्क समझाईआ। जन भगतां पूरीआं करे आसा, निरासा रहिण कोई ना पाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। गुरमुखां देवे धुर दा साथा, गुरसिख आपणा रंग रंगाईआ। जो सतिगुर शब्द मन्ने आखा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। तिस दा अंदरों खोल्ले ताका, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। दरस वखाए साख्याता, हरि सज्जण शहिनशाहीआ। पूरा करे अगला पन्ध पिछलीआं वाटां, अधवाटे रहिण कोई ना पाईआ। मेहर अंदर मेहरवान हरि करता जन साचे देवे साथा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे हरि मेहरवान वरन बरन जाता पाता, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच समाईआ।

★ ३ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरभजन कौर दे गृह पिण्ड भगवान पुरा ज़िला अमृतसर ★

चेत करे मोहे चाउ घनेरा, अंदर मन्दिर वज्जे हक वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार बन्न्हण वाला बेड़ा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखण वाला आपणा खेड़ा, पुरीआं लोआं आकाश पाताल गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। वक्त अख़ीरी बेनज़ीरी लाशरीक करे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। पहली चेत कहे मैं जावां बलिहार, प्रभ देवणहार वड्याईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, आत्म परमात्म परदा दए उठाईआ। भगत सुहेला बण के मीत मुरार, गुर चेला आपणे रंग रंगाईआ। शब्द संदेसा नर नरेशा देवे एकँकार, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, वसणहारा ठांडे दरबार, परवरदिगार नूर खुदाईआ। लहिणा देणा वेख गुरू अवतार, पैगम्बरां भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। चेत करे मेरे अन्तर अन्तर आवे खुशी, निरंतर मिले बेपरवाहीआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी दीन दुनी दी बदल देणी रुची, रचना आपणी देणी समझाईआ। मन विकारी कूड़ी सृष्टी बुध बिबेक करनी सुच्ची, सति धर्म निहकर्मी हो के आपणा कर्म देणा समझाईआ। सुरती रहे कोए ना सुत्ती, शब्दी डंक राउ रंक करे शनवाईआ। अगली रमज़ रहे ना गुज्झी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क वखाईआ। पहली चेत कहे मैं वेख्या परवरदिगार, बेपरवाह नूर खुदाईआ। जो वसे सचखण्ड सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित आदि जुगादि लेखा जाणे सर्ब संसार, महासारथी आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख जन भगत लए भाल, सूफ़ी फ़कीर आप उठाईआ। साचा मार्ग दस्स सुखाल, नाता तोड़ कलयुग कूड़ी क्रिया शाह कंगाल, दलाल इक्को धुर दा नाम दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा धुर दरबारा इक्को इक्क सुहाईआ। चेत कहे मैं खुशीआं विच तक्कां राह, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। साहिब सतिगुर

शब्द गोबिन्द मिले मलाह, बेड़ा नईआ नौका जगत सागर विच्चों पार कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से सच सलाह, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जन्म कर्म दे कटे पतित पापियां गुनाह, पुनीत बिन मन्दिर मसीत लए बणाईआ। साचा मार्ग दए वखा, जित्थे वसे बेपरवाह, मंज़ल हकीकी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर लेखा बणा अगला, धुर पूरब लहिणा दए चुकाईआ। चेत कहे मैं वेख होवां खुशहाल, पुरख अकाल अगम्मी खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़े मात जंजाल, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा हुक्म वरताईआ। चार वरन अठारां बरन काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, धुर दा काअबा इक्क जणाईआ। जिस गृह दीपक जोत जगे बेमिसाल, मिसल विच मसला सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी धुन आत्मक राग अलाईआ। चेत कहे मेरे अन्तर आए अगम्म विचार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण कोए ना पाईआ। जो गोबिन्द कीता कौल इकरार, बिन कलम शाही काग़ज़ लेख लिखाईआ। सो जाणे सति पुरख निरँजण आपणी धार, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर होवे उज्यार, अजूनी रहत वेस वटाईआ। नव नौ चार पावे सार, साजण बण के धुरदरगाहीआ। भगत सुहेले लए उठाल, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद बणे धुरदरगाहीआ। झगड़ा मुका के काल महाकाल, सवाल आपणा हल्ल कराईआ। चेत कहे मैं देणा सर्ब अहिवाल, धुर दरबारयों मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे कमाल, करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणा भेव आपणे विच रखाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी प्रीतो दे गृह पिण्ड सठयाला ज़िला अमृतसर ★

दर्शन करन जो आई सतिगुर संगत, गुरमुख गुरसिख संगी साथी नाल रलाईआ। तन वजूद काया माटी ख़ाकी अंदर बाहर चाढ़े रंगत, नाम निधाना श्री भगवाना आपणा रंग चढ़ाईआ। मोह विकार कूड़ी क्रिया तोड़े गढ़ हंगत, सति सच ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी बोध अगाधा इक्को पंडत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार धुर दी सिख्या इक्क समझाईआ। सन्त सुहेले साजण मीत बिन पुरख अकाल दीन दयाल दूजे दर ना होवण मंगत, गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा शब्दी धार वस्त अमोलक काया गोलक सर्ब आप टिकाईआ। झगड़ा मुकावे दोज़ख

बहिश्त जन्नत, जागरत जोत बिन वरन गोत सति सरूप शाहो भूप इक्क दरसाईआ। मेल मिलाए दया कमाए पतिपरमेश्वर धुर दे कन्त, सन्त साजण धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कलधारी आपणा आप जणाईआ। दर्शन करन जो संगत आई कर इक्ठ, सोहणा सतिगुर रूप बणाईआ। धीरज सन्तोख अन्तर मिले हठ्ठ, कूड़ी क्रिया ममता मोह विकार मिटाईआ। शब्द अगम्मी धुन अनादी वज्जे सट्ट, आत्मक राग इक्क सुणाईआ। निजर झिरना अमृत रस सच दवारयों देवे झट्ट, अमिउँ रस आपणा जाम प्याईआ। दुरमति मैल नौ दवारयों जावे कट, कटड़ा काया गढ़ इक्क सुहाईआ। जिस गृह ठाकर स्वामी पुरख अकाला रिहा वस, दीन दयाला सोभा पाईआ। निज नेत्र लोचन खोल्ह के अक्ख, प्रतख मिले हरि गुसाईंआ। गुरमुखां नालों कदे ना होवे वक्ख, गुरसिखां संग ना कदे तुड़ाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी गृह मन्दिर वेख वखाईआ। दर्शन करन खातर हरि संगत होया मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। साहिब सतिगुर दा प्रेम प्रीती अंदर करना जाप, जग जीवण दाता दए माण वड्याईआ। नाता तोड़े त्रैगुण कूड़ी क्रिया जगत संताप, पतित पुनीत दए बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बणा के धुर दा साथ, सगला संग सूरा सरबंग आपणा आप जणाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा लेखा लहिणा देणा पूरा कर के घाट, पत्तन धुर दा सज्जण इक्क वखाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच होवे दासी दास, सेवक याचक आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच प्रकाश, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। हरि संगत सद दर्शन रही मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल देवे इक्क अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सज्जण वेख अगम्मी नूरी चन्द, जोती जोत करे रुशनाईआ। खुशी करा के बन्द बन्द, बन्दगी बन्दना इक्क दृढ़ाईआ। बिन सतिगुर प्यार जीवण लोकमात किसे दा ना जावे हंढ, तन वजूद माटी ख़ाकी पोची पाची कम्म किसे ना आईआ। जो सच दुआर धुर दरबार दर ठांडा जाए लँघ, मंज़ल विच्चों आपणी मंज़ल लए बदलाईआ। अन्तर निरंतर मंत्र गाए छन्द, संसा रोग चुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पाए गंढ, भेख पखण्ड कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि संगत विच हरि सज्जण सद समाईआ। हरि संगत तन वजूद बाहरों दरस कोई ना लोड़े, दर्शन इक्को दयां दृढ़ाईआ। सुरती शब्द सतिगुर जोड़े, जोड़ी बणे धुरदरगाहीआ। दर आयां ग़रीब निवाज़ कदी किसे ना मोड़े, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। करे प्रकाश अन्ध घोरे, जलवा

नूर करे रुशनाईआ। झगड़ा मुकाए ठग्ग चोरे, चुरासी दा लेखा दए मुकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तरजामी हो के बौहड़े, हरिजन गुरमुख सन्त साजण सति मुहब्बत विच आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, हरि संगत हरि हरि रंग वखाईआ। हरि संगत जो आई चल, कदम कदम पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल तिन्हां दे वल्ल, वलवले अंदरों वेख वखाईआ। तत विकार छुडा दे छल, कूड़ कुड़यारा पैंडा देणा मुकाईआ। सच दवारा लैणा मल्ल, बिन गोबिन्द पुरख अकाल दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जो वसे जल थल, महीअल आपणी कार कमाईआ। करे प्रकाश घड़ी पल, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। निहचल धाम बैठा मल्ल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सो आत्म परमात्म सति सरूप हो के जाए रल, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा मेल मिलाईआ। सच प्रेम दा शब्द अगम्मी अमृत नाम धुर दा देवे फल, फलीभूत सर्ब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा धुर दरबारा इक्को इक्क दृढ़ाईआ। हरि दर्शन सदा हरि संगत अंदर, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस सुहाया साढे तिन्न हथ्थ नौ दवारे दा मन्दिर, मन्दिर दे अंदर कंदर आपणी लई बणाईआ। किरपा निधान किरपा कर के गुरमुखां तोड़न लग्गा जंदर, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी आपणे नाल बणाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया दहि दिशा भवे मूल ना बन्दर, बन्दगी विच मछन्दगी इक्को दए समझाईआ। पैंडा मुका के प्रकाश सूर्या चन्द्र, नूरी जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। साची वस्त अमोलक अगम्म अथाह बेपरवाह कोलों गुरमुख सदा मंगण, मांगत हो के आपणी झोली डाहीआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक दीन दयाला वड कृपाला प्रेम प्रीती चाढ़े रंगण, रंग अनडिठ्ठड़ा आप चढ़ाईआ। हरि संगत हरि सतिगुर मिल हरि दवारे दोहां दी सांझी इक्को जेही बन्दन, बंदयां वरगा बन्दा बन्दीख़ाने दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण करे खेल सूरा सरबंगन, शाह पातशाह शहिनशाह धुर दा मालक इक्क अख्वाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड सठयाला ज़िला अमृतसर ★

पुरख अकाल सुणो ब्यान, गुर अवतार पैगम्बर ध्यान लगाईआ। सृष्टी उत्ते वेखो मार ध्यान, चार कुण्ट दहि दिशा अक्ख खुल्हाईआ। हिरदे अंदर रिहा ना किसे ज्ञान, कूड़ी क्रिया जगत हल्काईआ। नेत्र रोंदे शास्त्र सिमरत देव पुराण, अञ्जील

६८६
२०

कुरान दए दुहाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोई महान, महबूब मिल के ख़ुशी ना कोए बणाईआ। मन वासना शरअ फिरे सैतान सृष्टी दृष्टी अंदर कीती हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा सचखण्ड निवासी इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार वेखो लोकमात उत्ते धरत, धरनी धवल रही कुरलाईआ। झगड़ा प्या उत्ते फर्श, अल्लाह वाहिगुरु राम दिसे लड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धुर दे कर्म दी वेखो आपणी फ़रद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुर फ़रमाना श्री भगवाना जो सरगुण धार निरगुण निरवैर अग्गे कर के आए अरज़, निरवैर कोलों मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर धुर फ़रमाना वेखो पूरब इतहास, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जिस विच हुक्म संदेसा लिख्या ख़ास, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी समझ कोए ना पाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त सदी चौधवीं होए अन्धेरी रात, साचा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। दीन मज़्हब झगड़ा मेटे (ना कोइ) ज़ात पात, माया ममता मोह विकार हँकार करे लड़ाईआ। साची वस्त नाम अमोलक रहे किसे ना पास, साध सन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त मिलण कोए ना आईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोड़े कोई ना नात, सुरती शब्दी मेला मेले कोए ना ना तन वजूद वज्जे वधाईआ। जो भविख्तां विच गए आख, लेखां विच लेखा लिख्या साख्यात, कलम दवात शाही जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सो लहिणा देणा मंगे पुरख अबिनाश, शाहो भूप सर्ब गुण तास, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपणे मज़्हब दीन इस्लाम, लख चुरासी अंदर वड़ के काया मन्दिर फोल फुलाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया ममता मोह सच विगड़या नज़ाम, नौबत नाम हक ना कोए सुणाईआ। जगत विद्या दृष्टी होई प्रधान, सवान वांग फिरे हल्काईआ। सच महबूब दा देवे ना कोई ज्ञान, अन्तर आत्म निरंतर निरवैर भेव ना कोए खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ अपराध डंक वजाए आण, सोई सुरती ना कोई जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमान इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपणी धरनी, धरती उपर ध्यान लगाईआ। झगड़ा प्या वरनी बरनी, पारब्रह्म ब्रह्म भेव कोए ना पाईआ। सच दवारा एकँकारा आए कोई ना चरणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ आपणा वक्त लँघाईआ। साची मंज़ल दरगाह साची मिले किसे ना चढ़नी, जगत विकार पन्ध ना कोए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म पट्टी मिले किसे ना पढ़नी, अक्खरां वाली विद्या कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण धार इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणा लाह के वेखो परदा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर दीन दुनी लोकमात वेखो सड़दा, अग्नी अग्ग तत्व तत ना कोए बुझाईआ। भेव कोए ना खोल्हे मेरे घर दा, गृह मन्दिर अंदर परदा ना कोए चुकाईआ। भाणा कोई ना दिसे जरदा, सीस जगदीस ना कोए निवाईआ। सच दवारे सचखण्ड कोई ना वड़दा, अधवाटी दिसे लोकाईआ। मिले मेल ना निरगुण निराकार निरवैर निरँकार निर दा, टुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द जीव जहान जगत जिज्ञासू होवे पढ़दा, भगत भगवन विच (मिल के) भगवान इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म हुक्मरान इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणे खोल्ह के वेखो बस्ते, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जिस विच्चों दीनां मज़्बां दे तुहानूं दस्से रस्ते, मानव मानव वण्ड वण्डाईआ। फ़ुरने इशारे दस्से अगम्मी इक्क दे, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। नाम भण्डारे दिते सच दे, राम अल्ला सतिनाम वाहिगुरू आप वरताईआ। क्यों कूड़े होए काया भाण्डे माटी कच्च दे, कंचन गढ़ ना कोई सुहाईआ। मन वासना अंदर जीव जंत जिज्ञासू साध सन्त फिरदे नच्चदे, तृष्ना तृप्त ना कोई कराईआ। वसेरे मुक्के ना आत्म परमात्म अलग्ग दे, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल मंगे सब तों बाकी, चार जुग दा लेखा देणा वखाईआ। की सिख्या दिती तन वजूद ख़ाकी, कवण मंत्र आए दृढ़ाईआ। कवण जाम प्याया बण के साकी, अमृत जाम प्याईआ। किस बिध परदा लाहया बजर कपाटी खोल्ह ताकी, निरंतर मेरा अन्तर दे समझाईआ। कवण रस बूंद चवाई स्वांती, अग्नी तत बुझाईआ। किस बिध जगा के आए निरगुण जोत दीआ बाती, घर घर विच कर रुशनाईआ। किस बिध हुक्म संदेसा मन्न के आए आखी, आख़र विच आपणा तन वजूद तजाईआ। की लेखा लिख के आए कलम दवाती, नाम सिफ्तां विच सालाहीआ। की रंग चढ़ाए तन पोशाकी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी करी की पढ़ाईआ। की मंज़ल दस्स के आए घाटी, रहिबर जगत अख्वाईआ। सो लहिणा देणा सच दुआर एकँकार परवरदिगार सांझा यार मंगे हुक्म इख़लाकी, इत्तफाकी आपणी कार कमाईआ। क्यों कलयुग अन्त अख़ीर दीन दुनिया बदली हयाती, हदायत कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना साचा राणा धुर दरबारे आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों दुनिया भुल्ली, मैनूं दयो समझाईआ। भाग लग्गे ना काया कुल्ली, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए वड्याईआ। क्यों कूड़ अन्धेरी झुल्ली,

मनका सिमरन पूजा पाठ कम्म किसे ना आईआ। क्यों अमृत धार डुल्ही, निजर धार रस ना कोए चखाईआ। क्यों ममता मोह विकार विच रुली, सच सिँघासण चढ़ के प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। क्यों जगत विकारा लाया बुल्लीं, आबे हयात जाम ना कोए प्याईआ। क्यों कूड़े कंडे तुली, सच तराजू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों कलयुग कूड़ी क्रिया कीता ज़ोर, जोरू ज़र रिहा कुरलाईआ। झगड़ा पाया अंदर पंज चोर, शरअ शैतान करे लड़ाईआ। क्यों चार कुण्ट होया अन्धेरा घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों तुसां तुरत शब्द ना बन्ही डोर, आत्म जोड़ जुड़ाईआ। इस दा उत्तर दयो मोड़, सच संदेसे मंग मंगाईआ। मैं अगला खेल करना कुछ होर, जिस दी चार जुग समझ कोए ना पाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग देणा तोर, तुरत आपणी कार कमाईआ। आपणा नाम संदेसा दे के नवां नकोर, चार जुग दा लहिणा देणा मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के बोल, अनबोलत राग देणा समझाईआ। सच भण्डारा आदि जुगादि मेरे कोल, जुग चौकड़ी निरगुण धार सरगुण रिहा वरताईआ। सच जैकारा धुर दा नाअरा परदा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक दे पिच्छे आप समझाईआ। सदी चौधवीं रहे ना कोए अनभोल, धुर दा डंक करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त देवे शब्द नाम अनमोल, अनमुलड़ी वस्त सतिजुग दस्त धर्म अर्थ झोली पाईआ। जो सतिगुर नाम प्यार दा रोगी, मानव मानुख नज़री आईआ। जो अन्तर आत्म रस दा भोगी, सच सुख राह तकाईआ। जो निरगुण निरवैर धार पढ़े पोथी, बिन अक्खरां आवाज़ अलाईआ। तिस दा होवे मेल संयोगी, धुर मेला लए मिलाईआ। पुरख अकाल चुक्के गोदी, बिन भुजां भुजां टिकाईआ। अन्तर आत्मा जाए सोधी, पतित पवित दए बणाईआ। पन्ध मुकाए लोक परलोकी, दो जहानां डेरा ढाहीआ। पिछली रहिण ना देवे सोझी, समझ विच्चों बाहर कढाहीआ। पन्ध मुका के जगत त्रैलोकी, ब्रह्मण्डां खण्डां लहिणा देणा दए दवाईआ। अन्त मिला के ओस निर्मल जोती, जोत जोत विच समाईआ। जित्थे भगत भगवान दी इक्को गोती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लभ्भणी पए ना कोए कोठी, जगत सिँघासण ना कोए विछाईआ। खाणी पए ना कोए रोटी, तृष्ना तृखा ना कोए तपाईआ। प्रेम विच प्रेमका रहे ना सोती, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत रोग दए गवाईआ। जन भगत रोग जाए लथ, वसूरा रहिण कोए ना पाईआ। जिस उपर किरपा करे पुरख समरथ, मेहर नज़र उठाईआ। साचा मार्ग काया मन्दिर अंदर वड़ के देवे दस्स, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। धुन

६८६
२०

आत्मक राग सुणाए आपणी सद, छन्द अगला दए जणाईआ। जगत दवारा रहे कोई ना हद्द, मन विकारा डेरा ढाहीआ। निजर झिरना अमृत देवे आपणा रस, रस्ता अगला दए खुल्हाईआ। मोह विकार हँकार ग़द्दार अंदरों जाए नस्स, सांतक सति सति कराईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, परदा दए चुकाईआ। नाम निधान मार के सट्ट, सोई सुरती लए उठाईआ। घर जोत कर प्रगट, नूर नूर विच रुशनाईआ। कृपाल हो के दयाल हो के रोगी दा रोग देवे कट, द्वैत रहिण ना देवे फट्ट, भाग लगावे काया मट्ट, जोत जगावे लट लट, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। जेहड़ा रोगी रोग वाला होवे सच, तिस भाग लग्गे काया माटी कच्च, पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरा लूं लूं अंदर जाए रच, साढे तिन्न हत्थ साढे तिन्न करोड़ रोम रोम बैठे सीस निवाईआ। जो रोगी होवे बीमार, राह तक्के नैण उठाईआ। तिस दी पावे ना कोए सार, चारे कुण्टां वेख वखाईआ। भगत उधारना निरगुण दी कार, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। सुत्यां लए उठाल, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच एका घर वखाईआ। जोती जलवा दे जमाल, अन्ध अज्ञान दूर कराईआ। साचे प्रेम दी अगम्मी पुड़ी धर्म मरीज़ नूं देवे खवाल, जिस दे खाधिआं खावंद दा विछोड़ा रहे ना राईआ। उह गुरमुख गुरसिख सज्जण मीत मुरार प्रभ दा लाल, लालन लाल आपणा रंग रंगाईआ। लै के जावे सचखण्ड सची धर्मसाल, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर निरगुण जोत बिन वरन गोत बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रोगी अंदर प्रभ दा मोजी, बुद्धी तों पार सोझी रोज़ी प्रभ दा नाम खाईआ।

६९० २०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड खब्बे ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दीन दुनी वेख होए हैरान, चार कुण्ट दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। चार वरन अठारां बरन साबत रिहा ना किसे दा धर्म ईमान, सच सुच संजम हक ना कोए कमाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया ममता मोह विकार वध्या शैतान, शरअ शरीअत मानव काबलीअत दिती मिटाईआ। सज्जण मीत पिता पूत होए बेईमान, साचा संग सूरे सरबंग ना कोए निभाईआ। जो शास्त्र सिमरत वेद पुराण राहीं दस्स के आए रीत, धुर संदेसा नर नरेशा नर निरँकार तेरा इक्क सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त फिरे दरोही मन्दिर मसीत, शिवदवाला मठ्ठ कूक कूक सुणाईआ। नेत्र रोवे ज़ात पात दीन मज़्ह़ब ऊँच नीच, राउ रंक सांतक सति ना कोए कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोई ना गीत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना ठीक, आवण जावण लख चुरासी पन्ध ना कोए

मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा चले कोई ना चारा, कलयुग आपणी कल वरताईआ। चारों कुण्ट दिसे धूआँधारा, तेरा नाम साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धुर दा शब्द ना किसे विचारा, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। अमृत रस मिले ना किसे ठंडा ठारा, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ देण दुहाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ कूड़ी क्रिया दिसे विभचारा, काम क्रोध लोभ मोह विकार हँकार हल्काईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड निवासी परवरदिगार सांझे यार तेरा दिसे ना किसे दरबारा, दरगाह साची हक मुकामे मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बीस बीसे हरि जगदीसे तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं अन्तिम दिसे हद्द, दोए जोड़ सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ नगारा रिहा वज्ज, चार कुण्ट दहि दिशा करे शनवाईआ। साचा करे कोई ना हज्ज, काया काअबा ना कोए रुशनाईआ। धुन आत्मक सुणे कोई ना नद, अनहद नाम ना कोए शनवाईआ। सच दुआर एकँकार बहे कोई ना सज, साजण मीत तेरा नाम गीत संगीत ताल ना कोए वजाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तैथों होई अड्ड, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। तन वजूद काया माटी खाली दिसण हड्ड, नाम रबाब हक अहिबाब साची तार ना कोए हिलाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी शाह पातशाह शहिनशाह साडा ना कोई सवाल ना कोई जवाब, बेआब बेआब सारे रहे सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा भुलया सब नूं सजदा, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। धर्म दुआर दा रिहा ना कोई बरदा, ख़ादम हो के साची सेव ना कोए कमाईआ। मालक बणया ना कोई तेरे घर दा, सच दवारे वड़न कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच जीव जहान जाए हड़्दा, नईआ नौका नाम हथ्थ किसे ना आईआ। सच स्वामी समरथ कन्त भगवन्त हो के ना वरदा, कूड़ा नाता जुड़या जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर आपणे अग्गे करो हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। अगला लेखा देवां दस्स, बिन विद्या बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दा लहिणा देणा होणा बस्स, पिछले बस्ते देणे बंधाईआ। अगला हुक्म देणा यक, याद धुर दी इक्क सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन मार्ग इक्को देणा दस्स, शतरी ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया ममता मोह विकार दुरमति मैल देणी कट, सति सच अंदर देणा टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धर्म वणजारे खोलूणा हट्ट, लख चुरासी जीव जंत वस्त अमोलक दए वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश

पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान लोक परलोक चौदां लोक आवण नठ्ठ, ईसा मूसा मुहम्मद सीस जगदीस झुकाईआ। एका नाअरा एकँकारा दो जहाना बिन रसना जेहवा गीत गोबिन्द बोलणा सच, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यारा दए समझाईआ। सतिजुग साची धार एकँकार लोकमात देवे रख, निरगुण नूर जोत कर प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शब्दी धार इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा नर नरेशा नर नरायण इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दा हुक्म बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बदल आपणी तकदीर, तदबीर आपणी दे दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा शरअ कट जज़ीर, शाह हकीर इक्को रंग रंगाईआ। मंजल दस्स अख़ीर, आख़र आपणा हकीकी मेला लै मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा रिहा ना भउ, भय विच ना कोए लोकाईआ। झगड़ा रिहा ना मैं हउं, हँकार गढ़ सृष्ट उपजाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा भुल्लया सब नूं नाउं, नाउं निरँकारा ना कोए गाईआ। विभचार होवे थाँईं थांओं, थान थानंतर देण दुहाईआ। हँस बुद्धी होई काउं, काग वांग कुरलाईआ। भाग लग्गा ना किसे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ गाउं, धर्म मन्दिर नज़र किसे ना आईआ। प्रभ मिलण दा रखे कोई ना चाउ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़ के आपणा झट लँघाईआ। दीन दुनी परमारथ सवारथ भुल्ली आपणा राहो, रहिबर लेखा याद ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी पुरख अकाल दीन दयाल गुर अवतार पैगम्बर दर तेरे अरज़ सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो संदेसा अगम्म फ़रमान, चार जुग लेख लिख्त ना कोए बणाईआ। कूड़ी क्रिया बदल देणा विधान, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सच दवारा एकँकारा इक्को दस्सणा धर्म अस्थान, जित्थे पूजा होवे बेपहचान, झगड़ा रहिण नहीं देणा दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक लेखा देणा मुकाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ढोले सारे गाण, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाम वज्जे वधाईआ। सच संदेसा नर नरेशा हुक्मे अंदर फ़रमाना देणा ज़िमीं असमान, ज़ामन हो के आपणी कार कमाईआ। सति धर्म चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झुल्लणा इक्क निशान, धर्म दवारा एकँकारा इक्को इक्क प्रगटाईआ। जिस गृह मन्दिर हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को इष्ट मन्नण आण, दूजा राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त देवणहारा मणीआं मंत, मंत्र अन्तर निरंतर जीव जंत साध सन्त आप समझाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जोत शब्द अधार महाराज पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

खुशी मनावण चार जुग दे पिछले भगत, भगवन्त मिल के खुशी मनाईआ। किरपा कर वाली अर्श, अर्शी प्रीतम तेरी इक्क सरनाईआ। निगाहवान हो उपर धरत, धवल दे वड्याईआ। जो तेरे दरस रहे तरस, नेत्र लोचन नैण राह तकाईआ। उन्हां मेट अंदरों तड़प, भटकन दे गवाईआ। आह भरे कोई ना सरद, सांतक सति दे वरताईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, बेपरवाह अख्वाईआ। सच बेनन्ती सुण अरज़, दर ठांडे सीस निवाईआ। जन भगतां वण्ड आपणा दर्द, दर्दी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ अमरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

पिछले भगत देण संदेसा, खुशीआं विच जणाईआ। तेरी बेपरवाही नर नरेशा, सच सच्ची शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम खेल निराला वेखा, वेख वेख वज्जे वधाईआ। धुर फ़रमान सुणया उपदेशा, चार जुग तों बाहर करी पढ़ाईआ। निरवैर हो के मिलयो इक्को नेता, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। बिन पूजा पाठ बन्दगीउँ लहिणा लीता, पूरब जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। लख चुरासी विच ना भुलया चेता, अभुल्ल तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तैथों बलिहार, आप आपणा घोल घुमाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, कथनी कथ ना सके राईआ। जुग चौकड़ी वेखे संसार, सतिजुग तरेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। निरगुण लभ्भदे रहे विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। खोजदे रहे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान राह तकाईआ। कलयुग अन्त किरपा कीती महान, मेहरवान प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले वेखे आण, गुर चेले बूझ बुझाईआ। सति दे इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दिता मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोले सारे गाण, सब दे अन्तर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दुआर दर तेरे मिले वड्याईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण कलयुग वेख्या खेल निराला, निरगुण तेरी वड वड्याईआ। साचा मार्ग दस्स सुखाला, कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढाहीआ। त्रैगुण तोड़ जंजाला, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। काया मन्दिर वखा सच्ची धर्मसाला, परदा ओहला दिता उठाईआ। मुर्शद हो के मुरीदां पुच्छ हाला, हालत वेखी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा सुहञ्जणा दिस्या तरीका, ताकतवर दिता दृढ़ाईआ। मार्ग वखाया नीकन नीका, निज घर आपणी ताड़ी लाईआ। दीन मज़्बां तोड़ शरीका, शरारत अंदरों दिती कढाहीआ। आपणी दस्स हक तौफ़ीका, यक हुक्म इक्क सुणाईआ। त्रैगुण धनी बण अतीता, त्रैभवन डेरा ढाहीआ। तेरा कोए ना मेटे कीता, हरि करते तेरी सरनाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जागीर कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरी वेखी अगम्मी किरपा, कृपाल तेरी वड्याईआ। जन भगतां जन्म मरन दी कट के बिप्पता, बिमल रूप दिता बणाईआ। मार्ग दस्स के साचे सिख दा, सिख्या इक्को दिती दृढ़ाईआ। इष्ट मन्नणा पुरख अकाल इक्क दा, एकँकार सीस झुकाईआ। जो हर घट अंदर दिसदा, लख चुरासी रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहिण तेरी वेखी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां दे के नाम निशानी, निशाने पिछले दिते भुलाईआ। मार्ग दस्स के आलमे जावदानी, राह इक्को दिता समझाईआ। जिस दी मंज़ल हक आसानी, मुश्किल अग्गे ना कोए टिकाईआ। जूह रहे ना कोए बेगानी, बेवा रूप ना कोए अख्वाईआ। घर मिले शाह सुल्तानी, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जित्थे जोबन मिलदा नवीं जवानी, बिरध रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खवा आपणी महिमानी, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिँघ दे गृह जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहिण तेरे चरण कँवल बलिहार, आपा घोल घुमाईआ। जिस खोल्या सच दवार, दरगाह साची रूप बदलाईआ। बख्श के हक प्यार, प्रीतम प्रीती इक्क दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख भाल, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। मुहब्बत विच बणा के लाल, सपूते गोद उठाईआ। जगत जुगत दी बदल के चाल, मार्ग अगला दिता समझाईआ। करया खेल कल कमाल, कामल मुर्शद आपणे हथ्थ रख वड्याईआ। सतिगुर शब्द बण दलाल, वणज इक्को दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वड्याईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरजीत सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत वड कहे दाते बेपरवाह, बेपरवाही तेरी नज़री आईआ। जन भगत बण मलाह, खेवट खेटे बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साचा मार्ग दस्स नवां, सांझ आपणे नाल रखाईआ। दरगाह साची ला के नावां, नर नरायण दिती वड्याईआ। जन भगत गुरमुख रले ना डार कावां, काग हँस दित्ते बणाईआ। मेल मिलाईं नाल चावां, चाओ घनेरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सुलखण सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा खेल अगम्म अपार, अपरम्पर स्वामी नज़री आईआ। किरपा कीती विच संसार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगतां दे उधार, उदर दा लेखा दे मुकाईआ। सति नाम दस्स जैकार, शब्द इक्को इक्क सुणाईआ। नव नौ चार तों कर के पार, परम पुरख आपणा मेल मिलाईआ। जन्म मरन दा दुःख निवार, चुरासी फंद कटाईआ। साचा दस्स के मंगलाचार, धुर दा सोहला इक्क उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ भान सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा खेल अजीब, अजब निराला नज़री आईआ। जन भगतां दे के इक्क नसीहत, धुर फ़रमाना

सच सुणाईआ। आत्म परमात्म जाणो असलीअत, भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। पुरख अकाल सच्ची वलदीअत, आदि जुगादी नज़री आईआ। इस दे विच वड्ड काबलीअत, कामल मुर्शद इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बदल दिती तबीअत, तबीब हो के वेख वखाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ प्रीतम सिँघ ते वरयाम कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा मार्ग वेख्या सच्चा, सच तेरी शरनाईआ। भाग लगावे काया माटी कच्चा, कंचन गढ़ वड्याईआ। दरस दिखाईं अंदरली अक्खा, प्रतख रूप गुसाँईंआ। हकीकत वेखीं हका, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक्क उपाईआ। जन भगत कहिण तेरा वेख्या धुर दा रस, जो रस्ता दए दृढ़ाईआ। बिन वासना कर के वस्स, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रच, रचना आपणी दईं समझाईआ। बोल जैकारा इक्क अलख, अलख अगोचर दिता समझाईआ। आत्म परमात्म रहे कोई ना वक्ख, धुर दा नाता जोड़ जुड़ाईआ। धर्म दुआर खोल्ह के हट्ट, वणजारा हो के वस्त वरताईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, सच दवारे सोभा पाईआ। भगत सुहेले जोड़ के हथ्थ, बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा ठांडा दरबारा, दरगाह साची नज़री आईआ। जित्थे दीपक जोत उज्यारा, तेल बाती ना कोए वखाईआ। ना कोई रसना जेहवा गावे मंगलाचारा, शब्द अनादी धुन प्रगटाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। लेखा जाण गुरू अवतारा, पैगम्बरां आपणी कार समझाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण लै अवतारा, अवतरा आपणा भेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ ईश्र सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरी आदि जुगादी वेखी धुर दी वादी, वायदा आपणा पूर कराईआ। जन भगतां बण इमदादी, निरगुण हो के आपणा भेव खुल्हाईआ। साची सिख्या दे अहलादी, अलहिदा आपणी कार कमाईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर के बाज़ी,

डंक आपणा इक्क सुणाईआ। मनुआ रहे कोए ना ग़ाज़ी, गहर गम्भीर भय वखाईआ। पिछला लेख चुका के माज़ी, महबूब आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अगला इक्क खुल्हाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बंता सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा डूँग्घा वेख्या राज़, रिज़क रहीम राज़क तेरी वड्याईआ। जन भगतां साजणा लई साज, साजण हो के हो सहाईआ। लेखा चुका के वुज़ू निमाज़, सजदा इक्को दिता समझाईआ। जगत जुग बदल के समाज, समग्री इक्को दिती वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, धुर दी विद्या इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरी सोहणी वेखी करनी, कुदरत कादर विच नजरी आईआ। जो भगत सुहेले लग्गे तेरी सरनी, सरनगति इक्को दिती वड्याईआ। इक्को तुक पए पढ़नी, पाठशाला काया मन्दिर दिता सुहाईआ। इक्को मंज़ल पए चढ़नी, तेरे चरण कँवल मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, एकँकार धर्म दुआर दर ढांडे आस रखाईआ।

६६७
२०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरी वेखी वड्डी निक्की सिख्या, साख्यात दिती दृढ़ाईआ। जन भगतां पा के धुर दी भिच्छया, भरपूर रिहा वखाईआ। चारों कुण्ट इक्को नूर दिस्या, जोती जाता डगमगाईआ। जो वरन बरन ज़ात पात विच कदे ना जावे भिटया, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क वखाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरचरण सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा वेख्या खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। असीं रुलदे आए विच संसारा, सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग मध आपणा फेरा पाईआ। छिन्न भंगर तेरा वेखदे रहे नज़ारा, जोती जोत जोत नाल रुशनाईआ। कलयुग अन्त तेरा खेल अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धर्म दुआर वज्जे वधाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जरनैल सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरी वेखी चाल निराली, बांके सोहणी नज़री आईआ। तेरा खेल जोत अकाली, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। जिस भगत साचे सुरत उठाली, सोई आप जगाईआ। आपणे प्रेम दी दे के लाली, कूड़ी क्रिया दिती धवाईआ। त्रैगुण नाता तोड़ जंजाली, जागरत जोत करी रुशनाईआ। साचे दर बणा सवाली, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा नज़री आईआ।

६६८
२०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ प्रकाश कौर दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तूं मालक धुरदरगाह, दरगाह साची सोभा पाईआ। जुग जुग करदा रिहों न्याँ, लोकमात अदल अदालत इक्क वखाईआ। तेरा लेखा बेपरवाह, बेपरवाही विच आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरा लाउँदे रहे ध्यान, दिवस (रैण) सेवा विच वक्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध्ध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

६६८
२०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहिण तुध बिन अवर ना दिसे दूजा, दुतीआ भउ नज़र किसे ना आईआ। जिस बिध जन भगतां भेव खुल्ला गूझा, रमज़ समझ नाल मिलाईआ। परदा ओहला रिहा ना लुका, लायक नालायक आपणे रंग रंगाईआ। उजल कर के मुक्खा, दुरमति मैल करी सफ़ाईआ। प्यार नाल बणा के आपणा सुत्ता, सुत दुलारे गोद उठाईआ। जुग जन्म दा रिहा कोई ना रुठ्ठा, फड़ बाहों गले लगाईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ प्रीतम कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा सुणया इक्क सलोक, सोहला धुरदरगाहीआ। जिस दा मेला नाल निर्मल जोत, तत तत ना कोए वखाईआ। झगड़ा रहे ना वरन गोत, गौतम बुध बुद्धी तों बाहर गया समझाईआ। जित्थे समझ सके ना कोई सोच, सोच सोच दिती दरसाईआ। जो तेरे दर्शन नूं रहे लोच, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धर्म दवारा एकँकारा एका तेरा देणा वखाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ डा० माणक सिँघ अमृतसर ★

जन भगत कहिण तेरा वेख्या हुक्म अपार, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे गुरू अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। सिर सके ना कोए उठाल, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर चले ना कोए चतुराईआ। अन्तिम हो के आप दयाल, दीनन दया कमाईआ। भगत सुहेले वेख लाल, लालन आपणा परदा लाहीआ। जगत अवल्लड़ी चल के चाल, भेव अभेद दिता खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ६९६

२०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरबंस सिँघ बस्ती अड्डा ज़िला जलन्धर ★

जन भगत कहिण भगतां दस्सया आपणा राह, रहमत दिती कमाईआ। धुरदरगाही मेला ल्या मिला, मिलावट विच ना कोए रखाईआ। सतिगुर शब्द बणा गवाह, शहादत आपणी इक्क भुगताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पा, फिरत फिरत हरि सज्जण खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बन्दन सीस निवाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बंता सिँघ यू० पी० ★

जन भगत कहिण तेरी वेखी हक बन्दगी, बन्दना दिती दृढ़ाईआ। दूसर रहे ना कोए मशंदगी, मुश्किल हल्ल कराईआ। धार वक्खरी रहे ना हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म सरनाईआ। कर प्रकाश अगम्मे चन्न दी, नूर नूर विच्चों रुशनाईआ। लेखे लाईं जो भगत जन जननी जन दी, जन्म तों बाहर होवीं सहाईआ। आस पूर कराई पृथू वाले अन्न दी, गृह गृह भोग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरदित सिँघ दे गृह पिण्ड राम दवाली ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहिण तूं करनी करता कुदरत दा मालक, शहिनशाह अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम बण के सालस, फ़ैसला धुर दा इक्क सुणाईआ। जन भगत सुहेले वेख के सालस, माटी ख़ाक विच्चों बाहर कढाहीआ। कूड़ी निंद्रा मेट के आलस, असलीअत दिती समझाईआ। धर्म दुआर बणा के बालक, बचपन आपणी गोद रखाईआ। सदा सुहेला बण प्रितपालक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ कुंदन सिँघ पिण्ड पंडोरी वड़ैच ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहिण तूं करनी दा करता, एकँकारा इक्क अख्वाईआ। ना जम्मे ना मर्दा, जन्म मरन वेस ना कोए वटाईआ। सचखण्ड दवारे वड़दा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। दीपक जोत हो के बलदा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। शब्द संदेशे घलदा, जुग चौकड़ी पढ़ाईआ। मालक बण के निहचल धाम अटल दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरा सोहणा नज़री आईआ।

७०० ७००

२० २०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बलजिंदर कौर दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा दर सोहणा, बाडी बणत ना कोए बणाईआ। तेरा रूप अनूप सति सरूप मोहणा, जो मोहे जगत लोकाईआ। जिस जगत विकार दुरमति मैल पापां कपड़ भगतां धोणा, अंदर बाहर करी सफ़ाईआ। अमृत रस निजर धार चोणा, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। करे प्रकाश तीजे लोयणा, अक्ख प्रतख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार सच्ची सरनाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ दविंदर कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा मार्ग दिसे सौखा, सोहणा सच्चा नज़री आईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, इक्को ढोला दिता समझाईआ। जो भाग लगाए काया माटी कोठा, बिन छप्पर छन्न वज्जे वधाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोता, निरगुण नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सरजीत सिँघ, गुरशरन सिँघ सुल्तान विण्ड गेट अमृतसर ★

जन भगत कहिण तूं धुरदरगाही रंग रंगीला, माधो धुर दा नज़री आईआ। जन भगतां कलयुग अन्तिम बण वसीला, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। ऊँचां नीचां ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां इक्ठा कर कबीला, बंस सरबंस दिता सुहाईआ। जगत निमाणयां बण वसीला, वस्तू आपणी धार समझाईआ। झगड़ा रिहा ना नर मदीना, नारी पुरुष इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा दिता वखाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ राज कौर पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ★

जन भगत कहिण असां वेख्या ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। सति धर्म दा सच खोल्ह दरवाज़ा, दरगाह साची परदा रिहा उठाईआ। जन भगतां रखणहारा लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण वेस अगम्मा लोकमात माझा, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप बंधाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरी साची धारा, धरनी धरत धौल नज़री आईआ। चार वरनां इक्क प्यारा, मुहब्बत बेपरवाहीआ। ऊँचां नीचां झगड़ा मुकावीं विच संसारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बोल जैकारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल्ला उच्च अटला इक्को इक्क दिसाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जगजीत सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण दर तेरे निमस्कार, नमों नमों सीस निवाईआ। दर तेरे खड़े भिखार, भिच्छया देणी वरताईआ। राह तकदे रहे नव नौ चार, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कवण वेला कल कल्की लए अवतार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जो पैज जाए संवार, स्वार्थ आपणे नाल रखाईआ। जगत समाज विच्चों कढ्ढ के बाहर, घर आपणा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दए चुकाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ गुरमीत सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

जन भगत कहिण पूरब लहिणा दिता, देवणहार वड्याईआ। भगतां पूरी करे इच्छा, इच्छा पूरन आप अख्वाईआ। सच दवारे आपे दिस्सा, परदा ओहला उठाईआ। नज़री आया इक्क दा हिका, हिकमत आपणी इक्क जणाईआ। रूप धार के वडुउँ निक्का, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गुरमुखां बण के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर सीस सुहाईआ। अग्गे कदे ना देवे पिच्छा, पिच्छो पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखाए धाम इक्क अनडिठ्ठा, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बलविंदर कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण तेरा अवल्ला वेख्या स्वांग, स्वांगी दिता वखाईआ। जन भगतां पूरी कर के तांघ, तृष्ना दिती मिटाईआ। अग्गे देणी पए किसे ना बांग, वुज़ू निमाज़ ना कोए वड्याईआ। जगत वजाउणा पए कोई ना नाद, संखां धुन ना कोए शनवाईआ। खड़काउणा पए कोई ना साज, साजण इक्को नज़री आईआ। काया मन्दिर अंदर मार आवाज़, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

७०२
२०

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहिण तेरा सोहणा वेख्या त्उहार, दिहाड़ा नज़री आईआ। तेरा पाक पवित्र आहार, हरि हिरदे करे सफ़ाईआ। तेरा सच धर्म प्रचार, परचून दे वणजारे दे मिटाईआ। तेरा नाम शब्द जैकार, दो जहानां करे शनवाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा सोहणा नज़री आईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ★

जन भगत कहिण दर सोहणा दिसे सुहञ्जणा, सोभावन्त रमणीक। कर किरपा आदि निरँजणा, तेरे विच हक तौफ़ीक। तूं दाता दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर विच अतीत। तेरी धूढ़ी होवे मजना, लेखा रहे ना ऊँच नीच। तूं आत्म परदा कजणा, आपणा मार्ग दस्स बारीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे जन भगतां कर तस्दीक।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी जगीर कौर पिण्ड काठगढ़ ज़िला पटयाला ★

जन भगतां कर तस्दीक दे शहादत, शादयाने दे वजाईआ। तेरे नाम दी करन इक्क इबादत, अव्वल अल्ला नज़री आए नूर खुदाईआ। तेरे मुहब्बत प्यार दी उन्हां अन्तर इक्क अमानत, अमलां दे विच रखी छुपाईआ। तूं किरपा कर सही सलामत, साहिब तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नाम रस मुख चुआवण अगम्म नयामत, निज नेत्र होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची नज़र इक्क उठाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ सतपाल फ़रीदाबाद ★

पुरख अकाल किहा, जन भगतो दया कमावांगा। जो जन्म जन्म दा विछड़ रिहा, तिस आपणा मेल करावांगा। जिस इक्क वार मेरा नाम ल्या, लख चुरासी विच्चों बाहर कढावांगा। जो इक्क वारी मेरी सरन प्या, सचखण्ड दुआर टिकावांगा। जो इक्क वार मेरी जूह गया, जागरत जोत विच रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडे रंग रंगावांगा।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ बीबी भिंदर कौर पिण्ड कड़याला ज़िला अमृतसर ★

दर ठांडा इक्क दरसावांगा। ब्रह्मण्ड पन्ध चुकावांगा। टुट्टी गंढु जोड़ जुड़ावांगा। परमानंद विच टिकावांगा। जिस गाया सोहँ छन्द, बन्दी बन्द ना कोए रखावांगा। उह लग्गा मेरे अंग, अंगीकार आप हो जावांगा। सतिजुग चाढ़ के नवां चन्द, भगत सुहेले आप चमकावांगा। जिन्हां दवारयों भोजन खाधा मंग, मंगल उन्हां दा ढोला गावांगा। साची मंज़ल जावां लँघ, अंदर इक्को इक्क सुहावांगा। जित्थे आत्म सेज पलँघ, सच सिँघासण सोभा पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। साची करनी कार कमावेगा। दीन दयाल वेख वखावेगा। भगत सुहेले मेल मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा सर्ब चुकावेगा। पूरब लहिणा चुकावण आया, हरि सज्जण धुर दा मीत। जगत तृष्ना मेटे माया, ममता मोह विच्चों करे अतीत। जन भगत सुहेले जोड़ जुड़ाया, सतिजुग सच चलाई रीत। बावन दा लहिणा देणा पूर कराया, बल दी तोड़ निभाई प्रीत। बच्चयां दा बचन लेखे लाया, रहमत कर बख्शीश। सतिजुग दे अन्त दा भोजन कलयुग अन्तिम खाया, खा के गाया भगतां दा गीत। पिछला कर्ज़ा मकरूज

लाहया, बैठ के धाम अतीत। सम्मत शहिनशाही तिन्न वज्जे वधाया, करया खेल प्रभू अनडीठ। चार चेत दी रुत्त सुहाया, सुहञ्जणी दिसे पुनीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक्क प्रीत।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जुगिंदर कौर गवाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी ★

चार चेत कहे क्यों मेरे विच होवे अरदासा, अन्त अरदास सुधाईआ। एह नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा तमाशा, तमअ दे विच्चों बाहर रखाईआ। जिस दा खोल्ह ना सके कोई खुलासा, ख़ालस सके ना कोए समझाईआ। लहिणा देणा जाणे पुरख अबिनाशा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस जन्म जन्म दा भगतां पूरा कीता घाटा, लहिणा मूल मुकाईआ। वड्डयां छोटयाँ ऊँचां नीचां इक्को आत्म ब्रह्म जोड़ के नाता, इक्को दिती माण वड्याईआ। सच प्रेम प्यार दा भोजन खाधा, खुशीआं विच खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ।

७०४ ★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ तरिपत कौर गवाल टोली फ़िरोज़पुर छाउणी ★ ७०४

२० चार चेत कहे जन भगतां दा लेखे लाउणा रुक्खा सुक्खा, जो भेंटा दिता कराईआ। जन्म जन्म दा मेटणा दुक्खा, २०
दलिद्र दिता गवाईआ। उजल करना मुखा, मुख ढोले सिफ्त सालाहीआ। एथे ओथे दो जहान बणाउणे आपणे पुत्ता, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। जे तूं मेहरवान हो के तुट्ठा, कोझयां कमलयां लैणा तराईआ। गुरमुखां नाल कदे करीं ना गुस्सा, गुस्सा जुस्से विच्चों बाहर कढाहीआ। सदा भगतां दे प्यार दा रहीं भुक्खा, प्रीती विच प्रीतम प्रेम वरताईआ। अन्त अखीर वेला उह ढुका, जिस दा जुग चौकड़ी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ कश्मीर सिँघ पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

पुरख अकाल कहे मेरा पूरा होया विहार, वाहवा वज्जी वधाईआ। सब दा लहिणा दिता उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खोज खुजाईआ। बावन आ के कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बल कहे मैं होया ख़बरदार, आपणी लै अंगड़ाईआ। आपणी करनी कर बहाल, गुरमुख बिहबल हो ना कोए कुरलाईआ। जे खाण पीण दा कर्ज़ा दिता उतार, सच प्रेम दा उधार बाकी नज़री आईआ। साचे भगतां सदा गोद रखीं बहाल, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जिन्हां खुशीआं

नाल तैनूं दिता खवाल, पक्का भोजन भाजीआं विच मिलाईआ। उन्हां दा होण ना देवीं ज़वाल, जगत ज़ावीए विच्चों बाहर कढाहीआ। ऐंगल आफ़ डीसैंट कोई ना डिगरी करे विचार, पैमाना पैमाइश ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ जागीर सिँघ पिण्ड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ★

पुरख अकाल कहे सुण बावन, बार बार समझाईआ। मैं बण के पतित पावन, पापियां रिहा तराईआ। फड़ा के आपणा दामन, दमां दा लेखा पूर कराईआ। बण के धुर दा ज़ामन, दरगाह साची दयां टिकाईआ। वखा के सच निशानन, निशाना इक्क इक्को झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर विच जेठूवाल ★

७०५ सिर रखां हथ्थ आपणा आप, आपणी दया कमाईआ। जिन्हां जपया धुर दा जाप, जग जीवण दाता ओट तकाईआ। ७०५

२० उह अन्तर कर के पाक, पवित्र दयां वखाईआ। बाहरों दिसण माटी पुतले ख़ाक, अन्तर नूर जोत रुशनाईआ। बावन २०

इस दा लेखा दस्सणा पहली वसाख, जो गोबिन्द आस रखाईआ। की अग्गे होणा पाठ, की ढोला जगत शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए गृह गृह पकवान, चौदां मास पूरा कर के पूरब दान, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। प्रसाद कहे आपणी रसना ला भोग, भगवन दया कमाईआ। तेरा दरस होवे अमोघ, परदा देणा चुकाईआ। तेरे नाम दा मिले जोग, जुगती इक्क दरसाईआ। गुरमुख राह तक्के ना चौदां लोक, चौदां तबक पन्ध मुकाईआ। जिन्हां तेरा गाया सच सलोक, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। उन्हां कदे नहीं तन तैथों मंगणी मोख, स्वर्ग बहिश्त दी आस ना कोए रखाईआ। कर किरपा अन्तिम मेलणा आपणी जोत, जित्थों होवे ना कदे जुदाईआ। एह उन्हां बच्चयां दी अख़ीरी चोग, जो बावन दवारे आस रखाईआ। सो वेला वक्त गया पहुंच, रविदास चमारा दए गवाहीआ। हरि संगत वखा आपणी मौज, मुआवज़ा पिछला दे चुकाईआ। तेरी करनी ना पए खोज, खुद खोज के लै उठाईआ। जन भगतां तों भोग लगाए नहीं जाणे रोज़, इक्क वार दा लेखा दरगाह साची लैणा पाईआ। अग्गे वेखदे रहिण तेरे चोज, चोजी प्रीतम तेरी खुशी मनाईआ। भगतां उत्ते

भगती दा सुट्टीं कदे ना बोझ, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। हउमें दा रहे कोई ना रोग, हंगता देणी गवाईआ। जिन्हां तेरे भोग दा इक्क अरदासा ल्या सोध, स्वासा उन्हां दा लेखे पाईआ। गुरमुखां नाल करीं ना कदे क्रोध, लोभ विच कदे ना आईआ। सदा बख़्शीं आपणी मौज, मजलस आपणी नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बावन कहे मेरा लहिणा मुकया उधार, उदम कीता बेपरवाहीआ। उन्हां बच्चयां पाई सार, जो चार भैणां ते इक्क भाईआ। अन्तिम लेखा पूरा कर विवहार, हरि संगत दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी दा लहिणा दे उधार, अदल इन्साफ़ दिता कराईआ। आपणा गुलशन वेख बहार, टहणी पत्त फुल्ल महकाईआ। जो भगत सुहेले कीती ख़िदमतगार, खादम आपणी झोली पाईआ। अग्गे तसादम होवे विच संसार, झगड़े विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। बावन कहे जिन्हां दा अज्ज होया विवहार, बावन दे साथी सारे नज़री आईआ। कोई सज्जण मीत मुरार, कोई मात पित अख्वाईआ। कोई भैणां भईआ नार, कोई सुत दुलार वड्याईआ। कुछ उह जिन्हां ने बावन दा कीता दीदार, नेत्र दर्शन पाईआ। कुछ उह जिन्हां पंजां ने भोजन कीता त्यार, सोहणा प्रेम वधाईआ। उह कन्यां बाल अंञाण, तेरवें साल ख़ुशी मनाईआ। जिस दा ज़ामन विच चम्यार, गुरमुख रूप बदलाईआ। ओसे गुरदर्शन दा विवहार, छोटयाँ वड्डयां मिली वड्याईआ। साची सभा दा जन भगत बण श्रृंगार, रूप अनूप बदलाईआ। वड्डे छोटे इक्क दवार, दर दवारा धुर दा इक्क वखाईआ। जन भगत चुरासी विच जन्म लए ना विच संसार, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। पुरख अकाल आपणा दे एतबार, बेएतबारी दे गवाईआ। राती सुत्यां फड़ उठाल, दरस दीद ईद दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार सच्ची सरनाईआ। बावन कहे मेरी कन्नी होई साफ़, पल्लू मैल रही ना राईआ। जो सहिजे गया आख, प्रभ दाता पूर कराईआ। मैं ओसे दा निवास, शाख़ निरगुण विच समाईआ। जिस दी कोई ना समझे बात, बातन करे पढ़ाईआ। जन भगतो जुग चौकड़ी दी भगती नालों अज दी चंगी रात, रुतबा देवे धुरदरगाहीआ। किसे कम्म ना आउँदी जे थोड़ी बहुती मिल जावे करामात, जगत करमां विच फसाईआ। धन्न वड्याई जिन्हां दा पुरख अकाल जोड़या नात, नाता आपणे नाल बणाईआ। दर्शन दे के साख्यात, सख़ियां दा मंगल आप सुणाईआ। जन भगत अन्त रहिण ना देवे कोई उदास, उदासी विच्चों स्वासी होए सहाईआ। जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो तुसीं एस जन्म दी भगती विच्चों होए पास, पर्चा मेहर नज़र इक्क पाईआ। लेखा मंगया नहीं हिसाब विच किसे कलम दवात, अक्खरां हिन्दसयां विच ना पुच्छ पुछाईआ। आपे बख़्श के आपणे प्रेम दी दात, आपे लहिणे देवे पाईआ। तुहाडे हिस्से इक्को सोहँ महाराज शेर सिंघ

विष्नूं भगवान दी जै दे के दात, गाथ आपणी दिती दृढ़ाईआ। इस तों वड्डी कोई धार नहीं पूजा पाठ, सिमरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जो पंज वारां देवे आख, पंज तत्तां दा लेखा जाए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो प्रेम प्यार नाल तुहाडे कोल करे एह निक्की जेही बात, जिस बात विच्चों कमलापात नज़री आईआ।

★ ""चार माघ सम्मत शहिनशाही इक्क तों लै के चार चेत सम्मत शहिनशाही तिन्न तक्क चौदां महीने
हरि भगत दे गृह जा के भोग लगाया अते बावन दा कीता कौल पूर कराया,
जेहड़ा बल समें उसने चार भैणां ते इक्क भ्रा नूं
बल नगरी विच वर दिता सी।
जिन्हां दा हुण जन्म दा नाम गुरदर्शन कौर, दविंदर कौर, कश्मीर कौर, जगजीत कौर, सुखवन्त कौर हन।"" ★

★ पहली विसाख शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर विच पिण्ड जेठूवाल ★

आदि पुरख धुर दे जनाब, शब्द सतिगुर तेरा रिहा जणाईआ। अगला पिछला वेख हिसाब, आदि मध फोल फुलाईआ। बिन अक्खरां वाली खोल्ह किताब, कातब जो लिखी बिन कलम शाहीआ। करां बेनन्ती विच इक्क आवाज़, रागां विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा आपणा फोल फुलाईआ। आदि पुरख सुण मेरी अरज़, सतिगुर शब्द रिहा जणाईआ। क्यों शरअ छुरी बणाई करद, कत्लगाह आप प्रगटाईआ। तैनूं कदे ना आया दर्द, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। पूरब फोल के वेख फ़रद, परदा आपणा आप उठाईआ। साचा खेल दस्सां असचरज, अचरज लीला तेरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप प्रगटाईआ। आदि पुरख धुर दे स्वामी, तेरे अग्गे इक्क अरज़ोईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वेख आपणी आबादी, गिणती बिना हिन्दसयां दे समझाईआ। सिफ्त कराउण दी तैनूं पै गई वादी, वायदयां विच सारे रिहा भरमाईआ। बिन मेरे तेरा दूजा सुत नज़र ना आवे कोई नादी, नाद सिफ्तां सुरां वाला वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं मंगण लग्गा दात, दाते लैणा ध्यान लगाईआ। तेरा मेरा कौल इक्को वाक्, वाकिफ़कार

दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरगुण सच्चा साथ, आदी संग बणाईआ। मैं सिफ्तां वाली कदे ना गावां गाथ, रागां विच ना कोए वड्याईआ। परदा खोल्ह के वेख आप, आपणे विच्चों आप प्रगटाईआ। कवण पूत कवण बाप, कवण गोदी रिहा सुहाईआ। कवण सिफ्त कवण जाप, कवण रिहा सालाहीआ। कवण सज्जण कवण साक, कवण संग निभाईआ। कवण हुक्म कवण वाक्, कवण फ़रमान रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खोज खुजाईआ। सतिगुर शब्द कहे ज़रा वेख आपणा हिस्सा, गंढ्ढ धुर दी इक्क खुल्हाईआ। जेहड़ा लेख अगम्मी लिखा, आदि मध ना किसे दृढ़ाईआ। बणदा रिहों वड्डा निक्का, रूप अनूप वेस वटाईआ। सिफ्तां वाला लिखदा रिहों चिठ्ठा, आप आपणा आपणे नाल परचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण साहिब धुर स्वामी, धर्म दवारे दयां जणाईआ। तूं मेरा अन्तरजामी, मैं सब नूं दयां समझाईआ। क्यों उपजे तेरी बाणी, कवण धार प्रगटाईआ। क्यों नहीं लेखा रख्या ज़बानी, क्यों कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। क्यों रमज़ उपजाई रुहानी, रहमत आप कमाईआ। क्यों वसें जूह बेगानी, तत्तां विच समाईआ। क्यों तत करें कुरबानी, आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर दे दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों बणदा रिहों मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। क्यों बदलदा रिहों सलाह, हुक्म हुक्म नाल जणाईआ। क्यों निरगुण हुन्दा रिहों रुशना, सरगुण सोभा पाईआ। क्यों गुरू अवतार पैगम्बर रिहों अख्वा, की तेरी वड्याईआ। क्यों हर घट रिहा समा, लख चुरासी डेरा लाईआ। क्यों सिफ्ती ढोले रिहा गा, चारे बाणी डंक वजाईआ। क्यों लाउँदा रहें सब नूं दाअ, दर्दी हो ना दर्द वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे की तेरी मर्यादा, आदि मध समझ किसे ना आईआ। की तेरी आवाज़ा, जुग जुग गुर अवतार पैगम्बरां करें पढ़ाईआ। की तेरा समाजा, साचा मार्ग दे दरसाईआ। की तेरा रवाजा, रसम की बणाईआ। की तेरा काजा, करनी की कमाईआ। की तेरा वाजा, अगम्मी सुर हिलाईआ। की तेरा स्वांगा, भेव देणा खुल्हाईआ। की तेरा नामा, निरँकार देणा जणाईआ। की तेरा कामा, निहकर्मी देणा वखाईआ। की तेरा दमामा, घर साचे आप वजाईआ। की तेरी पहचाना, परदा देणा उठाईआ। की तेरा गाणा, बिन रसना ढोला अल्हाईआ। की तेरा बाणा, रूप अनूप धराईआ। की तेरा फ़रमाना, हुक्मे अंदर सुणाईआ। की तेरा कमाना, चिल्ला देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे चुकाईआ। सतिगुर शब्द तूं क्यों बणया करता, करनी दे समझाईआ। तूं क्यों बणया हरता, हर घट डेरा लाईआ। तूं क्यों दो जहानां तरदा, भेव अभेद खुल्हाईआ।

तूं क्यों नहीं जम्मदा मर्दा, नूर जोत रुशनाईआ। तूं क्यों नहीं आपणा आप पढ़दा, आपणी समझ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दे उपाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बणना नहीं होछा, दलेरी नाल दृढ़ाईआ। तूं क्यों बणें वड्डा छोटा, जुग जुग वेस वटाईआ। क्यों होवें खरा खोटा, आपणा आप बदलाईआ। क्यों मंज़ल चढ़ें चोटा, साचा घर सुहाईआ। क्यों खेल खिलाएं लोक परलोका, रचना रचन रचाईआ। क्यों गावें इक्क सलोका, सच देणा समझाईआ। क्यों सुणाएं आपणा पोथा, सरगुण कर पढ़ाईआ। क्यों मन्दिर सुहाएं कोठा, तत शरीर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप दे दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे की पूंजी तेरी रास, मेहरवान दे समझाईआ। की तेरा खेल तमाश, समझ कोए ना पाईआ। की तेरी अगली पिछली आस, परदा दे चुकाईआ। की तेरी निराली ख़ाहिश, आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे अगम्म दुलारे, दुले दयां जणाईआ। मेरे खेल सदा न्यारे, निराकार हो निरँकार आपणी कार कमाईआ। मेरे हुक्म वाले लारे, फ़रमान विच वड्याईआ। अनक कल दी धारे, धर्म दुआर प्रगटाईआ। सच दुआर वणजारे, आपणा वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव आपणा दए समझाईआ। शब्द गुर तूं कदे ना बणीं गुरू, गुरदेव नज़र ना आईआ। तेरा मेरा लेखा कोए ना जाणे शुरु, परदा सके ना कोए उठाईआ। तेरा हुक्म कदे ना मुड़ू, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरी धार तेरे नाल जुड़ू, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव पिछला दए खुल्हाईआ। शब्द सतिगुर इक्को इक्क बणाया, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तेरे विच्चों तेरा नूर उपजाया, नूर नूर नूर रुशनाईआ। पंजां तत्तां खेल खिलाया, खेल बेपरवाहीआ। किरन इक्को इक्क टिकाया, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। इशारे विच्चों इशारा इक्क प्रगटाया, साचा हुक्म ना किसे समझाईआ। रमता रमता खेल कराया, अगम्मता आपणे विच छुपाईआ। जम्मदा मर्दा गुरू ना कोए अखवाया, सतिगुरू ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। सतिगुर शब्द थोड़ी कर विचार, विचर के दयां जणाईआ। जेहड़े घल्ले तेई अवतार, त्रीमत वांग सेव कमाईआ। इन्हां नूं तेरा दिता इशार, तेरा हुक्म सुणाईआ। आप वस्स के बाहर, दरवाज़ा अंदरों दिता खुल्हाईआ। कतरा दे के अमृत धार, कातिल दिते प्रगटाईआ। इशारा दे के निराधार, निराकार खेल वखाईआ। पा ना सकण तेरी सार, साथीं समझ कोए ना आईआ। तत्तां विच कर प्यार, रत्तां विच रंग रंगाईआ। माता पट्टां विच सवाल, गोदी गोद टिकाईआ। जगत पा जंजाल, बंस विच वड्याईआ। खेल कर शाह कंगाल, आपणा रंग बदलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए सुणाईआ। सतिगुर शब्द जो तेई अवतार भेजे, भजन बन्दगी तेरी विच लगाईआ। मेरी चढ़या कोई ना सेजे, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। तत्तां वाली खेल खेडे, नूर नाल चमकाईआ। हुक्म अंदर तोर के सेधे, मार्ग इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह इक्क दरसाईआ। सतिगुर शब्द तेरे प्यार दा पाउँदे रहे कुड़ता, तन वजूद शरीर हंढाहीआ। तेरे प्यार दा फ़ुरना फुरदा, मेरा भेव किसे ना आईआ। मैं खेल खेलदा रिहा ठग्ग चोर दा, चोरी सब दे नाल कमाईआ। रूप बदलदा रिहा होर होर दा, नूर चश्म ना कोए जणाईआ। तेरे हुक्म अंदर रिहा तोरदा, धुर दा मालक बण गुसाँईंआ। खेल करदा रिहा आपणी लोड़ दा, परदा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मैं करनी दा करता, करनहार करतारा। गुर अवतार पैगम्बर तेरा बरदा, तूं मेरा बरखुरदारा। मैं तेरा लाहवां परदा, तूं इन्नां करें उज्यारा, मैं मालक तेरे घर दा, तूं इन्नां देवे सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दस्सां अगम्म अपारा। मेरा लेखा सदा अपार, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। एह निक्के निक्के गुरू अवतार, पैगम्बर तेरा नूर चमकाईआ। सब कुछ दे के तेरे अख्त्यार, मुख्तारनामे दित्ते लिखाईआ। खेल करदे रहे सदा जुग चार, चौकड़ी आपणी वण्ड वण्डाईआ। अक्खरां नाल करदे रहे प्यार, सिफ्तां विच सालाहीआ। कातब बण लिखार, लिख के देंदे रहे गवाहीआ। जो हुक्म दिता इशार, इशारे नाल सुणाईआ। उहो गाउँदे रहे विच संसार, तेरे नाम तों बिना नाम बदलाईआ। जे मैं इक्क वारां आपणा दस्सां दवार, दवारा बदल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। सुण सतिगुर शब्द की आई तैनूं सोच, बिन बुद्धी रिहा दृढ़ाईआ। आपणी मनसा पूरी कर लोच, बिन लोचण लै तकाईआ। जिस दी करदे रहे खोज, खोजी बण जगत लोकाईआ। जम्मदे रहे रोज़, राज़क रहीम बेपरवाहीआ। दस्सदे रहे निर्मल जोत, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जिस दी वरन नहीं कोई गोत, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। फेर क्यों मज़्बां दा सिर ते चुक्क के गए बोझ, आपणा आप भुलाईआ। क्यों सिफ्तां वाले नाम दा ला के गए रोग, अक्खरां विच मेरी वण्ड वण्डाईआ। क्यों सब ने मंगयां इक्को धुर दा जोग, इक्को सीस निवाईआ। क्यों हद्दां बणा के गए किला कोट, कोटी कोट भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द पैगम्बरां दा सुण लै हाल, सहिजे दयां सुणाईआ। वक्खरी तेरी चाल, निराली वण्ड वण्डाईआ। तत्तां वाला वजा के ताल, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। आपणे नाम दा रख सवाल, नाम कलमयां विच बदलाईआ। इशारयां विच

शरअ खुआर, शरीअत विच बंधाईआ। तेरी सिफ्त दा दे अहिवाल, आपणा कमाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेश इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द गुर अवतार पैगम्बर तेरा पिछला भाईचारा, हुक्म नाल सुणाईआ। जो मंगदे रहे तेरा दवारा, द्वारका वासी सीस निवाईआ। तूं वण्डदा रिहों भण्डारा, थोड़ा थोड़ा झोली पाईआ। देंदा रिहों चमत्कारा, नूर किरन किरन रुशनाईआ। बणदा रिहों वणजारा, जगत वणज वण्डाईआ। दस्सदा रिहों जैकारा, सिफ्तां वाला नाम समझाईआ। देंदा रिहों हुलारा, पवण पवण बाहर कढाहीआ। कर के खेल जगत न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। सतिगुर शब्द गुर अवतार पैगम्बर तेरी इक्क सरंगी, तत्तां वाली दिती बणाईआ। विच आपणे प्रेम दी पा के तन्दी, तन्द रबाब दिती वजाईआ। मुहब्बत दी धार दस्स के चंगी, चंगी करी पढ़ाईआ। तेरा खेल दस्स बहुरंगी, रंगत दिती रंगाईआ। हुक्म दी ला पाबन्दी, दीनां मज़्बां वण्ड वण्डाईआ। जगत धार वहा के कन्ढी, किनारा दिता वखाईआ। बिन तेरे मेरे मंजल किसे ना लभ्भी, तत कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चक्र विच चक्र लवाईआ। सतिगुर शब्द एह खेल निराला चक्र, चाकर सारे दयां समझाईआ। सारे करदे रहे यतन, यथा योग सेव कमाईआ। मैं तेरा सब नूं दस्सया पतण, नौका जगत नाम चढ़ाईआ। आप बैठा रिहा आपणे वतन, बिन रूप रंग सोभा पाईआ। नित नवित सारे लभ्भण, राह वेखण थाउँ थाँईंआ। जेहड़े गुर अवतार पैगम्बर अक्खरां वाला तेरा मेरा नाम जपण, उन्हां तों दूर बैठा गुसाँईंआ। बिरहों विछोड़े विच तड़फण, वैरागी रूप बणाईआ। दरस दीदार नूं भटकण, नेत्र मीट ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द तेरे मेरे विच नहीं कोई अटकण, जगत जाप दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं तेरा किनारा तूं मेरा पत्तन, बाकी सारे दिसण पाँधी राहीआ। पंज तत वजूद अंदर जो नच्चण, शब्द इशारा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी खेल पुराणी, पूरब चली आईआ। कुछ अगली दस्स कहाणी, कहकहा ला के मंग मंगाईआ। तेरे चरण कँवल मेरी इक्क निशानी, निशाना अवर ना कोए तकाईआ। तत खेल होई बेगानी, जप जग ना कोए वड्याईआ। की तेरी धुर दी बाणी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे तत्तां वाला छड्ड दे झगड़ा, सच सच दे दृढ़ाईआ। की खेल तेरा अगला, अगम्म देणा जणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर आपणी धार वाले सद्द लै, सद्दा आपणा इक्क सुणाईआ। आपणा नूर ओन्हां विच्चों लभ्भ लै, लाभ सब नूं दे पुचाईआ। झगड़ा मुका लै पिछली हद्द दा, दीन मज़्ब मिटाईआ। फिर लेखा दस्सां सब दा, सहिज

सहिज जणाईआ। मेरा खेल पंज तत नहीं कोई पाणी अग्ग दा, आसा अवर ना कोए वधाईआ। दूसर नाम कोई ना जपदा, जेहवा वणज ना कोए वड्याईआ। जे तूं सुत दुलारा इक्को बप्प दा, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। फेर लहिणा देणा हक दा, हकीकत दए दृढ़ाईआ। अग्गे लेख रहे ना शक दा, भरम देणा चुकाईआ। जो तेरा मेरा नाम जपदा, सो मेरे विच समाईआ। एह खेल पुरख समरथ दा, समें नाल उपजाईआ। वेला नहीं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वाले रथ दा, जुग जुग वेस देस प्रदेश ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे गहर गम्भीर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। बिन शब्द सतिगुरू बणे ना कोए सरीर, तन माटी वज्जे ना कोए वधाईआ। तेरा लेखा बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र ना आईआ। बिन तेरी किरपा पढ़े ना कोए तालीम, हुक्म हक ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी दए जणाईआ। सतिगुर शब्द धुर दा हुक्म सतिगुर साथी, शब्द गुरू जस गाईआ। गोबिन्द शब्द जो धुर दी धार आखी, बिन अक्खरां दिती समझाईआ। मेरी आदि मध दी पाती, पत्रका इक्क प्रगटाईआ। जिस नूं दूजा पढ़े ना कोए जमाती, तुलबा नज़र कोए ना आईआ। लिखे कोई ना बण के साथी, सलाहकार ना कोए वड्याईआ। शब्द धार मेरे गोबिन्द आपणी याद कर ला आखी, आख़र दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले नूरी धार चड़िउँ घाटी, मंज़ल आपणी पूर कराईआ। दर दुआर तक्क के कमलापाती, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। ढोला गाया बण के भाटी, राग धुरदरगाहीआ। नज़र आया कोई ना ढाडी, दूजा नाद ना कोए सुणाईआ। तेरा खेल वेख बहु भांती, भावना आपणी दिती समझाईआ। तूं साहिब पुरख अबिनाशी, गहर गम्भीर गोसाँईआ। आदि जुगादी मेरा नाती, पिता माती इक्क अख्वाईआ। मेरी मन अख़ीरी बाती, बातन दयां जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मिट गए जो तन वजूद हंडावण ख़ाकी, माटी चम्म नज़र ना आईआ। तेरा खेल सदा बहु भांती, भेव अभेदा दएं खुल्हाईआ। मेरी धारा अंदर आसी, आशा दयां सुणाईआ। तूं मालक ख़लक आकाशी, प्रकाश नूर खुदाईआ। तूं कोई सतिगुर नहीं पवण स्वासी, साह विच समाईआ। तेरी मंज़ल कदे मुके ना वाटी, अन्त कहिण कोए ना आईआ। तूं दीन दयाल नाथ अनाथी, निरवैर तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा वखाईआ। शब्द कहे मैं गोबिन्द, सतिगुर रूप जणाईआ। बिन मात पित तों तेरी बिन्द, नूर जोत रुशनाईआ। तूं गहर गम्भीर अगम्म सिन्ध, सागर समझ ना राईआ। हरख़ सोग ना कोए चिन्द, ग़म ना कोए बदलाईआ। तन वजूद शरीर नहीं कोई पिण्ड, तत नज़र कोए ना आईआ। तूं दाता गहर गम्भीर गुणी गहिंद, शहिनशाह अख्वाईआ। तेरे हथ्थ रबाब नहीं कोई किंग, मृदंग

ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द शब्द कहे तूं जोत अकाला, अकल कला अख्वाईआ। मेरा तेरे अग्गे सवाला, सवा पहर मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कोई दे ना सके अहिवाला, परदा ना कोए उठाईआ। मैं तेरा इक्को नढ्ढा बाला, बालक धुर दा नज़री आईआ। सद वसां तेरी धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। मैं कोई गऊआं चारन वाला नहीं ग्वाला, गोवर्धन हत्थ ना कोए टिकाईआ। मैं कोई पकड़ी नहीं माला, सिमरन विच सिमरन ना कोए बणाईआ। मैं कोई घालणी नहीं घाला, आपणा आप मिटाईआ। सद वसां तेरे नाला, एहो आस रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा वक्खरा रहे ना कोए निराला, निराकार आकार ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पतण देणा सुहाईआ। गोबिन्द शब्द कहे ना मैं गुरू तेरा अवतार, ना पैगम्बर नज़री आईआ। ना शरअ दा सिक्दार, ना मज़्हबां करां अगवाईआ। ना पढ़ां तेरा इशतहार, ना सिफ्तां विच वड्याईआ। ना करां कदे पुकार, रो रो हाल सुणाईआ। ना बणां कदे लिखार, ना कागज़ कलम चलाईआ। ना मंगां कदे दवार, दर दर अलख जगाईआ। जद तूं इक्क वेरां मेरे नाल पा ल्या प्यार, फिर टुट्ट कदे ना जाईआ। सांझा कर के इक्क जैकार, आदी ढोला दिता सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दे नहीं कोई इख्त्यार, इख़तलाफ़ विच कदे ना आईआ।

७१३
२०

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क मनाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द धार नहीं गुस्ताख़ी, गुस्सा ना कोए रखाईआ। मैं आस दस्सां साची, साजन दयां दृढ़ाईआ। तेरी मेरी धार कदे ना होवे काची, आदि अन्त तुट्ट कदे ना जाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साथी, सगला संग निभाईआ। बिन मेरे प्रभू तेरा बणे कोई ना पाठी, तेरा आदी नाम कोए ना गाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेलणा सूरबीरां नाल राठी, रजवाड़े वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। गोबिन्द शब्द कहे इक्क वेख आपणा वरका, वाहिद दयां जणाईआ। जित्थे भेव खुल्ह्रे तेरे घर दा, घराना इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर नहीं कोई लड़दा, दीन मज़्हब ना वण्ड वण्डाईआ। ना कोई वक्खरा वक्खरा नाम पढ़दा, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। तूं आदि अन्त मध जोत विच्चों जोती धरदा, नूर विच्चों रुशनाईआ। जो चाहे सो करदा, करनहार वड्याईआ। मैं तेरे अग्गे नहीं डरदा, भय तेरे चरणा दिता रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। गोबिन्द शब्द कहे प्रभ नूरी, नुराने बेपरवाहीआ। मेरी मनसा कर दे पूरी, आसा तूं ही दिती उपजाईआ। मेरी सति दी दे मज़दूरी, धुर दी झोली पाईआ। मैं छड्ड के दुनिया कूड़ी, कुटम्ब दिता तजाईआ। मस्तक ला के तेरी धूढ़ी, धुर दा मेल मिलाईआ। रंगण चाढ़ के गूढ़ी,

गूढ़ा रंग रंगाईआ। अग्गे रहे ना कोए मजबूरी, मुश्किल हल्ल कराईआ। बिन मेरे करे ना कोए मशहूरी, मश्वरा लैण कोए ना आईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैगम्बर आपणी वलेट के गए पंज तत दी फूड़ी, सफा नज़र किसे ना आईआ। मक्खण खांदे गए चूरी, रसना खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग दे रंगाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं तेरा दुलारा, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। तूं मेरा परवरदिगारा, परम पुरख अख्वाईआ। मेरे नाल तेरा नहीं कोई लारा, समां समां वड्याईआ। लेखा नहीं कोई जुग चारा, चारे वेद भेव ना आईआ। मैं तेरा समझां अगम्म इशारा, शरअ तों बाहर दृढ़ाईआ। पूरब लहिणा दे उधारा, अगली मंग ना कोए मंगाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा उह दिहाढ़ा, दिवस दयां समझाईआ। जिस वेले बणा के धुर दा लाड़ा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दुआर वखा अखाड़ा, आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा आपणा दे चुकाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मेरे दयानिध दयालू, दामनगीर वड्याईआ। तैनूं मैनूं केहड़ा भालू, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा वायदे वाला सम्मत होया चालू, चाल सब दी देणी बदलाईआ। तेरी घाल केहड़ा घालू, धायल हुन्दी दिसे लोकाईआ। तेरा बचन केहड़ा पालू, फ़रमांबरदार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा मेरी वेख वखाईआ। शब्द गोबिन्द कहे आह वेख आपणा हुक्मनामा, हुक्मे विच सुणाईआ। जिस विच रहे ना कोए बेगाना, नूर इक्को नज़री आईआ। तेरा खेल दो जहानां, दोहरी धार प्रगटाईआ। जिस कारण पहलों बच्चयां दा दे के गया ब्याना, कौल इकरार कराईआ। उह आपणा फोल के वेख ख़ाना, ख़ालक ख़लक परदा आप उठाईआ। जित्थे उपजे इक्क तराना, तरां तरां दा राग ना कोए अलाईआ। नज़री आए श्री भगवाना, भगवन दाता बेपरवाहीआ। आपणे हुक्म नाल आपणा बदल दे ज़माना, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। तेरा होए वक्त सुहाना, सुहञ्जणा वेला सोभा पाईआ। मेरे कोल इक्क होर परवाना, परम पुरख दयां वखाईआ। जिस नूं तक्कणा नाल ध्याना, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उस दे विच लिखी कलामा, कलमा नूर इलाहीआ। मेरा प्रेम दा होणा इस्लामा, इस्म अवर ना कोए जणाईआ। झगड़ा दुनी मुक्के तमामा, तामस देणी गवाईआ। तत्तां वाला गुरू करे ना कोए हरामा, हरामी सारे देणे मिटाईआ। आपणे हथ्थ लै कमाना, कामल मुर्शद इक्क अख्वाईआ। गोबिन्द तेरा मेरा इक्को होणा बाणा, बाहमी नाता ल्या जुड़ाईआ। तेरी मेरी आशा दे कोटन फिरने रामा, शाम भज्जण वाहो दाहीआ। सब दा बदल देणा नज़ामा, नाज़म इक्को देणा समझाईआ। गोबिन्द किहा मेरे शहिनशाह सुल्ताना, साहिब तेरी सरनाईआ। मेरा सिख रहे ना किसे दा गुलामा, सेवा सीस ना किसे झुकाईआ। जे मिले ते तेरा इक्क निशाना, निशानी आपणी देणी

दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरा मेरा सांझा होवे गाणा, दूजा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द शब्द तत्तां वाले गुरू हो गए मुरदे, मुरदयां फेर ना कोए जवाईआ। तेरे मेरे हुक्म फिरदे तुरदे, दो जहानां भज्जण वाहो दाहीआ। तेरे बेड़े चढ़े कदे ना रुढ़दे, जगत जहान ना कोए डुबाईआ। मेरे दवारयों ख़ाली कोई ना मुड़दे, जिन्हां आपणी दया कमाईआ। एह खेल दोहां दी लोड़ दे, लोचा सब दी वेख वखाईआ। हुक्म रहिणे ना रसना वाले ज़ोर दे, शब्दी तन्द बंधाईआ। जेहड़े अक्खरां नूं रहे घोटदे, घुट आपणी जान भराईआ। जेहड़े शब्दी धार रहे लोचदे, लोचण अगला इक्क खुलाईआ। जन भगतां वक्त सुहाउणे मौज दे, मजलस प्रभ दे नाल लगाईआ। बेशक इक्को ढोला बोल दे, धुर दा राग सुणाईआ। एह वसनीक हो गए ओस दे कोल दे, जो इक्क इकल्ला सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा इक्क समझाईआ। गोबिन्द शब्द कहे पुरख अकाल उत्तम जाती, आदि अन्त इक्क अख्वाईआ। जिस दा खेल बहु बिध भाती, भेव भाव ना कोए दृढ़ाईआ। मेरी मनसा वाली पूरी करे आखी, आख़र दया कमाईआ। सम्मत शहिनशाही तिन्न दी तिन्नां लोकां तों बाहर वसाखी, वसल मिले यार खुदाईआ। गुरमुखां देवे सच सौग़ाती, सति वस्त वरताईआ। चरण प्रीत जोड़ के नाती, संग अगला आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। शब्द गोबिन्द कहे तत्तां वाले गुरू सांभ, सम्भल सके कोए ना राईआ। सारे दिसदे बांझ, नूर नूर ना कोए प्रगटाईआ। स्वांगी तेरा स्वांग, सारे रहे वखाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी कांग, सब नूं रही रुढ़ाईआ। हक सुणे ना कोई बांग, राज़ निमाज़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे सतिगुर शब्द, शरअ तेरी दयां बदलाईआ। अग्गे इक्को दस्स के अदब, अदल आप कमाईआ। झगड़ा मेट के दीन मज़्हब, मज़ा आपणा नाम चखाईआ। कूड़ी क्रिया कर के जज़ब, सति सच दयां प्रगटाईआ। मैनूं लोड़ नहीं कोई मदद, मुद्दा सब दा वेख वखाईआ। मन वासना मेट तशदद्, अन्तर करां, सफ़ाईआ। मोह विकार कर के हत्तक, तुअल्लक कूड़ दयां तुड़ाईआ। धुर फ़रमाना दे के सख्त, कलेश कमबख्त दयां गवाईआ। अग्गे इक्को दा आउणा वक्त, साचे वेले वज्जे वधाईआ। जिस सृष्ट उपाई जगत, सो वेखे बेपरवाहीआ। मिलणा सिध्धा आ के भगत, भगवन दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा दए चुकाईआ। सतिगुर शब्द धुर दे बच्चे, बच्चा इक्को नज़री आईआ। बाकी सारे भाण्डे कच्चे, तन वजूद संग ना कोए निभाईआ। ज्यों भावे त्यों रखे, रक्ख्या कर के थाउँ थाँईंआ। जुग चौकड़ी खेल पुरख समर्थे, सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शब्द दुलारे तैनूं ल्याए ओनां दे वट्टे, जो वाटां गए मुकाईआ। सब दे पूरे करे अरसे वाले पटे, मुणयाद नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे रंग रत्ते, रतन अमोलक लए बणाईआ। रतन अमोलक धुर दा हीरा, हरि सज्जण नज़री आईआ। भगत वछल गहर गम्भीर गुणी गहीरा, गोबिन्द बेपरवाहीआ। जिस दा निरगुण धार अगम्मी चीरा, सीस दस्तार ना कोए समझाईआ। सिफ्त गावे सिफ्तां वाला कबीरा, जो कबीर जुलाहे रिहा समझाईआ। जिस दी नज़र ना आए तस्वीरा, तसबी माला ना कोए लटकाईआ। शाह कंगाल ना दिसे अमीरा, अमरापद इक्क जणाईआ। जिस दी मेटे ना कोए लकीरा, हुक्म हुक्म ना कोए बदलाईआ। सो खेल करे बेनज़ीरा, मेहरवान महबूब धुरदरगाहीआ। जन भगतां अमृत रस दे के नीरा, निराकार आपणा रंग रंगाईआ। फ़िकरा पढ़ा के पीरां फ़कीरा, फ़िकर अगला दिता मुकाईआ। सतिजुग साची दस्स तदबीरा, तरीका इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे वक्त दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द तेरी सारे देण शहादत, गुर अवतार पैगम्बर गवाह नज़री आईआ। तेरी अन्त होवे इक्क इबादत, आवाज़ इक्क सुणाईआ। तूं रहिणा सही सलामत, जन्म मरन ना रूप बदलाईआ। जन भगतां देणी सदा ज़मानत, दो जहानां हो सहाईआ। कलयुग अन्त अन्त होणी कयामत, कयाम मुकाम नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिजन सांभ के रखे आपणी अमानत, ईमानदारी विच आपणे घर पुचाईआ।

★ पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल मेरे निरवैरी, निराकार निरँकार दयां दृढ़ाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो मैं देवण लग्गा डायरी, दो जहानां श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना तेरा भेव खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर फिर के वेखे बण के शहरी, शरअ शरीअत फोल फुलाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा परम पुरख परमात्म आत्म सुणावां गम्भीर गहरी, गवर परदा दयां उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाम दे बणे वैरी, द्वैत दर मिली वड्याईआ। सही सलामत सच अदालत लगा एकँकार आपणी इक्क कचिहरी, सचखण्ड दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार कर ढेरी, कूड़ी क्रिया तेरे अग्गे टिकाईआ। सति सतिवन्त श्री भगवन्त

धुर दे कन्त कलयुग अन्त क्यों लगाई आपणी देरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे भेव खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे भगवन्त, भगवन दयां जणाईआ। वेख्या खेल तेरा जुगा जुगन्त, नित नवित तेरे हुक्मे अंदर फेरा पाईआ। तेरा नाम संदेसा देंदा रिहा मणीआं मंत, जुग चौकड़ी आप दृढ़ाईआ। लख चुरासी नार सुहागण हंढाउँदा रिहा बण के कन्त, कन्तूहल तेरी बेपरवाहीआ। धर्म दुआर विच संसार बणाउँदा रिहा अन्तश्करन अन्तर सन्त, सति सतिवादी भेव खुल्हाईआ। बोध अगाधा बणदा रिहा पंडत, निरअक्खर अक्खर धार दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दुआर दरगाह साची तेरी रुत्त सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देवण लग्गा इक्क रपोट, धर्म संदेसा दयां दृढ़ाईआ। सच नगारे ला के चोट, चोटी चढ़ के सब नूं दयां उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गुर अवतार पैगम्बर जो लोकमात हो के आए कोटी कोट, अगणत तेरा निरगुण सरगुण रूप धराईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार तेरी मिले विच निर्मल जोत, जोती जाते पुरख बिधाते तेरी धार विच समाईआ। सब दे हुक्मे अंदर कढ्ढण लग्गा खोट, ख़ैर ख़ैरीअत तेरी बेपरवाहीआ। ठोकरां नाल होकरां नाल हिला के चौदां लोक, परलोक आपणा परदा लाहीआ। किसे दी रहिण नहीं देणी सोच, समझ विच ना कोए वड्याईआ। तेरे प्रेम दी माण के मौज, मंज़ल वेखी ख़लक खुदाईआ। किसे नूं समझ ना आई होश, जुग चौकड़ी गए फेरीआं पाईआ। सच दुआर एकँकार तेरे चरणां थल्ले गए पहुंच, सनमुख अक्ख ना कोए उठाईआ। तेरा पूत सपूता नौजवाना मर्द मर्दाना सुत दुलारा एका बहुत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सर्ब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी ख़लक ख़ालक मेरे ख़ौंत, कन्त कन्तूहल तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर एकँकार दरगाह साची परदा देणा उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं लाहुण लग्गा परदा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो तेरा बणदा रिहा बरदा, बदली विच तेरा हुक्म सुणाईआ। सीस जगदीस भाणा रिहा जरदा, ज़ाहर ज़हूर तेरी ओट तकाईआ। तेरा नाम संदेसा सिफ्तां वाला ढोला अक्खर रिहा पढ़दा, जिस नूं नाम कहे लोकाईआ। तूं किसे भेव ना दिता आपणे घर दा, अन्त कहिण कोए ना आईआ। तेरा खेल अगम्मे हरि दा, हरि तेरी बेपरवाहीआ। जो उपज्या सो रिहा डरदा, भय भउ विच शरनाईआ। सिर कदमां उत्ते रिहा पर्दा, बिन सीस जगदीस वड्याईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द निरगुण धार अरज़ां रिहा करदा, ख़िदमतगार सेव कमाईआ। मंज़ल मंजल रिहा चढ़दा, हकीकत हक राह तकाईआ। तेरा खेल अगम्मे नर दा, नर हरि कहिण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

धुर दा वर, धुर परदा आप चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सण लग्गा भेद, भावना धुर दी दयां जणाईआ। जिस नूं समझे ना कोए कतेब, वेद वजह ना कोए दृढ़ाईआ। लिख सक्या कोए ना लेख, कातब चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर माण के सेज, सज्जण कहि के ढोला गाईआ। तेरे नूर दा लै के तेज, जलवा जोत रुशनाईआ। हुक्मे अंदर भेज, हुक्मे अंदर विच समाईआ। मैं सब कुछ रिहा वेख, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। धुर दा बणया धर्मी कोई ना नेक, निक्का निक्का आपणा आप कराईआ। जे पुरख अकाल सब नूं देनों आपणी टेक, टिक्का मस्तक इक्को धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फिर क्यों वक्खरा वक्खरा दस्सदे देस, दिशा हिस्सा वण्ड वण्डाईआ। क्यों भरम भुलाया विष्न ब्रह्मा शिव महेष, देव देवा सरनाईआ। क्यों निरगुण सरगुण कीता हेत, अवतरा कार कमाईआ। क्यों पैगम्बरां खेली खेड, ख़ालक ख़लक नूर कर रुशनाईआ। क्यों गुरू गुरदेव दिता तेज, सतिगुर आपणा नूर चमकाईआ। क्यों नहीं धार दस्सी एक, एकँकार भेव खुल्हाईआ। सारे तेरे हुन्दे वेखे भेंट, आप आपा गए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं पिछला बीतया दस्सां काल, जुग वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैं लेखा जाणां माज़ी हाल, कदीम मेरी बेपरवाहीआ। जिस दा समझे ना कोए सवाल, जवाब देण कोए ना आईआ। सारे घालदे गए घाल, सेवा विच सेव कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे नन्हे नन्हे बाल, बचपन विच आपणा आप मिटाईआ। तेरे नाम दा वजाउँदे गए ताल, संदेसा तेरा मात सुणाईआ। त्रैगुण तोड़ दे गए जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। नाम संदेसा सुणाउँदे गए वार, अक्खरां विच वड्याईआ। सिफ्तां विच करदे गए भाल, लिख्तां विच सालाहीआ। तेरा तक्क के थोड़ा नूर जमाल, ज़ामन आपणा आप कराईआ। हुक्म दे हुक्मी बण महिमान, बेज़बान वेस वटाईआ। कलमा नाम संदेसा दे कलाम, शब्दी राग अल्हाईआ। हुजरयां विच करन पहचान, बिन नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। धर्म दी धार ईमान, अमल रहत सरनाईआ। बरदे बण ग़ुलाम, ख़ादम सेव कमाईआ। दीन मज़्हब दा दस्सदे गए नज़ाम, नौबत हक जणाईआ। कलयुग अन्त होए बदनाम, बदी सके ना कोए मिटाईआ। हकीकी दे सके कोई ना जाम, अमृत रस ना कोए चखाईआ। लेखा पिछला मुका तमाम, तमअ तृष्ना ना कोए वधाईआ। सब दा विगड़ गया इंतजाम, हुक्मरान ना कोए शहिनशाहीआ। धर्म दिसे ना कोए निशान, बावन धार ना कोए झुलाईआ। अन्त मेरा इक्क पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे दयां दृढ़ाईआ। सुण बेनन्ती श्री भगवान, भगवन तेरे दर शनवाईआ। दीनां बंधप नौजवान, नर नरायण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दयां समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल आ वेख आपणे

नन्हे बच्चे भोले, अवतार पैगम्बर गुरू दयां वखाईआ। जेहड़े तेरे नाम दे गा के आए सोहले, ढोले कलमयां विच जणाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरगुण हो के मौलें, सरगुण रंग रंगाईआ। भाग लगाएं काया चोले, चोजी प्रीतम खेल खिलाईआ। शब्दी धार हो के बोलें, अनबोलत राग अल्हाईआ। सदी चौधवीं सारे डोले, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। सच वस्त किसे ना कोले, कायनात दए दुहाईआ। दीनां मज़्हबां पाए रौले, सिर हथ्थ ना कोए उठाईआ। कर्म कुकर्म होवे उपर धौले, धर्म दुआर बैठा मुख छुपाईआ। जगत नईआ सब दी डोले, तट किनार ना कोए सुहाईआ। हुण तक्क बैठ के ओहले, आलमगीर रहे कुरलाईआ। बिना तेरे शब्द सति सच कोई ना बोले, भरमे भुल्ली जगत लोकाईआ। धर्म दुआर रहे ना कोई विचोले, विचला लेखा गए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द कहे आपणे गुर अवतार पैगम्बर वेख नन्हे, बचपन तैनूं दयां वखाईआ। जेहड़े तेरी मेरी धार अगम्मी जणे, जणेंदी जोत अगम्मी माईआ। एका राग सुणाया बिना कन्ने, अनबोलत डंक वजाईआ। लग्गा भाग वजूद तने, तन महबूब तेरी सरनाईआ। अन्त अख़ीर सब दे ख़ाली दिसदे कन्ने, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। जिन्हां दे पंज तत ठीकर काया भन्ने, अन्त जोत विच मिलाईआ। ओन्हां दा हुक्म केहड़ा मन्ने, जो साख्यात नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर वेख आपणी धार, धरनी उत्ते नज़र कोए ना आईआ। जोत जोती दा शुमार, हिन्दसा अंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिन तेरी किरपा नूर ना कोए उज्यार, ज़हूर विच ना कोए रुशनाईआ। चार जुग दे पनिहार, पूरब सेवा सेव कमाईआ। तेरा खेल सच्चे ठठयार, ठाकर समझ कोए ना पाईआ। तेरा लेखा जुग चौकड़ी चार, चार कुण्ट तेरी बेपरवाहीआ। दर ठांडे खड़े गुरू अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। साडा लेखा रिहा ना विच संसार, संसारी भण्डारी देवण नाल गवाहीआ। ख़िदमत करदे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के तेरी सेव कमाईआ। लेखा पूरा होया सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी चार, चार वरन विच समझाईआ। इन्हां दा रिहा नहीं कोई इख़्त्यार, इख़तलाफ़ विच लोकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात कूड़ी क्रिया होया विभचार, धर्म प्रचार ना कोए शनवाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी होए गुनाहगार, ग़फ़लत विच गहरी नींद सवाईआ। मतलब विच तेरा नाम रहे उच्चार, रहमत विच सीस ना कोए निवाईआ। मैं सब नूं करन आया ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दा सच्चा दरबार, दरगाह धुर दी इक्को नज़री आईआ। जित्थे नाम दा वणज व्यपार, दूजा हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकारा एकँकारा परवरदिगारा धुर दरबारा, इक्को इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो मार के वेखो ध्यान, धर्म दवारे दयां जणाईआ। सृष्टी विच रिहा ना कोई ईमान, भरमे भुल्ली कूड़ लोकाईआ। अक्खरां वाला नज़र ना आए ज्ञान, अज्ञानी देण दुहाईआ। मनुआ मन फिरे शैतान, शरअ विच लड़ाईआ। साची मंज़ल मिले ना किसे मकान, परदा हक ना कोए उठाईआ। महबूब दी करे ना कोए पहचान, निज नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। अमृत रस चक्खे ना कोए ज़बान, तृष्ना विख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं करना नहीं लिहाज, लहिजे नाल जणाईआ। जुग चौकड़ी बदल देणा समाज, समें नाल समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तक्को आपणा रिवाज, जो रसम दिती सिखलाईआ। साचा करे ना कोई आदाब, सीस जगदीस ना कोए निवाईआ। माया कारण कूड़े काज, धरनी धर्म ना कोए वखाईआ। नज़री आए ना गुरू महाराज, राज राजान शाह सुतलान देण दुहाईआ। हुजरा सोहे ना कोई महिराब, हकीकत हक ना कोए वखाईआ। नाम निधान ना वज्जे रबाब, तन्दी तन्द ना कोए हिलाईआ। सारे खोल्ह के वेखो आपणी जाग, जगह जगह पई लड़ाईआ। दुरमति मैल कोई ना धोवे दाग़, अन्तर साफ़ ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो तेई अवतार, इक्को वार जणाईआ। दुनिया दे बण के दुनीदार, दाअवा दुनी विच वखाईआ। राम राम दा बोल जैकार, कृष्न कृष्न दे गीत सुणाईआ। ओम ओम दा दे अधार, शंकर शंकर डंक खड़काईआ। अन्तिम सारे वेखो आपणा नैण उग्घाड़, अक्ख प्रतख उठाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया सब दी होई उजाड़, मन्दिर दिसे ना कोए रुशनाईआ। दीपक जोती सके कोए ना बाल, वरन गोती भरम भुलाईआ। सुरती सोती सके ना कोए उठाल, संदेसा सच ना कोए सुणाईआ। कलयुग ने सब दी बदल दिती चाल, चाल निराली दिती वखाईआ। धर्म दी करे कोई ना भाल, कूड़ विभचार वज्जे वधाईआ। झगड़ा प्या धर्मसाल, मन्दिर मठ्ठ रहे कुरलाईआ। अवतार ग्रिफ़तार करे किसे ना आण, सगला संग ना कोए निभाईआ। इट्टां पत्थरां काग़ज़ शाहीआं करदे सारे निमस्कार, नमों नमों सीस झुकाईआ। नज़र आए ना किसे निराकार, जिस दा नूर जोत रुशनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सारे कीते लाचार, लाचारी सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो पैगम्बर मीत, मित्रो दयां जणाईआ। तुहाडी रही ना धुर दी रीत, मार्ग सच ना कोए समझाईआ। झगड़ा प्या जगत मसीत, मसला हक ना कोए सुणाईआ। मुल्ला

दिसे ना कोए अतीत, कुल्ला कूड़ सोभा पाईआ। सदी चौधवीं सारे होए पलीत, पलक अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कलमा समझे कोए ना गीत, वाहिद नूर नज़र कोए ना पाईआ। मेहर होए ना कोए बख्शीश, रहमत रैहम ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे उठो वेखो सतिगुर जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। चार कुण्ट लग्गी अग्ग, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। साचा नाम ना वज्जे नद, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। परदा कोई ना सके कज्ज, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। कलयुग सन्त वासना इन्द्र वाली भग्ग, भावना भरम विच भरमाईआ। चढ़े कोई ना उपर शाह रग, रस्ता मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। यति सति दा टुट्टया तग, हठीआ हठ ना कोए कमाईआ। सदी बीसवीं तुसीं सारे हो गए अड्ड, दामनगीर दामन हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। हुक्मे अंदर गए छड्ड, ख़ाली हड्ड कर लोकाईआ। अग्गे हो के वेखो वध, मातलोक ध्यान लगाईआ। किसे ना मिले अमरापद, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना जाईआ। कूड़ी क्रिया पए अन्धेरी खड्ड, फड़ बाहों पार ना कोए कढाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मैं होवां गद गद, गदागर दिसे लोकाईआ। भेखाधारी फिरदे वग्ग, वागी नज़र कोए ना आईआ। केहड़ी गल्लों गए भज्ज, भजन बन्दगी विच जगत फसाईआ। दुरमति मैल कोई ना धोवे डब्ब, एका रंग ना कोए रंगाईआ। क्यों लहिणा देणा मुकया हभ, हमसाजण संग तुड़ाईआ। कलयुग जीव बप्पड़े बग्ग, हँस रूप ना कोए वटाईआ। माया ममता मुख विच दे के डड्ड, डण्डौत आपणी गए भुलाईआ। सब दी कीती हो गई रद्द, राह इक्को बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ अन्धेरी रही वग, वागां हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। वेखो खेल सूरे सरबग, सुरती सब दी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सारे दस्सो आपणी नेकी, निक्कयां वड्डयां इक्क वड्याईआ। किस ने व्याही राम राम दी बेटी, नार कन्त रूप सुहाईआ। किस ने मंज़ल चढ़ के वेखी छेती, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। केहड़ा परम पुरख दा होया भेती, भरमां विच्चों आपणा भरम मिटाईआ। केहड़ा बणया देसी कवण होया परदेसी, कवण देस सुहाईआ। केहड़ा आपणे नाम दी मार के गया शेख़ी, अक्खरां वाला नाम जपाईआ। केहड़ा कर के जगत विच तेज़ी, तेज आपणा गया वधाईआ। प्रभ ने सब नूं डण्डी दस्सी टेडी, सिध्धा राह ना कोए वखाईआ। किसे समझी धार ना एहदी, जो एधर ओधर रिहा भवाईआ। थोड़ी रमज़ लगा के सोढी वेदी, वेदी सोढी गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो दस्सो जलदी, जल तरंग दी लोड़ रहे ना राईआ। एथे खेल इक्को गल्ल दी, गलवकड़ी कोए ना पाईआ। धार रहे ना कोए छल दी, छल कपट

ना कोए वड्याईआ। एह मिसल मसले वाली हल्ल दी, हालत आपणी दयो जणाईआ। क्यों एह धार होई कलयुग कल दी, कलमे सारे दिते भुलाईआ। तुहाडे हुंदयां क्यों दीनां मज़्हबां वाली अग्ग बलदी, क्यों ना सके बुझाईआ। की तुहानूं लभ्भे धार ना जल दी, प्रभ दा सोमां बेपरवाहीआ। की घड़ी आ गई तुहाडे अन्तिम फल दी, जो भविख्तां विच सुणाईआ। की तुहाडी ताकत नहीं कोई चलदी, चलत वेखी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दस्स दयो छेती, शरअ आपणी दयो समझाईआ। क्यों होए मात परदेसी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी ढोला गाईआ। क्यों निरगुण सरगुण बणे वेसी, चोला माटी पंज तत खाक हंढाहीआ। क्यों दित्ते नाम संदेशी, संध्या वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुण शब्द धुर दे दूल्हे, दुल्हन हो के दईए जणाईआ। तेरी धार फले फूले, फुलवाड़ी तेरी नज़री आईआ। तेरा आदि तेरा मूले, अन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा नूर कन्त कन्तूहले, कन्त बेपरवाहीआ। की साथों लहिणा देणा वसूले, की बाकी रिहा कढाहीआ। असीं तेरे हुक्म दे माणदे रहे झूले, झलक तेरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दे चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण शब्द साडे साहिब, सुल्तान तेरी सरनाईआ। असीं तेरे बणे नाइब, हुक्मे विच वड्याईआ। अन्त मातलोक विच्चों हो के ग़ायब, दर तेरे डेरा लाईआ। तेरा खेल अजब अजाइब, निराला दे दृढ़ाईआ। साडी कर हमायत, मेहर नज़र उठाईआ। जो शरअ दस्स के आए शरायत, कलमयां विच पढ़ाईआ। नाम दी कर के आए अनायत, अक्खरां विच समझाईआ। सच दुआर कर के रिहाइश, मन्दिर इक्क वखाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां दी कर के आए पैमाइश, जोजनां विच समझाईआ। साडी कर ना अन्त अज़माइश, दर तेरे सीस निवाईआ। जो धुर दी मिली हदायत, सो मातलोक आए सुणाईआ। असीं धर्म दुआर दी तेरे दर ते आई पंचायत, पंचम दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, घर सज्जण मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सुणी अगम्मी आवाज़, जो बिन अक्खरां दिती सुणाईआ। इस विच अनोखा राज़, समझे ना कोए लोकाईआ। सांझा होया जवाब, जवाब तल्बी ना कोए कराईआ। जो भविख्तां विच ल्या ख्वाब, खालस दयां दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा लेखा वेखण आया आप, जिस आपणी कार कमाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद कहि के आए बाप, गुर अवतार पिता पुरख अकाल सुणाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां सदा पाक, पतित पुनीता दए वड्याईआ। जिस दा चार जुग निरगुण सरगुण धार करदे आए पाठ, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस ने दीन मज़्हब नाम कलमे धर्म शरअ तुहानूं कीते

अलाट, अल्ला वाहिगुरू राम आपणा नाम समझाईआ। छोटे छोटे दे के पलाट, वखा के जगत वाला घाट, जोत जगा के विच ललाट, दीवा बाती कमलापाती कर रुशनाईआ। धीरज दे विश्वास, हुक्म संदेसा दे के ख़ास, अग्गे वधा के होर आस, आहिस्ता आहिस्ता आपणी कार कमाईआ। हुण ओसे दा प्रकाश, जेहड़ा कदे ना होवे नास, जिस नूं कहिंदे पुरख अबिनाश, घट निवासी नाम धराईआ। जिस दी मण्डल पाउँदे रास, गोपी काहन दासी दास, राम सीता कोटन चरणां पास, निव निव सीस निवाईआ। उह वेखे खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सतिगुर शब्द की आया मौका, मुकम्मल दे समझाईआ। साडी किथ्थे रह गई नौका, जो नईआ नाम वाली चलाईआ। शब्द किहा गोबिन्द दा ढईए दा इक्को ढौंका, ढोल नाल सुणाईआ। जेहड़ा छड्ड के गया पटना पौंटा, पाटल आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सतिगुर शब्द इक्को बहुता, जो जुग चौकड़ी आपणा हुक्म मनाईआ। जिस ने लख चुरासी काया मन्दिर अंदर मारया आपणा गोता, गहरी भँवरी फोल फुलाईआ। जिस दा नाम शब्द दो जहानां इक्को सोटा, सट्ट धुर दी दए लगाईआ। कलयुग जीव रहिण ना देवे कोई खोटा, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। माया ममता भन्ने लोटा, लुटीआ सब दी दए रुढ़ाईआ। जन भगतां अन्तर सच प्रेम प्यार दा फेरके पोचा, दुरमति मैल दए धवाईआ। गुरमुख पुरख अकाल दा वेखे पोता, गुरसिख गोबिन्द लए उठाईआ। जिस दी आदि जुगादि जगदी जोता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओसे दा हुक्म लोक परलोका, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सतिगुर शब्द साडी अरदास, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। आरज़ू दईए ख़ास, ख़सूसीअत विच समझाईआ। जेहड़ा लेखा लिख्या ब्यास, बेआस दिते तराईआ। जिस दे प्रेम दी लगा प्यास, तृष्ना दए मिटाईआ। जिस नूं याद करदे गए ख़ास, ख़ालस नूर ख़ुदाईआ। साडा इक्को उत्ते विश्वास, जो विषयां तों बाहर पिता माईआ। जिस दे चरणां वसीए पास, करवट सके ना कोए बदलाईआ। आदि अन्त ना होवे नास, जन्म मरन ना वेस वटाईआ। दाता दानी सर्ब गुण तास, गहर गम्भीर अख्वाईआ। परवरदिगार हू पाक, अल्ला शहिनशाहीआ। सदा देंदा रहे शाबाश, ख़ुशीआं रंग रंगाईआ। ओस नूं इक्क आदाब, सर सजदा सीस निवाईआ। जिस दा नानक लेखा दस्सया बग़दाद, बग़लगीर नूर ख़ुदाईआ। अन्त आउणा विच पंजाब, पंजां दा मालक बेपरवाहीआ। जिस ने कदे नहीं होणा बरबाद, नेस्तोनाबूद करे लोकाईआ। अन्त भगतां दी सुणे फ़रयाद, जुग चौकड़ी विछड़े मेल मिलाईआ। अंदर वड़ के वजावे रबाब, तन्द सितार नाम हिलाईआ। मित्र प्यारा बणे अहिबाब, सज्जण धुरदरगाहीआ।

शाहो भूप हो नवाब, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। जिस दी सब तों परे आवाज़, रसना बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। अवतार पैगम्बर कहिण गुर, गुर आपणा इक्क जणाईआ। जो मालक दिसे धुर, दर ठांडे सोभा पाईआ। निरगुण धार आवे तुर, तुरत आपणी खेल कराईआ। जिस दा मंत्र जावे फुर, फ़ुरना बेपरवाहीआ। उस लहिणा देणा चुकाउणा जो छड्ड के गया अनन्दपुर, पुरीआं तों बाहर डेरा लाईआ। कर प्रकाश अन्धेरा घोर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे चोर, ठग्गी फोल फुलाईआ। जन भगतां पए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। निरगुण निरवैर कर के वेखे ग़ौर, गहर गम्भीर फोल फुलाईआ। जिन्नां नूं लोकमात दिता तोर, तुरीआ तों परे कर पढ़ाईआ। ओन्नां दी पूरी करे लोड़, लोड़ींदा साजण नज़री आईआ। निरगुण धार लए जोड़, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो आपणी आपणी दस्सो कार, करनी की कमाईआ। सारे करन पुकार, कूक कूक सुणाईआ। राह तकदे गए परवरदिगार, एकँकार अक्ख उठाईआ। मेला मिले सांझे यार, धर्म दवारा सोभा पाईआ। जित्थे जोत नूर उज्यार, सूरज चन्न ना कोए रुशनाईआ। किरपा करे आप करतार, कुदरत करता दया कमाईआ। साचा वणज दस्से व्यपार, सौदा हट्ट विकाईआ। हुक्म देवे बण सिक्दार, सुल्तान शहिनशाहीआ। बरदे बणीए बरखुरदार, बरदे बण के सेव कमाईआ। अदल इन्साफ़ करे संसार, मुनसफ़ हो के वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया करे ग्रिफ़तार, गुफ़त शनीद खोज खुजाईआ। साचे सन्तां लए उबार, गुरमुखां गोद उठाईआ। मनमुखां दए दुरकार, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। लहिणा देणा चुकावे जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आसा पूर कराईआ। निरगुण निरवैर लए अवतार, जोती जाता फेरा पाईआ। जिस दी रमज़ समझे ना कोए संसार, चौदां विद्या ना कोए वड्याईआ। दरोही दरोही करे पैगम्बर नमो नमो गुरू अवतार, डण्डावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेहरवान महबूब करे अगम्मी आपणी कार, करनी दा करता होए सहाईआ। साचे भगतां लए उठाल, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। वरन बरन तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद दाता नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुण सतिगुर शब्द स्वामी, सच दईए जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा अन्तरजामी, जो अन्तर निरंतर आपणा मंत्र करे पढ़ाईआ। संदेश्यां विच दस्सदा रिहा बाणी, बाण निराला अणयाला तीर चलाईआ। सुघड़ स्याणी सुच्चजी बणाउँदा रिहा सवाणी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

७२४
२०

आपणी अन्त कन्त भगवन्त दस्स के गया निशानी, निशाना सब दे अंदर लाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो कलयुग अन्तिम सब दी जूह होणी बेगानी, नौ खण्ड सत्त दीप मालक नज़र कोए ना आईआ। आत्मा रही ना किसे दी राणी, बहुते कन्त प्रनाईआ। एह लेखा लिख्या नहीं कोई ज़बानी, ज़बानां वालयां तों दिता लिखाईआ। कुछ मसला कुछ असला गोबिन्द दस्सया जिन बच्चयां दी दिती कुरबानी, करमां दा गेड़ चुकाईआ। परम पुरख दा मिलणा नहीं आसानी, असल विच आपणा नूर करे रुशनाईआ। जिस वेले ख़ालक ख़लक विच शरअ दी करे शैतानी, शरीर विच शरारत दए टिकाईआ। सब दी बुद्धी करे नादानी, अकल आत्मा होए हल्काईआ। मर्दां वाली ना रहे जवानी, जोबन सके ना कोए हंढाहीआ। चार जुग दा झगड़ा पए दीवानी, बिना सतिगुर शब्द हुक्म ना कोए सुणाईआ। मंज़ल किसे ना रहे रुहानी, जिस्मानी जगत मिले वड्याईआ। काम क्रोध दी लहर होवे तुफानी, साधां सन्तां दए रुढ़ाईआ। पंडतां रहे ना कोए जजमानी, जामनी अग्गे ना कोए उठाईआ। चिल्ला चढ़े ना किसे कमानी, तीर बेनज़ीर ना कोए उठाईआ। रौला पैणा चारे खाणी, चारे बाणी दए दुहाईआ। अठ्ठ सठ्ठ (पवित्र) रहे ना कोए पाणी, सरोवर बैठण मुख छुपाईआ। ओस वेले प्रकाश होणा इक्क असमानी, जिस नूं समझे ना कोए जिस्मानी, जिस ने अंदरों कढ्ढणी बेईमानी, निशानी आपणी देणी दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना गिलानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सतिगुर शब्द सुण अन्त अख़ीरी बात, बातन दईए जणाईआ। कलयुग आई अन्धेरी रात, रैण आपणा वेस वटाईआ। मन वासना होई कमज़ात, नार वेसवा भज्जे वाहो दाहीआ। साचा हरफ़ ना लभ्भे विच्चों किसे लुग़ात, लग मातर सारे गए भुलाईआ। खेड़ा दिसे ना कोई आबाद, गृह मन्दिर ना कोए सुहाईआ। साचा वज्जे ना कोई नाद, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़दयां सुणदयां सारे होए बरबाद, बन्दा बन्दगी विच ना कोए समाईआ। मार्ग चले ना कोए समाज, रिवाज कलयुग दिता बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर करो हथ्थ खड़े, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। असीं पिछले जुग भोगे बड़े, अग्गे लोड़ रही ना राईआ। असीं दीन मज़्हब दे छड्डे धड़े, धर्म दा धड़ा इक्क अपनाईआ। जेहड़ा अक्खर पिछले जन्म दा गोबिन्द लेख नरायण सिँघ गढ़ी चमकौर पढ़े, उह अक्खर याद किसे ना आईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले मेरा मेरे विच जोत धरे, धरनी उत्ते करे रुशनाईआ। उस दा सुत कदे ना मरे, दुलारा इक्को नज़री आईआ। आपणे नाम दे पावे कड़े, कड़ीआं कर्म दीआं दए कटाईआ। जेहड़े प्रेम प्रीती विच जड़े, जड़्ह उन्हां दी सचखण्ड दुआर लगाईआ। अग्गे हो के फड़े, सनमुख

७२६
२०

नज़री आईआ। मालक हो के वरे, वारस हो के लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गोबिन्द हुक्म दिता इक्क अख़ीर, आख़र इक्क सुणाईआ। ओस वेले कोल हो के सुणया इक्क कबीर, कबरां दा लेखा गया मुकाईआ। हक दी पढ़ तकबीर, तदबीर विच ध्यान लगाईआ। पैगम्बरां दा पैगम्बर पीरां दा पीर, नबीआं दा नबी, रसूलां दा रसूल नूर खुदाईआ। जित्थे ना कोई शरअ ना ज़ंजीर, दीन इस्लाम ना कोए वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गोबिन्द किहा मेरा सच संदेसा, सदीआं तों पहलां दयां सुणाईआ। जिस वेले आवे नर नरेशा, नर नरायण बेपरवाहीआ। जन भगतां मुका के लेखा, लहिणा देणा झोली पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चुका के ठेका, हुक्म आपणा इक्क सुणाईआ। सब दा सांझा करे सौहरा पेका, सौहरा भईआ आपे नज़री आईआ। वसे अगम्मड़े देसा, देसन्तर खोज खुजाईआ। जो रहे सदा हमेशा, हमसाजण बेपरवाहीआ। अंदरों कढ्ढे भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जिस दा शब्दी धार गोबिन्द बेटा, जगत जन्मे कोए ना माईआ। दो जहानां खेवट खेटा, पतण आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म इक्क उपजाईआ। गोबिन्द किहा मैं आपणे सीस दा बदल के ताज, कल्गी दिती चमकाईआ। जिस वेले भगतां दा बदले रिवाज, पुरख अकाल नाल वड्याईआ। दुष्ट दमन दा खोल्ह्णां राज़, परदा हेम कुण्ट उठाईआ। जेहड़े अक्खरां दा कीता जाप, पत्थरां विच वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा दा लिहाज़, पुरख अकाल गंढु पवाईआ। ओस दा प्रताप, पत्रका आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी कहे मैं सब कुछ करदी, करते दिती वड्याईआ। आदि जुगादि कदे ना मरदी, गुर अवतार पैगम्बरां राह चलाईआ। मैं ओस साहिब दी बरदी, जो आपणी बन्दना दए दृढ़ाईआ। मैं ओस दवारे चढ़दी, जित्थे इक्को बैठा धुरदरगाहीआ। मैं ओसे दा ढोला पढ़दी, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। एह खेल अजे अज्ज कल्ल दी, जुग चौकड़ी ना कोए विहाईआ। जेहड़ी दुष्ट दमन धार जोत तेज नाल पलदी, पलक पलक विच रुशनाईआ। संदेसा धर्म दुआर घलदी, अगम्म अथाह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रिहा वखाईआ। (रंग कहे) मैं सब नूं रंगदा, मेरी रंगण बेपरवाहीआ। दर इक्को पुरख अकाल मंगदा, जो देवणहार (अख्वाईआ)। सचखण्ड दुआर लँघदा, दरगाह साची परदा लाहीआ। जित्थे दीप अगम्मा जगदा, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरणां विच वेखणा ढठ्ठदा, बैठे सीस निवाईआ। मेरा मालक मैनूं होवे सद्दा, इशारे नाल लए बुलाईआ। पुराणा मेरा कौल पता नहीं कद्द दा, कुदरत दा मलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। रंग कहे मैं उह रंगीला, जिस दी रंगत बख़्शी बेपरवाहीआ। जिस वेले गुर अवतार बणाउण लग्गा कबीला, कबरां तों पहलां आपणा हुक्म सुणाईआ। मेरा नाम तुहाडा वसीला, वसल आपणा दिता समझाईआ। मेरा नूर छैल छबीला, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जिस दी वण्ड करे ना कोए महीनां, घड़ी पल ना खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। रंग कहे मैं रंगण योग, मेरे प्रभ दिती वड्याईआ। चरण प्रीती बख़्श के जोग, जुगत दिती समझाईआ। मैं कदे नहीं वड़या विच चौदां लोक, चौदां तबक दिती वड्याईआ। किसे नहीं वड़या किल्हे कोट, मन्दिर मठ्ठ ना डेरा लाईआ। मैं किसे कोल नहीं गया पहुंच, आपणा पन्ध ना कदे मुकाईआ। इक्को प्रेम प्यार दी मस्ती विच मदहोश, मधुर धुन रिहा गाईआ। जद प्रभू किरपा करे जन भगतां दा रंगां पोश, खलड़ी अवल्लड़ी दयां बणाईआ। नहीं ते बैठा रहां खामोश, ख़ुशीआं विच ढोला गाईआ। प्रभू तूं मेरा मैं तेरी जोत, दूजा नूर ना कोए रुशनाईआ। जे मैथों कराउणी ते करावीं भगतां खोज, दूजे घर कदे ना जाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हिस्सयां विच हद्दां विच कद्दां विच यद्दां विच देंदे खोज, प्रभू तेरी खोज हर घट थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर दे रंग तूं चंगा, लाल आदी नज़री आईआ। कुछ उठ रविदास मेरा लेखा नहीं नाल गंगा, गंगोतरी दए दुहाईआ। कवण बल राजे दान मंगा, बावन आस रखाईआ। कुछ लेखा बाल भुयंगा, निक्कयां वड्डयां सोभा पाईआ। कुछ लहिणा गोबिन्द धार खण्डा, खड़ग करे शनवाईआ। कोई कौल पुरी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों समझाईआ। लेखा कोई ना जाणे बन्दा, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। खेल करे सूरा सरबंगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। लहिणा देणा लेखा दुआबे वालयां संदा, सनद माछूवाड़े दए गवाहीआ। निक्की चिउँटी भोजन इक्क डंगा, दाणा गोबिन्द भेंट चढ़ाईआ। उस वेले वेखण वाला पुरख अकाल इक्को पंडा, जो बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं बेनज़ीर, नज़रां तों बाहर सोभा पाईआ। मेरा लेखा नाल दस्तगीर, दस्तबरदार करां लोकाईआ। मेरा लेखा नाल ओस शमशीर, जो शमां कूड़ दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। लेखा कहे मेरा लेख अवल्ला, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल आदि जुगादी इक्क इकल्ला, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। धर्म दुआर सुहा अटला, गुर अवतार पैगम्बर रिहा सुहाईआ। सचखण्ड दुआर वसा महल्ला, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। नाम संदेसा इक्को घल्ला, धायल करे कूड़ लोकाईआ। जिस दा नूर इलाही अल्ला, आलम करे पढ़ाईआ। दीपक जोत हो

के बला, जोती जोत डगमगाईआ। आपणी धार विच्चों ढला, ढाल गोबिन्द हथ्थ टिकाईआ। कूड़ कुटम्ब मेट के दला, दिलबर आपणा ल्या मनाईआ। कर के वल छला, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। भगतां प्रीती अंदर रला, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे जला थला, महल अटल आपे खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे लहिणे रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण शब्द गुरू गुरदेव, देव आत्मा तेरी झोली पाईआ। साडी पूरी हो गई सेव, समां संग ना कोए निभाईआ। बोलण वाली रही कोई ना जिहव, तन माटी ख़ाकी गए हंढाहीआ। साडा मालक अलख अभेव, अगोचर शहिनशाहीआ। जिस दी करदे आए सेव, सेवक रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। साचा हुक्म देवे सुल्तान, सतिगुर दाता धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा अग्गे ना कोई ब्यान, लिख्त पढ़त ना कोए जणाईआ। ओस दे अग्गे सौंपया ईमान, जिस धर्म दिता दृढ़ाईआ। असीं रहे ना गोपीआं वाले काहन, सीता राम ना डंक वजाईआ। मसला रिहा ना कोई अमाम, नौबत नाम ना कोए शनवाईआ। प्रभ दी सेजे सब ने सौणा करना इक्क बिसराम, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। अग्गे इक्को सब दा होणा हुक्मरान, जो हुक्म आप जणाईआ। जन भगतां करे पहचान, नव सत्त वेखे थाउँ थाँईंआ। सानूं देणा ना पए पैग़ाम, अक्खरां विच अक्खर समझाईआ। जिस ने बदल देणा निज़ाम, हुक्म इक्क वरतईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। आपणी दस्स आप पहचान, गुरमुख सुत्यां लए जगाईआ। झगड़ा मुका के ज़िमीं असमान, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। धर्म वखा के इक्क निशान, निशाने सारे दए भुलाईआ। नाम दस्स के आपणा नौजवान, नव सत्त दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं होए ख़लास, ख़लासी लई कराईआ। सब कुछ सौंप पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते झोली पाईआ। इक्क्ठे सचखण्ड कर के वास, दरगाह बैठे डेरा लाईआ। निरगुण जोत वेखीए प्रकाश, कलयुग अन्त होवे रुशनाईआ। साडा लेखा रहे ना कोई शाख़, पत्त टहणी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ज्यों भावे त्यों लए राख, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैनूं ऐं रिहा भाख, शब्द धार समझाईआ। जेहड़ा पिछला महीना लँघया वसाख, वसाखी गोबिन्द वाली मनाईआ। जेठ ओस दा प्रकाश, जिस पंज जेठ खेल खिलाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जाता प्रगट हो के आप, आपणी कल वखाईआ। जन भगतां कोट जन्म दे मेट के पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। हुक्म अगला देवे साफ़, गुंझल गंढु ना कोए पवाईआ। सब ने खोल्ह के रखणे ताक, काया माटी अंदर कुण्डा लाहीआ। साहिब सतिगुर चढ़ना आपणे शब्दी राक, जेठ महीने घर

घर फेरा पाईआ। रातीं सुत्यां मिल के आवे आप, गुरमुख गुर गुर आप उठाईआ। शब्द संदेशे सब नूं भेजे डाक, चिट्ठी रसायण ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म जोड़ के नात, नाता अगला लए बणाईआ। गुरमुखो तुहाडे अन्तर अमृत मारे ठाठ, सरोवर इक्क प्रगटाईआ। तुहाडी मंज़ल पूरी होई वाट, वटणा नाम दा दए लगाईआ। दुरमति मैल देणी काट, कटाकश आपणा नाम वखाईआ। जिन्हां सोहँ गाई गाथ, जगत गाथा तों लए बचाईआ। धर्म दुआर दा देवे साथ, कर्म गवार दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा समां गया बीत, बीती की जणाईआ। अग्गे प्रभ दी चलणी रीत, मन्दिर मसीत ना कोए वड्याईआ। जेहड़ी विष्न ब्रह्मे पहली वार गंढु लई पीच, दुष्ट दमन मणका दिता भवाईआ। उस दी सारे करदे गए उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख उठाईआ। सो वक्त आया नज़दीक, हाढ़ सतारां सोभा पाईआ। माला मणके बोलण ठीक, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। मस्तानयां दे अंदरों कढ्ढां चीक, कूक कूक सुणाईआ। जिन्हां नूं अग्गे नहीं आई (परतीत), परदा दयां उठाईआ। ना कोई कलमा ना हदीस, हज़रतां तों परे घर वखाईआ। जित्थे वसे हरि जगदीश, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करां उम्मीद, अमरापद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। माला कहे मैं नहीं मन्नदी, जुग चौकड़ी सारे गए ज़ोर लगाईआ। मैं श्रृंगार बणी रही तन दी, साध सन्त दिते भुलाईआ। मैं चोर बणी रही कन्न दी, जो कन्नां विच प्रभ दा नाम सुणाईआ। मैं खेल वेखदी रही नेत्र अन्न्हे दी, जो अक्खीं मीट के लभ्भण बेपरवाहीआ। मैं खोज खोजदी रही छप्पर छन्न दी, जंगल जूह फेरा पाईआ। जिस वेले सूरत वेखी गोबिन्द चन्न दी, मेरे चन्न तों चन्न होवे रुशनाईआ। ओस वेले भगतो मैं तुहाडे वास्ते आसां रही मंगदी, इक्को तेरी ओट तकाईआ। मैं राह तकदी रही सूरे सरबंग दी, जो सुरती दए बदलाईआ। तुहाडी खेल हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म विच मिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छो जन भगत जनणी प्रभ दे हुक्म नाल जम्मदी, खेल जगत तों बाहर नज़री आईआ। तुहाडी घड़ी लँघी ग़म दी, ख़ुशी ख़ुशी विच प्रगटाईआ। तुसीं आस नहीं रखणी किसे माटी चम्म दी, चम्म दृष्टी दयां बदलाईआ। तुहाडी उंगली ओहो कम्म दी, जो छल्ला सतिगुर वाला पाईआ। इक्की मग्घर वाली आस सम्मत सोलां विच मंगदी, किशन सिँघ दए गवाईआ। रविदास धार इक्क डंग दी, चौवी मग्घर गुरमुख गृह मिली वड्याईआ। मैं बिना भगतां बेड़ा ना किसे दा बन्न्हदी, भुक्ख्यां ना कदे रजाईआ। गुरमुखो एह धार इकल्ले इकल्ले दी चलणी तुहाडे अन्न दी, सवा सवा सेर गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता

७२६ २०

दए वड्याईआ। माला कहे मैं होणा चिट्टी दुद्ध, दुद्धा धारी दयां खपाईआ। ओथे जाणा पुज्ज, जित्थे बिना अकाल दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां दी निर्मल होवे बुध, बिबेक वेख खुशी मनाईआ। मेरा कारज होवे सुद्ध, सुदी वदी ना कोए वखाईआ। अगला पैंडा जावे मुक, गुरमुख माला मणका ना कोए भवाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दी इक्को तुक, दो जहानां पार कराईआ। ओस दा बणाए दुलारा सुत, जो गोबिन्द नूर करे रुशनाईआ। जिस दे कोल सब कुछ, कच्छ मच्छ गया तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। माला कहे किसे नूं नहीं मालूम, नामालूम दयां जणाईआ। गुरमुखो तुसीं बच्चे अजे मासूम, नन्ने नज़री आईआ। पुरख अकाल दा सब तों वक्खरा मज़मून, जिस नूं सके ना कोए पढ़ाईआ। जिस ने बदल देणा कानून, दो जहानां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल नज़र दए बदलाईआ। माला कहे मैं आउणा ओस हथ्थ, जिस हथ्थ मिले वड्याईआ। मैनूं वेखे पुरख समरथ, दूजे नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान दा सांझा गावां जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। भगतां दी अंदर वड़ के खोल्हां अक्ख, बजर कपाटी दयां तुड़ाईआ। मालक वखावां प्रतख, दाता धुरदरगाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी दे भाण्डे कर के सक्ख, सक्खणे साध सन्त दित्ते कराईआ। प्रभ दा सम्मत कोई ना सके लख, लख करोड़ी ख़ाक देणे मिलाईआ। जन भगतां खोल्ह के धर्म दा हट्ट, सच वणजारा जोड़ जुड़ाईआ। चार जुग जेहड़े गुर अवतार पैगम्बरां तों गए नठ्ठ, फड़ के सहिजे मेल मिलाईआ। हाढ़ सतारां कर इक्ठ्ठ, इक्ठ्ठयां परदा देणा खुल्हाईआ। कर प्रकाश जोत लट लट, लिटां वाले सारे देणे रुलाईआ। जगत वासना दा लेखा ठप्प, नाम ठप्पा देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा वेला दए सुहाईआ। माला कहे जन भगतो मैं आवां भज्जी, भजन बन्दगी दयां कमाईआ। मेरी समझ ना आई किसे चहुं जुगी, चार वरन अठारां बरन मेरी रमज़ रही गुज्झी, बिन गोबिन्द भेव ना कोए खुल्हाईआ। मैनूं फड़ के अंदरों किसे दी धार रहे ना दूजी, द्वैत विच ना कोए लड़ाईआ। मालक नाल मिला के रुची, रचना अगली दयां वखाईआ। गुरमुख धार कर के सुच्ची, सुच संजम दयां दृढ़ाईआ। मैनूं कदे कोई गुरमुख किली नाल टंगे ना पुट्ठी, बसतयां विच ना कोए बंधाईआ। सच पुछो मैं जुग चौकड़ी सब दे नालों रही रुठ्ठी, अक्ख नाल अक्ख ना कोए मिलाईआ। कोटन कोटि बहा के विच गुठ्ठीं, पोटे पोटयां नाल घसाईआ। मेरी यारी भगतां नालों कदे ना टुट्टी, कबीर जुलाहा अंदरों दए गवाहीआ। रविदास चमार तों इक्क दिन लै के मैं छुट्टी, परदा चुक्क के प्रभ दा दर्शन पाईआ। मैं ओस दिन दी गई लुट्टी, आपणा आप गवाईआ। मेरी टुट्टी वेखो जुत्ती, भज्जी फिरां वाहो दाहीआ। जन भगतो तुहाडे

घरां तों खा के रोटी रुक्खी, आपणा झट लँघाईआ। मैं भाग लगाउणा ओन्हां कुक्खीं, जिस कुक्खां विच्चों मिली वड्याईआ। जिस तुहानूं अगले घर वसाउणा सुखी, सचखण्ड दवारे वज्जी वधाईआ। कुछ लहिणा होर पंज मुखी, पंजां नाल दयां रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। माला कहे मैनूं ना किहो तसबी, मुतस्सब विच ना कोए लड़ाईआ। मैं पढ़न गई कदी नहीं अरबी, इलम विच ना कोए शनवाईआ। मेरी वेखी किसे नहीं वरदी, जुग जुग वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मैं सब तों रही डरदी, अंदर वड़ के झट लँघाईआ। कलयुग विच शर्म नाल मरदी, मुल्लां शेख मुसायक मैनूं फड़ के झूठीआं कसमां रहे खाईआ। मैं पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार अग्गे पाई आपणी अर्ज़ी, आरज़ू इक्को दिती सुणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जे सच पुछें मेरी भगतां नाल मरजी, दूजे नाल कदे ना करां कुड़माईआ। मेरे मणके फेरने जग दी खेल कूड़ कुड़यार हड़्दी, हउकयां नाल सुणाईआ। जे सच पुछें मैं दुष्ट दमन दे हथ्थ विच तेरा नाउं पढ़दी, सोहँ ढोला गाईआ। मैनूं सुरत ख़बर प्रभू तेरे घर दी, घराने गुरमुखां दे बहि के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे विच लगाईआ। माला कहे मैं होण आउणा सुहागण, आपणा रूप बदलाईआ। जो गुरमुख कलयुग अन्तिम जागण, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। सुरती अंदरों होए वैरागण, वैरी कूड़ मिटाईआ। मारन सच आवाज़ण, साचा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। सिर मेरे हथ्थ रखे परवरदिगार, मालक धुरदरगाहीआ। मैं आवां ओस दरबार, जिस दर इक्को नूर नज़री आईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर गावण हक जैकार, ढोला धुरदरगाहीआ। करां आ के निमस्कार, डण्डावत बन्दना सीस निवाईआ। तूंही मेहरवान मालक इक्क भगवान, जन भगतां दे पहचान, बेपहचान परदा लाहीआ। वक्त सुहञ्जणा होवे आण, रुतड़ी इक्क महकाईआ। सवा सेर सोहे पकवान, पारब्रह्म तेरा जस सुणाईआ। अगला खेल होणा महान, जिस दा ब्यान ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। माला कहे मैं होर दस्सां विचार, जिस नूं विचरे कोई ना राईआ। जिस वेले चढ़ी उत्ते पहाड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेख जंगल पहाड़, प्रभास रिहा डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी अक्ख रिहा खुल्हाईआ। माला कहे मैं चढ़ गई ओस चोटी, जित्थे चोटीआं रहे मुनाईआ। राह तक्कण कोटन कोटी, कुटीआ समझ किसे ना आईआ। प्रभ दा दिसे कोई ना गोती, जोत जोत ना कोए रुशनाईआ। थोड़ी जेही समझ मैनूं दिती रविदास चमारे मोची, मुश्किल हल्ल कराईआ। मैं रख के हथ्थ उपर ठोडी, सोचां विच आपणा आप डुबाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। माला कहे मेरा मणका प्या बोल, ब्रह्म शिव रिहा सुणाईआ। आउ मेरे कोल, कुल मालक दयां दृढ़ाईआ। जिस दे विच नहीं कोई पोल, ख़ाली घर ना कोए वखाईआ। तोलणहारा धुर दे तोल, तोला इक्को नज़री आईआ। सद बैठा रहे अडोल, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। माला कहे मेरे अंदर लग्गी अग्न, बिरहों रही सताईआ। जिस वेले हेमकुण्ड जोती लग्गी जगण, नूर करे रुशनाईआ। मैं किहा कुछ लै के जावां सगन, भज्जां चाँईं चाँईंआ। पैरां तों होवां नग्न, लाल ओढण सीस टिकाईआ। ओस नूं जावां सद्दण, जेहड़ा वेक्खयां नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं कहिंदे गोपाल मोहन मूर्त मदन, नूर विच चमकाईआ। जिस दे नगारे दो जहानां वज्जण, ताल तलवाड़ा समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा दिती लगाईआ। माला कहे मैं लै के सिर ते लाल चुन्नी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं वेखण ऋषी मुनी, कंदरां विच अक्ख खुल्हाईआ। मैं हस्स के किहा तुसीं रोवो अक्ख विच दे घसुन्नी, लोचण सके ना कोए उठाईआ। तुसीं लभ्भदे प्रभ नूं विच्चों धुनी, आसा विच वड्याईआ। मूरखो (तुसीं) गाउँदे नाल बुल्लीं, मेरे मणके रहे घुंमाईआ। मैं ओस दे चरणां उत्ते रुली, जेहड़ा प्रभ दे भाणे विच आपणा आप लगाईआ। जिस दे उत्ते अमृत धार डुल्ह्ली, वहिण वगे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। माला कहे मैं जाणा कोल दुष्ट दमन, दामन अंचल आपणा नाल बंधाईआ। सोहणा वखाउणा जा के चमन, गुलशन इक्क महकाईआ। जित्थे प्रेम दा होवे अमन, सुख सागर विच समाईआ। कूड़ी क्रिया वाले कम्बण, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओस दवारे दा करना जा के मजन, आपणा फेरा पाईआ। जित्थे लभ्भ जाए मेरा सज्जण, ख़ुशी मनावां चाँईं चाँईंआ। फेर किते ना जावां लभ्भण, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। माला कहे जां मैं करी पहचान, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। मैं वेख के होई हैरान, मेरा नैण रिहा शरमाईआ। बिना तत्तां तों नौजवान, सूरा सोहणा नज़री आईआ। मुहब्बत विच मेहरवान, महबूब रिहा मिलाईआ। मैं बण के बाल नादान, सीस दिता झुकाईआ। ओस हस्स के किहा की लयांदा पीण खाण, परदा दे उठाईआ। मैं अंदर मारया ध्यान, निगाह चरण कँवल टिकाईआ। हत्थ आ गए मेरे बादाम, दुष्ट दमन अग्गे टिकाईआ। सच कर के सच कीता परवान, सति दिता समझाईआ। ओ माला, बिना मेरे किसे ना आवे ज्ञान, तेरी करनी कम्म किसे ना आईआ। मेरा गोबिन्द होवे निशान, कल्गी वाला नाउं प्रगटाईआ। सुत दुलारा विच जहान, मालक बणे धुर दा माहीआ। चिल्ला लै के तीर कमान, शस्त्र

धारी वेस वटाईआ। छड्ड के मन्दिर मकान, दीन दुनी दा पन्ध चुकाईआ। ख़ानदान दा दे के बलीदान, बंस सरबंस दए लुटाईआ। गुरमुखां हो के मेहरवान, आपणी गोद उठाईआ। अग्गे दे के जावे फ़रमान, संदेसा इक्क सुणाईआ। जिस वेले मेरा आवे श्री भगवान, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। लहिणा देणा चुकावे विच जहान, लेखा अवर रहे ना राईआ। इक्क दो दा मेला करे आण, जोड़ा जुट खोपरा दए गवाहीआ। एह ओस दी होवे पहिचाण, माछूवाड़े जाए समझाईआ। इक्क चिउंटी कर परवान, दोआबे वालयां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। माला कहे मैं गई ख़ाली हथ्थ, धूढ़ चरणां नज़री आईआ। दुष्ट दमन पुत्त के अक्ख, मेरे वल्ल नैण उठाईआ। मैं तक्कया उपर छत्त, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। थल्ले वेख्या झट, धरनी धरत धौल धवल ना कोए वड्याईआ। मेरे अन्तर वज्जी सट्ट, सुरती दिती बदलाईआ। मैं भज्ज के गई नठ्ठ, चिट्टा रुमाल हथ्थ उठाईआ। चरण कँवलां उत्ते ढठ्ठ, साफ़ सुथरे कर के धूढ़ी मस्तक लाईआ। मेरी खुल्ह गई अक्ख, अगला लेखा दिता वखाईआ। इक्क हौली जेही चपेड़ मारी झट, मेरा पासा दिता बदलाईआ। माला कहे मैं दोवें हथ्थ मार के उत्ते पट्ट, दुहथ्थड़ दिती लगाईआ। दुष्ट दमन किहा कमलीए वेख किनारा तट, सदी बीसवीं दिती समझाईआ। प्रगट होया पुरख समरथ, जगत जगदीश नज़री आईआ। जां तक्कया भगतां दे अंदर रिहा वस, दूजा थाँ ना कोए सुहाईआ। माला कहे मेरे मणकयां दी चाल हो गई बस्स, अगला कदम ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। माला कहे जिस वेले मैं खट्टी एह खट्टी, मेरा खटका रिहा ना राईआ। दुष्ट दमन ने मेरीआ अक्खां उत्ते बन्ह दिती पीली पट्टी, पटने दा लेखा दिता समझाईआ। कमलीए हुण कदी ना भरीं किसे दी चट्टी, चार जुग दा लेखा दिता मुकाईआ। मैं चरणां उत्ते ढठ्ठी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ओस वेले इक्क दे के सुंढ दी गठ्ठी, मेरे मुख नूं दिती छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। माला कहे मैं वेख्या एह नज़ारा, आपणी नज़र लई बदलाईआ। नज़र आया कलयुग अन्त किनारा, काहन बैठे ढेरीआं ढाहीआ। पैगम्बरां चले कोई ना चारा, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। धर्म दिसे ना किसे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरदुआरा, गुरदेव स्वामी इष्ट ना कोए मनाईआ। अमृत जल ना दिसे ठंडा ठारा, अग्नी तत तपाईआ। मैं अंदरे अंदर करी पुकारा, कूक कूक दिती दुहाईआ। किरपा कर मेरे परवरदिगारा, तेरे कदमां सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। माला कहे जिस वेले मैं कर के हटी पुकार, अन्तर अन्तर आवाज़ सुणाईआ। ओधरों इक्क नेती आया जिस दी आयू बरस इक्क सौ

चार, माला मणके रिहा भवाईआ। मैनूं कहिंदा तूं किथों आई गवार, जंगल विच आपणा फेरा पाईआ। जे तूं होवें नार मुटयार, कंदरां विच सुटाईआ। बण के विभचार, तेरा धर्म दयां गवाईआ। उस अग्गों कर के निमस्कार, (किहा) तूं मेरा पिता माईआ। मैं उस दे चरणां तों बलिहार, जेहड़ा धार थल्ले आपणा सीस टिकाईआ। ओस किहा तूं कर ना हँकार, मैं पत्त दयां मिटाईआ। मेरे मणकयां दा वेख खड़कार, इक्क सौ अठ्ठ इक्क सौ अठ्ठ रिहा हिलाईआ। ओधरों दुष्ट दमन ने किहा परे हट दुराचार, इक्कीआं तों बिना मिले ना किसे वड्याईआ। ओसे वेले हो गया ख़बरदार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चरणां उत्ते डिग्गा मूंह दे भार, मेरी भुल्ल लैणी बख्शाईआ। भावें हुणे दे मार, भावें आप आपणे नाल सदा लै बिताईआ। मैनूं वक्खरा रहिणा दुष्वार, दुश्मण मन मेरा कसाईआ। तूं जित्तया मैं गया हार, हिरदे हरि ल्या वसाईआ। माला सुट्टी हथ्थों बाहर, ख़ाली ताड़ी दिती वजाईआ। दुष्ट दमन नाल फड़ के प्यार, छाती नाल लगाईआ। तेरा लेखा विच संसार, प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। पिछली कर विचार, बल दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। जोगी कहे मेरी आयू इक्क सौ चार बरस, पिछली गई विहाईआ। मणकया नाल रिहा तरस, मेरी आसा ना पूर कराईआ। अज्ज सुट्ट दिते उत्ते फर्श, ख़ाक विच मिलाईआ। मेरी पूरी कर दे भटक, तेरे हथ्थ वड्याईआ। दुष्ट दमन किहा तूं रहिणा बेखटक, खटका रिहा ना राईआ। जिस वेले पुरख अकाल दा आवे वक्त, वेले वक्त नाल वड्याईआ। लहिणा देणा पूरा होवे विच जगत, जगजीवण दाता तेरा लेखा दए मुकाईआ। तैनूं नारी दा जामा पाउणा पए फ़कत, एह फ़िकरा सके ना कोए बदलाईआ। जन्म तों बाद तेरी बाई दिन पिच्छो होणी मरग, मरग तों परे स्वर्ग तों पर साचे दर दए वड्याईआ। जोगी किहा होर मेरी अरज़, उह वी दयां सुणाईआ। प्रभ दर्शन दी मैनूं ग़रज़, एसे कर के गुरदर्शन घर जन्म दवाईआ। मरन तों पहलों करीं तरस, मेहर नज़र उठाईआ। माला पई तड़प, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा देणा मुकाईआ। माला कहे मेरी अरज़ कर मन्ज़ूर, मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर सदा बख्शे कुसूर, पापीयां पार लँघाईआ। तेरा धुर दा एह दस्तूर, दुष्टां होएं सहाईआ। तोड़ गढ़ ग़रूर, जिस सिख्या दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा देणा वखाईआ। माला कहे मेरा रख माण, निमाणी हो सुणाईआ। जे जन्म देवें विच जहान, जहान अगला तेरा नज़री आईआ। जे होवें मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। ज़िंदगी दा दे के दान, आपणे रंग रंगाईआ। दुष्ट दमन किहा अगला खेल महान, गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। जेहड़ा माछूवाड़े करे कल्याण, बण के धर्म गोसाँईंआ। ओन्हां जन्म देवें जहान, जो चीऊंटी रूप नज़री

७३४
२०

आईआ। ओन्हां दा लहिणा कर परवान, शब्द संदेसे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म कर्म दए वड्याईआ। माला कहे होवण वड भाग, वड भाग मिले वड्याईआ। जे तेरा जोत जगे चिराग़, दीप होवे रुशनाईआ। ओन्हा पोह ना सके आग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। दूजा होर नहीं जो तेरे तों आवे बाद, तेरा नूर धुर दा नज़री आईआ। मुश्किल नहीं इक्क खेड़ा करना आबाद, तन उजड़या घर वसाईआ। तेरे प्रेम दा होवे सुहाग, तेरा नेम वज्जे वधाईआ। माझा मालवा इक्ठ्ठा होवे साक, वस्तू सोहणी भेंट चढ़ाईआ। पूरबले जन्म दा इत्तफाक, मेला आपणे विच्चों मिलाईआ। लहिणा देणा कर बेबाक, हिसाब अगला रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां कदी होण ना देवे उदास, उदासी विच्चों जम की फाँसी दए कटाईआ।

★ २ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिजुग कहे प्रभ मेरी इक्क मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सति धर्म दा बख्श संग, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़ रंग, अनडिठ्ठड़े आप रंगाईआ। तेरा मेला हँ ब्रह्म, पारब्रह्म धुर दे सच गोसाँईंआ। जन भगतां दे जन्म, जरम मेरे नाल मिलाईआ। झगड़ा मुके चार वरन, बरन शरअ ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल तेरी होवे सरन, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। अन्तर ढोला साचा पढ़न, हुक्म धुरदरगाहीआ। आपणा कौल इकरार पूरा कर प्रन, परम पुरख शहिनशाहीआ। दर ठांडे आया सरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मार्ग इक्क उपजाईआ। सतिजुग कहे प्रभ बख्श सहारा, सहायता तेरी नज़री आईआ। सति धर्म दी चले धारा, द्वैत अंदरों देणी चुकाईआ। घर मन्दिर होवे उज्यारा, गृह भीतर तेरी रुशनाईआ। तेरे नाम दा इक्क जैकारा, जोगी जोगीशर ढोला गाईआ। तूं सब दा सांझा यारा, लाशरीक इक्क अख्वाईआ। तेरे दर मेरी निमस्कारा, डण्डौत बन्दना सीस झुकाईआ। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह देणा चलाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी पा धर्म दी गंढु, धर्मातमा भगत लै प्रगटाईआ। जिन्हां नाल मेरी प्रीती जाए हंढ, अग्गे डोर ना कोए तुड़ाईआ। तेरे प्रकाश दा चमके चन्द, नूर नुराना डगमगाईआ। जिधर वेखां दिसे संग, सगला संग बणाईआ। तेरे हुक्म दा होवे इक्को कारज अनन्द, अनन्द कारज कर्म कांड विच्चों बाहर कढाहीआ। भाग लग्गे काया माटी काची वंग, वाहवा तेरी वज्जे वधाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग,

सुरती सुरत नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रस्ता देणा खुल्हाईआ। सतिजुग कहे मेरी आसा मनसा हुन्दी रहे पूरी, पूरन ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। जगत नाता सदा तेरी हज़ूरी, हाज़र हर घट सोभा पाईआ। मेरी लेखे लाउणी मज़दूरी, सेवक हो के सेव कमाईआ। जन भगतां दस्सणा सृष्टी दुनिया कूड़ी, कूड़ कुटम्ब बिन तेरी किरपा कम्म किसे ना आईआ। तेरे नाम दी इक्क होवे मशहूरी, मश्वरा गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। कला रहे ना कोए अधूरी, अदल इन्साफ़ देणा वखाईआ। साची बख्श के चरण धूढ़ी, टिक्का नाम देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैनूं अन्त दे दलासा, वार पहली मंग मंगाईआ। तेरे चरण रहे भरवासा, भरम मिटे कूड़ लोकाईआ। मैं बण के दासी दासा, सेवक साची सेव कमाईआ। जन भगतां देवां साथा, सगला संग निभाईआ। जो सोहँ गावण गाथा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सतिजुग कहे मेरा जोड़ रहे जुड़दा, भगतां नाल वड्याईआ। तेरे दवारे ख़ाली कोई ना मुड़दा, मोहर आपणा नाम देणा लगाईआ। कट अन्धेरा अन्ध घोर दा, कूड़ी क्रिया ममता चोर देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मार्ग देणा सुहाईआ। सतिजुग कहे मेरा मार्ग होए सुहेला, सुहञ्जणा इक्को नज़री आईआ। गुरमुखां दा गुरमुखां नाल होवे मेला, कूड़ी दिसे जगत कुड़माईआ। तेरी धार दा आत्म होवे चेला, परमात्म इष्ट इक्क मनाईआ। तेरा राह होवे नवेला, नव नौ समझ किसे ना पाईआ। तूं ठाकर सज्जण सुहेला, साहिब सतिगुर इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे मेरा लहिणा तेरे हथ्थ, देवणहार तेरी वड्याईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, स्वामी धुरदरगाहीआ। जन भगत प्यारे बख्श आपणा रस, रस्ता इक्को देणा वखाईआ। मनुआ मन कर के वस, वास्ता धर्म दवारे आप जुड़ाईआ। सद तेरा गावण जस, सिफ्तां नाल सालाहीआ। तूं वसणहारा घट घट, गृह गृह डेरा लाईआ। मेरा खुल्हा रखणा हट्ट, वणजारा गुरमुख नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा मार्ग परमारथ स्वार्थ एका दस्स, टेक विच टिक्का मस्तक लाईआ।

★ १० जेठ शहिनशाही सम्मत ३ चेला सिँघ दे गृह रेज़ीडैंसी रोड जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरी नमस्कार, नमस्ते नमों नमों सीस झुकाईआ। परम पुरख परमात्म परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर

तेरी इक्क सरनाईआ। निरअक्खर बख्श आपणी धार, अक्खरां विच्चों अक्खर दे बदलाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, उजाला दिसे सर्ब लोकाईआ। हर्दु मालक ख़ालक प्रितपालक तेरा ख़िदमतगार, सेवक याचक रूप वटाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर आपणा परदा देणा उठाईआ। सचखण्ड दुआर करां पुकार, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी झोली डाहीआ। करनी दे करते कुदरत दे मालक रहमत बख्श बख्शणहार, सच स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिजुग कहे मेरी बन्दना डण्डावत, सजदा सीस झुकाईआ। मेहरवान महबूब सही सलामत, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अलामत, आलमां इलम आपणा दे समझाईआ। नाम भण्डारा बख्श इक्क नयामत, वस्त अमोलक दे वरताईआ। पतिपरमेश्वर लख चुरासी जीव जंत तेरी अमानत, साध सन्त सति धर्म दे समझाईआ। ममता मोह मेट कयामत, काल नगारा रिहा डराईआ। मूर्ख मूढ़ वेख जीव अन्जाणत, बुध बिबेक दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणा नूर कर रुशनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सति धर्म कर तामीर, दर ठांडे सीस निवाईआ। मंज़ल चोटी दे अख़ीर, आख़र आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी बदल दे तकदीर, तदबीर आपणा नाम समझाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, हुक्म इक्को इक्क सुणाईआ। अमृत आत्म बख्श ठांडा नीर, दुरमति मैल दे धवाईआ। तेरी ओट तकदे गए पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। कूड़ी क्रिया शरअ तोड़ ज़ंजीर, ज़र्रा ज़र्रा कर रुशनाईआ। लहिणा देणा जुग चौकड़ी मुका कदीम, अज़ीम आलीशान आपणा नज़ाम दे वखाईआ। सति धर्म दी कर तरमीम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिजुग कहे परम पुरख मेरी सलाम, सही सलामत सीस झुकाईआ। सति सतिवादी इक्क अमाम, अमलां तों रहत निरगुण नूर धुर दरगाहीआ। दर बरदा बण ग़ुलाम, चरण कँवल उपर धवल सीस झुकाईआ। साचा मार्ग दस्स आसान, निरगुण हो मेहरवान, महबूब आपणी कार कमाईआ। भगत वछल भगवान, आत्म दरस देणा जीव जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर ठांडे धर्म दुआर दर दरवेश आस रखाईआ।

७३७
२०

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बीबी राम कौर दे गृह छम्ब जम्मू ★

सतिजुग कहे श्री भगवान मैं होया मंगता, दर ठाडे मंग मंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ गढ़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दे समझाईआ। चार वरन अठारां बरन धर्म दुआर बणे संगता, भगत भगवान लैणा प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया कल कलेश रहे ना भुक्ख नंगता, सति सन्तोख बिन वरन गोत देणा उपजाईआ। भेव अभेद खुल्हाउणा साचे सन्ता, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा परदा देणा उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत बणना धुर दा कन्ता, मालक प्रितपालक ख़ालक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ सति धर्म फड़ा लड़, पल्लू आपणा नाम गंढु पवाईआ। काया मन्दिर अंदर वेख वड़, साढे तिन्न हथ्थ बंक दवारी खोज खुजाईआ। भेव खुल्हा चोटी जड़, असथूल लेखा दे समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दीन दुनी दृष्टी सृष्टी अंदर जावे पढ़, जगत विद्या भरम देणा तुड़ाईआ। भाग लगाउणा काया माटी साचे घर, गृह मन्दिर देणा सुहाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी मालक प्रितपालक नरायण नर, शरनगत तेरी इक्क सरनाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी गहर गम्भीर आपणी किरपा कर, बेनज़ीर नज़र मेहर उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर इक्को नज़री आए हरि, हरि जू हर हिरदे आपणा नाम देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर ठांडे दरबार एकँकार एका मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे मेरे पुरख अकाल दीनां बन्धन, बन्दगी अरज़ मेरी अरज़ोईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित साहिब बख्शंदन, रहमत रहीम राम आपणी देणी कराईआ। तेरा खेल खेल के गए त्रिलोकी नंदन, मुकन्द मनोहर लख्मी नरायण तेरी वड वड्याईआ। सति धर्म सति सतिवादी मस्तक टिक्का ला चन्दन, सुगंधी आपणा नाम दे भराईआ। कलयुग जीव कूड़ कुड़यार हँकारी विकारी आत्म परमात्म टुट्टी गंढुण, नाता धुर दा दे बणाईआ। सच प्रेम प्यार मुहब्बत विच काया चोली रंगण, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर दुरमति मैल देणी धवाईआ। सच दुआर परवरदिगार धुर दरबार आया मंगण, हक महबूब उच्च अरूज अर्श फर्श तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर विच संसार देणा प्रगटाईआ। सतिजुग कहे पुरख अकाल दीन दयाल वेखी कलयुग कूड़ी क्रिया कूड़, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। जगत विद्या सुघड़ स्याणे कीते मूर्ख मूढ़, हिरदे हरि सके ना कोए वसाईआ। शाह सुल्तान तेरा चमके कोए ना नूर, जलवा जोत ना कोए रुशनाईआ। धर्म दवारिउं मन मनसा होई मफ़रूर, नौ दुआर फिरे हल्काईआ। बिन तेरी किरपा साची मिले ना

चरण धूढ़, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच हउमे हंगता गढ़ तोड़ ग़रूर, गुरबत अंदरों दे कढाहीआ। सदी चौधवीं लेखा लहिणा देणा दे ज़रूर, बीस बीसा हरि जगदीसा बैठा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच सृष्टी दृष्टी इष्टी आपणा इष्ट समझाईआ। सतिजुग कहे मैं सचखण्ड दवारे मंगां मंग, दरगाह साची सीस निवाईआ। तेरे हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी रहे लँघ, बीतया काल दए दुहाईआ। सच धर्म दा मिले ना किसे अनन्द, परमानंद ना कोए समाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म गाए कोई ना छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग ना कोए अल्लाईआ। जगत विकार वासना घर घर भरी कूड़ी क्रिया गंद, सच सुगंध नज़र कोए ना आईआ। अमृत आत्म निजर धार सच देवे ना कोए अनन्द, बिन रसना रस ना कोए चखाईआ। निर्मल जोत चमके कोई ना चन्द, बिन सूर्या होए रुशनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साहिब सुल्तान हो मेहरवान आपणा दे संग, सगला संग सूरे सरबंग आपणा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साचा राह वेख वखाईआ। सतिजुग कहे परम पुरख प्रभ कर आपणी मेहरवानी, मेहरवान मिहबान बीदो तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट शैतानी, शरीअत विच्चों असलीअत दे प्रगटाईआ। जन भगतां मंज़ल दे रुहानी, रूह बुत्त दोवें कर सफ़ाईआ। तेरा जलवा नूर असमानी, जिस्मानी परदा दे चुकाईआ। जूह दिसे ना कोए बेगानी, वैरी अंदरों देणे कढाहीआ। चार जुग दा झगड़ा मेट दीवानी, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। तेरा नाम निरँकार प्रगट होवे दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तेरा ढोला गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर दस्सण नाम निधानी, नाद धुर दा इक्क वजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट बेईमानी, बेवा रहे ना कोए लोकाईआ। सच दवारा दस्स गृह इक्क पद निरबाणी, निरवैर पुरख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति धर्म देणा प्रगटाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगण आया एकँकार एक, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ। दीन दुनी सृष्ट सबाई बख़्शणी आपणी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी दे रमाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कर बुध बिबेक, पतित पुनीत दे कराईआ। त्रैगुण माया पंज तत ला ना सके सेक, अग्नी अग्ग देणी बुझाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दुआर एकँकार खोल्णा भेत, भेव आपणा देणा समझाईआ। निज नेत्र लोचन नैण जन भगत लैण वेख, घर स्वामी अन्तरजामी नज़री आईआ। सोहणा सुहञ्जणा आदि निरँजणा तेरा लग्गे देस, दिशा दसन्तर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जुग चौकड़ी बदलणा तेरा अगम्मा निराला खेड, ख़ालक ख़लक आपणा हुक्म देणा वरताईआ। जिस कारण गुर अवतार पैगम्बर रिहा भेज, लोक परलोक सोहला आपणा नाम इक्क सुणाईआ। सो साहिब

७३६
२०

सुल्तान श्री भगवान घट निवासी पुरख अबिनाशी मानणी लख चुरासी सेज, आत्म परमात्म आपणा जोड़ लैणा जुड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आवें नेतन नेत, निज लोचन नैण अक्ख कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग कहे मैं निउं निउं करां आदेस, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ लाल चन्द दे गृह जम्मू ★

सतिजुग कहे किरपा कर जोत निरँकारी, निराकार तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि तेरी सिक्दारी, दो जहानां हुक्म मनाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारी, अलख अगोचर तेरी शहिनशाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हँकारी, हउमे हंगता दे मिटाईआ। तेरे नाम दी होवे इक्क जैकारी, घर घर काया मन्दिर अंदर वज्जे वधाईआ। दीन मज़्ाब झगड़ा रहे ना कोए संसारी, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। मानस जन्म सब दी पैज दे संवारी, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे कलयुग पिच्छों मेरी आवे वारी, वारता अगली दे दृढ़ाईआ। साचे प्यार दी बख्श खुमारी, बीमारी अंदरों कूड़ मिटाईआ। तेरे नाम दा होए आधारी, आदत ममता दे बदलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लग्गे यारी, याराने कूड़े दे चुकाईआ। ख़ादम सेवक हो के सेवा करां तुम्हारी, दर तेरे सीस निवाईआ। सच मुहब्बत बख्श आप प्यारी, परम पुरख परमात्म आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर प्रकाश बहत्तर नाड़ी, जोती नूर डगमगाईआ। सतिजुग कहे किरपा कर प्रीतम चोजी, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। तूं आदि जुगादि अगाध बोधी, बुद्धी तों परे तेरी पढ़ाईआ। मंज़ल हकीकी दे सोझी, सोच समझ आपणी इक्क समझाईआ। ठाकर बण के धुर दा मौजी, मजलस आपणी दे वखाईआ। ममता दा रहे कोई ना रोगी, रंग साचा नाम रंगाईआ। तेरी धूढ़ दा मूर्ख मूढ़ होवे जोगी, जोगीशर तपीशर आपणी सरन लगाईआ। तूं हर घट अन्तर निरंतर मन्नया खोजी, खोजत खोजत वेख वखाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा तेरा घरोगी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत विछोड़े विच रहे ना कोए विजोगी, परदा अंदरों देणा उठाईआ। तेरा नाम जैकारा लोक परलोक सुणे सलोकी, सोहला सच देणा समझाईआ। सतिजुग कहे तेरे नाम दी चार जुग तों अग्गे वक्खरी होवे पोथी, निरअक्खर अक्खर आपणा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर देणा सुहाईआ। सतिजुग कहे मेरी बेनन्ती इक्क अरदास, अरज़ आरज़ू नाल जणाईआ। सति जोत दा कर प्रकाश, प्रकाश्त

होवे लोकाईआ। कूड़ी क्रिया अन्धेर जाए विनास, अबिनाशी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। आत्म तेरी होवे दास, परमात्म साची सेव कमाईआ। चरण प्रीती दे विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। तेरे मिलण दी होवे प्यास, तृष्ना भुक्ख देणी चुकाईआ। साचे मण्डल वखा आपणी रास, गोपी काहन वज्जे वधाईआ। माया ममता कर घात, घाउ आपणा नाम लगाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच होवे रुशनाईआ। लेखा लिख आपणे लेखे वाला कलम दवात, कातब अवर ना कोए बणाईआ। दीन दुनी बदल हालात, इलम आलम इक्क जणाईआ। झगड़ा रहे ना कायनात, कलमा हक देणा सुणाईआ। सच बेनन्ती तेरे पास, पासा दीन दुनी उलटाईआ। मेरी पूरी करनी आस, तृष्ना तृखा ना कोए तड़पाईआ। सतिजुग कहे मेरी एहो निक्की जेही बात, बातन भेव देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मार्ग देणा लाईआ। सतिजुग कहे मेरी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, साहिब स्वामी ध्यान लगाईआ। तूं मालक हाज़र हज़ूर, हज़रत धुरदरगाहीआ। कलयुग लेखा मुका ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। सतिजुग तेरे धर्म दा बणे मज़दूर, कर्म दी कूड़ी मैल धवाईआ। तेरी जोत दा वेख के नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के बख्श कुसूर, निगाह आपणी आप उठाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगदा थोड़ा, वड दाते तेरी ओट तकाईआ। भगत भगवान दा बणे जोड़ा, जुगती आपणी देणी समझाईआ। झगड़ा रहे ना मोरा तोरा, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। मन्ज़ूर होवे कलयुग अन्त सस्से उपर होड़ा, हँ ब्रह्म परदा देणा उठाईआ। तेरा नाउँ सदा नवां नकोरा, जुग चौकड़ी बदल कदे ना जाईआ। कलयुग कूड़ झगड़ा मुका ठग्गां चोरा, मन मनसा दे मिटाईआ। सच सुणा अगला आपणा दोहरा, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। तेरा होवे ना कदे विछोड़ा, विछड़यां लैणा मिलाईआ। रविदास चमार जो ढोए ढोरा, लेखे विच दए गवाहीआ। तेरा मंत्र फुरे इक्को फोरा, फ़ुरने सारे देणे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरी धार तेरी लोड़ा, लोयण आपणा दे खुल्हाईआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ अमरो देवी दे गृह जम्मू ★

सतिजुग कहे प्रभ मेरी पूरी कर दे इच्छा, निरिच्छत आपणी दया कमाईआ। साचे नाम दी पा भिच्छा, भिक्खक बणे लोकाईआ। जो विष्न ब्रह्मा तेरा नाम सिखा, सिख्या सृष्टी देणी दृढ़ाईआ। जो विष्नूं धार लिखा, कलम शाही ना कोए

समझाईआ। तूं परमात्म मालक धुर दा इक्का, एकँकार नज़री आईआ। तेरी धूढ़ दा लग्गे टिक्का, दुरमति मैल देणी धवाईआ। सब नूं याद करा दे आपणा पिच्छा, जिस घर विच्चों दिता प्रगटाईआ। परदा रहे ना वड्डा निक्का, नूर नूर कर रुशनाईआ। मानस जन्म सब दा जाए यिता, हार हिरदे विच्चों देणी कढाहीआ। सचखण्ड निवासी तूं सब दा धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। आपणे हुक्म दा वेख चिट्ठा, चिठ्ठी रसैण गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। खेल कर इक्क अनडिठ्ठा, जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान भेव कोए ना पाईआ। तेरे चरण कँवलां विच लिटा, धूढ़ी ख़ाक रिहा रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। सतिजुग कहे मेरी धार तेरी गोली, सदा सद सेव कमाईआ। तेरी वस्त इक्क अनमोली, अनमुलड़ी नज़री आईआ। सब दी रंग काया चोली, चीथड़ पुराणा दे बदलाईआ। आत्म परमात्म दस्स के बोली, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। सच बहार जाए मौली, मौला हो के वेख वखाईआ। भाग लग्गे उपर धौली, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। सतिजुग कहे तूं दाता देवण योग, युगती आपणी दे समझाईआ। भगत भगवान होवे संजोग, जुग विछड़े लै मिलाईआ। भाग लग्गे काया कोट, किला गढ़ बंक दुआर देणा सुहाईआ। तेरे नूर दी घर घर जगे जोत, प्रकाश होवे लोकाईआ। झगड़ा रहे ना वरन गोत, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। तूं साहिब सतिगुर अबिनाशी करता इक्को बहुत, बहु गुरूआं लेखा देणा मुकाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर आ के पहुंच, पहचान कर परदा देणा उठाईआ। ममता रहे ना कोई सोच, समझ बुद्धी ना कोए समझाईआ। आपणे मिलण दी आसा मनसा पूरी कर लोच, लोचन अंदरों दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, नाम खुमारी विच रख मदहोश, मधुर धुन आपणा राग सुणाईआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ अजीत सिँघ दे गृह जम्मू ★

सतिजुग कहे पुरख अबिनाश मेरे समराथा, समरथ तेरी वड्याईआ। हउँ बालक नाथ अनाथा, दीनन सीस झुकाईआ। सगला मंगां धुर दा साथा, सच मिले सरनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होवे पाठा, पाठशाला इक्को दे वखाईआ। आत्म जोती बण जाता, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। सर्ब कला कल ज्ञाता, ज्ञान आपणा देणा दृढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ना नाता, विछोड़ा पिछला देणा मिटाईआ। तेरा मार्ग नज़री आए साचा, सच संजम देणा वखाईआ। भाग लगा काया माटी गढ़ काचा,

कंचन रूप दे वखाईआ। मनुआ मन ना फिरे नाचा, सोई सुरती शब्द जगाईआ। लहिणा देणा मूल चुका हथ्थो हाथा, उधार विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, घर सच मिले सरनाईआ। सतिजुग कहे मैं आया की मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंगन, शहिनशाह अख्वाईआ। सच प्यार दी चाढ़ रंगण, रंगत दे बदलाईआ। लेखा वेख रविदासे मईआ गंगा वाला कंगण, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सच्चा बख्श इक्क अनन्दन, अनन्द आपणा दे वखाईआ। मिले वड्याई विच वरभण्डन, ब्रह्मण्ड होवे शनवाईआ। नूरी जोत दा चमके चन्दन, चन्द चांदना सीस झुकाईआ। सच कर्म दी करे ना कोए उलँघण, आलम इलम ना कोए भरमाईआ। धरनी धरत धवल धौल इक्को होवे बन्दन, बन्दगी आपणी दे समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ढए कंधन, धर्म दुआर देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे खुशी वखाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगण की आया, आपणी इच्छा दयां जणाईआ। कूड़ी क्रिया लेखा मुका त्रैगुण माया, पंचम पंच कर रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहानां सब दे उपर रख साया, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। तन वजूद साफ़ कर दे काया, गढ़ इक्को इक्क वखाईआ। सच नाम दा मृदंग दे वजाया, नाद इक्को इक्क शनवाईआ। तेरा खेल बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे खपाया, सतिजुग सच धर्म प्रगटाईआ। दोए जोड़ बन्दन सीस निवाया, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह वड वड्याया, वायदा पूरा लैणा कराईआ। कामल मुर्शद मुरीदां हो सहाया, मदद तेरी मंग मंगाईआ। जलवा नूरी कर रुशनाया, रोशन ज़मीर होवे लोकाईआ। दर ठांडे सीस झुकाया, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। वेला वक्त दे सुहाया, सुहञ्जणी रुत्त बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दर ठांडे मंगां दान, दाते दानी दयावान, दर तेरे धुर दी झोली डाहीआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ ज्ञान चन्द ख़ैरोवाल जम्मू ★

सतिजुग कहे तूं शहिनशाह सुल्ताना, पातशाह अख्वाईआ। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, मालक धुरदरगाहीआ। जल्वागर नूर नुराना, सचखण्ड तेरी रुशनाईआ। भगत वछल श्री भगवाना, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवाना, परदा दे उठाईआ। दर ठांडे दिसे निमाणा, सतिजुग आपणी झोली डाहीआ। तूं परम पुरख बीना दाना, हरख सोग देणा

चुकाईआ। तेरे धर्म दा झुल्ले इक्क निशाना, निशाने कूड़े देणे मिटाईआ। नव सत्त जपे इक्को गाना, गहर गम्भीर ढोला बेपरवाहीआ। मस्त खुमारी विच जन भगत रहे मस्ताना, मस्ती विच हस्ती दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं घट जाणी जाणा, जाणनहार तेरी ओट तकाईआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ फुम्मण सिँघ दे गृह जम्मू ★

सतिजुग कहे मैं सच दवारे पुछदा, मांगत हो के मंग मंगाईआ। आपणा भेव दस्स प्रभ गुझ दा, परदा अगला दे उठाईआ। साचा मार्ग दस्स सुख दा, दु:ख कलयुग दे मिटाईआ। तेरा नाम निधाना उपजे इक्को तुक दा, एकँकार देणा प्रगटाईआ। जिस नाल लख चुरासी आवण जावण पैंडा जावे मुकदा, जूनी विच ना कोए भवाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवे साची रुत्त दा, पत्त टहणी आप महकाईआ। लेखा रहे ना तृष्ना भुक्ख दा, भावना सब दी पूर कराईआ। भगत भगवान नाता बणे पिता पुत्त दा, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। तेरा खेल वेखां अबिनाशी अचुत दा, चार वरन अठारां बरन देणा समझाईआ। भरम भुलेखा रहे ना लुक दा, आपणा रंग देणा रंगाईआ। होए प्रकाश तेरी जोत दा, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। मैं धुर दी सोच सोचदा, सच सच सुणाईआ। इक्को दरस पुरख अकाल लोचदा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। झगड़ा रहे ना हरख़ सोग दा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। लेखा बणे तेरी मौज दा, मजलस भगतां विच बणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले तैनूं फिरे कोई ना खोजदा, काया मन्दिर अंदर परदा देणा उठाईआ। पन्ध मुकाउणा लोक परलोक दा, सोहला सच सलोक सुणाईआ। झगड़ा रहे ना योजन कोस दा, ब्रह्मण्ड खण्ड लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे सीस निवाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगां एका वस्त, नाम धुर दा देणा दृढ़ाईआ। जिस विच झगड़ा रहे ना कीट हस्त, ऊँच नीच ना वण्ड वण्डाईआ। इक्क जैकारा होवे अर्श फर्श, दो जहान सोहला गाईआ। मेहरवान करना तरस, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। नव नौ चार रिहा तड़प, नव खण्ड रिहा कुरलाईआ। सत्त दीप रिहा भटक, सति भावना ना कोए समझाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, अग्नी अग्ग दे गवाईआ। सच बेनन्ती मन्न अरज़, आरज़ू दिती दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी बदलणा तेरा फ़र्ज़, कलयुग लेखा दे मुकाईआ। जन भगतां वण्ड दर्द, दर्दी हो के वेख वखाईआ। छुरी शरअ रहे ना करद, कत्लगाह

कर सफ़ाईआ। ममता मोह मेट गर्द, गर्दश रहे ना जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नाल तेरी शर्त, शरअ विच्चों शरअ दे बदलाईआ। निरवैर हो के आयों परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। भगत भगवान रहे कोई ना फ़र्क, फ़िकरा इक्को देणा सुणाईआ। जगत वासना कर के तरक, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सतिजुग कहे मेरा निक्का जेहा ख्याल, दलील दिलबर दयां जणाईआ। सति धर्म दा दस्स अहिवाल, दीन दयाल दया कमाईआ। कलयुग अन्तर निरंतर बदल दे चाल, सति धर्म राह प्रगटाईआ। तेरा खेल पुरख अकाल, अकल कलधारी वेख वखाईआ। मैं नढ्ढा तेरा बाल, नन्हा हो के सीस निवाईआ। मन्न बेनन्ती सच सवाल, जवाब विच तेरी शरनाईआ। साचा मार्ग दे वखाल, वक्खरी कर पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दे धन माल, नाम निधाना झोली पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कर संभाल, सम्बल बहि के वेख वखाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। इक्को शब्द दे दलाल, विचोला धुर दा नज़री आईआ। जलवा जोत होवे जमाल, जाअली रूप ना कोए दरसाईआ। सच भण्डारा इक्क खवाल, नाम पदार्थ रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगां वस्त अनोखी, आसा आपणी दयां दृढ़ाईआ। परम पुरख तेरी मंज़ल मिले सौखी, साचा मार्ग देणा लाईआ। पढ़नी पए जन भगत कोए ना पोथी, अक्खर इक्को देणा समझाईआ। जिस वस्त नूं लभ्भदे कोटन कोटी, कोट गढ़ काया बंक देणी वड्याईआ। मंज़ल महबूब चढ़ के चोटी, चेटक पिछला देणा गवाईआ। गुरमुखां अंदर वासना रहे कोई ना खोटी, खोटे खरे देणे बणाईआ। आत्म परमात्म तेरा गोती, वरन बरन डेरा ढाहीआ। सचखण्ड दुआर एकँकार तेरी जगदी रहे जोती, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। तेरा नाम संदेसा सारे गावण लोक परलोकी, परम पुरख तेरी इक्क वड्याईआ। चरण प्रीत साची रीत इक्को दस्स ओटी, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा पूरा कर रविदास चमारे मोची, ग़रीब निमाणे कोझे कमले आपणे गल लगाईआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गुरचरण सिँघ दे गृह जम्मू ★

सतिजुग कहे किरपा कर मेरे मेहरवान, मालक ख़ालक प्रितपालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा ढोला सच्चा गाण, गावत गा गा खुशी

बणाईआ। सिदक सबूरी साचा बख्श हक ईमान, बेईमान रहे ना कोए लोकाईआ। धुर दा कलमा दस्स असल विच इस्लाम, पैग़ाम आपणा इक्क सुणाईआ। धर्म दवारयों दे दान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सब दा मालक नज़री आ काहन, गोपी लख चुरासी जीव जंत प्रनाईआ। डंका वज्जे धुर दे राम, रमईआ नईआ आपणी दे वखाईआ। दीन मज़्ब दा रहे ना कोए गुलाम, शरअ शैतान ना कोए लड़ाईआ। साचा मार्ग दस्स आसान, असल वसल बख्श नूर खुदाईआ। दरगाह साची तेरा होवे कयाम, कयामत डेरा दे ढाहीआ। शब्द हकीकी दे जाम, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सतिजुग साचे आस रखाईआ। सतिजुग कहे मेरी पूरी कर आसा, मनसा ममता मोह दे मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा बणे बंसा, सरबंस आपणा लैणा प्रगटाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हँकारी गढ़ ना रहे कंसा, संसा आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। सच धर्म सच बणा बणता, हउमे हंगता डेरा देणा ढाहीआ। बोध अगाधा शब्द अनादा बण पंडता, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या धुर दी देणी जणाईआ। स्वामी ठाकर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा बैठा ध्यान लगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे मेहरवान महबूब, मुहब्बत तेरी नज़री आईआ। साचे नाम दा दे सबूत, सबर सबूरी झोली पाईआ। झगड़ा रहे ना पंज तत काया कलबूत, कलमा इक्को देणा दृढ़ाईआ। हर घट नज़री आ मौजूद, मजलस भगतां विच रखाईआ। तेरी मंज़ल इक्क मक्सूद, जलवा नूर होवे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, सति सच लै प्रगटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दिसे हदूद, मौजूद हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगां वस्त अपार, अपरम्पर स्वामी देणी झोली पाईआ। तूं सर्ब जीआं दा सांझा यार, निरवैर पुरख निराकार वड्डी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर खुआर, माया ममता मोह विकार दे गवाईआ। धरनी धरत धवल धौल रहे ना धूआँधार, धर्म दुआर देणा प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बोले सर्ब जैकार, इष्ट देव स्वामी अन्तरजामी इक्को देणा वखाईआ। तेरी महिमा सिफ्त सालाह बोध अगाध कागद कलम शाही ना लिखणहार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर निमस्कार, दर ठांडे सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं दिसे हाहाकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग कहे मैं रखी अगम्मी आस, तृष्ना जगत ना कोए वधाईआ। साचे मण्डल वेखां तेरी रास, गोपी काहन इक्को रंग वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म गावे तेरी गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा ढोला इक्क सुणाईआ। सचखण्ड

दुआर एकँकार तेरा दिसे वास, वास्ता सब दे नाल जुड़ाईआ। तेरा नूर होवे प्रकाश, गृह भीतर डगमगाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणी दे सुहाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्क बणे जमात, नाता आत्म परमात्म लैणा बंधाईआ। मानव मानव करे कोए ना बात, पंच विकार डेरा अंदरों देणा ढाहीआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए आख, ढोले सिफ्तां विच सालाहीआ। सो पूरा करना भविख्त वाक्, वेला वक्त दए गवाहीआ। जगत विद्या खोल्ह ना सके ताक, परदा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे दर मंगां इक्क इन्साफ़, अदल आदल लैणा कमाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, ममता कूड़ देणी मिटाईआ। सति धर्म कर प्रकाश, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। मानव समझे तेरी जात, अजाती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नज़री आवे इक्क प्रभात, संध्या तेरा राह तकाईआ। नैण खोल्ह पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर परदा दे उठाईआ। शब्द अगम्मी सुणा आवाज़, नाद धुन कर शनवाईआ। सति धर्म तेरा मुहताज, बैठा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा मार्ग दस्स ख़ास, ख़ालस आपणा राह वखाईआ। सतिजुग कहे मैं रख के बैठा उडीक, आपणा ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी कलयुग अन्धेरा मेटे तारीक, जलवा नूर करे रुशनाईआ। तेरा हुक्म मेरे जगदीश, जगत मालक नज़री आईआ। झगड़ा चुक्के बीस बीस, सदी चौधवीं हदीस रही कुरलाईआ। छत्र रहे ना किसे सीस, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण देणा समझाईआ। सतिजुग कहे मैं राह रिहा तक्क, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरा जगत विकारा कर भठ्ठ, अठ्ठ सठ्ठ देण दुहाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ, गुरुदुआर ना कोए लड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर खोल्ह आपणा हट्ट, मनुआ नटुआ नट ना स्वांग वरताईआ। दुरमति मैल देणी कट, कटाकश आपणा तीर नाम चलाईआ। सब दा लहिणा देणा तेरे हथ्थ, लख चुरासी बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर सच्ची सरकार इक्को नज़री आईआ। सतिजुग कहे मैं लैणी सच सलाह, रहमत तेरी मंग मंगाईआ। दो जहानां बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरे गवाह, शहादत इबादत विच देण भुगताईआ। तूं नूर नुराना इक्क ख़ुदा, ख़ुदी तकब्बरी दे मिटाईआ। तेरा आत्म तैथों ना होवे जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचा मार्ग इक्क सिखा, सिख्या देणी थाउँ थाँईंआ। कलयुग जीवां बख़्श गुनाह, रहमत आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा साचा वर, मालक प्रितपालक तुद्ध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग कहे तुध बिन दूजा अवर ना दिसे होर, हरि जू आपणी दया देणी कमाईआ। नाम प्रीती बख्श कूड़ी क्रिया रहे ना कोई चोर, ठगौरी मन कोए ना पाईआ। तेरे हथ्थ अगम्मी डोर, शब्दी तन्द लैणा जुड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरी लोड़, मोहर आपणा नाम देणा लगाईआ। मिटे रैण अन्धेरा घोर, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण तेरी लोड़, एथे ओथे दो जहानां श्री भगवान इक्क सहाईआ।

★ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ★

सतिजुग कहे प्रभू मैं तेरा बरदा, बन्दना विच सीस झुकाईआ। भिखारी बण के तेरे दर दा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी अलख दयां जणाईआ। जगत जीव जहान वेख सड़दा, मेरी अंदरों निकले धाहींआ। तेरी मंज़ल कोए ना चढ़दा, अद्धविचकारे लुटी जाए लोकाईआ। सच दवारे कोई ना खड़दा, महबूब मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप
७४८
२०
हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर देणा वखाईआ। सतिजुग कहे मेरे साहिब सूरे सरबग, शाह सुल्तान तेरी सरनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। साची करनी सारे गए तज्ज, अप तेज वाए पृथमी आकाश रहे कुरलाईआ। कूड़ नग़ारा दहि दिशा रिहा वज्ज, वजह सके ना कोए समझाईआ। शाह सुल्तान रहे भज्ज, भजन बन्दगी कम्म किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों कड्ढ, मेहरवान मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। आपणी मंज़ल दस्स हद्द, हदूद पिछली दे मुकाईआ। जागरत जोत जगे जग, जगजीवण दाते देणी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार तैनूं गए सद्द, रागां नादां विच ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेले तेरी यद, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ।

★ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शंकर आचारीआ मन्दिर श्रीनगर ★

धरनी कहे मेरी धार पर्बत चोटी, पाथर पाहन नाल वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जगदी जोती, निरगुण नूर निराकार

रुशनाईआ। सति धर्म दी इक्को ओटी, सहारा दो जहान समझाईआ। भगत भगवान दी पढ़े पोथी, निरअक्खर अक्खर विच बदलाईआ। मंज़ल मिले अगम्मी सौखी, रहिबर आपणा राह जणाईआ। दुरमति मैल जाए धोती, पतित पुनीत दए कराईआ। सुरती रहे किसे ना सोती, नाम डंका करे शनवाईआ। जिस भूमिका नूं खोजदे गए कोटन कोटी, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर आपणी धार जणाईआ। ओस दी खेल किसे ना सोची, समझ बुद्धी ना कोए चतुराईआ। राह तकदे लोक परलोकी, ब्रह्मण्ड खण्ड अक्ख उठाईआ। कुछ लहिणा देणा कृष्न नाथ त्रिलोकी, लोआं पुरीआं बाहर समझाईआ। कुझ आसा रविदास चमारे मोची, कबीर जुलाहा वेख वखाईआ। हरि गोबिन्द मिट्टी दी बणा के कोठी, साढे तिन्न हथ्थ वखाईआ। निरवैर हो के निराकार तेरी धार दिसे बहुती, बहु रंगां विच समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जगत आयू बीती चोखी, चार कुण्ट हाहाकार कराईआ। सदी चौधवीं सब उत्ते घड़ी आउणी औखी, आख़र समझ कोए ना पाईआ। जगत विद्या जिस मंज़ल नहीं पहुंची, हकीकत हक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा समझाईआ। धरनी कहे मेरी धरनी धरत, धवल सोभा पाईआ। विष्नूं धार आवे परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ।
७४६ जिस दी ब्रह्मा नाल शर्त, शंकर दए वड्याईआ। लेखा जाण फर्श अर्श, ज़िमीं असमान खोज खुजाईआ। कलयुग अन्तिम ७४६
कर के तरस, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। मेरी आसा मनसा मेटे पिछली हरस, हवस दए गवाईआ। पूरब लहिणा देवे
२० करज, मकरूज आप चुकाईआ। सच जैकार दी बोल के तरज़, तराना इक्को दए सुणाईआ। तेई अवतारां हज़रत मूसा २०
ईसा मुहम्मद दस गुरू पूरी करे अरज़, आरज़ू पिछली खोज खुजाईआ। आपणा खेल कर असचरज, अचरज लीला दए वरताईआ। धरनी तेरी पूरी होवे ग़रज़, ग़रीब निवाजा वेख वखाईआ। बीस बीसा पूरा करे फ़र्ज़, फ़ैसला हक दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब परदा दए उठाईआ। धरनी कहे मेरा धर्म दवार, द्वारका वासी दए वड्याईआ। भीम कर के निमस्कार, युधिष्टर दिता दृढ़ाईआ। खिच्च के इक्क लकार, लकीर दिती बणाईआ। अगला खेल करे करतार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वधे विच संसार, चार वरन करे लड़ाईआ। साचा धर्म ना रहे जैकार, प्रेम प्रीती ना कोए वखाईआ। दीन मज़्हब होए खुआर, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ धर्म सति ना कोए प्रगटाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी करन हाहाकार, अन्तर निरंतर मंत्र सच जाण भुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा मानव जाती होए विभचार, कर्म कांड सच ना कोए रखाईआ। दृष्टी अंदर सृष्टी होवे धूआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं फेर करां पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव

मेरी पावण सार, महासार्थी वेख वखाईआ। सच संदेसा देण एकँकार, इक्क इकल्ले आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वासना वेख बहार, माया ममता मोह विच दीन दुनी हल्काईआ। साचा धर्म करे ना कोए प्रचार, पर्चा हक ना कोए वखाईआ। इष्ट मन्ने ना कोए गुरू अवतार, पैगम्बरां राह ना कोए अपनाईआ। किरपा कर गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर खेल खिलाईआ। करे अरज़ मन्ज़ूर धुर दरबार, दरगाह साची होए सहाईआ। परवरदिगार सांझा यार, जल्वागर नूर रुशनाईआ। महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला वेखणहार सर्ब संसार, सर्ब स्वामी अन्तरजामी परदा ओहला दए उठाईआ। वेखणहारा वेखे विगसे पावे सार, पर्बत चोटी फोल फुलाईआ। हरि गोबिन्द कर के गया पुकार, पाती पत्रका बिन अक्खरां इक्क लिखाईआ। कुदरत दे कादर करनी दे करते सृष्टी दे मालक भगतां दे भगवान तेरा खेल अपार, अपरम्पर स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। दुनिया दा हाहाकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरी आसा मनसा, पूरब दयां जणाईआ। पिछला लहिणा आदि अन्ता, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। कवण वेला पुरख अबिनाशी आवे धुर दा कन्ता, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। सृष्ट सबाई दुखी वेखे जंता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। कुछ लेखा गोबिन्द नाल कश्मीरी पंडता, केशो बेनन्ती गया सुणाईआ। बीस बीसे जगत जहान होणा नंगता, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। कश्मीर बेनज़ीर रूप धारे सृष्ट सबाई जंग दा, अंग दीन दुनी दए हिलाईआ। ओस वेले मेरा लहिणा होवे सूरे सरबंग दा, सृष्टी खुशीआं विच आपणी अक्ख खुल्हाईआ। शंकर नौ वार इस धार उत्तों लँघदा, त्रिसूल नाल त्रैभवन धनी गया समझाईआ। तेरा लेखा परे होवे सूरज चन्द दा, चन्द चांदनी ना कोए रुशनाईआ। जोत प्रकाश ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को मंगदा, निरगुण नूर डगमगाईआ। सो वेला वक्त आया ओस अनन्द दा, जो अनन्द परमानंद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा धुर दा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरी आसा मनसा पूरी, मेरे अन्तर मिले वड्याईआ। जलवा तक्कया जोत नूरी, नुराना मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस ने लेख मुकाउणा जगत वासना कूड़ी, क्रिया पिछली दए गवाईआ। जन भगतां बख्श के चरण धूढ़ी, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा गढ़ तोड़ ग़रूरी, ग़ुरबत अंदरों दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा दए उठाईआ। धरनी कहे मेरा वड वड भाग, पाया परम पुरख बेअन्त। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा चिराग़, माया ममता मोह विकार करना अन्त। दीन मज़्ब ज़ात पात मेटणा दाग़, गढ़ तोड़ना हउमे हंगत। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्ट दहि दिशा शब्दी हुक्म लाउणी आग, नाता

रहे ना किसे सज्जण साक, शाह सुल्तानां जीव जहानां पकड़े कोई ना वाग, शरअ शरीअत लेखा होए शैताना। मेरी आसा मनसा पूरी करे मेरा धुर दा कन्त सुहाग, नव सत्त सत्त नव जगत जीव होए वैराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहिणा देणा धरनी धरत धवल गुर अवतार शब्दी धार निराकार निरँकार निरवैर पूरा करे निशाना।

★ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शाही चश्मा श्रीनगर ★

यह पानी है आबे हयात, चश्मा चिराग़ दए जलाईआ। आंसू वहा ना हो बेताब, रहमत खुदा दए कमाईआ। मेहरवान महबूब मेहर नज़र करे आप, दिल दर्द दए मिटाईआ। पूरा करे ख्वाब, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। दुःख रोग ना रहे अज़ाब, सज़ा कूड़ ना कोए भुगताईआ। तन वजूद सोहे महिराब, कलमा हक दए सुणाईआ। बख्शे बेनज़ीर तन पोशाक, अज़ीज़ लए बचाईआ। पाणी नाल तन होवे पाक, वजूद वजद मिले बेपरवाहीआ। हरस हवस विच तड़पे ना बेआब, आब हयाती वाला कतरा कतरा कतरा देवे वड्याईआ। चश्मा चश्माए दीद, चेशे चसतान नूर खुदाईआ। मुहम्मदे बेज़ादे नवादे नवीद, नविस्ते नज़ाकार नूरे इलाहीआ। हमदो तमहीद ज़िआरते ईद, आअज़म आलीशान बेपरवाहीआ। मुग़लाए उम्मीद, दास्ताने नदीद, आसताने वसीद, वसले वसूक वसीअत यार खुदाईआ। हज़रते महबूब, कुलाते महिदूद, जज़बाते सबूत, सबरे अरूज, अर्शे ख़नूस, ख़विस्तो तज़ा, तहिज़ीबे ज़वां ज़वाले निशां दए मिटाईआ। मुक्दसे पाक, मिल्लते इत्तफाक, ज़िल्लते नफ़ाक, शमीमे शमां शमां रुशनाईआ। इज़हारे इज़हार तौज़ीरे ज़वाक, ज़ंजीरे नकाक, लिकज़ल ज़मीमे, ज़नाए ज़ाहदे ज़मीर, ज़ोबो ज़माए, यशा उसतवाए, चीं इसते अमीर, ज़ाहरे ज़हीर, वाहिदे वहिज़ीद बेपरवाहीआ। आसाए उम्मीद, हवसे खुशीद, शाहाने आमदीद, दुआए रसीद, वाबस्ता ताग़ीज़, ताज़ीरे आज़ीरे बेखुदा खुदी खुद ख़ादम होए सहाईआ।

★ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ पवित्र अस्थान श्री गुरू हरि गोबिन्द साहिब श्रीनगर ★

सतिगुर शब्द धुर दा बचन बलास, नाम निधान वज्जे वधाईआ। हरि गोबिन्द रख के गया आस, पातशाह शाह सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल पुरख अबिनाश, धुर करता नूर खुदाईआ। सच दवारे पावे रास, मण्डल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड

पुरी लोअ आकाश पाताल खोज खुजाईआ। लेखा वेखे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर परदा लाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरी करे आस, आसा तृष्ना सब दी मेट मिटाईआ। सच दवारे अगम्मी मंज़ल पहुंचे घाट, निशाना इक्को दए वखाईआ। जिस वेले होवे कलयुग अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। वरन बरन दीन मज़्हब इक्क दूजे दा करे घात, मार्ग सच राह सर्ब भुलाईआ। सदी चौधवीं मुक्कण वाली होवे वाट, मुहम्मद निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हरि गोबिन्द वेखे खेल तमाश, गहर गम्भीर मिल के निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा दए दृढ़ाईआ। शब्दी धार बचन बलास एक, एकँकार दए वड्याईआ। हरि गोबिन्द पुरख अकाल दी रख के टेक, सति जोत मस्तक करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता निरगुण धार धारे भेख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर करन आदेस, सचखण्ड दवारे दरगाह साची निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया वेखे रेख, ऋषीआं मुनीआं परदा दए उठाईआ। श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना चल के आवे एस अगम्मे देस, जिस दी दिशा वण्ड समझ किसे ना आईआ। जिस गृह तन माटी ख़ाकी प्यार मुहब्बत विच चोला करे पेश, चोला आपणा लए बदलाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत चरण प्रीती दस्से के हेत, हरि गोबिन्द धुर दा हुक्म दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लेखा आप समझाईआ। बचन बलास करना चंगा, गुरमुख गुर गुर विच समाईआ। हरि गोबिन्द वजाए इक्क नाम मृदंगा, नाद धुन करे शनवाईआ। जिस दवारे ग़रीब निमाणी कोझी कमली काया माटी चोला रंगा, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म आपणा परदा लाहीआ। सो हरि गोबिन्द आपणा वेस धार के नवां, निरगुण नाल निरगुण हो के आपणा फेरा पाईआ। अग्गे बदलण वाला समां, समाप्त हुन्दी वेखे जगत लोकाईआ। कुछ आउण वाला सब नूं ग़मा, ज़िंदगी चिन्ता विच वखाईआ। पुरख अकाल हरि गोबिन्द दी धार आपणा नूर जगाउणी शमां, शबे रोज़ करे रुशनाईआ। गुरमुख बचन बलास जिस ने मन्ना, मन दी ममता गया मिटाईआ। हरि गोबिन्द नाम भण्डारा देवे धना, पुरख अकाल पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। अज्ज तों कुछ मार्ग चालू होणा नवां, नौ खण्ड पृथ्मी आपणा हुक्म सुणाईआ। सच दुआर विच रह के किसे ने माया दी नहीं करनी तमअ, ममता अंदरों देणी कढाहीआ। नहीं ते लेखा देणा पए जमां, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। सतिगुर धार शब्द प्यार जगत वासना दूर बन्ना, कन्ना विच समझाईआ। वेख्यो गुरमुख बण के गुरसिख बण के हरिजन बण के नेत्रहीण रहे कोई ना अन्न्हा, अन्ध अज्ञान अंदरों देणा कढाहीआ। तुहाडे काया मन्दिर अंदर आपणे नूर जोत प्रकाश दा चाढ़े चन्ना, दिवस रैण अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची भूमिका वेख खुशी मनाईआ। सतिगुर शब्द बचन बलास दी रीत, बोध अगाध मिले वड्याईआ। हरि गोबिन्द धार गुरमुखां अंदरों साफ़ करे नीत, पतित पुनीत दए कराईआ। सब ने बैठे रहिणा अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। साहिब समरथ सब नूं बख्शणहार बख्शीश, रहमत विच रैहम आप कमाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर नित नवित करदे गए उडीक, राह रहिबर हो के मात टिकाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला वेखणहारा हरि गोबिन्द धाम अनडीठ, निराला जोत अकाला अकल कलधारी दाता धुरदरगाहीआ। जाणी जाण सब कुछ आपे आप, सभनां विच समाईआ। जिस दा नित नवित सतिगुर धार शब्द जाप, सुरती सुरत दए खुल्हाईआ। गुरमुखां कोट जन्म दे मेट के पाप, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बणा के साक, सज्जण होवे शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हरि गोबिन्द जिन्हां दे हिरदे दा बणया साक, सज्जण कूड़े गए तजाईआ। एह वी हरि गोबिन्द दा वाक्, जो लेखा रिहा लिखाईआ। धुर दा हुक्म शब्द दी धार आवे इत्तफाक, इतफ़ाकिया आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं बुद्धिवान सके कोए ना वाच, वाचक ज्ञानी भेव ना कोए खुल्हाईआ। एह सुहञ्जणी भूमिका गुरमुखां दी सोहणी गाथ, भगवन नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्जाणत जानणहारा हर घट वेख वखाईआ। गुरमुख कदे ना करे बस्स, बस्ता बन्न्ह ना कदे वखाईआ। जिन्हां दे हिरदे सतिगुर गया वस, उह ढोले गावण चाँईं चाँईंआ। अमृत आत्म निजर लै के रस, रसना दा स्वाद देवे तजाईआ। निज लोचण खोल्ह के अक्ख, निरगुण सरगुण नानक दर्शन पाईआ। हरि गोबिन्द आपे हो जाए वस, गुरमुखां दे अंदर आपणा रूप प्रगटाईआ। सतिगुर दा शब्द भण्डारा दो जहानां दा हट्ट, लख चुरासी जीव जंतां रिहा वरताईआ। गुरमुखो मिले ते मिल के कुछ लाहा लओ खट्ट, वेला गया फेर हत्थ किसे ना आईआ। एह खेल पुरख समरथ, धुर दे हुक्म नाल आपणा हुक्म चलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित गुरू चेला चेला गुरू भगत भगवान भगवान भगत दोवें इक्क दूजे दा गावण जस, सिफ्तां विच सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार आपणा रंग रंगाईआ। साख्यात गुरू दा रूप सदा सिख, गोबिन्द दे के गया वड्याईआ। जिस ने पुरख अकाल मनाया इक, दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। नाता जुड़या पिता पूत पित, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। सो गुर गोबिन्द गुरमुखां नाल सदा करे हित, हिरदे अंदर वस के रस अमृत जाम प्याईआ। गुरमुख सदा रहिणे नित, जुग चौकड़ी वज्जदी रहे वधाईआ। आपणा वेला आपणा वक्त गुरमुखो आपे लैणा नजिठ, सतिगुर पुश्त पनाह सब

दी हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब व्यापी हर घट अंदर रिहा दिस, जो सतिगुर नेत्र नाल वेखे जगत लोकाईआ।

★ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ धर्म अर्थ रोड श्रीनगर ★

पिछला समां बीतया विच संसार, सदी सदीवी दए गवाहीआ। लहिणा देणा पूरा हो रिहा गुरू अवतार, पैगम्बरां संग निभाईआ। हुक्म चले इक्क निरँकार, परवरदिगार करे शनवाईआ। कलमा हक होवे जैकार, हकीकत कायनात दृढ़ाईआ। गद्दी रहे ना कोए विच संसार, गदागर होए लोकाईआ। हुक्म मिले धुर दरबार, मुकामे हक सिफ्त सालाहीआ। अल्ला नूर इक्क उज्यार, उजाला करे ख़लक खुदाईआ। रहमत विच करे प्यार, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। करनी दा करता कुदरत दा मालक सृष्ट दा ख़ालक पावे सार, अदालत आपणी इक्क वखाईआ। जिस नूं सईयदे करदे गए पैगम्बर गुर अवतार, निमस्कार सीस जगदीस झुकाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण नूर कर उज्यार, उजाला इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। साचा लेखा चले कायनात, दीन दुनी वेख वखाईआ। चार वरनां कर इत्तफाक, मार्ग राह रहिबर धुर दा दए समझाईआ। पिछला लेखा सब दा कर बेबाक, लहिणा देणा झोली पाईआ। इक्को दस्स के नूरी ज़ात, नूर नूर करे रुशनाईआ। साचे कलमे दी कर वज़ाहत, वुज़ू आपणा दए दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोए नफ़ाक, निस्बत हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दे हुक्मे अंदर करे तलाक, तालब आपणे लए बणाईआ। पूरा कर भविक्ख वाक्, वक्त अगला दए समझाईआ। इक्को मंज़ल रहे घाट, पौड़ी डण्डा ना कोए चतुराईआ। इक्को पूजा सिमरन दस्स के पाठ, कलमा लाशरीक इक्क सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के वाट, पन्ध पिछला दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। जगत वेखे दीन दुनी दी धार, परदा दीन मज़्ह्ब उठाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ पावे सार, काअबा हक महिराबा भेव खुल्लाईआ। इक्को जलवा नूर दस्से दीदार, दीद ईद चन्द आप चमकाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, परवरदिगार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे देवे माण वड्याईआ। गद्दी दार रहे कोई ना ठाकर, मार्ग इक्को दए वखाईआ। सति धर्म दा निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल दए धवाईआ। एका वणज कराए दीन दुनी सौदागर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ गागर, गहर गम्भीर

बेनज़ीर करे रुशनाईआ। जन भगतां सन्त सूफ़ी फ़कीरां दस्से आप आपणा साधन, मार्ग सिध्धा इक्क समझाईआ। जो काया मन्दिर अंदर वजूद काअबे अंदर महबूब आपणा आराधन, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। करे खेल शाहो भूप शहिनशाह नवाबन, नौबत इक्को हक नाम वजाईआ। सदी चौधवीं दुनिया होई बेआबन, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाईआ। साची गद्दी कदी ना होवे नास, नास्तिक सके ना कोए मिटाईआ। जिस दा परम पुरख करे प्रकाश, जगत लोचण नैण दए वखाईआ। हरिजन कदे ना होवे उदास, भरम विच ना कोए भरमाईआ। सिमरन करे स्वास स्वास, साहिब सतिगुर राह तकाईआ। सो स्वामी खोल्हणहारा जाग, अन्तर निरंतर परदा दए उठाईआ। सच मुहब्बत दा दे वैराग, वैरी अंदरों दए कढाहीआ। त्रैगुण बुझा के आग, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। घर मेल के कन्त सुहाग, दर ठांडे जोड़ जुड़ाईआ। शब्द धुन सुणाए आवाज़, सुत्यां आप उठाईआ। मन्दिर चढ़ के खोल्हे राज़, रहमत हक कमाईआ। साचा दवारा कर आबाद, घर अगला दए वखाईआ। गुलशन वखावे अगम्मी बाग़, जित्थे ख़िजां रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची गद्दी धर्म धर्म हक हक सदा चलाईआ। साची गद्दी कदे ना जावे तुट्ट, सद तुट्टयां जोड़ जुड़ाईआ। धर्म दा भाग कदे ना जावे निखुट्ट, वरते बेपरवाहीआ। प्रभ प्यार दा पैंडा कदे ना जावे मुक, मंज़ल दिसे धुरदरगाहीआ। जिंनां चिर प्रभू रिहा खुश, आपणा हुक्म दिता वरताईआ। अग्गे बदल के धर्म दा रुख़, कूड़ कुड़यारे दिते नठाईआ। तुसीं आपणी मंगो सुख, आत्म परमात्म नाल जुड़ाईआ। अंदर ओहला रहे ना लुक, मुख नूर होवे रुशनाईआ। सच धार दी उपजे सुच्च, कूड़ कपट देणा मिटाईआ। जिस बूटा लाया ओसे दिता पुट्ट, गद्दी दा मालक नज़र कोए ना आईआ। केते लोकमात गए उठ, गुर अवतार पैगम्बर पीर पीरां फेरीआं पाईआ। संसार सागर भरया दुःख, दुक्खां विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। साचा वरते हुक्म सदा संसार (जग), जुग चौकड़ी दुनी दार नाल मिलाईआ। कलयुग अग्नी लग्गी अग्ग, मानव मानुख रही जलाईआ। जगत विकारी गद्दी कोई ना बहे सज, भगत भगवान दए वड्याईआ। धर्म दा पूत रिहा कोई ना अज्ज, अज्ज दा दिवस दए गवाहीआ। अग्गे काया काअबे सब तों पहला हज़ूरी हज्ज, मक्का मदीना सोभा पाईआ। जित्थे नूरी चिराग़ बिन तेल बाती रिहा जग, शमां नूर करे रुशनाईआ। गद्दीदार गद्दी गए छड्ड, नाता तुट्टा जगत लोकाईआ। परमारथ स्वार्थ दोवें हो गए अड्ड, वक्खरी कार कमाईआ। मंज़ल पूरी हो गई हद्द, अग्गे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे अंदर हुक्मी कार कमाईआ। सतिगुर

किरपा होवण ठीक, दवा दारू दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्तर उपजे इक्क प्रीत, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणी धुन सुणाईआ। साचा ढोला गाउणा गीत, सोहँ अक्खर निरअक्खर धार उपजाईआ। सति धर्म दी साची चले रीत, रीतीवान समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुख दर्द दए गवाईआ। दुःख दर्द जाए लथ्थ, काया माटी तन वजूद होए सफ़ाईआ। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, आसा बेनन्ती विच पूर कराईआ। साचा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा दए बदलाईआ। वस्त दे के धुर दे हट्ट, अमोलक इक्को इक्क वरताईआ। नाम निधान मार के सट्ट, दुःख अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दे के हथ्थो हथ्थ, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर करे सफ़ाईआ। सति धर्म कहे मेरे राजन राज, शाहो भूप तेरी इक्क सरनाईआ। तेरे हथ्थ तेरा प्रताप, वड प्रतापी धुरदरगाहीआ। सच दवारे प्रगट कर आपणा जाप, जगजीवण दाते दे समझाईआ। सृष्टी अंदर मेट तीनों ताप, त्रैगुण माया अग्नी तत तपाईआ। ममता मोह विकार रहे ना पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। दीन दुनी दा बदल हालात, हाल माज़ी लेखा दए चुकाईआ। लहिणा लिख बिन कलम दवात, कागज़ कलम शाही नेत्र रोवे मारे धाईंआ। मानव जाती होवे इक्क समाज, समग्री इक्को इक्क वरताईआ। आपणी मुहब्बत दे कर मुहताज, कायनात परदा दे उठाईआ। दूजा करे ना कोई सवाल जवाब, मुखातब आपणे नाल कराईआ। तेरी मंज़ल हक हकीकी महिराब, महबूब आपणा नूर देणा चमकाईआ। साचा सजदा इक्क आदाब, नमस्ते कहि के नमस्कार विच सरनाईआ। तन्द सतार वजा रबाब, रबीउल अमाम तेरी सरनाईआ। तेरा प्यार बिन अहिबाब, सज्जण मीत नज़री आईआ। लेखा वेख नानक नाल बग़दाद, बग़लगीर परदा देणा उठाईआ। दस्तगीर होणा दस्तयाब, आफ्ताब नूर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार सांझे यार परवरदिगार दरगाह साची हकीकत हक सालाहीआ। सति कहे सति धर्म दा बख्श सलूक, सालस आपणा नाम रखाईआ। नूर कर काया कलबूत, काअबा इक्को इक्क वखाईआ। तेरा हुक्म इक्क मजबूत, चौदां तबक ना कोए तुड़ाईआ। पिछला लेखा कर मौकूफ़, मसरूफ़ आपणे नाल कराईआ। खतरा रहे ना कोई ख़ौफ़, भय डर ना कोए जणाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पतिपरमेश्वर सब दा ख़ौंत, ख़ावंद इक्को धुरदरगाहीआ। सच दवारा जाणा पहुंच, बेपहचान आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर तेरी आस रखाईआ। सच दुआर कहे मेरे मालक सुल्हकुल, कुल आलम तेरा राह तकाईआ। सदी चौधवीं सब दा लेखा दे विच कीमत मुल्ल, मुल्लां शेख़ मुसायक नेत्र नैण अक्ख खुलाईआ। साहिब स्वामी पुरख अकाल इक्क अनभुल्ल,

७५६
२०

भरम विच भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आबेहयात अमृत रस निजर धारों सब दी गया डुल्ल्, बूँद स्वांती मुख ना कोए चुआईआ। बिन किरपा चार कुण्ट रही रुल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मानव बूटा धर्म दा गया हुल्ल, फल नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी गृह मन्दिर आपणा परदा दे उठाईआ। सच कहे मेरे महबूब, मुहब्बत विच महिव तेरा राह तकाईआ। मंज़ल दस्स उच्च अरूज, अर्श फर्श तेरी सरनाईआ। कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, जड़ ममता देणी उखड़ाईआ। सांझी कर सर्ब हदूद, शिरक्त अंदरों देणी मिटाईआ। जहां तहां दिसे मौजूद, हाज़र नाज़र नूर इलाहीआ। तेरी मंज़ल इक्क मक्सूद, मकसद सब दा हल्ल कराईआ। तेरा नूर बिन वजूद, बिन तत्तां करे रुशनाईआ। पैगम्बर देण सबूत, नबीआं नाल गवाहीआ। लेखा वेख जगत मख़लूक, ख़ालक ख़ालक परदा लाहीआ। दीन दुनी तेरी मतलूब, मुतल्ला कर दे समझाईआ। कुछ लेखा लहिणा देणा झगड़ा पैणा मग़रब विच जनूब, जनाबेआली आला इक्क हुक्म सुणाईआ। हज़रते हज़रताने इक्क खतूत, बिन अलिफ़ ये लिखाईआ। जिस नूं समझे ना कोई कलबूत, कलमा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तबस्समे तलाज़ीने ज़वीउल ज़लाए ज़ाने ज़ूत, ज़िबे
७५७ ज़ाने बेपरवाहीआ। आसी ने नशे कूत, कुशताने, पुश्ते, चू, चाशे, ज़ज़ी, जवेज़ोर, ज़ीज़ा, ज़िआरे ज़ाहरे ज़हूरे नूरे ७५७
२० नुरान नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा दरे दर दरबार २०
दीराने इक्क दरसाईआ।

★ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ दरगाह हज़रत बल, आसार शरीफ़, मौलवी अब्दुल कबीर दे साथ श्री नगर ★

शुक्रिए अंदर मेहर महबूब शुकराना, शिकवा रहे ना राईआ। परवरदिगार खुदा वाहिद किसे ना समझे बेगाना, शिरक्त अंदरों बाहर कढाहीआ। रहमत विच रैहम कदमां दा करे तिलसमाना, नूर नूर नूर रुशनाईआ। ख़ालक दा ख़लक मख़लूक दा मालक साहिब साहिब इक्क सुल्ताना, दूजा जुज़ वण्ड ना कोई वण्डाईआ। अमृत दा अमृत इक्क निशाना, आबेहयात हयाती दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शुक्रिए अंदर शुकरीआ दए समझाईआ। शुक्रिए अंदर करो शुकर गुज़ार, गुज़ारश विच वड्याईआ। हज़रत मुहम्मद साहिब कर के गए इज़हार, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। सदी चौधवीं अमामां दा अमाम मैहन्दी होवे अवतार, सिक्दार सब दा नज़री आईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सांझा करे प्यार, द्वैत रहिण कोए ना पाईआ। वाहिद कलमा पढ़े कायनात, वाहिद नूर इक्क रुशनाईआ। सब दी इक्की होवे जमात,

वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। मुक्दस धाम मिलण दा होया इत्तफाक, नफ़ाक अंदरों देणा कढाहीआ। ख़ुदावंद करीम रहमत विच बख़्शे इत्तफाक, मूए मुबारक सब नूं दए सालाहीआ। वेला वक्त सुहञ्जणा आज, सूफ़ीआं नाल सूफ़ी मिल के ढोला गावण बेपरवाहीआ। शुक्रिए विच परवरदिगार दा इक्क अदाब, सीस इक्को इक्क निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख के दरगाह साची धुरदरगाही दा दरे दरबार ख़ुशी मनाईआ। सच शुकराने दा एह सबूत, सबर सबूरी इक्को नज़री आईआ। नूर उपजे इक्को काया काअबे कलबूत, कलमा इक्को इक्क शनवाईआ। हक ख़ुदा सब दा महबूब, मालक बेपरवाहीआ। जिधर वेखो ओधर मौजूद, इन्सान इन्सानां नाल मिलाईआ। जो कदे ना होवे नेस्तोनाबूद, आबरू सब दी लए बचाईआ। थोड़े समें तक दीन मज़्ब दी मेट देवे हदूद, रंग इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ।

७५८
२०

मज़्ब सिखाता है ख़ुदा के आगे करो दुआ, रहमत मंगो धुरदरगाहीआ। मेहरवान महबूब कदे ना करे जुदा, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दा सांझा प्यारा इक्क ख़ुदा, ख़ुदी अंदरों दए कढाहीआ। कदमां उत्तों होवो फ़िदा, फ़ैसला हक दए सुणाईआ। ओस दे कलाम दी इक्क सदा, कलमा हक हक जणाईआ। वाहिद मालक सब दा अब्बा, नूर नूर विच्चों वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे के सच मुहब्बत दा मज़ा, रस अनरस दए वखाईआ।

पवित्र नाम आप दा अब्दुल कबीर, किबल अज़ देणा जणाईआ। कवण वक्त कायनात शरअ टुट्टे ज़ंजीर, वाहिद कलमा लैण गाईआ। सारी दुनिया दा सांझा होवे इक्को पीर, पैगम्बर नूर ख़ुदाईआ। दस्से इक्क तदबीर, तरीका धुरदरगाहीआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, इक्को रंग रंगाईआ। साचा कलमा पढ़े तकबीर, तबअ अंदरों दए बदलाईआ। ज़िबह करे ना कोए शमशीर, शमां नूर करे रुशनाईआ। की खेल होणा सदी चौधवीं अख़ीर, हज़रत मुहम्मद साहिब गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुलाईआ।

★ मौलवी अबदुल कबीर ने उत्तर दिता ★

जनाब पूरन सिँघ जी महाराज से आज दरगाह शरीफ़ में मुलाकात हुई और हम नहायत खुश हूए और उन के साथ जो रुकन थे वोह भी काबले ज़िकर और काबले मुलाकात थे। मैं आज के दिन को खुश नसीब समझता हूं कि मुझे आपणे मुहतरम महाराज पूरन सिँघ जी से मुलाकात हुई और वहिदतउलवजद का मसला नहायत अच्छे तरीके से अदा फ़रमा कर तमाम कायनात के इतहाद का दरस दीआ है। खुदा सब इन्सानों को इतहाद की तौफ़ीक बख्शे और सरदार हज़रातों को मुस्लिमानो के साथ नहायत वाबस्तगी है क्योंकि बाबा फ़रीद मीआं मीर उन के मुकम्मल तलूकात गुरू ग्रन्थ साहिब में मौजूद हैं और मुफ़स्सल मज़कूर हैं। आखिर मैं महाराज पूरन सिँघ और उन की जमात का शुकरीआ अदा करता हूं कि उनहों ने मुझे मुलाकात का शरफ़ बख्शा है।

★ महाराज जी वलों सवाल ★

क्या आप ने देखा है ज़लवागर का उह दरबार, जित्थे नूर नूर रुशनाईआ। वाहिद करे सूफ़ीआं दा इंतजार, हज़रतां राह तकाईआ। बिना गुलशन तों रहे बहार, महबूब आपणा वजद दए वखाईआ। अल्ला हू दा इक्क जैकार, नाअरा धुरदरगाहीआ। मिले मेल कदीमी यार, जो कुदरत दा मालक नज़री आईआ। एका कलमे दा करे इज़हार, लेखा मुकाए बिन कलम शाहीआ। ओस दरबार दा करो कुछ इज़हार, जो वेख्या नूर इलाहीआ। साची दरगाह जे लै के गए तशरीफ़, जलवा जलवे विच समाईआ। ओस दी करो तारीफ़, सिफ्तां नाल सालाहीआ। किस प्यार मुहब्बत विच लग्गी प्रीत, कवण तरीका ल्या अपणाईआ। साचा काअबा तक्क के हज़रत हज़ूर वाली मसीत, मसला इक्को सुणया जिस दा मसाहिल जगत ना कोए समझाईआ। सिलसले वार दस्सो तरतीब, अजीब की खेल नूर अलाहीआ। जिस दी पीर पैगम्बर हज़रत हज़रात सारे सजदयां विच पढ़दे ईद, ईदगाह अकीदत वाली नज़री आईआ। ज़रा ओस दी करो ताअईद, जे दरबार वेख्या धुरदरगाहीआ। जे खुदा दे बणे अज़ीज़, आलीशान दयो समझाईआ। सब नूं आ जावे तमीज़, हुक्म इक्को दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुछ अगला लेखा वेख वखाईआ। साची दरगाह दा जे कीता दीदार, दीदा दानिस्ता वेख वखाईआ। की गुलशन दिसे गुलज़ार, की महक महक महकाईआ। की खेल करे मुहम्मद यार, हज़रत चहुं यारां वण्ड वण्डाईआ। अल्ला हू अकबर इक्क आवाज़, निमाज़ विच निवाज़श दए वखाईआ। ज़रा खोल्ह के दसो आग़ाज़, की मरतबा बेपरवाहीआ। की

७५६
२०

होवे ओथे आदाब, कवण सजदा सर सिर झुकाईआ। महिबान बीदो बीखैर या अल्ला इलाही नूर नज़री आईआ। जो सदा सदा सुल्हकुला, सल्लल आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दा लेखा वेख वखाईआ।

फिर फिर आमीन, आमद विच राह तकाईआ। दिल विच दिल दा यकीन, यक इक्को नज़री आईआ। खुदा दी हक तालीम, नबी तुलबिआं करे पढ़ाईआ। मालक धुर कदीम, कुदरत दा नज़री आईआ। हज़रत दा दवारा अज़ीम, आलीशान सोभा पाईआ। बण के इक्क दस्से मस्कीन, मश्वरा लैणा पकाईआ। जिस दी हुन्दी सदा तलकीन, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। उह सदा सदा फिर फिर लेखा इक्क दा दो ते दो दा इक्क अमीन, आमल कामल तुआरफ़ विच मुरीद मुर्शद जोड़ जुड़ाईआ। मुरीद मुर्शद होवे तलूकात, नूरे चश्म नूर रुशनाईआ। सांझा करे जज़बात, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस दा लेखा सिफ्तां विच लिख्या जाए कलम दवात, शाही अलिफ़ ये वण्ड वण्डाईआ। सो मालक सब दे साथ, इक्को नज़री आईआ। अज्ज दी याद रखणी जमात, शबे रोज़ अगम्मी रात, कायनात सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सर्ब वाक्यात, वाकिफ़कार दीन दुनी नज़री आईआ।

हम दुआ करते हैं दुआए अज़ीर, आज़म अज़ीम बेपरवाहीआ। जो कायनात करे तअमीर, ख़ालक ख़लक मख़लूक धुरदरगाहीआ। वोह सुलाह करे कश्मीर, कशमकश दए गवाईआ। मेहर करे मेहरवान महबूब बेनज़ीर, नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ। सब दी बदल देवे तकदीर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब बणन भाई भाईआ। सब दा मालक इक्को वाहिद खुदावंद करीम, जिस नूं अल्ला राम वाहिगुरू कहि के सारे रहे गाईआ। सारे ओसे दे अज़ीज़, अंदर बख्शे इक्क तमीज़, तमअ कूड़ी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत मंगे रैहम करे मालक धुरदरगाहीआ।

★ दरगाह शरीफ़ विच इक्क मुस्लमान ने दुद्ध दिता उस परथाए ★

बगैर चीनी से मिठ्ठा आया स्वाद, मिठ्ठत मिली बेपरवाहीआ। प्यार मुहब्बत दा गृह रहे आबाद, खुशीआं रंग रंगाईआ। हकीकी मिले दाद, लाशरीकी राह वखाईआ। खुदावंद करीम तुहाडी करदा रहे इमदाद, मेहर नज़र नज़रे न्याज़ देवे झोली

पाईआ। आप के घर का दूध है गोका, सफैद सोहणा नज़री आईआ। उच्ची कूक दयो होका, हज़रत इक्को मन्नो नूर खुदाईआ। जिस दा वक्त आ गया मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। ग़फ्लत विच रहे कोई ना सोता, निंद्रा लैणी खुल्हाईआ। संदेसा देवे चौदां लोका, चौदां तबकां वज्जे वधाईआ। अग्गे होवे ना रूपोशा, परदा नकाब सब दे अंदरों दए उठाईआ। सदी चौधवीं परवरदिगार मिलण दा सब नूं मौका, मुकम्मल हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल ख़लक विच प्रगटाईआ।

★ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ मुस्लिमान दरवेश नाल मन्दिर खीर भवानी श्री नगर ★

खेल निराला वेखो अजब अजीब, अजब तरह समझाईआ। हिरदे अंदर दे तहिज़ीब, तरीका दिता दृढ़ाईआ। बाहरों मुफ़लिस दिसे ग़रीब, अंदर मुहब्बत नूर अलाहीआ। पिछला लहिणा दिसे कदीम, पूरब लेखा नज़री आईआ। भगतां दा भगती विच यकीन, यके बाद दीगरे होए सहाईआ। जन्म जन्म दी हुन्दी रहे तक्सीम, वण्ड तत्तां वाली वखाईआ। धुर दी धार सदा महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। महबूब लेखा फिर आमीन, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। आदि शक्ति खेल नवीन, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। नूर अन्तर निरंतर नूर प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। साचे मण्डल अगम्मी रास, गोपी काहन खुशी मनाईआ। निराकार जोत प्रकाश, वेखे थाउँ थाँईंआ। परदा खोल्हे पुरख अबिनाश, धुर दा मालक इक्क अख्वाईआ। पंडत जी कुछ साची दस्सो गाथ, अर्थां विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा वेख वखाईआ। की धार आदि शक्ति भवानी, दुर्गा इष्ट देव अख्वाईआ। की चतुर्भुज नूर नुरानी, शस्त्रधारी सोभा पाईआ। सिँघ अस्वार सदा जवानी, जोबनवन्ती वड वड्याईआ। की भेंटा मंगे कुरबानी, सेवा कवण रूप समझाईआ। की लेखा रखे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा बन्धन पाईआ। की मंज़ल देवे रुहानी, आत्म ब्रह्म परदा लाहीआ। की लेखा लिखे कलम निशानी, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। की वेदां वेखे प्रभू दी मेहरवानी, परदा इक्क उठाईआ। मार्ग वेखो इक्क आसानी, असल इक्क समझाईआ। बोध विद्या दिसे दिसो विद्वानी, लेखा अगला देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल खेले धुरदरगाहीआ। साची भूमिका वेखो अस्थान, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। क्यों होई परवान, मिली माण वड्याईआ। प्रगट की निशान, निशाने दयो समझाईआ। किस बिध इष्ट होया प्रधान, मिली माण वड्याईआ।

सृष्ट दा की ज्ञान, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। वशिष्ट राम दी की पहचान, तन सरीर तों बाहर करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर सोहे मकान, शिवाला मठ्ठ वज्जे वधाईआ। किस बिध भगती मिले दान, भगवन झोली पाईआ। मुहब्बत विच प्यार दा दस्सो ज्ञान, निरंतर अन्तर दृष्टी परदा रहे ना राईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ तेज भान दे गृह पिण्ड शेख़सर बख़्शी नगर मारकीट ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरे शहिनशाह शाह सवार, शाही धुर दी देणी वखाईआ। एकँकार चरण कँवल करां निमस्कार, नमस्ते सीस जगदीस झुकाईआ। करनी दे करते पुरख करतार, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। दर ठांडा वेख दरबार, दरगाह साची सीस झुकाईआ। बेनन्ती अरज़ रिहा गुज़ार, गुजारश विच शनवाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, उजाला होवे जगत लोकाईआ। मैं बणां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। आपणा रंग रंग करतार, कुदरत तेरी नूर खुदाईआ। तेरे प्रेम दा होवे जैकार, आत्म ब्रह्म समझाईआ। कूड़ी क्रिया कर ग्रिफ़तार, हुक्म धुर दा इक्क समझाईआ। मैं ममता देणी मार, मर्द जन इक्क वड्याईआ। तोहफ़ा दे परवरदिगार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सति धर्म दा होए विहार, विवहारी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग कहे पुरख अकाल बख़्श दर ठंडा, सीतल धार इक्क प्रगटाईआ। आत्म परमात्म परम पुरख दे अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। सच प्रकाश नूरी जोत वखा चन्दा, ब्रह्मण्ड खण्ड होए रुशनाईआ। भेव खुल्हा हँ ब्रह्मा, ब्रह्म हँ देणा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा होवे छन्दा, संसा कूड़ा देणा गवाईआ। टुट्टी धार पा गंढ्ढु, गहर गम्भीर आपणा जोड़ जुड़ाईआ। मन वासना मेट दंगा, विभचार रहे ना कोए लड़ाईआ। तेरा नाम अगम्मी खण्डा, खड़ग इक्को नज़री आईआ। जिस नूं समझे कोई ना बन्दा, बिना बन्दगी भेव ना कोए खुल्हाईआ। हरिजन रहे कोई ना गंदा, दुरमति मैल देणी धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ राम प्यारी दे गृह पिण्ड बदी पुर ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैं मंगां धर्म दवार, ओट तेरी इक्क रखाईआ। चार वरन होवे प्यार, द्वैत अंदरों देणी कढाहीआ। शरअ छुरी ना कोई कटार, शक रहे ना कोई लोकाईआ। तेरा नूर होवे चमत्कार, अहिमक मूढ़ देणे मिटाईआ। गुलशन खिले

सो बहार, गुल भगत लैणा प्रगटाईआ। दर तेरे होवे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरी मुहब्बत दा तल्बगार, राह तेरा इक्क तकाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, सति सतिवादी हो सहाईआ। सतिजुग कहे मैं ढहि प्या दवार, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर इक्को देणा सुहाईआ। सतिजुग कहे मेरे परम पुरख अबिनाशी, अबिनाशी तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बन्द ख़लासी, बन्दना आपणी दे समझाईआ। साचे मण्डल पा रासी, आत्म परमात्म गोपी काहन रूप बदलाईआ। हउँ सेवक तेरा दास दासी, सच दवारे सेव कमाईआ। मनसा पूरी कर आसी, असल आपणा आप वखाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़या घाटी, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम मुके (वाटी), पैंडा पन्ध देणा मुकाईआ। सतिजुग सच चलाउणी गाथी, गहर गम्भीर आप सुणाईआ। मैं मन्ना तेरी आखी, आख़र निउँ निउँ लागां पाईआ। उत्तम स्रेष्ट भगतां होवे ज़ाती, ज़ात आपणी नाल मिलाईआ। दिवस रैण रखीं प्रभाती, संध्या रूप ना कोए बदलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कमलापाती, सचखण्ड निवासी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम कलमा इक्क होवे सफ़ाती, जज़बा जज़बाती आपणा देणा प्रगटाईआ।

७६३
२०

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शिव सिँघ बख़्शी नगर मारकीट पिण्ड शेख़ सर वाला जम्मू ★

सतिजुग कहे प्रभ निरगुण धार बण साकी, सगला संग बणाईआ। मैं मन्नां तेरी आखी, निर्धन हो के सेव कमाईआ। परदा खोल्ह ताकी, ओहला दे चुकाईआ। मेला मिला मानस तत ख़ाकी, ख़ालस आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्तर बदल दे हयाती, आबेहयात जाम प्याईआ। चरण प्रीती बख़्श नाती, नाता तुट्टे कूड़ लोकाईआ। लेखा हिसाब रहे ना बाकी, पूरब देणा चुकाईआ। आत्म ब्रह्म तेरी जाती, पारब्रह्म सरनाईआ। हउँ सेवक दासन दासी, दर दवारे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचा सोभा पाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ राम चन्द दे गृह बख़्शी नगर मारकीट जम्मू ★

सतिजुग कहे आपणे नाम दी दे मस्ती, मसरत अंदर दे वखाईआ। तूं मालक फ़र्शी अर्शी, आहला अदना लए उठाईआ।

मैं मन्ना रज़ा तेरी मर्ज़ी, मर्ज़ कूड़ी देणी मुकाईआ। बिरहों वैरागी बणना दर्दी, दरदवंद तेरी सरनाईआ। मेरी मन्ज़ूर कर अर्ज़ी, आरज़ू ख़ाहिश दिती वखाईआ। सति धर्म दी कला होवे चढ़दी, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्ट सबाई ढोला होवे पढ़दी, पतित पावन तेरा इक्को नाम ध्याईआ। सार पावीं घर घर दी, गृह गृह खोज खुजाईआ। तेरी खेल नरायण नर दी, अवतर आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दरबारा इक्क सुहाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गुरदित सिँघ दे घर छम्ब वाला ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे किरपा कर प्रभ गुणवन्ते, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। असीं तेरे दर दे मंगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगते, हरि दवारा इक्क वखाईआ। जिस दवारे भगत सुहेले लँघदे, सन्त साजण मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़े रहिण ना बुद्धी मन दे, ममता मोह देणा मिटाईआ। प्रकाश दे अगम्मी चन्न दे, नूरी चन्द होवे रुशनाईआ। सरोते
७६४ रहिण ना जगत मन दे, अनहद अनादी धुन देणी उपजाईआ। सतिजुग साचा बेड़ा बन्नृदे, बन्नृणहार तेरी वड्याईआ। जोती ७६४
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दवारे आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे दे नाम
२० दलासा, दिलदार दिलबर आपणी दया कमाईआ। परम पुरख मेरी पूरी कर आसा, तृष्ना देणी गवाईआ। लहिणा देणा २०
चुका मस्तक माथा, लेखा अगला झोली पाईआ। चार वरन अठारां बरन गावण तेरी गाथा, अक्खर इक्को देणा पढ़ाईआ। मंज़ल मंज़ल मुके वाटा, पाँधी पन्ध ना कोए फिराईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राता, सति धर्म सच कर रुशनाईआ। हउँ बालक अनाथ अनाथा, दीनन हो के दीन दयाल आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी कर बन्द ख़लासा, धुर दी बन्दगी विच जगत मछन्दगी दे गवाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ ख़ज़ान सिँघ दे गृह रणबीर सिँघ पुरा ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे किरपा कर धुर दे राम, रहमत विच कलयुग दे बदलाईआ। निगाहबान हो धुर दे शाम, शाम अन्धेरा दीन दुनी दे मिटाईआ। नाम संदेसा दे अगम्मी पैग़ाम, पैगम्बरां दे मालक हुक्म सुणाईआ। तेरा नाम निधाना मिले हकीकी

जाम, मन वासना माया ममता मोह दे मिटाईआ। भाग लगा काया माटी चाम, मानव जाती मिले वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी साची करे ना कोए पहचान, परदा अन्तर ना कोए उठाईआ। जूठ झूठ कूड़ी क्रिया सारे होए गुलाम, गुरबत अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। गृह गृह दिसे चार वरन हराम, अठारां बरन देण दुहाईआ। साचा सजदा करे ना कोई सलाम, डण्डावष्त बन्दना सीस जगदीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ बख़शिस कर धुर दे मीत, मित्र प्यारे तेरी ओट तकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा एका तेरा नाम ढोला होवे गीत, हर हिरदे अंदर आपणा नांउं देणा चमकाईआ। जगत वासना झगड़ा मुका मन्दिर मसीत, काया काअबा एकँकार इक्को देणा वखाईआ। सति धर्म दी चले साची रीत, तूं मेरा मैं तेरा ढोला जीव जंत साध सन्त इक्को इक्क गाईआ। सच दुआर एकँकार बख्श आपणी हक प्रीत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार परदा अंदरों देणा उठाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात ऊँच नीच, राउ रंक दीन मज़्हब क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोई वण्डाईआ। साचा कलमा इक्को दस्स हदीस, हज़रतां दे हज़रत हाज़र हज़ूर भेव देणा चुकाईआ। डण्डौत बन्दना इक्को होए जगत जगदीस, दूसर सिर ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी मेहरवान महबूब मुहब्बत विच तेरा नाम ढोला गीत कलमा इक्को गाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेहरवान हो निगाहबान, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट शैतान, शरअ विच्चों दीन दुनी बाहर कढाहीआ। साची मंज़ल दस्स आसान, रहमत विच आपणा राह वखाईआ। नाम निधाना श्री भगवान सुणा बिना कान, धुन आत्मक आपणा नाद कर शनवाईआ। दीपक जोत जगे घट स्वामी तेरा इक्क महान, तेल बाती कमलापाती लोड़ रहे ना राईआ। बुध बिबेक होवे जीव जगत जहान, मलेछ रहिण कोए ना पाईआ। शब्दी सुरत सुरत शब्द मेला होवे गोपी काहन, घनईआ नईआ आपणी दे चलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्त मेट निशान, निशाने कूड़े दे चुकाईआ। साचा मार्ग कर परवान, परवाना आपणा नाम दर दर दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा तेरी आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ वेख दीन दुनी अन्ध, सति धर्म नजर कोए ना आईआ। नूरी चमके कोए ना चन्द, सूर्या चन्न सीस निवाईआ। साचा ढोला दस्स इक्को छन्द, शहिनशाह कर पढ़ाईआ। खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को देणी समझाईआ। हउमे हंगता हँकार विकार द्वैती ढाह कंध, ममता मोह दे चुकाईआ। परदा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा रूप देणा दरसाईआ। चिन्ता मिटा हरख सोग ग़म, गहर गम्भीर

७६५
२०

बेनज़ीर आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ वजूद तन, शरअ ज़ंजीर दे कटाईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक बख़्श इक्को धन, धर्म दुआर दे वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सति धर्म दा बेड़ा बन्न्, कलयुग कूड़ी क्रिया आपणे वहिण देणी वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आसा मनसा धुर दी पूर कराईआ। सतिजुग कहे प्रभ पूरी कर आसा मनसा, मन ममता रहे ना राईआ। जन भगत धार बणा सोहँ हँसा, सति सतिवादी आपणा परदा दे उठाईआ। जगत विकार रहे ना हंगता, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। बोध अगाध बण के पंडता, निरअक्खर आपणा देणा जणाईआ। दर दरवेश हो के मंगता, झोली रिहा डाहीआ। सच प्यार दे अनन्द दा, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। लहिणा देणा मुका कलयुग कूड़ी क्रिया गंद दा, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर तेरा हुक्म होवे मन्नदा, सीस जगदीस सके ना कोए उठाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी पंज तत तन दा, चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह, दर तेरे अलख जगाईआ। सतिजुग कहे किरपा कर मेरे साहिब सतिगुर, पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर धुर, धुर मस्तक लेखा दे बणाईआ। कौल इकरार याद कर जो गोबिन्द नाल कीते अनन्द पुर, पुर अनन्द विच्चों परदा दे चुकाईआ। तेरा राह तक्कण देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे अक्ख खुल्ल्हाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी निरगुण धार विच्चों आपे तुर, तुरत आपणा मेल मिलाईआ। तेरा मंत्र नव नौ चार फ़ुरना जाए फुर, मन वासना चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग अन्तिम तेरी लोड़, लोचन नेत्र लोयण अक्ख दिब अंदरों देणा खुल्ल्हाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म विछड़यां लैणा जोड़, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लै मिलाईआ। लहिणा देणा मुके कलयुग अन्धेरा घोर, गृह मन्दिर काया अंदर कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान निरगुण निरवैर हो के बौहड़, निराकार निरँकार सतिजुग साचा ग़रीब निवाजा दर ठांडे मंग मंगाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ रणीआं राम दे घर पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरी निरगुण धार ला जड़्, बूटा धर्म दुआर लहराईआ। निरअक्खर धार तेरी विद्या लवां पढ़, अक्खरां

विच ढोला सिफ्त सालाहीआ। साचे मन्दिर जावां वड़, तत सरीर सोभा पाईआ। भगत सुहेले लवां फड़, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ। अलख जगावां तेरे दर, दरवेश हो के रिहा जणाईआ। किरपा कर नरायण नर, कल कल्की हो सहाईआ। सच नहावां धुर दे सर, सरोवर इक्को देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। सतिजुग कहे मेरा धर्म दा लग्गे बूटा, झक्खड़ अन्धेर पोह सके ना राईआ। तेरे प्रेम दा मिले हूटा, हुलारा इक्को नाम रखाईआ। डंका वज्जे चारे कूटा, कुटम्ब गुरमुख देणे बणाईआ। मैं तेरा पूत सपूता, सुत दुलारा इक्क अख्वाईआ। सृष्ट सबाई वेखणा गली कूचा, घर घर फेरा पाईआ। भाग लगावां काया माटी पंज तत भूता, भाषा आपणी देणी समझाईआ। ख़ाली रहे कोई ना ठूठा, सच सच सदा दयां वरताईआ। नाता तोड़ के जूठा झूठा, धुर दा धर्म दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म कहे मैं मात होवां उत्पत, पतिपरमेश्वर तेरा नाम जणाईआ। सति सन्तोख धीरज देणा सति, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। धर्म प्रीती जोड़ ना नत, साक सज्जण इक्क अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावां गथ, गहर गम्भीर दयां सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करके सत्थ, सत्थर यारड़ा इक्क हंढाहीआ। भगत सुहेले करां वक्ख, लख चुरासी विच्चों उठाईआ। तेरे मिलण दी खुल्ल्हे अक्ख, आखर मंज़ल मिले बेपरवाहीआ। हिरदे इक्क वसाउणा नाम सच्च, सच देणा आप प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी कच्च, कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। लूं लूं अंदर जाणा रच, रचना आपणी देणी वखाईआ। तेरा हुलारा वेखां कमलापति, पतिपरमेश्वर तेरा रूप सच सरूप सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, (महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान), सर्ब कला समरथ, तेरे नाम दी महिमा अकथ, कथ कथ जस वेद पुराणां गाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ सेवा राम दे गृह पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरा मउले पत्त टहणी, महक तेरा नाम नज़री आईआ। भगत भगवान मेला होवे सुरत शब्द हाणी, अहिवाल आपणा देणा समझाईआ। नाम चले चारे खाणी, चारे बाणी सीस झुकाईआ। अमृत जल बख्शे अगम्मा पाणी, पाउण पाणी सोभा पाईआ। मेरी होवे तरल जवानी, जोबन तेरा इक्क हंढाहीआ। साचा धर्म दिसे निशानी, निशाना आपणा देणा वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कट ग़ुलामी, ज़ंजीर शरअ रहे ना राईआ। तेरी महिमा गावां अवामी, अवाम इक्को दयां समझाईआ।

मनसा रहे ना कोए शैतानी, शरअ दयां बदलाईआ। जूह दिसे ना कोए बेगानी, घर घर तेरी वज्जे वधाईआ। जन भगतां मंज़ल मिले रुहानी, रूह बुत्त खुशी बणाईआ। तेरा नूर चश्म असमानी, रहमत मेघ बरसाईआ। जीवां जंतां कट परेशानी, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। तेरा गृह वेखां आलमे जावदानी, मन्दिर धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग देणा चमकाईआ। सतिजुग कहे धर्म दा लाउणा फुल्ल, फुल्ल परफुलत देणा कराईआ। आपणे दवारे पा के मुल्ल, कीमत नाम वाली चुकाईआ। भगत भगवान उपजे साची कुल, कुल मालक होणा सहाईआ। तेरा तैनूं कोई ना जाए भुल्ल, भुल्लयां राह वखाईआ। सच दवारा जाए खुल्ह, घर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे चरण कँवलां मिले धूल, धूल दी धार देणी बदलाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कलौए ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे सच सुगंधी दे खुशबू, दुर्गन्धी बाहर कढाहीआ। पवित्र होवे बुत्त रूह, रहमत तेरी नज़री आईआ। भगत भगवान प्रगट कर हूबहू, हरिजू आपणा परदा लाहीआ। जिधर तक्कां नज़री आवें तूं, तूं ही तूं ही सारे ढोला गाईआ। सिफ्त गीत महिमा गावे मानस मूंह, मुख उजल देणा कराईआ। ख़ाली रहे कोई ना जूह, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। होवे प्रकाश लूं लूं, साढे तिन्न करोड़ रुशनाईआ। मालक इक्को नज़री आवे सतिगुरू, गुरदेव स्वामी बेपरवाहीआ। बिन तेरी किरपा सतिजुग मार्ग कदे ना तुरू, तार सितार ना कोए हिलाईआ। नाम फ़ुरना बिन तेरे किसे ना फुरू, फ़रमांबरदार नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी धारों ख़ालक ख़लक कदे ना मुड़ू, जिंनां चिर आपणा परदा ना दएं उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे नज़री आईआ। सतिजुग कहे मेरे अंदर भर दे रस, रस्ता इक्को दे वखाईआ। पिछला मार्ग होवे बस्स, बस्ते सब दे बन्नू वखाईआ। जन भगतां अग्गे खोल्ह अक्ख, अक्खरां तों बाहर कर पढ़ाईआ। तेरा ढोला गावण जस, सिफ्तां नाल सालाहीआ। चरण दवारे आवण नस्स, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। सच जैकारा बोल अलख, अलख अगोचर तेरी मंगण इक्क सरनाईआ। धीरज सन्तोख देणा तप, (जप) इक्को देणा जणाईआ। जो सरनाई जाए ढठ्ठ, तिस दा लेखा देणा मुकाईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, शहिनशाह नूर खुदाईआ। तेरा तेरे कोलों होवे कदे ना वक्ख, वक्खरे आपणे नाल जुड़ाईआ। सतिजुग दोवें जोड़ के हथ्थ, सीस जगदीस कदमां

उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा धर्म दा खोल्ह हट्ट, वस्त अमोलक आपणी देणी टिकाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड हँसा ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे प्रभ कलयुग कूड़ कुड़यारयां मेट हद्दां, हिरदा सब दा साफ़ कराईआ। धर्म रीती विच संसार वधां, चार वरनां पन्ध मुकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तैनूं इक्को सद्दां, अन्त अख़ीर ध्यान लगाईआ। तेरे हुक्म अंदर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दो जहान बध्धा, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट सृष्ट सबाई दृष्टी अंदर करे दग़ा, ठग चोर यार रूप वटाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी तेरे नाम दा लए कोई ना मज़ा, मज़ाक विच बैठे आपणी पत्त गवाईआ। सच दुआर परवरदिगार धुर दे काअबे करे कोई ना हज्जा, हज़रत हज़ूर जलवा नूर दरस कोए ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ब्रह्म धार तेरा नूर किसे ना लभ्भा, मन मति बुध रही कुरलाईआ। माया ममता मोह विकार जगत हँकार अन्धेर वगा, जूठ झूठ आपणी लहर वखाईआ। साहिब सुल्तान श्री भगवान तेरी चले कोई ना रज़ा, राज़क रिज़क रहीम तेरा भय ना कोए वखाईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान सच वजा आपणा नदा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। कर प्रकाश नौ खण्ड पृथ्मीं सत्त दीप जगह जगह, जागरत जोत डगमगाईआ। जन भगत दर्शन दे उपर शाह रगा, शहिनशाह बज़र कपाटी परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम मेट, मिट्टी ख़ाक छाणे जगत लोकाईआ। माया ममता नाल भरया किसे ना पेट, धीरज धीर सति सन्तोख नज़र किसे ना आईआ। आदि निरंजन करनी दे करते धरनी धरत धवल उपर बण खेवट खेट, जगत मलाह बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सति धर्म जीव जंत साध सन्त जगत वासना विच बैठे वेच, काया माटी ख़ाली भाण्डे देण दुहाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन बरन मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर तीर्थ तट आण के वेख, नारी पुरुष नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। जगत विकारी हँकारी बणया भेख, सति धर्म दा राह ना कोए प्रगटाईआ। सति स्वामी कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया बदल दे रेख, ऋषी मुनी आपणी धार देण दुहाईआ। तेरा सोहणा लग्गे सति सतिवादी इक्को सम्बल देस, जिस गृह मन्दिर अंदर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणी बेनन्ती धुर दी आरज़ू गुज़ारश विच कीती पेश, पेशतर पेशीनगोई गुर अवतार पैगम्बर गए जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान

सदा मेहरवान आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहें हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म अंदर तेरी सेव कमाईआ। चरण कँवल उपर धवल डण्डावत बन्दना इक्क आदेस, सजदयां विच आपणा सिर सर झुकाईआ। तेरा राह तक्के विष्न शिव शंकर महेष, शहिनशाह शाह पातशाह आपणा परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर संदेश, साचा नाम इक्क समझाईआ। सतिजुग कहे सुण बेनन्ती इक्क पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा पूरब कर्ज उतार, लेखा पिछला झोली पाईआ। सतिजुग दा साचा नाम तेरा होवे जैकार, हर हिरदे अंदर आपणा नूर देणा प्रगटाईआ। साचा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ काया काअबे कर उज्यार, दीआ बाती कमलापती आपणा आप इक्क प्रगटाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूंद स्वांती बख्श ठंडी ठार, ठाकर स्वामी जन्म जन्म दी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जन भगत सुहेले दीन दुनी दे विच्चों कढु बाहर, ज़ात पात वरन बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निरगुण नूर नूर कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा ढहि प्या सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ किरपा कर मेरे अन्तर, बाहर मंग ना कोए मंगाईआ। तेरा रूप वेखां निरंतर, निगाहबान होणा सहाईआ। वज्जे डंका गगन गगनंतर, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा देणा उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को आत्म परमात्म होवे निरंतर, मन मनसा आपणे विच छुपाईआ। सति धर्म दी सच सलाह बणाउणी बणतर, साचा हुक्म देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया काया कपड़ बदल दे वस्त्र, नील बसन बनवारी बावनधारी नर निरँकारी निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ।

★ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड सई कलां ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे तेरा गावां इक्क सलोक, सोहला सच नाम दृढ़ाईआ। डंका वजा के चौदां लोक, परलोक दयां समझाईआ। पुरख अकाल दी इक्को ओट, ओड़क सब दा पिता माईआ। जिस दा प्रकाश निर्मल जोत, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। दस्से मन बुद्धी दी सोच, अकल चले ना कोए चतुराईआ। मेहरवान हो के दस्से आपणी खोज, महबूब हो के परदा दए उठाईआ। जिस दा भाणा सके कोई ना रोक, हुक्मे अंदर सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा अक्ख खुल्हाईआ। सतिजुग कहे बेपरवाह धर्म दे दाते, दयावान दया आपणी देणी कमाईआ। बख्श अगम्मी आपणी गाथे, गहर गम्भीर होवे पढ़ाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी राते, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ।

सब दा नज़री आवे इक्को पित माते, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। धर्म दवारे जोड़ नाते, नरायण आपणा रंग रंगाईआ। तेरा शब्द बिन तेरी किरपा कोई ना वाचे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा चुका मस्तक धुर दे माथे, मधुर धुन आपणी इक्क समझाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ कुलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैं पिछली वखावां चिट, चिठ्ठी आपणे अंदरों प्रगटाईआ। जिस वेले इस भूमिका उत्ते आए सप्पत रिख, मुनी आपणा फेरा पाईआ। अत्री नूं आपणा वेला गया दिस, भारद्वाज ध्यान लगाईआ। नज़री आया पुरख अकाल इक, एकँकार धुरदरगाहीआ। जिस दी समझे कोई ना थित, वार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पारब्रह्म सब दा पित, पतिपरमेश्वर दए गवाहीआ। जिस दा खेल नवित नित, निरगुण सरगुण हुक्म मनाईआ। सो करवट लै बदले पिठ, नूरी मुखड़ा इक्क चमकाईआ। करे खेल जगत अनडिठ्ठ, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। जन भगतां पावे भिच्छ, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। मनसा पूरी करे इच्छ, निरिच्छत आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। सतिजुग कहे सप्त ऋषी लाया आसण, सति विच समाईआ। ध्यान धर के पुरख अबिनाशण, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाशण, निरगुण सरगुण वज्जदी रहे वधाईआ। भेद खुल्हाया बातन, परदा रिहा ना राईआ। वेस वटा के परम पुरख परमात्म, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जिस नूं समझे कोई ना धर्म सनातन, मज़्हब वण्ड ना कोए वडाईआ। नाता जोड़े धुर दा आत्म, अन्तिम आपणा रंग चढ़ाईआ। धुर दा बणे सज्जण साकण, सरगुण सरबंध आपणे नाल रखाईआ। रूह बुत्त करे पाकन, पतित पुनीत दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नूर करे प्रकाशन, प्रकाशत हो के वेख वखाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बचन सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे सप्त ऋषी बैठे आ, आलम समझ कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गए गा, गा गा खुशी मनाईआ। किरपा कीती बेपरवाह, पारब्रह्म परदा दिता उठाईआ। कलयुग अन्तिम दिता वखा, साख्यात वेस वटाईआ। जोती जाता

नूरी खुदा, खुद आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लहिणा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। चार कुण्ट एका डंक वजा, वरन चार करे पढ़ाईआ। साचा मार्ग इक्क समझा, समझ बुद्धी दए बदलाईआ। लेखा मुका के आदम हव्वा, रवां आपणा आप कराईआ। जन भगत सुहेले लए उठा, चुरासी आसी विच्चों खोज खुजाईआ। धरती धरत धवल दए सुहा, सोभावन्त चरण टिकाईआ। सब दा लहिणा देणा लेखा दए मुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ खेमो देवी दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सतिजुग कहे सप्त ऋषी बैठ के करन सलाह, मश्वरा आपणे नाल कराईआ। वेखो धुर दा इक्क मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी रहे गा, गुर अवतार सीस निवाईआ। सो सब दा पिता माँ, पुरख अकाल सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम वेखो देवे सच्चा नाँ, नांउं निरँकारा आप समझाईआ। जन भगतां होए सहाई थाउँ थाँ, थानंतर परदा दए उठाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां पकड़े बांह, फड़ बाहों गोद उठाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। साचा देवे इक्क मकां, मुकामे हक हकीकत विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे रंग आप रंगाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रेमी देवी दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सतिजुग कहे सप्त ऋषी करन बात, बाहमी नाता जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग वेखणी अन्धेरी रात, पुरख अकाल दिती वखाईआ। झगड़ा दिसे ज़ात पात, दीन दुनी रही कुरलाईआ। धुँदूकार होया आकाश, पाताल परदा ना कोए उठाईआ। राह पवे ना कोई रास, रस्ता भुल्ले कूड़ लोकाईआ। धर्म रहे ना कोए विश्वास, विषे विकार भरी लोकाईआ। सच वस्त ना होवे पास, पासा दीन दुनी उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे रंग रंगत इक्क प्रगटाईआ। सतिजुग कहे सप्त ऋषी करन ध्यान, ध्यानी ध्यान लगाईआ। एका नाम शब्द सुणन सच्चा ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा सर्ब मिटाईआ। शब्द वज्जी सच्ची धुनकान, अनादी नाद सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल होणा महान, महिमा अकथ अकथ दृढ़ाईआ। प्रगट होवे श्री भगवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं समझे ना कोए जीव

जहान, विद्वान रमज़ ना कोए लगाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, पारब्रह्म आपणी धार चलाईआ। भगत सुहेले करे पहचान, सच दवारे आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म देवणहारा दान, दानी दाता इक्को इक्क एकँकार नज़री आईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बेला सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सप्त सुरिख कहिण चंगी दिसी भूमी, सतिजुग धार सोभा पाईआ। जिस नूं समझे ना कोए नजूमी, थित वार ना वण्ड वण्डाईआ। प्रभ खेल करे नामालूमी, परदा आपणा आप उठाईआ। लहिणा देणा चुकाए भगत मासूमी, गुरमुख बाले रंग रंगाईआ। सार पावे ना कोए ऋषी मुनी, मौन धारी देण दुहाईआ। सृष्ट सबाई चोटी जाए मुन्नी, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। कोटां विच्चों थोड़े दिसण प्रभ भगती विच गुणी, गहर गम्भीर गोद उठाईआ। जिन्हां दे अन्तर साचे नाम दी देवे धुनी, धुर दा राग इक्क सुणाईआ। अमृत रस लाए अगम्मा बुल्लीं, जगत तृष्ना प्यास बुझाईआ। फुलवाड़ी इक्को जाए फुल्ली, मौले रुत्त हरि रघुराईआ। भाग लग्गे साची कुल्ली, कलम शाही नाल लिखाईआ। जगत अन्धेरी चारों कुण्ट झुल्ली, झलक करे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे वस्त नाम अनमुल्ली, करनी दा करता आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बंती देवी दे गृह सई कैंप जम्मू ★

अत्री कहे मैनूं साची मिली इतलाह, हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। शब्दी मश्वरे दिती सलाह, हुक्म साहिब दिता फ़रमाईआ। कलयुग अन्तिम दिता वखा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सृष्टी भरी दिसे गुनाह, ऐबां विच लोकाईआ। झगड़ा प्या पुत्तर माँ, पिता पूत करे लड़ाईआ। नार कन्त ना रही हंढा, बेवफ़ा रूप वटाईआ। साध सन्त मन विकारा रहे वधा, हँकार गढ़ बणाईआ। नज़री आए ना किसे खुदा, ख़ादम रूप ना कोए वखाईआ। आत्म सब दी दिसे जुदा, परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल कर इका, स्वतंत्र सुतंत्र करे लोकाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रताप सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ★

भारद्वाज कहे मैं पैंडा वेख्या मुकदा, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। जगत जहान वेख्या (धुक्खदा), धूआँधार लोकाईआ। कोटां विच्चों भगतां प्यार मिले सुख दा, सुखन सुणन धुरदरगाहीआ। नाम लै के एका तुक दा, तुरीआ तों अग्गे डेरा लाईआ। जित्थे पैंडा नहीं योजन कोस दा, हद्द वण्ड ना कोए वण्डाईआ। प्रकाश होवे निर्मल जोत दा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाता जुड़े अबिनाशी ओस दा, जिस दी उस्तत शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे गाईआ। जो दो जहानां हर घट थाँ निरगुण सरगुण हो के पहुंचदा, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्रीती सदा भगतां लोचदा, लोचण नैण अंदरों अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रस देवे आपणी मौज दा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ देवा सिँघ दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

भारद्वाज कहे मेरा भेव खुल्हाया गूझा, रमज़ अंदर दिती लगाईआ। भउ रिहा कोई ना दूजा, दुतीआ धार ना कोए बणाईआ। पिछला लेखा कर के मूंधा, नैण मूंद दिती वड्याईआ। भेव खुल्हा के बुत्त रूह दा, रूह तों परे दिता समझाईआ। जित्थे वसेरा निरगुण धार हूबहू दा, जोती जाता डगमगाईआ। ओथे हिसाब किताब नहीं किसे गुरू दा, अक्खरां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। शब्द संदेशे विच किहा तैनूं खेल वखावां कलयुग अन्त सतिजुग शुरु दा, शायद विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी करनी आप कमाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ पूरन सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

अत्री कहे अगम्मी धार आई उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण मेरा भेव खुल्हाईआ। हस्स के किहा आ लाडले पुत्तर, पिता पूत गोद उठाईआ। उठ वेख कलयुग पैंडा लग्गा मुक्कण, मुके वस्त जगत पराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां प्रभ जू लग्गा पुछण, हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा लग्गा (मुक्कण), भज्जे वाहो दाहीआ। माया ममता बूटा लग्गा सुक्कण, पत्त टहणी ना कोए लहराईआ। सतिगुर शब्द इक्को लग्गा बुक्कण, भबक शेर नाम लगाईआ। सोहँ ढोला

दस्स के अगम्मी तुक्कन, धुर दा हुक्म रिहा सुणाईआ। सन्त सुहेले आवे गोदी चुक्कण, फड़ बाहों गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ हँस राज दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

अत्री कहे मेरे अंदर आई झलक, झल्ला दिता बणाईआ। मैं तक्कया उपर फ़लक, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मेरे मस्तक लग्गा तिलक, तिल आपणा दिता वखाईआ। जगत खुआरी दिसी ज़िल्लत, कलयुग अन्तिम पई दुहाईआ। साची किसे ना मिले खिल्लत, कपड़ कूड़ जगत हंढाहीआ। प्रेम प्यार रिहा ना मिल्लत, मुहब्बत विच मुहब्बत ना कोए बणाईआ। मन विकार करे इल्लत, शरअ विच लड़ाईआ। नज़री आई इक्को सिम्मत, सच स्वामी दिती समझाईआ। बिन भगतां होवे ना किसे हिम्मत, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मैं निउँ के कीती मिन्नत, सीस दिता झुकाईआ। अन्त रही कोई ना चिन्नत, चिन्ता चिखा विच जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म आप वरताईआ।

७७५ २०

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

भारद्वाज कहे मैं रोंदी वेखी भद्दर, नैणां नीर वहाईआ। कलयुग अन्तिम पूरी होवे किसे ना सध्धर, सधना धार बणे ना कोए लोकाईआ। जगत विभचार दिसे ग़दर, गदा हथ्थ ना कोए उठाईआ। सति धर्म रिहा ना कदर, कुदरत कादर ना कोए मनाईआ। अदालत करे कोई ना अदल, इन्साफ़ सच ना कोए कमाईआ। जगत अन्धेरा छाया बद्दल, धूआँधार करे लोकाईआ। सच प्रेम होया कत्ल, कूड़ प्रधान डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम सब नूं करे मुअत्तल, अग्गे हो ना कोए बचाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ धीरो देवी दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सप्त सुरिख कहिण साडी अंदरों खुल्ही सुरती, सुत्तयां ल्या उठाईआ। धार जणाई पूरे सतिगुर दी, गुरू गुरदेव जिस

नूं सेव करवाईआ। माण वड्याई रही ना देवत सुर दी, सिर सके ना कोए उठाईआ। धुर दी धार कदे ना मुड़दी, अग्गे हो ना कोए उलटाईआ। जगत घाट वेखी सति धर्म थुड़ दी, सच नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी शौह दरयाए जाए रुढ़दी, बाहों फड़ ना कोए उठाईआ। वड्याई मुकी भगत भगवान कुल दी, कुल मालक होए सहाईआ। जो एका कंडे तुलदी, अतोल अतुल तराज़ू आपणे लए टिकाईआ। जित्थे धार नहीं कोई भुल्ल दी, भुल्लयां राह वखाईआ। गुरमुखां फुलवाड़ी फुलदी, मौले रुत्त अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत सृष्टी वखाए रुलदी, साजन सार कोए ना पाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ राजो देवी दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सप्त सुरिख कहिण असीं बदलदी वेखी रेखा, रखीशरां दिता जणाईआ। पुरख अबिनाशी धारया भेखा, वेस आपणा ल्या वटाईआ। सम्बल वस के साचे देसा, साढे तिन्न हथ्थ करी रुशनाईआ। सब दा पूरा कर रिहा लेखा, लेखा लेखे विच्चों लेखे पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां अग्गे रहे कोई ना ठेका, ठाकर आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी सुत दुलारा बेटा, हुक्मरान इक्क समझाईआ। दो जहानां बणे नेता, निक्कयां वड्डुयां वेख वखाईआ। एकँकार इक्को दस्से टेका, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, परदेस आपणे रंग रंगाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ धर्मी देवी सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सप्त रिख कहिण सानूं हुक्म आउँदा, आवे अगम्मी धार। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउँदा, होवे शब्द सच्ची धुन्कार। सच फ़रमाना इक्क सुणाउँदा, दर्शन पावां सांझे यार। चार जुग दा लहिणा देणा चुकाउँदा, लेखा वेखे गुर अवतार। साचा मार्ग इक्क सुहाउँदा, इष्ट मन्नो एकँकार। भगत सुहेले मेल मिलाउँदा, जगत जगदीशर कर विचार। जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाउँदा, टुट्टी गंढ्णहार। निरगुण सरगुण रंग रंगाउँदा, शब्द मिलावा दीन दयाल। दर घर साचा इक्क सुहाउँदा, नाम निधाना वज्जे ताल। भगत वछल आप अखवाउँदा, नर हरि नरायण सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अपर अपार।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ चूड़ सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सप्त सुरिख कहिण साडे अन्तर धार लभ्भी, प्रभ रमज़ दिती लगाईआ। विचार करो परे बुद्धि, जित्थे जगत ना कोए पढ़ाईआ। नेत्र अक्ख करो उच्ची, टिल्ले पर्बत पन्ध मुकाईआ। जित्थे एकम धार होवे सुच्ची, सच सरूप समाईआ। जगत जीव दिसे कोए ना दुखी, दर्द विच ना कोए तड़फाईआ। वस्त नज़र आए कोए ना मुट्ठी, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दिशा दिसे कोए ना गुट्ठी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण नाउँ ना कोए प्रगटाईआ। इक्को पुरख अकाल नाल होवे रुची, मनसा मन ना कोए वखाईआ। नाता प्रेम ना होवे पुत्तीं, साक सज्जण ना याद कराईआ। इष्ट होवे ना काया बुत्तीं, तट किनार ना कोए सुहाईआ। आवाज़ सुणे इक्को तुकी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लहिणा सब दा वेख वखाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ वकील सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

७७७ सतिजुग कहे सति धार वेखी साची ऋषी, रेखा धर्म दी नज़री आईआ। उत्तम होई प्रभ दी सिक्खी, सिख्या समझी धुरदरगाहीआ। प्रेम प्यार दी बण के इक्की, सरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी धार जहान तिक्खी, त्रैभवन धनी वड्याईआ। लेखे लाए धरनी ख़ाक मिट्टी, चरण धूढ़ छुहाईआ। धार अगम्मी बख्श के चिट्ठी, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जगत सुहावणी साची मिती, मित्र प्यारा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाचणहारा आदि मध दी आपणी चिठ्ठी, लेखा वेख के हुक्म सुणाईआ। ७७७

२० २०

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ अंग्रेज सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे कुछ मनसा रखी रिखव देव, अठ्ठां तत्तां ध्यान लगाईआ। किरपा करे अलख अभेव, भेद आपणा दए खुल्हाईआ। सब दी लेखे लावे सेव, सेवक आपणे खोज खुजाईआ। जिन्हां ने गाया रसना जिहव, हिरदे अंदर हद्द बणाईआ। तिन्हां देवे धाम निहकेव, निहचल आपणा घर वखाईआ। रस दे के अगम्मा मेव, तृष्ना भुक्ख दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देव आत्मा परमात्मा आपणे रंग रंगाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ सोभा सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सप्त सुरिख कहिण असां कीती जोदड़ी, जिस्म जान सीस निवाईआ। खेल वेखीए तेरी मौज दी, हुक्म अगला देणा समझाईआ। सारी सृष्टी तैनूं खोजदी, रसना जेहवा रहे गाईआ। किथ्थे खेल प्रकाश धार जोत दी, जोती जाते देणी समझाईआ। मंज़ल दस्स आपणी ओट दी, ओड़क आपणा रंग रंगाईआ। सट्ट उपजे तेरे नाम चोट दी, चोटी चढ़ के परदा लाहीआ। खुमारी दे इक्क मदहोश दी, नाद धुन आपणा नाम सुणाईआ। किस बिध बदली होवे काया माटी पोश दी, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। की खेल होणी कलयुग अन्तिम मातलोक दी, लोक परलोक ध्यान लगाईआ। की महिमा होणी सिफ्त सलोक दी, सोहला धुर दा दे सुणाईआ। की भगती होणी धर्म प्यार जोग दी, जुगती इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा देणा वखाईआ। सप्त सुरिख कहिण की धार होणी विष्न ब्रह्मा शिव सुरपत इन्द दी, इन्द इन्द्रासण दए बदलाईआ। की धार होणी भगत भगवान बिन्द दी, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। की वड्याई होणी भारत हिन्द दी, भेव अगला दे खुल्हाईआ। की सृष्टी उत्ते घड़ी आउणी चिन्द दी, चिन्ता चिखा ग़म सताईआ। किस बिध पूजा मुकणी शिवलिंग दी, शमां जोत नूर होवे रुशनाईआ। की धार उपजणी गहर गम्भीर गुणी गहिंद दी, बेनज़ीर देणा दृढ़ाईआ। की अमृत धार वगणी सागर सिन्ध दी, दर घर साचे सोभा पाईआ। की वड्याई होणी भगतां जीउ पिण्ड दी, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, की बख्शिश होणी साहिब बख्शिंद दी, बख्शिश आपणी देणी समझाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ हरनामो देवी दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सप्त सुरिख कहिण असीं वेखी धार सति संयोगी, विछड़यां रिहा मिलाईआ। पूरब जन्म दे तक्के जोगी, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। साचे रस बणा भोगी, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। चुरासी दा रहिण देवे कोई ना रोगी, जिस बख्शे सच सरनाईआ। सच भण्डारे दा बण के मोदी, मुद्दतां दे ख़ाली दए भराईआ। जिस तारने वेदी सोढी, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। जन भगतां चुक्के गोदी, गोदावरी दा लहिणा पूर कराईआ। बाल अंञाणयां देवे सोझी, सोई सुरत उठाईआ। पन्ध मुका के लोक परलोकी, सलोक साचा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे दे के रोटी, सहारा इक्को इक्क बणाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रेम चन्द दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सतिजुग कहे मैनूं सारे करन इशारे, संकेत बिन अक्ख खुल्हाईआ। प्रभ दे खेल होणे न्यारे, न्यॉंकारी वेख वखाईआ। कलयुग लेखा देवे अन्त किनारे, नईआ दीन दुनी खोज खुजाईआ। सतिजुग साचा धर्म आप उधारे, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जन भगतां करे सच प्यारे, प्रीती आपणी इक्क वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स जैकारे, जीवण जुगत दए बदलाईआ। खुशी मनावण गुर अवतारे, पैगम्बर रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा सब दा जाणे धर्म दवारे, दवारा इक्को इक्क सुहाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ सरदारा सिंघ दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे गुर अवतार पैगम्बर सूफ़ी सन्त फ़कीर सारे गए कहिंदे, कहकहा लगा के खुशी मनाईआ। सीस जगदीश भाणा गए सहिंदे, साह साह हरि हरि नाम ध्याईआ। चरण कँवल सरनाई सारे गए बहिंदे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभ दा खेल होणा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चढ़दे लैहन्दे, चार कुण्ट आपणा डंक वजाईआ। जगत विकारी कूड़ी क्रिया महल्ल वेखे ढहिंदे, मिट्टी ख़ाक खेह उडाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप इक्को गाह वेखे गहिंदे, गहर गम्भीर आपणा हुक्म वरताईआ। जगत हुलारे वेखे कोटी कोट वारी नैं दे, वहिण माया ममता मोह विच वहाईआ। अन्त अख़ीर सच जैकारे वेखे इक्को जै दे, जै जै जैकार करे खुदाईआ। कोटां विच्चों जन भगत थोड़े जोड़े रह गए, रहिबर आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, खेल करे पै दर पै दे, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ राम लाल दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

अत्री कहे मैं सुणया अगम्मी ढोला, हरि शब्द होई शनवाईआ। सब तों वक्खरा निराला बोला, ""सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दी जै"" दिता लगाईआ। मैं सन्तां दा बण विचोला, सब नूं दिता सुणाईआ। पुरख अकाल दा बण के गोला, डंका दिता वजाईआ। दीन दयाल दर बदलदा वेख्या चोला, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सृष्टी अंदर परदा ओहला, भगतां नूर करे रुशनाईआ। नाम निधान बणा विचोला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां इकरार

पूरा करे कौला, कँवल नैण आपणे रंग रंगाईआ। माण वड्याई बख्श के उपर धौला, धर्म दुआर दए वखाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक बण के धुर दा मौला, मलकुलमौत दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अव्वल अवल्ला इक्को नाम समझाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ नानक चन्द दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे सारे करदे गए पुकार, होके हुक्म वाले सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। चार कुण्ट दिसे हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ममता मोह दिसे विभचार, कुकर्म कूड़ लड़ाईआ। नाता तुटे पुरख नार, नार कन्त सेज ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। सतिजुग कहे सारे गए कूक, कुल्ल मालक उत्ते ओट रखाईआ। सदी चौधवीं जगत जहान सोया घूक, जागरत अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। धर्म दवारे (बणया) कोए ना पूत, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। झगड़ा रहे काया पंज तत भूत, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। अमृत जाम किसे ना मिले घुट, रसना रस ना कोए चखाईआ। पुरख अकाल नालों सब दा नाता जाए तुट्ट, बिन भगतां भगवन रंग ना कोए रंगाईआ। जीव जहान भाग जाणे निखुट, साची वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले परम पुरख दे थोड़े दिसणे सुत, अपराधी दिसे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अबिनाशी अचुत चार्तक हरिजन आपणे लए बणाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ रवेला राम दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

पैगम्बर फ़रमान देण हदीसी कलमे, कायनात दृढ़ाईआ। खुद खुदा मात गर्भ कदे ना जन्मे, नूर नुराना नूर करे रुशनाईआ। करे प्रकाश सूफ़ी सन्त फ़कीर मन में, मनसा आपणे विच समाईआ। दीपक जोत जगाए तन में, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। शब्द अनादी राग सुणाए सुरती निरंतर कन्न में, बिन अक्खां कर पढ़ाईआ। आउण देवे कदे चिन्ता (ना) ग़म में, ग़मख़ार होए सहाईआ। रस देवे पवण स्वास दम में, दामन आपणा इक्क फड़ाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म में, चमन गुलशन आपणा इक्क महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म इक्क वरताईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ झण्डू राम दे गृह पिण्ड जिऊड़ीआं ज़िला जम्मू ★

पैगम्बर कहिण असीं सुणाया रोज़े शब, शबीब शबाब इक्क समझाईआ। नूर इलाही रहमानुल रब्ब, रहमत हक कमाईआ। जिस दी धार अहिनल हक, सरमद हज़रत अली गवाहीआ। दोज़ख़ जगत वखाए अग्ग, बहिश्त बहिस ना कोए रखाईआ। आवाज़े ज़ाद लगा के सद्द, नाअरा नूर अलाहीआ। वाहिद वजद मुहब्बत महबूब देवे मदि, नज़रे मेहर कर्म उठाईआ। नूर उज्यार हो के आवे जद, जज़बा आपणा इक्क प्रगटाईआ। कदीम अज़ीम दर समझे कोए ना कद्द, कुदरत कादर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साहिब सुल्तान सूरा सरबग, सबब आपणा इक्क वखाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ शांती देवी दे गृह पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

पैगम्बर कहिण कदीम सुणया नग़मा, अनायत कीती धुरदरगाहीआ। सीस झुकाउणा दस्सया कदमा, कायम आपणा हुक्म कराईआ। सूफ़ी दस्सया निर्धन अदना, आहला अव्वल नूर अलाहीआ। जिस सच सरनाई लग्गणा, लागत करता ना कोए वखाईआ। सच दुआर अगम्मे सद्दणा, सधना निउँ निउँ लागे पाईआ। भाग लगा के काया माटी बदना, बदी अंदरों दए कढाहीआ। सच मुहब्बत प्यार महबूब चाढ़के रंगणा, रंग इक्को दए वखाईआ। जगत जहान पए ना मंगणा, दर दरवेश ना अलख जगाईआ। सच दुआर इक्को लँघणा, मंज़ल मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार ना मरना ना जम्मणा, जोत सरूपी जोती जाता खेल वखाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बेलू राम दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैनूं करदे आए सारे याद, याद विच आसा मात रखाईआ। उच्ची कूक सुणाउँदे आए आवाज़, नाम निधाना राग अल्ह़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं करे आबाद, जड़ मेरी दए लगाईआ। भगत सुहेले सज्जण बणाए साध, साधना अन्तर मेरी आप कराईआ। नाम दे के बोध अगाध, अगली करे सच पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा वजा के नाद, अनहद आपणा राग सुणाईआ। सोई सुरती गुरमुखां जाए जाग, जगजीवण दाता आप जगाईआ। बिरहु दे के इक्क

वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढाहीआ। दीन दुनी दा देवे त्याग, कन्त सुहाग इक्क मिलाईआ। सच सरनाई जावण लाग, चरण कँवल इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा साजण रिहा साज, सज्जण हो के आपणे घर वसाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गुरा राम दे गृह सई खुरद सरदारी कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरीआं मंगदे गए मंगां, दिन रात तेरा राह तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखदे गए दंगा, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। अवतार सुणाउण पिछला छन्दा, नाम सिफ्तां वाला वड्याईआ। नेत्र नीर वहाए गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती धार गंगा छहबर इक्को इक्क वखाईआ। सच दुआर किसे ना दिसे ठंडा, ठाकर दरस कोए ना पाईआ। बिन पुरख अकाल बन्दगी विच पूरा होए कोए ना बन्दा, बन्धन सके ना कोए कटाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंदा, पतित पापी लए तराईआ। सच दवारे देवे इक्क आनंदा, अनन्द आपणा नाम जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर इक्क वसंदा, विश्व आपणा घर बणाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ किशन लाल दे गृह पिण्ड सई खुरद सरदारी कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मुर्शद दस्सदे गए मुरीदां, मुद्दत तों भेव खुल्ाईआ। जिस दीआं मन्नदे गए ईदां, इबादत विच ध्यान लगाईआ। सारे करदे रहिण बकरीदां, छुरी करद उठाईआ। ओस दीआं सारे रखो उम्मीदां, कामल मुर्शद नज़री आईआ। दर्शन देवे दीदां, कायम मुकाम आपणा इक्क समझाईआ। सच धर्म दी दस्से तहिज़ीबा, ताला अंदरों दए खुल्ाईआ। मेल मिलाए सच हबीबां, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। जो लेखा लिख्या कुरान मजीदां, मसला इक्को दए सुणाईआ। साडीआं अक्खरां वालीआं नसीहतां, नसीहत इक्को इक्क रखाईआ। शाही अक्खरां नाल पाईआं लीकां, कागज़ कलम जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं मुकामे हक सब ने भुगतणीआं अन्त तरीकां, अदालत इक्को नज़री आईआ। ओस विच होणीआं हक तौफ़ीकां, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। रूहां रहिण नहीं देणीआं बदीआं वालीआं पलीतां, पाक पाक रसूलां वेस वटाईआ। सूफ़ीआं बख्शे सच वसीहतां, हासल आपणा आप वखाईआ। चार जुग दीआं बदल देवे वलदीअतां, वाहिद वालद इक्को नज़री आईआ।

झगड़ा मुकाके जगत वालीआं मसीतां, काअबा इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दीआं करनहार तस्दीकां, हुक्म आपणा इक्क चलाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ नंदू दे गृह पिण्ड सई खुरद सरदारी कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरा तकदे गए रस्ता, रहिबर रहजन दोवें ध्यान लगाईआ। फोलदे गए अगम्म दा बस्ता, वरका सिफ्तां वाला उलटाईआ। भण्डारा लभ्भदे गए अगम्मी रस दा, परदा ओहला चुक्क चुक्क अक्ख उठाईआ। मैं सब नूं वेख के रिहा हस्सदा, हस्ती प्रभ दी इक्क तकाईआ। खुशीआं विच रिहा नस्सदा, भज्जया चाँईं चाँईंआ। चार जुग रिहा दस्सदा, त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाईआ। सब दा वेला सिफ्तां वाले जाप दा, जगजीवण दाता धुर दा हुक्म मनाईआ। जिस वेले प्रकाश होवे निरगुण धार आप दा, आपणा वेस वटाईआ। मेरा लहिणा देणा होवे पवित्र पाक दा, पुनीता इक्को रंग वखाईआ। हुक्म चले इन्साफ़ दा, अदली अदल इक्क कमाईआ। झगड़ा रहे ना मन गुस्ताख़ दा, ममता मोह दए गवाईआ। लहिणा देणा पूरा होवे गुर अवतार पैगम्बर हिसाब दा, अंकड़े अन्तर ना कोए वखाईआ। एका नूर चमके पुरख अकाल धुर दे महाराज दा, राज राजान सीस ना कोए उठाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवे शहिनशाही ताज दा, तख्त निवासी तख्ता दए उलटाईआ। सजदा हुक्म होवे आदाब दा, अदब विच मख़लूक खुदाईआ। वसल पूरा करे पुन्न सवाब दा, असल इक्को इक्क जणाईआ। मुख़ातब लेखा होवे ख़ताब दा, ख़िदमत सब दी पूर कराईआ। डंका वज्जे इक्क जनाब दा, आहला अदना सीस झुकाईआ। आवाज़ निकले अगम्मी रबाब दा, अहिबाब गुफ़त शनीद करे शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मिल के सच संदेसा इक्को आखदा, आख़र अक्खर इक्क दृढ़ाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवे पुरख अकाल प्रताप दा, जलवा नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम सचखण्ड निवासी आप अलापदा, धर्म संदेसा इक्क सुणाईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ देवा सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ★

सतिजुग कहे दो जहान मेरा श्रद्धालू, श्रद्धा मनसा इक्क रखाईआ। परम पुरख मेरा दयालू, दीन दयाल देवे वड्याईआ।

कृपानिध बणे कृपालू, किरतीआं आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधान दे के धुर दा सालू, सम्बल आपणा घर सुहाईआ। मेरा मार्ग होणा चालू, चार वरन वज्जे वधाईआ। हरि भगत सुहेला साची घाल घालू, धायल हुन्दी वेखां लोकाईआ। अग्नी रेत तपे बालू, बालम नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे परदा लाहीआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ बीबी बचनो दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरा राह तक्कदे पीर फ़कीर, फ़िकरयां विच ढोले गाईआ। मैं कटणी शरअ ज़ंजीर, शायरां दी शायरी देणी गवाईआ। बदल के तकदीर, तदबीर देणी समझाईआ। भेव खुल्हा के बेनज़ीर, नज़रीआं नज़र देणा बदलाईआ। मेल मिला के दस्तगीर, दस्त बदस्त जोड़ जुड़ाईआ। नाम भण्डारा बख्श जागीर, धन दौलत इक्क वरताईआ। आसा मनसा पूरी कर कबीर, कामल मुर्शद इक्को देणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेरा दवारा करे तामीर, पत्थर इट्ट नज़र कोए ना आईआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गूढ़ा राम पिण्ड सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैनूं लोचदे सन्त सज्जण, बण साजण राह तकाईआ। मैं वास कराउणा प्रभ दे धूढ़ी मजन, दुरमति मैल धवाईआ। जन भगतां आवां सद्दण, सद्दा घर घर नाम सुणाईआ। लख चुरासी विच्चों निरवैर हो के आवां लभ्भण, हुक्म मन्न के धुर गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा मालक बेपरवाहीआ।

★ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ कृपाल सिँघ दे गृह सई कैंप ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैनूं उडीकण वड्डे छोटे, ज़िमीं असमान ध्यान लगाईआ। मैं वेखणे खरे खोटे, काया कुटीआ सब दी फोल फुलाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले थोड़े चंगे बहुते, जो प्रभ दा ढोला गाईआ। माया ममता नींद कदे ना सोते, सुरती शब्द विच समाईआ। मंज़ल चढ़ अगम्मी औखे, दर घर साचे सोभा पाईआ। जिस दवारे कोई ना रोके, रुकमणी

कृष्न दी दए दुहाईआ। अजे तक्क ना ओथे पहुंचे, तन वजूद जगत हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण वड्याई देवे ओसे जो उस्तत विच इस्म इक्को इक्क मनाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ दौलत राम दे गृह पिण्ड कोटली राईआं ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मेरा ध्यान लाउँदे गए नाल अक्खां, अक्खीआं वाले आपणी अक्ख खुल्हाईआ। वसेरा कर के कुल्लीआं कक्खां, का खा गा तों अग्गे करी पढ़ाईआ। मैं वेख तमाशा बहु हस्सां, खुशीआं अंदर आपणी खुशी प्रगटाईआ। इक्क सुनेहड़ा सब नूं दस्सां, भेव अगला दयां चुकाईआ। मैं ओस सरनाई चरणां उपर ढठ्ठां, जो ढाह ढेरी सब नूं ख़ाक बणाईआ। जिस ने भाग लगाउणा तत अठ्ठां, आत्म नूर परमात्म आपणा नूर रुशनाईआ। लेखा जाणे गृह मन्दिर स्वामी घर जट्टां, जटा जूटधारी हथ्थ किसे ना आईआ। जैकारा बोल अलखा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जिस दी चार जुग भाख्या देंदे भखा, भविख्तां विच सालाहीआ। उह आपणी धार विच्चों आवे मसां, मस्सया रैण अन्धेरी दए मिटाईआ। जिस नूं खोजदे करोड़ी लखां, अनगिणत ध्यान लगाईआ। उह खेल करे पुरख समर्था, समरथ स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त सब नूं मारे धक्का, धर्म दी धीर ना कोए धराईआ। लेखा मुकावे मदीना मक्का, मकबरे मुर्शदां वेख वखाईआ। झगड़ा मुकावे अठ्ठ सठ्ठां, तीर्थ तटां डेरा ढाहीआ। भय दृढ़ाए मन्दिर मठ्ठां, मसीतां मस्ती ना कोए बणाईआ। माण गवा के रागीआं भट्टां, भटकणा सब दी खोज खुजाईआ। लाटां वाली वेखे जटां, मीढी सीस फोल फुलाईआ। भेख स्वांग रहे ना कोई नट्टां, प्रभ दा भरम ना कोए भुलाईआ। सतिजुग कहे मैं सच दी कीमत सच दवारे वट्टां, झूठ हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। लाहा भगत दवारे खट्टां, भाग गुरमुखां नाल रखाईआ। इस तों अग्गे कुछ नहीं पता, पतिपरमेश्वर की की कार कमाईआ। मैं निक्का नन्हां नढ्ढा इक्को बच्चा, बचपन ओसे दी झोली पाईआ। जिस ने लख चुरासी भाण्डा भन्न्हणा कच्चा, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ। दो जहानां पा के नथ्था, ब्रह्मण्ड खण्ड देणे भवाईआ। गुरमुखां लहिणा देणा देवे हका, हकीकत आपणी इक्क समझाईआ। शाह सुल्तानां मुल्ल नहीं पैणा टका, धरनी धरत धवल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी तीर अणयाला मारे फट्टा, फट्ट घाउ धायल करे जगत लोकाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ प्रकाश चन्द दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैनूं भगत जन करन पसंद, पातशाह शाह दए वड्याईआ। जिन्हां दे अंदर उपजे इक्क अनन्द, सुख सागर काया गागर नज़री आईआ। भगती विच घसाउणे पैंदे नहीं दन्द, सोहँ ढोला गा के मिले बेपरवाहीआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा नहीं पैंदे पन्ध, मुसाफरां सफ़र ना कोए जणाईआ। कूड़ कुड़यारा वेखणा नहीं पैंदा रंग, सच मजीठी आप रंगाईआ। निरगुण धार जोत वेख के चन्द, चमक अहिमकां दए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के छन्द, शहिनशाह मिल के खुशी मनाईआ। परदा रहे ना हँ ब्रह्म, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। माया मोह मेट के मनसा मन, ममता अंदरों बाहर कढाहीआ। जो भगत सुहेला मेरे समें अंदर पए जम्म, जननी जन सोभा पाईआ। तिस नाम भण्डारा मिले धन, धन लेखा लेखे दए लगाईआ। दुखड़ा सहिणा पए कोई ना तन, वजूद वसल इक्क वखाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डा देवे भन्न, भय भउ विच बख्शे सरनाईआ। निरगुण धार साजन बण के हम, हरि सज्जण लए उठाईआ। चिन्ता सोग मेट के ग़म, ग़मखार देवे वड्याईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे प्रकाश नेत्र अन्न्हा, अन्ध अन्धेर रहिण कोए ना पाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ माया देवी दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे मैं कलयुग अन्त वेख्या हैरान, हैरत घर घर नज़री आईआ। मन वणजारा जगत वेख्या बेईमान, बेवा कीती सर्ब लोकाईआ। फिरी दरोही शरअ शैतान, संजम सच ना कोए वखाईआ। ममता मोह युद्ध होवे घमसान, कुटम्ब कूड़ दिसे लोकाईआ। सूरबीर नज़र ना आया कोई नौजवान, खड़ग खण्डा नाम हथ्थ ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे रहे आपणे अन्त ब्यान, भगवन अगे सीस झुकाईआ। साचा इष्ट साडा मन्ने ना कोए विच जहान, दृष्ट अंदरों ना कोए खुल्हाईआ। याद रही ना रसूलां कलाम, असल वसल ना कोए समझाईआ। बरदे बरी हो गए ग़ुलाम, हुक्मी बन्धन जगत तुड़ाईआ। किरपा कर धुर दे इक्क इमाम, अन्त तेरी ओट रखाईआ। चढ़ा आपणा इक्क निशान, निछावर निशाने तेरे उत्तों कराईआ। धुँदूकारा मेट ज़िमीं असमान, गर्दी ग़ुबार रहे ना राईआ। मुहब्बत विच हो मेहरवान, महबूब आपणी दया कमाईआ। भगत सुहेले विच्चों पहचान, बेपहचान नज़री आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे बीआबान, रंगत रंग ना कोए

रंगाईआ। तूं दाता दातार श्री भगवान, साकार निराकार आपणा खेल वखाईआ। धुर दा मार्ग दस्स आसान, आशा सब दी वेख वखाईआ। तेरे उत्तों सारे हुंदे गए कुरबान, करबले विच काअबे वाले सीस निवाईआ। सदी चौधवीं चौदां तबकां ख़ाली दिसे मैदान, वारस वाली सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे देणा दान, नाम निधान आपणा इक्क वरताईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ देवी सिँघ दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे कलयुग पैंडा जाए मुकदा, मुखीआ नज़र कोए ना आईआ। जगत संसार भरया दिसे दुःख दा, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। भाग उदे होवे ना किसे कुक्ख दा, जनणी जन ना कोए वड्याईआ। किसे दा घेरा मुके ना उलटे रुक्ख दा, अग्नी गर्भ ना कोए बुझाईआ। ग़रीब निमाणयां गोदी कोई ना चुक्कदा, चार वरन रहे कुरलाईआ। झगड़ा प्या पिउ पुत्त दा, मात पित दए दुहाईआ। वेला मिले ना किसे सुख दा, सुख़न सारे गए भुलाईआ। पुरख अकाल अगम्मी धारों आपे उठदा, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा आप चुकाईआ। सतिजुग कहे कलयुग हुंदा जांदा बतीत, बीती कहाणी दए दुहराईआ। जगत मानव हुंदा जाए पलीत, पलक खलक ना कोए खुल्हाईआ। झगड़ा वधदा जाए ऊँच नीच, नीच ऊँच नीच ना कोए बणाईआ। माया ममता सृष्टी रही पीस, सिर सके ना कोए उठाईआ। साचा कलमा भुल्लया हदीस, हज़रत हरि ना कोए मिलाईआ। दृष्टी दिसे ना कोई सुरजीत, जीवण मरन समझ किसे ना आईआ। सच दवारे रही ना कोई प्रीत, पतिपरमेश्वर ओट ना कोए तकाईआ। साजण दिसे ना कोई मीत, मित्र संग ना कोए रखाईआ। सिर झुके ना कोई जगदीस, जगत वासना जीव हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम बदल के आपणी पीठ, पासा दीन दुनी वलों बदलाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ लछमी देवी दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे कूक पुकारे जबराईल फरिश्ता, फर्श अर्श मध रिहा कुरलाईआ। हज़रत दीन दुनी टुट्टण लग्गा रिश्ता,

मुहम्मद मुसाहिब हो के रिहा सुणाईआ। सदी चौधवीं वक्त मुकया आहिस्ता आहिस्ता, वेला वक्त नेड़े आईआ। परवरदिगार खेल करे दीदा दानिस्ता, मुकाम आपणा इक्क समझाईआ। लहिणा मुके दोज़ख़ बहिश्ता, लेखा पूरब फोल फोलाईआ। परदा लाहवे रसना जेहवा वाले इष्टा, अक्खर आख़र मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप कराईआ। जबराईल कहे की देवां मैं पैग़ाम, पैगम्बर सजदा सीस झुकाईआ। धुआँधार ज़िमीं असमान, इस्म नज़र किसे ना आईआ। विकार युद्ध होवे घमसान, घुंमण घेर भँवर नज़री आईआ। मैं वेख के होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। सफा उलटदी जाए कुरान, कुाह काया काअबा किबल काबल भेव कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दिसे वैरान, वैरी मुरीद मुर्शद रूप वटाईआ। नदी नूह चढ़े तुफान, मुल्लां शेख तवायफ़ रूप गए बदलाईआ। नज़दीकी दिसे ना कोए महिमान, नाता कूड़ कूड़ होया हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। जबराईल कहे मैं की दस्सां सवाल, जवाब तल्बदारी विच लोकाईआ। मुहम्मद पूरा होण लग्गा ख्वाब, ख्वाब ख़बर रिहा सुणाईआ। परवरदिगार देण वाला आज़ाब, असमत सब दी रिहा लुटाईआ। शाहो भूप बण नवाब, नौबत आपणा नाम समझाईआ। कौल पूरा करे बग़दाद, नानक बग़लगीर वड्याईआ। शरअ हुन्दी दिसे आज़ाद, आजिज़ हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे हुक्म एकँकारा एका वाहिद, अहिद आपणा पूर कराईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ माया कौर दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे पैगम्बर करदे वेखे चर्चा, चर्चा तों परे आपणा आसण लाईआ। परवरदिगार पाया अगम्मी पर्चा, जिस दा हल्ल समझ कोए ना पाईआ। भेव खुल्हाया साडा दरजा, तरतीब वार दिता समझाईआ। आपणा वेखो अगला खर्चा, वस्त गंढु कवण बन्हाईआ। फिरी दुहाई उत्ते फ़र्शां, फ़लक ख़लक कूक कूक सुणाईआ। धुर दा मालक उपर अर्शां, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। सदी चौधवीं सब दीआं पूरीआं करन लग्गा हरसां, हवस सब दी मेट मिटाईआ। जिस नूं याद करदे रहे महीनयां विच बरसां, बरसी आपणी रिहा वखाईआ। दीन दुनी दीआं मेटण वाला मर्ज़ां, तबीब दाता धुरदरगाहीआ। सब दीआं मन्ज़ूर कर के अरज़ां, आरज़ां दा लेखा वेख वखाईआ। मज़्बां दीआं रहिण नहीं देणीआं ग़रजां, उम्मती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलम शाही सांझीआं कर के तरजां, तार सितार देणी हिलाईआ। जिस दीआं दो जहान ग़रजां, आसां

विच बैठे राह तकाईआ। उह साची सिख्या देवे ज़ना मर्दां, ज़ंजीर शरअ आप कटाईआ। कसाईआं कोल रहिण ना देवे करदां, कत्लगाह ना कोए वखाईआ। जुग चौकड़ी कढु के पिछलीआं फ़रदां, फ़ैसले हक दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे घर घर दा, ग्रिहा गृह दर सारे फोल फोलाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे परम पुरख आपणी प्रगट कर इक्क निशानी, निशाने दो जहान बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी जूह दरस के गए बेगानी, सचखण्ड निवासी दरगाह साची आपणी खेल खिलाईआ। तेरा भेव अभेद खोल्ह दे गए शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला सोहला राग सुणाईआ। अन्तिम झगड़यां विच वेख्या चार कुण्ट दहि दिशा चारे खाणी, चारे बाणी सति सतिवादी राह भुल्ली जगत लोकाईआ। सुरती शब्द मिले मेल ना साचे मन्दिर धुर दे हाणी, हिरदे हरि नर नरायण ना कोए वसाईआ। चार वरन अठारां बरन अमृत रस मिले किसे ना पाणी, निजर झिरना बूँद स्वांती मुख ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

★ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ३ भगत सिँघ दे गृह पिण्ड कीर ज़िला जम्मू ★

सतिजुग कहे सचखण्ड तेरा खेल अवल्ला, कामल मुर्शद नज़री आईआ। सतिजुग कहे सच धर्म दा फड़ा इक्को पल्ला, पलक आपणी लै बदलाईआ। भेव खुल्ह्हा अलाही नूर अल्ला, परवरदिगार तेरी करे ना कोए बेवफ़ाईआ। चौदां तबक बिन साचे कलमे सबक होया झल्ला, झलक तेरी नज़र कोए ना पाईआ। जो संदेश नर नरेश भविख्तां विच घल्ला, सो धायल करे जगत लोकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार चार कुण्ट दहि दिशा फला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार दर दरवेश आपणी आस रखाईआ। सतिजुग कहे मेरे दीन दुनी दे मालक, पतिपरमेश्वर तेरी इक्क सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे आदत, अदल इन्साफ़ आपणा इक्क कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म वाहिद दरस इबादत, साचा राह इक्क समझाईआ। ममता मन विकार रहे ना कोई अलामत, इलम आलमां परदा देणा उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर, बेनज़ीर लाशरीक इक्को देणी हक ज़मानत, ज़ामनी अवर

ना कोए भराईआ। तेरा नाउं निरँकार निराकार इक्को होवे सच नयामत, फल अमृत रस देणा चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म कांड दी मेट बग़ावत, बग़लगीर हमसाजण शाहो भूप वड राज राजन रहमत आपणी इक्क कमाईआ।

★ पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द करे ख़बरदारी, सचखण्ड दुआर धुर दी ख़बर बेख़बर सुणाईआ। निरगुण नूर जोत जोत उज्यारी, अकल कलधारी आपणी कार कमाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सच्चा सिक्दारी, भूपत भूप नूर अलाहीआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लेखा जाणे आपणी धारी, भेव अभेदा परदा ओहला आप उठाईआ। नर नरेशा निराकार एकँकारी, बेपरवाह बेपरवाही दए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करो त्यारी, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो हुक्म संदेसा एक, एकँकार दए दृढ़ाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेस, रूप अनूप शाहो भूप लए वटाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जिस दी रखदे आए टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दो जहान श्री भगवान रिहा वेख, दरगाह साची परदा ओहला आप चुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार भगत वछल जन भगतां करे हेत, नेतन नेत दरस दिखाईआ। लोकमात मार झात वेखो अगम्मी इष्ट दा खेल, ख़ालक ख़लक आप खिलाईआ। जोती जलवा नूर नुराना दे के तेज, अप तेज वाए पृथमी आकाश करे रुशनाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आत्म परमात्म गुरमुखां माण के सेज, सज्जण आदि निरँजण दर दवारा एकँकारा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर हरि इक्को इक्क दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर उठो करो त्यारी, त्रैगुण अतीता दए वड्याईआ। लेखा वेखो आपणा वारो वारी, वारता पिछली सर्ब दुहराईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे इंतज़ारी, आमद विच खुशामंद सेव कमाईआ। सो पुरख अकाला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगारी, वाहिद लाशरीक जलवा नूर करे रुशनाईआ। जगत अन्धेरा मेटणहार रात काली धारी, धर्म दवारा इक्क सुहाईआ। लहिणा देणा चुकाए सदी चौधवीं कलयुग अन्त श्री भगवन्त बीस बीसा हरि जगदीसा शाहो भूप वड सिक्दारी, धुर फ़रमाना नौजवाना

मर्द मर्दाना आप दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा लिख ना सके कोई काग़ज़ कलम शाही कातब बण लिखारी, कायनात परदा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट अन्तर निरंतर आपणा परदा रिहा चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात मस, तरीक अन्धेरा नज़री आईआ। किरपा करे पुरख समरथ, पारब्रह्म आपणा वेस वटाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वरनां बरनां विच गाउँदे आए जस, सिफ्तां विच ढोले गीत अलाईआ। सो आपणी धार आदि निरँजण हो प्रगट, एका नूर करे रुशनाईआ। सच दवारा एकँकारा विच संसारा खोल्ह के आपणा हट्ट, वस्त अमोलक धर्म दवारे आप वखाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी गृह भीतर काया मन्दिर आपणा मार्ग दस्स, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। जन भगत सुहेले गुरू गुर चेले निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख मेला मेले धुर गोसाँईआ। जेहड़ा वक्त सुहञ्जणा नित नवित रहे तक्क, सो हकीकत वेखो हक, हरि करता आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारा इक्क खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां अगम्मी धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। निरगुण नूर करे उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतां कर प्यार, प्रेम प्रीती इक्क सिखाईआ। राह दस्स एकँकार, अकल कलधारी आपणी कारे लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बोल जैकार, नाता आत्म परमात्म रिहा मिलाईआ। सच संदेसा दे के विच संसार, सोई सुरती आप उठाईआ। लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, मेहर नज़र बेनज़ीर इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो उठ के इक्क नज़ारा, मेहर नज़रीआ रिहा बदलाईआ। निरगुण निरवैर लए अवतारा, अवतरा आपणी कार कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो उज्यारा, जगत अन्धेर रिहा गवाईआ। सदी चौधवीं पावे सारा, ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैणां अक्ख खुल्हाईआ। बाकी रहे ना तेई अवतारा, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। लहिणा देणा पूरा करे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेखो खेल अगम्मी नूर, हरि करता आप कराईआ। जो सरब कला भरपूर, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जिस दा सति सतिवादी दस्तूर, सच सच समझाईआ। जुग चौकड़ी जिस लेखे लाए पूर, नईआ नौका आपणा नाम चलाईआ। सो स्वामी हो के हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो आया वक्त, बिना अक्खरां दयां जणाईआ। जलवा तक्को विच जगत, जगजीवण दाता खेल खिलाईआ। जिस दी सरगुण धार सारे

शक्त, शरअ हुक्म विच मनाईआ। जो दिसे उत्ते फर्श, अर्श आपणी कार कमाईआ। जन भगतां देवे दरस, परदा ओहला अक्ख खुल्हाईआ। निरवैर हो के आए परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सब दी पूरी करे शर्त, शरअ अगली रिहा दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेला कोई ना जाए भटक, भावना भाओ दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ सुणया तुहाडा हाढ़ा, जुग जुग ध्यान लगाईआ। लेखा वेखे धुर दरबारा, दरगाह साची फोल फुलाईआ। जित्थे अवर ना कोए लिखारा, कातब रूप ना कोए धराईआ। सो शहिनशाह समरथ पुरख न्यारा, निराकारा फोल फुलाईआ। लहिणा देणा पूरा करे अधारा, अधिआत्म खोजे थाउँ थाँईंआ। प्रगट हो विच संसारा, संसारी भण्डारी लेख रिहा मुकाईआ। शंकर पावे सारा, साहिब सुल्तान होए सहाईआ। उठो वेखो नैण लोचन करो दीदारा, दर घर इक्को इक्क खुल्हाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बोले जैकारा, जै जै कार नूर इलाहीआ। परवरदिगार साचा यारा, तौफ़ीक हक समझाईआ। सदी चौधवीं पार किनारा, हक इमाम इक्क सिक्दारा, चोटी सब दी फोल फुलाईआ। लेखा देणा जन भगतां अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी होए सहाईआ। उठो वेखो तक्को दिवस सतारां हाढ़ा हरि हिरदे हरिजू डेरा लाईआ। भेव रहे पुरख ना नारा, बिरध बाल वण्ड ना कोई वण्डाईआ। सब दा सांझा करे प्यारा, अपरम्पर बण के आप वणजारा, सौदा इक्को हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे उठो वेखो खेल अगम्म, अलख अगोचर आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा मैं तक्कया काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी आप बदलाईआ। नाता तोड़ वजूद तन, तत्तां दा लेखा दिता मुकाईआ। दीन मज़्हब दा हरख सोग रहे ना कोई ग़म, कायनात दा कलमा इक्को दए समझाईआ। जिस दा नूर ओसे दा चन्न, ज़हूर आपणा रिहा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो संदेसा, हरि सद्दा इक्क जणाईआ। निरगुण धार बदल के वेसा, भेखाधारी भेख प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर के ठेका, अगला लहिणा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म धुर दा बण के नेता, निरगुण निरगुण दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर लओ चेता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। साचा मणका करना भेंटा, जिस दी गंढु ना कोए खुल्हाईआ। जिस दा लेखा जाणे सतिगुर शब्द पुरख अकाल दा बेटा, गोबिन्द वज्जदी रहे वधाईआ। जन भगतां पूरा करना लेखा, लिख्या लेख खोज खुजाईआ। सच दुआर सुहाउणा देसा, कूड़ा नाता जगत तजाईआ। जिस दा भगत उधारना पेशा, सो पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। सच सिँघासण साचे लेटा, मन्दिर इक्को

इक्क वड्याईआ। कलयुग अन्तिम बण के धुर दा खेटा, खेवट आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करो शताबी, शरअ विच्चों बाहर समझाईआ। लेखा जाणो नानक वाला बगदादी, बग़लगीर दिसे खुदाईआ। जिस दा इक्को नूर इमदादी, आमद विच राह तकाईआ। उस दा लहिणा देणा पूरा करना माज़ी, हाल दा लेखा दए समझाईआ। जिस नूं समझे कोए ना मुला शेख़ काज़ी, अक्खरां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गा सके ना कोई भट्ट रबाबी, तन्द सितार ना कोए जणाईआ। समझ आवे ना इश्क हकीकी मज़ाजी, मज़े तों बाहर धार प्रगटाईआ। जन भगतां नाल हो के राज़ी, रज़ा आपणी विच रखाईआ। धुरदरगाह दा बण के बाडी, तन वजूद करे सफ़ाईआ। शब्दी धार बणा के नादी, नाद धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होवो सवाधान, वेला वक्त लए अंगड़ाईआ। जिस ने झगड़ा रहिण नहीं देणा गोपी काहन, सीता राम आपणे विच समाईआ। शरअ रहे ना कोई शैतान, मज़्ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सारे तअज्जब ना होयो हैरान, हैरानी विच ना कोए आईआ। एह खेल श्री भगवान, करनी दा करता आप कराईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा विधान, वाहिद आपणा हुक्म मनाईआ। साचा धर्म दस्स इस्लाम, इस्म आज़म इक्क प्रगटाईआ। मुहब्बत विच हो के मेहरवान, महबूब करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक डेरा ढाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर धुर दा दे के नाम निधान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे परवान, परवाने पिछले फोल फुलाईआ। लेखा मुकाए श्री भगवान, अनडिठ्ठ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारे सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सुणावां सच संगीत, सगले संगीओ दयां जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणी पिछली छड्डयो रीत, मन्दिर मसीत ना कोए वड्याईआ। सतिगुर साचा सच धर्म साची देवे नीत, नीतीवान वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म दा दस्सणा गीत, आत्म परमात्म लए प्रनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा मनसा पूरी करे उमीद, तृष्ना पिछली दए गवाईआ। सो वक्त सुहेला इक्क अकेला वक्त आए नज़दीक, दूर दुराडा आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतो लोकमात दिवस हाढ़ सतारां ठीक, ठाकर हो के आपणी कार कमाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ऊँच नीच, राउ रंक करे तबलीक, प्रीत इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां हक नसीहत वसीअत सब दी फोल फोलाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तक्कयो इक्को हस्ती, जो हस्त कीट रिहा समाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहाना नाम खुमारी मस्ती,

मस्त दीवाने दए बणाईआ। जिस भगतां साढे तिन्न हथ्थ सुहाउणी बस्ती, काया गढ़ करे रुशनाईआ। मालक मिले धुर दा अर्शी, फ़र्शी ख़लक रूप बदलाईआ। ब्रह्मा शिव गोबिन्द वाली तुहाथों मंगी उह पर्ची, जेहड़ी राह जांदा गया फड़ाईआ। जिस उत्ते खेल प्रभू दे घर दी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी धार अछल अछल्ल दी, वल छल आपणी धार कमाईआ।

★ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर दर्शन करन आए पैर दब्बे, दाअवा पिछला नाल रखाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल किसे ना लभ्भे, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुक्मे अंदर बद्धे, बन्दना आपणी दिती दृढ़ाईआ। दीन मज़्बां वण्ड के हद्दे, हिस्से झोलीआं विच टिकाईआ। जगत जैकार ना कहिण कदे, कदीम दा लेखा दए दृढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जुग जन्म दे विछड़े सद्दे, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। सदा रहे तुहाडे अग्गे, अगला लेखा आप बणाईआ। दरस दीदार दे देवे मज़े, मज़ाक वेखे जगत लोकाईआ। जो सरन सरनाई लग्गे, सगन नाल आपणे घर बहाईआ। विछोड़ा मूल ना देवे कदे, कदमां विच लए टिकाईआ। दीपक हो के जगे, जगत निराली चाल दिती प्रगटाईआ। सच दुआर दे मालक हरि भगत बणा के वड्डे, वड्याई आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत प्यार विच कहे आउ मेरे लाडले डड्डे, डण्डावत सब तों वक्खरी दयां समझाईआ। तुहाडी दाग़ लग्गे कदे ना पग्गे, पगड़ीआं वालयां गुरुआं दा लेखा दिता मुकाईआ। अन्तकाल जगत नगारे ओहदे वज्जे, जिस नूं वाजां मार के सारे गए गाईआ। लहिणा देणा लेख मुका के जगे, हमसाजण धाम दरसाईआ। गुरमुखां नाल कदे ना करे दग़े, दग़ेबाज़ न्यारे धाम दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। दरस दीदार दी मंगे प्रेम प्रीती मोखा, मुख मस्तक वेख ख़ुशी मनाईआ। चिन्ता ग़म मिटा के हरख सोगा, दुःख दलिद्र डेरा ढाहीआ। अगला वक्त रहिण ना देवे औखा, सुख सागर विच समाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरे हो के पहुंचा, पंचम मीता धुरदरगाहीआ। गोबिन्द ला के आपणा ढौंका, ढईए दा लेखा रिहा मुकाईआ। नाम निधान चला के नौका, हरिजन साचे रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। दरस करन नाल किसे ना मिलदा, जुग चौकड़ी रोवे धाहीं मारे देवे हाल दुहाईआ। बिन भगतां महबूब मालक मेला करे

किसे ना दिल दा, दलिद्री वेखे जगत लोकाईआ। एह खेल अगम्मी छिन्न दा, विष्न ब्रह्मा शिव शंकर तों परे रिहा दृढ़ाईआ। एह नूर अलाही आपणे चिन्न दा, चक्र चिहन् वरन बरन ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। खुशी सुभाग दिहाढ़ा लेखा होवे दिन दा, दहि दिशा खोज खुजाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग भगतां वास्ते रिहा गिणदा, जगत तृष्ना अवर ना कोए रखाईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार हो के मिलदा, खिल्लत नाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। दरस करन जो आए आज, अग्गे अज़ल तों लए बचाईआ। फ़ैसले वाला सुण के सवाल जवाब, जवाब तल्बी सब दी पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जिस दा लैंदे रहे खवाब, परदा अगला दए चुकाईआ। जन भगतां दी धुरदरगाही खोल् किताब, बिन अक्खरां लेखा दए दृढ़ाईआ। धुरदरगाह दा दे के आब, अमृत रस इक्क चखाईआ। मेल मिलाए आप महाराज, राजन राज चले ना कोए चतुराईआ। माण वड्याई गुरसिख सन्त सुहेले सच साध, जिन्हां चरण कँवल सरन दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। दरस करन दी जो आए ख़ातर, ख़तरा गए मुकाईआ। गोबिन्द लेखे लग्गी अगम्मी पात्र, लहिणा पुरख अकाल दए दरसाईआ। सन्त सुहेले बणाए चातर, चातरिक आपणे लए प्रगटाईआ। सति दुआर दस्स के पातन, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर के आसन, आशा इच्छया विच समाईआ। सच दवारे कर के वासन, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। मंज़ल पौड़ी चाढ़ के घाटन, गृह मन्दिर दए वखाईआ। जन भगतो जेहड़ा खेल अग्गे रख्या बातन, ओस दा परदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निराकार बण के सज्जण साकण, सख़ियां दा लेखा इक्को नज़री आईआ।

★ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण दर्शन सिँघ लिखे लिखारी, गुरदास गवीदु गुविद गाइद राह तकाईआ। जो हुक्म मिल्या धुर निरँकारी, निराधारी दिता दृढ़ाईआ। असीं वेख के आए सृष्टी दृष्टी सारी, खोजी बोधी वेखी जगत लोकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए आचारी, विभचारी क्रिया कर्म कमाईआ। जगत दुहागण दिसे नारी, सुहागी कन्त ना कोए हंढाहीआ। धर्म दुआर ना कोए जैकारी, हाहाकार ख़लक खुदाईआ। पैज रिहा ना कोए संवारी, चरण ध्यान ना कोए टिकाईआ। सिल

पूजस वेखी खुआरी, धर्म अस्थान श्री भगवान ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं फिरदे फिरदे थक्के, बण के पाँधी राहीआ। हुक्मे अंदर हो के पक्के, पारब्रह्म दर बैठे सीस निवाईआ। जो बचन करीए सच्चे, सति नाल सुणाईआ। असीं ब्रह्मण्ड खण्ड सारे कच्छे, बिन कदमां कदम उठाईआ। चार कुण्टां फिरे नस्से, रस्ता वेख्या जगत लोकाईआ। विकार हँकार विच मन वासना अंदर फसे, फ़ैसला हक ना कोए सुणाईआ। ममता मोह विच ग्रसे, गृहस्ती विभचार रूप वटाईआ। रसना जेहवा खांदे वेखे वच्छे कट्टे, छुरीआं रूप बग़ल कसाईआ। सब दे चीथड़ पुराणे फटे, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। साडे नाम दी कीमत पाउँदे टके, हट्टो हट्ट विकाईआ। दीन मज़्ब इक्क दूजे नूं करदे ठठ्ठे, ठोकरां नाल ठुकराईआ। साडी माण वड्याई कोई ना रखे, सच प्रेम ना कोए बणाईआ। असीं वेख के आए निरगुण अक्खे, सरगुण सारे बैठे भुलाईआ। प्रभू क्यों धोखे विच रखें, सच दईए सुणाईआ। साडे पूरे होए लोकमात दे पटे, पटने वाला करे अगवाईआ। माण रिहा ना तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे, सठ्ठ साल दी आयू सब दी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गुरदास दस्स की कुछ लिख्त, गुरदेव कोल समझाईआ। गुरदास कहे तुहाडी ओस कोल फ़रिसत, जो फ़ैसला हक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तुसीं भोगण वाले गृहस्त, तत्तां नाल वड्याईआ। क्यों कलयुग अन्तिम सारे रहे ख़िसक, पल्लू आपणा रहे छुडाईआ। कुछ याद करो जग आबाद करो आपणे मस्तक लग्गा वेखो तिलक, मणके वाली उंगली फेर ना कोए घसाईआ। तुहाडा लहिणा देणा नहीं टांक नहीं जिसत, इक्क दो ना वण्ड वण्डाईआ। तुसीं वड़े नहीं किसे बहिश्त, स्वर्गां विच संन्न ना कोए लगाईआ। ज़रा तक्को अगम्मी इष्ट, अष्टाबकर दए गवाहीआ। कुछ लेखा याद करो जिस वेले मातलोक दे मिलदे रहे टिकट, राह धर्म दा इक्क जणाईआ। चोटीआं उत्ते पैकट विच बन्द हो के सुहाउँदे रहे आपणी पिकट, दुआर धर्म नाढ़ुं रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दरसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुण दस्सया बणया सच्च, सच सच दृढ़ाईआ। परदा रहे ना काया कच्च, ओहला देणा मिटाईआ। प्रभ दा हुक्म मन्नणा पक्क, जिस पुखता दिता सुणाईआ। हकीकत लभ्भी कितों ना हक, हुक्म सुणे ना कोए धुरदरगाहीआ। सब दे उत्ते पै गया शक, सहिंसा भरम ना कोए मिटाईआ। जां अंदर वेख्या तक्क, तकदीर सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा हुक्म धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं फिरे छेती छेती, छत्रधारी खोज खुजाईआ। तेरे हुक्मे अंदर दीन दुनी दे होए भेती, भँवरां विच चरण टिकाईआ। प्रभू साडी किसे

याद रही ना नेकी, निक्के वड्डे सारे रहे भुलाईआ। मन वासना जगत दुआर दी बेटी, कलयुग जीवां गई प्रनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठां विच वेखी, सोहणा नाच नचाईआ। साध सन्त बण बहु भेखी, भगवन भटकणा विच भवाईआ। तेरे दवारिडुं सारे होए परदेसी, कारण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखी चार कुण्ट दी कूट, कुटीआ नज़र कोए ना आईआ। दहि दिशा सब दे अंदर झूठ, सति सच ना कोए समझाईआ। तेरा नज़र ना आया कोई पूत, पिता पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। असीं कर के आए कूच, कूचा गली खोज खुजाईआ। सब दे अन्तर दिसे दूज, दुतीआ भाउ ना कोए मिटाईआ। तेरे हुक्मे अंदर सब कुछ ल्या बूझ, मन मति बुध अंदर वेख वखाईआ। ख़ाली दिसे काया पंज तत भूत, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल देणा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गुरदास की देणा लिख, लिख्त पिछली दए गवाहीआ। बिना गोबिन्द तों गोबिन्द दा रहे कोई ना सिख, सिख्या जगत ना कोए वड्याईआ। बिना भगत तों भगत रहे ना रिख, मुनी मोन ना कोए सरनाईआ। साचा मन्ने इष्ट कोई ना इक, जिस विच अनेक गए समाईआ। मन दी सुरती अंदर सारे रहे टिक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। गोबिन्द कहे मेरे कोल पिछली तेरी चिट्ट, चिठ्ठी रिहा वखाईआ। आपणा खेल आपे नजिठ्ठ, एह तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार सारे रहे पिट्ट, कूक कूक सुणाईआ। अग्गे हाल दस्सीए किस, किस्मत सके ना कोए बदलाईआ। असीं कौडीआं उत्तों गए विक्क, कीमत मुल्ल रिहा ना राईआ। ब्रह्म प्यार करे कोई ना हित, हितकारी रूप ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं सारे दे गए पिठ्ठ, करवट विच करवट आप बदलाईआ। हुण पुच्छीए किस किस, किस्म समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की असीं लग्गे लिखावण, लेखा कलम बणाईआ। गुरदास किहा की मैनूं आवो सुणावण, सुनेहड़ा धाम धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल कहे एह आपणी करनी आए करावण, बदली आप कराईआ। हुण एह मेरी धार विच आणा चाहवण, नाता छड्डुण जगत लोकाईआ। अगला समां मेरी जोत विच समावण, सिर सके ना कोए उठाईआ। लहिणा अवर ना जाणे गुण अवगुण, गुण अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडी की रिपोरट, सच दयो सुणाईआ। सारे कहिण असीं वेखे किले कोट, बंक दवारे फोल फुलाईआ। साचा नूर ना मिल्या जोत, प्रकाश अन्ध ना कोए मिटाईआ। साडे अंदर पै गई सोच, समझ नाल ना कोए समझाईआ। एह प्रभू तेरा अगम्मी चोज, निराले प्रीतम दिता कराईआ। सानूं

लाए सृष्टी दी विच खोज, आप बैठा हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम साडे वस दा नहीं रोग, रोगी कीती सर्ब लोकाईआ। फिर के वेखे चौदां लोक, लुक्कया रहिण कोए ना पाईआ। बिन तेरयां भगतां तेरा गाए ना कोए सलोक, सोहला सच ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले असीं ओस दवारे गए पहुंच, निरगुण धार पन्ध मुकाईआ। साडी मनसा रही कोई ना लोच, लोचण अक्ख ना कोए वड्याईआ। असां समां वेख्या बहुत, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। अन्तिम हो के तेरी गोत, तेरे विच समाईआ। तूं दाता निर्मल जोत, निरगुण नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी सब झाकी, परदा रिहा ना राईआ। वेख्या तन वजूद ख़ाकी, जिस्मां इस्मां फोल फुलाईआ। किसे गृह मिल्या ना कमलापाती, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। चारो कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। माया कारण बण गए पाठी, पूजा टकयां नाल कमाईआ। मुल्लां शेख कूड़े काज़ी, कसमां झूठीआं रहे खाईआ। हकीकत दा नज़र ना आया कोई निमाज़ी, रोज़ा रख के वक्त गवाईआ। काअबे चढ़या कोई ना हाजी, हज़रत सीस ना कोए झुकाईआ। दीन दुनी होई दाग़ी, दग़े विच लोकाईआ। सब दी हारदी दिसे बाज़ी, बाज़ां वाला हाल रिहा सुणाईआ। सच दुआर रिहा कोए ना रागी, ढड्डां कूड़ीआं रहे खड़काईआ। पुरख अकाल इक्को बण जाए सब दा गाडी, गारडीअनां दा लेखा दए मुकाईआ। कूड़ कुड़यारां दी वध गई आबादी, सति सच बैठा सीस झुकाईआ। असीं किसे दे रहे ना इमदादी, सगला संग ना कोए बणाईआ। ऐवें फिरके आए बणके पाँधी, फेरा जगत लोकाईआ। बिन तेरी किरपा सर्ब जीआं पत जांदी, होवे ना कोए सहाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा दिसे आंधी, चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। मन वासना होई फांदी, बन्धन सारे रही पाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख तेरा बांदी, जो बन्दना तेरी सीस निवाईआ। तेरा खेल अवल्लड़ा स्वांगी, स्वांग आपणा दे वखाईआ। साडी आसा थक्की मांदी, धर्म पुन्न ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए जगत आदत, अमल छड्डया जगत लोकाईआ। बिन तेरी किरपा सब ते आए कयामत, कयामगाह नज़र कोए ना आईआ। कोटां विच्चों भगत तेरे अमानत, सही सलामत सोभा पाईआ। असीं सिर्फ़ एहनां दी देणी ज़मानत, जेहड़े चरण तेरी सरनाईआ। साचा बख़्श नाम नयामत, रस आपणा दे चखाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल कहे मैनूं लिख्ती दयो ब्यान, लेखा बिन कलम शाहीआ। तेई अवतार कहिण साडे भगवान, श्री सर तैनूं सीस झुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी विच्चों सानूं तेईआं इकासीआं उत्ते थोड़ा जेहा माण, जो साडा

ध्यान लगाईआ। जिन्हा विच्चों तिन्न तैनूं परवान, भाई गुरदास दए गवाहीआ। बाकी दा साफ़ दिसे निशान, निशाने गए भुलाईआ। हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद कहे बत्तीआं दा साबत ईमान, बत्ती दन्द नाल वड्याईआ। इक्क तेरी करे कल्यान, कलमा इक्को तेरा गाईआ। इस ने रोज़ा रख्या नहीं विच रमज़ान निमाज़ विच ना सीस झुकाईआ। कदी बोलया नहीं नाल ज़बान, मुख राग ना कोए अलाईआ। सद तेरा सुणदा रहे पैग़ाम, कलाम नूर अलाहीआ। तेरा खेल वडा अमाम, महिज़ तैनूं दिता दृढ़ाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। गुरू दस कहिण की दस्सीए पारब्रह्म, प्रभू तेरी वड्याईआ। इक्क सौ पंज दा साबत दिसे धर्म, जिन्हां नूं धर्म मिली वड्याईआ। इकानवयां दा गोबिन्द नाल जन्म, चौदां नानक संग निभाईआ। बाकी सब दे अंदर भरम, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। साडे नेत्र आवे शरम, नैण अक्ख शरमाईआ। तेरा हुक्म कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दिता कर्म, धीरज धीर ना कोए धराईआ। असीं मेट के आए वरन बरन, वरनां बरनां लग्गी जगत लड़ाईआ। गोबिन्द लेखा दस्स के आया तेरे चरण, आपणी पूजा ना कोई कराईआ। सच दा दस्सया पढ़न, दीन मज़्हब ना वण्ड वण्डाईआ। जो तेरा दर्शन करन, उहना जन्मे कदे ना

७६६ माईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे कहिण ७६६

२० रलके, रला विच रहिण ना पाईआ। इक्को दीपक जोती जल के, तेरा नूर करे रुशनाईआ। असीं खेल वेखीए जल थल के, दो जहानां फोल फुलाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले तक्के जो तेरी सरनी पलदे, पलक ना झल्लण जुदाईआ। जिन्हा दे लहिणे देणे कलयुग कल दे, कल कल्की तेरी ओट तकाईआ। असीं तेरा हुक्म संदेसे रहे घलदे, जुग जगत सुणाईआ। अन्तिम तेरे विच रलदे, नाता तोड़ ख़लक खुदाईआ। हुण मसले नहीं हल्ल दे, हालत रहे जणाईआ। तेरा भाणा रहे झलदे, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनिया वेखी ख़ाली, ख़ाली कीती ख़लक खुदाईआ। बिन तेरे अग्गे रहे कोई ना माली, गुंचा गुल ना कोए खिलाईआ। चार जुग असां घाल घाली, बहु तेरी सेव कमाईआ। तेरे नाम दी करदे रहे दलाली, जग वणजारे रूप बदलाईआ। अन्तिम दर ते खड़े सवाली, आपणा हाल सुणाईआ। वेला वक्त वेख हाली, माज़ी आपणी निगाह टिकाईआ। तेरी मुहब्बत मिले ना भाली, साचा संग ना कोए बणाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी काली, कलमयां वाले दिते भुलाईआ। पत्त रहे किसे ना डाली, सिंमल रुक्ख देण दुहाईआ। तेरी चाल प्रभू निराली, जुग चौकड़ी बदलदी आईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आपणे दिते बता, बहुत्यां विच्चों

थोड़े नज़री आईआ। जिहडे मन्नण साडी रज़ा, राह तेरा रहे तकाईआ। तूं वाहिद इक्क ख़ुदा, ख़ुद ख़बर दे पुचाईआ। तेरे नाम दी गाउण सदा, ढोला धुरदरगाहीआ। अग्गे चला आपणी रज़ा, राज़क रहीम हो सहाईआ। तेरा नाम वड अलाह, अल्ला आपणी कार कमाईआ। साचा मार्ग दस्स राह, रहिबर इक्को बण गोसाँईंआ। साचे भगतां लै जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। अगला मार्ग दे लगा, हुक्म आपणा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां दस्सया हाल हकीकी, हक दिता जणाईआ। प्रभू थोड़्यां दी वेखी प्रीती, इक्क सत नाल समझाईआ। अग्गे भगतां दी रखणी रीती, जो मन्दिर मसीती रहे तजाईआ। तेरी खेल सदा अनडिठी, जुग चौकड़ी चली आईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे चिउँटी, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म देणा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गुर गोबिन्द, तेरे नाल वड्याईआ। तेरा लेखा गहर गम्भीर सागर सिन्ध, कलम शाही ना कोई समझाईआ। तूं मालक गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। सब दी मिटा दे चिन्द, चिन्ता दे चुकाईआ। तेरा रूप धार सिंघ, जिस दी वण्ड ना किसे वण्डाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गोबिन्द कहे मैं करां पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। प्रभू तेरा खेल अपार, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। असीं सारे वेख के आए तेरा संसार, बण के पाँधी राहीआ। साचे प्रेमी लए भाल, लेखे विच दिते जणाईआ। अग्गे आप कर संभाल, हथ्थ तेरे वड्याईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, ऊँचां नीचां डेरा ढाहीआ। धुर बेनन्ती इक्क महिबान, सवाल जवाब ना कोए वखाईआ। अग्गों बोल किहा भगवान, शब्द सच शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बोल बिना ज़बान, सीस निवा के सीस झुकाईआ। क्यों साडा इष्ट इक्क ईमान, मालक नूर खुदाईआ। दीन मज़्हब शरअ ना रहे शैतान, शरीअत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दा सांझा इक्क अस्थान, दर दुआर इक्को सोभा पाईआ। मालक नौजवान, सूरबीर अख्वाईआ। जेहड़ा कलयुग अन्तिम आवे विच मैदान, मदद मंग ना कोए मंगाईआ। झगड़ा मुका ज़िमीं असमान, दो जहानां खेल वखाईआ। साचे नाम दा बणा विधान, हुक्म आपणा इक्क चलाईआ। साचे भगतां कर परवान, परवाने धुर दे दए फड़ाईआ। सुरती शब्दी मेला मेले हाणी हाण, जोती धुर दी जोड़ जुड़ाईआ। साचा बण अगम्मी काहन, गोपी बिना गवालयां लए प्रनाईआ। साचा हो के सच अमाम, अमलां दे अमल रिहा बदलाईआ। दे के धुर फ़रमान, संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो साचे भगतां नाल तुहाडा निशान, बिना निशाने निशाना सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर

कहिण प्रभू की तेरा निशाना, निशानयां वाले दे जणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा भगत कदे ना होवे बेगाना, दूजा रूप ना कोए वटाईआ। ओहदा खेल जगत जहाना, जिस्म ज़मीर ना कोए बदलाईआ। अन्तर बाहर गावे मेरा गाणा, साचा ढोला इक्क सालाहीआ। धुर दरगाहे देवे माणा, माही हो के मुहब्बत विच खोज खुजाईआ। वेला वक्त करां सुहाना, सोहणा रंग रंगाईआ। प्रगट हो के विच जहाना, जहालत कूड़ी दयां मिटाईआ। अन्तिम आवां विच मैदाना, डंका इक्को इक्क वजाईआ। करे खेल आप महाना, महिमा अकथ अकथ सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसां सोलां हाढ़ फेर होणा रवाना, लोकमात राह तकाईआ। आपणे आपणे नाम दा लै के जायो नाल पैमाना, पैमाइश अगली दए समझाईआ। जिस नवां बणाउणा भगतां दा खाना, खानगाह नज़र कोए ना आईआ। एका डंक वजाउणा दमामा, दमां दा लहिणा देणा मुकाईआ। तुसां उतरना उत्तों असमानां, ज़िमीं उत्ते, आपणा आप टिकाईआ। मैं पहर के जोती जामा, शब्दी गोबिन्द नाल उठाईआ। साचा मार्ग दस्सणा आसाना, असल देणा जणाईआ। आओ तक्को लख चुरासी दा धर्म दा कान्हा, जिस दी गोपी अंग ना कोई लगाईआ। जिस दा भगती नाल भरया ना कदे ख़ज़ाना, जुग जुग भगतां सद आप वरताईआ। ओस ने बदल देणा ज़माना, हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे हुक्म नाल उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चलो चलीए जग, प्रभू रीती वेख वखाईआ। सच दवारा वेखीए सज, जित्थे सज्जण धुरदरगाहीआ। गुरदास किहा राह विच वेखो लग्गी अग्ग, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। मेरी कलम ने रस्ता बन्द कीता शाह रग, रविदास चम्यारा नाल गवाहीआ। कलयुग हँस बुद्धी होई कग्ग, साचा रंग ना कोई रंगाईआ। अग्गे खेल सूरा सरबग हरि करता आप दृढ़ाईआ। जिस ने भगत सुहेले सद्द, सद्दा शब्द हुक्म सुणाईआ। प्रेम प्रीती अंदर लए बध्ध, बन्दना इक्को दिती जणाईआ। दीन दुनी नालों कर अलग्ग, अगम्म कथा रिहा सुणाईआ। आओ इक्को करो हज्ज, बिन काअबे काअबा रिहा प्रगटाईआ। पुरख अकाल लओ लभ्भ, गोबिन्द मिले धुरदरगाहीआ। राम दवारे बहो सज, कान्हा बंसरी दए सुणाईआ। साची मंज़ल करो हज्ज, महबूब तक्को नूर खुदाईआ। जगत विहार दयो छड्ड, छुट्टे कूड़ लोकाईआ। जन भगतो नाअरा लाओ अड्ड, वक्खरा रहिण कोई ना पाईआ। सतिगुर मालक इक्क सरबग, अल्पगां लए तराईआ। कोई रहे ना बगड़ा बप्प, कूड़ वेस नज़र ना आईआ। सब दा लहिणा मेटे हब्ब, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप प्रगटाईआ। सच हुक्म आप प्रगटावांगा। गुर अवतार पैगम्बरां सर्ब वखावांगा। जगत रीती नीती आप बदलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव गंढु जो गई पीची, जन भगतां कोलों खुल्हावांगा। सोहणी फुलवाड़ी ला बग़ीची, गोबिन्द आपणा फेरा पावांगा।

८०१
२०

जेहड़ा खून कढुया विच्चों चीची, चम्म दृष्टीआं विच्चों बदलावांगा। तुसीं अगला साल कढुणा वट्ट कसीसी, कचीची सब दी आप खुल्हावांगा। तुहाडी तुट्टण ना देवे प्रीती, पत्रीआं दे उत्तों लेखा सर्ब मुकावांगा। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखावांगा। गुर अवतार पैगम्बर नाल ल्यावांगा। निरगुण धार नूर चमकावांगा। शब्द नाद धुन सुणावांगा। जन भगतो तुहाडे बणा के अगले गुण, पिछला लेखा साफ़ करावांगा। अगला लहिणा मुका के हुण, हां हूं पन्ध मुकावांगा। जे लख चुरासी विच्चों लए चुण, अग्गे आपणे रंग रंगावांगा। होर रहे ना कोई रिख मुन, सब दा माण भगतां आप दवावांगा। सतिजुग साची चले कुल, मालक हो के पार लगावांगा। गुरमुख कोई ना जाए रुल, जिस दे माला हथ्थ फड़ावांगा। गुर अवतार पैगम्बर तुहाडा तोल ना सकण तोल, तोला इक्को नज़री आवांगा। तुसां गाउणा सोहँ बोल, अंदर वड़ के आप बदलावांगा। दो जहानां वज्जे ढोल, डंका इक्को हथ्थ उठावांगा। जिधर तक्को वसां कोल, नेड़ा दूर पन्ध मुकावांगा। सच दुआर तुहाडा खोल्ह, जन भगतो दो जहान आप प्रगटावांगा। तुसां बैठे रहिणा अडोल, नौ खण्ड आपणी कार कमावांगा। हर हिरदे अंदर मौल, मौली तन्द गंढु पवावांगा। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग सच रंगावांगा। साचा रंग इक्क रंगावांगा। लख चुरासी विच्चों प्रगटावांगा। गुर अवतार पैगम्बरां सोहणे (संग), भगत भगती रूप वखावांगा। जेहड़े किसे दे कोलों नहीं कुछ मंगदे (मंग), उहनां दी झोली आप भरावांगा। तुहाडी सुरती नाल जावे हंढ, पिछलीआं तुट्टीआं अग्गे नाल जुड़ावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव दी खोल्ह के गंढु, जन भगतो गंढु तुहाडी जोड़ जुड़ावांगा। सच प्यार दी दे के गंढु, पल्लू आपणे नाल जुड़ावांगा। जन भगतो वेला याद रखणा साढे पंज, पंजां दे पंजे आप लगावांगा। इक्कीआं इक्कीआं दा होवे संग, गोबिन्द दी इक्की सर्ब वखावांगा। स्त्री पुरुष इक्को रूप नूर चन्द, बिरध बाल ना वण्ड वण्डावांगा। जेहड़ा मार के आया पन्ध, पाँधी हो के पार लँघावांगा। तुसां सोहँ गाउणा छन्द, तुहाडे मन का मणका आप भवावांगा। इक्की कदम जाणा लँघ, इक्की इक्क वण्ड वण्डावांगा। छोटयाँ बाल्यॉँ अंदर दे के अनन्द, बिना मणके तों ममता मोह चुकावांगा। ओहनां दी आत्म सेज सुहा पलँघ, साढे तिन्न साल तों अंदर छोटयाँ सब दे अंदर डेरा लावांगा। जिन्हां बिरधां नूं चलदयां चलदयां आ जाए खंघ, ओहनां दे स्वासे आप चलावांगा। जिन्हां ने करना विच पखण्ड, उहनां नूं सठ्ठ दिन तों बहुती उमर ना होर भुगतावांगा। एह वेखण वाला इक्को अनन्द, भेखीआं भेखाधारीआं भेख गवावांगा। ओह जन भगतो किसे नूं झूठ दा खाण देणा नहीं इक्क डंग, डण्डा आपणे हथ्थ उठावांगा। ओस दवारे देवां टंग, जित्थों जुग चौकड़ी जूनीआं विच भवावांगा। जिस कारण मारन आया पन्ध, सो गुर अवतार पैगम्बरां खेल वखावांगा।

अग्गे कर के आपणे विच बन्द, बंदयां तों बन्दे आपणे फेर बणावांगा। किसे ने सतारां हाढ़ नूं करनी नहीं कोई संग, सोहँ ढोला सब दी रसना विच्चों कढावांगा। जेहड़ा धोखे नाल हिलावे दन्द, ओहदे दन्दां तों पिच्छे साह रखावांगा। जो लेखा गया समझा के पुरी अनन्द, अनन्द पुरी दा वासी हो के अनन्द पुरी फेर वसावांगा। जित्थे गुरमुख चमके चन्द, ओथे गोबिन्द नज़री आवांगा। तुसीं मेरे ते मैं तुहाडा अंग, अंगीकार आप हो जावांगा। भगत उधारना प्रभ दा वक्खरा ढंग, ढाडीआं कोलों राग ना कोई अलावांगा। तुहाडा लेखा रहे ना करीर जंड, जेरज अंड विच्चों बाहर कढावांगा। तुसां इक्को गाउणा छन्द, छिन्दे बच्चे आप बणावांगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आप कमावांगा। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किवें चले धार, धरनी उपर दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे साची वेखणी निगाह मार, निगाहबान नाल रलाईआ। इकीआं दा सिक्दार, इक्को इक्क नज़री आईआ। जम्मू वालयां कर ख़बरदार, सब तों अग्गे दए लगाईआ। माझे वालयां सुरत संभाल, पल्लू धर्म दी गंढु पवाईआ। दिल्ली इटारसी पूना कानपुर माहू पैज संवार, जोड़ी धुर दी जोड़ जुड़ाईआ। दुआबे वालयां पुच्छ के हाल, पसचाताप दए मुकाईआ। मालवे वालयां कर ख्याल, पिच्छो धक्का आप लगाईआ। एह खेल करे करतार, आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द फेर करे सवाल, शब्दी हुक्म समझाईआ। प्रभ अगला लेखा दे वखाल, किस बिध बदलें जगत लोकाईआ। अबिनाशी करता दए अहिवाल, हवाला अगला इक्क जणाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करनहार सदा प्रितपाल, प्रितपालक पालकी आपणी इक्क बदलाईआ।

८०३ २०

★ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ जलूस चल्लण दे समें लिख्त ★

सतारां हाढ़ धुर दरगाहों आए अवतार पैगम्बर गुर, गोबिन्द शब्दी धार रूप प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण देवत सुर, मुन जन बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटनी ठग्ग चोर, माया ममता मोह विकार मिटाईआ। मन वासना रहिण ना देणा शोर, शरअ दी शर्म देणी बदलाईआ। साचे मार्ग चार वरन अठारां बरन देणा तोर, तुरीआ तों परे अगला अमरापद समझाईआ। तुसीं आत्म परमात्म नहीं कोई होर, जोती नूर नूर रुशनाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता शब्द अगम्मी बन्ने डोर, दो जहान श्री भगवान निरगुण धार वेख वखाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर निराकार सांझा यार सचखण्ड दवारा इक्क

दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए खेल महाना, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्खरां वाला गाउँदे आए गाणा, सिफ्तां वाले ढोले जगत सुणाईआ। सो पुरख अबिनाशी घट निवासी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण जोत पहर के बाणा, निरवैर हो के आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर, बेनज़ीर शब्द अगम्मी धुर दा बण अमामा, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। जगत जहान मेटे राजा राणा, नाम खण्डा विच पुरीआं लोआं आप चमकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब नूं मन्नणा पए भाणा, सीस जगदीस अग्गे सके ना कोए उठाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदे रहे उडीक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। धर्म दवारे मंगदे रहे बख़्शीश, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। निरगुण धार चलाई आपणी रीत, आत्म परमात्म आपणा भेव खुल्हाईआ। सतिजुग साचे झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, शिवदवाला वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गावण गीत, मानव जाती मन्दिर तन वजूद देणा वखाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, राउ रंक एका रंग वखाईआ। सति सतिवादी तेरे दर ते मंगदे आए भीख, भुक्ख्यां भिच्छया झोली देणी पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त, आत्म करनी ठांडी सीत, त्रैगुण माया पंज तत पंज विकार ना कोए जलाईआ। साचा कलमा धुर दा नाम शब्द अगम्मी दस्सणी इक्क हदीस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। घट अन्तर निरंतर करवट बदल आपणी पीठ, सनमुख हो के नूर नूर कर रुशनाईआ। सच दवारा ठांडे दरबार परवरदिगार सांझे यार रहमत विच कर बख़्शीश, मेहर नज़र बेनज़ीर आपणी इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हाढ़ सतारां असीं पहुंचे ठीक, ठाकर पिछला लेखा मूल मुकाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आ गए तेरे सद्दे, शब्दी नूर जोत रुशनाईआ। तेरे हुक्मे अंदर बद्धे, दर ठांडे सीस झुकाईआ। असां मार्ग तेरे पिछले बदलदे वेखणे अग्गे, अगला राह इक्क समझाईआ। किस बिध भगतां दर दरस देवें उपर शाह रगे, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। तेरे नाम दा डंका हर घट हिरदे अंदर वज्जे, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। अमृत नाम भण्डारा देवे धर्म दी धार मधे, मधुर खुमारी इक्क चढ़ाईआ। सति प्रकाश वेखणे चार कुण्ट विच जगे, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा दुआर किसे ना लभ्भे, खोज खोज थक्की लोकाईआ। सदी चौधवीं होए सारे हके बक्के, बीस बीसा दए गवाहीआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले तेरे संग थोड़े होए इक्ठे, जिन्हां दे आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। दीनां मज़्हबां

८०५

२०

दे मेट के रट्टे, रट्टन तेरी इक्क लगाईआ। समाज जगत विहार पिछले छड्डे, छड्डी कूड़ लोकाईआ। मंज़ल इक्क हकीकी लँघे, जित्थे मिलदा बेपरवाहीआ। आत्म सेज सुहावीं पलँघे, दर दरवाज़ा इक्क खुलाईआ। जित्थे लोड़ रहे ना किसे पंडे, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। तेरा भगत तेरा प्रेम इक्को मंगे, मन का मणका देणा भवाईआ। आसा मनसा पूरी करा जमना सुरस्ती गोदावरी गंगे, तीर्थ तट देण दुहाईआ। कलयुग जीव बिन सतिगुर शब्द होए अन्धे, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुलाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी पूरी होवे मनसा, ममता जगत रहे ना राईआ। तेरा भगत सुहेला हँसा, नाम माणक मोती चोग चुगाईआ। मन हँकारी रहिण नहीं देणा कंसा, काहन आपणा डंक देणा सुणाईआ। राम रघुवंस सुहाउणा बंसा, सीता सुरती जोड़ जुड़ाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद सजदा करे वार अगणता, धूढ़ी ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। नानक गोबिन्द दुआर बण के साची संगता, संग मिल्या धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीर समां जाए लँघदा, जगत विद्या समझ कोए ना आईआ। जन भगतां भेव खोलणा हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म आपणा नूर चमकाईआ। प्रकाश करना नूरी चन्द दा, सूर्या चन्द ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहे जन भगतो तुहाडे पिच्छे सतिजुग त्रेता द्वापर आया मंगदा, दर ठांडे अलख जगाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक प्रीती तुहाडी काया अंदर बाहर मंगदा, रमज़ इक्को इक्क लगाईआ। इक्क इक्क मणका वारस बणया अगले पन्ध दा, राह विच ना कोए अटकाईआ। आदी लेखा ब्रह्मा शिव धार गंढुदा, जिसदा भेव ना कोए समझाईआ। तुसां रस लैणा पुरख अकाल अनन्द दा, परमानंद विच समाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग जगत वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखण आए खेल महान, महिमा अकथ ना कोए सुणाईआ। जिस नूं समझे ना विद्या दा ज्ञान, अक्खरां विच लेख ना कोए प्रगटाईआ। कातब दए ना कोए निशान, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। शास्त्र सिमरत होए हैरान, वेद पुराण अक्ख शरमाईआ। एका हुक्म देवे हुक्मरान, जो निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। जिस दी सारे करदे आए कल्याण, नाम कलमा ढोले गाईआ। दर ते मंगदे आए दान, भिखारी हो के झोली डाहीआ। भविख्तां विच देंदे आए ब्यान, लिख्तां विच इक्क संदेश सुणाईआ। सो खेल खेले वाली दो जहान, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। असीं उस दा सुणन आए फ़रमान, जो भगतां करे पढ़ाईआ। जन भगतो आत्म परमात्म धुर दा नाता गोपी काहन, तत्तां तों परे संग निभाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी हँ ब्रह्म देवे माण, श्री भगवान आपणा रूप समझाईआ। खुशीआं विच गुर अवतार पैगम्बर हाढ़ सतारां धुर दा ढोला इक्को गाण, जन भगतां मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग दे विच जहान, जगत बदली समझ सके ना कोए इन्सान, मेहरवान धुर दी करनी करता आप कमाईआ।

★ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल जलूस दी समाप्ती समें दा शब्द ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख्या अजब नज़ारा, जिस ने नज़रीआ दिता बदलाईआ। निरगुण नूर होया उज्यारा, जोती जाता पुरख बिधाता धुर दरगाहीआ। जिस दा सोहे सचखण्ड धर्म दवारा, मुकामे हक नूर रुशनाईआ। शब्दी बोले सच जैकारा, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। चार जुग जिस दीआं गाउँदे आए वारां, रागां नादां विच सालाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार लए अवतारा, अवतर आपणी कार कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के सच जैकारा, जै जै कार इक्क शनवाईआ। नव नौ खोलू के भगत दवारा, भगवन आपणा भेव खुलाईआ। साचे सन्तां करे प्यारा, सति सतिवादी परदा लाहीआ। गुरमुख गुर गुर देवे हुलारा, शब्दी आपणा नाम समझाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख्या सचखण्ड दा रंग, रंगत धुर दी नज़री आईआ। आत्म परमात्म होया संग, निरगुण निरगुण वज्जे वधाईआ। सच दवारा एकँकारा गया लँघ, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। जित्थे जगत विकारा करे कोई ना जंग, ममता मोह ना कोए वखाईआ। शब्द अनादी वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग सुणाईआ। सब तों वक्खरा दस्स के ढंग, भगत सुहेले रिहा उठाईआ। अन्तर आत्म निरंतर बख्श के इक्क उमंग, मनसा अगली दए समझाईआ। सच सुहञ्जणी सेजा वेखो पलँघ, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। करे प्रकाश सूर्या चन्द, निरगुण नूर डगमगाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखी हाढ़ सतारां थित, सम्मत शहिनशाहीआ। पुरख अकाला धुर दा मित, दीन दयाला दया कमाईआ। परवरदिगार सांझा करे हित, रहीम रहमत आप कमाईआ। जन भगतां बण के मात पित, गोद सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साची सब नूं देवे सिख, वरन बरन ना कोए रखाईआ। अन्तिम देवे कदे ना पिठ, परमात्म मेला हर घट थाँईंआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा कारज लए नजिठ, अवर दी लोड़ रहे ना राईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देंदा आया भिक्ख, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सेव लगाईआ। जिसदी महिमा अंदर कथा कहाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लई लिख, कलम शाही कागज़ जोड़ जुड़ाईआ। सो खेल करे इक्क अनडिठ, जिस दा भेव किसे ना आईआ।

सृष्टी दृष्टी अंदर खोज सवा गिठ्ठ, राम वशिष्टी परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन वेखे भगत सुहेले, सखि़यां मिल के वज्जे वधाईआ। एका रंग रंगे गुरू गुर चेले, चेला गुर भेव ना राईआ। जिस नूं कहिंदे वसे धाम नवेले, सो हर घट अंदर आपणा नूर करे रुशनाईआ। सन्त कन्त बणाए आप सुहेले, साजण हो के वेख वखाईआ। अचरज खेल प्रभू प्रभ खेले, ख़ालक ख़लक इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं दीन मज़्ब दे पाउँदे आए हिस्से, मानव मानव वण्ड वण्डाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न गौड तेरे सिफ्तां वाले किस्से, जुग चौकड़ी धुर दा हुक्म सुणाईआ। अक्खरां विच पत्थरां विच सतरां दस्स के आए पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुर दा स्वामी इके, एकँकार निराकार इक्क अख्वाईआ। जिस दे हुक्म संदेशे खाणी बाणी विच लिखे, लिख्त भविख्त नाल वड्याईआ। सो अन्त कन्त भगवन्त सदी चौधवीं कलयुग सब दे कढ्ढे सिट्टे, सिट्टेबाज़ी कूड़ी वेख वखाईआ। दीन दुनी दी धार वेखे मस्जिद मन्दिर शिवदवाले इट्टे, गुरुदुआर बिन पत्थर पाणी धार फोल फुलाईआ। नौ खण्ड शब्द धार इक्क अकेला तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला सिक्खे, आत्म परमात्म नाल मिलाईआ। सो मन विकार काया माटी साढे तिन्न हत्थ खेड़ा यिते, नौ दुआर दा अंदरों बाहरों डेरा ढाहीआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आए लोकमात, मता धुर दा इक्क पकाईआ। वेखणा खेल कमलापात, पतिपरमेश्वर करनी की कमाईआ। निरगुण हो के करे खेल तमाश, सरगुण गोपी काहन नचाईआ। सीता राम खेल वेखीए विच प्रभास, जंगल जूह पहाड़ उजाड़ टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। लहिणा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर परदा दए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर जिस दी गाउँदे गाथ, ढोला सोहला राग इक्को इक्क सुणाईआ। सो साहिब सतिगुर शब्दी दाता सब दा बदल देवे समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म करे अगम्मी काज, करनी दा करता जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जन भगत रहे ना कोई मुहताज, पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास इक्को दए समझाईआ। माला मणका मन का कर के दासी दास, दास्तान नाम दए दृढ़ाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं दीन मज़्ब दे कर के आए झेड़े, झगड़ा पाया विच लोकाईआ। वण्ड कर के काया खेड़े, कलमे नाम दिते बदलाईआ। मन्दिर मसीत बणाए देहुरे, शिवदवाले वण्ड वण्डाईआ। निरगुण धारा कर के हेरे फेरे, सृष्टी दृष्टी दिती

भुलाईआ। जन भगतां दीन दयाल कर के मेहरे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। काया मन्दिर अंदर कर के हक नबेड़े, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को रंग रंगाए सञ्झ सवेरे, संध्या रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखे सज्जण गुरमुख प्रभ दे सारे, प्रेम इक्को रहे मनाईआ। जिन्हां दे अंदर नाम नगारे, तुरीआ दी धार रहे समझाईआ। अमरापद दे हक नज़ारे, बिन तत वजूद समझाईआ। बिना शमां दीपक जोत होए उज्यारे, जो साचा नूर डगमगाईआ। बिन रागां नादां सुणाए आपणी धुन्कारे, जिस दी समझ ना कोए जणाईआ। सो करनी दा करता कुदरत दा मालक करे खेल अपारे, अलख अगोचर आपणा रूप वटाईआ। सन्त सुहेले कर के इक्ठे इक्क दवारे, द्वारका वासी दा लहिणा रिहा मुकाईआ। जेहड़ी मंग मंगी सीता राम प्रभास विचकारे, प्रभू देवे माण वड्याईआ। जिस कारण मूसा डिग्गा मूँह दे भारे, कोहतूर होई रुशनाईआ। जिस कारण ईसा सलीब दे लए हुलारे, हबीब वेखे धुरदरगाहीआ। मुहम्मद बोल के हक जैकारे, नाअरा हक हक सुणाईआ। नानक गोबिन्द बण वणजारे, वजह प्रभ दी गए समझाईआ। बिन साचे भगतां मंज़ल चढ़े ना कोए चुबारे, चौथे पद ना कोए समाईआ। पढ़ पढ़ थक्कण जीव गवारे, मन मनसा ममता विच हल्काईआ। अक्खरां तों बाहर खेल निरँकारे, निरअक्खर आपणी कल जणाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख्या खेल अजीब, अजब निराला दिता वखाईआ। जिस दी करदे आए ताईद, हुक्म संदेशे जगत प्रगटाईआ। आसा मनसा रखदे आए उम्मीद, भविख्तां विच जणाईआ। जिस दे पिच्छे तन माटी ख़ाकी कर के आए शहीद, शहादत नाम वाली भुगताईआ। सो साहिब स्वामी हरि जगदीश, कल करता वेस वटाईआ। जिस दा कलमा इक्क हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे सदी बीसवीं बीस, बिस्मिल हो के वेख वखाईआ। साचा दस्स के ढोला गीत, गहर गम्भीर रिहा मिलाईआ। सति धर्म चलाउणी रीत, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द मिले अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। जन भगतां मानस जन्म जाणा जीत, जिन्हां जागरत जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, इक्को रंग दए रंगाईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, हदूद पिछली दए गवाईआ। जिस दी याद अंदर जुग चौकड़ी गए बीत, सो भेव रिहा खुल्हाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख्या प्रभ दा खेल अगम्मा, अलख अगोचर दए वड्याईआ। करे खेल तन माटी चम्मा, चम्म दृष्टी रिहा बदलाईआ। जन भगतां मेट के हरख ग़मा, चिन्ता सोग तों बाहर रखाईआ। झगड़ा रहे

ना कोए माटी चम्मा, आत्म परमात्म सब दा नूर खुदाईआ। दीन मज़्ब दा रहे कोई ना बन्ना, बन्दगी इक्को रिहा जणाईआ। साचा नाम सुणावे बिना कन्नां, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। गुरमुख नेत्रहीण रहे कोई ना अन्न्ा, निज लोचन करे रुशनाईआ। मन वासना देवे डंना, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। सन्त सुहेला पार उतरे ज्यों जट्ट ग़रीब धन्ना, मेहरवान सिर मेहर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दी सुणी धुर दी सिख्या, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। जगत जहान जाणो मिथ्या, तन वजूद डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल धुर दा मितया, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जेहड़ा खेल करे नित नवितया, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। साचे सन्तां करे हित्या, अन्तर आत्म जोड़ जुड़ाईआ। लेखा मुकावे वड्डुयां निक्कया, बिरध बालां भेव ना कोए रखाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आए दवारे सच, मिले सच वड्याईआ। जित्थे झगड़ा दिसे ना माटी कच्च, कंचन गढ़ इक्को दए वखाईआ। मनुआ नौ दवारे ना जाए नच्च, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। सिध्धा भगतां खोल्ह अंदरों अक्ख, ज्ञान नेत्र नेती हो के नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावां जस, धुर दा नाम सिफ्त सालाहीआ। अमृत नाम भण्डारा देवे रस, निजर झिरना इक्क झिराईआ। साचे नाम दा खोल्ह के हट्ट, धुर भण्डारा इक्क वरताईआ। जीवण दी मंज़ल जगत दा अन्तिम दस्स के तट, किनारा इक्को दए समझाईआ। जित्थे जैकारा होवे अलख, डण्डावत बन्दना सजदा सीस नज़री आईआ। खेल खेल पुरख समरथ, निरगुण निरवैर शहिनशाहीआ। जिस नूं कहिंदे परमेश्वर पत, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। उह परत के आया वत्त, वतन मातलोक वेख वखाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगत हिरदे अंदर ध्याउँदे, ज्ञान ध्यान विच लगाईआ। ध्यान ज्ञान विच समाउँदे, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। बिन रसना अगम्मी गीत गाउँदे, गहर गम्भीर अलाहीआ। निज नेत्र दर्शन पाउँदे, जोती नूर नूर रुशनाईआ। बाहरों निर्मल चिट्टे नज़री आउँदे, दुरमति मैल धवाईआ। अन्तर पारब्रह्म मनाउँदे, प्रेम प्रेम विच समाईआ। मंज़ल मंज़ल कदम टिकाउँदे, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। पिछला लहिणा देणा मूल चुकाउँदे, करमां दा रोग रहे ना राईआ। अकल कलधारी इक्क मनाउँदे, करनी दे करते सीस निवाईआ। सांझे यार दर्शन पाउँदे, जगत गुरू डेरा ढाहीआ। दूर दुराडे नेरन नेरे आउँदे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लख चुरासी डेरा ढाहीआ। सच स्वामी दर्शन पाउँदे, अन्तरजामी वेख वखाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतां हथ्थ

विच वेखी माला, मालक मिल्या धुरदरगाहीआ। जो त्रैगुण माया तोड़े जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाला, दीवा बाती कमलापाती निरगुण जोत दए चमकाईआ। झगड़ा रहे ना काल महाकाला, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जन्म मरन दा हल्ल होवे सवाला, आवण जावण लेखा दए मुकाईआ। जिस नूं कहिंदे पुरख अकाला, अकल कलधारी धुरदरगाहीआ। जिस दा नूर अष्टभुज जोत ज्वाला, नूर नुराना सोभा पाईआ। सो त्रैभवन धनी हो के मेहरवाना, महबूब आपणी कार कमाईआ। जन भगतां बन्नॄ के धुर दा गाना, विष्न ब्रह्मा शिव आसा पूर कराईआ। जिन्नॄां ने मिल के गाया धुर दा गाणा, सोहँ ढोला इक्क अलॄाईआ। जिस नूं नाप सके ना पैमाना, पैमाइश विच ना कोए ल्याईआ। समझ सके ना कोए इन्साना, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। धुर दा माण देवे नाम निधाना, निशाना इक्को इक्क देवे लगाईआ। जिस दवारयों प्रगट होवे कृष्ना रामा, राम रामा ओसे दा जस गाईआ। उह लेखा लहिणा जाणे दो जहानां, लख चुरासी फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम जोत सरूपी पहरे बाणा, बावन भेख ल्या बदलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे जगत निशाना, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतो सतारां हाढ़ॄ राती, रुतड़ी धर्म महकाईआ। खेल करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस ने आपणे बणाउणे धर्म दे साथी, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथी, परदा अंदरों दए चुकाईआ। जन भगतो तुसीं श्री भगवान दे आदि जुगादी जमाती, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग संग निभाईआ। तुहाडा खेल सदा बहु भांती, धू प्रहलाद देवे गवाहीआ। कबीर जुलाहे सुणो साखी, रविदास चमार ढोला गाईआ। जनक तक्कया साख्याती, साहिब स्वामी सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए पाती, पत्रका नाम लिखाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी बदल देवे हयाती, हरि मन्दिर इक्को इक्क वखाईआ। सो कलयुग अन्तिम झगड़ा मेटे कायनाती, कलमा धुर दा इक्क प्रगटाईआ। निरगुण जोत जगाए नूर करे अगम्मी बाती, दीपक तेल लोड़ रहे ना राईआ। करे खेल पुरख अबिनाशी, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। जो हर घट अंदर होया वासी, वसल देवे यार खुदाईआ। रूह बुत्त करे पाकन पाकी, पतित पुनीत दए बणाईआ। जन भगतो तुहाडा मेल होया इत्तफाकी, फ़ाके विच मरे लोकाईआ। साची मंज़ल चढ़ना घाटी, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। आवण जावण मेट के वाटी, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप भुगताईआ। गुर अवतार कहिण माला मणका करे पुकार, अंदरे अंदर ध्यान लगाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, निरगुण निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरा करदे रहे शृंगार, रिषी मुनी आपणे नाल मिलाईआ।

मेरे मणकयां दी पाउँदे रहे छणकार, जंगलां विच हिलाईआ। मैनूं लै के वड़दे रहे डूँग्घी ग़ार, कंदरां विच डेरा लाईआ। अक्खीं मीट के करदे हाहाकार, दरोही दरोही नूर खुदाईआ। इलम आलम विच गए हार, आलम इलम भेव कोए ना पाईआ। मैं जुग चौकड़ी हुन्दी रही खुआर, मूर्ख मूढ़ धक्के रहे लगाईआ। मैनूं फड़ के करन जगत विभचार, माया ममता मोह विकार हल्काईआ। साचा मन्दिर करे ना कोई उज्यार, घर स्वामी मिलण कोए ना पाईआ। मैं सदी चौधवीं होई बड़ी दुख्यार, मुल्ला शेख़ मुसायक मेरा मसला हल्ल ना कोए कराईआ। पंडत पांधे गए हार, ग्रन्थी गिरहा ना कोए वखाईआ। साचा मिले ना कोए मीत मुरार, प्रीती सच ना कोए कमाईआ। मैं अन्तिम करां पुकार, रो रो हाल सुणाईआ। समाजां वाले करन खुआर, हंगता विच जगत लड़ाईआ। मैनूं प्रभू तेरे भगत चाहीदे दो चार, लख चुरासी वज्जे वधाईआ। इन्हां दा नाता जोड़ मेरे नाल, जिन्हां दे नाल मेरे मन दी नालिश रही ना राईआ। मैं सुणावां आपणा हाल, हालत इक्क बताईआ। कलयुग अन्तिम होए कंगाल, नाम धन पल्लू ना कोए पाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। माला कहे मेरे भगवन्त, भगवन तेरी सरनाईआ। सब दा तोड़ गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। तूं इक्को बोध अगाधा पंडत, विद्या तेरी सेव कमाईआ। सब दे अन्तर निरंतर दस्स इक्को मंत, फ़ुरना मन दा बन्द कराईआ। दर दरवेश करदा मिन्नत, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। चारे दिशा वेख के सिम्मत, दीन दुनी लई तकाईआ। साची रहे किसे ना ख़िल्लत, ख़ालक ख़लक ना कोए मनाईआ। जगत खुआरी दिसे ज़िल्लत, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। मेरी अन्त अखीर मन्न लै मिन्नत, सच दवारे सीस झुकाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म धार बख़्श आपणी मिल्लत, मिलावट नज़र कोए ना आईआ।

सतिगुरू सन्त सुहेला सच सिपाही, जिस दा सिपाहसालार इक्को नज़री आइंदा। अर्जन युधिष्टर देण गवाही, शहादत लक्ष्मण कोलों भुगताइंदा। गोबिन्द फड़ के बणाया धुर दा राही, रस्ता इक्क जणाइंदा। जिस दा निशाना उके कदे नाहीं, तीर अणयाला इक्क लगाइंदा। बजर कपाटी पार कराए सहिज सुभाई, सुखमन टेडी बंक आप लँघाइंदा। ईड़ा पिंगल पन्ध मुकाई, रस्ता अगला आप समझाइंदा। साचा नूर करे रुशनाई, निज नेत्र डगमगाइंदा। अमृत रस जाम प्याई, तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। जिस ने बणना धर्म सिपाही, वरदी धुर दी नाम पहनाइंदा। जिस दा लिबास समझे कोई नाहीं, सो जम की

फास कटाइंदा। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। सतिगुर सिपाही कदे ना फड़े खण्डा, तलवार धार ना कोए चमकाईआ। उह शब्दी रूप उतरे विच ब्रह्मण्डां, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। लख चुरासी विच्चों इक्को प्रभ दा प्यार लभ्भे चंगा, दूजी रीत ना कोए जणाईआ। उस दे अंदर अमृत धार वहे गंगा, गोदावरी सेव कमाईआ। सो स्वामी होवे संगा, साजण हो के तोड़ निभाईआ। जुग जुग सन्त सिपाही कूड़ी क्रिया दा मेटे दंगा, मन विकार हँकार दए गवाईआ। अमृत आत्म देवे अनन्दा, परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जे किसे ने वेखणा सिपाहीओ एह सत्त रंग दा डण्डा, जिस ने डण्डौत दीन दुनी देणी जणाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सिपाही कदे ना फड़े बन्दूक, निशाना अक्ख ना कोए टिकाईआ। उह बिना अक्खां तों वेखे चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाईआ। जद आवे ते मेटे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। चार वरनां कर के सूत, सति पुरख दए मिलाईआ। बणाए साचे पूत, पिता पुरख अकाल देवे वखाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे नीच ऊँच, ऊँच नीच एका आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा सिपाही नौजवान, जोबनवन्ता नज़री आईआ। जिस दे हथ्थ नाम कमान, चिल्ला तीर कमान चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ गुमान, गुरबत अंदरों बाहर कढाहीआ। झगड़ा मिटा देवे ज़िमीं असमान, चौदां लोकां चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। अन्तर निरंतर वखा के सच मकान, काया काअबा सोभा पाईआ। जोती जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिपाही आप प्रगटाईआ। सच सिपाही होवे सन्त योद्धा, सूरबीर नज़री आईआ। जिस दे अंदर होवे ज्ञान बोधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। इक्को नाम गावे सलोका, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जो कलयुग दे अन्त सदी चौधवीं सन्त सिपाही दे मिलण दा मिल गया मौका, बण के दयो वखाईआ। ओथे चले कोई ना सोचा, समझ दा लेखा दए मुकाईआ। सतिगुर दे चरण लग्ग के जन भगतो सिपाही बणना नहीं कोई औखा, जिस दी पिठ्ठ उत्ते आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। सिपाही कहे मैं लैणी ओह सिख्या, जेहड़ी चार जुग ना किसे समझाईआ। लैणी ओह भिच्छया, जेहड़ी हथ्थां नाल ना कोई वरताईआ। देणी ओह सिख्या, जिस दा हरफ़ नज़र कोई ना आईआ। जिस दे नाल दो जहान जावे जित्तया, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। साचा सिपाही कदे ना (वढावे पिठया), सनमुख आपणे प्यार दी शहादत दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। सन्त सिपाही होया सूरबीर, अंदरों बल प्रगटाईआ। तेरे अन्तर फड़ लावे नाम

तीर, मन दा डेरा देणा ढाहीआ। एह तन वजूद तेरी जागीर, आत्म परमात्म मिल के लैणी बणाईआ। जे सन्त सिपाही ना हुन्दा कबीर, कबरां दा लेखा कवण मुकाईआ। शरअ दा कटे कौण ज़ंजीर, शास्त्रां तों बाहर करे कवण पढ़ाईआ। मेहर नज़र नाल बदले तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। सन्त सिपाहीओ तुहाडा इक्क पातशाह तुसीं ओस दे सारे वज़ीर, तस्वीर आपणे अंदर लओ टिकाईआ। जगत वलों दिसो हकीर, हुक्म मन्नो चाँईं चाँईआ। साचे सन्तां दी प्रेम नाल प्यार नाल मुहब्बत नाल बदल देवे ज़मीर, ज़ामन हो के आपणा पल्लू लए फड़ाईआ। फ़िकरयां वाले अक्खरां वाले पत्थरां वाले कदे ना बणयो फ़कीर, चिन्ता विच झट ना कोई लँघाईआ। जे ओस दे नाम दी बिन लाईन तों वेखो लकीर, नालायक तों लायक दए बणाईआ। जिस नूं कटे ना कोए समशीर, तलवार धार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिना सन्त सिपाही बणया लभ्भदी नहीं मंज़ल अख़ीर, मिले मेल ना बेपरवाहीआ। एह सन्त सिपाही दी वेखो बन्नृदी धीर, ध्यानी ध्यान नाल लगाईआ। निरगुण धारा सदा सच्ची गुणी गहीर, सच सच वेख वखाईआ। जे अजे तक्क नहीं आई धीर, अंदरों उत्तों दए वखाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी किसे नहीं दस्सी पीर, सो साहिब सुल्तान दए दृढ़ाईआ। जेहड़ी सवाणी सतिगुर नाल नहीं मिली अख़ीर, ओहदा नाता लए जुड़ाईआ। जे तुहानूं प्रीत लग्गे सच्ची वांग कबीर, मेला सहिजे लवां मिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। जे तुसां ने प्रेम प्यार अंदर हथ्थ जोड़े, जोड़ी धुर दी दयां बणाईआ। जित्थे पहुंच ना सकण अस्व घोड़े, हाथी गज ना कोए वड़्याईआ। जित्थे गाउँदे नहीं सोहले ढोले, रागां नाल नाद ना कोए वजाईआ। जित्थे नहीं कोई ठग्ग चोरे, तत वजूद ना कोए वखाईआ। सतिगुर शब्द सन्त सिपाहीआं नूं आपे बौहड़े, भय भयानक विच होए आप सहाईआ। सूरबीर बहादर कूड़ी क्रिया दे दिन रह गए थोड़े, साचे सिपाहीआं मिल के डेरा देणा ढाहीआ। तुहाडी मंज़ल विच कोई ना अटकावे रोड़े, रूह बुत्त दी अंदरों करे सफ़ाईआ। आत्म परमात्म मिल के दोवें हो जाण कोरे, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। तुसीं नौजवान बण के धुर दे छोहरे, शमां आपणी लओ जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सिपाही सच्चा लेखा दए समझाईआ। सन्त सिपाही हथ्थां नाल कदे नहीं लड़दा, घसुन्न मुक्की ना कोए लगाईआ। ओह ओस मंज़ल ते चढ़दा, जित्थे कदम ना कोए टिकाईआ। शब्द धार नाल मन विकार फड़दा, फड़ के मूँह दे भार सुटाईआ। प्रेम नाल कहे तूं रूप ओस हरि दा, जो हर हिरदे डेरा लाईआ। तूं विछड़यां चिर दा, चुरासी विच भज्जें वाहो दाहीआ। जे कदे वेखें घर साहिब थिर दा, थुड़े थिड़कयां पार लँघाईआ। अग्गे हुण वेख्यो गेड़ा किवें गिड़दा, भगत सुहेले सन्त सिपाही सारे लए उठाईआ। ध्यान करे

ज्ञान करे आपणी मेहर दा, मुहब्बत दा महबूब इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा रूप धरया शेर दा, भबक आपणी दए समझाईआ। पूरन हो के साचे सन्तां किवें घेर दा, घिरना अंदरों दए कढाहीआ। पूरब जन्म वेख के मन दे मणके फेरदा, कर्म दा लेखा रिहा झोली पाईआ। अंदर मन्दिर काया काअबे इक्को रंग वखाए सञ्झ सवेर दा, घड़ी पल ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सिपाहीओ तुहाडे पिच्छे नौ खण्ड पृथ्मी उत्ते राज राजानां शरअ शैतान दी छेड़ छेड़दा, जूह बेगानी सारयां रिहा वखाईआ।

जन भगतो मेल मिल्या श्री भगवन्त, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। पवित्र साफ़ करे अन्तश्करन अन्त, अन्तर आत्मा कर रुशनाईआ। सच स्वामी मिल के धुर दा कन्त, सेज सुहञ्जणी दए सुहाईआ। शब्द धार बणा के सन्त, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। निराकार बणा के पंडत, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। सतिजुग साची बणा के संगत, सति धर्म इक्क प्रगटाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए जणाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे कोई निन्दक, ठग्गी ठग्ग ना

८१४ कोए कमाईआ। मन कल्पणा करे कोई ना इल्लत, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। सर्ब दी सांझी करे सिम्मत, उत्तर पूरब ८१४

२० पच्छिम दक्खण इक्को घर वखाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश होवे मिल्लत, मेला मिले सहिज सुभाईआ। २०

हरख़ सोग ग़म ना रहे चिन्त, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। प्रभ मिलयां दूजे अग्गे करनी पए ना मिन्नत, दर दर सीस ना कोए निवाईआ। गुरमुखो साची मंज़ल चढ़ना आपणी हिम्मत, मार्ग लैणा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। जन भगत तेरे अन्तर देवे भगती, भावना प्रभ आपणे नाल मिलाईआ। तेरी आत्मा नूर अगम्मी शक्ती, शाख़ धुर दी नज़री आईआ। तेरा मालक ख़ालक इक्को अर्शी, शाह सुल्तान वड वड्याईआ। देवे माण वड्याई उपर धरती, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। तैनूं समझ आवे आपणे घर दी, परदा अंदरों दए उठाईआ। ठंडी धार मिले सरोवर सर दी, निजर झिरना दए झिराईआ। जेहड़ी कामनी कल्पणा विच (हड़्दी), हड़्ह दे वहिण दए वहाईआ। दीन दुनी वेखो सड़दी, चार कुण्ट अग्नी तत तपाईआ। बिन भगतां आत्म परमात्म ढोला कोए ना पढ़दी, साचा गीत ना कोए अलाईआ। वेखो खेल अगम्मे घर दी, जो हर हिरदा रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धर्म इक्क वखाईआ। जन भगतो साचा वेखो इक्को धर्म, धर्म आत्मा इक्क समझाईआ। जिसदी ज़ात पात नहीं कोई वरन, बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो सन्त सुहेले इक्को नाम निधाना पढ़न, श्री भगवाना राह तकाईआ।

सो मंजल लाशरीकी हक हकीकी चढ़न, वाहवा मिल के वज्जे वधाईआ। सच दवारे बण वणजारे करो प्रण, मन ममता दूर कराईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल दे परसणे चरण, चरणोदक लैणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा वखाईआ। जन भगतो तुसां सुणया सच संदेसा, सन्त सुहेले रिहा जणाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहे हमेशा, जोती जाता पुरख अबिनाशी सचखण्ड निवासी धुरदरगाहीआ। सो कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार जूठ झूठ मुका के लेखा, देस परदेसा खोज खुजाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आत्म परमात्म करा के एका, इक्को काया मन्दिर दए वखाईआ। जिस दे अन्तर रहे बुध बिबेका, विवेकी आपणी खेल कराईआ। साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना होवे सब दा नेता, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख दए खल्हाईआ। कूड़ कुटम्ब चार कुण्ट मुक्के अन्तिम ठेका, ठाकर हो के अन्तिम सब दा लहिणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क वखाईआ। जन भगतो सच दवारा वेखो एक, एकँकार इक्क प्रगटाईआ। जित्थे भगतां मिले टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी नाम लगाईआ। जूठा झूठा नहीं कोई भेख, भरम विच कर्म ना कोए जणाईआ। सो तुहानूं साची दस्से इक्क आदेस, अदल इन्साफ़ दए दृढ़ाईआ। जिस दा प्यार मुहब्बत विच वसदा रहे सचखण्ड देस, दरगाह साची हक मुकामे मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव गणपति गणेश, देवत सुर सुरप्त इन्द इन्द्रासण सच सिँघासण खोज खुजाईआ। सो सब दी सुरती करे बिबेक, जेहड़ा अकाल मूर्ती मूर्ती आपणी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। जन भगतो जो संदेसा दिता अंदरों लाल, लाल रूप अंदरों दए वखाईआ। जिस दी काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, मन्दिर धुर दा वज्जे वधाईआ। दीपक जोती जगे बेमिसाल, मिसल दा मसला सके ना कोए समझाईआ। जिस दा लहिणा पिछला माज़ी सो लेखा वेखे हाल, अगला परदा दए खुल्हाईआ। भेव खुल्हाए अगले साल, आगमन विच राह तक्के जगत लोकाईआ। जिस लेख लिखाउणा शाह कंगाल, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। दीन दुनी दा बदल देणा विधान, विद्या दा (उदेश) देणा बदलाईआ। इक्को नाम निधाना सब नूं करना पए परवान, परवाना धुर दा शब्द सुणाईआ। जन भगत योद्धा सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दाना लए उठाईआ। संदेसा देवे रातीं सुत्यां आण, बिना कन्नां राग सुणाईआ। लेखा जाणे श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणया रिहा बेपहचान, सो परदा ओहला बण विचोला शब्दी ढोला दए सुणाईआ। देवणहारा साचा दान, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। सच सखी

दा बण के धुर दा काहन, घनईया बण नईआ सृष्टी दृष्टी दए चलाईआ। जिस नूं हज़रतां पैगम्बरां मन्नया अमाम, अमलां दा लेखा वेख वखाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, जगत ज़ंजीर शाह हकीर दए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नूरी नूर दा होए इस्लाम, इस्म आज़म दए जणाईआ। बिना अक्खरां तों दस्स कलाम, कलमा इक्को दए वखाईआ। जिन्हां अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न कीता बदनाम, ओम कहि के झगड़ा रहे पाईआ। उन्हां दे काया मन्दिर अंदरों हरामी नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं दे देणा पैग़ाम, दो जहानां कर शनवाईआ। मंज़ल दस्स के इक्क आसान, गुरमुख व्यक्ति वेख किसान, किस्मत सब दी देणी बदलाईआ। झगड़ा मुके दीन दुनी तमाम, तमा दा करे कोई ना माण, अमाम इक्को देणा दरसाईआ। लेखा समझा अञ्जील कुरान, परदा लाहे वेद पुराण, शास्त्रां दी जड़्ह बिन अक्खर पढ़ परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क प्रगटाईआ। सच संदेसा दिता हेरां लाल , लाल रूप रिहा समझाईआ। सब दा मालक इक्को महबूब, पातशाह धुरदरगाहीआ। जिस दे नाम दा डंका वज्जे चारे कूट, काया कुटीआ सब दी फोल फुलाईआ। लोकमात विच्चों कढ्ढ देवे जूठ झूठ, सन्त सुहेले दए उठाईआ। जिन्हां दे पैरीं कोई तसम्यां वाले होणे नहीं बूट, नाम दा डण्डा दए लगाईआ। सुरती देवे काया पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करे रुशनाईआ। कुछ लहिणा देणा जाणे श्री भगवान , जिस दा जस रवि ससि रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप साचा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म चले एकँकार, अकल कलधारी आप जणाईआ। वेखो पुरख अकाल, अकल कलधारी वेस वटाईआ। जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चार, गुर अवतार पैगम्बरां आपणा हुक्म सुणाईआ। सो भगत सुहेला इक्क अकेला प्रगट होवे अगम्म अपार, अलख अगोचर परदा दए उठाईआ। जन भगतां बख्श के इक्क प्यार, साचा मन्दिर इक्क वखाईआ। जित्थे गुरमुख सोहे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। कूड़ी बदल देवे चाल, सति धर्म दी करे संभाल, चार वरन करे प्रितपाल, बालक आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। जन भगतो भगती दा वेखो मूल, अनमुल्ल आप समझाईआ। शंकर दी तक्को त्रसूल, जो त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। धुर दा बचन ना जाणा भूल, अनभुल दए वड्याईआ। सतिगुर चरण एको धूल, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। सब दा मालक इक्क कन्तूहल, कन्त नूर खुदाईआ। जिस ने बदल देणा असूल, असली इक्को राह वखाईआ। दीनां मज़्हबां मंगे ना कोए मासूल, काया कर्म ना कोए जणाईआ। धुर दा हुक्म देवे माअकूल, चार कुण्ट ना कोए उलटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला हुक्म आप सुणाईआ। जन भगतो करो ध्यान, अधिआत्मक भेव खलुाइंदा। अक्खरां तों परे देवां ज्ञान, अज्ञान रहिण कोए ना पाइंदा। सति धर्म दा इक्क निशान, निशाना नर नरायण झुलाइंदा। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड अक्ख ना कोए उठाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर करन परवान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। चारे खाणी चारे बाणी दिसे बेज़बान, ज़ेर ज़बर वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। सो लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा होए हैरान, हैरानी अंदरों बाहर ना कोए कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतो जो बोलया धर्म प्यार, रसना जेहवा गाईआ। तिस दा अन्तर इक्क आधार, निरंतर नूर चमकाईआ। निमंत्रण विच आए दरबार, भगत दवारे सोभा पाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा रिहा उतार, मकरूज कर्ज़ा रिहा चुकाईआ। मुनी वशिष्ट दा दे उधार, राम गुफ़तार नाल शनवाईआ। अयुध्या दा हकदार, दसरथ दा रथवाहीआ। सेवा कीती नौ बरस महीने चार, कुशल्लया नित नित सीस निवाईआ। सुमित्री दे के इक्क प्यार, सहिजे दिता समझाईआ। लक्ष्मण राम जोड़ अपार, अपरम्पर परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। जन भगतो भेव अभेदा दस्से आप, आप आपणी दया कमाईआ। जिस दा राम राम नाल साथ, राम राम विच समाईआ। ओस दस्स के आपणी गाथ, गाथा अगली दिती दृढ़ाईआ। महीना नज़र आवे विसाख, थित पंजवीं सोभा पाईआ। साढे तिन्न दा वक्त अन्धेरी रात, नगरी अयुध्या वज्जी वधाईआ। राम ने सहिजे कीती बात, हँसमुख दिता सुणाईआ। उठ वेख मेरे भरात, भराता दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ी दिसे जमात, अन्त सर्ब दुक्खदाईआ। नाता जुड़या किसे ना कमलापात, कमल नैण दरस कोए ना पाईआ। तेरी होर वधावां आस, तृष्ना आप मिलाईआ। तक्क उपर मेरे आकाश, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जित्थे नहीं कोई ज़ात पात, वरन बरन ना कोई दरसाईआ। इक्को मालक पुरख समराथ, सब दा दाता इक्क अख्वाईआ। ओह वेखणहार खेल तमाश, जुग जुग वेस वटाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम जोत करनी प्रकाश, तत्व तत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। राम किहा सुण मेरे मीत, मित्र प्यारे दयां जणाईआ। जिस वेले त्रेता द्वापर गया बीत, रीतीवान नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा पैणा मन्दिर मसीत, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। खेल मुके ना ऊँच नीच, नीचों ऊँच ना कोए बणाईआ। ओस वेले खेल करना हरि जगदीश, जगदीशर आपणा फेरा पाईआ। जिस दे आदि जुगादि जुग चौकड़ी छत्र झुल्ले सीस, शाह पातशाह सुल्तान हुक्म सुणाईआ। सदी बीसवीं होवे ठीक, ठाकर

प्रगटे धुरदरगाहीआ। तूं उस दी रखणी उडीक, मानस मानस जन्म बदलाईआ। पहले जगत दी देवे प्रीत, प्रीत विच्चों प्रीतम आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दए दृढ़ाईआ। पूरब लहिणा दस्से इक, अकल कलधारी आप जणाईआ। जेहड़ा बिन अक्खरां तों राम ने लिख्या लेख, लेखा सके ना कोए मिटाईआ। कलयुग अन्तिम धार के आपणा भेख, वेस अवल्ला ल्या कराईआ। जन भगतां माण के सेज, सिँघासण इक्को रिहा सुहाईआ। सच प्रीती कर के हेत, मुहब्बत आपणे नाल प्रनाईआ। धुर दा बण के खेवट खेट, नईआ नाम जगत चलाईआ। धुर फ़रमाना दे संदेश, सुत्यां ल्या उठाईआ। जिस कारण बत्तरा होया पेश, पिछला जन्म दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सुण रूप लाल बत्तरा, बहत्तर नाड़ी वज्जे वधाईआ। साची काया दा अंदरों फोले तेरा पत्रा, सच दए वखाईआ। जेहड़ा लेख लभ्भा नहीं विच्चों ढाई सतरा, सत्ता तों उत्तों दए दृढ़ाईआ। जित्थे लेखा नहीं कोई सिल पत्थरा, बजर कपाटी परदा दए उठाईआ। जन्म मरन दा नहीं ख़तरा, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। अग्गे रहिण ना देवे वक्खरा, दूजे घर ना कोए बिठाईआ। जिस मंज़ल ते जगत जीव नहीं कोई अपड़ा, सहिजे देणा पुचाईआ। गुरमुख बाहरों रहे कोई ना बग़ला बप्परा, हँस रूप वज्जे वधाईआ। कुछ झगड़ा वेखो विच बसरा, बस्ती सब दी फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथमी दा कढ्ढ के नम्बर ख़सरा, हद्द हदूद देणी जणाईआ। श्री भगवान कोल दो जहानां छजरा, जिस दी लाईन लकीर समझ किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे पध्धरा, पदमां दा लेखा दए मुकाईआ। जन भगतो तुहाडीआं पूरीआं कर के सध्धरा, सदा संग दए रखाईआ। जगत जहान वेखो ग़दरा, गदागर बणे लोकाईआ। मानव फिरे वांग डंगरा, ढोर भज्जण वाहो दाहीआ। किसे दा रहिणा नहीं दीन मज़्हब दा जंगला, चार दीवारी कूड़ी नज़र कोए ना आईआ। प्रकाश बदलणा सूर्या चन्द दा, मण्डल मण्डप वेस वटाईआ। प्रभू ने वेख वखाउणा डूँघी कंदरा, टिल्ले पर्बत भज्जे वाहो दाहीआ। जन भगतो तुहाडे अंदर काया मन्दिर तोड़ के जंदरा, ज़िंदगी दा जीवन देणा बदलाईआ। तुहाडा तन वजूद बणाके मथरा बन बिन्दरा, सुरती शब्दी गोपी काहन देणा नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा धर्म इक्क प्रगटाईआ। जन भगतो प्रभ दा होवे धर्म दवारा, धर्म इक्को इक्क समझाईआ। शरअ दा रहे ना कोए वणजारा, शरीअत बैठे मुख छुपाईआ। कूड़ी क्रिया करे किनारा, शौह दरयाए दए रुढ़ाईआ। सति धर्म दा होवे जैकारा, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। प्रेम प्रीती भगती मिले हक प्यारा, प्रेमी प्रीतम इक्क सिखाईआ। खेल करे गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहर परदा लाहीआ। जिस नूं सईयदे करदे नमों नमों नमस्ते विच डण्डावत पैगम्बर गुर अवतारा, सच दवारे सीस

झुकाईआ। सो लहिणा देणा लेखा जाणे विच संसारा, संसारी भण्डारी नाल मिलाईआ। सच प्रीती धुर दी रीती लोकमात चले आपणी वारा, वारता अगली आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण धार एकँकार परवरदिगार सांझा यार ख़लक खुदाई आप दृढ़ाईआ। जन भगतो वेखो हक महबूब, सूफ़ी सन्तां मेल मिलाइंदा। जिस दा अर्श इक्क अरूज, आलीशान सोभा पाइंदा। मंज़ल देवे इक्क मक्सूद, मसला इक्को इक्क दृढ़ाइंदा। जिस दी सिफ्त करे हज़ारा दरूद, हज़रत हो के फोल फुलाइंदा। कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया शरअ करे नेस्तोनाबूद, नाम डंका इक्क सुणाइंदा। झगड़ा रहे ना एका दूज, दुतीआ भाउ मेट मिटाइंदा। चार वरनां दे के एका सूझ, मन बुद्धी तों परे आप पढ़ाइंदा। भाग लगा के काया पंज तत कलबूत, कलमा इक्को इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आपणी कूट, दिशा भगतां फोल फुलाइंदा।

★ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

८१६
२०

माला कहे मैं सच दवारा बैठी मल्ली, नामालूम दयां जणाईआ। बिरहों वैरागण हो के झल्ली, झलक तक्की बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी कोटां दी लैंदी रही बली, तन माटी ख़ाक दिते सुकाईआ। किसे नूं लभ्भण नहीं दिती यार वाली गली, गलवकड़ी गल ना कोए पाईआ। तसबी फड़ के हौका भरया अली, अल्ला अग्गे सीस निवाईआ। तेरी खेल होवे भली, भरम गढ़ तुड़ाईआ। मैं झगड़ा वेख्या दली, दलिद्रां संग रखाईआ। सूफ़ी सीस रखे कोई ना तली, तलवार खंजर रही डराईआ। परवरदिगार मेहरवान नहीं छली, अछल छल्लधारी आपणा वेस वटाईआ। जेहड़ी वस्त अमोलक सच प्यार वाली घल्ली, घर घर दिती वरताईआ। उह माया ममता मोह विच रली, रस्ता पिछला गई भुलाईआ। भाग लग्गे किसे ना काया माटी खल्ली, ख़लक ख़ालक दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क चढ़ाईआ। माला कहे मेरी जुग जन्म दी आसा पुन्नी, पाया परम पुरख करतार। जिस ने धुर दरबार पुकार सुणी, सुण पुकार ल्या अवतार। लख चुरासी विच्चों हरि संगत साची चुणी, चार वरनां दए अधार। नाम निधान दी ला के धुनी, जगत मेटे धूआँधार। लहिणा देणा वेखे जगत जिज्ञासू सुन्नी, सोभावन्त हरि सिक्दार। भाग लगावे आपणी कुल्ली, कलमे दा कर्म करे ना कोए विहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा इक्क दवार। माला कहे मैं वेख्या आदि जुगादी मालक, मलक

मलक खेल खिलाईआ। धार बणाउँदा रिहा ख़लक, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। वासा रख के उपर फ़लक, फ़रमाना धुर दा दए फ़रमाईआ। कलयुग अन्तिम पूरी कर के शर्त, शरअ रिहा बदलाईआ। निरगुण धार आया परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे ग़रज़, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा राग दस्स के अगम्मी तरज़, नाद इक्को दिता वजाईआ। मैं वेख के हैरान होई असचरज, अचरज लीला की वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। माला कहे मैं वेख्या शहिनशाह मलूक, मालक धुर दरगाहीआ। सच प्रीती बख्श सलूक, सुलाहकुल नज़री आईआ। भेव चुका के चारे कूट, दहि दिशा करे शनवाईआ। जन भगतां अंदर रहिण ना देवे जूठ झूठ, दर परदा दए उठाईआ। इक्को रंग रंगाए ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी होए सहाईआ। सच दुआर बख्शे रसूख़, रुख़सत जगत वलों दवाईआ। पिछला हुक्म कर मनसूख़, अगला डंका दए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा रिहा उठाईआ। माला कहे मैं वेख होई ख़ुशहाल, ख़ुशीआं विच राग अल़ाईआ। प्रभ पाया दीन दयाल, दीनां दया कमाईआ। भगत सुहेले तक्के लाल, लालण आपणे रंग रंगाईआ। धर्म दुआर सच्ची धर्मसाल, घर ठांडा इक्क सुहाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सब दी पूरी करे घाल, तपसवी तप ना कोए बणाईआ। जगत रीती बदल के चाल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। दे के नाम शब्द विशाल, विश्या दा लहिणा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। माला कहे मैं वेख्या भगत भगवान दा मिलाप, मिलण वाला नज़र कोए ना आईआ। दोहां दा सांझा तक्कया जाप, जगत दी लोड़ रही ना राईआ। इक्को चंगी लग्गी बात, जो बातन परदा रही उठाईआ। सुहञ्जणी होई रात, भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मनाईआ। गुरमुखां दिती दात, दाते दानी आप वरताईआ। सिख्या दिती साख्यात, सहिज दिता समझाईआ। हरि भगत बणयों नार ना कोई कमज़ात, बिना कन्त कन्तूहल साची सेज ना कोए सुहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पाउणी वफ़ात, फ़ातया पढ़े सर्ब लोकाईआ। लेखा जाणे तलूह आफ्ताब, ख़ालक ख़लक उपर करे रुशनाईआ। माला कहे मेरा उस दे चरण इक्क आदाब, जो अदब नाल भगतां दए वड्याईआ। अगे रहे ना कोए अज़ाब, अजब दा लेखा दए चुकाईआ। सतिजुग नवीं साजना साज, साजण गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। खेले खेल एकँकारा इक्को वाहिद, वाहवा जिस दी वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा रिहा उठाईआ। माला कहे मैं दोवें हथ्थ मलदी, आपणी ख़ुशी बणाईआ। खेल वेख पिछले कल़ दी, कलमे कलाम गई भुलाईआ। जिस वेले हरि संगत चलदी, चाल चलण सोहणा नज़री आईआ। अंदरों

धार निकले कपट छल दी, विषयां दा विशा दए बदलाईआ। वस्त मिले अगम्मे फल दी, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। आशा पूरी होई बल दी, बावन दए गवाहीआ। गोबिन्द धार रहे चलदी, चलत वेखे लोकाईआ। जो आत्म परमात्म विच रलदी, राह इक्को इक्क तकाईआ। उस दे अंदर जोती बलदी, जोती जाता करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग रिहा चढ़ाईआ। माला कहे मेरा लहिणा देणा मुकाया भगतां, भगती पूरी दिती कराईआ। धुर दा हुक्म सुणाया नाल अर्थां, अर्थी दी लोड़ रही ना राईआ। निरगुण धार वेखी हर थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। इक्को रंग चढ़ाया नारी मर्दां, मदद लै के धुर दरगाहीआ। सतिजुग साचा लाहया परदा, ओहला दिता उठाईआ। राह दसाया धुर दे घर दा, जित्थे मिले धुर दरगाहीआ। जो सोहँ ढोला परदा, माला कहे मैं उस दे चरणां सीस झुकाईआ। जो गुरमुख इक्क वार मैनूं फड़दा, मुड़ के फड़न दी लोड़ रहे ना राईआ। साहिब सुल्तान जिस नूं निरगुण हो के वरदा, सो सरगुण हो के आपणा कन्त हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हाए अगले दर दा, दर दरवेशां लए बुलाईआ।

★ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ३ रात दे समें ★

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, सच सति तेरी शहिनशाहीआ। हरि पुरख निरँजण हुक्मरान, हुक्म तेरा धुरदरगाहीआ। एकँकारे नौजवान, तेरा रूप अनूप इलाहीआ। आदि निरँजण वड बलवान, सूरबीर तेरी वड्याईआ। अबिनाशी करते खेल महान, निरवैर आपणी कार कमाईआ। श्री भगवान वड बलवान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। पारब्रह्म सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। सचखण्ड दवारा खोल्ह महान, मेहर आपणी इक्क कमाईआ। थिर घर बख्श अगम्मा माण, निगाहबान वेख वखाईआ। शब्दी धार नौजवान, सच दवारा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रूप आप प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण गहर गम्भीर, गुर आपणी खेल खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण बेनज़ीर, नज़र तों परे करे रुशनाईआ। एकँकारा लेख जाण शाह हकीर, हुक्म आपणा इक्क वरताईआ। आदि निरँजण धुर दा पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी करे पढ़ाईआ। श्री भगवान बख्शणहारा धीर, धीरज धर्म धार प्रगटाईआ। अबिनाशी करता चोटी मंज़ल चढ़ बैठा अख़ीर, अकल कलधारी आपणी कार कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण के दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप प्रगटाईआ। साचा खेल करे हरि मीता, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द सहिज अणडीठा, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। दो जहानां बदलणी रीता, गुर अवतार पैगम्बर नाल रलाईआ। सच दुआर वखाउणा ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। झगड़ा मिटाउणा ऊँचा नीचा, आत्म ब्रह्म इक्क समझाईआ। साचा कलमा दस्से हदीसा, हज़रत हो के करे पढ़ाईआ। प्रगट हो के जगत जगदीसा, जगदीशर आपणा राह चलाईआ। लहिणा देणा पूरा करे मुहम्मद मूसा ईसा, असल दा असल नूर खुदाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां झोली पाए पिछला कीता, करनी करता आप कमाईआ। रूप धार के नीकण नीका, वड वड्डा दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया बदले नाम नाल तरीका, शरअ ढंग नज़र किसे ना आईआ। हुक्म रहे ना राम सीता, राधा कृष्न ना कोए शनवाईआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीता, मसला हक दए दृढ़ाईआ। धुर दा कलमा दए हदीसा, हाज़र हो के करे पढ़ाईआ। पन्ध मुकाए बीस बीसा, बिस्तर सब दे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। साचा खेल करे करतार, करनी करता आप दृढ़ाईआ। जिस नूं लभ्भदे रहे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। (बन्दना) करदे आए विच संसार, निमस्कार सजदयां विच सीस झुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बाणी बोल करदी आई इज़हार, सो ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दे सब कुछ अख्त्यार, इखलाक कूड़ा दए मिटाईआ। धर्म दा नाम बोल जैकार, अल्ला वाहिगुरू नाम इक्को बोल समझाईआ। साचा मन्दिर इक्क वखाल, दर दवारा इक्क सुहाईआ। जित्थे वसण शाह कंगाल, ऊँच नीच दा झगड़ा रहे ना राईआ। दीपक जोती जगे बेमिसाल, दीवा बाती कमलापाती इक्को डगमगाईआ। जन भगतां पूरी करे घाल हल्ल होए सवाल, समें दा लेखा दए मुकाईआ। दीनां बंधप होए दयाल, दर दरवेशां करे प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक सालस हो के आपणी कार कमाईआ। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद बण के दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी इक्को होए सहाईआ। कलयुग अन्तिम बदल देवे चाल, सतिजुग साची सुहाए धर्मसाल, धर्म दवारा एकँकारा इक्को इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल्ला हरि करतार इक्क वखाईआ। हरि करता धुर करतार, मेहरवान महबूब इक्क वखाइंदा। निरगुण नूर जोत उज्यार, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्दी धुन नाद जैकार, दो जहानां आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, देवत सुर सर्ब उठाइंदा। लहिणा देणा मूल चुका गुरू अवतार, पैगम्बर कदमां उपर आप सुटाइंदा। उठो वेखो नेत्र खोल्हो विच संसार, संसारी भण्डारी बचया रहिण कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लए अवतार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कल आप वरताइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल्ला इक्को इक्क सुहाइंदा। सच महल्ल सुहाए आप, आप आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जगजीवण दाता होए सहाईआ। दूजा नज़र ना आए पूजा पाठ, सिमरन जोग अभ्यास ना कोए वखाईआ। रूह बुत्त कर के पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। बन्द किवाड़ी काया मन्दिर अंदर खोल्ह के ताक, नूर नूर करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बणाए इक्को सज्जण साक, साक सैण होए इक्को सहाईआ। भगत भगवान, इक्क दूजे दे होवण दास, दास्तान अगली दए दृढ़ाईआ। सच दुआर एकँकार निराकार करे वास, प्रकाश आपणा इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा दर इक्क खुल्हाईआ। सच कहे मेरा खुल्ह्या दरवाज़ा, दरवेश मिले वड्याईआ। किरपा करे ग़रीब निवाजा, हरि करता शहिनशाहीआ। जिस ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पैगम्बर लख चुरासी साजण साजा, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्मे अंदर सेवा लाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां फिरे भाजा, जोती जाता सब नूं वेख वखाईआ। कलयुग अन्त अन्तश्करन सब दा रचया काजा, करनी दा करता आपणी कार कमाईआ।
८२३ चार वरन अठारां बरन दहि दिशा नव सत्त मिटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां पूरब जन्म दीआं पूरीआं करे आसां, असल विच आपणा नूर दरसाईआ। घर घर मन्दिर अंदर गोपी काहन वखावे साची रासा, मण्डल मण्डप वज्जे इक्क वधाईआ। झगड़ा मुकाए दीनां मज़्बां ज़ातां पातां, पतण इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। साचा मेला करे आप, आपणी दया आप कमाइंदा। निरगुण धार वड प्रताप, परम पुरख वेस वटाइंदा। साची धुर दी लै सौग़ात, नाम अनमुल्ला आप वरताइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, गहर गम्भीर भेव खुल्हाइंदा। सच धर्म चलावे राथ, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। जन भगतां पूरी कर के आस, आसण इक्को इक्क वखाइंदा। किसे लभ्भणा पए ना विच प्रभास, जंगल जूह ना कोए फिराइंदा। किरपा करे सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वेख वखाइंदा। साची मंज़ल दे के घाट, घाटा पूरब जन्म कर्म दा झोली पाइंदा। आवण जावण लख चुरासी मेट के वाट, वटणा आपणा नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाइंदा। साचा हुक्म देवे फ़रमान, फ़ुरना अंदरों बन्द कराईआ। भगतां मेल श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। खण्डा खड़ग ना कोए कृपान, कृपानिध होए सहाईआ। योद्धा सूरबीर नौजवान, नौबत आपणा नाम जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करे सवाधान, सुत्यां लए उठाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां वाली आप वखाईआ। चार जुग जो गाउँदे

आए गान, रसना जेहवा ढोले सिफ्त सालाहीआ। सारे ओस दी लाओ मीज़ान, गिण गिण दयो समझाईआ। किस दा कायम रिहा ध्यान, कवण असल रूप वटाईआ। कवण करदा रिहा पछाण, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। केहड़ा देंदा रिहा ज्ञान, अज्ञानीआं अन्ध अज्ञान मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे हुक्म सुणाईआ। सच दवारे हुक्म देवे एक, एकँकार आप सुणाईआ। कलयुग अन्त चार कुण्ट क्यों वध्या भेख, भेखाधारी डेरा लाईआ। त्रैगुण क्यों लाए सेक, पंज तत रही जलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अंदर वड़ के दस्सो हेत, परदा ओहला देणा उठाईआ। जिस कारण अर्जन सीस विच पवाई रेत, तत्ती तवी वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। करनी कहे सुण मेरी अरज़, आरज़ू दयां दृढ़ाईआ। भगत उधारना तेरा फ़र्ज़, फ़रमांबरदार लैणे बणाईआ। सब दी पूरी करनी आसा मनसा ग़रज़, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। आपणी खेल दस्सणी असचरज, अचरज लीला आप वखाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मुदत्तां दे विछड़े लैणे मिलाईआ। शरअ छुरी पोहे किसे ना करद, कातिल मक्तूल दोहां होणा सहाईआ। नव नौ चार दी वेख ला फ़रद, बिना अक्खरां कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। हुक्म कहे मेरा हुक्म सच्चा, सच दयां दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम वेख काया माटी भाण्डा कच्चा, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। कवण दवारे धर्म दी दिसे सत्ता, सत्त दीप परदा देणा लाहीआ। कवण नाम रंगण आपणा चोला कर के बैठा रत्ता, रतन अमोलक तेरा सोभा पाईआ। कवण मुहब्बत अंदर फिरे नट्ठा, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। कवण सेवा करे हथ्थां, चाकर ख़ाक रूप बदलाईआ। कवण दर्शन पाए अक्खां, नेत्र लोचन नैण आप खुल्हाईआ। कवण राग गाए वांग भट्टां, भटनागर आपणा ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमान कहे तेई अवतार आओ अग्गे, अगला भेव खुल्हाईआ। पिछले चार जुग दे वेखो मजे, मज़्हबां वल्ल ध्यान लगाईआ। जिस कारण सारे नस्से, शब्द हुक्म दृढ़ाईआ। साची धारों आए भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। निरगुण धार संग सजे, साजण इक्को जोड़ जुड़ाईआ। ज़रा तक्को केहड़ा सन्त बिन मेरी किरपा चढ़या उपर शाह रगे, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। कवण तुहाडे प्यार अंदर आपणी सुरती बद्धे, बन्दना इक्को सीस निवाईआ। किहड़ी कारे लाए धन्दे, धर्म देणा समझाईआ। क्यों तुहाडे हुंदयां इष्टां वाले होए गंदे, मन ममता विच हल्काईआ। अक्खां नाल वखावो चंगे, जेहड़े प्रभ नूं सीस झुकाईआ। प्रेम धार होवण ठंडे, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़न डण्डे, हक हकीकत खोज खुजाईआ। जित्थे प्रकाश नहीं सूर्या चन्दे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। दीन

मज़्ब ना कोई पाबन्दे, राम कृष्न सीस ना कोए झुकाईआ। पत्थरां वाला मन्दिर कोई ना लँघे, मठ्ठां मथ्था ना कोए घसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म सुणो नाल सख्ती, साख्यात दयां दृढ़ाईआ। आपणा खोजो जगत व्यक्ति, वेखो थाँईं थाँईंआ। बिना प्रभ दे किस दी पूरी होई भगती, भगवन मिल के खुशी मनाईआ। निरगुण जोत लै के शक्ती, शरअ दा बन्धन गया कटाईआ। मिल के प्रीतम अर्शी, अर्शां तों परे डेरा लाईआ। मन्ज़ूर कराए अर्ज़ी, आरज़ू आपणी रिहा वखाईआ। सार पा के साचे घर दी, परदा ओहला रिहा चुकाईआ। धार वेख नरायण नर दी, निरँकार नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा मंग मंगाईआ। तेई अवतार करो जलदी, आपणा लेखा दयो दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट अग्नी बलदी, क्यों ना मात सके बुझाईआ। एह खेल नहीं कोटी कोट कल दी, कपट विच वेखो लोकाईआ। सार पाओ जल थल दी, महीअल परदा दयो उठाईआ। खेल वेखो घड़ी घड़ी पल पल दी, पलक दे पिच्छे की रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणो संदेसा आपणी वेखो संधी, सनद सब दी रिहा जणाईआ। क्यों मन वासना कूड़ी क्रिया होई गंदी, कर्म कांड विच हल्काईआ। क्यों शरअ दी पा पाबन्दी, पारब्रह्म ना मेल मिलाईआ। क्यों ना तन्द सतार वज्जे तन्दी, तलवाड़ा दिसे धुरदरगाहीआ। क्यों आत्म होई रंडी, हरि कन्त ना कोए हंढाहीआ। ज़रा आपणी आपणी फिर के वेखो लोकमात डण्डी, डण्डावत तुहाडी गए भुलाईआ। चार कुण्ट दिसे पाखण्डी, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। सीस भार चुक्कया ना आपणी कंधीं, हथ्थ ख़ाली रहे कराईआ। सीता सुरती वाह के बैठी रही कंघी, नेत्र नैणां कलयुग कज्जल धार सुहाईआ। तन श्रृंगार (बणदी) रही चंगी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। किसे ना मिल्या धुर दा संगी, सगला संग ना कोए बणाईआ। मनुआ मन बण फ़रंगी, घर घर करे लड़ाईआ। क्यों नाम दी होई तंगी, तंगदस्त लोकाईआ। कित्थे गई भवानी चण्डी, चण्डालां करे ना कोए सफ़ाईआ। क्यों नेत्र अक्ख होई अन्न्ही, नैण ना कोए रुशनाईआ। चुरासी कटे कोए ना फंदी, फाँसी गलों ना कोए लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। तेई अवतार कहिण प्रभ सानूं लैण दे झाक, झाकी चार कुण्ट वखाईआ। आपणा खोल्ह लैण दे ताक, परदा पड़दे विच्चों उठाईआ। जिधर वेखीए दिसे कोई ना साक, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। सति धर्म होया नास, जगत ब्रह्म मति ना कोए दृढ़ाईआ। निरगुण नूर ना कोए प्रकाश, अन्ध अन्धेरा गया छाईआ। लेखे लग्गे किसे ना पवण स्वास, साह साह ना कोए समाईआ। कूड़ी जगत पैंदी वेखी रास, गोपी काहन बण के तेरा स्वांग वरताईआ। सीता राम बण के फिरन

विच प्रभास, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। तेई अवतार कहिण असीं तेरे दास, दास्तान सारे रहे सुणाईआ। जे वेखीए उपर तेरा प्रकाश, आकाशां तों परे तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। अवतार कहिण की दिसे उपर धरत, धन दी लोड़ रही ना राईआ। साडी पूरी होई शर्त, शरअ दा लेखा दे मुकाईआ। साडी इक्को इक्क अरज़, बेनन्ती रहे सुणाईआ। तेरे कोल सब दी फरद, पिछला परदा लए चुकाईआ। ग़रीब निमाणयां वण्ड दर्द, दुखियां अनाथां हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। श्री भगवान कहे वेखो मुहम्मद मूसा ईसा, अमल दयां दृढ़ाईआ। कलमयां वाली खोज हदीसा, हज़रत तों पड़दे आप चुकाईआ। की कहे कुरान मजीदा, तीस बत्तीसा करे पढ़ाईआ। की लहिणा देणा ईदा, अदम एतमाद दयां दृढ़ाईआ। की तुहाडे नाल कौल कीता पोशीदा, सहिजे देणा समझाईआ। की लै के हक रसीदा, रस्ता आए दृढ़ाईआ। क्यों सिध्धा नहीं करदे दीदा, दायरा वेखो दीन मज़्ब गोसाँईआ। क्यों राज़ होया पेचीदा, परदा ओहला दयो उठाईआ। वेखो तुहाडे उत्ते रिहा ना किसे दा अकीदा, अकल दी जगत चले चतुराईआ। नज़र आए ना कोई मीता, नसल तुहाडी गई नस बदलाईआ। तुहाडे कोल जेहड़ी वसीअता, वसल दे यार खुदाईआ। जिस ने सब दीआं बदल देणीआं तबीअतां, तब्दा दिती बदलाईआ। लेखा मुकाए काअबे वालीआं मसीता, मसला आपणा देणा समझाईआ। सब दा ख़ाली कर के ख़ीसा, ख़सम ने परदा देणा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सतिगुर दस्सो जग हालत, निरगुण निरवैर मंग मंगाईआ। क्यों धर्म दे अंदर होई जहालत, नानक गोबिन्द दयो समझाईआ। तुसीं दस्स के आए इक्क निरँकार सही सलामत, पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। धर्म दी धार जगत अमानत, अमलां विच खलक खुदाईआ। सदी चौधवीं सारे करे ख्यानत, करनी कार ना कोए कमाईआ। बाणी पढ़ पढ़ क्यों मनुआ करे बग़ावत, तन वजूद करे लड़ाईआ। किथ्थे गई नाम वाली सख़ावत, जो सखियां दे काहन दए मिलाईआ। दस्सो किस दी देणी ज़मानत, अन्तिम लओ छुडाईआ। फ़र्ज़ी खेल नहीं बनावट, धुर दा मालक आप जणाईआ। तन वजूद नहीं सजावट, कपड़ा ओढण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे होए इक्ट्ठे, अक्ख इक्को वार उठाईआ। जिस कारण लोकमात गए नठ्ठे, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। मेरे नाम दे दे के आए पते, पतिपरमेश्वर इक्क समझाईआ। जो हर घट अंदर वसे, सब तों निराला जोत अकाला सचखण्ड निवासी धुरदरगाहीआ। सो किस बिध कलयुग अन्त मेटे रैण अन्धेरी मस्से, मसला सब दा हल्ल कराईआ। कन्त भगवन्त

८२६
२०

निरगुण सरगुण पति रखे, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण आओ होईए सर्ब भ्रा, भरम वेखीए सर्ब लोकाईआ। जो शरअ आए समझा, धर्म आए दृढ़ाईआ। जो नाम आए जपा, अक्खरां विच लिखाईआ। जो मार्ग आए लगा, मानस मानस वण्ड वण्डाईआ। जो डंके आए वजा, ढोले नाद शनवाईआ। जो दवारे आए उपजा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ नाउं धराईआ। जो दस्स के आए नाम जुदा जुदा, हिस्से अक्खरां वाले पाईआ। अज्ज ओसे तों सारे होईए फ़िदा, कुरबानी दी लोड़ रहे ना राईआ। हक मालक उह ख़ालक प्रितपालक ओह दाता बेपरवाह, परवरदिगार इक्क अख्वाईआ। जल्वागर खुदा, ख़ुदी दा डेरा ढाहीआ। सारे चलीए ओहदी विच रज़ा, रमज़ नाल रमज़ लए मिलाईआ। जिस ने सारी सृष्टी देणी पढ़ा, अंदर वड़ के करे पढ़ाईआ। साचा बेड़ा देणा चला, नौका आपणा नाउं रखाईआ। इक्को रबाब देणी वजा, तन्द सतार दए हिलाईआ। जो रविआ स्वास साह साह, साहिब धुरदरगाहीआ। ओसे नूं किहा अल्ला अलाह, आलमीन नूर खुदाईआ। सजदयां विच आए सीस झुका, मकतबां विच कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी कहे की करना, कर्म कांड दयो दृढ़ाईआ। केहड़ा पल्लू फड़ना, पलक पलक विच रुशनाईआ। केहड़ा अक्खर पढ़ना, निरअक्खर खोज खुजाईआ। किहड़े गृह वड़ना, दर साचे वज्जे वधाईआ। कवण मिले सरना, सरनगति कवण अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दे इक्को चरणां, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने मिल के ढोला पढ़ना, निरगुण दी निरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुण सुणीए अगला नाउं, नर निरँकार रिहा दृढ़ाईआ। वसीए ओस गाउं, जित्थे भगत सुहेले सोभा पाईआ। तक्कीए इक्को पिता माउं, पारब्रह्म नूर खुदाईआ। माणीए ठंडी छांउं, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। ओस दा वेखीए इक्को राहो, जो रहिबरां दए वखाईआ। खुदी दा मालक इक्क खुदाओ, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। जे ओस ने सानूं भेजया धुरदरगाहों, धुरी आपणी उत्ते भवाईआ। फिर लै गया फड़ के बाहों, तत्तां नालों कर जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण करीए इक्क सलाह, मश्वरा आपणे नाल मिलाईआ। सारे मन्नीए इक्क रज़ा, सिर साहिब इक्क झुकाईआ। खुशी होईए जे पुरख अकाल बणया इक्क मलाह, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। असीं एहनां दी शहादत दईए भुगता, जो भगत सहेले प्रभ दा नाम ध्याईआ। आपणा पल्लू लईए छुडा, लोकमात ना राह तकाईआ। जिस ने जगत जहान ल्या उपजा, ओसे दी झोली पाईआ। ओह

चलावे जिवें रज़ा, आपणा हुक्म वरताईआ। असीं वेखीए थाउँ थाँ, किस बिध नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लए समझाईआ। वेख के कहीए वाहो वा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। एसे कर के तैनूं किहा अलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुण करीए मन्ज़ूर, हुक्म मन्नीए धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया प्रभ मेटे अग्गे फ़तूर, साडा ज़ुमा रहे ना राईआ। माया ममता भरया पूर, नईआ आपे दए डुबाईआ। असीं बेनन्ती करीए ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। प्रभू जन भगतां दे बख़्शीं सर्ब कुसूर, दुखियां दर्द गवाईआ। उह तेरे तेरा दिसे नूर, नूर नूर रुशनाईआ। तेरे नाम दी सुणदे तूर, तुरीआ तों परे खोज खुजाईआ। दर बरदे बण मज़दूर, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, शहिनशाह वड्याईआ। होणा सहाई नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जो चढ़ के गए तेरे पूर, बेड़ा पार लँघाईआ। जिन्हां दा राह तक्के मनसूर, अहिनुलहक ढोला गाईआ। शंकर सुट्ट के आपणी त्रिसूल, मणका हथ्थ रिहा फड़ाईआ। ब्रह्मा कौल ना गया भूल, विष्नूं विश्व सेव कमाईआ। एहनां दा लहिणा देणा देणा मूल, लेखा पिछला झोली पाईआ। अदल अदालत करनी तेरा असूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां झगड़ा छड्डया कदीम, कुदरत दे मालक तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम कर दे तरमीम, तरीका आपणा इक्क दृढ़ाईआ। तेरा मार्ग सदा महीन, जग नेत्र नज़र ना आईआ। असीं सारे करीए यकीन, यके बाद दीगरे सीस झुकाईआ। सब तों उत्तम सोहँ तेरी ताअलीम, जो जन्म तों पहलों सब नूं दएं समझाईआ। तेरयां भगतां कहीए आफ़रीन, खुशीआं नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी कर मन्ज़ूर दुआ, दोहरी धार जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट वबा, आदम हवा सार रही ना आईआ। साचा नाम कर रवां, हुक्म हुक्म विच सुणाईआ। तेरा जग वेखीए नवां, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। सब दा बदल दे समां, समाप्त होए लोकाईआ। मनुआ कूड़ रहे ना पंमां, गोबिन्द धोखा रहिण कोई ना पाईआ। इष्ट रहे कोई ना चम्मा, चमन गुलशन आपणा दे महकाईआ। दीन मज़्हब रहे ना बन्नां, हद्द हदूद ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां नूं कहे प्रभू आ मेरया चन्नां, पिता हो के पूत गोद उठाईआ। आपणा नाम सुणा बिना कन्ना, सरोते अंदरों लै बणाईआ। ममता दी रहे कोई ना तमअ, तामस देणी कढाहीआ। पवण स्वास वेखो दमां, दामन आपणा नाम फड़ाईआ। हरख सोग रहे ना ग़मां, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा झोली पाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो गुर पैगम्बर अवतार, संदेसा धुरदरगाहीआ। जिस कारण आया विच संसार, निरगुण हो

के वेस वटाईआ। सो लेखा दस्सां अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव खुल्हाईआ। पूरब जन्म दे विछड़े लए भाल, लख चुरासी विच्चों खोज खोजाईआ। भगत सुहेले बणा के आपणे लाल, लालन लाल रंग रंगाईआ। मुर्शद हो के पुछया हाल, मुरीदां आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सब दी लेखे ला के पूरब घाल, जन्म कर्म दा लहिणा झोली पाईआ। अमृत सुहा के ताल, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दर मन्दिर इक्क वखाल, भगत दवारा सोभा पाईआ। जित्थे वसण शाह कंगाल, इक्को रंग रिहा रंगाईआ। इस तों परे नहीं कोई धर्मसाल, धर्म दवारा नज़र कोए ना आईआ। जिस गृह प्रगट होवे दीन दयाल, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एथे उत्थे दो जहान करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। सब तों वक्खरी निराली दस्स के चाल, चारों कुण्ट करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मेरे वेखो सज्जण मीत, भगती विच वड्याईआ। जिन्हा दे अंदर वस्या इक्को गीत, सोहँ ढोला दिता समझाईआ। उह नाता छड्ड गए मन्दिर मसीत, काया काअबा ख़ुशी मनाईआ। जगत वासना हो अतीत, त्रैगुण अतीता वेख वखाईआ। आत्म परमात्म ला के प्रीत, प्रीतम इक्को रहे मनाईआ। पिछला लेखा सब दा गया बीत, अगला मार्ग इक्क दृढ़ाईआ। सब दी गंढु गई पीच, ब्रह्मा शिव दए गवाहीआ। अज्ज तों भगत कोई ना रहे नीच, नीचां तों ऊँच दिते बणाईआ। ना कोई हस्त रिहा ना कीट, कीटां दे कीट दिते तराईआ। सो मानस जन्म गए जीत, जिन्हां मिल्या धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेख्यो मेरा खेल अगम्म का, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जिस भगत ने फेरया मणका मन का, मन का रूप बदलाईआ। मैं ज़िमेवार होया इन्हां दे तन का, आत्म अंदरों खोज खुजाईआ। रूप बणावां साचे जन का, जन जननी देवां वड्याईआ। झगड़ा रहिण ना देवां मन का, ममता मोह मिटाईआ। लेखा मुक जाए शरअ ग़म दा, ग़मी विच ख़ुशी दयां बदलाईआ। भेव खुल्हा के निरंतर ब्रह्म दा, पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो जिन्हां पहनया छल्ला, शाला दिती वड्याईआ। ओन्हां दी सेवा करे तुहाडा अल्ला, अलहिदा रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ दा भगत कदे ना होवे इकल्ला, निरगुण सदा संग निभाईआ। जिस आत्म फड़ाया आपणा पल्ला, पल्लू गंढु ना कोए खुल्हाईआ। सृष्टी नाल कर के वल छला, अछल छल्ल आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जिन्हां ने फड़ी इक्कीआं मणकयां वाली माला, मालक धुर दा दए वड्याईआ। उह कोई रिहा ना अदना आहला, इक्को रंग दिते रंगाईआ। जिस नूं तुसीं कहिंदे खुदा तआला, उह इन्हां दे ताले अंदरों दए

खुल्हाईआ। आप बणा के आपणे बाला, गोदी धुर दी दए टिकाईआ। चार जुग तों वक्खरी चला के चाला, चाल निराली इक्क प्रगटाईआ। साचा मंत्र इक्क सुखाला, सो पुरख निरँजण दिता समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दाग़ रहे ना काला, दुरमति मैल आप धवाईआ। सच दुआर सच सच्ची धर्मसाला, दर इक्को इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जिन्हां माला लई फड़, दोहां हथ्थां विच लटकाईआ। उह मंज़िल प्रभ दी गए चढ़, राह विच ना कोए अटकाईआ। तोड़ के कूड़ा गढ़, घर साचे सोभा पाईआ। बिन अक्खरां तों तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला पढ़, ब्रह्म पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। बिना सरोवर नहावण साचे सर, जित्थे सुरस्ती जमना गंगा गोदावरी नज़र कोए ना आईआ। ना कोई किला कोट दिसे गढ़, बंक दुआर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आओ वेखो भगतां जोती, जोत इक्को नज़री आईआ। परम पुरख दे माणक मोती, इके सिप्प विच्चों बाहर कढाहीआ। धर्म दे बण गए गोती, गौतम नैणां नीर वहाईआ। रविदास चमारा मोची, मुश्किल सब दी हल्ल कराईआ। बटवारा कढु के वासना खोटी, खोटे खरे नाल रलाईआ। रविदास चढ़ के मंज़ल चोटी, चोट शब्द करे शनवाईआ। बिदर सुदामे लोड़ रही ना धोती बोदी, बोध अगाध करी पढ़ाईआ। सब दा ठाकर इक्को मौजी, प्रभ मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस ने वक्खरी खोज खोजी, सन्त सुहेले लए उठाईआ। आपणे नाम दी दे के रोज़ी, भुक्ख्यां दिता रजाईआ। ओ गुरमुखो तुहाथों वड्डा नहीं कोई जोगी, जुगती प्रभ ने दिती समझाईआ। तुहाथों वड्डा नहीं कोई विजोगी, जिन्हां ने भैण भ्रा दिते तजाईआ। तुहाडे तों वड्डा नहीं कोई बेदी सोढी, जो इक्को पुरख अकाल ध्यान लगाईआ। तुहाडे तों वड्डा बिरहु दा दिसे ना कोई रोगी, जो विछोड़े अंदर राह तकाईआ। जिन्हां नूं प्रभ ने दिती सोझी, सुत्यां ल्या उठाईआ। अग्गे खुशीआं नाल बैठिओ विच गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द दे के गया गवाहीआ। तुहाडी खातर निरगुण धार निरगुण नानक कोलों चलाया ख़ाना मोदी, मुद्दतां दा लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आओ वेखो माला की कुछ कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। जां तक्कया ते भगतां चरणां ढहिंदी, ढहि ढह सीस निवाईआ। नीवीं हो हो बहिंदी, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। जेहड़ी धार जुग जुग भाणा सहिंदी, सद भाणे विच समाईआ। इन्हां दे चरण धूढ़ माला कहे मैनूं लग्गे मैहन्दी, रंग रंगीला रंग रंगाईआ। जिन्हां दा राह जुग चौकड़ी रही वेंहदी, बिन नैणा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुल्हाईआ। माला कहे मेरी पूरी होई मुनयाद, मुनीआं ऋषीआं तों खहिड़ा

ल्या छुडाईआ। मेरे वड्डे होए भाग, भगतां हथ्थ विच लई टिकाईआ। मैं अंदरों गई जाग, सोई सुत्ती ने अक्ख खुल्हाईआ। आया इक्क वैराग, वैरागण हो के दयां दुहाईआ। जिन्हां नूं मिल्या कन्त सुहाग, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। इन्हां दा बदल दिता समाज, अंदर वड़ के आप समझाईआ। सुणाई अगम्मी आवाज़, ढोला धुरदरगाहीआ। किसे नूं पढ़नी पए ना कोई नमाज़, मसल्ला हेठ ना कोए विछाईआ। इक्को बख्श के आपणी दात, दाते दानी दिता समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणी गाथ, गहर गम्भीर होवे सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गृह आप वखाईआ। माला कहे मेरे अन्तर आई खुशहाली, खुशीआं विच जणाईआ। मेरे तन वजूद चढ़ी लाली, लाल रंग दिता रंगाईआ। जन भगतां पूरी होई घाल घाली, घालणा विच पए लोकाईआ। गुरमुखो मैनूं फेरना पए ना वार बाहली, बहुता हिस्सा ना वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। माला कहे जन भगतो तुहाडा हरया होया विवहार, विवहारी दिता कराईआ। फेर माला फेरनी पए ना विच संसार, संसारी भण्डारी तों परे दिता पहुंचाईआ। जन्म लैणा पए ना दूजी वार, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। किसे नूं करनी पए ना निमस्कार, चरण धूढ़ ना कोए रमाईआ। तुहाडा भाण्डा घड़ना नहीं किसे घुम्यार, ठठयार चक्क ना कोए भवाईआ। काया मन्दिर विच्चों कढ्ढ के सचखण्ड मन्दिर लैणा बहाल, दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। तुहाडी खुशीआं दी वज्जणी छाल, ब्रह्मण्डां दा पन्ध मुकाईआ। जिस गृह वसे सिँघ पाल, पारब्रह्म विच समाईआ। जगदीशा मनजीता वसे नाल, सवरन सवरन रूप दरसाईआ। पंजवां मिल के नाल गुरदयाल, नानक लेखा पूर कराईआ। पंच परवान होए प्रधान, पंचे दरगाह सोहण पाईआ। पंजां दा झुलदा इक्क निशान, पंचम गुरू दए गवाहीआ। पंजां दे पिच्छे जाणे पिछले लाल, जो गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। हाढ़ सतारां लए भाल, सम्मत शहिनशाही तिन्न दए गवाईआ। तुहाडी पूरी कीती घाल, कलमयां दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्तिम गोदी लए सवाल, जित्थे सुत्तयां ना कोए उठाईआ। गुरमुखो होर बणायो ना कोई दलाल, टकयां वाला गुरू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वसाईआ। माला कहे मैं हथ्थ रह गई मलदी, पसचाताप विच पछताईआ। मैनूं समझ ना आई कल दी, की कलयुग विच खेल खिलाईआ। मैं धार ना समझी इक्क गल्ल दी, क्यों गलवकड़ी भगतां नाल पाईआ। मैनूं रमज ना दिसी पिछली बल दी, बावन की की हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप दृढ़ाईआ। माला कहे मेरी रोण लग्गी अक्खी, हन्झूआं हार बणाईआ। जिस वेले मेरे भगतां मेरी धार दस्सी, सोहँ अक्खर दिते लिखाईआ। मैं मूँह दे भार ढठ्ठी, आपणा आप मिटाईआ। वेखी

जुग जन्म दी संगत होई कठ्ठी, इक्वयां इक्को रंग चढ़ाईआ। जेहड़ी चार जुग किसे नहीं पढ़ाई पट्टी, प्रभ पटने वाले नाल मिल के दिती समझाईआ। एहो खेल लग्गी अच्छी, अच्छी तरह वेख वखाईआ। मैनूं कथा कहाणी याद आई जिस वेले प्रभ सरगुण रूप धरया मच्छी, मच्छ आपणा नाम प्रगटाईआ। ओस वेले लै के इक्क रस्सी, रसम अगली दिती भुगताईआ। मैं एसे कारण आई नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। भगतां नाल मिल के प्रभ वेखां कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। ओस दे चरणां होवां सती, सति आपणा इक्क दृढ़ाईआ। गुरमुख फेर भरे कोई ना चट्टी, सज़ा कुझ ना कोए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी करनी लेखे पाईआ। माला कहे मेरी पूरी हो गई मनसा, आसा रही ना राईआ। गुरमुख वेख्या हँसा, जो सोहँ ढोला गाईआ। भगत भगवान दा बणया बंसा, बंसरी वाले सेव कमाईआ। मेरे अंदर रिहा कोई नहीं संसा, शक विच ना कोए जणाईआ। दूई द्वैत रही ना हिंसा, रंग इक्को दिता रंगाईआ। जन भगतां उत्ते कर के पूरा निसचा, एतबार आपणा ल्या जमाईआ। साचा रूप वेख्या धुर दे सिख दा, खुल्ल्हे दाढ़े खुशी मनाईआ। जिस वेले लिखारी लेख लिखदा, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। झगड़ा रिहा ना मन्दिर इट्ट दा, पत्थरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लहिणा मुकया गोबिन्द चिट दा, जो ब्रह्मा शिव गया फड़ाईआ। माला कहे जन भगतो जो प्रभ दे चरणी टिक्कदा, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। उह प्यारा हो जावे इक्क दा, एकँकार होए सहाईआ। आवण जावण झगड़ा मुक जाए नित दा, लख चुरासी रहे ना राईआ। उह बच्चा बण जाए ओसे पित दा, जिस नूं पतिपरमेश्वर कहि के सारे गाईआ। ओहला रहे ना किसे पिठ दा, करवट अग्गे ना कोए बदलाईआ। सच दवारे साचे टिकदा, मंज़ल मिले धुरदरगाहीआ। लख चुरासी विच्चों लहिणा देणा किस किस दा, माला कहे कौण किस्मत लए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जो भगत भगत दवारे वसदा, दिशां दे देश गए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वसाईआ। माला कहे मैं खुशीआं नाल हस्सणा, हस्स हस्स दयां जणाईआ। जन भगतो तुसां श्री भगवान नाल वसणा, दोहां दी सोहणी लग्गे कुड़माईआ। सांझी करनी अक्खणा, अक्ख अक्ख नाल जुड़ाईआ। कोई गृह रहे ना सक्खणा, हरि जू हर घट डेरा लाईआ। पिच्छा दे मूल नहीं नस्सणा, आपणा मुख भवाईआ। मद मास नहीं रसना चखणा, चाह चर्म दए बदलाईआ। जेहड़ा किसे नूं लभ्भणा नहीं पौंटे पटना, उह तुहाडे अंदर डेरा लाईआ। मानस जन्म दा लाहा खट्टणा, खोटे खरे लए बणाईआ। सोहँ ढोला इक्को रटणा, रट्टे कूड़े दए मिटाईआ। सचखण्ड दवारे वसणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। माला कहे छड्डयो झगड़े जगत काअबे, जगत

दिशा ना कोए वखाईआ। जेहड़े चल के आए विच्चों दोआबे, मालवे नाल मिल के वज्जी वधाईआ। गुरमुख प्रगट होए माझे, जम्मू दा ज़ामन धुरदरगाहीआ। दिल्ली इटारसी जिस ने साधे, कानपुर काहन करे रुशनाईआ। महू महबूब दे के आबे, आबे हयात दए प्याईआ। गुड़गाउं गुर के शब्द साधे, सतिगुर देवे माण वड्याईआ। प्रितपालक हो के लख चुरासी विच्चों काढे, फड़ बाहों पार कराईआ। जिन्हां ने सवा सेर दे भोजन खाधे, भजन बन्दगी लोड़ रही ना राईआ। इस दा लेखा अंगद नूं इक्क दिन दस्सया नानक बाबे, बाबल दी दिती गवाहीआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां दे नाम सृष्टी दे हिरदे विच्चों गवाचे, लभ्भयां हथ्थ कोए ना आईआ। ओस वेले मैं आत्मा दे बदल देणे सारे चाचे, चाचू रहिण कोए ना पाईआ। आप आपणी साधना साधे, सतिगुर दाता धुरदरगाहीआ। निरगुण नूर जोत जगा के, जागरत जोत करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गा के, भगत सुहेले लए उठाईआ। इक्को दिन माला हथ्थ फड़ा के, जन्म दा लेखा दए मुकाईआ। पिच्छो सृष्टी ने गाउणे साके, गायां हथ्थ कुछ ना आईआ। जो आए गए दर्शन पा के, पाक पवित्र दिते बणाईआ। जेहड़े गुरमुख घर बैठे ध्यान लगा के, अगले पैंडे दिते चुकाईआ। जो चरण धूढ़ सरोवर गए नहा के, दुरमति मैल धवाईआ। जो ठग्गी चोरी गए कमा के, लख चुरासी विच भवाईआ। क्यों मालवे वालयां नूं इक्ट्ठा कीता आवाज़ लगा के, इन्हां विच्चों इक्कीआं दी मौत अगले महीने नज़री आईआ। सेवा नाल जगत बचा के, बच्चयां दे बच्चे नाल रलाईआ। साचा खेल आप खला के, खुशीआं विच दए वड्याईआ। जन भगतो जाणा शुकर मना के, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जिस ने तुहानूं दर्शन दिता आ के, अकलां वालयां हथ्थ किसे ना आईआ। जगत वलों तुसां पाया आपणा आप गवा के, ताअने देवे कूड़ लोकाईआ। पुरख अकाल वेला जाए सुहा के, सोहणी साची बणत बणाईआ। भगत सुहेले भगती विच समा के, समरथ होए सहाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा नाम जपा के, जापां तों दिता छुडाईआ। साची मंज़ल इक्क चढ़ा के, दरगाह साची दिता टिकाईआ। अन्तिम जोती जोत मिला के, जोत जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माला मणके सब दे हथ्थों सुटा के, अग्गे सुत्यां आप जगाईआ। चरण प्रीती इक्क दरसा के, दरस दीदार दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हाढ़ सतारां सब दा वक्त सुहा के, सुहञ्जणे गुरमुख लए बणाईआ।

★ पहली सावण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण लेख रिहा ना बाकी, बकता रूप ना कोए प्रगटाईआ। तन वजूद पंज तत रिहा ना माटी ख़ाकी, ख़ाक वेखी जगत लोकाईआ। घोड़ा शब्द नाम रिहा ना राकी, अस्व शाह सवार ना कोए दौड़ाईआ। सेवक जन नज़र ना आए दासी, दास्तान ना कोए दुहराईआ। मंज़ल महबूब मिले ना कोए घाटी, दरवाज़ा दर ना कोए खुल्हाईआ। निरगुण धार दिसे कोई ना साथी, सरगुण संग ना कोए निभाईआ। शब्दी सतिगुर मन्नी कोई ना आखी, आख़र पैंडा गए मुकाईआ। जगत वासना वेख गुस्ताख़ी, ग़ुस्सा ग़म जगत दुहाईआ। कटे कोए ना जम की फ़ासी, फ़ैसला हक ना कोए सुणाईआ। मन विकार ममता मदिरा मासी, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। तेरा नूर नजर आए ना जोत प्रकाशी, प्रकाश तक्के ना ख़लक खुदाईआ। नेत्रहीण होए आकाशी, आकाश पातालां पन्ध ना कोए चुकाईआ। जुग चौकड़ी तेरी गा गा थक्के साख़ी, साख्यात नज़र कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी शरअ दी मन्नी आखी, आख़र लेखा रहे मुकाईआ। निरअक्खर धार वेखीए तेरी पाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। कथनी कथ ना सके बातीं, बातन भेव ना कोए खुल्हाईआ। जीवण जुगत ना रिहा हयाती, जगत जोग ना कोए वड्याईआ। पंडत रिहा ना धर्म दा काशी, काअबा किबल ना कोए खुल्हाईआ। मण्डल दिसे कोई ना रासी, गोपी काहन ना नाच नचाईआ। तेरी धार किसे ना वाची, वाचक करे ना कोए पढ़ाईआ। ढोला गावे कोई ना बाडी, बकता विच सारे देण दुहाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाशी, अकल कलधारी समझ कोए ना आईआ। नमस्कार दोए जोड़ के मस्तक माथी, धूढ़ी बिन धरती धरन धवल सुहाईआ। अगम्म अथाह सुणके गाथी, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। सुरती शब्द किसे ना जागी, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जगत साध बणया ना कोए वैरागी, वैरी अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। इष्ट करे कोई ना राखी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट दिसे उदासी, मुस्कराहट विच मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। भेव चुक्के ना आन बाटी, परदा अन्तर ना कोए लाहीआ। किरपा कर कमलापाती, पतण बैठे सीस निवाईआ। लेख वेख अगम्मी राती, रुतड़ी आपणे नाल मिलाईआ। झगड़ा रहे ना काग़ज़ाती, कलम शाही कर सफ़ाईआ। हुक्म रहे ना हुक्म वाली गाथी, रसना जेहवा ना कोए चतुराईआ। तेरी खेल वेखीए डाहढी, डण्डाउत इक्को देणी दृढ़ाईआ। दरोही तेरा सोहला गा सक्या कोई ना ढाडी, गुर अवतार पैगम्बर ढड्डां तन गए वजाईआ। तेरे रूप दा नज़र आया कोए ना बाडी, बाडी गॉड तेरे सारे सेव कमाईआ। अन्त वेखे ओसे खाडी, जिस दी खंदक ना किसे खुदाईआ। तेरा नूर अगम्मी आदी, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तेरा हुक्म इक्क शहिज़ादी,

८३४
२०

शहिज़ादा इक्को रिहा सुणाईआ। जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव आबादी, आबाद कारी धुर दी वण्ड वण्डाईआ। बिन लेखे याद रखे यादी, यदप आपणी कार समझाईआ। निरगुण धार वड स्वांगी, सगली आपणी कार कमाईआ। तेरी खेल सदा दोआबी, महिराबी महबूब नूर खुदाईआ। तेरा हुक्म तल्ब जवाबी, तालब इलम सारे सीस निवाईआ। लेखा दे सके ना कोए हिसाबी, गिणती विच गिणत ना कोए गिणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दिसे ना कोए इमदादी, कामल नज़र कोए ना आईआ। तेरा शब्द सदा इतहादी, इतआदक जोड़ जुड़ाईआ। तेरा नूर सदा अनादी, नादां रिहा वजाईआ। तेरी रहमत मनसा अंदर खाधी, तृष्ना तृखा बुझाईआ। कलयुग अन्तिम मारी आवाज़ी, संदेसा नाम सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सब दी मनसूख़ होई आराज़ी, अरज़ आरज़ू अग्गे रहे ना राईआ। हुक्म बदल देणा माज़ी, मज़ा अगला आप चखाईआ। तुसीं खुशी रहो हुण राज़ी, रज़ामंदी विच सीस झुकाईआ। इक्को दर दे बणो हाजी, नमाज़ी नमो सीस झुकाईआ। जेहड़ी आपणे नाम दी मेरे दर तों दिती भाजी, भजन बन्दगी विच समझाईआ। उह वी चरण कँवल विच आ गई, आज्ञा विच सीस निवाईआ। लेखा रिहा ना छत्ती रागी, रग सब दी साफ़ कराईआ। नाम दा रहिण देणा कोई नहीं बाग़ी, बांग अज़ां ना कोए वड्याईआ। लेखक बणयो ना कोए दिमाग़ी, दमां दा लेखा दिता मुकाईआ। मालक बण के धुर दा गॉडी, गारडीअन सारे दिते मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर किसे चले ना कोए इसतिकरारीआ हक, मालक नज़र कोए ना आईआ। बिना कलम शाही तों सब दा लेखा होए फ़क्क, रहन बै ना कोए वड्याईआ। इक्को हुक्म अंदर दिता दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। अग्गे निरगुण धार जावो वस, वास्ता जगत नालों तुड़ाईआ। नाउँ निरँकारा लओ जप, अक्खरां वाली सिफ्त ना कोए सालाहीआ। नाता तोड़ प्रीतम नव सत्त, घट आपणे रिहा वखाईआ। तत वजूद रिहा ना अठ्ठ, रक्त बूँद ना जोड़ जुड़ाईआ। खेल वेखो इक्क अलख, जिस दा लेख ना कोए लिखाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, सब दी करे सफ़ाईआ। निमस्कार करो झट, झटका हलाली किसे दी देवे ना कोए गवाहीआ। दीनां मज़्ज़बां वाला मेटणा फट्ट, पट्टी इक्को नाम बंधाईआ। धर्म दुआर वेखो हट्ट, हटवाणे सफा लओ उठाईआ। इक्को कलमा लैणा रट, इक्को ढोला नाम सालाहीआ। इक्को खेल वेखणा सच, सति सतिवादी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सति धार दी वेखो पक्की, पुखता सब नूं रिहा बणाईआ। धुर दा मालक कमलापती, पतिपरमेश्वर जोत नूर रुशनाईआ। इक्को दर्शन करो अक्खी, नेत्र लोचण अक्ख खुल्हाईआ। इक्को काहन दी बण के सखी, सख़ावत विच झोली डाहीआ। जिस ने कथा कहाणी

दस्सी, जुग चौकड़ी करी पढ़ाईआ। सिफ्तां वाले नाम पढ़ा के पट्टी, पटने पटा गया लिखाईआ। सदी चौधवीं सब दा लेखा पैणा नट्टी, नटूआं आपणा स्वांग वरताईआ। जिस दा भेव पाए कोई ना रती, रत्त सब दी दए सुकाईआ। अग्गे तों गुर अवतार पैगम्बर करे ना कोए किसे दी गती, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पुरख अकाल दा लेखा कथा कहाणी दो जहानां सच्ची, मर्द मर्दाना आप दृढ़ाईआ। संसार धार निरगुण आपे रिहा कटी, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणा पूरा वेखो अहिद, अदालत इक्को इक्क जणाईआ। वेला फेर मिले ना शायद, शाह सुल्तान रिहा जणाईआ। धुर दा हुक्म होणा राइज, रईयत नाम दए बदलाईआ। सब दा शब्दी हुक्म कढु नताइज, लेखा वक्खो वक्ख वखाईआ। जो बख्शिश नाम कीता अनायत, रहमत विच वरताईआ। तुसीं ओस दी करदे आए हमायत, हमसाजण हो के संग बणाईआ। कलयुग अन्तिम कोई ना करे रवायत, रवादार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो करो ध्यान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। जुग चौकड़ी अक्खरां वाला ज्ञान, सतरां विच सत्ता दिती समझाईआ। मार्ग दस्स जीव जहान, रस्ता रहिबर इक्क दृढ़ाईआ। हुक्म दे के हुक्मरान, हुक्मे अंदर सर्ब भवाईआ।
८३६
२०
सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलदा आया नज़ाम, नौबत जुगो जुग सुणाईआ। किसे दा माण रहे ना अभिमान, कलाम कलमयां परदा उठाईआ। सर्ब बणा आपणे गुलाम, धुर संदेसा दिता सुणाईआ। मालक बण के हक अमाम, आमद आपणी दिती समझाईआ। लेखा दस्स के शमां तों दूर रहिण वाला शाम, अन्ध अन्धेर परे करे रुशनाईआ। जिस दा लेखा समझे ना कोए इन्सान, बुद्धी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपणा पिछला लेखा, लिखत भविखत दए गवाहीआ। जो वसे दरगाह साची सचखण्ड देसा, बिना देह तों देह बदलाईआ। रूप रंग समझे कोई ना रेखा, ऋषी मुनी रहे कुरलाईआ। मूंड मुंडाए ना धारी केसा, चोटी सीस ना कोए कटाईआ। जिस नूं पूजे विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गणपति गणेशा, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दे के नाम संदेसा, सद्दे दीन दुनी जणाईआ। चार वरन दा दे के ठेका, ठाकर हो के दिता समझाईआ। अन्तिम वेखो सारे कर के एका, एकँकार सब दा पिता माईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कर लओ चेता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। तुहानूं घल्लया अगेता पछेता, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण हुक्म सुणाईआ। इक्को शब्द अगम्मी गोबिन्द धार पुरख अकाल दा बेटा, जिस नूं जन्मे ना कोए माईआ। उह आदि जुगादी धुर दा खेवट खेटा, खटीआ उत्ते सौण कदे ना आईआ।

पलँघ दोशाले उत्ते कदे ना लेटा, तकिया सीस ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जद तक्को ते सब दा नेता, नेत्रां तों परे डेरा लाईआ। जिस दे कोलों अक्खरां वाला पुछदे आए लेखा, भवजल पार दा राह तकाईआ। चरण कँवल दर दुआर जिस दिता सचखण्ड देसा, आपणा मुख ना किसे वखाईआ। ना प्रगट करन वाला दस्सया पेटा, जिस पेट विच्चों गुर अवतार पैगम्बर लए प्रगटाईआ। सब नूं थोड़ा थोड़ा दे के हिस्सा, हस्ती जगत वाली बणाईआ। फिर आपणे हुक्म अंदर खिचा, ख़ैरख़ाह बणी ना कोए लोकाईआ। आओ खेल वेखो इक्क अनडिठ्ठा, अनडिठ्ठड़ा दयां दृढ़ाईआ। जेहड़ी जगत जहान दे के आए सिक्खा, सिक्खां दे अंदरों कर ना सकी सफ़ाईआ। मुर्शदो तीर मारया जो मुरदयां अंदर तिक्खा, बिना तीर तलवार लड़ाईआ। जिस दा नूर धार अगम्मी निक्का, निरगुण निरवैर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणा देस, इक्को दयां दृढ़ाईआ। वरकयां वाला मेरे अग्गे रख दयो उपदेश, जो अक्खरां विच जुगो जुग बदलाईआ। मालक तक्को इक्क नरेश, निराकार अख्वाईआ। जिस दा आदि जुगादि हेत, प्रेम विच वड्याईआ। शब्द अगम्मी दस्से भेत, भेव अभेद खुल्हाईआ। सचखण्ड दवारे धर्म दवारे बण जाओ एक, झगड़ा दीन मज़्हब तजाईआ। शरअ दा रहिण देणा नहीं कोई रेट, रिट विच मुणयाद ना कोए वधाईआ। सब नूं इक्को मन्नणी पए टेक, टिक्के मस्तक उत्तों लैणे लाहीआ। आपणा आप आपे कर दयो भेंट, भेंटा अग्गे लैण कोए ना जाईआ। इक्को धुर दा मालक रहे सेठ, जो दाता धुरदरगाहीआ। हुण इंतज़ार करना पए किसे ना वेट, वीटो विच आपणा हुक्म सुणाईआ। किसे ने खाण नूं लभ्भणे नहीं जगत मिठाईआं वाले केक, किलक सब दी इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो करो कदमबोशी, लहिणा कदीम चुकाईआ। जिस दी चार जुग तक्कदे आए ख़मोशी, शब्दी शब्द ना कोए अल्हाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली पढ़दे आए पोथी, चार जुग जणाईआ। जिस दे नाम दी फड़दे आए सोटी, राह जगत विच प्रगटाईआ। जिस दी जगदे आए जोती, पंज तत रुशनाईआ। जिस दी सिर ते रखदे आए बोदी, धोती जञ्हू नाल वड्याईआ। जिस दी मंज़ल दस्सदे आए औखी, रहिबर हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो हुक्म इक्क इशतयारी, इशारे नाल समझाईआ। जिस नूं मनसूख़ करे ना कोए सरकारी, आहला अदना ना कोए वड्याईआ। जिस दी इक्को अदाकारी, अदल इन्साफ़ विच लए ना कोए गवाहीआ। जो सब दा जोत आधारी, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जिस दे चार जुग बणे रहे वगारी, वागां ओसे हथ्थ फड़ाईआ। करदे रहे ताब्यादारी, निउँ

निउँ सीस झुकाईआ। कागज़ां वाले बण लिखारी, अक्खरां वाली करी पढ़ाईआ। दस्स के आए जोत निरँकारी, निराकार नूर इलाहीआ। जिस ने तुहाडे नाल लगाई यारी, निभा के अन्तिम दिती वखाईआ। तुहाडी भविक्ख्तां दी उधारी, सहिजे रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किवें छड्डीए कबज़ा, हुक्म कवण बदलाईआ। बड़ी मुश्किल नाल बणाए मज़्बा, तन वजूद कर लड़ाईआ। पुरख अकाल करें क्यों ग़ज़बा, धुर दी धार हुक्म सुणाईआ। तेरा खेल अजीब अजबा, निराकार नज़री आईआ। सानूं बड़ा लग्गा सदमा, सद्द के दिता सुणाईआ। असीं झुकदे तेरे कदमां, कुदरत दे मालक हो सहाईआ। तेरीआं गाउँदे आए नज़मां, सिफ्तां विच सालाहीआ। दस्सदे आए रमज़ां, इशरयां विच प्रगटाईआ। क्यों साडीआं बन्द कीतीआं नब्ज़ां, नबी रसूल रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण क्यों हुक्म देवें सख्त, सख्ती नाल दृढ़ाईआ। की ओहो आ गया वक्त, जिस दी पेशीनगोई आए सुणाईआ। साडा लेखा मुकण लग्गा जगत, नाता तुट्टे लोकाईआ। गोबिन्द किहा गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ ने प्रगट करने आपणे भगत, भगवन दया कमाईआ। साडी सब दी पूरी हो गई शर्त, शरअ दा लेखा रिहा मुकाईआ। चलो हुण इक्ट्ठे होईए उत्ते अर्श, फर्श दा झगड़ा रिहा छुडाईआ। दीन मज़्ब करीए तरक, तुरत ओसे दा ढोला गाईआ। जिस दा खेल सदा असचरज, अचरज लीला रिहा वरताईआ। ग़ौर नाल तक्को ना उह ज़नानी ना उह मर्द, मर्द मर्दाना इक्को नज़री आईआ। जिस दा प्यार भगतां दा दर्द, गुरमुखां गोद टिकाईआ। किसे दा होण ना देवे हर्ज, हर्जाने सब दे झोली पाईआ। साडी पूरी करके ग़रज़, ग़रीबां होए सहाईआ। जेहड़े नाम दे ढोले गाए नाल तरज़, तरह तरह नाल समझाईआ। जो बेनन्ती करदे आए अरज़, नमसतयां विच सीस निवाईआ। ओसे कारण आया परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो पिछली आपणी हदायत, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जो बख्शिश कीती अनायत, रहमत झोली पाईआ। उस दी कर अशायत, इशारे नाल दृढ़ाईआ। आपणे दीनां मज़्बां दी करो पैमाइश, वेखो ख़लक ख़ुदाईआ। कवण मुकामे हक करे रिहाइश, सचखण्ड दवारे डेरा लाईआ। आपणी करनी दी करो अज़माइश, परदा आपणा आप चुकाईआ। सदी चौधवीं सब दी वेख लई नुमाइश, नमूना पसंद ना कोए कराईआ। लेखा लिख्या नाल कलम दवायत, दाअवेदार देणे मिटाईआ। हुण सारे बणना पए इक्क जमायत, इक्को हुक्म देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बिन अक्खरां बोलण बोली, अनबोलत

राग अलाईआ। की खेल उपर धौली, धरनी धरत धवल वखाईआ। किस दी रुत्त अगम्मी मौली, मौला हो के दए वड्याईआ। मुहम्मद किहा मेरी रुपईए विच्चों रह गई पौली, पौली उह वी लए गवाईआ। मूसा किहा मैथों फेर नहीं पैंदी रौली, होका दे ना कोए जणाईआ। ईसे किहा मेरी गंढु अजे ना खोली, सलीब साफ़ ना कोए कराईआ। नानक किहा सब दी ख़ाली होई तौली, जिस दी तल्ब ना कोए दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा जेहड़ी धार प्रभू ने डोली, बणत अगली लई बणाईआ। मैनूं लोड़ रही ना देण दी पाहुली, रसना रस ना कोए चखाईआ। नाम प्याला प्याया बिना कौली, कँवल नाभ दिता उलटाईआ। जिस दी सूरत काली गोरी कदे सौली, सुंदर शाम कोटन दए बणाईआ। उस दी समझ के इक्को बोली, बुलारे सारे गए भुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडे नाम दी धारा चार जुग दी पराउहणी, रैण कट के आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दी हाढ़ी सौणी, रुत्त समें नाल बदलाईआ। अग्गे मुणयाद ना किसे वधाउणी, वाधा विच ना कोए कराईआ। पुरख अकाल ने आपणी खेल वखाउणी, कलाधार लए अंगड़ाईआ। आत्म परमात्म आपणे रंग रंगाउणी, रंगत इक्क वखाईआ। करमां दी रहे ना कोए अड़ाउणी, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। साधां दी होणी नहीं कोई छाउणी, छहबर आपणा नाम लगाईआ। जन भगतां दी पूरी कर के भाउणी, भाव भेव दए समझाईआ। गुरमुखां दी रुस्सी आत्मा आप मनाउणी, आपणी गोद उठाईआ। एह कोई खेल नहीं काँ ते कौणी, जो कलयुग विच खम्ब जाए हिलाईआ। जिन्हां दी करनी ओन्हां दी झोली पाउणी, बिना भजन बन्दगी पार लँघाईआ। कोई किताब हिसाब विच नहीं पढ़ाउणी, अक्खरां वाली ना कोए लड़ाईआ। पिछली कथा नहीं कोई दुहराउणी, सतरां उत्ते उंगलां ना कोए फराईआ। दर आई दरवेशां वाली संगत पार लँघाउणी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। अमृत रस दी धार चुंघाउणी, बिना माता दे सीर दए प्याईआ। जुग जन्म दी विछड़ी गुरसिख आसा आप पर्चाउणी, पर्चा नाम वाला जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रुतड़ी रुत सुहाउणी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की साडी मुक जावे हदीसा, हद्द जलदी गई आईआ। गोबिन्द शब्द कहे सब दा ख़ाली होया ख़ीसा, मातलोक विच्चों खिसको चाँई चाँईआ। जेहड़ा पिछला वक्त बीता, ओसे दी खुशी लओ मनाईआ। अग्गे लिहाज़ ना होणा मूसा ईसा, मुहम्मदा तेरी चले ना कोए सफ़ाईआ। राम कृष्न जी आपणी मेरी झोली पा दयो रीता, सीता सुरती देण ना आयो वधाईआ। नानक गोबिन्द इक्को अमृत रस पीता, पीत पीतम्बर लैणा सुहाईआ। जो मर्ज़ी सो पुरख अकाल ने कीता, करतब तुहाडे वेखे थाउँ थाँईंआ। तुहाडीआं मनसा पूरीआं कर उडीकां, ओड़क आपणे विच मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो चार जुग विच तुसीं मेरे नाम दा कर ना सके टीका, धुर दा हुक्म ना कोए समझाईआ।

की होया जे भेव दस्सदे रहे जीअ का, जीव तों बाहर मेरी रुशनाईआ। लंमीआं लंमीआं दस्स दे आए तारीखां, तरीके नाल दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान गुरू ग्रन्थ बणा के मातलोक वसनीका, गवाही शहादत वाली जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मेहर मेहरवान वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं प्रभ दे नाम दे रहे फ़रोश, फ़रोख़त कर के आए विच लोकाईआ। नाम दे अंदर तुहानूं चढ़दा रिहा जोश, जोश विच झगड़ा कीता लोकाईआ। दीन मज़्ह़ब दा ला के दोष, दोषी दोषीआं विच्चों प्रगटाईआ। आप बैठ के अडोल ख़ामोश, ख़ाहमखाह सब नूं दिता फसाईआ। आप हो के रूपोश, सब दी पुश्त पनाह दिती ठुकराईआ। किसे नूं अक्खरां वाला दस्स के कोश, सिफ्तां विच सफ़े दिते उलटाईआ। किसे नूं दस्स के दर्द वाला निर्दोष, दोषीआं दए समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा माटी चम्म दा बदल के पोश, पोशीदा हो के आपणा हुक्म वरताईआ। वेख्यो हुण करयो ना कोई रोस, रोसे देणे गवाईआ। झगड़ा रखयो ना चौदां लोक, चौदां तबक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जेहड़ा वक्त भोग ल्या बहुत, शुकर कर के सीस निवाईआ। अग्गे सारे गायो इक्क सलोक, सोहला धुरदरगाहीआ। जिस नूं जाणे कोई ना पंडत कोक, कूक कूक ना कोए सुणाईआ। जिस दा सौदा सदा रोक, उधार दा लहिणा रिहा मुकाईआ।
८४० गिरजिआं विच लभ्भयो कोई ना पोप, पुत्तरो तुहानूं दिता समझाईआ। हुक्म धुर दा दिता ठोक, ठाकर पत्थर नज़र कोए ८४०
२० ना आईआ। किसे लभ्भयो ना किले कोट, मन्दिर मठ्ठ ना नैण उठाईआ। अग्गे होणी नहीं कोई छोट, छुट्टी देण वाला २०
नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की प्रभू तूं सब दा इक्को अब्बा, मालक नज़री आईआ। की तेरा खेल आदि अन्त मधा, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। तेरा सच सुनेहड़ा सद्दा, की हुक्मे अंदर सुणाईआ। पुरख अकाल किहा इक्को शब्दी मेरा बच्चा, जिस दा बचपन आपणी झोली पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं उस दा नूर भाण्डा कच्चा, जो तन वजूद विच टिकाईआ। आपणे प्रेम दा दे के रसा, रसना विच्चों कीती पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर मैनूं कहि के अच्छा, जगत लेख आए लिखाईआ। मैं तुहाडे अंदर वसा, वस के दिता वखाईआ। जिस वेले विच्चों नस्सा, तुहाडा संग रिहा ना राईआ। तुहाडा तन मिट्टी घट्टा, ख़ाक जगत उडाईआ। दीन मज़्ह़ब दा पवा के रट्टा, राह वक्खरा दिता दरसाईआ। आपणे नाम दा दे के इक्क इक्क टका, टक्कर दिती वखाईआ। किसे नूं सूर खवाया किसे नूं खवाया कट्टा, कटक सब दे उत्ते चढ़ाईआ। सब दा फोड़ के माटी मट्टा, मटक रहिण दिती ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर कोई सूरमा हथ्थ मार के दस्सो उपर पट्टा, बिना पटणे वाले तों जोड़

ना कोए जुड़ाईआ। जिस दे उत्ते मैं आपणा लाया ठप्पा, तूं मेरा मैं तेरा दिता लिखाईआ। इक्को नाम प्रगट कर के सोहँ टप्पा, टापूआं दा झगड़ा दिता चुकाईआ। ना कोई सिल पूजे ना वट्टा, ना कोई मन्दिरां लभ्भे मठ्ठां, ना कोई अक्खरां करे कठ्ठा, ना कोई तीर्थां फिरे नठ्ठा, ना कोई राग गावे मिल के भट्टां, ना कोई किसे तों लैण जावे मतां, ना कोई अग्न तपावे तत्तां, ना कोई किसे दवारे झाड़ू देवे हथ्थां, जन भगतां इक्को बचन दस्सां सच्चा, सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की साडा रिहा ना ज़ोर, जोरू ज़र बदलाईआ। पुरख अकाल कहे आपणा वेखो अन्धेरा घोर, घोर कलयुग फोल फोलाईआ। तुहाडे मुरीद तुहाडे चेले होए चोर, चोरी तुहाडे नाल कमाईआ। अंदरों प्रीती सके कोई ना जोड़, बाहरों सारे सीस झुकाईआ। जिस मार्ग तुसीं आए तोर, तुरीआ पद दी कर पढ़ाईआ। ओस मंज़ल चढ़या कोई ना तोड़, तुट्टी गंढ्ढ ना कोए पवाईआ। एसे कारण सब नूं पुरख अकाल दी पई लोड़, लोहड़े विच लोकाईआ। ज़रा तक्क के वेखो नाल ग़ौर, मन्दिर मसीत दए दुहाईआ। किसे ना मंत्र फुरे फ़ुरना फोर, फ़ुरना मन ना कोए बंधाईआ। कलयुग काया अंदरों होर ते बाहरों होर, होर दा होर रूप बदलाईआ। झूठ मारदे सन्त कहिण सानूं अंदर शब्द होवे घनघोर, संख धुन शब्दी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणा वेखो इक्क समाज, समझ जगत फोल फोलाईआ। जो दस्स के आए रिवाज, रवायत विच दृढ़ाईआ। कर के आए काज, नाता सच मिलाईआ। उस दा रिहा ना कोए मुहताज, झगड़ा प्या कूड़ लोकाईआ। साबत रिहा ना कोई साध, साधना सिध्ध ना कोए बणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तन वजूद दी वखाले वाली बणा के समाध, बाहरों नेत्र बन्द कराईआ। सुरती घुंमे विच दिमाग़, दिमाग मन दे नाल लड़ाईआ। मन दा समझे ना कोए हिसाब, चारों कुण्ट रिहा भवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं दस्सो केहड़ा साचे अस्व घोड़े चढ़ के गया चरण दे के विच रकाब, रुक्का हुक्म नाम सुणाईआ। किस सिख ने तुहानूं कीता आदाब, बिना सजदिउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी रिहा समझाईआ। गुरू अवतार पैगम्बर कहिण तैनूं दस्सीए की हिसाब, कुतबख़ाना नज़र कोए ना आईआ। हकीकी दिसे ना कोए महिराब, महबूब वसल ना कोए वखाईआ। सजदा नज़र ना आए कोई आदाब, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। मित्र प्यारा नज़र आए ना कोए अहिबाब, रबाब सतार ना कोए हिलाईआ। बिना रसनां तों बन्द होया जवाब, कायनात कलमा कलाम ना कोए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ।

पुरख अकाल कहे पैगम्बरो किहड़ी पढ़ी अलिफ़, मुतबरक मैनूं दयो जणाईआ। जिस दा लेखा यकतरफ़, दिशा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो सब दे नाल हो जाए सरफ़, सफ़े पंने ना गणत गणाईआ। नूरी नूर रहे ना फ़र्क, फ़िकरा दए जणाईआ। पूरी करे शर्त, शरअ शरअ प्रगटाईआ। धाम वखाए उपर अर्श, आलीशान इक्क बणाईआ। रहमत करे तरस, निगाह निगाहबान नाल मिलाईआ। ओस अलिफ़ दा केहड़ा फ़र्ज, फ़रमांबरदार दयो दृढ़ाईआ। की खुदा नूं पई ग़रज़, ग़रज़ उस दी देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख देणा सुणाईआ। पैगम्बर कहिण असां अलिफ़ पढ़ी आलमीन, इलम नज़र कोए ना आईआ। जिस दे विच तेरी ताअलीम, तालब इलमां ना कोए समझाईआ। उह वसे घर अज़ीम, आलीशान रूप दरसाईआ। जेहड़ी आदि तों सदा कदीम, कुदरत दे मालक तेरी धार नज़री आईआ। ओसे उत्ते कर यकीन, लोकमात तेरी दईए गवाहीआ। जेहड़ी बदल ना सके कदे कदीम, काइदा आपणा इक्क प्रगटाईआ। ओसे दे हो अधीन, आहला अदना सीस निवाईआ। तूं करता इक्क करीम, कादर नूर खुदाईआ। तेरी दरगाह करीए तसलीम, तसबी माला ना कोए लटकाईआ। जिस दा सब तों वक्खरा सीन, नज़ारा नज़रीआ दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दे समझाईआ। पैगम्बर कहिण तेरे अलिफ़ दा की इरादा, धुर दे मालक देणा समझाईआ। पुरख अकाल किहा इस दे नाल करो वाइदा, वाहिद हो के भेव खुल्हाईआ। जुग बदलणा जिस दा काइदा, कवाइद कानून रिहा दृढ़ाईआ। सब तों वक्खरा हो अलाहिदा, अलहिदगी विच परदा दए चुकाईआ। शब्दी धार कर मुआइदा, मुअज़ज़ आज़ज़ लए प्रगटाईआ। एको शब्दी धार बणा नुमाइंदा, शबे रोज़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पैगम्बरो सुणो हुक्म आलीजाह, अल्ला आलमीन दृढ़ाईआ। जिस नूं कहिंदे वाहिद खुदा, खालक खलक नूर खुदाईआ। उस दा हुक्म इक्को सदा, सदा सद दए सुणाईआ। चारों कुण्ट रहे ग़दागर ग़दा, फ़कीर फ़िकरा ढोला गाईआ। सदी चौधवीं देवे मज़ा, मज़ाक दीन दुनी उडाईआ। तुसां चल्लणा ओस दी रज़ा, रहमत विच हुक्म सुणाईआ। चौदां तबक वेखो कज़ा, कयामत आपणा वेस बदलाईआ। जिस दी समझे कोई ना वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। पैगम्बर कहिण साडी इक्को इक्क आशा, अर्शी प्रीतम ध्यान लगाईआ। मुहम्मद खुशीआं नाल कीता हासा, हस्ती वेख खुशी बणाईआ। चौदां तबक खोल्ह खुलासा, खुल्ही निगाह दिती वधाईआ। इक्क कलमा अगम्मी आखा, आखर दिता दृढ़ाईआ। जिस दा लेख किसे ना भाखा, परदा सक्या ना कोए उठाईआ। संदेसा दे के धुर जणाया आपा, आपणा हुक्म सुणाईआ।

कलयुग अन्तिम वेखां खेल तमाशा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा पूरा करां ख्वाबा, हुक्म हुक्म विच बदलाईआ। धुर दा मालक हो के आका, इक्को इक्क नूर रुशनाईआ। सूफ़ीआं साफ़ खोल्ह के ताका, तकदीर तदबीर नाल बदलाईआ। मंज़ल चढ़ के वेखां वाटा, वारस हो के खोज खुजाईआ। इक्को नूर करां प्रकाशा, दो जहानां चन्द चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बण के साथा, सगला संग निभाईआ। ना कलमा रहे ना गाथा, ना पूजा पाठ सरनाईआ। ना सीस झुके ना माथा, ना वुज़ू विच चतुराईआ। मुहम्मदा जिस ने मन्न ल्या मेरा आखा, आखर मंज़ल दयां पुचाईआ। जित्थे मज़्ब नहीं कोई ज़ाता, शरअ दी करे ना कोए लड़ाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राता, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, नार कन्त ना सेज सुहाईआ। ना कोई कलमा ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई मन्दिर मस्जिद मठ्ठ राह तकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को साका, सज्जण सैण ना कोए बणाईआ। इक्को मेल कमलापाता, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सर्ब कला समराथा, भण्डार अतोट अतुट्ट वरताईआ। ओस वेले सब दीआं पूरीआं करां आशा, आहिस्ता आहिस्ता वेख वखाईआ। गोपीआं वालीआं रहिण ना देवां रासां, झूठा काहन ना कोए नचाईआ। तीर्थां उत्ते मारनीआं पैण ना वाटां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती काया अंदर देवां वहाईआ। का खा दीआं पढ़नीआं ना पैण जमातां, सोहँ अक्खर इक्क समझाईआ। धर्म दुआर दा खोल्ह दे खाता, ख़तरे विच्चों बाहर कढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां सब दा बाहमी जोड़ के नाता, नातवां सारे लवां उठाईआ। लख चुरासी अंदर वड़ के झाकां, झाकी भगतां आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दीआं पूरीआं करे आसां, ख़ाहिशां ख़ास आपणे विच मिलाईआ।

★ ६ सावण शहिनशाही सम्मत ३ कपूर सिँघ दे गृह मोगा ज़िला फ़िरोज़पुर ★

पुरख अकाल कहे सुण सतिगुर सच्चे, शब्दी धार तेरी वड्याईआ। सतिजुग दुलारे उठ अगम्मी बच्चे, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा उठाईआ। भगत सुहेले वेख जो दीन दुनी राह रहे तक्के, तकदीर तदबीर प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। सच प्रीती अंदर फिरदे नस्से, चार कुण्ट दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। मेहर मुहब्बत विच हँसमुख हो के हस्से, हस्ती हस्ती विच्चों बदलाईआ। निज नेत्र लोचण राह तक्कण अक्खे, आख़र आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सच दुआर एकँकार बैठे धर्म दुआर पतण पते, परा पसन्ती मद्धम बैखरी डेरा ढाहीआ। अमृत धार अगम्म अपार एका दस्से रसे, रस्ता वाबस्ता हो के देणा दृढ़ाईआ। जोती

८४४ २०

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। सतिजुग साचे उठ दुलारे, शब्दी दूल्हा नाल मिलाईआ। लोकमात वेख विच संसारे, महासाथी देवे माण वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किरपा धारे, नर नरायण नर हरि आपणी दया कमाईआ। खेल कराए भगत वछल गिरवर गिरधारे, गहर गम्भीर बेनज़ीर अन्तर निरंतर परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं हाहाकारे, बीस बीसा नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए दवारे, तन नगारे चोट ना कोए लगाईआ। निर्मल जोत ना जोत जोती जगत उज्यारे, अज़ल कज़ल ना कोए बदलाईआ। गावत गा गा दमां वाले जीव हारे, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक्क समझाईआ। सतिजुग साचे उठ हो त्यार, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। जन भगतां जा के कर निमस्कार, बिन सीस सीस झुकाईआ। दर दरवेशा बण भिखार, भिक्खक हो के आपणी झोली डाहीआ। उच्ची कूक कूक पुकार, सोहला ढोला धुदरगाहीआ। लहिणा देणा मूल वेख संसार, संसारी भण्डारी तेरी देण गवाहीआ। शंकर होया ख़बरदार, त्रिसूल तरह तरह उठाईआ। करनी दा करता खेल करे करतार, कुदरत दा मालक आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण देणा उतार, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच समझाईआ। गुरमुखां मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, दूती दुश्मण अंदरों देणे कढाहीआ। इक्को सतिगुर शब्द होवे प्यार, पीआ प्रीतम मिले धुरदरगाहीआ। जिस दी विद्या विच विद्दत पा सके ना कोई सार, अक्खरां विच अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी तैनूं करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के गए पुकार, पुनह पुनह सीस जगदीश निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक्को इक्क सुणाईआ। सतिजुग साचे उठ हो सवाधान, हरि सतिगुर आप उठाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म मेल अगम्मा काहन, सुरती मेला होवे सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स गान, जगत विद्या अवर ना कोए पढ़ाईआ। काया मन्दिर नज़री आए हकीकत वाला मकान, लाशरीक शिरक्त विच्चों बाहर देणा समझाईआ। सच संदेसा देणा इक्क अमाम, कामल मुर्शद दस्सणा धुरदरगाहीआ। दो जहान सुणाउणा धुर पैग़ाम, पैगम्बरां कर पढ़ाईआ। सति धर्म दा झुलाउणा इक्क निशान, सति सतिवादी रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक्क उपजाईआ। सतिजुग साचे उठ कर दलेरी, दयावान दया कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पा फेरी, फ़रमांबरदार हो के सेव कमाईआ। मन वासना आपणी कर चेरी, चिरां दे विछड़े लैणे मिलाईआ। भगत भगवान जगत जहान ना लावण डेरी, डण्डावत बन्दना इक्को देणी दृढ़ाईआ।

सति धर्म दी सच मलाह चलावे बेड़ी, नईआ नौका इक्को इक्क प्रगटाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख सख़ी चढ़े किहड़ी किहड़ी, कूड़ कुटम्ब दा नाता मात तुड़ाईआ। गुरमुखां वस्त्र रंगणे पए ना नाल गेरी, गऊ ग़रीब निमाणयां होए आप सहाईआ। निरगुण धार निरवैर हो के पाई फेरी, निराकार हो के करे रुशनाईआ। जन भगतां इक्को रंग वखाए सञ्झ सवेरी, संध्या रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। सतिजुग साचे सच दुआर बण कामा, करमां तों रहत रिहा दृढ़ाईआ। धुर संदेसा दे पैग़ामा, चारे बाणी तों बाहर देणा समझाईआ। जिस कारण निरगुण धार पहरया बाणा, बावन लहिणा देणा लेखा झोली पाईआ। सति सरूपी हो के रामा, सीता सुरती सति रिहा प्रनाईआ। शब्दी धार बण के कान्हा, गोपी गुर गुर अंग लगाईआ। नूर नुराना बण अमामां, अमलां तों रहत वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेटे शामा, शमां गुल होवे थाउँ थाँईंआ। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, मुद्दा सब दा फोल फोलाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप करे वैराना, वैरी गृह गृह करे लड़ाईआ। सदी चौधवीं बदल देवे ज़माना, नाम ज़मानत सब दी ज़बत कराईआ। दीन मज़्हब ना रहे इस्लामा, इस्म आअज़म इक्को दए समझाईआ। चार वरन अठारां बरन दिसे ना कोए बेगाना, आत्म ब्रह्म परदा ओहला आप उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा गाणा, गा गा आपणा रंग रंगाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी उपजाए तराना, त्रिया त्रीमत कूड़ी धार दए खपाईआ। जन भगत सुहेला होवे मस्ती विच दीवाना, दीवा बाती कमलापाती इक्को इक्क करे रुशनाईआ। मुहब्बत विच महबूब होवे मेहरवाना, मालक ख़ालक प्रितपालक इक्क गोसाँईंआ। साचे जाम दा खोल्ह के मैख़ाना, आबेहयात धुर दा जाम दए पिलाईआ। साचा मार्ग दस्स आसाना, इन्सानां हिंसा विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। सतिजुग साचे लोकमात उठ तक्क, तक्कवा इक्को इक्क रखाईआ। तेरी झोली पावे तेरा हक, हकीकत अगली दए समझाईआ। मेहरवान पुरख समरथ, समां समें विच्चों बदलाईआ। धुर दा हुक्म महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सति सच चलाउणा रथ, रथवाही हो के देवे माण वड्याईआ। जन भगतां अंदरों खोल्हणी अक्ख, आख़र इक्को नूर नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गाउँदे होवण जस, सिफ्त सालाहां विच वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार खेड़ा करना भठ्ठ, अग्नी तत जगत विकार देणा तपाईआ। गुरमुखां दे के ब्रह्म मत, मेला सहिजे देणा कराईआ। घर मिले कमलापति, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण पत लए रख, रखक हो के रच्छया करे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां कोलों कदे ना होवे वक्ख, वक्खरी अक्खरां तों परे करे पढ़ाईआ।

★ ७ सावण शहिनशाही सम्मत ३ सुरैण सिँघ दे गृह निधां वाली ★

सति कहे जन भगतां पूरी करां मनसा, ममता मोह विकार मिटाईआ। सोहँ जाप जपावां हँसा, बुद्धी काग दयां बदलाईआ। भगत भगवान बणावां बंसा, गृह मन्दिर अंदर इक्को वज्जे वधाईआ। मन हँकार रहे ना कंसा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। कर प्रकाश विच्चों सहँसा, सहिज गुण दयां समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। झगड़ा मुका के जगत विकारी मन का, मन्दिर सोहणा इक्क सुहाईआ। लहिणा चुकावां साढे तिन्न हथ्थ काया तन का, तत्व तत भेव खुल्हाईआ। प्रकाश होवे आत्म ब्रह्म का, पारब्रह्म परदा इक्क उठाईआ। लेखा मुके आवण जावण लख चुरासी जन्म का, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। फल मिले प्रभ सरनाई सरन का, सरनगति इक्को इक्क वखाईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन का, फ़रमांबरदार वेख वखाईआ। मार्ग दस्सां अगम्मी मंज़ल चढ़न का, पौड़ी डण्डा इक्को इक्क प्रगटाईआ। वक्त सुहेला होवे तूं मेरा मैं तेरा ढोला सोहला पढ़न का, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। मार्ग दस्स चार वरन एका धर्म का, दरहम बरहम कूड़ी क्रिया दयां कराईआ। समां वखावां सच दवारे खड़न का, बन्द किवाड़ी कुण्डा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति कहे मैं देवां सच सबूत, सिदक सबूरी साबर इक्क जणाईआ। भाग लगा के काया माटी पंज तत कलबूत, परदा ओहला बण विचोला, अंदरों दयां उठाईआ। निरगुण जोत निराकार मेल महबूब, मुहब्बत विच महिव आपणा घर वखाईआ। जिस दा आलीशान उच्च अरूज, अर्श फर्श समझ किसे ना आईआ। हकीकी दस्स मंज़ल मक्सूद, मुकामे हक होए रुशनाईआ। पढ़ना पए ना हज़ारा दरूद, हज़रतां दा लेखा दयां चुकाईआ। भाग लगा के काया माटी तन वजूद, वजद विच वसल इक्को दयां कराईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया रहे ना कोए हदूद, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा एकँकारा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया कर नेस्तोनाबूद, सति सच लए प्रगटाईआ। सति कहे मैं देवां साथ सगला, संगी साथी इक्को दयां मिलाईआ। भेव खुल्हावां पारब्रह्म ब्रह्म धार अगला, परदा ओहला काया मन्दिर अंदर रहिण कोए ना पाईआ। खोजणा पए ना किसे टिल्ले पर्बत चोटी जंगला, काया मन्दिर अंदर इक्को वज्जे वधाईआ। नाम भण्डारा बण

८४७
२०

भिखारा पए ना मंगणा, अनमुल्ली दात अनडिठ्ठी झोली पाईआ। सच प्रीती चाढ़ अगम्मी रंगणा, रंगत विच हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सच दवारा सच स्वामी इक्को पए लँघणा, चार कुण्ट दहि दिशा ना कोए भरमाईआ। सच प्रीती चरण धूढ़ी मस्तक टिक्का लावे चन्दना, दुरमति मैल अंदर बाहर करे सफ़ाईआ। वेला वक्त एथे ओथे दो जहानां होए सुहञ्जणा, सोभावन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति कहे मैं आदि जुगादी मीता, मित्र प्यारा एकँकारा इक्को दयां वखाईआ। जुग चौकड़ी बदलणा जिस दी रीता, रहिबर हो के रहज़नां करे सफ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त त्रैगुण माया पंज तत वेखे अंगीठा, काया मन्दिर अंदर भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। नित नवित जुग चौकड़ी वेखणहारा नीचन नीचा, ऊँचो ऊँच अगम्म अथाह आपणा वेस वटाईआ। पूरब लहिणा लेख चुकाए घट निवासी बनबासी राम सीता, सखी काहन आपणी कार कमाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे कोई मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ मसीता, मसला असला इक्को इक्क प्रगटाईआ। जन भगतां याद आउण ना देवे पिछला वक्त बीता, बातन विच बैतुलमुक्दस धाम इक्क सुहाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कर के ठांडा सीता, अग्नी तत काया कच्च दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म सच करे बख्शीशा, बख्शिश रहमत सहिमत सहिमत हो के समां आपणे नाल रखाईआ।

★ ७ सावण शहिनशाही सम्मत ३ सुलखण सिँघ दे गृह रुकना मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

सति कहे मैं भगतां करां हेत, प्रभू प्रीतम नाल मिलाईआ। दरस करावां नेतन नेत, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। अंदर वड़ के देवां भेत, काया काअबा परदा आप चुकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया करां खेत, रणभूमी नाम खण्डा चमकाईआ। त्रैगुण माया ला ना सके सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सचखण्ड दुआर दसावां इक्को देस, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। नाम निधाना दए संदेश, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लिख के लेख, आत्म परमात्म परमात्म आत्म बन्धन आपे पाईआ। सति धर्म दी साची दस्स खेड, सतिजुग साचा राह चलाईआ। चार वरन अठारां बरन एका नाम दस्स के रसना जिहव, कलमा कायनात इक्क पढ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दस्स के धुर दा देवी देव, देवत सुर जिस नूं सीस झुकाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक मिलावां सचखण्ड निवासी निहकेव, निहचल आसण सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक्क रंगाईआ। सति कहे मैं भगतां दस्सां सति, सति सतिवादी

८४८
२०

प्रभू मिलाईआ। अन्तर निरंतर दे के ब्रह्म मत, परदा दूई द्वैत उठाईआ। धीरज सन्तोख दे के सति, सुत्यां देवां उठाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा दीन दुनी समझाईआ। जन भगतां खोल्ह के अंदरों अक्ख, निज नैण नूर दयां चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गावण जस, ढोला धुर दा सिफ्त सालाहीआ। हकीकत विच्चों सब दी झोली पावां हक, हुक्म धुर दा इक्क मनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सृष्टी गई थक्क, दृष्टी अंदर भार ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं लेखा दस्स, पुरख समरथ पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भेव दयां खुल्हाईआ। जिस दा सच दुआर इक्को इक्क हट्ट, गुर अवतार पैगम्बरां वणज रिहा कराईआ। सो सज्जण सुहेला इक्क इकेला एकँकार हो प्रगट, पतिपरमेश्वर आपणा रूप बदलाईआ। नाम अगम्मी शब्द निधाना मारे सट्ट, ठोकर ठाकर आप लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हउमे हंगता बुरज जावे ढठ्ठ, सच सुच मिले माण वड्याईआ। झगड़ा रहे ना तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, पावे सार मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, गुरुदुआर गुर गुर परदा लाहीआ। निरगुण धार निरवैर निरँकार खेल करे बाज़ीगर नट, स्वांगी बहुरंगा आपणा खेल वखाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त कलमा कायनात कोई गा ना सके भट्ट, भटकना सब दी दए चुकाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुर गुर कर इक्ठ, इक्ठा लहिणा देणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ महिमा अकथ, बोध अगाध बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ।

★ ७ सावण शहिनशाही सम्मत ३ राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ★

सतिजुग कहे मेहरवान महबूब तेरे हुक्मे अंदर उठां, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर तेरी सेव कमाईआ। भगत सुहेला इक्क इकेला नौजवान मर्द मर्दान हो के तुठां, नव नौ चार अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर परदा दयां उठाईआ। जाम हकीकी अमृत रस जन भगतां देवां बिन घुट्टां, गहर गम्भीर बेनज़ीर काया मन्दिर अंदर आप टिकाईआ। जोती शब्दी धार दो जहान श्री भगवान वेखां चार कुण्ट धरनी धरत धवल गुठ्ठां, आकाश प्रकाश ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ फोल फुलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेले सज्जण जा जा पुछां, दिवस रैण आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे हुक्म अंदर जावां नस्स, निरगुण धार निरवैर लै अंगड़ाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां पूरी करां आस, आसा तृष्ना माया ममता मोह अंदरों बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म साचे मण्डल वखावां तेरी रास, गोपी काहन इक्को गृह सोभा पाईआ।

निरगुण जोत बिन वरन गोत करां प्रकाश, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म दयां दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साची दस्स के गाथ, सोहला ढोला बण विचोला इक्को इक्क सुणाईआ। सच दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरा खोलूां हाट, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा इक्को इक्क खुलूाईआ। शाहो भूप सति सरूप सचखण्ड दुआर दस्सां तेरा राज, दरगाह साची मुकामे हक हकीकत विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देणा समाज, सच समग्री जोत इक्ग्री इक्को इक्क प्रगटाईआ। सतिजुग कहे मेरे परम पुरख पारब्रह्म दीन दयाला, दयानिध तेरी इक्क सरनाईआ। सचखण्ड निवासी होणा मेरा इक्क रखवाला, रखक हो के रच्छया करनी थाउँ थाँईंआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरे हुक्मे अंदर त्रैगुण माया तोड़ां जगत जंजाला, जागरत जोत करां रुशनाईआ। सति धर्म दा साचा मार्ग दस्सां रहिबरां राह सुखाला, मन विकारा रहज़न रहिण कोए ना पाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही तेरी नज़र आवे इक्को धर्मसाला, धर्म दुआर एकँकार विच संसार देणा समझाईआ। जिस धारों निकले आदि शक्ति जोती जलवा नूर ज्वाला, अष्टभुज सिँघ सवार रूप बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा देंदे गए अहिवाला, अनरागी हो के आपणा राग अलूाईआ। सो साहिब सतिगुर लेखा जाणे दो जहानां, श्री भगवाना आपणी कार कमाईआ। मेरे उपर होणा मेहरवाना, सतिजुग साचा निउँ निउँ लागे पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जूठ झूठ होवे रवाना, धरनी धरत धवल धौल रहिण कोए ना पाईआ। धूआँधार रहे ना ज़िमीं असमाना, एका जलवा नूर चन्द करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म गाए साचा गाणा, गावत गावत आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा आप सुणाईआ। सतिजुग साचा कहे मैं तेरा फ़रमांबरदार, सेवक धुर दा नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीतया विच संसार, संसारी भण्डारी नेत्र रोवण मारन धाहींआ। गुर अवतार पैगम्बर बण भिखार, दर तेरे ठांडे बैठे सीस झुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पाए कोए ना सार, समझ विच रमज़ ना कोए लगाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ तट किनार रिहा ना कोए प्यार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। बीस बीसे हरि जगदीसे तुध बिन पाए कोए ना सार, कलयुग काया कपड़ दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। दीआ बाती कमलापाती गृह मन्दिर अंदर करे ना कोए उज्यार, जगत अन्धेरा अन्ध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। मैं नन्हां बच्चा तेरा सेवादार, सतिजुग साचा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा इख्त्यार, हुक्मे अंदर हुक्म दे बदलाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, सच संदेसा नर नरेशा इक्को देणा प्रगटाईआ। जिस नूं सजदयां विच सारे करन निमस्कार, नमों

नमों सीस जगदीश झुकाईआ। तेरे हुक्म दा होवे इक्क जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। तेरे चरण कँवल बलिहार, बलि बलि आपणा आप वखाईआ। मंज़ल मंज़ल मुश्किल रहे ना कोई विच संसार, सागर सिन्ध धुर दी पार कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट माया ममता मोह हट्ट बाज़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार दर ठांडे मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे मैं तेरा बच्चा बाल निधाना, बाल अवस्था सीस निवाईआ। किरपा कर श्री भगवाना, तेरी ओट तकाईआ। सति धर्म दा झुल्ले इक्क निशाना, निशाने नश्यां वाले बदलाईआ। लख चुरासी नज़री आ इक्को कान्हा, शब्द बंसरी धुन कर शनवाईआ। पैगम्बरां दा पैगम्बर दे पैग़ामा, धुर कलामा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे धुर दरबारे दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिजुग साचा कहे पुरख अकाल दीन दयाल पा दे भिख्या, दर दरवेश दर कुरलाईआ। साचे नाम दी दे दे सिख्या, सिख सतिगुर नाल मिलाईआ। जेहड़ा लेखा गोबिन्द बिन अक्खरां माछूवाड़े लिख्या, काग़ज़ कलम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। उह निरगुण धार वखा दे अगम्मी चिटया, जिस दा मज़मून कानून विच ना कोए प्रगटाईआ। बिन तेरी किरपा चार जुग किसे ना दिस्या, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान सके ना कोए समझाईआ। सो अन्त अखीर बेनज़ीर जन भगतां दे हिस्सया, हस्ती विच मस्ती आपणा नाम रखाईआ। करवट लै बदल लै पिठया, सनमुख हो के जलवा नूर कर रुशनाईआ। बिन तेरी किरपा कलयुग अन्त अख़ीर ना जाए नजिठ्ठया, लहिणा देणा देणा लैणा सके ना कोए मुकाईआ। तूं पुरख अकाल समरथ स्वामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दा पितया, पतित उधारन इक्को नज़री आईआ। जगत बाज़ार हट्ट कदे ना विकया, करते तेरी कीमत कोए ना पाईआ। तेरा खेल सदा अनडिठ्ठया, जग नेत्र सके ना कोए दरसाईआ। धुरदरगाही बण मितया, मित्र प्यारे सांझे यारे हरी दवारे आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां साचे सन्तां सति धर्म दी पा भिच्छया, वस्त अमोलक नाम निधाना आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा मुकाउणा वड्डयां निक्कयां, लेखे विच्चों लेखा आपणा देणा समझाईआ।

★ ८ सावण शहिनशाही सम्मत ३ गुरदेव सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ★

सतिजुग कहे साची दे धर्म दी दात, दो जहानां मिले माण वड्याईआ। कलयुग मेटां अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया अंदर कर रुशनाईआ। धुर दा नाम प्रगटावां साच, नाउँ निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। भाग लग्गे काया माटी काच, कंचन गढ़

साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। आत्म परमात्म इक्को नज़री आए नात, जगत वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। सच प्रीती धुरदरगाह जुड़े नात, पतिपरमेश्वर मिले बेपरवाहीआ। जो गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी गए आख, अक्खरां विच तेरी सिफ्त सालाहीआ। सो खेल वखावां साख्यात, साहिब सतिगुर तेरा नूर होवे रुशनाईआ। जन भगतां मिले आबेहयात, सूफ़ी सन्त फ़कीरां फ़िकरा इक्को इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पूरी कर आस, आहिस्ता आहिस्ता दर ठांडे मंग मंगाईआ। होवे प्रकाश पृथ्मी आकाश, त्रैलोक सलोक इक्क सुणाईआ। साचे मण्डल सुहञ्जणी होवे रास, गोपी काहन सुरती शब्दी वज्जे नाद, हउँ बालक हउँ हां तेरा दास, याचक हो के धर्म दी सेव कमाईआ। साची मंज़ल वेखां चढ़ के घाट, तट किनारा इक्को नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाउँ निरँकारा उपजे साची गाथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक्को हुक्म देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद तेरी आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ परम पुरख चाढ़ रंग, रंगत अगली दे वखाईआ। भेव खुल्ला ब्रह्म हँ, हंगता अंदरों गढ़ तुड़ाईआ। निरगुण धार निरगुण होवे संग, दो जहानां संग बणाईआ। नाम निधान वज्जे मृदंग, धुनी नाद करे शनवाईआ। दूई द्वैत भरमां ढाह कंध, कंचन गढ़ बंक दे वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्ट सबाई जणा छन्द, सहिसा रोग रहे ना राईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द दे अनन्द, अन्तर आत्म आपणा रस चखाईआ। करवट लै बदल के कंड, सनमुख हो के सति सरूप कर शनवाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच पा ठंड, कलयुग विच अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सति धर्म कहे इक्को तेरे नाम दी होवे सुगंध, चार कुण्ट दहि दिशा इक्क महकाईआ। निज आत्म दे आपणा अनन्द, अनन्द इक्को इक्क वखाईआ। निर्मल जोत चमके चन्द, कलयुग अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ। तेरा खेल वेखां विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। सच दुआर एकँकार आपणा लँघ, नौ दुआर ख़ाकी माटी डेरा ढाहीआ। सुरत सवाणी होण ना देवीं रंड, कन्त सुहागी आपणी दया कमाईआ। दीन दयाल साहिब बण बख्शंद, रहमत मेरी झोली पाईआ। सतिजुग कहे सति दुआर भिखारी हो के रिहा मंग, मांगत हो के आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सूरे सरबंग साहिब सुल्तान जगत जहान तेरी ओट तकाईआ।

★ २६ सावण शहिनशाही सम्मत ३ दिल्ली दरबार विखे ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं सेवक उस दे, जिस दी उस्तत जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार प्रगटाईआ। रूप

धरदे रहे जोती धार शब्दी सुत दे, धुर फ़रमाना दो जहानां शब्द निशाना इक्क समझाईआ। एथे ओथे रहे पुछदे, नर निरँकार अग्गे निरगुण धार सीस निवाईआ। किस बिध नव नौ चार पैंडे मुक्कदे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। पड़दे ओहले रहिण कोए ना लुक दे, भेव अभेदा अछल अछेदा दे खुल्हाईआ। काया माटी भाण्डे वेख सच दे, सच संजम इक्क समझाईआ। माया ममता मोह विकारा जीव जहान रहे कुठ्ठदे, अग्नी तत तत वजूद विच जलाईआ। मन हो के लख चुरासी विच्चों तेरे नाल रहे रुस्सदे, आत्म परमात्म नाता ना कोए जुड़ाईआ। आपणी करनी आपणे विच्चों लुट्टदे, मन हँकारी विकारी, आपणे नाल मिलाईआ। झगड़े मेटे ना कोए तेरे विछोड़े दुःख दे, दर्दीआं दर्द ना कोए गवाईआ। क्यों जामें बदलदे रहे मनुक्ख दे, देवत मानव रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्को देणा साचा वर, दरगाह साची मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं नूर ओस अलाह दे, जो अल्ला आलमीन अख्वाईआ। असीं वणजारे आदि जुगादि सिफ्त सालाह दे, ढोले महिमा रागां नादां विच गाईआ। वणजारे बणे रहे निरगुण धार जगत मलाह दे, जो नईआ नौका आपणा नाम चलाईआ। खादम सेवक हो के आपणे बेपरवाह दे, जो पारब्रह्म ब्रह्म आपणी सेवा रिहा लगाईआ। मालक बणदे रहे दीनां मज़्ह्बां वाले राह दे, रहिबर हो के रसत्यां वण्ड वण्डाईआ। भिखारी बणे रहे धुरदरागाही अगम्मी शाह दे, जो शहिनशाह देवणहार इक्क अख्वाईआ। राग सुणाउँदे रहे ओस दे राह दे, जो नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं ओसे दी धार, जो धुर दा मालक इक्क अखवाइंदा। जिस दा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण लए अवतार, त्रैगुण अतीता भेव मिटाइंदा। जिस दी महिमा कागज़ कलम ना लिखणहार, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाइंदा। सो स्वामी अन्तरजामी आत्म परमात्म साचा यार, नाता इक्को इक्क वखाइंदा। जुग चौकड़ी करदे आए इज़हार, सिफ्तां नाल सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा। जगत धार करा के आए अधार, विवहार विच आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लए अवतार, निराकार आपणा रूप वटाइंदा। आपणे हथ्थ लए अख्त्यार, अख़तर बख़तर दुख़तर नज़र कोए ना आइंदा। जननी जण ना सके विच संसार, संसारी भण्डारी दर सीस निवाइंदा। लेखा लेख करे आपणे सच दरबार, धुर दरबारा एकँकारा इक्को इक्क प्रगटाइंदा। जिस दी जगत विद्या कोए ना पावे सार, महासार्थी आपणा खेल खिलाइंदा। भगत वछल बण गिरधार, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा रंग रंगाइंदा। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्ट दहि दिशा पावे सार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी

अन्त कन्त भगवन्त चरण कँवल निमस्कार, नमस्ते विच रस्ते सब दे आप बदलाइंदा। एका हुक्म दस्से धुर दरबार, दरगाह साची करनी कार आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, उजरत लेखा सब दा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा कर के आर पार, हुक्मे अंदर इक्क सिक्दार, शाहो शाह आप प्रगटाइंदा।

★ पहली भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड दुआर दरगाह वेखो धुर, धुरदरगाही बेपरवाही आप जणाइंदा। अवतार पैगम्बर उठो गुर, गहर गम्भीर बेनज़ीर धुर फ़रमाना इक्क सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव अंगड़ाई लओ देवत सुर, साहिब सुल्तान श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दाने आप जगाइंदा। शब्द अगम्मी वेखो चढ़ के घोड़, दो जहानां मर्द मर्दाना परदा आप उठाइंदा। तक्को खेल निराला अन्तिम होर, हरि करता करनी दा मालक प्रितपालक ख़ालक आपणा परदा आप चुकाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार जिस दे हुक्मे अंदर डोर, निरवैर निराकार आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। पैगम्बर गुर वेखो बिना अक्खां अवतार, हरि अवतरी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी लहिणा देणा रिहा उतार, लेखा अवर रहे ना राईआ। शब्दी शब्द सुणे जैकार, धुन अगम्मी आप प्रगटाईआ। जिस दा कातब बणे ना कोए लिखार, काग़ज़ कलम शाही ना कोए वड्याईआ। सिफ्तां विच ना कोए इज़हार, कथनी कथ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे श्री भगवन्त, हरि करता वड वड्याईआ। लेख जणाए धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरो जिस बणाई तुहाडी बणत, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस दा ढोला नाम गाउँदे आए जुगा जुगन्त, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग संदेसा राग अल्हाईआ। भेव खुल्हाउँदे आए मणीआं मंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। उठो वेखो गुरू अवतार पैगम्बरां रिहा सुणाईआ। कलयुग बदलदी जाए धार, धरनी धरत धवल नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा सब दा रिहा विचार, निहकर्मी हो के करमां करे सफ़ाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क रिहा दृढ़ाईआ।

सच संदेसा देवे इक्क इकल्ला, एकँकार वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार वेखो मेरा सच महल्ला, चार दीवारी छप्पर छन्न शहिनशाह ना कोए बणाईआ। दीपक जोती धार विच्चों बला, बलधारी रिहा प्रगटाईआ। नित नवित खेल करदा रिहा अछल अछल्ला, चार जुग समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त निरगुण धार सब नालों छुडा के पल्ला, पिछली रीती रिहा बदलाईआ। शब्दी हुक्म सुणा के इक्को हल्ला, हालत सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरो उठो वेखो कर ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाईआ। मेरे धर्म दा वेखो निशान, निशानी रिहा बदलाईआ। सख़ियां वेखो मिलदा काहन, मेहरवान महबूब इक्क गुसाईंआ। जेहड़ा बोले ना कदे रसना नाल ज़बान, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जिस दा इष्ट धर्म ना कोए ईमान, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। अंकड़यां विच ला सके ना कोए मीज़ान, हिन्दसयां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो खेल करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर होए हैरान, हैरानी सब दे अंदर आईआ। की खेल होया विच जहान, लोकमात वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सब दा बदल दिता विधान, वाधा आपणा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर खोल्हो अक्ख, आख़र आप जणाईआ। प्रभ दा खेल वेखो प्रतख, पारब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। जगत नज़ारा तक्को सच, सच दयां समझाईआ। लूं लूं अंदर गया रच, जन भगतां डेरा लाईआ। हकीकत दस्स के हक, हुक्म दिता सुणाईआ। इक्को मन्नणा पुरख समरथ, दूजा इष्ट ना कोए वड्याईआ। नाम भण्डारा दे के हट्ट, ख़ाली दिते भराईआ। शब्द अगम्मी ला के सट्ट, सुत्ते लए उठाईआ। दुरमति मैल कट, पतित पुनीत दए बणाईआ। माया ममता मिटा के हद्द, घर साचा इक्क वखाईआ। श्री भगवान बणा यद, जन भगत लए बणाईआ। आपणे हुक्मे अंदर सद्द, संदेसा इक्को रिहा सुणाईआ। वक्खरा रहे ना कोए अड्ड, घर ठांडे वज्जे वधाईआ। दया करे सूरा सरबग, मेहरवान धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लग्गी अग्ग, अन्तिम सके ना कोए बुझाईआ। की हालत होई जग, जगजीवण दाता रिहा सुणाईआ। बिन भगतां किसे ना मिलणा अमरापद, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। सब दी पिछली कीती होणी रद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाना सुणो एक, हरि करता आप जणाईआ। जन भगतां बख्शणी इक्को टेक, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। अन्तर कर आप बिबेक, दुरमति मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जन भगतां वखाणी इक्को सेज, सचखण्ड परदा लाहीआ। जिस घर

रहवां हमेश, आदि अन्त समाईआ। जन्म कर्म दी मेटां रेख, मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं रिहा वखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर तक्को राह, हरि रहिबर आप जणाईआ। वक्त सुहाउणा गया आ, वज्जे हकीकत हक वधाईआ। सारे ढोला लओ गा, जो निरगुण दिता समझाईआ। बिन सीस तों सीस लओ झुका, नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। मन्नो इक्क रज़ा, रहमत करे बेपरवाहीआ। वाहिद सच खुदा, खुद मालक रिहा दृढ़ाईआ। साचा मार्ग होणा रवां, रहमत आप कमाईआ। खेल वेखो नवां, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। शब्दी हुक्मे अंदर कहवां, रसना ना कोए पढ़ाईआ। सच सिँघासण धुर दे बहवां, आसन इक्को इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्क दूजे नूं करन इशारा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। वेखो रल नज़ारा, हरि करता आप वखाईआ। जिस नूं कहिंदे रहे नर निरँकारा, निरगुण निरवैर नूर खुदाईआ। ओह होया इक्क उज्यारा, उजल सब नूं दए कराईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर धुरदरगाहीआ। जिस दा हुक्म ना किसे विचारा, विचर विचर थक्के जगत लोकाईआ। सो देवणहार सहारा, सहायक इक्को नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, नईआ नौका माया ममता मोह डुबाईआ। साचा मार्ग दस्स संसारा, महासरथी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा चले कोई ना चारा, चारे जुग वेला रिहा विहाईआ। अगला हुक्म चले सच्ची सरकारा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सारे मिल के करो निमस्कारा, निउं निउं सीस झुकाईआ। पुरख अकाल चौवीवां अवतारा, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस ने भगतां दा खोल्ह्या भगत दवारा, भगवन आप प्रगटाईआ। मार्ग ला के अपरंमपारा, अपराधी दिते तराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा लहिणा देणा सतारां हाढ़ा, हाढ़यां विच्चों पूर कराईआ। साचे भगत दा चमकदा वेखो तारा, तारा सिँघ पहली वेरां दर्शन पाईआ। जो बणके आया धर्म दुआर दा लाड़ा, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। दुआबे वालयां ला अखाड़ा, नौ जन्म दा लेखा दिता चुकाईआ। दर्शन करके एकँकारा, इक्क इकल्ला रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेखो भगत, भगवन रिहा दृढ़ाईआ। जिस नूं माण वड्याई दिती जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। तुहाडी पूरी करके शर्त, शरअ दिती बदलाईआ। पिछला लेखा रिहा ना फर्श, अर्श तक्को नूर अलाहीआ। उधार रिहा कोई ना कर्ज़, लेखा दिता मुकाईआ। एहो खेल प्रभू असचरज, जो जुग जुग आप वरताईआ। सब दी मेरे कोल फ़रद, पारब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। समें नाल मन्जूर करां अरज़, आरज़ू सब दी लेखे लाईआ। तुहाडी भगतां रही ना गर्ज़, ग़रीब निमाणयां होए आप सहाईआ।

जन भगतां मारे कोई ना मर्ज, मरीज़ बणे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग रिहा वखाईआ। पुरख अकाल कहे औह वेखो मेरा दुलारा सुत, सुत्तयां रिहा जगाईआ। बण के धार अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। मैनूं मिल्या उह सुख, जिस दी सुगंधी सदा महकाईआ। पहली वारां पहला सिख, सिख्या सब नूं रिहा दृढ़ाईआ। जन भगतो मैं भगत दवारिउं गया नहीं उठ, मरयां विच ना मरन रखाईआ। मेरा मालक गया तुठ, जो आपणी गोद उठाईआ। सचखण्ड दा बूटा चुक्क, दरगाह साची रिहा टिकाईआ। अमृत जाम दे के घुट, घुट्ट आपणे गले लगाईआ। राह विच जांदयां जिस वेले मैं सोहँ पढ़ी तुक, राए धर्म सीस निवाईआ। शंकर ल्या पुछ, खुशी नाल बुलाईआ। ब्रह्मा बदल के आपणा रुख़, भज्जया वाहो दाहीआ। विष्नूं रह ना सक्या चुप्प, कूक कूक रिहा दृढ़ाईआ। मैं किहा मैनूं इक्को ओस दी ओट, जो ओड़क सब दा पिता माईआ। ओसे वेले पुरख अकाला दीन दयाला गया पहुंच, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दर रिहा टिकाईआ। सच दर वेख्या चंगा, सोहणा नज़री आईआ। ना कोए ढोल वज्जे मृदंगा, ना कोए रसना राग सुणाईआ। ना कोए तीर्थ दिसे गंगा, ना कोए मठ्ठ करे रुशनाईआ। ना कोए वण्ड होवे ब्रह्मण्डा, खण्डा खड़ग ना कोए खड़काईआ। ना कोए सूर्या ना कोई चन्दा, ना कोई पक्ख रिहा बदलाईआ। ना कोए तन वजूद अंगा, ना कोई वस्त्र तन छुहाईआ। ना कोए मुल्लां शेख़ पंडा, ना कोए शास्त्र रिहा पढ़ाईआ। ना कोई मंज़ल पौड़ी डण्डा, ना कोए जोग ध्यान कराईआ। इक्को वेख्या साहिब बख़्शंदा, पारब्रह्म ब्रह्म गुसाँईआ। देवणहारा सच अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर रिहा वखाईआ। गुरमुख वेख सच्चा घराना, हरि करता आप वखाईआ। जित्थे वज्जे अगम्म तराना, तुरीआ तो परे रिहा सुणाईआ। दूसर दिसे ना कोए बेगाना, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को नूर जोत निशाना, निरवैर रिहा झुलाईआ। इक्को कमलापति सब दा कान्हा, कँवल नैण नैण खुल्ाईआ। इक्को मर्द इक्को मर्दाना, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को हकीकत हक मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक्को शाहो भूप सुल्ताना, महबूब धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जिसदे दर होए परवाना, पड़दे सब दे रिहा उठाईआ। जिधर वेखां उधर गाउंदे गाणा, तूं मेरा मैं तेरा दूसर राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाईआ। जन भगत कहे मैं सिँघ उह तारा, जिस दी तरह तरह वड्याईआ। मैं छड्ड के भगत दवारा, भगतो भगतां राह वखाईआ। कोई भुल्ले ना विच संसारा, संसारी भण्डारी अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे सेवादारा, दर बैठे सीस

निवाईआ। निउं निउं कर रहे निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मैं वेख के अजब नज़ारा, तुहानूं रिहा सुणाईआ। आओ वेखो मेरा एकँकारा, जो इक्क इकल्ला दए वड्याईआ। वेख्यो मैनूं कोई ना किहो माढ़ा, चंगा कर के ढोला लैणा गाईआ। मैं नौ जन्म दा फड़या होया लाड़ा, शब्दी घोड़ा ल्या चढ़ाईआ। सुण लईं मेरी रविदास चमारा, गुरमुखां दयां सुणाईआ। परमात्मा नालों तेरे नाल चंगा हुंदा वेख्या बिवहारा, बिवहारी दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा रिहा उठाईआ। तारा सिँघ कहे मैं वेख्या खेल अजीब, अजब दयां जणाईआ। इन्द्र शिव दी वेख तरतीब, ब्रह्मे मिली वड्याईआ। शब्दी धार प्रभू करीब, निस्बत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सांझी दस्स प्रीत, प्रीतम रिहा जणाईआ। पुरी लोअ सारे गाओ गीत, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। सब दे परमात्मा वस्या बीच, बिचला परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर रिहा सुहाईआ। मैं वेख्या घर अनोखा, अच्छी तरह जणाईआ। जित्थे कोई नहीं धोखा, धुखदयां अग्न बुझाईआ। जन भगतो प्रभ ने मार्ग दिता सौखा, सहिजे लए उठाईआ। कोई पढ़ना पए ना पोथा, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। कोई रखणा पए ना रोज़ा, नमाज़ां विच ना वक्त लँघाईआ। जेहड़ा हो गया प्रभू जोगा, जुगां दा लहिणा दए मुकाईआ। सोहँ नाम दा दे के चोगा, चुग़ली निंदया तों बाहर कढाहीआ। मैं भगत दवारे देवां आण के होका, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। मैं राह विच जांदयां कविता लिखी चौदां लोकां, लुकयां दयां सुणाईआ। हथ्थ ते हथ्थ मार के रिहा किहा किसे नूं मिल्या नहीं अग्गे एह मौका, मुकम्मल मिले धुरदरगाहीआ। जेहड़ा भगतां साफ़ करे आप आपणा कोठा, कुटीआ तन वजूद सुहाईआ। मैं इशारा दे के नाल पोटा, सब नूं गया दृढ़ाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा जगत वुज़ू वाला लोटा, लुट्टी जाए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। मैं वेख्या खेल निराला, निराकार वखाईआ। जिस वेले मिल्या सिँघ पाला, पलक आपणी आप बदलाईआ। इशारा दिता अग्गों गुरदयाला, सहिज नाल समझाईआ। बैठ दोहां विचाला, हाल दिता सुणाईआ। वेखो खेल जगदीश निराला, जगत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। मैं दोहां दे बहि गया विच, आपणी खुशी बणाईआ। जां वेख्या ते रूप इक, जोत नूर रुशनाईआ। साहिब सुल्तान गया दिस, जो जगत वेस वटाईआ। ध्यान मारया सब नूं सुत्ता दे कर पिठ्ठ, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। जन भगतो तुहाडे भगत दवारे दी इट्ट, रविदास नाल सफ़ाईआ। गोबिन्द दी बिना अक्खरां वाली चिट, चार्तक आपणे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा

८५७ २०

भेव आप खुल्हाईआ। साचा भेव आप खुलाउँदा ए। दीन दयाल दया कमाउँदा ए। परदा ओहला आप चुकाउँदा ए। सचखण्ड दुआर सुहाउँदा ए। निराकार जोत जगाउँदा ए। सच सिँघसण सोभा पाउँदा ए। जन भगतां राह तकाउँदा ए। गुर अवतार पैगम्बर आप समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताउँदा ए। साचा हुक्म इक्क वरतावेगा। गहर गम्भीर खेल खलावेगा। बेनज़ीर परदा उठावेगा। शाह हकीर रंग रंगावेगा। शरअ ज़ंजीर तोड़, मार्ग इक्को इक्क वखावेगा। अमृत आत्म बख्शे सीर, जगत तृष्ना रोग गवावेगा। सिँघ तारा कहे मैं मिल्या नाल कबीर, कबरां दा हाल सर्ब जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा इक्क सुहावांगा। घर साचा इक्क सुहाएगा। अबिनाशी करता दया कमाएगा। दर दर दा लेख मुकाएगा। घर घर दा भेव खुल्हाएगा। जो सोहँ ढोला पढ़दा, सो सचखण्ड आप ल्याएगा। बिन पौड़ी मंज़ल चढ़दा, पुरख अबिनाशी गोद बहाएगा। जन भगतो मैं बुढ्ढा हो के आया तरदा, शौह दरया ना कोए अटकाएगा। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार आया करदा, अग्गे हो ना कोए अटकाएगा। जिस वेले खेल वेख्या सचखण्ड दवारे घर दा, घर सोहणा इक्क सुहाएगा। अबिनाशी करता वेख्या वरदा, खौंत कन्त सोभा पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग विच समाएगा। जन भगतो दस्सां हाल, कथा अगम्म जणाईआ। मंनिओ इक्क सवाल, सवाली रिहा दृढ़ाईआ। किसे नूं खाए कोई ना काल, महाकाल ना भय वखाईआ। मैं हैरान होया मेरी करदा आया संभाल, हर घट हो सहाईआ। मैं हथ्थां दा कंगाल, धनी दिता बणाईआ। मैनूं चंगी लग्गी चाल, जेहड़ी बिन भगतीउं पार लँघाईआ। सिध्धा लै के जावे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। एका हथ्थ विच रख्या उह रुमाल, जिस दी गोबिन्द दए गवाहीआ। जिस वेले उत्ते पाउँदे लाल दोशाल, ओसे वेले होए सहाईआ। फेर बुढ्ढा नढ्ढा इक्को जेही मारे छाल, आपणा बल धराईआ। शब्द सतिगुर होवे नाल, नालायक लायक लए बणाईआ। कोटन कोटि रूप वजदे वेखे ताल, तलवाड़े देण दुहाईआ। राह विच रोंदे वेखे गोरख मछन्दर वरगे दलाल, दर्दी दर्द ना कोए वण्डाईआ। साध सन्त लेटे वेखे आपणी उत्ते खाल, ख़ालस रूप ना कोए बदलाईआ। अग्गे हो के रो के किहा रवाल, सम्मत चाउँदा दा हाल दे समझाईआ। की गोबिन्द बदली चाल, वेस ल्या वटाईआ। तारा सिँघ कहे मैं हस्स के किहा शास्त्रां वेदां विच्चों भाल, क्यों मैथों पुच्छ पुछाईआ। मैं कोई किसे दी घालणी नहीं घाल, ऐवें आपणा ना वक्त लँघाईआ। मैं ओथे पहुंचणा जित्थे मेरी आप करे पहचान, दूजा मिलण कोए ना आईआ। जे मिल्या ते मिलणा नाल श्री भगवान, दूजे हथ्थ ना कदे मिलाईआ। जो आदि जुगादि गुर अवतार पैगम्बरां दा काहन, गुरमुख सख़ियां

सदा प्रनाईआ। मैं ओसे दा निशान, निशाना बण के चलया पास धुरदरगाहीआ। लोकमात विच बणया रिहा महिमान, पराहुणयां वांग झट लँघाईआ। हुण मंज़ल मिली आसान, चढ़या चाँईं चाँईंआ। मैं सौणा जा के नाल आराम, बिना चरण तों चरण घुटने उत्ते टिकाईआ। नाले वेखां आपणा जजमान, ब्राह्मण हो के पिछला हाल सुणाईआ। जन भगतो तुहाडी ओथे वी करया करूं कल्याण, सब दे हाल सुणाईआ। अकाल पुरख कुछ कहि रिहा तारा सिँघ जे तेरे पिच्छो बंता सिँघ लै आवां कपतान, किसे नूं कोई रोस रहे ना राईआ। मैं हस्स के किहा प्रभू मैं ब्राह्मण बड़ा शैतान, ठग्गी रविदास नाल रखाईआ। पुठ्ठ सिध्धे पकड़ के कान, फिर वी आपणा दाउ लगाईआ। अग्गे मंगदा रिहा ठग्गदा रिहा जजमान, ज़ामन तैनूं विच बणाईआ। हुण तेरे दवारे पहुंचया आण, मेरा पिछला लेखा झोली देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस रखाईआ। तारा सिँघ कहे मैं ब्राह्मण उह पंडा, पिछली दयां जणाईआ। जिस दे हथ्थ विच हुन्दा डण्डा, तेरी डण्डौत कर के ठग्गी नाल झट लँघाईआ। गंगा दा याद कर ला कन्ढा, चाली वीह देण गवाहीआ। मैं पिंडिउं हो के नंगा, तेरा जस सुणाईआ। जे प्रभू तूं पहलों हुंदा चंगा, नौ जन्म ना मिलदी सज़ाईआ। तूं बड़ा गोसाँईं ठंडा, गहर गम्भीर अख्वाहीआ। आह खोल्ह लै आपणीआं गंढां, तेरे अग्गे रिहा टिकाईआ। हुण मैं कोई बन्दगी करन वाला नहीं बन्दा, ना तत्तां विच टिकाईआ। तूं मेरा नूर मैं तेरा चन्दा, बिना चन्द ना होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुछ लेखा दे सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे बच्चे, गुरमुख दयां दृढ़ाईआ। तेरे नाते तोड़ के काया कच्चे, कंचन गढ़ दिता सुहाईआ। प्रेम प्रीती बन्धन पा के पक्के, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच मिलाईआ। अग्गे खेल वेखणे अच्छे, अच्छी तरह रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लाहुणे नशे, खुमारी ममता देणी मिटाईआ। भगत सुहेले वेख के सच्चे, साजण आपणे लैणे बणाईआ। मार्ग धुर दे देणे दस्से, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। तन वजूद साफ़ करने अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मीं आकाश मन मति बुध नाल मिलाईआ। शरअ दुनी दे मेटणे रट्टे, रट्टन इक्को नाम जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे पूरे कर के पटे, पटने वाले तों देणा लिखवाईआ। सब नूं मार्ग इक्को दस्से, दिशा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा इक्क खुल्हाईआ। पुरख अकाल तेरा वेख्या दवारा धर्म, दर ठांडे वज्जी वधाईआ। जित्थे लेखा नहीं कर्म, निहकर्मी परदा दिता चुकाईआ। फेर ना होवे जन्म, जन्मे कोई ना माईआ। इक्को मिले सरन, सरनगति धुरदरगाहीआ। इक्को ढोला मिले पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को मंज़ल मिले चढ़न, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जित्थे पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार आवे फड़न, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे पाईआ। की लेखा लेखे पावेंगा। दर ठांडे आप बहावेंगा। थक्के मांदे गोद टिकावेंगा। आउँदे जांदे खेल वखावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करनी कार कमावेंगा। पुरख अकाल आप सुणाउँदा ए। भेव अभेव इक्क खुलाउँदा ए। परदा ओहला आप चुकाउँदा ए। गुरमुख साचे आप उठाउँदा ए। दरगाह साची आप फिराउँदा ए। सच सिँघासण इक्क सुहाउँदा ए। जोती जाता वेस वटाउँदा ए। पुरख बिधाता कल वरताउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला भेव आप खुलाउँदा ए। अगला भेव सच खुलावांगा। परदा ओहला आप उठावांगा। बण विचोला वेस वटावांगा। शब्दी ढोला राग अलावांगा। मौला हो के वेख वखवांगा। धरनी धरत धवल धौला भाग लगावांगा। गुर अवतार पैगम्बरां कीता कौला तोड़ निभावांगा। सृष्टी दृष्टी अंदर जो रौला आप पवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क सुणावांगा। तारा सिँघ कहे मैं इक्क लेख लिख्या किसे घर ना रहे तवा परात, पुरातन दयां जणाईआ। श्री भगवान जे निक्की जेही मन्न लएं बात, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मैं हो के आया इकांत, छड्डी जगत लोकाईआ। जोत सरूपी मार झात, झगड़ा रहे ना राईआ। साचयां भगतां दा वखा दे खात, लेखा दे दृढ़ाईआ। जे उह तेरे ते तेरी उह ज़ात, क्यों करें मात जुदाईआ। पहलों आपणयां भगतां नूं कर पाक, अंदर वड़ के कर सफ़ाईआ। मैं भगतां वलों नुमाइंदा आया तेरी पहली पट्टी पढ़ के पहली विच जमात, दूजी पट्टी ना कोए समझाईआ। जे तूं सोहँ दस्सी गाथ, क्यों अंदर वड़ के बैठा मुख छुपाईआ। मैं हुण कोई मिट्टी नहीं होणा ख़ाक, झगड़ा रिहा ना राईआ। मैं हथ्थ बन्नॢ के नहीं होणा दास, चरणां उत्ते ना सीस निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तूं मेरे पास, परदा ओहला रिहा ना राईआ। उठ वेख जेहड़े लोकमात तेरी रख के बैठे आस, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। तैनूं सारे कहिंदे बाप, जन्म वाली इक्को माईआ। मैं थोड़ॢा थोड़ा लेखा लिखदा रिहा नाल कलम दवात, नाता तेरे नाल रखाईआ। तूं अंदर वड़ के दस्सी जाच, मैं याचक हो के तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी मन्न इक्क अरज़ोईआ। गुरमुख कहे ओ धुर दे भगवान, सच्चे दयां दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी आपणे प्यारयां नूं दे दान, नाम भण्डारा झोली पाईआ। जिन्हां नूं तेरे उत्ते माण, अभिमान अंदरों देणा कढाहीआ। तेरे शब्द दी सुणन धुनकान, जगत रागां सुणन कोए ना जाईआ। आपणा मार्ग दे आसान, क्यों जंगलां विच फिराईआ। तुं काहनां दा काहन, तेरे उत्ते जिन्हां दा ईमान, मुरीद आपणी गोद उठाईआ। तारा सिँघ कहे मैं वेख के हो गया हैरान, हैरानी मेरे अन्तर आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लैणी

उठाईआ। गुरसिख कहे मेरा हाढ़ा, दरोही दयां जणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगारे सांझे यारे जन भगतां वेख मात अखाड़ा, खड़े तेरा राह तकाईआ। तेरा नूर तक्कां कदे ना थक्कां वेखां विच बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ी तेरा रूप नज़री आईआ। मन्न भगतां दा इशारा, देदे धुर दा नाम नज़ारा, कलयुग करदे पार किनारा, नईआ नौका आपणा नाम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह दे वखाईआ। गुरमुख कहे की प्रभू तूं हो गया बुढ्ढा, बल रिहा ना राईआ। की प्रभू तूं हो गया डुड्डा, भज्ज सकें ना राईआ। की प्रभू तूं डरें कोलों युद्धा, गुर अवतार पैगम्बरां सदा लड़ाईआ। की तूं नहीं वेखदा की हाल हुंदा उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। की तूं मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठां विच्चों लैण गिझा भुग्गा, हिस्सा आपणी झोली पाईआ। तूं लारा देंदा आया चौंह जुगा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार कराईआ। तेरा भगतां नालों विछोड़े वाला अजे पैंडा ना मुक्का, मुकम्मल दे सुणाईआ। किहड़ी गल्लों सचखण्ड दवारे लुका, क्यों ना निरगुण जोत करें रुशनाईआ। प्रभू हुण दा भगत तेरे अग्गे कोई नहीं डाहवेगा हुक्का, चिलम अग्गे ना कोए टिकाईआ। कोई ना तन भबूत ख़ाक मलेगा सुक्का, मथ्थे तिलक ना कोए वखाईआ। कोई ना मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ मथ्था टेके हो के पुठ्ठा, शास्त्रां ओट ना कोए तकाईआ। कोई ना साधां सन्तां कोल जा के जाए लुट्टा, आपणा भेंट कराईआ। जा के मिल आपणयां पुत्तां, जो बच्चे तेरा राह तकाईआ। जे मैं तेरी जगह होवां ते सब नूं गोदी चुक्कां, आपणे गले लगाईआ। फेर पैण ना देवां मावां दीआं कुक्खां, अग्नी कुंड ना कोए तपाईआ। ओथे जा के सुट्टां, जित्थे जन्मे कोए ना माईआ। ओन्हा नालों कदे ना टुट्टां, जो तेरा ढोला गाईआ। जे मैं तकड़ा होवां तारा सिंघ कहे प्रभू तेरा गल घुट्टां, तैनूं समझ दयां समझाईआ। तूं नहीं जाणदा की हुन्दा विछोड़े दा दुक्खा, गुरमुख विछड़या किवें झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी आप लै अंगड़ाईआ। गुरुमुख कहे प्रभ ना कर आपणी मर्ज़ी, भगत मरीज़ देण दुहाईआ। वेखीं किते सतिगुरू ना बणीं फ़र्ज़ी, फ़ैसला हक देणा जणाईआ। साचे प्रेमीआं दा होवीं ग़रज़ी, ग़रज़ आपणे नाल मिलाईआ। मैं लिखाउण लग्गा शब्दी धार अगम्मी अर्ज़ी, आरज़ू इक्क सुणाईआ। जिंनां चिर जन भगतां बणें ना दर्दी, दुखियां दुःख गवाईआ। ओन्हां चिर मेरी धार रहेगी लड़दी, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। पुरख अकाल किहा मैं कदे ना होवा अलगरज़ी, सहिजे दयां सुणाईआ। जेहड़ी आत्मा तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला होई पढ़दी, परदयां दे अंदर चढ़ के लवां मिलाईआ। एह खेल मेरी आपणे घर दी, घर घर विच होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर देवां सरनाईआ। गुरमुख कहे मैं सब कुछ तैनूं कहिणा,

कहि के दयां सुणाईआ। जा के वेख आपणे नैणां, बिन अक्खा अक्ख खुलाईआ। मुश्किल हो गया भगतां जगत वासीआं विच बहणा, साचा संग ना कोए बणाईआ। इक्को भाणा तेरा सहिणा, एहो आसा रहे तकाईआ। आपणे नाम दा पा दे गहिणा, सच श्रृंगार वखाईआ। पूरब जन्म दा दे दे लहिणा, मानस जन्म वज्जे वधाईआ। तेरा लेखा कोई ना जाणे शास्त्र सिमरत वेद पुराण रमायणा, खाणी बाणी ढोले सिफ्तां वाले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत बैठ जा सदा अतीत, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। पिछला वेला गया बीत, अग्गे दयां माण वड्याईआ। सति दवारा दस्स के ठांडा सीत, अग्नी तत दयां बुझाईआ। इक्को घर वखा के हस्त कीट, ऊँच नीच मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म दस्स के गीत, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। नाता तोड़ के मन्दिर मसीत, काया काअबा कर प्रगटाईआ। आप वसां अन्तर निरंतर बीच, जोती नूर कर रुशनाईआ। लेख मुका के बीस बीस, बिस्तरे सब दे दयां बंधाईआ। हुक्म चल्ले इक्क जगदीस, जागरत जोत कर रुशनाईआ। एह खेल अगम्मी अनडीठ, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। जन भगतां नाल बणा प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। इक्को कलमा दस्स हदीस, हर हिरदे करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अगम्मी अनडीठ, अनडिठ्ठड़ी कार नर निरँकार आपणे हथ्थ रखाईआ।

८६२ २०

★ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल ★

ब्रह्मण्ड खण्ड खुशी मनाउण, खुशखबरी इक्क सुणाईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन पाउण, पारब्रह्म प्रभ मिल के वज्जे वधाईआ। बिन कदमां सीस झुकाउण, सर मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। बिरहु वैरागी नेत्र नैणां नीर वहाउण, छहबर वेखे धुरदरगाहीआ। अबिनाशी करता लग्गा फ़रमाउण, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। मिले हुक्म उणंजा पाउण, पवण पाणी सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म आया बदलाउण, बदली अदल विच रखाईआ। इक्को कलमा आया दृढ़ाउण, नाम निधाना इक्क सुणाईआ। सोहँ ढोला आया जपाउण, जगजीवत जीव लए तराईआ। साचा मन्दिर आया सुहाउण, स्वामी हो के सोभा पाईआ। भगत सुहेले आया बचाउण, बच्चे आपणी गोद उठाईआ। अमृत जाम आया प्याउण, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। दर दरवाज़ा आया खुलाउण, ग़रीब निवाजा वेख वखाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां आया मिलाउण, हरि मिलापी होए सहाईआ। जगत विछोड़ा आया कटाउण, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। धर्म दवारे आया बहाउण, अगला पिछला पन्ध

मुकाईआ। जोती जोत आया जगाउण, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असीं वेख होए खुशहाल, खुशख़बरी बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। भगत वछल दीनां दा गोपाल, गोबिन्द मेला मेले सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण बण रखवाल, जगत जहान होए सहाईआ। सच दवारा खोल्ह सच्ची धर्मसाल, धर्म दा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। जिस दा देंदे रहे अहिवाल, गुर अवतार पैगम्बर राग सुणाईआ। सो लेखा जाणे शाह कंगाल, हरि करता धुरदरगाहीआ। प्रगट हो के धुर सुल्तान, सुत्यां लए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कोलों लै के आप कमान, कमान चिल्ला तीर इक्को नाम प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर सुणना पए फ़रमान, फरमांबरदार सारे लए कराईआ। हरिजन रहिण ना देवे कोई नादान, निज नेत्र करे रुशनाईआ। काम वासना मेटे कूड़ शैतान, शरअ दए बदलाईआ। हिंसा दा रोगी रहे ना कोए इन्सान, आसा मनसा आपणे नाल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स पहचान, बेपहचानां परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असीं वेखे वज्जदे ढोल मृदंगे, मर्दानगी इक्को दी नज़री आईआ। कोटन गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव वेखे पैरीं नंगे, बिन दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। जुग चौकड़ी जगत जहान जीवां विच लँघे, समां काल आपणा रूप बदलाईआ। जगत वासना उडदे रहे पतंगे, भँवरे भँवरां विच भवाईआ। मानस मानुख तत शरीर वजूद वेखे बन्दे, बन्दगी विच बैठे सीस निवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल कीते बहु ढंगे, भेव समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे गृह दए वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असां सुणया धुर दा ढोला, ढोल माही दिता सुणाईआ। शब्दी धार बण विचोला, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म दस्स के बोला, बोली जगत दिती बदलाईआ। परदा रहे कोई ना ओहला, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। सदा वसणहारा कोला, कँवल कौल बूँद टपकाईआ। भाग लगा के काया माटी चोला, चोजी प्रीतम वेखे थाउँ थाँईंआ। सच दवारा एकँकार हो के आप खोल्ह, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर पा के रौला, रहिबर राहीआं दए भुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर के कौला, कँवल नैण करे रुशनाईआ। धरनी धरत धवल भार कर के हौला, हौली हौली हर हिरदे करे सफ़ाईआ। साचे नाम दा दे झकोला, पवण ठंडी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असीं नच्चे टप्पे कुदे, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। प्रभ दी रमज़ केहड़ा बुज्झे, समझ विच समझ ना कोए रखाईआ। जेहड़े खेल कीते गुज्झे, गहर गम्भीर आपणी कार कमाईआ। सो स्वामी करने उग्घे, उगण आथण

वज्जे वधाईआ। जन भगत सुहेले उठाए सुत्ते, सोई सुरती आप जगाईआ। प्यार मुहब्बत आत्म परमात्म कहे नाता जुड़या पिता पुत्ते, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। दर दर घर घर जा के पुछे, पुश्त पुनाह हथ्थ टिकाईआ। नाता तोड़ के काया माटी जुस्से, जिस्म विच इस्म आपणा लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण की करीए इज़हार, कथनी कथ ना सके राईआ। वेख्या खेल सच्ची सरकार, हरि करता रिहा जणाईआ। सन्त सुहेले मात उभार, भगत भगवन्त जोड़ जुड़ाईआ। जिस नूं लभ्भदे रहे जुग चार, चारे खाणी खोज खुजाईआ। चारे बाणी सिफ्तां वाले बोले जैकार, अक्खरां वाले राग अलाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी गुरमुखां पाए सार, सर्ब व्यापी दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां मुफ़लिसां फड़ बाहों लाए पार, पार किनारा इक्क वखाईआ। जित्थे भगत सुहेले थोड़े रैहन्दे दो चार, बहु गिणती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच दवारा खोल्ह किवाड़, परदा ओहला आप उठाईआ। निरगुण जोत नूर कर उज्यार, जोत जोती विच मिलाईआ। जोती जोत दए आधार, पूरब लहिणा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क सुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण असीं वेख्या रस्ता राह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जन भगतां बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। किसे तों लए ना कोए सलाह, हुक्मे अंदर हुक्म जणाईआ। चरण कँवल दे पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेहर नज़र नाल बख्शे गुनाह, दुरमति मैल धवाईआ। सजदयां विच करनी ना पए दुआ, कलमयां विच कलाम ना कोए पढ़ाईआ। अबिनाशी करता सहिजे मिले आ, आपणा फेरा पाईआ। सन्त सुहेले लए तरा, बैतरनी दा लेखा दए मुकाईआ। सच दवारे दए बहा, घर इक्को इक्क वड्याईआ। जिस गृह वसे शहिनशाह, शाह पातशाह होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, करनी दा करता सब किछ रिहा करा, कारण सके ना कोए समझाईआ।

★ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं समझ ना आया नुकता, नईआ नौका रही ना राईआ। जुग चौकड़ी पैंडा गया मुक्कदा, पाँधी बण के आपणा पन्ध मुकाईआ। किसे भेव पाया ना अगली तुक दा, सोहँ तों अग्गे करी ना किसे पढ़ाईआ। जो उपज्या सो रिहा पुछदा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। सुत दुलारा बणया रिहा उस दा, जिस दी उस्तत कर के आपणा झट लँघाईआ।

गोबिन्द रूप धर दुलारे सुत दा, सूरत साबत इक्क प्रगटाईआ। भविख्त दस्स अगली रुत्त दा, रुतड़ी रंग रंगाईआ। भेव खोल्ह सच सुच दा, संजम इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कदमां उत्तों वारे कदीम, कयामत दए दुहाईआ। शाह सुल्तान वेख अज़ीम, अज़मत बैठी सीस निवाईआ। जो जुग चौकड़ी करदा आया तरमीम, तरह तरह समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीन मज़्हब वण्ड तक्सीम, हिस्सयां विच हिस्सा आपणा पाईआ। खेल वेख नर मदीन, मुद्दत तों आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए खेल पुराणी, वेद पुराण रहे कुरलाईआ। सब दी जूह होई बेगानी, बेगानी दिसे लोकाईआ। सच रही ना कोई निशानी, निशाने नश्यां विच भुलाईआ। जगत कूड़ होई ग़ुलामी, ग़मखार ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं सब दी होई बदनामी, बदी बदला सब दी झोली पाईआ। सजदयां विच फिरे बेईमानी, बेवा कूके खलक खुदाईआ। गुरमति कर के नाफ़रमानी, फ़रमांबरदार दिते भुलाईआ। कलयुग बाल अवस्था बदल गई जवानी, बुढ़ेपा आपणी लए अंगड़ाईआ। नेत्र रोंदे वेखे पवण पाणी, अग्नी अगला हाल सुणाईआ। तेरा खेल शाह सुल्तानी, शहिनशाह समझ किसे ना आईआ। मंज़ल रही ना किसे रुहानी, रूह बुत्त होई जुदाईआ। जन भगतां मंज़ल मार्ग दस्स आसानी, असल आपणा रंग चढ़ाईआ। मेहर निगाह नाल कर मेहरवानी, महिरम आपणे ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं घट हो जाण जाणी, जानणहार जन्म दिता बदलाईआ।

★ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ सोहण सिँघ दे घर शाह बुक्कर ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुहञ्जणा होया वेला, वक्त वार थित लोकमात समझ किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खेले खेल अगम्म अथाह इक्क इकेला, एकँकार निराकार निरँकार परवरदिगार सांझा यार दया कमाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी शाहो भूप साजन बण के भगत सुहेला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा निज आत्म परमात्म जोती शब्दी धार कर के मेला, ईश जीव जगदीश देवे माण वड्याईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर अचरज धार अगम्मी खेल खेला, ख़ालक खलक मखलूक मुफ़लिस वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी बेअन्त बेपरवाह आपणा परदा आप चुकाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर कहिण की करीए सिफ्त सालाह, साजण इक्को धुरदरगाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा ढोला आए गा, कलमा नाम शरअ शरीअत हुक्मे अंदर वण्ड वण्डाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी सब दा दिसे आदि जुगादी इक्क मलाह, नईआ नौका आपणा नाम दो जहानां इक्क चलाईआ। जल्वागर नूरी नूर इलाही अलाह इक्क खुदा, धुर दा कान्हा मर्द मर्दाना दो जहानां सोभा पाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ला रिहा खुल्ला, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख प्रतख जोती धार नूर करे रुशनाईआ। सिफ्ती ढोले रसना जेहवा तन वजूद मानस मानुख सारे रहे गा, अन्तर दृष्टी सृष्टी इष्टी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हउँ वारी सदके घोली, धायल आपणा आप कराईआ। जिस दी तन वजूद लोकमात हंढा के आए चोली, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा रंग रंगाईआ। सो शाह सुल्तानां श्री भगवाना निरगुण धार शब्दी शब्द जणा के बोली, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। धर्म दवारा एकँकारा अगम्म अपारा विच संसारा रिहा खोल्ली, खुदी तकब्बर जगत माण हँकार विभचार डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म सच दुआर बणा के गोली, सेवक सेवा सेवादार इक्को इक्क दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर इकरार कौली, कँवल नाभी दो दोआबी अमृत जाम हकीकी रस बिन रसना जेहवा आप चखाईआ। मेल मिलाए हक महबूब मुहब्बत विच हुजरा हक महिराबी, महिताब आफ्ताब नूरे ज़र ज़ाहर ज़हूर करे इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल अटल कमलापाती बिन तेल बाती करे इक्क रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं दस्सीए की नज़ारा, बेनज़ीर नज़र रिहा बदलाईआ। सदी चौधवीं दिसे अन्त किनारा, नईआ नौका सब दी रिहा डुलाईआ। वाहिद कलमा दस्से परवरदिगारा, जल्वागर नूर खुदाईआ। एकँकारा हो उज्यारा, उजरत सब दी झोली पाईआ। भगत वछल बण गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर आपणा परदा दए उठाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म सति सतिवादी लाए विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी दर बैठे सीस झुकाईआ। देवत सुर करन निमस्कारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। शाहो भूप इक्क सिक्दारा, हुक्म देवे थाउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट माया ममता मोह विकारा, दुराचारी दर देवे दुरकाईआ। साची सिख्या चार वरन अठारां बरन एको नर नरायण देवे नर नारा, मरदो जन इक्को रंग रंगाईआ। जन भगतां पैज जाए संवारा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणा जाम नाम प्याईआ। सदा सुहेला साची दे के सच खुमारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगत वेखे हकीकी, हुक्म मन्नण

धुरदरगाहीआ। आत्म परमात्म ला के प्रीती, प्रीतम आपणा रहे मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल के रीती, नीती अगली लई प्रगटाईआ। करे खेल जगत स्वामी आप अनडीठी, अनडिठ्ड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखीए बिना अक्खां, आख़र अख़ीर ध्यान लगाईआ। भगवान भगतां सदा सखा, सख़ी सुल्तान धुरदरगाहीआ। देवे माण वड्याई विच्चों करोड़ी लखां, हरिजन साचे आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाला दीन दयाला देवे सच संदेसा, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित रहे हमेशा, एथे ओथे दो जहानां संग निभाईआ। जन भगतां मेल मिलाए बण के धुर दा नेता, नेत्र लोचन नैण अक्ख अंदरों दए खुल्हाईआ। घर बार वखाए गृह मन्दिर इक्क सच दुआर धुर दा देसा, दिशा दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जित्थे झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, शंकर सीस जगदीश झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे करदे इक्क आदेसा, नमों नमस्ते डण्डावत बिन सईयदे सीस झुकाईआ। सो साहिब सुल्ताना वाली दो जहानां जोती नूर महाना शब्दी धार तराना, तुरीआ तों परे करे पढ़ाईआ। धर्म भूमिका दस्स इक्क अस्थाना, लेख चुका के गोपी कान्हा, घनईया नईआ सईआ इक्को इक्क प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निशाना, सतिजुग साचा धर्म धर्म उपजाए विच जहाना, दीन इमाना इक्को इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल जोती धार शब्दी सतिगुर पहरया बाणा, बाण अणयाला आपणा नाम चलाईआ। जिस ने ज़िमीं असमान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सुर असुर बदल देणा ज़माना, ज़ामनी विच ज़ामन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी योद्धा सूरबीर बली बलवाना, बलधारी जोत निरँकारी निराकार निरवैर हुक्मे अंदर आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ करनैल सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख समरथ, समरथ स्वामी अन्तरजामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी महिमा सके ना कोई कथ, गीत गोबिन्द गहर गम्भीर बेनज़ीर शाह हकीर समझ कोए ना पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सतिजुग साचा मार्ग दस्स, दो जहाना मर्द मर्दाना एका कर पढ़ाईआ। निज नेत्र लोचन नैण निरँकार

निराकार खोल्ह अक्ख, प्रतख रूप शाहो भूप आपणा इक्क दरसाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म रहे कोई ना वक्ख, तन वजूद माटी हाटी सच कर सफ़ाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार विच संसार खेड़ा कर भठ्ठ, माया ममता मोह विकार हँकार गढ़ देणा तुड़ाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरे हुक्मे अंदर आए नठ, बण बण पाँधी फेरा पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर ठांडे दरबारे रहे दस्स, दहि दिशा खोज खुजाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले साडा रिहा कोई ना वस्स, वास्ता वाबस्ता हो के तेरे अग्गे पाईआ। तेरा हुक्म एकँकार एका चले सच्च, सच संदेसा नर नरेशा देणा दृढ़ाईआ। तेरी हकीकत वेखीए हक, हुक्म हाकम धुर दा देणा सुणाईआ। साचे धर्म दा धर्म आत्म हो के खोल्ह हट्ट, वणजारा वणज इक्क कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर लैण रट, रईयत वेख ख़लक खुदाईआ। साचा धीरज नाम दे सन्तोख जत, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती दे झट्ट, झटका हलाली नज़र कोए ना आईआ। दूई द्वैत शरअ शरीअत सदी चौधवीं मेट फट्ट, पट्टी नाम श्री भगवान इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे तेरे मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणी चाढ़ अगम्मी रंगण, जगत रंगण लोड़ रहे ना
८६८ राईआ। तेरे नाम डंके दुआर बंके घर घर शब्द अनादी वज्जण, सच संदेसा धुरदरगाही इक्को देणा सुणाईआ। सन्त सुहेले ८६८
२० भगत भगवान तैनूं सद्दण, सच दुआर एकँकार तेरा राह तकाईआ। तेरी सरनाई बेपरवाही नूर खुदाई जगत जिज्ञासू लग्गण, २०
जागरत जोत बिन वरन गोत, एका नूर देणा चमकाईआ। माया ममता मन मोह विकार तोड़ के हद्दन, हद्द हदूद कर महिदूद चरण कँवल उपर धवल बख्श इक्क सरनाईआ। सच नगारे नौ खण्ड पृथमी वज्जण, अनहद नादी आपणा राग सुणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर पड़दे आयों कज्जण, ओढण सीस जगदीश इक्को देणा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे धुर दी आस तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर नौजवान सूरे, सुर नर बैठे सीस निवाईआ। कौल इकरार भविख्तां वाले कर पूरे, लिख्तां विच्चों लेख दे बदलाईआ। पन्ध मुका कलयुग कूड़ी क्रिया नेड़ दूरे, दूर दुराडे आपणा फेरा पाईआ। नव नौ चार रहिण कोई ना झेड़े, झगड़ा दीन दुनी देणा चुकाईआ। जन भगतां वसा साचे खेड़े, खिड़की कुण्डा काया मन्दिर अंदर देणा खुल्हाईआ। निरगुण धार जोत निराकार निरवैर हो के मार फेरे, फिरत फिरत गुरमुख गुरसिख हरिजन आपणे खोज खुजाईआ। सन्त सुहेले आदि जुगादी तेरे चेरे, चेला गुर इक्को घर वसाईआ। पुरख अगम्म अथाह बेपरवाह जन भगतां बन्न्ह बेड़े, नईआ नौका नाम निधान

श्री भगवान इक्क वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म गीत जणा तेरे मेरे, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त हकीकत हक कर नबेड़े, झगड़ा अवर रहे ना राईआ।

★ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ जरनैल सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण होई अन्तर हैरानी, हरी हरि अचरज खेल रचाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त वेखीए कूड़ निशानी, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। मंज़ल रही ना किसे रुहानी, रूह बुत्त वज्जे ना कोए वधाईआ। माया ममता मोह विकार आई तुग्यानी, जूठ झूठ वहिण वहाईआ। धुर दा शब्द अगम्मी सुणे कोई ना बाणी, बावन धार परदा सके ना कोए उठाईआ। मन वासना ममता मोह जगत तृष्ना होई बेईमानी, बेवा दिसे ख़लक खुदाईआ। नाम निधाना तीर वज्जे कोई ना कानी, कायनात कलमा हक ना कोए सुणाईआ। सच संदेसा भुल्लया शाह सुल्तानी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सीस ना कोए झुकाईआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भुल्लया हरि हरि नाउँ, नर निरँकार मिलण कोए ना आईआ। ख़ाली फोकट दिसे सारे थाउँ, थनंतर अन्तर वज्जे ना कोए वधाईआ। झगड़ा वेख्या तन वजूद माटी कच्च ग्राउँ, मन मति बुध करे लड़ाईआ। सिर देवे ना कोए किसे ठंडी छाउँ, शहिनशाह शाह सुल्तानां नज़र किसे ना आईआ। दूई द्वैत मेटे कोई ना घाउ, धायल कीती कूड़ लोकाईआ। सदी चौधवीं पकड़े कोई ना बाहों, पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। भरमे भुल्ली सृष्टी दृष्टी अंदर राहों, मार्ग पन्ध समझ किसे ना आईआ। मन वासना हँस होई काउँ, काग वांग कुरलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा करे कोए ना हक न्याउँ, धुर संदेश ना कोए सुणाईआ। तेरा खेल प्रभू अगम्म अथाहो, अथवा भेव कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त जन भगत निउँ निउँ लागण पाउँ, पारब्रह्म प्रभ तेरी इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की हालत दस्सीए जग, जगह जगह पई दुहाईआ। गृह मन्दिर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। साची मंज़ल चढ़ के करे कोई ना हज्ज, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। मन वासना सारे रहे भज्ज, भजन बन्दगी कम्म किसे ना आईआ। साडी करनी हो गई रद्द, रईयत रही ना ख़लक खुदाईआ। शनवाई सनम सुणे कोई ना

नद, शादयाने शरअ शरीअत विच दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेख हद्द, हज़रत हज़ूर फेरा पाईआ। जन भगत सुहेले तेरी यद, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। बिरहु विछोड़े वैराग अंदर आत्म धार रहे सद्द, परमात्म पुनह पुनह सीस निवाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी प्रगट हो उपर शाह रग, रहमत आपणी आप कमाईआ। साचा मार्ग एकँकार एका दरस, दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाश्त होवे जगत लोकाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर आस, असल आपणा रूप दरसाईआ। तेरा नाउँ पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगत सुहेले तेरी जात, अज़ाती रूप ना कोए दृढ़ाईआ। लेखे ला पवण स्वास, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। झगड़ा मुके पृथ्मीं आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। सदा सुहेले वस पास, पासे विच आपणी करवट लै बदलाईआ। अन्त अख़ीर पत राख, रखक हो सच गोसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेले तेरी शाख़, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरा नूरे नज़र लहराईआ।

★ २२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ बलवन्त सिँघ दे गृह तलवण्डी जलेखां ज़िला फ़िरोज़पुर ★

८७०
२०

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ वेख कलयुग कल, काती कूड़ लोकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया सब नूं रही छल, अछल छल्ल तेरी याद किसे ना आईआ। सच दुआर नज़र ना आवे किसे महल अटल, महबूब मिल के मुहब्बत हक ना कोए कमाईआ। दूई द्वैत शरअ शरीअत रही सल्ल, तीर निराला लग्गा ख़लक खुदाईआ। नाम संदेसा नर नरेशा एकँकारा एका घल, दो जहान मर्द मर्दान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पारब्रह्म समरथ पुरख स्वामी, सति सच तेरी सरनाईआ। लख चुरासी जीव जंत आत्म अन्तर जाण जाणी, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। सृष्टी दृष्टी अंदर बोध अगाध भुल्ली तेरी बाणी, नाम निधान श्री भगवान शब्द अनाद धुन सुणे ना कोए शनवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान कर मेहरवानी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। कर प्रकाश निरगुण जोत जल्वागर नुरानी, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को रंग रंगाईआ। जन भगतां साचे सन्तां सच दवारा बख्श इक्को पद निरबाणी, निरवैर पुरख तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल मेट रैण अन्धेरी काली, कलमा कायनात इक्को दे समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण तेरी घाल घाली,

सेवक हो के दर ठांडे सेव कमाईआ। सदी चौधवीं सति सतिवादी ब्रह्मादी तेरी चाल निराली, अकल कलधारी समझ सच ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन फल रिहा ना किसे डाली, सिंमल रुक्ख जीव जंत रहे लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक्क वर, तेरे दर वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी दी पा सार, पारब्रह्म प्रभ तेरी इक्क सरनाईआ। तेरा लहिणा देणा सदा जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा राह तकाईआ। खाणी बाणी तेरी धार, हुक्मे अंदर हुक्म देणा सुणाईआ। सच संदेसा त्रेता द्वापर कलयुग देणा एका एकँकार, इक्क इकल्ला आपणा नाम देणा प्रगटाईआ। सतिजुग साचा जीउ पिण्ड तन काचा मार्ग दे वखाल, सोई सुरती अकाल मूर्त आपणी दे अंगड़ाईआ। तेरा लेखा अगम्म अपार, ना कोए जाणे विच संसार, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। सति स्वामी अन्तरजामी निरगुण नूर जोत कर उज्यार, शब्द अनादी नाद धुन आत्मक राग शनवाईआ। तेरे दर ठांडे विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर बणे भिखार, भिक्खक हो के आपणी झोली डाहीआ। सतिजुग साचा सच करे निमस्कार, नमो नमो सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता तोड़ गढ़ हँकार, जूठ झूठ लोकमात रहिण ना पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सांझा बख्श इक्क प्यार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुरदरगाही परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा धुर दा घर, जिस गृह वज्जे सच वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग मेट अन्त अन्धेरा, अन्ध आत्म कर रुशनाईआ। सच दवारे कर हक नबेड़ा, हकीकत आपणी दे समझाईआ। दीन मज़्हब दा रहे कोई ना झेड़ा, झगड़ा मिटे ख़लक खुदाईआ। चार वरन अठारां बरन एका रंग रंगा सञ्झ सवेरा, प्रकाश प्रकाश विच्चों कर रुशनाईआ। साहिब सतिगुर शब्द स्वामी बन्नू बेड़ा, नईआ नौका इक्को नाम चढ़ाईआ। जन भगतां भाग लगा साढे तिन्न हथ्थ काया माटी खेड़ा, परदा ओहला आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची एका रंग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी तेरे अग्गे अरदास, पुनह पुनह सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण जोत कर प्रकाश, शब्दी चन्द चन्द नूर चमकाईआ। तेरा राह तक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। साचे मण्डल पा रास, गोपी काहन आपणा नाउँ धराईआ। दीन दुनी झगड़ा मेट विच लोकमात, गोबिन्द शब्द डंका इक्क शनवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण सब नूं दस्स आपणी ज़ात, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। सच संदेसा नर नरेशा शब्द अगम्मी दे गाथ, रसना जेहवा ढोला बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां अन्त अख़ीरी पूरा कर भविक्ख्त वाक्, वाक्य वेख जगत लोकाईआ।

तन वजूद माटी ख़ाकी अन्तर रिहा कोई ना पाक, पतित हो के सारे देण दुहाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना मेटे अन्धेरी रात, कलयुग कूड़ी क्रिया कूड़ ना कोए गवाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग साची धर्म दवारयों दे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। तूं साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना कमलापात, पतिपरमेश्वर इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जीव जंत आत्म अन्तर निरंतर आपणा निरगुण धार जोड़ना नात, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ।

★ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ सुरैण सिँघ दे गृह निधां वाला ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरा इक्क सहारा, सईआ इक्को नज़री आईआ। जगजीवण दाते जगत दृष्टी दा वेख किनारा, सृष्टी आपणा परदा लाहीआ। असीं सेवक रहे वारो वारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। डण्डावत बन्दना करदे रहे निमस्कारा, सजदयां विच सीस जगदीस निवाईआ। काग़ज़ कलम शाही बणदे रहे लिखारा, कातब हो के कुतबख़ाने दिते भराईआ। नित नवित बोलदे रहे तेरा नाम जैकारा, जुग चौकड़ी सोहले ढोले राग नाद सुणाईआ। दीन मज़्हब दा वणज करदे रहे विच संसारा, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। दर ठांडा वेख तेरा दरबारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह मंगी इक्क सरनाईआ। कलयुग अन्त अखीर बेनज़ीर दे सहारा, सहायक नायक आपणा फेरा पाईआ। सृष्टी रूप ना रहे दो धारा, निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। धरनी धरत धवल धौल खोल्ह इक्क दवारा, दुराचार कर सफ़ाईआ। तेरा नाउँ भगत वछल गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर तेरी बेनज़ीर नज़र नज़र किसे ना आईआ। आदि अन्त तेरा जोती शब्दी धार इक्क अवतारा, अवतरी सारे सीस निवाईआ। नाम खण्डा शब्दी शब्द खड़ग कटारा, कटाकश आपणा दे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हउँ सेवक बालक धुर दे बरदे, बदली विच अदली सीस निवाईआ। लोकमात मार झात खेल वेख आपणे घर दे, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप परदा ओहला आप उठाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म खोल्ह अगम्मी पड़दे, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। जल थल महीअल समुंद सागर टिल्ले पर्बत सन्त सुहेले वेख चढ़दे, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा फेरा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म भगत भगवान ढोले तेरे पढ़दे, गीत संगीत त्रैगुण अतीत धुर दे मीत वेख वखाईआ। जोती जोत

८७२
२०

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे वज्जदी रहे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख आपणा कलमा नाम, (नाम) निधान इक्को मंग मंगाईआ। तेरा दस्सदे रहे पैग़ाम, संदेसा नाम शब्द दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं तेरी करे ना कोई पहचान, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। माया ममता शास्त्र सिमरत वेद पुराण, कलयुग कूड़ी क्रिया कीते ग़ुलाम, बन्दीख़ाने विच्चों बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। मंज़ल हकीकी लाशरीक तेरा पीवे कोई ना जाम, निजर झिरना बूँद स्वांती कँवल नाभी मुख ना कोए खुल्हाईआ। निरगुण जोत बिन वरन गोत नज़र ना आवे अर्शी फ़र्शी तेरा भान, रवि ससि सूर्या चन्द नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं सारे होए हैरान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे काया माटी चाम, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए बदनाम, बदी नेकी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान धुर दा दे इक्क फ़रमान, फ़ुरने कूड़े बन्द कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गीत राग अनादी सारे गाण, विस्मादी हो के बिस्मिल आपणा आप कराईआ। जन भगत सुहेले सच स्वामी वेख आण, अनक कलधारी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी दे एको दान, एकँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ।

★ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ हरी सिँघ दे गृह बस्ती ख़लील ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण सृष्टी दृष्टी होई अन्धी, अन्तर आत्म नूर नुराना नूर ना कोए चमकाईआ। सदी चौधवीं लिख्त भविख्त साडी पूरी होई संधी, साख्यात कायनात परवरदिगार सांझा यार रिहा कराईआ। दीन मज़्हब उत्ते रही ना कोई पाबन्दी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। आत्म परमात्म टुट्टी डोर जावे कोई ना गंढी, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी खेल वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भार उठाए कोए ना कंधी, शौह दरया बेड़ा नईआ नौका पार ना कोए कराईआ। जीव जंत काया माटी पुराणा चीथड़ तन वजूद दिसे अंगी, अंगीकार हरि निरँकार अंग ना कोए लगाईआ। नाम निधान विच जहान वजाए ना कोए मृदंगी, मधुर धुन अगम्मी राग ना कोए सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा पवण दिसे कोई ना ठंडी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सृष्टी दृष्टी धार मन वासना होई बहु रंगी, बुध बिबेक पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जगत वासना ख़ाहिश होई कुरंगी, कागद कलम शाही परदा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर कहिण की वेख्या खेल फ़र्शी, फ़रिश्ते सारे देण दुहाईआ। हुक्म देवे एकँकारा इक्को अर्शी, दो जहानां धुर दी बाणी अणयाला तीर चलाईआ। धार प्रगट होवे एका एकँकार नर दी, नौजवाना मर्द मर्दाना आपणा वेस वटाईआ। करे खेल अगम्म अपार अछल अछल्ल दी, बेअन्त बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान खेल वेखे जल थल दी, महीअल आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी किसे समझ ना आई घड़ी पल दी, पलक अंदर ख़लक ख़ालक सृष्ट सबाई दए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म सुणीए इक्क जगदीश, जगदीशर दए वड्याईआ। लेखा चुक्के बीस बीस, बिसवा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा मुक्के दीन दुनी हदीस, हज़रत बैठे सीस झुकाईआ। छत्र झुल्ले इक्को सीस, शाह पातशाह डंका नाम जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहान गावण गीत, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे हक वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे आप अनडीठ, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। जन भगतां सतिजुग साची दस्स के रीत, पतित पुनीत लए बणाईआ। लेखा मुका के हस्त कीट, ऊँचां नीचां एका घर वसाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर दो जहानां करे आप तफ़तीश, हुक्मे अंदर हुक्म फोल फुलाईआ। साचे नाम दी दे तबलीक, चौदां तबकां करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी आसा मनसा पूरी होवे उम्मीद, खुशामद विच सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दस्स इक्क प्रीत, प्रीतम होके आपणा रंग रंगाईआ।

★ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ सुलखण सिँघ दे गृह रुकना मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर दे मालक, पारब्रह्म पति परमेश्वर परवरदिगार तेरी सरनाईआ। दीन दुनी दे मालक ख़ालक प्रितपालक, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरा ध्यान लगाईआ। निरगुण सरगुण निरवैर निराकार निरँकार बण सालस, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा फेरा पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों निंद्रा लाह कूड़ी आलस, माया ममता मोह विकार दे मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान दे ख़ालस, ख़ाकसार ख़ादम आदम आपणे लै बणाईआ। लख चुरासी जीव जंत सरगुण रूप तेरा बालक, पिता पूत भगवन्त कन्त आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर एकँकार इक्को आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी बख्श साची टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। आत्म परमात्म धार कर एक, एकँकार आपणा रंग वखाईआ।

लोकमात सुहा सुहञ्जणा देस, दिशा आपणी वण्ड वण्डाईआ। दो जहानां बण नर नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। लेखे ला मूंड मुंडाए धारी केस, दस दस्मेस आपणा फेरा पाईआ। साहिब सुल्तान आदि जुगादि तेरा हुक्म चले एक, इक्क इकल्ले दे वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी होवे भेंट, भटकना अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा तक्कीए इक्क सहारा, सईआ साहिब सुल्तान इक्को नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर पार किनारा, नईआ नौका आपणे नाम चढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सति सतिवादी तेरा होवे इक्क जैकारा, ब्रह्म ब्रह्मादी ब्रह्म परदा दे चुकाईआ। निर्मल दीआ कमलापाती कर उज्यारा, नूर नुराना कर रुशनाईआ। भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच दे के आए तेरा इशारा, सृष्टी विच शरअ शरीअत दे बदलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म कर इक्क प्यारा, धुरदरगाही आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां मंज़ल चढ़ के जोती नूर दे चमत्कारा, अन्ध अन्धेरा अंदरों दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख प्रभ मीतन मीत, मित्र प्यारे तेरी इक्क सरनाईआ। सतिजुग साची दस्स अगम्मी रीत, रहिबर हो के आपणा राह वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को गावण तेरा गीत, ढोला कलमा दे दृढ़ाईआ। लख चुरासी काया माटी कर ठांडी सीत, कलयुग अग्नी अग्ग बुझाईआ। पतितां पापियां कर पतित पुनीत, पावन हो सहाईआ। तेरा नाउँ जगत जगदीश, जगदीशर देणी माण वड्याईआ। एको छत्र झुल्ले तेरे सीस, छत्रधारी निउँ निउँ लागण पाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँचां नीचां पैंडा देणा मुकाईआ। रहमत विच सहिमत हो के आपणा नाम कर बख्शीश, बख्शणहारे नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर धुर दरबार दरगाह साची दर दरवेश हो के मंग मंगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार मंगो दुआर एक, पैगम्बरां नाल मिलाईआ। सच दुआर दी मिले टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ छुहाईआ। नज़ारा तक्को सचखण्ड धुर दे देस, दिशा आपणी वण्ड वण्डाईआ। जिस घर रहिणा सदा हमेश, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। कलम शाही बणे कोई ना लेख, अक्खरां सिफ्त ना कोए सालाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के भेत, परदा दयां उठाईआ। सच प्रीती करना हेत, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो एका एक करो अरदास, आदि अन्त वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, हरि करता वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण वेखी रास, गोपी काहन जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत सब दे वसां

पास, गृह मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। किसे हथ्थ ना आवां उत्तों कैलाश, पर्बत चोटीआं रोवण मारन धाहींआ। सदी चौधवीं सारे वेखो हालात, दीन दुनी फोल फुलाईआ। की झगड़ा प्या मात, मतलब पिछला दयो दृढ़ाईआ। लोचण वेखो वाक्यात, वाकिफ़कार करां ख़लक खुदाईआ। निरगुण हो के देवां साथ, सगला संग बणाईआ। की कलमा दे के आए गाथ, अलिफ़ ये वण्ड वण्डाईआ। की बख्श के आए आबेहयात, हयाती दीन दुनी बदलाईआ। की लिख के आए किताब, तीस बत्तीसा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो लेखा पूरब माज़ी, मजलस सब नूं दयां जणाईआ। की झगड़ा मुल्ला काज़ी, कज़ा सब दे सिर ते छाईआ। साचा सुत बणे कोए ना नादी, नाद धुन ना कोए उपजाईआ। शरअ विच होए सारे राज़ी, दग़ा तुहाडे नाल कमाईआ। सदी चौधवीं क्यों बणे इमदादी, आमद विच खुशामद विच सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं आपणी हारदी वेखो बाज़ी, बाज़ीगर स्वांगी आपणा स्वांग वटाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार हँकार रहिण नहीं देणा ग़ाज़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्तर वेखो बातल, बैतल धाम नज़र कोए ना आईआ। शरअ छुरी बणी शरीअत वाली कातिल, मक्तूल समझ कोए ना पाईआ। परवरदिगार समझे कोई ना जातन, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। कायनात कलमा दिसे कोई ना साथन, सगला संग ना कोए निभाईआ। रूह बुत्त रिहा ना पाकी पाकन, पतित हो के देण दुहाईआ। सब दा लेखा लग्गा पाटन, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। पैगम्बर कहिण साडे परवरदिगार खुदा, खुदी तेरी झोली पाईआ। हउँ बरदे होए फ़िदा, ख़ादम हो के सीस झुकाईआ। निरगुण धार ना हो जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जुग चौकड़ी खेल करना तेरी अदा, आदत विच इबादत दे बदलाईआ। तेरा खेल महबूब मेहरवां, मुहब्बत विच बैठे सीस झुकाईआ। साडी रही ना बांग अज़ां, अज़ीम आलीशान तेरी इक्क सरनाईआ। तूं चश्मे नूर नूरे रवां, नज़ीरे नज़ां नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा इक्क वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पैगम्बर कहिण साडा सजदा इक्क कलाम, कलमे दे मालक तेरी सरनाईआ। आप वेख आपणा अवाम, अमलां खोज खुजाईआ। तुआरफ़ विच सफ़ारश विच इबारत विच देंदे रहे पैग़ाम, अक्खरां नाल वड्याईआ। सदी चौधवीं विगड़दा जाए नज़ाम, नौबत हक ना कोए वजाईआ। तेरे दर दा दिसे ना कोए ग़ुलाम, बाग़ी होई ख़लक खुदाईआ। हकीकी पीए कोई ना जाम, हयाती विच्चों हयाती बदल सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची सच दुआर तेरा झुल्ले इक्क निशान, निशाने सारे दे बदलाईआ। पैगम्बर कहिण तेरा हुक्म इक्क तसलीम, तसबी माला तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं मालक धुर कदीम, कुदरत दा करता आप अख्वाईआ। तेरा मार्ग सदा महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सानूं तेरे उत्ते यकीन, यके बाद दीग़रे सारे देण गवाहीआ। असीं सिफ्तां विच करीए आफ़रीन, आफ्ताब तों परे तेरी रुशनाईआ। तेरी निराली निराकार तालीम, तुलबे धुरदे दे पढ़ाईआ। झगड़ा मुका नर मदीन, मदीने दे मालक काअबा दोआबा दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पैगम्बर कहिण पीरां दे पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरी सार कोए ना पाईआ। धुरदरबारी दस्तगीर, दस्त बरदार कर लोकाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, हकीकी कलमा दे समझाईआ। मनुआ मन ना रहे शरीर, शिरक्त अंदरों दे गवाईआ। हुक्म नाल बदल तकदीर, तकवा आपणा इक्क समझाईआ। बन्धन रहे ना कोए ज़ंजीर, कुफ़ल सब दे तोड़ तुड़ाईआ। तूं मालक गहर गम्भीर, गवर तेरी सरनाईआ। तेरा नाउँ बेनज़ीर, नज़र आपणी लै बदलाईआ। बिना फ़िकरयों बणा फ़कीर, फ़ाकाकशी दे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगण इक्क रंगाईआ। पैगम्बर कहिण कदमबोसी सलाम, दुआ दाऊद विच सरनाईआ। धुर दे मालक इक्क अमाम, इबनुलवक्त तेरी वड्याईआ। हज़रते नशीं तेरा पैग़ाम, कशते कदार तेरी सरनाईआ। दहिशते दो जहान, दहिज़ीन दमे दम दमादे रज़ीं नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मेहर मुहब्बत आपणी इक्क प्रगटाईआ। पैगम्बर कहिण तेरे कदम कदमबोसी, बस्ता बग़ल ना कोए उठाईआ। हक हकीकत वाली बख्श ख़ामोशी, असलीअत आपणी इक्क दृढ़ाईआ। उम्मत होई दोषी, दरोही तेरा नाम ख़ुदाईआ। मंजल रही कोई ना सौखी, चौदां तबक रोवण मारन धाईंआ। चढ़या कोई ना अगम्मी चोटी, परदा सक्या ना कोए उठाईआ। मन वासना होई खोटी, खटका दिसे अंदर लोकाईआ। परवरदिगार बिन तेरी किरपा दुरमति मैल ना जाए धोती, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। अल्ला हू अन्ना हू तेरी रमज़ किसे ना सोची, वाहिद लाशरीक शिरक्त सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, पिछली धार सच दुआर खेल वेखे लोक परलोकी, सलोकी सोहला इक्क समझाईआ।

★ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ गुरदेव कौर दे गृह गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारे रहे झुक, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार तेरे सुत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरी सेव कमाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर मेहरवान महबूब हो के तुठ, मिहबान बीदो आपणी दया कमाईआ। परदा ओहला अन्तर बाहर निरंतर रहे कोई ना लुक, निरवैर निराकार निरँकार भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। दो जहान श्री भगवान लोक परलोक वेख दुःख, दीन दुनी दयाल ठाकर स्वामी तेरा राह तकाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गहर गम्भीर आपणी गोदी चुक्क, आत्म परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सच दुआर एकँकार धुर दी धार किसे दे कोल रही ना कुछ, कच्छ मच्छ बैठे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दे फ़ानी होए काया माटी भाण्डे बुत्त, बुत्तखाने बेवा हो के रहे कुरलाईआ। तेरा खेल जोत अकाला दीन दयाला अदभुत, भूत भविख परदा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर दी बख्श अगम्मी दाद, दाते दानी तेरी इक्क सरनाईआ। दर दरवेश मंगण इक्क इमदाद, आमद विच आपणी कर रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। साचा कलमा बख्श कायनात, नाउँ निरँकारा इक्क समझाईआ। काया माटी अंदर कर जोत प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जन भगतां पूरी कर मनसा विच्चों आस, आहिस्ता आहिस्ता परदा दे उठाईआ। तूं दाता दानी गहर गम्भीर सर्ब गुणतास, गुणवन्ता इक्क अख्वाईआ। साचे मण्डल वखा बिन गोपी काहन रास, सुरती शब्दी आपणा नाच नचाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सद वसे तेरे पास, पासा करवट आपणा लै बदलाईआ। तेरा तक्कीए खेल तमाश, ख़ालक ख़लक मख़लूक परदा दे उठाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत खेल वेख विच प्रभास, समुंद सागर डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। तेरा राह तक्कण कोटन कोटि पृथ्मी आकाश, अकल कलधारी तेरा भेव किसे ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म तेरी ज़ात, अज़ाती लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सच हकीकत दे हक, हकूक आपणा इक्क समझाईआ। हर घट अंदर उपजे ब्रह्म मत, मनमति लेखा देणा मुकाईआ। नाड़ बहत्तर उबले कोई ना रत्त, रतन अमोलक काया गोलक देणा टिकाईआ। जन भगतां जाण मित गत, घर ठांडे परदा आप चुकाईआ। अमृत आत्म निजर झिरना बूँद स्वांती दे रस, नाभी कँवल नैण आप उलटाईआ। एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना बण कमलापति, पतिपरमेश्वर आपे हो सहाईआ।

चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी संदेश्यां वाले सुणदे रहे तेरे ख़त, ख़तो खताबत विच कातब कलमयां वाला लेखा गए जणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सब दी हदूद मेट हद्द, हदीस आपणी इक्क समझाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म चले तेरी यद, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार खेल वखा सूरे सरबग, शाह पातशाह शहिनशाह शाही कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ।

★ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल देवे अगम्मी भजन, नाद धुन शब्द अगम्म अथाह शनवाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पुरख अकाला एकँकारा बण के सज्जण, परवरदिगार सांझा यार बिन अलिफ़ ये करे पढ़ाईआ। बिन काया तत सरीर वजूद निराकार चाढ़ के आपणी रंगण, रंग रंगीला अनडिठ्ठड़ी आपणी कार कमाईआ। दर दरवेश विष्न ब्रह्मा शिव महेष भिखारी मंगण, सीस जगदीश कलमे बिन झुकाईआ। लेखा जाणे शहिनशाह शाह पातशाह सूरा सरबंगन, आदि निरँजण आदि अनादी आपणी कार कमाईआ। भेव अभेदा खोल्ह ब्रह्मण्ड खण्ड ब्रहिमण्डन, वण्डण वण्ड आप आपणी आपणे विच छुपाईआ। सच दवारे ठांडे दरबार दरगाह साची लावे अंगण, अंगीकार एकँकार एका इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरी एका ओट, ओड़क आपणा परदा दे उठाईआ। तेरा प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते पुरख बिधाते तेरी आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रुशनाईआ। दीन दयाल तेरी कर ना सके कोई सोच, समझ विच समझ दए दुहाईआ। कलयुग अन्त कन्त भगवन्त दीन दुनी कर खोज, खाणी बाणी आपणा परदा दे उठाईआ। बिन तेरी किरपा मिले किसे ना धुर दी मौज, मजलस भगतां आपणी दे समझाईआ। झगड़ा रहे ना लोक परलोक, धुर सलोक इक्को इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर दर दरवेश दर ठांडे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तूं दाता बेपरवाह, सद बेपरवाही विच समाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दे लगा, लग मातर समझ कोए ना पाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा दे इक्क अलाह, अल्ला वाहिगुरू तेरी ओट तकाईआ। वाहिद जुमला बिन अक्खरां तों दे पढ़ा, निरअक्खर तेरी करे शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शहादतां विच तेरे गवाह, भगवन भगवन वेला वक्त दे सुहाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दुआर उच्च महल अटल मनार दरगाह साची इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दरगाह साची दे साचे मालक, माया ममता मोह दे मिटाईआ। सृष्टी दृष्टी दे वड ख़ालक, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरी सरनाईआ। निर्धन सरधन करें प्रितपालक, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया निंद्रा मेट आलस, अर्श फर्श वज्जे तेरी वधाईआ। हरि सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण मीत मुरारे कर ख़ालस, आत्म जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म तेरा नन्हा बालक, बलधारी आपणा मेला लैणा कराईआ। सदी चौधवीं दिसे कोई ना सालस, साल बसाला सारे रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम कलमे दी सुणीए इक्क इबादत, आबरू अम्बरां दए बणाईआ।

★ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ खेम सिँघ दे गृह कोट कपूरा ★

८८० गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल धुर दे कमलापाती, पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार तेरी बेपरवाहीआ। ८८०
२० निरगुण निरवैर निराकार निरँकार निरगुण जोत तेरी प्रकाशी, शब्दी नाद अनादी इक्क उपजाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी २०
नित नवित निरगुण सरगुण बणदा रिहों साथी, महासार्थी हो के आपणी कार कमाईआ। नाम संदेसा नर नरेशा निरअक्खर देंदा रिहों धुर दी पाती, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी धरत धवल धौल धर्म दुआर तेरी मन्नदे रहे आखी, सीस जगदीश शाह हकीर बेनज़ीर इक्को इक्क झुकाईआ। साची मंजल चढ़ के अगम्मी अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी घाटी, धुर दरबारा धाम न्यारा एकँकारा इक्को इक्क सुहाईआ। नव नौ चार मिटदी जाए चार जुग दी वाटी, मार्ग पन्ध आपणे लेखे लैणा लाईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान साख्याती, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन दुनी मेट अन्धेरी राती, निरगुण नूरी चन्द जोत जोत कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी कर आसी, माया ममता मोह विकार जगत हँकार दे मिटाईआ। तेरा खेल आदि जुगादी, जुग चौकड़ी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त कोटां विच्चों थोड़ी दिसे भगतां दी आबादी, सन्त सुहेला बिन तेरी किरपा नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी झगड़ा रहे ना कोए शरअ शरीअत मुल्ला काज़ी, रज़ा विच कज़ा सब नूं दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर

कहिण वड दाते बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी अंदर भुल्ली तेरा राह, रहमत हक ना कोए कमाईआ। असीं निरगुण सरगुण बणे सर्ब गवाह, हक अदालत वेख वखाईआ। बिन कलम शाही दईए बिआं, धुर दा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। सति धर्म रिहा कोई ना थाँ, थान थनंतर रोवण मारन धाहींआ। मानव खा खा थक्के सूर गाँ, गावत गा तेरा शुकर ना कोए मनाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर पकड़े कोई ना बांह, धुर दा संगी संग ना कोए रखाईआ। कलयुग जीवां हँस बुद्धी होई काँ, काग वांग कुरलाईआ। नाता तुट्टा पुत्रां माँ, पिता पूत गोद ना कोए सुहाईआ। तेरा खेल वेख्या शहिनशाह वाली दो जहां, जहालत नाल भरी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण धुर दे पारब्रह्म भगवन्त, भगवन तेरी ओट तकाईआ। साचा नाता तुट्टा धुर दे कन्त, नर नारी सुहागी रूप ना कोए वखाईआ। मंज़ल हकीकी चढ़या दिसे कोई ना सन्त, लाशरीकी रूप ना कोए बदलाईआ। झगड़ा वेख्या दीन दुनी जीव जंत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म पढ़े कोई ना मंत, अन्तर निरंतर पारब्रह्म ब्रह्म परदा सके ना कोए उठाईआ। साडे अन्तर हैरानी वाली आई चिन्त, परेशानी विच परवरदिगार दिता सुणाईआ। सदी चौधवीं दर दरवेश हो के करीए मिन्नत, आरज़ू अरज़ इक्क दृढ़ाईआ। धुर दे मालक ख़ालक प्रितपालक साडी रही कोई ना हिम्मत, हमसाजन हो के दईए जणाईआ। तेरी दुनिया तेरी होई निन्दक, धुर दा ढोला गीत ना कोए अल़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम चार कुण्ट दहि दिशा वेख आपणी सिम्मत, समां आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं तेरे चार जुग दे मुखत्यार, मुखतारनामे तेरे अग्गे टिकाईआ। जिस दा करदे आए इंतज़ार, नित नवित अक्ख उठाईआ। सो वेखीए सांझा यार, कुदरत दा मालक नूर इलाहीआ। हुक्म संदेसा देवे आपणी धार, शब्दी डंका इक्क शनवाईआ। शाह सुल्तानां राउ रंकां करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। सच दुआर एकँकार खोल्ह़े आप किवाड़, परदा ओहला बण विचोला अंदरों दए चुकाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, तन वजूद हक महबूब एका नूर कर रुशनाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ दए उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा लेखा कागद कलम शाही ना लिखणहार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण नूर जोत करे उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्तिम बेड़ा करे पार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर करे पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहानां नौजवाना श्री भगवाना मर्द मर्दाना दे के एका नाम जैकार, हकीकत वाला कलमा हक सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन

धरनी धरत धवल धौल खोल्ह इक्क किवाड़, दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच इक्को घर वखाईआ। सन्त सुहेला भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा आपणा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी साची कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख आपणा खेल तमाशा, तमअ जगत रही ना राईआ। निरगुण धार करवट विच बदल लै पासा, आप आपणी लै अंगड़ाईआ। जुग चौकड़ी तेरा लिखदे आए खुलासा, सिफ्तां विच ढोले सुणाईआ। साचे मण्डल पा रासा, बिन गोपी काहन नाच देणा नचाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहान होवे तेरी गाथा, ढोला सोहला इक्को राग उपजाईआ। चार वरन अठारां बरन निरगुण जोत बिन वरन गोत तेरा सिमरन करन पूजा पाठा, पाठशाला काया बंक दुआर देणा वखाईआ। नज़री आवे साख्याता तेरा नूर अलाही काअबा, हुजरा हक हक महबूब देणा प्रगटाईआ। सद वज्जदा रहे तेरे नाम दा इक्को नादा, अनहद नादी नाद देणा सुणाईआ। सब नूं आपणे विच रखणा विस्मादा, बिस्मिल हो के आपणा खेल प्रगटाईआ। तेरा भेव अभेव बोध अगाधा, अगाध बोध आपणा लेखा देणा समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे समाजा, साहिब सुल्तान मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप वड राजन राजा, राज जोग जुगती जगत भगत आपणी दे समझाईआ।

★ २८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ हरचन्द सिँघ दे गृह हरराए पुर ज़िला बठिंडा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण गहर गम्भीर बेनज़ीर प्रभू गुणवन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी वड सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरी महिमा सदा अगणत, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार समझ किसे ना आईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी जोती जाते अगम्मी धार आदि अनादी कन्त, भगत भगवन भगवान तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण हुक्मे अंदर तेरा गाउँदे आए मंत, सृष्टी दृष्टी तेरी धार प्रगटाईआ। नित नवित तेरा राह तक्कदे रहे तेरे अगम्मी सन्त, गुरमुख गुरसिख हरिजन निज नेतर लोचन नैण अक्ख उठाईआ। दे वड्याई पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सर्ब स्वामी अन्तरजामी विच जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत निरगुण निराकार कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दवारे तेरा तेरे राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मेहरवान प्रभू कर मेहरवानी, मजलस आपणी दे दृढ़ाईआ। साची मंज़ल दे आसानी, असल विच वसल यार आपणा इक्क कराईआ।

सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स फानी, थिर नज़र कोए ना आईआ। सर्ब जीआं घट वेखणहारे जाण जाणी, परदा ओहला अन्तर निरंतर दे चुकाईआ। जगत जिज्ञासूआं रहे ना कोए परेशानी, परम पुरख परमात्म आत्म मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरा खेल जोत नुरानी, नूरो नूर ज़हूर ज़ाहर आपणा इक्क कराईआ।

★ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ जसवंत सिँघ दे गृह पिण्ड राजेआणा ज़िला फ़िरोज़पुर ★

आदि जुगादी हरि संगत नाता, आत्म परमात्म खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण बख्शे दाता, दाता दानी बेपरवाहीआ। तत वजूद वेखे खेल तमाशा, नार कन्त सोभा पाईआ। मात पित भाई बणन सज्जण साका, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। वेखणहारा आप तमाशा, पारब्रह्म नूर खुदाईआ। सब दा बण के राखा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग आप रंगाईआ। हरि संगत आदि जुगादी इक्क मिलाप, तन वजूद दए वड्याईआ। पुरख अकाल माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। ना कोई पुन्न ना कोई पाप, पतित पुनीत दए वड्याईआ। तन वजूद जो माटी ख़ाक, थिर नज़र कोए ना आईआ। जुग जन्म दी जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण पूरी करदा आवे आस, जिस नूं समझे कोई ना राईआ। एह खेल अगम्म तमाश, पारब्रह्म ब्रह्म वेता आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप उपजाईआ। हरि संगत सतिगुर एका रंग, सतिगुर एका रंग समाईआ। एका सेज इक्क पलँघ, एका जोड़ जुड़ाईआ। एका प्रेम इक्क अनन्द, एका सुख वखाईआ। जुग जुग जन्म कर्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेलणहारा विच ब्रह्मण्ड, अछल छल आपणा रूप बदलाईआ। हरि संगत नाता अगम्म अथाह, जगत बुद्धी समझे कोए ना राईआ। जिस ने जुग चौकड़ी चलाए राह, भगत सन्त जुगत जगत लए अपनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उपजा, तन वजूद खेल खिलाईआ। नारी कन्त रूप बणा, नाता पंज तत जुड़ाईआ। सब दा लहिणा देणा वेखे थाउँ थाँ, देवणहार वड वड्याईआ। रामा कृष्ना गया ध्या, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सब दे बख्शणहार गुनाह, गुणां दा मालक इक्क अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे नूरी अलाह खुदा, खुद मालक धुरदरगाहीआ। जिस विच जीव जंत सारे जाण समा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। करनी दा करता लहिणा देणा देवे थाउँ थाँ, पूरब लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आपणे रंग आपणे विच्चों प्रगटाईआ। संगत नाल नाता उह, ओड़क जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जुग जन्म दा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा जाणे मोह, मुहब्बत खोजे थाउँ थाँईंआ। आपणी धार धरनी धरत धवल उपर कर के सो, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। तन वजूद माटी ख़ाक अन्तरजामी हो के जावे छोह, शहिनशाह शाह पातशाह पूरब लेखा नानक गोबिन्द रंग रंगाईआ। जिस नूं जीव जंत जगत जिज्ञासू कोई समझ ना सके धरोह, धू दा परदा दिता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट बख्शणहारा लो, प्रकाश विच्चों प्रकाश लए प्रगटाईआ। हरि संगत नाता किसे दी समझ ना आए विच दलील, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। हरि संगत सतिगुर कदे ना होए ज़लील, ज़िलत खुआरी आपणी झोली पाईआ। जिस दी दरगाह साची करे अपील, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। जिस ने वस्त्र पहने नील, सो खेल करे ख़ालक ख़लक ख़लील, ख़ादम वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। हरि संगत नाता दीन दुनी तों बाहर, बहुरूपी आपणी खेल खिलाइंदा। लहिणा देणा गुप्त ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर वेस वटाइंदा। जिस दा लेखा ओसे दी धार, धरनी धरत धवल उपर सोभा पाइंदा। जिस दी याद पिच्छे रही जुग चार, चारजा आरजा ख़ारजा ख़ालस आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

८८४ आपणी किरपा कर, हरि संगत वखावे इक्क घर, जिस घर विच नारी पुरुष वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। हुक्मे अंदर पूरन ८८४

२० पूत, पिता पूत वड्याईआ। हुक्मे अंदर दिशा कूट, सेवक सेव लगाईआ। हुक्मे अंदर तन वजूद, भाण्डा जगत वखाईआ। २०

हुक्मे अंदर पंज भूत, भज्जे वाहो दाहीआ। हुक्मे अंदर चुक्के चूक, लेखा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पूरन सिँघ की तत विचारा, तत सार ना राईआ। करे खेल अगम्म अपारा, जिस दे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा देणा सदा जुग चारा, जुग जुग सेव कमाईआ। चार दिन दा शरीर वणजारा, थिर नज़र कोए ना आईआ। शब्दी धार धुर जैकारा, पुरख अकाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर रिहा भवाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म भगवान, हरि करता आप दृढ़ाइंदा। लेखा लहिणा देणा विच जहान, दो जहानां वाली भेव खुलाइंदा। धुर संदेसा देवे आण, सदीआं दा परदा लाहइंदा। तत वजूद बाल अंञाण, समझ ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर सर्ब भवाइंदा। पूरन सिँघ जगत नाँ, तत ख़ाकी माटी नज़री आईआ। जिस ने सदा रहिणा ना, समां जगत जाए विहाईआ। पुरख अकाल सब दा पिता माँ, गोदी बच्चे रिहा उठाईआ। जिस दा गुरमुखो तुसीं सारे निशां, ओस पारब्रह्म दी सारे सरन तकाईआ। जो भुल्लयां भुल्ल दए

बख्शा, बख्शणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जोती धार वड वड्याईआ।

★ ३० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ मंगल सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू अरज़ोई, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी तेरे नाम दी दिती दरोही, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्त गुरमुख सन्त दिसे कोई कोई, कोटन कोटी खोज खोजाईआ। धरनी धरत धवल धौल नेत्र नैणां रही रोई, हन्झूआं अक्खीआं हार बणाईआ। अमृत धार रस स्वांती बूँद किसे ना चोई, चार वरन अठारां बरन अग्ग ना कोए बुझाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आपणी पत बैठी खोई, ख़ालक मालक प्रितपालक तेरी मंगे ना कोए सरनाईआ। तन वजूद कायनात दुनिया अन्तर टोही, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख्या लख चुरासी काया मन्दिर, बंक दवारे फोल फुलाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी कंदर, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया बैठी अंदर, घर साचे डेरा लाईआ। बजर कपाटी कोई ना तोड़े जंदर, परदा सके ना कोए उठाईआ। काया काअबा होया खण्डर, साचा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। प्रकाश दिसे ना सूर्या चन्द्र, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। घट मिले ना परमानंदन, निजानंद ना कोए समाईआ। तेरी चरण धूढ़ी मस्तक लाए कोई ना चन्दन, धुर दा टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे अग्गे इक्को बन्दन, बन्दगी दे मालक सच दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त टुट्टी आ गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण लख चुरासी वेख्या काया काअबा तत, तत्व नज़र कोए ना आईआ। सब नूं भुल्ली पारब्रह्म तेरी ब्रह्म मत, मन मति करे लड़ाईआ। किरपा कर महबूब पुरख समरथ, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगतां सन्तां निज नेत्र खोल्ह अक्ख, परदा अन्तर निरंतर दे उठाईआ। साख्यात प्रगट हो प्रतख, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा मेला लैणा मिलाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी देणा धुर दा रस, रस्ता मार्ग इक्को देणा वखाईआ। सच दवारा बख्शणा हकीकत हक, दूजा राह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण

आपणा बख्श इक्क दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। दीन दुनी कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। तेरा डंका वज्जे अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे नाम होवे वड्याईआ। साचा मंत्र कर जैकार, अन्तर निरंतर परदा लाहीआ। खुदी ग़फ्लत रहे ना विच संसार, असमत लुट्टे ना कोए लोकाईआ। सर्ब जीआं दा बण के सांझा यार, याद अगली दे कराईआ। काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर उज्यार, दीपक जोती जगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दे मालक बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण अन्तर आत्म दे दे आपणा रस, सुख सागर विच समाईआ। भगत भगवान कर ला वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे गावण जस, वेद पुराणां लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण धार निराकार निरँकार हो प्रगट, हर घट अन्तर आपणा परदा देणा चुकाईआ। तेरा जोत प्रकाश नूर होवे लट लट, लाटां वाली निउँ निउँ लागे पाईंआ। तूं सर्ब कला समरथ, वड दाता नूर खुदाईआ। सब दी झोली पा हकीकत वाला हक, असलीअत असल विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहानां सब किछ तेरे वस्स, वास्ता वाबस्ता हो के आपणे नाल जुड़ाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ कर्म सिँघ दे गृह पखोवाल ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ ने लेखा चुकाउणा पूरब माज़ी, मज़्हब दीन एका आपणा रंग रंगाईआ। शरअ छुरी चलाउण वाला जगत रहे कोए ना काज़ी, कादर कुदरत आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। धरनी धरत धवल धौल मलकीअत रहे ना किसे दी अराज़ी, मनसूख सब नूं आप कराईआ। मन हँकारी चार कुण्ट दहि दिशां रहे ना ग़ाज़ी, ग़ज़ब आपणा नाम प्रगटाईआ। जगत वणज करे ना कोई हाजी, हाजत सब दी खोज खुजाईआ। जिस ने आदि मध जगत खेल साजणा साजी, लख चुरासी वण्ड वण्डाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना शब्द अगम्मी चढ़ के ताजी, हाजर वेखे ख़लक खुदाईआ। नाम संदेसा देवणहारा धुर इक्क अनादी, नाद धुन आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो हुक्म वरते इक्क निरँकार, वर्तमान वारता दए बदलाईआ। फ़ुरने फ़रमांबरदार बणाए धुर फ़रमान, मन चंचल रहिण कोए ना पाईआ। साचा मन्दिर दस्स अगम्म मकान, मक्का काअबा पन्ध मुकाईआ। सच संदेसा दे के नाम निधान, सोई सुरती सर्ब जगाईआ। एका मन्नो दृष्ट इष्ट दा काहन, वशिष्ट

राम जिस नूं सीस झुकाईआ। आत्म परमात्म गृहस्त होवे प्रधान, नाता नार कन्त जुड़ाईआ। मंज़ल तक्को हकीकी आण, परदा ओहला अन्तर उठाईआ। सच संदेसा गावो एका गान, ढोला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो अगला सुणना इक्क संदेसा, संध्या नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी करदे आए आदेसा, सीस जगदीस सजदयां विच झुकाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक मन्नदे रहे हमेशा, हमसाजन बण के धुर दा संग निभाईआ। सो अन्तरजामी पुरख बिधाता कर के आपणा वेसा, रूप अनूपा रिहा प्रगटाईआ। लहिणा देणा चुकाए गोबिन्द दस दस्मेसा, दहि दिशा परदा आप उठाईआ। चार वरन अठारां बरन मार्ग दस्स के एका, एकँकार रिहा मिलाईआ। जन भगतां दस्स के धुर दी टेका, टकयां दी कीमत रिहा गवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सच दुआर दी भेंटा, भजन बन्दगी एसे विच समाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बण के धुर दा खेवट खेटा, पार किनारा विच संसारा एकँकारा आप कराईआ। जन भगत बणा के निरगुण धार साचा बेटा, पिता पूत गोद उठाईआ। जुग चौकड़ी पूरब जन्म अजन्म दा पूरा कर के लेखा, कर्म कांड दा पैंडा रिहा मुकाईआ। अन्तिम लै के जावे सचखण्ड साचे देसा, जिस गृह मन्दिर अंदर एको वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर विष्नूं भगवान, एका बण के धुर दा नेता, नित नवित कर कर हित भगतन आपणे रंग रंगाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ सरदारा सिँघ गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

गुर पैगम्बर सुणो अवतार, हरि अवतारी आप दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, संसारी भण्डारी जुग जुग सेव कमाईआ। शंकर हुक्मे अंदर करदा रिहा सँघार, सेवक हो के आपणी सेव लगाईआ। निरगुण निरवैर निराकार खेल करदा रिहा करतार, कुदरत दा कादर ख़लक दा ख़ालक फ़लक उपर आपणा हुक्म वरताईआ। नाम संदेसे देंदा रिहा वारो वार, वारस हो के आपणा हुक्म चलाईआ। सरगुण धार सब दी सुणदा रिहा पुकार, घट भीतर अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। काग़ज़ कलम शाही नाल कराउँदा आया इज़हार, ज़ाहर ज़हूर आपणी कल वरताईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब नूं करे ख़बरदार, बेख़बरां आप उठाईआ। सृष्टी दृष्टी खोल्ही बन्द किवाड़, इष्ट इक्को इक्क समझाईआ। जिस नूं करदे आए निमस्कार, सजदयां विच सीस झुकाईआ। कलमयां विच सुणदे आए गुफ़तार, गुफ़त शनीद दर्शन कर नूर इलाहीआ।

अन्त ओसे दी आ गई वार, वारता पिछली दए भुलाईआ। भगत सुहेला बण के एका एकँकार, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो धुर दा हुक्म इक्क हज़ूरी, हज़रतां रिहा समझाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीरां अग्गे चढ़ना पए किसे ना सूली, सुल्हकुल आपणा रंग दए रंगाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आत्म प्रीतम धार नालों रही भुल्ली, जुग जन्म दी विछड़ी आपणे नाल मिलाईआ। भाग लगाए काया काअबे धर्म दुआर साढे तिन्न हथ्थ बंक दुआर कुल्ली, वजूद महबूब आपणा भेव खुल्हाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती मुख चुआए बिना बुल्लीं, अनरस रस आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर एकँकार इक्को इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पारब्रह्म दी तकणी धार, धरनी धरत धवल तों परे रिहा समझाईआ। जिस नूं समझे ना कोए विच संसार, संसारी भण्डारी बैठे सीस निवाईआ। जिस दे रहे ख़िदमतगार ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सो हुक्म हाकम देवे अगम्म अपार, अलख अलखणा आपणी अलख जगाईआ। जिस नूं कागद कलम ना लिखणहार, कातब मिले ना किसे वड्याईआ। जो संदेसा नर नरेशा दे के आए वारो वार, कलमयां विच कायनात दृढ़ाईआ। तिस दा लहिणा देणा अन्त कन्त भगवन्त दए निवार, भगवान आपणा हुक्म आप वरताईआ। उठो वेखो सृष्टी दृष्टी करो विचार, विचरण दी लोड़ रहे ना राईआ। भरमे भरम भुल्ला जीव गवार, गवाह शहादत तुहाडी इक्क भुगताईआ। जिस दा करदे रहे इंतज़ार, इंतज़ामां दा मालक वेखो धुरदरगाहीआ। सब दा लहिणा देणा पूरब कर्म दा कर्ज़ा दए उतार, अगला लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुरदरगाही सच्ची सरकार, सति सच सच सति सति सच काया माटी कच्च आपणा हुक्म वरताईआ।

८८८ २०

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ साधू सिंघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बरो हुक्म चल्ले राजन राज, भूपत भूप दया कमाईआ। धुर संदेसा मारे इक्क आवाज़, अज़ां बांग दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म बणा के धुर समाज, समग्री नाम भण्डारा झोली पाईआ। नईया नौका चला के आपणा धुर दा इक्क जहाज़, भगत सुहेले संग रखाईआ। सतिजुग अन्तर सति धर्म दा चले इक्क रिवाज, क्रिया कूड़ ना कोए चतुराईआ। नाम निधाना भेव अभेदा खोल्हे बोध अगाध, बुद्धी तों परे सर्ब पढ़ाईआ। तुहाडा लेखा पिछला करावे याद,

याददाशत आपणे नाल बणाईआ। परदयां विच्चों खोल्ह के आपणा राज़, राज़क रहीम दए समझाईआ। कलमिआ वाली छड्डो निमाज़, सजदयां वाला जगत सीस झुकाईआ। मालक तक्को इक्क नवाब, जो नौबत हक वजाईआ। जो देवणहार सर्ब इमदाद, इमदादी बेपरवाहीआ। उजड़े खेड़े करे आबाद, गुलशन गुल आप महकाईआ। साचा सजदा दस्से आदाब, आहला अदना एको रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो पारब्रह्म दी गद्दी, गोदी सब नूं रिहा टिकाईआ। दीन दुनी जिस दे हुक्मे अंदर बद्धी, बन्धनां दा लेखा रिहा मुकाईआ। जिस दा राह तक्के चौधवीं सदी, सदीआं दी भुल्ली अक्ख उठाईआ। दोवें हथ्थ दस्त जोड़ के बद्धी, बन्दना विच सीस निवाईआ। तेरे हुक्म दी मन्न के इक्क पाबन्दी, पाउं छूह के खुशी बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगत तेरे सन्बंधी, मेरे उत्ते सोभा पाईआ। जगत सृष्टी नेत्र अन्धी, अन्ध अज्ञान ना कोए गवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ढहिंदी वेखां कंधी, कंधे भार ना कोए टिकाईआ। सतिजुग सच दर सच दी वेखां डण्डी, डण्डावत इक्को नज़री आईआ। मन वासना कूड़ रहे ना गंदी, मन्दिर काया बंक देणा सुहाईआ। जित्थे लोड़ रहे ना चन्द नवचन्दी, निरगुण नूर तेरा रुशनाईआ। दुतीआ धार जाए ना वण्डी, वरभण्डी ना कोए लड़ाईआ। ममता मोह ना दिसे पाखण्डी, कपट कूड़ ना कोए चतुराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरा ढोला गीत इक्को होवे छन्दी, शहिनशाह शाह सुल्तान राउ रंक मिल के गाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंगी, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी होई संधी, सनद तेरे अग्गे सारे रहे टिकाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ सरवन सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा वेला रिहा गुज़र, गुज़ारश करो अग्गे धुरदरगाहीआ। तुहाडा रहे कोई ना उज़र, हुक्म मन्नो शहिनशाहीआ। जिस ने भावना रहिण नहीं देणी दुत्तर, दुतीआ भाउ मिटाईआ। निरगुण धार अगम्मी उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जन भगत सुहेले बणा के आपणे पुत्तर, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। तुसां वेख के करना शुकर, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। लुक्कया रहे ना कोई किसे नुक्कर, कोना कोना फोल फोलाईआ। झगड़ा मेट दुनी दा दुक्खड़, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। गुरमुखां कर के उजल मुक्खड़, मुफ्त आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो खेल अगम्मा इक, एकँकार दृढ़ाईआ।

जिस दा लेख भविख्त आए लिख, नाता जगत नाल बंधाईआ। सो सब दी मनसा आसा पूरी करे इच्छ, इच्छया सब दी खोज खोजाईआ। जन भगतां जगजीवण दाता आए दिस, दूजी दिशा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धर्म दुआर दा बण के पित, पिता पूत गोद उठाईआ। सद दर्शन देवे नित, निज नैण करे रुशनाईआ। हरि सन्त सुहेले बणा के आपणे सिख, सिख्या धुर दी इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे हथ्थ रखे उपर पिठ, मेहर नज़र आप उठाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ भगवान कौर दे गृह पिण्ड पखोवाल ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बरो सुणयो हुक्म धुर अकाला, अकल कलधारी एकँकारी आप जणाईआ। नाम संदेसा देवे धुर निराला, निराकार निरवैर आपणा आप प्रगटाईआ। दीन दुनी मार्ग दस्से सुखाला, सुख आत्म परमात्म नाल जुड़ाईआ। चार जुग दी बदल देवे चाला, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म वरताईआ। सच दवारा खोल्हे एका एक धर्मसाला, चार वरन मिले वड्याईआ। सृष्ट सबाई बण के आप दलाला, धर्म वणजारा इक्क अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अन्तर आत्म पावे माला, मन का मणका आप भवाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला गोद उठाए आपणा बाला, बचपन आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सरन सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सुणना नाम अथाह, अथवा अर्थ जिसदा चार युग ना किसे समझाईआ। जो अन्धे पावे राह, सुत्तयां जगत उठाईआ। जलवा नूर दस्स खुदा, खुद मालक दए मिलाईआ। सिरजणहार सच्चा पातशाह, शहिनशाह वड वड्याईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी सारे रहे ध्या, बिन सीस सीस निवाईआ। सो वेखे हर घट थाँ, लख चुरासी खोज खोजाईआ। जन भगतां दे के आपणा नाँ, नाम निधाना इक्क समझाईआ। फड़ के हँस बणा के काँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। करे प्यार ज्यों पुत्रां माँ, पिता पूत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्तिम करे हक न्याँ, अदल अदालत आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल जिला लुधियाणा ★

गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ खेल वेख्यो अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। किस बिध मेटे तृष्ना तम, तामस सांतक रूप

बदलाईआ। भाग लगावे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। चिन्ता सोग मुका के ग़म, खुशी आपणा रंग चढ़ाईआ। निहकर्मी हो के करे आपणा कम्म, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। मेल कराए आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म वड वड्याईआ। चार वरन सांझा दस्स के धर्म, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। जित्थे परख ना होवे काया माटी चर्म, आत्म वज्जे वधाईआ। जन भगतां लेखे लग्गे मानस जरम, जन्म आपणी झोली पाईआ। सो आपणा करे खेल पिता पुरख परम, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेख्यो हुक्म अटल, अटल पदवी इक्क वखाईआ। संदेसा देवां जल थल, महीअल आप दृढ़ाईआ। पड़दे लाहवां जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिले पर्बत झल, झलक आपणी इक्क वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां कल, कालख टिक्का दुरमति मैल धवाईआ। दूई द्वैत का मेट के सल, सलल आपणा रंग चढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर धार के बल, बल बावन लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेख्यो धुर दी इक्क अदालत, अदली अदल इन्साफ़ कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढ्ढे अलामत, कूड़ अमलां तों रहत करे लोकाईआ। साची दस्से इक्क इबादत, नाम डंका धुर शनवाईआ। जन भगतां दे के शब्द ज़मानत, जगत जहानों लए छुडाईआ। धर्म दुआर दी बणा अमानत, घर साचे लए टिकाईआ। करे खेल अनपछाणत, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी तुसी कहिंदे रहे सही सलामत, सो साहिब स्वामी आपणी कल वरताईआ। मन वासना रहिण ना देवे बग़ावत, बग़लगीर सब नूं दए बणाईआ। सति धर्म दी सच बणा बनावट, बावन अक्खरी भेव चुकाईआ। तुहाडी पूरी कर थकावट, आपणे विच समाईआ। साचा ढोला गीत दस्से आप गावत, गा गा दए समझाईआ। मेहरवान हो के करे सख़ावत, सुख़न आपणा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सच दवारे देवे मेहर मुहब्बत दी इक्क दावत, दाअवे नाल आपणा नाम चखाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ पिण्ड मुंडीआं ★

गुर अवतार पैगम्बरो अगला खेल वेखणा भगवन्त, श्री भगवान आप कराईआ। जिस दा लहिणा आदि अन्त, जुगा जुगन्त हुक्म वरताईआ। सो सन्त सुहेले आप उठावे धुर दा कन्त, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म परदा दए उठाईआ। क्षत्री

ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन बणा के धर्म दी संगत, दीनां मज़्बां डेरा ढाहीआ। निरगुण धार बोध अगाधा बण के पंडत, साची सिख्या इक्क समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर के अन्त, सतिजुग साचा राह वखाईआ। धर्म दुआर बणा बणत, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो खेल हरि करतार, हरि करता आप वरताईआ। जिस दी महिमा करदे आए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सिफ्तां विच सालाहीआ। शब्द संदेसे लिखदे आए वारो वार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ढोले गीत सुणाईआ। निरगुण सरगुण बणदे आए ख़िदमतगार, सेवक हो के धुर दी सेव कमाईआ। नाम संदेसे देंदे आए वारो वार, जगत अक्खरां विच वड्याईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण जोत करे उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता वड वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर साची सिख्या दए सिख़ाल, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच परदा आप उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नाता जोड़ के काया धर्म सच्ची धर्मसाल, बन्द किवाड़ी परदा ओहला दए चुकाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता तोड़णहारा कूड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स सुखाल, साह साह आपणा नाम समाईआ। जिस दी अक्खरां विच करदे रहे भाल, सिफ्तां विच ढोले गीत सुणाईआ। सो साहिब सुल्तान नौजवान खेल करे कमाल, काल महाकाल हुक्मे अंदर सर्ब भवाईआ। जन भगत सुहेले वेख के आपणे लाल, लख चुरासी विच्चों आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा एकँकारा इक्को घर वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणना हुक्म एकँकार, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे धर्म जैकार, कूड़ मलेछी बुध मुकाईआ। सच निशाना दो जहानां देवे चाढ़, चार कुण्ट डंका नाम वजाईआ। जन भगत सुहेले गुरू गुर चेले करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी दीपक जोत करे रुशनाईआ। भाग लगाए मन्दिर अंदर काया डूंघी गार, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा वेस वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सांझा दस्स के इक्क प्यार, ऊँच नीच राउ रंक लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सांझा होए जैकार, सोहँ ढोला शब्द विचोला मौला आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सति सतिवादी सति धर्म दा लहिणा देणा देवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी निउं निउं सीस निवाईआ।

★ ३१ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ३ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड घड़ूआं ★

गुर अवतार पैगम्बर एका एक करो जैकार, जै जैकार विच समाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार करो निमस्कार, सीस जगदीस आप झुकाईआ। सच दवारे बण के ख़िदमतगार, सेवादार धुर दी सेव कमाईआ। धुर दा शब्द वड बलकार, गोबिन्द योद्धा रूप बदलाईआ। हुक्म देवे अगम्म अपार, परवरदिगार धुरदरगाहीआ। जिस नूं मेटे ना कोई विच संसार, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा डंक दए वजाईआ। धरनी धरत धवल धौल दए अधार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, ख़ाली झोली सर्ब भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो गाओ अगम्मी गीत, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सच दवारे वसो सदा अतीत, त्रैभवन धनी रिहा समझाईआ। झगड़ा छड्डो मन्दिर मसीत, मस्त ख़ुमारी नाम रखाईआ। पिछला लेखा पिच्छे गया बीत, अग्गे वज्जे सच वधाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ला आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर नाम गाओ आदि निरँजण, आदी अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी दए समझाईआ। खेले खेल दीना नाथ दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर वेखे जगत लोकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां सच दवारे देवे आदर, आदर्श आपणा इक्क वखाईआ। करनी दा करता कुदरत दा कादर, मुहब्बत दा महबूब फ़लक ख़लक करे रुशनाईआ। जिस दा हुक्म हुक्मां विच्चों होणा सादर, सिदक सबूरी इक्क दृढ़ाईआ। शब्दी गोबिन्द प्रगट कर के योद्धा सूरबीर बहादर, नाम खण्डा तेज़ प्रचण्डा विच ब्रह्मण्डां वरभण्डां आप चमकाईआ। दीन दुनी दा निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल जो अठ्ठसठ्ठ रही फैल तीर्थ तटां काया हट्टां करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गावो नाम प्रभ भगवन्त, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जिस दा आदि जुगादि एका मंत, मंतव सब दे हल्ल कराईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी भगत उधारे आपणे सन्त, सूफ़ी सफ़रां विच्चों बाहर कढाहीआ।महिमा दस्स के बोध अगाध इक्क अगणत, परदा ओहला अंदरों दए चुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिला के नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आदि निरँजणी इक्को इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी सच दुआर एको एक वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर नाम गाओ श्री भगवान, भगवन रिहा दृढ़ाईआ। जिस दा झुलदा आदि जुगादि निशान, जुग चौकड़ी

रिहा वखाईआ। गुर अवतारो मन्नणी पए सब नूं आण, आनन फ़ानन सब दे लेखे दए मुकाईआ। शब्दी हुक्म देवे सतिगुर अगम्म फ़रमान, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। साचा दस्स के धर्म ईमान, इष्ट देव इक्को इक्क दृढ़ाईआ। धुर दा हुक्म देवे हुक्मरान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त निरगुण धार जोत निरँकार प्रगट हो विच जहान, पूरब लहिणा लेखा सब दा पूरा करे आण, जीव जंत जगत जुगत बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल सृष्टी दृष्टी अंदर आप महान, महिमा अकथ पुरख समरथ बोध अगाध अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी इक्क जणाईआ।

★ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड घड़ूआं ★

अस्सू कहे मैं आदि जुगादि आसावंद, ख़ाहिश आपणे विच रखाईआ। शब्दी हुक्म हो पाबन्द, बन्दगी विच आपणा सीस झुकाईआ। जुक चौकड़ी गए लँघ, काल बिताए अगम्म अथाहीआ। सदा सदा सद मंगदा रिहा मंग, निव निव सीस झुकाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। तेरा खेल अगम्मा वेखां विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणया रहे संग, नाता धुर दा इक्क जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। अस्सू कहे मैं आसावन्त, असल वसल वेखां यार खुदाईआ। मेला होवे धुर भगवन्त, जिस भगवन नूं भगवत रही गाईआ। नेत्र लोचण राह तकाउँदे सन्त, सज्जण खोजण थाउँ थाँईंआ। सो आपणा खेल करे अगणत, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। धर्म दुआर दा दे के एका मंत, मंत्र फ़ुरने आपणे विच समाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, धर्म धार धुर दी करे पढ़ाईआ। सच प्रीती बख्शे जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे अन्त, अन्तश्करन सब दी करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। अस्सू कहे मैं वेखां अजब नज़ारा, दीन दुनी तों बाहर तकाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। परदा लाह के सचखण्ड सच्चे दरबारा, दरगाह साची हुक्म वरताईआ। बिना सीस जगदीस झुकदे गुर अवतारा, पैगम्बर सजदयां विच सर चरण कँवल टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लावण इक्को नाअरा, हक हकीकत विच समाईआ। ठांडे दर करन पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा खेल परवरदिगारा, जुग चौकड़ी समझ कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसारा, साहिब सुल्तान श्री भगवान तेरी तक्की इक्क सरनाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट

दहि दिशा होया धुआँधारा, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। नेत्र रोवण जगत जीव बुद्धिवान गवारा, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा परदा दे उठाईआ। बिन तेरी किरपा धर्म दुआर मिले ना किसे अधारा, उदर होए ना कोए सहाईआ। कागद कलम लिख लिख शाही थक्की तेरा विसथारा, विषयां विच दृढ़ाईआ। तेरा जलवा नूरी करे ना कोए उज्यारा, अज़ीम आलीशान हक मुकाम दर दुआर ना कोए वखाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच हो मेहरवान, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। सन्त सुहेले कर परवान, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। तेरा धर्म झुल्ले निशान, कूड़ कुकर्म दे मिटाईआ। आत्म परमात्म बण काहन, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। मेरी आसा मनसा राह तेरा तक्के वाली दो जहान, निरगुण सरगुण आपणा खेल देणा वखाईआ। अस्सू कहे तेरा लेखा जुग चौकड़ी पिच्छो मैं सुणाउणा जीव जहान, शब्द संदेसे विच प्रगटाईआ। भविक्खतां वाला लिख्तां वाला इष्टां वाला दृष्टां वाला सृष्टी उत्ते सृष्ट वक्त पहुंचया आण, वार थित बिन घड़ी पल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा धुर दा घर, गृह मन्दिर अंदर सति स्वामी अन्तरजामी तेरा नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान एका डंका राउ रंका जीव जंत साध सन्त दीन दुनी जगत सुणाईआ।

८६५ २०

★ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

री गुरमुख सखीओ प्रभ आया वेखो जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सईओ पैंडा मुकाओ भज्ज भज्ज, भजन बन्दगी दा लेखा रिहा चुकाईआ। सच दवारे बहो सज, सज्जण मिले धुरदरगाहीआ। घर महबूब कराए हज्ज, हुजरा इक्को इक्क सुहाईआ। नाम निधान वजा के नद, नग़मा धुर दा दए प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढ, ममता मोह दए मुकाईआ। धुर संदेसा सुणा के छद, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जगत विकारा कर के बध्ध, बन्दगी इक्को इक्क रखाईआ। दीन दुनी नालों कर अलग्ग, धाम सुहञ्जणा आदि निरँजणा करे इक्क रुशनाईआ। जिस दा डंका राउ रंकां अंदर जाणा वज्ज, वजह समझ किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। री गुरमुख सखी उठ वेख अगम्मी काहन, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा झुल्ले धर्म निशान, दो जहानां आप प्रगटाईआ। बिना अक्खरां तों दे के ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए चुकाईआ। मंज़ल अगम्म देवे महान, महिमा अकथ कथ समझाईआ। सच संदेसा देवे एका आण, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए कल्याण, सिफ्तां विच सालाहीआ। सो प्रगट हो के विच जहान, जहालत रिहा गवाईआ। नाम अगम्मा दे के दान, दाता हो के दया कमाईआ। उठ संदेसा

सुण इक्क फ़रमान, सुत्ती लै अंगड़ाईआ। मालक वेख नौजवान, मर्द मर्दाना फेरी पाईआ। एथे ओथे हाणी हाण, बिरध बाल ना रूप वखाईआ। सचखण्ड दुआर तैनूं करे प्रधान, घर ठांडे दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। री गुरमुख सखी वेख प्रभू प्रभ ठाकर, हरि करता वड वड्याईआ। जो बणया योद्धा सूरबीर बहादर, बलधारी नूर खुदाईआ। जिस नूं कहिंदे करीम कादर, कुदरत दा मालक इक्क अख्वाईआ। सो बेड़ा पार करे समुंद सागर, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। भगत सहेले बणा के आजज़, अज़ीज़ आपणी गोद उठाईआ। मनुआ करे कोई ना साज़श, शरअ दा लेखा रिहा तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग दए रंगाईआ। री सखी उठ वेख स्वामी धुर दा, धुर लेखा दए समझाईआ। जिस दा साथी वासी अनन्द पुर दा, पुरीआं दा परदा रिहा चुकाईआ। जिस दा रूप सच्चे सतिगुर दा, नूर निरगुण जोत रुशनाईआ। आपणी करनी करनों कदे ना मुड़दा, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंत्र आया फुरदा, हुक्म संदेसे धुर सुणाईआ। उह खेल करे आपणी लोड़ दा, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। कमलीए कोझीए जुग जन्म दे विछड़यां नूं जोड़दा, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। साथ देवे अगला तोड़ दा, टुट्टी गंढु वखाईआ। जिस दा खेल जुग जुग होर दा, नवां नकोर रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वखाईआ। री सखी गुरमुख उठ वेख साजण मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। सुघड़ सुचज्जी बण के गा गीत, आपणी खुशी प्रगटाईआ। तेरा झगड़ा छुडा दए मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्क वड्याईआ। तेरी ज़ात रहे ना नीच, ऊँचो ऊँच आप वखाईआ। धुर दी बख्श चरण प्रीत, प्रीतम हो के मिले चाँईं चाँईंआ। पिछला लेखा सब दा गया बीत, अग्गे बातन करे आप रुशनाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए उडीक, सो मालक ख़ालक प्रितपालक वेस वटाईआ। जिस ने बदल देणी सर्ब तवारीख, रेखा आपणी इक्क वखाईआ, सो अन्त कन्त भगवन्त सब दी करन आया तस्दीक, निरगुण हो के पन्ध मुकाईआ। कमलीए बिरहु विछोड़े विच मार लै चीक, चिक्कड़ गारे विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको घर दए वखाईआ। री सखी गुरमुख आपणा लाह परदा, परवरदिगार आप जणाईआ। खेल वेख आपणे घर दा, घर घर विच वज्जे वधाईआ। राह दस्से तेरे दर दा, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। जित्थे दीपक जोत जगदा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ओथे भांबड़ नहीं कोई अग्ग दा, अग्नी तेज प्रचण्ड ना कोए चमकाईआ। वसेरा रहे कदे ना अड्ड दा, दूजा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। धुर दा मालक हरि भगत सवाणी कदे ना छड्डदा, नाता जगत ना कोए तुड़ाईआ।

अंगीकार हो के जिस दे नाल लगदा, आत्म परमात्म विच समाईआ। पूरब लहिणा देणा देवे हकीकत हक दा, हुक्म सुणाए धुरदरगाहीआ। बिन अक्खां तों सदा रहे तक्कदा, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। गवारने कदी भुल्लीं ना एस वेस कीता जट्ट दा, जटा जूट सारे दिते भुलाईआ। एह मालक अगम्मे हट्ट दा, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर झोलीआं डाहीआ। लै भण्डारा धुर दे सति दा, सति सतिवादी आप वरताईआ। नाता तोड़ दे कूड़ी रत्त दा, रतन अमोलक आप बणाईआ। मार्ग इक्को इक्क दस्सदा, दर्दी हो के दर्द वण्डाईआ। आदि जुगादि भुक्खा सच प्रेम जस्स दा, वेद पुराण देण दुहाईआ। जो इशारा समझे ओस दी अक्ख दा, आख़र आपणे घर टिकाईआ। जित्थे अक्खरां वाला नाम कोई नहीं रटदा, धुर दी धार धार प्रगटाईआ। दस्से खेल पुरख समरथ दा, समरथ स्वामी आपणी कार वरताईआ। जन भगतां कोलों कदे ना नस्सदा, करवट लै ना मुख बदलाईआ। सद नाता जोड़े यक दा, परम पुरख धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। री सखी गुरमुख वेख महीना आया अस्सू, असल वसल यार कराईआ। अग्गे एहदे बिना मार्ग कोई ना दस्सू, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। कलयुग खेल वेख लै नट्ठू, नटुआ स्वांग वरताईआ। बिना पुरख अकाल दुरमति मैल कोए ना कटू, कट्टे वच्छे खाण वाले सारे लैण सज़ाईआ। कूड़ी क्रिया निरगुण धार एकँकार जगत जहान जड़ पट्टू, पटने वाला नाल मिल के आपणा रंग वखाईआ। गुरमुख गोद उठाए आप बणा के बच्चू, बचपन आपणे नाल रखाईआ। आपणी करनी करनों कदे ना हटू, हरि करता वड्ड वड्याईआ। गुरमुखो पिच्छा दे कदे ना नठू, सदा सर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। री सखी गुरमुख वेख आया अस्सू महीना, महिमा अकथ कथ वड्याईआ। जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग भीना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। गुरमुखां ठांडा करे सीना, अन्तर अन्तश्करन दए बदलाईआ। जिन्हां ने शब्द अगम्मी इक्को चीना, चिन्ता ग़मां तों बाहर रखाईआ। सच दवारे कर अधीना, अदने आहला रिहा तराईआ। जिस दा राह तक्कदे आए कदीमा, कुदरत दा मालक फेरा पाईआ। जिस नूं कहिंदे या मुबीना, नाअरा हक हक सुणाईआ। उस दे उत्ते रखो यकीना, यके बाद दीगरे सब दी करे सफ़ाईआ। जिस दा झगड़ा नहीं नर मदीना, आत्म परमात्म धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। बख्शिश विच होवे ना कदे कमीना, रहमत विच रहीम दए मिलाईआ। अर्श दा मालक खेल करे फर्श उत्ते ज़मीना, ज़ामनी आपणी नाल रखाईआ। जन भगत बणा के धुर नगीना, नग़म्यां दा खहिड़ा दए मुकाईआ। जगत समाज दी करन आया तरमीमा, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। जगत जहान दिसे ग़मगीना, खुशीआं रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी कार आप कमाईआ। री सखी गुरमुख उठ नेत्र खोल्ह अक्ख, अक्खरां तों परे दयां दृढ़ाईआ। धुर दा मालक महबूब प्रतख, पतबरता हो के सेव कमाईआ। चरण चरणोदक इक्क अमृत रस चख, बिन रसना जेहवा स्वाद दए समझाईआ। खुशीआं अंदर खुशख़बरी सुण के हस्स, हस्सती वेख धुरदरगाहीआ। जिस दे कदमां उत्ते इक्क वार जाईए ढठ्ठ, मुड़ के ढहण दी लोड़ रहे ना राईआ। सारे पार करा दए तीर्थ तट, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। मेहरवान हो के किरपा करे झट, झटके हलाली वाला नज़र कोए ना आईआ। ओस कोलों लाहा लईए खट्ट, जो खटके रिहा गवाईआ। जिधर वेखो वसे घट घट, गृह गृह निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस मार्ग धर्म लगाउणा सच्च, सच सुच इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार सरनाईआ। री सखी गुरमुख धुर दी धार सहेली, अंक सुहेलड़ीए दयां जणाईआ। वेख साहिब स्वामी अलबेलड़ा बेली, बालक बिरधां रिहा तराईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर बण गए चेली, चिल्ले तीर कमानां कंधिआं उत्ते दिते टिकाईआ। उस ने धार अगम्मी अचरज लोकमात कर खेली, ख़ालक ख़लक आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां रिहा मेली, चिरी विछुंने जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को दए वड्याईआ। री सखी गुरमुख ना बण कोझी कमली, कमलापति दए सरनाईआ। जिस कारण
८६८ तेरी धार जम्म लई, जम्मण मरन विच्चों बाहर कढाहीआ। जे जीणा ते ओसे दे दम लई, दूजी आस ना कोए तकाईआ। ८६८
२० जे मिलणा प्रेम दे कम्म लई, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा २०
रिहा चुकाईआ। री सखी गुरमुख तूं वेख अगम्मी मालक, दाता धुरदरगाहीआ। जिस ने लाहुणा निंद्रा आलस, झगड़ा देणा मुकाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स के ख़ालस, धुर दा रंग रंगाईआ। ममता मोह रहे ना लालस, लाल गुलाला रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया मस्तक साफ़ करे कालख, कल्गी वाला दए वड्याईआ। पुरख अकाल बण प्रितपालक, पालणहार गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को इक्क सुहाईआ। री सखी गुरमुख अस्सू वेख अस्व अस्वार, शाह शहाना नज़री आईआ। जो जुग जुग भगतां पैज रिहा स्वार, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सो निरगुण जोत करे उज्यार, उजरत मूल ना लावे राईआ। जो प्रेम नाल इक्क वार कर जाए नमस्कार, निउं निउं सीस निवाईआ। उस दा बेड़ा कर दए पार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच मिलाईआ। दर आयां कदे दर ना देवे दुरकार, दुरमति मैल दए धवाईआ। उठ के वेख सची सरकार, हरि करता नूर इलाहीआ। ठांडे दर बण ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। चरण कँवल जा बलिहार, बलिहारी आपणा सतिगुरू इक्क मनाईआ। जन्म लैणा पए ना दूजी वार, तत्तां नाल ना कोए कुड़माईआ। महल

अटल वेख उच्च मनार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस नूं कहिंदे सचखण्ड दवार, मुकामे हक वड्याईआ। एका नूर जोत होवे उज्यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला गुरमुख सखी तेरा सदा करे इंतज़ार, दर घर बैठा राह तकाईआ। कलयुग अन्त करे प्यार, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के सच जैकार, नाता ल्या जुड़ाईआ। एह खेल अगम्म अपार, अग्गे समझे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे चिन्न्ह दस्से आसार, असल दा असल असल आपणा आप प्रगटाईआ।

★ २ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

पुरख अकाल आदि जुगादी एका काहन, घनईया दा मालक नज़री आईआ। जिस दा अथाह अगम्म अस्थान, भूमिका समझ कोए ना पाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण हो के सरगुण देंदा रहे दान, दाता दानी दया कमाईआ। हुक्मे अंदर शब्द संदेसा देवे आण, अनक कलधारी आपणा फेरा पाईआ। साचा मार्ग पन्ध कर प्रधान, राह इक्को इक्क वखाईआ। आत्म ब्रह्म दे ज्ञान, आत्म परमात्म जोड़ी लए जुड़ाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, निशाना आपणा नाम वखाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, इस्म आज़म इक्क प्रगटाईआ। लहिणा देवे जीव जहान, जोबनवन्ता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आपणा इक्क चढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी धुर दा राम, रमता रमता खेल खिलाईआ। सचखण्ड निवासी बण के बिन तत्तां वाला शाम, शमां जीव जगत जगाईआ। संदेश्यां विच दे के इक्क पैग़ाम, नर नरेश हुक्म वरताईआ। जन भगतां बख्श हकीकी जाम, ज़ामन हो के लए तराईआ। साची मंज़ल दस्स आसान, राह इक्को इक्क वखाईआ। जित्थे मसला अञ्जील कुरान, काया काअबा परदा दए चुकाईआ। बोलणा पए ना नाल ज़बान, उच्ची कूक ना कोए दृढ़ाईआ। सच प्रीती दे के दान, दानशमंद लए बणाईआ। अन्तर आत्म पूरा कर के काम, काम तृष्ना दए गवाईआ। सच दुआर बणा गुलाम गहर गम्भीर होए सहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्क पहचान, बेपहचान रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप वखाईआ। हरि पुरख निरँजण आदि जुगादी सज्जण, साजणा जगत वेख वखाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल धवाईआ। बाहरों साफ़ करे बदन, अन्तर मन विकार रहे ना राईआ। जन भगत करे कोई ना यतन,

८६६
२०

मेहर निगाह नाल आपणा रंग चढ़ाईआ। देस लै के जाए आपणे वतन, जिस नूं बेवतन कहे लोकाईआ। जो आए सतिगुर दवारे पतण, पतित पुनीत लए कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करन आया बचन, बच्चे नढ्ढे सारे वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ आया पट्टण, पाटल हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। गुरमुखां तीर निराले आया फट्टण, अणयाला आप चलाईआ। सन्त सुहेले जगत समाज छड्डण, घर इक्को वज्जे वधाईआ। धर्म दवारा धुर दा मंगण, जिस गृह बहि के सोभा पाईआ। अन्तर बाहर चढ़े रंगण, रंगत इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला धुर घर दा अन्तरजामी, अन्तर निरंतर दए वड्याईआ। बोध अगाध दस्स के अगम्मी बाणी, बावन दी धार पूर कराईआ। जन भगत उपजा के मात निशानी, निशाने आपणे लए प्रगटाईआ। सब दा हो के जाण जाणी, जाणकारी आपणी दए कराईआ। जिस नूं समझ ना सके चार खाणी, ख़ालस गुरमुख रंग रंगाईआ। एका दे के पद निरबाणी, निरबाण पद इक्क समझाईआ। जित्थे जगे जोत नुरानी, नूर नुराना नज़री आईआ। जन भगतां मेला होवे नाल आसानी, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा दए मुकाईआ। एकँकार धुर दा प्रीतम प्यारा, पीआ इक्को नज़री आईआ। जिस दा दो जहान सहारा, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी पार करदा आया किनारा, नईआ नौका आपणी इक्क प्रगटाईआ। सच धर्म दा बोलदा आया जैकारा, जै जै कार सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण लै आप अवतारा, आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं झुक झुक गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कारा, सजदयां विच हदीस ढोला गाईआ। सो साहिब भगत वछल जन भगतां दए अधारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। आदि निरँजण आदी पुरख, पुरखोतम नज़री आईआ। जिस दा नाम संदेसा चले तुरत, तुरीआ तों परे करे पढ़ाईआ। नूर उपजा के अकाल मूर्त, परदा ओहला इक्क रखाईआ। जिस दी जगत समझ सक्या कोई ना सूरत, सूरतवंद नूर इलाहीआ। दे के नाम अगम्मी तूरत, रागां दा लेखा दए मुकाईआ। काया चोली चाढ़ के रंग गूढ़त, दुरमति मैल धवाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़त, मुफ्त आपणा नाम झोली पाईआ। गुरमुखां बख्श के चरण धूढ़त, टिक्के धुर दे ख़ाक रमाईआ। सब दी आसा मनसा पूरत, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूरत, दूर दुराडा वेख वखाईआ। मेल मिलाए हाज़र हज़ूरत, हर हिरदे कर रुशनाईआ। अंदरों कढ्ढ कूड़ कदूरत, बंक दुआर करे सफ़ाईआ। जगत जहान दी बदल जमहूरत, हुक्म आपणा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया तोड़े गढ़ ग़रूरत, ग़ुरबत रहिण कोए ना पाईआ।

★ ३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

हज़रत मुहम्मद कहे आ गया तिन्न अस्सू, असल प्रभ दा हुक्म जणाईआ। हैरान हो के किहा मसीह यसू, ये अलिफ़ तों बाहर तकाईआ। मूसा कहे की खेल दस्सू, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। तेई अवतार कहिण किस दवारे वसू, गृह मन्दिर इक्क सुहाईआ। गुर दस कहिण किहड़ी रचना रचू, रचणहारा बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो दुलारे बच्चू, सब नूं दयां समझाईआ। बिन कदमां तों ब्रह्मण्ड खण्ड कच्छू, कशमकश वेखे जगत लोकाईआ। कुछ वास्ता पाया राम अग्गे लच्छू, लक्ष्मण ध्यान लगाईआ। बलराम कृष्न नूं किहा कलयुग किस बिध नठू, सच देणा समझाईआ। मूसा कहे हाए सब दी जड़ पट्टू, पेड़ पुराणा रहिण कोए ना पाईआ। ईसा कहे किसे नूं रहिण नहीं देणा भाड़े दा टट्टू, बोझ जगत ना कोए उठाईआ। मुहम्मद कहे किहड़ी दिशा नठू, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे सब नूं भवावे वांग लट्टू, डोरी इक्को वार खिचाईआ। नानक किहा किस दे नाल हस्सू, हस्ती इक्क प्रगटाईआ। गोबिन्द किहा आपणी धार नाल वसू, बाकी करे सर्ब जुदाईआ। मुहम्मद किहा की कुछ खाऊ पीऊ छकू, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। ईसा कहे तोबा सब दा बंनूं मक्कू, मुकम्मल हुक्म जणाईआ। मूसा कहे केहड़ा नाम रटू, रट्टा सर्ब चुकाईआ। तेई अवतार कहिण सब दीआं डोरां कटू, खण्डा तेज़ धार चमकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सब नूं आपणे ख़ाने विच सट्टू, सिर सके ना कोए उठाईआ। नानक किहा आपणी करनी तों कदे ना हटू, हटवाणे सारे लए खपाईआ। गोबिन्द किहा इक्क अमृत निराला झट्टू, जाम अगम्मी दए प्याईआ। मुहम्मद किहा की हट्ट बाज़ारों वट्टू, सब दी कीमत चुकाईआ। ईसा किहा मैं ओस दे चरणां ढठू, ढहि के सीस निवाईआ। मूसा कहे दो जहान कोई ना बचू, लेखा वेखे थाउँ थाँईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खिड़ खिड़ हस्सूं, हस्सती इक्को नज़र आवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं वखावण लग्गा कौण, बिन अक्खां अक्ख प्रगटाईआ। यसू कहे मैनूं ठोकरां नाल लग्गा हिलाउण, सुत्तयां अक्ख खुल्हाईआ। मूसा आखे चार कुण्ट लग्गा भवाउण, दिशा रहिण कोए ना पाईआ। तेई अवतार कहिण सानूं लग्गा कुछ सुणाउण, हुक्म धुरदरगाहीआ। नानक निरगुण कहे मैनूं लग्गा वखाउण, दो जहानां जगत शाहीआ। गोबिन्द कहे

मैनूं लग्गा बुलाउण, इशारे नाल दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे बच्चयो, नहीं तुहाडा सब कुछ लग्गा मुकाउण, मुकाबला रहिण कोए ना पाईआ। ओधरों नेत्र रो पई पाउण, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। मुहम्मद कहे या मुबीन मेरे अल्ला, अलाह तेरी सरनाईआ। ईसा कहे क्यों कुरलावें इकल्ला, कलमे वाल्या दएं दुहाईआ। मूसा कहे भरावो मैनूं वी फड़ लैण दयो पल्ला, भय मेरे अंदर आईआ। तेई अवतार कहिण असीं छड्ड दिते जल थला, जंगलां विच ना कोए वड्याईआ। नानक निरगुण कहे तेरा होवे भला, तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मैं सनमुख हो के खला, चरण ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे सारे कहो पुरख अकाल हो गया झल्ला, झलक सब दी आपणे विच मिलाईआ। मुहम्मद कहे मैथों हुक्म नहीं जांदा ठल्ला, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। ईसा कहे मैं निक्का जेहा डला, रुढ़दयां अग्गे ना कोए अटकाईआ। मूसा कहे किधरों बोल दिता हल्ला, हुक्म आपणा कटक चढ़ाईआ। तेई अवतार कहिण साडा साह ना पैंदा विच खल्ला, ख़बरे की की होर सुणाईआ। नानक कहे मेरा थल्लयों घस गया तला, फिर फिर सेव कमाईआ। गोबिन्द कहे कुछ मेरा लेख होया जिस वेले मेल कीता डल्ला, लेखा लिख्या बिन शाहीआ। सतिगुर शब्द कहे सब दे नाल कीता वल छला, नाम छुणछणे सब दे हथ्थ फड़ाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं कहिंदा मैं तेरा अल्ला, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। ईसा कहे मैं तैनूं आपणा आप बणा के घल्ला, धायल कर लोकाईआ। मूसा कहे मैं झलक नूर कीता झल्ला, सुध रही ना राईआ। तेई अवतार कहिण सानूं कच्छां मच्छां नूं पा के विच डल्लां, डण्डाउत डण्डे नाल कराईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दा बचन तुसीं सुणदे रहे बिना कन्नां, क्यों कन्नां नाल जगत सुणाईआ। ओ नढ्ढयो बच्चयो धुर स्वामी नूं तुसां कर के अन्नां, अक्खरां दी कीती चतुराईआ। दीनां मज़्बां दा पा के बन्ना, बन्दगी विच बन्दे दिते रुलाईआ। मुहम्मद कहे मेरे कुरान दा तीजा पन्ना, नावीं सतर सतह दए हिलाईआ। ईसा कहे मैं इक्क दिन तक्कया सी वल्ल चन्ना, आपणी अक्ख उठाईआ। मेरा माही आया भन्ना, फड़ के कन्नों चारों कुण्ट दिता भवाईआ। मूसा कहे मैं नूर वेख्या विच तना, मुठ्ठी अक्खां उत्ते टिकाईआ। तेई अवतार कहिण साडे अंदर वजाए टल्ला, आवाज़ आपणी आप सुणाईआ। नानक कहे मेरा मनाया मन्ना, मानस दी ज़ात दिती समझाईआ। गोबिन्द कहे मैं कोई पढ़या नहीं मुक्ता कन्ना, सिहारी बिहारी ना ओट तकाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं सारयां नूं ला के विच तमअ, दीनां मज़्बां विच दिता अड़ाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं पै गया ग़मा, हाए की दिता सुणाईआ। ईसा कहे हुण की खेल होणा नवां, साडी चली ना कोए चतुराईआ। मूसा कहे किस दी करनी होणी रवां, रवानगी साडे हथ्थ फड़ाईआ। तेई अवतार कहिण

भरावो कोई वसाह नहीं जे दमां, दामनगीर जे पल्लू लए छुडाईआ। नानक निरगुण कहे एह ओसे दा कम्मा, जो आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे ना हरख सोग ना ग़मा, खुशीआं सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा सरीर तुहाडी माता पिता जम्मा, मेरा नूर मेरा ज़हूर तुहाडे विच करे रुशनाईआ। तुहानूं दे के माटी चम्मा, खाटां उत्ते दिता सवाईआ। मुहम्मद कहे हाए मेरीए अम्मां, अम्मढ़ी नज़र कोए ना आईआ। ईसा कहे किस दे कोलों मंगां, आपणी झोली डाहीआ। मूसा कहे मेरीआं थक्क गईआं टंगां, भज्जया वाहो दाहीआ। तेई अवतार कहिण हुण किहड़ी वखाईए गंगा, गंगोतरी नज़र कोए ना आईआ। नानक निरगुण कहे ओसे दा खेल चंगा, जो ओसे रिहा भाईआ। गोबिन्द कहे जे सारी सृष्टी अंदर मचा दए दंगा, मेरी खुशी बणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल सदा बहु रंगा, भेव कोए ना पाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं बुढे नूं दे दयो डण्डा, हौली हौली तुर के पन्ध मुकाईआ। ईसा कहे मैं टोह के वेख्या आ गया कन्ढा, किनारा अगला नज़री आईआ। मूसा कहे मैं सुण के हो गया ठंडा, बल रिहा ना राईआ। तेई अवतार कहिण साडीआं खोह लईआं सब वण्डां, हिस्सा नज़र कोए ना आईआ। नानक कहे निरगुण हुण किसे नूं पूजण देणा नहीं करीरां जंडां, सीस अवर ना कोए निवाईआ। गोबिन्द कहे मैं छुडाउणा लोहार तरखाण दा खण्डा, खण्डरां विच आपणा आप प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दा खेल जोती नूर शैतानी विच बन्दा, गंदा सब नूं रिहा कराईआ। मुहम्मद कहे मेरा सिर नंगा, गर्मी रही सताईआ। ईसा कहे मैनूं हो लैण दे ठंडा, उह आबेहयात नज़र कोए ना आईआ। मूसा कहे बिरथा गया धन्दा, पिछली कीती रही ना राईआ। तेई अवतार कहिण बौहड़ी कोई रहिण नहीं दिता पंडा, बोध अगाध करे ना कोए पढ़ाईआ। नानक कहे सति पुरख दा सति धर्म दा वेखो झण्डा, इक्को नज़री आईआ। गोबिन्द कहे एह मेरा लेख मंगा, सब नूं मिले वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ दा खेल सदा दो रंगा, भेव अभेद ना किसे दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं किस किहा गुलाम, नफ़र कर के रिहा बुलाईआ। ईसा कहे मैनूं कर लैण दे सलाम, आ गया धुरदरगाहीआ। मूसा कहे सज्जणो मैं होर सुणी कलाम, कलमा दिता बदलाईआ। तेई अवतार कहिण फेर कौण जपूगा राम, रमता रमता सब दी करे सफ़ाईआ। नानक निरगुण कहे एह ओसे दी शान महान, जो शहिनशाह अख्वाईआ। गोबिन्द कहे जिस ने छड्ड दिते तीर कमान, चिल्लयां हथ्थ ना कोए लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो एह खेल श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद कहे की वेला होया फ़जर, फ़ज़ल अल्ला रिहा कमाईआ। ईसा कहे मुहम्मदा रोंदी फिरदी अज़ल, रो रो कुरलाईआ। मूसा कहे नेड़े आ गई मुका के मज़ल, ग़ज़ल आपणी रही सुणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहिण आपणा आपणा वेखो वज़न, कवण कवण भार उठाईआ। नानक कहे असीं सारे बणे रहे कज़न, कज़ा कोलों सरीर ना सके बचाईआ। गोबिन्द कहे मेरा ओस दे नाल प्रन, जो प्राणपत नज़री आईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो अग्गे वास्ते इक्को सारे कबूल करो सरन, शरन इक्को मंग मंगाईआ। मुहम्मद कहे किस बिध छड्डां चौदां लोक, हाए हाए कर सुणाईआ। ईसा कहे काहनूं मंगी वीहवीं सदी बहुत, उन्नीसा पन्ध चुकाईआ। मूसा कहे मैं सोच ना सक्या सोच, परवरदिगार की हुक्म वरताईआ। तेई अवतार कहिण असीं कढ्ढ ना सके खोट, दीन दुनी साफ़ कराईआ। नानक निरगुण कहे एह प्रभ दे अगम्मी चोज, चोजी हो के आप कराईआ। गोबिन्द कहे ना हरख कोई ना सोग, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे बच्चू तुहानूं सारयां नूं सृष्टी वाला भोगाया भोग, बचया रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे पीहड़ी किसे चल्लण नहीं दिती दोहत पोत, बंसाँवली ना कोए अख्वाईआ। तुहाडे वेख के विद्या वाले कौश, किछ आपणा हाल सुणाईआ। तत्तां वाला दे के तुहानूं पोश, पच्छिम दक्खण उत्तर पूरब दिता भवाईआ। ओदों तुहानूं आउण नहीं दिती सोच, क्यों मज़्हबां विच फसाईआ। सचखण्ड दे आलृणे विच्चों कढ्ढ के बोट, चोग जगत वाली चुगाईआ। अक्खरां वाला दस्स के जोग, माला मणकयां वाली दृढ़ाईआ। नूर दे के आपणी जोत, चन्न कीता रुशनाईआ। इशारे दे के लोक परलोक, संदेसे दिते सुणाईआ। तुसां ओहो समझया बहुत, आपणी खुशी बणाईआ। सानूं भण्डारा मिल्या अतोट, अतुट दिता वरताईआ। एह तुहानूं छोटी जेही दिती सी मोख, मुख़तारनामा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तुहाडे अंदरों भाण्डे लए पोच, मेहर निगाह फिराईआ। दे के नेत्र इक्को लोच, अक्ख नाल मिलाईआ। कढ्ढ के हरख़ सोग, सगल रमिआ दिता वखाईआ। तुहानूं जजमान बणा के परोहत, पराहुणे जगत वखाईआ। साढे तिन्न करोड़ खोलृ के सोत, सुत्यां शब्द शनवाईआ। उह फेर सब नूं कर के फ़ौत, फ़ैसला दिता कराईआ। मुहम्मद कहे ऐ खुदा की असीं वी मरे नाल मौत, मलकुल मौत दए सज़ाईआ। ईसा कहे की मैं फाँसी चढ़या नाल शौक, सलीब गल लटकाईआ। मूसा कहे मेरी दिसे कोई ना पहुंच, अग्गा नज़र कोए ना आईआ। तेई अवतार कहिण असीं सारे गए औंत, साडा बच्चा सीस ताज ना कोए टिकाईआ। नानक निरगुण कहे मैं प्रभ दी मन्न के धौंस, सिर ल्या झुकाईआ। गोबिन्द किहा मैं शब्दी धार जणा के रौंस, लेखा गया मुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं भेव ना दस्सया तुहाडे ख़ौंत, ख़तरे विच सर्ब रखाईआ। मुहम्मद कहे मैं वेख्या इक्को चौंक, चौतरफ़ी राह वखाईआ। ईसा कहे मेरे अंदर उठया शौक, आसा होर वखाईआ। मूसा कहे मैं डर गया किते वड्याई दा गल विच पै ना जाए तौक, तकब्बर विच रखाईआ। तेई

अवतार कहिण असां साफ़ सुथरा कर के रख्या चौंत, कर कर थक्के सफ़ाईआ। नानक निरगुण कहे मैं कर के इक्क मनौत, महिमा इक्क सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैं सब दी वेखी अदौत, चार वरन अठारां बरन करन लड़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सब दा वड्डा गौंस, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म आप सुणाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं आ रिहा पसीना, पशू पंछी रहे कुरलाईआ। यसू कहे केहड़ा चढ़ गया महीना, वेखां नैण उठाईआ। मूसा कहे मैं केहड़ा अक्खर चीना, जिस परदा दिता चुकाईआ। तेई अवतार कहिण सब नूं होणा प्या अधीना, चली ना कोए वड्याईआ। नानक निरगुण कहे मैं निरमाणता विच कमीना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द कहे मैं इक्क दा हो अधीना, आहला अदना वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो मैं तुहाडी सब दी वड्डी मशीना, पुरजे निक्के निक्के मातलोक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म रिहा समझाईआ। मुहम्मद कहे मेरा अन्तर मंगे पनाह, मिले हक सरनाईआ। ईसा कहे मैं वी करदा हां, आपणा आप नाल मिलाईआ। मूसा कहे मैं वी मंगां ओही थाँ, दर दवारा इक्को नज़री आईआ। तेई अवतार कहिण असीं किस बिध करीए नांह, ज़ोर बल रिहा ना राईआ। नानक निरगुण कहे ओहो पिता ओहो माँ, गोदी आपणी लए टिकाईआ। गोबिन्द कहे मैं अरज़ करां जिस ने हँस बणाउणे काँ, देवणहार माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो फ़िकर ना करो ज़िकर ना करो मैं सब दी पकड़ां बांह, तरस तुहाडे उत्ते कमाईआ। अग्गे लग्गण ना देवां कोई दाअ, पेचा शरअ कोए ना पाईआ। इक्को इक्क बण मलाह, बेड़ा जगत कंध उठाईआ। मेरा हुक्म होवण लग्गा रवां, खुशीआं विच विच वड्याईआ। ग़फ्लत विच कदे ना सवां, सृष्ट सबाई दयां उठाईआ। जो जुग चौकड़ी लहिणा कीता जमां, सब दी झोली दयां भराईआ। मैं कोई मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठां दा करना नहीं तमअ, तमाशा वेखां थाउँ थाँईंआ। जिस तरां तुसीं कहि के आए जिस ने गगन रहाया बिना थम्मां, बिना तत शरीर तों आपणी खेल कराईआ। इक्को ढोला धुर दा गवां, संदेसा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ। मुहम्मद कहे मेरा हथ्थों लहि गया छल्ला, उंगली ख़ाली नज़री आईआ। ईसा कहे मेरा छुट गया पल्ला, पलक दा भेव रिहा ना राईआ। मूसा कहे मैं वी रहिणा नहीं कल्ला, तुहाडा संग निभाईआ। तेई अवतार कहिण जिस दवारयों साडा दीपक बला, अन्त ओसे विच समाईआ। नानक निरगुण कहे की माण माटी खल्ला, ख़लक दा ख़ालक ख़ाली दए कराईआ। गोबिन्द कहे जो निरगुण धार हो के रला, आपणे विच मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे उस दे प्यार अंदर गुर अवतार पैगम्बर फला, पत्त टहणी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। हज़रत मुहम्मद (कहे) आह लै चिठ्ठी, बिन हलकारयों हथ्थ फड़ाईआ। ईसा कहे ओ यार एह अनडिठ्ठी, अग्गे नज़र कदे ना आईआ। मूसा कहे उह वड्डी किड्डी, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। तेई अवतार कहिण साडी किध्धर जाऊ बिधी, मस्तक तिलक लगाईआ। नानक कहे एह धार सदा सिध्धी, सिद्ध आसण इक्क वखाईआ। गोबिन्द कहे हुण कोई ना बणयो ज़िद्दी, सिर सके ना कोए उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे अग्गे हुक्म वरतणा इक्की, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। मुहम्मद दी आह दोहथ्थड़ मार के पिट्टी, बौहड़ी दिता सुणाईआ। ईसा हथ्थ रख के गिच्ची, सीस ल्या झुकाईआ। मूसे किहा मैं तेरी धार निमाणी निक्की, नीकन नीक सरनाईआ। तेई अवतार कहिण वेद व्यास औह वेख आपणी मिती, की वेला गया आईआ। नानक किहा साची दिसे कोई ना सिक्खी, चार वरन दुहाईआ। गोबिन्द कहे रसना रही किसे ना मिठ्ठी, कड़वा रूप गई बदलाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडे हुंदयां सारी सृष्टी गई भिट्टी, पुनीत नज़र कोए ना आईआ। मेरी जेब विच वेख लओ पिछली पुराणी चिठ्ठी, सहिज नाल समझाईआ। कबीर कहे कुछ सुण लओ जिस वेले मैं लुक्कया सां थल्ले खिती, कंडयां विच दुहाईआ। तेग़ बहादर कहे मेरे सीस उत्ते लग्गी धार तिक्खी, आर पार समझाईआ। ईसा कहे जिस वेले मेरी सलीब खिच्ची, नाता तुट्टा होई जुदाईआ। राम कहे मैनूं तेरे नालों होई जिची, जंगलां विच भवाईआ। कृष्न कहे मैं जगत सलाह दिती, कौरो पांडो दिते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। मुहम्मद कहे मैं खोलू के वेख्या पत्रा, बिन अक्खां अक्ख फिराईआ। ईसा कहे मैनूं नज़री आया ख़तरा, ख़त ख़तूतां विच दिता समझाईआ। मूसा कहे मैं किथ्थे रहवां वक्खरा, घर नज़र कोए ना आईआ। तेई अवतार कहिण हुण किहड़ीआं पढ़ावांगे सतरां, जगत विच शनवाईआ। नानक कहे किहड़े वसीए वतना, दवारा कवण सुहाईआ। गोबिन्द कहे हुण आ गए ओस दे पतणा, जो तट किनारा इक्क रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे बच्चयो सब नूं कर के सक्खणा, सुक्खी सांदी प्रभ दे चरण टिकाईआ। चारों कुण्ट अंग्यारा भखणा, सरबभक्खी देणे मिटाईआ। तुसां अग्गे मूल ना तक्कणा, सत्त धार दा डण्डा रिहा चमकाईआ। किसे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर भोग ला कोई ना चखणा, सब नूं मन्ना दिता कराईआ। भय विच पुरख अकाल दी चरणी वस्सणा, सौं के झट लँघाईआ। वेख्यो कोई किते ना करयो यतना, यथार्थ दिता दृढ़ाईआ। हुण मैं कोई वसणा नहीं पौंटा पटणा, पट्टीआं वाली करनी ना कोए सफ़ाईआ। सब दा लेखा पत्ता कटणा, हुक्म दा कटक देणा चढ़ाईआ। इक्क वार प्रभ दी चरण धूढ़ दा ला लओ वटणा, एह अन्त दी तुहाडी कुड़माईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं इक्को ख़सम पऊगा रखणा, देवर जेठ नज़र कोए

९०६
२०

ना आईआ। उस दे चरणां अग्गे पऊगा टप्पणा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। चरण धूढ़ पएगा फक्कणा, तृष्ना तृप्त कराईआ। वेख्यो दूजे हुक्म तक किसे नहीं अक्कणा, जुगां दा राह ना कोए तकाईआ। मुहम्मद कहे ईसा हुण किस तरह बचणा, मूसा की तेरी सलाहीआ। तेई अवतार कहिण ओ भरावो एसे दा नाँ पैणा जप्पणा, अल्ला राम एहो नज़री आईआ। नानक कहे चंगा इक्को दे घर वस्सणा, दूजा ख़सम ना कोए हंढाहीआ। गोबिन्द कहे मैं साची सेजे सौणों कदे नहीं हटणा, गल इक्को लैणा लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे की फेर जा के नाम जपाउगे नाल रसना, तन वजूद हंढाहीआ। मुहम्मद कहे मैं हुणे चाहुन्दा नस्सणा, छड्डां ख़लक खुदाईआ। ईसा कहे की एहो जेही होण वाली घटना, मैनूं दे समझाईआ। मूसा कहे इस ने सारयां नूं फट्टणा, निराला तीर चलाईआ। तेई अवतार कहिण एसे राम दी सरन सब ने ढठ्ठणा, ढहि ढह सीस निवाईआ। नानक कहे भरावो चन्द दिहाढ़े रैण वसेरा कटणा, लोकमात दुहाईआ। गोबिन्द कहे मैं फेर नहीं जम्मणा विच पटना, नूर इक्को इक्क चमकाईआ। सतिगुर शब्द कहे तुहाडा वस नहीं ना कोई तुहाडा कोई यतना, ताकत नज़र कोए ना आईआ। ज्यों भावे त्यों मैं तुहानूं रखणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सहिज सहिज समझाईआ। मुहम्मद कहे उह अंदर वज्जी हुक्क, हुक्म दिता दृढ़ाईआ। ईसा कहे किते साडा पैंडा ते नहीं गया मुक, मूसे उठ ध्यान लगाईआ। तेई अवतार कहिण किधरों सुण लई तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। नानक कहे सब दी सफ़ा गई उठ, ऊठत बैठत रही ना राईआ। गोबिन्द कहे मुहम्मदा यार क्यों कटाई सी मुच्छ, मैनूं दे समझाईआ। स्त्री पिच्छे हो के कुच, शकल लई बदलाईआ। गोबिन्द, सारयां दे हुंदयां ना पुछ, कल्ला देउँ समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं कलमयां दा मालक क्यों करदे बुच्च बुच्च, जिस तरह मैं चाहया ओस तरह दिता रगड़ाईआ। पता नहीं किस ज़मीन उत्ते आकड़ नाल फिरदे सो टुप्प टुप्प, टोभे ला ला कीती लिखाईआ। जिस ने तुहाडा बूटा लाया ओसे ने दिता पुट्ट, क्यों रो रो मारो धाहींआ। शुकर करो तुहाडा खहिड़ा गया छुट्ट, आपणी दे ना सके सफ़ाईआ। मेरा कासा ख़ाली ठुठ, विच्चों ठुमरी नज़र कोए ना आईआ। राम किहा ओ अजे वी हो जाओ इक्क मुट्ठ, भुल्ले घर नूं जावो आईआ। नानक किहा भई एह सब (हथ्थ) ओसे दे कुछ, ज्यों भावे त्यों रिहा चलाईआ। गोबिन्द कहे बड़ी छेती सारयां दा पैंडा गया मुक, भरावो साडीआं मुक्कीआं घसुन्नां साडा लेखा दिता मुकाईआ। जे इस दे कोलों पुच्छ लैंदे एसे दी तुक, क्यों दीनां मज़्हबां वाली हुन्दी लड़ाईआ। असीं खुश रहे सानूं बणा के पुत्त, हिस्से दित्ते वण्डाईआ। ते जिस वेले आधां ब्याधां मुणयादां दा पैंडा गया मुक, पटेदारी रही ना राईआ। जे कदे मातलोक जाण तों पहलों ऐथे कर लैंदे ठुक्क, सलाह मश्वरा इक्क पकाईआ।

फिर झगड़ा ना पाउँदे काया बुत्त, मनुष मनुषां नाल टकराईआ। कृष्न कहे मूसा तूं जा के पाई पहलों फुट, मूसा कहे मेरे नालों बहुती ईसा अग्ग लगाईआ। ईसा कहे मैं कुछ हो गया चुप, मुहम्मद ने चार कुण्ट दिती दुहाईआ। राम कृष्न नूं लवो चुक्क, पत्थर पत्थरां नाल टकराईआ। अवतार कहिण किस बिध पाई ओस ने फुट्ट, सानूं सब कुछ जाणदयां नूं दिता लड़ाईआ। नानक किहा आपणी करनी नूं टुक्क टुक्क, साडी झोली दिती भराईआ। गोबिन्द किहा सब नूं ओस ख़ाने विच दिता सुट्ट, जित्थे सोटा सत रंगा डराईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं नहीं सी पता मैं आदि दा इक्को ओहदा पुत्त, तुसीं मेरे विच्चों जम्म के जगत खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं पै गईआं चीसां, अल्ला तेरी सरनाईआ। ईसा कहे किते भुल्ल नहीं गईआं हदीसां, हज़रता दे दृढ़ाईआ। मूसा कहे आपणा वेख ख़ाली हो गया ख़ीसा, की दूज्जयां रिहा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कट्ठे वेखण किते आ नहीं गया बीसा, बिस्तरे सब दे गोल कराईआ। नानक किहा आपणा आपणा वेखो शीशा, परदा ओहला रहे ना राईआ। गोबिन्द किहा तुहाडीआं पूरीआं करन लग्गा उम्मीदां, आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे सब दीआं परखण आया नीतां, नीतीवान वेस वटाईआ। की फेर वड़ोगे मन्दिरां मसीतां, मसल्ले हत्थां विच उठाईआ। सारे कहो साडीआं लग्गीआं इक्क दे नाल प्रीतां, प्रीतम ल्या मनाईआ। पिछला याद ना करयो वेला बीता, माज़ी राह ना कोए तकाईआ। सारे गाओ इक्को गीता, जो गहर गम्भीर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं होण लग्गी दर्द, दरे दरबार सुणाईआ। ईसा कहे किते कढ्ढ ते नहीं लई फ़रद, साडा लेखा वेख वखाईआ। मूसा कहे मैं वेख होया असचरज, अचरज खेल खिलाईआ। तेई अवतार कहिण ना नारी ना एह मर्द, जोती जामा नूर रुशनाईआ। नानक गोबिन्द कहे एह पूरा करन आया फ़र्ज़, आपणा वेस वटाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडे हुंदयां माणसां खाधे करग, जूनीआं विच सज़ाईआ। मैं बोल के कहवां गरज, तुहाडी कीती अग्गे देणी बदलाईआ। रहिण नहीं देणा अन्धेरा गर्द, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। एकँकारा आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सब दा लेखा कीता तरक, तुरत आपणा हुक्म चलाईआ। पूरी कर के इकरारां दी शर्त, शरअ देवे बदलाईआ। तुसां कदी वेख्या स्वर्ग नर्क, जा के फेरा पाईआ। हुण किसे नूं वड़न नहीं देणा विच चर्च, चरागाहां विच भवाईआ। वेख्यो फेर ना जायो उत्ते फर्श, अर्श मेरे विच समाईआ। किते वण्ड ना वंडिओ गरबन शरक, शमालन जनूबन आपणा फेरा पाईआ। अग्गे रहिण नहीं देणा कोई फ़र्क, फ़िकरा इक्को देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर

दा लेखा आप समझाईआ। मुहम्मद कहे क्यों होई दिलगीरी, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। ईसा कहे टुट्टण लग्गी शरअ ज़ंजीरी, टुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। मूसा कहे बस्स होई फ़कीरी, फ़ातया सब दा रिहा पढ़ाईआ। तेई अवतार कहिण रहिणा नहीं बग़लगीरी, जगत संग बणाईआ। नानक गोबिन्द कहे एह वक्त अख़ीरी, आख़र रिहा सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिस सृष्ट कीती ताअमीरी, ओहो वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकावे हस्त कीड़ी, लख चुरासी वेख वखाईआ। सब नूं गली लँघणा पैणा भीड़ी, सौखा राह ना कोए जणाईआ। सिर ताज ना रहे अमीरी, अमरापद ना किसे वखाईआ। एह खेल होणा तकदीरी, शास्त्र वेद समझे कोए ना राईआ। कुछ लहिणा बदरे मुनीरी, बैतुल धाम सरनाईआ। कुछ हुक्म शब्द नाइब वज़ीरी, नातवां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क उपजाईआ। मुहम्मद कहे क्यों उम्मत दा भज्जण लग्गा हुक्का, चिलम चिमटा कम्म किसे ना आईआ। ईसा कहे सब दे मुख विच पैणा थुक्का, थोक दा माल सारे बैठे लुटाईआ। मूसा कहे मैं किस किस दा भार चुक्कां, साबत नज़र कोए ना आईआ। तेई अवतार कहिण साडा मार्ग मुड्डों घुथ्था, प्रभ दा नाम ना इक्क समझाईआ। आदि शक्ति कहे मैनूं वी रो लैण दयो विच मार के भुब्बां, खुल्ली मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। नानक कहे आपणी करनी सब दा बेड़ा डुब्बा, दूसर करे ना कोए सफ़ाईआ। गोबिन्द कहे लेखा अन्त अख़ीरी मुक्का, चार कुण्ट ना कोए सहाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो क्यों लैंदे रहे मेरे नाम दा भुग्गा, भोग लवा के आपे लैंदे खाईआ। एसे कर के उजड़न लग्गा झुग्गा, गुरू दा हिस्सा सिख आपणयां ढिड्डां विच टिकाईआ। तुसीं कदी ना समझयो पुरख अकाल बुढ्ढा, जुग जुग सब दा पिता माईआ। ना लंगड़ा लूला डुड्डा, ना नैणहीण अख्वाईआ। जे तुसीं सब दी साफ़ रखदे बुधा, कूड़ी क्रिया ना कोए कमाईआ। मैनूं दस्सो क्यों तुहाथों कराउँदा रिहा युद्धा, धर्म दे नाल धर्म दी लड़ाईआ। मेरा खेल किसे ना बुज्झा, बेनन्ती चरण ना कोए कराईआ। जैसा हुक्म दिता तैसा गुर अवतार पैगम्बर मात रुज्झा, जगत विच सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मुहम्मद कहे मेरे अंदर आवाज़ आई हू, अल्लाह हक रिहा जणाईआ। ईसा कहे मैनूं पैंदी धूह, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। मूसा कहे मैनूं साफ़ कर लैण दे मूँह, जो पत्थरां उत्ते रगड़ाईआ। तेई अवतार कहिण असीं रस्ता साफ़ ना कीता रूह, मन दी चलदी रही चतुराईआ। नानक गोबिन्द कहे सारे खेल वेखो लूं लूं, रोम रोम रोम समाईआ। सतिगुर शब्द कहे तुहानूं नहीं पता मैं सब दा इक्को गुरू, सतिगुर मैनूं कहि के सारे तुसीं गाईआ। मेरा प्यार दा वड्डा खूह, जिस विच सारे ग़ोते खा खा मेरी ओट तकाईआ। कोई दस्सो हुण अग्गे किस बिध खेल होणा शुरु, शहिनशाह आप कराईआ।

किस धार आत्मा जुड़ू, मिले माण वड्याईआ। मुहम्मद कहे हुण फोका करना कुड़ूं कुड़ूं, कुड़त्तण मज़ब रहे ना राईआ। आपणी करनी तों कदे ना मुड़ू, ईसा रिहा सुणाईआ। मूसा कहे मैं हुक्मे अंदर तुरूं, तुरत सीस निवाईआ। तेई अवतार कहिण एसे दा मंत्र फुरूं, फ़ुरने बन्द कराईआ। नानक गोबिन्द कहे एका सरन सरनाई पड़ूं, पढ़न लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं सब दे अंदर वड़ूं, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। शाह सुल्तानां फड़ूं, फड़ के दयां उठाईआ। दो धारी हो के लड़ूं, लकीर फ़कीर वाली वखाईआ। सब दे अंदर इक्को धौल जड़ूं, धरत धवल दयां हिलाईआ। समुंद सागर छड़ूं, विरोल वखावां थाउँ थाँईंआ। जेहड़ा लेख लिखाया गोबिन्द धार परार परूं, पारब्रह्म हुक्म सुणाईआ। ओसे तरह करूं, करतब आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। मुहम्मद कहे क्यों होण लग्गी पीड़, पीड़ी नज़र कोए ना आईआ। ईसा कहे जगत नबीआं दी लग्ग गई भीड़, भीड़ा राह कोए ना पार कराईआ। मूसा कहे झगड़ा मुकया ना हस्त कीड़, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। तेई अवतार कहिण रोंदे शाह हकीर, फ़कीर देण दुहाईआ। नानक गोबिन्द कहे प्रभ बदल रिहा तदबीर, तकदीर तहिरीर नाल वड्याईआ। जेहड़ी आसा रखी कबीर, कबरां तों बाहर ध्यान लगाईआ। सो खेल करे शाह हकीर, हुक्म इक्क वरताईआ। सब दी वेखणहारा ज़मीर, अंदरे अंदर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आप चुकाईआ। मुहम्मद कहे की हुक्म देवे खुदा, खुद आपणा आप सुणाईआ। ईसा कहे होवे ना कदे जुदा, पल्लू आपणा लए छुडाईआ। मूसा कहे मुश्किल विच हो के फिदा, आप आपणा भेंट कराईआ। तेई अवतार कहिण जुग बदलणा एहदी अदा, अदालत अदल आप कमाईआ। नानक कहे सब नूं देवणहार सज़ा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं आउण लग्गा मज़ा, मज़ाक मेटे कूड़ लोकाईआ। सतिगुर शब्द कहे किसे नूं जणाई नहीं आपणी रज़ा, राज़क रिज़क रहीम आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं मेरे छोटे छोटे अज़ा, हिस्से जगत दिते वण्डाईआ। तुहानूं नाम दी दे के ग़िज़ा, सूरबीर दिता बणाईआ। तुसीं दे के बांग अज़ां, ऊँची कूक दिता सुणाईआ। मैं सब दा लेखा कर के लाउँदा रिहा मीज़ान, हिसाब आपणे हथ्थ रखाईआ। सारे मेरे दवारे जमा करा दयो अञ्जील कुरान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मन्नो इक्क ईमान, चरण कँवल सरनाईआ। सुणो मेरा पैग़ाम, सब नूं रिहा सुणाईआ। सदी चौधवीं लैण नहीं देणा आराम, हुक्मे अंदर भवाईआ। मुहम्मदी होण हैरान, कौण रिहा उठाईआ। ईसा बणाउणा निशान, निशाने सर्ब चुकाईआ। दोहां दा होणा जंग घमसान, घुंमण घेर विच लोकाईआ। मेरा शब्दी फिरदा रहे बबाण, बेवा वेखे थाउँ थाँईंआ। धुर फ़रमाने

दा चढ़े तुफ़ान, चारों कुण्ट दए हिलाईआ। नाम दा चढ़े चिल्ला कमान, कमान करन वाला रहिण कोए ना पाईआ। वेख्यो गुर अवतार पैगम्बरो होयो ना परेशान, प्रासच्त मोहे लागे कोए ना राईआ। मेरा इक्को सूरबीर शब्द सत जवान, जवानी सब दी दए गवाईआ। मुहम्मद अग्गों कहे सलाम, कदमबोशी कर के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। किस नूं देवें इनाम, शाबाश कहि सुणाईआ। कवण होए परवान, दर मिले वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे जिन्हां भगतां मिले भगवान, ओन्हां वज्जे वधाईआ। बाकी सृष्टी दा लेखा पीण खाण, जन्म कर्म ना कोए कटाईआ। प्रभ दा रूप आदि जुगादि महान,महिमा कोई कथ सके ना राईआ। जोत दी धार विच तत इन्सान, निशान आपणा आप वखाईआ। सब नूं हुक्म करना पए परवान, शिव पार्बती बैठा उंगली लाईआ। ब्रह्मा सुरस्ती कर ध्यान, नैण अक्ख खुल्हाईआ। विष्नूं लछमी धूढ़ी कर इश्नान, धुर दा रंग चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सब दी करनहारा कल्याण, कायनात फोल फुलाईआ। मेरा हुक्म दो जहानां तों तिक्खी कृपान, किरपा विच कूड़ कपट सब दा बाहर कढाहीआ। जगत जगत दा महिमान, दिन थोड़े नज़री आईआ। अस्सू कहे मेरे अस्व वाले माही दी आपे आ जाऊ सब नूं पहचान, पुछण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कुझ सानूं दे दे वरदान, वारस बण जा आपणी जगत लोकाईआ। सतिगुर शब्द कहे कुछ अगला सुणो फ़रमान, सहिजे रिहा सुणाईआ। अल्ला वाल्लयो मक्के मदीने मारो ध्यान, काअबे नूं कबरां रिहा वखाईआ। अवतारो तीर्थ तटां वेखो निशान, शमशान भूमी सब नूं नज़री आईआ। कठ्ठे हो के वेखो कौण श्री भगवान, कवण खेल कराईआ। किस दी मन्नदे आण, किस नूं सीस झुकाईआ। सारे कहिण क्यों देवे फ़रमान, आपणा हुक्म बदलाईआ। गोबिन्द कहे सारयां दा वक्त पहुंचया आण, पंजे ला के आपणा पल्ला लओ छुडाईआ। शुकर करो जे छुट जावे तुहाथों जहान, छुट्टी लै के आपणे घर जा के आपणा पती लओ मनाईआ। तुहाडी लाह देवे थकान, वाड़ के सचखण्ड मकान, वखा के धुर दा इक्क निशान, अमाम इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सच रिहा समझाईआ। मुहम्मद कहे फेर वेख लईए मार के झाकी, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। ईसा कहे कोई साबत रिहा ना तन ख़ाकी, वजूद अंदर वसल यार ना कोए कमाईआ। मूसा कहे खेल कराउणा इत्तफाकी, झट पट रूप ल्या बदलाईआ। तेई अवतार कहिण हुण इक्ट्ठे हो जाईए साथी, सगला संग बणाईआ। नानक गोबिन्द कहे सब तों तारे गए ना पापी, अपराधां भरी लोकाईआ। जो साडे पाठ दे बणदे रहे जापी, जप जप कुकर्म कमाईआ। पढ़यां सुणयां मुक्की किसे ना वाटी, अंदर वड़ ना दरस दिखाईआ। एसे करके सदी चौधवीं मिले किसे ना थापी, पुश्त हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सतिगुर शब्द कहे

आह वेख लओ मेरे कोल तुहाडी निक्की जेही कापी, हिसाब अंदरला दए वखाईआ। क्यों ना झगड़ा मुक्कया ज़ात पाती, पत्रका पढ़ के पत्रयां नाल लड़ाईआ। जेहड़ी साजणा जगत साज विच थापी, थपक थपक सुणाईआ। ओसे दा खेल वेख लओ आपी, घर आपणे अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं सुनेहड़े वाली चिठी वाची, वाचक हो के अग्गे दिता सुणाईआ। खेल खेलदे रहे काया माटी काची, तत्तां विच समाईआ। गोबिन्द कहे याद कर लओ माछूवाड़े दी राती, रता फ़र्क रहे ना राईआ। जिस वेले मेरा कोई रिहा नहीं सी साथी, बच्चे प्रभ दी गोद सवाईआ। ओस बात अगम्मी आखी, संदेसा इक्क सुणाईआ। गोबिन्द बिना तेरे मेरे दो जहानां करे कोई ना राखी, हाकरां मारन वाले सारे देणे हटाईआ। मंज़ल इक्को दस्स के वाटी, वायदा सब दा पूर कराईआ। जन भगतां सीना ठांडा कर के छाती, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां खेल वखाईआ। मुहम्मद कहे मेरे अग्गे आउँदे जांदे शाही वाले हरफ़, शहिनशाही कौण बदलाईआ। ईसा कहे जिस दा हुक्म होणा चौतरफ़, चारों कुण्ट दुहाईआ। मूसा कहे जिस ने सेव कमाई हेमकुण्ट विच बरफ़, आपणा ध्यान लगाईआ। ओस दी पूरी करनी शर्त, शरअ देवे बदलाईआ। निरगुण हो के आया परत, पतिपरमेश्वर नूर खुदाईआ। मुस्लिम इसाई रहे तड़प, मूसा अग्नी विच चमकाईआ। हुक्मे अंदर होण वाली झड़प, झगड़े विच लड़ाईआ। अवतार कहिण धुर दा हुक्म बड़ा अड़ब, मन्नण विच कदे ना आईआ। नानक गोबिन्द कहे साडा इशारा देस दड़प, हुक्मे हुक्म वरताईआ। सब दी पूरी होवे लिख्त पढ़त, बाकी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खिलाईआ। मुहम्मद कहे किथ्थे रही चार यारी, अग्गे पिच्छे ध्यान लगाईआ। ईसा कहे छड्डणी पई सिक्दारी, उज़र रिहा ना राईआ। मूसा कहे सच खुदा दी आई वारी, वारस हो के वेख वखाईआ। तेई अवतार कहिण साडी जगत होई बेएतबारी, भरोसा रहिण कोए ना पाईआ। नानक कहे माया ममता करी खुआरी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। गोबिन्द कहे पशू पंछीआं दे सारे बण गए शिकारी, साचा तीर निशाना ना कोए लगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो जुग चौकड़ी तुसीं हुक्म दे वगारी, जोत निरँकारी कर के गए रुशनाईआ। हुण तुहाडी चुक्की वारी, प्रभ दी इक्क चले सिक्दारी, सब नूं दस्से वफ़ादारी, दीनां मज़्हबां कर खुआरी, टिल्ले पर्बत वेख पहाड़ी, जूहां जंगलां रिहा साड़ी, मूसा कहे किते उजड़ ना जाए हाढ़ी, हाढ़ा कढ्ढ के दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं करे ख़बरदारी, ख़बर ख़बर ख़बर ख्वाबां विच सुणाईआ।

★ ५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर धीरपुर दिल्ली ★

मुहम्मद कहे मेरे मुबीन, महव महबूब तेरी सरनाईआ। ईसा कहे शाहे अज़ीम, आज़म इस्म तेरा वड्याईआ। मूसा कहे तेरी ताअलीम, तुलबे पैगम्बर दित्ते पढ़ाईआ। तेई अवतार कहिण कदीम, जुग चौकड़ी तेरी सेव कमाईआ। नानक गोबिन्द कहे किसे समझ ना आई नर मदीन, मुद्दतां दी खोज थक्की लोकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी आदि जुगादी तक्सीम, वण्ड हिस्सयां विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क वखाईआ। मुहम्मद कहे मेरा मालक इक्क अलाह, अल्ला आलमीन वड्याईआ। मूसा कहे वेख्या जलवा इक्क रुशना, ज़हूर ज़ाहर नज़री आईआ। ईसा कहे आसां दी पूरी कीती जिस दुआ, दो जहानां सोभा पाईआ। तेई अवतार कहिण जुग चौकड़ी जो बदलदा रिहा समां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल वखाईआ। नानक गोबिन्द कहे जिस दा अगम्मी खेल होया रवां, राज राजानां शाह सुल्तानां दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा लेखा लवां, एथे ओथे दो जहानां बचया रहिण कोए ना पाईआ। मुहम्मद कहे मैं अगली कथा कहाणी कहवां, जो कल्मयों बाहर रिहा दृढ़ाईआ। ईसा कहे सच सरनाई बिना सर सीस जगदीश चरण कँवल दवारे ढहां, ख़ादम हो के मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। मूसा कहे मस्ती अंदर इक्को नाम निधाना लवां, वारस इक्को इक्क बणाईआ। तेई अवतार कहिण पुरख अकाला दीन दयाला अगम्मी जगाए आपणी शमां, दीपक दीप करे रुशनाईआ। नानक गोबिन्द कहे कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे तमअ, तारका मण्डल बैठे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं निरगुण धार नर निरँकार इक्को ढोला गवां, गावत गा गा धुर दा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा हरि निरँकारा इक्को इक्क उपजाईआ। मुहम्मद कहे मेरा कदमबोसी विच सजदा, सईयदां समझ कोए ना आईआ। ईसा कहे मैं इस्म अज़ीम दा बरदा, इलम आलम दा मालक इक्क मनाईआ। मूसा कहे मैं मसलयां विच रिहा पढ़दा, कलमा कायनात समझाईआ। तेई अवतार कहिण नित नवित जुग चौकड़ी सब नूं रिहा घल्लदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। नानक गोबिन्द कहे शब्द अणयाले तीर नाल रिहा सलदा, सलल वलल आपणी कार कराईआ। जोती दीपक प्रकाश हो के रिहा बलदा, निरगुण नूर डगमगाईआ। अन्त कन्त भगवन्त झगड़ा मेटे कलयुग कल दा, कल कल्की आपणा रूप बदलाईआ। समुंद सागर वरोले भरया जल दा, जल थल महीअल पर्बत टिल्ले चोटी फोल फुलाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एकँकारा इक्को मल्लदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार मुकामे हक हक करे रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। मुहम्मद कहे की खेल करे गृह हज़रत, हज़ूर हाज़र सर्ब जणाईआ। ईसा कहे जिस दे सहारे ज़िंदगी कीती बसरत, बिछरत रिहा मिलाईआ। मूसा कहे जिस ने दीन दुनी दी मेटणी ऐशो इशर्त, इष्ट इक्को इक्क वखाईआ। तेई अवतार कहिण सब दी पूरी आसा मनसा करे हसरत, हैसीअत विच्चों असलीअत दए प्रगटाईआ। नानक गोबिन्द कहे शब्दी धार सच दुआर करदा रिहा कसरत, योद्धा सूरबीर बांका बल आपणा आप प्रगटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर चार वरन अठारां बरन सब दे अंदरों कढ्ढे नफ़रत, नफ़र गुलाम सारे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लहिणा देणा सब दा दए चुकाईआ।

★ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ स्वामी अनन्द जी महाराज आल इंडीआ भारत साधू समाज २२ पटेल नगर दिल्ली ★

आप की पवित्र रसना कहे ठीक, धुर दा ठाकर देवे वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों मेटणा अन्धेरा तारीक, ज्ञान शब्द नाम कर शनवाईआ। साचा कलमा कायनात दस्सणी अगम्मी इक्क हदीस, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। वरनां बरनां जातां पातां दीनां मज़्बां विच सृष्टी जो रही पीस, चार कुण्ट दहि दिशा सिर सके ना कोए उठाईआ। सति धर्म मिल के आत्म परमात्म दृढ़ाउणी इक्क प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म परदा देणा उठाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मिल के काया माटी तन वजूद अंदरों करना ठांडा सीत, अग्नी अग्ग बुझाईआ। साचे सन्तां प्रभ दे भगतां सूफ़ी फ़कीरां मिल के चलाउणी साची रीत, राह मालक ख़ालक प्रितपालक पतिपरमेश्वर इक्को देणा समझाईआ। एह हुक्म धुर दा देवे जगत जगदीश, जगदीशर धुर फ़रमान इक्क सुणाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, राउ रंक एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठीक इक्को राह जणाईआ। आप दी रसना ठीक किहा बोल, अनबोलत दए वड्याईआ। दीन दुनी नाम दे कंडे देणी तोल, तराज़ू इक्को हथ्थ फड़ाईआ। जो दीन मज़्ब दा पै रिहा घोल, झगड़े विच लोकाईआ। पारब्रह्म परम पुरख पुरख अकाल परवरदिगार दा इक्को सच्चा वज्जे ढोल, डंका चार कुण्ट शनवाईआ। सति दरवाज़ा साधू समाज मिल के देणा खोल्ह, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। जिस परमात्मा नूं कहिंदे वसदा दूर दस्सणा कोल, कन्त अन्तर निरंतर बैठा आसण

लाईआ। पवित्र होवे महा पुरखां दा रसना वाला बोल, जगत कूड़ क्रिया माया ममता मोह विकार भृष्टाचार देवे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। ठीक होवे स्वामी जी तुहाडा कहिणा, रसना कहि कहि दए सुणाईआ। जीवां जंतां दा पूरब जन्म दा चुकाउणा लहिणा देणा, मानस मानव मानुख प्रभ दे रंग रंगाईआ। साचे नाम प्रेम दा तन वजूद शरीर पाउणा गहिणा, दुरमति मैल देणी धवाईआ। एकँकार इक्क इकल्ला निज नेत्र जिन्हां वेख्या तीजे नैणां, लोचण दूज्जयां देण खुल्हाईआ। बड़ा चंगा सोहणा लग्गे सब दा मिल के इक्ट्ठा बहणा, व्यक्ति विच्चों भगती, भगती विच्चों शक्ती शक्ती विच्चों मालक अर्शी मिले बेपरवाहीआ। सब दे अंदर धुर दा हुक्म आ जाए सहिणा, सहिण शक्ती विच वड्याईआ। सन्त साध सूफ़ी फ़कीर जे सेवा करन इक्ट्ठा रहिणा, नाता दीन दुनी नालों तुड़ाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान रामायणा, ग्रन्थां विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्को इक्क वखाईआ। तुहाडा ठीक होवे जैकारा, नवखण्ड पृथमी सत्त दीप खुशी मनाईआ। जिन्हां दे अंदर जोत रूप प्रगट होवे निरँकारा, निरगुण नूर नूर कर रुशनाईआ। नाद शब्द धुन आत्मक दे धुन्कारा, अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती देवे ठंडी ठारा, नाभी कँवल चुआईआ। सो हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई समझण इक्क दवारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सारे मिल के रिवाज समाज बदल दयो संसारा, सृष्टी दी दृष्टी अंदर इष्ट इक्को दयो वखाईआ। भरमे रहे ना कोए जीव गवारा, नाम आधारा सब दी झोली पाईआ। एह समागम सन्तां दा विवहारा, विवहारी हो के हरि करता रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठीक ठाकर आपणा राह दृढ़ाईआ। आप का प्रेम प्यार का वेख्या वातावरन, वरन बरन तों बाहर नज़री आईआ। हिरदे अन्तर प्रभू अधिकार चरण, चरणोदक लै के खुशी बणाईआ। जीवण विच जीवण बणाया मरन, मरन तों बाद जीवण ल्या बणाईआ। अंदर खोल्ह के हरन फरन, निज नेत्र अक्ख उठाईआ। जिस मंज़ल ते कबीर जुलाहे वरगे चढ़न, रविदास चमारा हो के सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला पढ़न, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण धार पल्लू फड़न, नाता जगत वलों तुड़ाईआ। जगत विकार अग्नी अग्ग कदी ना सड़न, ममता मोह डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां आपणी गोद सुहाईआ। सन्त रसना कहे जै जै, जैकार ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। आदि अन्त पतिपरमेश्वर सब दा मालक इक्को रहे, लख चुरासी नारी आप हंढाहीआ। सब वेखणहारा शक्ती शिव शवै, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां सचखण्ड दुआर सति सरूप हो के बहे, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। आदि जुगादि जुग

चौकड़ी नित नवित सब नूं नाम भण्डारा वस्त अमोलक दए, गुर अवतार पैगम्बरां सन्तां भगतां धुर दी दात झोली पाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट भीतर काया मन्दिर अंदर साचे सन्तां सदा रहे, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडे कोलों सच्ची भावना दी प्रेम दी प्यार मुहब्बत दी लै के जाणा उह शै, जेहड़ी सके ना कोए फड़ाईआ। आप दे हथ्थ विच आया हथ्थ, हथ्थ मिली वड्याईआ। जिन्हां दा मालक इक्क समरथ, दोहां दा प्रभू बेपरवाहीआ। तन वजूद अंदर रिहा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। साचे नाम दा दे के रस, रस्ता अंदरों रिहा प्रगटाईआ। निरगुण नूर जोत दे प्रकाश, परदा द्वैती रिहा ढाहीआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी दस्स के इक्को ज़ात, आत्मा परमात्मा नाल जुड़ाईआ। जिस वेले दस जनवरी सारया सन्तां महातमां सूफ़ी फ़कीरां दी इक्ठी होई इक्क जमात, जुम्मला अक्खर इक्को देणा समझाईआ। आगाह करना अग्गे की होणा वाक्यात, कवण रस्ते दुनिया चले वाहो दाहीआ। उह वेला लेखा लिख्या जाए नाल कलम दवात, शाही छहबर धुर दा नाम लगाईआ। बिना सन्तां नूर जोत दा करे ना कोए प्रकाश, जगत अन्धेरा ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब दा रखणहारा हिसाब किताब, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेला वक्त वार थित घड़ी पल नछत्र गृह समां समाज विच्चों राज विच्चों सन्तां हथ्थ फड़ाईआ।

६१६ २०

★ ६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर धीर पुर दिल्ली ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा खेल जाए ना परखा, पारखू परीख्या करे कोए ना राईआ। जुग चौकड़ी समें काल बीते बरखा, मास दिवस आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा हुक्म संदेसा नाम पैग़ाम कलमा सुणदे रहे वाली अर्शा, अर्शी प्रीतम तेरी वड वड्याईआ। धुर दी धार जणाउँदे रहे उत्ते फ़र्शा, धरनी धरत धवल धौल खेल कराईआ। सरगुण हो के निरगुण अग्गे करदे रहे अरज़ां, अज़ीज़ हो के आअज़म ओट तकाईआ। सब दीआं पूरीआं करदा रिहों ग़रज़ां, ग़रज़ आपणी ना कोए जणाईआ। तेरा नाम निधान गाउँदे रहे नाल तरज़ां, तरानयां विच शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जुग चौकड़ी बीते चोखे, चार जुग समझ कोए ना आईआ। सब नूं मिलदे रहे मौके, लोकमात तन वजूद हंढाहीआ। हुक्मे अंदर दे के आए होके, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। तेरा भाणा कोई ना रोके, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा खेल दस्सया जिस नाल प्रीतम जावे छोह के, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। उह फिर झगड़े मुका दए इक्क दो के, दुतीआ भाउ दए मुकाईआ। करे प्रकाश

आपणी लो के, लोयण लोचण नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। शब्द संदेसा दे के सोहँ सो के, सुत्तयां लए उठाईआ। प्यार मुहब्बत नाता दस्से आपणी मोह के, मोह माया विच्चों बाहर कढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी ताकत अन्तर जोह के, योद्धा सूरबीर बलवान आपणा हुक्म वरताईआ। दिती दात आपणी खोह के, ख़ालस आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सब दा लेखा होया पूरा, प्रभ पूर रिहा सर्ब ठाईआ। जिस दा बचन ना होए अधूरा, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को जोती कर नूरा, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। जन भगतां चाढ़े रंग गूढ़ा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़ा, प्रेम प्रीती इक्क दरसाईआ। दुःख मेटे जगत वसूरा, बिछरत आपणे नाल मिलाईआ। कौल इकरार सब दा कर के पूरा, गुर अवतार पैगम्बरां दए वखाईआ। सब नूं बख्शे चरण धूढ़ा, टिक्के धुर दे दए लगाईआ। सति हुलार दा सच वखा पंघूड़ा, गोदी आपणी लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंगण इक्को इक्क रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी मुक गई मुणयाद, अग्गे लेखा रिहा ना राईआ। जिस ने रचना रची आदि, उह वेखे धुरदरगाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी करदे रहे याद, याददाशत सब दी याद कराईआ। जिस ने नव नौ चार खेड़ा कीता आबाद, अन्तिम आपे वेखण आईआ। लख चुरासी भेव खुल्हाए राज़, रमता रमता आपणा परदा लाहीआ। जिस दे अग्गे सवाल नहीं कोई जवाब, जवाब तल्बी विच सारे सीस झुकाईआ। सजदयां विच कर आदाब, अदब नाल मंगी चरण कँवल सरनाईआ। सब नूं मुख़ातब हो के करे ख़ताब, ख़तो खिताबत पिछली दए चुकाईआ। जेहड़ी तुहानूं देंदा रिहा इमदाद, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म सुणाईआ। जगत धार चलाउँदा रिहा समाज, समग्री समें नाल झोली पाईआ। उस दा लहिणा देणा पूरा कर हिसाब, सब दी हस्ती आपणी हस्ती विच समाईआ। शाहो भूप बण नवाब, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारा वखाए महबूब इक्क महिराब, मुहब्बत विच परदा दए उठाईआ।

★ १० अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ स्वामी गुरचरण दास दे नाल
हेमराज मिशन पटेल नगर नवीं दिल्ली ★

आप ने सुणया है परबचन गुरचरण दास, दास्तान पिछली दिती दुहराईआ। अंदरों काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूड़

कुड़यार करना नास, जूठ झूठ देणा तजाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म काया माटी गृह मन्दिर निज वेखणी साची रास, गोपी काहन सुरती शब्द रूप बदलाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल रसना जेहवा बत्ती दन्द हरि का नाम जपणा स्वास स्वास, स्वार्थ परमारथ एका रंग रंगाईआ। सच दुआर एकँकार वेखणा पार पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर अन्तर निरंतर इक्को नूर नूर रुशनाईआ। भारतवासी जगत जिज्ञासू जाणा जाग, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना जगत तृष्ना लग्गी आग, हउमे हंगता रही जलाईआ। चार वरन अठारां बरन सारे बण जाओ सज्जण साक, पारब्रह्म ब्रह्म मेला थाँईं थाँईंआ। काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अंदर खोल्हो बजर कपाटी ताक, दूई द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। तुसीं सारे ओस प्रभू दी शाख, जिस दी शनाख़त गुर अवतार पैगम्बर शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी विच गए समझाईआ। जो सन्त साजण सच संदेसा रहे आख, रसना जेहवा ढोला बण विचोला मात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, घट घट आपणा नूर नूर चमकाईआ। जो किहा गुरचरण दास स्वामी, सच संदेसा दिता जणाईआ। इस नूं समझो अमृत बाणी, अमृत रस जाम रही पिलाईआ। झगड़ा मुकावे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। अमृत रस निजर झिरना बूँद स्वांती कँवल नाभी झिराउ अगम्मा पाणी, जिस दी धार गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती इक्को नज़री आईआ। प्रभ दा नूर ज़हूर वेखो इक्क लासानी, आसानी नाल मार्ग लओ अपनाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई अंदरों छड्ड दयो बेईमानी, शरअ शैतानी करे ना कोए लड़ाईआ। सन्तां दा बचन हिरदे नूं कानी, तीर अंदाज़ धुर दा नाम दए समझाईआ। जिन्हां ने चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दी दृष्टी अंदरों छाणी, विषयां विच वेखी कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे अन्तर बैठा वड़, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरचरण दास ने दिता सच संदेसा, भरी सभा विच सुणाईआ। परम पुरख परमात्म मन्नो सदा हमेशा, श्री भगवान इष्ट मनाईआ। जिस दा ना कोई मुछ दाढ़ी ना केसा, मूंड मुंडाया रूप ना कोए बदलाईआ। एथे ओथे दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां गगन गगनंतर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वसे हमेशा, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। श्री कृष्न भगवान दा सब नूं कराया चेता, चेतन सुरती दिती कराईआ। जूठ झूठ दा सारे मिल के त्याग दयो ठेका, ठाकर इक्को लओ मनाईआ। जो अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के नौ दुआर अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर खोल्हे भेता, भेत अगला दए समझाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी शाह सुल्तानी नूर नुरानी मर्द मर्दाना पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मन्नो इक्को नेता, नेत्रहीण रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे अन्तर निरगुण जोत धर, पंज तत करे रुशनाईआ। स्वामी गुरचरण दास ने किहा वेखो भूमिका अस्थान, धरत मात धरनी धवल रही कुरलाईआ। सब ने छड्डुया अन्तर सति धर्म दा ज्ञान, कूड़ी क्रिया लई प्रनाईआ। बाहरों नहाउँदे धोंदे करन इश्नान, अंदरों दुरमति मैल ना कोए गवाईआ। जे सखी बण के मिलणा चाहो ओसे काहन, जो घनईया धुर दा मालक नज़री आईआ। सच संदेसा सुण लओ नाल कान, अज्ञान अन्धेरा अंदरों देणा कढाहीआ। बिना साची सिख्या साफ़ पवित्र ना होवे किसे दा मकान, कूड़ी क्रिया बाहर ना कोए कढाहीआ। अज्ज दा दिवस सारे समझो महान, महापुरुषां करी शनवाईआ। हर घट वस्या वेखो राम, रमईआ हर घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा प्यार प्रीती विच्चों आप प्रगटाईआ। गुरचरण दास ने दस्सी अगम्मी गाथा, सच संदेश सुणाईआ। मानस जन्म दी पूरी कर लओ आसा, चुरासी गेड़ा लैणा मुकाईआ। अठ्ठे पहर प्रेम प्रीती अंदर ओस ब्रह्म दा करो पूजा पाठा, जो सिमरन जोग अभ्यास आपणा नाम दृढ़ाईआ। सच सरोवर अमृत रस काया मन्दिर अंदर मारे ठाठां, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग विच किसे नूं मानस जन्म दा रहे कोई ना घाटा, जो सन्त साजण मिल के आपणा मन लैण भवाईआ। बुद्धी सुणे शास्त्र दी गाथा, शत्रु अंदरों दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल रिहा कर, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। गुरचरण दास ने दिता आख, आख़र सब नूं दिता दृढ़ाईआ। सति धर्म दी नज़र आवे ना कोई शाख़, चारों कुण्ट अन्ध अन्धेरा छाईआ। मानव मानुख सुरती विच्चों जाग, मन ममता मोह तजाईआ। आपणी लेखे ला ला अज्ज दी रात, भलक दी समझ किसे ना आईआ। सन्तां दे बचन उत्ते कर विश्वास, विषयां तों खहिड़ा लैणा छुडाईआ। सति बचन सदा रखणा पास, सच सति विच समाईआ। समें अंदर पंजां मिन्टां विच सब कुछ दिता आख, अग्गे इजाज़त मिलण दी मंग ना कोए मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा काया माटी घर घर, हर घट अंदर बैठा आपणा आसण लाईआ।

★ १२ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ मुलतान सेवा सम्मती आशर्म दिल्ली ★

श्री भगवान कहे सुणो मेरे सच भगत, भगती धुर दयां दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता वधी जगत, चारों कुण्ट वेख नैण उठाईआ। प्रेम प्यार प्रीती मन्नणी साची सेवा उत्ते मात धरत, ग़रीबां अनाथां होणा सहाईआ। प्रभ ख़ालक मालक वाली दो जहान वेखणहारा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। कोझयां कमलयां उपर खाणा

तरस, दीनां अनाथां संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां राह वखाईआ। साचे भगत सुण प्रभ दे मीत, हरि मित्र प्यारा आप दृढ़ाईआ। चार वरनां अठारां बरनां सांझी कर प्रीत, गऊ ग़रीबां हो सहाईआ। अन्तर निरंतर सारे आपणी बदल लओ नीत, पतित पुनीत रूप बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म ब्रह्म पारब्रह्म साचा गावो गीत, मानस मानव मानुख जोड़ जुड़ाईआ। सति प्रेम दी पारब्रह्म सब दे काया मन्दिर अंदर धुर दी झोली पावे भीख, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। हर हिरदे अंदर सच स्वामी लैणा चीत, चितवित ठगौरी अंदरों बाहर कढाहीआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां देवे वर, धुर दी सिख्या इक्क समझाईआ। साचे भगतो सच प्यार दा करना दान, दाता दानी आप दृढ़ाईआ। जगत अभिमान मेटणा माण, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। हर हिरदे अंदर उपजे ब्रह्म ज्ञान, अन्तश्करन देणा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा सब दा होवे गान, गा गा प्रभ दा शुकर मनाईआ। सारे उठो होवो सवाधान, सेवा विच आपणा आप जगाईआ। साची सेवा सचखण्ड दवारे होए परवान, जो जीवां जंतां उपर दया कमाईआ। सब लेखा वेखो धुर अगम्मी काहन, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगतां आप सुणाईआ। साचे भगतो तुहाडे कोल हुन्दा हवन, सुगंधी सोहणी नज़री आईआ। कूड़ विकार हँकार विभचार दुराचार भृष्टाचार कर दयो विच दमन, दामनगीर इक्को लओ मनाईआ। सच फुलवाड़ी सोहणा दिसे चमन, गुल गुलशन विच आपणा लैणा खिलाईआ। इक्क दूजे दा प्रेम प्यार मुहब्बत विच साचा पकड़ो दामन, पल्लू पल्लू नाल जुड़ाईआ। अनाथां ग़रीबां निमाणयां दा माण करना एह संदेसा देवे त्रैदरसी त्रैभवन, धुर दा मालक दया कमाईआ। सेवा विच सब दा कटया जावे अवण गवण, लख चुरासी जम दी फाँसी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां धुर दा नाम इक्क इकल्ला झोली पाईआ। साचे भगतो होणा त्यार, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अग्ग बुझाउणी अंग्यार, प्रेम प्रीती मेघ इक्क बरसाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों होई दुख्यार, जीव जंत रहे कुरलाईआ। सारे मिल के सब दा करो सुधार, सुद्ध बुध बिबेक इक्को रंग वखाईआ। दीन मज़्हब दी कोई ना करयो खार, ऊँच नीच भरम ना कोए भुलाईआ। साचयां भगतां दा सदा सच्चा दरबार, एथे ओथे दो जहानां सोभा पाईआ। अष्टभुज आदि शक्ति देवे वर कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे बाहर, निर्मल निरवैर निराकार आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना श्री भगवाना वाली दो जहानां लोकमात मार झात, जन भगतां झोली पाईआ। जन भगतो सारे इक्क

दूजे नाल करो प्यार, द्वैत रहिण कोए ना पाईआ। रीती नीती बदल दयो संसार, संगठन आपणा दयो वखाईआ। दुःख भुक्ख दुखीआ करे ना कोए पुकार, दुःख दा साधन प्रभ नाम निधाना सब दी झोली पाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल ओसे दी करो याद, जो सुणनहार फ़रयाद, देवणहारा नाम दाद, वस्त अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। जिस कारण इक्ठे होए आज, तुहाडी सहायता करे सब दा गुरू महाराज, जिस दी हर हिरदे अंदर आवाज़, सोई सुरती सब दी लए जगाईआ। ओसे दे दवारे ते सारे खड़े मुहताज, भिखारी हो के मांगत हो के आपणी झोली डाहीआ। सो साहिब स्वामी सब नूं देवणहारा आपणी दात, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा जन्म कर्म करे वड सुभाग, भागां वाल्लयो भाग तुहाडा तुहाडी झोली पाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो भगत जन सन्त, सति शब्द नाम दृढ़ाईआ। तुहाडा मालक एकँकार इक्को कन्त, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गढ़ तोड़ दयो हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आपणा परदा लाहीआ। सेवा करो याचक हो के सर्ब जीव जंत, दुखीआ दर्द विच ना कोए कुरलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दा लहिणा देवे अख़ीरी अन्त, अन्तश्करन खोज के लेखा सब दा वेख वखाईआ। भावना विच प्रेम विच भगती विच साधना विच चाढ़े अगम्मी रंगत, रंग निराला दीन दयाला आप चढ़ाईआ। जिस दी सच प्रीती मंगदे मंग हो के मंगत, सो साहिब सतिगुर सब दी आसा मनसा पूर कराईआ। अन्तिम झगड़ा मुकाए जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज चारे खाणी लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगतां सच संगीत अन्तर आत्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एको एक सुणाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत मेरे मातलोक नन्ने बच्चे, बचपन तेरा दयां बदलाईआ। अंदरों हो जाओ सारे सच्चे, कूड़ कुड़यारा बाहर कढाहीआ। भाग ला लओ काया माटी साढे तिन्न हथ्थ भाण्डे कच्चे, कंचन गढ़ लैणा बणाईआ। सब नूं वेखो इक्को अक्खे, द्वैत रहिण कोए ना पाईआ। जो मार्ग सन्त सतिगुर दस्से, उस पर चल के आपणी खुशी लैणी बणाईआ। अनाथां दी सेवा कारण करके विद्या दा पालन करके सारे सच दुआर नूं आओ नठ्ठे, जित्थे भगत भगवान मिल के आपणी खुशी बणाईआ। जिस कारण वड्डे छोटे बाल बिरध होए इक्ठे, इक्ठे हो के उह सेवा आपणी आपणे कंधे लैणी उठाईआ। एसे कर के सुखी सच जहान जावण नठ्ठे, राह विचकार अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा नाम वर, वस्त अगम्म अथाह बेपरवाह अन्तर अन्तर निरंतर आपणी दए टिकाईआ।

★ मुलतान सेवा सम्मती, स्वामी कृष्ना नंद स्वामी गोबिन्दा नंद हरदुआर वालयां नाल ★

अमृत प्रेम लैणा पीणा खाण, कूड़ी तृष्न मिटाईआ। घर ठाकर स्वामी सज्जण मिले आण, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। साची सेवा साचे ठाकर होए परवान, जो परवाना नाम संदेसा परमात्म आत्म इक्क जणाईआ। सोहे सच भूमिका अस्थान, जिस गृह सन्त सुहेला चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। मुलतान समती सब दा मेल, भगत भगवान दिता जणाईआ। जोत जगाउणी बिन बाती तेल, निरंतर अन्तर कर रुशनाईआ। ठाकर मिलाउणा धुर दा सज्जण सुहेल, जो हर घट रिहा समाईआ। जगत वेख्या अचरज खेल, पारब्रह्म ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। जे थोड़ा जेहा समां सन्तां नाल मिल के सन्त हो गया विहल, वेला वक्त खुशीआं विच लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। सन्त मिले कुछ सुणना कहिणा, आपणी पवित्र रसना दिता जणाईआ। भेव खोल्हणा जो अन्तर वेख्या नैणां, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जिस दवारे भगत भगवान चरण कँवल रहिणा, सरन मिले सरनाईआ। सो धाम जिस गृह सति सरूप हो के बहणा, तन वजूद माटी ख़ाकी नाता रही तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्को घर प्रगटाईआ। मुलतान समती सच्ची सेवादार, सेवक सेवक सेवा विच लगाईआ। सोई सुरती कर कर ख़बरदार, शब्दी शब्द नाल उठाईआ। अन्तर आत्म दे आधार, माया ममता मोह मिटाईआ। साचे भगतो भगवन निज नेत्र करो दीदार, जग लोचण बन्द कराईआ। मन्दिर चढ़ो सन्त सहारे जिस नूं दुनिया कहे दुष्वार, औखी घाटी रहिण ना पाईआ। तेरां दा लेखा मेटे इक्को वार, जे प्रभ आपणी दया कमाईआ। स्वच्छ सुहञ्जणा आदि निरँजणा वेखो इक्क दरबार, जित्थे जोती जाता पुरख बिधाता बैठा डगमगाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मंगलाचार, गोपी काहन इक्को नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा एहो सीता राम, राम सीता सीता राम, साची सूरत अकाल मूर्त सोभा पाईआ। जो जुग चौकड़ी साचे सन्तां शब्द अगम्मी नाम निधान धुर दा कलमा देंदा रिहा पैग़ाम, निरअक्खर विच्चों निष्अक्खर दए समझाईआ। सच संदेसा नर नरेशा देणा साचे भगतां बिना कान, काया मन्दिर अंदर घर साचे आप प्रगटाईआ। ओसे हुक्म अंदर साचे सन्त जीव जंत सारयां इक्ठे कर मिलाण, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर बहाईआ। सेवा करनी एहो प्रभू दी भगती महान, भगती विच्चों शक्ती विच्चों साख्यात आपणा रूप दरसाईआ। जिस दे नाल सब दी होवे कल्याण, लख चुरासी चुक्के आण जाण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साचे मन्दिर सच दुआर सचखण्ड वसो ओस मकान, जिस घर विच्चों होई जुदाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा सन्तां हथ्थ फड़ाईआ। सन्त जी सेवा कर कर सारे थक्के, थकावट विच वेखी जगत लोकाईआ। पुस्तक पढ़ पढ़ सारे अक्के, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मक्के काअबे भज्जे फिरन सारे करदे हज्जे, हज़रत मिल्या ना बेपरवाहीआ। जिन्हां नूं सन्त साजण सतिगुर साचा मार्ग दस्से, सोई सुरती दए जगाईआ। तीर मारे अणयाला कसे, तिक्खी मुक्खी धार प्रगटाईआ। जो आप ने मार्ग दस्से अठ्ठे, तेरां तेरां तेरां लेखा भगत भगवन्त नाल जुड़ाईआ। जित्थे दूजा होर कोई ना वसे, कामी क्रोधी लोभी हँकारी विकारी भृष्टाचारी दुराचार नज़र कोए ना आईआ। एका रूप शाहो भूप सति सरूप आत्म परमात्म परमात्म आत्म मार्ग राह धर्म दुआर दस्से सच्चे, सति स्वामी अन्तरजामी आपणा आप आपे दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतां दे अंदर वड़ वड़ हस्से, कर प्रकाश कोटन रवि सस्से, दुरमति मैल द्वैत वाली कटे, साचा नाम वखाए धर्म दवारे हट्टे, जित्थे कीमत लग्गे कोए ना राईआ। सो मुलतान निवासी खेल अबिनाशी साची रासी सेवा विच सेवक दासी, एह खेल अजब तमाशी, जग नेत्र जिज्ञासूआं नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा जिस दी सुरती देवे जोड़, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। लग्गी प्रीती निभ जाए तोड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। अंदर मंत्र फ़ुरना फुरे फोर, फ़ुरने बाहरों बन्द कराईआ। पंज विकार रहे ना चोर, शब्द नाद धुन शनवाईआ। कूड़ अन्धेरा मेट घनघोर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हउमे हंगता ना पावे शोर, शरअ विच्चों बाहर कढाहीआ। आपणी धार कर प्यार आत्मा परमात्मा आपणे अग्गे लवे तोर, तुरत आपणा घर वखाईआ। जिस दी आदि तों बद्धी डोर, जुग चौकड़ी सक्या ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस नूं देवे आपणा नाम निधान मथोर, मिथ्या सर्ब वखाईआ। आप दी पवित्र रसना किहा दृष्टीमान, दृष्ट अंदरों दिती मिलाईआ। घर स्वामी मिल्या भगवान, मन्दिर बहि के आपणा हुक्म सुणाईआ। बिना विद्या तों दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दिता चुकाईआ। अठ्ठे पहर शब्द धुन धुनकान, धुन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत रस दे के पीण खाण, निजर झिरना कँवल नाभी दिता चुआईआ। साचे सन्तां नाल मेला होया आण, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। एसे कर के दस जनवरी करनी पए परवान, परवाना शब्द नाम हथ्थ फड़ाईआ। साचा देणा सच वख्यान, विषयां विच्चों दुनिया नूं बाहर कढाहीआ। सारयां नूं दस्स के सचखण्ड दरगाह साची भूमिका इक्क अस्थान, जित्थे पतिपरमेश्वर पारब्रह्म परवरदिगार सांझा यार बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट अंदर रिहा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ।

★ २३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण कहे सुणयो इक्क संदेसा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्क सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण कहे जो हुक्म रहे हमेशा, नित नवित बिन वार थित आपणी कार कमाईआ। एकँकार कहे सचखण्ड दुआर वेखो अगम्म देसा, जित्थे दीवा बाती कमलापाती एका जोत नूर करे रुशनाईआ। आदि निरँजण जो वटावणहारा वेसा, निरगुण निरवैर निराकार करनी दा करता आपणी कार कमाईआ। अबिनाशी करता देवणहारा धुर संदेसा, सति सरूप शाहो भूप हुक्मे अन्तर हुक्म प्रगटाईआ। श्री भगवान निरगुण निराकार बण के सब दा नेता, निराधार आपणा खेल वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दा पूरा कर के ठेका, ठाकर हो के सागर हो के गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणे विच समाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर लओ चेता, चेतन सुरत अकाल मूर्त इक्क इकल्ला आप उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर प्रभ दा वेखो वेस अनेका, अकल कलधारी आपणी खेल प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द दुलारा एकँकारा प्रगट कर के हक बेटा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सचखण्ड दुआर इक्क इकल्ला एकँकार आपणा हुक्म वरताईआ। सो पुरख निरँजण कहे धुर दा हुक्म सुणो एक, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी रखदे आए टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सुणदे रहे शब्द अगम्मी संदेश, सति सतिवादी करदा रिहा पढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल बणाउँदे रहे लेख, लेखक पेखक आपणी कार कमाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी करनी दा करता करे अगम्मी खेल, ख़ालक ख़लक आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा इक्को इक्क सुहाईआ। सो पुरख निरँजण कहे गुर अवतार पैगम्बर उठो करो सलाम, डण्डावत बन्दना सीस झुकाईआ। धुर दा हुक्म सुणो पैग़ाम, संदेसा धुरदरगाहीआ। जिस ने बदल देणा नज़ाम, नौबत नाम हक सुणाईआ। दो जहानां कर के इंतज़ाम, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। सति सच होण ना देवे बदनाम, बदी नेकी विच बदलाईआ। साचा हुक्म हुक्म अंदर करे कयाम, कयामत विच आपणी कार कमाईआ। मज़्हब दा रहे ना कोए गुलाम, ग़ुरबत अंदरों देणी कढाहीआ। सुरती अंदर रहे ना कोए नादान, शब्दी शब्द डंक सुणाईआ। मानस मानव मनुखता विच दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा देणा चुकाईआ। निरगुण नूर जोती जोत कर महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। धुर दा शब्द दे धुनकान धुन आत्मक राग प्रगटाईआ। अमृत रस दे के पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख दए गवाईआ। सच धर्म दा बणा के इक्क विधान, विद्या दा वायदा पूर कराईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण आपे आप प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण कहे सुण लओ हुक्म अगम्मा, हरि अगम्मढ़ी कार कमाईआ। खेल करे श्री भगवंना, भगवत भगौती धुर दी धार जणाईआ। एका जो बदल दिता कन्ना, कलाम सब दी रिहा मिटाईआ। जगत वासना रहे कोई ना बन्ना, बाहमी मेला लैणा मिलाईआ। एका नूर चाढ़ के चन्ना, निज नेत्र होवे रुशनाईआ। सुणो संदेसा बिना कन्नां, हरि करता आप प्रगटाईआ। जो लेखा लिख्या चौदां सौ तीह अंक दा पन्ना, पुनह पुनह मंग मंगाईआ। ओसे दी धार खेल होणा नवां, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा पन्ध मुकाईआ। जेहड़ी धारों गोबिन्द जम्मा, प्रगट हो के खेल वखाईआ। जोती नूर जगा के शमां, शम्मस तबरेज़ दा लेखा पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। सो पुरख निरँजण कहे सुणो पैगम्बर अवतार, अवतारी हरि जणाइंदा। जिस दा हुक्म सदा जुग चार, निरगुण सरगुण आप सुणाइंदा। सो वेखे विगसे वेखणहार, पतिपरमेश्वर आपणी कल प्रगटाइंदा। जिस दी करदे रहे इंतज़ार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग परदा आप चुकाइंदा। सो साहिब सतिगुर शब्दी धार करे ख़बरदार, बेख़बरां आप उठाइंदा। इक्क इकल्ला वेखो अगम्मी यार, जो सत्थर यारड़ा आप हंढाइंदा। दो जहानां बण के मुखत्यार, इख्त्यार सब दे आपणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग पन्ध आपणा हुक्म प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण कहे हुक्म इक्क अख़ीरी, आख़र दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ी शरअ कट ज़ंजीरी, ज़ाहर ज़हूर करां रुशनाईआ। किसे दी रहे कोई ना पीरी, पैगम्बरां परा पसन्ती मद्धम बैखरी लेखा दयां मुकाईआ। धुर दा हुक्म शहिनशाह चमकाए इक्क शमशीरी, तिक्खी धार निरँकार आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। सच संदेसा सुणो नाल यकीन, यक्के बाद दीगरे आप सुणाईआ। सब नूं मन्नणी पए इक्क ताअलीम, तुलबे हो के सीस निवाईआ। अन्त अख़ीर ना होणा ग़मगीन, ग़मी खुशी तों बाहर कढाहीआ। जुग बदलणा खेल कदीम, कुदरत दा करता आप सुणाईआ। झगड़ा रहे ना नर मदीन, मुद्दा इक्को नूर इलाहीआ। रज़ा मन्नणी पए या मुबीन, मुफ़लिसां होए सहाईआ। धुर दा हुक्म सुणो प्राचीन, परचयां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल करे करतार, करनी करता आप कमाईआ। उठ वेख मुहम्मद यार, मूसा ईसा वज्जे वधाईआ। तेई अवतार कर प्यार, पारब्रह्म रिहा सुणाईआ। नानक गोबिन्द मेरी धार, धुर दा नूर जोत रुशनाईआ। सतिगुर शब्द सच्चा शाहकार, शहिनशाह वड्याईआ। की खेल होणा विच संसार, संसारी

भण्डारी सँघारी देण दुहाईआ। देवत सुर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। कलयुग कूक करे पुकार, चार कुण्ट रिहा सुणाईआ। किरपा कर सांझे यार, दर तेरे आस रखाईआ। मैं प्रभू तेरा बच्चा होणहार, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। सृष्टी दी दृष्टी कीती विभचार, कूड़ कुकर्म जगत लोकाईआ। मेरे सिर ते दे प्यार, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। तेरे नालों बणा के सर्ब ग़द्दार, गर्दश विच दिते भवाईआ। जगत विद्वानां बणा के ठग्ग चोर यार, ज्ञान दा खहिड़ा दिता चुकाईआ। एहो जेहा बच्चा तैनूं लभ्भणा नहीं होणहार, जो सब दी बुद्धी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरे बचन मुल्ल दे, कीमत लैणी पाईआ। औह वेख अगले साल ईसा मूसा इक्क दूजे नाल घुलदे, होवे सोहणी लड़ाईआ। मेरे बचन फुल्ल वांग किरदे, किरन किरन तेरा नूर चमकाईआ। तेरे कौल इकरार चिर दे, सदी चौधवीं दे भुगताईआ। लिखे लेख कदे ना मिटदे, मेटणहारा नज़र कोए ना आईआ। लहिणे पूरे कर दे गोबिन्द वाली चिट दे, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। झगड़े मुका दे पत्थर इट्ट दे, तुध बिन सीस ना कोए झुकाईआ। तेरे खेल नवित नित दे, निज नेत्र देणे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। कलयुग कहे मेरे साहिब सच्चे सुल्ताना, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। कुछ लेखा वेख जगत अफ़गाना, आफ्त आपणा हुक्म बणाईआ। तेरा हुक्म होवे दीवाना, दीवानी फ़ानी करे सर्ब लोकाईआ। सच संदेसा दे पैग़ामा, हुक्म कायनात सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे निशाना, निशाना झूठ रहे ना राईआ। उम्मत बन्नू गाना, नबी रसूल सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ले इक्को देणा उपजाईआ। पुरख अकाल कहे सुण कलयुग मेरे बच्चे नन्हे, चौथे जुग दयां सुणाईआ। शब्दी हुक्म सुण आपणे कन्ने, कलमे तों बाहर इक्क पढ़ाईआ। सृष्टी साहिब सुल्तान हो के डंने, डण्डा धुर दा हथ्थ उठाईआ। कूड़ कुड़यारे चारों कुण्ट भन्ने, बचया रहिण कोए ना पाईआ। शाह सुल्तान करे अन्न्हे, नेत्रहीण होवे लोकाईआ। खेल वेखां अर्श फर्श निरगुण धार ज़िमीं उपर थल्ले, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे की मुहम्मद आशा कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। ईसा ध्यान करे दिशा लहिंदी, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। मूसा लग्गी वेखे मैहन्दी, कवण रंग रंगाईआ। तेई अवतार कहिण कवण धार अन्तिम वहिन्दी, वहिण आपणा रही बणाईआ। नानक गोबिन्द कहे जो भाणा आई सहिंदी, हुक्मे विच सीस झुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सो साचे धाम सचखण्ड दुआर चरण कँवल इक्क

रैहन्दी, रह के ख़ुशी मनाईआ। कलयुग कहे मेरी कला कदे ना होवे ढहिंदी, ढाह ढेरी ख़ाक ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे सुण कलयुग छोटे लाल, लालन दयां दृढ़ाईआ। मुहम्मद लेखा लिख्या कमाल, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। ईसे मंगया इक्क दलाल, विचोला धुर दा ल्या बणाईआ। मूसा हो के हस्ती विच्चों हलाल, हकुलयकीन ल्या बणाईआ। तेई अवतार दे के नाम पैग़ाम, संदेसा सच सुणाईआ। नानक गोबिन्द धुर दा हुक्म कर परवान, परवाने गुरमुख लए प्रगटाईआ। जिन्हां दा लहिणा विच जहान, दीन दुनी तों बाहर रिहा रखाईआ। तिन्हां मेला मेल विच जहान, जहालत अंदरों दए कढाहीआ। साफ़ कर के काया काअबा हक मकान, जलवा नूर करे रुशनाईआ। नज़री आए इक्क अमाम, आमद विच आपणा परदा लाहीआ। मन दा रहे ना कोए गुलाम, सुरती शब्द धुन शनवाईआ। अमृत रस प्या के जाम, जमां तों लए छुडाईआ। पूरब लहिणा मुका के तमाम, तमअ दी तृखा दए बुझाईआ। साची मंज़ल दस्स आसान, रस्ता इक्को इक्क चढ़ाईआ। जिस गृह मिले श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। सति सति दा झुल्ले निशान, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार इक्क सरनाईआ। कलयुग सुण धुर दी अगम्मी बात, बातन दयां जणाईआ। जो गुर अवतारां पैगम्बरां शब्द अगम्मी जणाई गाथ, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। तिन्हां दा देणा धुर दा साथ, सगला संग बणाईआ। जो गोबिन्द गया आख, आख़र ओहो खेल वरताईआ। प्रगट हो के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर परदा रिहा चुकाईआ। जन भगतां अंदर कर के वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म कर के दास, दास्तान अगली रिहा सुणाईआ। साचे मण्डल वखा के रास, गोपी काहन सुरती शब्द नाच नचाईआ। प्रगट हो के पुरख अकाला आप, आप आपणा परदा लाहीआ। सति सुहेला दे के जाप, इक्क इकेला वेख वखाईआ। रूह बुत्त कर के पाक, पतित पुनीत रिहा बणाईआ। बजर कपाटी खोल्ह के ताक, निज नेत्र लोचण नैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रहिबर नूर अलाहीआ। कलयुग सुण हुक्म इक्क निक्का, निक्की निक्की धार जणाईआ। तेरी क्रिया दा बदल देणा सिक्का, सिख्या अगली आप समझाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां जेहड़ा नाम शब्द संदेसा दिता, लोकमात जगत पढ़ाईआ। उस तों अगला खेल अनडिठ्ठा, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब दा बणना हकीकी पिता, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जेहड़ा मरे ना जम्मे सड़े ना विच किसे चिखा, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बरां लेख लिखा, कलम शाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। उस ने चार वरन अठारां

बरन चार कुण्ट दहि दिशा देणी साची सिक्खा, सिख्या विच साख्यात नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां पूरी कर के इच्छा, इच्छत पूर आप हो जाईआ। नाम भण्डारा पा के भिच्छा, भिक्खक आपणे लैणे प्रगटाईआ। जेहड़ा साहिब सुल्तान श्री भगवान जग नेत्र नूर नुराना शाह सुल्ताना किसे ना दिसा, दहि दिशा करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। कलयुग कहे, प्रभ, मुहम्मद मेरे वल तक्के नाल गुस्से, गहरी अक्ख बणाईआ। कुछ रोस चढ़या मूसे, मुक्खों बोल बोल सुणाईआ। ईसा दूर दुराडा दिसे, आपणी करवट रिहा बदलाईआ। तेई अवतार होए छित्थे, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। नानक गोबिन्द कढ्ढ के धुर फ़रमान दे चिट्ठे, सब नूं रहे सुणाईआ। क्यों सदी चौधवीं पिट्टे, पटणे वाला करे अगवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सदी सदीवी बीते, वेला वक्त दए गवाहीआ। जिस ने तुहानूं धरती उत्ते घसीटा नीचे, नीचों ऊँच दए बणाईआ। जो खेल तमाशे दीन दुनी विच कीते, करनी दा करता वेख वखाईआ। जो पिच्छे जुग चौकड़ीआं वाले बीते, आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गे चलणी प्रभ दी इक्को रीते, मन्दिर मसीते खहिड़ा दए छुडाईआ। इक्को कलमा दए हदीसे, हर हिरदे करे पढ़ाईआ। जिस दे नाम निधान आबेहयात अमृत रस बाटे पीते, पीत पीतम्बर ओहो रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो हुक्म इक्क जगदीसा, जगदीशर रिहा दृढ़ाईआ। लेखा मुकणा मूसा ईसा, इस्म आअज़म इक्को रिहा प्रगटाईआ। मुहम्मद मुहम्मदी वेला बीता, महबूब करे रुशनाईआ। तेई अवतार त्रैगुण तों हो अतीता, त्रैभवन रिहा समझाईआ। नानक गोबिन्द निरगुण धार शब्दी रूप ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह खेल प्रभू पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा आपे कीता, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सब ने भाणा मन्नणा मीठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया वजूद तन माटी ख़ाक तपणा अंगीठा, माया ममता मोह विकार हँकार अग्नी अग्ग जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा आप उठाईआ। कलयुग कहे प्रभू मुहम्मद वट्टे घूरी, गुस्से नाल डराईआ। ईसा कहे की जुग बदलणा ज़रूरी, परवरदिगार दे समझाईआ। मूसा कहे अग्गे किहड़ी करीए मज़दूरी, कवण चाकर रूप वटाईआ। तेई अवतार कहिण अन्त अख़ीर होई मजबूरी, मौजूदा हो के हुक्म सुणाईआ। नानक गोबिन्द कहे प्रभ जोत अगम्मी नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। सतिगुर शब्द कहे सब दी मुणयाद होई पूरी, पूरना प्रभ जू रिहा पाईआ। आपणी आपणी चुक्क लओ भूरी, भरम अग्गे रहे ना राईआ। पैंडा आया नेड़ मंज़ल रही ना दूरी, दूर दुराडा आप जणाईआ। कलयुग शरअ रहिण नहीं देणी कूड़ी, कूड़ कुटम्ब देणा मिटाईआ। इक्क पुरख

अकाल दीन दयाल दी सरन मंगणी धूढ़ी, धुर दा मस्तक लेख दए बणाईआ। कोई सवाणी गुरमुख रहे ना मुग्ध मूढ़ी, मूर्खां इक्को रंग रंगाईआ। सब दी सफा उठणी फूड़ी, फोकट वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी बेपरवाहीआ। कलयुग कहे प्रभू हज़रत मुहम्मद अक्खां कढ्ढे लाल, तेरे लाल रिहा डराईआ। ईसा कहे अग्गे बन्द हो जाणा हलाल, हलाली वाला रहिण कोए ना पाईआ। मूसा कहे सब दे सिर उत्ते कूकदा काल, काल नगारा डंक वजाईआ। तेई अवतार कहिण केहदी करीए संभाल, सम्भल पैर ना कोए टिकाईआ। नानक गोबिन्द कहे एह खेल पुरख अकाल, अकल कलधारी आप कराईआ। सतिगुर शब्द कहे जुग चौकड़ी वक्खरी चाल, चाल निराली आप प्रगटाईआ। सतिजुग साची सति धर्म बणा के धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक्क रखाईआ। जित्थे क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को मिले माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला गाण, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। सति सतिवाद झुले इक्क निशान, निशाने निछावर कर के गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस झुकाईआ। सति सति दा इक्क होवे इस्लाम, आज़म दा इस्म इस्मे आअज़म अज़ीम उल शान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। कलयुग कहे मुहम्मद किहा वलीउल अल्लाह, अलाह वाहिद वज़ीद वज़र्रे वज़ूर वज़गउल विज़ा नज़री आईआ। ज़वीले हक शरीके कज़ूल कज़ले कमीं ग़मे ज़ूल, ज़मीम उल ज़मां शहिनशाहीआ। आअज़मे अज़ूल, कसमे कबूल हज़रते अज़ूल, अज़ीदे अज़ां वज़ीदे ज़वां, ज़ीरे निवां नवाज़श विच सरनाईआ। चश्मे नज़ीं, गोशे वज़ीं, तहाज़े उलीं, कुलाज़े कुलू, मुहताजे मलूह, बेमुहताजे नूरे नूर इलाहीआ। जयाउल अहू, कयाउल ज़हू, बेज़ाहिल ज़हू, ज़ुमतायल ज़मू, ज़ीरे ज़ाद, अर्शादे शाद नज़री आईआ। मुसनफ्फे कुलू, मुनहरफ़े रू, बतरफ़े ज़रू, ज़रा ज़रा ज़र्रे ज़र्रे ज़ीनो सार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पर्दा ओहला आप चुकाईआ। कलयुग कहे मुहम्मद कहे कज़ीने कुज़ा, कुज़ते कज़िते कज़ोदे कुराशानीआ। कुशादे खुशामद विच लोकाईआ। ज़ैहतीरे ज़ोहदो ज़मीरे बोधो, अख़ीरे नज़ीमो, ज़कीते ज़कीते ज़कालो, यके यक तरफ़ सोभा पाईआ। शाहे शोशिश अले अलाह हू, वले वली उल कले कल उल मले, तुला उल तले, दीन उल दले, दरे दरबार दरगाह साची इक्क रुशनाईआ। ख़ज़ीबो ख़रा, महबूबो नरा, नज़ीबो शरअ, ग़ुरबत हैरां, हरामे अमां, कलयुग पैग़ाम, बाआराम रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लेख लेख विच कर के रवां, रवानगी परवानगी एहसानगी विच एहसान अग्गे ना कोए रखाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ सुखदेव राम दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

जन्म मरन दा सब दा लेखा, लख चुरासी वण्ड वण्डाईआ। काल महाकाल बोली विच लै के ठेका, लिख्त राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। चित्रगुप्त सब दा रखे चेता, करनी करमां वेख वखाईआ। तत वजूद सब नूं बदलणा पए भेखा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फेरी पाईआ। जिन्हां नूं साहिब सतिगुर बणाए आपणा बेटा, मेहर नज़र बेनज़ीर उठाईआ। नज़री आवे नेतन नेता, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। सुरती शब्द करा के हेता, हितकारी हो के जोड़ जुड़ाईआ। अन्तिम लै के जावे आपणे देसा, देस दसन्तर पन्ध मुकाईआ। जिस घर वसदा रहे हमेशा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा डेरा लाईआ। गुरमुखां वखा के इक्को सौहरा पेका, प्रीतम आपणी गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म मरन दा लेखा सदा मुकाईआ। लेखे विच जम्मदे मरदे, मुरदी जीव जंत अख्वाईआ। अग्नी नाल तत्तां वाले सड़दे, मिट्टी ख़ाक सिर छुपाईआ। जो साहिब सतिगुर अन्तर निरंतर याद करदे, साह स्वास विच्चों बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दे, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। उह मंज़ल हकीकी चढ़दे, पन्ध अग्गे रहे ना राईआ। दर्शन इक्को महबूब करदे, जो नज़रे नूर खुदाईआ। खेल वेख अगम्मी घर दे, गहर गम्भीर सीस झुकाईआ। सो सन्त सुहेले मंज़ल आपणी आपे वरदे, वारस इक्को सोभा पाईआ। लेखे विच कदे ना जम्मदे मरदे, मुरदे हो के मुरीद मुर्शद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक्क सरनाईआ। जन्म मरन दा लेखा मुक्कदा, मुकम्मल मिले इक्क सरनाईआ। जिस ने नाम गाया इक्को तुक दा, तुख्म तासीर गया बदलाईआ। आत्म परमात्म विछोड़े वाला पन्ध चुक्कदा, चारों कुण्ट नूर रुशनाईआ। सतिगुर किरपा गुरमुख मन कल्पणा विच कदे नहीं दुक्खदा, दुखियां दारू आपे लए कराईआ। जिस वेले नाता जुड़ जाए भगत भगवान पिता पुत्त दा, कलेश दरवेश नेड़ कोए ना आईआ। मार्ग मिल जाए इक्को सुच्च दा, सति सतिवादी होए सहाईआ। जन्म कर्म दा लेखा जगत नालों टुट्ट दा, टुट्टी गंढु आत्म परमात्म आपणे नाल बंधाईआ। सदा वक्त सुहञ्जणा साचे घर होवे सुख दा, अनन्द अनन्द विच वज्जे इक्क वधाईआ। ओन्हां दा पैंडा एथे ओथे सदा मुकदा, जिन्हां मुकम्मल मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरि सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख भगत भगवान हो के आपे चुक्क दा, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ जागीर कौर दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

जन्म कर्म दा लेखा जिस मुकाउणा, मुक्ती तों परे मिले सरन वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्क मनाउणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। साची सरन सच स्वामी अन्तरजामी इक्क तकाउणा, दूजा ध्यान ना कोए लगाईआ। परमात्म आत्म विच वसाउणा, नूर नुराना नूर कर रुशनाईआ। धुर दा ढोला गीत गाउणा, गहर गम्भीर सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिस देवे माण वड्याईआ। जन्म कर्म दा लेखा सदा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जो सतिगुर शब्द चढ़ गया बेड़े, जीवण नईआ नौका पार कराईआ। चुरासी घुंमण घेर कोई ना घेरे, जम की फाँसी ना कोए ना सज़ाईआ। दीन दयाल करे सद मेहरे, निगाहबान मेहर नज़र उठाईआ। पूरब लेखा सर्ब नबेड़े, लहिणा अवर रहे ना राईआ। एका रंग रंगाए गुरू गुर चेरे, चेला गुर इक्को धार समाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पार कर के अन्ध अन्धेरे, सति जोत करे रुशनाईआ। सति दुआर एकँकार जेहड़े आ गए वेहड़े, धर्म अस्थान भूमिका सोई सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। जन्म कर्म दा लेखा रहे ना बाकी, हिसाब हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। किरपा करे श्री भगवान पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणी दया कमाईआ। भाग लगाए तन वजूद माटी ख़ाकी, ख़ालस आपणा रंग वखाईआ। आत्म परमात्म दस्स के सच्ची ज़ाती, निरगुण निरगुण मेला मेले सहिज सुभाईआ। एह खेल अगम्मा कमलापाती, पतिपरमेश्वर आप जणाईआ। पूरब जन्म लहिणा देणा करमां वेखे बाकी, पाकी पाक आपणा खेल खिलाईआ। बिन साहिब सतिगुर मुके ना किसे वाटी, अधवाटे दिसे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूंजी जन्म कर्म दी वेखे रासी, रहिबर हो के रस्ता आपणा दए वखाईआ।

६३१ २०

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

कर्म कांड दा लेखा होवे नास, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी दया कमाईआ। जन भगत बणा के दासी दास, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। नाम जपणा बिन जेहवा रसन स्वास, अजपा जाप आप प्रगटाईआ। अमृत दे के बूँद सवांत, निजर झिरना इक्क झिराईआ। शब्द अगम्मी वजा के नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। मन मनसा मेट के वाद विवाद, विख अमृत रूप बदलाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए

चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुरदा बणा साथ, सगला संग निभाईआ। आत्म परमात्म पूजा पाठ, सिमरन इक्को इक्क वखाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़्ह्ब ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन्म कर्म दा लेखा करे पूरा, पूरन सतिगुर बेपवराहीआ। जिस दा जोती जोत अगम्मी नूरा, नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सर्ब कला भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां आपणे नाम दी दे के तूरा, तुरीआ तों अग्गे परदा दए उठाईआ। सहाई होवे जगत जगदीश योद्धा सूरबीरा, बीरता विच बीर रस आपणा इक्क चखाईआ। जगत जहान शरअ कट ज़ंजीरा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी दस्स अगम्मी तदबीरा, तकरीर तहिरीर दा लेखा दए चुकाईआ। खेल वखावे गहर गम्भीरा, बेनज़ीर नज़रीआ आपणा इक्क बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। कर्म दा लेखा रहे ना तन वजूद, माटी ख़ाक ना कोए सजाईआ। जिन्हां मिले हक महबूब, मुहब्बत विच मीआं बीवी आपणा रंग रंगाईआ। घराना दस्स अर्श उच्च अरूज, आलीजाह परदा दए उठाईआ। मंज़ल दस्स इक्क महिदूद, पैंडा अगला दए चुकाईआ। जिधर वेखण ओधर मौजूद, चार कुण्टां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। जन्म कर्म दा लेखा लहिणा देणा तुट्टे नाता, नर नरायण देवे सरनाईआ। किरपा करे पुरख बिधाता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। गुरमुखां दे के धुर दा साथा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां बण के पिता माता, स्वामी अन्तरजामी आपणी गोद टिकाईआ। आत्म जोती दा बण के जाता, जगजीवण दाता देवे माण वड्याईआ। धुर फ़रमान संदेसा देवे साचा, सच करनी आप दृढ़ाईआ। जीउ पिण्ड तन ख़ाकी माटी काचा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर हो के देवे इक्क भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। धर्म राए दा साफ़ करे खाता, चित्रगुप्त लेख ना कोए प्रगटाईआ। काल मारे कोई ना डाका, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। गुरमुख नूर नूर विच्चों प्रकाशा, प्रकाश नूर जोत विच समाईआ। कर्म दा लेखा रहे कोई ना बाका, बकलम खुद लिखण वाले सारे दए मुकाईआ। गुरमुखां पूरा कर के जन्म जन्म दा घाटा, घाटी मंज़ल आपणी दए चढ़ाईआ। अग्गे मुक्के चुरासी वाली वाटा, पाँधी बण के अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फेरा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां वसे सदा पासा, पारब्रह्म प्रभ आपणे घर वसाईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ हरी सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ★

कर्म कहे मेरा जुग जुग डूँग्घा खाता, ख़तरे विच वेखां सर्ब लोकाईआ। चार जुग सब दीआं सुणदा रिहा बातां, बिन सरवणां सुण के ख़ुशी बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पढ़दा रिहा गाथा, जो गहर गम्भीर रिहा पढ़ाईआ। फिरदा रिहा उत्ते धरनी धरत धवल जिस नूं दुनिया कहे माता, मात पित समझ कोए ना पाईआ। धुर फ़रमान श्री भगवान मन्नदा रिहा आखा, आख़रकार विहार अंदर आपणी कार कमाईआ। परखदा रिहा दीन मज़्हब दीआं ज़ातां पातां, वाटां विच आपणा पन्ध चुकाईआ। मन मनूए दीआं तक्कदा रिहा ख्वाहिशां, कल्पणा विच जो दए दुहाईआ। स्वांगीआं दीआं वेखदा रिहा राशां, गोपी काहन विच जहान जो आपणा रूप बदलाईआ। विछोड़े वालीआं तक्कदा रिहा रातां, मूर्ख मुग्धां गूढ़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग साची कार कमाईआ। कर्म कहे मेरा खेल अछल अछल्ल दा, वल छल धारी दिती वड्याईआ। कोई लेखा समझ ना सके मेरे घड़ी पल दा, पलक दे अंदर आपणी कार दयां भुगताईआ। किसे अंदाज़ा नहीं आया मेरे बल दा, बलधारी दिते खपाईआ। मेरा ध्यान इक्को धाम अटल दा, जिस अटल पदवी मेरी झोली पाईआ। जो हुक्म संदेशे सब नूं घलदा, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। ओसे दे हुक्मे अंदर मैं हर घट अंदर रलदा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। कुछ मेरा लेखा ओस अगम्मी जल दा, जो जल थल महीअल आपणी खेल वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बिना प्रभू किरपा कोई ना फलदा, मानस ख़ाली सारे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साची सेव लगाईआ। कर्म कहे मैं सब दा दाता, दातार दिती वड्याईआ। पुरख अकाल दा मन्न के आखा, अक्खरां तों बाहर डेरा लाईआ। तत वजूद अंदर मेरीआं निक्कीआं निक्कीआं शाखां, जिस दी गणत ना कोए गणाईआ। नौ सौ नड़िनवे इक्को वार करां बातां, बातन विच आपणी खेल खिलाईआ। बिना अक्खां तों आख़र मंज़ल ताईं झाकां, परदयां विच्चों परदा आप उठाईआ। मेरीआं मेट ना सक्या कोई वाटां, वट्ट बन्ने वेखां जगत लोकाईआ। मेरा जोबन सदा जवानी अंदर मारे ठाठां, रूप अनूप आपणा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी करनी मेरी झोली पाईआ। कर्म कहे मैथों बचयां रिहा कोई ना साध, साधना जगत ना कोए कराईआ। मैं सब दी सुणदा रिहा धीमी धीमी आवाज़, जो धर्म दवारयों प्रभ रिहा सुणाईआ। एह मेरे अंदर राज़, बाहर करे ना कोए शनवाईआ। खेल वेखां अगम्म तमाश, तमअ विच जगत हल्काईआ। बिन भगतां पूरी होई किसे ना आस, बेआसे सारे देण दुहाईआ। कर्म कहे मैं ओनां दा दासी दास, जिनां मिल्या बेपरवाहीआ। बिना पुरख अकाल

तों मेरा करे कोई ना घात, धायल कर ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिन्हां नूं धुर संदेसा दिती आपणी दात, पट्टी इक्को दिती पढ़ाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, मित्र प्यारे दिते वखाईआ। नाम दी पूंजी दे के रास, रस्ता दिता बदलाईआ। मैनूं सब कुछ गया भाख, शब्दी शब्द हुक्म जणाईआ। मैं हो के चरण कँवल कँवल चरण दास, दासी दास सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पूरन दे के आपणा विश्वास, विश्व दा वासदेव वास्तक वाबस्ता आपणे नाल कराईआ।

★ २४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

कर्म कहे मेरा ओथे पैंडा मुक्कया, अग्गा पिच्छा ना कोए वखाईआ। जिन्हां नूं पुरख अकाल गोदी चुक्कया, चार कुण्ट आपणी दया कमाईआ। निरगुण निरवैर हो के पुछया, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। शब्दी धार हो के बुक्कया, नाअरा इक्को इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। कर्म कहे मेरा चले कोई ना चारा, चारों कुण्ट दयां दुहाईआ। जिन्हां मिल्या एका एकँकारा, अकल कलधारी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। ओन्हां भगतां कर के निमस्कारा, नमस्ते विच आपणा सीस झुकाईआ। ठांडा वेख धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। एह खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपे रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। कर्म कहे मैं रहां ना भगतां कोल, दूर दुराडा सीस झुकाईआ। जिन्हां दे अन्तर तूं मेरा मैं तेरा वज्जदा ढोल, सोहँ ढोला रहे गाईआ। सब तों वक्खरा बोलण बोल, अनबोलत राग अलाहीआ। भाग लगा के काया माटी चोल, चोजी प्रीतम मिल के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे भगतां संग रखाईआ। कर्म कहे मैं कदे ना आवां नेड़े, निक्का हो के दयां सालाहीआ। सतिगुर शब्द जिन्हां नूं घेरे, चारों दिशा होए सहाईआ। चाढ़े आपणे बेड़े, फड़ बाहों लए उठाईआ। लेखा मुके मेरे तेरे, तेरा मेरा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साहिब सुल्तान कर के मेहरे, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जित्थे इक्को रूप हो गए गुरू चेरे, चेरा गुर गुरू विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां दा फैसला हकीकत विच आप नबेड़े, लाशरीक शरक्त दए कढाहीआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ दारा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर करो हस्त अक्खर, दसख्त बिना कलम शाहीआ। अग्गे रहे कोई ना वक्खर, वक्खरा वक्खरा बंक सुहाईआ। चोटी चढ़ के तक्कया इक्को नूर सक्खर, सिख़र करे रुशनाईआ। पूजा रहे ना कोई इट्ट पत्थर, पाहन सीस ना कोए झुकाईआ। लोकमात जगत प्रेम दा करना नहीं कोई यतन, यथार्थ दिता दृढ़ाईआ। तुसीं आ गए आपणे वतन, बेवतनां दी देवे ना कोए सफ़ाईआ। मेरा इक्को सुहञ्जणा होणा पतण, पतिपरमेश्वर हो के रिहा सुहाईआ। लोकमात मैं सच संदेसा जाणा दस्सण, दहि दिशा हक पढ़ाईआ। भगतां अंदर जाणा वसण, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। इष्ट तोड़ के माटी बदन, बदली विच अदल आपणा आप कमाईआ। सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों जावां कढ्ढण, निरगुण धार मेला मेल कराईआ। सहिज सुभाई कूड़ कुड़यार जगत वासना जावां वढ्ढण, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। मनसा करां पूरी जो तत्ती लोह उत्ते मंगी अर्जन, आजज़ी विच अरज़ दिती सुणाईआ। जिस वेले कलयुग अग्नी पवण लग्गी वगण, चार वरन जगत जलाईआ। ओस वेले पुरख अबिनाशी जन भगतां देणा आपणा सगन, अमृत रस बूँद स्वांती अन्तर मुख चुआईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप कोट ब्रह्मण्डां दा करना वज़न, तराज़ू कंडा तक्कड़ इक्को इक्क उठाईआ। मालक किसे दा रहे कोए ना कज़न, कज़ा दे मालक कायनात आपणा हुक्म वरताईआ। सृष्टी उत्ते ख़ुशीआं नाल फिरे अज़ल, आहला अज़ीम तेरी सेव कमाईआ। तेरा इक्को ढोला गीत गहर गम्भीर होवे ग़ज़ल, ग़रज़ गुरमुखां पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक लेख बणाईआ। धुर मस्तक लेख बणाउणा आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। बिन तेरी किरपा रहे कोई ना पाक, पुनीत पतित दिसे लोकाईआ। चरण धूढ़ी मिले किसे ना ख़ाक, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। आपणी हथ्थीं खोल्हणे भगतां ताक, दूजा हथ्थ ना कोए लगाईआ। चार जुग दा भविख्त वाक, वाकिफ़कार पूरा देणा कराईआ। मेहर निगाह नाल लैणा झाक, झाकी इत्तफाकी आपणी आप रखाईआ। सज्जण सुहेले देणा साथ, सगला संग बणाईआ। सच समाधी विच रिहा आख, लोह तत्ती सोभा पाईआ। इक्क होर अगम्मी बात, चरण कँवल भेंट चढ़ाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणी लभ्भीं आपे ज़ात, ज़रूरत गुर अवतार पैगम्बर रहिण कोए ना पाईआ। तूं सब दा पतिपरमेश्वर कमलापात, पारब्रह्म ब्रह्म जल्वागर नूर रुशनाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खेलणा तैनूं अगम्मी जाच, याचक आपणे लैणे उठाईआ। तेरा भगत तेरा सन्त बिन तेरे नाम दूजा शास्त्र सके ना कोए वाच, वाचक ज्ञान दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं सब दा सखा सहाई बाप, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मंज़ल वखाउणी

अगम्मा घाट, धुर दरबारा इक्को नज़री आईआ। जिस गृह निरगुण जोत होवे प्रकाश, दीवा बाती अवर ना कोए चमकाईआ। गुरमुखां पूरी करनी आस, असल विच वसल मिले यार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सदकड़े वारी घोली घोल घुमाईआ। सतिगुर शब्द कहे कवण वारी कवण घोली, आपणा आप भेंट कराईआ। कवण बदलदा रहे चोली, काया पंज तत बदलाईआ। कवण दस्सदा रहे बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। पुरख अकाल किहा नाल हौली, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। वेखो भाग लग्गण लग्गा उपर धौली, धरनी धरत धवल मिले माण वड्याईआ। जन भगतां रुत्त सुहञ्जणी मौली, पत्त टहणी आप महकाईआ। लख चुरासी करे बौहड़ी, दरोही कर कर कुरलाईआ। कुछ नानक निरगुण अर्जन धार लेखा लिख्या विच राग गौड़ी, जिस दी समझ जग विद्या विच ना आईआ। प्रभ दी खेल कोई ना समझे लंमी चौड़ी, चारों कुण्ट पन्ध ना कोए मुकाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होणी बौरी, बावर रूप दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आपणे हथ्थ रखे डोरी, डण्डावत बन्दना आपणी दए समझाईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

६३६
२०

गुर अर्जन कहे वेला याद कर जिस वेले तत्ती होई तवी, तारका मण्डल उपर ध्यान लगाईआ। शब्दी हुक्म संदेसा मैं पुरख अकाल दिता जिस वेले होवे अवतार चवी, चार बीस आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा भगत सुहेला संग निभावे रविदास रवी, रवि ससि तों परे जिस दी रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को ढोला गवीं, दीन दुनी दया कमाईआ। आपणी धार चलावीं नवीं, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। सच सिँघासण अगम्मे बहवीं, गोबिन्द सेजा आप सुहाईआ। गुरमुखां अंदर निरगुण हो के सवीं, सुख आसण सोभा पाईआ। पूरब लेखा सब दे कोलों लवीं, अवतार पैगम्बर गुर बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। लोह तत्ती कहे मेरा तन वजूद नहीं तपया, तपदी वेखी जगत लोकाईआ। जिन्नां हरि का नाम जपया, ओन्नां जगत देवे सज़ाईआ। साचा मार्ग जिस ने दस्सया, ओन्नां तत मिले सज़ाईआ। अंदर पुरख अकाल वस्या, बाहरों दोज़ख़ जगत लोकाईआ। अर्जन खुशी दे विच हस्सया, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त दिसे अन्धेरी मस्सया, अमावस आपणा रूप बदलाईआ। कोई जगत साध रहिणा नहीं सच्चया, संजम सुच ना कोए वड्याईआ। कर्म कांड होणा कच्चया, काची गगरीआ करे ना कोए

सफ़ाईआ। पुरख अकाल आउणा भज्जया, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जिस दी समझे कोई ना वजया, वाजब आपणा हुक्म वरताईआ। मैं ओसे दे हुक्मे अंदर बध्धया, बन्दना विच सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं सब दा भार जाणा लद्दया, गुर अवतार पैगम्बर भज्जण थाउँ थाँईंआ। पूरब लहिणा लेखा जाणा कढ्ढया, खाता अगम्मी फोल फुलाईआ। किसे भेव ना आउणा यदप यदया, यादाशत पिछली रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। तवी कहे क्यों आया चम्यार रविदास, रवी आपणा फेरा पाईआ। शंकर बोलया उत्तों कैलाश, संदेसा इक्क सुणाईआ। मैं खेल वेख्या ख़ास, पुरख अबिनाशी दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम होर तमाश, तरह तरह दा नज़री आईआ। प्रगट होणा पुरख अबिनाश, जिस नूं जन्मे ना कोए माईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा फोलणा खात, लेखा सब दा मंग मंगाईआ। जन भगतां पुछे वात, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। आत्म परमात्म बणा के ज़ात, जागरत जोत करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जिस ने दस्सणी गाथ, विष्न ब्रह्मा शिव दी गंढ्ढ लए खुल्हाईआ। साची मंज़ल दस्स के घाट, घर इक्को इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक्क सरनाईआ। लोह कहे मैनूं क्यों सारे कहिंदे तत्ती, अग्नी अग्ग वांग तपाईआ। मैं प्रेम प्यार विच हो गई सती, सति सतिवादी सेव कमाईआ। मेरी चौथे जुग होई गती, गहर गम्भीर मिली सरनाईआ। मेरी खुल गई पिछली अक्खी, अगला लेखा सोभा पाईआ। जिस वेले आउणा कमलापाती पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उस दा लेख लिखाउणा नहीं किसे दन्द बत्ती, तन वजूद ना करे कोए पढ़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी आपणे नाम दी आप सुणाए पट्टी, पटने वाला आपणे नाल मिलाईआ। भगत दुआर खोल्ह के धुर दी हट्टी, हट्ट साचा इक्क चलाईआ। जित्थे गुरसिखां दी होवे गती, सचखण्ड साचे मिले वड्याईआ। एह कथा कहाणी अगली दस्सी, दस्त नाल करे ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो दसख्तां वाला लेख, लेखा आपणा आप जणाईआ। जिस दा आदि जुगादि अगम्मी वेस, अवल्लड़ी कार कमाईआ। कलयुग धरे आपणा भेख, भेखी सारे दए मिटाईआ। निरगुण हो के नर नरेश, नार कन्त करे रुशनाईआ। लहिणा देणा देवे दस दस्मेश, गोबिन्द लेखा झोली पाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण लए वेख, भगत भगवान आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सब नूं सांझी दे के टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा देवणहारा सच संदेश, संध्या प्रभाती दा लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे हेत, हितकारी इक्को नज़री आईआ। जन भगतां गुरमुखां साचे सन्तां लग्गण ना देवे त्रैगुण माया अग्नी सेक, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जो निरगुण सरगुण धार लए भेज, भजन

६३७ २०

बन्दगी विच आपणे नाल मिलाईआ। आत्म माणे धुर दी सेज, सच सुहञ्जणी डेरा लाईआ। रवीदास तूं लिखणा लेखे वाला लेख, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर फ़रमाना हुक्म देवे जिस नूं समझे कोई ना वेद, किताबां विच कतार ना कोए लिखाईआ।

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ मक्खण सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ★

गुरमुख की लिखें छेती छेती, शत्रु मित्र इक्को गंढु पवाईआ। साचे घर दा बण के भेती, भेव भाउ भेद रिहा खुल्हाईआ। पुरख अकाल नूं कहिणा भुल्ल ना जाए पिछली साडी नेकी, निक्के वड्डे सारे तेरी सेव कमाईआ। जो तेरे इष्ट दे बणे रहे टेकी, टिक्के मस्तक देणे लगाईआ। कलयुग अन्तिम उजड़न वाली खेती, राखा नज़र कोए ना आईआ। सच दवारयों सारे होए परदेसी, देस वासी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन का मन होया भेखी, भिख्या माया ममता मोह मंगे थाउँ थाँईंआ। साचा रिहा कोए ना हेती, हस्त कीट रहे कुरलाईआ। निरगुण धार आपे वेखी, वक्खरी कार ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ दिती वड्याईआ। गुरमुख की लिखदा नाल कलम शाही, शौहर दा हुक्म देणा सुणाईआ। की होणा थल अस्गाहीं, अगला परदा दे उठाईआ। की हुक्म देवे धुरदरगाही, महबूब बेपरवाहीआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात करे जुदाई, जुदा जुज़ रहिण कोए ना पाईआ। की साथों होई बेवफ़ाई, वफ़ादारी समझ कोए ना पाईआ। की खेल करे गोसाँईं, गहर गम्भीर देणा दृढ़ाईआ। गुरमुख सुण रविदासे भले भाई, भावना तेरी दए गवाहीआ। उह घड़ी सुहञ्जणी आई, जिस वेले दा राह तकाईआ। पुरख अकाला वेस वटाई, दीन दयाला नूर करे रुशनाईआ। सब दी करनी आपणे लेखे रिहा पाई, चार जुग दा पिछला हिसाब मुकाईआ। हस्स के किहा गोबिन्द मैं बूटा पुटया काही, कलमां दी लोड़ रहे ना राईआ। किसे दा बूटा किसे दी जड़्ह किसे दी चोटी चोटी रहिणी नाहीं, नर नरायण आपणा हुक्म वरताईआ। भुजां पसारो अग्गे करो बाहीं, हथ्थ बन्दना विच सीस झुकाईआ। इक्को चलणा हुक्म रज़ाई, रज़ा विच सज़ा ना कोए भुगताईआ। चारों कुण्ट काल दुहाई, महाकाल डंक वजाई, डौरू डबरू डबर खड़काईआ। एह खेल बेपरवाही जिस नूं समझे कोए नाहीं, नाना परकार आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। गुरमुख की लेखा लिखें जलदी जलदी, जल तरंग समझ किसे ना आईआ। जिधर वेखीए

चारों कुण्ट अग्ग बलदी, बाल बिरध रहे कुरलाईआ। मुश्किल रही ना साडे हल्ल दी, अहिवाल पिछले देण गवाहीआ। करते खेल कीती अछल अछल्ल दी, वल छलधारी आपणा वेस वटाईआ। जेहड़ी आसा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रही भाल दी, भाउ भगत विच राह तकाईआ। उह सैनत हो गई काल दी, इशारा महाकाल वखाईआ। जेहड़ी करनी जुग जुग घालां रही घालदी, सेवा विच आपणी सेव कमाईआ। उह खेल ओसे पुरख अकाल दी, जो कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लोड़ रही ना किसे धन माल दी, धरनी तों खहिड़ा दिता छुडाईआ। अग्गे खेल वेखणी पुरख अकाल अगम्मी चाल दी, चालू आपणा हुक्म कराईआ। आसा रहिणीं नहीं किसे बेनन्ती सवाल दी, सवाल दलाल नज़र कोए ना आईआ। सदी मुक गई तलवार ढाल दी, ढक विच्चों झलक आपणी दए वखाईआ। सब नूं बन्धन डोरी रखी जंजाल दी, दीनां मज़्बां विच फसाईआ। अन्त खेल कराउणी जगत जहान दी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। खेल वेखणी पुरख अकाल मेहरवान दी, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। कुछ घड़ी आउणी काल नाल मिल के राए धर्म शैतान दी, कलयुग हिस्सा थोड़ा विच रलाईआ। कार वरतनी इक्क प्रधान दी, प्रधानगी सब दी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, धार प्रगटे महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दी, इन्सान दी इन्सानी निधानी वेख वखाईआ।

६३६
२०

★ २५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ३ राधा स्वामी डेरा बाबा बग्गा सिंघ प्रताप सिंघ दे नाल तरन तारन ज़िला अमृतसर ★

आप दी रसना कहे जिवें तुहाडी मौज, मौजूदा दयो जणाईआ। गुरमुखो सतिगुर शब्द दी करो खोज, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। चरण प्रीती समझो जोग, जुगती जगत गुरू दृढ़ाईआ। अंदरों कढो हउमे रोग, माया ममता मोह मिटाईआ। निजर झिरना अमृत रस चुगो चोग, बूंद स्वांती इक्क टपकाईआ। करो प्रकाश निर्मल जोत, घर मन्दिर अंदर होवे रुशनाईआ। कोई रहे ना चिन्ता सोग, ग़मी नेड़ कोए ना आईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निज नेत्र सतिगुर दा दर्शन करो रोज़, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म देवे वर, परमात्म आपणी मौज इक्क वखाईआ। मौज वेखण दा जिस नूं चा, मन मनसा लओ मिटाईआ। सतिगुर शब्द बणाओ इक्क मलाह, जो बेड़ा आपणे कंध रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दी सिफ्तां वाली दए सलाह,

सो मालक ख़ालक प्रितपालक इक्क अख्वाईआ। बिनां सतिगुरू तों लभ्भे किसे ना राह, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। बेनन्ती विच करदे रहो दुआ, नमस्ते विच आपणा सीस झुकाईआ। सुरती होवे ना कदे जुदा, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। घर साचा निज आत्म नज़री जाए आ, आप आपणा परदा लैणा उठाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी देवणहारा सदा, नित नवित गुरमुखां झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मौज विच आपणा रंग चढ़ाईआ। मौज वेखणी जे होवे नित, गुर चरण ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा पतितां करे पवित्त, पुनीत दए बणाईआ। सुरती शब्द कराए हित्त, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। चारों कुण्ट पए दिस्स, दहि दिशा निरगुण नूर करे रुशनाईआ। वाहिद मालक दिसे इक, एकँकार अलख अगम्म अथाह अनामी आपणा परदा दए उठाईआ। प्यार मुहब्बत विच बण जाओ साचे सिख, सिख्या विच मिले माण वड्याईआ। मानस जन्म साढे तिन्न हथ्थ काया माटी लैणी जित, मन का मणका अंदरो अंदर भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मौज विच मजलस आपणे नाल रखाईआ। मौज वेखण दा चाओ घनेरा, घर स्वामी घनईया नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना तेरा मेरा, तूंही तूंही अन्तर अन्तर राग अल्लाईआ। सो सतिगुर गुण निधाना मारे फेरा, जोती जाता पुरख बिधाता नज़री आईआ। आवण जावण लख चुरासी कटे गेड़ा, जम की फाँसी फ़ंद दए कटाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण बन्न्हे बेड़ा, आत्म परमात्म आपणा मेल मिलाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करे मेहरा, बेनज़ीर नज़र आपणी इक्क उठाईआ। सच सुहञ्जणा सोभावन्त होवे खेड़ा, बन्द किवाड़ी कुण्डा खिड़की अंदरों दए खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची मौज विच मौजूदा हो के दरस वखाईआ। मौज वेखो सतिगुर चरण, चरण कँवल मिले सरनाईआ। अन्तर खुल्ले नेत्र हरन फरन, फ़ुरने सारे बन्द कराईआ। साची मंज़ल मिले चढ़न, पंच विकारा नेड़ कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द बिन रसना लग्गो पढ़न, अजपा जाप आपणी धार बणाईआ। झगड़ा रहे ना मरन डरन, जीवत जी सतिगुर विच समाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल गुरमुखां आवे फड़न, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। सच प्रेम दा कर लओ प्रण, पीआ प्रीतम आपे आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची मौज विच महिव आपणा परदा दए उठाईआ। मौज वेखणी जे हो नज़दीक, नेरन नेरा नज़री आईआ। हरि करता लाशरीक, शरक्त अंदरों दए गवाईआ। मार्ग दस्स इक्क बारीक, सुखमन टेडी बंक पार कराईआ। शब्दी धार हो करे तस्दीक, ईड़ा पिंगल दोवें सीस झुकाईआ। अमृत रस पीणा ला के झीक, निजर झिरना दए झिराईआ। त्रैगुण माया तों कर अतीत, त्रै पंज दा लेखा

दए मुकाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। सुरती शब्द बन्न्हा के प्रीत, प्रीतम हो के आपणे अंग लगाईआ। साचे घर दे बणो वसनीक, जिस घर विच छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर ठाकर करता मिले ठीक, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मौज विच मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मौज वेखणी अंदर वड़, नौ दवारे पन्ध तजाईआ। जित्थे सतिगुर दाता दातार हो के लए फड़, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। प्यार विच मुहब्बत विच वखावे धुर दा घर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। करनी दा करता कुदरत दा मालक सच सरोवर नुहाए अगम्मे सर, जित्थे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नज़र कोए ना आईआ। मंज़ल हकीकी लाशरीकी शरअ तों बाहर जाणा चढ़, जिस महिराबे महबूब मिले धुरदरगाहीआ। सावण अमृत झरना रिहा झर, बूंद स्वांती सब नूं रिहा पिलाईआ। तुहाडी मौज ओस दे घर, जो उजड़े घरां रिहा वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मौज विच मालक आपणा परदा लाहीआ।

★ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

६४१
२०

सतिगुर शब्द अगम्मी कटक, कटाकश धुर दा नाम लगाईआ। दो जहान रहे भटक, ब्रह्मण्ड खण्ड कुरलाईआ। सच संदेसा एका सख्त, सति सतिवादी आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर के वक्त, वेला आपणे हथ्थ जणाईआ। निरगुण धार एकँकार पूरी कर के शर्त, परवरदिगार खेल खिलाईआ। जन भगतां दे के आपणा दरस, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जन्म जन्म दी सब दी पूरी कर के हरस, हवस कूड़ी रिहा गवाईआ। रहमत विच कर के तरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। कत्तक कहे मैं वेख्या दो जहान, जहालत वेखी जगत लोकाईआ। मेरा मालक मेहरवान, महबूब नूर खुदाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी दस्सदे आए दास्तान, कलमयां विच पढ़ाईआ। सो हो के योद्धा सूरबीर जवान, जोबन आपणा रिहा वखाईआ। हुक्म संदेसा देवे आण, एकँकारा आपणी कार कमाईआ। शरअ मेटे कूड़ शैतान, शरीअत मूल रहे ना राईआ। सांझा दस्स इक्क ईमान, कामल मुर्शद होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। कत्तक कहे मेरा आ गया वक्त सुहेला, सुहञ्जणी रुत्त वड्याईआ। कलयुग अन्तर सतिजुग होवे मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। झगड़ा रहे गुरू ना चेला, चेला गुर ना कोए अख्वाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एकँकार होए इक्क सुहेला,

परवरदिगार सांझा यार आपणा रंग रंगाईआ। अचरज खेल पतिपरमेश्वर सच स्वामी आपणा खेला, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। सद वसणहारा धाम नवेला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। कत्तक कहे मैं दस्सां शब्द संदेश, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। जिस दा लिख्या किसे ना लेख, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी हर घट अन्तर निरंतर हो के रिहा वेख, पेखत आपणी कार कमाईआ। धाम सुहा के एका देस, दिशा धुर दी खोज खुजाईआ। नेत्र रो के किहा शेष, विष्नूं विश्व तेरी दुहाईआ। सरगुण चले कोई ना पेश, पेशवा बैठे सीस झुकाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी हमेश, हमसाजन आपणी कार कमाईआ। सच संदेशे दे के गए केतन केत, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरी ओट तकाईआ। कत्तक कहे तेरी एका ओट, ओड़क दयां दृढ़ाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते डगमगाईआ। खेल वेख लोक परलोक, दो जहानां परदा लाहीआ। सदी चौधवीं तेरी मौज, मजलस इक्को घर बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे खोज, परदा लैणा उठाईआ। शब्द सतिगुर इक्को बहुत, पारब्रह्म ब्रह्म लैणा मनाईआ। आत्म परमात्म तेरी गोत, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। मन वासना रहे कोई ना सोच, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग चिन्ता मिटा हरख़ सोग, दुखियां दर्द गवाईआ। भाग लगा काया माटी धुर दे कोट, कंचन गढ़ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवारे आस रखाईआ। कत्तक कहे मेरे साहिब गहर गम्भीर, गवर तेरी सरनाईआ। निरगुण कट शरअ ज़ंजीर, सरगुण करे ना कोए लड़ाईआ। सतिजुग साचा कर तामीर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। झगड़ा रहे ना कोई अमीर ग़रीब, अमरापद इक्क वखाईआ। लेखा जाण रविदासे कसीर, गंगा गंढु पवाईआ। कलम नाल बदल तकदीर, तदबीर इक्क जणाईआ। झगड़ा रहे ना पाटे चीर, चरण कँवल मिले सरनाईआ। अमृत रस बख़्श अगम्मा नीर, निज नेत्र इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। धुर दी करनी कर करतार, करतब आपणा दे वखाईआ। तेरा राह तक्कदे रहे जुग चार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। अवतार पैगम्बर करन पुकार, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। गुरू गुरदेव करन निमस्कार, डण्डावत विच सर निवाईआ। कल कल्की इक्क अवतार, नूर जोत रुशनाईआ। खेल वेख सर्ब संसार, संसारी भण्डारी बैठे सीस निवाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा कूड़ मिटाईआ। साहिब सुल्तान सृष्टी दृष्टी अंदर कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। तेरा वक्त पहुंचया आण,

अनक कल आपणी धार लै प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। श्री भगवान कहे सुण कारतक मेरे कत्ते, तेरा कर्म दयां दृढ़ाईआ। पिछले कौल इकरार कीते पक्के, सब दे लहिणे पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर हके बक्के, भेव सके कोई ना पाईआ। चारे जुग मांदे थक्के, थकावट विच लोकाईआ। सब दे चीथड़ पुराणे फटे, चोला नज़र कोए ना आईआ। हरि का नाम लाल गंवाया विच घट्टे, कौडी कीमत कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी विकदी नाल टके, हट्टो हट्ट फिराईआ। जगत खेल चूंकि चुनांचि अलबत्ते, आलमगीर परदा ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सतिगुर शब्द भेजया चार जुग दे गुर अवतार पैगम्बरां वट्टे, वाटां सब दीआं पूर कराईआ। हुक्मे वाले रहिण ना देवे पटे, पटणे वाला लेखा पूर कराईआ। सृष्ट सबाई वेखे एका सत्थर घत्ते, घायल करे दीन दुनी दा माहीआ। संदेसा देवे दीगरे बाद यके, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द आ जा धुर दे दूल्हे, हरि करता हुक्म सुणाईआ। फ़रमाना फुरनयां विच कदे ना भूले, भरम देणा मुकाईआ। मालक इक्को कन्त कन्तूहले, हरि करता नूर खुदाईआ। जिस नूं कहिंदे पाक रसूले, असल वसल रिहा कराईआ। उस दा हुक्म इक्क माअकूले, मुकम्मल देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द दुलारे, देवां माण वड्याईआ। चार कुण्ट दे वेख अखाड़े, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा मुक्कया सतारां हाढ़े, लेखा पूर कराईआ। अग्गे आई तेरी वारे, वारता धुर दी इक्क सुणाईआ। साचे नाम दा कर जैकारे, शब्द नाद शनवाईआ। किरपा करे भगत वछल गिरधारे, गिरवर गहर गम्भीर दए वड्याईआ। निरगुण नूर जोत होए उज्यारे, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। पुरख अकाला पैज संवारे, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। कल कल्की इक्क अवतारे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मेरी इक्क अरज़ोई, अरज़ दयां सुणाईआ। किस नूं तेरे दवारे देवां ढोई, लख चुरासी खोज खुजाईआ। तेरा भगत विरला कोई कोई, कूड़ी क्रिया विच लोकाईआ। किस दी सुरत उठावां सोई, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। सच दुआर मन्न अरज़ोई, बेनन्ती दिती सुणाईआ। चारों कुण्ट फिरे दरोही, तोबा तोबा करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच संदेसा हक सुणाईआ। सतिगुर शब्द उठ पुच्छ गुरू अवतार, सच दयां सुणाईआ। पैगम्बरां कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। की बाकी रिहा विच संसार, पुछणा थाउँ थाँईआ। एह हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ।

६४४
२०

जिस दा खेल पिच्छे रिहा सदा नौ नव चार, चारे कुण्ट डंक वजाईआ। सो शाह पातशाह सुल्ताना हो उज्यार, नूर नुराना नूर चमकाईआ। साजन वेखे खिदमतगार, ख़ादम आपणे फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर दस्सो मीत, मित्र प्यारे दयो जणाईआ। किहड़ी साची चलावां रीत, रीतीवान दए वड्याईआ। झगड़ा छुट्टे मन्दिर मसीत, काया काअबा सोभा पाईआ। तन वजूद होवे पतित पुनीत, पवित्त दयां कराईआ। कवण सोहला ढोला कलमा नाद सुणावां गीत, अनरागी राग अलाईआ। कवण नाम संदेसा देवां चीत, चितवित ठगौरी मन कोए ना पाईआ। किस ठाकर होवे प्रीत, कवण प्रीतम मिल के खुशी बणाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। केहड़ा नाम करां बख्शीश, रहमत इक्क कमाईआ। केहड़ा कलमा दस्सां हदीस, हज़रतो देणा सुणाईआ। सब दा वेला पिछला गया बीत, अग्गे नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद रो के मारे चीक, तेरे नाम दुहाईआ। मूसा कहे मेरी रही ना कोए तस्दीक, शहादत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ईसा कहे मैं साथी छड्डे नज़दीक, दूर दुराडा फेरा पाईआ। तेई अवतार कहिण जगत नाता टुट्टी प्रीत, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। गुर कहिण साडी आसा मनसा पूरी होणी उडीक, नानक गोबिन्द राह तकाईआ। तेरा खेल लाशरीक, शरक्त दीन दुनी दए गवाईआ। तेरे विच इक्क तौफ़ीक, तेरा नाम दुहाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद विच आपणा परदा दे उठाईआ। तेरा हुक्म दो जहानां चले ठीक, ठाकर हो के कर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो संदेसा एकँकार, इक्क इकल्ला आप दृढ़ाईआ। नाता छड्ड जगत संसार, सृष्टी दी दृष्टी विच्चों सब नूं बाहर कढाहीआ। वसो इक्क सच्चे दरबार, जित्थे वसे धुरदरगाहीआ। दीआ बाती कमलापाती करे उज्यार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला सोहे सच्चा सिक्दार, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म सुणाईआ। जिस दा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। कत्तक कहे मैं वेख्या पुट्ट के अक्ख, आख़र दयां सुणाईआ। परम पुरख वेख प्रतख, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार दिती भुलाईआ। इक्को नज़र आया नूर सच, सच सच्ची वड्याईआ। जो भाग लगावे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सुहाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। साची दे के ब्रह्म मत, मनमति लेखा रिहा मुकाईआ। निरगुण सरगुण रखणहार पत, पतिपरमेश्वर नूर खुदाईआ। नाम जैकारा बोल अलख, अलख

६४४
२०

अलखना आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सृष्टी विच्चों कर के वक्ख, सचखण्ड साचे धाम बहाईआ। सब दा सांझा कर के जस, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे आप टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दरगाह साची जाओ टिक, टिकटिकी इक्को नाल लगाईआ। सच प्रेम दी पए खिच्च, बिन वजूद मिल महबूब खुशी मनाईआ। सब दा मालक सांझा पए दिस, दिशा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं खोजदे गए कित, केते फेरीआं पाईआ। उह सब दा बण के पित, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। करवट विच बदल के पिठ्ठ, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। कत्तक कहे प्रभ चुक्क दे परदा, ओहला रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द कहे सच खेल अगम्मी करदा, करनी इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण एह मालक सच घर दा, दर इक्को इक्क सुहाईआ। कलयुग अन्तिम वेस कर निहकलंक नरायण नर दा, नर हरि आपणा फेरा पाईआ। धुर दा नाम अगम्मी शब्दी धार एका पढ़दा, धुर फ़रमाना राणा इक्क उपजाईआ। ना जींदा ना कदे मर्दा, मरन जम्मण विच ना आईआ। जेहड़ा हुक्म दिता पर दा, परोहतां रिहा समझाईआ। वेखो खेल आपणे हरि दा, जो हिरदिउँ रिहा उठाईआ। जिस दा लख चुरासी फल रिहा झड़दा, पत्त टहणी आप हिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां घाड़न रिहा घड़दा, भन्नृणहार बेपरवाहीआ। सो खेल वखावे अगम्मी सर दा, सरोवर इक्को इक्क सुहाईआ। जित्थे भगत सुहेला तरदा, दुरमति मैल धवाईआ। मंज़ल इक्क अगम्मी चढ़दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन करदा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं साहिब प्रभ दर हाज़र, हज़ूर देणा समझाईआ। दरवेश हो के आजज़, बन्दना सीस झुकाईआ। सब दे उत्ते होवां काबज़, वेखां जगत लोकाईआ। हुक्म देवां इक्को वाजब, वजाहत नाल समझाईआ। पुरख अकाल दी होवे इक्क इबादत, इक्को नाम सालाहीआ। दीन दुनी दी बदल के आदत, आलीजाह दयां वखाईआ। साचे दर मिले रफ़ाकत, फ़िकरा कूड़ ना कोए बणाईआ। आत्म वेख तेरी अमानत, प्रभ तेरे नाल मिलाईआ। तेरा नूर सही सलामत, सहिज जोग सुखदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अलामत, ममता मोह दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ क्यों रोंदे पैगम्बर पीर, पारब्रह्म देणा समझाईआ। परवरदिगार कहे इन्हां दी खुसण लग्गी जागीर, जागरत जोत करी रुशनाईआ। अवतार होण लग्गे दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पुरख अकाल कहे सति धर्म होण लग्गा ताअमीर, तमां दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सुण के हुक्म गुर अवतार पैगम्बर आए दर ठांडे होए इक्ट्ठे, इक्को वार सुणाईआ। प्रभू आह लै आपणे चार जुग दे पटे, पाटल तेरी भेंट चढ़ाईआ। तेरी दुनिया तेरी सृष्टी तेरे फड़ाई हथ्थे, ख़ाली हथ्थ दिते वखाईआ। असीं बण गए भाई सके, मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। छड्ड के पंज तत्ते, तेरी जोत विच समाईआ। तेरे फ़रमाने सुणीए सच्चे, संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। तन वजूद ना जाणीए कच्चे, भाण्डे माटी ना पोच पुचाईआ। तेरे बणे रहीए बच्चे, पिता पूत गोद उठाईआ। जो जगत संदेश दस्से, भविख्तां विच सुणाईआ। ओसे ते हो गए पक्के, तेरी ओट तकाईआ। किरपा कर पुरख समर्थे, सच तेरी सरनाईआ। दीन मज़्हब रहे कोई ना रट्टे, झगड़ा देणा गवाईआ। बिन तेरी किरपा साचा लाहा कोई ना खट्टे, मन्दिर मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म देणा वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं करीए कौल इकरार, प्रभ तेरी सरन सरनाईआ। बचन बोले तेरी विच्चों धार, शब्द शब्द नाल शनवाईआ। संसार विच तेरा नाउँ आए उच्चार, उजरत मंग ना कोए मंगाईआ। तैनूं कहि के कल्की अवतार, निहकलंक वड्याईआ। आप कर के निमस्कार, नमों नमों सीस झुकाईआ। सब कुछ तेरे इख़्त्यार, साडा उज़र

रिहा ना राईआ। किरपा कर आप करतार, कुदरत आपणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे आओ सुणो हुक्म हकीकी, हुक्म दयां दृढ़ाईआ। पिछली छड्ड दयो हुण रीती, रीतीवान रिहा समझाईआ। सारे कहो इक्क नाल चंगी प्रीती, प्रीतम इक्को धुर दा माहीआ। सब दी पिछली औध बीती, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मुहम्मद कहे ईसा कुछ ध्यान कर अगला, अग्गे की वखाईआ। मूसा कहे मैं वेखां की जंगलां, जूहां देण दुहाईआ। सब नूं पैण वाला फंदना, फांदकी आपणी डोर रिहा उठाईआ। जिन्हां नूं भुल्ल गई धुर दी बन्दना, बन्दगी तों बिना बन्दे देण दुहाईआ। धर्म दुआर ओन्हां नूं टंगणा, जगत कूड़ कसाईआ। कत्तक कहे कुछ मेरे विच लेखा वण्डणा, हिस्से अगले रिहा पाईआ। गुरमुख विरले जगत जहान लँघणा, शौह दरया पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराईआ। कत्तक कहे मेरी वण्ड इक्क निक्की, हाढ़ सतारां दिती समझाईआ। प्रभ दी धार होणी तिक्खी, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। बिना भगतां तों रहे कोई ना सिक्खी, साख्यात सुणाईआ। चार जुग दी पिछली कढ्ढ के चिट्ठी, गुर अवतार पैगम्बरां देणी पढ़ाईआ। जिस नूं सारे कहिण अनडिट्ठी, नेत्रां अग्गे करे रुशनाईआ। पहली कत्तक कहे मेरी उह मिती, जो मित्र प्यारा गोबिन्द गया समझाईआ। सब नूं घर घर होवणी जिची, याचक नज़र कोए ना आईआ।

नेत्र रोवण मुनी ऋषी, रखीशर समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ। पैगम्बर कहिण की हुक्म संदेसा लग्गा आउण, अगम्मी आवाज़ जणाईआ। रो के कहे उणंजा पाउण, पवण पाणी नाल दुहाईआ। सब दा लेखा आया मुकाउण, हरि करता धुरदरगाहीआ। भगत सुहेले आया मिलाउण, जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग विच सतिजुग आया बदलाउण, बदली करे थाउँ थाँईंआ। कूड़ी क्रिया आया हटाउण, हट्ट वणजारे फोल फुलाईआ। एका नाम आया जपाउण, जग जीवण दाता धुरदरगाहीआ। कल कल्की आया अख्वाउण, बिनां अक्खरां कर पढ़ाईआ। सच दवारा आया वसाउण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। कत्तक कहे वेखे कर्म अचारी, अचरज खेल बणाईआ। जगत जिज्ञासू वेख संसारी, सर्ब रिहा उठाईआ। नौ सौ नड़िनवे भगतां नूं दर्शन देणा अज्ज दी रैण इक्को वारी, दूर दुराडे आप उठाईआ। सत्तां दीपां करे ख़बरदारी, नवां खण्डां डंक वजाईआ। जगत साधां दए आधारी, भगतां नाम शनवाईआ। नेत्र खोल्हे वेखो अक्ख उग्घाड़ी, लोचन बन्द ना कोए कराईआ। भेव खुल्हाए धुरदरबारी, हरि करता शहिनशाहीआ। सदी चौधवीं ओसे दी आई वारी, जिस दी वारता आए सुणाईआ। निरगुण जोत करे उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। चारों कुण्ट करे खुआरी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुछ लेखा लिखण लगाए दर्शन सिँघ लिखारी, कलम गुरमुख कोलों हथ्थ फड़ाईआ। हाज़र हो जायो संसारी भण्डारी, पिछला पन्ध मुकाईआ। नेड़े ढुक जाओ सँघारी, सहिज नाल सुणाईआ। तेई अवतार वेखो दरबारी, हरि करता धुरदरगाहीआ। मूसा ईसा मुहम्मद अक्ख उग्घाड़ी, नैण नैणां तकाईआ। नानक गोबिन्द तक्को जोत निरँकारी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सारे करो इक्क निमस्कारी, डण्डउत बन्दना सजदा सीस झुकाईआ। फेर बोलो शब्द जैकारी, ढोला धुरदरगाहीआ। खेल वेखो अगम्म अपारी, अपरम्पर स्वामी आप वखाईआ। जिस दी वारता गाउँदे आए वारो वारी, जुग चौकड़ी लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे की लिखारी लिखदा, लेखा देणा दृढ़ाईआ। अग्गे हुक्म वरतणा इक्क दा, एकँकार होए सहाईआ। जो मालक सब दा दिसदा, दहि दिशा विच समाईआ। जिस ने रूप धरया अगम्मी पित दा, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। उह लहिणे देणे सर्ब नजिठदा, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। पासा बदल के आपणी पिठ दा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। जन भगतां वक्त सुहञ्जणा करे जित दा, हारदी वेखे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सहिजे दए सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव आओ अग्गे, शिव शवै

सेव कमाईआ। निरगुण धार सब ने आपणे हथ्थ बद्धे, बन्दना सीस झुकाईआ। पुरख अकाल कहे क्यों तुहानूं दिते सद्दे, फ़रमान इक्क जणाईआ। अन्त अख़ीर निगाह मारो आपणे जग्गे, दीन दुनी वेख वखाईआ। कलयुग जीव बगड़े बप्पे बग्गे, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। दहि दिशा अग्नी लग्गे, अमृत सिंच ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए प्रभ ठाकर, अग्गे भेव कोए ना पाईआ। तूं गहर गम्भीर डूँग्घा सागर, गुर अवतार पैगम्बर तेरे अन्तर तारीआं लाईआ। अक्खरां विच तेरा नाम करदे गए उजागर, सिफ्तां विच ढोले गीत सुणाईआ। दर दरवेश, बणदे रहे आजज़, ख़ादम हो के धुर दी सेव कमाईआ। तेरा हुक्म मन्नदे रहे वाजब, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच परदा दए चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मैं परदा लग्गा चुक्कण, हरि करता रिहा सुणाईआ। सब दा पैंडा लग्गा मुक्कण, मुकम्मल रिहा दृढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर शब्दी लग्गा उठण, नौजवाना वेस वटाईआ। सिँघ शेर हो के लग्गा बुक्कण, नाम भब्बक इक्क सुणाईआ। सब दे कोलों लहिणा देणा पूरब लग्गा पुछण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कुछ पिछली कर याद, प्रभ तेरे अग्गे सरनाईआ। परदा खोल्ह अगम्मा राज़, राज़क रहीम दे जणाईआ। जेहड़े सुणदे नहीं तेरी आवाज़, उह कलयुग साध लैणे उठाईआ। सब दे मगर लगाउणा शब्द अगम्मी बाज़, बाज़ां वाले वेस वटाईआ। इके हुक्म नाल खोल्हदे जाग, सुत्ता रहिण कोए ना पाईआ। तेरे हुक्म दा होवे राज, रईयत आपणी उत्तम लैणी बणाईआ। साचे धर्म दा चला जहाज़, नईआ नौका नज़र कोए ना आईआ। इके वार करदे काज, करनी दे करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। साडे हथ्थों फड़ लै वाग, ख़ाली हथ्थ सीस निवाईआ। तेरी जोत दा जगे चिराग़, शमां इक्को नूर रुशनाईआ। असीं वायदे करदे आज, गुर अवतार पैगम्बर रहे सुणाईआ। जिस वेले आवे पहली माघ, दीन दुनी विच डंक देणा वजाईआ। साडे वड वड होवण भाग, वडभागी देणी वड्याईआ। मनुआ कूड़ रहे ना बाग़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। साचा हुक्म दे शताबी, शरअ विच वड्याईआ। इश्क रहे ना हकीकी मजाज़ी, मज़ा आपणा दे चखाईआ। जगत अंकड़यां दी वध गई आबादी, गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। कुछ याद कर कौल बग़दादी, जो नानक आया समझाईआ। कुछ लेखा वेख माज़ी, राम दए गवाहीआ। कलयुग अन्तिम गुर अवतार पैगम्बर मालक रहे ना कोई आराज़ी, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार ओह फ़तवे वाला बण जा काज़ी, कज़ा आपणे नाल मिलाईआ। जग दी उलट दे

बाज़ी, बाज़ीगर आपणा स्वांग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं सारे होए राज़ी, खुशीआं विच तालीआं दईए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो एका वार चरण जावो छोह, छोहरे बांके दयां बणाईआ। लँघ जाण दयो छब्बी पोह, खेल आपणा दयां वखाईआ। जो करनी सो आपे जाणी हो, होका देवे जगत लोकाईआ। निरगुण जोत दी कर के लो, लोआं पुरीआं परदा लाहीआ। आपणे वरगा आपे हो, करां खेल थाउँ थाँईंआ। सब दे कोलों नाम दी वस्तू लवां खोह, ख़ाली दयां कराईआ। शब्दी धार कलयुग सतिजुग बैल बणा के हल देवां जोअ, जोगी जोगीशर समझ कोए ना पाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूँघी खाई लवां टोह, बचया रहिण कोए ना पाईआ। किसे नाल करां ना कोई धरोह, करमां दी देवां सज़ाईआ। जन भगतां निजर झिरना अमृत रस देवां चो, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आप उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण छब्बी पोह ते होणा की, हरि करते दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं शब्द संदेसा देणा जी जी, जीवत जग जणाईआ। साचे नाम दा बीज देणा बी, आपणी हथ्थीं आप टिकाईआ। सति धर्म दी चला के लीह, मार्ग इक्को देणा वखाईआ। भगतां कोलों रखा के नींह, मन्दिर सोहणा देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो अग्गे वेखो हालत जग, सहिज नाल समझाईआ। शब्दी हुक्म लगाउणी अग्ग, चारों कुण्ट ना कोए बुझाईआ। धीरज वाला तुट्टणा तग्ग, सांतक सति ना कोए वखाईआ। सब ने लभ्भणा भज्ज भज्ज, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। किसे तों वक्खरा किसे तों अलग्ग, किसे दे अंदर बहणा डेरा लाईआ। जे कोई तक्के ते उपर शाह रग, शहिनशाह मिले धुरदरगाहीआ। हुक्मे नाल लैणे सद्द, हुक्मे विच भवाईआ। फिर सके कोई ना भज्ज, भज्जयां राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, समें दी खेल रखे आपणे हथ्थ, गुर अवतारां पैगम्बरां तों कराए दस्तख्त, ख़ता सब दी वेख वखाईआ।

किरपा कर धुर दे हरी, हरी हरि दे समझाईआ। की खेल होणा खुशकी तरी, बरी दए दुहाईआ। पुरख अकाल कहे हुक्म दी धार वरतणी बड़ी, सरकार संसार समझ कोए ना पाईआ। इक्क नवीं प्रगट कर के छड़ी, छार सब दी देणी उडाईआ। जेहड़ी ईसा उडीकदा रिहा घड़ी, उह बिनां घड़याल तों देणी खड़काईआ। कोई रहिण नहीं देणा शरई, शरीअत

६४६
२०

शरअ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। हुक्म कहे मैं सदा करां उडीक, कवण वेला मिले वड्याईआ। मैं वेखदा रहवां तारीख़, कवण वेला तवारीख़ दयां बदलाईआ। पुरख अकाला पावे भीख, भुक्ख्यां झोली दए भराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर तस्दीक, शहादत गुर अवतार पैगम्बर दए दृढ़ाईआ। फिर कोई रहे ना किसे दा मीत, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आईआ। करे खेल आप अनडीठ, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। जन भगतां अन्तर कर के ठांडा सीत, सीतल धारा अमृत मुख चुआईआ। सच प्रीती विच जीवण करन बतीत, बीता जीवण आपणे लेखे लाईआ। कदे ना तुट्टे इक्क प्रीत, प्रीतम मिले हरि गोसाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दे वसे काया माटी भीतर भीत, बाहर नज़र किसे ना आईआ।

★ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

पुरख अकाल निरगुण धार आया उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कूटां सोभा पाईआ। सन्त सुहेले जन भगत वेखे नादी पुत्तर, पिता पूत आपणी गोद सुहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी कदे ना जावे मुक्कर, भय भउ अंदर वेखे थाउँ थाँईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन शुकर, शुकराने अंदर सारे सीस निवाईआ। कूड़ी क्रिया मोह हँकार विकार ममता मन रहे ना बुच्चढ़, सति सतिवाद आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। दुतीआ भउ रहे ना जग, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन माया ममता मेटे अग्ग, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सुणा के छन्द, संसा रोग जन्म वियोग दए मिटाईआ। वरन बरन पार करा के हद्द, सच दुआर एकँकार इक्को इक्क वखाईआ। शब्द अगम्मी अनादी नाद जाए वज्ज, धुन आत्मक राग एका एक सुणाईआ। सन्त सुहेले साहिब स्वामी अन्तरजामी दरगाह साची लए सद्द, साजण मीत प्रीत इक्को इक्क समझाईआ। बिन मक्के काअबे करा के अगम्मा हज्ज, हुजरा हक हकीकत इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। दुतीआ भउ रहे ना मात, मातर भूमी सब दी वेख वखाईआ। नव सत्त करे इक्क जमात, जुमला अक्खर इक्को इक्क पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा सूर्या चन्द इक्क सुहाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दस्स के आपणी गाथ, आत्म

परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। साची मंज़ल चढ़ावे आपणे घाट, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पैंडा दए मुकाईआ। एका एकँकार एका जोत करे प्रकाश, जोती जाता पुरख बिधाता नूरो नूर करे रुशनाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर काया माटी सत्थर देवे साथ, सगला साथ स्वार्थ परमारथ विच आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति संदेसा नर नरेशा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को इक्क सुणाईआ। दुतीआं भउ रहे ना सृष्टी, सर्ब कल वेखे थाउँ थाँईंआ। दीन दुनी दी बदल देवे दृष्टी, दयावान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मानव मानुख मानुश इक्क दवारे होवे इष्टी, इष्ट देव स्वामी इक्को इक्क सोभा पाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म निरगुण निरगुण करे गृहस्ती, निरवैर निराकार आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर धुर दरबार दरगाह साची हक मुकाम, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। दुतीआ रहे कोई ना वरन, वारता इक्को इक्क सुणाईआ। नेत्र खोल्ह के हरन फरन, निज नैण करे रुशनाईआ। भय मुका के मरन डरन, मर जीवत रूप जणाईआ। सन्त सुहेले आवे फड़न, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। मंज़ल मंज़ल महबूब वाली चढ़न, मुहब्बत विच मिल के वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गीत सुहागी इक्को पढ़न, नग़मा नाम कलमा कायनात जणाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी बख्शे इक्को सरन, सरनगति सरनागत धुर दी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा इक्को इक्क खुल्हाईआ। दुतीआ भउ रहे ना लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ पाताल आकाश गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जणाए इक्क सलोक, सोहला ढोला शब्द विचोला शब्दी शब्द जणाईआ। भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ साचे कोट, कंचन गढ़ अंदर वड़ मन्दिर इक्को इक्क सुहाईआ। निरगुण नूर प्रकाश कर जोत, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संगीत त्रैगुण अतीत त्रैभवन धनी आपणा राग सुणाईआ। दुतीआ भाव रहे ना भाउ, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। प्रभ मिलण दा बख्शे अन्तर चाओ, माया ममता मोह मिटाइंदा। सच स्वामी अन्तरजामी करे सच न्याउँ, हक हकीकत वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त पकड़े बाहों, लख चुरासी विच्चों आप उठाइंदा। देवे वड्याई थाँईं थाउँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, काग हँस रूप बदलाइंदा। सिर देवे ठंडी छाउँ, समरथ आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मार्ग लाए घुथ्थे राहों, रहिबर हो के इक्को राह चलाइंदा।

९५१
२०

★ ३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ डेरा बाबा जैमल सिँघ ब्यास
गुरचरण सिँघ नाल ★

सतिगुर शब्द अगम्मी अस्थान, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। बिन छप्पर छन्न मकान, सति दवारा सोभा पाईआ। जिस गृह दीवा बाती जगे महान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। इट्टां पत्थरां वाला नहीं निशान, जगत निशाना वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस गृह अंदर सति स्वामी अन्तरजामी वसे आण, अनक कलधारी आपणी सोभा पाईआ। सो मन्दिर होवे परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस गृह आपणा खेल वखाईआ। थान भूमिका सोहे घर, गृह मन्दिर मिले वड्याईआ। जिस अन्तर निरंतर सतिगुर शब्द गया वड़, अगम्मी रूप आपणा भेव खुल्हाईआ। साची पौड़ी मंज़ल हकीकी चढ़, जगत दवारे पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म शब्दी धार सतिगुर फड़, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। झगड़ा रहे ना नौ दर, ईड़ा पिंगल सुखमन पैंडा दए मुकाईआ। सच सुहा के इक्क सर, दुरमति मैल दुखियां दए मिटाईआ। तिस मन्दिर विच सति सच दा सदा वर, जिस दा वारस इक्को नज़री आईआ। सावण खेल साँवल हो के गया कर, रुत्त रुतड़ी नाम नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मन्दिर मकान इक्क सुहाईआ। मकान कहे मैनूं कोई ना जाणे इट्टां पत्थर, माटी गारा नज़र कोए ना आईआ। मेरे विच सब दा माही सुत्ता विछा के सत्थर, सगला संग निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जन्म मरन दी मर्ज रहिण ना देवे किसे कसर, आवण जावण लख चुरासी गेड़ा दए चुकाईआ। प्रेम प्यार अंदर जीवण कीता बसर, बिछरत विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। दस्स के इक्को नग़मा नाम अगम्मी नकश, लाशरीक परदा दिता उठाईआ। खेल वखा के उपर अर्श फर्श, दो जहानां श्री भगवाना एका रंग रंगाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां उपर कर के तरस, चार वरन अठारां बरन बख्शी सच सरनाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच झगड़ा कर के तरक, तुरत आत्म परमात्म सुरती शब्दी मेला ल्या मिलाईआ। अन्तर निरंतर रहिण ना दिता कोई फ़र्क, फ़िरकयां विच्चों फड़ फड़ सारे बाहर कढाहीआ। सच धाम सच मार्ग सच स्वामी मेल के अमृत मेघ दिता बरख, बूँद स्वांती निजर झिरना नाभी कँवल आप टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल आपणे घर, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। मकान कहे मेरे अंदर सतिगुर सावण कीता वासा, बस्ती सोहणी दिती वसाईआ। इक्को इक्क दा रख भरवासा, भरम भुलेखा दूर कराईआ। निज घर नूर जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर सर्ब मिटाईआ। मन ममता मोह विकार कूड़ कुड़यार झूठा दस्सया तमाशा, तमअ लोभ हँकार गवाईआ। सुरत शब्द खोल्ह के खुलासा, खुल्ही फिरदी आत्मा

९५२
२०

शब्द डोरी नाल बंधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा मेला जोती जाता, जीवण जुगत भगती विच बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी राता, सति धर्म दा साचा चन्द चमकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार दस्स के इक्क भरवासा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों अगला लेखा दिता दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान जिस दा सिफ्तां वाला दस्सदी रही खुलासा, ख़लक दा ख़ालक सृष्ट दा पालक दीन दुनी दा मालक सब नूं दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर धुर दरबार दरगाह साची मुकामे हक एका एक वखाईआ। मकान कहे मेरा कोई वेख्यो ना खिड़की दरवाज़ा, दरे दरबार मिले वड्याईआ। सब दा मालक इक्को ग़रीब निवाज़ा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। शाहो भूप लख चुरासी आत्म राजा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दी शब्द धार सतिगुर सावण जागा, नेत्र लोचण अक्ख अन्तर इक्क खुल्हाईआ। उपज्या इक्क वैरागा, वैरी अंदरों दिते कढाहीआ। प्रेम प्रीती अन्तर लागा, मन वासना डेरा ढाहीआ। अमृत मिली बूँद सवांता, अग्नी तत बुझाईआ। सच स्वामी जाण के इक्को जाता, चरण कँवल कँवल चरण बिन सीस सीस झुकाईआ। खेल वेख पुरख अबिनाशा, दीन दुनी परदा लाहीआ। कुछ शब्द संदेसा मिल्या साचा, धुर दा हुक्म इक्क उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परदा ओहला भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। मकान कहे मेरे अन्तर करो विचार, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। साचा वेखो इक्क प्यार, जो मुहब्बत रिहा दरसाईआ। दीन दुनी तों बाहर, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जिस ने भेजे गुरू अवतार, पैगम्बर पंज तत ख़ाकी तन हंढाहीआ। सो शब्द सतिगुर सब दा सिक्दार, आदि जुगादी नज़री आईआ। लिखण पढ़न तों बाहर, रसना जेहवा कथनी कथ सके ना राईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण बख्शदा आए प्यार, नाम संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क सुणाईआ। मकान कहे मेरे उत्ते करो एतबार, जो हुक्म मिल्या धुर दरबार, सतिगुर सावण सुणया एका वार, इक्क इकल्ले दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा परदा रिहा उठाईआ। मकान कहे इक्क दिन आई अगम्मी आवाज़, बिन कन्नां दिती सुणाईआ। शब्द शब्द दा खोल्ह के राज़, निरगुण निरवैर कीती पढ़ाईआ। बिना सीस तों दस्स आदाब, नमस्ते दिती जणाईआ। दे के इक्क ख़ताब, मुख़ातब हो के परदा लाहीआ। वक्त सुहञ्जणा होवे लोकमात, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। चार वरन अठारां बरन बणे इक्क जमात, दीन मज़्हब रहिण कोए ना पाईआ। उह वेला वक्त वेखे पुरख अबिनाश, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। जिस दा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल तमाश, गोपी

काहन मण्डल मण्डप आपणी रास रचाईआ। इक्क इकेला आशा पूरी मनसा करे ख़ाहिश, ख़ालक ख़लक आपणी दया कमाईआ। मकान कहे सतिगुर शब्द दी बिना सतिगुर तों करे ना कोई तलाश, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मकान साहिब निशान, जिस गृह श्री भगवान आपणी दया कमाईआ।

★ १३ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म मन्नणा शाह सुल्तानी, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जूह रहे ना कोए बेगानी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक सब दा जल्वागर रुहानी, नूर नुराना बेपरवाहीआ। आदि जुगादि नित नवित जिस दी खेल महानी, महिमा बोध अगाध नाद शब्द पढ़ाईआ। जिस दा खेल एथे ओथे धरनी ख़ाक उपर असमानी, इस्म आअज़म बेनज़ीर इक्क वखाईआ। लेखा लिख ना सके कोई कातब नाल कानी, कायनात कलमयां विच ना कोए वड्याईआ। भेव पा सके ना तन वजूद जिस्मानी, परदा ओहला अन्तर ना कोए उठाईआ। सो साहिब स्वामी लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण निराकार निरवैर आपणी कार कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बरां बणया रिहा दानी, वस्त अमोलक अमुल्ल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मन्नणी इक्क रज़ा, राज़क रिज़क रहीम सीस झुकाईआ। धुर संदेसा साचा कलमा सुणनी इक्क अज़ां, अज़ीमउलशान आहला आअज़म अज़े महि मकान इक्क रुशनाईआ। जिस दवारे कदे ना मिलदी सज़ा, मेहर विच मुहब्बत इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निरँकार सब दा अब्बा, अम्मी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण इक्को वेखणा अब्बा अम्मी, अमलां तों रहत नज़री आईआ। जिस दी धार आकार विच कदे ना जम्मी, निराकार नूर जोत रुशनाईआ। जगत डोर संसार विच किसे ना बन्ह्नी, मुहब्बत विच मिल के वज्जे वधाईआ। नेत्रहीण कदे ना होवे अन्न्ही, नैण मूंद ना वक्त लँघाईआ। सो मालक ख़ालक वड दाता धुर दा धनी, नाम भण्डारा एकँकारा इक्को इक्क वरताईआ। देवणहार प्रकाश सूर्या चन्नी, जोती जाता पुरख बिधाता एका नूर करे रुशनाईआ। नाम संदेश सुणावे ना कदे किसे कन्नी, धुन आत्मक राग अगम्मी नाद शनवाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी आयू लंमी, वरखां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणा आप कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मिल्या इक्क

सहारा, सही सलामत साहिब दिती वड्याईआ। जग जीवण दाते जग विच्चों कीता किनारा, पार उरार पैंडा रिहा ना राईआ। परवरदिगार सांझे यार वखाया इक्क दवारा, द्वारकावासी मिल के सारे बैठे सीस झुकाईआ। इक्को नूर नूर कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के नाअरा, नर नरायण दिती वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर सब दा लहिणा मुक्का उधारा, बाकी अवर रही ना राईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को एक करो जैकारा, दूजा डंक ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण इक्को दिस्या सच घराना, गहर गम्भीर दिता वखाईआ। जित्थे झुलदा बेपरवाह दा धर्म निशाना, निशाने सारे रिहा मिटाईआ। हुक्मे अंदर नौजवाना, मर्द मर्दाना खेल खिलाईआ। पावे सार दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, सति संदेसा नर नरेशा इक्क सुणाईआ। निरगुण सरगुण बण के गोपी कान्हा, भगत भगवान आपणा जोड़ जुड़ाईआ। दीन दयाल दयानिध ठाकर बण के बीना दाना, दर्दीआं दर्द रिहा वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण छड्डी पिछली सर्ब सलाह, मता रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ दवारे इक्को कर के वाह वाह, वायदा पिछला पूर पूरब लहिणा झोली पाईआ। टिल्ले पर्बत छड्डे थल अस्गाह, अन दिन लहिणा ल्या मुकाईआ। शब्दी हुक्म दिता खुदा, ख़ादम सारे लए बुलाईआ। अग्गे रहे ना कोए जुदा, दीन मज़्हब दी करे ना कोए लड़ाईआ। साचे नाम दा दस्स के मुद्दा, मुद्दत दे विछड़े रिहा मिलाईआ। लहिणा देणा मुकावे धरनी धरत धवल बसुधा, बावन लेखा नाल मिलाईआ। लेखे पावे गोबिन्द वाला कुज्जा, जो दो तों तिन्न दए वड्याईआ। ओस घुम्यार दा लहिणा बुज्झा, जिस भाण्डा ल्या तपाईआ। जन्म जन्म दा लेखा कर के उग्घा, लहिणे विच कीमत रिहा पाईआ। गुरदित सिंघ ओहो ठठयार बुड्ढा, जिस कच्ची माटी अग्नी नाल तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को इक्क वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण काया माटी वेख्या तक्कया जलवा नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दे सदा भरदे बेड़े वैंहदे जाण पूर, पूरब लेखा सब दा लेखे लावे थाउँ थाँईंआ। सो सतिगुर हाज़र हज़ूर, हाज़र हो के हज़ूरीए वेख वखाईआ। बाकी रहे ना किसे मज़दूर, जन्म जन्म दी नाम मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। जन भगत दवारे कर कबूल, दरगाह साची दए वड्याईआ। गुरमुख उतारना पार जिस दा असूल, असल आपणे घर वसाईआ। मालक बण के कन्त कन्तूहल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। चरण प्रीती बख्श के धूल, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्मे अंदर हुक्म देवे माअकूल, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ।

★ १५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

चार जुग दे थक्के किरती, अकिरतघणां तों पल्लू गए छुडाईआ। धार वेख के इक्क निरती, निराकार रंग रंगाईआ। खेल वेख अगम्मे पिर दी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी नाता ल्या छुडाईआ। कथा कहाणी जुग चौकड़ी चिर दी, जुग चौकड़ी पैंडा गई मुकाईआ। निरगुण निरगुण आत्म परमात्म धार वेखी मिलदी, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों हिलदी, हालत समझ किसे ना आईआ। रौशनी नज़र किसे नूं ना आई आपणे तिल दी, तिलकदी वेखी कूड़ लोकाईआ। धड़कणा मिटी ना दिल दी, सांतक सति ना कोए वखाईआ। अन्धेरी रैण समझ आई ना जगत बिल दी, कपट रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। संदेसा कहे मेरा सुणो अगम्मी बोल, अनबोलत रिहा जणाईआ। जगत दमामिउँ वक्खरा ढोल, दो जहान करे शनवाईआ। जगत जिज्ञासूओ परदा लैणा खोल्ह, ख़ालक ख़लक रिहा दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सब दा कढुणा पोल, पोप बचया रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वज्जण नहीं देणा रोल, रौला वेखे जगत लोकाईआ। जन भगतां वसणा कोल, घर ठांडे सोभा पाईआ। जित्थे रुत्त बसन्त जाए मौल, मलकुलमौत ना भय वखाईआ। अमृत रस दे के पाहुल, पहल गुरमुखां दए बणाईआ। जन्म कर्म दा कर के भार हौल, हवालात लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। माण वड्याई बख्श के उपर धौल, धर्म दा दवारा इक्क समझाईआ। सन्त सुहेले फड़ अडोल, अड्डुरे आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार धुर सरनाईआ। धुर सरनाई कहे सब दा इक्को सज्जणा, साहिब लैणा मनाईआ। काया भाण्डे कूड़े भज्जणा, भँवरी विच दिसे लोकाईआ। साचे दर गुरमुख विरले लँघणा, जिन्हां मिले माण वड्याईआ। धुर दरबारा इक्को खुल्हणा, जित्थे वस्त ना कोए पराईआ। मिले मेल सूरे सरबंगणा, समरथ स्वामी होए सहाईआ। धूढ़ी लग्गे अनोखा चन्दना, चन्द चांदनी नूर शरमाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना कोए बन्धना, बन्दगी इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सोभा पाईआ। दरगाह कहे मैं जगत दरगाह नहीं शरीफ़, शराफ़त वेखां थाउँ थाँईंआ। मैं तक्कां उह ज़ईफ़, जो सिर्फ़ दिलरुबा मात अख्वाईआ। मैं कदे ना होई ज़ईफ़, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। किसे ना झुकया सीस, सजदा

ना कोए वखाईआ। कलमा ना पढ़या हदीस, कूक ना कोए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग रिहा समझाईआ। दरगाह कहे मेरी कोए ना जाणे दरगाह, दर नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां वेखे थल अस्गाह, जगत विच वड्याईआ। उह मन्न के इक्क अलाह, आलमीन सीस झुकाईआ। ख़ादमां दा समझ खुदा, खुदी विच खुद रूप बदलाईआ। लेखा जाणे ना आदम हवा, हवस विच सर्ब लोकाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि नवां, नव नौ चार हुक्म वरताईआ। तिस दा विवहार होणा रवां, रवानगी सर्ब लोकाईआ। दरगाह कहे मैं की कुछ कहां, की तौफ़ीक हक खुदाईआ। इक्क एक दी चरणी ढह्वां, जिस मेरे गृह दिती वड्याईआ। नच्चां कुद्दां नाल चवां, चाउ घनेरा सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कर के मन्नां, मनसा सब दी पूर कराईआ। आपणा शब्द सुणा के बिना कन्नां, पूरब दे गुरमुख लए उठाईआ। जगत जहान तों उच्चे बणा, शरअ ज़ंजीर रिहा कटाईआ। दस सौ चव्ही दा सोहणा पन्ना, गुरू ग्रन्थ दए दुहाईआ। जगत विधान होणा निकम्मा, नकरमण कूड़ लोकाईआ। मनुआ मन बणे पंमा, प्रेम प्रीती ना कोए वखाईआ। सब तों वक्खरा निराला होवे समां, सम्मत सम्मती रूप बदलाईआ। नव नौ चार दा पैंडा मुके लम्मा, वदी सुदी ना वण्ड वण्डाईआ। कलयुग आवे अन्तिम उत्ते दमां, दामन पल्लू ना कोए फड़ाईआ। दीन दुनी हरस वधे तमअ, तामस अग्नी तत तपाईआ। नूरी जोत जगे ना कोई शमां, शमशान भूमी जगत दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाईआ। राह कहे मेरा वखरा रस्ता, राह रासती नाल जणाईआ। चार जुग दा पिछला बन्नह् के बस्ता, बस्ती नवीं देणी वसाईआ। जिस गृह पुरख अकाल होवे वसदा, वसल मिले यार खुदाईआ। नूर होवे इक्को अक्ख दा, आख़र मेला बेपरवाहीआ। भण्डारा देवे धर्म सति दा, सच मिले वड्याईआ। मनुआ मूल ना होवे नच्चदा, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। सोहणा भाण्डा होवे साढे तिन्न हथ्थ माटी कच्च दा, गुर सतिगुर ढोला गाईआ। लूं लूं प्रभ स्वामी हो के रचदा, रचना आपणी दए वखाईआ। कत्तक कहे मैं भुक्खा भगतां दे जस दा, सिफ्त सिफ्तां नाल सालाहीआ। खुशीआं विच सदा हस्सदा, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। जिस दे कोल भण्डार अमृत रस दा, रस्ते भुल्लयां दए पिलाईआ। सदा सुहञ्जणा खेड़ा वसदा, दरगाह साची सोभा पाईआ। लहिणा देणा पूरा करे सब दे हक दा, हकीकत दा हक दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नाम भण्डार खोल्ह् के आपणे हट्ट दा, वणज वणजारा इक्क कराईआ।

★ पहली मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे मैं रिहा फिरदा, फिरत फिरत वेखी सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी अन्तर टोहया हिरदा, घट घट अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। प्रेम प्यार खोजया साचे पिर दा, पीआ प्रीतम तक्कया थाउँ थाँईंआ। जो भगत सुहेला विछड़या चिर दा, चिरी विछुन्ना आप जगाईआ। अन्तर अमृत हो के झिरना झिरदा, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। कँवल नाभी हो के खिलदा, गुंचा रूप रूप बदलाईआ। भेव खुल्हा के निराले तिल दा, त्रैगुण लेखा दिता मुकाईआ। सच स्वामी जित्थे मिलदा, हरि करता धुरदरगाहीआ। झगड़ा मुका के सुखमन टेडी बिल दा, पैंडा पन्ध दिता चुकाईआ। घर वखा निरवैर निर दा, निराकार जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे उठ मीत मुरारे मग्घर, मगरला लेखा रहे ना राईआ। सब दी आसा मनसा पूरी होवे सध्धर, सदम्यां वाला नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दी दृष्टी करदे पध्धर, पतिपरमेश्वर इक्क जणाईआ। धुर दा स्वामी अन्तरजामी करे अदल, इन्साफ़ इक्को घर प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर कत्ल, बैतल मुक्दस इक्क प्रगटाईआ। जेहड़े भुल्ल गए आपणा वतन, बेवतनां वतन वखाईआ। अग्गे किसे दा चल्ले कोई ना यतन, यथार्थ गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला एकँकार सांझा यार परवरदिगार आवे रखण, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। आत्म परमात्म सांझा कर के पत्तण, पतिपरमेश्वर आपणा परदा दए चुकाईआ। जगत वासना रहे कोई ना मतन, मन का मणका इक्क भवाईआ। सन्त सुहेले धुरदरगाही बण के आवे सद्दण, सद्दा होका लोक परलोका एका नाम जणाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी विच्चों आवे कढ्ढण, बेपरवाह हो फड़ बाहों पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेख मग्घर मीत मुरारी, मित्रा मित्र देणा मिलाईआ। मग्घर कर चरण निमस्कारी, बिना सीस सीस झुकाईआ। एह खेल अगम्म अपारी, संसारी समझ कोए ना आईआ। तूं दाता गहर गम्भीर तेरी सदा सदा सिक्दारी, सिक्दार बैठे सीस झुकाईआ। झगड़ा मुके गुरू अवतारी, पैगम्बर धारी तेरे विच समाईआ। एका निरगुण नूर जोत उज्यारी, उजल करे आप रुशनाईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहारी, कातब करे ना कोए वड्याईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला शाह पातशाह शहिनशाह लेखा जाणे एका वारी, वारता सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति संदेसा इक्क सुणाईआ। मग्घर कहे सुण सतिगुर शब्द स्वामी, सहिज सीस झुकाईआ। घट निवासी अन्तरजामी, बेनन्ती हक दृढ़ाईआ। तेरा हुक्म

धुर फ़रमानी, फ़ुरनयां विच सर्ब भवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए निशानी, निछावर आपणा आप कराईआ। पैगम्बर मंगदे गए अगम्मा पाणी, दरगाह साची राह तकाईआ। तेरी रमज़ किसे ना जाणी, अन्जाणत सीस झुकाईआ। जलवा लै के धुर नुरानी, मस्तक नूर नूर चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। मग्घर कहे तूं शब्दी दाता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादी इक्क ज्ञाता, गुरू गुरदेव करें पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर सुणावें गाथा, कथनी कथ सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेख तमाशा, दो जहानां परदा आप उठाईआ। तेरे मण्डल तेरी रासा, गोपी काहन नच्चण टप्पण वाहो दाहीआ। पीर पैगम्बरां पूरीआं कर आसां, आहिस्ता आहिस्ता असल आपणा खेल देणा वखाईआ। सब दा ख़ाली कर कासा, कसम तेरे नाम दुहाईआ। तेरा नूर तेरा प्रकाशा, तेरा नाम शब्द शनवाईआ। सतिगुर शब्द तेरी समझे कोई ना भाषा, भाख्या विच सारे देण दुहाईआ। मैं तक्कया ज़िमी आकाशा, अकस तेरा थाउँ थाँईंआ। सारे कहि के गए जोती जाता, जोती जाता तेरा रूप ना कोए वखाईआ। तेरे नाम दी महिमा गाई बहु भांता, बातां जगत विच वड्याईआ। कोटां विच्चों कोट कोटी तेरीआं मार के गए वाटां, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर देणा दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण मग्घर बाले निक्के, निक्कयां दयां वड्याईआ। मेरा खेल किसे ना दिसे, अन्त कहिण कोए ना आईआ। सब दे पूरे कर के हिस्से, हस्ती धुर दी दिती प्रगटाईआ। जेहड़े लेख पिछले लिखे, गुर अवतार पैगम्बरां पूर कराईआ। अन्तिम कढ्ढु के साचे सिट्टे, सिट्टा सब दे नाल लगाईआ। धुरदरगाही वखा के चिट्ठे, पड़दे अंदरों दिते चुकाईआ। नेत्र धार अगम्मी नैणीं नीर वहा के पिट्टे, बिन हन्झूआं देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं वरतां जलदी, जल थल महीअल वेख वखाईआ। खेल वखावां अछल अछल्ल दी, वल छलधारी आप वखाईआ। जेहड़ी जोत शब्द संदेसा रही घलदी, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। भगतां मंज़ल देंदी रही अटल दी, निहचल धाम वड्याईआ। उस ने सार ना दिती आपणे पल दी, पलकां दे पिच्छे गुर अवतारां पैगम्बरां हुक्म मनाईआ। सो आपणी धार आपे विच रलदी, दूजा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा प्रगटाईआ। मग्घर कहे मैं वेख्या इक्क इकल्ला मीता, मता इक्को नाल पकाईआ। जिस दी समझे कोई ना रीता, रती रत सब दी रिहा सुकाईआ। कुछ लेखा अर्जन कृष्न नाल जिस वेले उपजाई गीता, इक्क अठ्ठ जोड़ जुड़ाईआ। जेहड़ा सब दा ठाकर नीका, निक्कयों वड्डे दए बणाईआ। ओस दीआं सदा सदा उडीकां, अभुल्ल भुल्ल कोए ना जाईआ। जो आदि जुगादी ठांडा सीता, सीता राम सदा

प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। संदेसा कहे सुणो दो जहान मीत, बिन मत्यों दयां सुणाईआ। सांझी इक्क करो प्रीत, परम पुरख इक्क मनाईआ। जिस दा लहिणा बीस, बीस इकीस रंग वटाईआ। सो साहिब जगत जगदीस, जगदीशर धुरदरगाहीआ। चार जुग जुगती नाल करदे गए उडीक, भगती विच भगवन ध्यान लगाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग बदलण आया रीत, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। भगत सुहेला सब दे अन्तर वस्या बीच, जगत नेत्र अक्ख नज़र कोए ना पाईआ। जिन्हां साचा नाम करे बख़्शीश, रहमत रैहम हक कमाईआ। उह सुण के सच हदीस, ढोला गावण धुरदरगाहीआ। चरण कँवल बण वसनीक, मन्दिर खेड़ा इक्क सुहाईआ। दीन मज़्ब दी लँघ के लीक, झगड़ा दूई द्वैती ढाहीआ। काया काअबा वेख मसीत, मसला जीवण हल्ल कराईआ। सतिगुर वेख शब्द अतीत, त्रैगुण बैठण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। मग्घर कहे मैं होया मुर्दा, मुरीद मुर्शद वेख वखाईआ। जिस दा नाम फ़ुरना इक्को फुरदा, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। पद रखे इक्को सतिगुर दा, गुर सतिगुर रूप धराईआ। मालक हो अगम्मे धुर दा, धुर धाम दए वड्याईआ। लेखा पूर कराए अनन्द पुर दा, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। लेखा देवे देवत सुर दा, सुरप्त इन्द सीस झुकाईआ। शंकर जिस कारण निरगुण धार जुड़दा, जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म वेता हो के चार कुण्ट दहि दिशा फिरदा तुरदा, तुरत आपणी सेव कमाईआ। विष्णूं खेल वखावे होर होर दा, होका इक्को इक्क समझाईआ। जुग चौकड़ी सब दी कीती करनी आपे तोड़दा, तुट्टयां गंढु पवाईआ। पिछला लेखा जो टहणा लयांदा बोहड़ दा, बौहड़ी बौहड़ी कर के रिहा कुरलाईआ। जिस वेले बुध शब्द सुणया ज़ोर दा, ज़ोर ज़र नज़र ना आईआ। अन्तर दर्शन इक्को लोड़दा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। आवाज़ आया अगम्मी घनघोर दा, बिन डंक डफार शनवाईआ। हरि करता निक्का जेहा दरवाजा खोल्हदा, खिड़की बन्द उलटाईआ। बिन तराज़ू कंडे तोलदा, वज़न इक्को इक्क जणाईआ। सतिगुर शब्द हो के बोलदा, बोली इक्क प्रगटाईआ। तेरा लेखा कलयुग विच रोल दा, रौला सके ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा आप खुल्हाईआ। बोहड़ कहे मैनूं कहिंदे बड़, पूजा जगत लोकाईआ। मेरी नौ सौ नड़िनवे फुट्ट डूँग्घी जावे जड़, एह प्रभ ने दिती वड्याईआ। जित्थे राजा बल गया वड़, बावन भाग लगाईआ। ओथे खेल अगम्मी नर, नर नरायण जोत रुशनाईआ। इतल वितल सितल किरपा आपणी रिहा कर, हरि करता बेपरवाहीआ। धुर संदेशे दिता वर, ख़बरां विच्चों ख़बर इक्क प्रगटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जामा लए धर, धरनी धरत धवल धौल धर्म दवारा इक्क वखाईआ।

सन्त सुहेले भगत जन लए फड़, माण देवे जणेंदी माईआ। साची मंज़ल पौड़े जाए चढ़, काया मन्दिर अंदर पन्ध मुकाईआ। सच दवारा एकँकारा वखाए अगम्मा घर, जिस गृह दीवा बाती इक्को इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा वखाईआ। बड़ कहे मैं बोहड़ दा बूटा, बूटा गुर अवतार पैगम्बरां दिता लगाईआ। जिस वेले बुध ने बिना सुध्ध तों ल्या झूटा, हथ्थ टहणी नाल लटकाईआ। प्रकाश वेख्या चारे कूटां, काया कुटीआ वज्जी वधाईआ। उस दा पुड्डा होया इक्क जूता, आपणी करवट गया बदलाईआ। नेत्र रो के धाहीं मार के होया मूधा, बौहड़ी बौहड़ी रिहा सुणाईआ। बिना पुरख अकाल तों अवर रहे कोई ना दूजा, दुतीआ भाउ सर्ब मिटाईआ। लेखा रविदास खुल्हाउणा गूझा, रवी एका रंग रंगाईआ। कुछ लहिणा देणा गोबिन्द हथ्थ रखाउणा उपर कूजा, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नेत्र नीर वहा के नौ दिन दा रो प्या चूज़ा, चीक चीक सुणाईआ। बिना पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां कोई करे ना रीझां, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सृष्ट सबाई पुरख अबिनाशी जगत दवारयों लभ्भणा ला के नीझां, दर दर फेरा पाईआ। नाता जुड़ना गुर अवतार पैगम्बरां सृष्टी चाचा भतीजा, बिना पिता पुरख अकाल दूजा गोद ना कोए उठाईआ। इक्क दे हथ्थ विच होण हक तौफ़ीका, तोहफ़ा सब नूं दए पुचाईआ। तेई अवतारां करनीआं सच उडीकां, बुध बिना बुद्धी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। बड़ कहे बुध मेरे नाल पाई पींघ, केसां बन्धन पाईआ। ढाई कदम अग्गे रींग, नेत्र अक्ख उठाईआ। दर्शन करना दीद, ज़ाहर ज़हूर शरनाईआ। पुरख अकाल इक्क उम्मीद, आमद विच वड्याईआ। दीन दयाल वखाई रसीद, बिन अक्खरां आप पढ़ाईआ। जिस दे विच कीती ताकीद, हुक्म विच शनवाईआ। अवतारां दे अख़ीरी अज़ीज़, उंगली नाल उठाईआ। सब दा लेखा जाणा बीत, वीहवीं सदी दए गवाहीआ। पिछली रहे कोई ना रीत, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। प्रभ आवे बीठलो बीठ, जो नामा गया ध्याईआ। भगत दुआर इक्क अनडीठ, बहत्तरां दए वड्याईआ। सत्तरां संग संगीत, सोहला सच सुणाईआ। चुहत्तरां चेतन चीत, चार्तक तृखा बुझाईआ। पंज पंज पंज आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, चार चार खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। बड़ कहे मेरे हिल्ले पत्ते, पतिपरमेश्वर दिती वड्याईआ। मैं वेखी हकीकत हके, परदा दिता चुकाईआ। नाम संदेशे सुणे सच्चे, सच मिली शरनाईआ। कलयुग अन्त तत्तां वाले गुरू रहिणे नहीं कच्चे, सतिगुर शब्द मिले सर्ब सरनाईआ। जो हर घट अन्तर वसे, सब दा इक्क गोसाईआ। नाम अगम्मा दस्से, इक्को करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करे इक्ठे, झगड़ा पिछला दए चुकाईआ। भाग लगा के तत अठ्ठे, अप तेज वाए पृथ्मी

आकाश मन मति बुध करे रुशनाईआ। नाम भण्डारा अमृत दे के रसे, रसना रस सर्ब गवाईआ। दर्शन दे के इक्को अक्खे, अग्नी तत बुझाईआ। सन्त सुहेले साचे आपणे दवारे सद्दे, नाम संदेसा इक्क सुणाईआ। जो हरि सरनाई लग्गे, लहिणा देणा दए मुकाईआ। जीव रहिण ना देवे बगड़े बप्पे, काग हँस वखाईआ। गुरमुख गुर गुर कर के पक्के, सतिगुर शब्द दए सरनाईआ। लूं लूं अन्तर आपे रचे, रचना प्रभ दी दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा मुका के मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठे, गृह मन्दिर इक्क सुहाईआ। हुक्मे अंदर सब नूं रखे, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। मग्घर कहे मैं चढ़दा आया जग, जुग जुग सेव कमाईआ। जेहड़ी खुशी होई अज्ज, आजज़ हो के दयां सुणाईआ। शब्दी सतिगुर बणया जज्ज, जहालत वेखे जगत लोकाईआ। किसे दा परदा सके कोई ना कज्ज, गुर अवतार पैगम्बर ना कोए सहाईआ। चार कुण्ट दृष्टी रही नच्च, सृष्टी पई दुहाईआ। चुरासी सके कोए ना बच, बचन पूर ना कोए कराईआ। जो हरि का नाम रहे वच, अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। उहनां दा लहिणा देवे सच, सच बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे तेरा मग्घर चा निराला, निराला दयां वखाईआ। सब दे अंदर अज्ज तों पै जाए पाला, भय विच भय प्रगटाईआ। चिट्टे उपर लेख होवे काला, कलयुग काली रैण नाल मिलाईआ। सब दा कढ्ढ दए दीवाला, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। सतिगुर शब्द वेखण आया वक्त हाला, माज़ी पिछला खोज खुजाईआ। दीन दुनी दी बदले चाला, चाल सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। मग्घर कहे मैं हुन्दा जावां चुप्प, कहिण कुछ ना पाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं लुक्कया रिहा छुप, जुग चौकड़ी नज़र किसे ना आईआ। अन्त वेख अन्धेरा घुप्प, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। मैं बदल के पिछला रुख़, रस्ता आपणा ल्या अपनाईआ। हुक्म देवां मानस मनुक्ख, पंज तत समझाईआ। जीवो जंतो साधो सन्तो बिना प्रभ दे सब नूं मिलणा दुःख, दुखियां दुःख ना कोए वण्डाईआ। सतिगुर शब्द जम्मया कदे किसे ना कुक्ख, माता गर्भ ना डेरा लाईआ। ना उह मानस ना मनुक्ख, तत वजूद ना कोए हंढाहीआ। सभदे अंदर रहे लुक, घट डेरा आपणा लाईआ। जुग जुग आपणा परदा चुक्क, करे सच रुशनाईआ। जन भगतां मेट के तृष्ना भुक्ख, ममता मोह गवाईआ। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, दरगाह साची धाम टिकाईआ। गुरमुख गुरसिख कर के खुश, खुश्यां ढोला इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को इक्क वसाईआ। मग्घर कहे मेरी आसा मनसा पुन्नी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। किरपा कर वड गुण गुणी, गहर गम्भीर तेरी

सरनाईआ। तेरे नाम दी इक्को उपजे धुनी, धुन आत्मक राग अलाईआ। झगड़ा रहे ना ऋषी मुनी, मानव मानव दे समझाईआ। मुख घूँगट काली लाह दे चुन्नी, चार कुण्ट रुशनाईआ। लेखा याद कर लै सम्मत उन्नी, कत्तक कूक कूक सुणाईआ। हुण सांभ लै आपणी दुनी, दीन तेरी सरनाईआ। सब दी ख़ाली दिसे कुंनी, सच वस्त ना कोए वरताईआ। आबेहयात लग्गे किसे ना बुल्लीं, बुलबुला दिसे जगत लोकाईआ। तेरी सृष्टी तैनूं भुल्ली, अभुल्ल समझ कोए ना आईआ। कलयुग अन्त तेरे सन्त जगत वासना खांदे गुल्ली, गोलक हथ्थ किसे ना आईआ। भाग लग्गा ना काया कुल्ली, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। अमृत कर कर दूज्जयां नूं देंदे चुली, आपणे चुल्हे अग्ग ना कोए बुझाईआ। चार जुग तेरी छुट्टी वेखी खुल्ही, दीनां मज़्बां हिस्सयां विच वण्डाईआ। कलयुग अन्त तेरी फुलवाड़ी हुल्ली, पत्त टहणी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। मग्घर कहे कुछ तेरी मदद, मुद्दत तों मंग मंगाईआ। कलयुग वेख जगत तशदद्, तसबी माला दए दुहाईआ। सृष्टी वण्डी विच अदद, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे की शब्द सुणया संदेसा दए हलकारा, हलकयां वाले गुर अवतार पैगम्बरां रिहा सुणाईआ। उठो वेखो तक्को परम पुरख दा इक्क नज़ारा, नज़रीआ सब दा रिहा बदलाईआ। जागरत जोत बिन वरन गोत रिहा उज्यारा, चार कुण्ट दहि दिशा करे रुशनाईआ। नव नौ चार खोल्ह के इक्क दवारा, दायरा दीन दुनी मिटाईआ। आत्म परमात्म कर प्यारा, प्रीती परम पुरख बणाईआ। सति सच बोल जैकारा, जै जैकार रिहा सुणाईआ। नाम संदेसा दे के वारो वारा, विरसा सब दा वेख वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचा नूर कर उज्यारा, अन्ध अंध्यारा रिहा मिटाईआ। जगत जिज्ञासूआं वखावे इक्क किनारा, नईआ नौका नाम प्रगटाईआ। सतिजुग सच करे पसारा, सति सति विच समाईआ। छब्बी पोह खेल होए न्यारा, निराकार आप कराईआ। जिस नूं कहिंदे इक्क इक्क दो एके मिल के होण ग्यारां, ग्यारवां गुरू ना कोए बणाईआ। इक्क इक्क दा गुरू सतिगुरू शब्द बहारां, जिस दी बहार ख़िज़ां विच कदे ना आईआ। ओस दी भगत फुलवाड़ी खिड़ी रहे गुलज़ारा, गुलशन आपणा इक्क महकाईआ। पहली वार बोल के इक्क जैकारा, नौ खण्ड दए सुणाईआ। दूजी वार बदल के धारा, धरनी धरत धवल दए हिलाईआ। तीजी वार नूं दीन दुनी दृष्टी अंदर सृष्टी करे निमस्कारा, एहो बेपरवाहीआ। फिर सब ने लभ्भणा सब ने खोजणा किथ्थे वसे निरँकारा, निराकार आपणा नूर कर रुशनाईआ। प्रगट होणा भगतां दा भगत दवारा, जिस भगती पिच्छे जुग चौकड़ी सारे सेव कमाईआ। गुरमुखो तत्तां वाला नहीं कोई चव्हीआं अवतारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग

चौकड़ी नित नवित सर्ब पसारा, एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना एका रंग समाईआ। एह समागम नहीं समें दा विहारा, समाप्त सब नूं दए कराईआ। झलक विच पलक विच ख़लक विच फ़लक विच इक्को नूर होए चमत्कारा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। एह शब्द दा इशारा जगत दा किनारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। जिस नूं समझे ना कोई जीव संसारा, जगत बुद्धी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हौली हौली करदा जाए विहारा, बिवहार विच तिवहार भगतां रिहा बणाईआ।

★ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द दासी दासा, बिन दस्त सेव कमाईआ। आदि जुगादि सदा अबिनाशा, अबिनाशी रूप बदलाईआ। निरगुण हो के पावे रासां, सरगुण गोपी काहन प्रगटाईआ। दो जहानां मंज़ल वेखे वाटां, रहिबर हो के खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी देवे दातां, मेहर नज़र उठाईआ। सद वसे इक्क इकांता, अकल कल आपणी कल जणाईआ। जन भगतां पुछे वातां, जुग जुग हो सहाईआ। सच प्रीती जोड़ के नाता, नर नरायण दए मिलाईआ। आत्म परमात्म पढ़ा के गाथा, परदा अंदरों दए चुकाईआ। एथे ओथे देवे साथा, सगला संग निभाईआ। सच प्रीती बख़्शे धूढ़ी माथा, मस्तक टिक्का नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग इक्क रखाईआ। संगी साथी हरि सति स्वामी, सतिगुरू गुरदेव इक्क अख्वाईआ। जन भगतां करे सदा मेहरवानी, महबूब धुरदरगाहीआ। धर्म दुआर दे निशानी, निशाने कूड़े दए मिटाईआ। साचा मार्ग दस्स आसानी, असल आपणा राह वखाईआ। जुग जुग जगत रीती मेटे पुराणी, सदा सद आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा हुक्म सिफ्तां वाली बाणी, अक्खरां विच लिखाईआ। सो साहिब सच सुल्तानी, सुत्तयां अक्ख खुल्हाईआ। मंज़ल बख़्श इक्क रुहानी, रूह बुत्त दा पैंडा दए मुकाईआ। जलवा दे जल्वागर असमानी, इस्म आपणा इक्क वखाईआ। आत्म रहे ना कोए बेगानी, बग़लगीर आपणी गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मंज़ल दस्स आसानी, राह इक्को इक्क वखाईआ। मंज़ल मिले इक, एकँकार दए वड्याईआ। साचा लेखा देवे लिख, लेख लिख्त लिखी तकदीर बदलाईआ। प्रेम प्यारा गुरमुख सिख, गुर गोदी गोद उठाईआ। धुर दा बण के अगम्मा पित, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई शब्दी धार सतिगुर मित, एकँकार रंग रंगाईआ।

शब्द निराला अगम्मी तीर, तुरीआ तों परे परदा रहे ना राईआ। जित्थे मंजल हक अख़ीर, लाशरीक जलवा नूर करे रुशनाईआ। सईयदे करदे अवतार पैगम्बर गुर पीर, निरगुण निरगुण सीस निवाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, तन वजूद वण्ड ना कोए वण्डाईआ। खेले खेल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित साचे सन्तां करे मेहर, मेहरवान महबूब आपणा मेल मिलाईआ। जिस मंजल ते होका चढ़ देवे कबीर, काया कबर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर इक्को इक्क सुहाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मा देवे रस, रसना रस कहिण किछ ना पाईआ। आत्म परमात्म होवे वस, मन का भउ रहे ना राईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाश, सूर्या चन्द बैठण मुख छुपाईआ। झगड़ा चुक्के पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड परदा दए उठाईआ। सुरत शब्द शब्द सुरत एका गृह एका घर एका मन्दिर कर निवास, अस्थान इक्को इक्क सुहाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी एका देवणहारा सति भरवास, धुर दी धार इक्क बंधाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह खेले खेल आप तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परवरदिगार सांझा यार आपणा मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द वेखणहारा सन्त हिरदा, काया माटी साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। जित्थे बिन पाणी सरोवर निर्मल झिरना झिरदा, बूँद स्वांती कमलापाती आप टपकाईआ। निराकार निराधार निरवैर आपणी कूटे दिशा अगम्मी फिरदा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण समझ कोए ना आईआ। लहिणा देणा देवे अगम्म अथाह आपणी मेहर दा, मेहरवान महबूब आपणे रंग रंगाईआ। जो साजण मीत मुरारा विछड़या चिर दा, चेतन हो के चेतन सुरती अकाल मूर्ती नाद तूरती तुरत आपणा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर मन्दिर अन्तर निरंतर एका वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी बाणी तीर, तीर निराला सतिगुर आप चलाईआ। जगत वासना मन कल्पणा बजर कपाटी देवे चीर, चात्रक बूंद स्वांती इक्क प्याईआ। झगड़ा मुका के शाह हकीर, सच तामीर आपणा नाम कराईआ। बदली करे बदलणहारा हुक्मे अन्तर हुक्म तकदीर, तदबीर इक्को इक्क सुणाईआ। शरअ रहे ना कोए ज़ंजीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट भीतर काया मन्दिर अंदर गृह आपणा परदा दए उठाईआ। बाणी निराला तीर जिस नूं गया वज्ज, जगत वासना रहे ना राईआ। बिन मक्के काअबिउं होवे हज्ज, हुजरा हक दए वखाईआ। जित्थे वज्जे अगम्मी नद, धुन आत्मक राग शनवाईआ। दीआ बाती इक्को रिहा जग, दूजी

अवर ना कोए रुशनाईआ। सच स्वामी रिहा सज, सच दवारे सोभा पाईआ। झगड़ा करे ना कोई राग रागनी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण मिटे हद्द, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नूर करे रुशनाईआ। सो दवारा एकँकारा नानक निरगुण धारा ल्या लभ्भ, सच दवारे बहि के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा घर इक्को इक्क सुहाईआ। बाणी नाम तीर अनोखा, बिन सतिगुर तन वजूद ना कोए लगाइंदा। जिस दे लग्गयां होए कोए ना धोखा, मन मति बुध जगत वासना डेरा ढाइंदा। साचा राह इक्को दस्से सौखा, बिन पौड़ी डण्डे आप चढ़ाइंदा। इक्को इक्क पढ़ा के पोथा, बिन अक्खरां निरअक्खर धार आप दृढ़ाइंदा। झगड़ा मुका के लोक परलोका, सच सलोका इक्को इक्क सुणाइंदा। घर वखावे परदा लाहवे जित्थे जगे निर्मल जोता, जोती नूर इक्को इक्क डगमगाइंदा। सच दुआर सचखण्ड सुहाए अगम्मा कोठा, छप्पर छन्न ना कोए वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर एका रंग रंगाइंदा। बाणी तीर वज्जे जिस तन वजूद, माया ममता मोह मिटाईआ। भाग लगाए काया माटी सच कलबूत, कलमा इक्को इक्क पढ़ाईआ। जित्थे मिले हक महबूब, सो मंजल दए वखाईआ। झगड़ा रहे ना एका दूज, दूआ एका इक्को विच समाईआ। झगड़ा रहे ना चारे कूट, चारे खाणी चारे बाणी चार वरनां चार कुण्ट परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, जिस घर एका नूर होवे रुशनाईआ। बाणी कहे जिस तीर निराला वज्जा सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। घर स्वामी मिल के कन्त, सुहञ्जणी सेज इक्क सुहाईआ। निरगुण चाढ़ रंग बसन्त, फुल्ल फुलवाड़ी अगम्म महकाईआ। जिस नूं समझे कोए जीव ना जंत, लख चुरासी दए दुहाईआ। विद्या वाला सार ना पावे पंडत, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिंदे बेअन्त, बेपरवाह बैठा सोभा पाईआ। जिस दा लेखा जुग चौकड़ी आदि अन्त, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कल वरताईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी जोत प्रकाशी सर्ब बणाए बणत, घड़न भन्नणहार वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर जिस दवारे बणे मंगत, दर दरवेश बैठे झोलीआं डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो तीर निराला शब्दी आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर तीर निराला तिक्खा, शब्दी धार अखवाइंदा। जो फट्टड़ करे गुरमुख विरले सिक्खां, साख्यात जिन्हां नज़री आइंदा। झगड़ा रहे ना वड्डा निक्का आत्म इक्को रंग वखाइंदा। पुरख अकाला दीन दयाला बण के पिता, पतिपरमेश्वर गोद उठाइंदा। जगत बाणी गुर अवतार पैगम्बरां दा शब्द संदेशे वाला चिट्ठा, चिट्ठी रसायणां हथ्थ लोकमात

पुचाइंदा। इस तों परे जिस ने अगम्म दवारा डिठ्ठा, सो सन्त साजण सच घर सोभा पाइंदा। जगत वासना वाला दीन मज़्ब नहीं कोई हिस्सा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां विच ना कोए सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीर निराला इक्क समझाइंदा। तीर निराला तिक्खा तुरीआ, तुरत स्वामी आप जणाईआ। जिस नूं वेखे कोए ना लोआं पुरीआं, ब्रह्मण्डां खण्डां विच नज़र किसे ना आईआ। जिस ने जुग चौकड़ी लख चुरासी विच्चों आदतां कढ्ढीआं बुरीआं, सति सच सच दृढ़ाईआ। सुरत सवाणीआं सुहागण कीतीआं कुड़ीआं, हरि कन्ती शब्द शब्द मिलाईआ। सन्त जनां मिल सति संग सति सति जोड़ीआं जुड़ीआं, अजोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। बिन सतिगुर किरपा सारीआं जांदीआं रुढ़ीआं, बण मलाह बेड़ा पार ना कोए कराईआ। बाणी कहे तीर निराला तिक्खा नालों धायल करन वालीआं छुरीआं, शरअ दा ज़ंजीर दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच सति इक्को नाम वखाईआ। सन्त जनां किहा मुख विच्चों ठीक, सिफ्त नाल वड्याईआ। जिंनां चिर ना करो तस्दीक, शब्द नाल दयो गवाहीआ। किस बिध सुरती करे प्रीत, प्रीतम मिल के खुशी मनाईआ। धाम वेख घर अनडीठ, भज्जी फिरे चाँईं चाँईंआ। स्वामी दिसे इक्क अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जित्थे ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदवाला मठ्ठ वण्ड ना कोए वण्डाईआ।
९६७
२०
जिस दवारयों गुर अवतार पैगम्बरां नाम होवे बख्शीश, जिस नाम दी सिफ्त सारे रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। ठीक कहिणा होवे पवित्त, पवित्र रसना नाल दयो समझाईआ। किस बिध मिल्या सतिगुर पित, शब्दी दाता धुरदरगाहीआ। जो झगड़ा मेटे नित, नवित वेख वखाईआ। काया मन्दिर अंदर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के करे हित्त, मीत मुरारा देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तर अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। ठीक कहिण दा आवे रस, अगला रस्ता दयो जणाईआ। जिस नाल मन होवे वस, वसल मिले यार खुदाईआ। बिना अभ्यास तों खुल्ह जावे अक्ख, निज नेत्र नूर चमकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल दिसे सच्च, सच सच वज्जे वधाईआ। शब्द उपजे अगम्मी नद, सरवण सुणन दी लोड़ रहे ना राईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन टेडी बंक रहे कोई ना हद्द, त्रिकुटी छुट्टे छुट्टे वस्त पराईआ। इक्को दवारा जित्थे साहिब सुल्तान सतिगुर शब्द बिन तन वजूद रिहा सज, सजदा करन दी लोड़ रहे ना राईआ। ओस दा भेव खोल्हणा अज्ज, अज्ज दा वेला कल्ल हथ्थ ना आईआ। चलो अंदर वड़ीए मन्दिर चढ़ीए दर्शन करीए ओस दा रज्ज, जिस नूं रजो तमो सतो वेख के रोवण मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडी रसना दा ठीक बोलया तुहाडे कोलों ठीक दए कराईआ।

रसना जेहवा कहे बहुत सोहणा, सोहणी आवाज़ सुणाईआ। जेहड़ा वेख्या आपणे निज लोयणा, ओस दा परदा दयो उठाईआ। बिन साचे सन्तां एह जगत टुट्टा किसे नहीं परोणा, सुरत शब्द ना किसे जुड़ाईआ। एह कोई खेल नहीं अनहोणा, गुर अवतार पैगम्बर एसे दी देंदे गए सफ़ाईआ। इक्क शब्द उह सुणाउणा, जिस नूं सुण के सरोते काया मन्दिर अंदर खा के गोते घर आपणा वेख वखाईआ। सन्त सतिगुर शब्द गुरू गुरदेव स्वामी घर घर दा पराहुणा, कोई घट ख़ाली नज़र कदे ना आईआ। इन्हां बच्चयां नूं शब्द प्रेम नाल प्रचाउणा, पर्चा जीवण दा देणा वखाईआ। जिन्हां ने लख चुरासी विच फेर कदे नहीं आउणा, लख चुरासी पैंडा जाणा मुकाईआ। अगम्मड़े धाम ओस वसाउणा, जित्थे वसदयां सके ना कोए उठाईआ। आप दा ठीक शब्द ठाकर वाली ठोकर इक्क लगाउणा, नानक निरगुण शब्दी धार शब्द नाल गया दृढ़ाईआ। बाणी मारे निराला तीर विछड़यां तुरत मिलाउणा, सुरती सुरत खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे सन्तां सति दवारा इक्को इक्क सुहाईआ।

९९८
२०

★ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ गुरमीत सिँघ दे गृह पिण्ड हरदो फराला ज़िला जलन्धर ★

मग्घर कहे मैं मस्ती विच मग्न, मगरला लेखा दिता मुकाईआ। गुरमुख दीपक भगत सुहेले जगण, जागरत जोत खुशी बणाईआ। सृष्टी दृष्टी लग्गे अग्न, तन वजूद तपाईआ। जन भगतां सीतल धारा बदन, बन्दगी अंदरों करे सफ़ाईआ। सच दवारा इक्को लँघण, पैंडा पन्ध मुकाईआ। नाम खुमारी चढ़े रंगण, रंगत इक्क बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ। मग्घर कहे मेरी पूरन होई इच्छा, निरिच्छत प्रभ दिती वड्याईआ। साचे नाम दी पा के भिच्छा, भिक्खक गुरमुख लए तराईआ। धुर धाम दी दे के सिक्खा, सिख्या इक्को इक्क जणाईआ। साचा लेख अगम्मी लिखा, लेखक हो के बणत बणाईआ। पतिपरमेश्वर बण के पिता, पतित उधारन दया कमाईआ। सति दवारे कर के हित्ता, हितकारी वेख वखाईआ। नाम भण्डारा दे अनडिठ्ठा, जग मिठ्ठा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। मग्घर कहे मेरी आसा पूरी होई तृष्ना, तृखा अन्त ना कोए कुरलाईआ। दर ठांडे झुकदे वेखे ब्रह्मा विष्ना, शंकर शहिनशाह सीस निवाईआ। गल पल्लू पाउँदे रामा कृष्ना, कृष्न काहन वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई वखाई मिथना, मिती आपणी नाल प्रगटाईआ। जगत जीव जहान पिट्टणा, पटने वाला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मार्ग इक्क समझाईआ। मग्घर कहे मैनूं मिली सच खुमारी, ग़मखार

दिती वड्याईआ। भगत भगवान दी वेखी यारी, दर साचे वज्जी वधाईआ। निरगुण नूर जोत होवे उज्यारी, गृह मन्दिर इक्क रुशनाईआ। नाद शब्द धुन्कारी, अगम्मी राग अलाईआ। अमृत रस मिले बिन रसना ठंडा ठारी, ठाकर आपणा रस चुआईआ। लेखा जाणे धुर गिरधारी, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जिस दी सारे करदे इंतज़ारी, अन्तश्करन वेखे थाउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देवे सिक्दारी, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ। वाहिद कलमा नाम कर जैकारी, चार कुण्ट करे पढ़ाईआ। सब दा वायदा पूरा कौल करे इकरारी, इकरारनामा पिछला दए वखाईआ। जिस विच शरअ शरीअत दी शुमारी, शमां शमशान आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाईआ। मग्घर कहे मेरी आसा आशा विच्चों निकली, प्रगट कीती बेपरवाहीआ। जिन्हां भगतां साची सिख्या सिख लई, मार्ग पन्थ इक्को इक्क नज़री आईआ। जीवण बणया एका इक्क लई, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सीस बणया नहीं किसे पत्थर इट्ट लई, सतिगुर शब्द मिले वड्याईआ। आत्मा आधारी नहीं किसे काग़ज़ चिट लई, कलम शाही ना जोड़ जुड़ाईआ। जोत नुरानी जिन्हां दिस पई, दहि दिशा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दए वड्याईआ।
६६६ मग्घर कहे मेरी आसा उपजी, उपजत उपजत वेखे जगत लोकाईआ। कोई धार ना जाणे सतिगुर जाप जपु जी, जीवण जुगत ना कोए प्रगटाईआ। जो उपज्या सो प्रभू दे तप लई, साधना विच आपणा आप रखाईआ। जो प्रगटया हकीकी
२० हक लई, हुक्म धुर दा मन्न सीस झुकाईआ। जन भगतां इक्को ओट तक्क लई, दूजा राह ना कोए वखाईआ। मानस जन्म पाया सति लई, सति सतिवादी दए वड्याईआ। जिस लोकमात पत रख लई, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जद प्रगटया प्रगटे सच लई, कूड़ कुड़यारां डेरा ढाहीआ। गुरमुख आत्मा ओसे घर वस रही, जो वास्ता आपणे नाल रखाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मस गई, जिन्हां रस अमृत नाम चुआईआ। मग्घर कहे जन भगतो जन्म मिल्या प्रभू दे जस लई, जस वेद पुराणां कम्म किसे ना आईआ। तुसीं प्रगट होए हिस्से अद्ध लई, आत्म परमात्म वण्ड वण्डाईआ। दोहां दी धार एका रूप बज्झ गई, बांझा रहिण कोए ना पाईआ। जो विहार होया अज्ज लई, गुरमुख अज़ल तों ल्या बचाईआ। पिछला जीवण सी जग लई, अगला जीवण सतिगुर लेखे पाईआ। एह तन वजूद सी माटी अग्ग लई, अग्नी अग्ग तपाईआ। गुरमुख जांदी जांदी आत्मा रख लई, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। हरि सरन सरनाई बच गई, बच्चयां वांग गोद टिकाईआ। मौत निमाणी दूर दुराडी आ के नच्च गई, आपणा फेरा पाईआ। जेहड़ी आई सी माटी कच्च लई, मुख गई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मग्घर कहे मैं आशा विच पावां खुशी रौला, कूक

कूक सुणाईआ। गुरमुख दा भार कर के हौला, हौली जेही आपणी गोद टिकाईआ। कुछ पिछला याद कर कौला, माई बुढ्ढड़ी दए दुहाईआ। जिस दा छुट्ट ना जाए चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। जे गुरमुख भुलड़ गोला, गोले आपणे रंग रंगाईआ। पुरख अकाल बण विचोला, एथे ओथे हो सहाईआ। तेरे बिना नहीं कोई तोला, नाम कंडा हथ्थ ना कोए उठाईआ। जिस कारण भगत दवारा खोल्ह्ा, अगली बणत बणाईआ। ओस दा वणज रहे ना पोला, संगठन आपणे नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। मग्घर कहे मैं उच्ची कूक देवां होका, हुक्म मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस दा बदलण वाला सी काया कोठा, कपड़ तन वजूद होणी जगत सफ़ाईआ। अन्तिम मिलणा सी जोती जोता, जोत जोत विच टिकाईआ। मेहर विच फेर दे के मौका, मुक्कया होया ल्या बचाईआ। कुछ लेखा पिछला गोबिन्द नाल पौंटा, जूह घाह वाली वखाईआ। जिस दा लेखा ढईआ औंटा, दोहां दा अद्ध वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शणहार सदा सच सच्ची सरनाईआ।

★ ४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ शाकाहारी कानफ़रंस दिल्ली ★

सन्त महात्मा ने सब ने कीता वख्यान, विआख्या विच सर्ब समझाईआ। कुछ बोल के गया उप राष्ट्रपति प्रधान, वी वी गिरी जणाईआ। इसराईल ने करी पहचान, अन्तर वेख वखाईआ। शब्दां वाला बोल नाल ज़बान, ज़बान दा रस गए समझाईआ। जिंनां चिर मानव मानव ना बणे इन्सान, मन का मोह मिटाईआ। ओनां चिर शाकाहारी ना कोई बणे पीण खाण, खाधा पीता कम्म किसे ना आईआ। शब्द संदेसा नर नरेशा एका एक श्री भगवान, हद्द भगतां जगत दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म नूर जहान, जलवा जोत डगमगाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी देवे सच निशान, निशाना इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट अंदर बैठा वड़, सच सति वजूद हक महबूब आप सुहाईआ। सब ने सुणया बणना शाकाहारी, खाणा पवित्र इक्क अपनाईआ। जितना चिर आपणी आत्मा परमात्मा दी धार ना समझे ज़री, जीवण जुगत कम्म किसे नाँ आईआ। कथा सुणनी चंगी नहीं बड़ी, बड़ा सो जो इस दे उत्ते अमल लए कमाईआ। ... ...

★ ५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ डाकटर ओबंसन इसराईली नाल शाकाहारी कानफ़रंस विच लाल किला दिल्ली ★

धुर दा लेखा वेख इसराईल, आशा पिछली वेख वखाईआ। मूसा अल्ला इस्लाम जिस दी करे ताअमील, तहिरीर विच ना कोए समझाईआ। हक हुक्म दी लाशरीक सुणे अपील, अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। जिस नूं जगत बुद्धी समझे ना कोई दलील, सियासत रमज़ ना कोए लगाईआ। इक्क वार थोड़ा थोड़ा होणा दोहां ज़लील, झगड़ा इक्क किनारा नज़री आईआ। ख़ाकी फ़र्श उह ज़मीन, नुकता नज़र सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। मूसा अल्ला इस्लाम रखी उडीक, योरोशलम ध्यान लगाईआ। सदी बीसवीं अन्धेरा होए तारीक, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। साथी होण फ़रीक, शत्रु दुश्मण मुहम्मद रूप वटाईआ। सच ख़ुदा बख़्शे इक्क तौफ़ीक, रहमत हक कमाईआ। आसा पूरी करे उम्मीद, मेरी मनसा वज्जे वधाईआ। यहूदी इक्क दूजे दे होण नज़दीक, आप आपणा बल धराईआ। अगली बदल जावे तवारीख़, तारीख़ साची नाल मिलाईआ। धुर दा हुक्म इक्क हदीस, हरि हज़रत आप जणाईआ। ढाई साल तों बाद होवे पीस, शांती शरअ विच लड़ाईआ। एह हुक्म अगम्मी ठीक, ठाकर धुर दा आप जणाईआ। जिस नूं कलम शाही पहले कर ना सकी तस्दीक, तुआरफ़ ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थोड़ा परदा अगला रिहा चुकाईआ। इस दे नाल होर होणा घमसान, सृष्टी दो धारा वण्ड वण्डाईआ। साबत रहे ना किसे ईमान, अमल छड्डे जगत लोकाईआ। कुछ झगड़ा होणा नाल बबाण, पवण दए गवाहीआ। जिस दा नज़र ना आए निशान, निशाने सारे दए बदलाईआ। एह खेल श्री भगवान, जुग जुग आपणे हथ्थ रखाईआ। जो लिख्या नासर प्रधान, नसर विच पढ़ के समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा हर घट ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान, दीन दुनी सब नूं खोज खुजाईआ।

★ ६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ इसराईली डैलीगेटज़ दे साथ दिल्ली ★

अगला हुक्म हुक्मरान, धुरदरगाही इक्क जणाइंदा। जिस दा मेटे ना कोए निशान, निशाने जगत कूड़ बदलाइंदा। सति सच करे प्रधान, धर्म दवारा इक्क वखाइंदा। जिस नूं कबूल करन ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाइंदा। उस दा अगम्मी इक्क फ़रमान, कातब कलम ना कोए वड्याइंदा। रशीआ बदलण वाला नज़ाम, नौबत अंदरो अंदर सुणाइंदा।

इसराईल खेल होवे निशकाम, यहूदी बहिबूदी विच रखाइंदा। जलदी जलदी परत आए अवाम, हुक्म धुर दा इक्क प्रगटाइंदा। मुश्किल अग्गे होए आसान, मास पंदरां वण्ड वण्डाइंदा। कोई लाए ना शरअ इल्ज़ाम, बरी सब नूं आप कराइंदा। मनुष बणे ना कोए हैवान, इन्सान इन्सानां विच समझाइंदा। रहे ना कोई ग़ुलाम, बन्दीख़ाना बन्द तुड़ाइंदा। हज़रतां दा पैग़ाम, माटी ख़ाक तन वजूद प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाइंदा। हुक्मी हुक्म देवे करीम, आहला अदना वेख वखाईआ। जो शहिनशाह अज़ीम, इक्क अकेला नूर रुशनाईआ। जो वेखणहारा तारीख़ तवारीख़ कदीम, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। उस दा खेल सदा महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। झगड़ा मुकावे नर मदीन, मुद्दा इक्को इक्क समझाईआ। भारत छेती करे तसलीम, मेल मिलावे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। भारत करे परवान, परवाना धुर दा दए सुणाईआ। जिस दा पड़दे वाला दिसे अनवान, निगाह धुर दी खोज खुजाईआ। सम्मत अगले बदलण वाला विधान, विधी आपणे हथ्थ रखाईआ। फिर मिले सच फ़रमान, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। सांझी होवे जान पहचान, परदा ओहला रहे ना राईआ। दोवें प्रेम दे बणन महिमान, मुहब्बत विच समाईआ। एह खेल होवे विच जहान, बहुती देर ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नाम विचोला शब्दी मेला जगत आसा मन मनसा मुहब्बत विच सुहबत विच ल्याकत विच रफ़ाकत विच सदाकत विच हमाकत विच इक्को रंग रंगाईआ।

★ ७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ ठाकर सिँघ दे गृह बीड़ अमीन ★

सतिगुर शब्द कहे एका हुक्म चले पुरख अकाल, अकल कलधारी दो जहानां श्री भगवाना आप चलाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले सज्जण जन भगत वेखे आपणे लाल, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ब्रह्म परदा आप चुकाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा काया माटी गृह मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा इक्को इक्क खुल्हाईआ। नाम निधान धुन अनादी सुणाए सच्ची धुनकान, अनहद राग अनुरागी आप उपजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देवे विधान, वाहिद लाशरीक परवरदिगार जल्वागर धुरदरगाहीआ। भेव अभेदा खोल्हे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर परदा दए चुकाईआ। हुक्म संदेसा देवे वाली दो जहान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण एका हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे करे खेल पुरख अकाला, अकल कलधारी कल वरताईआ। दीनां बंधप दीन दयाला, दयानिध ठाकर स्वामी गुरमुख वेखे थाउँ थाँईंआ। निरगुण सरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्त करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक ख़ालक निरवैर निराकार होए सहाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक देवे अगम्मी लाला, अनमुल्ली दात आप वरताईआ। माया ममता मोह विकार हँकार बदल देवे चाला, चार कुण्ट दहि दिशा साचा नाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क परटगाईआ। सतिगुर शब्द कहे धुर फ़रमाना देवे श्री भगवन्त, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित नाम धुर दा मंत, अन्तरशकरन वेखे सर्ब लोकाईआ। सदी चौधवीं सब दा तोड़े गढ़ हँकार हऊमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा निरगुण धार बण के अनुभवी पंडत, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख सन्त मेल मिलाए धुर दा कन्त, हरि स्वामी अन्तरजामी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे करे खेल अगम्म अथाह, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी लैंदे पनाह, नमों नमस्ते सजदयां विच सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दस्सदा आया राह, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। वेख वखाणे टिल्ले पर्बत जल थल अस्गाह, समुंद सागर खोज खुजाईआ। सो साहिब सतिगुर देवणहारा आपणा नाँ, नाउुं निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता करे प्रकाश हर घट थाँ, चारे खाणी चारे बाणी शब्द नाद धुन शनवाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले चार कुण्ट दहि दिशा पकड़े बांह, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सच दवारा धुर दरबारा वखाए अगम्मा गराँ, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुल्ह़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे करे खेल पुरख समरथ, आदि निरँजण निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथ, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त विच सिफ्त ना कोए सालाहीआ। सो सच स्वामी देवणहारा नाम अगम्मी वथ, वास्तक इक्को वस्त वरताईआ। जन भगतां साचे सन्तां निज नेत्र खोल्ह़ के अक्ख, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को मार्ग दस्स, दहि दिशा दा डेरा देवे ढाहीआ। सच दुआर उपजावे एका एक सच्च, सच आपणा आप समझाईआ। भाग लगावे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। मन वासना विच दहि दिशा ना पए नच्च, नटुआ वेस ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ग़रीब निवाज, दीन

९७३
२०

दयाल दयानिध अख्वाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण बदलदा आया समाज, वेस अनेका आपणा खेल कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बख्शिश विच बख़्शीश करदा आया दात, नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान झोली पाईआ। सृष्टी दा दृष्टी अंदर रचदा आया काज, करनी दा करता आपणी खेल खिलाईआ। नाम संदेसा देंदा आया बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण धार हो विस्माद, खेले खेल थाउँ थाँईंआ। जिस दी महिमा गा सके ना कोई राग, सिफ्तां विच ना कोए वड्याईआ। लेखा आपणा जाणे आदि, अन्त आपणे विच छुपाईआ। जिस नूं पैगम्बर करन आदाब, अवतार गुर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच घर बैठा खेल कराईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल वड गहर गम्भीर, गुणवन्ता नज़री आईआ। जिस दा खेल बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सब दी बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। शरअ कटणहार ज़ंजीर, लाशरीक नूर खुदाईआ। जिस नूं नमों नमों करे कबीर, बिना सीस सीस निवाईआ। सो साचा धर्म करे तामीर, जिस धर्म दा मूल आपणे विच छुपाईआ। बाहरों नज़र ना आए किसे तस्वीर, मुसव्वर दस्से ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल सर्ब स्वामी, आत्म परमात्म खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी अन्तरजामी, लख चुरासी वेख वखाईआ। नाम संदेसा धुर दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। लेखा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। अमृत रस बख्शणहारा ठंडा पाणी, निजर झिरना बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। निर्मल नूर जोत जोत नुरानी, नूर ज़हूर आपणा आप प्रगटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बाणी जिस दी सिफ्तां वाली कहाणी, गुर अवतार पैगम्बर अक्खरां विच प्रगटाईआ। सो शाह पताशाह शहिनशाह पुरख अकाला शाह सुल्तानी, दो जहानी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल इक्क अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, तत वजूद ना कोए रखाइंदा। ना हरख़ सोग ना ग़म, चिन्ता विच कदे ना आइंदा। ना पवण स्वास लए दम, साह स्वास ना कोए वड्याइंदा। निरगुण धार निराकार आपे जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी आपणी कार कमाइंदा। जिस दा नूर लख चुरासी धार ब्रह्म, सो आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिगुर शब्द कहे मालक ख़ालक इक्क महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। आलीशान जिस दा उच्च अरूज, दरगाह साची सोभा पाईआ। चार कुण्ट सदा मौजूद,

मुफ़लसां होए सहाईआ। मेटणहारा कूड़ हदूद, घर इक्को इक्क समझाईआ। जेहड़ा कदे ना होवे नेस्तोनाबूद, नित नवित वज्जे वधाईआ। सो लेखा जाणे लख चुरासी काया (पंज) भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो परदा दए चुकाईआ। वसणहारा चारे कूट, दिशा आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक्क प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाला धुर दा ठाकर, जुग जुग ठोकर नाम लगाइंदा। गहर गम्भीर डूँघा सागर, गुर अवतार पैगम्बर आपणे विच समाइंदा। दे के नाम रती रत्नागर, लोकमात खेल खिलाइंदा। सति धर्म कर उजागर, कूड़ कुड़यारा अन्ध मिटाइंदा। वणज करा इक्क सौदागर, सौदा सतिगुर हट्ट विकाइंदा। योद्धा सूरबीर बण बहादर, भय भउ आप वखाइंदा। करनी दा करता कुदरत दा बण कादर, कदीम तों आपणा राह चलाइंदा। निरगुण सरगुण बण साजण, सन्त सुहेले गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। शाहो भूप भूपत राजन, राउ रंक मेल मिलाइंदा। दीन दयाल ग़रीब निवाज़न, मेहर नज़र इक्क उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी मारे धुर आवाज़न, जिस नूं जगत सरवण सुणन कोए ना पाइंदा।

★ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ लक्ष्मण सिँघ धंगाली कैंप वाले दे गृह सई कलां जम्मू ★

सभ दा लहिणा देणा गया मुक, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़ के तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। सच दुआर दा देवे सुख, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। प्रेम प्रीती अंदर चुक्क, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। निरगुण धार बणा के सुत, सति सतिवादी लए उठाईआ। निराकार हो के गया तुठ, गहर गम्भीर वेस वटाईआ। पूरब लहिणा रिहा पुछ, परदा पुश्त दर पुश्त फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण खुल्ल्या वेख्या इक्को ताक, दर दरबार सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, शब्द नाद धुन शनवाईआ। भेव खुल्हाए पूरबले वाक्, भविख्त भाख्या बिन दृढ़ाईआ। निरगुण पूरी कर के आस, असल आपणा रंग रंगाईआ। सच दुआर दे विश्वास, विशा इक्को इक्क जणाईआ। झगड़ा रहे ना माटी मास, मसला आपणा दए समझाईआ। हाए उफ़ कहे कोई ना काश, आकाश प्रकाश इक्क रुशनाईआ। सब नूं कर के आपणे दास, दास्तान धुर दी इक्क सुणाईआ। हर

घट अन्तर कर के वास, वास्ता विश्व नाल रखाईआ। झगड़ा मेट कूड़ प्रभास, भवसागर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण खुल्ह्या दर दरवाज़ा, दर ठांडा नज़री आईआ। जिस गृह वसे ग़रीब निवाज़ा, नवाज़श विच आपणी गोद उठाईआ। सब दी रखणहारा लाजा, वड्ड दाता धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम रच के काजा, सतिगुर साचा राह वखाईआ। निरगुण सरगुण पा के माझा, मजलस वेखे धुरदरगाहीआ। कूड़ी क्रिया मेट विवादा, विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुणी अगम्मी पुकार, पूरब ध्यान लगाईआ। शाहो भूप वड सिक्दार, हरि स्वामी होए सहाईआ। सृष्टी दृष्टी दए अधार, इष्टी इक्को सोभा पाईआ। जिस दी खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम लै अवतार, अवतर आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसार, संसा रोग जगत लोकाईआ। हुक्म संदेसा देवे शब्दी धार, धरनी धरत धवल धौल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हुक्म मिले धुरदरगाह, हरि करता आप सुणाईआ। छड्डे थल अस्गाह, बैठे अक्ख बदलाईआ। मंगी इक्क पनाह, रहिबर सीस निवाईआ। वेख के सच्चा थाँ, बैठे डेरा लाईआ। नज़री आया इक्को पिता माँ, स्त्री पुरुष ना वण्ड वण्डाईआ। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, शहिनशाह हरि रघुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वाह वा, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दिसे गवाह, शहादत इबादत विच भुगताईआ। शब्दी सतिगुर सति सतिवादी दए सलाह, सुल्हकुल आप जणाईआ। पवण संदेसा विच हवा, आदम हवा सीस निवाईआ। इक्को हुक्म होवे रवां, रवादार रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे खेल नवां, नव सत्त वज्जे वधाईआ। सच संदेसा धुर दा कहवां, कहि कहि जगत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडे अन्तर चाओ घनेरा, वज्जी सच वधाईआ। पुरख अकाल करे मेहरा, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। सचखण्ड लवाए डेरा, दर इक्को इक्क वड्याईआ। जित्थे मज़्हब रहे ना झेड़ा, नाम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। वक्खरा दिसे कोई ना खेड़ा, गृह इक्को सोभा पाईआ। स्वामी वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। शब्दी धार सतिगुर शेरा, शहिनशाह नूर इलाहीआ। कलयुग अन्तिम करे मेहरा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जामा मारया फेरा, फिरत वेखे कूड़ लोकाईआ। हुक्मे अंदर दे के गेड़ा, झगड़ा दए चुकाईआ। वक्त सुहञ्जणा नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां बन्न्हे बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। ढोला दस्स के तेरा मेरा,

इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा चार कुण्ट चौतरफ़ी फेरा, चार चार खोज खुजाईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ कुलवंत सिँघ दे गृह धंगाली कैंप सई कलां जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण सरगुण धार थक्की मांदी, मधसूदन तेरी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी लोकमात बणी रही पाँधी, दिवस रैण चार कुण्ट दहि दिशा आपणी सेव कमाईआ। बण वैरागण तेरा ढोला रही गांदी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नाम ध्याईआ। कूड़ विकार हँकार वेखदी रही आंधी, झक्खड़ ममता मोह दीन दुनी हिलाईआ। लालच वेंहदी रही गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ सोना चांदी, तेरा चन्द नूर जोत निरगुण खेल खिलाईआ। वासना विच वस्त अमोलक रही पींदी खांदी, खा खा ख़ालक तेरा शुकर मनाईआ। वणज कराउँदी रही तेरे नाँ दी, हट्ट बाज़ार वणजारयां वणज वखाईआ। मालक बणदी रही दीनां मज़्बां राह दी, रहमत विच तेरी ओट तकाईआ। मनसा भरी रही आशा वाली चा दी, चाउ घनेरा इक्क समझाईआ। ओट दस्सदी रही पुरख अकाल अगम्मी मलाह दी, खेवट खेटा इक्को धुरदरगाहीआ। कथा कहाणी सुणाउँदी रही भगत भगवान सलाह दी, मश्वरे विच मुश्किल हल्ल कराईआ। खेल वेखदी रही थल अस्गाह दी, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। सच वस्त कितों लभ्भी ना तेरी हां दी, प्रीती प्रेम ना कोए जणाईआ। बौहड़ी कलयुग अन्तिम लख चुरासी बुद्धी वेखी काँ दी, दृष्टी विच सर्ब कुरलाईआ। माण वड्याई रही ना किसे थाँ दी, धरनी धरत धौल दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर इक्को सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा थक्की, थकावट विच कुरलाईआ। कौल इकरार वायदे वेखे पिछली याद पक्की, पारब्रह्म प्रभ इक्क ध्यान लगाईआ। निरगुण धार जो मालक हकी, हकीकत परदा दए उठाईआ। कथा कहाणी रहे कोई ना शकी, संसा अंदरों बाहर कढाहीआ। निरगुण सरगुण बण के कमलापती, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। सिफ्तां वाली जिस दी कथा जुग चौकड़ी दस्सी, अक्खरां नाल सालाहीआ। सरगुण धार निरगुण नाल हो के वसी, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। खेल करदी रही हथ्थीं, सेवक रूप बणाईआ। जगत दीन दुनी मज़्बां बण के पक्खी, डेरे रही वखाईआ। कलयुग अन्त चार कुण्ट दहि दिशा सति धर्म रिहा ना रती, रस्ता राह ना कोए समझाईआ। दीन दुनी चली मति मती, मतवाला माया मोह बणाईआ। मैं सब कुछ वेख के अक्खीं, आख़र भज्जी वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे चरण कँवल ढठ्ठी, ढहि ढह रही सुणाईआ।

चार युग दी आसा गुर अवतार पैगम्बरां हो के कठ्ठी, इक्को वार वास्ता पाईआ। धुर दे ठाकर सच स्वामी इक्को नाम पढ़ा आपणी पट्टी, पटने वाला करे अगवाईआ। लेखा रहे राग ना छत्ती, छत्रधारी कम्म किसे ना आईआ। नाम डोरी तेरी इक्को अच्छी, तन्दो तन्द दे समझाईआ। वास्ता चरण कँवल रही घत्ती, गहर गम्भीर दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे प्रभू वेख मेरी थकावट, थक्की मांदी दयां दुहाईआ। जगत दुनी दी वेख बनावट, हिस्सयां विच वण्ड वण्डाईआ। तेरे नाम दी बख़्शिश वाली सख़ावत, जुगो जुग वरताईआ। सरगुण निरगुण दस्स के इक्क कहावत, कहकहा लगा के करदी रही पढ़ाईआ। हमसाजन बण के करी बग़ावत, बग़लगीर दिते लड़ाईआ। मैं अन्त तेरी अमानत, अमलां तों रहत तेरी सरनाईआ। साडी रही ना कोई ज़मानत, ज़ुमेवार ना कोए अख्वाईआ। सब दे उत्ते दिसे कयामत, सिर सके ना कोए उठाईआ। हुक्मे अंदर लग्गी ममानत, मेहरवान मेहर नज़र ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आशा कहे प्रभू मैं चार कुण्ट दी आई दौड़ी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नित नवित वेखदी रही तेरा डण्डा पौड़ी, पौड़ीआं विच तेरा ढोला जस गाईआ। तेरी भीड़ी गली दिस्सी सौड़ी, बिन तेरी किरपा पार ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं कर के बौहड़ी बौहड़ी, नेत्र रो रो दयां दुहाईआ। सन्त रिहा कोई ना घोरी, अन्धघोर विच लोकाईआ। असीं सब नूं वेख्या दिवस रैण तक्कया चोरी, जगत अक्ख ना कोए मिलाईआ। आत्मा सुहागण दिसे ना कोई बांकी छोहरी, पीआ प्रीतम मेल ना कोए मिलाईआ। साडे हथ्थों छुट गई डोरी, डांवांडोल दिसे लोकाईआ। माणस रूप हो गए ढोरी, सच धर्म ना कोए वड्याईआ। तेरे अग्गे दोवें हथ्थ रही जोड़ी, जोड़ींदे साजन वास्ता पाईआ। किसे दी कीमत रही ना कोड़ी, कौडी हट्ट ना कोए विकाईआ। निरगुण सरगुण धार समझे कोई ना दोहरी, दूआ एका भेव ना कोए चुकाईआ। तेरे अग्गे चले कोए ना ज़ोरी, ज़ोरावर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती बख्श भोरी, भरम अन्तर निरंतर रहे ना राईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ देवा सिँघ धंगाली कैंप सई कलां जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा हो के उग्घी, उगण आथण वेख वखाईआ। लख चुरासी अन्तर वेख के बुद्धि, धुर संदेसा

रही सुणाईआ। साची धार किसे ना सुज्झी, समझ सोच ना कोए रखाईआ। कलयुग वासना कूड़ कुड़यार विच रुज्झी, रिज़क रहीम ना कोए मनाईआ। साची दिसे कोई ना झुग्गी, झगड़ा जगत लोकाईआ। भाउ भावना होई दूजी, एका रंग ना कोए समाईआ। नेत्र रोवां उच्ची कूक भुब्बीं, हौकयां विच सुणाईआ। पुरख अकाल वेख आपणी वदी सुदी, किशना सुकला पक्ख पैंडा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मेरे अन्तर होई हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। सति धर्म दी जूह दिसे बेगानी, बन्दा बन्दगी विच ना कोए समाईआ। बाहरों निर्मल होए जिस्मानी, अन्तर मैल ना कोए धवाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, कूड़ डंके जगत वजाईआ। प्रकाश होवे ना कोए असमानी, इस्म आअजम ना कोए वखाईआ। झगड़ा चार कुण्ट दीवानी, दाअवेदार गुर अवतार पैगम्बर देवे ना कोए गवाहीआ। साचा राह ना दिसे आसानी, असल वसल ना कोए कराईआ। जीवत जी जीए ना कोए प्राणी, परम पुरख ना कोए मिलाईआ। मुहब्बत विच दुनिया वेखे ना कोए फ़ानी, फ़रमांबरदार रूप ना कोए धराईआ। चार जुग दी पिछली सुणन कहाणी, अग्गे चले ना कोए हक रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह देणा वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं वेखां असल वसीअ, वसीअत सब दी फोल फुलाईआ। जिस दी कलमयां विच करदे गए तशरीह, ताब्यादारी जगत कमाईआ। मार्ग रस्ता दस्सदे गए लीह, पन्थ ग्रन्थां विच सालाहीआ। सो सब दी पावण आया सही, सही सलामत वेस वटाईआ। लेखा वेखे बिन कागज़ कलम शाही वही, वाहिद आपणी कार कमाईआ। अग्गे जीवण विच ज़िंदगी देवे नई, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। सो गुर अवतार पैगम्बरां बाणी भविख्तां वाली कही, आसा सब दी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे साहिब स्वामी सच पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तेरा एकँकार इक्क सहार, साहिब सरन वड्डी सरनाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। किरपा कर आपणी धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। लेखा मुके जुग चौकड़ी चार, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। निरगुण नूर दिसे उज्यार, उजाला होए लोकाईआ। सति धर्म दा सति जैकार, रसना ढोला तेरा गाईआ। हउं सेवक ख़िदमतगार, ख़ादम हो के तेरी सेव कमाईआ। तूं दाता दानी इक्क दातार, दयावान अख्वाईआ। मंगते दरवेश खड़े भिखार, भिक्खक झोली देणी भराईआ। तूं सब दा सांझा परवरदिगार, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। अलख निरँजण तेरा जैकार, जैकारयां विच सालाहीआ। तेरा वड्ड वड्डा दरबार दरगाह साची सोभा पाईआ। करे कराए आपणी कार, कुदरत करता वेख वखाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर विच संसार,

संसारी भण्डारी बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, भगत वछल सदा गिरधार, गिरवर गृह एका देणा वसाईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ गूढ़ा राम सेख़सर सई खुर्द कैंप जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं फिरदी बन खण्ड, जूहां जंगल वेख वखाईआ। पड़दे लाह के तक्कया परम पुरख दा ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। जगत संसार वासना वेखी कंध, द्वैत दर दर ध्यान लगाईआ। किरपा करी साहिब बख्शंद, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। जन भगत दवारे मिल्या इक्क अनन्द, अनन्द धुर दा नज़री आईआ। शब्द सुणया अगम्मी छन्द, सोहँ ढोला रहे गाईआ। मैं बिना करवट तों बदल लई कंड, सनमुख हो के दर्शन पाईआ। जिन्हां नूं परम पुरख लगाया अंग, अंगीकार इक्क हो जाईआ। दो जहान दा चमके निराला चन्द, सीतल धार इक्क दरसाईआ। नेत्र नीर वरोले सरोवर गंग, गहिणा विच दुहाईआ। किरपा करी सूरे सरबंग, साहिब सतिगुर दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर इक्को इक्क सुहाईआ। आसा कहे मेरे अन्तर आई खुशहाली, ख़िज़ां बसन्त रूप बदलाईआ। चढ़ी इक्क अगम्मी लाली, जो लालन लाल रंग रंगाईआ। जलवा तक्कया जोत अकाली, अकल कल आपणी खेल खिलाईआ। मैं निक्की नढ्ढी बाली, वेख सीस जगदीस झुकाईआ। जुगा जुगन्तर तेरी वक्खरी चाली, पारब्रह्म प्रभ भेव कोए ना आईआ। तेरा खेल अदना आअली, निरगुण सरगुण तेरी वज्जे वधाईआ। लख चुरासी जीव जंत दा माली, मालक इक्को सोभा पाईआ। गगन मण्डल तारका जिउं दीपक विच थाली, जलां थलां विच समाईआ। तेरी शनाख़त हथ्थ ना आए भाली, खोजी खोज ना कोए खुजाईआ। तेरे दर ते खड़ी सवाली, मंगती हो के झोली डाहीआ। सब दी लेखे ला जन्म कर्म दी घाली, पूरब लहिणा दे चुकाईआ। वसां इक्को सच सची धर्मसाली, धर्म दवारा इक्क प्रगटाईआ। जित्थे रहे कोई ना ख़ाली, ख़लक दे ख़ालक देणी सरनाईआ। मेरी मस्कीनां वाली दलाली, अधीनगी विच रखाईआ। भगत भगवान मिल के वज्जे ताली, तार तार नाल हिलाईआ। फल लग्गे अगम्मी डाली, पति पतवन्ते देणी माण वड्याईआ। तेरा भाग वड्डा तूं रहमत विच शाली, शहिनशाह अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर तेरी चाल निराली, निराकार तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा इक्क सुहाईआ। आशा कहे मैं की की दस्सां कहावत, कहिण कथन विच ना आईआ। जगत जहान वेखी बग़ावत, बग़लगीर ना कोए बणाईआ। मानव मानव पई अदावत,

झगड़ा तक्कया कूड़ लोकाईआ। साची करे ना कोए सख़ावत, रहमत नाम ना कोए वरताईआ। तेरा खेल तक्कया प्रभू अचानक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सक्या ना कोए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटण आयों अलामत, आहला अदना लेखे लाईआ। भगत सुहेले वेख अमानत, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरा खेल सही सलामत, जीवण मरन ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्तिम दिसे इक्क कयामत, कयामगाह ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर अग्गे देवे ना कोए ज़मानत, सारे बैठे पल्लू छुडाईआ। तेरे हुक्मे अंदर चार कुण्ट दहि दिशा सब ते आवे शामत, शमां कूड़ गुल कराईआ। तेरा नाउं निधाना श्री भगवाना हथ्थ ना आए नयामत, अनरस रस ना कोए चखाईआ। मैं बाली नढ्ढी चार जुग दी अन्जाणत, तेरा भेव ना समझया राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा प्रेम सच अमानत, पूरब मेला लए मिलाईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ बेला सिँघ दे गृह धंगाली कैंप सई कलां जम्मू ★

६८१ आशा कहे मैं प्रभ दा करां शुकराना, शुकर कहि के खुशी मनाईआ। निरगुण धार उतर श्री भगवाना, भगवन आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत पहर के जामा, अन्तरजामी वज्जी वधाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण फोल ६८१

२० फुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बदल देवे ज़माना, ज़ामन आपणा नाम बणाईआ। धुँदूकार मेटे ज़िमीं असमाना, असल २०

नूर चन्द कर कर रुशनाईआ। मानव रहे ना कोए बेगाना, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। दो जहान करन सलामां, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सब दी सांझी कर कलामा, कलमा कायनात पढ़ाईआ। पारब्रह्म इक्क अमामा, अमल वेखे ख़लक खुदाईआ। पिछला बदल दए नज़ामा, अग्गे नौबत इक्क वजाईआ। अन्धेरी रैण रहे ना शामा, शमां जोत करे रुशनाईआ। सति धर्म दा इक्क निशाना, सति सतिवादी आप झुलाईआ। इक्को दरस के आत्म परमात्म गाणा, हकीकत विच्चों पढ़ाईआ। लेखा जाणे धुर दा रामा, बंसरी नाम वाली सुणाईआ। पीर पैगम्बरां दा वेखे भविख्त ब्याना, परदा पर्दे अंदरों दए उठाईआ। हर घट हो के अन्तरयामा, अन्तरश्करन लेखा वेख वखाईआ। जन भगत सुहेला वेखे जगत निमाणा, कोझा कमला गोद उठाईआ। शब्दी शब्द खेल महाना, महिमा अकथ कथ वड्याईआ। गुरमुख रहे ना कोए गुलामा, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। एका डंका वज्जे दमामा, दमा दम आपणी करे शनवाईआ। झगड़ा मुके कूड़ तमामा, तामस राजस डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। आशा कहे हुक्म वेखणा इक्को रब्बी, राबता ज़ाबता

विच छुपाईआ। जिस दी याद करदे गए नबी, रसूल आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सो मरीज़ वेखे जगत तबी, तबीअत सब दी फोल फुलाईआ। किसे दी रहिण ना देवे गद्दी, गदागर करे लोकाईआ। लहिणा चुक्के चौधवीं सदी, सदमा दर दर दए वखाईआ। वासना कहे मैं बाली नढ्ढी, निक्की वड्डी आपणा रूप बदलाईआ। प्रभ दा खेल आदि पुश्त यद्दी, यथार्थ आपणी कार कमाईआ। जिस दी जोत निराली जगी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जन भगत आत्मा बद्धी, बन्दना इक्क समझाईआ। लख चुरासी छड्डी, नाता रिहा ना राईआ। प्रेम प्रीती इक्को लग्गी, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग जगत अन्धेरी वगी, झक्खड़ चारों कुण्ट हिलाईआ। हज़रत वेखे पैगम्बर तक्के मूसे वाली नूह नदी, नधान समझ किसे ना आईआ। नव नौ चार पिच्छो प्रभ दा खेल हुंदा कदी, कदीम दी रीती चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। आशा कहे मैं गावां गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। प्रभ तक्कया इक्क अतीत, त्रैगुण लेखा रिहा मुकाईआ। मैं हो गई ठंडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। भगत मार्ग बदल के रीत, रस्ता इक्को दिता वखाईआ। जो साहिब स्वामी रखे चीत, चेतन आपणा जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। वक्त अख़ीरी रिहा बीत, बातन समझ किसे ना आईआ। बिना प्रभ तों झूठी दिसे प्रीत, प्रीतम होए ना धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां करे आप बख्शीश, बख्शिश विच रहमत विच नाम निधाना झोली पाईआ।

★ २० मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह धंगाली कैंप सई कलां जम्मू ★

कृष्न किहा सुण अर्जन गीता, गीतां तों बाहर जिस दी शनवाईआ। इक्क अठ्ठ दा इक्को मीता, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। आदि जुगादि ठांडा सीता, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। वण्ड करे ना ऊँचा नीचा, आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। सदा खेल दस्से अनडीठा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। पिच्छे वेख की खेल होया राम सीता, सुरती शब्द नाल वड्याईआ। अगम्मी धार नीकन नीका, निराकार धुरदरगाहीआ। कृष्न ने सहिज नाल अर्जन दे हत्थ मारया उत्ते पीठा, ठोकर दिती लगाईआ। उस दा भय विच निकल गया चीता, सुरत बुध रही ना राईआ। कृष्न ने कन्न फड़ के हलूणया वक्त वखाया बीसा, बीस बीस दुहाईआ। निरगुण धार जोत दा शीशा, बिन अक्खां दिता चमकाईआ। सब तों वक्खरी समझा के रीता, भगत भगवान अंग लगाईआ। सचखण्ड निवासी बण के मीता, मित्रां आपणे घर वसाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। कृष्न गीता लग्गा सुणाउण, बिन अक्खरां अक्खर उपजाईआ। बिना रसना लग्गा गाउण, गीत धुरदरगाहीआ। ख़ादम हो गई उणंजा पाउण, पवण पवणां विच समाईआ। हाज़र हो के किहा रावण राउण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरा जोबन ना रिहा विच धौण, बाहूबल ना कोए वड्याईआ। इक्क वास्ता आया पाउण, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। मैं मार्ग लग्गा चलाउण, चाल निराली दे समझाईआ। कृष्न किहा मैं द्वापर लग्गा मुकाउण, भाई भाईआं नाल टकराईआ। अर्जन नूं लग्गा वड्याउण, बुद्धी समझ दे पिच्छे रखाईआ। रावण लग्गा पछताउण, हत्थ हत्थां नाल मिलाईआ। कृष्न दा चरण लग्गा दबाउण, उंगली अंगूठे नाल छुहाईआ। कृष्न रूप लग्गा बदलाउण, तत शरीर रिहा ना राईआ। ओस दे विच लग्गा समाउण, जो समें दा मालक इक्क अख्वाईआ। जिज्ञासूआं नूं लग्गा पर्चाउण, पर्चा जीवण वाला टिकाईआ। उजड़यां नूं लग्गा वसाउण, घर इक्को इक्क दरसाईआ। अर्जन जो मैथों लग्गा लिखाउण, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। तैनूं रुस्से नूं लग्गा मनाउण, अग्गे हो करे अगवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुलाईआ। कृष्न कहे अर्जन सुण अगम्मी धुर दा निरअक्खर, अक्खर रूप ना कोए बणाईआ। इक्क पाहन फड़ के पत्थर, कृष्न ने दिता वखाईआ। अर्जन नूं कन्नों फड़ के फेर वखाया गोबिन्द वाला सत्थर, सूलां सेज हंढाहीआ। जेहड़ा वक्खरा निराला मीत मुरारा रहे वक्खर, हर घट ओहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा इक्क उठाईआ। कृष्न किहा सुण अगम्मी आवाज़, बिन रसना दयां सुणाईआ। जिस विच खुल्ले काहन दा राज़, बेनिशान सोभा पाईआ। सीस जगदीस सुहाए ताज, तख्त निवासी वड वड्याईआ। छत्रधारी करे कोई ना राज, रईयत रंग ना कोए रंगाईआ। राजा प्रजा दोवें दिसण मुहताज, ख़ाली भण्डारा ना कोए भराईआ। कलयुग अन्त चेले गुरुआं नूं लैण नवाज, चेले गुरू बणा के आपणी करन वड्याईआ। अग्गों अर्जन किहा एह की खेल तमाश, समझ नाल समझाईआ। कृष्न ने आसा सद्द लई कोल वेद व्यास, हुक्म दिता सुणाईआ। ओन खोल्ह के दस्सी बात, सुख़न इक्क अलाईआ। मैं लिख दिता नाल कलम दवात, कलयुग अन्तिम प्रगट होवे धुरदरगाहीआ। जो सारयां नूं देंदा आया शाबाश, माण वड्याई विच टिकाईआ। पूरे करे ख्वाब, ख़ाब आपणे विच प्रगटाईआ। गीता दा अठारां ध्याए कृष्न दा पहला बाब, कृष्न दे काहन दा अक्खर ना कोए बणाईआ। अन्त अख़ीर एह रह जाए इक्क किताब, लाजवाब होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, थोड़ा थोड़ा जोड़ा जोड़ा सब नूं दस्सदा रिहा हिसाब, जवाब हत्थ ना किसे फड़ाईआ।

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैनूं आवे हासी, हस्ती वेख धुरदरगाहीआ। वेस वटाया पुरख अबिनाशी, रूप रंग रेख समझ किसे ना आईआ। कलयुग वेख रैण अन्धेरी राती, रुत्त रुतड़ी आपणी इक्क महकाईआ। साचे नाम दी कर प्रभाती, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। अमृत रस दे स्वांती, सुत्यां ल्या उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे करांती, सति सच कर रुशनाईआ। सृष्टी चार कुण्ट उदासी, दृष्टी वज्जे ना कोए वधाईआ। मन कल्पणा हो गई मदिरा मासी, मस्त खुमारी नाम ना कोए चढ़ाईआ। चार जुग दी कथा कहाणी पिछली बासी, जिस दा रस चख खुशी ना कोए मनाईआ। पिछला लेख मकावे गुर अवतार पैगम्बरां वाली घासी, रहिबर इक्को इक्क नजरी आईआ। कलयुग कूड़ी मंज़ल जन भगतां वखाए सौखी घाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी तकदी रही वाटी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सो साहिब स्वामी बणया सगला साथी, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करे आखी, आख़र आपणी कल वरताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा लख चुरासी करे राखी, रखक हो के वेख वखाईआ। वेस वटाया अलखणा अलाखी, लेखा लिख ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं वेख्या खेल अगम्मा, पुरख अगम्मड़ा रिहा वखाईआ। निरगुण धारों आपे जम्मा, जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। दीन मज़्हब दी छड्ड के तमअ, ताअमील आपणी इक्क कराईआ। सब दा लहिणा देणा जो पिछला जम्हां, हकीकत हक विच्चों वरताईआ। सतिजुग मार्ग ला के नवां, नव नौ खण्ड दए समझाईआ। लेखा मुक्के जुगां चौहां, चार वरन मिटे लड़ाईआ। आपणे हथ्थ रख्या समां, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं वेख्या आपणी अक्खीं, ओझल रूप ना कोए वखाईआ। जिस दी लख चुरासी सख़ी, काहन कन्त कन्तूल सोभा पाईआ। उस दी भूमिका इक्को वसी, सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जित्थे भगतां पैज रखी, होए आप सहाईआ। साची धार दस्सी, निरगुण कर पढ़ाईआ। आशा कहे मैं खुशींआ नाल हस्सी, हँसमुख आपणी बणत बणाईआ। जेहड़ा कटण लग्गा दीन मज़्हब दी रस्सी, रस्ता इक्को इक्क चलाईआ। रैण अन्धेरी रहे ना मस्सी, नूरी चन्द जोत रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना कोई शकी, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जिस दी नानक पीसी चक्की, चार्तक हो के ध्यान लगाईआ। सब दी यारी दस्से कच्ची, बन्धन आपणे नाल बंधाईआ। कूड़ी क्रिया अग्नी मच्ची, बिन माचस रही जलाईआ। अग्गे किसे दी सति धर्म विच रहे कोई ना पत्ती, हिस्सा जगत ना कोए वण्डाईआ। हुक्म चले कोई ना रत्ती, रत्त सब

दी दए मुकाईआ। कर सके कोई ना गती, गति मित आपणे हथ्थ वखाईआ। पुरख अकाल बण के इक्को कमलापती, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। काया मन्दिर अंदर बिन हरि किरपा जगे ना कोए मोमबत्ती, बिना दीपक दीप करे रुशनाईआ। एह सब कुछ खेल वेखणा अक्खीं, आख़र हरि जू आप कराईआ। आसा कहे मैं चार कुण्ट नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। सच कहाणी किसे ना दस्सी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कूकण देण दुहाईआ। अन्तिम सब दी धार कर के कठ्ठी, एका हुक्म दिता दृढ़ाईआ। अग्गे सड़े ना कोए भठ्ठी, अग्नी मज़्ब ना कोए तपाईआ। पिछली डोर गई कटी, कटाकश अगला आपणा नाम लगाईआ। सब नूं पढ़ा के इक्को पट्टी, धुर दी विद्या इक्क जणाईआ। गुरमुख भरे कोई ना चट्टी, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं आसावंद, जुग जुग ध्यान लगाईआ। प्रभ मिले इक्क ख़ावंद, मालक धुर दा बेपरवाहीआ। जिस दा कढ्ढणा पए ना कदे दसवंध, हिस्सयां विच हिस्सेदार ना कोए अख्वाईआ। जिस दे भगत सुहेले उपजण चन्द, जगत जहान करन रुशनाईआ। इक्क हुक्म दे होवण पाबन्द, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। खेल वेखण विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। करवट विच बदल के कंड, सनमुख हो के सोभा पाईआ। ढोले गावण बत्ती दन्द, रसना जेहवा राग अल्लाईआ। तूं साहिब सदा बख्शंद, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। आत्म बख्शे इक्क अनन्द, निजानंद करे रसाईआ। सीतल धार पावे ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। एथे ओथे देवे संग, सगला संग निभाईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, हरि करता इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं वेख के हो गई दंग, हैरानी मेरे अंदर आईआ। ग़रीब निमाणयां चाढ़े रंग, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। झगड़ा मुका के गोदावरी गंग, चरण धूढ़ मस्तक टिक्का लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्क सुणा के छन्द, अगला पैंडा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा बख्शंद, बख्शिश विच बख्शीश धुर प्रीती इक्क वरताईआ।

★ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ पूरन सिँघ धंगाली कैंप सई कलां जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आशा कहे पुरख अकाल पा दे सही, सही सलामत तेरी इक्क सरनाईआ। जुग चौकड़ी जो आस सब दी रही, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। कथा कहाणी भविख्तां विच जो सब ने कही, धुर संदेसयां विच सुणाईआ। अन्त

गत सब दी तेरे हथ्थ रही, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां लेखा मंगे कोए ना वही, राए धर्म ना कोए सज़ाईआ। लहिणा देणा पूरा कर दे जो राम भरत नाल कैकई, दसरथ समझ कोए ना आईआ। राम संदेसा भरत भराता इक्क धार चलणी नई, जिस दा लेख ना कोए बणाईआ। जिस वेले सृष्टी सति धर्म तों गई, कलयुग अन्तिम नज़री आईआ। इक्क इकल्ला राम दा राम आवे जन भगतां लई, लहिणा देणा सब दा पूर कराईआ। आदि जुगादि जो होसी भी हई, हरि करता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। आशा कहे प्रभू चार जुग तेरे किते ना वेखे दसखत, बिन अक्खरां सब नूं कीती पढ़ाईआ। जिस कारण निरगुण धार आयों वत, वतन बेवतन सारे वेख वखाईआ। सच स्वामी सब दी रख पत, पतिपरमेश्वर तेरी वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ी गावण वाली तेरा जस, सिफ्तां विच वड्याईआ। अन्त हकीकत तेरे हथ्थ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सप्त सुरिख राह तक्कण तेरा अक्ख, लोचन इक्क खुल्हाईआ। मेहर कर पुरख समरथ, समरथ तेरी बेपरवाहीआ। बीष्ते काल गए नस्स, जुग रिहा कोई ना राईआ। अन्तिम सब कुछ तेरे वस्स, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। निरगुण धार करीं ना पक्ख, अदल इन्साफ़ इक्क देणा प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया जड़्ह पट्ट, माया ममता मोह खपाईआ। तेरे प्यार दा खुल्ल्हे हट्ट, नाम वणजारा सेव कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कर इक्ठ, हुक्म इक्को इक्क सुणाईआ। दीन दुनी गए छड्ड, नाता मूल रिहा ना राईआ। सचखण्ड दवारे कोई ना दिसे अड्ड, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। आसा कहे साची सही दा दे सबूत, साबत आपणा आप दे प्रगटाईआ। काया माटी वेख कलबूत, जिस अंदर कलमे दिते पढ़ाईआ। निरगुण धार हो मौजूद, हाज़र हो के दे वड्याईआ। तेरी मंज़ल इक्क मक्सूद, महिफ़ल इक्को घर बणाईआ। झगड़ा रहे ना कोई दूज, कूड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साची आपणी दस्स दे सूझ, सुध बुध पिछली दे चुकाईआ। तेरा नाउं सारे कहिंदे नैण मूंद, नेत्र नैण अक्ख दे खुल्हाईआ। मैं चार जुग दी कुरलावां कूंज, हौकयां विच सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरे हन्झू नेत्र अक्खीआं विच्चों पूंझ, बिन धार छहबर जल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी इक्को ओट रखाईआ। आसा कहे मैं वेख वेख रही तक्क, बिनां कूट खोज खुजाईआ। की खेल करे समरथ, साहिब बेपरवाहीआ। निरगुण धार जोती जाता हो के आया नस्स, निस्बत समझ कोए ना पाईआ। अन्त अखीर सब दी कर के बस्स, सफा सब दी दिती उठाईआ। इक्को बोल जैकारा हक, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। चरण कँवल सरनाई सारे गए ढठ्ठ, गुर अवतार पैगम्बर बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत निधान इक्को दे आपणा रस, रस्ते भुल्लयां मार्ग सच वखाईआ।

★ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ बीबी मिठ्ठी देवी दे गृह मघोवाली जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं भगत सुहेले वेखे तरदे, तारनहार दातार आपणी दया कमाईआ। साची मंज़ल दरगाह साची सचखण्ड दुआर चढ़दे, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक्को पढ़दे, आत्म परमात्म विच मिलाईआ। जीवत रूप कदे ना मरदे, मर जीवत रूप बदलाईआ। सुख लैण अगम्मी घर दे, जिस घर वसे शहिनशाहीआ। भाणा सबर सबूरी जरदे, दु:ख दर्द ना लागे राईआ। इश्नान करन साचे सर दे, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक्क वखाईआ। आशा कहे मैं भगतां वेख्या मेला हरि निरँकार, निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। जिस दी खोज रही जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फोल फुलाईआ। जिस दी वारता गाउँदे गए गुर अवतार, पैगम्बर ढोलयां विच सुणाईआ। सो साहिब स्वामी वेखणहार, जोती जाता परदा इक्क उठाईआ। करे खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सीस निवाईआ। शब्द गुरू कर त्यार, सतिगुर साची सेव कमाईआ। भगत सुहेले मीत उठाल, लोकमात आलस निंद्रा दए मुकाईआ। पूरब जन्म दी लेखे ला के घाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दवारा वखा सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। जित्थे गुरमुख वसण लाल, दूजा वड़न कोए ना पाईआ। नेड़ आ ना सके काल, महाकाल ना कोए डराईआ। त्रैगुण कूड़ा तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। प्रेम प्रीती विच्चों माणक मोती उछाल, रतन अगम्मा बाहर कढाहीआ। जन्म कर्म दा पूरा कर सवाल, फ़िकरा आपणा नाम सुणाईआ। साची गोद लए सवाल, सोया फेर ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वसाईआ। आशा कहे मैं भगत सुहेला वेख्या भगतां संग, सगला संग बणाईआ। आत्म दा देवे अनन्द, मन मनसा मेट मिटाईआ। सच सति दा चाढ़ के चन्द, सचखण्ड करे रुशनाईआ। जुग जन्म दी विछड़ी आपणे नाल गंढ, डोर प्रेम प्रीत वखाईआ। झगड़ा मुका जगत गंग, तीर्थ तटां पन्ध रहे ना राईआ। करे मेहर सूरा सरबंग, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साची मंज़ल जावण लँघ, दर मिले बेपरवाहीआ। सेज सुहञ्जणी इक्क पलँघ, जिस दा पावा चूल ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क वसाईआ। आसा कहे भगतां अंदर चाउ घनेरा, खुशीआं विच वड्याईआ।

प्रभ ठाकर पाया नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस चुकाया चुरासी गेड़ा, आवण जावण रिहा ना राईआ। पार कराया फड़ के बेड़ा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। जन्म मरन चुकाया झेड़ा, झगड़ा अवर ना कोए दसाईआ। भाग लगा के काया माटी खेड़ा, गृह मन्दिर दिती वड्याईआ। आपणा रंग रंगा के गुरू गुर चेरा, चेला गुर आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। मुड़ के बौहड़ ना होवे फेरा, फ़ैसला इक्क हक सुणाईआ। जन भगतां उत्ते करके मेहरा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दए वड्याईआ। आशा कहे मैं भगत सुहेले वेखे सुत्ते, धुर दी गोद सोभा पाईआ। ओनां नूं गुर अवतार पैगम्बर कोई ना पुछे, बाहों फड़ ना कोए हिलाईआ। जिस दी धार विच्चों उठे, अन्त ओसे विच समाईआ। दीन दयाला हो के तुट्ठे, पुरख अकाला वड वड्याईआ। सब दे पैंडे पिछले अगले मुक्के, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। झगड़ा रिहा ना काया बुत्ते, पंज तत अग्नी ख़ाक बणाईआ। गुरमुख गुरसिख सदा सदा सद सुच्चे, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। बिन हरि अग्गे कोए ना पुछे, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख़्शणहार सरनाईआ। आसा कहे भगतां मिली अगम्मी धीर, धीरज आप धराईआ। नाता छड्ड जगत सरीर, शरीके वाली छड्डण लोकाईआ। मिलण इक्क अगम्मी पीर, जो पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। जिस दा अमृत ठांडा सीर, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। जिस दवारे बहे कबीर, कबरां तों बाहर वज्जे वधाईआ। सो भगतां मंज़ल मिले अख़ीर, आख़र इक्को घर वसाईआ। जित्थे ना कोई शाह ना हकीर, अमीर ग़रीब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई जगत मर्यादा तदबीर, तरीका इक्को इक्क सुणाईआ। गोबिन्द दा लाल अगम्मा चीर, वस्त्र सोहणा इक्क सुहाईआ। कलयुग दी अन्तिम मेट लकीर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। एह खेल गहर गम्भीर, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख़्शणहार शरनाईआ। आसा कहे गुरसिख हरि भगत दए संदेसा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेरा पिच्छे कोई रिहा ना लेखा, कूड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैनूं अन्तिम इक्क दा आया चेता, जो चेतन सब नूं रिहा कराईआ। दो जहानां बणया नेता, निरगुण निरवैर आप हो जाईआ। भगतां दा बिन बोलीउँ लै के ठेका, राए धर्म दा खहिड़ा दिता चुकाईआ। सच सुहा के इक्को देसा, सचखण्ड वज्जे नाम वधाईआ। नाता जुड़ गया पिता पूत पुत्त बेटा, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे जुग चौकड़ी वेखी बड़ी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। लहिणा देणा तक्कया गोर मढ़ी, मसाण पवण रूप समाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां खेल वखाया

हरी, हरि करते आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। बिन भगतां किसे ना नाता तुट्टा शरी, शरअ विच जगत लोकाईआ। कुछ लहिणा देणा लेखा चमकौर गढ़ी, गुर गोबिन्द गया सुणाईआ। जिस दी धार सति सतिवाद खड़ी, सच दवारे नज़री आईआ। सो भगत सुहेले वसाए आपणी घरी, जिस घर गृह दा मालक इक्को नज़री आईआ। जित्थे दु:ख ना लागे ज़री, अग्नी अग्ग ना कोए लगाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के बरी, पारब्रह्म प्रभ आपणे विच मिलाईआ। साचे नाम दी पावे अगम्मी कड़ी, निरगुण जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिन्हां ने तूं मेरा मैं तेरा तुक इक्को पढ़ी, तिन्हां दा लेखा लोकमात रहिण ना पाईआ।

★ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ माया देवी दे गृह मघोवाली जम्मू ★

जन भगत कहे मेरा बिसराम, हरि कन्त सच्ची सरनाईआ। जित्थे झुकदे तत्तां वाले राम, सरगुण निरगुण सीस निवाईआ। पैगम्बर करन सलाम, बिन सीस सजदा इक्क खुदाईआ। पूरा होवे काम, इच्छत पूर अख्वाईआ। बरदा रहिणा पए ना कोए गुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क वड्याईआ। जन भगत कहे सब तों औखा प्रभ विछोड़ा, विछड़ कदे ना जाईआ। आदि जुग दा जोड़ा, चौकड़ी वज्जे वधाईआ। दोहां दा सांझा पौड़ा, मंज़ल इक्क अख्वाईआ। राह रहे कोई ना सौड़ा, भीड़ी गली ना वण्ड वण्डाईआ। आत्म परमात्म साक होवे दोहरा, निरगुण तों सरगुण सरगुण तों निरगुण विच समाईआ। लेखा साफ़ रखे कोरा, दुरमति मैल ना लागे राईआ। नाम निधाना दे के भोरा, काया भोरे विच्चों बाहर कढाहीआ। साची धार दा ला के होड़ा, होका दे के आप उठाईआ। आत्मा परमात्मा साचा इक्को जोड़ा, जुड़या विछड़ कदे ना जाईआ। माटी चम्म चम्म दृष्टी मानस ढोरा, पंखी पंछी रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। जन भगत कहिण प्रभ कदे ना होवे अलग, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। किरपा करे सूरा सरबग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर्शन देवे उपर शाह रग, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। बिन काअब्यों करा के हज्ज, हुजरा इक्को दए सुहाईआ। नाम नगारा जाए वज्ज, नौबत करे शनवाईआ। सच दवारे बहे सज, सच सिंघासण डेरा लाईआ। जन भगतां कूड़ी पार करे हद्द, घर आपणा इक्क वखाईआ। जित्थे दीपक जोत रिहा जग, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच सिंघासण रिहा सज, हरि करता बेपरवाहीआ। जन भगतां सच प्रेम प्यार प्यावे मद, मधुर धुन राग सुणाईआ। रहिण देवे ना कोई बप्पड़ा बग, काग हँस रूप वटाईआ।

सर्ब कला हो समरथ, महिमा अकथ कथ जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि अन्त दा सांझा जस, मध लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख आपणा रंग चढ़ाईआ।

★ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ सरदार सिँघ दे गृह सीड़ जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे वेखी जगत लोकाई, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा माया ममता मोह विकार दी पई दुहाई, जगत दुहागण नार हरि कन्त ना कोए प्रनाईआ। मानव मानुख धरनी धरत धवल धौल आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होया विभचार, कूड़ी क्रिया सृष्टी दृष्टी अंदर हल्काईआ। साचा मिले ना मीत मुरार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। काया मन्दिर अंदर सच नूर ना होवे उज्यार, अमृत रस बूँद स्वांती निजर झिरना ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे वेखी दीन दुनी, दाअवेदार नज़र कोए ना आईआ। भरमें भुल्ले ऋषी मुनी, मनुआ मन बन्धन ना कोए रखाईआ। साचा दिसे ना कोए गुणी, जो प्रभ दा परदा दए उठाईआ। माटी सब दी ख़ाली दिसे कुंनी, हुजरा हक ना कोए वड्याईआ। नाम निधान श्री भगवान सुणाए कोई ना धुनी, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। अमृत रस निजर धार किसे ना मिले बिना बुल्लीं, झिरना अगम्मी इक्क झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। आसा कहे मैं वेखां कलयुग अन्त अख़ीर, बिन अक्खां आख सुणाईआ। साचा दिसे ना कोए दस्तगीर, बग़लगीर कूड़ लोकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला खेल करे बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। गोबिन्द सूरा शाह सुल्तानां हथ्थ फड़ाए इक्क शमशीर, शमां कूड़ी गुल्ल कराईआ। नेत्र नैण वहावे मुकामे हक कबीर, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दी बदल गई जगीर, ज़ाहर ज़हूर दरस कोए ना पाईआ। तेरे भगत जुग चौकड़ी लख चुरासी विच ख़मीर, रंग आपणा देण वखाईआ। चार जुग दी मिटदी दिसे लकीर, फ़कीर पल्लू ना कोए फड़ाईआ। तेरे हथ्थ दो जहानां तकदीर, तदबीर तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। आसा कहे मैं वेख वेख होई खुश, धुर दा राग सुणाईआ। सदी चौधवीं सारे होए चुप्प, बीस बीसा आपणा बल धराईआ। साचा दिसे

कोई ना सुत, अपराधी बैठे मुख भवाईआ। भाग लग्गे किसे ना कुक्ख, जननी बणे ना कोए जणेंदी माईआ। पुरख अकाला दीन दयाला हर घट अंदर बैठा लुक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले बणा के आपणे सुत, पिता पूत गोद उठाईआ। बिन हथ्थां बाहवां धार आत्म परमात्म लए चुक्क, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। जन्म कर्म दा आवण जावण लख चुरासी मेट के दु:ख, दर्दीआं दर्द दए गवाईआ। उजल कर के दो जहानां मुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच दवारा इक्क सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं वेखां भगतां धार, जो भगवन विच समाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कर ना सकी विसथार, राग नाद ना ढोला गाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा करदे गए इज़हार, सिफ्तां विच सालाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी घट निवासी वेखणहार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण सरगण सरगुण निरगुण दो जहानां पावे सार, महासार्थी आपणी कल वरताईआ। सन्त सुहेले सज्जण गुरमुख भाल, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। नाता तोड़ कूड़ी क्रिया जगत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सच दवारा धर्म दा इक्क

६६१ वखाल, नाता कूड़ा दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पुछणहारा ६६१

२० मुरीदां हाल, मुर्शद इक्को इक्क अख्वाईआ। आशा कहे मैं वेखी खेल बहु रंगी, रंगत जगत ना कोए वखाईआ। वेस २०

वटा सूरा सरबंगी, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वासना कढ्ढ गंदी, गण गंधर्ब सीस निवाईआ। गुरमुख सवाणी नेत्र नैण अक्ख रहे कोए ना अन्धी, निज लोचण करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे माया ममता मोह विकार भेख पखण्डी, जूठ झूठ परदा दए उठाईआ। सति शब्द दी साची धार गोबिन्द इक्को चण्डी, चण्डका आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी वेख वखाईआ। आसा कहे मैं तक्कया खेल अकाल, अकल कलधारी आप खिलाईआ। जन भगतां लेखे लावे घाल, पूरब लहिणा रिहा चुकाईआ। नाम निधान दे के सच्चा धन माल, ख़ाली झोली रिहा भराईआ। सन्त सुहेले उठा के बाल, बाली बुध दए वड्याईआ। कलयुग अंदर सतिजुग सति धर्म दी बदल के चाल, धुरफ़रमाना इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द बणा दलाल, वणजारे जगत रिहा मिटाईआ। ठांडे दर जवाब सवाल, हुक्मे अंदर हुक्म बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुल्हाईआ। आसा कहे मैं वेख्या खेल पुरख अगम्म दा, अगम्मढ़ी कार आप कमाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना मरे ना कदे जम्मदा, जीवण मरन ना कोए रखाईआ। जिस नूं सहारा नहीं किसे दम

दा, पवण पवणां ना कोए वड्याईआ। झगड़ा नहीं हरख़ सोग ग़म दा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। पोश पहिनयां नहीं कदे काया माटी चम्म दा, तत्तां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। वणजारा बणया नहीं किसे नाम दा, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। सदा मालक बणया रिहा धुर पैग़ाम दा, गुर अवतार पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा वेखे दो जहान दा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। जन भगतां नाम रस देवे आपणे जाम दा, सीतल धारा इक्क वहाईआ। बन्धन तुट्टे जगत शरअ गुलाम दा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। एह खेल अगम्मी अमाम दा, जिस नूं हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कलमयां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित एथे ओथे दो जहानां लेखा जाणे आपणे इंतज़ाम दा, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ लछमी देवी दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मेरी धुर दी मनसा, ख़ाहिश इक्को दयां समझाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश प्रभ दा बणे बंसा, ज़ात पात दीन मज़्हब ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म साचा रूप बणे सोहँ हँसा, काग नज़र कोए ना आईआ। मन विकार हउमे हंगता रहे कोए ना संसा, सच धर्म वज्जे इक्क वधाईआ। दीन दुनी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बणाए अगम्मी बणता, गुर अवतार पैगम्बर झगड़ा रहे कोए ना राईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हँ ब्रह्म रूप दए समझाईआ। साचे इष्ट होवे इक्को मनता, जो सतिजुग त्रेता द्वापर नित नवित निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ। भेव खुल्हाए बोध अगाध जन भगत सुहेले साचे सन्ता, काया मन्दिर अंदर परदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग दए दरसाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे सृष्ट सहाई होवे एक, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार सब दी होवे टेक, टिक्के राम नाम मस्तक ख़ाक रमाईआ। मानव मानुख मानस बुद्धी होए बिबेक, दुरमति मैल अंदरों दए कढाहीआ। त्रैगुण माया पंज तत ला सके कोई ना सेक, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। निज नेत्र लोचन नैण सच स्वामी आपणा लैणा पेख, ठाकर मिल के वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा आपणा वखाए देस, जिस गृह बैठा निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर करन इक्क आदेस,

पैगम्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। सो साहिब सतिगुर धुर सुणावे इक्क संदेश, संध्या प्रभाती इक्को रूप नज़री आईआ। जो आदि जुगादि सदा रहे हमेश, जन्म मरन गेड़ ना कोए रखाईआ। नित नवित जन भगतां करे हेत, आत्म परमात्म नाता जोड़े धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ। आसा कहे चार वरन होवण इक, झगड़ा दूई रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो भविख्त गए लिख, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। उह खेल निराला सदी चौधवीं सब नूं पए दिस, दहि दिशा होए रुशनाईआ। पुरख अकाल इक्क इकल्ला होवे मित, मित्र प्यारा मीत धुरदरगाहीआ। जिस दी हार बदली रहे विच यित, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। आसा कहे मैं वेखां खेल निराला, अकल कलधारी आप वरताईआ। लेखा जाणे गुर गोपाला, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। सच दुआर वखाए सच्ची धर्मसाला, जित्थे दीन मज़्ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एको जोती नूर निरगुण धार होवे ज्वाला, शिव शक्ती शवै इक्को रंग समाईआ। सतिगुर शब्द निरगुण सरगुण बणे दलाला, वणज व्यपारी वड वड्याईआ। लेखा वेखे
९९३ माज़ी हाला, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण धुरदरगाहीआ। आसा कहे मेहरवान होवे महबूब, मुहब्बत विच वड्याईआ। मंज़ल इक्क वखाए अरूज, अर्श फर्श
२० परदा दए उठाईआ। चौदां तबकां रहे ना कोए हदूद, हज़रत निउँ निउँ लागण पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे नेस्तोनाबूद, हुक्म धुर दा दए वरताईआ। हर घट अंदर जो दिसे सदा मौजूद, वसल यार देवे नूर खुदाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके हज़ारा दरूद, तीस बत्तीस ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रंग रतड़े धुरदरगाहीआ। आसा कहे मैं वेखां खेल अगम्मे राम, जो रमता रमता धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे सुबह शाम, गुर अवतार सीस निवाईआ। जिस दा पैगम्बर सुणदे पैग़ाम, कलमयां विच रहे गाईआ। दो जहानां मेहरवान, जल्वागर नूर रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम बदल देवे निज़ाम, कूड़ी क्रिया मेटे थाउँ थाँईआ। सति धर्म दा दे ज्ञान, अंदर अज्ञान दए चुकाईआ। पुरख अकाल सच सरनाई बख्शे इक्क ध्यान, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुलाईआ। भगत वछल श्री भगवान, साचे सन्तां लए जगाईआ। मंज़ल वखाए अगम्म महान, जित्थे बिन सूर्या चन्द होवे रुशनाईआ। शब्दी नाद वज्जे धुनकान, अनादी नाद वजाईआ। तख्त निवासी नौजवान, शाहो भूप सोभा पाईआ। जिस दा हुक्म सदा फ़रमान, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां करे शनवाईआ। उह खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। निरगुण धार हो प्रधान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ।

तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म लख चुरासी दो जहान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़ूब अन्त पछताण, पश्चाताप विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा निगाहबान, निरवैर निराकार निरँकार निरिच्छत इच्छत सब दी पूर कराईआ।

★ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ सूबेदार तेजभान दे गृह बख्शी नगर ज़िला जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मेरी पूरी होवे आसा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सब नूं बख्शे इक्क भरवासा, भरम कूड़ रहे ना राईआ। धुर दा नाम जपाए जणाए जेहवा जगत स्वासा, साह साह समाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाशा, प्रकाश्त हो के वेखे थाउँ थाँईंआ। आपणे भेव दा खोल्हे आप ख़लासा, ख़ालस आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां देवे इक्क दलासा, मेहर नज़र नैण उठाईआ। परदा लाहवे पृथ्मी आकाशा, एका नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल वेख वखाईआ। आसा कहे मैं तक्कां अजब नज़ारा, जो नज़रीआ दए बदलाईआ। लेखा जाण सर्ब संसारा, लख चुरासी अंदरों फोल फुलाईआ। शब्दी शब्द दए इशारा, नाम नाम नाल शनवाईआ। महल अटल कर उज्यारा, अन्ध अंध्यारा दए मिटाईआ। निरगुण धार हो के ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर हो के दरस दिखाईआ। कूड़ी क्रिया पार करे किनारा, तट इक्को वज्जे वधाईआ। जित्थे बैठ गुरू अवतारा, पैगम्बर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाईआ। आसा कहे मैं वेखां भगवन वाली भगौती, भगवत कहि ना कुछ जणाईआ। जगत धार मिटे बनौटी, बनावट आपणी इक्क दरसाईआ। निस्बत रहे ना कोए औंटी, टांक धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। आशा कहे मैं तक्कां खेल निराला, निराकार रिहा वखाईआ। सब तों वक्खरी बदल के चाला, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। पूरब पूरा हल्ल करे सवाला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। भगत सुहेला इक्को हो दलाला, दामनगीर आपणा फेरा पाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाला, अहिवाला शब्द गुरू दृढ़ाईआ। जिस दी बदले ना कोई चाला, चालाकी चलित्र ना कोए वखाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से सुखाला, औझड़ राह अग्गे ना कोए वखाईआ। परम पुरख बण कृपाला, कृपानिध आप सहाईआ। सब दी आशा मनसा पूर कर सवाला, साजण हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आवे भाला, खोजत खोज वेखे जगत लोकाईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ राम चन्द दे गृह पिण्ड बख्शी नगर जम्मू शहर ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे जुग चौकड़ी दिसे इशारे, शब्दी सैनत नाल समझाईआ। दूर नेड़े वसे किनारे ,नईआ भँवरी विच भवाईआ। प्रभ दे नाम दे बोल जैकारे, वक्खरे वक्खरे राह चलाईआ। निरगुण सरगुण खेल कर संसारे तन वजूद करी पढ़ाईआ। भेव खोल्ह के सच दवारे, परदा दीन दुनी उठाईआ। दीन मज़्हब दे ला अखाड़े, वरनां बरनां करे लड़ाईआ। जगत निशान निशानयां वाले चाढ़े, चार कुण्ट वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। आसा कहे जुग चौकड़ी मिलदा रिहा संदेसा, धुर फ़रमान धर्म दी धार जणाईआ। हुक्म मनाउँदा रिहा लेखा, एकँकार बेपरवाहीआ। आपणी बख्शदा रिहा टेका, चरण कँवल सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चुक्कदा रिहा ठेका, ठेकेदार दिते उपजाईआ। आप बण अगम्मी नेता, फ़रमान आपणा आप उपजाईआ। मैनूं पिछला आया चेता, की करनी खेल खिलाईआ। दस्स के सचखण्ड देसा, ब्रह्मण्ड खण्ड कार कमाईआ। निक्का निक्का पा के हिस्सा, हस्ती आपणी इक्क समझाईआ। मानव मानव दे के पिच्छा, पिछला अगला हुक्म सर्ब रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म सदा वरताईआ। आसा कहे मैं कूकां बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। करे खेल प्रभू अनभोल, अभुल्ल वड वड्याईआ। सब दे तोलणहारा तोल, तराज़ू तक्कड़ नाम उठाईआ। घट निवासी हर घट फोल, वस्त गोलक विच्चों बाहर कढाहीआ। जुग चौकड़ी मारदा रिहा रोल, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। लख चुरासी अंदर मौल, करनी करता आपणी कार कमाईआ। अन्तिम सब दे पूरे करे कौल, जो पिच्छे संदेश्यां विच सुणाईआ। सचखण्ड दवारे बहि अडोल, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। निरगुण धार हो के वेखे उपर धौल, धरनी धरत परदा आप उठाईआ। जिस दा लेखा समझे कोई ना पंडत पांधा रौल, बुद्धी विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी सब दे वस्या कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंगण रंग रंगाईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही ३ शिव सिँघ दे गृह बख्शी नगर जम्मू ★

आसा कहे मैं जुग चौकड़ी रही दस्सदी, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। एह खेल पुरख समरथ दी, जो जुग जुग वेस वटाईआ। जिस दी धार अगम्मी सच दी, सति नाल समाईआ। नुरानी किरन ओसे दी अक्ख दी, जो अक्खरां तों परे करे पढ़ाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर लख चुरासी वसदी, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। मैं भुक्खी प्यासी ओसे दे जस

दी, जुग जुग सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। भज्जी फिरां हकीकत हक लई, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। पन्ध मुकाउँदी रही अज्ज लई, जो वेला वक्त दए वड्याईआ। जिस कारण सच दवारे सद्द लई, संदेसा इक्क सुणाईआ। मैं पुज्ज गई ओसे दे हज्ज लई, जो बिन मक्के काअब्यों आपणा गृह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। आसा कहे मैं जुग जुग दस्सया, शब्दी ढोला राग सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अकाल आवे नस्सया, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां अमृत रस निझर देवे रस्या, बूँद स्वांती इक्क इकांती आप टपकाईआ। जिस दा खेड़ा दो जहान वस्या, ब्रह्मण्ड खण्ड गुलशन आप महकाईआ। जिस दा नाम निधान सरगुण धार सब ने रटया, हुक्मे अंदर करी पढ़ाईआ। उह खेल करे पुरख समथया, साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। लख चुरासी लहिणा देवे हथ्थो हथ्थया, पूरब सब दा खोज खुजाईआ। गुरमुखां चरण धूढ़ी बख्शे मथ्थया, मस्तक टिक्के नाम रमाईआ। सदा सुहेला करे रक्ख्या, दो जहान होए सहाईआ। आत्म दी कोई करे ना हत्या, तन वजूद सदा होवे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। आसा कहे मैं गाउँदी रही गीत, गहर गवर दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाउँदी रही रीत, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। जगत दवारे वखाउँदी रही मन्दिर मसीत, मठ्ठां नाल सुहाईआ। लेखा वेंहदी रही हस्त कीट, ऊँचां नीचां इक्क जणाईआ। प्रभ वसाउँदी रही सब दे चीत, चेतन सुरती सर्ब कराईआ। दस्सदी रही हदीस, कलमयां विच आपणा आप अलाईआ। आप बणी रही नाचीज़, ख़ादम हो के सीस झुकाईआ। प्रभ मिलण दी करदी रही रीझ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां अंदर देंदी रही तामीज़, तमअ कूड़ी बाहर कढाहीआ। सन्त भगत बणाउँदी रही अज़ीज़, गुरमुख गुरसिख नाल रलाईआ। सति धर्म दा बीजदी रही बीज, तन माटी ख़ाक सेव कमाईआ। पुरख अकाल दी करदी रही तस्दीक, शहादत गुर अवतार पैगम्बर तत्तां विच भुगताईआ। निरगुण हो के रखदी रही उडीक, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। जिस दी हक इक्क तौफ़ीक, मालक खालक धुरदरगाहीआ। वाहिद लाशरीक, शिरक्त विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ। आसा कहे मैं गाउँदी रही सोहला, सोहणा राग अलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणदा रिहा विचोला, आत्म परमात्म राह समझाईआ। पुरख अबिनाशी सब दे कोलों बदलाउँदा रिहा ढोला, आपणा हुक्म वरताईआ। दीनां मज़्बां पवाउँदा रिहा रौला, जगत वण्ड वण्डाईआ। सब नूं दस्सदा रिहा मौला, हर घट रम्यां नज़री आईआ। खेल खेलदा रिहा उपर धौला, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। शब्दी धार करदा रिहा कौला,

९९६
२०

भविख्तां विच समझाईआ। अन्तिम सब दा भार करे हौला, हौली हौली आपणी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा आप चुकाईआ। आसा कहे मैं सेवा करदी रही जुग चार, चौकड़ी पन्ध चुकाईआ। संदेश्यां विच करदी रही ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। बाणी विच ब्यान करदी रही नाल इज़हार, सिफ्तां विच सालाहीआ। कलयुग अन्त कन्त भगवन्त इक्क लए अवतार, एकँकार बेपरवाहीआ। दो जहानां बणे सिक्दार, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ा दए उतार, बाकी रहिण कुछ ना पाईआ। मालक ख़ालक बण परवरदिगार, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। मैं ओसे दी खिदमतगार, जुग जुग सेव कमाईआ। सद बणी रहां भिखार, मंगती हो के झोली डाहीआ। जिस वेले नाम दी भिच्छया देवे डार, रहमत आप कमाईआ। मैं निरगुण तों सरगुण हो के आवां विच संसार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सिफ्तां करां सिरजणहार, गीत गावां चाँईं चाँईंआ। इक्को दर दी बण पनिहार, सीस सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित आपणे हथ्थ रखे विवहार, सरगुण हुक्म नाल समझाईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ चीफ़ इंजीनयर आर० ऐल० शरमा करन नगर जम्मू शहर ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे चार कुण्ट दहि दिशा वध्या कूड़, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सच धर्म ना कोए कमाईआ। चतुर सुघड़ जगत अज्ञान कीते मूढ़, माया ममता मोह विकार हँकार हल्काईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करते चरण लाए कोई ना धूढ़, मस्तक टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। घट स्वामी अन्तरजामी सब नूं दिसे दूर, काया मन्दिर अंदर दरस कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म प्रकाश करे कोए ना नूर, निरगुण जोत दीआ बाती कमलापाती ना कोए जगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला प्रतख मिले ना किसे हज़ूर, मानव मानुख मानस अंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। आसा कहे चार कुण्ट दहि दिशा दिसे अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दए कोई ना गेड़ा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक प्या झेड़ा, बुध बिबेक काया हेत मन नेक ना कोए कराईआ। कल्पणा अंदर सब दा उजड़दा जाए खेड़ा, साहिब सुल्तान

नौजवान मेहरवान धुर फ़रमाना सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। आसा कहे करे खेल परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दी आसा रखदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो साहिब स्वामी सब नूं वेखणहार, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा लहिणा जाणे थाउँ थाँईंआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जिस नूं बुद्धिवान समझे ना कोए विच संसार, विद्या विच विद्वत ना कोए कराईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत सारे गए हार, जीव जंत अन्तश्करन परदा ना कोए उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर वध्या विकार, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। शाहो भूप पश्चाताप करन सिक्दार, नव नौ चार रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदी सदीवी खोज खुजाईआ। आसा कहे मेरे अन्तर आई हैरानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेख वखाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी अन्तिम होई बेईमानी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ध्यान ना कोए लगाईआ। मनुआ शरअ अंदर करे शैतानी, शरीअत असलीअत परदा ना कोए उठाईआ। जलवा मिले ना किसे जोत नुरानी, शब्द नाद धुन आत्मक राग ना कोए अलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दो के गए भविख्त बाणी, वेद व्यासा लेख लिख्या कलम शाहीआ। सो लहिणा देणा जाणे शाह सुल्तानी, श्री भगवान हरि रघुराईआ। कलयुग अन्त कन्त भगवन्त करे खेल महानी, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सति धर्म दी झुला निशानी, लोकमात निरगुण सरगुण धार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे मैं वेखां खेल हकीकी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। परवरदिगार सांझा यार वेस वटाए लाशरीकी, शरक्त कूड़ी दए मिटाईआ। जिस दे विच इक्क तौफ़ीकी, ताब्यादारी सब नूं दए सिखाईआ। निरगुण धार सदा बारीकी, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीदी, गुर अवतार पैगम्बर बैठे दर ते सीस झुकाईआ। अगली खेल करे अजीबी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई दए तरतीबी, सियासत विरासत लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। आसा कहे मैं वेख वेख चार कुण्ट थक्की, थकावट मेरे अन्तर आईआ। सदी चौधवीं रसना जेहवा रही किसे ना पक्की, मनसा काग वांग कुरलाईआ। राउ रंक होए शकी, शाह सुल्तान ना कोए वड्याईआ। साध सन्त निरगुण नूर ना वेखण अक्खी, जोती जोत ना कोए समाईआ। अक्खरां वाली बाहरों पड़दे पट्टी, निरअक्खर परदा ना कोए चुकाईआ।

पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच स्वामी किसे मिल्या ना कमलापती, धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक सिर आपणा हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जगत वणजारे माया ममता मोह विकार हँकार चलाउँदे हट्टी, नाम निधान वस्त अमोलक काया गोलक ना कोए टिकाईआ। धुर प्रेम मिले किसे ना रती, रतन अमोलक हीरा लाल काया मन्दिर दए ना कोए टिकाईआ। सन्यासी वैरागी त्यागी बैरागी रिहा कोई ना जती, सति सन्तोख धीरज धीर ना कोए धराईआ। आसा कहे मैं टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर वेखे अक्खी, निरगुण हो के भज्जी वाहो दाहीआ। प्रभ साचे काहन दी मिले कोए ना सख़ी, जो नाम बंसरी सुण के धुन आपणे अंदर उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। आसा कहे मैं चार कुण्ट थक्की खोज, बण वैरागण भज्जी वाहो दाहीआ। सदी बीसवीं प्रभ दे वेखे चोज, चोजी प्रीतम नज़र किसे ना आईआ। सब दे अंदर लग्गा हउमे हंगता रोग, माया ममता मोह विकार हँकार हल्काईआ। मन वासना जगत कल्पणा सारे भोगदे भोग, आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जलां थलां फिरदे वेखे कोटी कोट, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। साची मंज़ल चढ़या कोई ना चोट, चोटी चढ़ के प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। मिल्या मेल ना निर्मल जोत, शब्द नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। आसा कहे मैं दस्सां कहाणी, कथनी कथ सके ना राईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ ठंडा रिहा कोए ना अमृत पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। रस माणे ना कोए धुर दी बाणी, गीता ज्ञान ध्याए अठारां अठ्ठ दस रिहा समझाईआ। घर स्वामी मिले किसे ना हाणी, बण खोजे कोटी लोकाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, जिस्मानी ढोले सारे रहे गाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार इक्क इकल्ला इक्को इक्क जणाईआ। आसा कहे मेरे अन्तर सति धर्म दी आई दलील, मनसा आपणी दयां जणाईआ। साचा दिसे ना कोए वकील, जो रस्ता हक दए वखाईआ। मेरी प्रभ दे अग्गे इक्क अपील, बिन सीस जगदीस झुकाईआ। मेरे ठाकर वड्ड आमीन, अल्ला तेरी वड्याईआ। साची सिख्या दे तालीम, चार कुण्ट इक्क पढ़ाईआ। तेरी मंज़ल दिसे अज़ीम, आहला रुतबा नूर खुदाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहें कदीम, कुदरत दा मालक इक्क अख्वाईआ। पिच्छे चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीनां मज़्बां वाली कीती तक्सीम, अग्गे झगड़ा दे मुकाईआ। तेरे उत्ते इक्क यकीन, भरोसा सब नूं दे समझाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे तैनूं करन तसलीम, तसबी माला मणके दी लोड़ रहे ना राईआ।

६६६
२०

तेरे नाम सदा रंगीन, रंगत आपणी दे वखाईआ। आत्म होए तेरे अधीन, तत वजूद दा झगड़ा दे चुकाईआ। गुर अवतार तेरे मस्कीन, हुक्मे विच खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी इक्क सरनाईआ। आसा कहे मेरी बेनन्ती इक्क अरदास, आरज़ू दयां जणाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। हर घट अंदर साचा नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे गवाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, नूरी चन्द इक्क चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दी सांझी होवे गाथ, अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न तूं ही नज़री आईआ। तेरा नूर तेरी जात, ज़ात तेरी सफ़ात, जिस दी कदे ना होवे वफ़ात, फ़ातया पढ़न कोए ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर इनकलाब, सजदा सीस झुके अदाब, मंज़ल हक मिले महबूब महिराब, वाजब आपणी कार कमाईआ। शब्द अगम्मी मार आवाज़, हर घट अन्तर खोल्ह आपणा राज़, बिना ढोल मृदंग तों वज्जे साज, ताल तलवाड़ा इक्को देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा इक्को दिसे समाज, दूजा वण्ड वण्डण वाला नज़र कोए ना आईआ। आशा कहे प्रभ खेल कर अगली, पिछला लेखा दे मुकाईआ। मनसा जग रहे ना पग़ली, बग़लगीर आप अख्वाईआ। नूर तेरा सृष्टी सगली, दृष्टी धार दे बदलाईआ। किसे नूं लभ्भणा पए ना जंगलीं, काया मन्दिर अंदर बजर कपाटी परदा देणा उठाईआ। रूप नज़र आए असली, असल वसल यार इक्को आपणा देणा कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मोह रहे ना नकली, जूठ झूठ लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग कलयुग दोहां दी कर अदला बदली, इक्को तूं ही नज़री आईआ।

सतिगुर शब्द सदा करे मेहरवानी, मेहरवान दया कमाइंदा। साचे नाम दी दए निशानी, निज आत्म आप टिकाइंदा। पद बख्श के इक्क निरबाणी, मंज़ल धुर दी सच चढ़ाइंदा। जित्थे जगे जोत नूरानी, सूरज चन्द ना कोए वड्याइंदा। बैठा रहे शाह सुल्तानी, पुरख अबिनाशी सोभा पाइंदा। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर सिफ्तां विच उच्चरदे बाणी, सोहलयां विच राग अलाइंदा। सो लहिणा देणा चुकाए दो जहानी, आवण जावण लख चुरासी गेड़ कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवानी विच आपणी मंज़ल दए आसानी, औझड़ राह ना कोए जणाइंदा। मेहरवान सदा सद दाता,

दयावान अख्वाईआ। आत्म अन्तर बण ज्ञाता, परदा कूड़ दए चुकाईआ। सति धर्म दा जोड़ के नाता, मेला मेले सहिज सुभाईआ। पूरी करे जो अंदर दब्बी आसा, सहिज नाल समझाईआ। दो तों इक्क दा होए भरवासा, भरम रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहर मुहब्बत विच साचा नूर करे प्रकाशा, प्रकाश विच अबिनाश इक्को नज़री आईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ राम कौर दे गृह पिण्ड छम्ब ज़िला जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आशा कहे की वरते तेरा भाणा, भउ समझ कोए ना पाईआ। तख्त निवासी दिसे कोई ना राजा राणा, रंक रईयत ना कोए वड्याईआ। मनुआ मन करे घमसाणा, दहि दिशा हाल दुहाईआ। तेरा नूर ना किसे पहचाना, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। परदा लाह नौजवाना, घूँगट कूड़ दे मिटाईआ। शब्दी नाद सुणा तराना, नाम इक्क शनवाईआ। सति धर्म झुला निशाना, चार कुण्ट वड्याईआ। आपणा लेखे ला आणा, परदा ओहला रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। आसा कहे मैं वेखी दीन दुनी ठग्ग चोर, कूड़ कुड़यारी जगत लोकाईआ। तेरी रही किसे ना लोड़, साचा संग ना कोए बणाईआ। असीं उतर दे ना सकीए मोड़, हुक्म विच तेरे सीस निवाईआ। एस वेले प्रभू तेरी इक्को लोड़, लोड़ींदे साजण नज़री आईआ। ममता मोह विकारा होड़, होका आपणा नाम सुणाईआ। किसे तों पूरी होवे ना थोड़, थुड़े थिड़के सारे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। आसा कहे सृष्ट सबाई होई अबला, दुहागण दए दुहाईआ। आपणा नूर वखा अवला, जोत कर रुशनाईआ। तूं काहन धुर दा सगला, साँवल बेपरवाहीआ। तेरे नाम दा चार जुग वजाउँदे आए तबला, धुन तेरे विच समाईआ। अग्गे खेल वेख पाती कमला, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। आसा कहे कलयुग कूड़ी सृष्टी दिती फूक, अग्नी तत तपाईआ। किथे सुत्ता प्रभू घूक, नेत्र लोचण नैण ना अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा प्या पंज भूत, तन सरीर लड़ाईआ। भाग लग्गा ना किसे कलबूत, काया कबर रही कुरलाईआ। अन्त स्वामी हो मौजूद, तेरा राह तकाईआ। बिन तेरी किरपा रहे ना कोए महिफ़ूज़, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। उह वेख झगड़ा हुन्दा जनूब, जानब समझ कोए ना आईआ। जिधर सूर्या होए ग़रूब, ओधर हाल दुहाईआ। एस दा होर इक्क सबूत, सबर नाल समझाईआ। सब दी पूरी होई मशरूत, शर्त शरअ विच्चों बदलाईआ। आह चिठ्ठी

१००१
२०

वेख ख़तूत, मुतालया कर दे समझाईआ। झगड़ा वेख चढ़दी कूट, शरकन रोवे मारे धाईंआ। शमालण भज्जण वाला दूत, उठे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। आशा कहे खुल्हदा जांदा परदा, ओहला रहे ना राईआ। हुक्म मिलदा जांदा दिशा चढ़दा, चढ़दी कला तेरी बेपरवाहीआ। लहिंदी धार वेख्या डरदा, डरपोक पोप रिहा कुरलाईआ। शमालण शमां बिन तेल बत्ती जाए सड़दा, मुर्दा सके ना कोए उठाईआ। ज़नूब जन्म जाए हड़दा, शौह दरया रिहा रुढ़ाईआ। हुक्म संदेसा शब्दी धार इक्को घल्लदा, धायल करे लोकाईआ। कोई हुक्म संदेसा घल्लदा, राती इक्को विच्चों लँघाईआ। झेड़ा होवे जल दा, अग्नी थल तपाईआ। कोई भेव ना पाए पल दा, पलकां दे ओहले सब नूं रिहा लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भाणा कदे ना टल्दा, टाल मटोल विच रखे जगत लोकाईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ★

आशा कहे मैं चारे कूटां वेखी दिशा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण रो के कहे गुर अवतार पैगम्बर दे गए पिच्छा, अगली समझ ना कोए समझाईआ। काग़ज़ां उत्ते सिफ्तां वाला रह गया किस्सा, किस्मत सके ना कोए बदलाईआ। मैं हस्स के किहा अग्गे प्रभ दे कोल हिस्सा, सब दी झोली दए भराईआ। कोल वखाया अगम्मी चिट्ठा, जिस दा लेख ना कोए सुणाईआ। शब्दी सतिगुर आपे लिखा, बिन अक्खरां अक्खर बणाईआ। ना वड्डा ना निक्का, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। चार जुग किसे ना दिसा, एह तेरी बेपरवाहीआ। अन्तिम हो के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। सारे ध्यान धरो चेता, चेतन दए कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जिस दा इक्को कित्ता, कीमत सब दी दए आप मुकाईआ। जगत रस होणा फिक्का, फोकट होए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। आशा कहे चार कुण्ट दुहाई, हू हू हाल सुणाईआ। प्रभ किसे ना मिले गुसाँईं, बिन नात्यों होई जुदाईआ। तेरी खेल होई बेपरवाही, बेपरवाही विच समाईआ। किसे दी माँ बणाई गांईं, गोपाल वेस वटाईआ। किसे नूं शंकर सौगंद चुकाई, बचया रहिण कोए ना पाईआ। विचला भेव ना किसे खुल्हाई, गंढु सब दी होई पराईआ। तेरा लेखा धुरदरगाही, दो जहान ना कोए सुणाईआ। किसे ने समझया नहीं अंकड़ा इकाई, दहाई वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सारे करदे गए बड़ाई, बेड़ीआं विच चढ़ाईआ। चोटी चढ़ समझ किसे ना आई, चेतन जड़्ह करी लड़ाईआ। मैं नच्ची टप्पी

कुद्दी थाउँ थाँईं, थानंतर मंत्र सुणे सच गुसाँईंआ। चार कुण्ट दहि दिशा भुल्ले राही, मार्ग हक ना कोए वखाईआ। तेरी पिछली इक्क अदाई, आदत जुग दी चली आईआ। मानव बणा के कसाई, कसम आपणे नाल रखाईआ। किस नूं दएं बुरयाई, कवण मिले वड्याईआ। जे आत्मा तेरी जाई, कवण जणेंदी माईआ। तेरा लेखा अगम्म अथाई, शास्त्र सिमरत कहिण कोए ना आईआ। अगली पिछली वारता फेर ना कदे दुहराई, धुर दी रीती कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अरज़ सुणाईआ। आशा कहे मैं चार कुण्ट वेख्या हो चुकन्नी, यकतरफ़ ध्यान लगाईआ। औझड़ राह फिरी भन्नी, बैठी पन्ध मुकाईआ। तेरी सृष्टी होई अन्न्ही, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तेरा नाम सुणदे कन्नी, हिरदे हरि ना कोए टिकाईआ। जगत माया दिसदे धनी, वस्त अमोलक हत्थ ना किसे फड़ाईआ। कलयुग आखा सारे रहे मन्नी, मनसा मन दे नाल रलाईआ। विभचार नाल बन्न्ह के कन्नी, साथी जगत अख्वाईआ। एह सृष्टी दृष्टी तेरी तेरे हुक्म अंदर जणी, डोरू डंका आप वजाईआ। किसे दा वजन रहिणा नहीं टंनी, हैकटर विच ना कोए समझाईआ। तेरा खेल होणा धरनी, धरत दा दूत दए दुहाईआ। तेरी चाल इक्क बरनी, बार बार वेस वटाईआ। इष्ट अथाह होणी प्रनी, पारब्रह्म तेरा परदा ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा

१००३ देणा चुकाईआ। आशा कहे मैं चार कुण्ट दा वेख्या होका, हाए हाए कुरलाईआ। पत्तन मिले किसे ना नौका, नईआ नाम १००३

२० ना किसे जणाईआ। वक्त चुकया तेरे भउ का, भय विच ना कोए लोकाईआ। प्यार रिहा आपणे गौं का, तेरा प्रेम ना २०

कोए निभाईआ। झगड़ा वेख पिता माउँ का, पूत रहे कुरलाईआ। हँस रूप बणया काउँ का, दिवस रैण काग वांग कुरलाईआ। तेरा खेल आपणे दाउ का, दाअवेदार ना कोए समझाईआ। भेव खोल्ह आपणे भाउ का, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा रंग आप रंगाईआ। आसा कहे चार कुण्ट वेखी कमली कोझी, कामल नज़र कोए ना आईआ। मानस हो के मनसा रखी रोज़ी, राज़क रहीम तेरी ओट ना कोए तकाईआ। अन्तर अन्तर ना किसे सोधी, सुधासर इश्नान ना कोए कराईआ। किसे कम्म नहीं आउणी चोटी बोदी, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। कलयुग ममता कीता रोगी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। वरनां बरनां ना आई सोझी, मज़्बां मज़ा ना कोए चखाईआ। तेरी सृष्टी धर्म राए जोगी, तेरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आशा कहे मैं रख के हत्थ उत्ते ठोडी, तैनूं रही सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी चुरासी दी खेती नूं दिन्दे रहे गोडी, गोडयां भार हो के आपणा जोर लगाईआ। अन्त वेख ना फुल्ल ते ना डोडी, फलां दी आस ना कोए रखाईआ। किधर गए तेरे जोगी, जुगीशरां सार कोए ना पाईआ।

धर्म दुआर दा रिहा कोई ना मोढी, गुर अवतार पैगम्बर पिच्छा गए छुडाईआ। मैं सिर तों होई रोडी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बिन तेरे तेरी दिसे किसे ना जोती, जोतां वाले जोत जोत समाईआ। की वेखां की तक्कां की दस्सां मैं ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे कोटन कोटी, कुटीआ साफ़ नज़र कोए ना आईआ। तामस तृष्ना जिन्हां सन्तां दी रोटी, उह राह जगत विच वखाईआ। जे वेखां तेरी किरपा विच तेरा भगत तेरा गोती, गोतम दी आह दए दुहाईआ। जे समझां ते रविदास चमारा मोची, जो मजलस तेरे नाल रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखी फोकी, अंदर वस्त ना कोए टिकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैथों कथा कहाणी सुणीं ना बहुती, की दस्सां एह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन आवे किसे ना सोझी, सुझाउ देण वाला रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे रहे गोडी बिन खुरपा, माला मणकयां वाली भवाईआ। संदेसा दिन्दे रहे इक्को धुर दा, धर्म दी धुरी उत्ते चलाईआ। ताल वजाउँदा रिहा आपणी सुर दा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। खेल करदा रिहा चोर दा, खेल ठग्गां वाली रचाईआ। रूप धरदा रिहा होर दे होर दा, शकल शकल नालों बदलाईआ। मंत्र दस्सदा रिहा फ़ुरने फोर दा, फुरती विच समझ किसे ना पाईआ। जुगो जुग रिहा तोरदा, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। कम्म कराउँदा रिहा जेहा लोड़ दा, किसे दी चली ना कोई चतुराईआ। सेवक हमेशां मालक दी खेती गोडदा, उहनूं गोडा कहे लोकाईआ। एह खेल प्रभू दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी रोज़ दा, रोज़े रख के भुक्खे मार के फिर वी सेवा लगाईआ। एह हुक्म अगम्मी प्रीतम चोज दा, जो आपणा हुक्म वरताईआ। होर पुछो गुर अवतार पैगम्बर गोडी तों बाहर लख चुरासी दे किनारे वी खोजदा, साफ़ सुथरे बदनां ताईं कराईआ। जे होर पुछो कुछ साथ देवे नाल मौत दा, मौत नालों छुडा के प्रभ दे घर पुचाईआ। अग्गे वेख इशारा जोत दा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणी सोच आपे सोचदा, समझ वाला कदे ना कोल बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब कुछ आपे सोधदा, सुध बुध दी चले ना कोए चतुराईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ हरी सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ★

आशा कहे चार कुण्ट दी वेखी आरती, दीपक थाल फोल फुलाईआ। झगड़ा वेख्या हिन्दी फ़ारसी, फ़ैसला हक ना

कोए सुणाईआ। धक्का लग्गे भारती, भारद्वाज दए गवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जो लेखा लिख्या इबारती, अक्खरां विच सुणाईआ। ओस दा बणे ना कोए सफ़ारशी, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। झगड़ा रहे ना किसे आड़ती, धड़त सब दा बन्द वखाईआ। खेल होवे इक्को अगम्मे यार दी, याराने कूड़े तोड़ तुड़ाईआ। कुछ हालत विगड़े बिहार दी, बिहबल हो कुरलाईआ। शान रवे ना किसे सरकार दी, माण सब दा रिहा मिटाईआ। बाज़ी समझे ना कोए जित हार दी, हरि का भेव कोए ना पाईआ। एह खेल कुदरत दे कादर करनी दे करते दी आप दी, आपणी वण्ड वण्डाईआ। बेड़ी वेखे सृष्टी वाले पाप दी, पत्तन उत्ते आपणा चरण टिकाईआ। मिसल मशहूर होणी इक्को बाप दी, जुग चौकड़ी जिस दी इक्को आस रखाईआ। इक्क लहर उठणी ताप दी, अग्नी तत सब दा दए जलाईआ। फिर याद रखणी सोहँ जाप दी, चार कुण्ट पए दुहाईआ। आशा कहे मैं आशा विच आखदी, आख़र दयां सुणाईआ। मैं वी टहणी ओस शाख़ दी, जेहड़ी शाख़ जोत विच्चों शब्द रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कुछ खेल वखा दे विसाख दी, वाधा आपणे नाल रखाईआ।

★ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ चेला सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आसा कहे प्रभू चार कुण्ट पैंदीआं हाकां, धुर दे हाकम तेरी इक्क वड्याईआ। आ के खेल वेख प्रभू सच दे आका, हुक्मरान आपणी दया कमाईआ। सच दुआर दा खोल्ह ताका, परदा गुफ़ा भँवर रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म बाहमी जुड़े नाता, विछोड़ा विच ना कोए टिकाईआ। तूं आदि पुरख जोती जाता, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तेरा शब्दी सुत ज्ञाता, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मेहरवान महबूब दाता, दयावान झोली दे भराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मन्न आखा, आख़र आपणी कार कमाईआ। हर घट अंदर तेरा वासा, लख चुरासी रिहा समाईआ। दीन दुनी वेख खेल तमाशा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तेरे उत्ते रिहा ना किसे भरवासा, विषयां विच कूड़ लोकाईआ। सब दा पूरब वेख खाता, लहिणा देणा फोल फुलाईआ। दो जहान तेरा अहाता, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। सब दा बण पिता माता, पारब्रह्म ब्रह्म तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरीआं शाखां, पत्त टहणी जगत महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आशा कहे मैं चार कुण्ट दहि दिशा वेखी धुखदी, धूआँधार लोकाईआ। साची घड़ी मिले ना किसे सुख दी, सांतक सति ना कोए

वरताईआ। धार जाणे ना कोई पिता पुत्त दी, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए समाईआ। सृष्टी खेल उलटे रुख़ दी, मानव बुद्धी रही भुलाईआ। अग्गे धार रहे ना लुक दी, परदा दे चुकाईआ। खेल होवे अगम्मे पुरख दी, पतिपरमेश्वर तेरी इक्क सरनाईआ। अमृत धार दे सुच दी, संजम आपणा इक्क दृढ़ाईआ। फुलवाड़ी मौले साची रुत्त दी, ख़िज़ां रूप ना कोए वखाईआ। मेरे अन्तर आह उठदी, कूक कूक सुणाईआ। जेहड़ी आत्म तैथों रुठदी, लख चुरासी विच समाईआ। तेरी मंज़ल महबूब कदे ना मुकदी, दुनिया भज्जे वाहो दाहीआ। तेरी खेल सदा चुप्प दी, आपणा राग ना किसे दृढ़ाईआ। मैं प्यासी तेरी भुक्ख दी, तृष्ना विच हल्काईआ। फ़रमाना विच पुछदी, निउँ के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। आशा कहे चारों कुण्ट हाहाकार, सांतक सति ना कोए वरताईआ। उठ वेख अगम्मड़े यार, वड दाते बेपरवाहीआ। क्यों सुत्ता पैर पसार, बिन आलस निंद्रा डेरा लाईआ। तेरा तड़फ रिहा संसार, जगत भटक ना कोए मिटाईआ। सब नूं आउँदी दिसे हार, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। निरगुण धार सुणे ना कोए गुफ़तार, गुफ़त शनीद तेरा दरस कोए ना पाईआ। मज़लस विच करे ना कोए प्यार, मुहब्बत महबूब ना कोए कमाईआ। ग़फ़लत विच रोंदे ज़ारो
१००६ ज़ार, असमत सब दी रही कुरलाईआ। साचा दिसे ना कोए ख़िदमतगार, ख़ादम रूप ना कोए वटाईआ। चारों कुण्ट दिशा १००६
२० होई दुष्वार, मंज़ल चढ़न कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम सत्ता कर हमवार, हमसाजण वेख वखाईआ। माया ममता २०
कूड़ी क्रिया शब्दी हुक्म कर ग्रिफ़तार, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए ख़बरदार, देवत सुर सर्ब लैण अंगड़ाईआ। तेरा अजब निराला विवहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार देणी समझाईआ। आशा कहे चार कुण्ट की होवे सलाह, साहिब सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। ख़ुदी विच भुल्ला सर्ब ख़ुदा, ख़ादम नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाम दी गाए कोई ना सदा, सिदक सबूरी ना कोए रखाईआ। नेत्र रोवे आदम हव्वा, ज़ारो ज़ार नैणां नीर वहाईआ। कलयुग ममता पई वबा, तन वजूद सरीर रही मिटाईआ। जिस दी समझे ना कोई वजह, वज़ाहत विच ना कोए दृढ़ाईआ। तेरी मन्ने ना कोई रज़ा, राज़क रहीम ना कोए सरनाईआ। उठ पैगम्बरां दे ख़ुदा, ख़ुदी सब दी दे मिटाईआ। जुग चौकड़ी तेरी अदा, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। वाहिद कलमा दे पढ़ा, शरक्त अन्तर रहे ना राईआ। चार कुण्ट दे सजा, हुक्म आपणा इक्क सुणाईआ। माया ममता कर रफ़ा, रफ़ाकत आपणे नाल बणाईआ। तेरे अग्गे इक्क दुआ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साचा मार्ग कर रवां, रहिबर बण नूर ख़ुदाईआ। तेरा ढोला साचा गवां, गा गा शुकर मनाईआ। धर्म दवारे इक्को बहवां, जित्थे जगत वण्ड ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आशा कहे मैं आशा तृष्ना भुक्खी, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। मैं चार जुग दी सोई उठी, आपणी लई अंगड़ाईआ। मैं खोल्ह के वेखी मुठ्ठी, पंजे पंजिआं नाल वखाईआ। मेरी लेखे लग्गी अजे ना बुत्ती, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। मेरे भाग ना लग्गा मेंढी गुत्ती, कन्त सुहाग ना अंग लगाईआ। मैं नेत्र रोवां कूक उच्ची, बौहड़ी बौहड़ी दयां दुहाईआ। दो जहानां रहवां ना दुखी, परदा दयां उठाईआ। पुरख अकाल तेरी धार वेखणी सुच्ची, सच सुच्च देणा दरसाईआ। तेरी मंज़ल सब तों उच्ची, अगम्म अथाह तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पैंडा रिहा मुक्की, मुकम्मल तेरी सेव कमाईआ। सब दी आत्म कर सुखी, सुख सागर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। आशा कहे चार कुण्ट वेखी थक्की मांदी, बौहड़ी बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। तेरा ढोला गीत इक्को गांदी, लख लख शुकर मनाईआ। जुग चौकड़ी मैं सुनेहड़ा देंदी रही आउँदी जांदी, जुग जुग फेरा पाईआ। सफ़र विच बणी रही पाँधी, भज्जी वाहो दाहीआ। सच सरोवर रही नहांदी, चरण धूढ़ ख़ाक रमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां विच रही आंहदी, आख आख सुणाईआ। अन्त किसे दा लहिणा देणा मुके ना नाल सोना चांदी, चन्द चांदनी ना कोए रुशनाईआ। भेव खुल्ह्या ना किसे दा बांगीं, राज़क रहीम रोज़यां विच ना दरस दिखाईआ। मंज़ल मिली ना किसे ठांडी, सरोवर नहा नहा थक्की जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। आसा कहे चार कुण्ट वेख्या अन्धेरा घुप, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरा दिस्या कोई ना पुत्त, सति सरूप ना कोए समाईआ। प्रभू किथे रिहों लुक, आपणा परदा दे उठाईआ। मैनूं वेख के आउँदा दुःख, तेरे तैनूं रहे भुलाईआ। निरगुण धार हो के प्रेम प्रीती अंदर चुक्क, चारे कुण्टां खोज खुजाईआ। सच दुआर दा दे सुख, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगत सहेलीआं जा के पुछ, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ।

★ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ लाल चन्द दे गृह जम्मू ★

गुर अवतार पैगम्बरां आशा कहे प्रभ तेरा खेल वेख होवां राज़ी, रज़ा तेरी विच सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पासा पलट दे बाज़ी, बाज़ीगर स्वांगी तेरी समझ कोए ना पाईआ। मनुआ आकी रहे कोए ना ग़ाज़ी, गहर गम्भीर बेनज़ीर

१००८
२०

आपणा हुक्म देणा वरताईआ। तेरा वक्त सुहञ्जणी घड़ी आ गई, जिस दा राह चार जुग गुर अवतार पैगम्बर रहे ध्यान लगाईआ। जगत बन्धन पावे कोई ना मुल्ला शेख़ पंडा काज़ी, ग्रन्थी गृह करे ना कोए लड़ाईआ। तेरे नाम दी आवे इक्क आवाज़ी, अज़ां बांग दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा नाउँ तेरा प्रेम होवे रागी, जगत ताल दा झगड़ा देणा मुकाईआ। सब दी आत्मा जाए साधी, सिद्व साधक तेरी होण सरनाईआ। जुग चौकड़ी पिछली बदल दे वादी, वाहिद आपणा नाम समझाईआ। बहुत्यां नालों थोड़ी चंगी आबादी, जेहड़े तेरे विच समाईआ। शब्द घोड़ा फेर अस्व ताज़ी, तख्त निवासी तेरी इक्क सरनाईआ। मैं सच दवारे आई भागी, आपणा पन्ध मुकाईआ। तुध बिन दिसे कोई ना वागी, वागां हथ्थ ना कोए उठाईआ। तेरा हुक्म वरते उपर धरते पहली माघी, शब्दी शब्द धार शनवाईआ। किरपा कर जलद शताबी, शरअ दा झगड़ा दे चुकाईआ। सजदा वेख इक्क आदाबी, नमों कर वड्याईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी आदी, धुर दी धार बंधाईआ। परदा लाह ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। आशा कहे मेरे मालक धुर आमीन, साचा अमल दे समझाईआ। सृष्टी वेख जगत ग़मगीन, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरी पिछली वेख जगत तक्सीम, सारे देण दुहाईआ। अग्गे रीती बदल कदीम, कुदरत दे कादर दे वड्याईआ। कलयुग अंदर सतिजुग कर तरमीम, तरतीब आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत सुहेले होण मस्कीन, सीस जगदीस झुकाईआ। मुहब्बत विच दिसण कमतरीन, प्यार विच वड्याईआ। इक्क भरोसा दे यकीन, याद इक्को इक्क सुणाईआ। आहला अदना सांझी होवे तालीम, तुलबिआं कर पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना नर मदीन, मुद्दा इक्को दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर वखा अज़ीम, गृह मन्दिर इक्क सुहाईआ।

★ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ३ केसरी देवी दे गृह सतवारी जम्मू ★

आशा कहे किरपा कर पुरख स्वामी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक्क सरनाईआ। हर घट वेख अन्तरजामी, लख चुरासी जीव जंत सेव कमाईआ। कलयुग माया ममता भुल्ली तेरी बाणी, नाम निधान श्री भगवान हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होई हैरानी, नौ खण्ड सत्त दीप रिहा कुरलाईआ। निजर झिरना अमृत रस मिले किसे ना ठंडा पाणी, अग्नी तत काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब

१००६
२०

आपणी दया कमाईआ। आशा कहे प्रभ धुर दे पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। सच दवारा वखा आपणी धुर दी धर्मसाल, काया काअबा परदा इक्क उठाईआ। आत्म परमात्म मिल के वज्जे तेरा ताल, अनहद नादी नाद दे सुणाईआ। दीआ बाती कमलापाती एको बाल, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा देंदे आए अहिवाल, सतिजुग त्रेता द्वापर सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, मेहरवान तेरी इक्क सरनाईआ। सदी चौधवीं मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट कूड़ प्रधान, सति धर्म ना कोए रखाईआ। भरमे भुल्ले जीव शैतान, शरअ विच लड़ाईआ। तेरा दरस करे ना कोई आण, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भविक्खतां विच दे के गए ब्यान, संदेशे विच तेरा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अबिनाशी करते तेरी ओट रखाईआ। अबिनाशी करते तेरी एका ओट, एकँकार तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग जीव आलणयों डिग्गे बोट, निरगुण सरगुण लै उठाईआ। सच प्रकाश दे निर्मल जोत, अन्ध अज्ञान दे मिटाईआ। बुद्धी तों परे दस्स सोच, बोध अगाध भेव खुलाईआ। सच दुआर दी बख्श मौज, मजलस आपणे नाल लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म खोजे तेरी खोज, दूजा राह ना कोए तकाईआ। झगड़ा रहे ना लोक परलोक, सलोक सोहला इक्को नाम पढ़ाईआ। तेरी सरन सरनाई विच सके कोई ना रोक, ब्रह्मण्ड खण्ड बैठण सीस निवाईआ। तेरा ठांडा दरबार जित्थे निर्मल जगे जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे वज्जे वधाईआ। आशा कहे दीन दुनी दी वेख हालत, माज़ी हाल ध्यान लगाईआ। ममता मोह वधी जहालत, कूड़ कुटुम्ब होए कुड़माईआ। सच दवारयों होई ममानत, मनुआ मन रिहा अटकाईआ। तूं साहिब सदा सद सही सलामत, सति पुरख तेरी इक्क सरनाईआ। झगड़ा रहे ना कोई बग़ावत, द्वैती लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। साचा रंग धुर करतार, कुदरत सृष्टी तेरी नज़री आईआ। तेरा लहिणा देणा सदा जुग चार, अवतार गुर तेरी सेव कमाईआ। तेरे नाम दा बोल जैकार, कलमा तेरा ढोला सुणाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी लख चुरासी तेरी धार, निराकार खेल कराईआ। कलयुग अन्तिम पा सार, साहिब स्वामी हो सहाईआ। भगत सुहेले जगत उठाल, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। गुरमुख बणा आपणे लाल, लालन आपणी गोद टिकाईआ। गुरसिखां लख चुरासी विच्चों कर बहाल, आवण जावण रहे ना राईआ। सचखण्ड दुआर बख्श सच्ची धर्मसाल, जित्थे हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१०१० २०

किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड दवारा इक्को नज़री आईआ। सचखण्ड दवारा तेरा एक, एकँकार तेरी वड्याईआ। जित्थे त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन भगतां मिले टेक, सन्तां होएं सहाईआ। आपणी धार आपे पेख, निज नेत्र लोचण नैण मिलाईआ। पीआ प्रीतम हो के करें हेत, पारब्रह्म आपणी गोद उठाईआ। जुग विछड़यां जग जन भगतां लै जा आपणे देश, बेवतनां आपणे वतन पुचाईआ। जित्थे सदा रहें हमेश, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे करन आदेस, सजदयां विच सीस झुकाईआ। दो जहानां इक्क नरेश, नर नरायण नज़री आईआ। तेरा शब्दी सुत दुलारा दस दस्मेश, गोबिन्द गुर गुर इक्को नाउँ धराईआ। चार वरन अठारां बरन जिस ने तेरी करने भेंट, भेंटा तेरा नाउँ रखाईआ। धर्म दुआर दा बण के खेवट खेट, नईआ नौका इक्को नाम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सेव कमाईआ।

★ पहली पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सतिगुर शब्द कहे मैं खोल्ह के वेखां परदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दिती माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारे भेव खुल्हावां अगम्मी घर दा, गृह मन्दिर अंदर ओहला रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी जित्थे जोत अगम्मी धरदा, निरवैर निराकार निरँकार करे रुशनाईआ। सच दुआर एकँकार अकल कलधारी आपे खड़दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा अगम्म अथाही ढोला पढ़दा, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करदा, करनी दा करता वड वड्याईआ। ना जीवत ना कदे मर्दा, सद एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क समझाईआ। सच दवारा दस्से एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दी टेक, पुरख अबिनाशी इक्क समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां देवे सच संदेश, सद्दा होका नाम दृढ़ाईआ। निराकार करदा आया वेस, अवल्लड़ी खेल खिलाईआ। अन्तिम बहि के सचखण्ड देस, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। शब्द संदेसा दे के विष्न ब्रह्मा शिव महेष, महिखासुर अक्ख खुल्हाईआ। धुर दा दाता इक्क नरेश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जो आदि जुगादि सब दा जाणे लेख, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। जिस दा संदेसा दे के गया दस दस्मेस, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। सच

सुनेहड़ा देवे एका मीत, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दी समझे कोए ना रीत, राती रुत्ती थित वार भेव ना कोए खुल्हाईआ। जो धुर दा कलमा दस्से हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे सब दे सीस, जगदीस दाता धुरदरगाहीआ। उह लेखा जाणे हस्त कीट, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिस दा लहिणा बीस बीस, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क उपजाईआ। धुर फ़रमाना देवे आप, हरि करता बेपरवाहीआ। सति सतिवादी एका जाप, बिन रसना जेहवा करे पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द खोल्ह के ताक, त्रिलोकी सलोक इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे झाक, बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। की खेल करे पुरख अबिनाश, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण जोत होवे प्रकाश, पारब्रह्म नूर रुशनाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदे आए धरवास, धीरज धर्म इक्क समझाईआ। सो खेल करे वेखे जगत तमाश, परदा ओहला निरगुण सरगुण आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्क इकल्ला आप सुणाईआ। सच संदेसा देवे सचखण्ड निवासी, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेखणहारा मण्डल रासी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण परदा आप चुकाईआ। साची वार लेखे लावे अगम्मी राती, रुत्त आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी करे हो निर्मोह, मुहब्बत कूड़ ना कोए रखाईआ। नव नौ चार पिच्छो सुत्ते उठ दुलारे पोह, सुदी वदी गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा करनी लो, लोचण भगतां इक्क खुल्हाईआ। चार वरन अठारां बरन रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आत्म परमात्म सके कोई ना छोह, जगदीशर मिल के जगत मिले ना कोए वड्याईआ। बिन हरि दूजा नज़र ना आवे को, काग कूक कूक सुणाईआ। बिन प्रभ किरपा शब्द सुणाए कोई ना सोहँ सो, सुरती शब्दी सुरत ना कोए समाईआ। दुरमति मैल सके कोए ना धो, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। अमृत रस अगम्मा इक्को चो, चार कुण्ट वड्याईआ। पंच विकार रहे ना गरोह, काया गोर घोर दे मिटाईआ। आत्म परमात्म नहीं दो, दूआ एके विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पोह कहे मेरे निरँकार, सो पुरख निरँजण सीस निवाईआ। मेरे विच दु:ख नहीं कोई तुखार, हरि पुरख निरँजण तेरी इक्क सरनाईआ। मैं दर दरवेश खड़ा भिखार, एकँकार तेरी ओट तकाईआ। तूं देवणहार दातार, आदि निरँजण बेपरवाहीआ। मैं रोवां धाहां मार, अबिनाशी करते सुण दुहाईआ। मैनूं मिले ना कोए सहार, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। चार कुण्ट भज्जां वारो वार, पारब्रह्म तेरी

ओट रखाईआ। ब्रह्म दिसे ना कोए उज्यार, लोचन नैण ना कोए तकाईआ। सृष्टी दृष्टी धूआँधार, कूड़ी क्रिया घर घर डेरा लाईआ। मैं रोवां उच्ची कूक पुकार, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। पुरख अकाले परवरदिगार, सांझे यार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। पोह कहे मैं रोवां उच्ची मारां धाह, दो जहानां इक्क सुणाईआ। प्रभ मेरे बेपरवाह, तेरी बेपरवाही सब नूं रही सताईआ। चार कुण्ट दिसे ना कोए मलाह, ग़फ़लत विच लोकाईआ। साचा मार्ग सारे गए भुला, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जेहड़े कलमे आयों जपा, रट्टे नाम वाले समझाईआ। किसे नज़र ना आएं खुदा, खुदी तकब्बरी डेरा लाईआ। इक्क वारी नैण उठा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। पोह कहे मैं रो के दस्सां हालत, हरि जू इक्क दृढ़ाईआ। सृष्टी कूड़ दिसे जहालत, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। धर्म रिहा ना कोए अदालत, हुक्म हक ना कोए कमाईआ। साचा नाम लुट्टी गई नयामत, ख़ाली कूड़ लोकाईआ। मनुआ मन कर बग़ावत, घर घर करे लड़ाईआ। दिसे कोए ना सही सलामत, जो मंज़ल चढ़ के तेरा दर्शन पाईआ। सब नूं ममता कीती ममानत, पंच विकार हल्काईआ। आपणी सांभ इक्क अमानत, आत्म तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१०१२

२०

आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। पोह कहे मैं रो रो दस्सां, दहि दिशा शनवाईआ। प्रभू वेख आपणीआं अक्खां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जीव जहान रिहा कोई ना सच्चा, सति विच ना कोए समाईआ। सब दा काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े कोई ना पक्का, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। अन्तिम किहड़ी कूटे नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। सिर तेरे कदमां सट्टां, मस्तक धूढ़ रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल कहे सुण बच्चे मेरे नादान, नव नौ चार दयां वड्याईआ। धुर दा हुक्म इक्क फ़रमान, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। चार कुण्ट फिरे दो जहान, ख़ाली दिशा ना कोए वखाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर दे के आए ब्यान, ब्याना मेरा नाम धराईआ। शब्दी करां अन्त पहचान, लख चुरासी फोल फुलाईआ। मेरा करतब इक्क महान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पंज तत नहीं इन्सान, तत वजूद ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म बण के काहन, लख चुरासी गोपी वेख वखाईआ। सईआ बण के धुर दा राम, रमता रमता परदा लाहीआ। जिस नूं मुहम्मद करे सलाम, ईसा मूसा सीस झुकाईआ। सच संदेसा दे कलाम, कलमा कायनात सुणाईआ। हक हकीकत दा अमाम, इक्को नूरी नज़री आईआ। अन्त अख़ीरी दए जाम, मेहरवान महबूब बेपरवाहीआ।

कलयुग कूड़ी क्रिया मेट जगत निशान, निशाना इक्को दए झुलाईआ। दो जहानां कर इंतज़ाम, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सुण पोह लाडले बच्चे, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन बणावां सके, दुतीआ भाउ जगत मिटाईआ। नाम डोरी बन्न्हां रस्से, रिश्ता इक्को इक्क प्रगटाईआ। सब दे अन्तर हो के वसे, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। तीर अणयाला धुर दा कसे, मुक्खी आपणी आप प्रगटाईआ। सिफ्तां बाहर सुणा के जसे, वेद पुराणां बाहर पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरे कर के पट्टे, पटने वाला नाल मिलाईआ। जिस ने खेल करना निरगुण धार हो के नट्ठे, कदमां नाल ना पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दे मेट के रट्टे, रट्टा इक्को घर जणाईआ। वेखणे खेल दीगरे बाद यके, यक हुक्म इक्क सुणाईआ। सब दे अन्तर जाणे फट्टे, साबत रहिण कोए ना पाईआ। कोई जाण ना सके चूंकि चुनांचे अलबत्ते, आहला अदना हुक्म मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर एसे कारण सद्दे, शब्दी शब्द जणाईआ। सच दवारे आए भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। बिन काअब्यों कर के हज्जे, सजदा सीस झुकाईआ। डण्डावत विच डिग्गे, नमों नमों सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। पोह सुण शब्द अगम्म हकीकी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। खेल करे लाशरीकी, वाहिद इक्को नूर रुशनाईआ। जिस दे कोल अगम्म तौफ़ीकी, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। लख चुरासी बदल के नीती, परदा अंदरों दए खुल्हाईआ। सति धर्म दी दस्स के रीती, रहिबर हो के दए समझाईआ। कथा कहाणी चार जुग दी पिच्छे बीती, बातन सब दा फोल फुलाईआ। अग्गे निरगुण धार हो नज़दीकी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। सुण पोह ओह वेख चार जुग दे आए लाड़े, गुर अवतार पैगम्बर सोभा पाईआ। दर दरबार खड़्हे इक्क अखाड़े, आख़र नूर समाईआ। जिन्हां खेल कीते जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाहीआ। गोबिन्द बोल के अन्त जैकारे, डंका फ़तहि इक्क सुणाईआ। आपणे वार के चार दुलारे, धर्म दी धार इक्क प्रगटाईआ। उच्ची कूक विच संसारे, शब्दी राग अल्हाईआ। कल कल्की लए अवतारे, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस दा खेल सदा जुग चारे, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। उह लहिणे देणे सब दे पूरे करे कौल इकरारे, इक्क इकल्ला धुरदरगाहीआ। जिस दी महिमा अंदर जगत शब्द उच्चारे, रसना नाल सालाहीआ। उह साहिब सच्ची सरकारे, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। जिस दा दूत जाए ना कदी किसे दरबारे, दूजे ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर हिरदा वेख वखाईआ। पोह वेख गुर अवतार पैगम्बर झुके, सीस जगदीस

निवाईआ। आलस विच मूल ना सुत्ते, निंद्रा नैण ना कोए टिकाईआ। इक्को सुहावण साची रुत्ते, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुते, हरि वड्डा वड वड्याईआ। शब्दी धार अंदर पुछे, संदेसा इक्को इक्क सुणाईआ। क्यों लोकमात हो गए गुस्से, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। जेहड़ा गाना बध्धा गुट्टे, गहर गम्भीर दयो वखाईआ। क्यों नाते मात टुट्टे, तुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। दीन मज़्ब रहे ना सुच्चे, संजम समझ किसे ना आईआ। मन वासना हो के भुक्खे, कलयुग जीव भज्जण वाहो दाहीआ। मात गर्भ लटक के पुट्ठे, अग्नी अग्ग तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त अखीर रिहा सुणाईआ। अन्त अखीर कहे प्रभ एका, एका वार जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणावो सच संदेसा, संध्या नज़र कोए ना आईआ। की करनी की शब्दी धार पेशा, की पेशतर आए समझाईआ। उच्ची कूक किहा शब्दी धार सतिगुर दस्मेशा, गुर सतिगुरू तेरी सरनाईआ। आपणा वेख अगम्मी लेखा, जिस दी लिख्त ना किसे पढ़ाईआ। सदी बीसवीं सब दा पूरा होया ठेका, अग्गे रहे ना कोए चतुराईआ। जिस वेले सुत दुलारे कीते भेंटा, मात पिता रिहा ना माईआ। इक्को बण के तेरा बेटा, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। तूं खेल अगम्मी खेडा, हरि करता हो के दिती वखाईआ।
१०१४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे मैं शब्दी सुत, दुलारा तेरा नज़री १०१४
आईआ। कलयुग वेख आपणी रुत्त, दहि दिशा फोल फुलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले क्यों सच दवारे बैठां लुक, दरगाह
२० साची भेव छुपाईआ। ग़रीब निमाणयां जा के पुछ, जो तेरा ध्यान रखाईआ। बिन तेरी किरपा हरि भगती बूटा जाए सुक्क, २०
हरया सिंच ना कोए कराईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार जेहड़ी मैनूं सत्थर उत्ते पए सुणाई तुक, सो ढोला बण विचोला दे दृढ़ाईआ। मैं तेरे दवारे गया पुज्ज, तूं भेव खोल्हणा गुज्झ, रमज़ इशारा इक्क सुणाईआ। मैं वेखां तेरा मुख, घर स्वामी देणा सुख, तेरे दर ते वज्जे वधाईआ। उह वेला गया ढुक, गुर अवतार पैगम्बरां पैंडा गया मुक, मैं आउणा किसे नहीं कुक्ख, गुजरी मात ना फेर बणाईआ। अग्गे रह ना सकां चुप्प, कलयुग वेख अन्धेरा घुप, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। गोबिन्द कहे मेरे प्रभू साहिब सच्चे सुल्तान, सति दयां सुणाईआ। मैं योद्धा सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दाना इक्क अख्वाईआ। गोपीआं दा काहन, नाम बंसरी तेरा राग अल्हाईआ। मैं आदी तेरा जुगादी तेरा ब्रह्मादी तेरा देवां पैग़ाम, संदेसा इक्क सुणाईआ। बण के चरण कँवल गुलाम, रखां इक्क ईमान, सिदक सबूरी तेरे नाल हंढाहीआ। तेरा झुलदा वेखां निशान, खेल होवे दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

दे दे साचा वर, अन्तश्करन वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ तेरा सुत दुलारा, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। तेरा मेरा सच बिवहारा, जगत धार ना कोए वड्याईआ। दोहां दा सांझा इक्क किनारा, पतण वण्ड ना कोए वखाईआ। उठ वेख आपणा संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चले कोई ना चारा, चारे बाणी चारे खाणी रही कुरलाईआ। कूड़ी क्रिया बणया अखाड़ा, पंज तत मनुआ नाच नचाईआ। साचा रिहा ना कोए दवारा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरा लहिणा देणा अन्तिम वारा, सारे आए सुणाईआ। कल कल्की इक्क अवतारा, निहकलंक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुछ परदा दे उठाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे साचे दूल्हे, धुर फ़रमान दयां सुणाईआ। पुरख अकाल कदी ना भूले, अभुल्ल बेपरवाहीआ। सब दा लहिणा देणा असल चुकावां नाल असूले, असलीअत इक्क समझाईआ। धुर दा हुक्म मिले माअकूले, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। प्रगट हो के कन्त कन्तूहले, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जो मुहम्मद किहा रसूले, रसम उस दी वेख वखाईआ। एका धार कातिल मक्तूले, मकबरे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ।
१०१५ गोबिन्द पुच्छ लैण दे कोलों गुरू अवतार, पैगम्बरां अन्त सुणाईआ। कवण मित्र तुहाडा यार, लोकमात दयो समझाईआ। १०१५
जो मंज़ल चढ़े दुष्वार, पैंडा हक मुकाईआ। मिल के निर्मल धार, जोती जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
२० आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो अन्तिम दस्सो बाकी, आख़र इक्क जणाईआ। की २०
माण वेख्या बन्दा ख़ाकी, ख़ालस खोज खुजाईआ। किस दी खुल्ही ताकी, परदा रिहा उठाईआ। किस दे बणे साथी, प्रभ नूं दयो जणाईआ। किस ने मन्नी तुहाडी आखी, आख़र मिल के वज्जी वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू सब ने करी गुस्ताख़ी, गुस्से विच दुहाईआ। सुरती शब्द किसे ना वाची, वाचक करदे रसना वाली पढ़ाईआ। रूह बुत्त होया ना पाकी, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। थोड़े गुरमुख जेहड़े गोबिन्द प्रगटाए उपर वसाखी, इक्क सत्त पंज छे नाल वड्याईआ। जिन्हां दा पुरख अकाल मालक इक्क अबिनाशी, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। सब दी पूरी करे आसी, तृष्ना कूड़ गवाईआ। मंज़ल आपणी चाढ़ के घाटी, जोती जोत जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क समझाईआ। समझो खेल इक्को धुर दा, हरि करता आप सुणाईआ। याद रखे विछोड़ा अनन्द पुर दा, पुरीआं लोआं समझ किसे ना आईआ। एह खेल नहीं ताकत ज़ोर दा, ज़र्रा ज़र्रा विच्चों प्रगटाईआ। जो भगत सुहेले साचे लोड़दा, गुरमुख गुरसिख गुर गुर गोद टिकाईआ। उह झगड़ा जाणे अन्ध घोर दा, कलयुग वेखे कूड़ लोकाईआ।

पुरख अकाल दीन दयाल सृष्टी विच वेस धरया अगम्मे चोर दा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ। आओ वेखो खेल अगम्मा, हरि करता आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो करयो कोई ना तमअ, शब्द संदेशा इक्क सुणाईआ। सब दा समाप्त होणा समां, सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। तुहानूं मुड़ के जम्मे कोई ना अम्मां, अम्मढ़ी वाला गुरू ना कोए अख्वाईआ। प्रभ दा खेल होणा इक्क नवां, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दए गवाहीआ। झगड़ा मुका के माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। शब्दी धार कर के रवां, रहमत इक्को इक्क कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। धुर दा हुक्म सुणो फ़रमाना, फ़ुरनयां बन्द कराईआ। जिस दा मन्नदे रहे भाणा, सीस जगदीस झुकाईआ। तख्त निवासी इक्को राणा, हरि करता धुरदरगाहीआ। नूर खुदाई बण जरवाणा, जल्वागर करे रुशनाईआ। जिस नूं झुकदे दो जहानां, सब दे पैंडे पन्ध मुकाईआ। जिस दा पिछले सम्मत खाधा खाणा, जन भगतां मिल के वज्जी वधाईआ। अग्गे उस दा नाम ध्याणा, राम कृष्न ना कोए अख्वाईआ। इक्को कलमा धुर दा गाणा, इक्को हक पढ़ाईआ। इक्को मन्दिर सच मकाना, जित्थे वसे
१०१६ धुरदरगाहीआ। सब दा बदल जाणा ज़माना, ज़बान सब दी बन्द कराईआ। चमके नूर श्री भगवाना, नूर नूर नूर रुशनाईआ। १०१६
दो जहानां होवे दाना, दाता दानी आप हो जाईआ। लख चुरासी बण के कान्हा, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती
२० जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार बदल विधाना, हुक्म आपणा इक्क सुणाईआ। निरगुण धार बदले २०
विधान, तरमीम सब दी दए कराईआ। पैगम्बरो अन्त करो सलाम, सजदा सीस निवाईआ। अवतारां मन्जूर होवे प्रणाम, मस्तक धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। गुरुआं दे हकीकी जाम, अमृत नाम प्याईआ। सांझा इक्क मकान, मुकामे हक सुहाईआ। धुर दा इक्क अस्थान, थिर घर दए वखाईआ। शब्दी सुत बलवान, सहिजे दए उठाईआ। उठ नौजवान, गोबिन्द रूप प्रगटाईआ। लोकमात हो प्रधान, पंचम वज्जे वधाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, झगड़ा रहे ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सच दे ज्ञान, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। ममता मोह तोड़ अभिमान, हउमे हंगता रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण थिर घर उठे सतिगुर शब्द, वड्डा वड वड्याईआ। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़्हब, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि सब तों कराउँदा रिहा अदब, इन्साफ़ विच वड्याईआ। चल्ले कदी किसे ना कदम, मंज़ल दो जहानां पन्ध मुकाईआ। तत शरीर ना दिसे बदन, बदली सब दी दए कराईआ। सच दवारे कर के अदल, आदत पिछली दए बदलाईआ। ढोला इक्को

गाउणा निरगुण धार निरगुण नज़म, नाम निधान शनवाईआ। बाकी सब नूं कर के भस्म, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। आत्म परमात्म आदि जुगादी कसम, किस्म सके ना कोए बदलाईआ। जन भगतो छब्बी पोह नूं कर के रसम, रस्ता सब नूं देणा जणाईआ। बिना प्रभ दे चरणां बाहर कोई ना वसण, वसदे घर देणे उजड़ाईआ। शाह सुल्तान उठ उठ नठ्ठण, भज्जण वाहो दाहीआ। सच सरनाई इक्क दी लग्गण, जो मालक धुरदरगाहीआ। करे खेल सूरा सरबंगण, हरि करता बेपरवाहीआ। जगत प्रधानां फिरना नग्न, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सब दी डोरी लग्गा कटण, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। तत्तां वालयां गुरुआं नालों शब्द गुरू लग्गा वट्टण, वट्टा समझ किसे ना आईआ। गोबिन्द अन्तिम खोल्ह के गले दा बटन, पुरख अकाल अग्गे अलिफ़ी दिती टिकाईआ। मैं जद वसां ते वसां तेरे पतण, दूजे दर कदे ना जाईआ। जे आवां ते गुरमुखां सदा रखण, लोकमात दूजा खेल ना कोए कराईआ। रसना दा स्वाद कदे आवां ना चक्खण, बिन प्रेम प्रीती वस्त कोए ना भाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आवां टप्पण, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। शब्द निराला अणयाला तीर आवां कसण, चिल्ला कमान दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लै मिलाईआ। पोह कहे प्रभू मैं तेरे दर ते डिग्गा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। निमाणा हो के बिन कीमतों, विका, जगत कीमत ना कोए रखाईआ। किरपा निधान स्वामी ठाकर धुर दे कूड़ी क्रिया बदल के सिक्का, साकत रहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी बण के पिता, पतिपरमेश्वर क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तेरा सब दे नाल सांझा हिस्सा, मज़्हबां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अग्गे मैं दीनां मज़्हबां वाला सुणना नहीं कोई किस्सा, कहाणी गा ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक सब दी पूरी कर दे इच्छा, निरिच्छत आपणी दया कमाईआ। छब्बी पोह नूं बाकी पा के भिच्छा, पूरा लेखा दे मुकाईआ। अगला खेल होवे अनडिठ्ठा, शास्त्र सिमरत समझ कोए ना आईआ। दीन दयाल आपणा ओह वखावीं अगम्मी चिठ्ठा, जिस विच्चों गुर अवतार पैगम्बरां हुक्म सदा सुणाईआ। जेहड़ा कलम शाही नाल कदे नहीं लिखा, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच बेनन्ती दर तेरे इक्क सुणाईआ। पोह कहे मैं करां मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभ वेख आपणी सिम्मत, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। साची रही किसे ना हिम्मत, आपणा बल ना कोए धराईआ। दुनियादार होए हराम निमक, हक हलाल ना कोए जणाईआ। तेरा नूर नजर ना आए किनक, ख़ाली बुत्त देण दुहाईआ। जिधर वेखां ओधर मन करे इल्लत, नारी पुरख सर्ब दुहाईआ। बिन शब्दी गोबिन्द देवे कोई ना ख़िल्लत, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। वरन बरन होई ज़िल्लत, माया ममता मोह हल्काईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणी दया कमाईआ। पोह कहे मैं रो रो गया थक्क, थकावट विच दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए अक्क, चार जुग ध्यान लगाईआ। लिख लिख आए दस्स, भविख्तां विच समझाईआ। पुरख अबिनाशी होवे प्रगट, हरि करता बेपरवाहीआ। सति धर्म दा खोल्हे हट्ट, इक्को नाम वरताईआ। झगड़ा मुका दए तीर्थ तट, अठ्ठ सठ्ठ ना कोए वड्याईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मारे दोहथ्थड़ उत्ते पट्ट, पटने वाला पल्लू गया छुडाईआ। अंदरों खुल्ल्हे किसे ना अक्ख, प्रतख दरस कोए ना पाईआ। त्रैगुण अग्नी रहे मच्च, तत्व तत जलाईआ। मनुआ मन रिहा नच्च, घूँगट घोर ना कोए उठाईआ। साचा मिले किसे ना रस, रस्ता पार ना कोए लँघाईआ। अन्तिम सब दी हो गई बस्स, कंधे भार ना कोए टिकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, तेरा नाम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे साचा हुक्म दृढ़ावांगा। खेल अगम्मी इक्क करावांगा। असमान ज़िमीं वेख वखावांगा। जेहड़ी धार किसे ना जम्मी, उह आपणी कल प्रगटावांगा। लेखा जाणा माटी चम्मी, चारों कुण्ट फोल फुलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हावांगा। साचा भेव प्रभू खुल्हावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। सचखण्ड दुआर इक्क सुहावेगा। एकँकारा वेस वटावेगा। जोत उज्यारा आप चमकावेगा। गुर अवतार पैगम्बर साथ रलावेगा। निरगुण सरगुण वेख वखावेगा। देस प्रदेश फेरा पावेगा। नर नरेश हुक्म चलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। सच करनी कार कमावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। देवत सुर नाल मिलावांगा। गण गंधर्ब फोल फुलावांगा। लख चुरासी डेरा ढाहवांगा। अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज इक्को हुक्म सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखावांगा। साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटाएगा। मूर्ख मूढ़ी भेव खुल्हाएगा। नाद तूरी इक्क उपजाएगा। जोत नूरी इक्क रुशनाएगा। हाज़र हज़ूरी दरस दिखाएगा। जन भगतां मजबूरी आप कटाएगा। सब दी फूड़ी वलेट वखाएगा। गुरमुखां दे के चरण धूढ़ी, टिक्का मस्तक नाम रमाएगा। रंगत चाढ़ के इक्को गूढ़ी, गुर मन्दिर इक्क वखाएगा। जित्थे आसा मनसा होवे पूरी, तृष्ना जगत ना कोए जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक्क इकल्ला आप प्रगटाएगा। सच दुआर इक्क प्रगटावांगा। निरगुण हो के खेल खिलावांगा। सरगुण आपणा रंग रंगावांगा। जुग चौकड़ी पन्ध मुकावांगा। सतिजुग साचा राह चलावांगा। राउ रंक आप उठावांगा। दुआर बंक इक्क सुहावांगा। नाम डंक इक्क वजावांगा। जीव जंत शंक पूर

करावांगा। गुरमुख बंस आप बणावांगा। कलयुग कूड़ा कंस मेट मिटावांगा। निरगुण धार जोत अनन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखावांगा। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द जणा मंत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। भगत सुहेले बणा के सन्त, सति धर्म दा राह चलावांगा। अबिनाशी करता इक्को कन्त, घर स्वामी जोड़ जुड़ावांगा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे पोह तैनूं समझावांगा। साचे पोह सुण लै अगम्मी बात, बातन दयां जणाईआ। वेख आपणी रात, रुतड़ी नाल मिलाईआ। पुरख अकाला वेखे आपणी जात, अजाती दए खपाईआ। निरगुण धार खोल्ह के ताक, परदा रिहा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर के वाक, वाकिफ़कार आपणे लए बणाईआ। सब दा सांझा कर के साक, नाता इक्को घर जुड़ाईआ। शब्द संदेसा धुर दा आख, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। परम पुरख दी जो दे के आए दात, जुग चौकड़ी लोकमात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सुण हुक्म पोह महीना, दिवस दिवस जणाईआ। करे खेल नवां नवीना, नव रंग आप चढ़ाईआ। प्रगट हो के दाना बीना, बीना दाना भेव खुल्हाईआ। जन भगतां ठांडा कर के सीना, अग्नी तत बुझाईआ। झगड़ा पए उत्ते ज़मीना, ज़ामन समझ किसे ना आईआ। शब्द इशारा दए चीना, हरि करता धुरदरगाहीआ। सब नूं होणा पए ग़मगीना, ग़मी खुशी ना कोए बदलाईआ। झगड़ा दिसे नर मदीना, आत्म परमात्म परदा ना कोए लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक्क सरनाईआ। पोह महीने सोए जाग, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। धुर संदेसा सुण राग, हरि करता आप जणाईआ। कूड़ी क्रिया जगत त्याग, ममता मोह मिटाईआ। तेरे अन्तर उपजे इक्क वैराग, वैरी अंदरों दए भजाईआ। एकँकारा बख्शे साथ, सगला संग निभाईआ। जिस ने सुणाउणी सच्ची गाथ, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। जगत जहान चलाए राथ, महासार्थी वेस वटाईआ। हाण्डी रहे कोई ना काठ, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। बिना पुरख अकाल दे नाम तों दूजा रहे कोई ना पाठ, पूजा इक्को सर्ब लोकाईआ। हरि चरण कँवल सरनाई सच्चा ताट, किनारा धुरदरगाहीआ। मंज़ल सब दी मुक्के वाट, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। सतिजुग साची मिले दात, हरि करता आप वरताईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को करे जमात, इक्को सिख्या सिख समझाईआ। आत्म परमात्म होवे विश्वास, विषयां दा डेरा ढाहीआ। घर स्वामी मिले अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। सुरती शब्द मिल के गोपी काहन पावण रास, सोहणा नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क जणाईआ। साचा मार्ग धुर दा लैणा सिख, सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। पुरख अकाला पए दिस, दहि दिशा नूर इलाहीआ। स्वामी सतिगुर

१०२०
२०

होवे पित, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म दस्से साचा हित, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। मन ठगौरी करे ना चित, चंचल नज़र कोए ना आईआ। मानस जन्म जन भगत लैण यित, जिन्हां मिली इक्क सरनाईआ। पुरख अकाला करवट विच बदल के पिठ, सनमुख हो के दरस वखाईआ। मंज़ल चढ़नी पए ना सवा गिठ, दरस दवारी तों अग्गे आपणी यारी लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पोह तेरी आसा वेख वखाईआ। पोह कहे मैं आसावंद, हरि करते दयां सुणाईआ। तेरे शब्द हुक्म दा हो पाबन्द, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सिफ्तां गावां बिना दन्द, ढोला धुरदरगाहीआ। सद माणां तेरा अनन्द, खुशीआं विच समाईआ। तेरे नूर दा वेख के चन्द, चन्द सूर्या कम्म किसे ना आईआ। तेरा खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। माया ममता मोह विकार दे डण्ड, डण्डौत आपणी दे समझाईआ। प्रभू तूं केहड़ा खण्डे कटारां नाल करना जंग, मति उलटी कर कूड़ लोकाईआ। इक्क दूजे नूं आपे देवण डण्ड, तूं खेल वेखीं बेपरवाहीआ। उह रह जावण तेरे जेहड़े गावण तूं मेरा मैं तेरा ढोला छन्द, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे की कथा कहाणी पुछो धुर दी, सब नूं दयां सुणाईआ। कुछ खेल वेखो अनन्द पुर दी, पुरीआं तों बाहर जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द धार प्रभ दे नाल जुड़दी, जोड़ी बणे धुरदरगाहीआ। आपणी करनी करनों कदे ना मुड़दी, करतब आपणा दए वखाईआ। जन भगतो अग्गे लोड़ रहिणी नहीं किसे गुर दी, पुरख अकाल सब ने लैणा मनाईआ। वड्याई रहे ना देवत सुर दी, सब दा लेखा दए चुकाईआ। कलयुग काया कूड़ जांदी खुरदी, खुरा खोज दए मिटाईआ। सतिगुर शब्द शरीणी वण्डे कदे ना गुड़ दी, रस मिठ्ठा आपणा नाम चखाईआ। वेख्यो खेल कलयुग सतिजुग कूड़ धर्म दे पुड़ दी, प्रभ चक्की मात चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए वखाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मैं की कुछ सुणदा, बिन कन्नां रिहा जणाईआ। कुछ खेल वेखणा हुण दा, महीना एहो नज़री आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लख चुरासी पुणदा, छाण बीण करे लोकाईआ। खेल होणा दीपक गुल दा, जगत नूर ना कोए चमकाईआ। कलयुग कपट वेखणा रुलदा, हंगता हँ लड़ाईआ। जन भगतो सतिगुरू कदे किसे कीमत नहीं मुल्ल दा, हट्टां विच ना कदे विकाईआ। स्वाद माणे कदे ना बुल्ह दा, अन्तर आत्म रस चखाईआ। जो प्रभ प्रीती चरण घोली घुलदा, घोली घोल घुमाईआ। उह प्यारा बणे मालक सुल्हकुल दा, कुल्ल मालक इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल सदा अमुल्ल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी खेल वखाईआ।

पोह कहे प्रभ तेरा नूर अगम्मा रब्बी, रब्बीउल अया दे जणाईआ। मुहम्मद दी वेख चौधवीं सदी, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। क्यों छड्डदे जांदे गुर अवतार पैगम्बर गद्दी, गदागर तेरे दर ते नज़री आईआ। की धार तेरी अगम्मी जोत जगी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जगत वासना फिरे भज्जी, चार कुण्ट दुहाईआ। तेरा आउणा कदी कदी, जन भगतां होएं सहाईआ। तेरी समझे कोए ना सुदी वदी, थित वार ना वण्ड वण्डाईआ। कुछ लेखा लिख के गया गोबिन्द गोदावरी नदी, नदीआं दे विछड़े लए मिलाईआ। जिन्हां दे अंदर पढ़ावे पट्टी, पटने वाला जोड़ जुड़ाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले खट्टणी खट्टी, बाकी खटका जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। साचा रंग रंग दे प्रभ ठाकर, पोह प्रणाम कर सुणाईआ। साचे भगतां कर उजागर, उजरत मूल ना लागे राईआ। तेरे नाम दे बणन सौदागर, हट्ट इक्को इक्क वखाईआ। तूं करीम करता कुदरत दा कादर, कदीम दा मालक इक्क अख्वाईआ। हउँ बरदा तेरा आजज़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे साज़श, ममता मोह रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा खेल वखा दे इक्को, इक्क तेरी वड्याईआ। पुरख अकाल तूं आवें कित्थों, एहो देणा समझाईआ। हउँ वारी चरण कँवल विटहुं, कुरबान हो के भेंट चढ़ाईआ। की हुक्म संदेसा बिन अक्खरां लिखो, लेख देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। पोह सुण आपणे आउण दा दस्सां तरीका, तरहां तरहां समझाईआ। लेखा जाणा जीव जीअ का, लख चुरासी विच समाईआ। मेरा रूप नीकन नीका, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जो करदे सच प्रीतां, प्रीतम हो के रहे मनाईआ। ओन्हां दी आसा मनसा वेख उडीका, निरगुण हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मेरीआं लिखीआं ना किसे तारीखां, परदा सक्या ना कोए फुलाईआ। सब दीआं बदलदा रिहा तवारीखां, हुक्म विच शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता वेख वखाईआ। आपणा भेव खुल्हावां वसां किहड़े थाँ, थनंतर इक्क दृढ़ाईआ। जित्थे गावे कोई ना मेरा नाँ, रसना जेहवा समझ कोए ना पाईआ। ना कोई गुरू ना गराँ, खेड़ा जगत ना कोए वसाईआ। ना कोई चन्न सूर्या रुशना, मण्डल मण्डप ना कोए दसाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई पंज तत सुहाईआ। जिस वेले चाहां निरगुण धार हो के भगतां अंदर जावां आ, भूमका धुर दी नज़री आईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के निरगुण धार हो के पकड़ां बांह, सगला संग निभाईआ। जुग चौकड़ी करां न्याँ, नौबत हक आपणा नाम सुणाईआ। भगत दवारा प्रभ दा ग़रां, दूजा खेड़ा ना कोए सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन वाह वाह, वाह वा गुरू तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साचा खेल आप दरसाईआ। साचा खेल दस्सां अपार, अपरम्पर हो के आप दृढ़ाईआ। होणा इक्क विहार, बिवहारी हो के लोकमात समझाईआ। निरगुण नूर जोत कर चमत्कार, ईसा मूसा मुहम्मद लए उठाईआ। तेई अवतारां कर के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। नानक गोबिन्द बोल जैकार, डंका इक्को इक्क वजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड निरगुण हो के पावां सार, सरगुण वेखां चाँईं चाँईंआ। होवे खेल विच संसार, संसारी भण्डारी नाल रलाईआ। निरगुण दीआ बाती कमलापाती जोती जाता हो उज्यार, निरगुण नूर ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। वही खाता खोल्ह सब दा वेखे वारो वार, राए धर्म चित्रगुप्त समझ कोए ना आईआ। लेखा जाणे धुरदरबार, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठण सीस निवाईआ। जित्थे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान नहीं कोई उज्यार, खाणी बाणी ढोले गीत राग नाद ना कोए सुणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार करे खेल आपणी धार, नित नवित वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी हो उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। निरगुण वेस वटाए अवल्ला, अवल्लड़ी कार कमाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, अकल कलधारी फेरा पाईआ। वेखणहारा जलां थलां, महीअल आपे खोज खुजाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, लोकमात भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दूई द्वैती मेटे सल्ला, सलल आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोती धार फड़ा के पल्ला, शब्दी आपणी गंढु पवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को हुक्म बोल के हल्ला, हालत सब दी दए बदलाईआ। जेहड़े कहिंदे इलाही नूर अल्ल्हा, आलम विच इलम नाल सुणाईआ। ओनां शब्द संदेस घल्ला, सम्मत सम्मती दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। पोह कहे मेरी आसा मनसा पूर, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। तूं आदि जुगादि वसें दूर, नेरन नेरा हो के पन्ध मुकाईआ। चार कुण्ट बणया रिहा मफ़रूर, फड़यां हथ्थ किसे ना आईआ। कोटन कोटि तेरे मज़दूर, चाकर हो के सेव कमाईआ। तूं मन दा पा के फ़तूर, फ़तवा सब दे उपर लगाईआ। बुद्धी दा दस्स कसूर, विद्यावान दित्ते रुलाईआ। मति नूं कर मजबूर, भरम विच भुलाईआ। अन्तिम किरपा कर उत्ते मूर्ख मूढ़, पतित पुनीत तेरी सरनाईआ। साची बख़्श चरण धूढ़, दुरमति मैल दे धवाईआ। बिन तेल बाती तेरे दीपक उपजे नूर, नाद धुन शब्द कर शनवाईआ। की रंग वेख्या मूसे उत्ते कोहतूर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। पोह कहे मैं तेरा गोला, चाकर सेव कमाईआ। भगतां अंदरों चुक्क दे ओहला, परदा रहे ना राईआ। बिना ज़बान तों दस्स दे आपणा बोला, अनबोलत राग सुणाईआ।

रंग चाढ़ दे काया माटी चोला, चोजी प्रीतम तेरी वड्याईआ। तैनूं पैगम्बर कहिंदे मौला, मौलया हर घट नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना रौला, रौणक आपणी दे वखाईआ। सब दा पूर इकरार कर दे कौला, कँवल नैण तेरी सरनाईआ। धरनी दा भार कर दे हौला, धवल दए दुहाईआ। सच स्वामी सुणीए सोहला, इक्को राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। पोह थोड़ी रख आस, आसा दयां बंधाईआ। सब दी बुझावां प्यास, तृखा रहे ना राईआ। कर के खेल तमाश, ख़लक खुदाई आप उठाईआ। वेख के मण्डल रास, गोपी काहन जगाईआ। कर के नूर प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। मंज़ल मेट के वाट, पैंडा पन्ध गवाईआ। छड्ड के बिस्तर खाट, निरगुण हो के वेखां थाउँ थाँईंआ। दुरमति मैल देवां काट, अमृत रस चखाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। कलयुग कूड़ी मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। छब्बी पोह नूं दे के दात, परदा अंदरों दयां खुलाईआ। एह पैगम्बरां दा वाक्, अवतारां नाल मिलाईआ। अवतारां दा साक, गुरू गुरदेव समाईआ। सब दी सांझी जमात, अक्खर इक्क पढ़ाईआ। प्रभू ने दस्सणी उह लुगात, जिस दा चार जुग ना भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। पोह कहे प्रभ तेरी किहड़ी लुग़ात, बिन अक्खरां लई बणाईआ। पुरख अकाल कहे जिस विच्चों अवतार पैगम्बरां देवां सुग़ात, गुरुआं नाम पढ़ाईआ। ओहदी ना कोई पट्टी ना जमात, ना कोई लेख लिखण वाली शाहीआ। ना किसे होर नूं दस्सी जाच, हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस वेले चाहां वरतां आप, आपणी कार कमाईआ। एह अगम्म खेल तमाश, अगम्म तों अग्गे होर रखाईआ। जिस घर दा किसे नहीं तक्कया प्रकाश, गुर अवतार पैगम्बर प्रभ दे उत्ते अक्ख ना कोए उठाईआ। एह मज़मून होणा ख़ास, जो गोबिन्द ख़ालस ख़ालसा गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पोह, साचा दस्सणा ओह मज़मून, जिस दा लेख ना कोए बणाईआ। जिस नाल जुग चौकड़ी बदलदे कानून, काइदा कवाइद विच रखाईआ। सारे बणदे ममनून, निउं निउं सीस झुकाईआ। अन्तिम कर के मरहूम, महिरम हो के आपणी खेल खिलाईआ। बच्चे नन्हे माअसूम, जुग जुग सेव लगाईआ। हुक्म दे के ना मालूम, बिन अक्खरां करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा दसाईआ। पोह, मेरा अक्खर अगम्म अनोखा, धुर धाम समझ किसे ना आईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, धूआँधार ना कोए बणाईआ। जुग जुग इक्क नूं देवां मौका, जिस दे अंदर दयां टिकाईआ। बाकी जगत जहान फोका, पढ़ के विद्या झट लँघाईआ। प्रभ का भेव पाउणा नहीं सौखा, लभ्भयां हथ्थ

किसे ना आईआ। ओथे अक्खरां वाला नहीं कोई पोथा, पुस्तक हथ्थ ना कोए टिकाईआ। इक्को नूर जोत जोता, जोती आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कलमा आप छुपाईआ। पोह, उह कलमा केहड़ा, जो अलिफ़ ये दी बणत बणाईआ। जो जुग जुग पावे झेड़ा, झगड़ा जगत लड़ाईआ। वसदा उजाड़े खेड़ा, उजड़े दए वसाईआ। डुब्बदा तारे बेड़ा, तरदयां दए डुबाईआ। सूरज चन्द दे हुंदयां करे अन्धेरा, बिन सूरज चन्द रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भवाए विच गेड़ा, जुग चौकड़ी सेव लगाईआ। हुक्म सुणाए मन्दिर वड़ के नेड़ा, अंदर दए जणाईआ। कवण गोबिन्द कवण चेरा, चेला गुर कवण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा रिहा उठाईआ। पोह, उह अक्खर कोई ना पढ़दा, पढ़यां समझ कोए ना पाईआ। जेहड़ा तन वजूद पा के फेर मर्दा, नाता जगत विच रखाईआ। अग्नी विच सड़दा, गोर विच दबाईआ। उह मंगता प्रभ दे घर दा, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जिस वेले किरपा आपणी करदा, किरन किरन जोत रुशनाईआ। उस दे अंदर आ जाए फिरदा फिरदा, फिरत फिरत आपणा फेरा पाईआ। भेव खुल्हावे पिछला चिर दा, परदा आप उठाईआ। घर वखा के निरवैर निर दा, निराकार करे रुशनाईआ।

१०२४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। पोह कहे प्रभ पढ़ी की कलाम, किस मकतब करें पढ़ाईआ। मज़्हब की इस्लाम, इस्म की समझाईआ। बख्शें की पैग़ाम, हुक्म धुरदरगाहीआ। परवरदिगार कहे उह जाणे इक्क अमाम, अमलां तों रहत नूर खुदाईआ। जेहड़ा सब दा बदल देवे नज़ाम, इंतज़ाम आपणे हथ्थ रखाईआ। उस दा खेल होणा महान, महिमा अकथ बेपरवाहीआ। सब नूं सांझा देणा इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। छब्बी पोह दिवस महान, मेहरवान महबूब मुहबत्त विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। प्रभू किहड़ी बेख़बरां ख़बर, ख़बरदारी विच जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के बैठे सबर, सिदक तेरे विच टिकाईआ। सब दी कूक के कहे कबर, काअबे दे मालक नूर इलाहीआ। तेरा हुक्म इक्क जबर, जमीअतुल ज़मां करे रुशनाईआ। असीं वेखदे उपर अम्बर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की रचना निरगुण जगत सुअम्बर, परदा देणा चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटें अडम्बर, तेरा नाम दुहाईआ। सर्ब कला सच स्वामी भरतम्बर, भरपूर रिहा सब ठाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव देणा दरसाईआ। साचा भेव खोल्ह दे धुर दे परवरदिगार, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। मुहम्मद वेखे नाल चार यार, चार यारी कम्म किसे ना आईआ। ग़फ़लत विच निंद्रा विच सुत्ता संसार, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं जाए हार, हाए उफ तेरा नाम दुहाईआ। तेरा कलमा

कायनात करे गिर्फ्तार, मुरीद मुर्शद तेरी बेपरवाहीआ। हउं सदके वारी बलिहार, कदमबोसी लै के कदम कदम सरनाईआ। ज़ुलफ़े ज़कीर ज़ाहरे कतीले कुशा कशमकश वेख कूड़ी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। खुदीउल मीज़ां, मज़ीने निज़ां, रज़ोले विज़ां, मुहम्मदे दुआ, अहिमदे खुदा, तेरी रबां ज़ाते नज़ां, नज़ील खुरार नज़रीं आईआ। वाइफ़ते रज़ी कुलासते ज़कूमे गुना बणाईआ। बेमिसाले जहां चारे ज़रू आसीदे नरुद, बस्तीए तबक नज़री आईआ। दुख़ते दरिंद, ज़कते नरिंद, कोसे गोबिन्द, तेग़े नशिंद, सुल्ताने दहिंद, ज़ीने ज़कूर ज़ीर ज़ाईआ। आशा अमाम, ख्वाहिशां तमाम, मुहम्मदे रज़ा, हमदे सना, साहिब सुल्तान तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। तबीउल तबक, नज़ी ज़र्रे सबक, वज़ूखरे ज़बत, चबूतरे निवानी, शख़स असमानी, असीशररुर रुहा रंगीने रंगाईआ। रंगते रंगू, राज़क रहीम, रहमत इक्क अलाहीआ। बाशिंदे बशकूक शाविंदे नहिसूक, गोबिन्दे मतरू औरंगे जनूब, जानबे जिशन जगह जगह जगत जिज्ञासू तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्ते शरू, अलमस्ते नरू, खुदाए हू, हक हक हकीकत वेख वखाईआ।

★ २ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

आत्म परमात्म धुर दा नाता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। तत शरीर जगत साथा, पंचम पंच वज्जे वधाईआ। किरपा करे पुरख समराथा, हरि करता धुरदरगाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझी होवे गाथा, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। मन ममता मिटे अन्धेरी राता, कूड़ी क्रिया कूड़ चुकाईआ। सतिगुर शब्द सति सच साचा, संजम इक्को इक्क रखाईआ। भाग लग्गे काया माटी कंचन गढ़ काचा, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। भगत सुहेला बणे राखा, एथे ओथे दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आत्म परमात्म आदि जुगादी मेला, मिलणी हरि जगदीस कराईआ। जन भगतां रंग चाढ़े सदा नवेला, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। वक्त सुहञ्जणा करे सुहेला, वज्जे नाम वधाईआ। भाग लगाए काया माटी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बेला, डूंघी भँवरी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर आप सुहाईआ। साचा घर सोभावन्त, हरि करता इक्क दृढ़ाइंदा। जित्थे मेला होवे नार कन्त, प्रेम प्रीती इक्को इक्क समझाइंदा। काया चोली चढ़े रंग बसन्त, दुरमति मैल सर्ब धवाइंदा। गढ़ तोड़

के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाइंदा। मेल मिला के साची संगत, सगला संग आप हो जाइंदा। लोड़ रहे ना किसे पांधा पंडत, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। पन्ध मुका के बहिश्त जन्नत, सचखण्ड दुआर इक्क सुहाइंदा। सो गुरमुख वेखे सन्त, हरि साजन परदा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि जुगादी अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ।

★ २ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

पोह कहे सुण कलयुग प्रभ दे छोटे पप्पू, पता तैनूं दयां जणाईआ। पुरख अकाल सब दा बन्नू के मक्कू, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। किसे दी पत कोए ना रखू, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। औह वेख धाहां मार के रो प्या यसू, मसीह रिहा कुरलाईआ। मुहम्मद खेड़ा किस बिध वसू, चौदां तबक देण दुहाईआ। मूसा किहड़ी धार नट्ठू, आपणा राह तकाईआ। सब दा लहिणा देणा फटू, फाटक पिछले बन्द कराईआ। जगत कूड़ी धार कटू, कटक आपणा नाम चढ़ाईआ।
१०२६ गुर अवतार पैगम्बर सदी चौधवीं पुत्त बणे मनखट्टू, खट्टी खट्ट ना कोए वखाईआ। अन्तिम आपणे खाते सट्टू, सट्ट ज़रब ना कोए लगाईआ। धुर दा मार्ग एका दस्सू, दहि दिशा कर रुशनाईआ। जन भगतां अंदर वसू, आपणा नूर कर रुशनाईआ। १०२६
२०
जिस ने तारने पंछी पशू, प्रेत देव बणाईआ। शब्दी धार हो के हस्सू, हस्ती आपणी इक्क वखाईआ। चार कुण्ट पैणी ग़शू, गशत ला के वेखे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। पोह कहे कलयुग तेरा होणा अन्त अन्धेरा, आंधी अंदरां अंदरों प्रगटाईआ। पुरख अकाल दा गिड़ना गेड़ा, कोहलू चक्की चक्क भवाईआ। वस्या रहे ना कोई खेड़ा, खिड़की कुण्डे सब दे दए भन्नाईआ। चार कुण्ट चौगिर्दी झेड़ा, हाहाकार दुहाईआ। सब नूं कटे बेरा बेरा, बिरती शब्द ना कोए लगाईआ। साहिब दिसे ना नेरन नेरा, निरत सुरत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पोह कहे सुण कलयुग प्रभ दे बच्चे लौहके, लवारस दयां वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर हौके, धीरज धरवास ना कोए वखाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए गौं के, ढोले नाम शब्द कर शनवाईआ। सो मालक आया भौं के, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। डंक वजाए आपणे नाउँ के, नाउँ निरँकारा इक्क प्रगटाईआ। जो तत वजूद गए सौं के, नाता जगत नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पोह कहे कलयुग औह वेख तम्बी टोपी, तहिमत नाल मिलाईआ। औह वेख बंसरी

गोपी, काहन दे पिच्छे दुहाईआ। औह वेख पुस्तक पोथी, पोरा पोरा आपणा आप कटाईआ। औह वेख रविदास चमारा मोची, जो मजलस प्रभ दे नाल रखाईआ। औह वेख जिन्हां ने खोजण खोजी, जन भगत सुहेले नज़री आईआ। जिन्हां दा मालक इक्को चोजी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जन्म जन्म दा रहे कोई ना रोगी, दु:ख दर्द दए गवाईआ। आपणे मिलण दी दे के सोझी, सुत्तयां ल्या उठाईआ। झगड़ा रख्या ना जञ्जू बोदी, मूंड मुंडाए ना भेव जणाईआ। सब दी आत्म अंदरों सोधी, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। खेल वखाए इक्क दो की, दोहरी धार जणाईआ। धार प्रगटा के सोहँ सो दी, सूरत प्रभ दी नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पोह कहे कलयुग प्रभ दे निक्के छोटे लाल, लालन दयां जणाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कल आपणी रिहा वरताईआ। भज्जा फिरे चार कुण्ट रवाल, रस्ता हथ्थ कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर घाल के घाल, सेवा सेवक रूप कमाईआ। संदेसा दे के बेमिसाल, मिसल मसलयां वाली बणाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्त बदल के चाल, निराली आपणी रिहा प्रगटाईआ। सन्त सुहेले सज्जण भाल, भरम भुलेखा दूर कराईआ। सदी दा साचा बण दलाल, दिलावर इक्को हुक्म सुणाईआ। मेहर विच करां बहाल, मुहब्बत विच पार लँघाईआ। लेखा रहे ना किसे गवाल, गोकल वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा करे ना कोए पाताल, आकाश अक्खर ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेल खिलाईआ। पोह कहे कलयुग प्रभ दे बरखुरदार, धुर दा लेखा दयां सुणाईआ। उठ वेख अगम्मा यार, जिस दा याराना हथ्थ किसे ना आईआ। कदी बन्द ना होवे विच चार दीवार, मन्दिर मस्जिद देण गवाहीआ। सब तों वसे बाहर, हर घट रिहा समाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, उजल नूर रिहा चमकाईआ। आपणे हथ्थ सब किछ लै बणे मुख्त्यार, धुर संदेसा इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। पोह कहे मैनूं पोह ना सके काल, जीवण मरन विच ना आईआ। जद मिलां मिलां विच दीन दयाल, दूजे घर ना डेरा लाईआ। सदा करां आपणा सवाल, निरगुण हो के झोली डाहीआ। मैं नढ्ढा तेरा बाल, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच वखा सच्ची धर्मसाल, दर दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दे खुल्हाईआ। पोह कहे मैं देवां पनाह पुश्ते, पसचाताप दयां मिटाईआ। कलयुग वेख कुशते कुशते, कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। एह खेल अगम्मे उस दे, जिस दी उस्तत कर के सारे ढोले गाईआ। जिस दे प्रेमी प्यारे जन भगत कदे ना रुस्सदे, राह चल्लण सच रज़ाईआ। लख चुरासी विच मूल ना कुस दे, ममता मोह मिटाईआ। झगड़े रहिण ना ओहले

१०२७
२०

लुक दे, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ। खेल होणे अगम्मी सुत दे, दुलारे गोबिन्द वज्जे वधाईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर झुकदे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। ओथे पैंडे मुकदे, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। अग्गे ढोले गाउणे सब ने इक्को तुक दे, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क वखाईआ। पोह कहे कलयुग कुकर्मी, तैनूं लोक कहे लोकाईआ। तेरी सब नूं साड़े गर्मी, पोह विच ठंड ना कोए वरताईआ। झगड़ा दिसे वरनी बरनी, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। साची मंज़ल किसे ना चढ़नी, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। बिन पुरख अकाल किरपा किसे ना करनी, करतब आपणा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह चलाईआ। पोह कहे कलयुग प्रभ दा वेख चलित्त, चलत करे लोकाईआ। सरगुण बणे कोई ना मित्र, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। आपणी धारों आपे निक्कल, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। तन वजूद कर के सिथल, सुरती शब्द मिलाईआ। तांबा लोहा रहे मूल ना पित्तल, पतिपरमेश्वर मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क सुहाईआ। पोह कहे कलयुग बाले छोटे, छिटी तेरी किस मनाईआ। क्यों संसार सागर विच
१०२८ खावें ग़ोते, जल पाणी डेरा लाईआ। तेरी सोच केहड़ा सोचे, समझ समझ ना कोए समझाईआ। पुरख अकाल कोल जन भगत किहड़े बहुते, बहुत्यां विच्चों थोड़े प्रभ दे रंग समाईआ। कलयुग कूड़े जाल तोड़ मोह दे, मुहब्बत इक्को इक्क दरसाईआ।
२० कर प्रकाश आपणी लो दे, लोचण दूज्जयां दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो तेरे दर जाए हो के, हुक्म नाल हिकमत पिछली दए बदलाईआ।

★ ३ पोह शहिनशाही सम्मत ३ मुनी सुशील कुमार नाल मंडी अहिमद गढ़ ज़िला लुधियाणा ★

सच सुहावणा समां होया अहिमद गढ़, हर हिरदे अन्तर वज्जी वधाईआ। मुनी सुशील प्रेम मुहब्बत धार लै के आया चढ़, दिल्लीउँ चलया वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया सब दे अंदरों लए फड़, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। साचे प्यार विच मार्ग दस्से नारी नर, नर नरायण भेव खुल्हाईआ। सति धर्म दी करनी लओ कर, कूड़ी क्रिया कम्म किसे ना आईआ। सुरती शब्द लओ फड़, शब्द सुरत विच समाईआ। जीवत जीव जगत वासना विच्चों जावो मर, मर जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क दृढ़ाईआ। अहिमद गढ़ आ के वेखी मंडी, मण्डल सोहणा

नज़री आईआ। मुनी जी सिध्धी करन आ गए सब दी डण्डी, हिरदे अंदर करे सफ़ाईआ। दूई द्वैती ढाहवे टेडी डण्डी, वरन बरन रस्ता रहिबर हो के इक्क वखाईआ। दीन मज़्ब दी रहे ना कोए पाबन्दी, जो आत्म परमात्म जाण के खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा चार वरन अठारां बरन गावण साचा छन्दी, ढोला इक्को इक्क धुरदरगाहीआ। सच दवारे मिले इक्क अनन्दी, निज आत्म वज्जे वधाईआ। सब तों वेखी प्रेमीआं वाली सभा चंगी, इक्क दूजे नूं मिल के खुशी मनाईआ। जन भगतां निज नेत्र अक्ख रहे किसे ना अन्धी, लोयण आपणा नैण खुल्हाईआ। मन वासना ममता मोह विकार हँकार विभचार कूड़ी क्रिया कढ्ढणी दुर्गन्धी, नाम सुगंधी इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा काया माटी पंज तत वजूद घर गृह परदा आप उठाईआ। अहिमद गढ़ वक्त सुहाणा, सोहणा समां वखाईआ। प्रेम प्रीती रंग रंगाणा, रंगत इक्को इक्क रंगाईआ। सब ने मिल के इक्को धाम सुहाणा, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता देवे माण वड्याई श्री भगवाना, हरि करता बेपरवाहीआ। जीवो जंतो जागरत जोत विच वेखो मुनी, मुनीआं दा इक्क निशाना, निशाने कूड़े रिहा बदलाईआ। काया मन्दिर अंदर चढ़ के वेखो मंज़ल महाना, जित्थे मिले बेपरवाहीआ। धुन आत्मक अनहद शब्द सुणो गाणा, तुरीआ तों परे परदा दए उठाईआ। वक्त सुहञ्जणा सोहणा समां प्रेमीआं प्यार विच मिल के गाणा, गा गा खुशी मनाईआ। एह उदघाटन एह वाटन खोल्हे कपाटन भेत दस्से बातन, ज़ाहर बैठा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। मुनी जी आए दूरों चल, आपणा पन्ध मुकाईआ। किसे दे अंदर रहिण ना देंदे वल छल, कपट विकार रहे मुकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार अंदर रहे ना कूड़ दल, दलिद्र देण चुकाईआ। धाम वखावण इक्क अटल, निहचल जिस नूं कहि के गाईआ। जित्थे दीपक जोती इक्को दीआ रिहा बल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सो मेटणहारा सब दे दूई द्वैती सल्ल, नाम निधान तीर अणयाला इक्क चलाईआ। सब दे साहमणे सच सिँघासण पुरख अबिनाशन निरगुण धार सरगुण उज्यार हो के बैठा मल्ल, पेख के वेख के देख के संदेश विच नरेश नर इक्को इक्क नज़री आईआ।

★ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

बेनन्ती करे ब्राह्मण सिँघ तारा, बिन सीस सीस झुकाईआ। पुरख अकाल तेरा इशारा, शब्दी धार रिहा उठाईआ। तेरा हुक्म अगम्म अपारा, सुण के वज्जी वधाईआ। मैं वेख्या विच संसारा, तेरी कुदरत ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट धुँदूकारा,

साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच बख्शणी इक्क सरनाईआ। तेरा सुण अगम्मी राग, अन्तर वज्जी वधाईआ। सच दवारे खुल्ही जाग, नैण अक्ख ना कोए बदलाईआ। बेनन्ती करां आज, दर तेरे सीस निवाईआ। सोहणा तेरा काज, जो भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। तारा कहे मैं दस्सां नाल तरतीब, तरह तरह समझाईआ। छिन्न विच हुक्म मिल्या अजीब, बिन हलकारयां दिता पुचाईआ। मस्सा सिँघ जो सिँघ ग़रीब, छब्बी पोह घट्टे विच लिटाईआ। ओस दा सतारां पोह नूं वड्डा रहिणा नहीं अज़ीज़, नाता पुत्तर जाए तुड़ाईआ। एह खेल तेरी कोई ना समझे बदनसीब, निस्बत कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा देणा वखाईआ। की लेखा तेरा भगवान, भगवन दे जणाईआ। क्यों विछोड़ा करें जहान, दीन दुनी दुहाईआ। मैं सुण के अगम्म फ़रमान, भज्जया वाहो दाहीआ। छड्ड ब्रह्मण्ड असमान, धरनी धवल वेख वखाईआ। चरणी डिग्गा आण, बेनन्ती इक्क जणाईआ। कर किरपा मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। भगतां दा भगतां नाल निशान, पिता पूत वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आपणा हथ्थ रख मेरे भगवन्त, भगवन दयां दृढ़ाईआ। जन भगत खेल नहीं चुरासी जंत, जीव ईश तेरी सरनाईआ। तूं आत्मा दा कन्त, परमात्मा बेपरवाहीआ। तत बणाएं बणत, घाड़त अजब घड़ाईआ। तेरा खेल सदा अनन्त, कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला दे दृढ़ाईआ। तारा सिँघ कहे मैं आया चल्ल, चलत तेरा वेख वखाईआ। अमृत बरखे जल, भगत वज्जे वधाईआ। पुत्तर होवे सल, मात पित जुदाईआ। लहिणा अज्ज कि कल्ल, काल नगारा रिहा डराईआ। जो तेरी धार जाए रल, सो तेरे विच समाईआ। अनोखा वक्खरा सब तों फल, प्रेम टहणी नाल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। तारा सिँघ कहे मैं आया उपर धौल, शब्दी धार फेरा पाईआ। मस्सा सिँघ समझणा नहीं मखौल, मसख़रा रूप ना कोए बदलाईआ। मेरा तेरे नाल इक्क कौल, हसदयां दिता जणाईआ। भावें मैं पंडत पांधा बाहमण नहीं रौल, फिर वी वेले सिर कदी तेरे कम्म आईआ। अज्ज हुक्म वजा के कहवां ढोल, मृदंग इक्क सुणाईआ। आपणा परदा रिहा खोल्ह, भुल्ल रहे ना राईआ। नौ जन्म मारदा रिहा रोल, रौला पा के जगत दुहाईआ। अन्त छक अगम्मी पाहुल, अमृत रस बिन रसना रस लाईआ। हुण आ के तेरे कोल, सहिज दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। सुण शब्द अगम्मी बात, बातन दयां जणाईआ। थोड़े

समें विच मैनूं दस्सी बात, छिन्न विच हुक्म मनाईआ। बख्शीश करां अज्ज दी रात, मेहर नज़र उठाईआ। अग्गे होर ना कोए जवाब, सवाल कहिण कोए ना पाईआ। चित्रगुप्त तों बाहर किताब, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। भगतां दा हिसाब, पुरख अकाल गिणती गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा करां सद सद आदाब, सीस सीस सीस झुकाईआ।

भिन्नड़ी रैण कहे मेरी अरज़ोई, अरज़ आरज़ू इक्क जणाईआ। परवरदिगार तेरा नाम दरोही, दरोही तोबा नूर खुदाईआ। तेरा भेद अभेव ना जाणे कोई, परदा सके ना कोए उठाईआ। पिछला लेखा कबीर नाल लोई, लोयण लोचन अक्ख खुल्हाईआ। उस दी सुरत उठाई सोई, सुत्ती आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा जणाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरी अरदास, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। सुण साहिब पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते दयां दुहाईआ। एह पिछला खेल तमाश, पूरब परदा देणा उठाईआ। वक्त सुहेला नाल रविदास, ब्राह्मण लेखा धुरदरगाहीआ। निरगुण धार
१०३१ जोत जोती शाख़, शनाख़त तेरे हथ्थ वड्याईआ। सब दी पूरी करें आस, परदा ओहला आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप १०३१
२० हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे सुण अगम्मी बात सो, हरि करते दयां दृढ़ाईआ। २०
नेत्र हन्झूआं नाल रो, नैणां छहबर दयां वखाईआ। इक्क ठग्गां वाला गरोह, पंज सत्त वण्ड वण्डाईआ। ओन्हां विच्चों दो, संगी साथी सोभा पाईआ। रुतड़ी सी बारां पोह, वदी सुदी ना वण्ड वण्डाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, कथनी कथ ना कोए सुणाईआ। अमृत वेला हुन्दी लो, नूर जगत नाल चमकाईआ। ब्राह्मण दी गठ्ठड़ी लई खोह, मूंह दे भार सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद देणा जणाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं मंगां मंग, आसा तृष्ना तेरी झोली पाईआ। खेल दस्स गंगोतरी गंग, गंगा मईआ नाल मिलाईआ। सुण हैरान होवां दंग, दंगा फ़साद वेख वखाईआ। जो ब्राह्मण कोल ढंग, तरीका समझ कोए ना आईआ। कन्ढे सुत्ता दे कर कंड, करवट ना कोए बदलाईआ। एहदी चाली वीह दी खुल्ह गई गंढ, वीह सौ वीह बिक्रमी दए गवाहीआ। ओधरों गाउँदा आ गया इक्क छन्द, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। जे रुपईए मिल जाण पंज, मेरी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मैं भोजन छकां नाल अनन्द, खुशीआं विच तेरा ध्यान लगाईआ। सिफ्तां गावां नाल दन्द, बत्तीसा राग अलाईआ। मैनूं मूल ना लग्गे ठंड, सीतल धार ना कोए ठराईआ। अग्गे देणा पए ना कोई डण्ड, सज़ा विच ना कोए भुगताईआ। ओधरों चमकया पिछली रात दा चन्द, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे प्रभ मेरी एहो इच्छा, निरिच्छत पूर कराईआ। सच दवारिडुं मंगां भिच्छा, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। तेरा प्यार इक्को दिसा, दहि दिशा नज़री आईआ। ब्रह्मण कोलों वण्डाया हिस्सा, पंज चुक्क के झोली पाईआ। जिस दी ज़ात कमीणी नाम सी निक्का, निक्कू कहि के जगत बुलाईआ। ओधरों ब्राह्मण नूं आ गई छिक्का, छिकण नाल अक्ख खुल्हाईआ। गंढु खुल्ही वेख के पै गया फ़िका, ग़मी अंदरे अंदर सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा मुकाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे जिस रुपईए चुके पंज, पंजा मूंह दे विच पाईआ। ओहदे अंदर आया रंज, दुःख ग़म वाला सताईआ। हिरदा होया तंग, ममता मोह मिटाईआ। चंगा भुक्खा रह लवां इक्क डंग, दूजे दी गंढु काहनूं चुराईआ। मोड़ के देवां वण्ड, आपणा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार सरनाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे निक्कू आया मुड़, आपणा मुख भवाईआ। अन्तर ध्यान गया जुड़, गंगा माता लैण उठाईआ। मेरा बेड़ा ना जाए रुढ़, वहिन्दे वहिण ना कोए वहाईआ। मैं प्रेम प्रीती अंदर आया तुर, तुरत आपणा पन्ध मुकाईआ। क्यों फ़ुरना गया फुर, ब्रह्मण गंढु चुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे निक्कू अन्तर आई विचार, विचर के दिता सुणाईआ। सुण मेरे निरँकार, तेरी बेपरवाहीआ। तेरी वेहदी वेख के गंगा धार, मेरे नैणां छहबर लाईआ। क्यों होया मूर्ख गवार, मन मति बदलाईआ। मैनूं बख्शीं बख्शणहार, तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब सच्ची सरकार, शहिनशाह अख्वाईआ। हुक्म आया धुर दी धार, अंदरे अंदर आवाज़ लगाईआ। तेरा लेखा ओसे दे नाल, जिस दी गंढु दिती खुल्हाईआ। उह ब्राह्मण नहीं कंगाल, ठग्गी प्रभ दे नाल कमाईआ। जा के ओस नूं दस्स आपणा हाल, लेखा ओसे दी झोली पाईआ। उह अग्गे करे ख्याल, परदा दए खुल्हाईआ। उस जा के छोटे लाल, सीस दिता निवाईआ। खोल्ह के गंढु रुमाल, पंजे अग्गे टिकाईआ। मेरी कर संभाल, भुल्ल के आपणा आप गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे ब्राह्मण प्या हस्स, ताली हथ्थां वाली लाईआ। बच्चू इक्क चोरी कर के गिडुं थक्क, मुड़ के भज्जया वाहो दाहीआ। बिना ब्राह्मणां तों पूजा दा माल कोई ना सके छक, भय सब दे अंदर रखाईआ। गंगा माता उत्ते साडा हक, बै ख़रीद आपणा वणज वखाईआ। आह वेख एहदे शकंगण नथ्थ, बलाकां नाल सोभा पाईआ। मैं कर के आपणे वस्स, परदयां विच छुपाईआ। रविदास कोलों लँघणा बच, अक्ख नाल अक्ख ना कोए रलाईआ। तैनूं दस्सां सच, भेव अभेद खुल्हाईआ। जिस वेले खेल होवे पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। सति धर्म दा खोल्हे

हट्ट, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे पंडत देवे इक्क सलाह, प्रेम नाल समझाईआ। इस जीवण दा नहीं वसाह, ज़िंदगी समझ किसे ना आईआ। मैं सब कुछ लवां चुरा, चोरी कर के प्रभ दी सेव कमाईआ। दिवस रैण जपां नाँ, तूंही तूंही राग इलाहीआ। अन्त वेखां अनोखा थाँ, जिस थनंतर वज्जे वधाईआ। सौंह खा के कहां गाँ, मात गऊ ज़ामन विच टिकाईआ। औखी वेले पकड़ां बांह, ब्राह्मण हो के सेव कमाईआ। जिस वेले तेरा विछोड़ा होवे नालों पिता माँ, तुट्टे खलक खुदाईआ। ओस वेले संदेसा देवां आ, फ़रमाना इक्क सुणाईआ। तूं निक्का निक्के तों वड्डे होण दा चा, चाओ समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क प्रगटाईआ। ब्राह्मण कहे सुण नन्न्हे नन्न्हे बच्चे, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मेरे बहुत्यां विच्चों थोड़े बचन हुंदे सच्चे, जिस वेले गंगा मईआ मेरे अंदरों करे सफ़ाईआ। मैनूं रविदास ने कुछ बोल अनोखे दस्से, समझ समझ विच बदलाईआ। सब दे नाते टुट्टणे भाण्डे कच्चे, तत वजूद रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी जाणे नस्से, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी होणी मस्से, मस्सया विच मस्सा सिँघ तेरा पिता समझाईआ।

१०३३ जिस दे सिर हथ्थ रखे पुरख समर्थे, हरि करता धुरदरगाहीआ। जन्म जन्म दा लहिणा देणा कटे, कर्म कांड दा पन्ध मुकाईआ। १०३३

अन्त वेले मैनूं सद्दे, हुक्म संदेसा इक्क जणाईआ। एह लेखा कदे कदे, जुग चौकड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारे खेल वखाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरे अन्तर आई हैरानी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। किधरों मिली एह निशानी, जुग जन्म दा लेखा रिहा मुकाईआ। दो जहानां बण के बानी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। सृष्टी दृष्टी दस्स के फ़ानी, इष्टी आपणा नूर करे रुशनाईआ। लेखा मुका के जगत जहानी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। संदेसा दे के धुर फ़रमानी, फ़रमांबरदार ल्या उठाईआ। पिछली याद रखी कहाणी, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना जाईआ। अमृत दी छहबर मुहब्बत दा पाणी, अमृत रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं वेखां चारे कूट, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस दा नाता टुट्टणा सी कलबूत, पंज तत जगत जुदाईआ। उस दा तारा सिँघ दए सबूत, शहादत इक्को इक्क भुगताईआ। भगतां सच दवारे हो मौजूद, बेनन्ती दिती सुणाईआ। जगत वासना मेट हदूद, घर तेरे वज्जे वधाईआ। भगत सुहेला रख महिफ़ूज़, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। तेरे दर ना दिसे दूज, दुतीआ भाउ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा वेख वखाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं वेखां चुक्क के अक्ख, अक्खरां तों परे करां पढ़ाईआ। तेरा

खेल पुरख समरथ, दो जहानां वज्जी वधाईआ। नाम बोल जैकार अलख, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। तेरा इशारा धुर दा सच, भगत सुहेला रिहा दृढ़ाईआ। जिस दा नाता टुट्टणा काया माटी कच्च, पवण स्वास साह मुकाईआ। किरपा कर के लूं लूं अंदर रच, रचना तेरी नज़री आईआ। जणेंदी माँ बणीं यच, याचक आपणी गोद रखाईआ। तेरा हुक्म लैण वच्च, वाचक अंदरों दे समझाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना सके बच, बचन सब दा आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर देणी वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण कहे तूं आदि जुगादी दरदवंद, दीनां अनाथां दया कमाईआ। पतिपरमेश्वर धुर दा ख़ावंद, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। हुक्मे अंदर सर्ब पाबन्द, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरी किरपा दे सके कोई ना डण्ड, डण्डावत आपणी इक्क समझाईआ। तेरा खेल ब्रह्मण्ड खण्ड, सूर्या चन्द तेरी रुशनाईआ। दीन दयाल बण बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे वज्जे वधाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरी बेनन्ती अख़ीर, अख़ीर दे मालक दयां जणाईआ। तेरा खेल बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तूं बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणी दिती दृढ़ाईआ। भगत सुहेला कहे कबीर, लोई दे लोयणां तों बाहर रुशनाईआ। रविदास तक्क के तेरी तस्वीर, तसबी माला तों परे दिता जणाईआ। पंडत दी बदल के ज़मीर, ज़ामन हो के दिता समझाईआ। जिस दा वक्त पहुंचया अख़ीर, आख़र हो सहाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, फ़कीरां फ़िकरा इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सच तेरी सरनाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैनूं रविदास करे इशारा, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। वेख प्रभू दा इक्क दवारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा समझे ना कोए किनारा, कोना कोना वेखे जगत लोकाईआ। उह शाहो भूप सिक्दारा, वाली दो जहान बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर फिरदे गुर अवतारा, पैगम्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। कलमयां विच गाउँदे वारा, रागां नादां विच जणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी वेखणहार सर्ब संसारा, सृष्टी दृष्टी अंदर फोल फुलाईआ। भगतां दया कमा के भगत दवारा, हरि भगती विच लगाईआ। रविदास दी चरण धूढ़ छारा, टिक्के पिछले रिहा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर इक्क वखाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे प्रभ एका दर्दी, दरदवंद तेरी सरनाईआ। सच दवारे कबूल कर अर्ज़ी, आरज़ू इक्को इक्क रखाईआ। दूसर चले ना कोई मर्ज़ी, मज़ा आपणा देणा चखाईआ। तूं साहिब सुल्तान भगतां दा ग़रज़ी, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। एह खेल तेरे घर दी, जुग चौकड़ी चली आईआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा तैनूं वर दी, ओहदी एथे ओथे ना होए जुदाईआ। कथा कहाणी याद

रख पर दी, पिछली बीती दयां सुणाईआ। छब्बी पोह सी डाहढी सर्दी, मस्सा सिँघ ख़ाक विच लेट के तेरा शुकर मनाईआ। ओस दी कला कर चढ़दी, डुब्बदे बेड़े पार लँघाईआ। सीस तेरे चरणां धरदी, भिन्नड़ी रैण निउँ निउँ लागां पाईआ। एह खेल नरायण नर दी, दूसर नज़र कोए ना आईआ। तारा सिँघ आ गया जलदी, पैंडा पिछला पन्ध मुकाईआ। खेल वरतण नहीं देणी कलयुग कल दी, कलधारी तेरी इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचा सोभा पाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे पुरख अकाल तेरी किरपा, किरपन देवें माण वड्याईआ। बख़्शीश विच बख़्शिश गुरमुख सिर पा, सिरोपा तेरी भेंट चढ़ाईआ। आदि जुगादी खेल अगम्मी पिर दा, पीआ प्रीतम दे वड्याईआ। एह लेखा पिछला चिर दा, रविदास ब्राह्मण मिल के देण गवाहीआ। अग्गे झेड़ा होर छिड़दा, जिस दा परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू किहड़ी जगाईए अलख, अलख अगोचर दे समझाईआ। तेरी धार विच नहीं वक्ख, जोत सरूप जोत विच समाईआ। वेखण वाली नहीं कोई अक्ख, बिन तेरी किरपा नैण ना कोए उठाईआ। तेरे अन्तर रहे वस, निरंतर भेव ना कोए जणाईआ। केहड़ा करीए जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। कलयुग खेड़ा हुन्दा दिसे भठ्ठ, भठियाला अग्न रिहा तपाईआ। सड़दे दिसदे तत अठ्ठ, नौ दुआर दर दुहाईआ। दसवें होवे ना किसे इक्ठ, आत्मा परमात्मा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मन वासना सारे रहे नठ्ठ, साध सन्त जगत कुरलाईआ। रसना वाला नाम रहे रट, मणकयां उंगलां नाल भवाईआ। हकीकी मंज़ल कोए ना सक्या टप्प, टप्पे पढ़ पढ़ वक्त लँघाईआ। सब दा लेखा दे ठप्प, ठप्पा अपणा नाम प्रगटाईआ। दीन मज़्ब दी रहे कोई ना वट्ट, वटणा मल के सारे लै प्रनाईआ। द्वैती रहे कोई ना फट्ट, पट्टी आपणा नाम बंधाईआ। सोया रहे ना कोई उत्ते खट्ट, खटीआ सब दी दे हिलाईआ। मूसा दी घड़ी करे टक टक, आवाज़ ईसा रही सुणाईआ। मुहम्मद उठे झट्ट, चौदां तबक कूड़ दुहाईआ। गुरदेव करन इक्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। कवण गेड़न लग्गा लठ्ठ, चार कुण्ट भवाईआ। लेखा मुक्कण लग्गा अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैणां रो रो नीर वहाईआ। झगड़ा मुक्कण लग्गा मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ, धर्म दवारा इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। बारां पोह कहे प्रभू याद आया सम्मत पंदरां, पिछला लहिणा नज़री आईआ। नौ गुरमुख वेखे नौ दवारे अंदरां, जोड़ी जोड़े नाल बणाईआ। अगला खेल होणा सृष्टी दृष्टी वांग बन्दरां, बुद्धी बुध नाल

लड़ाईआ। घर घर वज्जणा हँकारी जंदरा, कुंजी नाम ना कोए लगाईआ। जन भगतां इक्क दुआर लँघणा, जित्थे प्रभ नूं मिल के वज्जे वधाईआ। सब नूं लाए आपणे अंगणा, अंगीकार इक्क हो जाईआ। दूजा दर पए ना मंगणा, वस्त अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मेरी खुशीआं विच निकले हासी, हस्ती वेखां बेपरवाहीआ। कुछ झगड़ा पैणा विच कांशी, कश्मीर किशमिश वांग हिलाईआ। उच्ची कूक पुकारे मंडी वाले राजे दी मासी, जो साबण गाची गोबिन्द भेंट चढ़ाईआ। नेत्र रो के कहे राम चन्द दी दासी, जो अयुध्या विच रेते नाल करे कुड़माईआ। कुछ लहिणा देणा कृष्न सुदामे नाल बाकी, तत ख़ाकी खोज खुजाईआ। पूरब दा इक्को आदि जुगादी साथी, जुग चौकड़ी सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा रिहा चुकाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं चुक्क के वेख्या घूँगट, नेत्र नैण अक्ख मटकाईआ। हिलदी वेखी नबी उम्मत, बिन अमलां दए दुहाईआ। किसे कम्म ना आई कीती सुन्नत, प्रभ देवे सर्ब सज़ाईआ। फुलवाड़ी होई ना कोई परफुल्लत, बहार ख़िज़ां रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं कदे ना सोई जागी, आलस निंद्रा विच ना आईआ। मैं वेखां उह वैरागी, जो बिरहु विच कुठ्ठे मारन धाईंआ। जिन्हां दी धार जुगादि आदी, जुग चौकड़ी चली आईआ। उह प्रभ दे सदा समाजी, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा नहीं कोई पंडत काज़ी, सूर गाँ ना कोए चतुराईआ। इक्को रज़ा विच राज़ी, रहमत विच सीस निवाईआ। कुछ मुहम्मद दा लेखा माज़ी, पिछला फोल फुलाईआ। कलयुग दी कूड़ी क्रिया ग़ाज़ी, ग़ज़ब आपणा रही वखाईआ। कुछ हस्स के किहा गोबिन्द दुलारयां दी दादी, बुरज विच बहि के ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल तेरी खेल डाहढी, सब नूं दएं सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। भिन्नड़ी रैण कहे प्रभू तेई अवतार की कुछ दस्सदे, दूर दुराडे रहे जणाईआ। किहड़ी करनीउँ पिच्छे नस्सदे, अग्गे हो ना बल रखाईआ। की एह प्यासे नहीं तेरे रस दे, प्रेम प्रीती विच समाईआ। की एह भुक्खे आपणे जस दे, सृष्टी विच सिफ्ती नाम करन वड्याईआ। पुरख अकाल किहा एसे कर के मेरी ओट रखदे, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। चरण कँवलां हेठां वसदे, सिर सके ना कोए उठाईआ। शब्दी राग मेरा रटदे, रसना नाल जगत पढ़ाईआ। एह वणजारे ओस हट्ट दे, जित्थे सौदा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क प्रगटाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे क्यों बैठे विष्न शिव ब्रह्मा, सनकादक सीस निवाईआ। की दस्सें इन्हां धर्मा, भेव अभेद खुल्हाईआ। क्यों डिग्गे उपर चरणां, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख

अकाल कहे झगड़ा मेट ना सक्या कोई वरनां बरनां, ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। हुक्मे अंदर सब नूं फड़ना, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। निरगुण धार हो के सब दे अंदर वड़ना, बचया रहिण कोए ना पाईआ। धुर दा हुक्म कदे ना टलणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जगत साधूआं नूं छल दे नाल छलणा, अछल अछल्ल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ। भिन्नड़ी रैण कहे की हुक्म तेरा करतार, करनी दे करते दे समझाईआ। की खेल तेरा संसार, महासार्थी की की रचन रचाईआ। उच्ची कूक कहां पुकार, तेरा नाम दुहाईआ। बिना गोबिन्द तेरा सत्थर वेख्या ना किसे यार, यारड़ा सेज ना कोए हंढाहीआ। तूं दुखियां दा दुख्यार, दीनां अनाथां दया कमाईआ। कल कल्की तेरा इक्क अवतार, कला अवर रहे ना राईआ। तैनूं जन्मे ना कोई माई विच संसार, निरगुण नूर जोत तेरा रुशनाईआ। मासूमां कर प्यार, मज़लूमां कर खुआर, हुक्मे अंदर हुक्म सज़ाईआ। ग़फ्लत विच्चों कर बेदार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं आ गई भज्जी नट्ठी, आपणा पन्ध मुकाईआ। हरि संगत वेखी इक्ठी, धर्म दवारा सोभा पाईआ। मस्सा सिँघ भरे ना चट्टी, दुःख सुत रहे ना राईआ। रविदास दे चरणां सवीं सिर सट्टी, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार बेपरवाहीआ। भिन्नड़ी रैण कहे रविदास सौणा कोल सिँघासण, खब्बी दिशा सोभा पाईआ। जल कोल रखणा इक्क ग्लासन, अमृत अमर रूप वखाईआ। भिन्नड़ी होए बसन्ती रातन, हरि भगत दवारे वज्जे वधाईआ। संगत साची होवे साथन, सोहणा संग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं वेखां अज्ज दी रुत्ती, रुत्तड़ी रुत्त सुहाईआ। अगली खेल दस्सां सुच्ची, सच नाल वड्याईआ। पिछले साल जो कटी बुत्ती, पैंडा ल्या चुकाईआ। उस दी औध अजे नहीं मुक्की, बाकी नज़री आईआ। आत्मा सिँघ कोल करनी खुशी, लंगर संगत वाला वरताईआ। आसा तृष्ना मेटणी भुक्खी, मेहरवान आपणा रंग चढ़ाईआ। बख्श के आउणी निशान वाली जुत्ती, रविदास वण्ड वण्डाईआ। लाल रंग दी इक्क गुच्छी, सूत्र तागे नाल सुहाईआ। प्रीतम सिँघ ने जाणा चुक्की, हथ्थ चार वेरां बदलाईआ। रात दीपक जगाउणा पंज मुखी, घृत दीप विच सुहाईआ। ढोला गाउणा प्रभ दा तुकी, सच तेरी सरनाईआ। सब ने रोटी खाणी रुक्खी, घिउ नाल ना कोए चुपड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए रंगाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे इक्की पोह दी रखां आस, आसण प्रभ दा वेख वखाईआ। रविदास दा जल ग्लास, नौ दिन बैठे राह तकाईआ। खेल अजीब तमाश, परदा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना

इक्क सुणाईआ। इक्की पोह कहे मेरी पावे ज़रूर इक्की, इक्की पिछली नाल रलाईआ। किस बिध अगली चल्ले सिक्खी, सति धर्म दए दृढ़ाईआ। जिस दी धार होणी तिक्खी, अणयाला तीर चलाईआ। साची बिधी जाणी लिखी, जिस नूं सुण के डरे लोकाईआ। नाल समझाउणी गोबिन्द दी चिट्ठी, जेहड़ी बिन पत्रयां रखी छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे देवे माण वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण कहे जन भगतो सौणा विच अन्धेरा, जगत अन्धेरा दए वखाईआ। पुरख अकाल नौ खण्ड पृथ्मी पाउणा फेरा, नौ नौ सकिंट इक्क इक्क खण्ड वण्ड वण्डाईआ। ब्रह्मण्डां देणा गेड़ा, बिन कदमां कदम टिकाईआ। रवि ससि वखाउणा सञ्झ सवेरा, परदा ओहला आप चुकाईआ। दीन दुनी दा तक्कणा झेड़ा, चारे कुण्टां खोज खुजाईआ। जन भगतां वसदा वेखणा खेड़ा, काया मन्दिर फोल फुलाईआ। प्रभ दा समझे ना कोई रैण बसेरा, आवण जावण पन्ध ना कोए मुकाईआ। निरगुण धार करे मेहरा, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भिन्नड़ी रैण तेरे विच वेखे केहड़ा केहड़ा, जेहड़ा प्रभ दी ओट तकाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल अख़बार रपोरटरां नाल ★

जगत संसार दुनिया कायनात भविश अनोखा, आदि पुरख अबिनाशी करता एका एकँकार वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दृष्टी अंदर धोखा, माया ममता मोह विकार हँकार परदा सके ना कोए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश निर्मल दिसे ना कोई जोता, कूड़ी क्रिया अन्ध अज्ञान परे ना कोए कराईआ। साचा मार्ग राज राजान शाह सुल्तान निरगुण सरगुण किसे ना सोचा, मन मति बुद्धी परदा सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा भविक्खतां विच लिख के गए पोथा, सो करनी दा करता कुदरत दा मालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चौदां लोका, चौदां तबक वेखे थाउँ थाँईंआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अकाल दीन दयाल इक्क ढईआ अगला दस्से मौका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी कल वरताईआ। सृष्टी दा वक्खरा निराला भविश, भाख्या विच सके ना कोए जणाईआ। बिना पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दूसर किसे ना सके दिस, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। वेद व्यास हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द जो गए लिख, सो

स्वामी समरथ धुर दा हुक्म दए वरताईआ। आत्म परमात्म दीन दुनी साचा रहे कोई ना हित, मित्र प्यारा सज्जण मीत संग ना कोए निभाईआ। शाह सुल्तानां जीव जहानां नाड़ बहत्तर उबले रत, रत्तो रत वेखे कूड़ लोकाईआ। सम्मत सम्मती खेल होणा अनडिठ्ठ, निरगुण निरवैर निराकार परवरदिगार सांझा यार आपणा हुक्म इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। सृष्टी दा भविश समझे कोई ना भाओ, भावना विच किसे ना आईआ। इक्क दूजे नूं सारे लाउँदे दाउ, धर्म नीती बैठी मुख भवाईआ। जगत विद्या कुरलावे वांग काउँ, हँस रूप ना कोए बदलाईआ। प्यार रिहा ना पुत्तर माउँ, पित पूत गोद ना कोए सुहाईआ। झगड़ा दिसे थाँईं थाउँ, लहिंदी दिशा पए दुहाईआ। राष्ट्रपति भुल्लणे राहों, जगत सियासत कम्म किसे ना आईआ। करे खेल अगम्म अथाहो, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण करे सच न्याउँ, धुर फ़रमाना इक्को हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत भविश भावी हथ्थ फड़ाईआ। कायनात भविश चार कुण्ट हाहाकार, हक हू नाअरा नज़र कोए ना आईआ। करे खेल परवरदिगार, या मुबीन बेपरवाहीआ। जो कलमयां विच कर

१०३६ के गया ख़बरदार, धुर संदेसा पैग़ाम इक्क सुणाईआ। सो जलवा नूर कर उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता वेखे थाउँ १०३६

२० थाँईंआ। सदी चौधवीं मुहम्मद कर के गया पुकार, चौदां तबक देण दुहाईआ। लेखा लिख ना सके कोई विच संसार, कातब २०

कलम ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त आपणी खेल वरताईआ। भविश कहे मैं वेखां चार कुण्ट बिना अक्ख, निरगुण निरगुण ध्यान लगाईआ। शाह सुल्तानां वज्जण वाली सट्ट, शब्द अगम्मी हुक्म बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया कलयुग खेड़ा होण लग्गा भठ्ठ, धरनी धरत धवल धौल दए दुहाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। बिन तेरी किरपा चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दहि दिशा कोई ना सके रख, रखक नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म रिहा कोई ना रस, रस्ता भुल्ली कूड़ लोकाईआ। सति दुआर सति धर्म दा खोल्ह इक्को हट्ट, जिस घर दे वणजारे गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर हकीकत वेख हक, सति सच इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची हक मुकाम धुर दी खेल आप वरताईआ। इस दा अर्थ बड़ा निक्का, निक्कयों वड्डे दए बणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीन दुनी दा बदलण वाला सिक्का, सिक्के विच सिकम निशाना रिहा वखाईआ। जेहड़ा खेल किसे नहीं दिसा, बिना अक्खां अक्ख दए खुल्हाईआ। सब नूं याद आउणा

पिच्छा, अगला भाणा जगत दुखदाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कुछ निकलण वाला सिट्टा, साहिब स्वामी अन्तरजामी परदा सब दा दए खुल्हाईआ। जगत प्रधानां पैण वाला पत्थर इट्टा, सिर सके ना कोए बचाईआ। सब दा हिसाब सच दवारे उत्ते होया काग़ज़ कोरे चिट्टा, अगला लेखा समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परदा ओहला आप चुकाईआ। जो समझे सच दा अर्थ, अर्थ आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। निज नेत्र कर के करे ओह दरस, जिस दा दरस कीत्यां जगत तृष्ना रहे ना राईआ। अगली पिछली मिटे हरस, हवस कूड़ी दए बुझाईआ। जो निरगुण धार निरवैर हो के आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चार जुग दी पूरी करे शर्त, शरअ विच्चों शरअ दए बदलाईआ। अग्गे रहे कोई ना फ़र्क, फ़ैसला हको हक सुणाईआ। मकरूजां देवे पिछला कर्ज़, अग्गे इक्को मार्ग दए जणाईआ। जिस दे अंदर सच प्रीती हो गई दरज, दरगाह धुर दी वेख वखाईआ। पढ़न लिखण वाली नहीं फ़रद, बुद्धी सके ना कोए समझाईआ। प्रभ दा खेल सदा असचरज, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे अन्धेरा गर्द, दहि दिशा खोज खुजाईआ। मुहब्बत विच समझणा प्यार वाला अर्थ, अर्थ विच अर्थात, मूल अथवा असथिती इक्को नज़री आईआ। अन्तर आवाज़ कहे ठीक, हुक्म बेपरवाहीआ। कलयुग वेख अन्धेरा तारीक, निज लोचण नैण करे रुशनाईआ। जो सच दवारे दे वसनीक, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जित्थे तुट्टे ना कदे प्रीत, प्रीतम इक्को मिल के वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ गावे गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। त्रैगुण माया कर अतीत, पंज विकारा लेखा दए मुकाईआ। काया माटी तन वजूद कर के ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात दीन मज़्ब खहिड़ा दए छुडाईआ। रिपोर्टर करन ओस दी तस्दीक, जिस दी शहादत आत्मा परमात्मा नाल भुगताईआ। दोवें इक्क दूजे दी रखण उडीक, राह तक्कण धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ठीक दा ठाकर ठाकर दा सागर संसार सृष्टी नज़री आईआ। ठीक कहे पवित्र रसना ज़बान, जेहवा नाल वड्याईआ। जिस दी सिफ्त करे कुरान, हदीसां विच दृढ़ाईआ। सो मालक महबूब नौजवान, मुहब्बत इक्को इक्क कमाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। बुद्धी तों परे इक्क ज्ञान, जिस नूं अनुभव कहि के सारे रहे गाईआ। शब्द सुरती दी धुनकान, अनुरागी राग सुणाईआ। जो मंज़ल चढ़ के वेखे सो साहिब करे पहचान, बेपहचान आपणा परदा दए उठाईआ। सेठी साहिब दा सोहणा जेहा ब्यान, अक्खरां विच्चों अक्खर पत्थरां तों परे प्रेम दी धार विच खोद खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहार

सर्ब इन्सान, घट घट अन्तर निरंतर परदयां विच्चों परदा आप चुकाईआ। धन्न कहो इक्क मालक, जो वाहिद नज़री आईआ। जिस दी सृष्टी सारी ख़ालक, मख़लूक दा मालक बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी बदले इबादत, नाम बन्दगी दए समझाईआ। जिस दी सिफ्तां विच गुर अवतार पीर पैगम्बर लिखदे आए इबारत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अंजील कुरान दए गवाहीआ। उस दा काया मन्दिर अंदर निरगुण धार होवे तुआरफ़, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। बाहरों मंगे ना कोए सफ़ारश, सफ़िआं वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। साचे दर महल अटल उच्च मनार गृह मन्दिर मुकामे हक हकीकी कराए ज़िआरत, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा इक्क खुल्हाईआ। दर आयां कोई रहिण ना देवे अन्तर निरंतर जगत तृष्ना आतश, सनातन इक्को धार बंधाईआ। दोवें कहिण असीं इक्के हो गए हथ्थ, सीस जगदीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी सदा समरथ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाउँदा आया रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। अवतार पैगम्बर गुरुआं मार्ग दस्स, रहिबर हो के करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण करा के जस, सिफ्तां विच ढोले रिहा सुणाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख नूर जोत करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी मार के सट्ट, सोई सुरती आप उठाईआ। सच दुआर दा खोल्ह के हट्ट, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। जिस कारण एह हो रिहा इक्ट्ठ, पूरब दा लहिणा सारा दए समझाईआ। किसे दा नहीं कोई वस्स, हुक्म चले धुरदरगाहीआ। अन्तर आत्म सब नूं मिले रस, रस्ता इक्को इक्क वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझा होवे जस, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। ज्यों भावे त्यों सदा लए रख, हरि करता करनी दा मालक इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा ओह दो हथ्थ, जेहड़े हथ्थ जुड़यां जोड़ी प्रभ आपणे नाल मिलाईआ।

★ २१ पोह शहिनशाही सम्मत ३ आत्मा सिँघ दे गृह मलूवाल ज़िला अमृतसर ★

पिछला लहिणा पूरा कर, अग्गे लेखा आपणे विच रखाईआ। मरन तों पहलों देवे वर, पिच्छो लोड़ रहे ना राईआ। अमृत नुहा के साचे सर, जन्म जन्म दी मैल धवाईआ। जो कौल इकरार गया कर, धन्ने धनाढ दए वड्याईआ। सो चल के आवे दर, दूर दुराडा फेरा पाईआ। जेहड़ा अक्खर किसे नहीं ल्या पढ़, उह गुरमुख दए पढ़ाईआ। जींवदयां अंदर जाए वड़, घर आपणा इक्क सुहाईआ। अगला लेखा चुक्के डर, चुरासी पन्ध कटाईआ। वखावे अगम्मा गढ़, जिस दी बणत ना कोए समझाईआ। फड़ा के आपणा लड़, लड़ी लड़ी नाल जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी जो भाणा रिहा जर, लेखा

ज़रा ज़रा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। हुण लै लै पिछला मूल, अनमुल्ल आप वरताईआ। बख्श के चरण धूल, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। जित्थे वसे हरि कन्तूहल, करता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर बरसावन फूल, बिन फूलां वरखा लाईआ। जित्थे बदले ना कोए असूल, असल असल विच मिलाईआ। एह आदि दा पिछला रूल, अन्त रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। पिछले जन्म दा लाल रंग दा गुछी डोरा, धन्ना अठ्ठे पहर तन्द बंधाईआ। पाणी दा भर कटोरा, अगली मंग मंगाईआ। रो के किहा मेरी पैरीं नहीं जोड़ा, भुखयां भुक्ख कटाईआ। पुरख अकाल किहा मैनूं अजे तेरी लोड़ा, कलयुग अन्त दयां समझाईआ। जिस वेले आवां बण के बांका छोहरा, शौहर सब दा आप अख्वाईआ। आत्म परमात्म दा गा के दोहरा, दुहरा आपणा वेस वटाईआ। दुनिया विच फिरां वाग चोरा, भगतां नाल भगवन हो के करां कुड़माईआ। वक्त लंमे तों लम्मा थोड़े तों थोड़ा, समां काल समझ कोए ना पाईआ। प्रीतम सिँघ ओस वेले खत्री सी इक्क रोड़ा, जिस घरों अन्न ल्या के रोटी सुक्की बणाईआ। अज्ज ओस दा लेखे लाउणा उह मोहरा, जिस मोहर दी समझ ना किसे समझाईआ।
१०४२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, नर आपणी कार कमाईआ। १०४२
पंच मुखी दीपक लाउ अग्ग, अग्नी लग्गे जगत लोकाईआ। जन भगतां दरस मिले उपर शाह रग, रघुपति लेखा आप
२० मुकाईआ। सन्त सुहेले बणाए धुर दे नग, नगमा आपणा नाम जणाईआ। बुद्धी रहे कूड़ ना कग्ग, कलमा इक्को दए सुणाईआ। २०
मन ममता देणी तज, लेखा कूड़ चुकाईआ। सच दवारे बहणा सज, जित्थे मिले माण वड्याईआ। जिस कारण आया अज्ज, अज़ल तों लए बचाईआ। एह ओस दी दिसे यद, जो धुर दा मालक नूर खुदाईआ। जिस नूं पिच्छे बख्शी पग्ग, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जगत जहान विच्चों कढु, एका घर वसाईआ। दुःख लग्गे किसे ना हड्ड, नाड़ी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल खिलाईआ। दीपक कहे मेरी जगदी जोती, जोतां वाली सीस निवाईआ। भगत सुहेला माणक मोती, गुरमुख गुर गुर दए वड्याईआ। जिस दे घर दी सुक्की रोटी, धने दा लहिणा रही मुकाईआ। वासना कूड़ रहे ना खोटी, खोटिउँ खरे बणाईआ। मंज़ल चाढ़े ओसे चोटी, जित्थे पाल सिँघ वसे वड्डा भाईआ। जन्म दा रहे कोए ना रोगी, सोगी चिन्त ना कोए जणाईआ। एह खेल प्रभ दा चोजी, चोजी प्रीतम हो के आप वखाईआ। राह तकदे गए वेदी सोढी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जो सब नूं देंदा रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम नूर खुदाईआ। उह बण के मालक मौजी, मजलस आपणी इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। दीपक कहे मैं वेखां दीपां वाला, दीप जिस नूं सीस झुकाईआ। जिस दा खेल जगत निराला, निरवैर निराकार निरँकार आप बणाईआ। सच दुआर सुहा सच्ची धर्मसाला, जन भगत गृह वज्जे वधाईआ। लेखा वेखे मानस जन्म हाला, पूरब माज़ी परदा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। दीपक कहे प्रभ धुर दे नूर, नूरी दे जणाईआ। किस बिध होयों मजबूर, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। की नाम करें मशहूर, मश्वरे गुर अवतार पैगम्बर देण सलाहीआ। की कारण होए ज़रूर, ज़रूरी आपणा फेरा पाईआ। अबिनाशी करता कहे मैं धन्ने दा मज़दूर, मजदूरी करके खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल प्रगटाईआ। दीपक कहे की कहिंदा धन्ना जट्ट, धनीआं दे धनी दे दृढ़ाईआ। किस कारण होया इक्ठ, परदा दे उठाईआ। की खोल्हण लग्गा हट्ट, वस्त की वरताईआ। की लेखा जाणे घट, गृह भीतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा समझाईआ। दीपक कहे मैं वेखां चार चुफेर, चौंह तरफी ध्यान लगाईआ। की करे प्रभू मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। की कूआं रिहा गेड़, हलट हल्ल चलाईआ। की बन्न्हे रस्सा
१०४३ बेड़, आपणी गंढु पवाईआ। की वस्त्र रखें तेड़, ओढन सीस छुहाईआ। किस वसें नगर खेड़, मन्दिर सोभा पाईआ। १०४३
की परत के आ गया फेर, आपणा वेस वटाईआ। गेड़ के उलटा गेड़, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। दुराडा समां करके
२० नेड़, नेरन नेरा होके वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। दीपक २०
कहे मैनूं दिसे धन्ने दी दादी, दाअवे नाल जणाईआ। जिस ने बन्न्ही लाल तड़ागी, रोड़ा प्रीतम सिँघ दए फड़ाईआ। इक्क तन्द तोड़के विच्चों जिस बन्न्ह्या नाल परांदी, सीस आपणे नाल छुहाईआ। खुशीआं अंदरों गीत गांदी, फिरे चाँईं चाँईंआ। कटोरा हथ्थ उह उठांदी, जिस नूं सांभ के रख्या उच्ची थाँईंआ। ओहदे विच्चों ओहदे फुल्ल दा दर्शन पांदी, जो थोड़्हा उच्चा नज़री आईआ। उस विच कदी पाई नहीं सी रिद्धी हाण्डी, साफ़ करके घर विच सदा टिकाईआ। ना कुछ पींदी ना कुछ खांदी, बिन खाधिआं पीतयां धो के करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। धन्ने दे लक्क दा लाल तग्ग, सोहणी बणत बणाईआ। खुशीआं वाली खेल जग, दादी वज्जे वधाईआ। मालविउँ आंदी सद्द, पिच्छा समझ कोए ना पाईआ। डंगोरी सहारे आई भज्ज, लत्तों डुड्डी ना कोए चतुराईआ। खुशीआं अंदर हड्ड, टप्पण चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल वेख के होवे गद गद, आपणी खुशी बणाईआ। जिस दा हुक्म ना होया रद्द, आसा सब दी वेख वखाईआ। एह तागा जिस विच कदे ना पवे डब्ब, दूजा रंग ना कोए बदलाईआ। जिस कारण

धन्ने नूं मिलण आया रब्ब, रूप रंग अवर ना किसे वखाईआ। जग अक्खां नाल ना प्या लभ्भ, ठाकर पत्थर ना कोए वड्याईआ। प्रेम दी धारों हो प्रगट, घट आपणा आप जणाईआ। धन्ने तैनूं मूर्ख कहिण जट्ट, जट्ट मूर्ख जगत कहके गाईआ। आह लेखा इक्क वच्च, पढ़के दे समझाईआ। धन्ने किहा की एह सच, जो मैनूं रिहा फड़ाईआ। मेरे लूं लूं अंदर गया रच, मस्ती अंदर मस्ती दिती बदलाईआ। कौल इकरार कर पक्क, पक्की तरां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। बुढ्ढी दादी कहे सुण धन्नू, धन्नया तैनूं दयां जणाईआ। पत्थरां विच्चों ठाकर कदे ना मन्नू, ऐवें मथ्थे रिहा घसाईआ। सुण मेरे लाडले चन्नू, तैनूं दयां समझाईआ। जिंनां चिर ओहदा प्रेम ना बन्ने पल्लू, मन दी गंढ्ढ घुटाईआ। ओनां चिर सुनेहड़ा कदे ना घल्लू, ना सुत्तयां लए जगाईआ। सुण मेरे लाडले बलू, बच्चयां तैनूं दयां जणाईआ। उह भाग लगावे काया खल्लू, ख़लक विच ना कोए रुशनाईआ। सद आत्म परमात्म रलू, रल मिल झट लँघाईआ। सृष्ट सबाई आपे छलू, अछल छल आपणी कार कमाईआ। नढ्ढया उह कटोरा भर के रखीं जलू, नौ दिन पिच्छो तैनूं मिले तेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। धन्ना कहे

१०४४ केहड़ा कटोरा अम्मां, अम्मढ़ी दे जणाईआ। ओन फड़ वखाया छन्ना, सवा सेर वण्ड वण्डाईआ। अग्गों कर के दो चार १०४४

२० गल्लां, गलवकड़ी लई पाईआ। धन्ने तेरा मालक आवे कल्ला, आपणा वेस वटाईआ। तैनूं पत्थरां कीता झल्ला, झल्लया २०

झलक ना किसे वखाईआ। पंडत पै गए डूँघी डल्ला, मस्तक तिलक ललाट ना कोए रुशनाईआ। आह लै लै मुठ्ठ चना, तेरी झोली दयां पाईआ। सुणना नाल कन्नां, तैनूं दयां सुणाईआ। तेरा टुक्कर खावे चप्पा खंना, अद्धी विचो अद्धीं कट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। धन्ना कहे अम्मां मैनूं ठाकर दिता पत्थर, ब्राह्मण दिता जणाईआ। उस दे उपर ओम अक्खर, नोच के दिता बणाईआ। हथ्थ फेर के उपर सिखर, चोटी दिती दृढ़ाईआ। भवा के एधर ओधर, चारों कुण्ट वखाईआ। मैं वेखां बित्तर बित्तर, अक्खां नाल अक्खां आप मिलाईआ। मैनूं किथों मिले मित्र, प्यारा धुरदरगाहीआ। मैं भुक्खा नंगा पैरीं नहीं छित्तर, बन खण्ड पन्ध ना कोए मुकाईआ। दादी किहा ना कर फ़िकर, फ़िकरा दिता सुणाईआ। तेरे विच्चों आवे निकल, तेरा बेपरवाहीआ। जेहड़ा कदे ना होवे भिटड़, भिट्टयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। दादी कहे धन्नयां केहड़ा तेरा ठाकर, जो पंडत दिता फड़ाईआ। धन्ने झट नुहा के नाल पाणी गागर, सहिजे दिता वखाईआ। लाल तागे नाल बन्नू के दिता आदर, सोहणी गंढ्ढ वखाईआ। उत्ते पा के चिट्टी चादर, अग्गों घूँगट ल्या बणाईआ। आह वेख अम्मी

साजण, सिरों फड़ के दिता हिलाईआ। दादी कहे एह पिछला झूठ रिवाजण, बच्चू तैनूं दयां दृढ़ाईआ। साहिब कोई पंडत नहीं महाजन, क्षत्री ब्राह्मण रूप ना कोए वटाईआ। जो सारी सृष्टी दी बणावे साजण, पत्थर पाहन आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। दादी कहे धन्नयां ठाकर दे सिर ते कोई हथ्थ ना सके फेर, बग़ल विच ना कोए टिकाईआ। जलां दे वहिणां विच नहीं लग्गे ढेर, खड्डां विच (ना) देण दुहाईआ। एह लहिणा ना सकण नबेड़, लेखा लेख ना कोए बणाईआ। जे तेरा ठाकर स्वामी करे मेहर, मेहरवान होए सहाईआ। उहनूं आउँदयां ना लग्गे देर, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। तूं उठ इक्क वेर, रो के दे दुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा चेर, चिरी विछुन्ने लै मिलाईआ। आशा दा ओहदे अग्गे ला दे ढेर, खाण पीण एहो दे समझाईआ। जिंना चिर ना आवें मेरे नेड़, अक्खां पुट्ट के जगत ना दर्शन पाईआ। जे करें हेर फेर, भगत भगवान दी रीती ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे बणाईआ। धन्ना कहे अम्मा की करां अरदास, मैनूं दे जणाईआ। पूरी होवे आस, तृष्ना दए बुझाईआ। उस भर के पाणी दा ग्लास, धन्ने दिता फड़ाईआ। बच्चू उस कटोरे वल झाक, जिस नूं मैं साफ़ कर
१०४५ के आपणे घर रखाईआ। अक्खां तों पिच्छे आपणा खोल्ह ताक, परदा रहे ना राईआ। धन्नयां बोल दे तूं मेरा बाप, जनण १०४५
वाली नहीं कोई माईआ। वेख किस तरह्रां प्रगट होवे आप, आपणा परदा दए उठाईआ। पत्थरां दी मुके वाट, पंडतां दा
२० झगड़ा रहे ना राईआ। सिख लै निक्की जेही जाच, जाचक हो के सेव कमाईआ। उह दिन सी इक्की पोह दी रात, सम्मतां २०
वाली बिक्रमी बणत ना कोए बणाईआ। धन्ने कीता याद, बिन अक्खां नीर वहाईआ। मेरा खेड़ा कर आबाद, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। धन्ने किहा अम्मां गावां की, मैनूं दे समझाईआ। पिछली छड्डां लीह, रस्ता लवां बदलाईआ। किस बिध कहवां ओस नूं जी, किस बिध सिफ्त सालाहीआ। की मैं ओहदा पुत्तर बणां कि धी, धर्म दी धार दे समझाईआ। दादी मुख चों कहि के सी, इशारे नाल सुणाईआ। ओहदे चरणां इक्को नी, सीस जगदीस भेंट चढ़ाईआ। बलिहारी ओसे तों थी, आपा वार वखाईआ। थोड़्हा जेहा उंगली नूं ला के घी, पंजां उंगलां नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप सुणाईआ। धन्ना कहे मैं की गावां गीत, मैनूं दे दृढ़ाईआ। किस बिध करां प्रीत, प्रीतम लवां मनाईआ। उत्तों रात रही बीत, सुत्ती जगत लोकाईआ। महीना पोह ठंडा सीत, दूए दा एके नाल जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। धन्ने दी रो के निकली चीक, धाहां मार सुणाईआ। मैं करदा ओस दी उडीक, जेहड़ा लभ्भयां हथ्थ ना आईआ। दादी ने हथ्थ विच लोहे दी फड़ के सीख, ठोकर

नाल दिता हिलाईआ। वे धंनूं मैनूं उत्तों आई कोई हदीस, मेरे अंदर दिता सुणाईआ। मैनूं बिरहु दी पई चीस, दुखड़े नाल कुरलाईआ। बच्चू जे तूं मेरा मैं तेरा गाएं गीत, तैथों वक्खरा नहीं तेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे उठाईआ। धन्ना कहे मैं की कहवां केरां, किरत दी समझ कोए ना आईआ। प्रभू तूं दस्स की मैं तेरा जां तूं मेरा, मेरा तेरा मैनूं समझ किछ ना आईआ। क्यों पाया मेरे अंदर झेड़ा, झगड़ा दे गवाईआ। बच्चयां नाल ना करया कर बखेड़ा, पिछली आदत लै बदलाईआ। क्यों दुःख देवे बथेरा, बिरहु विच सताईआ। मैथों हुण हुन्दा नहीं जेरा, झल्ली ना जाए जुदाईआ। मैं छड्ड जाणा काया खेड़ा, बिन तेरे रैण ना कोए विहाईआ। पिच्छे दुःख वेख्या बथेरा, पत्थर पत्थर तन ना कोए बदलाईआ। हुण ज़िंदगी दा डुब्बण लग्गा बेड़ा, बिन तेरे पार ना कोए कराईआ। दर्शन देदे हो के नेरा, वड्डे उच्चे क्यों आकड़ विच आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लै मिलाईआ। धन्ना कहे दस्स केहड़ा ठाकर चंगा, किस नूं सीस निवाईआ। जेहड़ा पत्थर रुढ़े विच गंगा, पुठ्ठा सिध्धा हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। जेहड़ा लभ्भे विच्चों छन्ना, कन्ढ्ढा रगड़ रगड़ के आपणा पासा लए घसाईआ। जेहड़ा दिसे सुरस्ती संगा, तरबैणी वहिणी विच डुबाईआ। जेहड़ा आया गोदावरी वण्डा, मिट्टी गारे विच दए दुहाईआ। भेव

१०४६ २० दस्स सूरे सरबंगा, तेरी इक्को आस तकाईआ। अम्मी कहे सुण लाडले चन्दा, बुढ्ढी दादी आप समझाईआ। उह वसे सदा १०४६ २०

तेरे अंगा, घर विच बैठा सोभा पाईआ। वेखीं किते बोल ना कढ्ढीं मंदा, रसना नाल कुरलाईआ। प्रभू कदे ना होवे गंदा, जो मात गर्भ अंदर वड़ के सब दा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। धन्ना कहे मेरे यार, आपणी यारी दे समझाईआ। ऐवें कहिंदे तेरा भगतां नाल प्यार, प्यारा बण के दे वखाईआ। अंदरों आई इक्क आवाज़, सहिज नाल सुणाईआ। तेरे यार दा दस्सां राज़, परदा इक्क उठाईआ। कन्नों फड़ के हलूण के खोल्ही जाग, सुत्ते दिता उठाईआ। इक्क वेरीं झाक, झाकी आपणी इक्क जणाईआ। परदा खोल्ह के ताक, जोत करी रुशनाईआ। धन्नयां जिस वेले महीना आया विसाख, थित एहो वज्जी वधाईआ। तेरा जंगल विच कुछ माल जाणा गवाच, लभ्भयां नज़र कोए ना आईआ। तूं बहणा उत्ते ख़ाक, मिट्टी उत्ते आसण विछाईआ। मन दे पत्थर नूं करना साफ़, एह वट्टा ब्राह्मण ने दिता टिकाईआ। फेर करीं अरदास, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। कोल सुक्का रखीं घास, तिनके पंज सत्त तुड़ाईआ। जेहड़ा पाणी दा ग्लिास, दादी तेरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। छन्ने विच पा के ल्याईं आप, वेला वक्त आप सुहाईआ। मैं बण के आवां तेरा बाप, दर्शन देवां चाँईं चाँईंआ। कुछ होर जावां आख, सहिज नाल सुणाईआ। सुक्का टुकड़ा मेरा

होणा खाज, कटोरा छाछ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धन्ने दा आया उह वक्त, रुत्त आपणा रूप वटाईआ। बणन लग्गा भगत, प्रभ दा ध्यान लगाईआ। पूरी होण लग्गी शर्त, शहिनशाह आपणा कर्म कमाईआ। आए उत्ते फर्श, निरगुण वेस वटाईआ। करया आप तरस, रहमत दिती कमाईआ। सति सरूप कर दरस, धन्ने ल्या उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धन्ने किहा वाह तेरा मेरा बणया जोड़ा, जोड़ी लई बणाईआ। मेरे माल दा ला इक्क मोड़ा, फेर मन्नां मेरा इक्क गुसाँईआ। पुरख अकाल कहे धन्नया वक्त थोड़ा, छेती छेती कम्म दे समझाईआ। धन्ने किहा मेरी पैरीं टुट्टा जोड़ा, कोई होर ल्या के दे बदलाईआ। पुरख अकाल किहा ओए प्रभ नूं लुट्टण वाल्या चोरा, घर आए नूं संन्ह लएं लगाईआ। तेरा बल होणा दोहरा, तैनूं दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। पुरख अकाल कहे ओ धन्नयां लक्क की बध्धा धागा, मैनूं दे वखाईआ। धन्ना कहे पहलों मेरी दुरमति मैल धो दाग़ा, दग़यां तों लै बचाईआ। प्यार कर सांझा, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाईआ।

१०४७ पुरख अकाल कहे सुण धन्ने धनवन्त, तैनूं दयां सुणाईआ। तेरा मालक सदा बेअन्त, बेपरवाही विच समाईआ। जिस वेले आवे कलयुग अन्त, अन्तश्करन वेखे जगत लोकाईआ। जेहड़ा तैनूं ते तेरी दादी नूं दस्सया मंत, एह सारयां भगतां नूं दए पढ़ाईआ। किसे नूं लोड़ रहे ना किसे पंडत, पत्थरां दी पूजा ना कोए वखाईआ। उह मेरे पक्के होणे सन्त, जिन्हां दी सत्ता देणी बदलाईआ। बण के सुहाग कन्त, आपणे अंग लगाईआ। हरख सोग मिटा के चिन्त, जन्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे संग रखाईआ। धन्ना कहे की एह सच, सच दे समझाईआ। भाग लगावें काया माटी कच्च, कंचन गढ़ तुड़ाईआ। पुरख अकाल कहे भगतां दे लूं लूं अंदर जावां रच, रचना आपणी दयां वखाईआ। मार्ग धुर दा इक्को दस्स, दहि दिशा पार कराईआ। सांझा ढोला कर के जस, सिफ्तां विच वड्याईआ। तेरा पूरा करां हक, हुण दा लेखा दयां चुकाईआ। जिस विच रहे कोई ना शक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। धन्ना कहे पहलों मेरे पैरां नूं ढक, नंगा फिरया वाहो दाहीआ। पुरख अकाल कहे बच्चू हुण एह खहिड़ा छड्ड, अगला ध्यान लगाईआ। इक्क वेरां होणा पए अड्ड, मास नाड़ी हड्ड छुडाईआ। फेर तैनूं घल्लां विच जग, जगजीवण दाता हो के दयां वड्याईआ। प्रगट हो के तुहाडी विच यद्द, लहिणा देणा झोली पाईआ। भगत दवारा जाणा सज, मूर्ख गवारां जट्टां मिल के वज्जे वधाईआ। उथ्थे आवां भज्ज, भजन

बन्दगी एहो याद कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा कहके जिस वेले चाहो लैणा सद्द, हाज़र हज़ूर हो के नज़री आईआ। जे तुसीं मैनूं जाओ छड्ड, मैं फिर वी मुड़ के लवां मिलाईआ। दो जहानां विच्चों लवां लभ्भ, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं पत्थरां विच रहिण वाला नहीं रब्ब, गुरमुखां दे अंदर वड़ के डेरा लाईआ। प्रगट होवां झब्ब, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। उह सारे लए सद्द, जिन्हां दा लेखा तेरा पिछला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लहिणा झोली पाईआ। धन्ना कहे की फिर मैं होवां धन्ना, मेरी माँ धन्ना कहि के बुलाईआ। पुरख अकाल किहा तेरा पिछला साफ़ करना पन्ना, नाम दा नाम ना कोए सलाहीआ। तन वजूद बदलणा तनां, मन बुद्धी नाल चतुराईआ। मेरा खेल होणां नवां, नवां राह चलाईआ। तेरा लहिणा देणा रखणा जमां, बिन तेरे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। बिना पाणी दे ग्लिास तों होर नहीं करना तमअ, सुक्की रोटी खा के झट लँघाईआ। एह उह पिछली वेख लै शम्हां, जेहड़ी तेरी शहादत दए गवाहीआ। वेले नाल सुहाया समां, समें दा मालक भुल्ल कदे ना जाईआ। उह बुढ्ढड़ी दादी अम्मा, पक्खो वालों चलके आईआ। तेरा तन कटोरा ओहो छन्ना, जल ग्लिास वाला आपणे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१०४८ किरपा कर, सच घर दे वड्याईआ। धन्नयां तेरा ना होणा आत्म, सिँघ दए वड्याईआ। मेरा शब्द होणा परमात्म, आत्म १०४८

परमात्म मिलके वज्जे वधाईआ। भेव खुल्हाणा बातन, परदा आप उठाईआ। धुर दा बणा साकण, सगला संग रखाईआ।

२० तैनूं भोला फेर वी सारे आखण, कमलयां वांग गल्लां करके आपणा झट लँघाईआ। फेर तूं लभ्भणा ओसे पातन, जिस पतण २०

ते आया परत कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा लेखे लाईआ। ग्लास कहे मेरे विच्चों अमृत पी लै घुट्ट, घुट घुट गले लगाईआ। जगत जहान कूड़ा नाता गया छुट, छुट्टया मोह लोकाईआ। ओस दा बणया पुत्त, जो भगतां गोद टिकाईआ। बदल के आपणा रुख, करवट लई उलटाईआ। प्रभ चरण दा साचा सुक्ख, आत्म परमात्म मिलके वज्जे वधाईआ। साहिब स्वामी सदा खुश, खुशीआं विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सरन मिले नहीं कोई घाटा, तोट रहे ना राईआ। जन्म मिले मिले पुरख समराथा, एहो वड्डी वड्याईआ। नाम मिले मिले आत्म गाथा, एहो सच पढ़ाईआ। मालक मिले मिले धुर दा दाता, जो भुक्ख्यां दए रजाईआ। साहिब मिले दीनां नाथा, अनाथां होवे सहाईआ। सतिगुर मिले जो आत्म होवे जाता, जोती जाता धुरदरगाहीआ। गुरू मिले जो बणे पिता माता, मात पित हो के आपणी गोद उठाईआ। पुरख अकाल मिले जो पिछला पूरा करे वाका, वाकिफ़कार आपणा लए बणाईआ। दीन दयाल मिले ते मिले धुर दा साथा, अद्धविचकार

ना कोए अटकाईआ। जे अग्गे जाण दी हुण छेती होवे आसा, उह दिन देणा समझाईआ। तेरी मर्जी नाल ओसे दिन कर देवे बन्द खलासा, नवीं धार दए चलाईआ। फेर कहिणा एह धुर दा उह बापा, जो बच्चयां उंगली लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग वखाईआ। रंग कहे मैनूं चाढ़ो कर के रंग, रंग अगला दयां वखाईआ। भगतो अग्गे जाओ नशंग, डरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जुग जुग भगतां दी एहो मंग, प्रभ मिल के वज्जे वधाईआ। बाकी सृष्टी दिसे नंग, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। सब दी नंगी होई कंड, पुश्त पनाह ना कोए वखाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया गंद, तृष्ना मन ना कोए तृप्ताईआ। जिन्हां नूं प्रभ दा मिल गया संग, तन वजूद मिले वड्याईआ। आत्मा नूं देवे अनन्द, सांतक सति सति समाईआ। गुरमुखो बणयो उह चन्द, जिस चन्द नूं चन्द वेख के खुशी बणाईआ। आओ पिछली टुट्टी लओ गंढ, गंढी फेर ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। जन भगतो प्रभ मिलण दी इक्को जुगती जुग जुग चली आईआ। जिस दा सीस झुके नाल फुरती, फ़ुरनयां तों बाहर आपणा रंग रंगाईआ। सदा जुड़ी रहे सुरती, जो हिरदे हरि हरि गाईआ। मुहब्बत बणी रहे धुर दी, धुर दी धार नाल प्रनाईआ। एह खेल सच्चे सतिगुर दी, विछड़यां रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१०४६ कर, सद भाणे विच रखाईआ। दीप कहे क्यों मेरे पंज मुख, भगतो दयो समझाईआ। भगत कहिण बस्स कर चुप्प, एथे १०४६
२० चले ना कोए चतुराईआ। ओए दीपा सानूं बाहरों भावें अन्धेरा होवे घुप्प, अंदरों प्रभ विछड़ ना जाईआ। दीपक कहे मैं २०
तुहानूं लवां पुछ, मैनूं दयो समझाईआ। तुहानूं विछोड़े दा की दुःख, याद विच आह ना कदे लगाईआ। जे अंदर उठे हुक, होका दे के दयो सुणाईआ। भगत कहिण दीपका असीं पढ़दे इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा फ़र्क रिहा ना राईआ। बण के ओहदे सुत, गोदी बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच गृह इक्क सुहाईआ। दीपक कहे मेरे विच वेखो बत्ती घृत, आपणा रंग वखाईआ। जुग चौकड़ी वेखे फिरत, फिर फिर फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर नाम दी करदे किरत, माला मणकयां वाली फराईआ। लाउँदे रहे सुरत निरत, दिवस रैण ढोला गाईआ। जन भगत कहिण असीं प्रभ दी कोई कढ्ढणी नहीं किरस, छोटा हिस्सा ना वण्ड वण्डाईआ। असीं ओस दे प्यारे बण गए निरस, निकयाँ तों वड्डे दए बणाईआ। दर आया कदी ना देवे झिड़क, फड़ बाहों गले लगाईआ। सच दवारयों कदे ना जाईए थिड़क, दर बहि के खुशी मनाईआ। जिस ने लोक परलोक दो जहान छड्डे रिड़क, मधाणा आपणा नाम रखाईआ। उस दा दरवाज़ा बन्द कदे ना होवे खिड़क, खुल्ही ताकी सब नूं वेख वखाईआ। दीपक कहे ओ भगतो ओस ने कोई पहनी तलवार किरच,

आपणा रूप बदलाईआ। की वड़े किसे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ चर्च, चर्चा की जणाईआ। की पल्ले ओहदे ख़र्च, की आपणी कार कमाईआ। जन भगत कहिण उह मालक फर्श अर्श, जिस नूं सारे सीस निवाईआ। मेहरवान साडे उत्ते कर के तरस, तरसदयां नूं ल्या मिलाईआ। सानूं रही ना कोई हरस, हवस दिती गवाईआ। एहो खेल असचरज, जो पिछले लहिणे रिहा मुकाईआ। पता नहीं किथ्थे सांभ के रखी फ़रद, किथ्थों पड़दे लए फुलाईआ। प्रीतम सिँघ उह रोड़ा, जिस कदी नहीं सी ल्या धड़त, सौदा सच दे हट्ट विकाईआ। लाल रंग ओसे दी जड़त, जो गुरमुखां जोड़ जुड़ाईआ। जोड़ा बणया नहीं अनघड़त, भगत भगवान गंढु रखाईआ। जल ग्लिास आया परत, वट्टा छन्नयां दए गवाहीआ। एह महीना सर्दी वाला सरद, सारयां रिहा ठराईआ। गुरमुखां वण्डे दर्द, भगतां होए सहाईआ। पिछली याद रखी अरज़, हुण बेनन्ती ना कोए कराईआ। आपणा पूरा करन आया फ़र्ज़, धुर दा मालक फेरा पाईआ। अन्त वेले दु:ख वाली लग्गणी नहीं कोई मर्ज़, सहिज लए उठाईआ। रंग होण नहीं देणा ज़रद, लाल गुलाला दए बणाईआ। पिछला लहिणे दा कर्ज़, मकरूज़ हो के आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, जन भगतां मुद्दत दा मुद्दा दए समझाईआ।

★ २३ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

लाशीने शिवा ज़िज़ोसी ज़ी उल कुमीते इज़ा, ज़नीवलल ज़हिंदन चकिसते इज़ा, तैनीज़म विज़ेनूती ज़मूते ज़निन्द नाचिसते वबा, अलिंके कुनी मनूसेतमी अकले खुरे नवीतीउल तवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साहिब बेपरवाहीआ। चाशीदे ज़केलम, तानुस मोज़े पैगम्बर हुसीन हस्तीए नूज़ आयते अती आलिंज़ते नबी रसूले मसीह मुसलसल ज़िआने ज़ू जौहे ज़मीं ज़ारी ज़रीन इक्क अख्वाईआ। किबल अल्लाए वज़ीनुल ज़माए नूरे मुहम्मद मुहम्मदे खुदाए बखुद बकलम कलमा ना कोए अरज़ाईआ। नकज़ूए ते मसीह दूयते अतायल तननज़गरे नज़ील नविज़ मसीह सवलम सूज़िशे ज़ीवक्त ज़ोहना ज़ज़ीद ज़ब्रा ज़बीह ज़ेबे शान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी विच समाईआ। चौज़िंगे चवद नहिज़ूज़े नवद पोशीदा गवद शहीदे सरमद अबूब करे दवद, हसन हुसैनै जगद, अली अज़मीमे मदद, मुहम्मद तुआरफ़े तशदद, तबलीग़े तशरीह ज़ैनमीके कुलेनीं, कायम मुकाम बेपरवाहीआ। हज़रते तख़लस्स मुफ़रते मुसलस्स नज़कीदे कज़ूनो किवज़ा किबल कदीम कदम कुदरत कादर काफ़रे कुफ़त कुशीं कुशै कशोज़ूअत आलमै अज़ीनत, आज़ा

अज़ तरफ़ कलमा लिख ना कोए सुणाईआ। जो अज़ तरफ़े नाज़ीहत ना हुक्मे ना वसीहत, ना असले असल, कुज़ीने वसल, वसले शख्सीअत, शख्सीअते तबीअत, तबीअते नवीअत, नवीअते अदा, अदाए खुदा, खुदाए रज़ा, रज़ाए नुमा, नुमाए नमाज़े, नमाज़े अजाज़, अजाज़े आवाज़, आवाज़े ख़ताब ख़ताबे महिराब, महिराबे आदाब, आदाबे नवाब, नवाबे लाजवाब, पुन सवाब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मुतअलके मज़ाज, हज़रते अतात, गुरेज़ीनीए बात, मज़ूहे वफ़ात, आरज़ूए अलात, नशरे कलमा, कातबे कलम दवात वाहिदे अलाह, वाहिदे हू, वाहिदे आप, वाहिदे बाप, वायदा मुआफ़ नज़र कोए ना आईआ। तकाज़ाए तकदीर, मुआशाए हकीर, गुमासाए ज़रीर, तमाशाए अख़ीर, मुलाज़ाए पीर, आवाज़ाए कबीर करीम बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरज़ूने नविद ला तअलीमे ताबिद तहिज़ीनको ज़ारे ज़िमर ज़ाहे मूद शहिनशाह इक्क अख्वाईआ।

★ २४ पोह शहिनशाही सम्मत ३ मुनी सुशील कुमार नाल अमृतसर ★

१०५१ सत्त जनवरी साढे नौ दा वक्त रिहा दस्स, दहि दिशा काया मन्दिर अंदर करे शनवाईआ। अमृतसरीओ अमृत आत्म १०५१
पीवो रस, निजर झिरना बख्शे धुरदरगाहीआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया होवे वस, ममता मोह विकार हँकार ना कोए हल्काईआ।
२० सच प्यार करो हस्स हस्स, हस्ती वेखो अगम्म अथाहीआ। विश्व दा मीत एकँकारा इक्क इकल्ला हर हिरदे रिहा वस, वास्ता २०
आत्मा परमात्मा नाल जुड़ाईआ। मुनी सुशील शरीअत वालयां दा कर इक्कु, सति धर्म दा राह रिहा प्रगटाईआ। बाहरों नाता कूड़ी क्रिया जाणा छड्ड, साचा राह इक्को इक्क अपनाईआ। मानव धर्म सर्ब सृष्टी सृष्ट वेखो जग, जागरत जोत बिन वरन गोत होए रुशनाईआ। सोई सुरती नाम हलूणे मारो सट्ट, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख अंदरों लैणी खुल्ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया ममता रजो तमो सतो कोई ना जाले विच अग्ग, अग्नी अग्ग लैणी बुझाईआ। मंज़ल महबूब हकीकी लाशरीकी दर्शन वेखो उपर शाह रग, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। सति धर्म दी बन्धना वाली आपणी खोल्हे हद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे अंदर रिहा वड़, निरगुण दाता निरवैर निराकार निरँकार सहिज सुखदाईआ। अमृतसरीओ पीवो अमृत जाम, बिन रसना रस रखाईआ। हर हिरदे वेखो राम, रमिआ हर घट डेरा लाईआ। धुर अगम्मी वेखो काहन, जो नाम बंसरी रिहा सुणाईआ। ओसे दा सच पैग़ाम, सन्त फ़कीर रहे दृढ़ाईआ। जिन्हां दे अन्तर होवे इलहाम, दीद शुनीद अक्ख खुल्हाईआ। सुशील ने मंज़ल दस्सी आसान, मुनी मुनीशर रिहा उठाईआ। दिवस

रैण ना कोए आराम, बिस्तर सेज ना कोए सुहाईआ। मानव दी एकता दा फड़ के सच निशान, भज्जे वाहो दाहीआ। चौरसती अटारी पहुंचया आण, चार कुण्ट दा पन्ध मुकाईआ। एस दा अन्तर वेखो ज्ञान, नमंत्रन विच मंत्र अगला दए समझाईआ। बुद्धी तों परे करो ध्यान, जिस दे नाल मानव दी होवे कल्याण, कलमा इक्को इक्क सुणाईआ। मन्दिर अंदर काया काअबे विच करो इस दी पहचान, जो बेपहचान नाल मिल के आपणा रंग रिहा वखाईआ। दोहां दा मेला विच जहान, सृष्टी दृष्टी अंदरों देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा काया अंदर घर घर गृह भीतर परदा दए उठाईआ। अमृतसर निवासीओ वेखो अन्तर आत्मा निवास अस्थान, जिस दी भूमिका जग नेत्र समझ किसे ना पाईआ। सन्त सतिगुर मंज़ल चढ़े ना कोए महान, नव दुआर पन्ध ना कोए चुकाईआ। मुनीआं दा मुहब्बत वाला पैग़ाम, पारब्रह्म दा ब्रह्म निशान, आत्म परमात्म मिल के वज्जे सच वधाईआ। अगला करो ध्यान, जित्थे झुल्ले धर्म निशान, नौ खण्ड सत्त दीप दीपक इक्को नूर करे रुशनाईआ। दस यारां जनवरी दिवस जगत सृष्टी दा दृष्टी दा इष्टी दा मिलणा इक्क पैग़ाम, जिस नूं पीर पैगम्बर गुर अवतार चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान विच गए समझाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, करे खेल वाली दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी कल आप वरताईआ। मुनी जी हकीकत विच ओस महबूब नाल मिले आण, जो अन्तर निरंतर ब्रह्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। पंज मिन्ट दा वक्त थोड़ा, सब नूं साचे सन्तां दी सदा लोड़ा, बिना सन्त सतिगुर गुरसिख दा दूजा बणे कोई ना जोड़ा, बिना भगत भगवान जगत निशान ना कोए झुलाईआ। जेठूवाल पन्ध कोई नहीं दूर नेड़ा, नेड़िउं नेड़ा, जिन्नां दे अंदर पंच विकार दा नहीं झेड़ा, उह भज्जण वाहो दाहीआ। उह मुनीआं रिषीआं दा खेड़ा, जित्थे धर्म दा वड्डा होणा वेहड़ा, करमां दा रोग गवाईआ। जिस कारण दिल्लीउं मारया फेरा, मानव दे अंदरों कढ्ढणा अन्धेरा, झगड़ा चुकाउणा तेरा मेरा, मैं तूं विच फ़र्क रहे ना राईआ। घर दयां कम्मा तों कदी कोई नहीं होया वेहला, पर इक्ट्ठे हो जाओ गुरू चेला, सज्जण सुहेला सब दा इक्को नज़री आईआ। एह विश्व धर्म दा कोई जग वाला नहीं मेला, विशेष सिख्या विश्व कल्याण चार कुण्ट दहि दिशा मानव धर्म मानव एकता, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म नेता इक्क हेता, अन्तर बाहर भीतर गुफ़त शनीद सच रफ़ीक, फ़रीक लाशरीक हक तौफ़ीक मुनी दी उडीक सारे बैठे ध्यान लगाईआ। अमृतसरीओ अमृत पीओ उह, जो सच दर निवासी रिहा प्याईआ। वेखो माया ममता नालों हो के निर्मोह, मुहब्बत तुहाडे नाल रखाईआ। जो सति नाल गए छोह, अन्त सति विच समाईआ। सृष्टी दुनिया कायनात जगत कल्पणा विच रही रो, मन ममता दए दुहाईआ। ग़फ़लत

विच गूढ़ी नींद जगत जिज्ञासू रहे सौं, सोई सुरती बिन सन्त सतिगुर ना कोए उठाईआ। अंदर वड़ के वेखो जिन्हां दे अंदर आपणी होई लो, दूज्जयां दी दुरमति मैल देण धो, पतित पनीत देण कराईआ। ओन्हां दा भेव बुद्धी नाल ना जाणे को, अनुभव विच आपणी कार कमाईआ। किड्डा सोहणा बण गया ढो, सारे मिल के बैठे डेरा लाईआ। रसना परवचन कहिणा जो, जोती जोत नाल मिलाईआ। जैन धर्म धर्म वाल्लयो पंज मिन्ट तों शायद ज़िआदा वक्त गया हो, एसे कर के धर्म दा नेता धर्म दी रीत जिस प्रगटाउणी काया मन्दिर काअबे मसीत, गुरुदुआर शिवदवाला मठ्ठ बणा के काया तत अठ्ठ अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार विच संसार, रिषी मुनी आप उभार, सन्त संदेश नर नरेश जीवण जुगती जगत दी मुक्ती, मूर्त सूरत नाद तूरत, इक्को सुशील नाल वड्याईआ।

★ २४ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सचखण्ड निवासी कहे हरि करतार, पुरख अबिनाशी घट निवासी आप दृढ़ाइंदा। निरगुण जोत बिन वरन गोत गुर अवतार पीर पैगम्बर होवो ख़बरदार, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो संदेसा दे के आए विच संसार, चार कुण्ट दहि दिशा चारे खाणी चारे बाणी राग सुणाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर वेखो मार ध्यान, त्रैगुण माया पंज तत काया माटी तन वजूद हड्ड मास नाड़ी खोज खुजाईआ। सति धर्म सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद जगत नेत्र नैण नज़र ना आए किसे धर्म निशान, जीव जहानां जगत नज़र कोए ना आईआ। हुक्म देवे धुर फ़रमान, योद्धा सूरबीर बली बलवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म सुणाईआ। सदी चौधवीं बणे ना कोए नादान, लेखा वेखे अञ्जील कुरान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सचखण्ड निवासी बोले बोल, अगम्म अथाह जणाईआ। नानक निरगुण सरगुण वेखणहारा तोल, अतोल अतुल वड्डी वड्याईआ। सच भण्डारा जिस दे कोल, जुग चौकड़ी सदा वरताईआ। नाम निधान वजा के ढोल, सोई सुरती मात उठाईआ। सच दवारा एका खोल्ह, हरि करता आप वरताईआ। वस्त अमोलक देवे चोहल अन्तर निरंतर जावे मौल, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण

हो उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। शब्द संदेसा नर नरेशा देंदा रिहा वारो वार, कलमा कायनात सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदा रिहा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर आप प्रगटाईआ। आलस निंद्रा जगत वासना मन तृष्ना विच्चों कढ्ढ के बाहर, धुर दा राम अमृत जाम आप पिलाईआ। लेखा जाणे जीव जहान, लख चुरासी वेखे मार ध्यान, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क वखाईआ। सचखण्ड निवासी देवे हुक्म अथाह, हरि करता धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणा तक्को राह, जो रहिबर हो के आए जणाईआ। सिफ्तां वाले मेरे नाम दृढ़ा, जीव जंत जगत करी पढ़ाईआ। दीन मज़्ब वण्ड वण्डा, ऊँच नीच गंढु रखाईआ। धुर संदेसा देवे आप अल्ला, फ़रमाना आपणे विच्चों जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तुहाडा गवाह, शहादत इक्को इक्क भुगताईआ। सारे मिल के दस्सो हक सलाह, हकीकत विच जणाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी विच्चों भुल्ली मेरा नाँ, सदी चौधवीं वज्जे हक ना कोए वधाईआ। क्यों आत्म परमात्म नालों दिसे जुदा, निरगुण नूर नूर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर खोल्हो अक्ख, हरि करता आप दृढ़ाईआ। लेखा मंगे पुरख समरथ, आदि जुगादी धुरदरगाहीआ। सब ने बोलणा बिन रसना जेहवा सच, सच सच समझाईआ। ज़रा तक्क के वेखो काया माटी कच्च, मानव मानव खोज खुजाईआ। नाड़ी नाड़ी सब दी उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। किसे दे कोल रही ना तुहाडी मत, जो गुरमति आए समझाईआ। सहायक हो के नायक हो के रखे कोए ना पत, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। धीरज रिहा कोए ना यति, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे रहे रट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। झगड़ा प्या तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। नेत्र रोवे मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ, गुरूदवारा गुर गुर गोद ना कोए सहाईआ। जो भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच सृष्टी आए दस्स, नाम संदेसा इक्क सुणाईआ। ओस दा वेला वक्त वेखो हकीकी हक, परदा ओहला आप उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप माया ममता मोह विकार अग्नी रही तप, सांतक सति ना कोए कराईआ। निज आत्म परमात्म करे कोई ना जप, जीवण जुगत ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तक्को इक्को राह, हरि करता आप सुणाईआ। दरगाह साची हक मुकाम सचखण्ड दवारा अगम्मा थाँ, छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ। जित्थे सूर्या चन्द ना कोए रुशना, निरगुण नूर जोत डगमगाईआ। सो स्वामी सब नूं रिहा

जगा, सोया रहिण कोए ना पाईआ। काया मन्दिर साचे अंदर देवे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मारो लोकमात झाकी, हरि करता आप सुणाईआ। बन्द कवाड़ा खोल्हो ताकी, परदा पड़दे विच्चों खुल्हाईआ। मानव तत वेखो ख़ाकी, पंचम फोल फुलाईआ। ममता मोह विच हयाती, जीवण जुगत ना कोए दृढ़ाईआ। कौण मन्ने तुहाडी आखी, मैनूं दयो समझाईआ। शब्द सुनेहड़े वाली पाती, जो लिखी बिन कलम शाहीआ। सारे मार के आउणा वाटी, भज्जणा वाहो दाहीआ। सदी बीसवीं मंज़ल औखी घाटी, बिन सतिगुर पूरे चढ़न कोए ना पाईआ। एहो हुक्म अज्ज दी राती, रुत्तड़ी नाल महकाईआ। पुरख अगम्मा धुर दा साथी, सगला संग बणाईआ। सच धर्म दी वेखणी हाटी, कवण हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क उपजाईआ। तेई अवतार तक्को मीत, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कवण गावे धुर दा गीत, माया ममता मोह मिटाईआ। होवे ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। कलयुग विच साची दस्से रीत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नज़री आईआ। एह खेल दस्सो अनडीठ, अनडिठ्ठड़ा आप पुछाईआ। जो पिच्छे गया बीत, परदा दयो चुकाईआ। कवण कलमा हक हदीस, हज़रतां देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बैठे सचखण्ड, जोती जोत समाईआ। प्रभू वेखीए खेल तेरा विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड तेरी वड्याईआ। जो तेरे नाम दीआं वण्डां आए वण्ड, कलमयां विच सिफ्त सालाहीआ। गा के बत्ती दन्द, रसना जेहवा राग अलाईआ। तेरी किरपा तेरा मिलदा इक्क आनंद, जो आनंद सागर दिता सुणाईआ। पंछी गिरी उडे बिना खम्ब, निरगुण सरगुण तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। इन्हां सारयां ने बीजे अम्ब ते खाणे अम्ब, किक्कर कांटा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धारों पए जम्म, निरगुण आदी पिता माईआ। जिस ने दिता पवण स्वामी दम, आत्म जोत करी रुशनाईआ। सो मेटे तृष्ना तम, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। एथे सौण दा किसे नूं नहीं ग़म, बिन अक्खां अक्ख हिलाईआ। सब ने झूठा समझया तन, अंदर मिल्या बेपरवाहीआ। जित्थे हउँ नहीं ना हम, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नज़री आईआ। प्रेम प्यार दा नाता लैण बन्न्ह, जगत वासना ना कोए तुड़ाईआ। इन्हां दे अंदर शब्द सुणीदा बिना कन्न, धुन आत्मक राग अलाहीआ। एह ओस प्रभू दे चन्न, जो भगतां दा पिता माईआ। सारे अन्तर कहिंदे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। सच प्रीती अंदर गए मन्न, मनसा माया मोह परे हटाईआ। धुर सतिगुरू दे बण गए जन, दर ठांडे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि लेखा दए जणाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ वेखणे भगत दुलारे, दूले धुर दे नज़री आईआ। जेहड़े सदा रहे कुँवारे, तुध बिन करे ना कोए कुड़माईआ। जगत छड्ड के अस्थिल चुबारे, तेरे चरण सीस निवाईआ। कूड़ी क्रिया खुभ्भण कदी ना चिक्कड़ गारे, दुरमति मैल तेरी किरपा नाल धवाईआ। जो मिल के आए तेरे वाड़े, घर इक्को वेख वखाईआ। साहिब स्वामी फड़ के मंज़ल ओसे चाढ़े, जित्थे चढ़या उतर कदे ना जाईआ। किसे दे कढ्ढणे पैण ना हाढ़े, सिध्धे प्रभ नूं मिलके प्रभ दे विच समाईआ। जित्थे ना कोए पुरख ना कोई नारे, तत वजूद वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे देंदे गए इशारे, भविख्तां विच जणाईआ। कातब बण के लिखदे गए लिखारे, धुर फ़रमान इक्क सुणाईआ। एह खेले ओसे दे दवारे, जो धरनी धरत धवल आपणी कार कमाईआ। जिस ने सेव करनी गुरू अवतार पैगम्बर भेजे आपणे दुलारे, शब्द संदेशे सच सुणाईआ। सो लेखा जाणे आपणी धारे, करनी दा करता इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाईआ। बाहर खलोती रोवे निंद्रा, बिन मुख तों दए दुहाईआ। जिस काहन ने काहन नाल खेल खेलया बन बिन्दरा, बिन्द बिन्दू रूप वखाईआ। जिस नूं झुकदे सुरप्त राजा इन्द्रा, शंकर निउँ निउँ लागे पाईआ। सो वेखणहारा हर घट तन माटी ख़ाकी पिंजरा, पंज तत परदा फोल फुलाईआ। जिन्हां दे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के साहिब सतिगुर खोल्ह दिता जंदरा, ज़िंदगी जीवण दिता बदलाईआ। उन्हां दे अन्तर निरंतर नाम वज्जे किंगरा किंगरा, मृदंगा हू हू राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। उह वेखो निंद्रा रोवे नैण, रो के दए दुहाईआ। मैं सब नूं आई कहिण, कहि कहि रही जणाईआ। गुरमुखो मैं हो गई कमली शुदैण, आपणा आप भुलाईआ। जिस वेले वेख्या माही इक्को धुर दा साक सज्जण सैण, हरि करता वड वड्याईआ। मैं मुड़ के कदे ना आवां भुल्ल के भगतां दे कोल भगती वाली रैण, रेण हो के तुहाडे चरणां दी धूढ़ मस्तक लाईआ। मैं वेखणे जगत विकार दे वहिन्दे वहिण, कूड़ी क्रिया रही रुढ़ाईआ। जेहड़े तक्कदे भाई भैण, उन्हां दे अंदर वड़ के ग़फ्लत देवां पाईआ। जिन्हां दे कोल सतिगुर नाम रसैण, रसीए धुर दे नज़री आईआ। बिना घोंसलयां तों पंछी ओस आल्हणे रहिण, जिस नूं अल्ला अलाह कहि के कहे ख़ुदाईआ। जित्थे खुल्ल्हा मुख ते नुकता नहीं गैन, ग़मां दा डेरा ढाहीआ। जो लेखा लिख्या विच रमायण, राम वशिष्ट दए गवाहीआ। बाल्मीक नहीं तरफ़ैण, धुर संदेसा इक्क जणाईआ। वेद व्यासा शब्दी धार वहाया वहिण, भविख्तां विच ढोला गया गाईआ। कुछ लहिणा नाई सैण, सधने नाल कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म सुणो इक्को ताज़ा, हरि ताजर आप दृढ़ाईआ। खेले खेल ग़रीब

निवाजा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस निवाज़ा, निवाज़श विच सारे सीस झुकाईआ। सो शाहो भूप वड राजन राजा, हँ ब्रह्म परदा रिहा उठाईआ। कलयुग अन्तिम रच के काजा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जिस ने जगत जहान रचया आदा, नित नवित रिहा चलाईआ। खेल खेल सदा ब्रह्मादा, ब्रह्मंड परदा आप उठाईआ। सो शब्दी हुक्म सुणाए अगम्मी आवाज़ा, रमज़ गुरमुखां नाल रखाईआ। जिस नूं मिलयां पढ़नी ना पए निमाज़ा, सजदयां विच ना सीस झुकाईआ। कहे मेरे कोल आ जा, अज्ज नहीं कल्ल नहीं, कला आपणी दयां समझाईआ। भगत उधारना जिस दा सदा रिवाजा, जुग जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। अनन्द सागर किहा सुणो प्रोग्राम, सागर अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। एह प्रभू परम पुरख दा आपणा काम, करनी दा करता रिहा कराईआ। शब्दी हुक्म संदेशे देंदा रिहा पैग़ाम, कलमयां विच पढ़ाईआ। दीन दुनी वेखदा रिहा तमाम, तमअ विच जगत लोकाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई अवाम, अमल छड्डयां भुलया शहिनशाहीआ। जीवण विच इन्सान ना रिहा इन्सान, असल नाल असल मूल दा मूल दयां गवाईआ। एसे कारण धुर दा करता सृष्टी दा मालक ख़लक दा ख़ालक खेल करे श्री भगवान, आपणी कार कमाईआ। जिस ने चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया बदल देणा विधान, हुक्म इक्को इक्क सुणाईआ। प्रभ मिलण दी दस्सणी सच पहचान, परदयां अंदरों परदा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। साचा खेल करे भगवन्त, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दे भगत सुहेले सन्त, सज्जण वेख वखाईआ। सब दा सांझा इक्को करना मंत, आत्म ब्रह्म पढ़ाईआ। सच स्वामी बणना कन्त, निरगुण निरवैर निराकार आपणा रंग चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करना अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना जीव जंत, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। हउमे गढ़ रहे ना हंगत, हँ ब्रह्म दए जणाईआ। बोध अगाधा इक्को पंडत, नित नवित करे पढ़ाईआ। चार वरन बणावे साची संगत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका गंढ पवाईआ। लेखा मुका के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। नाम निधान चाढ़ के रंगत, रंग इक्को इक्क वखाईआ। सब ने इक्को पुरख अकाल दीन दयाल दवारे होणा मंगत, दूजा दर लभ्भण कोए ना जाईआ। जित्थे झगड़ा नहीं बहिश्त जन्नत, स्वर्गां तों परे निरगुण हरे जोती जोत जोत रुशनाईआ। जो मंज़ल ओस चढ़े, सति पुरख निरँजण दर्शन करे, ना जीवत ना कदे मरे, आवण जावण रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां मार्ग दस्से बड़े, रस्ते चलदयां पाँधी मुसाफ़र रस्ते विच अड़े, कोटन कोटि नेत्रहीण खड़े, सच महल्ल नज़र कोए ना आईआ। जो जन प्राणी आत्म परमात्म वरे, तूं मेरा

मैं तेरा इक्को ढोला पढ़े, सो मुड़ के जावे आपणे घरे, जिस विच वसे नर हरे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी बीते दिवस महीने मास बरख वह्रे, वह्रे गंढु सब नूं याद कराईआ। जेहड़े भाण्डे ठठयार बण के घड़े, माटी तत पोच पुचाईआ। एहनूं कहिंदे सारे जड़्हे, चेतन इस दे विच छुपाईआ। हुण वेखणे कल्ल ते परसों कवण खोटे ते कवण खरे, ख़रीददार इक्को मालक नज़री आईआ। जिस दा खेल परे तों परे, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी कार कमाईआ। जिस नूं बन्द ना करे कोई विच शरे, हद्द विच ना कोए रखाईआ। शस्त्र नाल कदे ना लड़े, तीर तलवार ना कोए उठाईआ। जिधर आपणी मेहर निगाह करे, नज़र नज़र नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की आउंदी जांदी रुत, प्रभ रुतड़ी की महकाईआ। तेरा लेखा अबिनाशी अचुत, पतिपरमेश्वर समझ किछ ना आईआ। सब दा पैंडा रिहा मुक, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। जगत निशान्यौं रिहा उक, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। आपणी मनसा कारण सब जगत रिहा झुक, आत्मा परमात्मा मेलणवाला नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तूं साडे कोलों पवाई फुट्ट, दीन मज़्हब वण्ड वण्डाईआ।
१०५८ जुग जुग सानूं बणा के आपणे सुत, लोकमात नाम कलमे दित्ते सिखाईआ। अन्त फेर तन वजूद विच्चों गोदी लयांदा चुक्क, १०५८
जोत जोत विच समाईआ। हुण सारे रहे पुछ, इक्को मंग मंगाईआ। ना परदा ना ओहला लुक, भेद दे खुल्हाईआ। जोती
२० जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दे जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच जणाउँदा ए। गुर २०
अवतार पैगम्बर जोती धार विच्चों उठाउँदा ए। दरगाह साची सचखण्ड दवार, आपणा परदा लाहुन्दा ए। विष्न ब्रह्मा शिव साथी करो विचार, बिन विचरयां आप सुणाउँदा ए। चारों कुण्ट तक्को हाहाकार, सांतक सति ना कोए रखाउँदा ए। क्यों भुल्लया जीव गवार, मन वासना विच हलकाउँदा ए। तुहाडे उत्ते रिहा ना कोए एतबार, मेरा इष्ट ना कोए मनाउँदा ए। पढ़ पढ़ थक्के थकावट विच गए हार, हरि का नूर नज़र किसे ना आउँदा ए। गुर अवतार पैगम्बर करन अग्गों निमस्कार, सजदयां विच सीस सर्ब झुकाउँदा ए। परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम तेरी वार, दूजा वारस नज़र कोए ना आउँदा ए। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाउँदा ए। जा के वेख आपणा संसार, सृष्टी अंदर तेरा नूर तूं ही नज़री आउँदा ए। निरगुण निरगुण लै अवतार, सरगुण सरगुण मेल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाउँदा ए। पुरख अकाल कहे मैं खेल खिलावांगा। जुग चौकड़ी विछड़े मेल मिलावांगा। जन भगत सुहेले चोटी चाढ़ के सिखरे, सिक आपणी इक्क दरसावांगा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के फ़िकरे,

फ़िकर कूड़ कुड़यार मिटावांगा। जेहड़ा काया मन्दिर अंदर प्रभू प्रीतम निकले, सो नूर ज़हूर चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर हिरदे भेव खुल्हावांगा। पुरख अकाल दा धुर फ़रमाना अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। निंद्रा विच्चों सारे हो जाओ ख़बरदार, सोया रहिण कोए ना पाईआ। जो कल दा विवहार, विवहारी हो के आप सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी दा जिस लहिणा देणा कर्ज़ देणा उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। नाल सद्दे तेई अवतार, अवतर आपणा हुक्म जणाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेखण अगम्म दरबार, धुर दरबारी आप वखाईआ। नानक गोबिन्द करे प्यार, निरगुण दाता निरवैर दया कमाईआ। जिस दी दिशा समझे ना कोई विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। देवत सुर मुनी मुनीश्र गण गंधर्ब करन निमस्कार, नमों नमों डण्डावत विच आपणा भेंट चढ़ाईआ। तिस दा मार्ग जगत नहीं विहार, त्योहार आपणा भगतां नाल बणाईआ। करनी दा करता कुदरत दा कादर धुर दा यार, चार यारी वेख वखाईआ। पंचम मीता ठांडा सीता सति सतिवादी शाह अस्वार, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सच करनी कार कमावेगा। हरि करता खेल खिलावेगा। जो वसे रंग नवेल, निरगुण नूर जोत रुशनावेगा। मेल मिला गुरू गुर चेल, चेला गुर जोड़ जुड़ावेगा। आदि अन्त बण के सज्जण सुहेल, साचा संग बणावेगा। दीप जगा के बिना बाती तेल, नूर नुराना डगमगावेगा। राए धर्म दी कट के जेल, फाँसी गलों आप कटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप बणावेगा। साचा खेल प्रभू रचाउणा ए। धुर संदेसा प्रभू सुनाउणा ए। चार वरन अठारां बरन एका गंढु पवाउणा ए। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी नाम तन्द नाल जुड़ाउणा ए। सति धर्म दी सच सुगंद, कसम दा इस्म इक्क वखाउणा ए। प्रभ प्रीती अंदर सारे होवो पाबन्द, इस्म आज़म इक्क जणाउंणा ए। आत्म होवे ना कोई रंड, कन्त सुहागी हरि हंढाउणा ए। सांझी सब दी पाउणी गंढु, दूई द्वैत दा डेरा ढाउणा ए। मन विकार करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाउणा ए। मन वासना दुनी दारी दा जंग, जगत कूड़ नाल लड़ाउणा ए। साचे सन्तां अन्तर आत्म पा के ठंड, मेघ अगम्मी इक्क बरसाउणा ए। बिन ललारीउँ चढ़े रंग, रंग रंगीला इक्को वेख वखाउणा ए। गुरमुखां दी आत्म सेज सुहाए पलँघ, जित्थे आत्म परमात्म नार कन्त जोड़ जुड़ाउणा ए। सतिजुग साचे तेरा उपजे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों वखाउणा ए। जो गुर अवतार मंगां गए मंग, कीता कौल प्रभ ने तोड़ निभाउणा ए। निरगुण धार हो के संग, गुर अवतार पैगम्बर आपणे नाल रखाउणा ए। कल दी राती सब ने खुशीआं नाल गाउणा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक्क जणाउणा ए। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप निभाउणा ए। कल्ल दी रात कहे मैं रैण भिन्नी, प्रभ दिती वड्याईआ। मेरी औध लँघ गई किन्नी, चार जुग समझ कोए ना पाईआ। मैं वेखे लोक तिन्नी, त्रैगुण रंग रंगाईआ। मेरी पैमाइश किसे ना मिणी, नाम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए रंगाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं कल्ल नूं आउणा जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ। गुरमुख सड़े ना कोई विच त्रैगुण अग्ग, अग्नी तत बुझाईआ। साचे सन्तां भगतां साचे सूफ़ीआं दर्शन करना बिना मक्के अंदर काअबे वाले हज्ज, जित्थे हुज़रा महबूब आप सुहाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी शाह पातशाह सुल्तानी निरगुण निराकार निरवैर लोकमात आवे भज्ज, दो जहानां आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दे अंदर काया मन्दिर बहे सज्ज, सज्जण हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। सब ने जगत विकार दी लँघणी हद्द, कूड़ विकारा अंदरों देणा कढ्ढ, नींद जम्मू तों परे देणी छड्ड, पंछी गिरी उडके जलन्धर दे कोल निशाना आउणा गड्ड, फेर आपे पुरख अकाला दीन दयाला गुरमुखां दे साफ़ सुथरे कर दए हड्ड, नाड़ी नाड़ी आपे वेख वखाईआ। सच पुछो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निंद्रा कदी ना आई भगतां दी यद, यदी दा कहिणा अबी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच वर दाता इक्क अख्वाईआ। निंद्रा कहे मैं सुणया इक्क सलोक, सोहला धुरदरगाहीआ। अंदरे अंदर होई डरपोक, बलहीण अख्वाईआ। जे आवां ते मैनूं भगत भगवान मिलण दा शौंक, दूजी आस ना कोए वधाईआ। जे भगत जागण ते भगत भगवान कोल जाण पहुंच, जे कुत्ते भौकण दिन चढ़दयां नूं सार कोए ना पाईआ। प्रभ दी वक्खरी निराली सब तों रौंस, रुसयां लए मनाईआ। जे नानक निरगुण सरगुण वट्टा रख्या नहीं कोई पंसेरा औस, औसीआं पा के लभ्भण वाले सारे लैण अंगड़ाईआ। निंद्रा कहे मैं कोई खाण वाली नहीं रोट, रसन स्वाद ना कोए लगाईआ। मेरा कोई बंक दुआर नहीं कोट, किल्हिआं विच बहि के झट, लँघाईआ। जिन्हां दे अंदर प्रभ दी छोट, उन्हां दे मन्दिर वड़ के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद हुक्मे विच रखाईआ। निंद्रा कहे मैं मंग अख़ीरी मंगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। सौण नूं मंगदी नहीं बिस्तरा मंजा, लेफ तलाई ना कोए सुहाईआ। क्यों मैनूं डर लग्गदा जित्थे दिसदा सत्त रंग दा डण्डा, एह वी जम्मू वाले बणा के ल्याईआ। एहनूं वढ्ढुया तवी दे पार कन्ढा, छम्ब विच समझाईआ। एसे कारण ओथे होया जंगा, दोहां दी पई लड़ाईआ। जे मैनूं कोई हथ्थ फड़न वाला होवे बन्दा, बन्दगीआं विच्चों बन्दगी दयां जणाईआ। एह खेल सूरा सरबंगा, हरि करता आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। निंद्रा कहे मैं एथों जाणा दौड़, तिन्न दी

बजाए पंज दिन वड़न कोए ना पाईआ। तुसीं मेरी जांदी दे सुणयों पौड़, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं दिस प्या शायद कोई ब्राह्मण गौड़, जिस नूं जम्मे कोए ना माईआ। हैरान हो गई एहदा बचन मिठ्ठा कि कौड़, सुद्ध रही ना राईआ। घुंड चुक्क के वेख्या अवर दा और, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जिस दे सिर ते बिना सीस तों गुर अवतार पैगम्बर झुलाउँदे चौर, चरणां विच सीस निवाईआ। उह वेखणहारा करके ग़ौर, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जिस दे जुग जुग तत्तां वाले बदलदे आउँदे तौर, तऱां तऱां खेल कराईआ। भगतां ओहदे हथ्थ फड़ाई डोर, जो टुट्टी गंढु वखाईआ। ओनां नूं जाए बौहड़, जो अन्तर आत्म ध्यान कराईआ। बौहड़ी दुहाई मेरा ओथे चले कोई ना ज़ोर, जित्थे साधां सन्तां मिलके इक्को रंग देणा वखाईआ। ओनां दा मालक मैनूं नज़री आउणा इक्को छोहर, कन्त कन्तूहला नूर इलाहीआ। सब दा मानस जन्म जाणा सौर, सौहरे पईए इक्को घर बहि के खुशी मनाईआ। निंद्रा कहे जन भगतो गुरमुखो सन्त सुहेल्यो मैनूं कोई निमाणी नूं लवो मोड़, मुड़ मुड़ पिच्छे राह तकाईआ। अग्गे दिसे अन्धेरा घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग वासना ठग्ग चोर, चार कुण्ट हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाईआ।

१०६१ निंद्रा कहे मैं मुड़ की वेखां पिच्छाह, पिच्छे मेरी दुहाईआ। गुरमुखां दी अंदर एहो इच्छा, प्रभ मिले धुरदरगाहीआ। जो १०६१

साची देवे सिखा, सिख्या शब्द नाम पढ़ाईआ। जेहड़ा धर्म दा लेखा लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं अग्गे वड़दी

२० रही जगत दवारयां पत्थर इट्टा, आपणा पन्ध मुकाईआ। किसे नूं समझण ना दिता आपणा रूप निक्का, नेत्रां दे पिच्छे वड़ २०

के आपणा डेरा लाईआ। मैथों इक्क वेरां कबीर ने पुच्छया मेरा किस्सा, कुछ मैनूं दे जणाईआ। मैं किहा मेरा त्रैगुण नाल सांझा हिस्सा, विष्न ब्रह्मा शिव मिल के गंढु पवाईआ। उनां दा धूढ़ दा मेरे मस्तक लग्गा टिक्का, आह मैं बिन्दी सुहाग रही वखाईआ। आह वेख मैनूं सच दवारयों मिल्या चिट्ठा, जिस दा लेख लिखे ना कोए कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा भेव दए खुलाईआ। निंद्रा कहे मैं भज्ज के जावां किथ्थे, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। भगत दवारे अंदर भगत सुहावणे डिठ्ठे, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जिनां दे अन्तर प्रेम रस मिठ्ठे, जेहवा नाल सिफ्त सालाहीआ। उनां दे कागज कोरे चिट्टे, चित्तर गुप्त ना लेख बणाईआ। राए धर्म दा सीस झुके, नेत्र अक्ख ना कोए खुलाईआ। उनां दे पैंडे मुक्के, मुकम्मल मिल्या बेपरवाहीआ। मैनूं एसे गल्ल दा दुक्खे, क्यों अनन्द सागर ने धक्का दिता लगाईआ। मेरी ओहो जननी मैनूं ओहो रखे कुक्खे, जो जगत जणेंदी अख्वाईआ। दुहथ्थड़ा मार के पिट्टे, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। मैं वेखणे सी ओस समेलन दे निकलदे सिट्टे, सिट्टे बाज़ी कूड़ी रहिण ना पाईआ। जन भगतो जे आज्ञा दयो निंद्रा कहे मैं

तुहाडे अंदर नहीं वड़दी फिरूं पिच्छे पिच्छे, आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेख वेख वखाईआ। जन भगत कहिण जाह निंद्रा सौं, सौं के झट लँघाईआ। मुड़ के फेर ना आवीं भौं, तैनूं रहे सुणाईआ। कमलीए कोझीए सानूं प्रभ मिलण दा गौं, दूजी आस ना कोए वधाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को नाउँ, परमात्मा आत्मा दा मालक नज़री आईआ। ओस दे दवारे किसे दा लग्गणा नहीं दाउ, पेचा आपणा नाम रखाईआ। सब ने करना वाहो वाहो, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिस ने करना हक न्याउँ, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा आप चुकाईआ। जन भगत कहिण एह सच इक्टु, धुर करता आप कराईआ। सतिगुर नानक हलदी मिर्च मसाले आटे वाला खोल्ह के हट्ट, सौदा तकड़ी नाल तुलाईआ। अग्गे इशारा इक्क दस्स, मोदीख़ाने विच जणाईआ। जिस ने मैनूं कीता वस्स, उह मेरा मालक बेपरवाहीआ। जिस वेले किरपा करे आपणी वत, बेवतनां वेख वखाईआ। नाम भण्डारा देवे वथ, अनमुलड़ी आप वरताईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, शब्दी कंडा इक्क उठाईआ। जिस दे काया मन्दिर अंदर आपणे प्रेम दा छाबा देवे घत्त, घाउ इक्को दए लगाईआ। धीरज सन्तोख देवे सति, सच विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा खुशीआं विच गावे जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओथे सब दी होवे बस, बसतयां वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप जणाईआ। साची खेल करे अकाल, परम पुरख वड्याईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आया चाल, नित नवित वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दस्सदा रिहा हाल, अहिवाल विच वड्याईआ। सचखण्ड दवारा समझाउँदा रिहा धर्मसाल, थिर घर चरण कँवल टिकाईआ। जोती जलवा देंदा रिहा जमाल, नूरे चश्म नूर रुशनाईआ। सो खेल करे कमाल, आपणा परदा मात उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दाता धुरदरगाहीआ। कल्ल दी रैण कहे मैं खुशी मनाउणी मात, मता सन्तां भगतां नाल मिलाईआ। सारे बण जाओ इक्क जमात, तालब इलम बणो नूर इलाहीआ। पहली पट्टी पहला वेखो बाब, पहला अक्खर निरअक्खर धार वखाईआ। जे मैथों सिक्खणा हिसाब, अंकड़ा इक्को दयां प्रगटाईआ। जिस नूं सारे करन आदाब, उह एके दा सिफ़रा दिसे सृष्ट सबाईआ। दूआ सरगुण ला ना सके ताब, तीआ त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। चौका चारे जुग करे बेताब, पंचम पंच ना कोए सालाहीआ। छेवें दर नज़र आए ना कोए नवाब, सत्तवें सति ना कोए समाईआ। अठ्ठां तत्तां दा अठोतरी वाला जाप, रसना जेहवा सारे हिलाईआ। नौ दर कर सके कोई ना पाक, पवित्र पवित ना कोए अख्वाईआ। दसवें दा ढोला सारे रहे आख, मंज़ल चढ़ के आसण कोए ना लाईआ। एह

गुर अवतार पैगम्बरां दा भविख्त वाक्, जो पच्ची पोह दी रुतड़ी कल नूं आईआ। छब्बी पोह नूं वेखणे सज्जण साक, जो सन्त सुहेले सूफ़ी आउणे चाँईं चाँईंआ। ताकी खोल्ण पड़दे विच्चों ताक, बिन तेल बाती दीपक होवे रुशनाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद मन्न के गए बाप, अमामां दा अमाम जल्वागर नूर इलाहीआ। जिस दी गुर अवतार शनाख़त करदे रहे साख्यात, सति सरूप समझाईआ। सो कलयुग अन्त वेखणहारा वाक्यात, वाकिफ़कार सर्ब अख्वाईआ। ओस ने फोलणी पढ़नी किहड़ी लुग़ात, अलिफ़ ये ना कोए समझाईआ। सब दी सुणनहार अरदास, बेनन्ती विच वड्याईआ। भिन्नड़ी कहे मेरी सुहञ्जणी होणी रात, रुतड़ी रुत्त महकाईआ। सच खुदा तों मंगणी उह किताब, जेहड़ी कुतबख़ाने विच ना किसे टिकाईआ। सुणनी उह रबाब, जिस दा तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। वाचणी उह आवाज़, जिस नूं जेहवा कोए ना गाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्मा नाल समाज, मज़्बां विच ना वण्ड वण्डाईआ। उह साहिब स्वामी सतिगुर लख चुरासी महाराज, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज चारे खाणी चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर घर अंदर साचे मन्दिर आदि अन्त मध मधसूदन वेख वखाईआ। निंद्रा कहे मैं जावां भाग, भागां वाल्लयो तुहानूं सीस निवाईआ। तुहाडे अन्तर वेख्या इक्क वैराग, जो सारे मिल के प्रभ नूं रहे ध्याईआ। तुहाडे अंदर बुद्धी रही नहीं काग, हँस बैठे सोभा पाईआ। दीपक जोत जगे चिराग़, तेल बाती दा खहिड़ा दिता छुडाईआ। धुन आत्मक सुणो राग, सरवण मिले ना कोए वड्याईआ। साचे बेड़े चढ़ो जहाज़, जिस दा खेवट खेटा मलाह इक्क अख्वाईआ। दूजा समझे कोई ना राज़, निरंतर भेव ना कोए समझाईआ। तुहाडी खुल्ही रहे सदा जाग, मैं भज्जां वाहो दाहीआ। नाल लै के जावां तुहाडा वाद विवाद, विख आपणी झोली पाईआ। जन भगतो वेख्यो किते कूड़े ना बणयो साध, साधना सच लैणी कमाईआ। एथे ना कोई सवाल ना जवाब, जवाब तल्बी विच दुहाईआ। दूर दुराडी भज्जी जांदी ठेडे खांदी तुहानूं करां आदाब, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अग्गे सति धर्म दा चलायो रिवाज, प्रेम प्रीती मानव मानव नाल वधाईआ। खाण पीण पहनण दा वड्डा समझयो ना कोए स्वाद, रस आत्मा परमात्मा लैणा छकाईआ। फेर सब दे वड्डे होण भाग, आपणा भाग हिस्सा जीवण दा सतिगुर दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अंदर सदा वजावे आपणे प्रेम दा नाद, जिस दी आवाज़ जगत सरवण कन्न सुणन कोए ना पाईआ।

★ २५ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सच सूचना धुर संदेश, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाइंदा। जो वसे सचखण्ड दवारे साचे देस, मुकामे हक सोभा पाइंदा। आदि जुगादी इक्क नरेश, नर निरँकारा आप अखवाइंदा। जिस दा सदा अगम्मा खेल, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी हो प्रवेश, पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप उठाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर जो भविख्तां विच लिख के गए लेख, करनी दा करता कुदरत दा मालक फोल फुलाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त कूड़ी क्रिया बदलण वाला रेख, ऋषी ऋषीशर मुनी मुनीशर जोड़ जुड़ाइंदा। धुरदरगाही सच मलाही बण के खेवट खेट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। सुणो संदेसा धुर दी धार, हरि करता आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम वेख विचार, लख चुरासी भेव चुकाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पावे सार, तत्व तत इक्क समझाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड्डी वड्याईआ। हुक्मे अंदर सद गुरू अवतार, पैगम्बरां नाल मिलाईआ। नेत्र खोल्ह वेखो आपणा संसार, सदी बीसवीं भेव चुकाईआ। बिन रसना जेहवा

१०६४ बत्ती दन्द करो गुफ़तार, अनबोलत राग अल्हाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अंध्यार, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। रसना जेहवा १०६४

२० पढ़ पढ़ गई हार, धुर दा नाम ना कोए वड्याईआ। इष्टां विच इष्ट सृष्टी मन्ने ना कोए प्यार, भरमे भुल्ली लोकाईआ। २०

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सूचना इक्क समझाईआ। सच सूचना देवे पुरख समरथ, हरि करता वड वड्याईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ज़िमीं असमान खोल्हो अक्ख, गुर अवतार पीर पैगम्बर परदा लओ उठाईआ। चार वरन अठारां बरन सति धर्म दिसे कोई ना सच्च, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद भेव ना कोए चुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अन्तर आत्म मेघ ना कोए बरसाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो मार्ग आए दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी ढोला सोहला राग अल्हाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्हे कोई ना अक्ख, प्रतख मिले ना किसे गोसाँईआ। मनमति कूड़ी सके कोई ना छड्ड, ख़ाली हड्ड ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म नालों होई अड्ड, महल अटल काया तन वजूद महबूब नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। सच सूचना सुणो गुर अवतार, पैगम्बरां आप दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, अकल कल आप अख्वाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नाता रिहा ना कोए संसार, प्रीती प्रेम ना कोए कमाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दए दुहाईआ। तीर्थ तट रोवण ज़ारो ज़ार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती

नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरदवार, हाहाकार पई लड़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश प्रीतम मिले ना सांझा यार, सगला संग ना कोए बणाईआ। मूर्ख मुग्ध पावण अन्तर निरंतर कोए ना सार, मंत्र मूल ना कोए दृढ़ाईआ। दीनां मज़्बां विच खार, ज़ात पात दिवस रैण कूड़ा डंका जगत वजाईआ। उठो वेखो बिन नेत्र लोचण की खेल वरते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाना सुण तेई अवतार, शब्दी शब्द धुन शनवाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद होवण ख़बरदार, बेख़बर कवण रिहा जगाईआ। नानक निरगुण गोबिन्द अक्ख उग्घाड़, तक्कण चाँईं चाँईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणन नाल प्यार, अन्तर अन्तर आस रखाईआ। की हुक्म देवे सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं सिर झुकदे रहे वारो वार, नमस्ते सजदा डण्डावत विच वड्याईआ। जिस दे नाम कलमे गाउँदे आए वार, वारता नाता जोड़ के कलम शाहीआ। सो खेल करे करनी दा करता कुदरत दा कादर करनेहार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेसा इक्क इकल्ला इक्को इक्क सुणाईआ। सच सूचना धुर दा पत्र, पात्र
१०६५ इक्क वड्याईआ। जिस दा नाम बिना किसे अंक अक्खर, कलम शाही ना सिफ्त सालाहीआ। सब दी चोटी बैठा चढ़ के १०६५
सिखर, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ब्रह्म धारों आपे निकल, आत्म परमात्म परदा दए उठाईआ।
२० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क उपजाईआ। सच सदेसा देवे हरि, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। २०
गुर अवतार पैगम्बरो लोकमात वेखो आपणा पुराणा घर, वेद पुराण देण गवाहीआ। साचा दिसे कोई ना सर, अमृत रस ना कोए भराईआ। चार कुण्ट सब नूं आवे डर, भय भउ ना कोए मुकाईआ। रसना नाल सारे रहे पढ़, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कथा कहाणी दस्सदे चेतन जड़, चेतन रूप ना कोए समाईआ। कलमयां उत्तों रहे लड़, झगड़ा प्या नाम खुदाईआ। जीवत कोई सके ना मर, मर जीवत रूप वटाईआ। भरमे भुल्ला नारी नर, नर नरायण ना कोए मिलाईआ। माया ममता अग्नी रहे सड़, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। साची मंज़ल कोई ना सके चढ़, जगत दवारा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। धुर दा हुक्म सुणो फ़रमाना, हरि करता आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवाना, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, जोती जोत नूर रुशनाईआ। शब्दी सतिगुरू बलवाना, गुर गुर इक्को दए समझाईआ। जिस दा हुक्म दो जहानां, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आत्म परमात्म दा दस्से इक्क निशाना, दूजा राह ना कोए चलाईआ। संदेसयां विच्चों देवे इक्क परवाना, परम पुरख उपजाईआ।

लख चुरासी साचा कान्हा, जो अन्तर आत्म शब्दी नाम सुणाईआ। सो स्वामी धुर दा रामा, जिस राम दसरथ घर पंज तत नाता दिता जुड़ाईआ। सो शहिनशाह सुल्ताना, सुत्तयां लए उठाईआ। एका देवे सच नाम पैमाना, अमृत रस जाम प्याईआ। जिस दे घर नहीं कोई बेगाना, वैरी शत्रु मीत बणाईआ। उस ने मार्ग दस्सणा आसाना, सच्चा राह चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से इक्क मकाना, दूजा घर ना कोए वखाईआ। जोती पहरे बाणा, बानी सब दा इक्क अख्वाईआ। जिस दे पिच्छे रविदास ने गंढया पाहना, टुट्टयां गंढु वखाईआ। जिस पिच्छे जुलाहे तणया ताणा, कबीर कबरां गया तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। देवे सूचना सच स्वामी, स्वामीआं दए सुणाईआ। जिस मर्दाने प्याया अमृत पाणी, गढ़ हँकारीआ तोड़ तुड़ाईआ। उह मंज़ल देवे इक्क महानी, महबूब नूर खुदाईआ। जलवा बख्श जोत नूरानी, अन्ध अन्धेर दए चुकाईआ। शब्द अणयाला तीर लगावे कानी, कायनात आप उठाईआ। भगतां उत्ते करे मेहरवानी, मेहर मुहब्बत विच समाईआ। चार जुग दा कूड़ा झगड़ा मेटे दीवानी, सदी चौधवीं फोल फुलाईआ। सच दवारे रहे ना कोए हरामी, हरिजन साचे आप प्रगटाईआ। जन भगतो तुहाडी करे ना कोए बदनामी, बदला सब दा रिहा
१०६६ चुकाईआ। जो आया सो खट्ट के जावे नेक नामी, निक्कया वड्डयां मिले वड्याईआ। सब दा नाता जुड़ना बाहमी, मित्र १०६६
प्यारा मेल मिलाईआ। दीन मज़्ब दी रहे ना कोए गुलामी, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। मंज़ल वखावे हक अनामी, जित्थे
२० जलवा नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो बोल के गए बाणी, धुर दा नाम दृढ़ाईआ। उस तों अगली देवे होर निशानी, २०
जो पिछले निशाने दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप दृढ़ाईआ। सूचना देवे एकँकार, इक्क इकल्ला बेपरवाईआ। जिस दा आत्मा नाल प्यार, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी ओसे दी धार, चारे खाणी वण्ड वण्डाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, चार जुग सिफ्ती ढोले गाईआ। आदि अन्त ओसे दे अख्त्यार, जो सब दा पिता माईआ। गुर अवतार पैगम्बरां भविख्त विचार, वाचक हो के खोज खुजाईआ। लहिणा देणा देवे सर्ब संसार, पूरब सब दा झोली पाईआ। जो सन्त सुहेले सज्जण मीत आवण पन्ध मार, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। ओनां रंग वखावे इक्क अपार, अपरम्पर स्वामी परदा लाहीआ। अंदर उपजा के अमृत धार, बाले दा लेखा दए चुकाईआ। पंजे दा पंजां नाल आधार, पंचम मीता पंज तत करे रुशनाईआ। पंछी दी पंछीआं वाली नहीं उडार, बिन खम्बां सतिगुर प्रीती अंदर सद उडे चाँईं चाँईंआ। अनन्द सागर दा आत्मा विच्चों परमात्मा वाला उछाल, उछल उछल रिहा वखाईआ। जो बहत्तरां बोले नाल ज़बान, बहत्तरां दे चुहत्तर दए कराईआ। जो नज़ारा नहीं वेख्या बिन अक्खां दए वखाल, परदानशीं

परदा आप उठाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। इक्को शब्द विचोला सब दा रहे दलाल, जगत वणजारयां इक्को हट्ट वखाईआ। सब दे अन्तर अगम्मड़ा लाल, निमंत्रन विच सब नूं दए समझाईआ। जे कोई अग्गे तों अग्गे दा करे सवाल, उस तों अग्गे दए समझाईआ। जित्थे वज्जे कोई ना ताल, आवाज़ सुणन कोए ना पाईआ। एह खेल वेखणा हाल, माज़ी दए गवाहीआ। समां चलदा नाल नाल, जुग चौकड़ी खेल खलाईआ। चार जुग वेख अहिवाल, गुर अवतार पैगम्बर नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता आपणी खेल वखाईआ। सूचना देवे सूफ़ी सन्त फ़कीर, फ़िकरा इक्क दृढ़ाईआ। बिन अक्खां तक्के प्रेम कबीर, कुदरत धुरदरगाहीआ। लेखा जाणे बेनज़ीर, नज़रीआ आप बदलाईआ। सच प्रेम दी इक्को तदबीर, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। आत्मा शरअ दा पाए ना कोए ज़ंजीर, बन्धन विच कदे ना आईआ। इक्को अमृत अन्तर निरंतर बूंद स्वांती सीर, झिरना सच झिराईआ। अग्गे रहिण ना देवे कोई ख़मीर, खुमारी इक्को नाम समझाईआ। विश्व दा धर्म करना ताअमीर, जड़्ह लोकमात टिकाईआ। सब दी बदल देणी तकदीर, तकब्बर वाला रहिण कोए ना पाईआ। फ़कीरी दस्सणी सच फ़कीर, फ़िकरा इक्क सुणाईआ। नवें जुग दी होणी ताअमीर, धर्म दुआर वज्जे वधाईआ। कुछ खेल वेखणा कश्मीर, पुश्त पनाह हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सूचना इक्क सुणाईआ। सच सूचना सुणो भगत, हरि भगवन आप जणाईआ। मार्ग दस्सणा इक्क जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चुक्के वक्त, मोह विकार देणा मिटाईआ। प्रभू दी भगती तुहाडे अंदर उह शक्त, जो शख़्सीअत दए वखाईआ। तुहाडा मालक वाली अर्श, प्रीतम धुरदरगाहीआ। जन भगतो जिस कारण तुहानूं प्रगट कीता उपर फ़र्श, धरनी धरत धवल धौल सुहाईआ। रहमत विच कर के तरस, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। सब ने कौल इकरार विच खाणी इक्को शर्त, शरअ दा झगड़ा देणा मुकाईआ। छब्बी पोह नहीं एह सति धर्म दा बरस, जिस नूं गावे चार कुण्ट लोकाईआ। बतरे किहा एह वड्डी चौड़ी सड़क, खुल्ह्रा रस्ता नज़री आईआ। सारी सृष्टी दृष्टी विच्चों चले निधड़क, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मनुषो मनुषां विच ना समझयो फ़र्क, पंज तत बाहर दी वण्ड वण्डाईआ। जिन्हां ने समझ के आपणे आप दी वेखी फ़रद, फ़ैसला अगला गए मुकाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी वण्डणा दर्द, दुखियां मेल मिलाईआ। कूड़ कसाई शरअ दी हत्थों सुटणी करद, कदमां उत्ते झुक के आपणा सीस निवाईआ। ममता दा पैंडा जाए मुक, सोई सुरती जावे उठ, घर घर विच वज्जे वधाईआ। सारे ओस प्रभू दे बण जाओ पुत्त, जो पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। जो चार जुग बदलदा आया रुत्त,

रुतड़ी आपणे रंग महकाईआ। सच सूचना जिस दे विच सब कुछ, तन मन्दिर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सूचना देवे धुर दा कन्त, हरि कन्तूहल वड्डी वड्याईआ। जिस दी रुत्त मौलणी बसन्त, ख़िज़ां दा झगड़ा दए मुकाईआ। प्रेम प्रीती अंदर वेखण सन्त, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, कातब लिख ना कोए जणाईआ। सो सब दा सांझा करे मंत, मंतव आपणा इक्क दरसाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क जणाईआ। चिन्ता सोग रहे ना कोए चिनत, अन्तश्करन करे सफ़ाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धी तों परे दए जणाईआ। एह खुशीआं वाला सम्मत, सूचना नौ खण्ड पृथ्मी दए सुणाईआ। निरगुण जोत दा प्रकाश होणा विच ओस चमक, जिस चमक विच शम्मस गया समझाईआ। जिस नूं झुकदे चौदां तबक, चौदां लोक सीस निवाईआ। उस दा सांझा होणा सबक, अलिफ़ ये तों परे पढ़ाईआ। निरगुण धार आवे परत, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। दीन दुनी दा सांझा करे दर्द, दर्दी हो के वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कबूल करे अरज़, अर्शी प्रीतम वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क उपजाईआ। सूचना सुणनी सब ने नाल कन्न, धुर फ़रमाना इक्क दरसाईआ। सतिगुर शब्द बन्नणा मन, ममता मोह विकार गवाईआ। प्रकाश कराउणा आपणे तन, दुरमति मैल धवाईआ। भगत सुहेले बणना जन, मिले वड्याई जणेंदी माईआ। तुसीं सारे आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म नूर रुशनाईआ। त्रैगुण माया पंज तत बेड़ा दिता बन्न, रजो तमो सतो गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण विच सचखण्ड, दरगाह साची लै अगंड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी वण्ड, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। पीर पैगम्बर बन्दगी विच कीते बन्द, कलमा नग़मा नाम सुणाईआ। गुफ़त शनीद तेरा माणदे रहे अनन्द, सुख सागर बेपरवाहीआ। तेरी जोत दा चमकदा वेख्या चन्द, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। सेवा कीती विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड भज्जे वाहो दाहीआ। तेरा नूर ज़हूर ला के अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, शहिनशाह वड वड्याईआ। दीन मज़्ब दी तेरे हुक्मे अंदर खड़ी दीवार कीती कंध, पीर पैगम्बर सीस निवाईआ। अग्गे सति धर्म दा मार्ग इक्क अरंभ, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। सब दा लेखे लाउणा मार्ग पन्ध, जुग जुग बणे पाँधी राहीआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, तेरी इक्क सरनाईआ। सचखण्ड दवारे मंगीए मंग, दरगाह साची झोली डाहीआ। सृष्ट सबाई चाढ़ आपणा रंग, बिन रूप रंग नूर रुशनाईआ। घट घट अन्तर तेरा वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग अलाईआ। साडी सब दी एहो उमंग, झगड़ा मेट ख़लक खुदाईआ। दीना मज़्बां सब नूं कीता तंग, तंगदस्ती विच दुहाईआ। तेरा

आत्म तैथों रहे कोए ना रंड, कन्त सुहाग लैणा मिलाईआ। तेरा नूर जेरज अंड, उत्भुज सेहतज तेरी रुशनाईआ। तेरा खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सच संदेसा दे पुरख अबिनाश, अबिनाशी तेरा राह तकाईआ। साचे मण्डल पा रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। लेखे ला पवण स्वास, साह साह वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण नूर होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे दास, सजदयां विच सीस निवाईआ। इक्को भरोसा दे विश्वास, विषयां चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाना दे दे ठाकर, ठोकर नाम लगाईआ। कलयुग भँवरी डूँघे सागर, नईआ पार ना कोए लँघाईआ। सरोवर मिले ना किसे गागर, अमृत जल ना कोए भराईआ। किरपा कर करीम कादर, कुदरत दे करते तेरी आस रखाईआ। तूं योद्धा सूरबीर बहादर, बली बलवान वड वड्याईआ। तेरे हुक्म दा इक्को आरडर, सीस सके ना कोए उठाईआ। जलवा नूरी दे बातन, ज़ाहर होए रुशनाईआ। सब दी पूरी कर आसन, मनसा मोह चुकाईआ। साहिब सुल्तान पुरख अबिनाशन, तूं

मालक धुरदरगाहीआ। सारे तेरे दवारे कठ्ठे होवण पातन, तट इक्को इक्क सुहाईआ। लेखे लग्गे सुहञ्जणी रातन, रुतड़ी रुत्त महकाईआ। झगड़ा कर्म रहे ना पापन, पतित पुनीत बणाईआ। पुरख अकाल बण के बापन, भगत सुहेले गोद टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे समें नूं झाकण, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कवण वेला साडा पूरा होवे वाकन, जो भविख्तां विच आए सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार निरगुण नूर जोत करे प्रकाशन, प्रकाश वेखे जगत लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सब दा होवे पाठन, पूजा दूजा तीजा चौथा पंचम विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग इक्क वखाईआ। सूचना सुणो पारब्रह्म, ब्रह्म आप जणाईआ। आदि जुग दा साचा धर्म, धर्म दया वड्याईआ। परम पुरख दा इक्को प्रन, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतो कदी वण्ड ना वेख्यो काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी तों परे हरि करता मिले साचे घरे, जिस गृह इक्को नूर नूर रुशनाईआ। वेख्यो किते दीन मज़्हब दा लेखा जगत धड़े, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो प्रभ दा पल्लू फड़े, निज नेत्र नैण उठाईआ। उह मंज़ल हकीकी चढ़े, जित्थे लाशरीकी सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को सोहला पढ़े, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सच स्वामी धुर दा वरे, जो कदे मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सूचना इक्क समझाईआ। सच सूचना प्रभ दी सच्ची, सच दए वड्याईआ। जन भगत प्रीती रहे ना कच्ची, कंचन गढ़ वड्याईआ। जिस लख चुरासी

मेदनी रची, रचना वेखे बेपरवाहीआ। मालक बण के धुरदा कमलापाती, पतिपरमेश्वर परदा दए उठाईआ। कलयुग अंदर सच नाम रिहा ना रत्ती, रतन अमोलक हथ्थ किसे ना आईआ। सारे पढ़दे अक्खरां वाली पट्टी, निरअक्खर नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम सब नूं भरनी पैणी चट्टी, जो चेटक माया नाल वधाईआ। बिना प्रभू नाम तों झूठी दिसे खट्टी, मनखट्टू कूड़ लोकाईआ। सति धर्म दी साची हट्टी, हरि सतिगुर आप प्रगटाईआ। शब्द संदेशे विच दस्सी, भीड़ी गली ना कोए भवाईआ। जित्थे ना कोई तक्कड़ी वट्टी, धड़त वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दर्शन कीत्यां मंजल मिले उह अच्छी, जित्थे अच्छी तरां मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सूचना कहे मैं देवां संदेसा जग, जुगत रही जणाईआ। साचा दर्शन करो बिन मक्के काअबे अगम्मी हज्ज, जिस हुजरे वसे धुरदरगाहीआ। प्रेम प्रीती साची नीती अंदर सारे आवो भज्ज, भजन बन्दगी विच ध्यान रखाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार विभचार जाणा तज, दुराचार रहिण कोए ना पाईआ। सच मार्ग दा सब ने सिक्खणा चज्ज, तरीका नीकन नीका आप सुणाईआ। छब्बी पोह सब नूं रिहा सद्द, सद्दा नाम वाला पुचाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर मोनी मुनी मुनीश्र तपीश्र रहे कोई ना अड्ड, हड्डीआं वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सारे मिल के धर्म निशाना दयो गड्ड, जिस दा गारडीअन इक्क अख्वाईआ। जो सदा वसे उत्ते शाह रग, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती जावो बज्झ, बद्धी गंढु ना कोए खुल्हाईआ। बुद्धी रहे कोए ना कग, हँस सरबंस लओ बणाईआ। कलयुग अग्नी चार कुण्ट रही दग, बिना सन्त भगत भगवन्त अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जगत विकारा लवो दब्ब, इक्ट्ठे होवो सारे सब, सभता इक्को लवो बणाईआ। हकीकी मंज़ल इक्को पद, जित्थे पारब्रह्म दी यद्द, ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। अल्ला वाहिगुरू राम कृष्न ओम गॉड सब दा सांझा रब्ब, रबे आलमीन या मुबीन इक्को नज़री आईआ। एह सोहणा बणना सबब, प्रेम प्यार दी पीणी मध, मस्ती नाम खुमार चढ़ाईआ। धर्म जैकारा बोलणा गज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सूचना कहे मैं ख़बरदार करने मुर्शद मुरीद, मुद्दतां दे विछड़े लैणे जगाईआ। सब दी सांझी करनी ईद, ईदउलफ़ितर देणा समझाईआ। नेत्र खोल्हणे प्रकाश करना विच दीद, दीदा दानिस्ता कर रुशनाईआ। जिस दी किसे तों पूरी ना होवे उम्मीद, उह आमद विच खुशामद विच मनसा पूर पूर वड्याईआ। सिफ्तां वाली तुमहीद, एह खेल होणा अजीब, गुर अवतार पैगम्बर आउणे नाल तरतीब, लेखा दस्सण थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाला परवरदिगार सांझा इक्क रकीब, करीब करीब सब नूं मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सूचना कहे मैं उठाउणे चौदां लोक, लुक्कया रहिण कोए ना पाईआ। उठो वेखो प्रभ

दी मौज, मजलस प्रेमीआं नाल लगाईआ। जिस दी बाहरों करदे खोज, उह अंदरों मिले धुरदरगाहीआ। भावें दर्शन करो रोज़, निज आत्म ध्यान लगाईआ। जिस नूं कदे ना लग्गे रोग, दुक्खां विच ना कोए भवाईआ। ना चिन्ता ना सोग, हरख़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना मूंड मुंडाए ना धारे जोग, बन खण्ड ना उठ उठ धाईआ। ना वस्त्र ओढन लए सोध, ना तूम्बड़ी हथ्थ टिकाईआ। जद वेखो ते बुद्धी नूं देवे बोध, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जिस दा आदि दा इक्क सलोक, सिफ्तां विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सूचना इक्क सुणाईआ। सूचना सुणाए नौ खण्ड सत्त दीप, सति सतिवाद जणाईआ। पिछला लेखा पिच्छे गया बीत, अग्गे आगमान विच वड्याईआ। परम पुरख दी सांझी करो प्रीत, प्रभ दे नाम ना कोए लड़ाईआ। जिस नूं मिलयां तन मन होवे ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। सो जुग चौकड़ी बदलण वाला रीत, रीतीवान इक्क अख्वाईआ। जिस दा झगड़ा नहीं मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर हिस्सा ना कोए पाईआ। जेहड़ा ओस दवारयों मंगे भीख, बण भिखारी झोली डाहीआ। तिस नूं देवे नाम अगम्मी चीज़, जिस दी कीमत ना कोए लगाईआ। सूचना विच इक्क हदीस, हुक्म धुरदरगाहीआ। हरि का खेल बीस इकीस, सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी जुग चौकड़ी चार कुण्ट दहि दिशा गुर अवतार पैगम्बर करदे गए उडीक, भविख्तां लिख्तां विच लेखा लेख समझाईआ।

★ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सो पुरख निरँजण निरगुण धारा, निरवैर निराकार निरँकार वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। एकँकारा हो उज्यारा, आदि निरँजण निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता शाहो भूप वड सिक्दारा, श्री भगवाना मर्द मर्दाना नौजवाना इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रूप रंग रेख तों वसे बाहरा, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। सचखण्ड वासी घट निवासी जोती जाता पुरख बिधाता खेले खेल विच संसारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, पंचम आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी धार प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण वड अलाह, वाहिद इक्को इक्क अखवाइंदा। जिस दी जुग चौकड़ी सिफ्त सलाह, महिमा बोध अगाध वड्याइंदा। निरगुण नूर जोत करे रुशना, ज़हूर आपणा आप प्रगटाइंदा।

बिन तत वजूद तों आदि जुगादी इक्क खुदा, मेहरवान महबूब आपणी कल वखाइंदा। सच संदेसा धुर पैग़ाम देवे इक्क सदा, नर नरेशा एका राग अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्क सुहाइंदा। सच दवारा धुर दा घर, गृह मन्दिर इक्क वखाईआ। जित्थे वसे नरायण नर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। ना जन्मे ना जाए मर, मर जीवत रूप ना कोए वखाईआ। सच दुआर निरगुण धार एकँकार आपे खड़्, सति सतिवादी आपणी कल प्रगटाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना चोटी जड़्, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि वड्डा वाहिद लाशरीक, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जिस विच हक इक्क तौफ़ीक, तोहफा सब नूं दए पुचाईआ। आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, आमद विच आपणा भेव दए खुल्लाईआ। धुर दे नग़मे नाल करे ताकीद, कलमा कायनात समझाईआ। हज़रत दे के इक्क हदीस, हाज़र हज़ूर करे पढ़ाईआ। दूर दुराडा दिसे नज़दीक, नेरन नेरा पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, नूर नुराना नूर इलाहीआ। सो पुरख निरँजण ठांडा मीता, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। परवरदिगार ठांडा सीता, अग्नी तत तत बुझाईआ। करे खेल सदा अनडीठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा भाणा वखाए मीठा, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। लख चुरासी परखे नीता, खाणी बाणी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। साची कार करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। दरगाह साची हो के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। चौदां तबक हो बेदार, चौदां लोक अक्ख रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर नूरी धार करो विचार, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पावो सार, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ध्यान लगाईआ। उत्तर पच्छिम पूरब दक्खण हाहाकार, सांतक सति ना कोए कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता, ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे रहे विचार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गुफ़त शुनीद सुणे ना कोए गुफ़तार, गुफ़तगू विच जगत लोकाईआ। हक मंज़ल दिसे दुष्वार, कदम कदम ना कोए टिकाईआ। मिले महबूब ना धुर दा यार, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। निज नेत्र नूर ना कोए उज्यार, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। साची सख़ियां होए ना मंगलाचार, गीत गोबिन्द ना कोए अल्लाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार कुण्ट करन विभचार, सति धर्म ना कोए वड्याईआ। तेरा खेल परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लवो तक्क, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ।

हकीकत नज़र ना आए हक, सति विच ना कोए समाईआ। पढ़ पढ़ रसना जेहवा गई थक्क, सहिंसा मन ना कोए मिटाईआ। सति धर्म दा नज़र ना आवे हट्ट, कूड़ी क्रिया जगत वणज वखाईआ। झगड़ा प्या तीर्थ तट, अठ्ठ सठ्ठ पन्ध ना कोए मुकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, गुरुदुआर सच प्रेम दी उबले कोई ना रत्त, रत्ती रत्त ना कोए वखाईआ। सब नूं भुल्ली ब्रह्म मत, पारब्रह्म मेल मिलण कोए ना जाईआ। सब दा टुट्टा धीरज यति, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। जगत जिज्ञासूआं मन्नदयां सन्तां अंदरों बदली ना अन्तर वाली अक्ख, निरंतर दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे नेत्र खोल्हो तेई अवतार, हरि करता आप दृढ़ाईआ। साचा इष्ट रिहा ना कोए संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। गृह स्वामी मिले किसे ना आण, ठाकर ठोकर ना कोए लगाईआ। कूड़ी क्रिया होई प्रधान, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। साबत रिहा ना कोए ईमान, सिदक सबूरी ना कोए निभाईआ। तीस बत्तीस पढ़ के हदीस कुरान, काया काअबा हक महबूब मिले ना माहीआ। सृष्टी दी दृष्टी होई अन्जाण, बुद्धी बिबेक ना कोए कराईआ। मन ममता घर घर शरअ वड़ी शैतान, जगत शरीअत विच लड़ाईआ। सुंञा दिसे पंज तत मकान, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। साचा हुक्म देवे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी पावे सार, नित नवित वेख वखाईआ। कलयुग लहिणा देणा जाणे धुर दी धार, परदा ओहला रहे नाँ राईआ। सदी चौधवीं पावे सार, परदा परदयां विच्चों उठाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। जित्थे अलिफ़ ये दा नहीं कोई तकरार, झगड़ा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धुर दा कलमा देवे आप अपार, रमज़ रमज़ विच्चों शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। धुर फ़रमाना सुणो अगम्मा अज्ज, वज्जे हक वधाईआ। परवरदिगार सांझा यार धुर दा ढोला सुणावे सद्द, नाम निधाना इक्क अल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखो जग, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। त्रैगुण माया लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सति धर्म दी समझे कोई ना हद्द, दीनां मज़्हबां वण्ड वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो निशाना आए गड्ड, निशान्यौं उकी ख़लक ख़ुदाईआ। आत्म परमात्म नालों समझ के अड्ड, झगड़ा तन वजूद रखाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना भज्ज, मिले महबूब ना धुर दा माहीआ। जाम प्याला हकीकी मिले कोई ना मद, आबेहयात रस ना कोए चखाईआ। आपणे नालों आपा कर अलग, धुर दा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क उपजाईआ। धुर दा हुक्म सुणो वार थित छब्बी पोह, वदी सुदी

१०७३
२०

ना वण्ड वण्डाईआ। जिस नूं परम पुरख कहिंदे सो, सो साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। हँ ब्रह्म आपे हो, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। कदे इक्क ना होवे दो, दूआ एके विच मिलाईआ। सब दे अंदर करे लो, लोचन लोयण इक्क खुल्हाईआ। माया ममता कढ्ढ गरोह, गुरबत कूड़ी देणी कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे प्रभ आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस दा आदि जुगादी इक्को जाप, कलमा नबी रसूल दृढ़ाईआ। भाग लगा के माटी खाक, पंज तत करे रुशनाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता धुरदरगाहीआ। धुर दा हुक्म इक्क वरतंत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को भगवन्त, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जिस दा संदेसा देंदे सन्त, सूफी ऐनुलहक दा नाअरा लाईआ। दो जहानां बण के कन्त, आत्म परमात्म सेज हंढाहीआ। सो बणावे साची बणत, घड़न भन्नृणहार बेपरवाहीआ। हरख़ सोग रहिण ना देवे चिन्त, ग़मी ग़मखार बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तक्को आपणी बिन दीद, जगत वेख वखाईआ। जो करके आए ताकीद, हुक्मां विच सुणाईआ। सच मुकाम दी दस्स के आए ईद, निमाज़ां विच रुशनाईआ। धुर दी कर तबलीक, कलमा सच सुणाईआ। दस्स के इक्क रफ़ीक, फ़िरके कूड़ मिटाईआ। सो सब नूं भुल्ली नसीहत, असलीअत समझ कोए ना पाईआ। जे कोई समझे सच खुदा साडी वलदीअत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी मज़्ब मानव नहीं तेरी मलकीअत, मालक इक्को इक्क अख्वाईआ। जिस दी सदा नव नवीअत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। धुर फ़रमाना सुणो अगम्मी, अगम्मड़ा आप जणाईआ। नौ जनवरी धार बदलणी नवीं, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। पवण स्वास इक्को नाम होवे दमी, दामनगीर इक्क बणाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी लैणी उलटाईआ। धुर संदेसा सुणना ओस कन्नी, जो अन्तर निरंतर दए पुचाईआ। जिन्हां रब्ब रज़ाए मन्नी, रहमत विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। धुर दा हुक्म इक्क फ़रमाना, फुरनयां विच वड्याईआ। देवणहारा ब्रह्म ज्ञाना, नाम संदेसा इक्क समझाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। दरगाह साची इक्क टिकाणा, मंजल मिले इक्क अलाहीआ। जिस दा नूर ओसे पहिचाणा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं सजदयां विच सारे करन सलामा, सीस जगदीस झुकाईआ। उह शाहो भूप वड अमामा, जिस दी सिफ्त हज़रत महबूब बणा के इक्को गाईआ। हज़रत किहा सुणो कलमा हकीकी, हक हक सुणाईआ।

जिस दे विच इक्क तौफ़ीकी, मालक धुरदरगाहीआ। उस दी कबूल करो अज़ीज़ी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दी तालीम सदा तमीज़ी, तहिज़ीबी करे इक्क पढ़ाईआ। ओस दी गुलशन जगत बग़ीची, कायनात महकाईआ। जे मारो ध्यान वेखो सदी चौधवीं बीती, जिस दा अन्त अगला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची भेव खुल्हाईआ। दरगाह साची सुणावे शब्द इक्क अनोखा, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द अल्हाईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, झगड़ा कूड़ ना कोए लोकाईआ। लोकमात देवे आपणा मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म सुणाईआ। उन्हां दा कबूल करे रोज़ा, जो रजूह रुची उस दे नाल लगाईआ। प्रेम प्रीती दा दे के मुअजज़ा, मुअजज़ आपणे लए बणाईआ। जिस दी भाल करदे खोजा, वेखण थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सच कहे खुदावंद करीम, अल्ला इलाही आप दृढ़ाइंदा। तुलबिआं दस्सो इक्क तालीम, जिस दा नुक्कता ना कोए बदलाइंदा। मिले घर इक्क अज़ीम, आलीशान आप वड्याइंदा। जिस दी करे ना कोए तक्सीम, दूजा हिस्सा ना कोए पाइंदा। खुदा दा मार्ग आदि तों सदा कदीम, कुदरत दा कादर आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा फ़रमाना आप प्रगटाइंदा। सच फ़रमाना देवे धुर दा इक्क संदेसा, धर्म दी धार प्रगटाईआ।
१०७५ गुर अवतार पैगम्बरो दरगाह साची कर लओ एका, इक्क आवाज़ उठाईआ। तुसीं मेरा नूर अगम्मी बेटा, जिस नूं जन्मे १०७५
२० कोई ना माईआ। अवतार पैगम्बर गुरू मेरा जुग चौकड़ी भेखा, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। पिछला सारे कर लओ २०
चेता, जो पेशीनगोई आए सुणाईआ। सदी चौधवीं परवरदिगार धुर दरबार सचखण्ड दवारे बहि के सब दी बदल देणी रेखा, ऋषीआं मुनीआं अंदर वड़ के आप समझाईआ। जिस दी ना कोई दाढ़ी मुच्छ केसा, ना कोई मूंड मुंडाईआ। जो आदि अन्त सदा रहे हमेशा, सदा सद आपणे विच समाईआ। जुग बदलणा ओस दा वेसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी साची कार दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दयो जवाब, हरि करता आप सुणाईआ। पूरब दे वेखो नवाब, ख़ालक ख़लक परदा रिहा उठाईआ। जिस नूं सजदयां विच करो आदाब, नमसतयां डण्डावत विच निउँ निउँ लागे पाईआ। उस दी मंज़ल वेखो महिराब, परदा इक्क चुकाईआ। ओस दी बिना अक्खरां तों किताब, बिना सफ़िआं तों अंक बदलाईआ। जिस दा समझे ना कोए हिसाब, अंकड़े वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो खेल होणा पंजाब, पंच वज्जे वधाईआ। सब दे नैणां खोल्हे जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। सब दा सांझा करना समाज, समग्री आपणा नाम टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दे अंदरों इक्को निकले आवाज़, हू हू नाअरा लाईआ। लेखे लावे उह नमाज़, पंचम वक्त पंचम कर रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा मेला मेल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणा दीन दुनी, जगत ध्यान लगाईआ। सच आवाज़ किसे ना सुणी, अन्तर परदा ना कोए उठाईआ। विद्या दे बण के गुणी, वहदत विच करन पढ़ाईआ। बिना सच नाम कलमे तों बणदा कोए ना धुर दा मुनी, मुनीशर इक्को नज़री आईआ। जिस दे अंदर अमृत आत्म देवे उह चुली, जो चार वरन दा झगड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा कलमा इक्क सुणाईआ। धुर दा कलमा इक्क महिदूद, वाहिद आप प्रगटाईआ। ख़ालक प्रितपालक वेखो वाली अर्श अरूज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी सिफ्त करे हज़ारा दरूद, महिमा बोध अगाध वड्याईआ। जिधर तक्को ओधर मौजूद, हर घट वस्या बैठा डेरा लाईआ। कदे होवे ना नेस्तोनाबूद, जड़ सके ना कोए उखड़ाईआ। जे कोई रमज़ इशारा लवे बूझ, सूफ़ी हो के सुहबत विच ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दृढ़ाईआ। साचा हुक्म इक्क संदेसा, धुर दा इक्क सुणाईआ। वेख्यो खुदा नूं मंनिओ ना कोई वेखी वेखा, अंदर वड़ के आपणा मन लैणा समझाईआ। मज़्ब दा कोई ना चुकिओ ठेका, ठेकेदारी कम्म किसे ना आईआ। साध सन्त सूफ़ी फ़कीर मुनी करन आए एका, इक्को घर देणा वखाईआ। आपणे मन दी कल्पणा ऐथे कर दयो सारे भेंटा, हँकार रहिण कोए ना पाईआ। ओ पेशवा बदल लओ आपणा पेशा, पेशीनगोई धुर दी रिहा सुणाईआ। इक्को हुक्म मुल्लां शेखा, मुसायकां करे शनवाईआ। पंडत पान्धयां देवे निउता, नेत्रहीणां अक्ख खुल्हाईआ। शब्द संदेसा दे धारी केसा, किस्मत सब दी दए बदलाईआ। जो प्रेम प्रीती दस्स के गया दस दस्मेशा, दहि दिशा डंक देणा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सब दी सेव कमाईआ। सुणो हुक्म अगम्म अथाह, बेपरवाह आप जणाइंदा। मन्नो इक्क रब्ब रज़ा, जो रहमत विच समाइंदा। सब दा मालक इक्क खुदा, खुदी तकब्बर मेट मिटाइंदा। क्यों उस तों होए जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। सब नूं दस्से सिध्धा राह, फड़ बाहों मंज़ल हक आप चढ़ाइंदा। उस दा ढोला गाउणा नाँ, नाउँ निरँकारा इक्क जणाइंदा। सो करे सदा न्याँ, अदालत इक्को इक्क जणाइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां मुफ़लसां फड़े बांह, फड़ बाहों आप उठाइंदा। जिन्हां नूं प्रभ मिलण दा चा, अन्तर आत्म बणे मलाह, नईआ नौका इक्क वखाइंदा। जिस कारण मुनी सन्त फ़कीर सूफ़ी आचारीए इक्ट्ठे होए आ, आलम इलम इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क समझाइंदा। छब्बी पोह कहे मैं आया जग, नौ जनवरी वड्डी वड्याईआ। सब ने झगड़ा दीन मज़्ब दा देणा तज, अंदर दवैश रहे ना राईआ। मंज़ल इक्को वेखणी भज्ज, जित्थे भजन बन्दगी नूर खुदाईआ। सब ने हिस्सा

लैणा अग्गे वध, वायदा पिछला याद कराईआ। तुसीं सारे परम पुरख दी यद, जो सब दा पिता माईआ। कलयुग अग्नी वेखो अग्ग, बिन कक्खां रही जलाईआ। बिन मक्के काअब्यों काअबे हकीकी दा करो हज्ज, जित्थे मिले आप खुदाईआ। इक्क आवाज़ नाल राज़ खोल्ह के नौ सत्त, बांग अज़ां इक्को इक्क सुणाईआ। बिन भगतां सब दे ख़ाली दिसण हड्ड, तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। अन्तिम माटी ख़ाक देणा दब्ब, अग्नी अग्ग विच जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क उपजाईआ। सुणो हुक्म धुर दा सुंदर, सच पैगम्बर इक्को इक्क जणाईआ। सब ने रचणा हक सुअम्बर, जिस दी वज्जे चार कुण्ट वधाईआ। कूड़ी क्रिया सब ने मेटणा अडम्बर, झगड़ा मोह रहे ना राईआ। हरि स्वामी सर्ब भरतम्बर, घट घट रिहा समाईआ। ज़रा मंज़ल चढ़ के वेखो अंदर, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। बजर कपाटी तोड़ो जंदर, निज लोइन होए रुशनाईआ। फेर किसे दवारे की जाणा मंगण, घर बैठयां मिले माहीआ। एहो धुर दा साचा मन्दिर, मस्जिद एसे नाम अलाईआ। करो प्रकाश अन्धेरे कंदर, काया कुटीआ फोल फुलाईआ। मन वासना बन्न्ह लओ बन्दर, बन्दगी इक्को लओ अपनाईआ। बोध अगाधे बण जाओ पंडत, सिख्या सच सच समझाईआ। तुहाडे

१०७७ दुआर दा दवारा बहिश्त जंनत, स्वर्गां तों परे निरगुण हरे, जोती जाता डगमगाईआ। जो सब दी आत्म वरे, जोती जोत १०७७

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेख के होए हैरान, हैरानी सब

२० दे अन्तर आईआ। की खेल होवे जहान, जहालत विच लोकाईआ। साबत रिहा ना कोए ईमान, अमल भुल्लया धुरदरगाहीआ। २०

सम्मत सम्मती बदलया नज़ाम, नौबत हक ना कोए वजाईआ। जिधर वेखो तक्को होए हराम, सांतक सति ना कोए वरताईआ। मन दी कल्पणा सब नूं कीता गुलाम, गुरबत अंदरों ना कोए कढाहीआ। जगत अन्धेरा होया शाम, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर एकँकार एका परदा रिहा उठाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण गुर, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा हुक्म सदा धुर, लोकमात वज्जे वधाईआ। असीं जा के आए मुड़, तेरे तेरे विच समाईआ। सदी चौधवीं तेरी लोड़, मेहरवान आपणा परदा लै उठाईआ। सच प्रीती निभा तोड़, टुट्टी गंढु पवाईआ। जेहड़े तेरा कलमा गए छोड़, तेरे नाम तों करी जुदाईआ। ओन्हां दे काया मन्दिर अंदर वड़ के मोड़, डण्डा शब्द हथ्थ उठाईआ। सब नूं सांझे मार्ग तोर, तुरीआ तों अगला रस्ता दे जणाईआ। जित्थे ना कोई तोर मोर, मूर्त अकाल नजरी आईआ। दूजा पावे कोई ना शोर, रसना जेहवा ना ढोला गाईआ। साचे तंद नाल बन्न्ह दे डोर, बन्धन आपणा आप रखाईआ। तेरा मंत्र फ़ुरना फुरे फोर, सुरत निरत वज्जे वधाईआ। कर प्रकाश अन्धेर घोर, अन्ध अन्धेर दे गवाईआ। जगत दुनी

होई ठग्ग चोर, माया ममता विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क बदलाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर वेखो अगम्मा खेल, हरि करता आप कराईआ। धुर दे हुक्म नाल अंदरे अंदर सब दा करां मेल, दवैश दूई रहिण कोए ना पाईआ। कर प्रकाश बिन बाती तेल, निरगुण नूर डगमगाईआ। वरन बरन बणा के सज्जण सुहेल, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी जोड़ जुड़ाईआ। साचे नाम दे कंडे तोलां तोल, अतुल इक्क अख्वाईआ। जेहड़ी दुनिया सृष्टी कायनात सुत्ती अनभोल, सब दा नेत्र नैण दयां खुल्हाईआ। जगत दी नईआ रही डोल, पतण पार ना कोए कराईआ। जो पैगम्बरां कीते कौल, अवतारां बोल निभाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पंडत पांधा रौल, हिसाब विच ना अंक बणाईआ। उह दवारा देणा खोल्ह, जिस नूं ख़लक निउँ निउँ सीस निवाईआ। प्रभ ने किसे नाल नहीं मारना रोल, रौले विच मौला दए वखाईआ। सूफ़ी सन्त बैठे रहिण अडोल, सांतक सति सति समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सच खुदा करें की, करते दे दृढ़ाईआ। किस बिध जगत समझावें जीअ, जीव जंत भेव मिटाईआ। जो पिच्छे चार जुग दी लीह, किवें रस्ता दएं बदलाईआ। जो लोकमात बीज आए बी, पत्त डाली फुल्ल नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दे खुल्हाईआ। परवरदिगार कहे सुणयो मेरे मीत, मित्रो दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी बदलां रीत, धुर दी धार आप समझाईआ। जदों बदलया मैं आपणा नाम कलमा रसना नाल दस्स के गीत, राम तों शाम शाम तों अल्ला अल्ला तों सतिनाम वाहिगुरू आपणे विच समाईआ। सब नूं कर के भय भीत, आप आपणा परदा दयां उठाईआ। साचे मुनीआं दे वस के अंदर चीत, चित ठगौरी बाहर कढाहीआ। जित्थे झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। सब दी करां आप तस्दीक, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ। मार्ग दस्स इक्क बारीक, मंज़ल धुर दी दयां चढ़ाईआ। जिस नूं समझदे दूर उह सदा अंदर नज़दीक, हमसाजन बैठा नज़री आईआ। अक्खां दे पिच्छे वेखो करीब, कुदरत दा कादर नूर रुशनाईआ। सारे इक्ठे ओस दे बण जाओ अज़ीज़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सति धर्म दी प्रीत, हर प्रीतम दए प्रगटाईआ। दूजा रहे ना कोए बीच, जे विच्चों मन लवो बदलाईआ। अज्ज दी याद रखयो तारीख़, जिस कारण सन्त महात्मा इक्ठे हो के बैठे डंक वजाईआ। अन्धेरा रहिण नहीं देणा तारीक, एका नूर होए रुशनाईआ। सच प्रेम विच बिरहु विछोड़े विच परम पुरख दी याद विच ओस खुदा दी आदि विच सब दे अंदरों निकले सोहँ चीक, चीक चिहाढ़ा कूड़ा रहिण कोए ना पाईआ। आपणे अंदर तक्को नीकन नीक, जो निक्कयों वड्डे दए बणाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर

कर के गए ताकीद, हुक्मां विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर धुर दा गुलदस्ता, फुल्ल अगम्मी नजरी आईआ। जित्थे अमृत मेघ धुर दा झिरना झिरदा, आबेहयात नूर इलाहीआ। जो बिना गुंचिउं आदि जुगादि खिलदा, बिना पत्त डाली रिहा महकाईआ। जे राज़ समझो आपणे जानी दिलबर दिल दा, दलील दा झगड़ा रहे ना राईआ। एह खेल मातर छिन्न दा, परदयां विच्चों परदा दए उठाईआ। नज़ारा तक्क लओ आपणे तिल दा, जो त्रैगुण डेरा ढाहीआ। बिना काया काअबे तों होर किते नहीं मिलदा, बन खण्ड हथ्थ किसे ना आईआ। जिस ने परदा लाहया आपणी सिल दा, सलल हो के विच समाईआ। एह खेल कोई नहीं रात दिन दा, अठ्ठे पहर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी सदीवी खोज खुजाईआ। सदी कहे मैनूं होया सदमा, दुक्खां नाल कुरलाईआ। कदमबोसी करां मुहम्मद कदमां, निउं निउं सीस झुकाईआ। जिस ने सब दा चुकाउणा बदला, बदली करे ख़लक ख़ुदाईआ। हक दवारे इक्को अदला, इन्साफ़ दए गवाहीआ। वेखणहारा सब दीआं मज़लां, मंज़ल फोल फुलाईआ। जो तरानयां विच गाउँदे ग़ज़लां, गहर गम्भीर सिफ्त सालाहीआ। ओनां दे मुड़ ना आवे अज़ला, इज़राईल

१०७६ जबराईल मेकाईल असरफ़ील करे सफ़ाईआ। ओथे ना कोई मक्तूल ना कोए कातिल ना कोई करे कत्ला, कत्लगाह ना १०७६
कोए वखाईआ। जित्थे रहमत हो जाए फ़ज़ला, ख़ैर बन्दगी देवे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

२० कर, गुर अवतार पैगम्बरां दीन दुनी रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणा वेखो संसार, दीन मज़्ब धिआन लगाईआ। २०
कवण हकीकी करे प्यार, साची किरत कमाईआ। कवण होया ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सीस झुकाईआ। कवण धूढ़ी मंगे छार, मस्तक ख़ाक रमाईआ। कवण दरस लोचे यार, परदा अक्ख उठाईआ। कौण मिले मेल परवरदिगार, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म विच समाईआ। आपणा लेखा दस्सो वारो वार, कथनी कथ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त अख़ीरी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण छब्बी पोह दी आई रुत्त, रुतड़ी मात महकाईआ। सारे तेरी धारों उठ, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। दहि दिशा वेखीए चार कुण्ट, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सति धर्म दा दिसे कोई ना सुत, अपराधी बैठे मुख भवाईआ। उजल करे कोई ना मुख, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। दुनिया दिसे कोई ना सुख, शाह सुतलान रहे कुरलाईआ। जे किरपा करें साचे सन्तां लवें पुछ, अन्तर वड़ के आप उठाईआ। कुछ भेव दस्सो मुझ, सहिज नाल सुणाईआ। किस धन्दे जाणा रुझ, किहड़ी करनी किरत कमाईआ। भेव खोल्हणा गुज्झ, परदा ओहला रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर कहिण साडे चार जुग दे पटे, सदी सदी वेख वखाईआ। दीना मज़्बां पै गए रट्टे, झगड़ा करे झगड़े विच लोकाईआ। तेरी मंज़ल कोई ना दस्से, आपणीआं उंगलीआं रहे लगाईआ। माया ममता विच फसे, जगत सन्यासी समझ किसे ना आईआ। कोई ना वेखे सब नूं इक्क अक्खे, दोए नैण देण दुहाईआ। जगत साधूआं कीमत पा लई आपणी टके, माया उत्तों घर घर फेरीआं पाईआ। जे कोई मुनी वरगे होवण फटे, नंगी पैरीं भज्जण वाहो दाहीआ। ज़िआउलहक वांग आवण नट्ठे, अतीकउल रहमान वांग करन धाईआ। फेर समझो साधू सच्चे, जिन्हा दे दर्द प्रेम दी नज़री आईआ। बिन प्रीतों सारे यारी दे कच्चे, टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। एथे सब ने कौल इकरार करने पक्के, वायदा आपणा आपणे नाल रखाईआ। भावें कोई मदीने भावें कोई सिर झुकावे मक्के, मालक इक्को नज़री आईआ। भावें कोई मन्दिर जावे तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नहा नहा खुशी मनाईआ। भावें कोई गुरदुआर सिर मस्तक रोले घट्टे, मथ्था ख़ाक छुहाईआ। जिंना चिरे अंदरों मन द्वैत दे मिटण ना रट्टे, राम नज़र किसे ना आईआ। ऐस वेले वेखीए थोड़े साधू सन्त फ़कीर बचे, जो बचन धुर दा पूर कराईआ। जिन्हां दे अंदर नहीं मनमते, ममता मोह बैठे गवाईआ। वेखो बोधी बैठे बण के भाई सके, आचारीए मिल के वज्जे वधाईआ। जिन्हां दे लूं लूं अंदर हरि प्रभू प्यारा रचे, रचना आपणी रिहा समझाईआ। उह खुशीआं दे विच हस्से, हस्स हस्स ढोला रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ जगत रहे ना कोई तकरार, झगड़ा दिसे ना कोए लोकाईआ। साडा पूरा होया इकरार, कौल पिछला देणा निभाईआ। अन्तिम तेरी आई वार, वारता आपणी दे समझाईआ। निरगुण बण जा सांझा यार, अर्शां दे मालक फ़र्शां उत्ते वज्जे वधाईआ। सारे तेरे होवण ख़िदमतगार, ख़ादम ग़ुलाम हो के नफ़रां वांग सीस झुकाईआ। इबादत विच सदाकत विच तेरा करन दीदार, नयामत विच आपणी रहमत झोली पाईआ। एह अज्ज दा विवहार, मर्यादा जगत संसार, मुनी सुशील दा उह लिख्या जाणा इशतयार, जो इशतयारी मुलज़म सारे फड़ ल्याईआ। किरपा करनी आप करतार, पचपन मुल्कां संदेसा देणा अज्ज दी रात पहली वार, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साहिब सतिगुर वाह वाह, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। जे सब दा सांझा करें राह, रहिबर हो के आप सुणाईआ। तेरी चलन सर्ब रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। वाहिद इक्को होवें खुदा, पतिपरमेश्वर नूर इलाहीआ। धुर दी इबादत इक्को दे सिखा, साख्यात कर पढ़ाईआ। जेहड़ा कलमा किसे नहीं लिखा, उह आलमां इलम देणा जणाईआ। जिस दा छपया नहीं कोई चिठ्ठा, हरफ़ां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच

१०८०
२०

दुआर रख्या सदा अनडिठ्ठा, आप आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। धुर दा हुक्म दस्स इक्क कानून, काइदा बाकायदा दे चलाईआ। सारे तेरे होण ममनूंन, सीस जगदीस निवाईआ। झगड़ा मुका कूड़ मज़लूम, मुलज़म रहिण कोए ना पाईआ। सारी सृष्टी तेरे दर ते आवे बण हजूम, हुजरा इक्को देणा प्रगटाईआ। तेरा खेल नामालूम, बिन तेरी किरपा समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला देणा उठाईआ। परवरदिगार कहे मेरी अनोखी सिख्या, सिखर चोटी चढ़ के दयां जणाईआ। जगत जहान जाणो मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर कोई ना टिकया, पंज तत वजूद होई जुदाईआ। जिन्हा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी मुहब्बत प्यार विच लिख्या, हरफ़ बहरफ़ जोड़ जुड़ाईआ। तिन्हा बेनज़ीर शाह हकीर इक्को रूप वेख्या, तक्कया धुरदरगाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खेल करे आपणे वेस्या, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जो छब्बी पोह दी करन आए सदारत, सदमे जगत मिटाईआ। ओन्हां दे अन्तर ओस दी इक्क सफ़ारश, जो शफ़ा कर के दए वखाईआ। जिस दी मुहब्बत वाली इबारत, तालीम धुरदरगाहीआ। सब ने इक्ठुयां हो के दीन दुनी दी झगड़यां वाली बदल देणी आदत, साचा राह सच नाल चलाईआ। एह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हक खुदा ने दिती इजाज़त, एसे कर के इक्ठे हो के सच सगंठन रहे बणाईआ। जन भगतो अंदरों कढ्ढ दयो कूड़ी आतश, साज़श मन रहे ना राईआ। साचे नाम दी ला लओ माचस, जो सब दी करे सफ़ाईआ। प्रभ दा नूर बण जाओ ख़ालस, ख़ाहमख़ाह ना जन्म गवाईआ। वेख्यो नफ़रत विच कोई सौं ना जायो बण के आलस, निंद्रा बाहर कढाहीआ। अन्तर मन रहे ना तामस, तृष्ना कूड़ मिटाईआ। मूर्ख मुग्ध ना रहिणा अणजाणत, बुध बिबेक कराईआ। सदा जीणा सही सलामत, अमानत प्रभ दी भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेख आपणी कायनात, निरवैर ध्यान लगाईआ। आपणा परदा खोल्ह ताक, तकवा सब दा दे बणाईआ। बिन तेरे करे ना कोए इत्तफाक, निफ़ाक सके ना कोए कढाहीआ। तेरी रहमत होवे दात, बख़्शिश नाम झोली पाईआ। फेर सब दी लेखे लग्ग जाए अज्ज दी रात, रैण सुहञ्जणी वज्जे वधाईआ। अग्गे सति धर्म दी उपजे प्रभात, सति सच दी वज्जे वधाईआ। सुख नाल दुःख विच्चों होवो इकांत, झगड़ा मोह मिटाईआ। अंदरों कढ्ढ दयो भुलेखा भरांत, भरम रहे ना राईआ। एह सन्तां कोलों समझण वाली बात, जेहड़ी जगत विद्या विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। वेख्यो कोई ना बणयो

१०८२

२०

गुस्ताख़, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। तुहाडे अन्तर निरंतर उपजे उह वैराग, जो वैरी अंदरों दए कढाहीआ। प्रेम दी जोती दा जगा के जाणा चराग़, चुग़ली निंदया अंदरों देणी सुटाईआ। इक्क दे हथ्थ फड़ाउणी आपणी वाग, घर घर दर दर आपणा सीस ना कोए झुकाईआ। जित्थे नहीं सवाल ते नहीं जवाब, हुक्म विच हुक्म दए बदलाईआ। सो सब दी क्रिया कूड़ करे बरबाद, सति सच हक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुदरत कादर वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कर सलाम झुक, नमस्ते सीस निवाईआ। सब दा पैंडा रिहा मुक, मुकम्मल दईए जणाईआ। जे मालक ख़ालक प्रितपालक साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणे नाम दी दस्सें इक्को तुक, धुर दी सिख्या इक्क जणाईआ। गढ़ हँकार दा बूटा अंदरों देवें पुट्ट, अन्तर रहिण कोए ना पाईआ। भाग लग्गे काया माटी बुत्त, तन वजूद होए रुशनाईआ। परदा रहे ना ओहला लुक, लुकमा कूड़ ना कोए खाईआ। सच महल्ले विच्चों उठ, आप आपणी लै अंगड़ाईआ। दीनां नाथा आपे तुठ, मेहर नज़र टिकाईआ। तेरा खेल अबिनाशी अचुत, चार कुण्ट रुशनाईआ। दीन दुनी भरी नाल दुःख, घर घर रही कुरलाईआ। किहड़ी गल्लों सब दे मालक ग्यों रुस्स, पल्लू आपणा आप छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त दे सुहाईआ। वेला वक्त वेख आ के नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दे वध गए झेड़े, झगड़ा मज़्ह़ब करे लड़ाईआ। तेरे चढ़े कोई ना बेड़े, नईआ नौका पार ना कोए कराईआ। कोटन कोटि सतिगुरू बणे बथेरे, सति सति रहे सुणाईआ। अनगिणतां विच्चों कोटां विच्चों थोड़े तेरे चेरे, जो तेरे नाल मिलके तेरी रीत रहे चलाईआ। सूरबीर बण के योद्धे वड्ड दलेरे, आपणी ताकत रहे वखाईआ। सारे निकल जाओ विच्चों दीन मज़्ह़ब दे घेरे, घिरना अंदरों दयो कढाहीआ। धरनी धरत दे खुल्ल्हे वेहड़े, चार कुण्ट मानस मानुख मानव नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। परवरदिगार कहे की दस्सी गल्ल, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। की दुनिया अंदर वड़या छल, धोखे विच दुहाईआ। ज़बानों बदलण घड़ी घड़ी पल पल, विश्वास रहिण कोए ना पाईआ। सब दा अंदर गया हल्ल, हलके हो के भज्जण वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया सब नूं चंगा लग्गे फल, कलयुग फलीभूत रिहा कराईआ। सब दा निरबल होया बल, बलधारी आपणी बहीआ ना कोए उठाईआ। सन्त समाजी हक इमदादी सियासत विच जावे कोई ना रल, विरासत हरि का नाम जणाईआ। जो एथे आए चल, वहिन्दी धार लँघ के जल, डूँघी पार कर के डल्ल, आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दा मेटणा द्वैत दा सल्ल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग इक्क बणाईआ। परवरदिगार कहे सारे बण जाओ संगी साथी, सगला संग बणाईआ।

१०८२

२०

इक्क इकल्ला जगत महल्ला सब दी करे राखी, रखक हो के वेख वखाईआ। सब दा लहिणा देणा देवां बाकी, तन ख़ाकी फोल फुलाईआ। साची मंज़ल चढ़ जाओ घाटी, जिस दा पन्ध जगत सके ना कोए समझाईआ। साचे सन्तो तुहाडे कोल उह अगम्मी राशी, जो वंडयां मुक कदे ना जाईआ। जगत जहान दी शरअ ज़ंजीर दी कट दयो फाँसी, फ़ैसला आपणे नाल कराईआ। एह सुनेहड़ा धुर दी पाती, पत्रका इक्क प्रगटाईआ। जीवण विच्चों जीवण हयाती विच्चों हयाती खोल्ह के जाणी ताकी, लेखे लग्ग जाए छब्बी पोह दी राती, रतन अमोलक हीरे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। परदा ओहला देवां खोल्ह, अंदरों गंढु खुल्हाईआ। सति धर्म दा जैकारा सारे देवो बोल, बोली सब दे नाल मिलाईआ। मन वासना नाल करना घोल, अंदरे अंदर लैणा ढाहीआ। आपे नज़र आ जाए नूर उह सोहल, जो सवैम सब दे विच समाईआ। एह सन्त समागम कोई नहीं मख़ौल, शाह सुल्तानां दे सिर दए झुकाईआ। वेख्यो की खेल होणा उत्ते धौल, धरनी धरत धवल नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सब दा निकल जाणा पोल, झूठा पोप रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाता रिहा जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ साची कर दे जोड़ी, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। अल्ला हू तेरी खेल दुहरी, एका दूआ दूआ एका एका एके विच मिलाईआ। जन भगतां नाल करीं कदी ना चोरी, सूफ़ीआं सन्तां अंदर मिल के आपणा रंग रंगाईआ। तेरी मिल जाए बिना डण्डे तों चढ़न वाली पौड़ी, मंज़ल इक्को वार मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला परदा देणा उठाईआ। अगला परदा सुणो भेव, धुर दा मालक आप समझाईआ। जिस नूं मन्नदे देवी देव, देवत सुर मुन जन सीस झुकाईआ। जो आदि जुगादि दाता अलख अभेव, अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। सच दुआर वसे सदा निहकेव, निहचल धाम डेरा लाईआ। गा ना सके रसना जिहव, कथनी कथ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा चढ़ाईआ। साचा रंग चढ़ावे एक, एका एक दए वड्याईआ। सारे इक्क दी रखो टेक, जो टिक्के मस्तक नाम सब दे मथ्थे आप लगाईआ। आत्म परमात्म मिल के रहे कोई ना भेत, नूर नुराना नूर अलाहीआ। कुछ खेल होणा ऐस महीने जेठ, जो भज्जया आवे वाहो दाहीआ। राज राजानां पीड़ पैणी विच पेट, पट्टी बन्न्हण वाला नज़र कोए ना आईआ। लहिंदी दिशा लैणा वेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा होणा ओस देश, जिस दा ईसा मूसा हज़रत मुहम्मद लेखा गए जणाईआ। जिस नूं समझे कोई ना मुल्ला शेख़, बुद्धी विच रमज़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा आप उठाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुणया सच हाल, हालत वेखे जगत लोकाईआ। चारों कुण्ट कूके काल, कला आपणी रिहा प्रगटाईआ। धर्म दुआर धर्म ना रिहा कोई धर्मसाल, सच सति नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखो बिन हरि नामे सारे होए कंगाल, कफ़नी ओढन कम्म किसे ना आईआ। अग्गे तों इक्क प्रभू नूं बणाओ दलाल, जो सब दी आसा मनसा पूरा करे सवाल, सवाली मुड़ कोए ना जाईआ। जन्म कर्म दा लेखा नाम इबादत लेखे लावे घाल, कीमत करता आप चुकाईआ। उह सज्जण मीत मुरारा सांझा यारा आपणे अंदरों लैणा भाल, भालयां हथ्थ किसे ना आईआ। वेखो खेल अज्ज कमाल, सन्त साजन बैठे इक्क दूजे नाल, जिन्हां बदलनी जगत अवल्लड़ी चाल, जगत जंजाल देणा तुड़ाईआ। प्रेम दा दीपक देणा बाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखणा दीपक बलदा, तन ख़ाकी ध्यान लगाईआ। किस बिध सन्त समाज चलदा, कूड़ा चलत मिटे लोकाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई किवें मिलदा, मिल मिल वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुके काया भँवरी बिल दा, डूँघी भँवरी ना कोए फिराईआ। जिस दा रूप अगम्मी नील दा, बसन बनवारी इक्क अख्वाईआ। ओहदा खेल नहीं हुण ढिल दा, इक्को डंका रिहा सुणाईआ।
१०८४ अग्गे लहिणा देणा लेखा किस किन दा, कवण देवे चाँईं चाँईंआ। जिन्हां नूर जाता इक्को चिन्ह दा, चश्म दीद करन रुशनाईआ। १०८४
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क सुणाईआ। छब्बी पोह कहे मैं हो वडभागा, भागां वालयां
२० दयां जणाईआ। लोकमात जगण लग्गा उह चिराग़, जिस दा नूर बुझ कदे ना जाईआ। सब दा धुपण लग्गा दुरमति वाला २०
दाग़ा, दग़ेबाज़ रहिण कोए ना पाईआ। जिस कारण खेल होया देस माझा, गुर अवतार पीर पैगम्बर एथे निशाना गए सुणाईआ। जिन्हां पढ़या का खा गा घा, धायल होए विच लोकाईआ। वेख्यो कोई वेखण ना आयो जगत तमाशा, एह सन्तां दा सच दवार, धर्म दा प्रचार, जीव दा उधार, कोई ठहर ना सके गवार, हँकारी नज़र कोए ना आईआ। सारे बोलो साडा इक्क दे नाल प्यार, जो सब दा पिता माईआ। साचे सन्तां उत्ते करो एतबार, जो कलमा धुर दा देण समझाईआ। जगत विच नहीं होणा खुआर, मैल अंदरों देणी कढाहीआ। पुरख अकाल दा इक्क दीदार, सच खुदा सीस निवाईआ। असीं ओस दे बरखुरदार, जिन्हा साडी बणत बणाईआ। जो सभनां दा सांझा यांर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मेल मिलाईआ। मुहब्बत दा ग़मख़ार, ग़मी अंदरों दए कढाहीआ। सब दा मीत इक्को जिस दा सच सच्चा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस नूं झुकदे गुरू अवतार, पैगम्बर सजदयां विच निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी कार कराईआ। वेखो खेल ख़ालक ख़लक, मख़लूक इक्क जणाईआ। नूर नुराना वेखो फ़लक, पलक

पिच्छे करे रुशनाईआ। जिस दा ताब झल्ले ना कोई झलक, मूसा कोहतूर डगमगाईआ। जो वाली उपर अर्श, सो वेखणहारा फर्श, सब उत्ते रहमत करे तरस, अमृत मेघ देवे बरस, निज आत्म दे के दरस, जगत वासना मेट के हरस, पूरब लेखा चुका के कर्ज़, आवण जावण मेट के मर्ज़, सच दवारे कर के दरज़, फ़र्ज़ आपणा पूर कराईआ। कलयुग वेखो अन्धेरा गर्द, सब दी पुठ्ठी होणी नरद, योद्धा सूरबीर बहादर दिसे कोई ना मर्द, मद्दद विच शाह सुल्तान बैठे पिठ वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दरगाह साची मन्ज़ूर होवे अरज़, जगत नाम कलमे दी बण जावे करद, तालीम अज़ीम इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मंज़ले मक्सूद, जो हद्द विच कदे ना होया महिदूद, बन्धन सारे दए तुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण, दुनिया वाल्लयो सुण लओ साडी इक्क सलाह, मश्वरे नाल जणाईआ। अग्गे सारे मन्न लओ इक्क मलाह, जो गुर अवतार पीर पैगम्बरां लोकमात प्रगटाईआ। जिस दा नाम कलमा खुशीआं नाल गए सुणा, लिख लिख लेख वड्याईआ। उह दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। ज्यों भावे त्यों लए चला, राज़क रिज़क रहीम इक्क अख्वाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया जगत मेटणी वबा, शफा सब दे अंदर टिकाईआ। साचे नाम दी दए ग़ज़ा, तृष्ना कूड़ भुक्ख मिटाईआ। धुर दे ख़ादम लए बणा, निम्रता नमो नमो जणाईआ। इबादत सांझी सांझा सब दा इक्क खुदा, खुदग़रज़ रहिण कोए ना पाईआ। सारे कहो असीं पिछली छड्डी अदा, अग्गे तों आदत लैणी बदलाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बण गए भ्रा भ्रा, वण्ड नज़र कोए ना आईआ। साडा बाहमी नाता जुड़या आ, आलम विच दुहाईआ। चलणा इक्क दी रज़ा, जो आपणे प्रेम दा रसा दए चखाईआ। उहनां नूं दोज़ख़ कदे ना मिले सज़ा, नर्कां विच ना कोए फिराईआ। गदागर हो के मंगण ना कोए गदा, रंग रंग विच रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण ऐस वेले उठण सूफ़ी सन्त फ़कीर, मुनी मोन लैण खुलाईआ। सृष्टी दी बदल देण तकदीर, तदबीर धुर दी नाल रलाईआ। झगड़ा रहे ना अमीर ग़रीब, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। जो मज़्बां दी दिती तरतीब, प्रभ नूं मिलणा चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम सारे हो गए फ़रीक, फ़िरकयां विच लड़ाईआ। अग्गे सांझी करो प्रीत, प्रीतम इक्को वेख वखाईआ। सब ने आपणी गंढु मुहब्बत विच जाणी पीच, जिस नूं द्वैत वाला खोलृ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। हरि रंगे रंग अवल्लड़ा, मालक धुर दरगाह। जो सदा इक्क इकल्लड़ा, नूरी नूर खुदा। भगतां सन्तां फड़ावे पलड़ा, सूफ़ीआं लए जगा। आत्म परमात्म रलड़ा, कदे ना होवे जुदा। अंदर तक्को सच दवारे खलड़ा, जल्वागर हो रुशना। जोती जोत सरूप हरि, आप

१०८५
२०

आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हउँ सदके वारी घोली, तेरे चरणां घोल घुमाईआ। परवरदिगार पुरख अकाल आपणे नाम दी सांझी करदे बोली, आत्म परमात्म दे जणाईआ। झगड़ा कोई रहे ना रौली, रौणक इक्को घर प्रगटाईआ। जिस दी जगत कहावत सन्त सूफ़ी फ़कीर मुनी करन आए बहुणी, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। अज्ज सब ने करनी राउणी, पाणी प्रेम वाला पाईआ। पिछली पक्क गई सौणी, अगली हाढ़ी लैणी जणाईआ। फेर चार कुण्ट चढ़नी ताउणी, तवा परात दए दुहाईआ। दूई द्वैती कंध ढाउणी, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सच जमात इक्क वखाउणी, जुमला अक्खर इक्क समझाईआ। भुल्ली दुनिया नेत्रां विच रवाउणी, आंसू हन्झूआं नाल वड्याईआ। गुरमुखो तुहाडी अक्ख ना कदे शरमाउणी, सांझे हो के गलवकड़ी लैणी पाईआ। जगत सियासत चार दिन दी पराहुणी, इन्हां सन्तां महंतां फ़कीरां दुनिया दे काया मन्दिर घर विच्चों बाहर देणी कढाहीआ। इक्को तुक्क इक्को मुख जो मिल के दुःख उपावे सुक्ख तूं मेरा मैं तेरा सब ने मिल के गाउणी, गा गा खुशी मनाईआ। अग्गों तों सति धर्म दी मजलस जगत लगाउणी, दूजा जलसा कोए ना भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत धार इक्क वखाईआ। जगत धार कहे मैनूं आउँदा हौका, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। मेरी डुब्बण लग्गी नईआ नौका, सन्त साजण नवां राह चलाईआ। सब नूं इक्ठे होवण दा मिलण लग्गा मौका, द्वैत नज़र लए बदलाईआ। प्रेमीआं अंदर प्रेम मन चाओ का, खुशीआं विच ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट वेखे थाउँ थाँईंआ। हर घट कहे प्रभ की पढ़ीए थान थानंतर, अन्तर दे जणाईआ। की साचा तेरा मंत्र, जो मंतव सब दा हल्ल कराईआ। किस बिध बणावें बणतर, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होए सुतंतर, मन कल्पणा मेट मिटाईआ। परम पुरख कहे मैं सब दे विच वसां निरंतर, घट घट आप समाईआ। मेरा खेल गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख अबिनाशी करता कुदरत दा कादर कदीम दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को नज़री आईआ। इक्को तेरी नज़र इक्को तेरा नूर, नूर नुराने तेरी वड्याईआ। इक्को तेरा नाम इक्को तेरा शब्द इक्को तेरा नाद इक्को तेरा तूर, तुरीआ तों अग्गे तेरा राग ना कोए अल्हाईआ। इक्को तेरा बेड़ा इक्को तेरा पूर, इक्को वञ्झ मुहाणा मंज़ल ना नेड़े ना दूर, दूर दुराडे आपणी दया कमाईआ। जगत कूड़ी क्रिया मेट दे फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। जो करदे रहे कसूर, ओन्हां दे सज़ाईआ। जो सूली चढ़ गए वांग मनसूर, मसला ओन्हां दा हल्ल कराईआ। दुनिया दी दशा वेख के ज़िआउल हक ने किहा मैं हो गया मजबूर, मजबूरी मेरे अंदर आईआ। मुनी किहा मैं दुःख नाल हो गया चकनाचूर,

१०८६
२०

क्यों भुल्ली जगत लोकाईआ। क्यों नहीं लैंदे नाम सुराही दा सरूर, जो अंदरों सुरती लए बदलाईआ। मिले मालक उह ग़फ़ूर, जो ग़फ़लत विच्चों बाहर कढाहीआ। जिस दा सन्त भगत तारना दस्तूर, दस्त दस्त बदस्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संदेसा सनद नाल लिखाईआ। छब्बी पोह कहे मेरी रैण होवे वड वडभाग, भागां भरी सब नूं सीस निवाईआ। अंदरों धो लओ आपणा दाग़, दुरमति मैल अंदरों करो सफ़ाईआ। साचे प्रेम दा अंदरों जगाओ चिराग़, तेल बत्ती दी लोड़ रहे ना राईआ। सांझा करो समाज, कूड़ा बन्धन दयो तुड़ाईआ। जिस कारण समेलन होया आज, आजिज़ हो के प्रभ अग्गे झोली देवो डाहीआ। सति धर्म दी साजणा दे साज, साजिश करन वाला रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां तेरे हुजरे गुज़ारी निमाज़, ओन्हां आपणे नूर मिलाईआ। अगला भेव खोल्ह आग़ाज़, पर्दानशीन परदा आप उठाईआ। जिस नूं समझे ना कोए दिमाग़, बुद्धी विच ना कोए वड्याईआ। उह मंज़ल दस्स आप, जित्थे रूह बुत्त दोवें होण पाक, पतित पुनीत नज़री आईआ। तेरा मिलण दा होवे इत्तफाक, पिछला लहिणा होवे बेबाक, अग्गे खाता रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब नूं सच दृढ़ावांगा। जो इक्क दूजे दे नाल रहे, तिन्हां आपणा मेल मिलावांगा। जो सांझा बण के इक्ट्ठा बहे, बाहों फड़ के गले लगावांगा। जो अंदरों कढ्ढे हउमे, ममता मोह चुकावांगा। जो सच सरनाई ढए, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ह्वावांगा। जो तूं मेरा मैं तेरा नाम कहे, कागत कलम दा हिसाब मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखावांगा। साचा खेल करां अगम्मा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। दीन मज़्ह्ब दा तोड़ के बन्ना, बन्दगी इक्को इक्क समझाईआ। मुक्ता रहे कोई ना कन्ना, कामल मुर्शद भेव खुल्ह्वाईआ। नेत्रहीण रहे ना अन्न्हा, अन्ध अज्ञान करे सफ़ाईआ। कर प्रकाश काया तना, नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप प्रगटाईआ। साची धार दा मालक एका एकँकार, अकल कलधारी इक्क अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे परवरदिगार, पालणहारा धुरदरगाहीआ। वड अमामा बण सिक्दार, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर खुआर, खुआरी मेटे थाउँ थाँईंआ। मुहब्बत विच बण के यार, यराना अगला दए निभाईआ। सांझा दस्से सर्ब प्यार, सर्ब धर्म मिले वड्याईआ। सारे इक्ट्ठे कर लओ इक्क इकरार, इकरारनामा प्रेम प्रीती विच लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। दर घर वज्जे वधाई सच्च, सच मिले वड्याईआ। प्रेम प्रीती अंदर जावे रच, लूं लूं खुशी बणाईआ। खुशीआं विच खुशी पए हस्स, हस्तीआं विच हस्ती नज़री आईआ। इक्क दूजे दे बिना दूई तों हो जाओ वस, वास्ता इक्को नाल

पाईआ। अन्तर खोलो आपणी अक्ख, जिस अक्ख विच्चों प्रतख मिले गुसाँईंआ। समेलन दा सति धर्म दा इक्ठ, इक्ठयां दा (गठ्ठा) देणा बंधाईआ। सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर मुनी रखीशर जुगीशर तपीशर कदे पिठ्ठ दे ना जावे ढठ्ठ, ढठ्ठयां लए उठाईआ। जोड़ जुड़या नठ्ठ नठ्ठ, पैदल चल के बैठा पन्ध मुकाईआ। सब ने सच प्रेम दा लाहा जाणा खट्ट, एहो खट्टी धर्म दी नज़री आईआ। अंदर वैर दी दीन मज़्ब रहे कोई ना हद्द, बन्ना कूड़ा देणा मिटाईआ। वड्याई ओस नूं मिले जग, जो जींवदयां जीवण मरन विच बदलाईआ। मरन दे पिच्छों की होया जे सड़ जाए विच अग्ग, हड्ड मास नाड़ी कम्म किसे ना आईआ। बिना दीद कीत्यां जे मिट्टी हेठां जाओ दब्ब, मिले मेल ना रब्ब गुसाँईंआ। एह झगड़े मन कल्पना सरीर दी हद्द, वण्ड विच लड़ाईआ। जे अंदरों काया मन्दिरों डूँघी कंदरों आपणे आप नूं आपणे बाप नूं आपणे जाप नूं लवो लभ्भ, लोभ मोह हँकार रहिण कोए ना पाईआ। जिस कारण तुहानूं ल्या सद्द, फ़कीर बैठे सज, दोहां दा नाता गया बज्झ, सारे कहो उच्ची गज्ज, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंगत विच्चों रंगत दए चमकाईआ। उह रंगत केहड़ा चाढ़े रंग, रंगे नूर इलाहीआ। जिस दे लभ्भण खातर नच्चदे फिरन मलंग, मतहिरे मोढ्ठयां उत्ते टिकाईआ। दीन मज़्ब इस्लाम दा करदे दिसण जंग, फ़तवयां विच लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान जिसदे मिलण दा दस्से ढंग, तरीका नीकण नीका इक्क दरसाईआ। उह सब दे नाल रिहा हंढ, अंदर बैठा बिन निज नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दा तारा ते चन्द, उह सब दा खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी विच मछन्दगी इक्क जणाईआ। नेत्र नैणहीण रहिण ना देवे अन्ध, दूई द्वैती ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। उह वसे विच ब्रह्मण्ड, वेखणहारा सदा नवखण्ड, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। साचे सन्तो धर्म फ़कीरो तुहाडा प्रेम वाला जंग, जगत शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। कूड़ी क्रिया कर दयो खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। कोई हैरान ना होवे दंग, दंगा फ़साद होणा विच लोकाईआ। बिना साचे सन्तां तों साहिब सतिगुर तों धुर दे मुर्शद तों कोई मेट ना सके गंद, गंदगी कूड़ ना कोए हटाईआ। सारे इक्ठे हो जाओ इक्को डोरी बज्झो तन्द, जिस तन्द नूं सके ना कोए तुड़ाईआ। फेर मुनी वांग लओ उह अनन्द, जिस अनन्द विच्चों अनन्द निकल के अनन्द विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा आदि दा सांझा छन्द, सोहँ रूप समझाईआ। महाराज सूरा सरबंग, शाह पातशाह धुरदरगाहीआ। शेर सिँघ ताकत विच बुलंद, भय भउ सब नूं रिहा जणाईआ। विष्नूं प्रेम प्रीती दा हो पाबन्द, पालणा विच पालक हो के सेव कमाईआ। भगवान उह जेहड़ा कदे ना होवे भंग, घड़न भन्नण ना रूप बणाईआ। जै विच कोई ना

होवे तंग, तंग दस्ती रहिण कोए ना पाईआ। अगले जुग दी अगली वण्ड, अबिनाशी करते आप सुणाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर मुनी जन चमकण सितारे उह चन्द, जिस चन्द दी सीतलता विच सति सति सच नज़री आईआ। सांझा कर लओ सारे अंग, अंग अंग नाल मिलाईआ। दस जनवरी सताई पोह समेलन दा इक्क नवां शुरु होणा ढंग, जो अन्तर अन्तर सब नूं लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित, निरगुण सरगुण सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद, आत्म परमात्म नाता लए गंढु, टुट्टी गंढुणहार गोपाल दीन दयाल ठाकर स्वामी एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा दरगाह साची हक मुकाम वेखणहारा धुर निज़ाम, अन्त अख़ीरी करे सच इंतजाम, बन्दोबस्त विच दस्त, दस्त सूफ़ी सन्त फ़कीरां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा राह अगम्म अथाह, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक शरक्त विच्चों तफ़र्का बिना तफ़रीक लेखा बाहर देवे कढाहीआ।

१०८६

★ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल सरव धर्म समेलन ★

२०

सति धर्म कहे सारे बणो फ़रीद, मनसा मन बदलाईआ। तुहाडी खुशीआं वाली ईद, जगत जहान मिले वड्याईआ। अन्तर निरंतर करो दीद, जो मालक धुरदरगाहीआ। काया काअबा वेखो हक मसीत, मन्दिर इक्को नज़री आईआ। वेख्यो किते भगतां वाली छड्डु ना जायो रीत, पिछली पिच्छे वाली भुलाईआ। इस बारश नाल बाहरों तन होवे सीत, अन्तर अन्तर निरंतर आत्म झिरना दए झिराईआ। सच धर्म दा खेल सदा अनडीठ, औखी घड़ी सब दे उत्ते आईआ। जे टाईम तों पहलों दे के जाओ पीठ, धर्म समेलन कहिण कोए ना पाईआ। सारा वक्त तिन्न वज्जे दा ठीक, एह ठाकर दी बेपरवाहीआ। जो सब दी परखण वाला नीत, सन्त समागम विच आपणी कल वरताईआ। जिन्हां नूं इक्क दे नाल प्रीत, हिरदे विच विशवास रहे रखाईआ। उह आपणी बदल दयो नीत, नीतीवान रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। मींह बरसे होया की, अज्ज दी कीमत कहिण कोए ना पाईआ। उठ के गए ते ल्या की, आया गया कम्म किसे ना आईआ। झगड़ा होया जगत पुत्तर धी, माया ममता वज्जी वधाईआ। जन भगत बण के सन्त बण के सूफ़ी फ़कीर बण के पिछली छड्डु गए लीह, दु:ख विच सुख सुख विच दु:ख इक्क रंग ना लए बणाईआ। जिस दा

अज्ज सब ने इक्ठ्यां हो के बीजणा बी, उस दा फल उपजे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। इस बारस दा कोई ना चले चारा, चारों कुण्ट इक्क दुहाईआ। एह सन्तां दा अखाड़ा, ग़ैर नज़र कोए ना आईआ। जिन्ह्नां दा परम पुरख हक खुदा इक्को लाड़ा, मालक दो जहान अख्वाईआ। जो सब दे काया मन्दिर अंदर शब्द सरूपी फेरदा आपे तारां, तुरीआ तों परे आपणा राग सुणाईआ। एह कोई तुहाडा मन्दिर नहीं इट्टां गारा, जो मींह नाल खुर के मिट्टी विच समाईआ। एह सब तों उँतम दिहाढ़ा, इन्द्र खुशीआं नाल आपणी छहबर लाईआ। तुसीं बैठे ओस दवारा, जिस दवारे सन्त सूफ़ी फ़कीर आपणा रंग रंगाईआ। अगला तक्कयो होर नज़ारा, बूँद बूँदी रहिण कोए ना पाईआ। सारे बण जाओ मीत मुरारा, सज्जण सब दा इक्क गुसाँईंआ। जिस दा रूप ना कोई पुरख ना कोई नारा, नाअरा हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र कहे मींह हो जाए बन्द, बन्दगी विच ध्यान लगाईआ। जिस कारण मार के आए पन्ध, भज्जे वाहो दाहीआ। उस दा लैणा अनन्द, सुख आत्म विच टिकाईआ। तोड़ के द्वैत दे फंद, नाता बाहमी लैणा जुड़ाईआ। तुहाडा आत्म रूप संग, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। जिस दे दवारे नहीं भुक्ख नंग, भुक्ख्यां दए रजाईआ। ओथे बैठयां कोई ना होयो तंग, तंग दस्ती अंदरों देणी कढाहीआ। एह सन्त सज्जण संग, दुरमति मैल अंदरों लैणी धवाईआ। ओ गुरमुखो तुहाडे अंदर उह परमानंद, जिस नूं जगत दी ममता पोह सके ना राईआ। सारे मिल के धुर दी पाउ गंढ, जो लोकमात गुर अवतार पैगम्बर गए पवाईआ। सन्त समागम कोई कर ना सके भंग, भंगणा विच ना आईआ। एह नाम दा मृदंग, डंका धुर दा करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। बरखा कहे मैं सब दी दास, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिन्ह्नां दा परम पुरख उत्ते विश्वास, उह विशा समझ के घर नूं जाईआ। सब दी इक्ठी सांझी मण्डल वाली रास, आत्म परमात्म मिल के गोपी काहन खेल खिलाईआ। एह समझण वाली बात, जो सूफ़ीआं दिती सुणाईआ। एह हुक्म बोध अगाध, जो बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। एह जगत भिखारी ना समझयो साध, आत्म अधारी नज़री आईआ। जे आए ते आपणी खोल्ह के जायो जाग, निज नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। तुहाडी ओस दे हथ्थ वाग, जेहड़ा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा नूर करे रुशनाईआ। ओस दा नूर वेखो महिताब, जो खालक ख़लकत विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म सुणाईआ। धुर दा हुक्म आया छेती, जिस दा ध्यान लगाईआ। जो सन्त महिरम बण के बणया ओस दा भेती, पड़दे विच्चों परदा परे हटाईआ।

ओस दी याद रखयो नेकी, जो तुहानूं सति दा रस्ता रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। घड़ीआं नूं वेखो किते हो ते नहीं गए मिन्ट दस, जे तुसीं आपणे मन नूं कर लओ वस, ओथे घड़ी घड़याल दी लोड़ रहे ना राईआ। फेर कोई ना जावे नस्स, पल्लू आपणा आप छुडाईआ। सब नूं इक्क मार्ग देणा दस्स, जो विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। खोल्ह के जाणा अक्ख, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। एह धर्म दुआर दा हट्ट, जगत वणजारे बण के सौदा लैणा चाँईं चाँईंआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी आत्मा दा करना इक्ठ, तन दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचे सन्तां अजे तुहाडे उत्ते होर मारनी सट्ट, सोई सुरती देणी उठाईआ। तुसीं अजे तक्क सुणया अक्खरां विच पढ़या शब्द अनाद अनहद, बिन सतिगुर पूरे धुन आत्मक राग ना कोए प्रगटाईआ। एह समां सुहावणा मिल्या अज्ज, जो अज़ल तों दए बचाईआ। वेख्यो किते मींह तों डरदे ना जायो भज्ज, भज्जण वाल्लयो भजन बन्दगी कम्म किसे ना आईआ। एह सभा रही सज, उच्ची बोलण ज़ोर नाल गज्ज, मज़्हबां दा झेड़ा देणा मुकाईआ। जगत विकार नूं थल्ले देणा दब्ब, सिर सके ना कोए उठाईआ। सब दे अंदर इक्को नूर इक्को रब्ब, जो आलमीन अख्वाईआ। वाहिद कलमा कायनात दा एह बणन लग्गा नाल सबब, सारे मिल के आपणा रंग चढ़ाईआ। जे सुणना ते सुणयो नद, जो बिन डंके डौरू वज्जे चाँईं चाँईंआ। अग्गे खेल होणा जग, जगजीवण दाता आप कराईआ। कुछ अगले साल लग्गण वाली अग्ग, जगत प्रधान सके ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। मींह कहे मेरी बूँदां बांदी, सेवा सच कमाईआ। फ़रीद कहे उह झक्खड़ झांगी, मेरा मन ना सके बदलाईआ। जो उपदेश दस्सया जगत दवारे गांधी, तन्द तन्द जुड़ाईआ। हुण सारे मज़्हबां वाले इक्ठे मिल के बण जाओ आंढी गुआंढी, हमसाए हो के आपणा झट लँघाईआ। होर सुणयो बिना पुरख अकाल दीन दयाल सब दी पत जांदी, दूजा होए ना कोए सहाईआ। तुहाडी काया प्रेम वाली साची हाण्डी, सच धर्म दी भठ्ठी इक्को लैणी चढ़ाईआ। वेख्यो कोई लालच ना करयो सोना चांदी, मन तृप्त कर के तृष्ना आपणी लैणी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आयां सज्जणां प्रेमी मित्रां साचे सन्तां सूफ़ी फ़कीरां शाह हकीरां अन्तर आत्म एका देवे शब्द कलमा नाम, मुहब्बत वाली वधाईआ। उत्तों होर आई कलाम, कलमा धुरदरगाहीआ। संदेसा दए अमाम, नूर नुराना नूर इलाहीआ। सुणो सर्ब अवाम, अमल इक्क दृढ़ाईआ। जो पीर पैगम्बर हज़रत गुर अवतार दे के गए पैग़ाम, अक्खरां विच लिखाईआ। ओस नूं पढ़ के सुण के ऐस वेले दुनिया दा बदल गया निज़ाम, इंतजाम करन वाला नज़र कोए ना आईआ। मन्दिर मस्जिद

शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर होए बदनाम, धर्म दा नेता सिर सके ना कोए उठाईआ। मन वासना विच जगत कामना विच सारे होए ग़ुलाम, ग़ुरबत अंदरों ना कोए कढाहीआ। एसे कारण सन्त सज्जण सूफ़ी फ़कीर इक्ठे होए आण, मजलस महबूब वाली लगाईआ। सब ने करनी परवान, परवाने बण के एन्हां शमां उत्ते जल के आपणा आप देणा तजाईआ। तुहाडे कोल सति धर्म दा निशान, सिदक सबूरी दा ईमान, आमद विच घर घर वज्जे वधाईआ। इक्ठे जाओ तमाम, तमअ दा झगड़ा देणा मुकाईआ। किसे दे अंगूठे लाउण वाला रख्या नहीं अष्टाम, शहादत दी लोड़ ना कोए बणाईआ। सारे सांझा प्यार मुहब्बत दा इक्को समझो इस्लाम, जिस दा इस्म आअज़म अज़ीमुलशान, महिबान मुहब्बत दा महबूब रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशे विच सन्त साजन मुनी सूफ़ी फ़कीर जिन्हां दा संदेसा बेनज़ीर, नज़र तों परे खोल्ह के दरे, वड़ के काया मन्दिर घरे, तोड़ के बज़र कपाटी कड़े, बणा के सति धर्म दे धड़े, धड़ा कलयुग कूड़ी क्रिया देण मिटाईआ। पूरन मेला होया पूरन सन्त, सोहणी बणत बणाईआ। ज्यों नार सुहागण मिली कन्त, दोहां मिल के वज्जी वधाईआ। प्यार मुहब्बत दी बणी बणत, सांझा रंग चढ़ाईआ। मुहब्बत विच सन्त

१०६२ कृपाल सिँघ उठ के गया अन्त, अन्तश्करन वेख वखाईआ। साची सिख्या लै के जाणा जगत जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। १०६२

सब दे अंदर इक्क भगवन्त, भगवन आपणी कल वरताईआ। जिस दी महिमा सदा अगणत, जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत

२० वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही गाईआ। ओस दा कदे ना होया अन्त, सन्तां दे हिरदे वस के परदा २०

अंदरों दए चुकाईआ। एह बोध अगाधा पंडत, जो बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जिन्हां ने तुहाडा लेखा मुकाउणा जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज चार खाणी विच मुड़ के फेर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त जनां दा हारदिक प्यार हिरदयां विच्चों फिरदयां तुरदयां आपणे विच रखाईआ। भगत भगवान दा शुरु होवे युद्ध, युधिष्टर दे के गया गवाहीआ। सारे निर्मल कर लओ बुध, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। हिरदा हो जाए सुध्ध, दुरमति मैल रहे ना राईआ। इक्क नूं लओ बुझ, जो मालक धुरदरगाहीआ। ओसे दी मुहब्बत विच जावो रुझ, प्रेम प्रीती इक्क बणाईआ। साची मंज़ल चढ़ो कुद्द, जित्थे सके ना कोए अटकाईआ। साचे नाम दा लाहा लओ लुट्ट, अमृत जाम पीओ थाउँ थाँईंआ। इक्क दूजे नूं जफ्फी पाओ घुट्ट, नाता बाहमी लैणा जुड़ाईआ। वेख्यो किते तुहाथों पल्लू ना जावे छुट, पक्की गंढ ना कोए खुल्हाईआ। हिम्मत कर के सारे पओ उठ, सोई सुरती आप उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार पतिपरमेश्वर बेपरवाह जाए तुठ, मेहर नज़र आपणी इक्क उठाईआ। सब दे अन्तर आत्म देवे अगम्मा सुख, शांती

शांती शांती चारों कुण्ट सोभा पाईआ। मरन दा होवे किसे ना दुःख, जो जीवदयां जी जगजीवण दाते भेंट कराईआ। सारे ताअ दयो मुच्छ, साडा आपा नहीं कुछ, सब कुछ ओसे दी झोली पाईआ। सच खुदा दे सारे पुत्त, पिता पुरख अकाल मनाईआ। जिस दे नाल सुहञ्जणी होवे रुत्त, गुल गुलशन चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। भगत भगवान वेख्यो फड़े कोई ना खण्डा, खड़ग हथ्थ ना कोए उठाईआ। प्रेम प्यार दा विवहार करे विच ब्रह्मण्डां, ज़िमीं असमानां रंग रंगाईआ। झगड़ा चुकावे जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज परदा लाहीआ। सचखण्ड धर्म दुआर वखावे इक्को कन्ढा, जिस दा तट किनारा वण्ड ना कोए वखाईआ। जिस नूं कहिंदे चूंकि चुनाचि अलबत्ता, आलमगीर इलम विच ला इलम दी देण सफ़ाईआ। उह सब दा मालक सका, वैरी मीत ना वण्ड वण्डाईआ। मानव ओसे दा बच्चा, जो मेहरवान महबूब मुहब्बत विच गोद उठाईआ। वेख्यो किते अज्ज दा बचन ना समझयो कच्चा, सारे सन्त फ़कीर इक्ट्ठे हो के सच संदेश सुणाईआ। एह कोई जगत सन्तां वाला नहीं लेखा पता, पटणे वाला इक्को करे अगवाईआ। दीन मज़्ह़ब दा सब दूई द्वैत दा मेटो रट्टा, अग्गे रिटन करन दी लोड़ रहे ना राईआ। आपणी कीमत ना कोई पवायो माया ममता विच टका, हँकार विकार देणा तजाईआ। वेख्यो किते ज़बान नाल बत्ती दन्द नाल मन वासना नाल कोई ना किहो अच्छा, बिबेक बुद्धी नाल सब ने हां विच हां लैणी मिलाईआ। जिस ने विश्व दा प्यार दा करना इक्ट्ठा, विछड़यां लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्नी दा तपण ना देवे भठ्ठा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। भगत भगवान दा सांझा होवे रथ, अर्जन कृष्न दए वड्याईआ। एहो प्रेम प्यार दी वथ, जगत लभ्भयां नज़र ना आईआ। सदा ओस दा गावो जस, जो सिफ्तां नाल सालाहीआ। ज़रा नेत्र खोल्ह के वेखो अंदरों अक्ख, जो सन्त कृपाल सिँघ सब नूं रिहा समझाईआ। निजर झिरने दा अमृत वेखो चट्ट, जो चेटक कूड़ा दए मुकाईआ। गृह मन्दिर वेखो आपणा हट्ट, जिस विच सौदा बेपरवाहीआ। द्वैत भावना कढो वट्ट, झगड़ा अवर रहे ना राईआ। जन भगतो जे मारो (ते मारो) नाम शब्द दी सट्ट, दूजी चोट ना कोए लगाईआ। जे भज्जो ते पन्ध मुकाओ नठ्ठ, जित्थे सन्त साजन नज़री आईआ। जे खुशी बणाओ ते खुशीआं विच पओ हस्स, हस्ती तक्को बेपरवाहीआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेटो मस, साचा चन्द नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। भगत भगवान मित्र वेखो दरोना चारज, जो गुरू कौरो पांडो नज़री आईआ। जित्थे सब दा लेखा होवे खारज, कलम शाही दी लोड़ रहे ना राईआ। ओस धाम दा इक्को इक्क इनचारज, जो हुक्मे विच हुक्म बदलाईआ। जिस दी कोई (रक्ख्या) वाली नहीं गारद, डीफ़ैंस विच वण्ड ना कोए

वण्डाईआ। उह सदा प्रगट होवे विच भारत, आदि दी रीती चली आईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद लिख के गए इबारत, अलिफ़ ये विच गए दृढ़ाईआ। ओस नूं किसे दी लोड़ नहीं सफ़ारश, इक्क इकल्ला सब कुछ लए कराईआ। इक्क दूजे दा कर लओ सारे तुआरफ़, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखो एह सन्तां दी वज़ारत, जिस नूं तोड़ के वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए समझाईआ। एह धर्म दा प्रेम दा युद्ध हथ्थ फड़े ना कोए तलवार, शस्त्र अस्त्र ना कोए वखाईआ। जे सारे सांझा कर लओ प्यार, खण्डा खड़ग ना कोए वड्याईआ। तुहाडी मंज़ल ना रहे दुष्वार, दूती दुश्मण सीस निवाईआ। उच्ची कूक बोलो पुकार, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। विच्चों निकलो डूँघी ग़ार, काया भँवरी पार कराईआ। सच शब्द सुणो धुन्कार, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत पीवो ठंडा ठार, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। निर्मल जोत करो उज्यार, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। द्वापर दा लेखा जिस ने सुणाया नाल वार, वारता नाल जुड़ाईआ। सारे हो जाओ ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जिस दे हथ्थ सर्ब संसार, उह रथवाही धुरदरगाहीआ। वागां मोड़ के आवे सन्तां दे दरबार, दर दरवाज़ा

इक्क सुहाईआ। जिस दे नाल मुहम्मद संग यार चार, चार कुण्ट दी अक्ख दए खुल्हाईआ। ग़फ़लत विच्चों होवो बेदार, नाबीना रहिण कोए ना पाईआ। उच्च महल्ल तक्को मनार, महबूब तक्को नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखाईआ। जन भगतो तुहाडे अंदर इक्क रथवाही, जो दिवस रैण काया रथ चलाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाही, शहादत विच गुर अवतार पैगम्बर दए भुगताईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण हो के भज्जे वाहो दाही, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आपणा पन्ध मुकाईआ। उह कदे रहिण ना देवे कूड़ी शहिनशाही, शहिनशाह हो के साचा धर्म दए प्रगटाईआ। तुसीं आदि तों इक्क इक्को तुहाडी इकाई, एका रूप नज़री आईआ। सिफ़रे वाली वधे ना कोए दहाई, दहाई दा सैंकड़ा सैंकड़े दा औंकड़ इक्को लैणा बणाईआ। जेहड़ी सिख्या अठारां ध्याए गीता रही समझाई, अर्जन दा नाता बिधाते नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा मेला मेल मिलाईआ। कृष्न कहे अर्जन सुण अगम्मी बात, तैनूं दयां समझाईआ। कलयुग अन्तिम मार झाक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस वेले सति धर्म ने पाउणी वफ़ात, मुर्दा होए लोकाईआ। भाई भाई विच नहीं रहिणा इत्तफाक, घर घर विच एहो होए लड़ाईआ। कोई सन्त फ़कीर विरला जावे जाग, जिस दे अंदर रहमत आप कमाईआ। भज्जे फिरन पुतले ख़ाक, दहि दिशा पए दुहाईआ। बिना पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा

करे ना कोए इतफाक, अन्तर आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। दुनिया रोवे इन्द्रिआं दे घाट, मंज़ल मुके ना किसे वाट, सेजा सोहे कोई ना खाट, जगत नटुआ होवे नाट, स्वांगी दा स्वांग समझ कोए ना पाईआ। एह खेल होणा तमाश, दीन मज़्ब करन पसचाताप, हकीकी कलमा भुल्ले जाप, नव नौ चार वधे पाप, वण्ड पै जाए बुत्त ख़ाक अल्ला वाहिगुरू राम नाम राधे कृष्न दी आपस विच पए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। अर्जन कहे दीनां नाथ की झगड़ा पए नाम भगवान, कुछ मैनूं दे जणाईआ। भगवन कहे ना हो हैरान, बिन अक्खां दयां वखाईआ। जिंनां चिर कलयुग विच सारी सृष्टी दी दृष्टी इक्क भगवन्त नूं ना समझे आपणा काहन, ओनां चिर जीव जंत सुख कोए ना पाईआ। उह सब दे अंदर वस्या राम, जो देवे हक पैग़ाम, जिस दा पैगम्बर नूर निशान, निशानयां दे निशाने दए बदलाईआ। ओसे नूं कहिणा मैहन्दी अमाम, ओसे नूं कहिणा निहकलंक बलवान, ओसे नूं कहिणा कल्की अवतार नौजवान, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। ओस दा खेल होणा महान, जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा विधान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ओसे नूं सीस निवाईआ। ओस ने सब दा सांझा करना इक्क मैदान, मुद्दत दे विछड़े लैणे

१०६५ मिलाईआ। सारे सन्त भगत अज्ज ओसे अकाल पुरख दा कर दयो ऐलान, जो अलामत कूड़ दी दए गवाईआ। एह देण १०६५

आए फ़रमान, मुनी जी पैदल चल के पन्ध मुकाईआ। सन्त कृपाल सिँघ जी बड़े योद्धे बलवान, जिनां ने सूरबीरता विच

२० आपणा कदम ल्या उठाईआ। की ऐधर आचारीआ शास्त्री जी वेखण खेल महान, द्वापर दा लेखा रहे समझाईआ। अग्गे २०

कोई ना बणयो नादान, नेत्रहीण ना कोए अख्वाईआ। सारे सूरबीर हो के योद्धे हो के आओ विच मैदान, धर्म दी चण्डी आपणे हथ्थ उठाईआ। साडा सारयां दा साचा इक्क इस्लाम, कादीआं दा हुणे संदेसा दे के गया पैग़ाम, परगणा बटाला इक्क दृढ़ाईआ। वेख्यो किते गुर अवतार पैगम्बरां नूं कर ना दयो बदनाम, मनमति दा राह चलाईआ। एह सन्त सज्जण जगत दी मेटण अन्धेरी शाम, शमां दीप करन रुशनाईआ। आओ मिल के सारे पीओ हकीकी जाम, जिस दा रस नशा उतर कदे ना जाईआ। एस युद्ध विच सन्त कोई करन नहीं आए कत्लेआम, कातिल मक्तूल रूप ना कोए वटाईआ। सारे सुख नाल आत्मा परमात्मा दा सांझा करो ज्ञान, जिस नूं सोहँ कहि के आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे गाईआ। किसे दर होयो ना कदे गुलाम, एका परम पुरख पिता पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। युधिष्टर कहे दस्स कृष्न भगवन्त, त्रिलोकी नाथ तेरी सरनाईआ। की अगला होवे मंत, परदा दे चुकाईआ। कृष्न कहे सुण प्रभू दे सन्त, तैनूं दयां समझाईआ। हुण द्वापर होया अन्त, कलयुग अग्गे अक्ख खुलाईआ।

सदी चौधवीं कूड़ा वज्जणा डंक, बीसवीं नाल मिलाईआ। बोध अगाधा रहे कोई ना पंडत, बुध बिबेक ना कोए कराईआ। गढ़ होवे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। बिन अक्खरां तों मेरी एह सनद, जेहड़ी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। युधिष्टर कहे कृष्न लिख दे तहिरीर, अक्खरां नाल बणत बणाईआ। की खेल होवे बेनज़ीर, मैनूं दे समझाईआ। कृष्न किहा एह बिना मुसवर तों खिच्चण वाली तस्वीर, जिस दा नकश सके ना कोए बणाईआ। जिस दी मर्यादा ओसे ने कलयुग करना तामीर, तमअ विच जगत देणा बदलाईआ। मन पातशाह ते ख़ाहिश बणा वज़ीर, पंजां तत्तां उत्ते हकूमत देणी चलाईआ। हंगता दी प्रगट कर शमशीर, घर घर झगड़ा देणा पाईआ। हज़रत मूसा धुर दे कलमे दी दस्सणी तदबीर, तरीका नबीआं वाला जणाईआ। सारे मन्न लओ इक्को पीर, पैगम्बरां दा पैगम्बर नज़री आईआ। की खेल होणा अख़ीर नानक गोबिन्द दे के गए गवाहीआ। जे युधिष्टरा चिट्टे उत्ते काली पा दयां लकीर, ओस नूं सके ना कोए मिटाईआ। सदा रमज़ां वाले हुन्दे फ़कीर, फ़िकरे पढ़े कम्म किसे ना आईआ। एह धर्म दा युद्ध कोई ना होयो दिलगीर, हौसले आपणे लओ वधाईआ। हथ्थ विच कूड़ी रहे ना कोए ज़ंजीर, शरअ दे संगल देणे तुड़ाईआ। इक्क रूप हो जाओ शहिनशाह पातशाह मुफ़लिस ते फ़कीर, अमीरी ग़रीबी किसे नाल ना जाए प्रनाईआ। सांढूआं वाली रखयो ना कोए तकदीर, नाता इक्को नाल गंढाईआ। जे उह मिल जाए फेर मंज़ल मिले अखीर, राह विच ना कोए अटकाईआ। काया दे अंदर मन दे नफ़र सारे दिसण हकीर, हिकमत चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला परदा रिहा उठाईआ। अर्जन कहे कलयुग विच कवण बणे रथवाही, जन भगतां रथ चलाईआ। त्रिलोकी नाथ कहे जो काहनां दा काहन बेपरवाही, जिस दा रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। सदा सतिजुग त्रेता द्वापर जिस ने बदल दिती शाही, उह अन्तिम कलयुग वेख वखाईआ। ना ओहदा पिता ना कोई माई, जननी गोद ना कोए उठाईआ। उह खेले खेल धुरदरगाही, जल्वागर नूर रुशनाईआ। इक्क इकल्ला बण के पाँधी राही, लोक परलोक तबकां सबक इक्क समझाईआ। एहो जेहा पिच्छे कोई नहीं होया रथवाही, जो काया मन्दिर अंदर वड़ के पंजां तत्तां दा रथ दए चलाईआ। त्रैगुण माया अग्गे भज्जे आपे वाहो दाही, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। जेहड़ी मंज़ल किसे हथ्थ ना आई, उह प्रभू किरपा कर के भगतां दए वखाईआ। फिर सारे कहिण हक खुदा तेरा नाम दुहाई, तेरा ढोला इक्को गाईआ। वेख्यो किते हो ना जाए जुदाई, जुदा दा खुदा मालक नज़री आईआ। तुहाडे अंदर प्रीती होवे अग्गे नालों दूण सवाई, जिस दा अंकड़ा समझ कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले सारे कहिंदे असीं भाई भाई, जे अंदरों हउमे दा बूटा

पुट्ट दयो बाहर कढु दयो हैंकड़ाई, रहमत आपे दए कमाईआ। क्योंकि सब दा इक्को सांझा माही, जो मुहब्बत महबूब आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समेलन साची सभता दए वड्याईआ। रथ कहे मैनूं कौण चलाउँदा, वागां घोड़यां हथ्थ रखाईआ। चार कुण्ट दे विच भवाउँदा, गेड़ा नज़र किसे ना आईआ। अस्त्र शस्त्रां तों बचाउँदा, तीर पोह ना सके राईआ। भगतां दी प्रीती दे ढोले गाउँदा, मुकट बैन कँवल नैण बन बिन्दरा निवासी मथरा दा साथी सोभा पाईआ। जिस दी कला किसे ना जाती, दर्योधन वरगे बण गए घाती, ओनृां समझी नहीं बनबास वाली पाती, पत्रका दा परदा ना कोए उठाईआ। एहो खेल पुरख अबिनाशी, जेहड़ी जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। अर्जन ओस वेले जेहड़ा मंनूं सच्चे सतिगुर दी आखी, सो खुशीआं विच आपणा झट लँघाईआ। बाकी सब नूं दिसे रैण अन्धेरी राती, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। सारयां लभ्भणा किथ्थे प्याला देवण वाला साकी, जो नाम सुराही दए उलटाईआ। जन भगत कहिण जे किरपा करे आपणा मेल करे इत्तफाकी, इतफ़ाकिया आपणे नाल मिलाईआ। दीन मज़ृब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान राज राजान क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे बाणी परा पसन्ती
१०६७ मद्धम बैखरी, चारे वेद ओसे दा भेद, अञ्जील कुरान ओसे दा निशान, जिस दा निशाना सारे तक्कण थाउँ थाँईंआ। इक्क १०६७
संदेसा सुणो श्री भगवान, जो सब नूं रिहा सुणाईआ। वेख्यो किते अंदरों रिहो ना कोई बेईमान, मन शैतान आपणा दाउ
२० ना सके लगाईआ। साचे सन्तां दा करो चरण ध्यान, जित्थे मिले नाम निधान, मंज़ल हकीकी पहुंचो आण, जित्थे लाशरीक २०
सोभा पाईआ। ना ओथे चिल्ला ना तीर ते ना कमान, ना कोई योद्धा सूरबीर बलवान, ना कोई खड़ग खण्डा चमके विच मैदान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को साचा नाम, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिनृां सन्तां दे चरणां दे थल्ले झुकदे ज़िमीं असमान, ओथे पैंडे मुकदे जगत जहान, जहालत रहिण कोए ना पाईआ। सारे आपणा इक्क बणाओ सांझा विधान, जिस दी तरमीम अग्गे ना कोए कराईआ। आपणे निसचे नाल साची बुद्धी नाल अनुभवता नाल उस नूं करो परवान, मन दी विचार अग्गे ना कोए रखाईआ। फेर सफ़ल होवे ते सफ़लता विच बणो बलवान, बल आपणा लैणा प्रगटाईआ। जे रथ तों उतर के अर्जन आपणा नहीं कीता दान, दान दा मालक आपणा खेल आप खिलाईआ। सारे इक्ठे होए आण, इकत्तरता विच मित्रता विच साचा साथी बैठे बणाईआ। विशेष विद्या सृेष्ट बुद्धी मन कल्पणा दवैश भावना अज्ज उह सांझा होवे घमसान, योद्धे सूरबीर अंदरे अंदर लड़दे नज़री आईआ। जिनृां नूं इक्क उत्ते विश्वास, जिस दा नूर सर्ब प्रकाश, आदि जुगादि सदा अबिनाश, जन्म मरन विच ना आईआ। ओस प्रभू दी एकता वास्ते जिनृां नूं मन्ज़ूर एह विधान, उह हथ्थ खड़े करो नौजवान,

परस्ताव पास कर के रिषीआं मुनीआं दे अग्गे दयो टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शास्त्री जी तुहाडे रथ दा वेख रस्ता, भगवान भगत मिलण दा मार्ग सस्ता, टकयां वाली भेंट ना कोए चढ़ाईआ। अंदर विचार पैदा कर लओ प्रभू दे साचे जस दा, नेत्र लोचण दीदार कर लओ ओस दुआर नेत्र अक्ख दा, जिस विच प्रतख मिले बेपरवाहीआ। जेहड़ा खुशीआं विच हस्सदा, प्रेमीआं कोलों कदे नहीं नस्सदा, जद वेखो काया मन्दिर अंदर वसदा, आत्म दी सेजा रिहा हंढाहीआ। जिस दा महल अटल उच्च मनारा कदे ना ढठ्ठदा, छप्पर छन्न ना कोए बदलाईआ। ओथे इक्को दीपक जगदा, जगमग जोत करे रुशनाईआ। ओथे की करूगा शास्त्री जी भांबड़ अग्ग दा, जित्थे अमृत दी बरखा रिहा लाईआ। तुसीं नज़ारा वेखो अज्ज दा, घनघोर घटा चारों कुण्ट छाईआ। एथे सन्त फ़कीर मुनी मालक महबूब जिन्हां दे हिरदे अंदर वस्सदा, बैठे सोभा पाईआ। नज़ारा लै लओ ओस रस दा, जिस रस्ते विच जांदयां अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। गुरमुखो दुःख वण्डो टहणी नालों सुक्के कक्ख दा, दर्द वेखो विछोड़ा तक्को आत्मा दा परमात्मा नालों रहिणा वक्ख दा, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अग्गे हुण वक्त बणाओ सच दा, भाण्डा फुट्ट जाए काया माटी कच्च दा, मनुआ दहि दिशा ना
१०६८ फिरे नच्चदा, सति दा रस्ता लैणा अपनाईआ। एह समेलन सति धर्म यज्ञ दा, जो पैंडा मुकावे उपर शाह रग दा, जित्थे १०६८
अमृत सोमां वगदा, सुखमन टेडी बंक राह विच ना कोए अटकाईआ। वेख्यो किते एथों जा के घर रूप ना बण जायो कग्ग
२० दा, हँसां दे हँस नजरी आईआ। एह कोई खेल नहीं अल्पग दा, सूरा सरबग सब नूं दए वड्याईआ। तुसां फ़ैसला करना २०
असां झगड़ा छड्डणा मज़्हबां वाली हद्द दा, हदूद विच रह के आपणा आप बन्द ना कोए कराईआ। ओस अनामी धाम दे मालक नद दा, जो नाद काया मन्दिर अंदर रिहा सुणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण निराकार साकार प्रेम प्यार प्रीती मुहब्बत विच आपणे आप नूं आत्मा दे रूप विच परमात्मा हो के लभ्भदा, आपणा आप आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस दे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। रथ कहे मैं बड़ा भज्ज भज्ज नठ्ठा नठ्ठया दौड़, इधर उधर चक्र लाईआ। रस्ता मार्ग रिहा ना कोई सौड़, क्यों मेरा रथवाही रथां दा मालक नज़री आईआ। जिधर वेखां उधर जाए बौहड़, बिना रथ तों आपणा रथ वक्खरा लए चलाईआ। उह कोई कौरोकशेतर वाला नहीं जौहड़, पाणी वाला तालाब नज़र कोए ना आईआ। उह धुर दा काहन नौजवान निरगुण दाता पुरख बिधाता तुहाडे काया मन्दिर अंदर जावे बौहड़, जित्थे पंज तत दा झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। ज़रा तक्क के वेखो नाल ग़ौर, कौण तुहाडे मन्दिर पावे शोर, अन्धेरा घोर कवण कराईआ। जे भगतो तुसीं समझो असीं होर ते परमात्मा होर,

एह बात पुरख अकाल कदे ना भाईआ। सन्त सज्जण मीत मुरारे सब नूं देवण आए सौग़ात, लेखे ला लओ अज्ज दी रात, अग्गे खुशीआं वाली होए प्रभात, प्रभाती दी सौग़ाती तुहाडी झोली पाईआ। सारयां दी सांझी इक्क बात, तुलबे बणके हथ्थ फड़ो कलम दवात, सांझे नाम दी पट्टी लिखो साख्यात, असां दूई द्वैत करना नास, इक्को नूर वेखणा प्रकाश, जो एथे ओथे दो जहान देवे साथ, आत्मा दा रथवाही प्रभू रघुनाथ, जिस नूं भगत राजा राम गया समझाईआ। हुण अग्गे रहिण नहीं देणा कोई इखतलाफ, सन्त साजण पिछलीआं कीतीआं दी प्रभ नूं मिल के सब दी खता करन मुआफ़, भुल्ल अग्गे ना कोए कराईआ। सारे प्रभ दे प्यारे बण के दस्स दयो असीं वी सारे साध, साधां दी साधना नाल मता आप ल्या बणाईआ। इक्क नूं लओ अराध, जिस नूं राधे स्वामी कहि के राधे कृष्न कहि सारे रहे मनाईआ। उह आत्मा परमात्मा जिस दा सदा जुड़या रहे नात, आत्मा नालों होए (ना कदे जुदाईआ)। जे अंदर वड़ जाओ मन्दिर चढ़ जाओ निरखर अक्खर पढ़ जाओ फेर तुहाडी समझ विच आए कि साडी कदे ना होए वफ़ात, आत्मा मरन जम्मण विच ना आईआ। तुहाडा ख़ुदा पाक, तुसीं वी हो जाओ पाक, मन्न लओ इक्को बाप, जिस विच मज़ा सच चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सब दा रथ, जो लत्तां पैरां नाल रिहा नठ्ठ, नेत्र इशारयां नाल आपणी करवट लए वट, रासां मल दे हथ्थ फड़ाईआ। हुण सन्तां महातमां कीता इक्ठ, मुनी सुशील कुमार किहा आपणे भाषण विच उह सति दा सरूप इक्को जट्ट, जो सिध्धा सादा नज़री आईआ। सब दे अग्गे जाए डट, सूरबीर आप अख्वाईआ। सन्त महात्मा नूं अंदर वड़ के देवे दस्स, सहिज नाल समझाईआ। इन्हां सारयां नूं कर लओ वस्स, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। फेर कहीए शास्त्री जी श्री भगवान ज़रूर भगतां दा चलाए रथ, रथवाही हो के भगतां दा बेड़ा पार कराईआ। भगतो तुसीं वी जाओ अग्गे डट, आकड़ नाल प्रभ नूं दयो सुणाईआ। जे असीं तेरे ते तूं साडा क्यों साथों रिहा नठ्ठ, नेत्र अक्ख नैण शरमाईआ। असीं तैनूं गाईए बण के भट्ट, तूं करवट ना सकें वट्ट, बिरहु दा ला के फट्ट, विछोड़े विच तड़फाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रथ दा मालक इक्क बणाईआ। रथ कहे मेरा मालक कौण, कवण रिहा चलाईआ। जिस दा लेखा पाणी पवण पाउण, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जो दुष्ट सँघारी बणया राम राउण, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जिस दी मुच्छ दाढ़ी तन विच ना कोई धौण, धर्म दवारे बैठा डेरा लाईआ। जुग जुग उजड़यां आए वसाउण, विछड़यां मेल मिलाईआ। सोईआं सुरतीआं आए जगाउण, नाम हलूणे नाल उठाईआ। सच दवारे आए बहाउण, मन्दिर इक्को इक्क वखाईआ। कूड़ी क्रिया आए ढाउण, हँकारी बुरज रहिण कोए ना पाईआ। साचा नाम आवे जपाउण, संदेसा इक्क सुणाईआ।

रोंदयां आए हसाउण, जिस तरह मुनी सुशील कुमार जी हस्स हस्स के सब दी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ वेखे थाउँ थाँईंआ। श्री भगवान कहे मैं कलयुग वेखां रथ केहड़ा केहड़ा, चारों कुण्ट (चारों) ओर ध्यान लगाईआ। जिधर तक्कां उधर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ दिसे झेड़ा, झगड़ा रब्ब दे नाल रखाईआ। दहि दिशा होवे मेरा मेरा, तेरा राग ना कोए अलाईआ। माया ममता पाया घेरा, घिरना विच लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तक्कया मंज़ल मंज़ल पाया फेरा, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। बहुत्यां विच्चों थोड़यां सन्तां ने मुनीआं ने रिषीआं ने सूफ़ीआं कीता ज़ेरा, आप आपणा बल प्रगटाईआ। धरती दा खुला करना वेहड़ा, विच्चों हद्द बन्ने देणे बाहर कढाहीआ। फेर आपे रहमत दा मालक करे मेहरा, मेहर दी बरखा दए लगाईआ। उह सब दा मालक इक्क जो भय देण वाला रूप सिँघ शेरा, शरअ दा लेखा दए मुकाईआ। जिस दे हथ्थ हकीकी नबेड़ा, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। मालवे वाल्लयो ज़रा खेल वेख्यो केरां, किरत कर्म दे विछड़े लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ दा रथवाही दाता धुरदरगाही नूर इलाही मुहब्बतां विच महबूब, वसणहारा अर्श अरूज, आलीशान बेपरवाहीआ। रथ कहे मैं जाणा किथ्थे, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीव पैरां हेठां दब्बे, माया ममता मोह भार टिकाईआ। बड़े बड़े मोटे दूज्जयां दी रत पी पी फिट्टे, आपणे आप नूं बलवान रहे बणाईआ। लड़दे फिरदे उपरों पत्थर इट्टे, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ इन्हां पिच्छे होए लड़ाईआ। वेख्यो परम पुरख सन्त साजण सारे मिल के हुण दीन दुनी दे कढ्ढ देण सिट्टे, सिट्टेबाज़ी रहिण कोए ना पाईआ। सब दे लेखे होणे चिट्टे, कूड़ी क्रिया होए सफ़ाईआ। मार्ग लग्गणा सिध्धे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। खुशीआं विच दो हथ्थां दे तालीआं नाल पाउ गिध्धे, गीदी नज़र कोए ना आईआ। सन्त कृपाल सिँघ ने जिन्हां दे अन्तर तीर नाल विध्धे, मुनी निशाना प्रेम वाला लगाईआ। प्रभ मिलण दी दस्सी बिद्धे, बिधना दा लेखा दिता गवाईआ। उह भागां वाले किड्डे, वडे सूरबीर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। शास्त्री जी आप ने भगत भगवान दा कीता ब्यान, पवित्र रसना नाल सालाहीआ। एह जट्ट दा विधान, वाहिद नज़री आईआ। जिस दे मंनयां मिले कल्याण, कायनात कलमयां दी कलाम विच्चों परदा दए उठाईआ। वखावे उह निशान, जिस नूं बेनिशान कहि के सारे रहे सुणाईआ। सन्त महात्मा मुनी इक्क प्रेम दा लै के आए तुफ़ान, कूड़ी क्रिया नूं देण रुढ़ाईआ। सूरबीर बहादर बणो नौजवान, नाम दा खण्डा हथ्थ उठाईआ। तुहाडे अंदर रह ना सके कोई शैतान, शैतान ते रहमान इक्क थाँ टिकण कदे ना पाईआ। तुसीं हुण तलवारां मैं सब दा सांझा इक्क म्यान, मीआं बीवी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धर्म सियासत

सियासत धर्म धर्म दा रूप धर्म निशान, धर्म दी धार धर्मीआं विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ। रथ कहे मेरा भाउँदा वेखो पहीआ, चक्र धरत वाला लगाईआ। कृष्न कहे अर्जन सदी वीहवीं वेख कलयुग डोलदी दिसे नईआ, नौका पार ना कोए कराईआ। सारे लभ्भण सच्चा सईआ, भज्जण थाउँ थाँईंआ। बिन सन्त सतिगुर कोई ना फड़े बहीआ, अंग नाल अंग ना कोए जुड़ाईआ। जिधर तक्कण धर्म राए कढ्ढी बैठा वहीआ, चित्रगुप्त सब दा लेखा रिहा सुणाईआ। अर्जन कहे भगवन किहड़ी गल्ल कहीआ, कहि के दिती सुणाईआ। ओस वेले की तूं वी लुक जाएंगा गोसईंआ, आपणी बंसरी नाम छुपाईआ। कृष्न किहा अर्जन मैनूं उह सखियां विसर गईआ, जेहड़ीआं विषयां विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा सुणाईआ। रथ कहे मैं खाधे कई चक्र, चक्रवरती दित्ते खपाईआ। मेरा लेखा लिख्या नहीं किसे सतर, इक्क लख सतारां हज़ार सलोक सोभा ना कोए सुणाईआ। मैं रिहा ख़ाली फक्कड़, फोकड़ रूप बणाईआ। जोधिआं नाल जोधिआं दी कराई टक्कर, घमसान वाली लड़ाईआ। कृष्न दवारे गया अप्पड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। जो कोई मैथों भुल्ल होई काहन मेरे सिर उत्ते मार थप्पड़, हथेली प्रेम वाली
१९०१ लगाईआ। मेरे उत्ते होवे तेरी मेहर दा असर, असुर रूप रहिण ना पाईआ। सोहणा जीवण होवे बसर, जिंदगी विच वड्याईआ। १९०१
२० कृष्न किहा ओ रथा तेरे विच अजे थोड़ी कसर, कसर इशारीए नाल मिलाईआ। जिस वेले कलयुग सदी चौधवीं दुनिया दा खुदा नूं भुल्ल के होण लग्गा हशर, हस्ती जगत मस्ती विच भुलाईआ। फेर उह आपे लवे पकड़, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस ने तराज़ू विच नानक बण के तोलणा तक्कड़, सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द धार बणे रखक, रक्षा करे चाँईं चाँईंआ। जिस वेले आया ओस दा वक्त, आपणा नूर करे रुशनाईआ। साचा संदेसा देवे जगत, जागो जागो जागो सोया रहिण कोए ना पाईआ। इक्क दे कोल इक्क दी शक्त, इक्क शक्त दे सारे भगत, भगतां विच होए व्यकत, व्यक्तिगत ब्रह्म मत पारब्रह्म दी धार प्रगटाईआ। अर्जन किहा भगवान मेरे नाल ला शर्त, की फेर वी आवें परत, फेरा पावें उत्ते धरत, भगतां मन्ज़ूर करें अरज़, कृष्न किहा अर्जन एह उस काहन दा फ़र्ज़, जो काहनां दा काहन नज़री आईआ। उह सब दी वण्डे दर्द, छुरी चलण ना देवे करद, किसे दा होण ना देवे हर्ज, दुखियां दी मेटे मर्ज़, मरीज़ां दा डाकटर इक्को नज़री आईआ। अर्जन किहा फेर की होवे फ़र्क, कृष्न किहा उह दीन मज़्ब देवे तरक, सब दे काया मन्दिर अंदर वड़ के लवे परख, पारखू इक्को नज़री आईआ। साचे सन्तां भगतां जोती जाता पुरख बिधाता परवरदिगार सांझा यार हो के देवे दरस, दरसी आपणा दरस कराईआ। खेले खेल अर्श फर्श, ज़िमीं असमानां आपणी कार कमाईआ। सब दी मेटणहारा

हरस, हवस कूड़ी दए मिटाईआ। पूरब दा लेखा किसे दा रहिण ना देवे कर्ज़, मकरूज़ हो के सब दी झोली दए भराईआ। एह खेल होणा असचरज, उह परमात्मा ना नारी ते ना मर्द, ना मीआं ते ना बीवी सदा आदि जुगादि बेअन्त, महिमा अकथ कथ ना कोए जणाईआ। जिस दे नूर उजाले साचे सन्त, जिन्हां दा निशाना इक्क भगवन्त, दूजा राह ना कोए समझाईआ। अर्जन किहा भगवन उह केहड़ा होवे सम्मत, समां दे सुणाईआ। भगवन किहा अर्जन जिस वेले गुरुआं दे चेले होण हराम निमक, सतिगुर दा बचन ना कोए कमाईआ। सृष्टी दी बुद्धी होवे अहिमक, भावें किसे दी धोती होवे भावें होवे तहिमत, भावें होवे बोदी भावें मंग के खावे रोज़ी, भावें दाढ़ी खुल्ही छड्ड के कहे मैं प्रभ बड़ा मौजी, प्रभ जिंनां चिर अंदरों ना देवे सोझी, बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। अर्जन दुनिया होणी हउमे दी रोगी, तृष्ना होणी भोगी, कोई विरला दिसे जोगी, जो मूंह उत्ते पट्टी बन्न्ह के पटेदारी दा लेखा दए मुकाईआ। किसे ने बन्न्हणी तेड़ लंगोटी, किसे ने चढ़ना उपर चोटी, किसे ने हथ्थ विच फड़नी सोटी, किसे ने दस्सणा वखावां निर्मल जोती, किसे ने कहिणा मैं मालक सारे लोक परलोकी, किसे ने पढ़ सुणाउणी पोथी, कृष्न किहा अर्जन जिस ने इक्क सति दी विचार सोची, सो सन्त मिले भगवन्त जिस दा संजम
१९०२ इक्को नज़री आईआ। कई होए जोगी, कई होए संजोगी, कई होए विजोगी, कई होए भोगी, कईआं चलाउणे ख़ाने मोदी, कई अख्वाउणे बेदी सोढी, जिंनां चिर अंदरों कँवल दी खिले ना डोडी, अमृत बूँद स्वांत ना पहुंची सो जगत वासना १९०२
२० दा शौकी, उह शौकीनी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, २०
साची करनी कार कमाईआ। पहीआ कहे मैं फिरदा फिरदा गया घिस, मेरी खल्ल दिती लुहाईआ। कृष्न की तूं मैनूं भगवान रिहा दिस, परदा दे उठाईआ। त्रिलोकी नाथ कर के आपणी पिठ्ठ, पिच्छा ल्या बदलाईआ। हथ्थ दी वखा के गिठ्ठ, सवा दिती वधाईआ। जे इक्क बचन रखें चित, चित ठगौरी कोए ना पाईआ। ओए रथा बिना भगवन तों पक्का समझीं कोई ना मित, अर्जन वरगे पल्लू गए छुडाईआ। जे करना सिक्खणा ते सिखो इक्क दा हित, जो हितकारी आप अख्वाईआ। जेहड़ा प्रगट होवे नित नवित, जुग जुग वेस वटाईआ। राती सुत्तयां दिने जागदयां, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपणे नाम दी मारे खिच्च, बाहरों डंक ना कोए वजाईआ। रथ कहिंदा भगवन आपणे प्यार दी दे इक्क चिट, चिठ्ठी मेरे हथ्थ फड़ाईआ। कृष्न किहा वेखीं किते भुल्ल के ना देवीं सिट्ट, मिट्टी ख़ाक विच रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। पहीआ कहे मैं रिहा भाउँदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं ही तूं ही रिहा गाउँदा, इक्को राग सुणाईआ। चरण धूढ़ी रिहा नहाउँदा, दुरमति मैल धवाईआ। जिस वेले वेला वक्त आया मेरे गौं दा, मैं कहि

के दिता सुणाईआ। ऐ कृष्न की भुलेखा पावें आपणे नाउँ दा, नाम सिफ्त वाला बदलाईआ। की झगड़ा मुक्के तन वजूद ग्राउँ दा, तन माटी वाला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। ओ रथ, भगवन धुर दा सदा अदली, अदल इन्साफ़ इक्क कराईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे मज़ली, मंज़ल सब दी वेख वखाईआ। दीन दुनी दी करे बदली, बदला आपणे हथ्थ जणाईआ। जिस वेले कलयुग माया ममता मोह वध्ध गई, कूड़ी क्रिया होए हल्काईआ। फेर उह परम पुरख परमात्मा निरगुण रूप आवे जग लई, जिस विच जागरत जोत बिन वरन गोत सन्त फ़कीर करन रुशनाईआ। अबिनाशी करता जद आवे ते बुझाउण अग्ग लई, अगला मार्ग इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क समझाईआ। पहीआ कहे मेरा आपणा आप होया चूर, साड़ के चूरमा दिता बणाईआ। युद्ध दी अग्ग ने कीता मनूर, मनुक्खां ने मनुक्खता दिती मिटाईआ। दर्योधन दे हँकार मचाया फ़तूर, फ़तवा कृष्न ने दिता लाईआ। एह युद्ध होया ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। रथ कहे प्रभू मेरा की कसूर, भगत भगवान नूं चुक्क मैं भज्जया वाहो दाहीआ। कृष्न किहा रथा जिन्हां दा मैं साथी उन्हां दा डोब दिता पूर, आपणा भेव ना किसे खुल्हाईआ। भाणे अंदर हुक्म अंदर सब नूं होणा पए मजबूर, सिर सके ना कोए उठाईआ। समां बदलना प्रभ दा एह दस्तूर, सदा सद आपणी कार कमाईआ। ओए रथा, अग्गे होर अजे ओस परमात्मा दा नाँ होए मशहूर, ओनूं अलाह कहि के सारे मलाह लैण बणाईआ। नानक निरगुण सरगुण होणा नूर, सतिनाम दए दृढ़ाईआ। गोबिन्द सति धर्म विच भरपूर, फ़तहि डंका दए सुणाईआ। फेर कलयुग विच वधणा कूड़, मूर्ख मूढ़ बणे लोकाईआ। उस वेले हकीकत दे मालक नूं आपणी सृष्टी दी दृष्टी नूं इष्टी बण के वेखणा पए ज़रूर, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। साचे सन्तो भगतो गुरमुखो प्रेमीओ प्यारयो तुहाडे अंदर इक्को उस दा नूर, जिस नूर नाल एस तन विच होवे रुशनाईआ। अज्ज दा प्यार मुहब्बत विच सारे करो मन्ज़ूर, मन्ज़ूरी विच वज्जे वधाईआ। सन्त महात्मा रिषी मुनी सूफ़ी आचारीए जो इक्ट्ठे होए पैंडा मार के आए दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एह उसे दी धूढ़, जो धूढ़ी टिक्के सब नूं दए लगाईआ। वेक्ख्यो कोई बणे रिहो ना मूर्ख मूढ़, अन्ध अज्ञान अंदरों देणा कढाहीआ। फेर सारयां दे बख्शे जाण कसूर, पुरख अबिनाशी घट निवासी परवरदिगार सांझा यार वली अल्ला अलाही नूर या मुबीन कहि के सब दा शुकर मनाईआ।

११०३ २०

★ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

दीन दुनी दा नाता होवे इक, एका मिल के वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख के गए भविख, पेशीनगोई विच सुणाईआ। सब दा सांझा यार हरि करतार पए दिस, दहि दिशा करे रुशनाईआ। मेल मिलाए हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मन दी वासना यित, कल्पणा कूड़ दए मिटाईआ। चार वरनां अठारां बरनां सब दा लहिणा देणा लए नजिठ्ठ, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आप रिहा सुणाईआ। सांझा नाता होवे जग, जगजीवण दाता आप कराईआ। ऊँच नीच सारे सद्द, शाह सुल्तान नाल मिलाईआ। तन दीआं वण्डां वाला रहे ना कोए अड्ड, वजूद दा झगड़ा दए गवाईआ। दीन मज़्हब दी तोड़ के हद्द, घर इक्को रंग वखाईआ। जिस घर आत्म परमात्म दोवें रहे वस, मन्दिर साचा सोभा पाईआ। ओथे वेखण वाली वी इक्को अक्ख, दो नैणां राह ना कोए तकाईआ। प्रेम प्यार दा होवे जस, सोहला इक्को धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दा साचा राह चलाईआ। सति धर्म दी साची शादी, नाम शादयाने विच कराईआ। प्रेम प्यार दा सब दे अंदर बैठा रागी, अनुरागी आपणा ताल वजाईआ। जिन्हां दी अंदरों सुरती जागी, माया ममता मोह गए मिटाईआ। उह बणया प्रेम वैरागी, वैरी कूड़े बाहर कढाहीआ। दुरमति मैल धो के दाग़ी, पतित पुनीत अख्वाईआ। आत्मा आत्मा जे इक्क दूजे दा बणे समाजी, फेर झगड़ा तत रहे ना राईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सारे करने आंढी गवांढी, हमसाए कर के देणे वसाईआ। सब दे काया मन्दिर अंदर नाम निधान वाड़ के ढाडी, ढोलक प्रेम देणी खड़काईआ। रसम रिवाज अंदर वेखो इन्हां नाल कोई नहीं जांञी, बंधू संग ना कोए निभाईआ। द्रोपती किहा मेरी कृष्ण बिना पत जांदी, पंजे पांडो होए ना कोए सहाईआ। जिन्हां दी अन्तर आत्मा इक्को ओट तकांदी, दूजा राह ना कोए वखाईआ। सो मुहब्बत विच सच प्रीती विच होवे बांदी, बन्दना कर के सीस निवाईआ। रुत्त सुहञ्जणी होवे ठांडी, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जगत विहार विच जे पत्नी होवे गांदी, पती वी ओहो राग अल्हाईआ। एहो खेल धुरां दी, जो आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दा सांझा राह चलाईआ। इक्ठे हो जाओ क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, ज़ात पात दा झगड़ा रहे ना राईआ। ईसाई मुस्लिम मंनिओ कलमे वाली हदायत, जो हज़रतां करी पढ़ाईआ। जे मुर्शद मुरीद उत्ते करे अनायत, रहमत इक्क कमाईआ। धर्म दी करे अज़माइश, पर्चा नाम रखाईआ। सांझी बणावे रिहाइश, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ जगत वण्ड ना कोए वड्याईआ। फेर किरपा करे नहायत, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। जन

भगतो अग्गे सच दी उपजे पैदाइश, मूर्ख मूढ़ जन्म ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क प्रगटाईआ। वेखो इक्ट्ठे हो के नीच ऊँच, ज़ात पात भेव भाव देणा मिटाईआ। साचे प्रेम दी समझो सूच, जो संजम दए प्रगटाईआ। धर्म वखाओ चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण डंक वजाईआ। सब ने आपणे अंदरों कढ्ढणा झूठ, ममता मोह देणा गवाईआ। सति दे सच दे बण जाओ सपूत, पिता पुरख अकाल इक्को लैणा मनाईआ। आपणे आप नूं लओ बूझ, जो बुज्झा दीपक दए जगाईआ। कोई भेव ना रहे गूझ, परदा बजर कपाट उठाईआ। सतिगुर कोल इक्को शब्द जो दो जहानां दूत, दुतीआ भाउ दए गवाईआ। तुहाडी इक्को मंज़ल इक्को मक्सूद, इक्को महिफ़ल सोभा पाईआ। बेशक तुहाडा वक्ख वक्ख तन वजूद, अंदर इक्को नूर रुशनाईआ। सारे ओसे दी बख्शिश दा समझो कलबूत, जो पंज तत दए वड्याईआ। समाज विच राज विच रिवाज विच जन भगतो तुहाडा देणा ओस सबूत, जिस नूं साबत कर के दए वखाईआ। सब दी तोड़ के हद्द हदूद, बिना ग्रन्थ बिना पन्थ बिना वेदी बिना मंत्र बिना पुराण बिना अञ्जील कर तामील, तामीर नवीं रिहा बणाईआ। जिस दी खेल कोटन कोटि अगणत सहँस, संसा सब दा दए मुकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश

११०५ विश्व बण जाओ इक्क सरबंस, कुनबा कायनात इक्क अख्वाईआ। गुरमुख गुरसिख हो जाओ साचे हँस, बुद्धी काग देणी ११०५

२० गवाईआ। इक्क समझ लओ अंक, काया वेखो दवारा बंक, जित्थे बैठा निरलेप अटंक, वजाए सच नाम दा डंक, करे २०

खेल बार अनक, अनक कलधारी आपणी कार कमाईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरन अनन्त, खोजदे फिरन साध सन्त, रसना जेहवा गाउँदे फिरदे मंत, सो स्वामी साहिब बेअन्त, बेपरवाह इक्क अख्वाईआ। सब ने धर्म पुजारी बण के बुद्धी दे बणना पंडत, मन दी करे ना कोए पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ दयो हउमे हंगत, बण जाओ साची संगत, जिस संगत विच अक्ख नाल अक्ख ना कोए रलाईआ। इक्क दी करो मिन्नत, जो सब नूं देवे हिम्मत, तुहाडी वसीह हो जाए सिम्मत, सीमा विच तुहानूं बन्द ना कोए कराईआ। वेक्ख्यो किसे दे कदे ना बणिउ निन्दक, मन दी कल्पणा विच कोई ना करयो चिन्त, चिन्ता ग़म नेड़ कोए ना आईआ। विकार विच शरअ विच शरीअत विच असलीअत विच नवीअत विच वलदीअत विच अकलीअत विच कदे ना करयो इल्लत, आलमा विच फ़ाज़लां विच विद्वानां विच विज्ञानां विच ज्ञाना विच ध्याना विच मेहरबानां विच शाह सुल्तानां विच निम्रता विच आपणा झट लँघाईआ। मनुक्ख मनुष मानव समझो ना कोई बेगाना, सब दे अंदर इक्को वसे भगवाना, जो सब दा मालक अख्वाईआ। तुहाडे हथ्थ फड़ावां धर्म दा निशाना, जो झूले विच जहानां, जिस नूं दीन मज़्ब करन सलामा, अग्गे समां होणा होर रवाना, मस्ती विच भगत होए दीवाना, दीवानी दा लालच रहिण ना

कोए पाईआ। सुणो सच दा सच फ़रमाना, तुहाडा भगतां वाला विधाना, वहदत विच इबादत विच सदाकत विच रफ़ाकत विच ल्याकत विच मज़ाहमत कूड़ी देणी कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म देणा इक्क जणाईआ। सति धर्म दा आपणा लओ रस्ता, रहिबर इक्को इक्क मनाईआ। पिछलीआं रीतां दा बन्नृ दयो बस्ता, सारे मिल के अग्गे वधो चाँईं चाँईआ। प्रभू दा प्यार बड़ा जे सस्ता, पैसे टके दी लोड़ रहे ना राईआ। जेहड़ा तुहाडे अंदर सदा वसदा, उसे नूं अंदर लैणा मिलाईआ। फेर नज़ारा लओ उस अक्ख दा, जो अक्खरां तों परे करे पढ़ाईआ। जिस घर महबूब तुहाडा वसदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर नुराना नूर करे रुशनाईआ। उथ्थे झगड़ा नहीं कोई रहिणा अलग्ग दा, वक्खरा गढ़ ना कोए सुहाईआ। इक्को दीपक जोती जगदा, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। सो मालक तुहाडे नाल सदा फबदा, जगत नैण वेखण कोए ना पाईआ। ओहदा नूर नुराना जोती जोत जगदा, जागरत जोत सब दे करे रुशनाईआ। उस दे कोल सच मुहब्बत प्रेम दा रंगण रंगदा, ललारी इक्को इक्क अख्वाईआ। उह इश्नान कराए आत्म सरोवर जमना सुरस्ती गोदावरी अगम्मी गंग दा, जित्थे तीर्थ तटां दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। फेर सुक्ख लओ ओस अनन्द दा, जो निजानंद निज आत्म विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतो तुहाडा बाहरों जोड़ा दो तन दा, जगत गृहस्ती जोड़ जुड़ाईआ। जो प्रेम प्रीती अंदर हंढदा, धर्म दा मार्ग इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभू सुण लै मेरी गल्ल, निउँ के सीस निवाईआ। तूं जुग जुग करें वल छल्ल, अछल अछल्ल तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल जल थल, हर घट रिहा समाईआ। तेरा संदेसा घड़ी पल, दो जहानां हुक्म अलाृईआ। तूं सारी दुनिया अंदर फतूर पवा दिता कोलों मन, मनसा दिती वधाईआ। दवैश द्वैत दूई फ़िरका परसती सुणा के विच कन्न, कायनात दा रुख दिता बदलाईआ। अक्खां वालयां नूं कर के नेत्र अन्नृ, आपणा नूर ना किसे दिखाईआ। अगर तूं हैं हँ ब्रह्म, पारब्रह्म हो के क्यों ना ब्रह्म दा परदा लाहीआ। मेट दे तृष्ना तम, तत आपणा दे समझाईआ। पवण स्वासी लेखे ला दम, दामन पल्लू आपणे दे फड़ाईआ। चार वरनां बेड़ा बन्नृ, चार कुण्ट एका राह चलाईआ। सच पदार्थ नाम दा दे धन, जिस नूं ठग्ग चोर यार लुट्ट कदे ना जाईआ। सब दा वजूद हड्ड मास नाड़ी खल्ल, ख़लक दे मालक क्यों पलक दे पिच्छे बहि के आपणा आप छुपाईआ। सच मुहब्बत विच सब दा सीना सल्ल, तीर निराला इक्क चलाईआ। वेख कूड़ी क्रिया कलयुग कल, कल काती होई लोकाईआ। सच सिंघासण आपणा मल्ल, बेदर्दा दर्दीआं नाल दर्द वण्डाईआ। मज़बां दी वेख डूँघी डल, मूँह दे भार डिग्गे बिन तेरी किरपा बाहर ना कोए कढाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी बण गई जंगल

जूह उजाड़ वैरानी झल्ल, तेरी झलक नज़र किसे ना आईआ। जे साचे सन्तां नाल मिल के सारयां दा सांझा सवाल हो जाए हल्ल, फेर नम्बरीआं दे नम्बर देण दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे प्रेम दा दीपक जाए बल, आकाश प्रकाश ज़िमीं असमान गगन गगनंतर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरी होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दा रस्ता लैणा अपणाईआ। सति धर्म करे प्रभ किस बिध देवें सहयोग, जुगती दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं साचे सन्तां दस्स के आपणा जोग, जोगीशरां लवां उठाईआ। जो मेरे प्रेम दा आत्म परमात्म भोगदे भोग, रस रसीए धुर दरगाहीआ। उह संदेसा देवण लोक, लोकमात शनवाईआ। सब दा सांझा इक्क सलोक, सोहला धुर दरगाहीआ। साचे मन्दिर जावो पहुंच, जित्थे मंज़ल रहे ना राईआ। दीन दयाला मिले खौंत, ख़सम इक्को इक्क वड्याईआ। सति धर्म चलावे रौंस, चार वरनां गंढु पवाईआ। गलों शरअ दा लाह के तौक, तकब्बर कूड़ा दए मुकाईआ। मनसा मोह कढ्ढ के खोट, खोटे खरे आप बणाईआ। धुर दे नाम दी ला के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जन भगतो वेख्यो किते फसिओ ना वरन गोत, सच दी गोत गौतम बुध गया समझाईआ। जिन तख्त ताज छड्ड के प्राप्त कीती इक्क निर्मल जोत, जेहड़ी जोत सब दे विच समाईआ। उस नाल मिल के सदा माणो आपणी मौज, मजलस प्रेमीआं नाल बणाईआ। ना परमात्मा ना आत्मा दोवें होवण कदे ना फ़ौत, तन वजूद नाता कूड़ खुदाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस जञ्नू बोदी धोती टिक्का तहिमत सुन्नत वेख ना करयो अदौत, अदावत विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा केहो जेहा चले रिवाज, रवादारी कहिण कोए ना पाईआ। अबिनाशी करता कहे सब नूं इक्क दे करां मुहताज, लोड़ वंदा इक्क अख्वाईआ। पहलों सच दा प्रगट कर के राज, राजे राणयां तख्तों लाहीआ। महबूब दा मुहब्बत वाला ताज, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। नाम दा सच त्यार कर जहाज़, लोकमात दयां टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मार के इक्क आवाज़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। फेर खोल्ह के आपणा आग़ाज़, राज़ पोशीदा दयां जणाईआ। जिन्हां दी लेखे लग्गे निमाज़, निवाज़श विच आपणा रंग रंगाईआ। जिन्हां दा पूरा होया पूजा पाठ, पिठ्ठ उन्हां दी हथ्थ टिकाईआ। जिन्हां दा लेखे लग्गे जोग अभ्यास, अभ्यासी मेल मिलाईआ। जिन्हां दे अन्तर सच वैराग, वैरी दुश्मण लवां अपणाईआ। जिन्हां सब कुछ दिता त्याग, नंगी पैरीं भज्जा वाहो दाहीआ। उह सब दा सज्जण साक, करता इक्क अख्वाईआ। जिस दी ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल ना वण्ड वण्डाईआ। सब दी सांझी कर जमात, नाम अक्खर इक्क सुणाईआ। धर्म दी दे सौग़ात, काया झोली आप भराईआ। बाहमी जोड़ के नात, सगला संग वखाईआ। क्षत्री

ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को हो जाए समाज, समझ विच्चों समझ लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग विच रंगाईआ। सति धर्म कहे ऐ प्रभू क्यों तन वजूद नाता जुड़दा, भेव देणा खुल्हाईआ। की खेल सच्चे सतिगुर दा, सति सति नाल मिलाईआ। पुरख अकाल कहे एह लेखा धुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। जो प्रेम विच प्यार विच तन वजूद विच जुड़दा, जोड़ी जगत वाली बणाईआ। ओहदे अंदर राग उपजे ओस सुर दा, जो सुरती नाद शब्द नाल वज्जे वधाईआ। उथ्थे घाटा नहीं कोई थुड़ दा, भुक्खा नंगा ना कोए वखाईआ। एहो खेल देवत सुर दा, मानस गुरमुख रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम विच नेम आपणा दए बणाईआ। सच धर्म दा केहड़ा नेम, निम्रता विच जणाईआ। पुरख अकाल कहे दुष्ट दमन ने कीता उपर हेम, हिम्मत इक्क जणाईआ। उह गोबिन्द विच प्रेम, जो शब्दी रूप दए समझाईआ। जे कोई उस दा करे धेन, ध्यान विच रखाईआ। माटी हो के रेन, निम्रता विच समाईआ। दरस दिखाए मुकट बैन, कँवल नैण होए रुशनाईआ। सब दा स्वामी नर नरायण, निराकार इक्क अख्वाईआ। जिस दे कोल नाम पारस बणाउण वाली रसायण, लोहा कंचन दए बदलाईआ। ओहदा नुकता नहीं कोई

११०८ ग़ैन, ऐन आपणी कल वरताईआ। अल्फ ये नहीं तरफैण, दो तरफ़ी कार ना कोए कमाईआ। जो बाल्मीक लिख्या विच ११०८

रमायण, राम रामा जोड़ जुड़ाईआ। जो कृष्न अर्जन वखाया नैण, विराट आपणा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

२० आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सति धर्म कहे मेरे निरँकार, तेरी बेपरवाहीआ। तेरे दर सनक सनंदन २०

सनातन वेखे सन्त कुमार, चारे बैठे सीस निवाईआ। बराह बण दर भिखार, यगे पुरुष ध्यान लगाईआ। हाव गरीव करे निमस्कार, नर नरायण तेरी सरनाईआ। कपल मुन हो उज्यार, दत्ता त्रै झोली डाहीआ। रिखव देव पावे सार, पृथू आसा इक्क जणाईआ। मत्स दिसे तेरी धार, जलधारा सोभा पाईआ। कच्छप नूर तेरा उज्यार, धनंतर तेरी दए गवाहीआ। बावन तेरा खेल अपार, हरी गज लए तराईआ। नर सिँघ हो उज्यार, भगत सुहेला गोद उठाईआ। हँस हो बोले जैकार, माणक मोती सोभा पाईआ। तेरा खेल अपर अपार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ढोला गाईआ। परस राम बणा के धार, ब्रह्मण ब्रह्म इक्क जणाईआ। राम रामा लै अवतार, त्रेता जुग आपणी कल वरताईआ। जनक सपुत्री कर प्यार, सीता सति दी लई उपजाईआ। वेद व्यासा कर के ख़बरदार, कुँवार कन्या भाग लगाईआ। सब दा वेता बण लिखार, पुराण अठारां गया दृढ़ाईआ। कान्हा कृष्ना पावे सार, महासार्थी वेस वटाईआ। भगतां दए आधार, बिदर सुदामा पार कराईआ। द्रोपती लज्ज रखे विच सभा दातार, मेहर आपणी निगाह उठाईआ। बुद्धी बोध दे आधार, गौतम बड़ दे नाल प्रगटाईआ। मूसा कोहतूर

कर उज्यार, नूरो नूर नूर चमकाईआ। ईसा इस्म दे अगम्म अपार, सुत इकलौता जगत सुणाईआ। मुहम्मद हमद विच कर उज्यार, कलमा नबीआं इक्क पढ़ाईआ। गुफ़त शुनीद कर गुफ़तार, जुसत जू इक्को दए समझाईआ। नानक निरगुण सरगुण हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। एका जोत नूर उज्यार, गोबिन्द डंका डंक सुणाईआ। भगत अठारां हो मेहरवान, महबूब आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरा भेव कोए ना आईआ। सति धर्म कहे की देवें दात, प्रभ साचे दे जणाईआ। की हुण वी कोई होवे भगत प्रहलाद, बच्चा ध्रूह वांग प्रगटाईआ। की जनक वाला होवे समाज, अमरीक दरबाशा खेल खिलाईआ। की बिदर सुदामा होवे साथ, हरी हरि परदा देणा उठाईआ। की हरी चन्द वरगा करे कोई साचा राज, ताज छड्ड के घर नीचां सेव कमाईआ। की जैदेव वरगा करे कोई पाठ, जो पात्र पात्र विन्ह वखाईआ। की नामदेव वरगा होवे कोई साक, जो बहत्तर वार दर्शन कर के खुशी मनाईआ। की सैण नाई वरगा होवे कोई दास, आप दास बण के राजे दर ते जाईआ। की रविदास होवे तेरे पास, जो पाणा गंढु के झट लँघाईआ। की कबीर आपणी भेंटा तेरे अग्गे करे लाश, तन वजूद करे सफ़ाईआ। की पापण गनका धोवे दाग़, दुरमति मैल मिटाईआ। की बधक प्यार करे साच, जो तीर निशाना चरण लगाईआ।
११०६
२०
की पूतना करें घात, जो मोहण मुम्मे काहन पाईआ। की पार उतारें अजामल बदमाश, नाउँ नरायण इक्क दृढ़ाईआ। की सूफ़ीआं पूरी करें ख्वाहिश, जो ऐनुल हक नाअरा गए लगाईआ। जिन्हां तन उत्तों तुड़ाया मास, मस्ती तेरी विच सुणाईआ। सो सारे तेरे दास, निउँ निउँ लागण पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ इक्क मेरी अरदास, बेनन्ती दयां सुणाईआ। पहलों कलयुग कूड़ी क्रिया कर नास, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। फेर साचे भगतां कर प्रकाश, साचे सन्त लै उठाईआ। सारे इक्ठे हो के तेरे नाम दी पावण रास, गोपी काहन आत्म परमात्म बणाईआ। सब दा इक्क होवे विश्वास, विशा दूजा ना कोए जणाईआ। तैनूं तेरे करन तलाश, काया मन्दिर खोज खुजाईआ। तेरा नूर होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। वज्जे अगम्मी नाद, सोई सुरत जगाईआ। नज़र आए ब्रह्माद, ब्रह्मांड परदा दे खुल्हाईआ। अग्गे साजणा साची साज, सज्जण बण के हो सहाईआ। जे सति धर्म दा शुरु करना रिवाज, राजा प्रजा इक्को जोड़ जुड़ाईआ। तेरी फुलवाड़ी ते तेरा बाग़, बग़ीचे दे मालक बाग़बान हो के सब दी सेव कमाईआ। साची जोती दा जगा चिराग़, चरागाहां विच होए रुशनाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरी दुनिया ऋषीआं मुनीआं दा बणा समाज, समें विच्चों समां दे बदलाईआ। सब दा रूह बुत्त होवे पाक, पाकीज़ा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ सब दी वाग, रथवाही बण के जिधर

चाहें उधर लएं भवाईआ। भगवान कहे ओह सति धर्म, की मैं रथवाही, रथ चुरासी लख चलाईआ। सति कहे प्रभ तूं बेपरवाही, तेरा भेव कोए ना पाईआ। तैनूं सारे मन्नदे साचा माही, मालक इक्क अख्वाईआ। कदे मिलें ते कदे करें जुदाई, मिलणा विछड़ना आपणी रीत बणाईआ। कदे बोध ज्ञानी कदे बणें शुदाई, अमीरी ग़रीबी दोवें राह चलाईआ। कदे राजा शहिनशाह ते कदे बणें नाई, दुहाई आपणे नाम कराईआ। कदे जट्ट बण के करें वाही, धन्ने रंग चढ़ाईआ। कदे गोबिन्द बण के बूटा पुट्टें काई, कदे सीता बणां विच घुमाईआ। कदे रुकमणी खोह के बल वखाई, एह वी अचरज खेल बणाईआ। कदे मूँह दे भार डिग्ग के दएं दुहाई, कदे सलीब फाँसी गल दे विच लटकाईआ। कदे नबी बण के करें लड़ाई, चार यारां जोड़ जुड़ाईआ। कदे फिरें वाहो दाही, भज्जें दो जहानां चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम खेल जिस नूं समझे कोए नाहीं, बुद्धी विच ना कोए ल्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ। सति धर्म कहे मैनूं वेला याद आया अर्जन, अरज़ दयां सुणाईआ। जिस वेले चौथा जुग शुरु होणा सी वेद अथर्बण, अथरू नैणां विच्चों वहाईआ। घाउ होया अरबन खरबन, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। इक्क अकशूहणी दा लेखा अठाई लख अनगिणती दा वज़न, तोला तोल ना कोए बणाईआ। भाई भाईआं नालों कर के वक्ख, दोवें धिरां दिते लड़ाईआ। ना शस्त्र फड़या
११1० हथ्थ, रासां नाल सब नूं ल्या घुंमाईआ। जिस वेले अर्जन रथ तों उतर के चरणां गया ढठ्ठ, निउँ के लागा पाईआ। कृष्न ११1०
२० आपणा हथ्थ रख के उत्ते पट्ट, दोहरा ताल दिता वजाईआ। कीता खेल आपणा नटुआ नट, स्वांग समझ किसे ना आईआ। २०
करे खेल पुरख समरथ, हरि दाता धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सुण अर्जन, अर्जन कहे नहीं, बेनन्ती इक्क जणाईआ। कुछ लेखा दस्स आपणे हिसाब खाते विच्चों वही, जित्थे कलम दवात लिखे कोए ना शाहीआ। भगवान किहा अर्जन ओहदी रसम चलणी नवीं, नवां राह प्रगटाईआ। तेरे प्यार दी पा के सही, सच दयां जणाईआ। ओदों किसे ने पंडतां नूं खवाउणी नहीं तसमई, खीरां दा पीर ना कोए मनाईआ। कुछ याद आ गया जेहड़ी कथा भरत नूं दस्सी कैकई, अंदर वड़ समझाईआ। बच्चयो मैं राम दी माँ मतरेई, कुक्ख दा जम्मया इक्को नज़री आईआ। मैं दसरथ नाल गल्ल पक्की इक्क कर लई, जिहनूं मोड़ ना सके राईआ। आह वेख लै मेरी बही, जो पहीआ रथ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। अर्जन कहे प्रभू मैं सुण लई तेरी अंदरों गीता, अठ्ठ दस वज्जे वधाईआ। कुछ हुक्म देवे सीता, राम दए दुहाईआ। अक्खां चुक्क के अर्जन तक्क लै नाल नीझां, कलयुग वेख वखाईआ। उस वेले प्रभ नालों टुटणीआं सब दीआं मात प्रीतां, प्रीतम सच ना कोए

मिलाईआ। झगड़ा पैणा मन्दिर मसीतां, शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर गिरजे वण्ड वण्डाईआ। सब दीआं अंदरों बदलणीआं नीतां, सति सच ना कोए कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वारो वारी सब नूं मिल जाणीआं तवारीखां, भविख्तां विच समझाईआ। अन्त दी करयो इक्क उडीका, जोबन आपणे उपर ना कोए रखाईआ। किसे दवारे मंगण ना जावे भीखा, भीशम पितामा गया सुणाईआ। किरपाचारज तिन्न मार के लीकां, दरोणाचारज नाल मिल के करी सलाहीआ। दरबाशा जंगल विच खेल कर के अनडीठा, झगड़ा कृष्न नाल जणाईआ। भगवन किहा ओस वेले अर्जन भगती भाव तों सब दा ख़ाली होणा ख़ीसा, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। अर्जन कहे एह कौण वक्त, भगवन कहे उह बीस बीसा, वीहवीं सदी वेख वखाईआ। सब नूं भुल्लणा राग छत्तीसा, छत्रधारी धर्म विच धर्म ना कोए बणाईआ। नामा कहे उह खेल मेरे बीठलो बीठा, जो मेरी छप्पर छन्न छुहाईआ। ओस ने सब दा बदल देणा तरीका, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। वसीअत करे बिन वसीका, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले धर्म दवारयां विच सियासत ने मारीआं चीकां, सारे रोवण मारन धाहींआ। ओस वेले पुरख अकाल करे सच प्रीता, प्रीतम हो के होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। अर्जन कहे जे मन्दिर मसीत गुरुदुआर मठ्ठ पै गया झगड़ा, की करू लोकाईआ। हे भगवन त्रिलोकी नाथ दस्स भेव अगला, अग्गे दे जणाईआ। जिस तरां मुनी शुशील ने किहा दूजे नम्बर दयां नूं जग कहे पग़ला, उह पग़ले तेरा नाम ध्याईआ। ते जेहड़े बाहरों बणे रहिण बग़ला, मेरे वांग चिट्टे वस्त्र पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणी कार कमाईआ। भगत कहे ऐ मेरे भगवान, अर्जन आसा पूर कराईआ। कुछ बख्श के दान, कलयुग जीवां झोली पाईआ। कृष्न ने अंदर उपर परे तों परे कर ध्यान, पारब्रह्म दा लेखा ब्रह्म दिता सुणाईआ। उस वेले सारे होण हैरान, हैरानी हर घट अंदर आईआ। मज़्बी दवारे बण जाण जगत दी दुकान, मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी आपणा हट्ट चलाईआ। फेर किरपा करे आप मेहरवान, मेहर नज़र अक्ख उठाईआ। सति धर्म कर परवान, साचा राह इक्क बणाईआ। भगत दवारा प्रगट कर के विच जहान, जुग दे विछड़यां लए मिलाईआ। जित्थे ना कोई हिन्दू सिख ईसाई ना कोई मुस्लिमान, पारसी बोधी जैनी दिसण भाई भाईआ। सति धर्म दा उत्थे मुनीआं ने कर देणा फ़रमान, फ़रमांबरदार हो के सारे प्रभ दी सेव कमाईआ। एह बण जाए उह विधान, जिस दी तरमीम विच कलम सके ना कोए उठाईआ। तक्सीम रहे ना कोए शैतान, ज़ेर ज़बर सारी देण गवाईआ। वाहिद इक्क समझ रमज़ बुद्धी विच आवे इन्सान, इन्सान इन्सानीअत सब दे अंदर टिकाईआ। एह कृष्न दा ब्यान, अर्जन दा ध्यान, दूजा दस्सण वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता खेल खिलाईआ। अर्जन कहे क्यों मेरा चलाउँदा रिहों रथ, मेरी सेव कमाईआ। कृष्न घाह दे उत्ते बहि के झट, सहिज नाल सुणाईआ। रख के पिठ हथ्थ, अंदरों अक्ख दिती खुल्हाईआ। अर्जन भगत भगवान नहीं वक्ख, दोहां दा इक्को घर सोभा पाईआ। मैं हुण मार्ग रिहा दस्स, कलयुग विच भगतां दे अंदर वड़ के उन्हां दा रथ चलाईआ। तुसीं मेरा गाउँदे जस, फेर मैं भगतां दा ढोला गाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रतख, परशनां दा लेखा देणा मुकाईआ। इक्को नाम निधाना नौजवाना कर प्रगट, जगत दे परगणे देणे मुकाईआ। सच दा खोल्ह के हट्ट, धर्म दी दात इक्क वरताईआ। जो आवे सो लाहा जावे खट्ट, मनखट्टू रहिण कोए ना पाईआ। क्यों मुनी ने किहा प्रभू सिध्धा सादा जट्ट, साडे अंदर वड़ के रोज़ी रिज़क रहीम हो के देवे चाँईं चाँईंआ। कुछ लेखा राम ने जाणया जेहड़ा बेटा दसरथ, पंचवटी विच लक्ष्मण दिता सुणाईआ। इक्क सुक्की टहणी कट, कटाकश दिता लगाईआ। सीता बोल पई झट, स्वामी एह की खेल वरताईआ। राम किहा सीता आह वेख मेरा हथ्थ, दर्द नाल भरया नज़री आईआ। कलयुग विच मेरा प्यार मेरयां जाणा छड्ड, मन्दिर विच सीता राम कहि के माया ममता विच होण हल्काईआ। पर मैं राम, हर घट

१११२ वस्या राम, सब तों न्यारा राम हो के देणा दस्स, ज़ुल्म अपराध विभचार दुराचार भृष्टाचार विकार हँकार मोहे कदे ना भाईआ। १११२

२० ओस वेले प्रभ दी खेल वरते विच संसार, कलमा वेखे थाउँ थाँईंआ। फिर राम दे नाम नाल कट देणी कूड़ी धार, धरनी २०

धरत धवल धौल उत्ते सति धर्म देणा लगाईआ। जेहड़े मेरे होण प्यारे सुगरीव दे भतीजे अंगद वरगे दुलारे, उह मुनीआं दा रूप वटाईआ। धरती नूं देण हुलारे, कुकरमां नूं देण पिच्छाड़े, भाग लाउण विच उजाड़े, उजड़यां देण वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए मुकाईआ। सीता कहे मेरे रघुपति, रघुवंसी रघुनाथ मैनूं दे जणाईआ। राम किहा सीता किसे विच दिसदा नहीं सति, सत्तया नज़र कोए ना आईआ। सब नूं भुल्लणी ब्रह्म मत, ब्रह्म वेता ब्रह्म ना कोए जणाईआ। जगत विकार ने अंदर पाउणी नथ्थ, सके ना कोए बचाईआ। विद्‌वानां ने कथा करनी रसना नाल कथ, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। थोड़े समें बाद ओह वी जाण छड्ड, रोटीआं कारण पेट वजाईआ। जिधर माया मिले उधर साधू वी जाण नठ्ठ, चेलयां दे पिच्छे मिन्नतां कर कर के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सीता कहे महाराज की एह समां आवे वत, बेवतन होए लोकाईआ। राम जी हथ्थ उत्ते हथ्थ मार के पए हस्स, जिस सीता तैनूं ते मैनूं बनां विच दिता भवाईआ। उह राम सदा समरथ, जो तत्तां वाले गुर अवतार पैगम्बर मात प्रगटाईआ। ओस वेले किसे दा चलणा नहीं कोई वस्स, समें दा चक्र सब ते देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ।

लक्ष्मण सब कुछ रिहा सुणदा, फिर करवट लए बदलाईआ। ऐ प्रभू कौण एस नूं छाणदा पुणदा, जो धर्म अधर्म वेख वखाईआ। मैं ते जगत वेखदा खेल निरगुण सरगुण दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। राम किहा भईआ लकशमण एह कोई सौदा नहीं मुल्ल दा, कीमत वाला वणज ना कोए कराईआ। एह खेल ओस मालक कुल दा, जो कुल्ल आलम विच बालम बण के खेल खिलाईआ। जिस दा सति धर्म निशाना झुलदा, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर जिस दे निशान थल्ले सेव कमाईआ। ओहदा खेल इक्क ब्रह्मे वाले नाभी कँवल फुल्ल दा, जिस दे विच झिरना रिहा झिराईआ। ओहदा बूटा कदे ना हुलदा, राम कहे लक्ष्मण जो भगत लए उपजाईआ। जे कोई सुख लै लए ओस दी चरण धूल दा, दुःख दा लेखा दए मुकाईआ। सुख माण लए ओस कन्त कन्तूहल दा, जो सीता सब दी सीता सुरती रिहा प्रनाईआ। ओस दा खेल सदा असूल दा, नियम विच काइदे विच मर्यादा विच मर्यादा परशोतम हो के आपणी कार कमाईआ। उह किसे तों पैसे टके नहीं वसूलदा, सीता कहे राम की करदा, राम कहे भगतां अग्गे प्रेम दी झोली डाहीआ। प्रभू कोई मालक नहीं चुंगी वाले मसूल दा, चुंगीख़ाने सारे दए मिटाईआ। एह कोई लेखा नहीं किसे मज़मून दा, धुर दे राम दी राम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा सुणाईआ। सीता कहे प्रभू क्यों फिरीए विच बनबास, भुक्खे रह के झट लँघाईआ। राम किहा आ जा मेरे पास, कुछ तैनूं दयां वखाईआ। थोड़ी जेही मीट आंख, सिर सीस उत्ते टिकाईआ। पहलों दिता उह प्रकाश, जिस प्रकाश विच प्रकाश सोभा पाईआ। फेर होर कीता विकास, द्वापर डगमगाईआ। कृष्न हो के भगतां दा रथ चलावे आप, रासां आपणे हथ्थ उठाईआ। सीता दे अंदर थोड़ा आया पसचाताप, एह की कार कमाईआ। राम ने फेर किहा कुछ होर अग्गे झाक, तैनूं दयां वखाईआ। सीता दा खोल्ह के ताक, परदा दिता उठाईआ। कलयुग दी चौधवीं सदी विच दिसे ना कोए इन्साफ़, दरोही दरोही ख़लक खुदाईआ। ना कोई माई ते ना कोई बाप, पिता पूत करे लड़ाईआ। भैण भाई ते भाई भैण वल्ल लैण झाक, एहो जेहा सीन दिता वखाईआ। स्त्री कोई नज़र ना आवे सीता जेहड़ी तेरे वांग फिरे विच बनबास, पतीबरता नज़र कोए ना आईआ। सारी दुनिया उतरे इन्द्रिआं दे घाट, कोई विरला साधू बच के आपणा झट लँघाईआ। बथेरे माला मणके फेर के जै सीता राम दा करन पाठ, सीता सुरती मेरे नाल ना कोए प्रनाईआ। सीता कहे महाराज की एह तुहाडा सच होवे वाक्, भगवन किहा सच दी कथा सुणाईआ। सीता किसे दा नहीं रहिणा इत्तफाक, मुहब्बत विच नज़र कोए ना आईआ। धर्म दा रहिणा नहीं कोई राज, राजे शत्रु रूप वटाईआ। लक्ष्मण अग्गों कहे की फेर होवे महाराज, परदा देणा खुल्हाईआ। राम हौली जेही दस्सया विच आवाज़, सहिज नाल समझाईआ। ओस वेले किरपा

करे आप, जेहड़ा जगत अक्खां नाल नज़र किसे ना आईआ। सृष्टी दा मेट देवे पाप, पतित पुनीत बणाईआ। उह सच्चयां सन्तां दा बणा के साथ, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। उह थालां विच दीवे पा के जगत आरती दी पावे कोई ना रास, घृत नाल ना कोए वड्याईआ। अंदर वड़ के खोल्ह ताक, परदा दए चुकाईआ। जित्थे सदा डगमगाहट, अठ्ठे पहर होवे रुशनाईआ। मंज़ल मेट के वाट, पाँधीआं पन्ध दूर कराईआ। सीता इक्क पाणी दा दे ग्लिास, श्री राम जी मंग मंगाईआ। लक्षमण कर के झट तलाश, जल ठंडा लै के आईआ। राम दोहां नूं किहा इक्ठे हो के हथ्थ जोड़ के निमस्कार कर के पूरा करो विश्वास, वास्ता राम नाल जुड़ाईआ। तुहानूं दुःख कोई ना रहे बनबास, मैं सदा तुहाडे पास, मैथों परे नहीं कोई ख़ास, हुण मैं तत्तां वाला बाहरों ते अंदरों पुरख अबिनाश, अबिनाशी दा रूप वटाईआ। लकशमण मैं नहीं होणा नाश, एह तन माता पिता दा धरती उत्तों ल्या ते धरनी उत्ते देणा जलाईआ। मेरा ओस थाँ निवास, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर मुड़ के आ जावां आप, बण के रथ रथवाहीआ। अर्जन दा होवे साथ, बिना जोड़ी तों राम रहिण कदे ना पाईआ। एह खेल करां साख्यात, द्वापर वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर जोत करां प्रकाश, वेद व्यास रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा रिहा उठाईआ। अर्जन कहे प्रभू तूं मेरे वेखे तीर कमान, चिल्ले ज़ोर नाल चढ़ाईआ। भगवन कहे वाह मेरे बलवान, एह तेरे विच वड्याईआ। ओए अर्जन जे स्त्री नारी विधवा रंडी हो जाए विच जहान, ओस नूं उंगलां वाली तक्के लोकाईआ। अर्जन हो गया हैरान, हैरानी अंदर डेरा लाईआ। जां वेख्या साढे तिन्न करोड़ रचया नज़री आया काहन, बिना काहन तों अर्जन दा तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। निउँ कि निमस्कार कीती मैं बाल नादान, बच्चा नढ्ढा तेरा अख्वाईआ। कृष्न किहा एह तेरी मेरी पहचान, दोवें मिल के सांझा झट लँघाईआ। ना मैं रथवाही ना रथवान, मैं मालक कुल्ल जहान तुहाडा रस्ता कीता आसान, सेवादार हो के तुहाडी सेव कमाईआ। एह रस्ता दस्सणा निम्रता विच ग़रीबी विच हलीमी विच रहो विच जहान, वड्याई कम्म किसे ना आईआ। जे अक्ख नाल तक्कणा ते तक्को श्री भगवान, जे मन नाल नस्सणा ते पुज्जो धर्म अस्थान, जे तन कोठे विच वसणा ममता शरअ ना रहे बेईमान, फेर अर्जन तूं मेरा मैं तेरा साचा सज्जणा, खुशी प्यार दा देवां धूढ़ी मजना, नाम नेत्र ज्ञान पावां कजला, निज नैण चक्षू शिव नेत्र इक्को दयां खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। अर्जन कहे की कलयुग वरते कल, कल दे मालक दे समझाईआ। कृष्न किहा एह मेरा वल छल, धुर दी बाण चली आईआ। जिस वेले वेला वक्त आवे ओसे वेले करां गल्ल, पहलों आपणा आप आऊट ना कोए कराईआ। अर्जन करमां दा सब नूं देणा फल,

निहकर्मी हो के वेख वखाईआ। भगतां दा मेटणा द्वैत वाला सल, दूई दा डेरा ढाहीआ। जोती जाता हो के अंदर जावां रल, रल मिल आपणा झट लँघाईआ। जेहड़ा लहिणा देणा पूरब लेखा राजे बल, उह समग्री कलयुग विच गुरमुखां कोलों वरताईआ। नाम संदेसा धर्म दवारे दा घल्ल, धायल कायल करां सृष्ट सबाईआ। जे कोई सच दे मार्ग जाए चल, चलदयां चलदयां राह विच ना कोए अटकाईआ। सीता फड़ के ग्लास जल, भगवन दे चरणां उत्ते दिता टिकाईआ। भगवन ने अग्गों हथ्थां नाल ल्या ठल्ह, हथ्थ हथ्थ उत्ते रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान परदा आप चुकाईआ। जल कहे क्यों मैनूं प्रभू चुकया, भेव देणा खुल्हाईआ। निम्रता विच पुच्छया, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगवन किहा कलयुग अन्त सृष्टी दा बूटा दिसे सुक्कया, बिन राम दे पाणी हरा ना कोए कराईआ। ओस वेले बड़ीआं सिफ्तां नाल रागां नाल साजां नाल सब ने पढ़नीआं ग्रन्थां वालीआं तुक्कया, उच्ची बोल बोल सुणाईआ। जिस वेले प्रभ ने ओन्हां नूं पुच्छया, आपणा आप सके ना कोए बचाईआ। जल कहे ऐ प्रभू की कोई तेरे नालों वी रुट्ठयां, राम ने थोड़्हा दिता हिलाईआ। ग्लास दे विच रख के गूठया, फेर बाकी चारे उंगलां दितीआं छुहाईआ। ओ पाणी औह वेख चार वेद दा ज्ञाता मेरे नालों रुस्सयां, रावण दए दुहाईआ। जल कहे प्रभू तैनूं क्यों नहीं आउँदा गुस्सया, गुस्ताख़ी अंदरों दे मुकाईआ। राम कहे एह धुर दा वर जिस दे कारण मैं लोकमात विच उठया, राम दा रूप वटाईआ। जल एह सब दा बूटा जाणा पुट्टया, बिना राम तों राम दी पए दुहाईआ। सीता वेख कलयुग सब दा दिसे काया ख़ाली ठूठया, अमृत जल नज़र किसे ना आईआ। सारयां ने माया ममता नाल हउमे हंगता नाल विषयां विच रंग मानणा नाल झूटया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। ओस वेले राम दा राम नूर नुराना आपणी धार विच्चों आपे आवे फुट्टया, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। उह मेल लवे जेहड़े कर्म कर के टुट्टया, टुट्टयां गंढ पवाईआ। ओने चिर नूं इक्क गडरीआ उथों सीता फल दा लै के आ गया गुछया, पंज पंज नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सीताफल कहे मैं होया फली भूत, पंज भूत मिले वड्याईआ। मेरा ताणा पेटा इक्को सूत, सूत्रधारी दया कमाईआ। मैं कर के आया कूच, कूचा गली फेरा पाईआ। वेख मैनूं एह पुराणा दुःख, दुःख दर्द ना कोए मिटाईआ। धन्न भाग जे मैनूं किसे लयांदा चुक्क, राम दी भेंट चढ़ाईआ। मैं तक्क के एस दा मुख, आपणा जन्म ल्या बदलाईआ। एसे कारण गुरू गोबिन्द नूं प्रगटाउणे पए पंज सुत, जिन्हां नूं पंज प्यारे कहि के सारे गाईआ। सीता कहे प्रभू दस्स होर कुच्छ, भेव अभेद खुल्हाईआ। राम किहा मैं ओस वेले तत वजूद नहीं रखणा, सरीर नहीं रखणा, आपणयां सन्तां भगतां दे काया मन्दिर अंदर विच लुकणा

१११५
२०

ओस गुठ्ठ, जित्थों जगत अक्खां वाला वेखण कोए ना पाईआ। अंदरे अंदर लवां पुछ, शब्द शब्दी धार मिलाईआ। सच दी दे के सुच्च, सति दे नाल करां कुड़माईआ। बण के अबिनाशी अचुत्त, चेतन सुरती दयां कराईआ। सीता जुग चौकड़ी राम दी मंज़ल गई कदी नहीं मुक, पाँधी दा पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सीता कहे प्रभू की फेर आउँगे। आपणी दया कमाउगे। सति दा डंक वजाओगे। ब्रह्म मति दा सबक पढ़ाउगे। निज नेत्र अक्ख दा परदा लाहोगे। उजड़ी दुनिया फेर वसाउगे। जंगल बेलयां विच फिर के झट लँघाउगे। की सीता आपणी नाल ल्याउगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, की अगली रास रचाउगे। राम कहे मैं आवांगा। निरगुण सरगुण खेल खिलावांगा। कान्हा कृष्ना रूप वटावांगा। सीस ताज इक्क टिकावांगा। मुकन्द मनोहर लख्मी नरायण आप अख्वावांगा। भगत सुहेला बण के सोभा पावांगा। ग़रीब निमाणे गोद उठावांगा। हँकारीआं गढ़ तुड़ावांगा। कन्या दी लाज रखावांगा। जमना ते सोभा पावांगा। गोपीआं दी रास रचावांगा। निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हावांगा। मुकट बैण सोभा पावांगा। तख्त ताज सर्ब उलटावांगा। धर्म जैकार इक्क जणावांगा।
११११६ भगतां दा रथवाही बण के रथ चलावांगा। गीता दा ज्ञान अठ्ठ दस, अठारां वण्ड वण्डावांगा। अमृत दे के रस, निजर झिरना इक्क झिरावांगा। अन्तिम सब कुछ कर के भठ्ठ, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ११११६
२० किरपा कर, धुर दी करनी कार कमावांगा। राम कहे मैं जुग जुग वेस वटाउँदा हां। जुग चौकड़ी खेल खिलाउँदा हां। २०
बोध रूप आप धराउँदा हां। ईसा मूसा मुहम्मद कल वरताउँदा हां। नानक गोबिन्द डंक सुणाउँदा हां। फिर आपणा आप जणाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार इक्क सुणाउँदा हां। सीता, मैं तेई अवतार ईसा मूसा मुहम्मद नानक गेबिन्द खेल खिला के जावां छुप, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सृष्टी विच हो जाए अन्धेर घुप, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ के कोई हउमे दा मिटा सके ना दुःख, किउं विश्वास घाती होए लोकाईआ। धर्म दवारे रहे ना कोई सुच्च, ठग्ग चोर यार धीआं भैणां लैण तकाईआ। जगत साधां सन्तां दे भेखां वाले फिरने वग्ग, ओन्हां दा वागी नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखो चार कुण्ट लग्गी अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। सीता कहे महाराज, की पाप दी वी कोई हद्द, एह वी भेव खुल्हाईआ। राम किहा सुण लै मेरा नद, जो शब्द वाला सुणाईआ। जिंनां चिर एह खेल ना होवे विच जग, ओन्हां चिर राम नूं आउण दा कल विच कोई मौका देवे ना राईआ। फेर सारे दुक्खां विच लैण सद्द, ओ धुर दे राम, ओ धुर दे कान्ह, ओ धुर दे अमाम, ओ

धुर दे भगवान, धुर दा दे दान, तेरा धर्म झुल्ले निशान, निशाने सारे दे मिटाईआ। तूं दाता मेहरवान, क्यों विच वाड़या सब दे शैतान, शरअ कीती बेईमान, साबत रिहा ना किसे दा ईमान, एह सारे तेरे इन्सान, क्यों इन्सानीअत दिती गवाईआ। सीता ओस वेले फेर मैनूं आपणे भगतां दी ज़रूर करनी पए पहिचाण, जोती जाता हो के फिरां विच जहान, काया दे मन्दिर वेखां छड्ड देवां जगत मकान, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर कदे ना जाईआ। मेरा जदों बणया सुहञ्जणा भगतां दे नाल विधान, कृष्न ते अर्जन मेरी दे के जाण गवाहीआ। कागद कलम नाल लेखा लिखणा महान, कातब चले ना कोए चतुराईआ। एह अगम्मी फ़रमान, जेहड़ा अज्ज तक नहीं आया किसे दे विच ध्यान, अक्खरां विच बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रथ दा रथवाही आपणी खेल खिलाईआ। अर्जन कहे की भगवन तेरा खेल, परदा दे चुकाईआ। किस बिध लवें मेल, आपा जोड़ जुड़ाईआ। भगवन किहा मेरा प्रकाश बिन बाती बिन तेल, घर घर करां रुशनाईआ। मैनूं भगतां नूं मिलण दा सदा विहल, होर कम्म कम्म किसे ना आईआ। जेहड़ा मैनूं भुल्ले राम कहे उह मैं धक्क देवां धर्म राए दी जेल्ह, चित्तर गुप्त लेखा सुणा के चुरासी विच सुटाईआ। जे मन्ने सीता हुण तक्क सब

१११७ तों नवेल, वक्खरे घर डेरा लाईआ। जित्थे पुहंचण विच सारे हो जाण फ़ेल्ह, जे मैं आपणी किरपा करां मातलोक विच निरगुण १११७

२० लवां मनाईआ। एसे कर के मैनूं ईसा मूसा मुहम्मद सारे कहिंदे बाप, पिता पुरख अकाल कहि के गोबिन्द गया गाईआ। २०

जे कोई मेरा मज़मून मेरा कानून लए वाच, विचार दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरा सब तों वक्खरा बाग़, जित्थे चार जुग दा हिसाब, बिना अक्खरां तों किताब, रखी हक महिराब, जित्थे नवाब शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। ओस दे अग्गे सारे हो जाण ला जवाब, जिस वेले जवाब तल्बी विच गुर अवतार पैगम्बरां पुच्छ पुछाईआ। सीता कुछ होर दिसदा कोई नानक दा खेल होणा विच बग़दाद, बग़लगीर हिन्दू मुस्लिम लए कराईआ। गोबिन्द दी पुरख अकाल ने करनी इमदाद, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। फेर सदी चौधवीं आपणयां भगतां दी खोल्हणी जाग, सूफ़ीआं सन्तां लए उठाईआ। अंदर दे के वैराग, वैरी दी वैरीआं नाल सुलहा देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अर्जन कहे मेरी आरज़ू इक्क ख़ाहिश, बेनन्ती दयां सुणाईआ। की प्रभू तैनूं भगत करन तलाश, बण खण्ड खोजण जाईआ। कृष्न ने किहा अर्जन मैं जदों मिलां ते भगतां नूं मिलां आप, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। इक्को दस्सां जाप, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाईआ। जित्थे ना कोए पुन्न ना कोई पाप, ओथे भगत भगवान रह के आपणा झट लँघाईआ। एह जिन्हां नूं पूरा देवां विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। उह सदा वसण मेरे पास, एथे ओथे होवे ना कदे जुदाईआ। क्यों

राम सर्ब गुणा गुणतास, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जुग जुग जन भगतां दी पूरी करे आस, सूफ़ी सन्त फ़कीरां आपणे राह चलाईआ। अर्जन कहे प्रभू मैं हैरान किथों सिक्खी जाच, दरोणाचारज कोल पढ़न कदे ना जाईआ। कृपाचारज तेरे हथ्थ विच कदी नहीं फड़ाई रास, गोपीआं नाल खेल के आपणा झट लँघाईआ। सारयां नालों कर के बाईकाट, क्यों अर्जन दी सेव कमाईआ। भगवान हस्स के किहा अर्जन आह वेख मेरा मस्तक माथ, अर्जन नेत्र नैण उठाईआ। जां वेख्या ओहदे विच दोहां दी इक्क जात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कृष्न कहे औह तक्क अर्जन कलयुग दी अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले भगत भगवान दा जिंनां चिर ना बणया समाज, ओनां चिर सृष्टी दी दृष्टी सुख विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा लेख कराईआ। सीता जोर नाल कम्बी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जां वेख्या किसे दी धोती किसे दी तम्बी, कोई तहिमत वाला नज़री आईआ। सब दे उत्ते मज़्हबां दी पाबन्दी, शरअ विच डर के प्रभ नूं गए भुलाईआ। कोई कहे मेरी राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नाल पई गंढ्ढी, कोई नानक गोबिन्द ओट तकाईआ। कोई कहे साडी रसम रिवाज चंगी, मुच्छ दाढ़ी केसां नाल सुहाईआ। सीता कहे, हाए

१११८ राम मैंनूं सब दी आत्मा ओस राम नालों विछड़ी दिसे रंडी, कन्त सुहाग नज़र कोए ना आईआ। भावें कोई तीर्थ नाहवे गोदावरी १११८

जमना सुरस्ती गंगी, जिंनां चिर मेरे प्रेम दी चढ़े ना अंदर रंगी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। भावें नहा धो मुख संवार

२० जगत वैरागण मेंढी सीस वाहवे कंघी, बिन्दी तिलक संधूर लगाईआ। उह वी भागां मंदी, जिन्हां नूं मिल्या ना राम बेपरवाहीआ। २०

भावें कोई रोज़ सेवा कमाए पिण्डी, अष्टभुज जोत ज्वाला सिँघ सवार शस्त्रधारी किरच कटार करे नंगी, लाल भूषण सोभा पाईआ। जिंनां चिर प्रभू दे नाम दी अंदरों ना आए सुगंधी, ओनां चिर पाबन्दी ना कोए कटाईआ। सीता कहे प्रभू मैं की दस्सां मैंनूं कलयुग दे विच बड़े बड़े बड़े जगत साध दिसदे पखण्डी, जो पखण्ड विच लोकां दीआं धीआं भैणां लै के नठ्ठ जाईआ। लक्ष्मण किहा ओ सीता मैं बड़ा सूरबीर जंगी, जगत दा मालक इक्क अख्वाईआ। जिस वेले मेरे राम दे प्यारयां वल अक्ख कीती नंगी, मैं सिर धड़ अड्ड (दयां) कराईआ। प्रभू दे प्यारयां नूं सदा पवण आवे ठंडी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तुसीं सब ने वेख्या मुनी सुशील कुमार किस तरां फिरदा सी पैरीं नंगी, इस तों वड्डी होर सीता किहड़ी नज़री आईआ। एह किसे दवारिउं मंग नहीं मिलदी मंगी, आपणी कमाई आपणी सुरती आप प्रनाईआ। आपे धी आपे जवाई, सहुरा पेईआ आपे आप अख्वाईआ। एहे खुशी जिस दी सदा वज्जदी रहे (शहिनाई), ढोल ढमक्कयां विच जगत दी होवे कुड़माईआ। भगतां विच भगवन प्रेम दी धार चलाई, शादीआं वाल्यो सुण लओ कन्न लाई, इक्क दूजे नालों कदी नहीं करनी जुदाई,

नार कन्त सांझा मिल के झट लँघाईआ। सेवा विच रहे ना कोए ऊणताई, पतीबरत हो के साचा मार्ग देणा वखाईआ। पती ने कदी नहीं बणना कसाई, बिना सोचे समझे आपणी नारी नूं दए सताईआ। दोहां दा सांझा प्यार ते इक्को वाग रखाई, धर्म दी धार जन्म दी गंढु नाता जोड़ जुड़ाईआ। सब संगत प्रेमी प्यारयां गुरमुखां दे अंदर रहे ठंड, क्यों रिषी मुनी सन्त महात्मा फ़कीर फ़क्कर मिल के सोहणा काज रचाईआ। धर्म समेलन जे सदा धर्म दे रहिणा पाबन्द, इक्ठे हो के आपणा राह अपनाईआ। जिधर जाओ चार कुण्ट दहि दिशा उच्ची कूक बोलो तूं मेरा मैं तेरा छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। आत्मा परमात्मा सदा चित अनन्द, अनन्द दा अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म दोहां दा सच निशान, सति धर्म दा इक्को इक्क वखाईआ।

★ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ३ सर्ब धर्म समेलन हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सभ नूं इक्ठे होण दा मिल्या इत्तफाक, सति धर्म दा जोड़ जुड़ाईआ। आई संगत पहलों आपणे अंदर दा खोल्हो राज़, ११९६
परदा दूई वाला हटाईआ। फेर मिटे कलयुग अन्धेरी रात, साचा चन्द होवे रुशनाईआ। आत्मा परमात्मा दी वेखो रास,
जो निरगुण निरगुण नाल वखाईआ। एह कोई जलसयां जलूसां वाला नहीं अदा कीता विहार, विश्व धर्म दा डंका दिता वजाईआ। इस नूं झुक्कणे पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड खुशीआं विच ताली रहे वजाईआ। सन्त सतिगुर इक्को देणा साथ, पल्ला सके ना कोए छुडाईआ। धर्म दी बणे जमात, तुलबे गुरमुख नज़री आईआ। वाहिद दा वाहिद कलमे नाल सृष्टी विच दुनिया विच कायनात विच कर दयो इनकलाब, नाअरा हक हक लगाईआ। तुहाडे नूर दा चमके आफ्ताब, जो छुपण विच कदे ना आईआ। इक्क मालक नूं तुसीं सारे करन वाले आदाब, जो हर घट अंदर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म समेलन दा धर्म संदेसा इक्क सुणाईआ। आउण वाल्लयो सारे बण जाओ सच दे मनुक्ख, मानवता लओ अपणाईआ। द्वैत दा कढु के जाणा दुःख, दूई रहिण कोए ना पाईआ। इक्क अन्तर आत्मा दा उपजाउणा सुख, इन्द्रिआं तों परे डेरा लाईआ। अमृत दा जाम लैणा घुट, जो सन्त सुहेले रहे वरताईआ। ओस मंज़ल जाणा पुज्ज, जिस नूं हकीकी कहि के शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे सुणाईआ। जिस मंज़ल ते पैंडा जाए मुक, दीन मज़्ज़ब रहे ना कोए लड़ाईआ। ओथे कोई बोलण वाली नहीं ज़बान, सुणन वाला नहीं कान, वेखण वाला नहीं कोई अक्ख दा

निशान, इक्को नूर इलाहीआ। की होया जे वण्ड पई काया बंक आ के, मुछ दाढ़ी केस मंडा के, धोती टिक्का मस्तक ला के, तहिमत नाल लक्क सुहा के रीती जगत वखाईआ। जे वेखो आपणे अंदरों मुख नकाब लाह के, दर्शन देवे इक्को आ के, जिस ने गुर अवतार पैगम्बर घल्ले समझा के, नाम शब्द कलमा लोकमात विच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संदेसा इक्क प्रगटाईआ। आउण वाल्लयो अज्ज दा याद रखणा दिहाढ़ा, जिस दी सतिजुग दए गवाहीआ। एह मुनीआं दा अखाड़ा, परम पुरख रिषीआं दा लाड़ा, सब दे प्रकाश करे अंदर बहत्तर नाड़ा, धुन राग दा वजदा रहे ताड़ा, अठ्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल एका नाम दी शब्द होए शनवाईआ। सच परमात्मा नूं लभ्भण ना जायो किते विच उजाड़ां, उस दे अग्गे प्रेम प्रीती दा कढ्ढो हाढ़ा, तूं मेरा मैं तेरा दा लायो नाअरा, आपे आवे भज्जा वाहो दाहीआ। क्यों उस दा आत्मा नाल प्यारा, परमात्मा दा खेल न्यारा सच दा जैकारा, शब्द दा इशारा, नूर दा उज्यारा, सब दा कन्त कन्तूहल हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घड़ी घड़ी घड़ी वेख वखाईआ। घड़ी कहे मैनूं हज़रत ईसा ने किहा तूं मेरा घड़याल, घंटा दो जहान खड़काईआ। जिस वेले दुनिया दे उत्ते आवे ज़वाल, चार कुण्ट पए दुहाईआ। कायनात दा बुरा होवे हाल, हालत समझ कोए ना पाईआ। ओस वेले इक्क तों दो दो तों तिन्न तिन्नां दा बदल जावे काल, विष्न ब्रह्मा शिव जिस नूं कहिंदे भगतां दा भगवान इक्को नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। घड़ी कहे मेरा वक्त कदे ना मुक्कदा, मुक्कण विच कदे ना आईआ। जिस दा हज़रत मुहम्मद बेड़ा चुकदा, चौदां तबक चौदां सदीआं दा राह वखाईआ। उह ऊँचां नीचां वाली दो जहान निरगुण धार निरगुण जोत निरगुण नूर हो के साडे अंदर हो के पुछदा, पोशीदा हो के खोजे थाउँ थाँईंआ। जे सारे प्यार कर लओ इक्क परम पुरख अबिनाशी अचुत दा, चेतन सुरती सब दी दए कराईआ। ओथे झगड़ा नहीं काया बुत्त दा, सच दुआर परवरदिगार सांझा यार नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना बेपरवाह हक खुदा ज़ाहर ज़हूर इक्को इक्क डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। घड़ी कहे मैथों नानक ने कदी नहीं पुछया टाईम, मेरा वक्त ना कोए जणाईआ। जद किहा ओ घड़ीए परमात्मा सब दा साक सज्जण सैण, वण्डां विच कदे ना आईआ। क्यों उह नरां दा नर नरायण, निराकार निरँकार नूर इलाहीआ। ओसे दी महिमा सिफ्त करे रामायण, गीता दा ज्ञान ओसे दी सिफ्त सालाहीआ। अञ्जील कुरान दस्सया नहीं तरफ़ैन, तीस बत्तीसा ढोला गाईआ। निरगुण सरगुण ओसे दा देण, जो उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण आपणी खेल कराईआ। सारी सृष्टी दृष्टी नार मर्द मरदो ज़न, आत्मा परमात्मा

दा नाता इक्क दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं रिहा इक्को इक्क सुणाईआ। आउण वाल्लयो तुहाडे अंदर आवे उह खुशी, फेर खुशामद करन दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडी साहिब सतिगुर नाल लग्ग जावे रुची, जो रिषीआं मुन्नीआं दे अंदर आपणा निरगुण नूर धर के बैठा डेरा लाईआ। ओस दी जड़ कदे ना जावे पुट्टी, दो जहानां तों परे उस दी समझ किसे ना आईआ। हुण लुक्कया नहीं रहिणा किसे गुठ्ठी, उच्ची डंक देणा वजाईआ। दुनिया मूल रहे ना सुत्ती, सुत्तयां देणा उठाईआ। उठो वेखो सन्तां ने दुरमति मैल लाहुण दी नाम दी आपणी काया दे विच्चों कढ्ढ लई गुच्छी, सब दी अंदरों करन सफ़ाईआ। सच धर्म दी सुहाउणी अग्गे रुत्ती, रुतड़ी प्रेम नाल महकाईआ। क्यों रविदास ग़रीब चम्यारे ने गंढु के टुट्टी जुत्ती, आपणा झट ल्या लँघाईआ। ऐस वेले ओहदे नालों वी दुनिया दुखी, प्रभ तों विछड़ के सारे देण दुहाईआ। तुहाडा धर्म समेलन नहीं एह धर्म दी धार उच्ची, धर्म दा दवारा सब दा इक्को नज़री आईआ। तुसां घर जा के वसणा चा नाल सुखी, सुख विच आपणा झट लँघाईआ। वेख्यो किते भुल्ल ना जायो प्यार विच पुत्तीं, सन्तां दा बचन मुड़ के हथ्थ कदे ना आईआ। एह जेहड़ी मौज प्यार वाली लुट्टी, इस नूं आपणे अंदर लओ टिकाईआ।
११२१ तुहाडे अंदर आपे पोह जावे फुट्टी, दिवस रैण करे रुशनाईआ। जेहड़ी सज्जण सुहेली एथे आ के बिरहु नाल गई कुठ्ठी, ११२१
२० प्रेम विच आपणा आप जलाईआ। उह समझयो आत्मा सदा सुच्ची, सवान कुत्ते वांग जगत दे शीश महल विच वड़ के ठोकर २०
कदे ना खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आउण वाल्लयो साचे सन्तां वलों सब नूं दए वधाईआ। आए मित्रो वेखो साचा मित्र, जो मित्र धुरदरगाहीआ। तुहाडे काया मन्दिर अंदरों आवे निकल, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जे बचन सुण के हो जाओ सित्थल, आपणा मन टिकाईआ। फेर भज्जणा ना पए इधर उधर, मिले माण इक्को घर वड्याईआ। उह निर्मल दाता पुरख बिधाता सच दवारयों आवे निकल, निराकार साकार आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा इक्क खुल्हाईआ। आउण वाले बड़े चंगे, गुरमुख नज़री आईआ। बत्तरे किहा सुरस्ती जमना धार गंगे, सन्त साजण सोहणा तट बणाईआ। अक्खां वाल्लयो अक्खां खोल्ह के जायो किते बण ना जायो अन्धे, अज्ञान दा डेरा सन्त देण ढाहीआ। सदा टुट्टयां दी पाउँदे गंढु, गंढिआं तोड़ चढ़ाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा इक्को छन्दे, सोहँ ढोला वज्जे, दूजी अवर ना कोए शनवाईआ। सन्तां नाल मिल के मंदे हो जाण चंगे, दुरमति मैल रहे गवाईआ। जगत सुख तुहाडे घरां विच रह जाण टंगे, टंगण वालयां मिले वड्याईआ। बन्दगी विच प्रेम विच मुहब्बत विच बण जाओ ओस प्रभू दे बन्दे, जो बन्दीखाने विच्चों दए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। आउण वाले नर नारी, बुढे नढे बच्चे खुशी मनाईआ। हरिजन संगत बणी प्यारी, मिल सन्तां खुशी मनाईआ। वेख्यो बिना नाम तों बिना सतिगुर तों किसे दी सुरती ना रहे कुँवारी, कुँवारी कन्या नूं सारे लोकीं ताअने नाल सताईआ। जे आपणी आत्मा लओ शृंगारी, सतिगुर चरण जाओ बलिहारी, उह मेहर करे इक्क वारी, धुन नाद देवे धुन्कारी, निर्मल जोत करे उज्यारी, फेर ओथे ना कोई चंगी ना कोई माढ़ी, गुरमुखो तुहाडी आत्मा ओस प्रभू दी लाड़ी, जेहड़ा लाड़ा कदे ना करे जुदाईआ। एह ना समझयो समेलन अज्ज दी दिहाढ़ी, अज्ज तों तुहाडा मार्ग दिता बणाईआ। इस समेलन नूं याद रखे दुनिया सारी, क्यों सन्त मुनी महात्मा सूफ़ी फ़कीर सारे इक्ट्ठे बैठे आईआ। एह कोई तजारत नहीं ते तुसीं नहीं कोई व्यपारी, जगत वाले अंकड़े ना कोए गणाईआ। जे लै के जाओ साचे नाम दी खुमारी, जेहड़ी खुदग़रज़ी अंदरों दए कढाहीआ। इक्क दूजे उत्ते करो एतबारी, बेएतबारा रहिण कोए ना पाईआ। कादीआं वाले ने उच्ची बोल किहा ललकारी, लायक बण के ओस खुदा दे बच्चे दयो वखाईआ। जो सब दा प्राण आधारी, प्राणपत कहि के उस नूं सीस झुकाईआ। एह थोड़यां मिन्टां दी वारी, तुहाडा आयां दा सति दा सति बणे सतिकारी, रिषीआं मुनीआं

११२२ महात्मा महापुरुषां सूफ़ी फ़कीरां दी सदा चाल जगत न्यारी, न्याँकार इक्को नज़री आईआ। एह मंच वेखो सभा वेखो सटेज ११२२

२० वेखो जिस दे उत्ते महकी उह फुलवाड़ी, जिस दा गुलदस्ता बणया नाल ओस फूल, जो फूल कांटयां विच कदे ना आईआ। २०

सब दा सांझा प्यार मुहब्बत दा होवे इक्क रस्ता, रस्ते विच सारे भज्जो चाँईं चाँईंआ। जे किते इशारा वेख लओ ओस अक्ख दा, जित्थे प्रतख मिले गोसाँईंआ। फेर तुहाडा मन विकारां वलों आपे हटदा, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। गुरमुखो बड़ा सोहणा सुहावणा समां ते वेला एह इक्ट्ठ दा, इक्ट्ठे कर के गलवकड़ी लैणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब तों वक्खरा सदा खेल करे मुनी दे बचन सिध्धे जेहे जट्ट दा, जटा जूटां विच आपणा हिस्सा लवे पाईआ। ओधरों घड़ी ने आवाज़ दे दिता टक टक दा, टिकटिकी तों डरी भज्जे वाहो दाहीआ। इक्क होर आवाज़ आवे फट फट दा, जो मिन्ट विच पूरा चक्र लए लगाईआ। क्योंकि एह अखाड़ा सच दा, धर्म दवारा सच दा, मुहब्बत दा प्यारा सच दा, एस कर के दूर टाइम ना कोए लगाईआ। मुनी दा बचन ब्रह्म मति इशारा अगम्मी अक्ख दा, जित्थे प्रीतम प्यारा वसदा, उस दी कीती ना कोए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आए गुरमुखां गुर गुर सतिगुर सतिगुर गुर गुर गुर चेला इक्को रंग वखाईआ।

जे सच सुणावां समेलन दा सिट्टा, सिट्टेदारी अग्गे रहे ना राईआ। फेर ना किहो एह जट्ट ऐंवें फिट्टा, सब नूं रिहा डराईआ। प्रभ ने दाउ लाउणा सब नूं फड़ के गिट्टा, नकाल कढ्ढ के लैणे ढाहीआ। कोटां विच्चों विरले दे मस्तक लाउणा टिक्का, जोत नूर कर रुशनाईआ। पिछले जुग दा वेख के चिठ्ठा, भेव अभेद खुल्हाईआ। धर्म दुआर दा बण के पिता, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। जिन्हां प्याला पीण दी रखी इच्छा, काया कासा अग्गे डाहीआ। पहलों जाम देवे निक्का, जिस नूं पी के दुरमति मैल धवाईआ। फेर प्याउण वास्ते कदे ना छड्डे पिच्छा, हौली हौली होर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क चढ़ाईआ। समेलन हुण अग्गे ना होवे सिट, बैठण विच कदे ना आईआ। जिस ने खड़काउणी इट्ट दे नाल इट्ट, पत्थर पत्थरां नाल लड़ाईआ। सब ने घर घर लैणा पिट, चारों कुण्ट दुहाईआ। प्रभ दा खेल सदा अनडिठ्ठ, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच गए लिख, सो पूरा देणा कराईआ। धर्म विच कर्म विच कोई विरला पूरा रहे सिख, बाकी डोले सर्ब लोकाईआ। सब दे अंदर वड़ गई विस, विषयां विच फसाईआ। गुरमुखो सच समझो आत्मा नूं कोई ना सके भिट, भिट्टे जाण वाले कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत
११२३ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खुशी बणाईआ। समेलन दा सिट्टा वड्डा लम्बा, बीज अगला दिता बजाईआ। ११२३
पाणी देणा नाल ओस बम्बा, जिस दा कुनैकशन दूजा ना सके जुड़ाईआ। झगड़ा मुकाउणा टिक्का बोदी तम्बा, सीस धड़
२० ना कोए वड्याईआ। जट्ट दे कोल वट्टां बन्ने खोतरन वाला नाम दा हथ्थ विच आ गया रम्बा, उच्चे टेडे सारे करे सफ़ाईआ। २०
भावें फिरना पए पैरीं नंगा, दर भगतां जा जा सुत्यां सेव कमाईआ। जेहड़े रिंद मंगदे इक्क बूँद, उन्हां दे अंदर वहा देवे गंगा, गहर गम्भीर गोसाँईंआ। जन भगत नेत्रहीण रहे कोई ना अन्धा, लोचण इक्को इक्क खुल्हाईआ। गुरमुखां विच दिसे कोई ना गंदा, गंदगी कूड़ी देणी मिटाईआ। भगत भगवान इक्को रूप ते इक्को चन्दा, जिस दा चन्द अन्धेर विच ना रुत्त बदलाईआ। गुरमुखो तुसां किहड़ी घोट के पीणी भंगा, नश्यां राह तकाईआ। इक्को जाम देवे अन मूँहों मंगा, जिस दा रस उतर कदे ना जाईआ। उह पीता नहीं जांदा नाल कदे दन्दां, बुल्लां नाल खिच ना अंदर लँघाईआ। ज़बान वाली नहीं कोई वण्डा, जगत ग्लास ना कोए वखाईआ। जिस वेले देवे मेहर विच महबूब बिना बन्दगीउँ बणा दए बन्दा, बन्धन सारे दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को इक्क वखाईआ। जाम कहे मैं फस्या विच सुराही, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। सुराही कहे सुराही नहीं उह धुरदरगाही, जिस दा पासा ना कोए बदलाईआ। उस ने मोरी कोई घुम्यारां ठठयारां वाली नहीं रखाई, जेहड़ा कोई आवे पलट के पावे पी के आपणा झट लँघाईआ। पहलों

प्रेम प्रीती दे लेखे करे सांवें, पिछले कर्म दे धोवे नावें, फेर अग्गे करे दाअवे, दायर इक्को घर कराईआ। जित्थे वकील कोई ना जावे, जज्ज किताब ना कोए फोलावे, चोबदार वाज ना कोए सुणावे, नफ़र ग़ुलाम नज़र कोए ना आईआ। उथ्थे रसना ढोला कोई ना गावे, अक्खां नाल ना कोई तकावे, बांहवां बल ना कोए वखावे, चारपाई उत्ते सौं के झट ना कोई लँघावे, अक्खरां वाला काग़ज़ ना अग्गे डाहवे, पाणी नाल कदे ना नहावे, वस्त्र ओढ ना झट लँघावे, सौहरे पेके कदे ना जावे, स्त्री सेज ना कोए हंढावे, पिता पूत ना गोद टिकावे, चारे कूट ना भरे हावे, प्रीती इक्को नाम लावे, उह भर के जाम ल्यावे, बिन प्याल्यों अंदर टिकावे, टका कीमत लैण कोए ना पाईआ। की सवरन अज्जे नहीं पीती, बुल्लां नाल ना कदे लगाईआ। भगत भगवान दी समझी नहीं रीती, अजे तक्क वेखो वेखी चल के आईआ। की अजे गंढु नहीं पीची, ढिल्ली रख के झट लँघाईआ। बदली नहीं नीती, मनसा मन हल्काईआ। जिन्हां दी सच्ची लग्ग गई प्रीती, ओन्हां नूं जाम दी लोड़ रही ना राईआ। शमस तबरेज़ दे नाल एह बीती, जिस ने खल्ल दिती लुहाईआ। ऐनलहक ने मूँह विच पा के चीची, नाअरा इक्को दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्याला हथ्थ उठाईआ।

मै प्याला कदे ना मुक्कदा, ख़ाली ना कोए कराईआ। मैख़ाना किसे ना दिसदा, जित्थे मजलस हरि उपजाईआ। जित्थे भण्डारा नहीं विख दा, अमृत इक्क वरताईआ। जे घर मिल जाए मालक पित दा, परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। सुराही कहे मैं क्यों होवां उलटी, उलटा राह चलाईआ। मैं सेवकण उस कुल दी, जो कुल भगत भगवान उपजाईआ। मेरी कीमत नहीं किसे मुल्ल दी, मुल्ला शेख़ ना कोए वरताईआ। मैं प्यासी नहीं प्यार दे बुल्ल दी, होटां नाल मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। मैं वणजारन सुल्हकुल दी, जो कुल मालक अख्वाईआ। बिन उस दी किरपा सुराही मैख़ान्यां विच रुलदी, अग्गे हो हथ्थ ना कोए लगाईआ। जिस नूं छार मिल गई चरण धूल दी, सच खुमारी दए चढ़ाईआ। सदा खेल प्रभू दी असूल दी, असल विच्चों असलीअत दए प्रगटाईआ। एह सूफ़ीआं दी आवाज़ जिन्हां नूं रहमत मंगणी अजे मन्ज़ूर दी, मन्ज़ूरी वल ध्यान लगाईआ। जित्थे रहमत हक मशकूर दी, मुश्किल अगली दए मिटाईआ। उह सुराही प्यालयां नूं सदा घूरदी, घुरकी नाल डराईआ। उह प्याले पीण वालयां दी मंज़ल अग्गे होर दूर दी, क्यों शरीर विच थोड़ा रस लै के आपणी खुशी बणाईआ। जिन्हां मस्ती दे दए आपणे नाम सरूर दी, जग सुत्यां लए उठाईआ। दुनिया वखावे कूड़ दी, कूड़ कुटम्ब विच्चों बचाईआ। मनसा मेटे मूर्ख मूढ़ दी, चतुर सुघड़ सुजान जणाईआ। साची बख्शे दात आपणे नूर दी, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साचे घर वेख वखाईआ। प्याला कहे पीण वालयां केहड़ा लभ्भया साकी, साख्यात नज़र ना आईआ। जिस बणाया बुत्त ख़ाकी, तन वजूद वड्याईआ। उह मसख़रा नहीं ना करे हासी, जेहड़ा हस्तीआं विच्चों हस्ती दए बदलाईआ। तेरे जगत अक्खरां दी पाती, अलिफ़ ये दे अंदर बन्द कराईआ। जिस प्याले पीतयां बदल जाए हयाती, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी नज़री आईआ। उह मजलस सदा इख़लाकी, श्री भगवान इक्क वखाईआ। जित्थे भगत भगवान इक्क दूजे दे दास दासी, सेवा विच दोवें सेव कमाईआ। सचखण्ड घर दे वासी, सच दवारे वज्जे वधाईआ। पहलों पीण दी सिखणी जाची, याचक आपणा आप बणाईआ। फेर बख़्शिश करे साकी, सुराही दए उलटाईआ। भगतां कोलों कदे नहीं राखी ढाकी, जे ढकी हुन्दी बिन पीतयां एथे चल कोए ना आईआ। उह सुराही प्रभ ने भगतां अंदर रखी, जिस वेले सौंदे भार वक्खी, ओनां दी रातीं सुत्तयां सुत्तयां खुल्ह जांदी अक्खी, एथे मेरा दर्शन पाईआ। मैं करां प्रकाश बिन मोम बत्ती, दरस दिखावां बण के कमलापती, नाम दा भोरा जाम देवां उह रती, जिस रती उत्तों कोटन कोटि सुराहीआं आपणी कीमत देण मिटाईआ। प्रभू कोई चराउँदा नहीं फिरदा गाँ वच्छी, कोई रूप नहीं जल होड़ा मच्छी, कोई तन वजूद नहीं बध्धा नाल रस्सी, जिस ने सार पाउणी चार लख

११२५ ते अस्सी, उस ने सुराही सांभ के ओथे रखी, जित्थे झल्ले कोई ना पक्खी, जिस वेले भगत भगवान दी हो जाए पक्की, ११२५

आपे ओनां दे अंदर दए उलटाईआ। वेख्यो लालच विच प्रभू दी कोई ना भरयो चट्टी, मुहब्बत विच प्यार विच गुरमुख सख़ी

२० जाए फटी, बिन पीतयां आवे नट्ठी, जे प्याला ना हुन्दा जाम ना हुन्दा साकी ना हुन्दा उह किस तरां जांदी उलटी, घट २०

घट आपणी धार वहाईआ। बिना पीतयां तों एह संगत नहीं होई इक्ठी, निक्के निक्के बच्चे जिनां जगत दी वासना छड्डी, एह गल्ल नहीं कोई वड्डी, छोटयाँ बाल्याँ आपणे माता पिता नूं सिख्या दस्सी, जे चाअ छड्डो ते चाह तुहाडी चाहां नालों चंगी दए बणाईआ। वेख गुरमुख सख़ीआँ फिरदीआं उच्ची अड्डी, इनां दे अंदर श्री भगवान खेले कबड्डी, जट्ट लैंदा नहीं किसे तों वढ्ढी, किसे दे घरों खांदा नहीं मच्छी डड्डी, अंदर वड़ के साफ़ करदा सब दी नाड़ी हड्डी, फेर चढ़ा के नाम आपणे दी गड्डी, गाईड हो के वाहिद हो के आपणा राह वखाईआ। जिनां नूं भरम ओनां जोगी, इनां गुरमुखां नहीं छड्डी, मैथों पी गए बदो बदी, लोकी सुत्ते एनां दी रात अज्जे नहीं होई अद्धी, पर एह लोकमात विच आउँदे कदी कदी, चुरासी विच गेड़ ना कोए रखाईआ। एह कोई उह शिवां वाली नहीं गद्दी, जिस नूं बणीए सवेरे ला के, धूप धुखा के, तकड़ी उठा के, सारयां दी चोटी मुंन के, पैसे टके उंगलां उत्ते गिण के, आपणे ख़ज़ाने विच लैण टिकाईआ। जिनां ने दर्शन कीते इक्क चिन्न दे, उह कदी पैमाने नहीं मिणदे, एह कोई खेल रात दे नहीं अन्धेरे दे नहीं जदों करां ते दिन दे, सब

दे साहमणे आख सुणाईआ। जिस दी गाथा गुर अवतार पैगम्बर चौंह जुगां विच रहे गिणदे, गिण गिण झट लँघाईआ। उस दे इशारे छिन्न दे, सुराही उलटयां चिर लग्गे, प्याला फड़यां चिर लग्गे, बुल्ल नाल छुहायां चिर लग्गे, घुट घुट लँघायां चिर लग्गे, चिरां दा विछुंना इक्को वार दए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। सुराही कहे मैनूं बड़ा कीता गुरुआं उलटी सिध्धी, गाटिउँ फड़ भवाईआ। इक्क दिन मैं मुहम्मद दे हथ्थों डिग्गी, ओहदे पट्टां उत्ते वज के उछाला ल्या चाँईं चाँईंआ। मैं बण गई ओथे ज़िद्दी, आपणी कथा कहाणी दिती सुणाईआ। मैं छोटी बाली निक्की, मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। जग नेत्र किसे ना दिसी, लभ्भ के सके ना कोए चुराईआ। मुहम्मद किहा ओ सुराहीए परवरदिगार दी खेल अनडिठ्ठी, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। मैनूं ऐं जापदा जिस वेले श्री भगवान ने आत्मा परमात्मा बणाउणी सख़ी, ओस वेले तेरी लोड़ रहे ना राईआ। क्यों तेरी अमृत धार अग्गे मिलदी रही थोड़ी थोड़ी जिन्हां नूं देंदा रिहा चिठ्ठी, चिठ्ठी रसायण तेरा रंग रंगाईआ। अग्गे उस दी कला हो गई सिध्धी, सिध्धा आपणा परदा लाहीआ। जन भगतां नूं तूं मेरा मैं तेरा आपणे मिलण दी दस्स के बिधी, बदला दिता चुकाईआ। उह धार पिच्छे रह गई जेहड़ी साकी तों प्याला पीण गिझी, मुड़ मुड़ के मंग मंगाईआ। हुण वस्त अमोलक उह दिती, जित्थे दूजे प्याले दी आस ना कोए रखाईआ।
१९२६ सुराही कहे मैं सुराही ते मेरी मति कदे ना होवे पिच्छे गिची, गिची धौणो फड़ के गुरमुख दयां मनाईआ। मैं ओन्हां दे दवारे १९२६
बिन कीमतों विकी, आपणी कीमत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जाम इक्क पिलाईआ। सुराही कहे मैं डरदी मेरा केहड़ा खोल्हे डट्टा, काग बाहर कढाहीआ। क्यों जट्ट हट्टा कट्टा, छैल छबीला जोबन वन्ता नज़री आईआ। जिस दीआं लाल गहरीआं अक्खां, भय रिहा वखाईआ। मैं भज्जड़यां पिट्टी किहनूं जा के दस्सां, किथ्थे दयां दुहाईआ। सुराही कहे मैनूं याद आई मैं भगतां दी प्रीती अंदर वसां, दूजा थाँ ना कोए वड्याईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, अक्खां मल मल झट लँघाईआ। ओन्हां प्यालयां कोलों बचां, जिस प्याले विच पी पी प्रभ दा राह तकाईआ। गल्ल कहिणों मूल ना झकां, सच सच दयां सुणाईआ। जिन्हां प्रभू दा दर्शन पा ल्या अक्खां, ओन्हां नूं जाम प्याला सुराही दी लोड़ रही ना राईआ। ते जे कोई कहे मैं वी एहो जेही पी के ते एहो जेहा बण के दस्सां, एह वथ हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। की तुहानूं पीती एह लग्गदी नहीं चंगी, कि नशा समझ ना आईआ। जे गोबिन्द वांगूं खण्डे दी धार हुन्दी नंगी, चारों कुण्ट दुहाईआ। भज्जे फिरदे ना राह लभ्भदा ना डण्डी, ठेडे खान्दयां डण्डावत कर के सीस निवाईआ। प्रभू दवारे पीण वालयां दी कदी ना लग्गी मंडी, आपणी दया

नाल भगतां सदा प्याईआ। भावें कोटन कोटि हसीनां पट्टी वाहवण कंघी, ठोडी रखण नंगी, बिना भगतां हरि जू अक्ख ना किते टिकाईआ। जे कोई मस्त प्याला पी के बण जाए पखण्डी, आखे मैं ओस रंगण विच गई रंगी, रंग जगत वाला वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। जे प्याउण दा हुन्दा ना चाओ, सुराही ना बन्द खुल्हाईआ। फेर काहनूं फड़दा बाहों, सुत्तयां क्यों जगाईआ। परम पुरख दा सदा सच्चा न्याउँ, अदालत इक्को इक्क वखाईआ। फ़ैसला करे दाअवेदार दा बिना गवाहों, शहादत जगत ना कोए भुगताईआ। कलम शाही दा की वसाहो, जिस वेले चाहो ते ओसे वेले बदलाओ, इक्क जज्ज दा फ़ैसला दूजा जज्ज दए बदलाईआ। जे दाअवा दायर हकीकी इक्क कराओ, वसीके ओस कोलों लिखाओ, जित्थे कलम शाही दी लोड़ रहे ना राईआ। फेर आपणी हालत जणाओ, परदा कोई रखो नाहों, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। प्रभ दे अग्गे केहड़ा ज़ोर, ज्यों भावे त्यों चलाईआ। ते जे उह सुराही देवे फोड़, फेर पीण वाले मस्ताने प्यास विच मर मर आपणा आप गवाईआ। जे मस्तां नूं नाम दी मस्ती नाल लवे जोड़, विछड़यां मेल मिलाईआ। जन्म कर्म दा
११२७ मेट के कोढ़, धुर दा रंग रंगाईआ। ज़रा तक्को नाल ग़ौर, गहर गम्भीर इक्क सुणाईआ। बिना पीतयां ""सोहँ महाराज ११२७
शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" दा पावे कोई ना शोर, जिन्हां नहीं पीती उह साहमणे बहि के मिलण कोई ना आईआ। जिस
२० प्रकाश कीता अन्धेरे घोर, तुहाडी अंदरों खिच्ची डोर, दीनां मज़्हबां विच्चों होड़, आत्मा परमात्मा नाल लई जोड़, जगत २०
जुगत विच्चों बाहर कढाहीआ। मंत्र दस्सया फोर, फ़ुरना पिछला बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जाम इक्क वखाईआ। जिस दिता जाम हकीकत, प्याला हक उठाईआ। अंदरों कढु शरीकत, लाशरीक दया कमाईआ। सच धार दी दस्स असलीअत, असल वसल दिता वखाईआ। जिन्हां नूं प्रभ दे मिलण दी नहीं सी काबलीअत, ओन्हां दे अंदर वड़ के परदा दिता उठाईआ। ज़रा पुछो भगतां तों तुहाडी किन बदलाई तबीअत, बिना पीतयां तों नशां किवें चढ़ के आईआ। एहनां दे विच बड़ी उच्ची ज़हनीअत, जेहड़ी ज़ेर ज़बर दा लेखा गई मुकाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत दी दे के इन्सानीअत, नीती दिती उलटाईआ। सच दवारे दी बण के रईयत, पातशाह इक्को रहे मनाईआ। जे ना पीती हुन्दी उन्हां दी गुर अवतार पैगम्बर हुन्दी वलदीअत, एह वी हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बण के आपस विच करदे लड़ाईआ। एह खेल नवीं नवीअत, नवां राह दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। किशन सिँघा की तैनूं नहीं चढ़ी खुमारी, ज़रा उठ के दे समझाईआ। किसे होर प्याले दी है वारी, मुख तों दे सुणाईआ। जिन्हां

दी कच्ची अंदरों यारी, उह रो के देण दुहाईआ। जेहड़े सांभ ना सकण आपणी नारी, उह नार बण के किस तरह कन्त दी सेव कमाईआ। तेरे मन दी खुआरी, इक्क वेरां मुच्छ तों हथ्थ फेर ते नाले उत्तों दाढ़ी, अज्ज दी रात जे तेरे अंदर खुमारी ना वाड़ी, फेर भावें आवीं ना उत्ते सतारां हाढ़ी, पल्ला लैणा छुडाईआ। साचयां भगतां दी आत्मा रहिण नहीं दिती कुँवारी, राती सुत्तयां घर जा के प्यार करे वारो वारी, गलवकड़ी आपणे नाल पाईआ। सुराही मैं लुका के रखी नहीं किसे विच बुखारी, ओस ताले नूं खोलूण वाली कुंजी नज़र कोए ना आईआ। लोहार तरखाण दी अकल ओथे करे कोई ना कारी, कारीगरी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। प्रभू है बड़ा कंजूस ऐवें आपणा नाम धन नहीं जांदा उजाड़ी, ठग्गां चोरां दी झोली कदे ना पाईआ। वेखो किन्ने लभ्भदे उत्ते पहाड़ी, रुलदे फिरन उजाड़ी, धूंणीआँ नाल तन रहे साड़ी, जल विच आपणा आप ठारी, दर दर घर घर मंगदे फिरन वाड़ी, उन्हां दी किस्मत माढ़ी, प्याला देण वाला हथ्थ किसे ना आईआ। जिन्हां दा पूरब जन्म करके आ गई वारी, उन्हां दे अंदर साफ़ करे नाल बहारी, गुरमुख बणाए आपणी प्यारी, प्रेम प्यार मुहब्बत विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जाम प्याला इक्क पिलाईआ। जाम प्याला पीण नूं सारे

११२८ लभरेज़, बुल्लां उत्ते ज़बान फिराईआ। सारे कहिंदे अंदरे अंदर सानूं वी मिल जाए जोती दा तेज, असीं वी आकड़ के बहि ११२८

२० के आपणी खुशी बणाईआ। बहुते कहिंदे जे पूरन दे थाँ सानूं दिन्दा भेज, सानूं वी भजन बन्दगी दी लोड़ रैहन्दी ना राईआ। २०

पता नहीं पूरन दी पूरन किस तरह्हां माणदा सेज, पूरन पूरन विच समाईआ। जे पूरन ना हुन्दा पूरन खौरे सुराही प्याले नूं लुट्ट के सारे आउँदे वेच, कीमत टक्कया वाली पाईआ। पर एहो दु:ख जेहड़ा अंदर वड़ के मारे पेच, पेचे विच आया निकल कोए ना जाईआ। बजर कपाटी विच करके छेक, सुराही अंदरों दए उलटाईआ। जिस दा हौली हौली सारे सरीर विच चढ़ जाए रेज, नाड़ी नाड़ी विच समाईआ। प्रभू दा पैमाना कोई नापण वाली नहीं लुहारां वाली गेज, इक्क दो तिन्न चार पंज नम्बर ना कोए लगाईआ। उह सुराही कोई दाल वाली नहीं देग, जिहदी मर्ज़ी कड़छा भर के भज्जे वाहो दाहीआ। जिंनां चिर इक्क दी ना होवे टेक, बुद्धी ना होवे बिबेक, कूड़ा ना रहे भेख, वसे ना ओस देस, जित्थे मालक इक्क नरेश, नरां दा नरायण नज़री आईआ। भावें कोई बुकल मारे भूरे दी भावें कोई उत्ते ताणे खेस, वेरवा करे ना कोई शब्द गुरू दस दस्मेश, जो आदि जुगादि रहे हमेश, हमसाजण हो के झट लँघाईआ। जे प्याले नूं पीण वास्ते होए पेश, पेशतर पीण तों पीणा दए सिखाईआ। सदा मुहब्बत विच रहो हमेश, प्रीती प्रीतम नाल वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। की पीण वाला होर वी कोई साकी, इशारा उंगली नाल कराईआ। एह सारी

इन्हां गल्ल आखी, जेहड़े पल्लू रहे छुडाईआ। आपो आपणी साफ़ करके वखावो बाटी, फिर सहिजे दयां उलटाईआ। जे बाटी नहीं इक्को मन्नो आखी, प्याला पीण दी लोड़ रहे नाँ राईआ। तुहाडा कोई भुल्लण वाला नहीं साकी, कि सवरन दा प्याला दूजे दे मूँह नूं लाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, हरि करता आप कराईआ। तुहाडे अन्तर आत्मा दा वासी, प्रकाश नूर अलाहीआ। जन भगतो पीण दी लोड़ रहे ना बाकी, इक्क दो तिन्नां सालां विच सारे दए रजाईआ। जे बहुते रजा दिते तुसां आपणी भुल्ल जाणी माई ते ताई ते चाची, नारी कन्त ते कन्त नारी इक्क दूजे नूं तज्ज के गलवकड़ी मेरे नाल पाईआ। थोड़े समें नूं दर्शन करके तरने पापी, जो दर आया जोत जगा के घर नूं जाईआ। इस दा लेखा लिखा देवांगा एसे विसाखी, वसाह के सब नूं लैणा ढाहीआ। इक्क पंडत रोंदा विच काशी, दो कश्मीर विच कुरलाईआ। सृष्ट सबाई वरोलणी कूड़ी क्रिया छाछी, मक्खण हरिजन बाहर कढाहीआ। प्रभ दी मोहर जन भगतो दूजे होर किसे नहीं छापी, गुर अवतार पैगम्बरां हत्थ ना कदे फड़ाईआ। सदा सचखण्ड दवारे रहे ढांपी, ढांचया विच बन्द ना कदे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खुमारी दए चढ़ाईआ। खुमारी चढ़ गई तुसां हाकर मारनी हूं, होकयां विच अंगड़ाईआ। केहड़ा मेरे साहमणे अड़े गुरू, गुरदे वाला मैं इक्को नज़री आईआ। जन भगतो तुहाडी पदवी अटल वांग धू, धुर दी बणत दिती बणाईआ। तुहाडी मंज़ल उथों हुन्दी शुरु, जित्थों जगत अभ्यासी आपणी मंज़ल मुकाईआ। ऐंवे ना करो डरूं डरूं, डरपोक रहिण कोए ना पाईआ। मैं तुहाडे काया दे मैख़ाने अंदर वड़ूं, अंदर वड़ के परदा लाहीआ। मंज़ल ओस हकीकी चढ़ूं, जित्थे तख्त निवासी सोभा पाईआ। वेख के सड़ के ऐवें ना करना कड़ूं कड़ूं, एह वस्त बिना पूरन दे हत्थ किसे ना आईआ। इक्क शब्द संदेसा सब नूं इक्को वार घल्लूं, धायल करके फट्टड़ सारे देणे कराईआ। इक्को रात विच तुहाडी ज़ात बण के तुहाडे विच रलूं, फेर रौला पाउण दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहानूं बणाके आपणे बच्चे बल्लू, लाडले गोद उठाईआ। तुहानूं खड़काउणा ना पए टल्लू, वरकयां वाली करनी ना पए पढ़ाईआ। मेहर निगाह नाल ओस टिकाणे घलूं, जित्थे घर दा मालक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। मस्तो की मंगो बण दीवाने, दाअवा दीवानी दायर कराईआ। क्यों लाल अक्खां कढ्डो आने, गुस्सयां विच डराईआ। प्रभू दे सदा इक्को जिहे पैमाने, पैमाइश विच बदली ना कोए वखाईआ। भगतां नूं कदे ना समझे बेगाने, आप आपणे गले लगाईआ। भावें किन्ने इक्ट्ठे हो के दयो ताअने, बिना वेले तों आपणा खेल ना कोए वखाईआ। भावे फड़ के हुणे दे आउ ठाणे, ठाकर ठोकर विच कदे ना आईआ। भावें तुसीं किड्डे बड़े स्याणे, अकलमंद अख्वाईआ। जिस वेले प्रभू तक्के तुसीं

निक्के बाल अंञाणे, नन्ह्रे नज़री आईआ। अजे बहुते भठ्ठीआं तों भुन्ना के चब्बदे दाणे, रीती पिउ दादे वाली चली आईआ। कई अक्खां तों काणे, टेडी अक्ख तकाईआ। पता नहीं एह पूरन कि विष्नूं भगवाने, लारे लप्पया विच झट लँघाईआ। वीह दा चवी बथेरे नज़मां विच गाए तराने, पर तराने गाउदयां घर दी मुकी ना अज्जे लड़ाईआ। चलो जे होर कुछ नहीं गुस्सा सारा पाओ प्रभ दे ख़ाने, आप खा पी के झट लँघाईआ। दो चार बोल के गाणे, पल्ला लओ छुडाईआ। एह गल्ल ज़रूर दस्सी अजीत सिँघ वरगे स्याणे, जो सलाहकार पिछला नज़री आईआ। हुण भावें किड्डे बणावो बहाने, असल गल्ल सब नूं समझ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। किहड़ी कलम नाल लिख्या मुकद्दमा, किस दे अग्गे रखाईआ। ओह गुरमुखो तुहाडे मुकद्दमे दा ज़रूर मैनूं सदमा, तुहाडी तहिरीर बेनज़ीर जिस दी नसर ना कोए वखाईआ। नाले झुकणा उत्ते कदमां, सीस जगदीस निवाईआ। गाउणीआं बेमन्ज़ूर नज़मां, जिस दी नग़मा करे ना कोए शनवाईआ। बुद्धी दा लै के तगमा, खुशी इक्क बणाईआ। खुशी विच ला के फ़तवा, मुकद्दमा दायर दिता कराईआ। एहदा अर्थ दस्सो की अथवा, अर्थात दयो जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। किस दी कचहिरी ते केहड़ा शैशन, रजिसटर करन वाला केहड़ा नज़री आईआ। ओथे परवाह नहीं किसे शंकर ब्रह्मा विष्न, कलम शाही लैण चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर निमाणे दिसण, बैठे सीस झुकाईआ। जिन्हां सारयां नूं इक्को वार देणी पैनशन, पिछला लेखा देणा मुकाईआ। ओन्हां सलाम करना हो के अटैनशन, सलूट बिना कलबूत देणा लगाईआ। सवरन जी उन्हां तों कोई लैण ते नहीं लग्गा कमिशन, हिस्सा वण्ड वण्डाईआ। कुछ याद कर एह खेल राम दा कुझ अर्जन नूं दस्सया कृष्न, कशमकश विच लोकाईआ। अर्जन जेहड़े भगत भगवान उत्तों विकण, आपा ओसे दी झोली पाईआ। उन्हां नूं प्रभ मिलदा (पृथ्म), पृथ्मी उत्ते फेरा पाईआ। सृष्टी दस्से मिथन, मिथ्या कूड़ लोकाईआ। गुरमुखां कोलों जाच सिक्खण, जो सिख्या विच आपणा आप गए मिटाईआ। प्रभ दे मुकद्दमे नूं केहड़ा आवे लिखण, केहदी जुरअत अष्टाम उत्ते मोहर देवे लगाईआ। केहड़ा आवे यितण, गुर अवतार पैगम्बर शहादत सके ना कोए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। एह मुकद्दमा नहीं कोई कि छाबड़ी विच्चों चुरा लए कचालू, टके दे सेर जगत विकाईआ। भगतो प्रभू सदा सदा दयालू, दयालता विच समाईआ। आदि जुगादि कृपालू, कृपानिध अख्वाईआ। सब नूं परवरिश करके पालू, सेवक हो के सेव कमाईआ। तुहाडे दुःख दी घालणा घालू, दुःख सुख इक्को रंग वखाईआ। अजे ते समेलन विच प्रभ दा हुक्म होण लग्गा चालू, पिच्छे दे कलयुग दा लेखा मुकाईआ। फेर जाम प्याले पी के वड्डे मोटे बण जाओ गाहलू,

आकड़ आकड़ के चल्यो वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे सिर ते देवे नाम सालू, सालम आपणा रंग चढ़ाईआ। सुराही विच्चों जाम पी पी कई थक्के, छुट्टी जगत लोकाईआ। जिस वेले मुहम्मद मदीनिउं गया मक्के, होई दुहाई दुहाईआ। उह पैमाने वल तक्के, आपणी अक्ख उठाईआ। ओधरों हुक्म आया हके, हकीकत विच समाईआ। मुहम्मदा एह प्याला भगत दा भगवान भगवान दा भगत फेर छके, शकायत वालयां दा शिकवा दए गवाईआ। जिस कारण एह जाम लुका के रखे, इस दी समझ ना कोए समझाईआ। एह ओस वेले प्याउणे जिस वेले सारी दुनिया होवे हके बक्के, हैरानी विच दुहाईआ। प्रभू वी उह वेला खुशीआं वाला तक्के, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। अज्जे कुछ होर होण वाले नाल इक्ट्ठे, उन्हां नूं रिहा मिलाईआ। जिस वेले पूरे हो गए बच्चे, इक्को वार रस दए चखाईआ। बाकी रहिणे भाण्डे कच्चे नाम दी भट्ठी ना कोए तपाईआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर दे के गए पते, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उह निरगुण धार आवे वते, बेवतनां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग इक्क निभाईआ। की पी के होवो मख़मूर, आपणी सुध्ध भुलाईआ। हुण समझें बरक्त पुरे तों पैंडा दूर, घर दा धन्दा दो दिन ना छुडाईआ। जे अंदर चढ़ जाए सरूर, की धीआं पुत्त देवें तजाईआ। चरण बणके मजदूर, सेवा सच कमाईआ। की
११३१ अट्ठे पहर रहेंगा हज़ूर, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभ दा एह दस्तूर, आहिस्ता आहिस्ता सब नूं लए उठाईआ। जोती जोत ११३१
२० सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह चलाईआ। की नाम खुमारी नाल हो जाएं मोटा, पी प्याला खुशी मनाईआ। २०
तूं अजे उन्हां नूं नहीं छड्डदा जेहड़े तेरे कोलों हथ्थ नाल गिड़ाउँदे टोका, गुस्से हो के फेर डराईआ। जे जाम पीण दा लैणा मौका, मुकम्मल प्रभ दी सेव कमाईआ। जे अजे लज्ज नाल बध्धा ते खूह विच लमकया बोका, भाउणी दे गेड़ लैणे गिड़ाईआ। जे सच मुहब्बत दा अंदर होका, हरदम ध्यान रखाईआ। फिर सतिगुर साचा पहुंचा, जाम इक्को दए पिलाईआ। ओए जाम पी के फेर किते हाण्डी विच ना फेरीं खौंचा, स्त्रीआं वाली सेव कमाईआ। छड्डणा पऊ घर दा चुल्हा चौंका, चहुं कन्ना दा जोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सारे कहिंदे पीणी पीणी, पी पी खुशी मनाईआ। जे पी के फेर घर दयां दी फड़नी वीणी, पीती कम्म किसे ना आईआ। बदल जावे जीणी, ज़िंदगी दए उलटाईआ। मति रखणी पए हीणी, हँकार गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जाम कहे प्रभू मैनूं छेती दे प्या, प्यासे प्यास मिटाईआ। सुराही कहे प्यालया ओहदे घर दे रोवण मार के धाह, क्यों पल्लू गया छुडाईआ। साडा प्यार छड्ड के ओस दी सेवा रिहा कमा, जो कमाई करदयां नूं घरों उठा

के आपणे नाल मिलाईआ। फेर पंज सत्त इक्ट्ठे हो के जावण आ, सवरन दी देण सफ़ाईआ। अजे ते एस ने नवां कराया व्याह, क्यों पल्लू दिता छुडाईआ। पर एथे लड़न नूं दोहां नूं नहीं थाँ, उह किधरे ते एह किधरे अक्ख नाल अक्ख ना कोए मिलाईआ। जे चाहें ते हुणे दयां प्या, मस्ताना कर के दयां वखाईआ। दूज्जयां मस्तां नूं ऐंवें ना नाल फसा, ओनॣां अजे नहीं छड्डुणे भैण भाईआ। खवरे आह वी तिन्न दिन उह आपणे बच्चे आए रवा, अद्धी सुरती एथे अद्धी पिच्छे वल्ल तकाईआ। बहुते पल्लू गए छुडा, भज्जे वाहो दाहीआ। एसे कर के जाम रख्या लुका, आपणे विच छुपाईआ। ओस वेले देवां प्या, जिस वेले चार कुण्ट डौरू डंका वज्जे बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। फेर सारे कहिण भज्जो ओए नट्ठो ओए ओहो पिता ते ओहो माँ, एह नार कम्म किसे ना आईआ। गुरमुखो जे पहलों प्यावां ते मेरी वी पत दयो गवा, क्यों तुहाडा अंदर अजे घर दी झल ना सके जुदाईआ। ते जे शौक होवे वेखो साडे वरगा बण गया खुदा, बन्दा खुदी विच अख्वाईआ। नहीं, आत्मा परमात्मा कदे ना हुन्दे जुदा, जो जुड़ गए उह जगत वलों मुड़ गऐ, ओस दी मंज़ल तुर गए, जो बिन मंज़ल सोभा पाईआ। जेहड़े प्याले सांभ के रखे अनन्दपुर दे उह किसे हथ्थ नहीं आए देवत सुर दे, रसना नाल ना कोए छुहाईआ।
११३२ एहो खेल सचे सतिगुर दे, पौड़ी पौड़ी मंज़ल मंज़ल डण्डे डण्डे आपणे घर पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ११३२
किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। मुकद्दमा किवें होवे ख़ारज, फ़ैसला नज़र कोए ना आईआ। क्यों भगत ने भगवान
२० उत्ते लाया चारज, डिसचारज ना कोए कराईआ। जेहड़ा सब दा मालक जारज, ओसे नूं मुलज़म दिता बणाईआ। जे २०
प्रभू मुलज़म हो गया केहड़ा सवारू कारज, काग़ज़ातां दी करे कवण सफ़ाईआ। गुरमुखो हुण एस दे उत्ते लावो गारद, हथ्थ बन्नॣ के हथ्थकड़ी लवो लगाईआ। एह कोई खेल नहीं नारद, वल छल विच झट लँघाईआ। जिस बणाउणे कंचन पारस, पातशाह बेपरवाहीआ। अंदरे अंदर करे तुआरफ़, तरफ़दारी ना कोए रखाईआ। जेहड़ा सभना दा वारस, ग़ुलाम सभना दा नज़री आईआ। प्रभू दी हुण केहड़ा करू सफ़ारश, छडाउण वाला दूजा ना कोए बणाईआ। किस तों लवे कोई इजाज़त, मन्ज़ूर हुक्म ना कोए कराईआ। जिस दी कीती इबादत, ओसे नूं बन्धना विच फसाईआ। जन भगत प्रभू दे नाल कदे नहीं करदे बगावत, धुर दी रीती चली आईआ। अग्गे रहे ना कोई अदावत, अदल इन्साफ़ इक्क कमाईआ। एह कोई खेल नहीं बनावट, बनौटी ना रूप प्रगटाईआ। कोई गज हाथी चलाउण वाला नहीं महावत, बन जंगलां विच फिराईआ। जदों करे प्रेम मुहब्बत दी सख़ावत, सखा सखा नज़री आईआ। जे प्रभू दे उत्ते लग्ग गई अलामत, करे ना कोए सफ़ाईआ। ओए उठ के मेरी दयो ज़मानत, मुजरम नूं लओ छुडाईआ। तुहाडा बध्धा सब दे उत्ते ल्या देवे कयामत, फेर तुसां वी रोणा

मार के धाईआ। लैणी कोल किसे नूं मिलण दी नहीं इजाजत, जेल अंदर लुक के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। अगली दस्सो किहड़ी पैणी तरीक, आपणे जज्ज नूं पुच्छ के देणा सुणाईआ। मैं ओसे दिन दी रखां उडीक, अदालत विच भुगतां चाँईं चाँईंआ। नवीं बदल देणी तारीख, धुर दा खेल प्रगटाईआ। हुण मैनूं तक्कयो विच्चों सीख, सीखां दे विच आपणा आप बन्द लैणा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां दा फ़तवा ज़रूर दए भुगताईआ। तुहाडे फ़तवे दी करां कदर, कदरदान अख्वाईआ। हुक्म दा मचा के ग़दर, खेल दयां वखाईआ। इक्क वार भगतां दी ज़रूर पूरी करां सध्धर, जे पूरी ना करां भगवान दी धार ना कोए प्रगटाईआ। एहो मेरा अदल, जुग जुग सेव कमाईआ। निरगुण जोत कदी ना होवे कत्ल, गूढ़ी नींद ना कोए सवाईआ। भावें कोई किन्ना करे यतन, यथार्थ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप जणाईआ। जे तरीक उत्ते होया ना जाए हाज़र, हाज़री ना कोए लगाईआ। फेर की करे नाज़र, नादर हुक्म सुणाईआ। कढ्ढ के अष्टाम वरगे काग़ज़, मोहरां दए लगाईआ। जिस ने कीती भगतां नाल साज़श, उहनूं लभ्भो थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाईआ। सवरन सिँघ फेर अदालत विच्चों कढाईं इक्क इशतयार, इशतयारी दईं बणाईआ। एह परवाना लै के फिरें विच संसार, भज्जें वाहो दाहीआ। चलो पूरन दे पूरन नूं करीए ग्रिफ़तार, फड़ के झट ल्याईआ। किसे दी बुद्धी ना करे विचार, समझ समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा आप चुकाईआ। इशतयार नाल ना गया आ, लभ्भयां हथ्थ ना आईआ। फेर ग्रिफ़तारी वरंट देणे कढा, मोहर अष्टाम उत्ते लगाईआ। हुण लभ्भ लै केहड़ा बणाउणा गवाह, जेहड़ा अदालत विच जा के मुक्कर कदे ना जाईआ। उहनूं लालच रहे ना रा, ममता ना मोह वखाईआ। आपे तरीकां भुगतदा फिरे खुदा, खुद मालक जो अख्वाईआ। तुसीं ज़रा मुकद्दमा कर के वेखो रवां, जज्ज आपणे नूं लवो समझाईआ। फेर करना खेल नवां, नवें दा नवां नवें रंग बदलाईआ। एह छेती कर लओ भरोसा नहीं दमां, पता नहीं अज्ज कल रहिण कोए ना पाईआ। जे पैसे कोल नहीं हरि संगत तों इक्ठे कर लओ जम्ह़ा, खर्चण विच थुड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फतवे विच आपणा आप रखाईआ। दाअवा दायर होए उहनूं केहड़ा फेर करे बेदखल, बेदखली सब दी दए कराईआ। वलीआ छलीआ सारे प्रभ नूं आखण, बिना भगतां तों भरोसा ना कोए रखाईआ। धुर दा खेल पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे वेख वखाईआ। वकील नूं कहिणा कोई वेखीं दफ़ा चंगी, तअज़ीराते

हिन्द फोल फुलाईआ। क्यों प्रभ बणया ढंगी, पेचे विच कदे ना आईआ। नाले बणया रिहा जंगी, चंगी करे लड़ाईआ। एहनूं जेल विच दे के खूब देणी तंगी, एहो मनसा मन विच रखाईआ। जेहड़ी सुराही अजे नहीं वण्डी, फेर आपे दए प्याईआ। सुराही कहे जे पहलों ई भुल्ल गए तेरी डण्डी, औझड़ राह नठ्ठे वाहो दाहीआ। तैनूं समझ पखण्डी, झूठा इकरारां वाला बणाईआ। कढ्ढ के काग़ज़ां वाली संधी, पढ़ के दिता सुणाईआ। तेरे उत्ते ला के पाबन्दी, हुक्म संगत विच सुणाईआ। सुराही कहे मैनूं एहनां नूं ना वण्डी, जेहड़े तेरे मित्र ना नज़री आईआ। मैं चंगी इन्हां नालों रंडी, इकल्ली बहि के झट लँघाईआ। मैं कट लऊंगी तंगी, आपणा मुख छुपाईआ। जेहड़े तेरे हो गए संगी, उन्हां नाल मिल के तेरी खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव चुकाईआ। जिस उत्ते दाअवा हो जाए दायर, दायरे विच बन्द कराईआ। उह मित्र नहीं कोई ग़ैर, बिना दुश्मणां तों दाअवा उत्ते ना किसे कराईआ। सवेरे पुच्छ लैणा जा के किसे कोलों (शहर), जो शरअ दा वाकिफ़कार नज़री आईआ। उहनूं कहो जेहड़ी पूरन नूं आ गई लहर, उह लहर क्यों ना साडे विच समाईआ। साडा इस गल्लों वैंर, हकीकी जाम साडे ना बुल्ल छुहाईआ। एसे कर के ओह गुरमुखो हरि संगत विच्चों कढ्ढ के बिठाया निखेड़, फ़तवा देण वाला संगत विच बहि सके ना राईआ। अंदर वड़ के छेड़ दिती छेड़, सहिजे ल्या
११३४ उठाईआ। एसे कर के नाँ रखाया सिँघ शेर, भय विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा ११३४
२० कर, आपणे रंग रंगाईआ। बड़ी खुशी जे फतवा लग्गा जग, गुरमुख दिता लगाईआ। एसे कारण सृष्टी नूं लग्गणी अग्ग, २०
चार कुण्ट दुहाईआ। अजे वी बाकी जायो बच, बचन इक्को इक्क सुणाईआ। भरी सभा विच बोलणा सच्च, सति नाल सुणाईआ। हुण तुहाडे मुकद्दमे विच गया फस, इक्ठे हो के दयो गवाहीआ। मुक्खों कहिणा एह ऐवें बणया रब्ब, सानूं ममता विच फसाईआ। लाउँदा रिहा पज, लारयां विच वक्त लँघाईआ। मैं खुशी होवां गद गद, आपणी खुशी बणाईआ। नाले समझ आवे भगत भगवान दी किहड़ी हद्द, सीमा किहड़ी वण्ड वण्डीईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल कराईआ। एह जगत अक्खरां दी चलाकी, अग्गे पिच्छे जोड़ के ढोले दिते गाईआ। अक्खरां वाला बदन ख़ाकी, अन्त ख़ाक विच समाईआ। जो साहिब सतिगुर भाखी, सो भाख्या विच लोकाईआ। गुरमुख विरला मन्ने आखी, आख़र चोटी चढ़ के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। जन भगतो ठहराया कसूरवार, उच्ची कूक दिता सुणाईआ। सतिगुर बचन तों गया हार, लिख के दिता वखाईआ। जे बुद्धी पा लए सार, फेर प्रभ दी की चतुराईआ। जिस नूं समझ ना सके गुरू अवतार, पैगम्बर ध्यान लगाईआ। ओहदा सब तों वक्खरा

विहार, विवहारी आप हो जाईआ। सदा खेल करे करतार, कुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। उह कोई नवें नहीं बणाउँदा यार, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सवेरे लेख दे दयो विच अख़बार, ख़बर करो थाँईं थाँईंआ। साडा एहो जेहा प्यार, प्यार दी शहादत दयो भुगताईआ। एह बुद्धी दा विसथार, जिस नूं विकास कहे लोकाईआ। इस दे नालों चंगा जरनैला जट्ट गवार, खुशी विच प्रभ दे ढोले गाईआ। सब नूं कहे वंगार, इक्को दाता बेपरवाहीआ। जिस दी मंज़ल सदा दुष्वार, बिन किरपा चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, आदि जुगादी नौजवान मर्द मर्दाना मेहरवान, महबूब मुहब्बत दा मालक ख़लक दा ख़ालक इक्क अख्वाईआ। आपणा मुकद्दमा कर लै विदडरा, डराफ़ट अग्गे ना कोए बणाईआ। सारे गवाह लै हटा, जगत शहादत ना कोए भुगताईआ। वकील तों पल्लू लै छुडा, आपणी गंढु कटाईआ। जज्ज नूं दे सुणा, उच्ची कूक सुणाईआ। मेरा झगड़ा रिहा ना रा, राज़ीनावें विच जन भगत देण सफ़ाईआ। असीं आपे लईए मुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। जज्ज कहे आपणे कर के दे दसख्त, हलफीआ ब्यान नाल रलाईआ। मुड़ के फेर ना करां वत, दुबारा

११३५ दरज कराईआ। मेरा मैनूं मिल गया हक, दुःख रिहा ना राईआ। बोल के दस्सां सच्च, सच नाल सुणाईआ। मैं माटी ११३५

भाण्डा कच्च, भज्जण लग्गयां देर लग्गे ना राईआ। पता नहीं एस मुकद्दमे दी किन्नी लम्बी हद्द, ओने चिर मेरा पुत्त पोतरा

२० खबरे रहिण कोए ना पाईआ। क्योंकि मुलज़म किसे नहीं पैणा लभ्भ, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। भांवे फिरो विच २०

जग, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। उह सब तों वसे अड्ड, अड्डरा घर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग वखाईआ। जज्ज कहे मैनूं मन्जूर, मन्जूरी दिती पाईआ। जा के सुलह करो ज़रूर, ज़रूरी गल्ल समझाईआ। फेर इक्क दूजे तों नहीं रहिणा दूर, नेरन नेरा हो के झट लँघाईआ। जे तूं ओस ते लाया फ़तवा उह तेरा जन्म दा बख्श देवे कसूर, कसर अग्गे रहे ना राईआ। नाम खुमारी नाल करे मख़मूर, खुदी दए मिटाईआ। ओस दे कोल भण्डारा भरपूर, देंदयां तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी वण्ड वण्डाईआ। जज्ज कहे किस तरां करो राज़ीनावां, कर के दयो वखाईआ। इक्क दूजे दीआं पकड़ो बाहवां, गलवकड़ी गल विच पाईआ। मुदई कहे मैं आपणी भुल्ल बख्शावां, मणका मन भवाईआ। मुलज़म दा मुलज़म हो के वास्ता अग्गे पावां, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तेरी रहमत विच ठंडीआं छावां, अग्नी तत देणा बुझाईआ। तेरी सिफ्तां दा ढोला गावां, सदा सदा तेरी याद आपणे विच समाईआ। फिर आपे चुक्के जिवें पुत्तर गोद उठाउँदीआं मावां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

आपे खारज हो जावे दाअवा, दाअवे दायर दा लेखा दए मुकाईआ। फेर भगता विच ला के नावां, गुरमुख ओसे रंग रंगाईआ। हरि संगत विच बिठा के नाल चावां, सोहणी बणत बणाईआ। एस दवारे ते आ के कोई ना रहे निथावां, निथाव्याँ माण रखाईआ। भगत भगवान दा पल्लू हो जावे सांवां, ऊणता नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वखाईआ। राज़ीनावां लिखो बिना कलम दवात, काग़ज़ नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवान सज्जण साक, धुर दा संग रखाईआ। हरि संगत सारी रही आख, अंदरे अंदर सुणाईआ। प्रभू, बच्चे सदा हुन्दे गुस्ताख़, पिता पूत गोद विच उठाईआ। क्यों तूं आत्मा दा बाप, परमात्मा इक्क अख्वाईआ। तैनूं भुल्ल के वी फिर वी तेरा करना जाप, जगजीवण दाते तेरी इक्क शरनाईआ। रूह बुत्त कर दे साफ़, पतित पुनीत बणाईआ। भुल्ल कीती हो जाए मुआफ़, पर जगत दा झगड़ा ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म वरताईआ। मुकद्दमे दे काग़ज़ दाख़ल दी थाँ दयो पाड़, कतरा कतरा वण्ड वण्डाईआ। इक्क वेरां फेर बेनन्ती करनी पए सतारां हाढ़, क्यों सतारां हाढ़ दा लेखा दिता लिखाईआ। अग्नी तपे ना तन नाड़, सांतक सति सति वरताईआ। सवरन सिँघा तेरा सत्तां दिनां नूं सरीर छुटणा सी विच संसार, एसे कर के बणत बणाईआ। तेरी रोंदी फिरनी सी नार, प्रभ दा विगड़ कुछ ना जाईआ। जे बच्चू तेरे नाल ना हुन्दा प्यार, पड़दे विच छुपाईआ। तूं ते दाअवा कीता दायर, मैं तेरे जन्म जन्म दे दाअवे खारज दिते कराईआ। एहो जेहा किते नहीं लभ्भणा यार, जो बिना सुराहीउँ जाम प्याईआ। जे आखें ते सारी रात मैं अंदर सुत्ता रहां तेरे नाल, जे हथ्थ मारें बिस्तरे उत्ते नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ी घाली पिछले जन्म दी घाल, उस दा लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस कारण किशन सिँघ ल्या उठाल, उह वी दयां समझाईआ। किशन सिँघ लालो पिछला तरखाण, नानक दा प्यारा नज़री आईआ। इक्क दिन फिरदा सी विच बीआबान, लकड़ी लभ्भे थाउँ थाँईंआ। तूं ओस वेले बच्चा सैं नौ साल दी उमर नादान, घर नीचां नज़री आईआ। तेरा जन्म सी मुस्लिमान, अल्ला कहि के ढोला गाईआ। लालो नूं किहा मेरे मेहरवान, क्यों फिरे चाँईं चाँईंआ। लालो कहे मेरे घर आउणा गुण निधान, नानक धुरदरगाहीआ। बच्चे किहा मैनूं दे वखाल, आपणा संग बणाईआ। लालो किहा चल मेरे नाल, अगला पन्ध मुकाईआ। ओन होर कीता सवाल, मैनूं दे समझाईआ। जो नानक दा रखवाल, उह किथे डेरा लाईआ। मैं सुणया अल्ला मीआं सब दा भगवान, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दी मुहम्मद सुणाई कुरान, हदीसां विच सालाहीआ। उह किथ्थे मिले मेहरवान, परदा दे चुकाईआ। अगम्मी आवाज़ आई, शब्द दी नाद आई, सुण, धुर फ़रमान सुणाईआ।

सुण बाले नढ्ढे अंञाण, तैनूं दयां समझाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं पुरख अकाल दीन दयाल खेल करे महान, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। जोती जामा पहने नौजवान, नारी पुरुष ना रूप धराईआ। आपे मेल मिलाए आण, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। लालो किहा जाह बच्चू जे उह तेरा ते तेरी आपे करू पहिचाण, नानक दूरों सब कुछ वेख वखाईआ। सोई वक्त पहुंचया आण, पिछला लेखा पूर कराईआ। तैनूं सब विच्चों बाहर कढ्ढ के बिठाया बणाया वक्खरा निशान, निशाना तेरे उत्ते टिकाईआ। लालो कोलों कराई पहिचाण, पिछला मूल मुकाईआ। अगला सुण धुर फ़रमान, धर्म दवारे इक्क सुणाईआ। तेरे मापिआं दे घर आउण नहीं दिती मुकाण, मरन तों ल्या बचाईआ। अग्गे फेर ना समझीं इन्सान, फतवे वाला कदम ना कोए उठाईआ। एह बुद्धी दा गुमान, सतिगुर साचे कदे ना भाईआ। उह भगतां नूं देवे सदा आराम, अमृत आत्म रस चखाईआ। बेनन्ती कर परवान, काग़ज़ पिछले दए दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, बिधी नाल जन्म दी सिद्धी देवे कराईआ।

११३७
२०

★ ३० पोह शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सज्जण साहिब लोड़ींदड़ा, लोयण विच दीदार। हर घट अंदर वसंदड़ा, परम पुरख करतार। निरगुण जोत जगंदड़ा, दीआ बाती कर उज्यार। नाद धुन उपजंदड़ा, शब्द सच्ची धुन्कार। अमृत रस चुअंदड़ा, बूँद स्वांती ठार। लोचण अक्ख खुलंदड़ा, निज नेत्र दीदार। बजर कपाट तुड़ंदड़ा, अन्ध अन्धेर निवार। त्रबैणी खेल खलंदड़ा, सुखमन भेव न्यार। जगत दवारा पन्ध मुकन्दड़ा, नव नौ दे आधार। साचा रंग रंगदड़ा, उतरे ना विच संसार। आत्म सेज सुहंदड़ा, वेख सखी सच्ची सरकार। साचा जोड़ जुड़ंदड़ा, जुग जुग मेलणहार। कलयुग वेख वखंदड़ा, वेखे विगसे पावे सार। दीन दयाल बण बख्शंदड़ा, बख्शिश रहमत करे अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं सच देवे इक्क प्यार।

★ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ३ जैन मन्दिर बटाला ★

गुरमुख सज्जण जाणा जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। खुशीआं वाला दिन महीना माघ, मजन धूढ़ इश्नान इक्क वड्याईआ। दुरमति मैल धोणा दाग़, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। मन अन्तर उपजाउणा इक्क वैराग, वैरी अंदरों बाहर

कढाहीआ। दीपक जोत जगाउणा चिराग़, निज आत्म होए रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बणाउणा सच्चा साक, नाता अवर ना कोए रखाईआ। भाग लाउणा काया पंज तत माटी ख़ाक, वजूद महबूब मिल के ख़ुशी बणाईआ। साचा मेला सच दुआर साचे सन्त साध, जो साधना विच साचा राह वखाईआ। बुद्धी तों परे ज्ञान देण बोध अगाध, अनुभव परदा आप उठाईआ। हँस बण जाओ सारे रिहो कोई ना काग, विकार नज़र कोए ना आईआ। ममता मोह ना रहे विवाद, विख अमृत रूप वटाईआ। रसना दा छड्ड जाओ स्वाद, अमृत रस लै के आपणी ख़ुशी उपजाईआ। धुन आत्मक सुणो इलाही नाद, जिस दी राग सिफ्त रहे गाईआ। खेल वेखो विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड वज्जे वधाईआ। साची मंज़ल हकीकी चढ़ो भाज, जित्थे लाशरीक मिले नूर इलाहीआ। ओस नूं सजदा करो आदाब, जो कायनात नूं कलमा इक्क समझाईआ। हकीकी दए महिराब, मुहब्बतख़ाना इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर परदा दए उठाईआ। बटाला निवासी अज्ज दा दिवस समझो चंगा, चंगी मिली वड्याईआ। मन कल्पणा सारे छड्ड दयो दंगा, कूड़ी क्रिया ना कोए लड़ाईआ। प्रेम पायो एका संदा, जो साहिब स्वामी धुर दा नज़री आईआ। जिस तन वजूद ख़ाकी बणाया बन्दा, बन्दगी इक्को इक्क दृढ़ाईआ।
११३८ हउमे हंगता विच रिहो कोई ना गंदा, दुरमति मैल अंदरों करो सफ़ाईआ। तुसीं ओस प्रभू दा अगम्मी उह चन्दा, जो नूर ११३८
जोत रुशनाईआ। मंज़ल चढ़ो हकीकी डण्डा, डण्डौत इक्को कर के सीस निवाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी पाओ प्रेम प्यार दीआं गंढ्रां, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान सूरा सरबंगा, शाह पातशाह शहिनशाह जल्वागर नूर इलाहीआ। जो आत्म परमात्म निजानंद निज स्वामी घर महबूब देवे इक्क अनन्दा, जिस नूं रसना रस समझ कोए ना पाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद आप सुणाए बण के धर्म दा पंडा, जगत विद्या लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म भेव खुल्हाईआ। हरिजन साचे वेख महीना माघ आया, सच संदेसा जगत सुणाईआ। कूड़ी क्रिया त्यागो ममता मोह माया, हंगता गढ़ रहिण ना पाईआ। एका समझो दाई दाया, जिस ने मानस जन्म दवाईआ। सचखण्ड मुकामे हक लाशरीक जिस ने डेरा लाया, सच तौफ़ीक हरि रफ़ीक इक्को इक्क दरसाईआ। बेऐब परवरदिगार साची करनी खेल खिलाया, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाया, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाया, जागरत जोत डगमगाईआ। जिस दे प्रेम प्यार मुहब्बत विच मुनी सुशील कुमार भज्जे चारों कुण्ट वाहो दाहया, वाह वा करके ढोला रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क वखाईआ। बटाले वाल्लयो करो सच प्यार, प्रेमी आप जणाईआ।

मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, जो अंदरों झगड़ा दए मुकाईआ। साची मंज़ल इक्क दवार, घर इक्को वज्जे वधाईआ। वेखो मिरजा साहिब दे प्यारे चल्ल के आए हाल, बैठे सोभा पाईआ। जित्थे जवाब ना कोए सवाल, इक्को रंग इक्को मृदंग आपणा नाद सुणाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया तोड़ो जगत जंजाल, जग जीवण दाता सब नूं दए वड्याईआ। साची दरगाह मुकामे हक लैणी भाल, जित्थे ऊँच नीच राउ रंक राज राजान वण्ड ना कोए वण्डाईआ। काया अंदर आपणे मन्दिर आपणे आप दी करो पहचान निज आत्म लवो भाल, परमात्म इक्को नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क वखाईआ। सच दरबार सच्चा दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस घर वसे एका एकँकारा, अकल कलधारी वड वड्याईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी हर घट अंदर निरगुण नूर जोत करे उज्यारा, दीआ बाती कमलापाती इक्को इक्क डगमगाईआ। ख़ालक ख़लक मख़लूक देवे कलमा वाहिद जिस दा धुन ढोल ढमक्क समझे ना कोए डफारा, बाहरले साज ना कोए खड़काईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के तक्को उह नज़ारा, जो सूफ़ी सन्त फ़कीर जलवा तक्क के ख़ुशी मनाईआ। वेख्यो मन कल्पणा विच फिरयो ना जगत आवारा, मालक देणा भुलाईआ। साहिब सतिगुर परम पुरख परमात्म आत्म दा सदा प्यारा, तन वजूद झगड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची इक्को घर सुहाईआ। हरिजन साचे सारे बण जाओ भगत, भावनी इक्क प्रगटाईआ। लेखा वेखो विच जगत, जीवण जुगत बदलाईआ। प्रेम प्यार दा सुहञ्जणा होवे वक्त, सोहणी रुत्त सुहाईआ। जो मालक वसे उत्ते अर्श, सो फर्श होए सहाईआ। सब दे उत्ते करे तरस, वैरी मीत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निरमाणता हलीमी ग़रीबी विच सईयदे विच बन्दना विच डण्डावत विच उस दे चरण करो अरज़, आरज़ू आपणी इक्क सुणाईआ। प्रभू असीं तेरे ते सानूं तेरी ग़रज़, तुध बिन रहिण कोए ना पाईआ। उह बेपरवाह नूर अलाह आपे वण्डे सब दी दर्द, दीनां अनाथां दुखियां लए उठाईआ। ज़ुल्म दी शरअ दी कदी चलण ना देवे करद, कत्लगाह ना कोए बणाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मदद सब दी करे थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाल हक ख़ुदा एक नहीं कोई गिणती विच बहुते अद्दद, हिस्सयां वाला नज़र कोए ना आईआ। जुग जुग लोकमात दीन दुनी मेटे तशदद्, झगड़ा कूड़ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मेहर नज़र करे उपर मख़लूक, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। सब दा सांझा करे सलूक, शिरक्त अंदरों दए कढाहीआ। महल अटल वखाए अर्श अरूज़, आलीजाह बेपरवाहीआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर मंनयां हक महबूब, अमाम अमामा नूर इलाहीआ। ना कोई माटी ख़ाक तन वजूद,

११३६ २०

जलवा जोत डगमगाईआ। हकीकी दस्से मंज़ल मक्सूद, गृह साचे वज्जे वधाईआ। जिस दी सिफ्त हज़ारा दरूद, इस्म आअजम इक्क समझाईआ। जिधर तक्को ओधर मौजूद, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जे कोई ओस दा हुक्म इशारा रमज़ लए बूझ, नाम निधान शनवाईआ। फेर भेव रहे ना गूझ, परदा अंदरों दए उठाईआ। कौल नाभ जो होया मूध, सिध्धा कर के निझर झिरना दए झिराईआ। मन कल्पणा ना कूके वांग कूंज, इक्को हू हू नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे निर्मल दूध दा दूध, दूजा रला ना कोए वखाईआ। बटाले वाल्लयो तुहानूं कदे लग्ग ना जावे वट्टा, द्वैत अंदरों देणी कढाहीआ। जिस कारण मुनी सुशील आया नठ्ठा, बण के पाँधी राहीआ। मेल मिल्या नाल सिध्धे सादे जट्टां, जिन्हां नूं गवार कहे लोकाईआ। जिन झगड़ा रहिण नहीं देणा पत्थर इट्टां, परम पुरख दा इष्ट देणा मनाईआ। सब दे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सुरती नूं शब्द दी मारनी सट्टा, नाम हलूणे नाल उठाईआ। किसे नूं मद पीण नहीं देणी रसना बुल्लां नाल गट गट्टा, अमृत दा जाम देणा चखाईआ। आबेहयात मन कल्पणा दा मेटे रट्टा, रटन इक्को नाम कराईआ। बिना पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार दे बाकी छानणा घट्टा, लाल हथ्थ किसे ना
११४० आईआ। अग्गे वास्ते नीती तों परे लालच छड्ड दयो पैसा टका, टकयां वाली टकसाल कम्म किसे ना आईआ। सारे इक्ट्ठे ११४०
हो के सन्तां सूफ़ी फ़कीरां दी मजलस विच कर लओ एह मता, मतलब वाला सिख नज़र कोए ना आईआ। जे बणना ते
२० बणयो अंदरों सच्चा, बाहरों लारा देण दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहानूं सब नूं पता एह माटी भाण्डा कच्चा, अन्त लोकमात २०
नज़र ना आईआ। जे कोई ओस प्रभू दा बण जाए बच्चा, ओसे नूं भगत कर के सारी सृष्टी रही गाईआ। वेख्यो किते मन दी वासना विच ना किहो अच्छा, हिरदे विच्चों हरि दी आवाज़ लैणी उठाईआ। जो लूं लूं अंदर साढे तिन्न करोड़ रचा, इन्द्रिआं दे घाट तों परे आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मेला रिहा मिलाईआ। बटाले वाल्लयो ज़रा दस्सयो हाल आपणे दिल दा, की अंदर आवाज़ रखाईआ। किस तरीके ढंग बिधी नाल परम पुरख मिलदा, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। किस तरीके नाल परदा हटावे बजर कपाटी सिल दा, सालम आपणा रंग रंगाईआ। किस बिध लेखा जणावे अगम्मी तिल दा, त्रिकुटी तों अगला परदा दए उठाईआ। किस बिध कँवल नाभी फुल्ल खिलदा, पंखड़ीआं पंखड़ीआं पंखड़ीआं इक्को रूप नज़री आईआ। किस बिध लहिणा देणा मुके सुखमन टेडी बिल दा, ईड़ा पिंगल भेव रहिण ना पाईआ। किस तरह नज़ारा तक्के ओस गहर गम्भीर निल दा, जो नीले वाला इक्क अख्वाईआ। जिस दे हुक्म अंदर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमी असमान रवि ससि सूरज चन्द

हिलदा, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण धार हो के जो फिरदा, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। लहिणा देणा मुकावे जो विछड़या चिर दा, चिरी विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। चौदां तबक चौदां लोक सच सलोक जिस दा नाम संदेसा सो सतिगुर इक्को घलदा, धायल करे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क वखाईआ। बटाले वाल्लयो चाड़्हिओ अनोखा रंग, नैण नेत्रां दर्शन पाईआ। बैठे हो ना जायो तंग, पिछले घर दे धंदयां वल्ल ध्यान रखाईआ। लै के जाणा आत्मा दा अनन्द, जेहड़ा बाहरों हथ्थ किते ना आईआ। घर जमना गंगा सुरस्ती गोदावरी देवे संग, तिन्न तों चार मिल के वज्जे वधाईआ। एस जीवण दा ज़िंदगी दा मेटणा पन्ध, अग्गे झगड़ा रहे ना राईआ। सच मुहब्बत दी दे के जाणा गंढ, जेहड़ी आत्म परमात्म मिल के आपणा प्रेम बणाईआ। तुसीं ओस प्रभू दे चन्द, जिस दा नूर नूर जोत जोत रुशनाईआ। हंगता दी ढाह के कंध, हँ ब्रह्म दा परदा लैणा चुकाईआ। तुहाडा तन सरीर माता पिता दी राहीं प्या जम्म, आत्मा नूं परमात्मा तुहाडे विच टिकाईआ। ऐस वेले सारी सृष्टी दी दृष्टी दा हिल गया थम्म्ह, बिना साचे सन्तां सहारा नज़र कोए ना आईआ।
११४१ राज राजान शाह सुल्तान सियासत विरासत वालयां प्या ग़म, ग़मीआं ग़म ना कोए मिटाईआ। वेख्यो किते झगड़ा रखयो ना काया माटी चम्म, हर हिरदे अंदर वसे इक्को नूर अलाहीआ। जिस दी याद करनी पाउण वसणा दम दम, जो दामनगीर ११४१
२० इक्क अख्वाईआ। उस दे हथ्थ सारा इंतजाम, गुर अवतार पैगम्बर ओसे दी सेवा विच आपणी सेव लगाईआ। जोती जोत २०
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। बटाले वाल्लयो वेख लओ आपणी घड़ी वाले मिन्ट, इक्क पंज नाल मिल के की सुणाईआ। सब दा निशाना इक्को हिंट, हैट टोपी पगड़ी वाला इक्को रूप नज़री आईआ। भावें पहने कोई पजामा कोई पैंट, धोती तहिमत वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को ऐंड, जिस दा इनडैकस बणा के सके ना कोए समझाईआ। ओस दी याद विच प्यार विच सारे खड़्हे कर दयो हैंड, संसार वलों हैंडज़ अप हो के नाअरा देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क हुक्म संदेसा धुरदरगाह सृष्ट सबाई करे सैंड, रसीवर तुहाडे अंदर दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी नीती इक्क समझाईआ। धुर दी नीती इक्क अपार, अपरम्पर आप जणाइंदा। दुनिया वाल्लयो होणा ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा होए हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। माया ममता मोह वध्या विकार, काम क्रोध लोभ मोह हलकाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरुदुआर सियासत बणी अखाड़, धर्म दवारा

पार ना कोए जणाइंदा। कादीआं वाले इक्ठे होए यार, जिन्हां दा यार याराना इक्को सच खुदाए नाल भाइंदा। दो तरफ़ी चले ना कोए धार, सूफ़ी इक्ठे मंजल उत्ते बैठण इक्को वार, दूजा रंग ना कोए बदलाइंदा। साचयां सन्तां दा हर हिरदे अंदर इशतहार, कंधां उत्ते पोसटर कोए ना लाइंदा। जिन्हां दी रीती पिच्छे चली आई जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सारे ओसे दे ढोले गाइंदा। जो सब दा सांझा यार, आदि जुगादि सदा मुख्त्यार, मुख़तारनामे गुर अवतार पैगम्बरां दीनां मज़्बां दे आप फड़ाइंदा। सो अन्त कन्त भगवन्त सदी चौदवीं सब नूं वेखणहार, अनडिठ्ठ आपणी खेल खिलाइंदा। बटाला परगणा एह परवरदिगार दी धार, जिस दा भेव ना किसे आइंदा। कादीआं कुदरत दी बहार, जित्थे उल्फ़त दे नगार, जिस नूं वेखे इक्को शाह अस्वार, शहिनशाह दो जहानां इक्क अखवाइंदा। सारे रल मिल के ओस दे नाल करो प्यार, जो मुहब्बत दा सरदार, साहिब सुल्तान महबूब इक्क अखवाइंदा। एह मुनीआं दा दरबार, इक्ठे कीते मुहब्बत विच आण, सारे पूजो इक्क भगवान, जिस दा झुल्ले धर्म दा इक्क निशान, कलमा सुणावे बिना कान, इलाही बांग सच सदा, जिस दी इक्क दुआ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। उस नूं कहिंदे आदि अनादी ओम, ओसे दे यग ते
१९४२ ओसे दे होम, ओसे दे मज़्ब ओसे दी कौम, ओसे दे वजूद ओसे दे रोम, किसे ने वधा लए किसे ने कटा लए, किसे १९४२
ने मुना लए, आत्मा दा रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,
२० आपणा परदा आप उठाईआ। की तुसीं वी परदा आए लाहुण, सारे दयो सुणाईआ। आपणे मन नूं आए बदलाउण, कल्पना २०
विच्चों बाहर कढाहीआ। सच नूं हिरदे आए वसाउण, धर्म दी जड़ लगाईआ। की अमृत मुख आए चुआउण, निज नेत्र दर्शन पाईआ। की साची मंजल चढ़के खुशी आए बणाउण, आपणा पन्ध मुकाईआ। सच दस्सणा सांझे प्यार विच सच मुहब्बत विच सांझीवाल कौण कौण, हथ्थ उपर देणे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे सन्तां साचे मुनीआं संसार विच भेजे उजड़े वसाउण, ग़रीब निमाणयां अनाथां संग सगला साथ बणाईआ। सन्त सतिगुर कदे ना हुन्दा विदा, हर घट अंदर डेरा लाईआ। प्रेम प्रीती दा मार्ग दस्से सिध्धा, सिद्ध आसण इक्क वखाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी बिध्धा, जुगती जगत विच समझाईआ। प्रेम प्रीती दस्स के इका, एकँकार नाल जुड़ाईआ। निरमाणता विच निक्का, बिबेकी विच वड्डा वड्डा नज़री आईआ। जिस दा लेख तेते जुग विच लिखा, बाली दा सुत अंगद सोभा पाईआ। एह पूरब दा लहिणा पिच्छा, जुग चौकड़ी भेव खुल्हाईआ। सति धार दी इच्छा, निरिच्छत सेव कमाईआ। कोई जगत कहाणी नहीं किस्सा, किस्मत किस्मत रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा

रंग इक्क चमकाईआ। सन्त सतिगुर कदे ना जावे दूर, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। सदा वसे हादर हदूर, हर हिरदे डेरा लाईआ। जोती दे के अगम्मा नूर, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। मंज़ल मारनी अग्गे कोई नहीं मजबूर, मजबूरी विच्चों प्रेम नज़री आईआ। कोई नाता सज्जण नहीं कूड़, कूड़ी क्रिया देणी तजाईआ। सन्तां दी सांझी इक्को धूढ़, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। कोई रहे ना मन मूर्ख मूढ़, चतुर सुजान बुद्धी बिबेक लैणी कराईआ। सति धर्म दा सति अग्गे होवे मशहूर, मश्वरा प्रभ दे नाल रलाईआ। हर इक्क दे अंदर नाम दी मस्ती प्रेम दा चढ़े सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। हंगता गढ़ हउमे तोड़ना ग़रूर, ग़ुरबत अंदरों देणी कढाहीआ। सच दवारे दे चाकर बणना मज़दूर, ग़ुलाम हो के सेव कमाईआ। वेख्यो प्रभ दवारयों कोई ना होयो मफ़रूर, काया जूह विच लुक के झट ना कोए लँघाईआ। अग्गे सदा दा मेला बणया रहे ज़रूर, मुनी विछोड़ा दे के पिठ्ठ ना कदे भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ।
सच समेलन होया जेठूवाल, धरनी धरत धवल वज्जी वधाईआ। जिस विच इक्ठे बैठे शाह कंगाल, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। हरि भगत दुआर धर्म दी सच्ची धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरूदवार, हिन्दू मुस्लिम सिख
११४३ ईसाई जिस दा एका रूप नज़री आईआ। जित्थे सोहण वरन चार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। जित्थे सति ११४३
२० धर्म दा प्रचार, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जित्थे एका मेला जोत निरँकार, निराकार साकार मिल के वज्जे वधाईआ। २०
जित्थे इक्को जेहा आहार, खाण पीण फ़र्क रहे ना राईआ। जित्थे इक्को जेहा सुधार, आत्मा परमात्मा इक्को घर बहिके ढोला गाईआ। मुनी सुशील चल्ल के आया प्रेम दी अंदर धार, जगत पन्ध ना कोए बणाईआ। तिस दा लेखा बहु वड्डा विसथार, जिस नूं लिखे ना कोए कलम शाहीआ। प्रगट होणा विच संसार, महासार्थी इक्क अख्वाईआ। जिस नूं तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द भविख्तां विच करके गए इज़हार, पेशीनगोई विच सुणाईआ। एह खेल करे निरँकार, जो कुदरत दा कादर इक्क अख्वाईआ। जिस नूं कहिंदे अमामां दा अमाम निहकलंक कल्की अवतार, कलाधार आपणी कल वरताईआ। नाम डंका शब्द दमामा एथे ओथे वज्जे दो जहान, जहालत कूड़ी क्रिया संसार विच्चों बाहर कढाहीआ। सब दा सांझा बाहमी होवे प्यार, सिदक भरोसा होवे एतमाद, तसल्ली विच आपणा रूप प्रगटाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म दा साचा यार, यराना धुर दा तोड़ निभाईआ। अज्ज दा विहार, खेल करतार, जो कुदरत दा मालक, ख़लक दा ख़ालक, सर्ब दा प्रितपालक, प्रेम प्यार मुहब्बत विच साचा रंग रिहा रंगाईआ।

★ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ३ अजीत सिँघ दे गृह बटाला ★

माघी दा नफ़ा खट्टो मुफ़त, कीमत ना कोए लगाईआ। मुहब्बत विच हो जाओ चुस्त, तेज़ी तेज़ी प्रेम वधाईआ। ग़फ़लत विच ना होणा सुसत, सुसती देणी कढाहीआ। मन कल्पणा रहे ना खुशक, खुशहाली नज़री आईआ। सच दुआर दा एह उरस, अरूज वेख वखाईआ। जिस धाम नूं लभ्भदे महापुरुष, पोशीदा राह तकाईआ। दीन मज़्ब दी लाउँदे बुरद, मुकाबले विच वड्याईआ। उह सब नूं करके खुरद बुरद, बुद्धी तों पर`करे लड़ाईआ। ढाह हँकारी बुरज, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सति धर्म दी लै के गुरज, गिरजिआं तों उपर आवाज़ां रिहा सुणाईआ। जन भगतां हिरदे खुरच, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। सच संदेसा देवे तुरत, तुरीआ तों परे इक्क जणाईआ। जन भगत खुल्ही रखे सुरत, सुत्ती आप उठाईआ। लेखा जाणे अर्श कुर्श, काया कुरह फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द इक्को बहुता लोड़ नहीं कोई गुरस, कौड़ीआं वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नाम निधाना सब नूं करे बुरश, बुरछागर्दी रहिण ना पाईआ। गुरमुखां चाढ़े लाल रंग सुरख, सुरखी बिन्दी कूड़ी दए मिटाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अमृत रस नाल देवे बुरक, बुरके वालयां करे सफ़ाईआ। कुछ हलूणा देवे तुरक,

११४४ तुरकिसतान वेख वखाईआ। सब दा लहिणा देणा करके कुरक, ख़ाली दवारे दए वखाईआ। सब नूं पैणी कलयुग क्रिया ११४४

दी खुरक, मल्हम पट्टी ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल प्रगटाईआ। माघी

२० दा मुफ्त देवे सौदा, करता कीमत ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के आहुदा, आहुदेदार इक्को दए वखाईआ। २०

जो सब दा चुक्के बोझा, आपणे कंध टिकाईआ। लेखा मुकावे निमाज़ रोज़ा, रोज़ी सब दी आपणे हथ्थ वखाईआ। लेखा जाणे अभ्यास जोगा, जोगीशरां फोल फुलाईआ। जोती जामा बदल के चोग़ा, चुग़ली निंदया वाले सारे दए खपाईआ। धरती उत्ते रख के गोडा, गुडमारनिंग सब नूं दए समझाईआ। किसे दा उच्चा रहिण ना देवे बोदा, बोदी वाला बदी ना कोए कमाईआ। सब दा लेख मुकावे हरख चिन्त रहे ना सोगा, ग़मी ग़मखार वेख वखाईआ। भरम ना भुल्लयो लोगा, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। जो सब नूं देवे चोगा, राज़क रिज़क रहीम अख्वाईआ। सूरबीर बांका योद्धा, महाबली वड वड्याईआ। उस दा रस किसे ना भोगा, भोगी बणी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे सच संयोगा, वियोग नज़र कोए ना आईआ। माघी सौदा मिले अनमुल्ल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। भगत भगवान दी इक्क कुल, कुल आलम वेख वखाईआ। सब दा दीवा करे गुल, गुलशन आपणा इक्क महकाईआ। जो सृष्टी गई भुल्ल, उसे दा डंक वजाईआ। हरिजन साचे तोल जाए तुल, करता कीमत आप मुकाईआ। गुरमुख गुलशन दे उह गुल, जिन्हां

दी महक मुहब्बत विच टिकाईआ। लोकमात ना जावण रुल, धरती ख़ाक ना कोए सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सुल्हकुल, साचा नाता इक्क रखाईआ।

★ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

चावीज़े चविपलयम ज़ाविल चाज़ीने कशू कुज़ुनसे वलिकीऊम चपसज़ित अनीज़ुल ज़वीज़ुल ज़ुज़रा शेमेशी चोशा बीआ कयाने चू नेह हज़ूप ताने कतीरे सनीते जमूने ज़ई मूसा ममविज़ल ईसा दाखले ज़ुलल मुहम्मद जागीरे सलम नदस्ते नानक बहस्ते गोबिन्द गोबिन्दे गविद ज़ार ज़रूए ज़िआरत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर दए वड्याईआ।
१९४५ पैगम्बर कहिण प्रभ रिहा ना कोई अकीदा, अकल बुध समझ ना राईआ। तेरा खेल होया पेचीदा, पढ़यां समझ कोए ना १९४५
२० आईआ। सृष्ट सबाई होई संजीदा, धीरज धर्म ना कोए रखाईआ। साचा नूर ना चमके ईदा, रंग प्रेम ना कोए रंगाईआ। २०
निर्मल रिहा ना किसे दा दीदा, चश्मे गुल जगत लोकाईआ। तेरी सिफ्तां वाली तमहीदा, सारे रहे गाईआ। ठांडे दर बणे ना कोए अज़ीज़ा, खिदमतगार ना रूप वटाईआ। तेरे नेम दी भुल्ली तमीज़ा, तमन्ना कूड़ विच फसाईआ। मुहम्मद कहे मेरा अन्तिम वाला बिना बाहवां तों कमीज़ा, कफ़न तों पहलों दिता पहनाईआ। ना गुलशन रिहा ना बग़ीचा, बाग़बान ख़ाली हथ्थ चलया वाहो दाहीआ। इक्को सच खुदा मेरी तेरे उत्ते उम्मीदा, आमद विच ध्यान लगाईआ। मैं मकबरे सुत्ता ते मेरा राज़ पोशीदा, समझ सके ना कोए लोकाईआ। ओसे वेले कौल इकरार कीता, मुनसफ़ हो के आपणी गंढु पवाईआ। बिन कलम शाही लिख के दिती वसीअता, वसीह हुक्म इक्क सुणाईआ। मुहम्मद याद रखीं नसीअता, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। जिस वेले दीन दुनी दी बदली तबीअता, तबीब नज़र कोए ना आईआ। सच रहे ना कोए असलीअता, असल वसल ना कोए कराईआ। तुहाडी रहे ना कोए अहिमीअता, कूड़ी क्रिया जगत कुरलाईआ। झगड़ा पए सिक्दार रईयता, ख़ादम सेव ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे मेरा अलिफ़ी तों बाहर कफ़न, कच्छां बग़लां नंगीआं नज़रीं आईआ। जिस वेले मेरी लाश करन लग्गे दफ़न, माटी ख़ाक विच रखाईआ।

मैनूं खुशीआं दा आया इक्क सुफ़न, मनसा नूर वाली प्रगटाईआ। जां मैं ध्यान मारया उत्तर पूरब दक्खण पच्छिम, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। कोई मैनूं आ गया दस्सण, सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। मुहम्मदा वेख आपणा वतन, बेवतन दिसे लोकाईआ। भावें किन्ना कर लै यतन, लोकमात रहिण ना पाईआ। सच दवारा इक्को पत्तन, सब नूं देवां वखाईआ। जित्थे गुरू अवतार पैगम्बर इक्के वसण, ढोला इक्को नाम गाईआ। चरण धूढ़ी रस चक्खण, चेटक अवर ना कोए लगाईआ। खुशीआं अंदर कहकहा लगा के हस्सण, ताली तल्ब वाली वजाईआ। प्रेम प्रीती अंदर नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। इक्क सुनेहड़ा आया दस्सण, सहिज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। कफ़नी कहे मेरा वेखो रूप निराला, निराकार दिता बणाईआ। मैं धरती दी गोदी सवाया मुहम्मद बाला, ख़ाक बालिशता नाल मिण मिणाईआ। मुख नकाब दा दे रुमाला, रोमन दी शहादत दिती पाईआ। ओस वेले इशारे विच दस्सया राह सुखाला, परदा ओहला आप उठाईआ। प्रभ दा खेल सदा निराला, जुग चौकड़ी आप कराईआ। नित नवित बदलदा रहे चाला, चलाकी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा वखाईआ। कफ़नी कहे मुर्शद हो गया मुर्दा, मुरीदां दिती दुहाईआ। बौहड़ी ना फिरदा ना तुरदा, चुप चाप डेरा लाईआ। साडा बेड़ा जांदा रुढ़दा, उम्मत होवे कवण सहाईआ। ओसे वेले परमात्मा मुहम्मद अंदर आ के जुड़दा, जोड़ी इक्क वखाईआ। कुछ वर मंग लै लोड़ दा, लोड़िंदड़ी आस पूर कराईआ। मुहम्मदा समां वेख लै सदी चौधवीं अन्ध घोर दा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। खेल वेख ठग्ग चोर दा, सति धर्म ना कोए वड्याईआ। ओसे वेले मुहम्मद दोवें हत्थ जोड़दा, भुजां बाहर दी सिर उपर ल्याईआ। काहनूं मैनूं हुक्मे अंदर तोरदा, तन वजूद ख़ाली रिहा कराईआ। तेरा खेल आपणे जोर दा, निउँ के सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरी तक्कयो कोई ना लाश, तन माटी वेख वखाईआ। मेरे महबूब दी करयो तलाश, जो तलाबां विच ना कदे नुहाईआ। सब दी पूरी करे आस, आशा विच वड्याईआ। ओहदा रूप नुराना खास, दे के गया दुहाईआ। उह सब दे वसे पास, विछोड़ा रहे ना राईआ। उस दा खेल उपर आकाश, पातालां विच समाईआ। मैं बण के आया दास, सेवक रूप वटाईआ। साचे कलमे दी पूंजी दिती रास, अल्ला रहमत आप कमाईआ। अन्त मेरा टुट्टण लग्गा साथ, सगला संग ना कोए बणाईआ। इक्क संदेसा जावां आख, आख़र इक्क सुणाईआ। नबी रसूल पैगम्बरां जिस उत्ते रख्या विश्वास, विश्व रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। कफ़नी कहे मेरा इक्को जेहा पिच्छा अग्गा, सोहणी बणत बणाईआ।

११४६
२०

जेहड़ी मुहम्मद नूं चंगी लग्गी जग्ग, अंदर बहि के आपणा ध्यान लगाईआ। ओस वेले परवरदिगार नज़र आया अस्वार घोड़े बग्गा, जिस नूं दुलदुल धुर दा सारे रहे गाईआ। एहो कफ़नी पुरख अकाल दे गल झग्गा, दूजी नज़र कोए ना आईआ। आपणे सम्मत दा बणा के डग्गा, लोक परलोक दिता सुणाईआ। ओए मुहम्मदा अख़ीरी मेरा सद्दा, सद के दयां सुणाईआ। उठ मेरे शेर बग्गा, शहिनशाह इलाहीआ। मुहम्मद हो के अलिफ़ी तों नंगा, निउँ के वास्ता पाईआ। मेरे ख़ुदा एह सांभ लै आपणा धन्दा, धरनी धरत धवल ना कोए चतुराईआ। मैं ख़ादम तेरा बन्दा, बन्दगी विच सीस निवाईआ। इक्को बख़्श दे आपणा डण्डा, डण्डावत कर के सीस निवाईआ। अबिनाशी करते बिना बाहवां तों नंगा कर के कंधा, हथ्थ नाल दिता हिलाईआ। दस्स केहड़ा खेल चंगा, जो तैनूं रिहा भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कफ़नी कहे वेखो चुप्प कर गया मुर्शद, कलमा नबी ना कोए सुणाईआ। आवाज़ दी रही कोई ना फ़ुरसत, फ़रमांबरदार सेव ना कोए कमाईआ। अक्खरां वाली उल्फ़त, कुरान दए गवाहीआ। की खेल होणा कलयुग, अन्त अन्त जणाईआ। तन दी औध गई पुग, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी
११४७ खेल वखाईआ। कफ़नी कहे मैं वेख्या मुहम्मद वाला वजूद, तन ख़ाकी नज़री आईआ। बिना दमां तों ख़ाली दिसे कलबूत, ११४७
नाअरा हक ना कोए सुणाईआ। ओस वेले मुहम्मद दा तिन्नां रंगां दा पैरीं सी जूत, जेहड़ा जोड़ा कासर दिता बणाईआ।
२० उह साढे पंदरां उंगलां दए सबूत, हिस्सा जगत वाला समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा २०
खेल वखाईआ। जिस वेले मुहम्मद दी लाश रखी विच कबर, चारों कुण्ट दुहाईआ। परवरदिगार किहा थोड़ा करो सबर, शब्दी शब्द जणाईआ। निरगुण धार आ गया शेर बब्बर, भब्बक इक्क सुणाईआ। मुहम्मदा क्यों विछोड़ा कीता नाल आपणे टब्बर, होई मात जुदाईआ। की तेरा होवे कदर, कुदरत दा कादर पुच्छ पुछाईआ। मुहम्मद किहा मेरा तेरे घर पै गया नम्बर, नम्बर सके ना कोए मिटाईआ। मेरा लेखा दिसदा उत्ते अम्बर, मेरी आबरू लैणी बचाईआ। सच दुआर दा वेखां मन्दिर, जित्थे वसे नूर इलाहीआ। पुरख अकाल किहा उह वेख आ गया कलंदर, जो कला नाल हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। कफ़नी कहे जिस वेले अंदर दिता रख, सोहणा रंग रंगाईआ। परवरदिगार किहा हस्स, हस्ती आपणी आप प्रगटाईआ। हज़रत मुहम्मद अज्जे वेला कुछ दस्स, मिट्टी पा ना बन्द कराईआ। तेरी हिक उत्ते दोवें हथ्थ, मुरीदां दिते टिकाईआ। सज्जणां कोलों चल्लउँ नठ्ठ, आपणा पल्लू छुडाईआ। मुहम्मद आसा बोली झट्ट, तेरा नाम दुहाईआ। दुहथ्थड़ मारी उत्ते पट्ट, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। पुरख अकाल किहा औह वेख

सच इक्को, जित्थे तेई अवतार मूसा ईसा डेरा लाईआ। मुहम्मद वेख के झट्ट, सहिज सुभाउ सीस निवाईआ। मैं एथों जाणा नठ्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे अग्गे वास्ता घत्त, बेनन्ती देणी सुणाईआ। मेरी उम्मत तेरे वस, वास्ता तेरे नाल रखाईआ। जिस वेले कल होवे अन्धेरी मस्स, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मोह विकार दुनिया जाए फस, फ़ैसला सच ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग देणा रंगाईआ। एका रंग नवीज़ते ज़ैरे जम्मू ज़िलहार, नेत्र नीर वहा के रो पए फरिश्ते, फर्श अर्श ज़मूंने ज़निदे ज़ारो ज़ार बेनन्ती गोशे अरज़ हज़ूअल सता तेरी रज़ा रिजंते दुआ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। कफ़नी कहे जिस वेले मुहम्मद ते पाउण लग्गे मिट्टी, कच्चे पटकयां विच उठाईआ। मैं दुहथ्थड़ मार के पिट्टी, कूक दिता सुणाईआ। मैनूं धार नज़र आई चिट्टी, कफ़नी कफ़न दए गवाहीआ। ओधरों मिली अगम्मी चिठ्ठी, जिस दा हरफ़ ना कोए समझाईआ। एह खेल वेख अनडिठ्ठी, मैं कीती हाल दुहाईआ। मैनूं ख़बर किसे ख़बरे क्यों दित्ती, सहिजे आण सुणाईआ। उठ कफ़नीएं ज़रा ध्यान मार मुहम्मद दी गिची, की लेखा नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। कफ़नी कहे मेरा दीद की तक्के तक्के गर्दन, गर्दी गुबार नज़र कोए ना आईआ। जित्थे खड़ा सूरबीर मर्दाना मरदन, मद्दद दी लोड़ रहे ना राईआ। लेखा लिखे कढु के अगम्मी फ़रदन, हरफ़ हरूफ़ आप बणाईआ। दरदवंद हो के वण्डे दरदन, दर्दी धुरदरगाहीआ। मुहम्मद ओस वेले कीती अरज़न, ख़ाहिश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। कफ़नी कहे हाए एह की होया, दरोही नाम दुहाईआ। जे कोई कहे मुर्शद मोया, मेरी अक्ख शर्म नाल शरमाईआ। जे कोई कहे गफ्लत विच सोया, निंद्रा कम्म किसे ना आईआ। जे कोई कहे नवां नरोआ, ज़बान कलाम ना कोए सुणाईआ। जे कोई कहे लै के गया ढोआ, दरगाह सच साची चाँईं चाँईंआ। जो कोई कहे तन वजूद खोहया, ख़ाली बुत्त बुत्तख़ाना नज़री आईआ। बौहड़ी तेरा नाम दरोहया, दरोही विच सुणाईआ। एह भेव जाणे ना कोया, कूक कूक अल्हाईआ। जे आखां एह नवां नरोया, उठ चले ना धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल आप वरताईआ। कफ़नी कहे सुत्ता चौदां लोक दा मालक, मलकीअत नज़र कोए ना आईआ। जिसने दस्सया वाहिद ख़ालक, ख़लक मख़लूक सुणाईआ। उम्मत बण के सालस, सालसी रिहा कमाईआ। निरगुण नूर नूर जाण के ख़ालस, ख्वाहिश रिहा प्रगटाईआ। सच दवारे दा बण के तालब, तल्ब आपणी नाल वधाईआ। प्रभ दा खेल ग़ालबन गालब, गहर गम्भीर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चोली कहे जिस वेले मुहम्मद रख्या विच कुंदरा, माटी फोल फुलाईआ। उस दे हथ्थ विच इक्क तांबे दा सी मुंदरा, जेहड़ा गुरदेव सिँघ लुधियाणयों लै के आईआ। इस दे विच बड़ीआं गुंझलां, भेव अभेद ना किसे समझाईआ। मुहम्मद बदलदा रैहन्दा सी चारे उंगलां, वारो वार छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। कफ़नी कहे जिस वेले मुहम्मद मकबरे विच होया त्यार, आसन दिता लगाईआ। ओधरों इक्क जोड़ी आ गई लै के फुल्लां दा हार, मदन भेंट देणा कराईआ। एह खेल अगम्म अपार, सदी चौदां समझ किसे ना आईआ। नेड़े आ के कर दीदार, सजदा सीस झुकाईआ। नमों नमों निमस्कार, निउँ निउँ लागां पाईआ। तेरी लाश दा होया दीदार, तलाश करां नूर खुदाईआ। कबर तों लै के छार, मस्तक उत्ते लगाईआ। हुक्म आया धुर दरबार, पुरख अकाल दिता जणाईआ। तेरा लेखा मुक्के तीजी वार, इक्क जन्म होर देणा भुगताईआ। सुथरा हो के मंगणा हरि गोबिन्द दवार, डण्डा डण्डे उत्ते टिकाईआ। जिस वेले आवे पुरख अकाल, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। तेरी मनसा दा पूरा करे सवाल, पूरब मेला लए मिलाईआ। सो वक्त पहुंचया आण, लेखा सब दा लेखे लाईआ। देणे विच प्रभू बलवान, देंदयां भुल्ल कदे ना
११४६ जाईआ। भावें प्रेमी प्रीतम कहो भावें कहो शैतान, आपणी शरअ ना किसे समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा लै के इमतयान, ११४६
नतीजा रिज़लट सब दा वेख वखाईआ। बिना भगतां दे किसे कोल नहीं रहिणा ज्ञान, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ।
२० २०
नाम खण्डा कढ्ढे विच्चों प्रेम धार म्यान, मेहरवान दया कमाईआ। कुझ लेखा लिख देणा चौहान, नौजवान आप सुणाईआ। जिस ने सृष्टी दी करनी कल्याण, करनी दा करता इक्क अख्वाईआ। ओस दा जारी होण लग्गा फ़रमान, शाह सुल्तानां रिहा उठाईआ। हुक्म मेटे ना कोई हो के विच दरम्यान, दरे दरबार आप जणाईआ। किसे नूं लैण नहीं देणा आराम, सोए सारे दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। कफ़नी कहे मैनूं सींता नहीं किसे दरजी, सहिज सुभाउ जोड़ जुड़ाईआ। मैं खेल दस्सां कुछ मुहम्मद दे तन वाले घर दी, घरेलू परदा आप उठाईआ। जित्थे जोत इलाही नूर धार हो के वड़दी, वड़ी निकल के पल्लू गई छुडाईआ। मेरी निगाह पई ओस वेले सिम्मत चढ़दी, लैहन्दे तों चढ़दे वेख वखाईआ। इक्क आवाज़ सुणी गढ़ गढ़ दी, गढ़गड़ाहट रही डराईआ। इक्क लहर वेखी अगम्मे हड़ दी, जो दीन मज़्हब सारे रही रुढ़ाईआ। इक्क धार वेखी जो तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दी, परदा नज़र कोए ना आईआ। मैं निउँ के सीस चरणां उत्ते धरदी, अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। आवाज़ आई कुछ खेल कलयुग कल दी, कलमे वाल्या तैनूं सुणाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं कोई पल दी, घड़ी घड़याल ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। लाश कहे मैथों छुटया मक्का काअबा, मुक्दस अंदरों पल्लू गया छुडाईआ। लेखा वेख हकीकत हका, हकदारी दिती गवाईआ। साजण रिहा ना कोई सका, चार यारी ना गंढु पवाईआ। ओधरों प्या अगम्मी धक्का, ठोकर दिती लगाईआ। मुहम्मद ज़रा खोल्ह आपणीआं अक्खां, आख़र दयां जणाईआ। साजण मीत नहीं कोई सख़ा, सख़ावत करे ना कोए लोकाईआ। एह खेल अगम्म अलबत्ता, भेव अभेद छुपाईआ। थोड़ा जेहा देवां पता, पतिपरमेश्वर आख सुणाईआ। सति धर्म दी होणी हत्ता, डंका कूड़ कुड़यार शनवाईआ। जगत वासना फिरना नस्सा, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। उस वेले मेरी एहो निशानी कफ़नी बग़लां ख़ाली कच्छां, बाज़ू नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी वेख के हस्सां, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मुहम्मद किहा की एसे तर्हां होवे अच्छा, अच्छी तर्हां दृढ़ाईआ। परवरदिगार किहा सुण बच्चा, बच्चया दयां समझाईआ। मेरा हुक्म कदे ना कच्चा, कच्चा तन्द ना डोर वखाईआ। जो बोलां सो सच्चा, सच मेरी सरनाईआ। सब दा खहिड़ा छुडावां मदीना मक्का, मकबरे वाल्या तैनूं दयां वखाईआ। चौदां सदीआं तेरा पूरा करां पट्टा, पटने वाला जोड़ जुड़ाईआ। आह लै मौली दा इक्क अट्टा, तेरी भेंट कराईआ। नबीआं दी कीमत पै जाणी टका, हट्टो हट्ट विकाईआ। रसूलां तों उम्मत दा मन हो जाणा खट्टा, दीद ईद रुशनाईआ। सदी चौधवीं सब नूं लग्गणा वट्टा, वट्टे विच आवे धुरदरगाहीआ। बच्चू तैनूं चुकणा नहीं फिर किसे उत्ते फट्टा, बिना फाटक तों देणा कराईआ। ओहदे यार ने मार के पहला टप्पा, मिट्टी लाश उत्ते सुटाईआ। पुरख अकाल किहा तेरी पिठ्ठ उत्ते ला के जावां ठप्पा, जिसदा अक्खर समझ किसे ना आईआ। मुहम्मद हो के हका बक्का, करवट बदल के छाती दिती वखाईआ। जे तूं परम पुरख मेरा अब्बा सका, मालक सच अख्वाईआ। मैनूं कुछ आयां ए, दे के जा नफ़ा, घाटा कोए ना पाईआ। परवरदिगार मार के जफ्फा, लाश नूं आपणे गले लगाईआ। मुहम्मदा याद रख जदों मेरे नाम नूं लग्गा पप्पा, पूरन हो के पूरन आस कराईआ। मैं दस्सां आपणा पता, धाम निराला इक्क समझाईआ। जेहड़ा दवारा अग्गे कदे नहीं वसा, उह दवारा देणा वसाईआ। जेहड़ी मुहब्बत विच अग्गे कदे नहीं फसा, उह मुहब्बत देणी प्रगटाईआ। उह मैनूं वेखे कोई ना नाल अक्खां, अक्खां तों पिच्छे बहि के कार कमाईआ। मैं सड़ां कदे ना नाल कक्खां, ना गोर डेरा लाईआ। जद आवां ते आपणा खेल रटां, रट्टे पिछले दयां मुकाईआ। तेरा वी ज़रूर पूरा करावां पटा, चौदां सदीआं वज्जे वधाईआ। अग्गे बचन दस्सां सच्चा, तूं सुणना ध्यान लगाईआ। हज़रत मुहम्मद कहि के अच्छा, बिन बोलयां बोल सुणाईआ। प्रभू फेर की होवे तेरा जुस्सा, भेद देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। परवरदिगार कहे सुण मुहम्मद प्यारा, प्यार

नाल जणाईआ। मेरा खेल होवे न्यारा, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। तेरी छाती दा बण लिखारा, लेखा उंगली नाल बणाईआ। जद आवां नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" मेरा होवे जैकारा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। चौदां सदीआं दा तेरा उधारा, फेर उधार दा कर्ज़ा दयां चुकाईआ। कदी झूठा ना लावां लारा, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। मुहम्मदा फेर तैनूं आउणा ना पए दुबारा, दुआबे आ के तेरी उम्मत वेख वखाईआ। तूं ज़ूले चलन समीने अमन आज़मीने चमन ज़ौनिहाए सनन सब दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। कफ़नी कहे मैं तुरदयां नाल करां ना कोए कफायत, किफायत शुआरी ना कोए रखाईआ। मैनूं धुर दी इक्क हदायत, हुक्म बेपरवाहीआ। तन वजूद दी कर पैमाइश, अंदर बाहर नाप नपाईआ। मैं बड़ी स्याणी सुचज्जी लायक, जिस गल पै जावां उस नूं सदा लई देवां सवाईआ। कफ़नी कहे भावें प्रभू नूं मुरदयां दा पै जावे कहत, पर मैं भण्डारा भरी नज़री आईआ। पता नहीं फेर किसे नूं वक्त मिले शायद, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। मेरा धुर दे नाल अहिद, इकरारनामा इक्क लिखाईआ। जिस वेले प्रभू तेरा हुक्म होवे राइज, राज रजान शाह सुल्तान इक्क सुणाईआ। सति धर्म दा चले रवाइज, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। जन भगतां संवारे पैज, मेहर नजर उठाईआ। प्रगट होवें वाहिद, नूर इक्क अलाहीआ। साचे हुक्म दा कानून चले कवाइद, बाकायदा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जनते ज़मौजा बहिश्ते अनौज़ा रहमते वलौज़ा वाहिद दी वाहिद वहदत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग चढ़ाईआ। लाश कहे मैनूं छेती दब्बो, मिट्टी ख़ाक छुहाईआ। परवरदिगार गुसाँईं लभ्भो, जो बिना लबां तों प्यास बुझाईआ। करीम करनी दा करता अब्बो, जो आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। साहिब स्वामी साचा सद्दो, सदके वारी घोल घुमाईआ। लाश कहे जिस लाश ने राम कृष्न दे पुजारी कीते अड्ड अड्डो, अड्डरा हुक्म सुणाईआ। जिस दी समझे कोई ना वज़ो, वज़ाहत कर ना कोए जणाईआ। ओस दवारे भज्जो, जो भजन बन्दगी रिहा सिखाईआ। सब कुछ कूड़ा तजो, तज्ज लशकर रहिण कोए ना पाईआ। मेरी दुहाई अज्जो, अज़ल तों मुर्शद बचया रहिण कोए ना पाईआ। सच मुहब्बत एका मंगो, परवरदिगार अग्गे झोली डाहीआ। काया तन वजूद रंगो, रंगण इक्को दए चढ़ाईआ। मालक दे दर कदे ना संगो, ऊँची कूको कूक सुणाईआ। बिरहु विछोड़े विच अंदर लँघो, सुरती सुरत विच बदलाईआ। टुट्टी ओस दे नाल गंढो, जो गंढुणहार अख्वाईआ। लाश कहे जे मिल जावे प्रेम शरीणीआं वण्डो, न्याज़ां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कफ़नी दए

वड्याईआ। कफ़नी कहे मैनूं कहिंदे तेरी थोड़ी कीमत, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। तैनूं सवाणी पाए ना कोए तरीमत, फ़ैशन जगत विच हल्काईआ। कफ़नी कहे मैनूं मौका मिल्या ग़नीमत, बिना ग़म तों दयां सुणाईआ। मैनूं मिल गई उह अज़ीमत, जो आदि पुरख दे के खुशी मनाईआ। मैं कोई भटकदी नहीं जल मीनत, सांतक सति सति समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा रिहा चुकाईआ। कफ़नी कहे मेरा मुल्ल छोटा ते कम्म वड्डा, सच दयां सुणाईआ। मैं आपणे विच लपेटया बुड्ढा नढ्ढा, नौजवान वेख वखाईआ। पातशाहां दे सुहावां उत्ते ठप्पा, आपणा संग रखाईआ। चार जुग जो उपज्या उसे नूं आपणे अंदर सुट्टां, बचया नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्रीती नाल फड़ के घुट्टां, सिर तों पैरां तांई जोड़ जुड़ाईआ। ख़ाली हथ्थां दीआं मीटीआं वेखां मुट्ठां, अंगूठे उंगलां रहे दबाईआ। इक्क अगम्मड़े कोलो पुच्छां, की तेरी बेपरवाहीआ। कफ़नी कहे प्रभू जे मैं तेरे नाल रुस्सां, फिर गुर अवतार पैगम्बरां कफ़ण कवण पहनाईआ। श्री भगवान कहे ज़रा ना करीं ग़ुस्सा, सहिज नाल सुणाईआ। जिस कारण मुहम्मद कटाईआं मुच्छां, उह मसख़रे वाली आपणी अक्ख उठाईआ। एह लहिणा देणा कुछ दीप कुशा, कच्छ बराह ध्यान लगाईआ। जो प्रभू दवारयों रुस्सा, जगत मिले ना कोए
११५२ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। कबर कहे मेरे अंदर वड़या, ११५२
नबीआं नबी रसूल। जिस धुर दा कलमा पढ़या, उम्मत करी कबूल। सच दवारे एका खड़या, मस्तक टिक्का लाए धूल।
२० एह खेल नरायण नरया, जो हुक्म देवे माकूल। इक्क कौल इकरार करया, निरगुण धार सच असूल। जोती जोत सरूप २०
हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। कफ़नी कहे मैं गई लथ्थ, आपणी सेव कमाईआ। भगतां दे चरणां जावां ढठ्ठ, निउँ के सीस निवाईआ। जिसने चार जुग दे गुर अवतार पैगम्बरां करया इक्ट्ठ, सांझा हुक्म मनाईआ। उस दवारे सब कुछ गई छड्ड, आपणा आप मिटाईआ। जित्थे भगत भगवान ना होवण अड्ड, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं तन शरीर ढकां हड्ड, आत्मा वेखण कोए ना पाईआ। मैं तड़फदी रही भटकदी रही किस वेले प्रीतम होवे प्रगट, हरि करता दया कमाईआ। सति धर्म दा खोल्ले हट्ट, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। मैं वी लाहा लवां खट्ट, सदी चौधवीं ख़ुशी बणाईआ। निरगुण सरगुण धार आवे पलट, पलटा देवे जगत लोकाईआ। सो वेख्या साहिब पुरख समरथ, मालक इक्क अख्वाईआ। मैं रगड़ के अग्गे नक्क, सीस दिता झुकाईआ। तेरी हकीकत मिल गई हक, कलमा हक सुणाईआ। अग्गे रहे कोई ना शक, शकायत करन कोए ना आईआ। तेरा खेल अलखणा अलख, अलख अगोचर तेरी वड्याईआ। ज्यों भावें त्यों लैणा रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पहली माघ सब नूं अमृत दे रस, रस्ता इक्को दए वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुहम्मद दा लहिणा कुंदन सिँघ सुखदेव कल्ले वाला उस वेले दे साथी सच, सच दा मालक सच नाल मिलाईआ।

★ २ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मुनी सुशील कुमार जैन सन्त मण्डली दीना नगर ★

सन्त सज्जण आए दीना नगर, नगर दीनां दा नज़री आईआ। प्रभू प्रीती अन्तर सारे हो जाओ मग्न, आत्म परमात्म ध्यान लगाईआ। घर प्रकाश दीपक जगण, निज नूर होए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया सारे छड्डुण, जो चल आए सरनाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी बदन, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई जैनी बोधी ना कोए लड़ाईआ। अबिनाशी करता एकँकार इक्को लभ्भण, जो हर घट बैठा डेरा लाईआ। एथे ओथे दो जहानां सच्चा सज्जण, सगला संग बणाईआ। गढ़ हँकारी सब दे भाण्डे भज्जण, ममता मैं हउँ गवाईआ। निज घर स्वामी अन्तरजामी तख्त निवासी पुरख अबिनाशी लैणा इक्क अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। नाम धूढ़ी धुर दा टिक्का मस्तक लाउणा चन्दन, सच भबूती बेपरवाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला एकँकार रखणा अंगण, अंगीकार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर अंदर परदा आप उठाईआ। दीना नगर दे जन भगत वासी, वास्ता प्रभ दे नाल रखाईआ। एका मिलणा पुरख अबिनाशी, जो जन्म मरन विच ना आईआ। मानस जन्म जिस दी पूंजी जिस दी रासी, रस्ता इक्को इक्क वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी महिमा करदे पंडत काशी, सो काया अंदर मन्दिर बैठा सोभा पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच राउ रंक इक्को घर दे बणो जमाती, बिन हरि नामे दूजा अक्खर कम्म किसे ना आईआ। सफल समझो अज्ज दी राती, अठ्ठे पहर रहे प्रभाती, अमृत मिले बूँद स्वांती, कँवल नाभी आप चुआईआ। जिन्हां नूं मुनी सुशील वरगा लभ्भा साथी, तन वजूद दा बलीआ सूरबीर हाठी, संजम तप विच आपणा परण निभाईआ। प्रभ दी बन्दगी सदा समझो साची, सच सच विच मिलाईआ। काया माटी कूड़ी काची, थिर रहिण कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाला इक्को लभ्भो धुर दा साकी, जो साचा जाम दए पिलाईआ। जीवण विच्चों बदल जाए हयाती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला मेल मिलाईआ। सच दर दे साचे भगत, हरि भगती विच वड्याईआ। उठो नौजवानो विच जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तुहाडे अंदर उस प्रभू दी शक्त, जो हर घट रिहा समाईआ। सांझे समाज दा आ गया वक्त, कूड़ी रीती दयो तजाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को जो वासी उपर अर्श, फर्श आपणी धार

चलाईआ। रहमत विच करे सब ते तरस, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बिन हरि नामे सारे रहे भटक, सांतक सति ना कोए कराईआ। साची मंज़ल चढ़नों रहे अटक, पौड़ी डण्डा हथ्थ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट अन्तर वेख वखाईआ। दीना नगर दे सच प्रेमी, हरिजन साचे नज़री आईआ। प्रारथना विच धुर दे नेमी, नयामत प्रभ दा नाम झोली पाईआ। मुहब्बत विच साक सैणी, सज्जण बण के देणा वखाईआ। आपणा नूर आपणे वेखो निज नैणी, ज्ञान नेत्र इक्क खुल्हाईआ। जित्थे दीन मज़्हब दी नहीं कोई शरेणी, शरअ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच निवास सच भूमिका जित्थे आत्म सुहञ्जणी सेज बहणी, जिस दा पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दस्स के गए धुर दी कहिणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। वस्त अमोलक धर्म दवारयों इक्को लैणी, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। तुहाडे संग सदा अमृत धार त्रबैणी, गंगा जमना सुरस्ती आपणी लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हलूणा इक्क लगाईआ। सारे अंदर मारो झाकी, तन वजूद फोल फुलाईआ। बजर कपाटी परदा लथ्थे ताकी, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। प्रभू प्यारा खोजो साथी, जो सगला संग निभाईआ। जिस दी जोत हर घट नूर प्रकाशी, गृह गृह करे रुशनाईआ। मन कल्पणा मेटे उदासी, चिन्ता रोग रहे ना राईआ। मंज़ल चढ़ावे औखी घाटी, अगम्म अथाह दए वड्याईआ। भेव खुल्हावे एका राती, एकँकार आपणी दया कमाईआ। झगड़ा मुक्के पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर लेखा दए मुकाईआ। जो साहिब सुल्तान नौजवान, मर्द मर्दान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड दा निवासी, सति दवारे रह के खुशी मनाईआ। सब दी पूरी करे आसा मनसा लेखे लाए पवण स्वासी, साह साह खोज खुजाईआ। झगड़ा मुकावे ऊँच नीच जाती, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्क प्रभू दी सारे मन्नों आखी, जो आख़र चोटी चढ़ के बैठा धुर गोसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा इक्क दर, दर दरवाज़ा धुर खुल्हाईआ। सच धर्म दा इक्क दरवाज़ा, दूजा राह नज़र ना आईआ। जिस घर वसे ग़रीब निवाजा, दीनां अनाथां होए सहाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। जन भगतां जुग जुग रखे लाजा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। वस्त अमोलक नाम अगम्मा देवे दाता, दातार हो के आप वरताईआ। बिन गोपी काहन रचावे रासा, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाणे बन सीता राम जंगल जूह प्रभासा, बनबासा आपणी कल वरताईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तर निरंतर निरगुण धार सगला साथा, साचा संग बणाईआ। जिस दे प्रेम अंदर प्रेम प्रीती विच मारो ठाठां, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। जिस दा नूर जोत सिँघ सवार ज्वाला

११५४ २०

वाली लाटां, नूर नूर नूर रुशनाईआ। उस मन्दिर नहीं कोई घाटा, जिस मन्दिर अंदर एका दीपक डगमगाईआ। सारे कूड़ी क्रिया दीन मज़्ब दीआं अग्गे लँघ जाओ वाटां, रोड़ा जगत ना कोए अटकाईआ। इक्को पुरख परमात्म साचा, सच समग्री सब नूं दए वरताईआ। मानस जन्म रहे कोई ना घाटा, अनमुल्ली दौलत झोली पाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला जन भगत लख चुरासी विच्चों कोटां जागा, बाकी सुत्ती दिसे कूड़ लोकाईआ। जेहड़े इक्क दा मन्नण आखा, सो दर्शन करन साख्याता, सनमुख हो के मिल के वज्जे वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे खेल सदा बहु भांता, अनुभव आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दीनां नगर वाल्लयो सति धर्म दा लै के जाणा वर, निर्भय हो चुकाउणा डर, आत्म परमात्म फड़ाउणा लड़, फड़या लड़ अग्गे छुट्ट कदे ना जाईआ।

★ ३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ किशन सिँघ दे गृह अलड़ पिण्डी ज़िला गुरदासपुर ★

जन भगतां आत्म वखाए कसम, किस्म वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख अकाल मेरा खसम, सुंञीं सेज ना कोए वखाईआ। जिस दी कदे ना होवे भस्म, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। इक्को सच उस दी रसम, जो रिवाज दए बदलाईआ। जलवा नूर देवे चश्म, जोती जोत डगमगाईआ। साचा नाम सुणाए नज़म, ढोला बेपरवाहीआ। जगत विधान देवे बदल, बदला दए चुकाईआ। इन्साफ़ करे अदल, धुर दा हुक्म सुणाईआ। चुरासी करे वज़न, तोले थाउँ थाँईंआ। चाचा रहे कोई ना कज़न, निरगुण निरवैर इक्को नज़री आईआ। साची रचना आया रचन, रच रच वेखे थाउँ थाँईंआ। साचे नाम दा देवे बचन, बच्चे गुरमुख आप पढ़ाईआ। ल्याया उस पत्तण, जिस रावी कन्ढे अर्जन आपणा आप तजाईआ। धर्म बणा के वतन, बेवतनां परदा लाहीआ। पत आवें रखण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी वरोल मक्खण, भगत सुहेले बाहर कढाहीआ। सच दवारा वखा के हट्टन, वणजारे रिहा बणाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ आया पट्टण, पटने दा मालक फेरा पाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे बदन, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। साहिब स्वामी बण के सज्जण, धुर दा संग रखाईआ। सच नगारे सच दवारे वज्जण, वजह समझ किसे ना आईआ। सन्त सुहेले धुर दे दगण, जोत नूर जोत रुशनाईआ। नाम निधाना पा के हथ्थीं कंगण, सगन साचा आप मनाईआ। कूड़ी क्रिया कर के दमन, दामनगीर आप अख्वाईआ। भगत

फुलवाड़ी सोहणा चमन, गुलदस्ते फूल महकाईआ। सच दवारा दस्स के अमन, अमानत गुरमुख वेख वखाईआ। लेखा जाणे ब्रह्मा कँवल, कँवल नैण धुरदरगाहीआ। जिस नूं नानक किहा इलाही अवल, आलमीन शहिनशाहीआ। जिस नूं कान्हा कहिंदे सवल, मुकट बैण हुक्म वरताईआ। सो लेखा जाणे धरनी धवल, धौल परदा लाहीआ। जिस नूं समझे कोए ना पंडत पांधा रवल, हिसाब किताब ना कोए रखाईआ। उस दा लेखा जाणे कवण, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। जिस दे हुक्म अंदर पाणी पवण, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। सो अमृत मेघ बरसे सवण, घटा घनघोर इक्क प्रगटाईआ। साचे धर्म दा कर के हवन, भबूती समग्री प्रेम प्रीती विच रखाईआ। ज़िंदगी दा दे के जवन, ज्वाला जोत नैण शरमाईआ। लेखा चुका के बावन बवन, बल परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

तिन्न माघ कहे जन भगतां खाणी पए सौगंद, सुगंधी इक्को नज़री आईआ। होणा पए पाबन्द, बन्धन कूड़ तुड़ाईआ। पाउणी पए गंढ, नाता इक्को नाल रखाईआ। जिस नूं राती लग्गी ठंड, उस दा नौ दिन दा दुःख दिता गवाईआ। सच प्रीत दा गाउणा पए छन्द, ढोला बेपरवाहीआ। परम पुरख दा लैणा पए अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। भगत सुहेला बणना पए चन्द, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल वसे संग, सगला संग बणाईआ। किसे दा काग़ज़ कोरा ना होवे बरंग, मोहर आपणा नाम लगाईआ। लख चुरासी पावे डण्ड, डण्डावत समझ किसे ना आईआ। सब दी सुरती होई रंड, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाहीआ। लेखा चुक्के ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लहिणा ना कोए मुकाईआ। विष्टा खा खा थक्के गंद, गहर गम्भीर ना मिले गोसाँईआ। कुछ लेखा मुक्कण वाला सी नरायण सिंघ कंग, उसे दे कारण उस दा जन्म दिता बदलाईआ। रातीं सुत्तयां सब तों कस अगम्मी तंग, गली कूचे महल्ले वेख वखाईआ। नाम भण्डारा इक्को वण्ड, जन भगतां दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

तिन्न माघ कहे सब ने खाणी सौंह, सौहरा पेईआ नज़र कोए ना आईआ। इक्को जपणा नाउँ, नर निरँकारा ढोला गाईआ। एका मन्नणा पिता माउँ, दूजी गोद ना कोए सुहाईआ। एका चलणा राहो, रहिबर इक्क अख्वाईआ। जन भगतो इक्को तुहाडा गाउँ, जित्थे गहर गम्भीर डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे वाहो वाहो, वाहवा तेरी वड्याईआ। सच अदालत करे न्याउँ, न्याँकार इक्क अख्वाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेले फड़ के बांहों, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। हँस बुद्धी रहे कोए ना काउँ, विष्टा कूड़ ना कोए फुलाईआ। सिर रखे दे कर ठंडी छाउँ, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। सच प्रीती इक्क कमाओ, कमलयां कोझयां पार लँघाईआ। कुछ लेखा दस्से पार लँघ के दरयाउँ, रावी दी भावी की सुणाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ। तिन्न माघ कहे मैनूं वज्जा अगम्मी दबका, हुक्म नाल डराईआ। तूं वी पढ़ ला धुर दा सबका, संथिआ इक्क सुणाईआ। दुहाई मच्ची चौदां तबकां, तभक तभक कुरलाईआ। किसे नूं पता नहीं अब का, अग्गे की की खेल कराईआ। एह खेल अनोखे रब्ब दा, जिस नूं रब्बे आलमीन कहि के गाईआ। लभ्भयां नहीं लभ्भदा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। एह मेला होया सबब दा, कर किरपा मेल मिलाईआ। खेल बणाया आपणी यद दा, यदप आपणी कार कमाईआ। कुछ लहिणा देणा अज्ज दा, वेद व्यासा गया लिखाईआ। उह मसला उह सफ़ा बिन अक्खरां वाला कढ्ढदा, जिस दा नकशनगार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। तिन्न माघ कहे मैनूं पिच्छो वज्जे धक्का, हाए हाए सुणाईआ। बौहड़ी कोई नहीं दिसदा सका, सज्जण पल्लू गए छुडाईआ। उजड़दा दिसदा मक्का, मदीना दए गवाहीआ। खेल होणा बूरा कक्का, कक्कयां वाले रोवण मारन धाहींआ। सब नूं लँघाउणा विच्चों सूई नक्का, निक्का वड्डा बचया रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम सब नूं देवे फक्का, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। जिस कारण जन भगतां नाल लाईआं अक्खां, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ।
११५७ उत्ते बठा के कक्खां, कक्खां दी कुली वेख वखाईआ। ओन्हां दी पत रखां, जिस पत्तण ते मलाह बेड़ा इक्को इक्क टिकाईआ। ११५७
आपणी करनी करतूतों कदे ना हटां, हट्टा कट्टा हो के साची सेव कमाईआ। एसे कर के आया विच जट्टां, जटा जूट दिते
२० तजाईआ। सब दे गलों लाह के शरअ दा पटा, पटने वाले दा मेला ल्या मिलाईआ। किसे दे कर्म दा काग़ज़ रहे ना फटा, २०
साफ़ हिसाब दिता कराईआ। चारों कुण्ट पैणा रट्टा, रिटन कर ना कोए समझाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गे वट्टा, वाट मुके ना जगत लोकाईआ। जिन्हां नूं जगत जहान करदा ठठ्ठा, ठाकर ओन्हां दा होए सहाईआ। गुरमुख ओस साहिब दा पठ्ठा, जिस दा पाठ कर के सारे शुकर मनाईआ। सो साहिब फिरे नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस कारण भगतां दा कीता इक्ट्ठा, बदो बदी मेल मिलाईआ। एह हनवन्त दा राम दे चरणां विच पहला टप्पा, जो ज़िमीं उत्ते दिता लगाईआ। राम मुक्खों कहि के अच्छा, अच्छी तरह समझाईआ। उह पुरख अकाल वेख सच्चा, निरगुण दाता नूर इलाहीआ। जिस दा मैं वी इक्क बच्चा, तन वजूद सोभा पाईआ। उस दी आदि जुगादी सता, सति सति विच समाईआ। कलयुग खेल वेख रता, रातीं सुत्तयां दयां वखाईआ। राम सुणाई इक्क कथा, हनवन्त दिता जणाईआ। रख के तीर कमान भथ्था, हथ्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ। हनवन्त वेख भगतां दा जथ्था, अक्ख विच्चों अक्ख उठाईआ। हनवन्त वेख के हस्सा, कच्छां मार के खुशी बणाईआ। प्रभू की खेल पुरख समर्था, की अचरज रचन रचाईआ। निरगुण जोत वेख्या फिरे नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ।

राम किहा आपणा नेत्र वेख पटा, पलक उंगलां नाल चुकाईआ। हनूवन्त तक्कया धरती दा उह इक्क हिस्सा, जित्थे रिषी बाल्मीक बहि के आपणा झट लँघाईआ। एहो दिन ते एहो थिता, नछत्र एहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। तिन्न माघ किहा मैं डरदा रिहा बोल, बोली बोल सुणाईआ। हउँ वारी सदके घोल, घोली घोल घुमाईआ। सुणया नाम बचन अनमोल, अनमुलड़ा दिता जणाईआ। हभ किछ वस्त मेरे कोल, देंदयां तोट रहे ना राईआ। डंका शब्द वजा ढोल, डौरू इक्क उठाईआ। सच दवारा देवां खोल्ह, दरवाज़ा बन्द ना कोए कराईआ। लख चुरासी विच्चों फोल, वस्त अमोलक इक्क टिकाईआ। भाग लगा के धरनी धौल, धर्म दुआर सोभा पाईआ। जन भगत रहे ना कोई अनभोल, सुत्तयां लवां उठाईआ। माघ कहे मेरे दिल नूं पैंदा हौल, की हौली हौली कार कमाईआ। मैनूं याद आ गया की सीता नाल राम ने कीता कौल, इकरार आपणा आप बणाईआ। जिस वेले सति धर्म दा प्या रौल, रौले विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। तिन्न माघ कहे मैं की वेख्या सीता सुत्ती, बनबास डेरा लाईआ। ओहदी आह निकली उच्ची, होका दे सुणाईआ। आपणी हिक ते मार के मुक्की, दिती कूक दुहाईआ। अभ्भड़वाही उठी, नैणां नीर वहाईआ। हो के पिठ भार पुठ्ठी, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। ऐ प्रभू मैं कलयुग
११५८ वेख्या तेरे नालों सब दी धार टुट्टी, साचा संग ना कोए निभाईआ। गाना रिहा कोए ना गुट्टीं, मौली तन्द ना कोए वड्याईआ। ११५८
२० सच दवारयों सब नूं मिली छुट्टी, मकतब पढ़न कोए ना आईआ। तेरी आत्मा तैथों रुस्सी, रुस्सी सके ना कोए मनाईआ। २०
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। तिन्न माघ कहे सीता नूं फेर आ गई नींद, अक्खां विच समाईआ। की तक्के कूड़ कुड़यार चढ़ी पींघ, हुलारा इक्को इक्क वखाईआ। ओने चिर नूं इक्क गधा गया हींग, आपणी आवाज़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। तिन्न माघ कहे सीता नूं तीजी वार फेर आ गया आलस, मुख लपेट आपणी अक्ख छुपाईआ। की तक्कया सुफ़ने दा रूप उह ख़ालस, ख़ालस नूर इलाहीआ। जां समझया सब दा उह सालस, सालसी रिहा कमाईआ। सीता दी लाह के आलस, हौली जेही सुणाईआ। ओह वेख कलयुग जीव होए राकश, रकशा करन वाला नज़र कोए ना आईआ। सीता तक्के चारों कुण्ट साज़श, शरअ विच लड़ाईआ। बिना बाणां तों लग्गी आतश, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। हैरान हो के किहा ऐ मेरे मालक, राम दे राम तेरी दुहाईआ। पुरख अकाल झट बण के निक्का जेहा बालक, उंगली इशारे नाल वखाईआ। औह वेख सच्ची मेरी अदालत, जित्थे बहि के हुक्म वरताईआ। लख चुरासी बण प्रितपालक, सेवक हो के सेव कमाईआ। सच धर्म दा

बण संचालक, जुग जुग वेखां चाँईं चाँईंआ। आपणयां भगतां दा सदा टिक्का लाहवां कालख, किलविख पाप गवाईआ। कूड़ी रहे ना कोए जहालत, ममता मोह मिटाईआ। बिनां पैसयां दे ज़मानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव खुलाईआ। तिन्न माघ कहे सीता वेख्या अजब नज़ारा, अन्तर ध्यान लगाईआ। फिर राम नूं कर निमस्कारा, सज्जे चरण दा अंगूठा फड़ के दिता हिलाईआ। नेत्र नीर वहा के धारा, छहबर इक्क वखाईआ। उठ राम मेरे प्यारा, कूक दिती दुहाईआ। राम उठ वेख्या क्यों करें गिरयाज़ारा, आपणा आप गवाईआ। सीता किहा मैं वेख्या खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी दयां जणाईआ। सुत्ती नूं होया इशारा, तिन्न वार वखाईआ। कलयुग दा दिस्या किनारा, चारे कुण्ट कूड़ कुड़यार नज़री आईआ। सब नूं विसरया करतारा, अकिरतघण दिसे लोकाईआ। ऐ प्रभू मैथों तेरा विछोड़ा ना जाए सहारा, जंगल विच मंगल तेरे नाल नज़री आईआ। की फेर वी आवें दुबारा, दुखियां दा दर्द गवाईआ। राम किहा सीता, ओह राम मेरा न्यारा, जो हर घट वस्या लख चुरासी विच समाईआ। मैं कहिंदा उस ने आपणा आप धारना अवतारा, जो दो चार दा लेखा दए मुकाईआ। भगतां दा बणे सहारा, साचा संग बणाईआ। जेहड़ा चार जुग गुर अवतारां पैगम्बरां दे के जाणा लारा, उहनां दा लहिणा ओहो मुकाईआ। राम किहा फेर कर इशारा, पिच्छा दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। तिन्न माघ कहे मैनूं दिसे पुराण सकंद, ध्याए तेरवां नज़री आईआ। जिस विच सोहँ लिख के छन्द, जै अग्गे दिती लगाईआ। दरम्यान विच खड़ी कर के कंध, ओहला दिता वखाईआ। विष्नूं पुराण किहा जिस वेले आवे सूरा सरबंग, साहिब धुरदरगाहीआ। जन भगतां पाए ठंड, ठंडक इक्क वरताईआ। दुष्टां देवे डण्ड, डण्डा नाम हथ्थ उठाईआ। ओनूां लवे गंढ, जिनूां आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तिन्न माघ कहे प्रभ लाउँदा जाए पाबन्दी, आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां नाल करदा जाए संधी, लिख्त भविख्त वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया मेटदा जाए गंदी, माया ममता मोह मिटाईआ। तिन्न माघ कहे मैनूं इक्को गल्ल लग्गी चंगी, चंगी तरां दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। तिन्न माघ उह चंगी किहड़ी बात, परदा दे उठाईआ। खोल के दस्स राज़, भेव रहे ना राईआ। तिन्न माघ कहे जिस वेले मुहम्मद ने पहली वार वण्डी न्याज़, मुरीदां दिती वखाईआ। ओस नूं आई इक्क आवाज़, हुक्म धुरदरगाहीआ। मुहम्मद खोल जाग, आलस निंद्रा गवाईआ। सब दा कर त्याग, इक्को ध्यान रखाईआ। दो जहान मेरा बाग़, लख चुरासी गुलशन इक्क महकाईआ। तूं मेरा निक्का जेहा चराग़, दीवा दिता टिकाईआ। सुणना हुक्म आज, तैनूं

दयां सुणाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह जिस दा आदि जुगादी राज, रईयत सब नूं रिहा बणाईआ। मुहम्मदा तक्क जिस दे सीस उत्ते ताज, तख्त ताज दए उलटाईआ। उस ने बदल देणा रिवाज, रहमत विच आपणा हुक्म सुणाईआ। तुहानूं होणा पए मुहताज, मंगणा पए चाँईं चाँईंआ। मुहम्मद किहा ऐ खुदा की दिती आवाज़, मैनूं दे समझाईआ। परवरदिगार किहा पहलों कर आदाब, सजदा सीस निवाईआ। आह वेख मेरा हिसाब, लेखा वक्खो वक्ख बणाईआ। पुठ्ठी सिध्धी कर किताब, चारों कुण्ट पढ़ाईआ। मुहम्मद हो गया लाजवाब, निउँ के सीस निवाईआ। पुरख अकाल मुख़ातब हो के दिता ख़ताब, हुक्म हुक्म इक्क सुणाईआ। औह वेख नानक दी रबाब, जो तूं ही तूं ही गाईआ। मुहम्मदा न्याज़ां दा की स्वाद, जिंनां चिर सब दा मालक नज़र ना आईआ। एह इशारा दिता विच बग़दाद, बग़लीआं वाले फिरन भज्जण वाहो दाहीआ। करे ना कोई इमदाद, इमदादी नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखे उधर बरबाद, बरबादी चारों कुण्ट छाईआ। परवरदिगार आपणा वजा के इक्क नाद, मुहम्मद परदा होर चुकाईआ। जां वेख्या सदी चौधवीं ना कोई सन्त ना कोई साध, सूफ़ी सुफ़ने विच दरस कोए ना पाईआ। मुहम्मद कँवल चरण कर अदाब, सीस दिता झुकाईआ। साहिब तेरे हथ्थ वाग, ज्यों भावे लैणी भवाईआ। उह वी दिन सी तिन्न माघ, जिस दी थित ना किसे लिखाईआ। श्री भगवान किहा मुहम्मद औह वेख हँस विच काग, गुरमुख नज़री आईआ। ओनां दा धोणा दाग़, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। तिन्न माघ कहे मुहम्मद की रिहा देख, दीख्या विच लोकाईआ। प्रभ दा निराला भेस, भेखाधार रुढ़ाईआ। वस के आपणे देस, दिशा रिहा बदलाईआ। जो रहे सदा हमेश, निरगुण नूर इलाहीआ। सच दर दा बण नरेश, नर नरायण अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लै के भेंट, सांतक सति ना आपणा आप कराईआ। सब नूं करना पए ओस दा वेट, इंतजारी विच दुहाईआ। जिस दा धर्म दा होणा गेट, जिस विच गैट आउट करे कूड़ लोकाईआ। रूप होणा एका एक, एकँकार नूर रुशनाईआ। सानूं सब नूं उस दे अग्गे होणा पैणा पेश, पेशवा बण के सीस निवाईआ। झगड़ा रहे ना मुल्ला शेख़, शेखी सब दी दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को घर वसाईआ। तिन्न माघ कहे मेरा नहीं कोई चारा, चारों कुण्ट दुहाईआ। एह खेल हरि निरँकारा, निरगुण आप कराईआ। कलयुग दा अन्त किनारा, जगत नईआ डिका डोले खाईआ। साचा दिसे ना कोए गुरूदवारा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ देण दुहाईआ। हरि कन्त मिले ना मीत मुरारा, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। चारों कुण्ट धूआँधारा, अन्ध अन्धेरा नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए लारा, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण धार लए अवतारा,

निहकलंक वेख वखाईआ। जन भगतां लए सहारा, सगला संग बणाईआ। पूरब लहिणा चुकाए उधारा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आवे ओस तट किनारा, जिस दा पत्तण नष्ट ना कोए कराईआ। उह भगतां दा दवारा, जित्थे भगवन बहि के खुशी मनाईआ। सच दा अखाड़ा, गुरमुख मिल के वज्जे वधाईआ। भाग लग्गे जंगल विच उजाड़ा, उजड़ी बस्ती दए वसाईआ। ज़िमीं असमानां मेट के पाड़ा, परदा अंदरों दए खुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा तख्त निवासी इक्को लाड़ा, लख चुरासी लाड़ी आप प्रनाईआ। निरगुण जोत आवे दोबारा, दोहरा खेल खिलाईआ। जिस नूं समझे ना कोए विच संसारा, परदा सके ना कोए चुकाईआ। कागत कलम ना लिखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर वसाईआ। तिन्न माघ कहे सृष्टी दी तिन्न दिन मुनयाद, हुक्म हुक्म विच मनाईआ। जिस विच उजड़ के फेर होए आबाद, बहुते थोड़े समझ किसे ना आईआ। सति धर्म दा करे राज, रईयत इक्क वखाईआ। एह अनडिठ्ठड़ा काज, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो खोलू के जाग, जगजीवण दाता होए सहाईआ। एह धरनी दा भाग, हिस्सा वण्ड झोली पाईआ। फ़रीद नौ दिन एथे जगा के गया चराग, चरागाहां विच आपणा डेरा लाईआ। अन्त झौंपड़ी
११६१ नूं ला के आग, ख़ाक गया बणाईआ। दे के उच्ची बांग, नाअरा इक्क सुणाईआ। जिस वेले वरते स्वांग, स्वांगी हो ११६१
के फेरा पाईआ। मैं वी तेरी रखणी तांघ, आसा आसा नाल मिलाईआ। रो के निकली चांग, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ।
२० झट निरगुण सरगुण नज़र आया हथ्थ विच फड़ के डांग, आपणा रूप बदलाईआ। फेर झट आपणी दो हथ्थां उत्ते चुक्क २०
के टांग, दरस दिता दिखाईआ। बण शुदाईआं वांग, घट्टे उत्ते आसण लाईआ। कन्नां विच उंगलां पा के दिती बांग, हथ्थ सीने उत्ते टिकाईआ। उने चिर नूं निकल के आ गया नाग, काला आपणी फन फैलाईआ। ओहदे गल्ल विच सी इक्क दाग़, जो लाल चमके नूर रुशनाईआ। उधरों भज्जा आ गया बाघ, आपणी तबक लगाईआ। प्रभू नूं फेर आ गया वैराग, फ़रीद दे अग्गे हो के आपणे अथरू दिते वहाईआ। फ़रीदा कुछ मंग लै इमदाद, देण वाला तेरे दर ते आईआ। फ़रीद किहा प्रभू जे किरपा करनी ते कदे बणावीं भगतां दा समाज, एहो मेरी मनसा दए दुहाईआ। मैं तेरे पिच्छे रोटी खाधी काठ, पुठ्ठा आपणा आप लटकाईआ। मेरे नेत्र ठूंग गए काग, नैण ना कोए चमकाईआ। मैं चाहुन्दा तेरे भगतां दा बेड़ा भरे जहाज़, पत्तन इक्को सोभा पाईआ। उने चिर नूं उड के आ गया इक्क बाज़, आपणे पंख हिलाईआ। उधरों नंगा आ गया साध, नाअरा अलख अलख सुणाईआ। मस्ताना हो के कहे जे तूं रब्ब कूड़ दा मेटीं राज, कूड़ी राजा प्रजा रहिण कोए ना पाईआ। प्रभू उसे वेले ओहदे कोल हौली हौली गया भाज, साधू नूं फड़ के दिता हिलाईआ। बच्चू मैं तैनूं दस्सां इक्क जाच, सहिज

नाल समझाईआ। फेर वी तेरा तन बणाउणा माटी काच, तत्तां नाल वड्याईआ। तूं उस वेले फेर मेरी करें याद, आसा इक्क रखाईआ। एहो धरती फेर करां अबाद, एह मेरी बेपरवाहीआ। हुण तुसीं इक्क दो फेर बग़ीचा होवे बाग़, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। ओने चिर नूं इक्क कबाबी भुन्न के इक्क लै आया कबाब, सीखां उत्ते टिकाईआ। नाले करदा आवे हिसाब, लेखा उंगलां उत्ते बणाईआ। नेड़े आ के मारी आवाज़, सौदा जगत हट्ट विकाईआ। ऐस दा वेखो स्वाद, रस रसना नाल चखाईआ। एह वस्त तुहानूं दिती नहीं तुहाडे माई बाप, जेहड़ी तुहानूं दिती खवाईआ। फ़रीद किहा ऐ खुदावंद पाक, एह कौण एथे आईआ। की कोई पुतला माटी ख़ाक, जो सानूं रिहा डराईआ। श्री भगवान किहा एह खेल होया नाल इत्तफाक, इत्तफाकीआं कार कमाईआ। जिस वेले कलयुग होवे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। एह कूड़यां साधां सन्तां दी जाच, जो कबाब भुन्न के भज्जे वाहो दाहीआ। इन्हां दा ममता दा पाठ, लोभ दी पढ़ाईआ। फ़रीद किहा प्रभू तेरी किहड़ी किताब, मैनूं दे वखाईआ। श्री भगवन किहा उह जगत तों वक्खरी लुग़ात, जिस दा अक्खर अक्खर ना कोए प्रगटाईआ। जिस वेले मैं ते मेरे भगतां दी सांझी होई जात, ओस वेले वरका दयां उलटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एह सब तों निक्की ते सब तों वड्डी मेरी बात, चार जुग ना किसे समझाईआ। फ़रीदा सब ने पाउणी वफ़ात, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। तिन्न माघ कहे मैं वेख्या खेल अजीब, निराला नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी दए तरतीब, सिलसलेवार चलाईआ। उह साहिब बण ग़रीब, जन भगतां डेरा लाईआ। एह वी लेखा लिख्या मुहम्मद ने विच कुरान मजीद, मजबूरी नाल सुणाईआ। उस दी करो सारे उम्मीद, जो अमल अमन दा मालक इक्क अख्वाईआ। जेहड़ी बाहवां तों बिनां कमीज़, अलिफ़ी नाउँ धराईआ। उस ने भगतां नूं देणी तमीज़, मरन तों पहलों आपणा प्रभ लैणा मनाईआ। बेशक एह धार बड़ी बारीक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिन्हां दे अंदर दए तौफ़ीक, सिर आपणा हथ्थ दए टिकाईआ। उह मूर्ख मुग्ध समझण ठीक, ठाकर इक्को नज़री आईआ। जिन्हां दी आप कर के जाए तस्दीक, दूजी शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां भगती वाली प्रीत, भगवन विच समाईआ। गुरमुखो धन्न भाग तुसां मैनूं इथे दाखल कीता बिनां फ़ीस, जुरमाना शरअ ना कोए लगाईआ। मैं तुहानूं देण आया असीस, शुकर कर के खुशी मनाईआ। याद करयो बिन तुहाडे दुनिया विच आउणी नहीं पीस, पीस पीस मरे लोकाईआ। तुसीं मेरा ख़ज़ाना ते मैं तुहाडा ख़ीस, ख़ाली भण्डारे दयां भराईआ। तुहाडी कोई ना करे रीस, रस्ते दयां बदलाईआ। ज़रा थोड़ी जेही वट्ट लओ चीस, चश्मे प्रेम दे दयां बहाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, कूड़ कुटम्ब दयां खपाईआ। सब

दी साफ़ कर के नीत, नीतीवान इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर वखाईआ। तिन्न माघ कहे सारे करन गोबिन्दा गोबिन्दा, गोबिन्द तेरी शरनाईआ। नहा धो के साफ़ करदे पिण्डा, शंकर दी पिण्डी अग्गे सीस निवाईआ। हरी ओम तत सति बोलदे वांग बिंडा, कूक कूक सुणाईआ। साफ़ सुथरीआं कर के टिंडां, हथ्थ सीस उत्ते टिकाईआ। सुखालीआं कर के जिंदां, जगत माया मोह विच हल्काईआ। जिंनां चिर गुरमुखो प्रभ दी बणे कोई ना बिन्दा, बिन्दराबन वाला होए ना कोए सहाईआ। वेखो रोंदा सुरप्त इन्दा, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिंदा, कूक कूक सुणाईआ। बिन प्रभू मेटे ना कोई चिन्दा, चिन्ता दु:ख ना कोए गवाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां भण्डारा देंदा, उह भगतां आप वरताईआ। जन भगतो तिन्न माघ कहे मैं तुहानूं देण आया नेंदा, पहली फग्गण नहीं फग्गण दी दूजी नाल मिलाईआ। जो जुग चौकड़ी रिहा वेंहदा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। हुण तुहाडा मुकाउण लग्गा पैंडा, दुखियां दर्द रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर वसाईआ। तिन्न माघ कहे इक्क वखाई पुस्तक, प्रभ दिती वड्याईआ। जिस दे विच भगतां दी उस्तत, जिस उस्तत विच्चों गोबिन्द ने अकाल उस्तत दिती लिखाईआ। ओथे सब दा सांझा इक्को मुर्शद, पीरां दा पीर नज़री आईआ। जिस दी सारे करदे उल्फ़त, महिमा विच वड्याईआ। ओस नूं दुनिया नाल मिलण दी कदे नहीं मिलदी फ़ुरसत, भगतां विच्चों वेहला हो के रहिण कदे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। तिन्न माघ कहे भगतो मेरे उत्ते हो ना जायो गुस्से, बेनन्ती दयां सुणाईआ। क्यों मेरे विहार कारण प्रभ आया बिना सद्दे पुछे, आपणा फेरा पाईआ। घर दे कम्म काज बदले कोई ना रुस्से, तुहाडा हर्ज ना कोए कराईआ। जेहड़े फुल्ल टाहणीआं नालों टुट्टे, उह आपणी झोली पाईआ। आओ मेरे लाडले पुत्ते, बच्चयो गोदी विच उठाईआ। तुसीं एथे ओथे सदा सुच्चे, दुरमति मैल करां सफ़ाईआ। तुहाडे जन्म जन्म दे पैंडे मुक्के, कर्म दा गेड़ चुकाईआ। मात गर्भ ना होणा उलटे रुक्खे, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। तुसीं ओस दी सेजे सुत्ते, जित्थों सुत्यां ना कोए उठाईआ। हुण रहिण नहीं देणा लुके, पड़दे सर्ब चुकाईआ। शाम नूं चार वजे जाण लग्गयां पैरीं पाउणे किसे नहीं जुत्ते, नंगी पैरीं पन्ध मुकाईआ। फेर सारे इक्खे रखयो इक्को गुट्ठ, एह वी चम्यार गया लिखाईआ। नौ जोड़े विच्चों कर दयो पुट्ठे, हथ्थां दी सेव कमाईआ। जिस दे बुल्ल्हे शाह ने प्रेम नज़ारे लुट्टे, उह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ वजे रात नूं सब ने चिट्टे तन्द बन्न्हणे नाल गुट्टे, गाना सगन वाला वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। तिन्न माघ कहे

की रातीं सुत्ते सारे आपणे काया मन्दिर, आसण खूब सजाईआ। सच दस्सणा जिस नूं हुक्म मिल्या शब्द विच अज्ज किस दे घर होणा लंगर, उठ के देणा समझाईआ। भाग लगाए ओस अंदर, जिस घर करे रुशनाईआ। प्यारा सिँघ तेरा नौ छटांक गुड़ आवे वण्डण, आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। तिन्न माघ कहे प्रभू हुण दे दे छुट्टी, आपणी दया कमाईआ। किते संगत ना होवे भुक्खी, ध्यान रोटी वल्ल रखाईआ। मैं वेखां ओन्हां मुखीं, जो तेरा ढोला गाईआ। सदा रहिण सुखी, मेरी आसा मंग मंगाईआ। अंदर वड़ के पुच्छीं, सुत्तयां आप जगाईआ। जन भगतो तुहाडी आत्मा रहे ना रुस्सी, रस्ते जांदयां कुछ होर लेखा देणा बणाईआ। ढाई गज़ दी इक्क मुंज दी नाल रखणी रस्सी, दीदार सिँघ लै के आईआ। रात दे नौ वजे इक्क वेरां जाणा पैणा उत्ते धुस्सी, वेख्यो ठंड तों डरदयां किसे पल्ला ना लैणा छुडाईआ। ओथे सब ने आपणीआं बन्द करनीआं दोवें मुट्ठी, फेर कन्नां उत्ते टिकाईआ। बाहरों ज़ोर नाल लैणा घुट्टी, अंदर प्रभ दा ध्यान लगाईआ। तुहाडा सतिगुर पैरीं पा नाल ना जावे जुत्ती, नंगी पैरीं तुहाडी सेव कमाईआ। गुरमुख सवाणी कोई ना होवे दुखी, दुखियां दर्द वण्डाईआ। जेहड़ा थक्क गया ओस गुरमुख नूं हथ्थां उत्ते जावे चुक्की, आपणी खुशी बणाईआ। फेर गुरसिखो गुरमुखो साचे सन्तो साचे भगतो तुसां ज़रूर वड्डे छोटे प्रभ दी पिठ उत्ते मारनी इक्क इक्क मुक्की, ज़ोर नाल लगाईआ। फेर मैं कहवां अज्ज मैनूं होई खुशी, गोबिन्द दा लेख चुकाईआ। खेल करना वेले उसी, धूढ़ी टिक्के मस्तक सब ने लैणे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस कारण आया उह कर के दए वखाईआ। तिन्न माघ कहे जन भगतो नाल पाणी दा रखयो ग्लास, तेज भान हथ्थ फड़ाईआ। अंदरों पूरा रखयो विश्वास, भरम रहे ना राईआ। वेला होणा रात, रोशन चन्द चमकाईआ। गुरमुख लेखा लिखणा कलम दवात, शहादत देणी भुगताईआ। जिस वेले वज्जे सच आवाज़, प्रेम नाल सुणाईआ। फेर जैकारा लाउणा सब ने तूं ही साडा बाप, तूं ही पिता माईआ। तूं ही रसूल पाक, तूं ही नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पाणी दा ग्लास ठंडा होवे सीत, ठरया नज़री आईआ। भगतो फेर मन्नां तुहाडी मेरे नाल प्रीत, मेरे सिर विच देणा उलटाईआ। एह वक्खरी चलाउणी रीत, अग्गे तों भगतां नूं भगती करन विच दु:ख विच मारनी ना पए चीक, हाहाकार ना कोए सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के गीत, आपणा पैंडा लैण मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। तिन्न माघ कहे मैं वी आवां ओस वेले चुप्प, आपणा आप छुपाईआ। खेल वेखां लुक, नेत्र अक्ख उठाईआ। की करदे प्रभ दे सुत, दर साचे वज्जे वधाईआ। करनी

दा करता होवे खुश, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी धारों आपे उठ, आपणी करनी कार कमाईआ।

एह दौरा नहीं भगतां दा दायरा, दारोमदार आपणे उत्ते रखाईआ। प्रभू प्रेम प्रीती दी करन आया सैरा, सैरगाह गुरमुख नज़री आईआ। जेहड़ा गोबिन्द नूं इश्नान कराउँदा सी महिरा, उह जोगिंदर सिँघ टाटिउँ पकड़ मंगाईआ। जिस ने सब दी वेखणी लहरा, लहर आपणी इक्क उठाईआ। जिस ने माण दिता बाबूपुर इक्क शहरा, उह गलीआं दे कक्खां दए तराईआ। जिस ने भगवन नाल कीता कहरा, उह बधक गले लगाईआ। जिस ने भगतां दा देणा पहरा, सेवक हो के सेव कमाईआ। उह प्रभू गम्भीर गहरा, गवर इक्क वड्याईआ। सो होण लग्गा ज़ाहरा, परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो एस नूं समझणा नहीं कोई ख़र्च, हिसाब विच ना कोए लगाईआ। मैं तुहाडा दर्शन कर के जावां परच, खाण पीण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख सिँघ रात नूं बैठणा उत्ते फर्श, थले चटाई ना कोए रखाईआ। सुरजीत सिँघ ने रखणा रात नूं वरत, छोटा बच्चा नाल मिलाईआ। जिस कारण आया परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। जे तुहाडा मेरा रह गया फ़र्क, फ़िरके कौण गवाईआ। जेहड़ी गोबिन्द दी शर्त, शर्तीया पूर कराईआ। प्रभू बण मर्दाना मर्द, मद्दद विच होए सहाईआ। भावें हुण ते मेला सिँघ तुसां नहीं कीती अरज़, पिछला लेखा पहाड़ी वाला भुल्ल कदे ना जाईआ। तुहाडे नालों मैनूं बहुती ग़रज़, जो ग़रीब निमाणा बण के लेखा घर घर रिहा मुकाईआ। सब दी सिध्धी कर के नरद, पासा देणा बदलाईआ। नाम प्रेम दी दे के ज़रब, अंकड़े देणे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगतो किते चिन्ता ना कर ल्यो दिता भाड़ा, राजा राणा रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दा पिछला मेरा एह विहारा, जिस दा लेखा रिहा मुकाईआ। ग़रीब हो के मंगां तुहाडा वाड़ा, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। बेशक मैं धुर दा लाड़ा, तुहाडे अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। जे मेरे साथ ना हुन्दा मेरा रविदास चमारा, तुहाडी लिख्त ना कोए बणाईआ। मैं कोई फिरदा नहीं आवारा, बिना कारज तों कदम ना कोए उठाईआ। गुरमुखो रावी उत्ते इक्क वेरां फिर जाणा पऊ दोबारा, जेहड़ा ना चल सके उस नूं कंधिआं उत्ते टिकाईआ। वेख्यो दु:ख ना मंनिओ चिक्कड़ गारा, ग़रीबां दा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। ओथे अरज़ करन दी किहड़ी लोड़, जो गलवकड़ी रिहा पाईआ। बच्चयो विछड़यां नूं रिहा जोड़, डुबदयां पार लँघाईआ। जे

तुसीं ना निभा सको ते मैं निभावां तोड़, सद आपणे नाल लगाईआ। तुहाडा प्रेम मैं खावां भोर भोर, आपणा सिदक बणाईआ। तुसीं कुछ होर नहीं ते मैं नहीं कोई होर, हरि का रूप नज़री आईआ। बेशक मैं सृष्टी दा चोर, शाह सुल्तान फड़ सके कोए ना राईआ। पर तुहाडी आपणे हथ्थ विच रख के डोर, हुलारा आपणा नाम लगाईआ। जे अज्ज हुक्म नाल दयो मोड़, फिर वी मुड़ ना वापस जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। प्रभू अग्गे क्यों बेनन्तीआं करन अरदासे, गल विच पल्लू पाईआ। जिन्हां आपणे भेंट कर दित्ते स्वासे, स्वार्थ जगत ना कोए रखाईआ। ओन्हां दी सदा पूरी कर के आसे, आहिस्ता आहिस्ता वेख वखाईआ। अजे ते गुरमुखो तुहाडे हथ्थां विच फेर फड़ाउणे गंडासे, जेहड़े आपणे बदन उत्ते लगवाईआ। आपणे कपड़े रखणे पाटे, तुहानूं चिट्टे देणे पहनाईआ। आपणयां पैरां हेठां वछा के कांटे, तुहानूं हथ्थां उत्ते तुराईआ। तुसां सौणा उपर खाटे, आप फर्श उत्ते डेरा लाईआ। तुसां छकणा विच बाटे, आप हथ्थां उत्ते खाईआ। क्यों तुसीं मेरे निक्के जिहे काके, पालणा पोसणा मेरे ज़ुंमे विच आईआ। किसे नूं कुच्छड़ ते किसे नूं चुकां ढाके, किसे नूं कंधिआं उत्ते टिकाईआ। किसे नूं उंगल ला के चलां साथे, किसे नूं गोद विच बहाईआ। किसे दे अंदर करके वासे, किसे दे मस्तक नूर करां रुशनाईआ। फेर कहवां सारे आओ मेरे पासे, लड़ी लड़ी नाल जुड़ाईआ एहो जिहे गुरमुख होणे थोड़े बहुते नहीं ख़ासे, ख़ालस आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुखो सब दे विछड़ जांदे मापे, पिता पुरख अकाल विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर वसाईआ। गुरमुखो सब नूं घर दी घिरना, घर घर रही सताईआ। ऐवें सतिगुर नाल काहनूं फिरना, आपणा कम्म गवाईआ। एस दा अगले साल करना निरना, निरवैर हो के देणा जणाईआ। अमृत मेघ बरसाउणा किरना, बूंद स्वांती इक्क चुआईआ। जगत फिरना वांग हिरना, सुगंधी हथ्थ किसे ना आईआ। कोटां विच्चों जन भगत विरले मिलणा, जिस दा मेला आप मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई पत्थर पाहन सिल ना, सति सरूप निरगुण जोत नज़री आईआ।

★ ३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बाऊपुर बाहर ज़िला गुरदासपुर ★

वेखो आया भगतां दा कैदी, हथ्थकड़ी हथ्थ लगाईआ। जेहड़ी कीती खेल बाबर नानक नाल बेदी, वेद शास्त्र देवे ना कोए गवाहीआ। अबिनाशी करता सब दा बण के भेदी, भेव आपणा रिहा खुल्हाईआ। जेहड़ी खेल अठाई पोह खेडी,

हरि संगत विच सुणाईआ। ओहदा भुगताण कीता नाल तेज़ी, बहुती देर ना कोए लगाईआ। जिस दा अवर ना कोए लेखी, लेखा लिख ना कोए समझाईआ। जन भगतो तुहाडा बध्धा हुण ना होवे परदेसी, सदा तुहाडे विच मुलज़म दी रही ना कोई शेख़ी, शनाख़त आपणी सब नूं रिहा कराईआ। एह याद रखयो प्रेम वाली नेकी, आपणा आप दिता मिटाईआ। तुहानूं लाड़ी मौत ना व्याहवे धर्म राए दी बेटी, प्रभ दा बेटा हरि शब्द लए प्रनाईआ। अज्ज सब ने रात नूं घर घर बिस्तरे नवें कढणे जेहड़े बन्द कीते विच पेटी, सोहणे गुरमुखां हेठ विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार भुगताईआ। गुरमुखो वेखो आया बध्धा, डोरी भगतां हथ्थ फड़ाईआ। किसे नूं दिता नहीं कोई सद्दा, सद्द के आपणी खेल खिलाईआ। किसे ते भार नहीं कोई दब्बा, बोझ आपणे सिर उठाईआ। फेर ना किहो क्यों धोखा देना रब्बा, धोखे वाला झगड़ा दिता गवाईआ। कुछ कौल इकरार हरि गोबिन्द नाल सुलखणी चब्बा, चंगी तरां दृढ़ाईआ। जिस नूं साहिब सतिगुर लभ्भा, भाई गुरदास दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल खिलाईआ। अठाई पोह कहे मुलज़म दा चले ना कोए ज़ोर, हथ्थीं बध्धा नज़री आईआ। जिधर मर्ज़ी लओ तोर, आपणा हुक्म सुणाईआ। भावें अन्धेरे रखो घोर, डूंघी डल्ल सुटाईआ। भावें चाढ़ो उपर घोड़, आसण सच सजाईआ। भावें बन्नो नाल बोहड़, राती दयो सज़ाईआ। एह नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा चोर, बिना भगतां हथ्थ किसे ना आईआ। जे तुहाडा कारज जावे सौर, आपणी इच्छा पूरी लैणी कराईआ। ज़रा वेखो नाल तक्क के ग़ौर, एह ओहो शहिनशाह जिस नूं सच्चे पातशाह कहि के सीस निवाईआ। की लभ्भो ओहो ब्राहिमण गौड़, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस दे चढ़े कोई ना पौड़, महल अटल नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। जन भगतो जिस दे उत्ते मुकद्दमा होया दाअवा, दाअवेदार अख्वाईआ। ओहदीआं बद्धीआं वेखो बांहवां, भगत दा लेख ना कदे बदलाईआ। उस नूं उसे वेले चुक्क के गोदी वांग मांवां, जन्म कर्म दा लेखा दिता बदलाईआ। आपणा पूरा करन वास्ते नांवां, भगत दवारिउं बाहर आ के तुहाडे दर ते मंग मंगाईआ। आपणा केस भुगता के जावां, जिस दी इक्को दस्मेस दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। गुरमुखो वेखो लग्गी हथ्थकड़ी, रस्सी घुट्ट के दिती बंधाईआ। किते कहि ना दयो एस नूं एनी सज़ा बड़ी, रात नूं मुक्कीआं नाल कुट्ट के आपणा ग़ुस्सा लैणा मिटाईआ। हथ्थी बध्धा करे कोई ना अड़ी, चुप चाप हो के आपणी ख़ुशी बणाईआ। थल्ले विछाउणी नहीं कोई दरी, सिँघासण नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा ख़ुदा जुग चौकड़ी बणदा रिहा शरई, शरअ विच दुनिया दिती लड़ाईआ। उस दी तुसां

पाउणी सही, सही सच देणी जणाईआ। इक्क नाल रात नूं रखयो कही, मोढे उत्ते टिकाईआ। कुछ होर नाल लै जायो दही, कटोरा हथ्थ उठाईआ। इक्क लिखण वाली नाल लै जायो वही, जिस दा खाता ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार भुगताईआ। जन भगत कहिण एस नूं लभ्भदे रहे एह बणया रिहा नूरी, हथ्थ किसे ना आईआ। अज्ज एस दी सज़ा करो पूरी, अग्गे भुल्ल कदे ना जाईआ। सारे ग़ुस्से विच वट्टो घूरी, अक्खां लाल कढ्ढ डराईआ। क्यों ना सानूं रंगण चाढ़ी गूढ़ी, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। बणे रहे मूर्ख मूढ़ी, बुद्धी बिबेक ना कोए बणाईआ। क्यों नहीं दिती चरण धूढ़ी, आपणा आप जणाईआ। अज्ज वेखीं रात नूं तेरी किस तरां ठारदे जूड़ी, असीं वी जटा जूट पिछले नज़री आईआ। तेरी लाह देणी ग़रूरी, माण रहे ना कोए वड्याईआ। मना के छड्डांगे अग्गे भगतां दी कर मशहूरी, जन भगतां दा ढोला गाईआ। आपणी मंज़ल ना रख दूरी, नेड़ नेड़ा दरस दिखाईआ। बथेरी गोपीआं तों खाधी चूरी , कृष्न बण के आपणी रास रचाईआ। भोग लाउँदा रिहों खीर पूड़ी, भल्लयां नाल मठिआईआ। जन भगत कहिण अज्ज एहनूं बन्नो जिस अंदर होवे तूड़ी, खाण पीण नूं हथ्थ कुछ ना आईआ। फिर आपे छुडाए साडी क्रिया कूड़ी, कुकरमां बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। रस्सी कहे वेखो नी मैं बध्धा सखी सुल्तान, जो सूरबीर अख्वाईआ। जो कहिंदा सीता दा राम, सुरती सति प्रनाईआ। जो बणदा रिहा घनईआ काहन, मुकन्द मनोहर लख्मी नरायण आपणा वेस वटाईआ। जो मूसा ईसा मुहम्मद सुणाउँदा रिहा गान, कलमा इक्क उपजाईआ। जो नानक गोबिन्द देंदा रिहा फ़रमान, सच संदेसा नाम दृढ़ाईआ। आप लुक्कया रिहा श्री भगवान, पड़दे विच आपणा आप छुपाईआ। कलयुग अन्त बणन लग्गा प्रधान, भेव अभेद खुल्हाईआ। भगत उठाए आण, सुरती सुरत खुल्हाईआ। योद्धे सूरबीरां कीता ध्यान, आपणी अक्ख पलटाईआ। जिंनां चिर सांझा ना करे ज्ञान, आत्म परमात्म राग अलाहीआ। ओनां चिर एहनूं प्रगट होण ना दयो विच मैदान, इक्क इक्कला आपणा ढोला ना कोए सुणाईआ। सारे घेरे विच लै लओ दरम्यान, दर दरवाज़ा नज़र कोए ना आईआ। पिछलयां भगतां किहा सुणो ला कर कान, कबीरा डंक वजाईआ। गुरमुखो प्रभू बड़ा शैतान, शरअ विच सब नूं रिहा भवाईआ। जुग चौकड़ी आवे विच जहान, नित नवित वेस वटाईआ। जे मेरा बचन जाओ मान, सब नूं दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। कबीर किहा भगतो उह बड़ा ज़िद्दी, तरस ना कदे कमाईआ। मैथों सिख लओ बिधी, सहिजे दयां समझाईआ। किते बणे ना रिहो गीदी, सिर गोडयां विच लुकाईआ। प्रभ नूं मिलयो सिध्धे दीदीं, अक्ख अक्ख नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। जन भगतो होर सुणो तरीका, तुहानूं दयां जणाईआ। जिस दा खेल नीकन नीका, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। उस दा बण जायो आप वसीका, लिखणहार आप हो जाईआ। जेहड़ा पिच्छे वेला बीता, बीती कहाणी देणी सुणाईआ। तेरीआं रखदे रहे उडीकां, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। पिच्छे चार जुग दुःख देंदा रिहों वांग शरीकां, अग्नी जल विच डुबाईआ। हुण बण जा सिध्धा मीता, मित्र इक्क अख्वाईआ। नहीं ते भुगतणा पऊ आपणा कीता, गुरमुखां आपणी हथ्थकड़ी लई लगाईआ। अग्गे लुक्क गिउं गोबिन्द नाल लै के विच अंगीठा, हुण लुकण दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं मालक हर घट जीअ का, जीवण जुगत तेरी वड्याईआ। तेरा झगड़ा नहीं कोई साढे तिन्न हथ्थ सीं का, रविदास चमारा दए गवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर मददी नहीं कोई भतीजा, तेरा साक सज्जण नज़र कोए ना आईआ। जेहड़े मेरीआं करदे रीझां, अज्ज ओनां हथ्थकड़ी लई लगाईआ। की पक्का खावें सीधा, कि रुक्खी खा के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगत कहिण थोड़ा एहनूं अंदर खिचो, अग्गे लओ लँघाईआ। जिंनां चिर आपणा भेत ना दस्से विच्चों, हथ्थकड़ी ना कोए खुल्हाईआ। सोहणा सच्चा लेख लिखो, लिख्त वाली गवाहीआ। गुरमुखो नाले मर्यादा सिक्खो, भुल्लयां सब नूं मिले सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर दए वड्याईआ। जन भगत कहिण एहनूं अंदर लवो वाड़, सरदल पार कराईआ। फड़या विच्चों उजाड़, आवारा फिरदा नज़री आईआ। रात नूं मुक्कीआं मारो झाड़ झाड़, ज़ोर नाल लगाईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां दा लेखा मुकाया सतारां हाढ़, बचया रहिण कोए ना पाईआ। अज्ज एस दी कुट्टो नाड़ नाड़, आपणी खुशी बणाईआ। नाल वेखो एहदा यार, रविदास भुक्खा नज़री आईआ। एह सदा भुक्ख्यां नाल करे प्यार, एहदी आदत देणी बदलाईआ। आपणा कारज लवो संवार, भय विच दयो डराईआ। प्रभू अग्गे ख़ाली बांझ रहे कोई ना नार, दुखी कुक्खीं भाग लगाईआ। जिंनां चिर दे के ना जाएं आपणा एतबार, हथ्थकड़ी ना कोए खुल्हाईआ। किथ्थे तेरा सचखण्ड दवार, दूर दुराडा नज़री आईआ। एह भगतां दा घरबार, हरिजन बैठे सोभा पाईआ। कदी तैनूं कहिंदे सां सच्ची सरकार, अज्ज मुलज़म हो के आपणा आप बंधाईआ। एह दस्स की विहार, क्यों एह रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा लाहीआ। जन भगत कहिण प्रभू वेख ला बद्धी रस्सी डोरी, दोहरी मोड़ मुड़ाईआ। की भगतां नाल फेर करेंगा चोरी, लुक लुक आपणा मुख भवाईआ। अज्ज मन्न के जा तुसीं मेरे ते मैं तुहाडा जोड़ी, जोड़ी धुर दी इक्क बणाईआ। भावें किसे दी भगती बहुती ते भावें थोड़ी, सब नूं इक्को रंग रंगाईआ। दुनिया ने सृष्टी ने खुशीआं

विच वण्डी लोहड़ी, असीं लोहड़ा पाउण वाला बन्नू के ल्या बहाईआ। साची दस्स दे आपणी पौड़ी, मंज़ल दे वखाईआ। असीं नहाउणा नहीं किसे तालाब जौहड़ीं, तीर्थ तट ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। रस्सी कहे बन्नो छेती घुट्ट, हथ्थ हथ्थ नाल जकड़ाईआ। किते चोरी जाए ना छुट, आपणा आप बचाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां दी जड़ दिती पुट्ट, कलमा दिता बदलाईआ। भगत बणा के सुत, सुत्तयां रिहा उठाईआ। मौले इक्को रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। इक्क होर गल्ल लवो पुछ, सहिज नाल सुणाईआ। की फेर वी रखेंगा अन्धेरा घुप्प, भगतां नालों जुदाईआ। की वण्डेंगा दुःख, दर्दीआं हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे सोभा पाईआ। रस्सी कहे मैनूं जाओ घुट्टी, ज़ोर नाल बंधाईआ। जिंनी घुटोगे ओनां तुहाडे उत्ते जाए तुठ्ठी, मेहर नज़र उठाईआ। प्रेम दा लाहा जाओ लुट्टी, नेत्र नैणां अक्ख डराईआ। आपणी आत्मा करो सुच्ची, निर्मल नूर रुशनाईआ। कोई सवाणी रहे ना घुथ्थी, सच रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल प्रगटाईआ। जन भगत कहिण एहनूं लै जाओ होर अग्गे, पिच्छा ना कोए समझाईआ। जिंनां चिर भेव ना खोल्ले जगे, जागरत जोत कर रुशनाईआ। ओनां चिर एहदे हथ्थ रहिण बद्धे, गंढ ना कोए खुल्लाईआ। असीं वी धर्म निशाने गड्डे, जन भगत रहे सुणाईआ। असीं बन्द रहिणा नहीं विच डब्बे, साडा परदा देणा चुकाईआ। जेहड़े चुरासी विच्चों कढ्ढे, आपणे नाल मिलाईआ। किन्नां चिर हो गया तेरी चरणी लग्गे, तेरी आस तकाईआ। अग्गे जद दर्शन देवें ते चढ़ के घोड़े बग्गे, शाह सवारा नज़री आईआ। तेरा भगत तेरा दर्शन कर के रज्जे, तृष्ना तृखा देणी बुझाईआ। नाल तेरा जैकारा गज्जे, नाद धुन शब्द शनवाईआ। गुरमुख सोहँ ढोला जपे, इक्को मिले सरनाईआ। अज्ज तों कौल इकरार कर जा पक्के, नहीं ते बन्धन ना कोए तुड़ाईआ। जुग जुग सुणदे रहे तेरे सिफ्तां वाले टप्पे, टापूआं विच आपणा फेरा पाईआ। हिसाब दस्सदा रिहों माईनस विच बटे, जमां ज़रब जोड़ जुड़ाईआ। आपणी कीमत रखाउँदा रिहों धेले टके, हट्टां विच विकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कराउँदे रहे तैनूं ठठ्ठे, जुग जुग तेरा नाम बदलाईआ। हुण सारे होए इक्ट्ठे, घर इक्को सोभा पाईआ। पिछले रहिण ना देणे पटेदारी दे पटे, पटने वाला नाल मिलाईआ। जगत कूड़ रहिण ना रट्टे, रट्टा देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पन्ध मुकाईआ। रस्सी कहे इक्क होर दयो लपेट, उंगलां उंगलां नाल जुड़ाईआ। मना के छड्डो भगतां दी सहायता करनी विच माता पेट, गर्भ होणा सहाईआ। तेरी पूजा दा रहे कोए ना रेट, कीमत जगत ना कोए लगाईआ। ओ प्रभू जिन्नां भगतां ने आपणा आप तैनूं कीता भेंट, होर तेरी की सेव कमाईआ। जे

रुख़ ना बदलया एस पहली चेत, फेर तैनूं चेतन कहि के कोए ना गाईआ। एसे तरह बन्नॄ के मंडी विच आवांगे वेच, पल्ला आपणा आप छुडाईआ। श्री भगवान कहे भगतो जिस कारण तुहानूं दिता भेज, भजन बन्दगी तों बाहर कढाहीआ। ज़रूर देवां जोती दा तेज, तपसवी धुर दे दयां बणाईआ। धर्म पुजारी बणा के नेक, निक्कयां वड्डयां रंग रंगाईआ। तुसीं साची रखो टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी आप छुहाईआ। हुण अगले अंदर दयो भेज, मांगत हो के मंग मंगाईआ। अज्ज नहीं मंगदा कोई सोहणी सेज, भुंजे बहि के झट लँघाईआ। आपणे खाण लई बणा लओ देग, मैनूं रस ना कोए चखाईआ। इक्क विहार वेले कोल ल्या के रखणी तेग़, म्यान विच्चों बाहर कढाहीआ। फेर अगला दस्सूं लेख, की खेल करे बेपरवाहीआ। आओ चलीए अगले देस, पिछला पन्ध मुकाईआ। जन भगतो तलाशी लै लओ फोल के वेख लओ जेब, तुहाडी वस्तू ना कोए चुराईआ। पिच्छे चार जुग ज़रूर करदा रिहा फ़रेब, छिन विच दर्शन दे के फेर आपणा आप छुपाईआ। जिस वेले तेग़ बहादर ने सद्दे अंग्रेज़, एसे तरां हथ्थ बन्नॄ के ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा आप उठाईआ। जन भगतो मेरी खूब लओ तलाशी, नाड़ी नाड़ी फोल फुलाईआ। तुहाडी पूंजी चुक्की नहीं कोई रासी, सिर्फ़ आ के रस्ता रिहा वखाईआ। मेरा खेल पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतरां होए रुशनाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण अबिनाशी, जन्म मरन ना खेल खिलाईआ। परमात्मा आत्मा आत्मा परमात्मा दी जाती, जोती जाता इक्क अख्वाईआ। कुछ याद आ गई गोबिन्द वाली बाती, जो पुरी अनन्द दिती सुणाईआ। जिस वेले अनन्द पुर नूं छड्डणा ते गोबिन्द पुरख अकाल दी बणया दासी, एसे तरां हथ्थ जोड़ के सीस दिता निवाईआ। इक्क बेनन्ती धुर दी आखी, बिनां अक्खरां दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। गोबिन्द ओस वेले आपणे हथ्थ बद्धे नाल रस्सी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। प्रभू तेरे हुक्म नाल एह बस्ती बसी, तेरे हुक्म नाल उजाड़ा दिता पाईआ। अगला मार्ग सोहणा दस्सीं, मैं साची सेव कमाईआ। तेरा खेल वेखां अक्खीं, आख़र ओट तकाईआ। फिर लेट के भार वक्खी, दोवें हथ्थ कन्न उत्ते टिकाईआ। हथ्थां दी बणा के पट्टी, गोबिन्द नैण लए छुपाईआ। फेर मुच्छां नूं चाढ़ के वट्टी, बल आपणा ल्या प्रगटाईआ। पुरख अकाल तेरी पढ़ के इक्को पट्टी, दूजी विद्या दिती भुलाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द बण जा वड्डा हठी, तैनूं दयां सुणाईआ। अजे ते कलयुग दी होर तपणी भट्ठी, ओस वेले अमृत प्याउण वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। कैदी कहे भाई केहड़ा कैदख़ाना, भगतो दयो जणाईआ। जे इस तों अग्गे ओधर नूं होवां रवाना, पिछला पन्ध मुकाईआ। मैनूं हथ्थकड़ी ते तुसीं बन्नॄणा गाना, एहो

बेपरवाहीआ। तुसीं मेरे ते मैं वेखो बेगाना, हमेशा बेगानयां नूं मिले सज़ाईआ। अग्गे दयो कोई ना ताअना, मेहणा रहिण कोए ना पाईआ। आपणी खेल खेले श्री भगवाना, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार बण निमाणा, निमाणयां पार कराईआ। रस्सी कहे अग्गे होर जगह, पिछले अंदर बन्द कराईआ। किते फेर वी ना निकल जावे दे के दग़ा, धोखयां विच फसाईआ। रस्सी कहे इस नूं बन्नो मेरे नाल उत्तों रगां, रघुपति अख्वा के सीता नूं गया सताईआ। बड़ी मुश्किल नाल भगत दवारयों लभ्भा, होर हथ्थ कितों ना आईआ। ग्रन्थां विच्चों सुणया बड़ा कब्बा, काअबे वालयां दए सज़ाईआ। अज्ज चखाओ एहनूं आपणी सज़ा दा मज़ा, मज़ाक फेर करन ना पाईआ। जिंनां चिर जन भगत ना चलावे आपणी रज़ा, आपणे रंग रंगाईआ। ओनां चिर रहिण दयो बध्धा, पहरेदार लओ उठाईआ। वेखांगे किड्डा वड्डा, बल साडे नालों वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। जन भगत कहिण चंगा आ गया घेरे, घेरा लओ पाईआ। अज्ज एहनूं रखो अन्धेरे, दीपक ना कोए रुशनाईआ। जिंनां चिर ना चाढ़े आपणे बेड़े, डुबदयां ना पार कराईआ। ओनां चिर निक्कल ना जाए विच्चों एस खेड़े, ख़बरदारी घर घर

११७२ दयो कराईआ। क्यों आ गया छड़यां दे वेहड़े, तरस करन वाला नज़र कोए ना आईआ। अज्ज एहनूं कुट्ट कुट्ट के कर ११७२

दयो ढेरे, आपणा बल वधाईआ। जिंनां चिर साडे बन्नॄ के ना जाए बेड़े, सांझ जगत विच रखाईआ। जोती जोत सरूप

२० हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। रस्सी कहे एह दोवें हथ्थ लै जाओ उत्ते गिच्ची, गर्दन दयो झुकाईआ। २०

एहनूं पुछो किस तरह पालणी सिक्खी, सानूं दे समझाईआ। जिस दी धार तिक्खी, उत्ते पैर ना कोए टिकाईआ। तूं लारा देंदा सां वीह इक्की क्यों बैठा मुख भवाईआ। अज्ज खाण नूं नहीं देणी तैनूं टिक्की, भुक्खां रह के झट लँघाईआ। जे सानूं गुस्सा आ गया भगत कहिण तेरे मूँह उत्ते दे देईए छिक्की, सज़ा होर होर भुगताईआ। आपणी वार वेख ला थिती, पिछली नज़री आईआ। जेहड़ी गोबिन्द नूं दिती चिठ्ठी, माछूवाड़े समझाईआ। जो तेरी हाहे उत्ते लग्गी टिप्पी, सस्से होड़े नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। जन भगत कहिण एहनूं पुठा पा दयो लंमां, हुक्म इक्क सुणाईआ। प्रभू फेर ना बणीं निकम्मा, नकरमणां लैणा तराईआ। साडी कूड़ी मेट दे तमअ, लालच देणा गवाईआ। अज्ज सब नूं दे के जा जन्म नवां, नवां रंग चढ़ाईआ। हरख़ रहे ना ग़मां, चिन्ता सोग मिटाईआ। तेरे प्रेम दा वेखीए समां, भावें समाप्त होए लोकाईआ। जन भगतो अग्गे कदे ना किहो की भरोसा दमां, जिस नूं चाहे ओसे नूं लए बचाईआ। सब दा लेखा मेरे कोल जमां, विष्न ब्रह्मा शिव हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मेहरवान हो के बेड़ा

बन्न्हां, बन्न्हणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार भुगताईआ। जन भगत कहिण ग़ुस्से विच सुट्टो भार वक्खी, ज़ोर नाल दबाईआ। फेर वेखो आपणी अक्खी, किस बिध मिले सज़ाईआ। जो प्रेम दी साची सखी, सो सोहँ ढोला गाईआ। मन्न के इक्को पती, पतिपरमेश्वर ध्यान लगाईआ। मुहब्बत प्यार कूड़ विच ना फसी, फाँसी गलों लई कटाईआ। एसे कर के बद्धी रस्सी, रस्ते भुल्ल के गुरमुख औझड़ राह कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। जन भगत कहिण एहदा रगड़ो नक्क, ज़ोर नाल दबाईआ। जिंनां चिर साडा ना देवे हक, हकीकत दए समझाईआ। अजे तक सानूं शक, पता नहीं पुरख अकाल कि धोखे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुल्हाईआ। जन भगत कहिण एहदी हलूणो गर्दन, गर्दी गुबार दए गवाईआ। सुरती सुत्ती उठा के करे मरदन, मर्द मर्दाना दया कमाईआ। की होया जे कृष्न चीची पहाड़ उठाया गोवर्धन, ब्रह्मण्ड खण्ड बिनां उंगलीआं तों रिहा टिकाईआ। की होया जे गीता ज्ञान सुणाया अर्जन, अठारां ध्याए पढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडा सदा लई सच दवारे दा नेंदा आया वरजन, नाम महिमानी इक्क खवाईआ। जेहड़े आए दवारे पिच्छे मूल ना परतण, चुरासी विच ना कोए फिराईआ। तुहाडे काया भाण्डे हुण आप साफ़ करे बरतन, अंदर वड़ के मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे दए वड्याईआ। रस्सी कहे मैनूं घुट्ट के दयो गंढु, आपणा ज़ोर लगाईआ। फिर भगतां पए ठंड, अग्नी तत गवाईआ। जित्थे अज्ज दा खाणा डंग, सो गृह दए वसाईआ। ताअमील अंदर हो पाबन्द, हुक्म हुक्म विच बणाईआ। गुरमुखो तुहाडे नाल ना कोई झगड़ा ते ना कोई जंग, हत्थीं बध्धा सेव कमाईआ। सब ने अठ्ठ वजे चिट्टे तागे दा बन्न्हणा तन्द, तन्दूए दी पुकार गज दा उधार लेखा पिछला पूर कराईआ। हरि भगत सदा बख्शंद, जिन्हां दा मालक सूरा सरबंग, इक्क अनेक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। जन भगतो एह तुहाडे हत्थ असूल, नियम तुहाडे नाल रखाईआ। जे छड्डुणा करो कबूल, हत्थकड़ी दयो खुल्हाईआ। जे किसे दा लहिणा नहीं होया वसूल, उह वी दयो समझाईआ। पता नहीं तुसीं भुल्ले कि प्रभ ने कीती भूल, भुल्लयां प्रभू दए सज़ाईआ। सब नूं बख्श के प्रेम प्यार दी धूल, टिक्के दए लगाईआ। तुसीं असल ते तुसीं मूल, सूद ते कुलज़र कुल मालक नज़री आईआ। धुरदरगाही दा इक्को रूल, जिस दा नम्बर ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखाईआ। रस्सी कहे मैनूं दे दयो रस्ता, बाहर देणी कढाहीआ। जन भगतो तुहाडा दवारा रहे वसदा, बस्ती सोहणी नज़री आईआ। प्रभू

११७३
२०

मालक रहे हस्सदा, हस्ती हस्ती विच्चों प्रगटाईआ। तुहाडा लेखा सांझे जस दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। प्यार लओ ओस अक्ख दा, जेहड़ी अक्ख ना कदे शरमाईआ। तुहाडा प्रीतम तुहाडे अंदरों कदे ना नस्सदा, घर मन्दिर डेरा लाईआ। मंज़ल जगत वाली टप्पदा, कूड़ी क्रिया पन्ध चुकाईआ। हरि भगतां विच फबदा, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। धन्न सु वेला होया अज्ज दा, तुहाडा लहिणा दिता मुकाईआ। मैं उडीकदा सां कद दा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जिस वेले लेखा मुकया गुर अवतार पैगम्बरां दी हद्द दा, हाज़र हो के दिता समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले सदा लभ्भदा, सति दा मालक सदा सति विच मिलाईआ।

★ ३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बलाका सिँघ दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

नौं छटांक गुड़ दी पूरब दिसे शरीणी, शरीणी सब दी सांझी बणाईआ। जिस वेले सीता दी रावण ने पकड़ी वीणी, बांह हथ्थ नाल फड़ाईआ। उह हो के अक्खों नीवीं, नीर दिता वहाईआ। मैं राम दी प्रिया तीवीं, मेरे राम दुहाईआ। रावण बणा ना लवे बीवी, ख़ावंद रूप बदलाईआ। तेरी ज़िंदगी नाल जीवी, जीवण तेरी भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि,

११७४
आप आपणी किरपा कर, आपणे घर दए वड्याईआ। शरीणी कहे मेरा वज़न नौ छटांक, सच सच सुणाईआ। मैनूं कोई

२०
ना सके बांट, हिस्से वण्ड ना कोए कराईआ। मेरा रूप दिसे टांक, जिसत दा अंक ना कोए गिणाईआ। जिस वेले सीता दी निकली चांग, उच्ची कूक सुणाईआ। ओस वेले दिने मुरगे ने दिती बांग, धुर दा राग जणाईआ। तेरे मिलण दी इक्क तांघ, दूजी ओट ना कोए वखाईआ। प्रेम प्रीती वाली मांग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा लाहीआ। नौ छटांक कहे मेरी पिछली एह इच्छया, निरिच्छत दयां जणाईआ। जेहड़ी सीता ने रावण नूं पाई भिच्छया, मेरा वज़न विच रखाईआ। एह पूरब दा हिस्सया, लहिणा रिहा मुकाईआ। जिस ने मोह विकार ना जित्तया, हँकार विच लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। नौ छटांक कहे मैं ओहो गुड़, जो सीता रावण झोली पाईआ। भिच्छया लै गया ना मुड़, सतवन्ती कंध उठाईआ। वेख अन्धेरा घोर, अन्ध अन्धेरा छाईआ। शास्त्र वेता बणया चोर, ठग्गी राम नाल कमाईआ। तक्कया नाल ग़ौर, खोजी हो के खोज खुजाईआ। जिस दे सिर ते झुलदे चौर, सो भेखाधारी भेख वटाईआ। धोखा कर के गया दौड़, भज्जया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेख सुणाईआ। नौ छटांक गुड़ कहे मेरे अंदर मिठ्ठा रस, रसीआ

इक्क अख्वाईआ। लेखा पिछला देवां दस्स, दहि दिशा सुणाईआ। जिस वेले जटाऊ ने रावण वेख्या अक्ख, गुस्से विच लड़ाईआ। रावण ने भिच्छया दिती रख, जो सीता झोली पाईआ। जटाऊ उस विच्चों भोरा ल्या चक्ख, चक्खदयां चखशू खुल्ल्या नैण होवे रुशनाईआ। फिर किहा जीवण दा होया बस्स, अग्गे लोड़ रही ना राईआ। ओस दवारे जावां वस, जित्थे राम दे राम नाम दी दुहाईआ। छेती जावां नठ्ठ, जगत पन्ध मुकाईआ। एने चिर नूं रावण सिर विच मारी सट्ट, हंकल इक्क लगाईआ। मूदा हो गया लग्गा फट्ट, घाउ नज़री आईआ। एह खेल पुरख समरथ, जुग जुग आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुड़ कहे मैनूं जिस वेले जटाऊ खाधा, जटा जूट उठे कुरलाईआ। ओस वेले ओस ने किहा जिस वेले प्रगट होवे पुरख अकाल दादा, गुर गुर शब्दी बूझ बुझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे वाद विवादा, ममता मोह विकार गवाईआ। लेखा मुकाए सीता राम कृष्ना राधा, राधे शाम इक्को इक्क समझाईआ। नाम प्रगटा के बोध अगाधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। एका शब्द सुणाए नादा, अगम्मी राग अलाईआ। शाहो भूप बण के राजा, लख चुरासी रईयत वेख वखाईआ। जन भगतां रचे काजा, साचा संग उपजाईआ। राती सुत्तयां मारे आवाज़ां, जागदयां अक्ख खुल्लाईआ। धर्म दी धार करे वाधा, वाहिद इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे माधव माधा, मध सूदन परदा लाहीआ। सति सतार वजाए रबाबा, रब्बी आपणा हुक्म सुणाईआ। मजलस महबूब वखाए काअबा, मुक्दस नूर रुशनाईआ। अमृत देवे हयात आबा, अब्बा बण के वेख वखाईआ। भाग लगावे धुर महिराबा, महबूब वड वड्याईआ। भगत दवारे आवे भाजा, आपणा पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे सन्तन साधा, सिदक सबूरी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी वेख वखाईआ। गुड़ कहे मैनूं जटाऊ दे के गया लारा, रसना नाल चक्ख के आपणी खुशी बणाईआ। तूं सच्चा प्रीतम प्यारा, इक्को इक्क लैणा मनाईआ। जिस नूं सारयां कहिणा चौवीवां अवतारा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां नाल लगाए अखाड़ा, अकल कलधारी वेस वटाईआ। प्रीती चाढ़े रंग गाड़्हा, फिर उतर कदे ना जाईआ। सांझा होवे यारा, रहमत विच समाईआ। धुर दा बोल जैकारा, नाअरा इक्क सुणाईआ। दीन मज़्हब दा तोड़ के दायरा, दाअवे आपणे नाल कराईआ। ग़रीब निमाणयां बख्शणहारा, बख्शिश रहमत झोली पाईआ। रस मिठ्ठा कर बणे वरतारा, वर्तमान खोज खुजाईआ। साची सखियां बण भिखारा, कन्त कन्तूहल सेज हंढाहीआ। इक्क सुहाए भगत दवारा, दुतीआ भाउ रहे ना राईआ। जागरत जोत कर उज्यारा, नूर उजाला डगमगाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर परदा लाहीआ। आसा मनसा पूरी कर बख्शे चरण दवारा, द्वारका वासी जित्थे सीस निवाईआ।

११७५
२०

शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्म इक्को इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। गुड़ कहे मेरी नौ छटांक शरीणी, शरीणी वाले दिती वरताईआ। एह लेखा होया जन भगत घर बेणी, जिस दी भुक्ख ना कोए मिटाईआ। जेहड़ा धूढ़ मंगे रेणी, ख़ाकी ख़ाक विच छुहाईआ। प्रभ दा दर्शन लोड़े नैणीं, सनमुख हो के दर्शन पाईआ। ओस दी मुहब्बत वाली कहिणी, कहि के गया जणाईआ। जिस वेले प्रभ ने छड्ड दिती गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती त्रबैणी, तिन्नां लोकां पन्ध मुकाईआ। जामा धार नर नरायणी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। साची सिख्या देवे बेणी, हुक्म इक्क वरताईआ। चार वरन नाता जोड़े भाई भैणी, पिता पुरख अकाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। बेणी कहे मेरे घर वड्डा होया भण्डारा, नौ छटांक गुड़ गया आईआ। मैं शुकर कीता वार हज़ारा, प्रभ दे अग्गे सीस निवाईआ। साढे सैंतीआं सालां विच चक्ख के इक्क वार ल्या नज़ारा, एह खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। भुखयां रह के कीता गुज़ारा, पेट भर ना कोए रजाईआ। गुड़ खा के कीती निमस्कारा, प्रभ नूं सीस झुकाईआ। पुरख अकाल कहे तेरा मेरा इक्क अधारा, तेरा प्रसाद प्रसाद रूप बदलाईआ। जिस वेले निरगुण जोत बिन वरन गोत आवां दुबारा, रूप अनूप वटाईआ। तेरा लेखा जाणां विच संसारा, संसारी भण्डारी नाल रलाईआ। कर्ज़ा रहिण ना देवां उधारा, लेखा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूर कराईआ। गुड़ कहे जिस वेले बेणी मैनूं तक्कया, चक्ख के खुशी मनाईआ। मैनूं सच दवारे रख्या, जित्थे रच्छया करे गुसाँईआ। मेरे अन्तर आ गई सत्तया, सति विच मिल के वज्जी वधाईआ। मैनूं दुःख भुल्ल गया मैं किस तरां कड़ाहे दे विच तपया, अग्नी अग्ग बुझाईआ। गुड़ कहे मैनूं उस वेले बेणी ने किहा तूं सोहँ पढ़ टप्पया, जिस अक्खर ने मेरा सत्थर दिता सुहाईआ। जिस वेले गुड़ कहे मैं जपया, अक्ख खुल्ह गई परदा रिहा ना राईआ। मैनूं नज़री आया इक्को पपया, पप्पा पूरन परमेश्वर पूरन विच समाईआ। मैं कूक कूक के बकया, बकता हो के दिता गाईआ। मेरा विश्वास हो गया पक्कया, पक्का ल्या कराईआ। मैं खिड़ खिड़ा के हस्सया, ताली दिती वजाईआ। किरपा कीती पुरख समथया, मेरा अगला परदा लाहीआ। जिस वेले होवे कलयुग अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उस वेले दीन दयाल आवे नस्सया, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। झगड़ा मुकाए पत्थर वटया, इष्ट दृष्ट इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया मेटे रट्टया, रटन इक्को नाम समझाईआ। गुड़ कहे मैनूं याद आई, आशा विच प्रगटाईआ। इक्को तेरा नाम दुहाई, जिस दोहरी चाल चलाईआ। मेल विछोड़ा करे जुदाई, विच आपणी बेपरवाहीआ। सच बेनन्ती सुण गुसाँईं, गहर

गम्भीर दया कमाईआ। जिस वेले आवें बण के धुर दा माही, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। फिर वी मेला लईं मिलाई, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। एने चिर नूं उथ्थे आ गया इक्क घाई, घसेरा रम्बा हथ्थ विच उठाईआ। ओधरों चल के आ गया इक्क नाई, गुच्छी गल विच लटकाईआ। ओधरों आ गया इक्क भराई, ढोल रिहा खड़काईआ। ओधरों आ गया सौहरे नाल इक्क जवाई, कन्या भेंट जिस कराईआ। ओधरों इक्क जट्ट आ गया करदा वाही, सांघा कंधे उत्ते रखाईआ। ओधरों आ गया इक्क शुदाई, उच्ची कूक कूक जणाईआ। ओधरों आ गया इक्क भाई, जो भाई नाल करे लड़ाईआ। ओधरों भुल्ला आ गया राही, नैणहीण अख्वाईआ। ओधरों हनेरा गया छाई, सूरज आपणा आप मिटाईआ। ओधरों चन्द करी रुशनाई, सीतल धार वहाईआ। ओधरों बेणी अक्ख खुल्हाई, प्रभ दा राह तकाईआ। जे गुड़ खाण नूं आ जाए मेरा माही, उस दा मिठ्ठा मूँह दयां कराईआ। फेर कहवां मैं प्रीती तेरे नाल लाई, यारी तूं वी तोड़ निभाईआ। उने चिर नूं ओथे आ गई इक्क दाई, जो बालकां नूं जन्म रही दवाईआ। उने चिर नूं आ गई बुढ्ढड़ी माई, बिरध अवस्था डंगोरी हथ्थ उठाईआ। उने चिर नूं आ गई किसे क्षत्री बेटे दी झाई, जो अम्मी कहि सुणाईआ। उने चिर नूं आ गई इक्क वैरागण जो प्रभ दे प्यार विच शुदाई, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जां कूके ते माही माही, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। नेड़े आ के आपणे सीने दुहथ्थड़ इक्क लगाई, जोर नाल पट्टां उत्ते छुहाईआ। ओने चिर नूं फिरदा आ गया इक्क गदाई, गदागर पन्ध मुकाईआ। ओने चिर नूं आ गया इक्क कसाई, छुरीआं बग़लां विच लुकाईआ। ओने चिर नूं आ गया इक्क रहनुमाई, जो रहमत रिहा कराईआ। ओने चिर नूं इक्क आ गया जिस दिती वस्त पराई, ठग्गी चोरी कर के झट लँघाईआ। ओने चिर नूं बेणी कहे मैनूं प्रभ दी याद रही सताई, सत्तया विच्चों दिती सवाईआ। ओने चिर नूं इक्क हकीम लै के आया दवाई, शीशीआं नौ हथ्थ रखाईआ। उच्ची कूक के रौली पाई, सब नूं रिहा सुणाईआ। ओने चिर नूं आ गई गौरजां माई, दुद्ध कटोरा हथ्थ टिकाईआ। ओने चिर नूं शदाउण पाउण पक्खा रही झुलाई, आपणी सेव कमाईआ। ओने चिर नूं राउण आसा नेत्र नैणां नीर वहाई, हन्झूआं हार बणाईआ। ओने चिर नूं इक्क राखे ने नेड़े आ के आपणी घुमाणी ऐं भवाई, घुंम घुंमा के दिती वखाईआ। ओने चिर नूं मुसाफ़र आया जिस दे गल विच फसी गराही, पाणी हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा मेला रिहा मिलाईआ। गुड़ कहे मैनूं बेणी किहा चंगा, बड़ा मिठ्ठा नजरी आईआ। ओथे भज्जी आ गई गंगा, आपणा पन्ध मुकाईआ। जमना दा पिण्डा नंगा, तन ओढन ना सीस टिकाईआ। सुरस्ती छड्ड के कन्ढा, आपणा पन्ध चुकाईआ। सच दा माण अनन्दा, सुख सुख विच्चों उपजाईआ। ओने चिर नूं प्रभू रूप धर के

आ गया बन्दा, बन्दगी इक्क सुणाईआ। वेख्यो एथे रहे कोई ना गंदा, गंदगी वाले बाहर कढाहीआ। ओधरों कर के नंगा खण्डा, सब नूं रिहा डराईआ। गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना कहे साडीआं थक्क गईआं टंगां, भज्जीआं वाहो दाहीआ। सुज्ज गईआं जंघां, तेरा नाम दुहाईआ। हुक्म होया कुछ मंग लओ मंगां, आपणी झोली डाहीआ। उह कहिण साडे मुख विच नहीं कोई दन्दा, गल्ल कहिण कोए ना पाईआ। ओने चिर नूं बोल प्या उत्तों चन्दा, सहिज नाल सुणाईआ। नी कमलीओ तुहाडा किथ्थे आ पाणी ठंडा, एस नूं दयो प्याईआ। एह नहीं कोई ख़ाकी बन्दा, जिस दी बन्दगी करदे ओहो नज़री आईआ। ओने चिर नूं गंगा आपणे सीस विच वौहण लग्गी कंघा, पट्टी हथ्थ नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। वे चन्द एह बन्दा कि बन्दगी वाला, सच दे समझाईआ। चन्द कहे एह सब दा रखवाला, धुर दा मालक इक्क अख्वाईआ। सचखण्ड दुआर जिस दी सच्ची धर्मसाला, दर इक्को सोभा पाईआ। सब दा वेखे हाला, हालत खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी बदले चाला, चाल निराली इक्क समझाईआ। पहलों आपणी पट्टी वाह ला, हार श्रृंगार लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। गंगा कहे नीं
११७८ जमना मैनूं वाह दे कंघी, सुरस्ती मेरी पट्टी दे सुहाईआ। नीं सख़ीओ मैनूं दयो अंगी, मैं तन ला के खुशी बणाईआ। मेरी ११७८
हड्डी पसली रहे कोई ना नंगी, परदा ओढन इक्क टिकाईआ। नीं औह आ गया जिस दे कोल शस्त्र जंगी, जंगजू अख्वाईआ।
२० पै गया टेडी डण्डी, औझड़ राह दुहाईआ। भगतां दी मेटणी तंगी, दुखियां दुःख हटाईआ। ओने चिर नूं आ गई हवा ठंडी, सीतल धार वहाईआ। जमना कहे नीं भैणों किते दुनिया कर ना जावे रंडी, बिना कन्त होए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। गंगा कहे मेरा छेती गुंद दयो सीस, सोहणा रूप बणाईआ। नीं मैं मोह लवां जगदीस, मुहब्बत विच फसाईआ। जिस नूं कहिंदे बीस बीस, सरगुण ज़ीरो लए उपजाईआ। बीस दा बण इकीस, वीह इक्की गुरदास दी इक्क पढ़ाईआ। मैं साची करां प्रीत, प्रीतम लवां मनाईआ। विछोड़े विच जुग गए बीत, याद विच तड़फाईआ। मैं पुछदी रही मैनूं आपणा दस्स दे गीत, किस बिध ढोला गाईआ। करवट लै के रोंदा रिहा मेरी निकलदी रही चीक, उच्ची कूक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दस्स के गए ठीक, नित नित संदेश सुणाईआ। नीं सख़ीओ कलयुग अन्तिम रखयो इक्क उडीक, वेला वक्त इक्को नज़री आईआ। जिस ने बदल देणी तवारीख़, तारीख आपणी आप बणाईआ। ओस वेले मंगिओ भीख, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरताईआ। गंगा कहे नीं जमना सुरस्ती, मैनूं चूड़ा दयो चढ़ाईआ। बिन्दी टिप्पी नाल मैनूं आवे मस्ती, सुरख़ी

बुल्लां नाल छुहाईआ। चावां नाल फिरां नसदी, पैर पंजेबां नाल छणकाईआ। फिर वेखो मेरी कज्जल धार अक्ख दी, चिट्टा काला रंग बदलाईआ। मेरे दन्दां रंगण वेखो गूढ़े सक्क दी, जो आपणी कल वरताईआ। मेरी जवानी वेखो अगम्मी रत्त दी, जो लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। मैं सच तुहानूं दस्सदी, भुल्ल कोए ना पाईआ। सदा ओसे दा नाम जपदी, ओसे दी आस रखाईआ। चारों कुण्ट लभ्भदी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं कसम ओसे रब्ब दी, जो कर के बैठा जुदाईआ। बिना चरणां तों मैं चरण ओहदे दब्बदी, ख़ाली हथ्थीं सेव कमाईआ। मेरी मुहब्बत अंदरे अंदर वधदी, अजे दर्शन पाया नहीं धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल खिलाईआ। जमना कहे नीं गंगी जुग चौकड़ी देंदा आया लारे, अछल अछल्ल अख्वाईआ। बीते जुग चारे, चारों कुण्ट दुहाईआ। जिस गुर अवतार पैगम्बर रखे कुँवारे, हुक्मे विच फिराईआ। पता नहीं ओस ने कदों चढ़ना आप खारे, कूड़ीआं चप्पणीआं भन्न वखाईआ। सुरस्ती कहे नीं भैणो उह सरगुण तों निरगुण हो के फेर आवे दुबारे, दोहरा वेस वटाईआ। शायद तरस कर के तैनूं लै जाए ओस चुबारे, जिस दा दरवाज़ा ना कोए खुल्ल्हाईआ। गंगा कहे जिस वेले मैं गुर अवतार पैगम्बर वेखे लाड़े, दुनिया विच तत वजूद हंढाहीआ।
११७६ ओस वेले मैनूं कोई अंदरों देंदा रिहा इशारे, हौली हौली समझाईआ। तूं सदा रहिणा कुँवारे, कुँवारी कन्या रूप वटाईआ। ११७६
अन्त भगवन्त आपे देवे सच नज़ारे, नज़र तेरे उत्ते टिकाईआ। जमना कहे नीं तूं वण्डीं गिरी बदाम छुहारे, सोहणी खुशी
२० बणाईआ। बेणी किहा ओ कोझीओ कमलीओ प्रभू जदों आए ते आए भगतां दे वाड़े, तुहाडी सुरख़ी बिन्दी कम्म किसे ना २०
आईआ। अंदर वड़ के सीना पाड़े, नाम अणयाला तीर चलाईआ। खेल करे हाढ़े सर्दी विच जाड़े, ओहदी बेपरवाहीआ। गंगा कहे ओ बेणी वेख मैं वी नार मुटयारे, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। जिस ने दोवें नैण शृंगारे, ब्रह्मा शंकर वरगे दिते हिलाईआ। उह मेरी सच्ची सरकारे, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस वेले मैं मंग मंगी दवारे, आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। सुरस्ती कहे नीं गंगा जे प्रभू आए अचानक, की की भेंट चढ़ाईआ। जमना कहे की उह समां होवे भयानक, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। गंगा कहे मैं ओसे दी अमानत, आपणा आप अग्गे टिकाईआ। बेणी कहे तुहाडी केहड़ा देवे ज़मानत, मैनूं दयो समझाईआ। जेहड़ी वस्त प्रभ दे कोल नयामत, पहलों भगतां झोली पाईआ। ओन्हां नूं कर के सही सलामत, आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जमना कहे गंगा नीं पहलों आपणे केस धो, धोती साड़ी फेर लगाईआ। साडे नालों हो निर्मोह, मोह मुहब्बत पीआ विच रखाईआ। ओस बिन अवर ना को, इक्को ओट तकाईआ। जे तेरे नाल जावे छोह,

शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। फिर तेरे जोगा जाए हो, होका इक्को नाम सुणाईआ। सच प्रकाश दी करे लो, बिन लोयणां डगमगाईआ। फिर इक्क रहे ना दो, दूआ एके विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। जमना सुरस्ती कहे गंगीए रखीए आस, आसा इक्क वधाईआ। जे उह भगतां दा दास, भगतां खुशी बणाईआ। देवे नूर प्रकाश, जोत डगमगाईआ। कदी साडी बुझावे प्यास, तृष्ना दूर कराईआ। जमना तक्क के उत्ते आकाश, हथ्थ जोड़ के वास्ता पाईआ। तेरी किथ्थे करीए तलाश, सानूं दे समझाईआ। आवाज़ आई जित्थे मेरे भगत ने मेरे सिर विच पाउणा जल ग्लास, गलवकड़ी गल विच पाईआ। उह दिशा लैणी भाख, परदा दिता उठाईआ। जिस वेले गुरमुखां धूढ़ी मस्तक लाउणी राख, टिक्के जगत वखाईआ। ओस वेले मैं उपर होणा नहीं आकाश, धरती उत्ते सोभा पाईआ। जे तुहानूं होया विश्वास, फेर भगतां नाल रलाईआ। धर्म बणा के साथ, सगला जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख मेरी चढ़ने बरात, संगी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। गंगा कहे मेरी मेंढी खुल्ही खुल्ही दिसे गुत्त, सति श्रृंगार ना कोए बणाईआ। ख़ाली नज़री आए बुत्त, बुत्तख़ाने पई दुहाईआ। मैं सब नूं रही पुछ, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं दस्सो कुछ, संदेसा इक्क सुणाईआ। मेरा माही गया रुस्स, रुसयां किवें मनाईआ। एह वड्डा डाहढा दुःख, दर्द ना कोए चुकाईआ। जन भगत किहा ना रो कर चुप, चुप चुपीता भेव खुल्हाईआ। उह सब दे अंदर बैठा छुप, आपणा परदा पाईआ। ज़रा प्यार दी अक्ख पुट्ट, नेत्र नैण खुल्हाईआ। तेरी धारों पए फुट्ट, घर साचे वज्जे वधाईआ। तेरी मैल जाए धुप, जो कलयुग जीवां दिती चढ़ाईआ। तेरे सिर विच हरि संगत पाए दही दा फुट्ट, साचा सगण बणाईआ। पंज टक्क ला के जगह लैण पुट्ट, कही दे नाल वही नज़री आईआ। जिस विच पुराणा लेख लगा के लई चुक्क, हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तेरी गंढी जाए ना टुट्ट, टुट्टयां रिहा जुड़ाईआ। सुरस्ती कहे नी गंगा अग्गे रखीं एसे दी ओट, लख लख शुकर मनाईआ। सुरस्ती मख़ौल नाल कहिंदी जमना अज्ज दे रिवाज दा एहनूं वी पवा दे कोट, कलयुग वेस बणाईआ। सिर ते छुहा दे टोप, पटे दे बणाईआ। जन भगत कहिण कमलीए तक्क लै इक्को जोत, जो जोत जोत रुशनाईआ। अकल बुद्धी दी नहीं सोच, समझ तों परे पढ़ाईआ। एह गुरमुख शौकीन बहुत, साफ़ सुथरे सोहणे नज़री आईआ। एह कोई कपड़े नहीं धोंदे रोज, अंदरों मैल दिती धवाईआ। एह कोई सिर ते पाउँदे नहीं सग्गी चौंक, श्रृंगार पट्टी ना कोए छुहाईआ। एह कोई हंढाउँदे नहीं मरन वाला खौंत, जो सेज सुंञी दए कराईआ। एह जांदे नहीं कदे औंत, औतरे ना जग अख्वाईआ। एहनां दी ओथे पहुंच, जित्थे पहुंच के मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती चारे इक्ठीआं होईआं थाँ अनडिठ्ठे, जगह समझ कोए ना पाईआ। अज्ज प्रभू नाल बचन करीए मिठ्ठे, हौली हौली सुणाईआ। वस्त्र पाईए चिट्टे, सोहणा रूप वखाईआ। भूष्ण दे पौंचे कसे जाण उत्तों गिटे, तणी खिच्च खिच्च बंधाईआ। नाले वेखीए पूरब दे चिठ्ठे, की लेखा दिता वखाईआ। क्यों साडे तटां उत्ते सानूं पैंदे पत्थर वट्टे, ठग्ग चोर करन लड़ाईआ। ब्राह्मणां पा लए हिस्से, पंडत बग़लीआं विच टिकाईआ। साडे बण गए कित्ते, साहिब नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा सब दी डोरी खिच्चे, अंदरे अंदर हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आप चुकाईआ। गंगा कहे की होया वक्त वेला, घड़ी घड़ी दयो जणाईआ। हुण साहिब सतिगुर सब नालों हो जाए वेहला, आपणी कार कमाईआ। नौ छटांक गुड़ दा लै आउ ढेला, शरीणी वाला सगण बणाईआ। भगतां वाला मेला, मिलणी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सखीओ सब दा सज्जण सुहेला, अक्खीओ नैण जोत अलबेला, मुहब्बत प्यार विच सदा वेहला, कम्म काज नज़र कोए ना आईआ।

११८१ २०

गंगा कहे दुर्गा दी चण्डी, चण्डालां दए खपाईआ। सिध्धी कर के डण्डी, मार्ग इक्क लगाईआ। जिस दा मालक सूरा सरबंगी, इक्को इक्क अख्वाईआ। जिस ने चलणा पैरीं नंगी, आपणी सेव बणाईआ। प्रभ दी धार सदा सच्च, सच सच सच खेल खिलाइंदा। जुग चौकड़ी भाग लगावे काया कच्च, कंचन गढ़ सुहाइंदा। भगतां लूं लूं अंदर जाए रच, रचना आपणी आप वखाइंदा। भेव खल्ला के ब्रह्म मत, तत्व तत परदा उठाइंदा। सब दी जाणे मित गत, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। वेखो खेल गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती, नेत्र अक्ख खुल्लाईआ। प्रभ दी इक्को हस्ती, जो हर घट रिहा समाईआ। नाम खुमारी दे के मस्ती, मस्त मस्ताने दए बणाईआ। मालक बण के अर्शी, फर्श दए वड्याईआ। ग़रीबां बण के दर्दी, दुखियां दुःख गवाईआ। सति दा बण के दरज़ी, विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। सब दी मन्ज़ूर कर के अर्ज़ी, लेखा लेखे विच्चों बणाईआ। बण के धुर दा ग़रज़ी, आपणा फेरा पाईआ। अग्गे चले ना किसे दी मर्ज़ी, शाह सुल्तान सीस झुकाईआ। गुरू रहे कोए ना फ़र्ज़ी, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। कलयुग मेटे अन्धेर गर्दी, साचा चन्द दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वेखो अछल अछल्ल दी, जो छलधारी दए समझाईआ। छलधारी मारे झटका, हलूणा इक्क लगाईआ।

११८१ २०

सीस रहे किसे ना पटका, ओढण उपर ना कोए वखाईआ। सब दे अंदर पै जाए खटका, सांतक सति ना कोए वरताईआ। एह खेल पुरख समरथ का, सच स्वामी आप वरताईआ। कलयुग कूड़ा रथ अग्न का, चारों कुण्ट दुहाईआ। जन भगतां वेला मिलण का, जोत नूर चमकाईआ। लहिणा पूरा होणा सगन का, तृष्ना दए बुझाईआ। नाता तुट्टे कूड़ बदन का, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। बिरथा खेल जगत यतन का, बिन प्रभ होए ना कोए सहाईआ। लेखा चुकणा वतन का, बेवतनां वतन पुचाईआ। एह घाट उसे पत्तन का, जिस दी पत्रे दे ना सकण सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। चारे कहिण साडा होया पक्क, पक्की तरह सुणाईआ। नाता जुड़या सच, सच विच समाईआ। किशन सिँघ ला दे पंज टक्क, कही हत्थ विच उठाईआ। आसा सिँघ दहीं सुटे झट, कटोरा मूधा देणा कराईआ। गुरमुखां मुट्ठां मीटणीआं झट, कन्नां उत्तों दबाईआ। फेर वारो वारी मारनीआं ठप्प ठप्प, आपणा बल प्रगटाईआ। तेज भान जल ग्लास देणा उलट, सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। तेज भान पाणी पावे सीस, खुशी नाल उलटाईआ। एह खेल खुशी जगदीश, आपणा रंग चढ़ाईआ। धर्म दी इक्क प्रीत, प्रीतम रिहा वखाईआ। गुरमुखां कर के सीत, अग्नी तत गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सारे मारो नाल मुक्की, पहले गुरमुख आप लगाईआ। फिर निशान्यौं कोई ना जावे उकी, सारे वारो वार वारी लैण भुगताईआ। जो मारन सो होवण सुखी, मेहर नज़र उठाईआ। जिस ने पैरीं पाई नहीं जुत्ती, चरण धूढ़ देण दी ख़ातर आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। छेती छेती मारो नाल ज़ोर, आपणी खुशी बणाईआ। जिस दे हत्थ तुहाडी डोर, खेल रिहा वखाईआ। सब दी सांझी करे लोड़, नाता इक्क जुड़ाईआ। भाण्डा वेखो ठकोर, ठठयार बण के आपणा हत्थ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल भुगताईआ। अज्ज मारो खूब, गुस्से विच चोट लगाईआ। फेर बणया रहे महबूब, मुहब्बत विच सरनाईआ। जिधर तक्को उधर मौजूद, हर घट डेरा लाईआ। पाणी दे बदले देवे दूध, अमृत रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर बणाईआ। जिंनी ज़ोर दी मारोगे सट्ट, आपणा बल वधाईआ। ओनी छेती होवेगा प्रगट, परदा जगत उठाईआ। सब दी लेखे लावे रत, रतन अमोलक खोज खुजाईआ। जिन्हां सोहँ नाम ल्या जप, माणक मोती गल लटकाईआ। एथे उत्थे रखे पत्त, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। सांझा नाता जोड़े पक्क, अग्गे हो ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर बहाईआ। मार मार के सब नूं होवे

११८२
२०

खुशी, खुशी लैणी बणाईआ। अन्तर होवे रुची, प्रेम विच समाईआ। काया होवे सुच्ची, दुरमति मैल धवाईआ। गुरमुख आत्म रहे कोए ना रुठ्ठी, रुस्सी लैणी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। मुक्कीआं मारो छेती छेती, आपणी सेव कमाईआ। आपणे अंदर दे हो जाओ भेती, परदा रहे ना राईआ। लोकमात बणे परदेसी, देस आपणा लैणा वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ। खेल खेलण नूं आया जग, जगजीवण दाता बेपरवाहीआ। जिस कारण लए सद्द, होका नाम सुणाईआ। उसे दा लहिणा अज्ज, पिछला मूल चुकाईआ। भगतां बणा के यद, यदपि आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची इक्क वखाईआ। दरगाह साची दा वेखो नज़ारा, हरिजन आप वखाइंदा। धर्म दा इक्क दवारा, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। सब ने बोलणा सच जैकारा, तूं ही साडा बाप तूं ही पिता माईआ। तूं ही पाक रसूल (परवरदिगारा), तूं ही नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट आपणा डेरा लाईआ। हर घट डेरा लावण आया, आपणी दया कमाईआ। उजड़े घर वसावण आया, मेहर नज़र टिकाईआ। अमृत मेघ बरसावण आया, तृष्ना तृखा बुझाईआ। बुझे दीप जगावण आया, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर सुहावण आया, सच सिँघासण सोभा पाईआ। अमृत मेघ बरसावण आया, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम जपावण आया, जगजीवण दाता वड वड्याईआ। कूड़ी क्रिया डेरा ढाया, साचा राह इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पीर पैगम्बर कहिण तूं आया ठाकर, आपणा फेरा पाईआ। कलयुग वेखे डूँग्घा सागर, भँवरी फोल फुलाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे आदर, दीन दयाल होए सहाईआ। जो लहिणा देणा बकाया तेग़ बहादर, सब दी झोली पाईआ। गुरू गोबिन्द सूरा इक्क बहादर, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। जिस दा मालक इक्को कादर, करनी दा करता इक्क अख्वाईआ। निर्मल नूर करे उजागर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। खेल खेलण नूं आया ख़लक, ख़ालक फेरा पाईआ। लेखा जाणे उपर फ़लक, अर्शी प्रीतम धुरदरगाहीआ। की लहिणा देणा बणावां भगत, परदा सके ना कोए उठाईआ। निरगुण धार नुरानी झलक, झल्ले सब नूं दए बणाईआ। जन भगतां मस्तक ला के तिलक, तिलकणबाज़ी तों लए बचाईआ। जिस वही दे उत्ते जिलद, वहीआं दा लेख मुकाईआ। मनुआ करे कोई ना इल्लत, आलमां तों परे करे पढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडी इक्को सिम्मत, इक्को राह वखाईआ। मुहब्बत विच करो हिम्मत, हौसला हक वड्याईआ। तुहाडे विच्चों कोई ना बणयो किसे दा निन्दक, निंदया कम्म किसे ना आईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेल मिलाईआ। साचा मेला मेलण आया, आपणी दया कमाइंदा। मार्ग इक्को इक्क समझाया, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। साहिब सतिगुर फेरा पाया, निरगुण कार कमाइंदा। वेला वक्त याद कराया, पूरब परदा लाहइंदा। जिस किनारे डेरा लाया, एह किनारा पिछला सोभा पाइंदा। बाल्मीक एथे दीप जगाया, नौ दिन नूर चमकाइंदा। अन्तिम आसा इक्क रखाया, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जिस वेले कलयुग अन्धेरा छाया, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। प्रगट होवे बेपरवाहया, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। भगत सुहेला बणके आया, गुर चेला रंग चढ़ाइंदा। मेरा लहिणा देणा लेखा पूरा दए कराया, आसा विच निरासा रहिण कोए ना पाइंदा। वाह वाह अचरज खेल रचाया, आपणी रचना आप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दी साची कार कमाइंदा। रात कहे मैं रैण भिन्नी, भिन्नड़ी नज़री आईआ। मैं खेल वेखी वड्डी किन्नी, किन्नी दयां समझाईआ। लहिणा मुकणा दिनीं तिन्नीं, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जेहड़ी नींह प्रभू ने चिणी, अन्त पूरी दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। रैण कहे मैं ख़ुशीआं वाली रात, लोकमात वज्जी वधाईआ। इक्ठी होई भगतां बरात, गुरमुख सोहणे सोभा पाईआ। सति धर्म दी इक्क जमात, चार वरन जोड़ जुड़ाईआ। प्रभू दी कर तलाश,
११८४ निरगुण नूर वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना पृथमी आकाश, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। जिन्ां दा अंदर बणया विश्वास, ११८४
२० विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। मालक इक्क पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, २०
दर देवे माण वड्याईआ। रूह बुत्त करके पाक, दुरमति मैल धवाईआ। पिछला औगुण करके मुआफ़, अग्गे होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रखे सच्चा साक, संगी बहुरंगी अनमंगी दात आपे झोली पाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिंघ दे गृह पिण्ड बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

सचखण्ड दवारे खेल अपार, हरि अपरम्पर आप कराईआ। भज्जे फिरन गुरू अवतार, पैगम्बर वाहो दाहीआ। इक्ठे हो के एका वार, संगत इक्क बणाईआ। कुछ दस्स अर्जन यार, पिछला भेव खुल्ाईआ। की लहिणा विच संसार, बाकी नज़री आईआ। जिस दा होया नहीं इज़हार, कलम शाही ना रंग चढ़ाईआ। गुफ़त शुनीद गुफ़तार, ख़ुफ़िया खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका परदा रिहा चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्ठे हो के रहे हस्स,

बिन हथ्थां ताली लगाईआ। अर्जन कुछ सानूं दस्स, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। अर्जन सहिज नाल पुट्ट के अक्ख, आख़र रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जिस दा नाम दस्स के वक्ख वक्ख, सिफ्तां विच सालाहीआ। उह हर घट अंदर रिहा वस, तुहाडी कलाम दए गवाहीआ। मेरा ओस दे नाल पक्क, कौल इकरार आपणा इक्क जणाईआ। जिस वेले सृष्टी सति धर्म तों जाए नठ, साचा कर्म ना कोए कमाईआ। सब दा खेड़ा होए भठ्ठ, भठियाला अग्नी तत तपाईआ। हरि का नाम लए कोई ना रट, मणका मन का ना कोए भवाईआ। जगत प्याले पीण गट गट, रस जाम ना कोए छकाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश होण बेवस, साचा संग ना कोए रखाईआ। उस वेले होवे इक्क प्रगट, जो सब दा पिता माईआ। धर्म दवारा खोल्ह़े हट्ट, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। भाग लगाए रावी तट, किनारा इक्क सुहाईआ। जित्थे बाल्मीक आपणे सज्जे चरण दी डोल्ह़ के गया रत्त, बूँदां पंज सत्त चुआईआ। फेर वेख के उपर गगन दी छत्त, वास्ता दिता पाईआ। हे मेरे परमेश्वर पति, स्वामी तेरी इक्क सरनाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। कलयुग मन्दिर रिहा ढठ्ठ, कूड़ी क्रिया नींह रही उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क तकाईआ।
११८५ अवतार पैगम्बर वेखण नाल ग़ौर, नानक नाल वड्याईआ। अर्जन तेरा लेखा विच लाहौर, जित्थे मिली सज़ाईआ। अर्जन ११८५
२० ने नंगे कर के मौर, आपणा पिण्डा दिता वखाईआ। अजे होई नहीं भौर, भँवरी विच लोकाईआ। मेरे पुरख अकाल दा २०
इक्को जौहर, जौहरी इक्क अख्वाईआ। उस वेले इक्क मस्त रैहन्दा सी कलानौर, कला अंदरली इक्क वखाईआ। सौंदा सी विच रौड़, जगत मकान ना डेरा लाईआ। ओथे अजे वी इक्क जौहड़, तालाब छोटा सोभा पाईआ। ओहदे पंज सत्त पौड़, पौड़ी पौड़ी दए दुहाईआ। ओस ने किहा जेहड़ा अर्जन नूं रिहा बौहड़, तत्ती तवी होए सहाईआ। उह होणा ब्राह्मण गौड़, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस दे सीस झुलदा चौर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। इक्क दुखीआ रैहन्दा सी विच कथलौर, नेत्र रो रो हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कुछ अर्जन दे सलाह, मश्वरा सच बणाईआ। तेरा केहड़ा उस वेले दा गवाह, जो सही दए कराईआ। अर्जन किहा वाह वाह, एह की पुच्छ पुछाईआ। मेरा साहिब कदे ना होवे जुदा, जुग चौकड़ी संग निभाईआ। भगत उधारने जिस दी अदा, अदल इन्साफ़ कमाईआ। जिस वेले मैं करी अन्तर दुआ, सीस जगदीश झुकाईआ। उस ने मैनूं सहिजे ल्या उठा, अग्नी तत पोह ना सके राईआ। गोदी चुक्क के मैनूं एह किनारा दिता वखा, जिस दा भेव ना किसे समझाईआ। इक्की बरस सप्त ऋषी एथे गए बिता, दुनिया विच्चों लुक के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा वेला दए सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण अज्ज जाईए किहड़े कन्ढे, कवण घाट वड्याईआ। दीन दुनी दे हिस्से वण्डे, सांझा दर ना कोए सुहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ वेखे चंगे, गुरूदवारा सोभा पाईआ। ओथे वस्सण वाले मंदे, मन वासना ना परे हटाईआ। जां वेखीए किनारे तट गंगे, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। ओथे वी फिरदे पंडे, जो ठग्गी चोरी यारी रहे कमाईआ। चारों कुण्ट हुन्दे दंगे, दग़े फ़रेब विच दुहाईआ। सब दे हाल होए मंदे, मंद वासना ना कोए कढाहीआ। अर्जन किहा सुणो हुक्म सूरे सरबंगे, सति सच दयां सुणाईआ। जित्थे मिलणा अज्ज अनन्दे, सुख सुख विच्चों प्रगटाईआ। ओथे प्रभू दे भगत ते बन्दगी वाले होणे बन्दे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़े लेख मेरे भविख्त ओस दवारे टंगे, आपे लए कढाहीआ। पंजां सिक्खां ने पंज हथ्थ विच रखणे साढे तिन्न हथ्थ दे डण्डे, मोटा पतला वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला होवे संगे, साचा संग बणाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मक्खण सिँघ दे गृह बाऊपुरा ज़िला गुरदासपुर ★

गुर अर्जन कहे गुर अवतारो एथे फ़रीद ने बध्धा इक्क दिन संगल, तन आपणे नाल बंधाईआ। बड़ा घना हुन्दा सी जंगल, धूणी प्रेम तपाईआ। खुशीआं विच गा के बणाया मंगल, सोहणा राग सुणाईआ। एथे रैहन्दा सी इक्क होर भंगड़, पोसती सोभा पाईआ। उत्ते लैण नूं रखदा सी इक्क तंगड़, घरे चार चार उंगलां वण्ड वण्डाईआ। उस दा इक्क साथी चारदा सी डंगर, मज्झां गाईआ विच रलाईआ। इक्क शिवां दा हुन्दा सी मन्दिर, मूर्ती पार्बती वाली सुहाईआ। उस दे पिच्छे रैहन्दा सी इक्क बन्दर, जेहड़ा रोज़ दा प्रशाद खा के आपणा झट लँघाईआ। इक्क बुढ्ढा जेहा पंडत जिस दा नाम चन्द्र, चन्द निशान मथ्थे उत्ते सुहाईआ। इक्क पित्तल दा लग्गा हुन्दा सी जंदर, जिस दी कुंजी पेचां तिन्नां नाल वड्याईआ। लागे धूंआं हुन्दा सी ईंधन, लक्कड़ी विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। गुर अर्जन कहे सुणो सर्ब अवतारी, अवतर दयां जणाईआ। इक्की फुट दी हुन्दी सी इक्क अटारी, सोहणी बणत बणाईआ। उस विच वसे कन्यां कुँवारी, उमर इक्की साल वखाईआ। उस दे तन दे अंदर बीमारी, सदा प्रभ दी याद सताईआ। मेरी ओस नाल लग्गे यारी, जो यारना तोड़ निभाईआ। जगत सेज ना जाए श्रृंगारी, तत कन्त ना कोए हंढाहीआ। मैनूं बख्शे इक्क खुमारी, अमृत जाम प्याईआ। सवेरे उठ के दए बहारी, साफ़ सुथरा थाँ कराईआ। मेहनत

करे जगत दिहाढ़ी, आपणा भार वण्डाईआ। इक्क दिन सोहणी बण के लाड़ी, हार शृंगार खूब सजाईआ। अक्खीं मीट ध्यान धर राह तक्के जोत निरँकारी, निराकार वेख वखाईआ। मैं सदके तैथों वारी, घोली घोल घुमाईआ। जे मिल जावें इक्क वारी, गलवकड़ी लवां पाईआ। भावें दुश्मण बण जावे सृष्टी सारी, तेरी ना होवे जुदाईआ। हौका लै के आह मारी, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मैं आपणे सीस पट्टी संवारी, मींढी सुहाग बणाईआ। बिना कन्त तों कम्म किसे ना आवे नारी, जगत दुहागण कहे लोकाईआ। प्रभू तेरे मिलण दी करी त्यारी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। मेरी आशां दी सिक्दारी, सध्धरां विच दुहाईआ। ओने चिर नूं आ गया इक्क मदारी, डौरू रिहा खड़काईआ। इक्क लक्कड़हारे दे हथ्थ कुहाढ़ी, भज्जया वाहो दाहीआ। इक्क बुढे दी रत्ती दाढ़ी, आयू सत्तर साल प्रगटाईआ। इक्क बुढ्ढी लंगड़ी माढ़ी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। इक्क जोबनवन्ती सिर ते चुक्क के खारी, फूलन बरखा लाईआ। इक्क रोंदा आ गया पहाड़ी, महीउँ तुहीउँ कहि के गाईआ। इक्क भड़पूंजे ने हथ्थ उठाई इक्क चंगयाड़ी, चारों कुण्ट भवाईआ। इक्क परदेसण आ गई ज़ात दी चम्यारी, टुट्टी जुत्ती गंढु पवाईआ। ओधरों इन्द्र ने छहबर ला दिती भारी, मेघ रिहा बरसाईआ। एह खेल अजब न्यारी, निराकार कराईआ।
११८७ गुर अर्जन कहे अवतार पैगम्बरो ओस वेले सब दी आह पुकारी, कूक कूक सुणाईआ। जे प्रभू एस कन्या नाल सब नूं दर्शन देवें इक्क वारी, सारे दर तेरे सीस झुकाईआ। फिर आत्मा रहे ना किसे दी कुँवारी, गवारी रूप ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल किहा बच्चयो तुहानूं जन्म देवां फेर दुबारी, दोहरी खेल खिलाईआ। निरगुण जोत आवां कर उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। तुसां फेर सारयां इक्क दे होणा पुजारी, मन्दिरां दा मालक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो लहिणा रिहा मुकाईआ।

२०

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मक्खण सिँघ दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

अवतार पैगम्बरो ओथे रैहन्दा सी इक्क फ़क्कर, चरण जोड़ा ना कदे छुहाईआ। रैण वसेरा करे विच छप्पर, कुल्ली कक्ख वड्याईआ। बणाई सी नाल पत्र, एका दूआ जोड़ जुड़ाईआ। उस दे हिस्से सी बहत्तर, छोटे छोटे वण्ड वण्डाईआ। सुघड़ स्याणा बण के चतुर, चतर्भुज दा राह तकाईआ। इक्क कन्नी आपणी कतर, अद्धविचकार दिती लटकाईआ। नेत्र रो के अथ्थर, सहिजे दिता वगाईआ। मुहब्बत दा पा के सत्थर, आसण डेरा लाईआ। मुक्खों लग्गा कथन, तेरी बेपरवाहीआ। जे आवें मेरे पत्तण, आपणा फेरा पाईआ। फिर पूरा होवे यतन, यथार्थ मिल के वज्जे वधाईआ। उसे थाँ दो मैंडक लग्गे

वसण, जल कंडे डेरा लाईआ। जिस वेले कन्ढा लग्गा ढठ्ठण, दोहां दिती दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। अर्जन कहे फ़कीर कुल्ली विच पढ़े कलाम, अल्ला अल्ला ढोला गाईआ। ओथे आया मस्जिद दा अमाम, काली कफ़नी तन छुहाईआ। सत छुहारे नौ बादाम, दाणा पिसता पंज जोड़ जुड़ाईआ। नाल थोड़ा जेहा पकवान, नीली टाकी गंढु रखाईआ। इक्क करदा आए ध्यान, तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। अर्जन कहे उथ्थे बूटा इक्क सरूर, नेज़े नौ लम्बा नज़री आईआ। कुल्ली तों सत्त कदम सी दूर, सोहणा सुथरा रूप बदलाईआ। ढाई गज़ उत्ते परे खजूर, आपणा पौदा रिहा सुहाईआ। उथ्थे तिन्न कम्म करन मज़दूर, मिट्टी घट्टे वाली उडाईआ। उधरों हवा ने पाया फ़तूर, आपणा ज़ोर जणाईआ। ठंडी पवण करे चूर चूर, दु:ख दर्द दए सताईआ। उने चिर नूं आकाश चों चमकया नूर, नूर विच रुशनाईआ। सब ने बेनन्ती कीती किड्डा सोहणा रावी दे कंडे बणया पूर, पूरन आसा इक्क कराईआ। जे कोई पार किनारे लै जाए दूर, बिनां पतण पन्ध मुकाईआ। फक्कर ने किहा उह इक्को मालक जो मनसा पूरी करे ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। उत्तों आई अगम्मी तूर, तुरत दिता सुणाईआ। तुहाडा सब दा सांझा कठ्ठा कर के पूर, पुरी अनन्द दा लेखा नाल मिलाईआ। हाज़र हो के हज़ूर, सब नूं पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक्क रंगाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ करतार कौर दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

अर्जन कहे सारे वेखो नाल कयासा, पैगम्बर ध्यान लगाईआ। जित्थे भरिंगू दा सी वासा, नौ साल छुप के झट लँघाईआ। कुंडलीआं दा खाता, बहुता एथे दिता लिखाईआ। आपणी निशानी रखदा सी गड्ड के इक्क छापा, जंगल विच दूरों नज़री आईआ। इक्क दिन उस नूं चढ़या ज़ोर दा तापा, बदन अग्ग वांग तपाईआ। दूजा कोल नहीं सी साथा, संगी संग ना कोए वखाईआ। नेत्र रो के याद कीता तूं ही पिता तूं ही माता, दूजा दिसे ना कोए सहाईआ। किरपा करी पुरख अबिनाशा, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। तेरी पूरी करां आशा, मनसा मनसा विच मिलाईआ। कलयुग अन्तिम तक्क बणया रहवां राखा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस वेले दीन दुनी दा वेखण आवां तमाशा, निरगुण वेस वटाईआ। उस वेले तेरा पूरा करां घाटा, चिन्ता ग़म चुकाईआ। भरिंगू निउँ के टेकया माथा, डण्डावत विच सीस निवाईआ। पुरख अकाल किहा इक्क याद रखीं पाठा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फिर दूर दीआं नेड़े होण वाटां, अगला पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार

पैगम्बरो एह अगम्मी बातां, लिखण वाला नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं लिख्या जोती दा जाता, जागरत जोत इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा पूरा करे भरवासा, भरमदा रहिण कोए ना पाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सन्त सिँघ दे गृह बाऊ पुर ज़िला गुरदासपुर ★

अवतार पैगम्बरो उत्थे रैहन्दा सी गुरदेव, जो शंकर गुरू नूं मनाईआ। पाहन दी करदा सी सेव, पत्थरां संधूर छुहाईआ। ठाकर ठाकर कहिंदा सी जिहव, रसना नाल सालाहीआ। कुछ आपणा दस्स भेव, की तेरी बेपरवाहीआ। भोग चढ़ाउँदा सी रोज़ मेव, हरी सौगी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। इक्क दिन गुरदेव सी सुत्ता, अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। ओहदा मुख चट्ट गया कुत्ता, ज़बान बुल्लां उत्ते फिराईआ। उस नूं झट आ गया गुस्सा, डण्डा दिता लगाईआ। जां फिर तक्कया ते नूरी दिस्या जुस्सा, तेज जोत रुशनाईआ। फेर वेख्या वड्डीआं वड्डीआं दाढ़ी मुच्छां, वाल लंम्यां नाल सुहाईआ। फेर वेख्या हो गया गुच्छा मुच्छा, लत्तां बाहवां नज़र कोए ना आईआ। फेर वेख्या घोना मोना कुच्चा, दाढ़ी मुच्छ कटाईआ। फेर वेख्या पैरीं है नहीं जुत्ता, नंगी पैरीं सोभा पाईआ। फेर वेख्या उस दा लूं लूं फट्टड़ होया दुक्खा, घाउ घाउ उत्ते छुहाईआ। फेर वेख्या निक्का निक्का टुक्का, टुक्कड़े टुक्कड़े सोभा पाईआ। फेर वेख्या काला रंग होया बुट्टां, साची चमक ना कोए चमकाईआ। फेर वेख्या अद्धविचकारों टुट्टा, आत्म परमात्म वण्ड वण्डाईआ। फेर वेख्या ते आपणी धारों फुट्टा, सोहणा रूप वखाईआ। फेर वेख्या ते वड्डा लंमां उच्चा, जिस दा अन्त ना कोए जणाईआ। फेर वेख्या बण गया प्रेम प्रीती दा गुच्छा, गुंझल सके ना कोए खुल्ह्लाईआ। फेर वेख्या सब दे अंदर लुक्का, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। फेर वेख्या चार मुखा, ब्रह्मे रिहा पढ़ाईआ। फेर वेख्या चार भुज्जां ना लिंग ना तुचा, भजन बन्दगी बाहर डेरा लाईआ। फेर वेख्या उत्ते ओढ़ के धुस्सा, बैठा सोभा पाईआ। फेर वेख्या भगतां गोदी रिहा चुक्का, आपणी झोली रिहा भराईआ। फेर वेख्या उत्तों गुरमुख मारन मुक्का, एह अर्जन गुर अवतार पैगम्बरां दिता वखाईआ। फेर वेख्या ग़रीबां उपर तुठ्ठा, रहमत सच कमाईआ। फेर वेख्या चिट्टा तागा बन्न्हे गुटां, आपणी कार कमाईआ। फेर वेख्या प्रेम प्यार दीआं देवे लुट्टां, अनमुलड़ी दात वरताईआ। फेर वेख्या सब नूं कहे आओ मेरे पुत्ता, पूत सपूते आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग रिहा चढ़ाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ भाग सिँघ दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

अर्जन किहा ओथे रैहन्दा सी इक्क ढाडी, ढोलक ढिड्ड दी सदा वजाईआ। ओहदी प्रीत प्रभू नाल डाहढी, डाहढे अग्गे सीस झुकाईआ। नाल रखे बुढ्ढी दादी, मुहब्बत विच मुहब्बत आप बणाईआ। ओथे रोज़ आउँदे जांदे पाँधी, फिरन चाँईं चाँईंआ। इक्क आ गया देवर भाबी, झगड़ा कर कर रहे सुणाईआ। इक्क आ गया बुड्ढा नढ्ढा बाढी, हथ्थ पिच्छे रखाईआ। इक्क आ गया वजाउँदा नादी, धुन उच्ची सारी सुणाईआ। इक्क पेलदा आ गया बाज़ी, नटुआ नट वखाईआ। इक्क बग़ल कुरान लै के आ गया काज़ी, फ़तवा शरअ वाला सुणाईआ। इक्क सूरबीर आ गया ग़ाज़ी, भय नाल डराईआ। इक्क घोड़ा आ गया ताज़ी, वाग रास ना कोए रखाईआ। इक्क फ़कीर आ गया नमाज़ी, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सारे कहिण जे बण जाईए इक्क जमाती, मिल के वज्जे वधाईआ। संदेशे विच मिली पाती, हुक्म दिता सुणाईआ। सब दी पूरी होवे आसी, मनसा पूर कराईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, जुग चौकड़ी रिहा कराईआ। जिस वेले निरगुण जोत होवे प्रकाशी, निरगुण नूर रुशनाईआ। परवरदिगार उह वेखे आ के पतण घाटी, तट किनारे सोभा पाईआ। लहिणा देणा
११६० सब दा चुकाए बाकी, पिछला झोली पाईआ। अग्गे खोल्ह के इक्को ताकी, तकवा इक्क दरसाईआ। रहमत विच बण के ११६०
२० साकी, जाम प्याला दए प्याईआ। सब दी लेखे लाए हयाती, हज़रतां दा हज़रत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २०
आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्त अमोलक देवे रासी, रस्ते विच होर वी नाल मिलाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ दीदार सिँघ दे गृह बाऊ पुर ज़िला गुरदासपुर ★

मन्दिर कोल बूटा सी इक्क जामन, फलीभूत सोभा पाईआ। उस दी सेवा करे बिरध ब्राह्मण, पाणी सिंच हरा कराईआ। उह सदा सदा कहे प्रभू पतित पावन, पतित पुनीत बणाईआ। जिस दा फड़े दामन, दामनगीर आप हो जाईआ। इक्क दिन उथ्थे कुंचर आया नहावण, गज सोभा पाईआ। अन्धेरा रैण शामन, संध्या वक्त चुकाईआ। आरती इक्को दी सारे गावण, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। पंखा चवर हिलावण, साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग वखाईआ। अर्जन कहे उथ्थे लग्गी इक्क इट्ट, पत्थर उत्ते टिकाईआ। जिस दे नाल बद्धी चिट, चिट्ठी अक्खरां नाल सुहाईआ। उह लंमी सवा गिठ्ठ, इंच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ओहदी इक्को जेही पिठ्ठ, साफ़ सुथरी

सोभा पाईआ। नेत्र रो के रही पिट्ट, कूक कूक सुणाईआ। मेरा लहिणा देणा दे नजिठ्ठ, पिछला मूल चुकाईआ। मैनूं नामदेव
एथे गया सिट्ट, सहिज नाल टिकाईआ। मैं वेखां बिट बिट, किधरों आवे मेरा माहीआ। वैरागण हो के रही पिट्ट, पट्टणे
वाले रही सुणाईआ। मैं हारी तूं गया यित, तेरी बेपरवाहीआ। मैं लोड़ां दर्शन होवे नित, नित दी खुआरी दे गवाईआ।
इक्को उपजे तेरा हित्त, प्रेम प्रीती सेव कमाईआ। सदा सुहेले वसीं चित, ठगौरी अवर रहे ना राईआ। एहो मेरी आसा
एहो मेरी इच्छ, चिरां विछुन्नी दयां दुहाईआ। एथे वसदा सी इक्क रिच्छ, काला रंग सोभा पाईआ। इक्क ज़हिर वाला
बिछ, बिसीअर डंग चलाईआ। जिस दी उतरे कदे ना विस, विस अंग अंग तड़फाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ। अर्जन कहे एथे रैहन्दा सी इक्क पंछी, खम्ब छोटे नज़री आईआ। उस
दे अंदर आवे हँसी, खुशीआं नाल सुणाईआ। जेहड़ी कृष्न वजाई बंसी, उह बंसरी एसे बन विच्चों गई, बिन्दराबन सोभा
पाईआ। जेहड़ी मोहन दे प्यार विच फंसी, मुहब्बत विच मटकाईआ। जिस चौकी उत्ते इश्नान करदा सी हँकारी कंसी, उह
कंस दी लक्कड़ी एथों तक्कड़ीआं नाल तुल के गईआ। जेहड़ी मर्यादा चली सूर्या बंसी, चन्द्र बंसी एसे थाँ तों धूढ़ लै के
११६१ मस्तक टिक्के लाईआ। एह दवारा विष्नूं वंसी, विष्नूं पूरबला फेरा पाईआ। जित्थे हुण कोई जानवर नहीं पंखी, निशाना ११६१
समझ किसे ना आईआ। इक्क दिन गुरू अर्जन दा एथे आया सी इक्क ग्रन्थी, जिस नूं गुप्त हुक्म सुणाईआ। ओन पड़ी
२० सी आ के पंगती, सुनेहड़ा शब्द इलाहीआ। जेहड़ा हथ्थ ना आवे पंडती, खोजयां खोज ना कोए खोजाईआ। जो सुख २०
वखाए स्वर्ग बहिश्ती, बहिश्तां तों परे परदा लाहीआ। उह सब आत्मा दा गृहस्ती, परमात्मा बेपरवाहीआ। मालक धुर दा
अर्शी, फर्श वेख वखाईआ। एह खेल अगम्मे घर दी, जो घराने रिहा बणाईआ। ग़रीबां बणे दर्दी, दर्दीआं होए सहाईआ।
एह खेल कलयुग कल दी, कलकाती होण कसाईआ। कुछ आसा ओस जल दी, जो वहिणा विच आपणा आप मिटाईआ।
कुछ मुहब्बत ओस थल दी, जो किनका किनका आपणा आप कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
करे खेल साचा हरि, सब दे लेखे वेख वखाईआ। अर्जन कहे ओथे रैहन्दा सी इक्क सूम, शाहूकार नज़री आईआ। उस
दे घर मंगण आ गया डूम, मरासी फेरा पाईआ। चारों कुण्ट घूम, होका दिता सुणाईआ। मैं ग़रीब माअसूम, मेरी झोली
दे भराईआ। शाह ने किहा कमलया मेरे पैर दा जूता चूम, जिस पिच्छे लक्ष्मी भज्जे वाहो दाहीआ। ओने चिर नूं डाकूआं
दा इक्क आ गया हजूम, रौला उच्ची उच्ची पाईआ। ढोल नाल मचाई धूम, धवल दिती सुहाईआ। ओने चिर नूं ब्राह्मण
आ गया लाउण वाला नजूम, पत्री कढु वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ।

पत्री कहे मेरी वेखो पत्री, पत्रका की जणाईआ। एह दस्से इक्को मालक शूद्र ब्राह्मण वैश क्षत्री, जो शरअ तों बाहर समाईआ। जिस दी उमर कदे ना होवे सत्तरी बहत्तरी, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। बन्द होवे ना गृह नक्षत्री, हिस्सा सके ना कोए वखाईआ। पढ़या जाए ना जगत अक्खरी, अक्खरां विच ना कदे समाईआ। उस दी धार सदा वक्खरी, अड्डरा राह चलाईआ। ओने चिर नूं इक्क आ गई बक्करी, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओने चिर नूं मुसाफ़र सिर उत्ते चुक्क के आ गया पटड़ी, फट्टा साढे तिन्न हथ्थ वखाईआ। ओने चिर नूं इक्क लै के आ गया तक्कड़ी, छाबे दोवें रिहा हिलाईआ। ओने चिर नूं आरन दल आ गया मक्कड़ी, अन्धेरा चारों कुण्ट छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ विरसा सिंघ दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

इक दिन ओथे व्याही लाड़ी दी भाजी आ गई लड्डू, प्रेम नाल बणाईआ। सारे जल दे भुड़कण लग्ग पए डड्डू, आपणी

खुशी वखाईआ। इक्क वड्डा मैंडक जिस दा नाँ रख्या जग्गू, छोटे वड्डे उसे नूं सीस निवाईआ। सानूं सच दस्स किस वेले प्रभ निशाना गड्डू, एथे आ के दया कमाईआ। उस हस्स के किहा जिस वेले कलयुग कूड़ नगारा वज्जू, चारों कुण्ट दुहाईआ। भगत चुबारे रहे कोई ना छज्जू, चश्मा नीर ना कोए वहाईआ। सारे रूप होवण बद्दू, बदकारी विच लोकाईआ। उस वेले पुरख अकाल आपणे भगत सद्दू, सद्दा नाम कर शनवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ वड्ढू, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। कुछ लेखा लिख्या राजे रग्घू, संदेसा सोहणा जेहा सुणाईआ। पुरख अकाल कलयुग अन्त सब नूं दब्बू, दबदबा आपणा इक्क जमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला पिछला कढ्ढू, वही खाता फोल फुलाईआ। अर्जन कहे गुर अवतार पैगम्बरो नहीं ख्वाब, सति सच समझाईआ। पुरख अकाला आवे आप, आपणा फेरा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जग दी रीती दए बदलाईआ। चारों कुण्ट कम्बे पाप, दुष्ट देण दुहाईआ। एह वेखे खेल तमाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सब दी पूरी करे आस, आसा मनसा विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले कर तलाश, पंज तत ख़ाकी माटी वेखे लाश, लाश विच आपणा प्रकाश दए कराईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बीबी हरनामो दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

गुर अर्जन कहे गुर अवतारो मेरे प्रभ दा सदा नवां छप्पर ते नवां ढारा, पुराणी कुटीआ रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रीती इट्टां गारा, पाणी प्रेम वाला मिलाईआ। निर्धन बणया सेवादारा, साची सेव कमाईआ। मन विच चाओ सदा अपारा, इक्को आस रखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ नहीं गुरूदवारा, महल अटल ना कोए बणाईआ। निउँ निउँ साचे दर करे निमस्कारा, बेनन्ती विच हाल दुहाईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण दाता वेख वखाईआ। सोहणा लग्गा दवारा, जिस दवारे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर वसाईआ। आपणा घर कहे तूं सब दा बापू, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। अग्गे बणया ना रहीं डाकू, डाका घर घर आप लगाईआ। जिस कारण गोबिन्द तजाया तमाकू, उह तुख्म तासीर देणी बदलाईआ। अर्जन इक्क दिन आपणी जेब विच्चों कढ्ढ के चाकू, आपणीआं उंगलां उत्ते घसाईआ। कुछ बचन किहा गोबिन्द दादू, दोहरे गया सुणाईआ। जिस वेले पुरख अकाल भगतां दा हिरदा साधू, साध रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द किहा मेरे प्रभ दा अगम्मा जादू, जो सुत्तयां जागदयां इक्को रंग रंगाईआ। जो उस दी सरनी लागू, सीस जगदीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। ढारा कहे मेरी नवीं पुराणी नहीं छत्त, मिट्टी गारा कक्ख ना कोए वड्याईआ। मैं समझां मेरा मालक कमलापति, जो जुग जुग सब दा वेस वटाईआ। कदे हेठां देवे सट्ट, धरती उत्ते टिकाईआ। कदी आपणे खाने विच देवे घत्त, जित्थे वेखण कोए ना जाईआ। ढारा कहे मैं खुशी मनाई जे मेरे विच वसण वालयां दी अंदरों खुल्ह गई अक्ख, प्रभ नूं मिल के खुशी बणाईआ। सदा सुखी रहिण वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। जन्म दा लाहा लैण खट्ट, खट्टी मुक कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग चढ़ाईआ। ढारा कहे हो जाओ ढहि ढेरी, आपणा आप मिटाईआ। जन भगतो चिरां पिच्छो मारे फेरी, जुग चौकड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। सदा आपणे नाल रखे आपणी बेड़ी, बिनां वञ्झ मुहाणे रिहा चलाईआ। चढ़ गई जेहड़ी जेहड़ी, पार किनारे दए लगाईआ। जिस वल्ल मेहर दी निगाह फेरी, फेरा अगला पिछला दए मुकाईआ। अर्जन किहा रावी दे कन्ढे हुन्दी सी इक्क बेरी, बेरां नाल सोभा पाईआ। उथ्थे चरदी इक्क वछेरी, ढाई साल आपणी उमर गणाईआ। नेड़े ख़ाक दी इक्क ढेरी, जिहनूं स्वाह कहि के गाईआ। इक्क साधू आ गया कपड़े पहन के गेरी, कुण्डल कन्नां विच लटकाईआ। उस दे नाल तेई साल दी चेरी, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। उन्हां आ के सुरती लाई बथेरी, मन टिकण मूल ना पाईआ। भरम होया अव्वगया होई किहड़ी, कवण रिहा तड़फाईआ। ओने चिर

११६३
२०

नूं कोई वणजारा आ गया रेड़ के रेड़ी, सौदा थोड़ा उत्ते टिकाईआ। ओन्हा अक्ख कर के टेडी, चोरी वेख वखाईआ। जां तक्की सवाणी दी मेंढी, ज़ुलफ़ खुल्ही नज़री आईआ। फेर वेख्या हथ्थां लग्गी मैंहदी, लाल रंग चढ़ाईआ। जां अंदर तक्कया तूं ही तूं ही प्रभू कहिंदी, दूजी मनसा ना कोए वधाईआ। फेर पिच्छे हो के बैहन्दी, आपणा सीस झुकाईआ। एह उहो जेहड़ी चरणां उत्ते ढहिंदी, हुण हरनामो नाँ आई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सब दा वेख वखाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ मेला सिँघ बीबी नंतो दे गृह बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ★

रावी कहे मैं इके नूं रावां, जो रमिआ हर घट नज़री आईआ। उसे दे गुण गावां, बण वैरागण राग अलाईआ। लंमीआं करां भुजां बाहवां, आपणीआं आप वधाईआ। किते मालक आ जाए जिस नूं जगत कहे नथावां, दर आपणा इक्क सुहाईआ। मैं कूकां कुरलावां वांग कावां, कोयल आवाज़ ना कोए बणाईआ। उसे तों बलि बलि जावां, जो सब दा सज्जण माहीआ। निउँ निउँ लागां पावां, चरण कँवल सरनाईआ। साचे तीर्थ नहावां, दुरमति मैल धवाईआ। भार करां सांवां, तक्कड़ इक्को

११६४ हथ्थ उठाईआ। माणां ठंडीआं छांवां, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। रावी कहे जिस नाल अजे तक्क किसे नहीं लईआं ११६४

२० लावां, चार जुग पल्लू फड़ा के सब तों गया छुडाईआ। किन्नीआं किन्नीआं ते किन्नीआं मांवां, समझ किसे ना आईआ। २०

कदे गोपीआं नाल फिरे करे चावां, चाओ घनेरा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। रावी कहे नीं मैं रो रो थक्की, सखीओ दयां सुणाईआ। हो गई हकी बक्की, हैरानी विच पछताईआ। अर्जन कर के गया पक्की, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। एथे आवे धुर दा पती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। मेरीआं थक्क गईआं अक्खीं, आख़र ओट तकाईआ। चारों कुण्ट फिरां नस्सी, भज्जां वाहो दाहीआ। जां वेख्या रावी कहे उह भगतां ने बध्धा नाल रस्सी, रस्ता मेरा रहे वखाईआ। जिन्हां ने तपस्सया कीती पिच्छे हज़ार अस्सी, उह सारे लए मिलाईआ। कोई हिस्सा नहीं कोई पत्ती, झूठी गंढु ना कोए बंधाईआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा तों हो गई सती, सति उसे दा रस चखाईआ। कोई तीर्थ नुहाउण वास्ते करनी नहीं गती, भय भउ ना कोए मिटाईआ। एह पिछली खेल जन भगतो तुहाडे वास्ते सांभ के रखी, आपणे विच छुपाईआ। हुण सुणो कन्नी ते वेखो अक्खीं, सब दा लहिणा झोली पाईआ। रावी कहे जन भगतो अग्गे कदे ना फेरयो आपणे मन दी आसा जो निरासा विच रखी, वासा इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत कर इक्ठी, आपणा परदा रिहा चुकाईआ।

★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ रावी कन्ढे ★

काल कहे मैं आया भज्जा, आपणा ज़ोर लगाईआ। मेरा पैर दुखदा सज्जा, दुःख नाल तड़फाईआ। मैनूं अर्जन दा मिल्या सद्दा, हुक्म दिता सुणाईआ। शाह दा आया बध्धा, शहिनशाह सीस निवाईआ। जगत दा वेख्या मज़ा, लख चुरासी खाईआ। चार जुग अजे ना रज्जा, तृष्ना तृप्त ना कोए मिटाईआ। सब दे नाल करदा रिहा दग़ा, फ़रेबां विच डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद हुक्मे विच भवाईआ। काल कहे मैं आया अगलवांढी, वाटा लई मुकाईआ। लख चुरासी जिस दी बांदी, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। चरण धूढ़ जिस दे सृष्टी नहांदी, दुरमति मैल धवाईआ। इक्को ढोला गांदी, धुर दा राग सुणाईआ। उस बिना सब दी पत जांदी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ।
११६५ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वरताईआ। काल कहे मैनूं कहिंदे बुरा, बुरा कहि के गाईआ। ११६५
२० मैनूं कहिंदे निगुरा, गुरू ना कोए जणाईआ। मैं प्रभ दे हुक्मे अंदर तुरा, तुरत सेव कमाईआ। जे मैं ना हुन्दा ते गोबिन्द २०
नूं फिर कौण मारदा छुरा, सेवादार भड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। काल कहे जिस ने लाया घाउ, गोबिन्द सीस टिकाईआ। उस दा होया नहीं अजे न्याउँ, चुरासी विच्चों बाहर भवाईआ। सद रोवे माउँ माउँ, कहि के हाल सुणाईआ। कोई ना पकड़े बाहों, दुःख ना कोए मिटाईआ। काल कहे मैं ओस नूं किहा जेहड़ा शौह दरया पार तराउ, तुरत आपणी दया कमाईआ। उस दे लाग पाउँ, पानही सेव कमाईआ। उह औझड़ पै के राहों, चलया वाहो दाहीआ। हुण आपणा ला ला दाओ, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। आशा कहे मुग़ल, काल तेरी वड्याईआ। मैनूं इशारा कर उंगल, केहड़ा धुर दा माहीआ। मेरी अंदरों खुल्ल्हे गुंझल, परदा रहे ना राईआ। मैं वेखां सोहणा सुंदर, बांका नूर इलाहीआ। जो वसे डूँग्घी कुंदर, आपणा डेरा लाईआ। जिस नूं बाहरों सारे ढूंडण, लभ्भ लभ्भ थक्की लोकाईआ। सो अमृत रस देवे बूँदन, जाम इक्क चखाईआ। जिस नूं मन्नदे मधसूदन, सूत्रधार हो जाईआ। उह फिरे जंगल बेले विच बूझन, दभ्भ काही मिल के खुशी बणाईआ। ओसे नूं गुर अवतार पैगम्बर पूजण, निउँ निउँ सीस निवाईआ। कलयुग मेटे दुतीआ दूजन, भाउ

इक्को इक्क वखाईआ। नैण मुंदारी बण के मूंदन, मुंदरा धारी सोभा पाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शंकर कूकण, कूक कूक सुणाईआ। जिस दे कारण तन भठियाले फूकण, तत्ती रेत सीस वहाईआ। सो साहिब स्वामी मौजूदन, मुफ़लिसां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाईआ। काल कहे छुरे वाले रख याद, शरअ रही समझाईआ। खड़ग वाले सुण आवाज़, जिस तेग़ बहादर सीस टिकाईआ। तन धड़ दिता काट, हुक्म शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। तेग़ बहादर कहे जिस ने मेरे उत्ते उठाई तेग़, तेग़ दी धार दिती चलाईआ। मैं ओस नूं ओथे दिता भेज, जित्थे प्रभ दी मिले सरनाईआ। जिस ने मेरा कपड़ दिता वेच, दो दोशाले हट्ट विकाईआ। उहनूं बणा के नेक, निक्का वड्डा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। तेग़ बहादर कहे जो मेरा जलाद, जलावतन ना कोए कराईआ। उह ऐथे हुन्दा सी आबाद, रावी कन्ढे डेरा लाईआ। ओहदी कौम सी रंगड़ जाट, भंगड़ विच शौदाईआ। इक्क होर सी उस दा साथी साध, जो धूणी सदा तपाईआ। उस नूं इक्क दिन चढ़या ताप, अग्नी अग्ग लगाईआ। उह छड्ड के सज्जण साक, इक्क दी ओट रखाईआ। तूं ही माई बाप, तेरी इक्क सरनाईआ। सिर मेरे रख हाथ, मेहर नज़र उठाईआ। हुक्म आया तूं मेरा मैं तेरा कर जाप, आपणी रसना गाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आया आप, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। तैनूं मंज़ल दे के साच, साचे घर टिकाईआ। कर के धुर दा दास, सेवक लए बणाईआ। जो तेग़ बहादर गया आख, ओसे दा लेखा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। अर्जन कहे जिस ने मेरे बरख़लाफ़ लिखी अर्ज़ी, कागज़ शाही कलम बणाईआ। उह वी ऐथों दा सी दरज़ी, डेरा छप्परां विच लाईआ। निक्के हुंदे दी माँ सी मर गई, दो साल सत्त महीने दा लाहौर डेरा फुफी कोल लगाईआ। उस ने विद्या नौ जमात पढ़ लई, नाल कुरान शरीफ़ शरीफ़ी विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। अर्जन कहे दरज़ी दा सी इक्क चाचा, नौजवान नज़री आईआ। तेड़ लाल कन्नी दा बन्न्हे लाचा, लुंङी मोढुयां उत्ते सुटाईआ। उस दा प्यार सी भतीजे नाल ख़ासा, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। तिन्न दिन उह वी ऐथे कर के गया वासा, रोटी हथ्थां उत्ते खाईआ। अन्तिम जांदयां भन्नया कासा, माटी बबर खेह मिलाईआ। नाले खुशी विच आया हासा, ताली दिती वजाईआ। एथे केहड़ा वेंहदा पुरख अबिनाशा, देवे कवण सज़ाईआ। आवाज़ आई एह ओसे दा खेल तमाशा, जिस ने जगत रचना लई रचाईआ। जेहड़ा ना मन्ने ओस दा आखा, उसे नूं दए सज़ाईआ। सुण लै मेरीआं बातां, धुर दा हुक्म वरताईआ। जिस वेले झगड़ा

पैणा जातां पातां, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। पिता पुत्त ना मन्ने आखा, भैण भ्रा विभचार कमाईआ। प्रभ दी भुल्ले गाथा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। अबिनाशी करता सब दा खोल्हे खाता, पूरब लहिणा फोल फुलाईआ। फेर पन्ध मुका के मंज़ल पूरी करे वाटा, कदम कदमां हेठ दबाईआ। उने चिर नूं जोगण आ गई जिस दा खुल्हा झाटा, अक्खां लाल कढु डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा आप चुकाईआ। गुर तेग़ बहादर किहा गुजरी दा ऐथे सी कुछ रिश्ता, पीहड़ी दादे वाली नज़री आईआ। कुछ हुक्म देवे फ़रिश्ता, जबराईल रिहा सुणाईआ। एह खेल आहिस्ता आहिस्ता हौली हौली भेव चुकाईआ। एसे थाँ ते मुला ने शरअ दा बन्न्हया बस्ता, शरीअत विच लड़ाईआ। एहो थाँ बल दा राह दस्सदा, सतिजुग दए गवाहीआ। एहो थाँ जित्थे बाल्मीक हस्सदा, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। ऐथे बूटा हुन्दा सी अक्क दा, जिस दे डोडे ज़हिर नाल भराईआ। उह अक्क सदा सी तक्कदा, अन्तर आत्म अक्ख खुल्हाईआ। प्रभ लहिणा देवे हक दा, हकीकत झोली पाईआ। मैं उस दे चरणां वसदा, इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। थाँ कहे मेरी धरती वाली वण्ड, थम्म्ह नज़र कोए ना आईआ। मेरे बोलण वाले नहीं दन्द, ढोला रसन ना गाईआ। इक्को गुण मैं कलयुग दिती कंड, आपणा मुख भवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के छन्द, साचा सगन बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला सब दा रिहा मिलाईआ। पुरख अकाल कहे जो राह विच फिरदे तुरदे, तुरत लवां मिलाईआ। जेहड़े पूरब पिछले मुरदे, सुत्तयां लवां जवाईआ। एहो खेल सच्चे सतिगुर दे, डुब्बयां पार कराईआ। ओनां बेड़े कदे ना रुढ़दे, जो चल आवण सरनाईआ। कुछ लेखे अनन्द पुर दे, गोबिन्द रिहा दरसाईआ। कुछ झगड़े देवत सुर दे, कैलाश करे अगवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। धरनी कहे इक्क गोबिन्द दी सी दासी, दसां नौंहां दी कार कमाईआ। उस दी ऐथे सी इक्क मासी, जिस नूं मिलण चार वेरां आईआ। कदी मिल के करया करे हासी, किथ्थे रावी कन्ढे डेरा लाईआ। एह किड्डी औखी घाटी, वहिणां विच वहाईआ। उस ने कढु के अंदरों चाटी, दुद्ध दहीं वाली दिती वखाईआ। नीं आह वेख मेरी कच्ची माटी, सोहणा रंग बदलाईआ। की खेल वेख्या रातीं, रातीं सुत्तयां सवेरे उठ के देणा समझाईआ। उस ने किहा जिस वेले होई प्रभाती, अमृत वेला आईआ। मैं सुणी इक्क आवाज़ी, सोहणा राग सुणाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा लेखा चुकावे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणी दया कमाईआ। जो सचखण्ड दा निवासी, निराकार नूर रुशनाईआ। सब ने मन्नणी उस दी आखी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जे कोई तैथों होई गुस्ताखी, भुल्ल लैणी बख्शाईआ। उह

११६७
२०

देवणहार मुआफ़ी, कोट जन्म दे पापां दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची भेव खुल्हाईआ। अर्जन किहा जिस वेले हुक्म दिता मैनूं शाही, शहिनशाह सुणाईआ। उह कलम ऐथों दा बूटा सी काही, दवात एसे मिट्टी नाल बणाईआ। ऐथों दी रहिण वाली सी चन्दू दी दाई, जिस दा अग्गा पिच्छा ना कोए बताईआ। ओदों ऐथे वगदी सी डूँग्घी खाई, नौ गज़ दूर वहिण वहाईआ। ऐथे हुन्दी सी ठंडी छाईं, बाग़ बग़ीचा सोभा पाईआ। सदा साह लैंदे सी राही, आपणी ख़ुशी बणाईआ। इक्क दिन घाह खोतदे सी घाही, रम्बा हत्थ विच उठाईआ। ओन्हां दे हत्थ विच आ गई टकसाल बणाउण वाली डाई, मोहर अकबर वाली नज़री आईआ। उन्हां कूक के दिती दुहाई, सब नूं दिता सुणाईआ। कोई वड्डा ख़ज़ाना एथे भाई, लभ्भो चाँईं चाँईंआ। एह ख़बर किसे कलानौर सुणाई, हकूमत कन्न पुचाईआ। उह सारे भज्जे वाहो दाही, अहिलकार इक्ट्ठे हो के आईआ। वसदी बस्ती दिती ढाई, खुरा खोज मिटाईआ। नौ नौ हत्थ पुट्ट के डूँग्घी कीती खुदाई, खोदयां हत्थ कुछ ना आईआ। उने चिर नूं इक्क एथे आ गया चरवाही, जो भेडां बक्करीआं चार के झट लँघाईआ। उह मस्त कहे तुसीं क्यों होए शौदाई, शौदाईआं वाली कार कमाईआ। क्यों मेरी इथों उजाड़ दिती भरजाई, जो पंजां सत्तां बालां दी माँ अख्वाईआ। उधरों रोंदा आ गया नाई, नीर नैणां विच्चों वहाईआ। किथ्थे सुट्टी मेरी रजाई तलाई, पूंजी हत्थ कोए ना आईआ। उने चिर नूं आ गया इक्क कसाई, छुरीआं बग़लां विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल बणाईआ। तेग़ बहादर कहे इक्क होर देवां सलाह, सहिज नाल सुणाईआ। जेहड़ा मेरा बणया गवाह, उस दा मामा एथों दा कसाईआ। जिस ने सूर दी कसम खा, दिती इक्क सफ़ाईआ। मैं हस्स के किहा वाह वाह, कलमे वाल्लयो आपणी जड़ लई पुटाईआ। मेरा मालक पातशाह, शहिनशाह दा शाह आप हो जाईआ। जिस नूं तुसीं मन्नों खुदा, उह तुहाडी खुदी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। अर्जन कहे इक्क वेखो खेल न्यारी, न्याँ विच समझाईआ। जेहड़ी मेरे दर ते फिरे बहारी, उस दे नौ तीले एथों दी काही नज़री आईआ। एस नूं वेचण गया सी वेचण वाला तीजी वारी, गठ्ठ सिर उत्ते टिकाईआ। उह सदा आपणी लंमी रखदा सी ढाई उंगलां दाढ़ी, अग्गे वाल ना कोए वधाईआ। सदा भंग पींदा सी गाड़्ही, पोसती कहिण लोक शौदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। आपणा खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। राह विच बैठे देवे तार, तुरत होए सहाईआ। लहिणा देणा सर्ब विचार, पूरब झोली पाईआ। जिस दा भेव ना पायण गुर अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। उह लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी कला आप प्रगटाईआ। सब दा कर्ज़ा दए उतार,

बाकी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकार, अदालत विच अदल आपणे हथ्थ रखाईआ।

फ़रीद कहे क्यों जांदा ख़ामोश, लुक लुक पन्ध मुकाईआ। कुछ याद कर ला जिस वेले मेरे कोलों पैरां हेठां आ के मरया ख़रगोश, बच्चा ढाई दिन दा नज़री आईआ। मेरे उत्ते हुक्म दा लग्गा दोष, दोषी दिता बणाईआ। मैं उस वेले आपणे पैर दा ढाई उंगलां कट के पोश, तेरी भेंट कराईआ। बिना तेरी किरपा रहे ना कोई निर्दोष, साची सेव ना कोए कमाईआ। प्रभू तूं झट कन्न फड़ के हलूणया मैनूं आई होश, हवस दिती गवाईआ। कढ्ढ के अगम्मा कोश, भेव दिता खुल्हाईआ। कर के मदहोश, मधुर धुन दिती सुणाईआ। मेरे अंदर आई सोच, समझ लई बदलाईआ। जिस नूं याद करां रोज़, रोज़े बांगां विच शौदाईआ। की एह उसे दा चोज, जो आपणी खेल वखाईआ। फ़रीद कहे उस दिन मैनूं लग्गा इक्क रोग, दुःख अंदरे अंदर बणाईआ। जिंनां चिर प्रभू ना देवे मौज, आपणा रंग रंगाईआ। साची सेज ना सवें खौंत, आपणे अंग लगाईआ। एस जीवण नालों चंगी मौत, किवें झल्लां जुदाईआ। मैं चार लकीर दा बणाया इक्क चौंक, चारों कुण्ट ध्यान रखाईआ। उने चिर नूं नेड़यों कुत्ता प्या भौंक, आवाज़ दिती लगाईआ। मैं हस्स के किहा सब कुछ उसे नूं दिता सौंप, उसे दी झोली पाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी रौंस, रस्ते रसत्यां विच्चों बदलाईआ। मुहब्बत विच कदे ना करे अदौत, झगड़ा ना कोए रखाईआ। उह मिल जाए ते इक्को बहुत, भजन बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। असीं आलणयों डिग्गे बोट, फड़ ना कोए उठाईआ। सच ना लग्गे चोट, सोई सुरत जगाईआ। मिले ना साची गोत, वरन बरन ना डेरा ढाहीआ। फ़रीद कहे बिन तेरी किरपा होवे ना कोए निर्दोष, दोषीआं मिले सज़ाईआ। फ़रीद कहे क्यों जावें छुप्प छुप्प, छुप्पण वाल्या दे समझाईआ। हुण केहड़ा अन्धेरा घुप, पाउणे तिन्न दा वक्त रिहा वखाईआ। ऐंवे भज्जां जावें टुप्प टुप्प, नीवीं अक्खां ध्यान लगाईआ। उन्हां कोलों पुछ, जेहड़े तेरा राह तकाईआ। बालू रेत विच तड़फदे कड़कदी जेठ दी धुप्प, बाग़ बग़ीचा सोभा कोए ना पाईआ। मेट के तृष्ना भुक्ख, तेरी ओट तकाईआ। ज़रा नेड़े आ के ढुक, अग्गे कदम उठाईआ। की तैनूं नहीं दुखियां दा दुःख, एह वी देणा समझाईआ। लारयां विच करीं ना पुत्त पुत्त, पिता बण के आपणी गोद लैणा टिकाईआ। फ़रीद कहे ओ सूफ़ीआ तूं वी लागों उठ, आपणी लै अंगड़ाईआ। बुकल मार बहु ना गुठ, सिर गोडयां विच दबाईआ। साडी धार नहीं गई टुट्ट, किस कारण बणे पाँधी राहीआ। कुछ राख फड़ जेहड़ी

रखी विच मुठ्ठ, उंगलीआं विच दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। फ़रीद कहे प्रभू छड्ड दे आपणी वादी, वायदा कर ना देणा भुलाईआ। बेशक तेरी खेल निराली डाहढी, डाहढा हो के जगत सताईआ। असीं हुण नहीं सुणनी तेरी ढड्डां वाली रागी, ढोलक वाली शनवाईआ। साडी अंदरों सुरती जागी, सुत्ते लए उठाईआ। फ़रीद कहे एह सारे वड्डे भागी, भागां वाले नज़री आईआ। जिन्हां दी भगतां विच आबादी, दूजे घर ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। फ़रीद कहे तिन्न कदम उत्ते वेख मेरा झण्डा, झण्डी सब नूं रिहा हिलाईआ। सिगनल देवे नाल डण्डा, डण्डावत रिहा बदलाईआ। जिस कारण फ़रीद कहे मैं आया रावी कन्ढ्ढा, आपणा फेरा पाईआ। एह कौल इकरार प्रभू संदा, जिस दी सनद ना किसे वखाईआ। चरण चुम्मण सुरस्ती जमना गोदावरी गंगा, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। फ़रीद कहे मेरे एथे पुराणे डब्बे, टुट्टे फुट्टे दिते सुटाईआ। डूँघी खाई विच दब्बे, फेर बाहर ना कोए कढाहीआ। तिन्न काले ते तिन्न बग्गे, तिन्न रंग बरंग जणाईआ। कुछ पाटे चीथड़ लाहे झग्गे, उह वी दिते सुटाईआ। उधरों आ गए चार गधे,
१२०० आपणा फेरा पाईआ। मगर घुम्यार पैरीं दब्बे, भज्जया चाँईं चाँईंआ। एथे आ के खलो गए सभ्भे, अग्गे कदम ना कोए १२००
उठाईआ। कहिण फ़रीदा तैनूं किथों खुदा लभ्भे, सानूं दे समझाईआ। फ़रीद किहा सबर करो अजे, तुहाडा लेखा दयां
२० समझाईआ। जिस वेले इक्को जोत जगे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। खेल करे सूरा सरबगे, आपणा वेस वटाईआ। २०
तुहाडा लेखा मेटे सभे, सभना मानस रूप वटाईआ। सच प्रेम दे देवे मज़े, मज़ा इक्क चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। फ़रीद कहे प्रभू थोड़ी दूर अग्गे इक्क छप्पड़ी, कन्ढ्ढी दा कन्ढ्ढा नज़री आईआ। उथ्थे मेरी विछणी तपड़ी, आसण लैणा जमाईआ। एह मैं लयांदी सी कोलों क्षत्री, टके नौ झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर वसाईआ। तपड़ी कहे मैं हुण नहीं रिहा तप्पड़, तपदी दिता ठराईआ। सच स्वामी गया अप्पड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। वरोला रिहा कोई ना झक्खड़, आंधी सके ना कोए उडाईआ। जिस दा इक्को सोहणा अक्खर, भगतां करे पढ़ाईआ। कूड़ हटा के पत्थर, सच करे सफ़ाईआ। नेत्र वरोल के अथ्थर, अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। तपड़ी कहे मेरी लम्बाई साढे तिन्न हथ्थ, फ़रीद मोढुयां उत्ते टिकाईआ। दिने बहवे ते रात नूं देवे ठप्प, आपणे गोडे कोल रखाईआ। फेर मेरे उत्ते रख के हथ्थ, तलीआं नाल दबाईआ। इक्क दिन मैं हो के बेवस, बोली दिती लगाईआ। मैथों दूर हो के वस, क्यों

ऐवें रिहा सताईआ। फ़रीद किहा कमलीए तूं वी राम जप, जो सब दा इक्क गोसाँईंआ। फेर उत्तों मेरे कढु के वट्ट, सहिज नाल हथ्थ दिता फिराईआ। मेरे उतले रोम कट, साफ़ सुथरी दिता कराईआ। मेरे अंदर ख्वाहिश होई झट, आसा लई बदलाईआ। बिरहों दा वज्जा फट्ट, अग्नी तत गवाईआ। मैं रो के किहा फ़रीदा मैनूं कुझ दस्स, सति सच समझाईआ। तपड़ी कहे जिस वेले उस मैनूं वेख्या आपणी नाल अक्ख, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। मैं कक्खों हो गई लख, मेरी कीमत कोए ना पाईआ। मैं बाहों फड़ ल्या झट, फ़रीद दा हथ्थ आपणे सीने उत्ते टिकाईआ। उस ने किहा तूं सोहँ ढोला रट, एह भगतां दी बाणी धुर दी चली आईआ। जिस वेले आवे साहिब सुल्ताना बण के जट्ट, सिध्धा सादा भेख बणाईआ। सब दा लहिणा देवे ठप्प, अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। तपड़ी किहा की एह पक्क, एसे तरह खेल खिलाईआ। फ़रीद किहा जो किहा सो सच, सति सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। तपड़ी कहे मेरा ताणा पेटा, दोहरी धार नज़री आईआ। फ़रीदा हुण अवतारां पैगम्बरां गुरुआं कोल ठेका, दुनिया हिस्सयां विच वण्डाईआ। फेर केहड़ा बणे नेता, जो हुक्म सच प्रगटाईआ। फ़रीद कहे मैनूं आ गया चेता, चेतावनी दयां सुणाईआ। जिस गोबिन्द ने अज्जे आ के बाल चाढ़ने भेंटा, सूलां सथर सेज हंढाहीआ। उस ने पुरख अकाल दा फेर बणना बेटा, जोती धार शब्द रूप बदलाईआ। उह सब दा रखे चेता, भुल्ल विच भुल्ल ना कोए रखाईआ। जोती जामा धरे वेसा, वेखे थाउँ थाँईंआ। तपड़ी किहा की मेरा वी होवे विच हिस्सा, परदा देणा उठाईआ। फ़रीद किहा उह सब दा सांझा पिता, लेखा सब दा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। फ़रीद कहे प्रभू मैं बूटा लाया इक्क खजूर, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। एथों पुट्ठे कदम तेरां दूर, निशानी उच्ची जगह नज़री आईआ। उस नाल मैं कौल कीता ज़रूर, इकरार इक्क बणाईआ। निगाह मार के वेख्या दूर, दूर दुराडा तेरा नूर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। खजूर दा बूटा कहे मेरे फल नूं कहिंदे खज्जी, खा खा खुशी बणाईआ। प्रभू किस बिध आवें की करें अज्ज पज्जी, भेव देणा खुल्हाईआ। तेरा नूर इलाही रब्बी, आलमीन तेरी वड्याईआ। किस बिध लहिणा चुकावें सभी, सभनां हो सहाईआ। पुरख अकाल कहे जिस वेले दुनिया पापां नाल जाए दब्बी, सिर सके ना कोए उठाईआ। कायम रहे कोई ना गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। निरगुण धार आवे भज्जी, भज्जे वाहो दाहीआ। होवे वीहवीं सदी, सद्दा दे सुणाईआ। वेखो पुरख अकाल आवे कदी कदी, कदीम दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना सुदी वदी, वाधा आपणे नाल पवाईआ। लेखे लावे मच्छी डड्डी, डण्डौत इक्को इक्क सिखाईआ। जिस

बाल्मीक दी फट्टड़ कीती अड्डी, तिक्खी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। फ़रीद कहे औह वेख मन्दिर वाला बग़ीचा, घना नज़री आईआ। जिस विच ख़ाली दिसे पीपा, पीपा भगत दए गवाहीआ। झगड़ा प्या सत्तां दीपां, दीप जोत ना कोए रुशनाईआ। जगत रस होया फीका, अमृत जाम ना कोए पिलाईआ। कुछ लेखा दस्सया राम ने सीता, सीता ताईं सुणाईआ। कुछ इशारा कृष्न ने अर्जन नूं कीता तेरृवां ध्याए विच गीता, ज्ञान नाल जणाईआ। जो मालक इक्क अनडीठा, लेखा सब दा फोल फुलाईआ। धुरदरगाही मीता, पतिपरमेश्वर आप हो जाईआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीसा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आप चुकाईआ। फ़रीद कहे पिछली सारी वेख ला फ़रद, दस्सण दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे दर्द, दुखियां दुःख गवाईआ। तेरी मेहर सदा असचरज, अचरज लीला देणी वखाईआ। योद्धे सूरबीर मर्दाने मर्द, मदद तेरी मंग मंगाईआ। इक्को वार करां अरज़, बेनन्ती दिती सुणाईआ। साहिब तेरा कुछ ना होवे हर्ज, हर्जाने सब दे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव अभेदा आप जणाईआ।

१२०२ १२०२

२० २०

फ़रीद कहे प्रभ अग्गे जा उठ, पिछले साथी राह तकाईआ। जन भगतां रेते दी भरनी इक्क इक्क मुठ्ठ, घुट्ट के लैणी दबाईआ। अग्गे जाणा चुप, रसना बोल ना कोए सुणाईआ। उस तों लैणा पुछ, जो नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विछोड़े विच गया सुक्क, हड्ड मास नाड़ी ल्या जलाईआ। मुहब्बत विच मेट दुःख, दुखियां दर्द मिटाईआ। बिन तेरी किरपा मिले कोई ना सुख, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। रेत कहे मेरी मुठ्ठी लैणी भर, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। पिछला पूरा होवे वर, जो राम सीता गया समझाईआ। उस दा लँघणा दर, जो दरवाज़ा रिहा खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला रिहा पढ़, सोहणा राग अलृाईआ।
एह रावी दा पार किनारा, पिछला वहिण सोभा पाईआ। अगला लेखा बणया फेर दोबारा, पिछला निशान मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। एह रेत दी मुठ्ठी पुराणी, पुराण सके ना कोए समझाईआ। जिस वेले गुर अर्जन लिखण लग्गा सी बाणी, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। उस वेले झलक होई नूरानी, नूर जोत रुशनाईआ। खेल वेख्या असमानी, वज्जी सच वधाईआ। वहिण वेख्या पाणी, अमृत धार प्रगटाईआ। सुणया धुर

फ़रमानी, श्री भगवान दिता सुणाईआ। अर्जन तैनूं देणी पए कुरबानी, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। इक्क रेत दी मुट्ठी तेरी निशानी, जो निशाना तैनूं लए बणाईआ। सतिगुर सब दा जाण जाणी, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा लाहीआ। हुक्मे अंदर खोल्या भेत, पुरख अकाल गुर अर्जन दिता समझाईआ। पहलों मुट्ठी भर के रेत, आपणे उत्ते लैणी सुटाईआ। फिर सोहणी बणा के सेज, आसण लैणा जमाईआ। फिर कलम चले तेज़, भज्जे वाहो दाहीआ। कोल नंगी वखा के तेग़, परदा दिता चुकाईआ। जिस वेले तेग़ बहादर दिता भेज, कटार उसे दे हिस्से आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरताईआ। रेत कहे मैं प्रेम विच रत्ती, गुरमुखो थल्ले दयो टिकाईआ। मेरा सांझा हिस्सा ते सांझी पत्ती, गुर अर्जन दिती बणाईआ। जे मैं सीस दे विच ना पैंदी तत्ती, तत्तां नूं ना देंदी जलाईआ। मैनूं फिर किसे नहीं सी कहिणा सच्ची, मैं सच्ची प्रभ दे भाणे विच समाईआ। रेत कहे उस वेले सारे मीट गए अक्खी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं बणी रही पक्की, अर्जन दे सीस उत्ते पै के पैरां ताईं आपणी धार बणाईआ। एह नज़ारा मेरे बिनां होर किसे वेख्या नहीं अक्खी, अखीर तक्क अर्जन दा दर्शन पाईआ। अन्त
१२०३ वेले मार के जफ्फी, नाल चिम्बड़ के दिती दुहाईआ। सोहणी सति सरूप नाल फब्बी, जख़मां उत्ते आपणा आप दिता टिकाईआ। १२०३
मैनूं नज़ारा आया नूर रब्बी, सति जोत होई रुशनाईआ। मैं फिर अग्गे हो के भज्जी, पल्लू गल विच पाईआ। कुछ मैनूं
२० भेत दस्सीं, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। गुरू अर्जन किहा ओ रेते जिस वेले प्रभ नूं भगतां ने बध्धा नाल रस्सी, हथ्थकड़ी २०
हथ्थां नूं लगाईआ। ओस वेले ओसने सारी तारनी डड्डी मच्छी, जो रावी कन्ढे डेरा लाईआ। जेहड़ी कहाणी राम ने कीती पंचबटी, उस दा बदला देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर वसाईआ। रेत कहे एथे सारी वसदी बस्ती, बिनां धड़ तों नज़री आईआ। जित्थे आवे प्रीतम अर्शी, फर्श सोभा पाईआ। सारयां दी खुशीआं वाली बरसी, साचा सगन मनाईआ। जिन्हां दा मालक इक्को निधपरती, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। उह सब दी मेटण आया सर्दी, दर्दीआं दर्द गवाईआ। फेर निगाह रखाए दिशा चढ़दी, आपणी अक्ख उठाईआ। दुनिया दी बाज़ी लग्गे सीस धड़ दी, धड़यां विच दुहाईआ। गुरमुख आसा रहे ना सड़दी, अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक्क वखाईआ। ऐथे हार श्रृंगार कीता सी सुंदरी, सोहणा रूप बणाईआ। ज़बानों हो के गुंगली, अक्ख इशारे नाल समझाईआ। मैं किथे लभ्भां जंगलीं, जूहां खोज खुजाईआ। जे अरज़ोई मेरी मन्न लई, मनसा पूर कराईआ। मैं जीवां ते जीवां उसे चन्न लई, जो दो जहानां करे रुशनाईआ। कुछ वस्त लै के आवे मेरे कन्न लई, सहिजे दए फड़ाईआ।

मैं आस नहीं रखदी कोई धन लई, धर्म दा राह इक्क तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। सुंदरी कहे मैं जोबनवन्ती, वतन आपणा आई तजाईआ। इक्को दर दी बण के मंगती, झोली रही वखाईआ। पिच्छे चार जुग रही संगदी, नेत्र अक्ख शरमाईआ। जिस वेले भगतां धार वेखी चोली रंगदी, मिल के रंगले माहीआ। मेरे अंदर खुशी आई अनन्द दी, अनन्द विच सुणाईआ। पिछली पिच्छे हंढ गई, हुन्दी रही जुदाईआ। हुण प्रगट होया प्रेम प्रीती गंढु लई, गंढु आपणे नाल रखाईआ। मैं वेस नहीं कीता भेख पखण्ड लई, कन्त इक्को इक्क मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाईआ। सुंदरी कहे ओअँ हरीअँ लरीअँ सुंदरी यनमहि बाला, गोबिन्द गया लिखाईआ। ओअँ सोहँ पुरख अकाला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। नूर ज्वाली शब्द रखवाला, चारों कुण्ट सहाईआ। सच मुहब्बत धुर दी माला, मन का मणका दए भवाईआ। साचा मार्ग इक्क सुखाला, सहिजे देवां जणाईआ। गुर अर्जन प्रभ तेरा दे के गया अहिवाला, नाम संदेशे विच सुणाईआ। कृष्न दस्स के गया ग्वाला, काहन कान्हा राह तकाईआ। राम ने राम दस्सया मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। अष्टभुज इशारा कीता जोत ज्वाला, दुर्गा सिँघ सवार सरनाईआ। करे खेल प्रभ निराला, निराकार फेरा पाईआ। जित्थे मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ नहीं कोई गुरूदवारा, पिण्ड गराँ नगर खेड़ा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरताईआ। रावी कहे मैं रोवां कि हस्सां, सखीओ मैनूं दयो समझाईआ। मेरीआं बदल गईआं अक्खां, अक्खीआं वाल्लयो अक्ख रही ना राईआ। किहड़ी कूटे नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। दोहथ्थड़ मार के उपर पट्टां, बौहड़ी बौहड़ी सुणाईआ। सिर ओस दे चरणां सट्टां, जो सुत्तयां रिहा उठाईआ। जो लँघ के आया विंगीआं टेडीआं वट्टां, पन्ध मज़्बां वाला मुकाईआ। आपणी कथा कहाणी ओस नूं दस्सां, अनसुणत दयां सुणाईआ। जे तूं साहिब सतिगुर सच्चा, सच दे सरनाईआ। जन भगत तेरा बच्चा, गुरमुखां लै तराईआ। रावी कहे जन भगतो मेरा किनारा कच्चा, ढाह ढाह आपणा रुख़ लए बदलाईआ। मेरे प्रभ दा सुण लओ पता, जो पतण आयां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क चढ़ाईआ। रावी कहे ना हस्सणा ना रोणा, नैणां नीर ना कोए वहाईआ। ना जागणा ना सौणा, ग़फ्लत विच ना वक्त गवाईआ। इक्को प्रभ दा दर्शन पाउणा, दूजी आस ना कोए तकाईआ। जिस ने मुरदयां फेर जवाउणा, जीवण जोत करे रुशनाईआ। दर ओसे सीस निवाउणा, जित्थे मिले सच्ची सरनाईआ। अगला खेल की वरताउणा, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। रावी तेरा आर पार कन्ढा नेत्र नैणां नीर सर्ब वहाउणा, सति विच ना कोए समाईआ। कलयुग कोई दो चार दिन दा पराहुणा, पारब्रह्म

प्रभ लेखा दए मुकाईआ। गढ़ हँकारी बुरज ढाउणा, ढाह ढाह ख़ाक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक्क रंगाईआ।

फ़कीर कहे फ़ाका कशी दी फ़कीरी, फ़िकर दिता गवाईआ। शरअ दी ज़ंजीरी, शरअ नाल बंधाईआ। जगत दी दिलगीरी, जगत विच समाईआ। मुर्शदां दी पीरी, पीरां दी वड्याईआ। सारे कूकण वक्त आया अख़ीरी, आख़र इक्क सुणाईआ। रावी कहे सब दी बदल जावे तकदीरी, तदबीर इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। रावी कहे वे रविदास, वीरा तैनूं दयां सुणाईआ। मैं वी ओस दी इक्क शाख़, भज्जां वाहो दाहीआ। मिलण दी रखी आस, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। अर्जन दस्स के गया ख़ास, सिफ़्तां विच सालाहीआ। निरगुण नूर करे प्रकाश, जोती जाता फेरा पाईआ। तेरे चल के आवे घाट, घाटा पूर कराईआ। रावी कहे आह मेरी ओस वेले दी अख़ीरी वाट, जिस कन्ढे उत्ते बहि के सुथरे डण्डे गए वजाईआ। जलधार मारदा ठाठ, लहर लहर नाल टकराईआ। इक्क दिन ढाई मिन्ट नानक ने मर्दाने कोलों वजाई सी रबाब, आसण एसे जगह लाईआ। ओसे वेले आया धुर जवाब, शब्द दिता सुणाईआ। जिस वेले दीन दुनी दा बदलणा राज, कलयुग क्रिया कूड़ मिटाईआ। भगतां दा चलाउणा जहाज़, गुरमुखां संग बणाईआ। नवां वखा समाज, सृष्टी देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। रावी कहे मेरी नमस्ते, नमस्कार सरनाईआ। प्रभू तेरे भगत रहिण वसदे, जिन्हां मैनूं दर्शन दिता कराईआ। एह मालक बणे हक दे, सच विच समाईआ। पैंडा करदयां कदे ना थकदे, भज्जण वाहो दाहीआ। अज्ज फ़ैसले कर दे पिछले करमां दे फ़क्क दे, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। एह मतवाले होण तेरी प्रेम प्यार दी रत्त दे, रतन अमोलक लए बणाईआ। मैं ठीक वेख्या एह ओहो सोहँ ढोला जपदे, जो अर्जन मेरे विच वड़ के गया गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारे दे सति दे, सति सति सति इक्क वरताईआ।

रावी कहे मेरे विच आउँदीआं वेखो कांगां, लहर लहर नाल टकराईआ। जन भगतो सतिगुर दे सिर ते पंजे रख दयो डांगां, हौली हौली ठुकराईआ। जुग बीते तेरीआं रखदयां तांघां, अक्खां राह तकाईआ। मस्जिद मनारे दितीआं बांगां, मम्बरां

उत्ते दुहाईआ। तूं किहड़े राहे जांदा, आपणा रस्ता देणा समझाईआ। केहड़ा ढोला गांदा, राग की अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। पुरख अकाल कहे क्यों वज्जण सिर विच सोटे, परदा दयां उठाईआ। इक्क दिन सीता आपणे लाल कीते पंजे पोटे, पंज पंजां नाल छुहाईआ। फेर चढ़ के उत्ते कोठे, राम दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल बणाईआ। सीता कहे राम दुहाई, राम राम सुणाईआ। राम कहे मेरा लशकर शाही, होणी अन्त जुदाईआ। भरत शत्रुगण तेरी लड़ाई, प्रेम विच प्रगटाईआ। जिस ने राज गद्दी दिती तजाई, बणां दा राह तकाईआ। उस ने करनी होर लड़ाई, रावण गढ़ तुड़ाईआ। तुहानूं मिले ना कोए सज़ाई, राम दे सीस उत्ते डण्डे दयो छुहाईआ। रोण नैणां नीर वहाई, रो के रहे कुरलाईआ। तूं राम वड्डा भाई, रघुपति अख्वाईआ। किस बिध देदीए सज़ाई, सज़ा जगत वाली भुगताईआ। राम ने किहा एह भगतां दी वड्याई, जो हुक्म मन्न के सीस निवाईआ। जिस वेले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग कूड़ी बदले शाही, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। ओस वेले एह लेखा दए चुकाई, मेरा कीता कौल पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा
१२०६ रिहा मुकाई, चार जुग दा भुल्ल कोए ना जाईआ। १२०६

२० ★ ४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत ज़िला गुरदासपुर ★ २०

रावी कहे मैं सिर ते लई चिट्टी चुन्नी, घुंमर खुशीआं नाल पाईआ। चार जुग दी पिछली आसा सब दी पुन्नी, मनसा तृप्त कराईआ। नाता कूड़ा वेख्या दीन दुनी, दयावान दए वड्याईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को गुणी, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जिस दी शब्द आवाज़ सुणी, सरोते हो के ध्यान लगाईआ। अन्त मैल धुली, पतित पुनीत वखाईआ। मेरी खुशी आ गई उत्ते बुल्लीं, मुस्कराहट विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। रावी कहे मेरे सोहणे चिट्टे वस्त्र, भूषन नज़री आईआ। नैणीं तक्के अगम्मे शस्त्र, अस्त्रां नाल वड्याईआ। लेखा याद आया दसरथ, राम रामा गया जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ऐशो इशर्त, जगत विकार विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग वखाईआ। रावी कहे मेरा सोहणा रूप निराला, प्रेम लहर टकराईआ। प्रभ मिल्या पुरख अकाला, अकल कलधारी दया कमाईआ। मेरा तुट्टा कूड़ जंजाला, जागरत जोत करी रुशनाईआ। वक्त वेख्या हाला, बेहालां लए उठाईआ। कूड़ी क्रिया टिक्का रहे ना काला, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। सब दा पूरा कर

सवाला, आसा मनसा वेख वखाईआ। सति धर्म दी बदल के चाला, चाल निराली इक्क प्रगटाईआ। सन्त सुहेला वेख के बाला, गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। रावी कहे मैं वेखी सच प्रीत, प्रीतम इक्को इक्क कमाईआ। धुर दा सांझा मीत, हर घट सोभा पाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग रीत, रीतीवान आपणी आप वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, सोहँ शब्द करे शनवाईआ। निरगुण हो के वसे चीत, मन चंचल डेरा ढाहीआ। जन भगतां काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। नाम भण्डारा कर बख्शीश, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे सोभा पाईआ। रावी कहे मैं वेख्या अजब रिवाज, सोहणी बणत बणाईआ। सब दे पूरे कर के काज, लेखा मूल चुकाईआ। सीस जगदीश रख के ताज, ताजां वालयां दए खपाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बेड़ा डुब्बे जहाज़, शौह दरया रुढ़ाईआ। जन भगतां करे आबाद, उजड़े खेड़े आप वसाईआ। सन्त सुहेले वेखे साध, जिन्हां साधना इक्क समझाईआ। जगत तृष्ना मेट के आग, अग्नी अग्ग गवाईआ। हँस बणाए काग, कागों हँस उडाईआ। दीपक जोत जगा चिराग़, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। साचा देवे अगम्म स्वाद, बिन रसना रस चखाईआ। रावी कहे मेरी ओस नूं आदाब, सिर चरणां उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमति मैल सब दी धोवे दाग़, दग़ेदारी दा पैंडा दए मुकाईआ।

★ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत जिला गुरदासपुर ★

कलयुग कहे आओ द्वापर त्रेता सतिजुग, सति वाल्लयो तुहानूं दयां वखाईआ। हुण मेरी वी औध रही पुग, वेला अन्त सुणाईआ। चार कुण्ट अन्धेरा घुप्प, मेरी सेवा बेपरवाहीआ। नाता जुड़या रहिण नहीं दिता पिता पुत्त, सज्जण मीत करन लड़ाईआ। साचा नाम गया छुप, उग्घण आथण नज़र कोए ना आईआ। मैं प्रभू दा लाडला सुत, जग साची सेव कमाईआ। तुहाडे साहमणे इक्क बचन लवां पुछ, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। साहिब सतिगुर, तिन्ने जुग मेरे नाल करदे दुःख, वैरी रूप बणाईआ। पुरख अकाल कहे, क्यों, दस्स मेरे पुत्त, बच्चया भेव खुल्हाईआ। प्रभू एह कहिंदे अग्गे गुर अवतार पैगम्बर बणदा रिहा मनुक्ख, तत वजूद हंढाहीआ। हुण निरगुण धारों आया उठ, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां रिहा तुठ, मेहर नज़र टिकाईआ। परदा ओहला रिहा ना लुक, मुख नकाब ना कोए टिकाईआ। कुछ लहिणा रावी दी गुठ,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वड्याईआ। कलयुग कहे तिन्ने जुग बड़े हावी, हिम्मत वाले नज़री आईआ। हुण मेरे प्रभ दी वेखो भावी, भाणा की वरताईआ। चरण छुहाउणा कन्ढे रावी, रावण दूती दए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सति धर्म दी कर के गए लावी, हिस्सा आपणा आप उठाईआ। भविख्तां नाल वारता थोड़ी गावी, गा गा गए जणाईआ। जिस वेले सृष्टी होई निथावीं, गुरू गुरदेव ना कोए सहाईआ। बल रहे ना भुजां बाहवीं, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया तपे आवी, अग्नी अग्ग जलाईआ। कलयुग कहे गुर अवतार पैगम्बरां सब ने आख्या प्रभ ओस वेले आवीं, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दीनां मज़्बां तक्कड़ी करीं सावीं, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाईआ। कलयुग कहे वेखो साच किनारा, तट इक्क वखाईआ। जित्थे पिरथू बण के सेवादारा, सेवा आपणी गया कमाईआ। धनंतर फिरया विच उजाड़ा, जड़ी बूटी खोज खुजाईआ। नर सिँघ एथे कर के गया इशारा, प्रहलाद परदा लाहीआ। ध्रू नूं वखाया धर्म दवारा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कबीर दिता सच इशारा, गंगा धार दुहाईआ। सधने रो के ज़ारो ज़ारा, उंगली आपणी दिती उठाईआ। एह खेल अगम्म अपारा, जैदेव वड्याईआ। देवत सुर करन निमस्कारा, मुन जन सीस झुकाईआ। ब्रह्मा चार दिन कर के गया गुज़ारा, एसे कन्ढे आसण लाईआ। शंकर पार्बती दा धर्म लग्गा अखाड़ा, नौ दिन पुठ्ठी पैरीं नाच नचाईआ। लछमी लाल रंग चाढ़ के गाड़्हा, विष्नूं चरणां सेव कमाईआ। परवरदिगार लंमां कर के दाढ़ा, निरगुण फेरा गया पाईआ। इन्द्र दा सुफ़ने वाला अखाड़ा, अपच्छरां नाच नचाईआ। बल दा सर्दी वाला जाड़ा, अग्नी तत गवाईआ। आवी चाढ़न वाला घुम्यारा, प्रहलाद दे समें दा जिस दी एथे जन्मी माईआ। गोबिन्द दा तिक्खा कुहाढ़ा, मुड्ढ एसे लक्कड़ी नाल छुहाईआ। कलयुग कहे वेखो मेरे यारा, द्वापर त्रेता सतिजुग दयां सुणाईआ। पुरख अकाल करे खेल न्यारा, न्याँकार आपणा फेरा पाईआ। जिस कारण चलया फेर दुबारा, दुबिधा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा बण सहारा, सहायक इक्को इक्क अख्वाईआ।

★ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ रावी किनारे ज़िला गुरदासपुर ★

फ़रीद दे कोल आ गई इक्क घुग्गी, घूं घूं कर के रही सुणाईआ। नेत्र छहबर रो पई भुब्बीं, अक्खीआं जल वहाईआ। मेरी निक्की जेही बुद्धि, सकां ना कुछ समझाईआ। मैनूं प्रभ मिल्या नही चौंह जुगीं, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। मैं चल

के लत्तों हो गई डुड्डी, बलहीण अख्वाईआ। लक्क तों हो गई कुब्बी, सिध्धा अंग ना कोए कराईआ। मैनूं रमज़ दस्सी किसे नहीं गुज्झी, सिफ्तां सुण सुण झट लँघाईआ। मेरी पार दरया तों झुग्गी, बड़ी औखी एथे चल के आईआ। वेखीं कोई खेल ना दस्सीं दूजी, इक्को नाल लैणा मिलाईआ। जिस दे प्रेम अंदर रुझी, अठ्ठे पहर गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। घुग्गी कहे वे फ़रीदा फ़क्कर, फ़ाके वाल्या देणा समझाईआ। तेरे दर ते गई अप्पड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा विछया वेख्या तप्पड़, धरती उत्ते सोभा पाईआ। जल पीता थोड़ा विच्चों छप्पड़, आपणी तृखा बुझाईआ। मेरी सिध्धी लगा दे टक्कर, प्रभ दे नाल मिलाईआ। फ़रीद किहा मेरा वी कक्खां वाला छप्पर, महल अटल ना कोए सुहाईआ। अजे कलयुग झुल्लणा अन्धेरी झक्खड़, चारों कुण्ट दुहाईआ। भैणां भाईआ नहीं बन्नृणा रखड़, जगत विहार देणा तजाईआ। सृष्टी उत्ते कूड़ा चलणा चक्र, चार कुण्ट भवाईआ। दीन दुनी ने करना मकर, फरेबां विच फ़रेब कमाईआ। किसे शरीणी नहीं वण्डणी शकर, मिठ्ठा रस ना कोए चखाईआ। प्रेम दा लिखे कोई ना पत्र, पाती घर ना कोए पुचाईआ। ओस वेले निरगुण धारों आवे उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। भगत सुहेले लभ्भ के पुत्तर, पिता पूत जोड़ जुड़ाईआ। आवे रावी दे कन्ढे ओसे नुक्कर, जिस दा नुकता ना कोए जणाईआ। कीता कोल ना जावे मुकर, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। फिर दोवें मिल के करीए शुकर, सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। घुग्गी कहे मैं लंगड़ी लूल्ही, बलहीण अख्वाईआ। ओने चिर नूं गवालण आ गई रस्ता भूली, मटका दूध सीस रखाईआ। ओने चिर नूं वेचण वाला आ गया मूली, निमक आपणे हथ्थ टिकाईआ। ओने चिर नूं शंकर आ गया मोढे उत्ते रख त्रसूली, अलख अलख नाअरा लाईआ। ओने चिर नूं हवा ने उडा दिती धूली, घट्टा मिट्टी छार दिती बणाईआ। ओने चिर नूं मुलज़म आ गया जिस नूं चाढ़ना सी सूली, सज़ा जगत वाली भुगताईआ। ओने चिर नूं गज आ गया जो मस्ती विच रिहा झूली, आपणा सुंड हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। घुग्गी कहे मैं डुड्डी लंडी बलहीण, जोबन रिहा ना राईआ। मैं पिछले वेखे जुग तीन, जुग जुग जन्मां विच भवाईआ। मैनूं राम ने दिता यकीन, कृष्न भरोसा गया बणाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद कीती तलकीन, कलमयां विच शनवाईआ। सूफ़ीआं किहा आलमीन, अल्ला हू अकबर नाअरा लाईआ। मैं जो वेख्या सो करदा गया तक्सीम, सांझा संग ना कोए रखाईआ। मेरी आसा पुराणी कदीम, पिछली दयां दृढ़ाईआ। मैं जद बणां ते बणां मदीन, नर रूप ना कोए वखाईआ। इक्को आस प्रभ दे रहां अधीन, सद सद सेव कमाईआ। मुहब्बत विच लीन,

१२०६
२०

दूजा कन्त ना कोए हंढाहीआ। फ़रीदा तूं दस्स तूं पक्का कि हकीम नीम, ख़तरा जान ना कोए वखाईआ। फ़रीद किहा उह मालक रैहम रहीम, रहमत विच वड्याईआ। नेत्र अन्ध ना होए नाबीन, हर घट अंदर वेख वखाईआ। तेरा प्रेम परे जल मीन, रीती भगत वाली नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। घुग्गी कहे मेरा ना घर ना घौंसला, आलृणा नज़र कोए ना आईआ। इक्को प्रभू मिलण दा हौसला, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जन्म मरन दा नहीं कोई तौखला, भय विच ना कोए डराईआ। फ़रीद किहा हुण अग्गों ज़बान रोक ला, कुछ कहिण कहिण ना पाईआ। इक्क वार थोड़ा सोच ला, समझ समझ विच्चों प्रगटाईआ। आपणे आप दा वज़न जोख़ ला, की भगती सेव कमाईआ। घुग्गी कहे मेरा तन वजूद खोखला, नामहीण ना कोए वड्याईआ। जो कुछ लभ्भे ओहो खाण नूं बोच लां, चुंझीं चुग चुग आपणा झट लँघाईआ। एहो आसा प्रभू जन्म मरन दा रोग लाह, क्यों चुरासी विच भवाईआ। सच प्रीती दस्स राह, रहिबर इक्क अख्वाईआ। फ़रीद किहा उह इक्को इक्क खुदा, निरगुण नूर डगमगाईआ। कलयुग अन्तिम जावे आ, आलम वेखे ख़लक खुदाईआ। तैनूं विछड़ी नूं लए मिला, मेल मिलावा आपणे नाल रखाईआ। मैं वी आवां ओसे थाँ, दोहां मिल के वज्जे वधाईआ। पिछला दसे ना कोए निशां, हर घट जाणी फोल फुलाईआ। साडा दोहां दा इक्क गवाह, जिस दी गवाही ना कोए बदलाईआ। फ़रीद किहा घुग्गीए दोवें मिल के करीए दुआ, वास्ता इक्को अग्गे पाईआ। जेहड़ा चलाए आपणी रज़ा, राज़क रहीम अख्वाईआ। उह मिले महबूब खुदा, खुद मालक धुरदरगाहीआ। दोहां ने इक्ठ्ठा सीस दिता झुका, प्रभ तेरी सरन सरनाईआ। साडा आपे लेखा दईं मुका, सब कुछ तेरी झोली पाईआ। एसे कारण गया आ, मलाहां दा मलाह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं रिहा तरा, तारनहार इक्क अख्वाईआ।

★ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ उजागर सिँघ दे गृह राज पुर चेबे ज़िला गुरदासपुर ★

रावी कहे त्रेते दी गल्ल, सच्ची दयां सुणाईआ। ऐथे वड्डा हुन्दा सी झल्ल, बूटे कंडयां वाले समझाईआ। इक्क वैरागीआं दा दल, नौ तेरां गणत गणाईआ। सिध आसण बैठे मल्ल, माटी पोच पुचाईआ। पवित्र लै के जल, कुम्भ विच रखाईआ। पाहन पा के गल, ठाकर चुम्म के खुशी बणाईआ। रेत दा वेख के थल, ख़ाक सीस विच सुटाईआ। प्रीती विच रल, ध्यान प्रभ दे वल्ल टिकाईआ। मृग वछा के खल्ल, बहि के सोभा पाईआ। कोल डूँघी वहिण डल, सत्त हथ्थ नाप मिणाईआ।

अग्गे मिट्टी वाली ठल्ल, वहिन्दा वहिण दए अटकाईआ। उपर सन्यासी बैठा सिँघासण मल्ल, इक्को शंकर राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाईआ। रावी कहे बहुभारी हुन्दे सी दरख़त, टहणीआं पत्तयां नाल लहराईआ। इक्क दिन तिन्न दा सी वक्त, दिवस आपणा जोबन रिहा वखाईआ। राम दा आ गया भगत, मस्तानी बिरती विच शौदाईआ। रख के बहि गया वरत, अन्न दाणा ना मुख छुहाईआ। प्रभ नाल ला के शर्त, सवासयां विच सुणाईआ। जिंनां चिर ना देवें दरस, आपणा आप प्रगटाईआ। मेरी बुझे मूल ना हरस, हवस ना कोए गवाईआ। मेहरवान कीता तरस, त्रैगुण अतीते दिता सुणाईआ। जिस वेले निरगुण धार आवां उत्ते फर्श, जोती जामा वेस वटाईआ। इक्क दिन सुफ़ने विच एह खेल वेख्या भरत, कैकई बेटा अक्ख खुलाईआ। सृष्टी हुन्दी दिसी ग़रक, धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा प्या नार मर्द, घर घर होए लड़ाईआ। दुखियां कोई ना वण्डे दर्द, दीनां अनाथां ना कोए सहाईआ। भरत ने रो के कीती अरज़, राम तेरा नाम दुहाईआ। शब्द अगम्मी आई ग़रज, बोल के दिता सुणाईआ। एह खेल होणा असचरज, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जिस वेले आया योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। जन भगतां सिध्धी करे नरद, दीन दुनी दा पासा दए उलटाईआ। शरअ कसाई रहे ना करद, कातिल मक्तूल करे सफ़ाईआ।

पिछली फोल के वेखे फ़रद, फ़ैसला हको हक सुणाईआ। सिध्धा चल के आवे निधड़क, आपणा पन्ध मुकाईआ। राह खहिड़ा कोई नहीं होणी सड़क, पगडण्डी भज्जे वाहो दाहीआ। नूर नुरानी होवे मटक, जोबन जवानी वेस वटाईआ। राह विच ना जावे अटक, अटकां पिछलीआं दए कढाहीआ। नाल हरि संगत होवे कटक, दल लशकर शाही नज़री आईआ। जिस दा हुक्म होवे सख्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भरत वेख्या उपर अर्श, अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वड्याईआ। भरत दे अंदर आई खुशी, बैठा ध्यान लगाईआ। ओधरों आ गया इक्क जोशी, जोतश नाल समझाईआ। उस दे नाल सी ओहदी दोहती, बाली नढ्ढी सोभा पाईआ। ओहदे अंदर जगे जोती, नूर नूर रुशनाईआ। ओस हथ्थ विच फड़ के सोटी, इशारा अग्गे दिता कराईआ। जिस वेले सति दी रही कोई ना रोज़ी, नाम भण्डारा ना कोए वरताईआ। धर्म दा रिहा कोई ना जोगी, जोगीशर सति ना कोए समाईआ। विवेक दा रिहा कोई ना बोधी, मन ममता होए हल्काईआ। सृष्टी अन्तर होवे रोगी, हउमे रोग ना कोए चुकाईआ। वासना किसे जावे ना सोधी, सुध रूप ना कोए प्रगटाईआ। झगड़ा पै जाए जञ्जू बोदी, मुच्छ दाढ़ी नाल दुहाईआ। उस वेले खेल होणी इक्क छब्बी पोह दी, बाली नढ्ढी दिता सुणाईआ। प्रकाश होणा सच लो दी, लोआं पुरीआं करे रुशनाईआ। खेल

चलणी इक्क निर्मोह दी, जो मेहर मुहब्बत विच समाईआ। धार वेखणी इक्क गरोह दी, जो भगतां नाल वड्याईआ। एह वाट लंमीं होणी साढे तिन्न कोह दी, ओगरे तों ममीआं दिता मिणाईआ। आवाज़ आई हो हो दी, होका दिता सुणाईआ। अग्गे धार अद्धे कोह दी, जित्थे जोग जुगीशर सोभा पाईआ। ओथे खेल होणी लुट्ट खोह दी, ख़ाली हत्थ दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बन्धन पाईआ। रावी कहे मैं इक्क वेरां रोई, चार जुग ध्यान लगाईआ। इक्क वेरां कीती दरोही, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। इक्क वेरां सिर तों लाही लोई, नपड़द हो के दिता वखाईआ। इक्क वार करी अरज़ोई, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ। इक्क वार होई निर्मोही, मुहब्बत दिती तुड़ाईआ। इक्क वार अर्जन दे चरणां नाल छोही, मुड़ के नज़र किते ना आईआ। मैनूं संदेसा देवे कोई, हुक्म नाल समझाईआ। परदेसण नूं मिले किते ना ढोई, भज्जयां राह ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। भरत कहे मैं सुफ़ने विच तक्क होया हैरान, हैरानी अंदर नज़री आईआ। जित्थे बीआबान, जंगल जूह वखाईआ। ओथे वेख्या की निशान, जो निशाना सोभा पाईआ। परम पुरख भगवान, निरगुण जोती जाता नूर रुशनाईआ। भूमिका सुहाए अस्थान,
१२१२ धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जन भगतां हो के मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। निरगुण सरगुण करा पहचान, १२१२
२० परदा दूई रिहा चुकाईआ। एह सहिजे गल्ल आण के दस्सी राम, निउँ के लागा पाईआ। राम किहा एह प्रभू दा काम, २०
जुग जुग खेल खिलाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त सृष्टी दा विगड़े इंतज़ाम, नज़ाम नज़र कोए ना आईआ। मनुखता मज़्हबां दी होए गुलाम, ज़ातां पातां पए लड़ाईआ। ओस वेले आवे इक्क अमाम, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी करे ना कोए पहचान, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावे गान, साचा ढोला इक्क सुणाईआ। सारे विछड़े मेले आण, रावी कन्ढे वज्जे वधाईआ। राम कहे भरत सुण ला के कान, सोझी सच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पूरब लेखा सब दा आया चुकाण, चार जुग दे परदेसी, जो निरगुण धार रहे वेखी, ओन्हां लेखा पूर कराईआ।

★ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड ममीआं ज़िला गुरदासपुर ★

धरनी कहे एह कशप मुन दी आसा, मोन विच बहि के ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलदा वेखणा पासा, पासा दीन दुनी खोज खुजाईआ। नूर तकणा निरवैर पुरख अबिनाशा, अकाल अकल कलधारी वेख वखाईआ। धर्म

दवारा वेखणा साचा, जित्थे क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे ना कोए लड़ाईआ। जीउ पिण्ड वेखणा काचा, पंज तत काया मन्दिर अंदर एका निरगुण नूर जोत होए रुशनाईआ। पवणी पवण वेखणा स्वासा, जो दिवस रैण प्रभ दा नाम ध्याईआ। सच दवारे वेखणी रासा, बिन गोपी काहन आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। सति गव्वईआ वेखणा भाटा, जो धुन अनादी आत्मक राग सुणाईआ। धुर दा वेखणा पूजा पाठा, जो निरगुण निरगुण मेला लए मिलाईआ। सच दुआर दा खुल्ा वेखणा ताका, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। भगत भगवान सोहण साख्याता, जोती जाता मिल के वज्जे वधाईआ। सच दवारे जाए ना कोए निरासा, निरिच्छत सब दी आसा पूर कराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेखे प्रभासा, टिल्ले पर्बत चोटी खोज खुजाईआ। चार वरनां अठारां बरनां जुग चौकड़ी फोले खाता, पुरख अबिनाशी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह साचा रंग रंगाईआ। कशप मुन कहे मेरी आशा अन्त अख़ीर, आख़र दयां दृढ़ाईआ। मैं पैदल लँघया मुक्कया पन्ध कश्मीर, कच्छ मच्छ दोवें देण गवाहीआ। झगड़ा वेख्या शाह हकीर, ऊँच नीच देण दुहाईआ। सब दी बदली वेखी ज़मीर, सच सुच ना कोए वरताईआ। सति धर्म दी समझे ना कोए लकीर, मज़्हब दीन नाल लड़ाईआ। कुछ इशारा दिता वास्ते कबीर, बिन हुक्मे हुक्म बणाईआ। जिस वेले सतिजुग कलयुग विच होवे ताअमीर, सति सतिवादी राह चलाईआ। करे खेल प्रभ गहर गम्भीर, निरगुण आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे बेनज़ीर, नज़र सब दी दए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होण दिलगीर, दरगाह साची सीस निवाईआ। शरअ कटे ना कोए ज़ंजीर, कड़ी कड़ी ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। धरती कहे मेरा धाम निराला, जुग जुग वण्ड वण्डाईआ। कशप ऋषी वछा के दुशाला, मृगछाला सोभा पाईआ। राती सुत्तयां लग्गा पाला, करवट करवट विच्चों बदलाईआ। करे बेनन्ती अग्गे हरि गोपाला, दीनन हो के सीस निवाईआ। तूं समरथ साहिब आदि जुगादि सदा रखवाला, रक्ख्या करें थाउँ थाँईंआ। हउँ बालक तेरा लाला, नन्हां बच्चा नज़री आईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी शाहो भूप भूप सुल्तानां, राज राजाना आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख मार ध्याना, बीस बीसा राह तकाईआ। प्रगट होवे योद्धा सूरबीर बली नौजवाना, मर्द मर्दाना इक्क अख्वाईआ। निरगुण धार निरवैर निरँकार जोती पहने जामा, कृष्ना रामा सारे सीस निवाईआ। पीर पैगम्बर करन सलामां, सजदयां विच सर ना कोए उठाईआ। सो साहिब सतिगुर दस्से अगम्मी इक्क कलामा, कायनात करे पढ़ाईआ। नाम डंक वजाए दमामा, दमां वाले सारे लए जगाईआ। सति धर्म दा लै के सच निशाना, भज्जे चाँईं चाँईंआ। ज़रूर पहुंचे एस अस्थाना, जित्थे बहि

के आपणी कार कमाईआ। मुहम्मद याद कराया विच कुराना, तीस बत्तीस सिफ्त सालाहीआ। जो मुर्शद मुरीदां करे दीवाना, महिरम हो के वेख वखाईआ। उह भगतां समझे ना कदे बेगाना, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। लहिणा देणा चुकावे दो जहानां, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त फोल फुलाईआ। सो बेनन्ती मन्ज़ूर करे परवाना, परवानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल दो जहानां, दोहरी आपणी धार वखाईआ।

★ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सरदूल सिँघ वज़ीर पुर जट्टां
मलाह दे नाल रावी किनारे ज़िला गुरदासपुर ★

बेड़ी कहे मेरी निमस्कार, गुर गोबिन्द तेरी इक्क सरनाईआ। धुर मलाह बेऐब परवरदिगार, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। भवजल सागर गुरमुख डुब्बे ना मँझधार, चप्पू नाम मुहाणा इक्क लगाईआ। गुर अर्जन लिख के गया आपणी धार, रावी कन्ढा वेख वखाईआ। जिस वेले आवे कल कल्की अवतार, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। बेड़ी पिच्छे बेड़ा परवार दा जाए तार, वड्डा छोटा जन्म मरन विच कोए ना आईआ। सचखण्ड पुज्जे सच सच्चे दरबार, जित्थे पुरख अकाल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर वसाईआ। रावी कहे मेरा जल ठंडा, वञ्झां नाप नपाईआ। पुरख अकाल सच प्रेमीआं धुर दरबारे देवे गंढां, टुट्टयां गंढ वखाईआ। जिस प्रेम नूं लभ्भदी जमना सुरस्ती गंगा, नित नवित ध्यान लगाईआ। उस तों उत्तम सृेष्ट होया एह कन्ढा, जिस पत्तण ते मिल्या बेपरवाहीआ। बाहरों बन्दा अंदरों बख्शंदा, बख्शिश विच रहमत आप कमाईआ। सच प्रेम दा देवे इक्क अनन्दा, अनन्द धुर दा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवे माण वड्याईआ। पार उतारे जगत मलाह, भगतां नाल वड्याईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, लहिणा देणा सब दा दए चुकाईआ। डूँघर पार कराए जल थल अस्गाह, टिल्ले पर्बत चोटी राह विच ना कोए अटकाईआ। सच दवारे देवे अगम्मी थाँ, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे आसण लाईआ। धर्म दुआर दा धर्म न्याँ, लहिणा देणा पिछला झोली पा, पूरब वेख वखाईआ। दादू दे देहुरे एह सूफ़ी जिस ने बख्शाए गुनाह, गोबिन्द अग्गे सीस निवाईआ। चरण कँवल मंग पनाह, सिर कदमां उत्ते टिकाईआ। गोबिन्द पिठ्ठ उत्ते हथ्थ दिता टिका, थापी पुश्त पनाह लगाईआ। जिस वेले मालक ख़ालक प्रितपालक आवे बेपरवाह, इक्क नहीं तेरा बेड़ा सब दा पार कराईआ। छोटे वड्डे नढ्ढे

बच्चे स्त्री पुरुष साक सज्जण अद्ध विच रहे कोई ना, धर्म राए दी दए ना कोए सज़ाईआ। छयासीआं पिच्छे छे गुणां तेरा कुटम्ब दए तरा, छे शास्त्र छे घर छे गुर छे उपदेश नाल मिलाईआ। क्यों, जगत माया तों कीती नाह, गुरमुखां दी प्रेम नाल पकड़ी बांह, बेड़ी काठ उत्ते दिता थाँ, एसे कारण जन्म जन्म दे बख़्शे गए गुनाह, रूह बुत्त दोवें पाक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां नूं करके जाए हां, हरि घाट हरि मन्दिर दरगाह साची सचखण्ड दुआर दए पुचाईआ।

रावी कहे लहिंदयुं आया चढ़दे, लैहन्दा चढ़दा दक्खण पहाड़ वेख वखाईआ। कुछ भेव दस्स आपणे घर दे, की चोरी चोरी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैथों रहे डरदे, सिर सक्या ना कोए उठाईआ। झगड़े पाए तन वजूद जड़ दे, चेतन रंग ना कोए रंगाईआ। बिरहों विछोड़े विच सारे रहे मरदे, हौकयां विच तड़फाईआ। अनक प्रकार तेरा नाम कलमा रहे पढ़दे, सिफ्तां विच सालाहीआ। सीस जगदीस भाणा रहे जरदे, दुःख सुख विच बदलाईआ। कूड़ विकार रहे ठल्दे, आपणा बल प्रगटाईआ। जगत जवानीउं रहे ढलदे, बुड़ेपा सिर ते छाईआ। अन्तिम रहे सारे मरदे, हुन्दी रही क्यों जुदाईआ। रावी कहे मेरी अरज़े, आरज़ू दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। रावी मेरा ना लैहन्दा ना चढ़दा, दक्खण पहाड़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हर घट अंदर बैहन्दा, घर घर डेरा लाईआ। धुर संदेसा सदा सदा जग कहिंदा, कहि कहि आख सुणाईआ। तेरे नालों तिक्खा मेरा प्रेम जल वहिन्दा, जो गुरमुखां दा कूड़ा करकट दए रुढ़ाईआ। जित्थे वहिण गहण कोई नहीं पैंदा, राह इक्को जेहा दरसाईआ। वेख हुलारा मेरी कांग नैं दा, घुंमण घेर ध्यान लगाईआ। जित्थे झगड़ा नहीं मैं तैं दा, तूं मैं वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। रावी कहे मैं नहीं मन्नदी, तेरी बेपरवाहीआ। मैं गल्लां सुणदी कल्ह दी, की की गुरमुख रहे सुणाईआ। कोई कहे मैं वेखी नहीं धार जल दी, पिच्छे मुड़ के पिच्छा आया भवाईआ। रावी कहे प्रभू किसे नूं ख़बर किहड़ी घड़ी पल दी, बुद्धी की चतुराईआ। मैं इक्को आखा तेरा मन्नदी, निउं के सीस निवाईआ। कुझ हालत दस्स अर्जन चन्न दी, जो मेरे विच आपा भेंट कराईआ। पुरख अकाल किहा एह गल्ल सुणनी नहीं किसे कन्न दी, अनबोलत बोल जणाईआ। जेहड़ी धार गुर अवतार पैगम्बर घलदी, हुक्मे विच भवाईआ। एह खेल उसे अछल अछल्ल दी, जिस नूं वलीआ छलीआ कहि के सारे गाईआ। रावी कहे क्यों

फौज चढ़ाई दल दी, भगतां नाल मिलाईआ। पुरख अकाल किहा कमलीए तूं इन्नां दे नाल फलदी, इक्कली कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। रावी कहे लैहन्दा चढ़दा तेरा कोई नहीं पतण, मैनूं दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा हां जित्थे भगत सुहेले वसण, उह तट किनारे सोभा पाईआ। रावी खिड़ के लग्गी हस्सण, दो टुट्टे दन्द वखाईआ। पुरख अकाल किहा मैं उन्नां दी पैज आया रखण, जो चार जुग ध्यान लगाईआ। रावी कहे मैं सुणया काहन जमना उत्ते खांदा रिहा मक्खण, गोपीआं खेल रचाईआ। हुण तूं स्वाद की आयों चक्खण, मैनूं दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगतां दे पड़दे आया ढकण, खाण पीण दी लोड़ ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ी जड़ आया पट्टण, पटणे वाला नाल मिलाईआ। रावी कहे मैनूं याद आ गई गुर अर्जन ने विचले दो खोले सी बटन, सीना तैनूं दिता वखाईआ। मैं खुशीआं विच लग्गी टप्पण, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। इधर उधर लग्गी नस्सण, भज्जी चाँईं चाँईंआ। जां रेत पैंदी वेखी मैनूं पै गई ग़शन, मैं कीती हाल दुहाईआ। जां तक्क के वेख्या वल्ल पच्छिम, आपणी अक्ख उठाईआ। संदेशे विच सुणया इक्क बचन, किसे अगम्मड़े दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१२१६ आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। रावी कहे प्रभू तूं बड़ा डाहढा, डाहढया की तेरी वड्याईआ। पुरख अकाल १२१६
कहे मैं करां खेल नाड़ी मास हाडा, निरगुण नूर इक्क चमकाईआ। कुछ बचन कर यादा, पिछली याद वखाईआ। जिस
२० वेले बाल्मीक बण के आया सी सादा, तेड़ लंगोटी इक्क छुहाईआ। आपणे बदन ते ला के पंज दाग़ा, निशान लए बणाईआ। २०
फिर सुणाई इक्क आवाज़ा, कूक कूक अलाईआ। जे किते हैं ते प्रभू आजा, जंगल विच आसा पूर कराईआ। श्री भगवान किहा मैं राम नहीं राम दा राजा, राम राजे दा ढोला गाईआ। बाल्मीक किहा तेरा किहो जेहा समाजा, मैनूं दे वखाईआ। पुरख अकाल किहा औह वेख अस्व घोड़ा ताजा, जिस दी हड्ड मास नाड़ी नज़र कोए ना आईआ। एह तिक्खा बड़ा चलाका, दो जहानां फिर के आपणा पहला कदम टिकाईआ। इक्क होर वेख तमाशा, तैनूं दयां वखाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर सति धर्म होए विनाशा, अबिनाशी नज़र किसे ना आईआ। पिता पुत्तर करे घाता, घर घर पए लड़ाईआ। चारों कुण्ट होए अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। चेला गुरू ना मन्ने आखा, गुरू चेलयां अग्गे झोलीआं डाहीआ। नेत्र रोवे ज़ात पाता, पतण नज़र कोए ना आईआ। बाल्मीक किहा प्रभू एह बड़ीआं लंमीआं बातां, त्रेते पिच्छों द्वापर द्वापर पिच्छों कलयुग कलयुग दा अन्त समां बहुता नज़री आईआ। पुरख अकाल किहा ज़रा तक्क उपर आकाशा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जां वेख्या ते ओनूं कलयुग दा नज़र आ गया तमाशा, सब कुछ दिता वखाईआ। बाल्मीक टेक के माथा, सीस

दिता झुकाईआ। प्रभू तूं आपणा जाणें आपे साका, तेरी कहाणी कथन कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल खेल प्रभ साचा, सच दा मालक इक्क हो जाईआ। रावी कहे प्रभू चढ़दे नूं होर तुर, अगला पन्ध मुकाईआ। अग्गों मिलण आए अवतार गुर, आसा इक्क रखाईआ। जेहड़ा लिख्या अनन्द पुर, उह भुलेखा दे कढाहीआ। जेहड़ी गुरमुखां तों रह गई थुड़, उह वी पूरी कर वखाईआ। होर वेख प्रभू आ गए देवत सुर, फूलन बरखा लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आए मुड़, आपणा मुख भवाईआ। सारे कहिण असीं समझदे पुरख अकाल सदा वसे सचखण्ड दी कुड़, जिस नूं वेखण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण बापू आ गए रावी दे कन्ढे, दर तेरे सीस निवाईआ। दस्स किहड़ी वस्त सानूं वण्डें, पिछलीआं वण्डां दे मुकाईआ। असीं छड्डे मज़्बां वाले डण्डे, डण्डावत इक्को दे समझाईआ। सारे आए पैरीं नंगे, खुशीआं पन्ध मुकाईआ। ठंडे पाणी विच्चों लँघे, जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। देवत सुर कहिण हुण ते खोल्ह दे सुरती, सुत्तयां लै जगाईआ। दरस करा आपणी मूर्ती, मूर्त अकाल तेरी वड्याईआ। आवाज़ सुणा आपणे तूर दी, तुरत कर शनवाईआ। की आज्ञा हज़ूर दी, सानूं दे समझाईआ। असीं खुशी वेखण आए एसे बेड़े पूर दी, जो पुरी अनन्द दी देण गवाहीआ। झलक तक्कण आए कोहतूर दी, जो मूसा करे रुशनाईआ। सारे कहिण प्रभू हुण लँघण नहीं देणा दूर दी, अग्गे हो के झोली डाहीआ। मज़दूरी दे जा पिछले मज़दूर दी, जुग चौकड़ी तेरी सेव कमाईआ। अग्गे सज़ा ना देवीं किसे कुसूर दी, एहो मंग मंगाईआ। इक्को लोड़ चरण धूढ़ दी, टिक्के इक्को नाम वखाईआ। बुद्धी पवित्र होवे मूढ़ दी, मूर्खां मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। विष्न कहे आ ओए शिव ब्रह्मा, ब्राह्मणा दयां जणाईआ। क्यों झगड़ा प्या काया चम्मा, तत्तां वाली वण्ड वण्डाईआ। क्यों बणया रिहों निकम्मा, बलहीण हो जाईआ। ब्रह्मा कहे मेरे हथ्थ नहीं रिहा समां, जुग जुग हरि करता आपणी कार कमाईआ। प्रभ नूं लालच नित नित आपणा नाम चलाउँदा रिहा नवां, बदली विच आपणी बदली आप कराईआ। मैं नेत्र रोवां छम छमां, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ पकड़ सब दा बाज़ू, आपणे नाल मिलाईआ। तेरे हथ्थ तक्कड़ तराज़ू, अगला ष्तोल देणा समझाईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना जागू, बिन किरपा अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सति दा रहे कोए ना साधू, साधना सच ना कोए कमाईआ। जुग चौकड़ी तेरे बणे रहे आगू, आज्ञा विच सीस निवाईआ। हुण सब दी बीती आयू, उमर रहिण

कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो इस दा लेखा दस्सांगा अज्ज दी रात, छेती नाल समझाईआ। हुण थोड़े समें वास्ते तुसीं आपणी कर लओ गल्ल बात, मश्वरे इक्क दूजे नाल मिलाईआ। मेरा लेखा हिसाब नाल कलम दवात, पक्की गंढु रखाईआ। सारे करो अरदास, निउं के सीस झुकाईआ। चढ़ो उपर ओस आकाश, जिस धारों चल के एथे आईआ। सचखण्ड करो निवास, आसण इक्क जमाईआ। नौ वजे आउणा फेर मेरे पास, भज्जणा चाँई चाँईआ। आपणी पूंजी नाल ल्याउणी रास, समग्री देणी वखाईआ। फिर मैं वेखांगा कि तुहानूं किस वेले देवां शाबाश, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सारे कहिण प्रभू असीं जपदे आवांगे सारे सोहँ जाप, फिर किस तरह अक्ख लएं बदलाईआ। तूं साडा असीं तेरे ते असीं भगतां नाल बणाउणा साक, नाता तेरे घर जुड़ाईआ। साडा पिछला भविख्त वाक्, शहादत दए गवाहीआ। सब दी पूरी करनी आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। हुण प्रगट होइउं आप, आपणा फेरा पाईआ। रल मिल सारे कहीए तैनूं बाप, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, तेरा वेख्या इक्को घाट, जित्थे पतण पातण नजर कोए ना आईआ।

★ ५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत ज़िला गुरदासपुर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण आ के पुज्जे, पूजनीक सीस निवाईआ। जेहड़ा रमज इशारे सब दे बुज्झे, बुझे दीपक रिहा जगाईआ। आपणे हिसाब किताब नाल ल्याए गुज्झे, जो आपणे विच छुपाईआ। सदी चौधवीं कुछ ना सुज्झे, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। लेखे रहिण मूल ना लुके, करे खेल बेपरवाहीआ। क्यों चलाई रीती पीते हुक्के, मुच्छां लईआं कटाईआ। क्यों दीन मज़्ब दे लाए बूटे, वक्ख वक्ख राह चलाईआ। क्यों फिरदे रहे आपणी कूटे, चारों कुण्ट ना डंक वजाईआ। भाउ रखाए दूजे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दित्ते बणाईआ। खवाए मुरग़ी चूज़े, छुरी गल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण लै के आए हिसाब, आपणा पन्ध मुकाईआ। धर्म ग्रन्थ दी खोलूण सर्ब किताब, वरका वरका उलटाईआ। उच्ची कूक सुणावण आवाज़, दीन दुनी शनवाईआ। सारे खोलो़ जाग, निंद्रा दूर कराईआ। साचा सिक्खो त्याग, तेग़ाधारी दए दुहाईआ। की लेखा मुकणा आज, भाण्डा भरम भन्नाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग असीं चलाउँदे गए जहाज़, बेड़ा पतण आपणा आपणा वखाईआ। रचाउँदे

गए काज, अल्ला वाहिगुरू नाम सति राम कृष्न जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आए लेखा चुक्क, चुक्की पीड़ पराईआ। प्रभ साथों रिहा पुछ, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। सानूं लग्गा दुःख, दीन दुनी दुहाईआ। साचा मिले किसे ना सुख, सांतक सति ना कोए कराईआ। उजल करे कोए ना मुख, दुरमति मैल धवाईआ। शाह सुल्तानां वरती भुक्ख, तृष्ना तृप्त ना कोए वखाईआ। असीं सारे बैठे लुक, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। हुण नेड़े जाओ ढुक्क, जवाब तल्बी विच सीस निवाईआ। सारे कहिण की साडा पैंडा गया मुक, मंज़ल रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की खोल्हीए आपणा बस्ता, वस्या नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द सब दे पिच्छे हस्सदा, आपणी लै अगंड़ाईआ। दस्सो केहड़ा हक रखदा, जो सब नूं रिहा मिलाईआ। केहड़ा नाम जपदा, जो जीवण दाता नज़री आईआ। केहड़ा मार्ग दस्सया सति दा, सुल्हकुल मनाईआ। क्यों बेड़ा भरया पप्प दा, कलयुग कूड़ दुहाईआ। क्यों ना परदा खुल्हा अप दा, आपणा नूर चमकाईआ। क्यों ना इशारा होया अक्ख दा, निज नेत्र नैण लोचण शरमाईआ। मुहम्मद कहे मैं बचन दस्सां सच दा, सहिज नाल समझाईआ। मैं चौंह यारां दस्सया जिस वेले झगड़ा प्या नूंह सस्स दा, सौहरे पेके रस ना कोए बणाईआ। फेर खेल होणा पुरख समरथ दा, जो आपणी कार कमकाईआ। ओस ने साथों लेखा मंगणा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता बाणी हथ्थ दा, जो हथ्थां नाल लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा मुकरर हो गया रैंट, किराएदार अख्वाईआ। मुहम्मद कहे किहड़े वसीए टैंट, मस्जिद सोभा कोए ना पाईआ। मूसा ईसा कहे की करीए जिधर वेखीए घड़ी कलाक हैट पैंट, गिरजा गिरहा ना कोए खुल्हाईआ। राम कृष्न कहिण सब ने लाया सैंट, गुलशन रहे महकाईआ। नानक गोबिन्द कहे धर्म पुजारी बण गए अजैंट, आपणा रूप बदलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ बण गए कैंट, धर्म दवारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। ईसा कहे मैं लै के आया कलाक, जो वेला वक्त समझाईआ। मूसा कहे मैं सब दी सुण के आया टाक, की पोप रहे सुणाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण असीं फोल के आए डाक, लेखा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दे हिस्से वेखे बलाक, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं भज्जे आए डायरैकट, राह विच ना कोए अटकाईआ। दीन दुनी विच्चों करदे आए सिलैकट, गुरमुख हरिजन सज्जण वेख वखाईआ। दीन मज़्ब दे भन्नदे आए बरैकट, बन्धन

१२१६
२०

बंध ना कोए रखाईआ। सचखण्ड दवारिउं चले नौ वज्जे क्रैक्ट, बीस मिन्ट रस्ते विच लगाईआ। थोड़ा धर्म राए कोल प्या डीफ़ैकट, उस नूं दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। मूसा कहे ईसा वेख लाईन डिवन, डीवाईड ना कोए कराईआ। परवरदिगार कुछ लेखा देवे गिवन, गो गॉड दया कमाईआ। जेहड़ी वस्त पाई विच टिफ़न, लाक ताक नाल कराईआ। उह जवाब मंगे रिटन, कलम शाही जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। मूसा कहे वेखो इक्क अगम्मा गेट, गाईड नज़र कोए ना आईआ। कोई हो ना जायो लेट, आपणा वक्त गवाईआ। पिच्छे करयो ना कोई वेट, इंतज़ार ना कोए रखाईआ। पिछली याद कर ल्यो डेट, हुक्म हुक्म इक्क सुणाईआ। तुहाडी कीमत मुकरर हो गई रेट, दीन दुनी रही चुकाईआ। हुण अक्खर लिखणे नहीं नाल सलेट, पत्थरां उत्ते घसाईआ। पिछली भुल्ल जाओ परेट, पटने वाला करे अगवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल खिलाईआ। मूसा कहे मैं वेख्या अगम्म गॉड, नूर नूराना नज़री आईआ। जिस दे हथ्थ विच शब्दी राड, इशारे नाल समझाईआ। नानक किहा ओस दा लेखा आदि, अन्त विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण आए पहुंचे दर, दर दुआर सुहाईआ। निमस्कार कर, सीस जगदीस झुकाईआ। मेहरवान हरि, सच तेरी सरनाईआ। तेरा अक्खर ल्या पढ़, जो हुक्म विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। मूसा कहे ईसा हो जा इक्क साईड, तरफ़ तरफ़ बदलाईआ। शाह अस्वारा बण राईड, आपणा बल धराईआ। दीन दुनी मार्ग कर वाईड, नैरो रहिण कोए ना पाईआ। परदा ओहला चुका बीहाईंड, सनमुख हो के सोभा पाईआ। तेरी खेल कोई ना जाणे काईंड, अक्खरां विच ना सिफ्त सालाहीआ। सब नूं माईनस करदे माईंड, मुहब्बत तेरी बेपरवाहीआ। तेरा इक्को हो जाए सॉंईड, बिन कलम शाही शाह बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। मूसा कहे ईसा वेख नाईट, बलैक काली नज़री आईआ। गोबिन्द कहे निरगुण धार तक्क वाईट, सति सफ़ैदी सोभा पाईआ। नानक कहे कवाईट, जो गोबिन्द दिता सुणाईआ। मुहम्मद सिर हिला के कहे राईट, एहो प्रभ दी बेपरवाहीआ। सारे कहिण वेखो किस बिध सब दे नाल करे फ़ाईट, फ़िट आपणा आप कराईआ। पोइटरी विच लिख सके ना कोए पुआइंट, हिंट दे ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा आप उठाईआ। ईसा कहे मेरी मारनिंग गुड, ईवनिंग नून नज़र कोए ना आईआ। मूसा कहे सृष्ट सबाई दिसे वुड्ड, फ़ायर अग्नी तत जलाईआ। जिस दा लेखा

शरअ दा शुड्ड, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर सर्ब भवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दूरों आए भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखीए सज्जे खब्बे, कवण गृह होवे रुशनाईआ। नानक किहा जित्थे भगत सहेले सजे, साजन मिल के खुशी बणाईआ। ओथे पुज्जो पैरीं नंगे, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण एह थाँ नहीं चंगे, साफ़ सुथरे ना कोए बणाईआ। गोबिन्द कहे ख़बरदार जित्थे वसे सूरा सरबंगे, पवित्र ओहो नज़री आईआ। तुहानूं मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ वण्डे, हिस्से गुरदुआरयां वाले पाईआ। जित्थे मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत ग्रन्थी बैठे गंदे, अठ्ठे पहर कुकर्म कमाईआ। प्रेम प्रीती होए रंडे, रंडी वेसवा जगत हंढाहीआ। एह भगत सुहेले सब दे नालों चंगे, जो प्रभ नूं मिलके आपणा झट लँघाईआ। की कौल इकरार कीता रावी कन्ढे, उह लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क सुणाईआ। सुणो हुक्म अगम्मी धार, धर्म दुआर जणाईआ। साचे भगतां दा करो दीदार, दाअवा पिछला देणा मुकाईआ। दीन मज़्हब दी हद्द पार, आर पार किनारा इक्को नज़री आईआ। सब ने सांझा मन्नणा यार, परवरदिगार इक्को नज़री आईआ। नेत्र नैण होवण शरमसार, अग्गे वण्ड ना कोए वण्डाईआ।
१२२१ सृष्टी बणन नहीं देणी ग़द्दार, हँकार विकार देणा मिटाईआ। सब दा पूरा कर इकरार, कौल आपणा देणा निभाईआ। अग्गे करयो ना कोए तकरार, झगड़ा अवर रहे ना राईआ। सब दा इक्क होणा सिक्दार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। १२२१
२० जिस ने मंज़ल करनी हमवार, इक्को रंग रंगाईआ। भगतां नाल मिल के करो दीदार, नूर नुराना दर्शन पाईआ। करे खेल सच्ची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बरां भगतां नाल सांझा करे बिवहार, वक्खरा नज़र कोए ना आईआ। २०

ईसा कहे प्रभू इक्क होर निक्की जेही फ़ाईल, फ़ैसले वाली वखाईआ। जिस दे विच लेखा फ़ैमली राएल, जारजां वाली वण्ड वण्डाईआ। नाल माचस ते नाल आयल, सांझा जोड़ जुड़ाईआ। तेरे हुक्म अंदर सब नूं करके मुबायल, चारों कुण्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ईसा कहे प्रभू मैं दस्सया राम कृष्न, सहिज नाल सुणाईआ। मूसा कहे मैं इन्हां दा बदलया मिशन, हुक्म धुर दा इक्क सुणाईआ। मेरा केस गया नहीं किसे विच सैशन, हाई कोरट सुपरीम कोरट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरी इक्क सरनाईआ। ईसा कहे गुर अवतार पैगम्बरो जिस वेले जन भगत चढ़े विच बोट, आपणा चरण टिकाईआ। उस वेले साहिब ने हथ्थ मारया उत्ते जेब दी कोट, उंगलां तिन्न पंज छुहाईआ। मुहम्मद कहे मैनूं लग्गी चोट, सुत्ता ल्या उठाईआ। नानक कहे मैं वी तक्की ओट, इक्को आस रखाईआ। गोबिन्द कहे मैं वेखे परलोक लोक, प्रतख अक्ख खुल्हाईआ। जन भगतां जिस वेले गाया सच सलोक, सोहँ राग अलाईआ। एह सब तों वक्खरी मौज, मलाहां दा मलाह आपणी खेल कराईआ। मुहम्मद हस्स के कहिंदा गोबिन्द भगत कि भगतां दी फ़ौज, मूसा कहिंदा फ़ौजदार इक्को नाल नज़री आईआ। उस दी किसे नाल नहीं अदौत, खण्डा खड़ग ना हथ्थ उठाईआ। ईसा कहे मैं वेख्या भगतां दे चरण चुम्मे मौत, निउँ निउं लागे पाईंआ। मुहम्मद कहे भरावा उह करे की जिन्हां दा मालक इक्क ख़ौंत, ख़सम डाहढा नज़री आईआ। नानक कहे ओथे चिढ़ी ना सके चौंक, गुर अवतार पैगम्बरो साडी चले ना कोए चतुराईआ। मूसा कहे यार किड्डी वक्खरी चलाई रौंस, इक्को राह बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। मूसा कहे ईसा मैं खेल वेख्या उत्ते वाटर, लहर विच्चों लहर वेख वखाईआ। ईसा कहे मूसा मैं समझया बेड़ी नहीं कोई भगतां दा कवाटर, फ़ैमली बण के बैठे सोभा पाईआ। ओस वेले तिन्न बीबीआं ने आपणे हथ्थ लाया सवैटर, तिन्ने

१२२२ पिछले जन्म दीआं ईसा दी छार नज़री आईआ। मुहम्मद कहे तुसां होर नहीं सुणया की दिता आडर, आपणा हुक्म सुणाईआ। १२२२

२० नानक कहिंदा मैं जाणया गुर अवतार पैगम्बर प्रभ ने किहा दीनां मज़्हबां दा मसनूई बाडर, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती २०

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क सुणाईआ। ईसा कहे ओ मूसा जिस वेले मुख कीता सी वैसट, बिन साईज़ आईज़ वेख वखाईआ। ओस वेले सानूं सब नूं कर ल्या अरैसट, हुक्म विच बंधाईआ। हुण लैण लग्गा टैसट, चार जुग दी पढ़ाई बुकस वरके रिहा खुल्हाईआ। असीं समझदे रहे मातलोक असीं प्रभू दे गैसट, खा पी आपणी खुशी बणाईआ। निरगुण धार जोती दे ईलैकट, नूर नाल चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणा आपणा दस्सो अडरैस, मुकाम दयो जणाईआ। अगों हस्स के किहा कराईस, कसम नाल सुणाईआ। राम कृष्न की एथे खांदे जे कुछ राईस, बरैड हथ्थ विच फड़ के दिती हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाईआ। मूसा कहे ईसा हूज़, हैज़ हू नज़र कोए ना आईआ। मूसा कहे असीं सारे ओस प्रभू दे शूज़, जो चरणां विच टिकाईआ। ना यसू ना जूज़, जज़बा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। ईसा कहे मूसा की कुछ कीता ईट, प्यार नाल समझाईआ।

मूसा कहे प्रभ धूढ़ी मिली फ़ीट, फ़िट आपणा आप कराईआ। जिस दा वज़न ना कोई लीट, औंस पौंड ना कोए वखाईआ। मुहम्मद कहे मित्रो मैं इक्को वेखी सटरीट, सिध्धा राह वखाईआ। उस दे विच नहीं कोई कंकरीट, कांटा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। ईसा कहे मेरी सच्ची आस, आशा मिली वड्याईआ। सारे करो विश्वास, विशा इक्को लओ अपनाईआ। मालक पुरख अबिनाश, हक सच खुदाईआ। जो भगतां दा देवे साथ, सगला संग बणाईआ। इक्क होवे जमात, इक्को नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ दा खेल वेखो डीप, बिना पैमाने नाप नपाईआ। नानक कहे मैं सिध्धा दस्सां सत्त दीप, भाषा पंजाबी विच सुणाईआ। सानूं सब नूं करनी पए इक्क प्रीत, इक्को ध्यान लगाईआ। ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै"" गाउणा पए गीत, पिछली छुट्टे पढ़ाईआ। झगड़ा मेटणा पए मन्दिर मसीत, गुरुदुआर मठ्ठ शिवदवाले ना कोए लड़ाईआ। भगत दवारा वेखणा पए ठीक, जित्थे भगवन डेरा लाईआ। सारे मिल के उस दे बण जाईए अज़ीज़, सीस मुहब्बत विच झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई बख्शे इक्क तमीज़, तमन्ना इक्को इक्क जणाईआ।

१२२३ २०

मूसा कहे ओ ईसा वेख आपणी पाकट, हथ्थ जेब विच टिकाईआ। ईसा कहे मेरे गल है नहीं जाकट, पता नहीं कौण गया उठाईआ। मुहम्मद कहे उह बुद्धी दे चोर जेहड़े बणाउँदे राकट, अग्नी अग्ग तपाईआ। ओन्हां दा जोड़ रिहा ना नाल साकट, जो मेला लए मिलाईआ। नानक कहे कुझ खेल वेखो ओशन अटलांटक, लाईट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। ईसा कहे मूसा वेख आपणा शरट, शारट हरफ़ां विच जणाईआ। मुहम्मद कहे उलटा गेड़न लग्गा हलट, प्रभ आपणी कार कमाईआ। जिस ने सब दी काया देणी पलट, मार्ग इक्क वखाईआ। समझा देणे पसू पंखी बरड, मेहर नज़र उठाईआ। एह हुक्म चलणा सृष्ट सबाई वर्ल्ड, वाहिद गॉड इक्को इक्क सुणाईआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर चिलडरन चाईलड, निक्के बाले नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग रिहा रंगाईआ। ईसा कहे मैं वैसट वल्ल हुन्दा वेख्या फ़ेस, आपणा रुख़ बदलाईआ। ईसा कहे मैं योरोशलम तक्की पलेस, पोलिटीकल ध्यान लगाईआ। नाले प्रभ दी दौड़ वेखी रेस,

भज्जया वाहो दाहीआ। उस ने ख़ाका कर टरेस, लैंड मारक दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। ईसा कहे ओ मुहम्मदा वेख सटिक, सिटीज़न दा मालक रिहा उठाईआ। मूसा कहे इस दा इशारा वल्ल गरिक, गरीकां रिहा उठाईआ। किसे नूं कोई ना कहे सिट, सटैंडअप सब नूं दए कराईआ। सदी चौधवीं सब दे उत्ते करन लग्गी रिट, आपणी सलाह बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ।

★ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ओगरा हरि संगत ज़िला गुरदासपुर ★

प्रभ तेरा खेल तेरी कुदरत, कादर इक्को नज़री आईआ। दो जहानां डाहढा मुर्शद, मुरीद मरहूम ना कोए रखाईआ। धर्म दुआर दी दे के उल्फ़त, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। दो जहानां लै के फ़ुरसत, फ़रमांबरदारां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडे खेल खिलाईआ। घर ठांडा तेरा सीत, सति सच नज़री आईआ।
१२२४ धुरदरगाही इक्क प्रीत, प्रीतम प्रेम बणाईआ। सतिजुग साची दस्स रीत, रहिबर रस्ता इक्क वखाईआ। रंग चढ़े हस्त कीट, १२२४
ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुक जाए मसीत, घर इक्को देणा वखाईआ। जित्थे सांझा होवे गीत, इक्को नाम ध्याईआ।
२० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा देणा मुकाईआ। पिछला लेखा जाए मुक, मुकम्मल हुक्म २०
जणाईआ। करनी जावे छुट, छुट्टे कूड़ लोकाईआ। होईए इक्क मुठ, आपा जोड़ जुड़ाईआ। साहिब जाणा तुठ, तेरी बेपरवाहीआ। कल वेख अन्धेरा घुप्प, कूड़ कुड़यारा रिहा कुरलाईआ। सति स्वामी दे सुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा मंग मंगाईआ। दर तेरा मंगण जोगी, जोगीशर ध्यान लगाईआ। दर तेरा मंगण भोगी, रातीं सुत्यां अक्ख खुल्हाईआ। दर तेरा मंगण संजोगी, साचा नाता लैणा जुड़ाईआ। दर तेरा मंगण वजोगी, विछड़ हाल दुहाईआ। दर तेरा मंगण रोगी, दुःख दर्दां डेरा ढाहीआ। दर तेरा मंगण लोक परलोकी, ब्रह्मण्ड खण्ड ध्यान लगाईआ। दर तेरा मंगण शास्त्र सिमरत वेद पुराण सलोकी, निउँ निउँ लागण पाईआ। दर तेरा मंगण पुस्तक पोथी, अक्खरां विच शरनाईआ। दर तेरा मंगण धर्म दुआर दे खोजी, साध सन्त नैण तकाईआ। दर तेरा मंगण जो सीस उठाउँदे बोझी, कंधे भार टिकाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां नूं आई सोझी, सुखमन टेडी बंक पार कराईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां वस्त्र दोशाल कोई नहीं ओढी, ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां गर्दन कीती रोडी, मूंड मुंडाए वेख वखाईआ।

दर तेरा मंगण जिन्हां दी कीमत नहीं कौडी, हट्टो हट्ट फिराईआ। दर तेरा मंगण जो प्रेम विच मौजी, मजलस तेरे नाल रखाईआ। दर तेरा मंगण वेदी सोढी, निज नेत्र राह तकाईआ। दर तेरा मंगण गुलशन वाली डोडी, सुगंधी महक विच महकाईआ। दर तेरा मंगण नाथ त्रिलोकी, निउँ निउँ लागण पाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां दी आयू हो गई बहुती, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। दर तेरा मंगण जेहड़े सच पाउँदे आहूती, घृत नाल सुहाईआ। दर तेरा मंगण जेहड़े तन छुहाउँदे भबूती, भस्म ख़ाक रमाईआ। दर तेरा मंगण जेहड़े धारी सूती, सूत्र धारी सीस निवाईआ। दर तेरा मंगण ब्रह्मा विष्न शिव दूती, भज्जण वाहो दाहीआ। दर तेरा मंगण दहि दिशा चार कूटी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण राह तकाईआ। दर तेरा मंगण जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत बूटी, वड्डे छोटे सीस निवाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां दे हथ्थ विच ख़ाली ठूठी, कासा तेरे अग्गे डाहीआ। दर तेरा मंगण जिन्हां दी आत्मा जन्म जन्म दी रूठी, लख चुरासी गेड़े पाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां दी धार तेरे नालों टुट्टी, नेत्र रो रो देण दुहाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां दी चोग जगत निखुट्टी, वस्त नज़र कोए ना आईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां लभ्भे ना खाण नूं रोटी, भुक्खे नंगे तेरी ओट तकाईआ। दर तेरा मंगण जेहड़े चढ़ गए मंज़ल चोटी, सच दवारे बहि के खुशी बणाईआ। दर तेरा मंगण कोटन कोटी, काया कुटीआ खोज खुजाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां बुद्धी वाली सोच सोची, मन मति नाल वड्याईआ। दर तेरा मंगण रविदास चमारे वरगे मोची, पाणा गंढु झट लँघाईआ। दर तेरा मंगण ज्ञानवान वड बोधी, बुद्धी तों परे वेख वखाईआ। दर तेरा मंगण लोभ मोह विकार हँकार क्रोधी, जिन्हां अग्नी तत जलाईआ। दर तेरा मंगण जिन्हां नूं आ गई तेरी सोझी, आप आपा गए मिटाईआ। प्रभू बिन तेरी किरपा मंज़ल मिले किसे ना सौखी, दर्शन करन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मति रहिण ना देवे होछी, हुश्यिारी विच यारी आपणे नाल रखाईआ।

★ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ महिंदर सिँघ गढ़ी लांगरी वाला हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

आत्मा कहे मैं कदे ना मर्दा, मरन जन्म प्रभ दी खेल नज़री आईआ। तन वजूद वसेरा मेरे घर दा, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भाणा जरदा, हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। जो साहिब सुल्तान हुक्म करदा, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। ओस तों सदा रैहन्दा डरदा, सिर अग्गे ना कोए उठाईआ। नित नवित याद ओसे दी करदा, जिस

मेरी बणत बणाईआ। सृष्टी तों पा के परदा, ओहले आपणा डेरा लाईआ। मंज़ल हकीकी चढ़दा, सच दवारे मिल के वज्जे वधाईआ। वेखां खेल नर हरि दा, नर नरायण आप वखाईआ। कुछ लेखा मेरा कल दा, कल काती विच समझाईआ। रस वेख्या प्रभ सागर जल दा, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। प्रभ दा हुक्म प्रभ दी किरपा नाल टल्दा, दूजा मेट ना कोए मिटाईआ। महिंदर सिँघ दा दीपक जोत रहे बलदा, साहिब सतिगुर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती अंदर रलदा, रला रहिण कोए ना पाईआ।

★ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

सच सुख साहिब सति ओट, ओड़क इक्क ध्यान लगाईआ। सच प्रीत लगावे चोट, चोटी चढ़ के लए उठाईआ। निरगुण धार दस्स के गोत, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। कर प्रकाश अगम्मी जोत, अन्ध अंध्यारा दए गवाईआ। मन मनसा तों परे दस्से सोच, समझ आपणे नाल मिलाईआ। धर्म दुआर दी दे के मौज, दीनां अनाथां वेख वखाईआ। बाहर
१२२६ २०
खोजणी ना पए खोज, गृह मन्दिर जोड़ जुड़ाईआ। जगत करना पए ना जोग, सच जोगीशर दए बणाईआ। अंदरों कट हउमे रोग, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। आत्म परमात्म जोड़ संयोग, साचा लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सच सुख साहिब गुर दरस, दरस मिले वड्याईआ। जन्म जन्म दी मिटे हरस, तृष्ना कूड़ बुझाईआ। मेहरवान हो के करे तरस, दुखियां दर्द वण्डाईआ। लेखा जाण अर्श फर्श, दो जहानां खोज खुजाईआ। भगत प्रीती रख के ग़रज़, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सच बेनन्ती सुण के अरज़, आजज़ां परदा लाहीआ। निमाणयां वण्डे दर्द, दुखियां गोद उठाईआ। सदा खेल करे असचरज, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मुद्दतां दे विछड़े लए मिलाईआ। जन्म कर्म दी वेख के फ़रद, फ़ैसला दस्से थाउँ थाँईंआ। विछोड़े विच जो रहे तड़प, निरगुण हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी जन्म कर्म दी पूरी सब दी करे शर्त, शरीअत विच असलीअत भुल्ल कदे ना जाईआ।

★ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

रावी कहे दस दिन रही रोंदी, नैणां नीर वहाईआ। सिर दे वाल रही खोंहदी, पट्टी सीस पुटाईआ। अग्गा पिच्छा रही टोंहदी, बिन हथ्थां हथ्थ हिलाईआ। याद आउँदी रही अर्जन वाली सौंह दी, जो कसम खा के गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। रावी कहे मैं रोंदी भुब्बीं, नैणां नीर वहाईआ। चिक्कड़ गारे विच खुभ्भी, बलहीण दुहाईआ। प्रभू जां तैनूं वेख्या बध्धा नाल सुब्बी, सुबहि अमृत वेला ध्यान लगाईआ। मैं समझया मेरी औध पुग्गी, पैंडा ल्या मुकाईआ। मैनूं किसे ने अंदर रमज़ मारी गुज्झी, सहिजे दिता सुणाईआ। कमलीए पवित कर बुद्धि, बुध दए दुहाईआ। जिस ने सैण बण के सेव कमाई रुग्गीं, आपणा फेरा पाईआ। उह सरगुण निरगुण रूप धरे वार दूजी, दो जहानां वेख वखाईआ। लेखा बाकी रविदास झुग्गी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। रावी कहे मेरे वेख डिगदे नेत्र हन्झू, छहबर इक्को नज़री आईआ। तैनूं मन्नया दीनां बंधू, बन्धन दे तुड़ाईआ। तूं गहर गम्भीर सागर सिन्धू, साहिब सुल्तान अख्वाईआ। तेरी करनी केहड़ा निन्दू, निन्दक देण दुहाईआ। मेरी मन वासना मेट दे चिन्दू, चिन्ता ग़म दूर कराईआ। रावी कहे मेरी पूजा पहले करदे हिन्दू, पाणी देवतयां चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। रावी कहे मैं रो रो थक्की, थकावट विच दुहाईआ। किरपा कर पुरख समर्थी, साहिब तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट फिरां नस्सी, भज्जां वाहो दाहीआ। कूक सुणावां सच्ची, गल विच पल्लू पाईआ। बिरहों वैरागण हो के नच्ची, मुख घूँगट ल्या उठाईआ। सच कहाणी किसे ना दस्सी, दहि दिशा वेख वखाईआ। जिस वेले तैनूं बध्धा वेख्या नाल रस्सी, रस्ता भुल्ली कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। रावी कहे तैनूं रुआउण दी की वादी, पिछला वायदा पूर कराईआ। वेखी जगत तेरी आबादी, इबादत विच ना कोए लोकाईआ। मैं तेरी वैरागण सिध्धी सादी, कूड़ा रंग ना कोए चढ़ाईआ। मैं भाल करां तेरे राह दी, वेखां थाउँ थाँईंआ। मैनूं याद आई अर्जन वाली सलाह दी, जो सति गया सुणाईआ। कमलीए इक्क ओट रखीं ओस मलाह दी, जो बेड़े डुब्बदे पार लँघाईआ। मेरे अंदरों आह निकली उच्ची धाह दी, धवल दिती हिलाईआ। किस बिध खेल वेखां बेपरवाह दी, जो पारब्रह्म अख्वाईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ आई वाह वाह दी, ढोला सुणया चाँईं चाँईंआ। एह खेल अनोखे शाह दी, जो शहिनशाह वड वड्याईआ। एह धार नहीं वहिण दरया दी, जल पाणी ना रूप धराईआ। खेल नहीं थल अस्गाह दी, महीअल वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सुणाईआ।

रावी कहे मैं रो रो हारी, हाए हाए सुणाईआ। तेरी वेखी अनोखी यारी, दर्दीआ दर्द ना कोए वण्डाईआ। चारों कुण्ट दिसे खुआरी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। माया ममता मोह बीमारी, घर घर नज़री आईआ। धर्म दा दिसे ना कोए खिलाड़ी, चौंपट सार कूड़ लोकाईआ। गुर अर्जन ने मेरे विच पंज वार धो के हिलाई दाढ़ी, तेरे चरणां दिती टिकाईआ। ओसे वेले रविदास चमार आया अगाड़ी, रम्बी आर हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे चुकाईआ। रावी कहे मेरे रोंदे नैण, नैनण नैण बेहालया। मैं वेखे वगदे वहिण, पुरख अकाल अकालया। कोई ना सज्जण सैण, झूठा जगत मतवाल्या। मुकावे पूरब लहिण, देवणहार इक्क मना ल्या। सति ना आवे चैन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखा ल्या। रावी कहे मैं वेखी रविदास दी आर रम्बी, तिक्खी धार जणाईआ। मैं डरदी डरदी कम्बी, नेत्र अक्ख शरमाईआ। मैं आपणे पैर दी अड्डी दब्बी, भार धरत उत्ते टिकाईआ। नज़री आई जोत रब्बी, नूर नुराना नूर करे रुशनाईआ। एह खेल हुन्दा कदे कदी, कदीम दी आदत प्रभ दी चली आईआ। जिस वेले होवे प्रभ दी आपणी सदी, सदमे सारे दए मिटाईआ। रावी कहे मैं खलो गई हथ्थ बद्धी, बन्दना सीस झुकाईआ।
१२२८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रावी कहे मैं रो रो आखां, आख़र दयां १२२८
सुणाईआ। मैनूं याद पिछला साका, साखी बेपरवाहीआ। ओस नूं टेकां माथा, जो मिथ्या दस्से लोकाईआ। संदेसा देवे
२० साचा, सच सच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे दस २०
दिन गए लँघ, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मेरा सुंञा होया पलँघ, लेफ़ तलाई ना कोए वड्याईआ। कसुंभड़ा हो गया रंग, लालन लाल ना कोए चमकाईआ। आसां ढहि गई कंध, महल्ल ना कोए सुहाईआ। भुल्लया रस अनन्द, सच ना कोए समाईआ। लुक्कया नूरी चन्द, नूर ना कोए रुशनाईआ। मैं दोवें हथ्थ बंध, बन्दना सीस झुकाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे नाल रखाईआ। श्री भगवान कहे सुण रावी रमती, रमता रमता दयां जणाईआ। मेरा लेखा सम्मत सम्मती, समें विच वड्याईआ। खेल अथाह अगम्म दी, अगम्मड़ी कार कमाईआ। धार छड्डी माटी चम्म दी, नाता तत वजूद तुड़ाईआ। खेल मुक्की हरख़ सोग़ ग़म दी, चिन्ता दिती चुकाईआ। छहबर वेखी तेरी छम्म छम्म दी, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। रावी नढ्ढी बच्ची उठ के झाक, तेरी अक्ख खुलाईआ। इक्की माघ दी वेख रात, पिछला राह तकाईआ। रविदास दी मिले जात, प्रभात वज्जे वधाईआ। सच मिले सौग़ात, सोहणा रंग चढ़ाईआ। शंकर वेखे कैलाश,

भज्जा वाहो दाहीआ। ब्रह्मा होवे साथ, सीस जगदीस निवाईआ। विष्नूं सुणाए आख, तेरी बेपरवाहीआ। एह धर्म महीना माघ, मजन धूढ़ कराईआ। तेरे सुखन दा ओथे मिले जवाब, जित्थे गुरमुख सोभा पाईआ। नानक लै के आए रबाब, मर्दाना वेस ना कोए वटाईआ। कुछ लेखा दस्सणा बग़दाद, बग़ली काली लैणी सवाईआ। नाल लै के जाणा नकाब, रंग गूढ़ा देणा चढ़ाईआ। साढे तिन्नां सफ़िआं वाली होवे किताब, पंज सत्त इंच लम्बाई चौड़ाईआ। चोला चिट्टा होवे बिनां दाग़, बेदाग़ वेख वखाईआ। इक्क तिन्नां मुक्खां वाला होवे चराग़, मिट्टी कच्ची नाल सुहाईआ। सवा सेर दुद्ध नूं लग्गी होवे जाग, कटोरा दर्शन हथ्थ फड़ाईआ। नाल मरया होया होवे काग, पाल सिँघ डाकटर उंगलां विच फसाईआ। नौ गाउँदे होण राग, सोहँ ढोला सहिज सुभाईआ। साढे तिन्न हथ्थ लकड़ी होवे काठ, विंगी टेडी सोभा पाईआ। महिंदर सिँघ सिर तों नंगा जिस दा पिण्ड बाठ, धुर दी सेव कमाईआ। साढे अठ्ठ दा वक्त होवे रात, राती रुत्ती वज्जे वधाईआ। तिन्न गुरमुख जिन्हां दी रामगड़ीआ होवे ज़ात, पाणी कटोरे नाल रलाईआ। फेर रावी करां तेरे नाल बात, तेरे नैणां करां सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। रावी कहे की किहा नाल हौली, सच दे समझाईआ। मैं कन्नां होई बोली, समझ कुछ ना आईआ। पुरख अकाल कहे मेरा गुरमुख धुर दा ढोली, डग्गा नाम दए लगाईआ। तूं परदा आपणा खोल्हीं, झरोखा बन्द ना कोए कराईआ। नाल लै के आवीं मौली, जेहड़ा मौला तन्द मुहम्मद दिता बन्हाईआ। शोर नाल पावीं रौली, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नाल निक्की होवे कौली, कँवल फुल्ल विच टिकाईआ। रविदास दा उह थाँ जित्थे पुराणी इक्क बौली, निशाना समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। रावी कहे मैं सुणया अगम्म नादा, वज्जी सच वधाईआ। पुरख अकाल किहा एह हुक्म मेरा सादा, सादगी विच समझाईआ। अग्गे खेल वरतणा डाहढा, डोरू डंक वजाईआ। जन भगतां इक्क नाल अद्धा खाणा प्रशादा, प्रशाद संगत दा देणा वरताईआ। एह नवां खेल विच देस माझा, परदेस परदा लाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे हुक्म आपणे रिवाजा, दूजा हुक्म ना कोए मनाईआ।

★ २१ माघ शहिनशाही सम्मत ३ भलाई पुर डोगराँ हरि संगत ★

गुर अर्जन कहे खुशी होई आज, दो जहान वज्जी वधाईआ। किरपा करे पुरख अकाल साहिब सिरताज, हरि जगदीशर वड वड्याईआ। जिस दा एथे ओथे दो जहानां राज, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड

पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर साजन साज, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। अवतार पैगम्बर गुर देवणहारा दात, दाता दानी शाह सुल्तानी शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस दा लेखा सदा बिन कलम दवात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अर्जन कहे मैं इक्को वेख्या शाह नवाब, नौबत हक नाम वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे सजदा करो आदाब, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। इक्को कलमा पढ़ो वाहिद, दूजी अलख ना कोए जगाईआ। जो दो जहानां मुसाहिब, मुकामे हक सोभा पाईआ। अन्तिम सब दी करनहार अज़माइश, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। घट निवासी जानणहार रहाइश, रहिबर हो के परदा रिहा उठाईआ। जिस दी समझे ना कोए पैदाइश, मरन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। अर्जन कहे मैनूं याद आया चेता, चरण कँवल मिली सरनाईआ। पुरख अकाल इक्को नेता, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जिस ने लोकमात सब नूं दिता ठेका, ठाकर हो के सेव समझाईआ। भेजे अगेता पछेता, आवण जावण आपणा हुक्म वरताईआ। जिस कारण मेरे सिर विच पई रेता, तत्ती तवी दिता टिकाईआ। इस दा नानक कोल लेखा, दूजा समझ ना कोए समझाईआ।
१२३० जो वसे सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची डेरा लाईआ। जिस दा आदि जुगादी एका, एका एकँकार बेपरवाहीआ। जोती १२३०
२० जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म हिकमत विच्चों बदलाईआ। अर्जन कहे सुण के सारे होवो लाजवाब, २०
जवाब देवण कोए ना पाईआ। जिस दे लैंदे रहे ख्वाब, भविख्तां विच समझाईआ। जो वसे हक महिराब, महबूब नूर अलाहीआ। कुछ ओस ने हुक्म दिता निरगुण धार बगदाद, सरगुण नानक आप समझाईआ। एका इक्क लैणा आराध, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। अर्जन कहे मैं चुकावां परदा ओहला, भेव रहे ना राईआ। पुरख अकाल किहा नानक गा एका सोहला, तेरा मेरा इक्को रूप नज़री आईआ। प्रेम रस दा होवे ढोला, अगम्मी नाद शनवाईआ। नानक किहा कौण बणे विचोला, परदा दए उठाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख्या रौला, चारों कुण्ट दुहाईआ। अग्गे तैनूं कहिंदे मौला, अल्ला अक्खर दिता पढ़ाईआ। वेख आपणी धरनी धौला, धवल ध्यान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। पुरख अकाल किहा नानक मेरे नाम दा लै स्वाद, नाम सति सति दृढ़ाईआ। तेरे तन दी इक्क रबाब, बिन सतारां दयां हिलाईआ। जिस दे विच्चों तूं ही तूं ही निकले राग, दूजी तूर ना कोए अल्लाईआ। तत वज़ूद सवरे काज, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। नानक किहा रबाब केहड़ा तन्द, साहिब स्वामी दे समझाईआ।

पुरख अकाल बोलया बिना दन्द, रस नाल रसना दिता समझाईआ। सति सति दा इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जित्थे दोहां दा सांझा होवे छन्द, ओथे दूजी लोड़ रहे ना राईआ। आपणी धार आपणे लावां अंग, अंगीकार इक्क अख्वाईआ। मैं साहिब सूरा सरबंग, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। नानक निरगुण मंगी मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किस बिध तेरे प्रेम दा बज्झे तन्द, तन्दी तन्द जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा नानक दस्सां बात, बातन भेव जणाईआ। वेखीं लिखीं नाल ना कलम दवात, कागज़ शाही ना जोड़ जुड़ाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साची रहे ना कोए जमात, प्रीती प्रेम ना कोए कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां भुल्ले गाथ, सोहला सच ना कोए सुणाईआ। गुर चेला रहे कोई ना दास, चेला गुरू करे पढ़ाईआ। पिता पुत्त दा होवे घात, चारों कुण्ट होए दुहाईआ। ओस वेले वेखां खेल तमाश, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल किहा सुण नानक बच्चे नन्ह्ने, सच दयां समझाईआ। जे तूं इक्को मेरी मन्ने, ममता अवर रहे ना राईआ। करां प्रकाश साचे तने, लोयण इक्को नजरी आईआ। आप फिरां तेरे संने, घर घर विच मेल मिलाईआ। निरगुण दीपक एका बले, जोती जोत रुशनाईआ। जिस कारण तैनूं घल्ले, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। साचा बचन बन्न्हणा पल्ले, पल्लू आपणी गंढु रखाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम होए हल्ले, हालत विगड़े जगत लोकाईआ। ओस वेले पुरख अकाल आउणा इकल्ले, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जन भगतां दे अंदर सिँघासण मल्ले, दवारा इक्को इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा नानक निरगुण दस्सां अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। एह शब्दी अकथ कहाणी, कथनी कथ ना सके राईआ। लेखा समझे ना कोए दो जहानी, निरगुण सरगुण भेव कोए ना पाईआ। परम पुरख परमात्म देवे इक्क निशानी, निशाना आपणा तीर चलाईआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी होई अभिमानी, माया ममता मोह विकार हल्काईआ। ओस वेले जन भगतां उत्ते करां मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी कार कमावांगा। मेहरवान हो के मेहर नज़र टिकावांगा। सृष्ट सबाई कर के हेर फेर, दीन दुनी आप भुलावांगा। साचे सन्तां लहिणा देणा दयां नबेड़, झगड़ा अवर ना कोए जणावांगा। शब्द हलूणे सोई सुरती छेड़, तन्द सतार आप वजावांगा। ओस वेले मेरे नाम दी इक्को होवे डेड़्ह, दोहरा सवईआ कवित छत्ती रागां विच ना कोए अलावांगा। सब तों वसां नेरन नेर, दूर दुराडा

पन्ध मुकावांगा। इक्क अर्जन वखावां आपणी खेड, रावी कंडा तट सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। साची करनी कार करांगा। सन्त सुहेले गुरमुख वरांगा। लख चुरासी विच्चों फड़ांगा। काया मन्दिर साचे चढ़ांगा। जोती नूर इक्को धरांगा। सच दवारे अगम्मी खड़ांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपे करांगा। साची करनी कार कमावांगा। भगत सुहेले आप उठावांगा। गुर चेले मेल मिलावांगा। तुरीआ पद दा भेव खुल्ह्वांगा। नाम सरंगा इक्क वजावांगा। नानक निरगुण जोड़ जुड़ावांगा। सच दवारे आपे बौहड़, परदा ओहला आप उठावांगा। साचे सन्तां वेखां कर के ग़ौर, गहर गम्भीर हो के आपणा फेरा पावांगा। ओनृां दा मानस जन्म जाए सौर, जिनृां नूं आपणे रंग रंगावांगा। नानक अर्जन दा लेखा विच लाहौर, लहर आपणी इक्क दरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठावांगा। नानक भगतां दी रबाब होवे रब्बी, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। जिस दी सुर बिना हथ्थ तों जावे वज्जी, उंगलां दी लोड़ रहे ना राईआ। चुक्कणा पए ना भार मोढुयां उत्ते वांग डग्गी, सरंगा गज ना हथ्थ उठाईआ। बिना कपड़े तों होवे कदे ना नंगी, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ।
१२३२ सतिगुर नानक किहा प्रभू तेरी खेल बहु रंगी, तेरा भेव कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादि सदा करनी दा करता ढंगी, १२३२
तरीका अवर ना किसे समझाईआ। मेहरवान उह किहड़े दवारे टंगी, किल्ली कवण लटकाईआ। पुरख अकाल किहा नानक नज़र ना आए विच ब्रह्मण्डी, खण्डीं खोज ना कोए खुजाईआ। जिस दी लिख्त लिखी किसे नहीं संदी, तकरीर तहिरीर ना कोए बणाईआ। खोजयां हथ्थ ना आए विच वरभण्डी, चारों कुण्ट कुरलाईआ। उह ओस थाँ उत्ते टंगी जित्थे इक्को जोत निरँजण लँघी, वासना रहे कोए ना मंदी, दीन मज़्हब दी नहीं पाबन्दी, नार दुहागण कदे ना रंडी, अर्जन धार उह रावी दी कन्ढी, जित्थे पवण सदा ठंडी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कूड़ी रहे ना कोए पाबन्दी, नेत्र अक्ख ना होवे अन्धी, पुरख अकाल साचा संगी, साचा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। नानक किहा प्रभू ओस सुरंगी दी की आवाज़, सच दे सुणाईआ। पुरख अकाल किहा उह सिध्धा मेरा खोल्हे राज़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। ओहदी सुर विच सुर दा सुर जवाब, सवाल दी लोड़ रहे ना राईआ। सदा दिवस रैण वज्जदी रहे रबाब, रहमत आप कमाईआ। पुरख अकाल किहा नानक इक्क वेर कर आदाब, सीस जगदीस झुकाईआ। सीस झुकदयां लेखा दिस्या विच बग़दाद, बग़ली काली नानक हथ्थ नज़री आईआ। जिस दे विच उह हिसाब, जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान समझ सके ना राईआ। वेख्या ओस महिराब, जित्थे महबूब डेरा लाईआ।

जलवा नूर वाहिद, वाहिद कलमा रिहा सुणाईआ। नानक निरगुण कर अदाब, अदब नाल आपणा आप झुकाईआ। मुख़ातब हो के दिता ख़ताब, खुद आपणा हुक्म सुणाईआ। नानक वेख उह रबाब, जिस दा सब तों वक्खरा साज, साजणहारा आपे रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। नानक किहा परम पुरख क्यों वखाई काली बग़ली, मेहरवान देणा समझाईआ। पुरख अकाल किहा सदी चौधवीं उम्मत वेखी पग़ली, कलमा हक ना कोए सुणाईआ। सब ने फिरना विच जंगलीं, जहालत विच दुहाईआ। गोबिन्द दी चौदां कड़ीआं वाली संगली, फ़कीरां दे तनों देणी लुहाईआ। सच खुदा दे नाल रहे किसे दी ना मंगणी, नाता तुट्टे लोकाईआ। दहि दिशा लग्गे अग्नी, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। नानक किहा मैं वेख्या झाक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। पुरख अकाल खोल्ह्या ताक, परदा दिता हटाईआ। सदी चौधवीं फ़कीरां दी बग़ली विच ख़ाक, ख़ालस वस्त नज़र कोए ना आईआ। जिधर तक्कां अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। अन्तिम मुक्कदी दिसे वाट, पाँधी रहे कुरलाईआ। रावी कन्ढे अर्जन दी ज़ात, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो

१२३३ जिस ने सब दा करना पूरा भविख्त वाक्, वाक्या वेखे थाँईं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १२३३

आपणा खेल खिलाईआ। बग़ली कहे मेरा रिहा ना कोए बग़लगीर, संगी साथ ना कोए निभाईआ। दस्त छुट्ट गया दस्तगीर,

२० बेदस्त होई लोकाईआ। नज़री आए ना बेनज़ीर, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। एस विच मूँह पा के रो के किहा कबीर, २०

तेरा नाम दुहाईआ। किसे कम्म ना आवे एह माटी ख़ाकी सरीर, जिनां चिर तेरा नूर नूर ना कोए चमकाईआ। ओस वेले कबीर नूं एस दे विच्चों नज़री आई ओस दी तस्वीर, जिस नूं लातस्वीर कर के सारे रहे गाईआ। उस दी बदल गई ज़मीर, ज़र्रा ज़र्रा विच्चों इक्को नूर करे रुशनाईआ। लेखा मुकया दिस्या शाह हकीर, शहिनशाह इक्को हुक्म वरताईआ। फेर किहा किस बिध बदले तकदीर, तदबीर दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। बग़ली कहे मैनूं नानक रख्या तिन्न दिन आपणे हथ्थ, होका बग़दाद विच सुणाईआ। सूफ़ी फ़कीरो कोई वस्त है ते एहदे विच दयो घत्त, खाली दयो भराईआ। नानक एथे फेर नहीं आउणा वत, बेवतनों तुहानूं वतन ना कोए वखाईआ। ज़रा तक्को ओस अक्ख, जेहड़ी अक्ख दे नाल मुहम्मद महबूब दा दर्शन पाईआ। मैनूं ख़ाली दिसदे हट्ट, वणजारे रहे कुरलाईआ। ख़ाली दिसण तट, अमृत रस ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। बग़ली कहे नानक क्यों मैनूं फड़या, चारे कन्नीआं जोड़ जुड़ाईआ। वे मैं कमली कोझी अड़या, अंदरों बाहरों काली नज़री

आईआ। मेरे विच किसे नहीं कुछ धरया, भुक्खी तयाई दयां दुहाईआ। मेरा नकर्मी दा मस्तक सड़या, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ओस वेले नानक खुशी विच तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़या, सोहँ दिता गाईआ। पुरख अकाल सब दा मालक हो के एस दे विच वड़या, नानक नूं सिध्धा नज़री आईआ। फेर वखा के आपणा घरया, गृह मन्दिर दिता सुहाईआ। बन्नृ के आपणे लड़या, लड़ पल्लू दिता फड़ाईआ। कौल इकरार इक्क करया, वायदे नाल समझाईआ। नानक जिस वेले चार कुण्ट दहि दिशा सति धर्म हरया, तुहाडा भय ना कोए रखाईआ। ओस वेले आवे नरायण नरया, कल कल्की फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। नानक किहा चार कुण्ट दी वेखी हदूद, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। बग़लगीर होया मौजूद, बग़ली विच सोभा पाईआ। ओस ने सुणाया हज़ारा दरूद, धुर दा ढोला इक्क अलाहीआ। जिस दे नाल सृष्टी हो जाए नेस्तोनाबूद, जड़ नज़र कोए ना आईआ। फेर किहा नानक वेख आपणे अंदर कलबूत, काया दा काअबा, काअबे दा दोआबा, दोआबे दा महिराबा, महिराबे दा महबूब बैठा सोभा पाईआ। जित्थे ना कोई पुन्न ना कोई सवाबा, ना कोई सवाल ना कोई जवाबा, जवाब तल्बी विच सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ। बग़ली कहे नानक मेरी इक्क अरज़, आरज़ू दयां जणाईआ। कुछ मेरा दस्स फ़र्ज, सेवा की कमाईआ। तेरा प्रभू बड़ा बेग़रज़, बेअन्त आप अख्वाईआ। तुहानूं आपणे नाम दी सुणा के निक्की जेही तरज़, तराज़ूआं विच तोली लोकाईआ। सृष्टी दा खेल खला के नार मर्द, लख चुरासी जोड़े जोड़यां नाल जुड़ाईआ। आपणा भेव वक्खरा रख के अचरज, सनमुख हो के नज़र कदे ना आईआ। सच दस्स किस वेले वण्डे दर्द, दुखियां दुःख मिटाईआ। नानक किहा जिस वेले निरगुण दा निरगुण आवे परत, तत्तां दा डेरा ढाहीआ। करे प्रकाश उत्ते धरत, धवल दए सुहाईआ। ओस वेले आपणयां भगतां उत्ते करे तरस, रहमत सच कमाईआ। जन्म जन्म दी मेट के हरस, हवस अगली दए बुझाईआ। मेल मिला के उत्ते फर्श, अर्शां दे उत्ते दए टिकाईआ। बग़ली किहा नानक उह किस तरह दा होवे मर्द, रूप रंग की नज़री आईआ। नानक किहा जिस नूं छुरी कटे कोई ना करद, कत्लगाह विच कातिल मक्तूल रूप ना कोए वटाईआ। उह सब दी लै के आवे फ़रद, पिछले लेखे वेख वखाईआ। बग़लीए तेरी ज़रूर मन्ज़ूर करे अरज़, ख़ाहिश आपणी झोली पाईआ। बग़ली कहे नानक मैनूं फड़दे सदा मंगते, भिखारी दर दर अलख जगाईआ। नानक किहा ओ कमलीए नहीं तेरे विच उह रंग रंगते, जिन्ह़ां दा रंग ना कोए बदलाईआ। ओ तेरा लहिणा नाल प्रभू दी संगते, जिन्ह़ां दी भिच्छया ना कोए बदलाईआ। कोटन कोटि गुरू अवतार पैगम्बर जम्मदे, जम्म के मर के फेर ओसे विच समाईआ। कोई दिन वणजारे

१२३५
२०

हुन्दे दम दे, साह साह नाल ढोले गाईआ। एह खेल ओस प्रभू दे कम्म दे, जो कामना सब दी वेख वखाईआ। तेरा लेखा ओस वेले जिस वेले भगतां दे लेखे मुकाउणे ग़म दे, पहलों हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तैनूं सारे किल्लीआं दे उत्ते रहे टंगदे, मैं भगतां दे अंदर देणी लुकाईआ। जित्थे प्रकाश नहीं सूरज चन्द दे, तारयां दी लोड़ नज़र ना आईआ। जे वेखें ते वेखें खेल ओस पारब्रह्म दे, जो ब्रह्म नूं रिहा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। बग़ली कहे सतिगुर नानक मैं काली, कलयुग काला टिक्का दिता लगाईआ। जिस घर जावां कुत्ते भौंकण ते बच्चे कढ्ढण गाली, ते सारे ग़ुस्से नाल ख़ैर मेरे विच पाईआ। मैं घर घर दी बणां सवाली, फिरां थाउँ थाँईंआ। नानक किहा मेरे प्रभ दी चाल निराली, जुग जुग वेस वटाईआ। फल वेखे पत्त डाली, लख चुरासी फोल फुलाईआ। तैनूं दस्सां इक्क बात सुखाली, सहिजे दयां समझाईआ। जिस वेले प्रभ भगतां दे अंदर आपणे नूर दी चाढ़नी लाली, नाम दा रंग रंगाईआ। ओस वेले तूं वी दर ते बणीं सवाली, आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कफ़नी कहे जन भगतो मैं आ गई भज्जी, भजन बन्दगी दा पन्ध मुकाईआ। गुरमुखां दी वेखी संगत सज्जी, सजरा राह तकाईआ। पहलों दर्शन कर के रज्जी, बिना अक्ख तों अक्ख उठाईआ। फेर भोजन खा के रज्जी, जेहड़ा चार जुग ना कोए खवाईआ। मुहब्बत विच बज्झी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। एह वेखो अन्त ते आई चौधवीं सदी, सद्दा दे के रही सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर किसे दी रहिणी नहीं कोई गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। नाम दी देवे कोई ना वढ्ढी, वढ्ढी खाण वाले सारे देणे मुकाईआ। मैं फिरां उच्ची अड्डी, भज्जां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। बग़ली कहे मेरे विच कोई नहीं दाणा आटा, ख़ाली अंदरों बाहरों नज़री आईआ। जन भगतो तुहाडा प्रभू तों पूरा करावां घाटा, घाटे विच्चों हिस्सा मेरे विच देणा टिकाईआ। बग़दाद दी विछड़ी कटदी रही वाटां, नानक निरगुण निरवैर नाल दिता मिलाईआ। वेंहदी रही एह रातां, नैणां अक्ख खुल्हाईआ। जो अर्जन दस्सीआं बातां, बिन अक्खरां लेख लिखाईआ। सो सच सच आखां, तुहानूं दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बग़ली कहे मैं कदी नहीं आई जग, प्रभू हथ्थ ना कदे उठाईआ। सदा रही अड्ड, वक्खरा खेल खिलाईआ। जन भगतो कपड़यां दी बग़ली दयो छड्ड, जगत वासना ना कोए वधाईआ। आपणे अन्तर आत्मा दी झोली दयो अड्ड, परमात्मा आपे वस्त दए टिकाईआ। जे तुसीं नहीं लभ्भ सके ते ओन तुहानूं ल्या लभ्भ, विछड़यां मेल मिलाईआ। हुण मंगण दी ख़त्म हो जाए हद्द, अनमंगी दौलत झोली पाईआ। तुसीं ओस प्रभू दी यद, जिस

नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। अग्गे रहिण ना देवे विच अन्धेरी खड्ड, फड़ के बाहों पार कराईआ। जिस कारण लए सद्द, सो संदेसा रही सुणाईआ। सब दे पड़दे लवे कज्ज, बग़लगीर आप हो जाईआ। जे मंगण दी नहीं जाच, बग़ली कहे मैथों सिक्खो अज्ज, चारे कन्नीआं अग्गे डाहीआ। वेख्यो भुलेखे विच कोई करयो ना अज्ज पज्ज, भरम दा भाण्डा लैणा भन्नाईआ। तुहानूं जदों मिले उपर शाह रग, नौ दवारे दा डेरा ढाहीआ। एहो जेहा वेला कदे नहीं किसे दे आया हथ्थ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत सारे देण दुहाईआ। तुहाडी बुझावे आप अग्नी अग्ग, अमृत मेघ बरसाईआ। तुसीं उह माणक मोती हीरे नग, जो नानक निरगुण सरगुण गया समझाईआ। सारी सृष्टी तों परदा ल्या कज्ज, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। नकाब कहे मैं पाया परदा, पर्दानशीं नज़र किसे ना आईआ। जगत जहान वेख्या सड़दा, सृष्टी रही कुरलाईआ। मैं हैरान हो गई जिस वेले भगतां दे अंदर वड़दा, आपणा पन्ध मुकाईआ। खेल अगम्मी करदा, वड दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। नकाब कहे मेरा समझे कोई ना नुकता, मूसा ईसा मुहम्मद अक्ख
१२३६ ना कोए खुल्ह्‌आईआ। जित्थे सब दी मंज़ल दा पैंडा मुक्कदा, ओथे मेरी होए चढ़ाईआ। मेरा लहिणा ओस उस दा, जिस १२३६
दी उसतत्त कर के सारे रहे गाईआ। हुण परदा ओहला नहीं रहिणा लुक्क दा, हुक्म धुर दा देणा सुणाईआ। जो प्रभू नालों
२० रुस्सदा, रुसयां ना कोए मनाईआ। नकाब कहे बेनकाबां नूं आपे पुछदा, जिन्ह्‌आं लोक लज्जया दिती गवाईआ। जोती जोत २०
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर आप वसाईआ। नकाब किहा मैं आई मुहम्मद दी उत्ते अक्ख, परदा नूर वाला चमकाईआ। पुठ्ठा दिता पलट्ट, धरनी उत्ते सवाईआ। खुदा दा नूर होया प्रतख, जलवा इक्क रुशनाईआ। संदेसा दिता हक, हकीकत विच्चों पढ़ाईआ। मुहम्मदा सदी चौधवीं वल तक्क, तकब्बर रहे ना राईआ। पिछला हुक्म होणा फक्क, फ़ैसला इक्क सुणाईआ। मालगुज़ारी रहे कोई ना टक्क, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। मथ्थे उत्ते मार के सट्ट, ठोकर दिती लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क समझाईआ। नकाब कहे मैं कदे ना आउँदी किसे दे मुक्ख, बुरके जगत वाले लुकाईआ। मेरी सारे सुक्खणा गए सुक्ख, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ। जिस ईसा ने आपणा आप मंनयां खुदा दा सुत, मरीआ मरहूम महिरम इक्क जणाईआ। ओस नूं लग्गा दु:ख, दर्द दर्द विच रखाईआ। जिस वेले फाँसी दे फट्टे तों ल्या चुक्क, सलीब दी तरतीब ना किसे समझाईआ। निरगुण धारों आपे उठ, निरवैर वेस वटाईआ। शेर वांगूं बुक्क, भबक इक्क लगाईआ। ओस वेले ईसा किहा तूं मेरा मैं तेरा एहो पढ़ीं तुक्क, आपणा परदा नकाब वाला

पाईआ। बिना सजदयां तों सीस गया झुक, झुकयां फेर ना कोए उठाईआ। ओस वेले ओस किहा जिस वेले बदल के आवें आपणा रुख़, रुख़सत सानूं देणी कराईआ। परवरदिगार सांझे यार तूं ना मानस ते ना मानुख, देही सनेही तेरा रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चौथी धार रिहा पुछ, पढ़ के देणा सुणाईआ। साढे तिन्न सफ़े दी कढु लओ कापी, जिस दी कापी ना कोए कराईआ। गुरू ग्रन्थ लिखण लग्गयां अर्जन ने छड्ड दिते सी पापी, प्रभ दे अग्गे वास्ता पाईआ। मैं भगतां दा साथी, गुरमुखां दा जोड़ जुड़ाईआ। साहिब सतिगुर मन्न के आखी, धुर संदेशा इक्क अलाईआ। अर्जन एह मेरी रहिण दे बाकी, बाकी नवीस इक्क अख्वाईआ। जिस वेले आप आवां इत्तफाकी, इतफ़ाकिया फेरा पाईआ। सब दा बणां साथी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैं मालक प्रितपालक ख़ालक सब दी मुआफ़ करां गुस्ताख़ी, जो चरण कँवल सीस निवाईआ। मेहर निगाह नाल बदल देवां हयाती, हया शर्म रहे कोए ना राईआ। मेरा खेल नहीं कोई नबाताती, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। गुर अर्जन बण के दास दासी, सीस जगदीस दिता झुकाईआ। ओसे वेले निरगुण जोत प्रकाशी, दो जहानां होई रुशनाईआ। लख चुरासी विच्चों अर्जन नूं कोई ना दिस्या पापी, सब दे अंदर बैठा बेपरवाहीआ। जिधर वेखे वड्ड प्रतापी, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। चीऊंटी हाथी दी करे राखी, विष्न ब्रह्मा शिव सब नूं उंगली लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। अर्जन कहे मैं छड्डे साढे तिन्न सफ़े, लेकिन साढे तिन्न सफ़े वण्ड ना कोए वण्डाईआ। क्यों, साढे तिन्न हथ्थ विच मिलदे प्रभू दे नाम दे गफ्फ़े, जो मुफ्त दए वरताईआ। जगत भुक्खे चनयां दे मारदे फक्के, गुरमुख अमृत जाम पी पी खुशी बणाईआ। अर्जन तक्कया प्रभू दवारे पापी अपराधी भगत सन्त सारे भाई सके, जो चल के आवण सरनाईआ। जिन्हां दे सिर उत्ते हथ्थ रखे, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। उह ओस दवारे वसे, जिस घर इक्को जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। साढे तिन्न सफे कहिण साडी किसे ना कीती वण्ड, वण्डण वाला नज़र कोए ना आईआ। अर्जन दे अग्गे असां पाई डण्ड, रो रो दिता सुणाईआ। क्यों, करवट बदली कंड, मुख ल्या भवाईआ। अर्जन किहा तुहाडे उत्ते उह आउणा छन्द, जिस दा बन्द ना कोए बणाईआ। पापियां ने ओस दवारे जाणा लँघ, जित्थे विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। दर्शन कीत्यां दरसी दे पै जाए ठंड, आदर्शी इक्को वेख वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सब नूं पै जाए गंढु, साढे तिन्न हथ्थ दी निशानी दए बणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दा निशाना देवे टंग, जिस नूं ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। साढे तिन्न सफ़िओ तुहाडे लेखे दे पिच्छो सृष्टी विच हो जाए

जंग, झगड़ा ना कोए मुकाईआ। भगतां नूं चढ़े रंग, आत्म वज्जे वधाईआ। प्रभू सौं जाए अंदर आत्मा दी सेज पलँघ, सोहणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। किताब कहे मेरे सफ़े साढे तिन्न, तिन्न लोक ध्यान लगाईआ। मैं वक्त लँघाए गिण गिण, दिने रातीं नींद कदे ना आईआ। जगत वेखे पैमाइशां तों बिना मिण मिण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जे वाहो दाहीआ। प्रभ दा खेल होणा किहड़े छिन्न, शंकर समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। सफ़े कहिण असां वेख्या प्रभ दा ओहला, ओहले बहि के खेल खिलाईआ। जिस ने भगत प्यार दा चिट्टा पाउणा चोला, भगवन आपणा रंग वखाईआ। पूरब उधार ते पिछला लहिणा सवरन नानक नाल हुन्दा सी तोला, सौदा तक्कड़ी विच टिकाईआ। इक्क दिन तोलदयां तोलदयां नानक दा फड़ ल्या डौला, बस बस दी आवाज़ सुणाईआ। नानक हुलारा मारया ते छाबा भरया हो गया हौला, वस्त होर विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। नानक किहा मेरी तक्कड़ी नूं बन्न्ह दे बोदी, चिट्टा रंग रखाईआ। हुण मैं वेदी ते फेर होवां सोढी, मेरी बेपरवाहीआ। हुण मैं भेखी ते जोगी, फेर शहिनशाह अख्वाईआ। समझे ना कोए लोक परलोकी, भेव किसे ना आईआ। तोले किहा की मैनूं वी देवें सोझी, मेरी अक्ख खुल्ह्हाईआ। नानक किहा मेरे हथ्थ ला गोडीं, सिर गोडयां विच रखाईआ। तैनूं ओस बाग़ दी बणावा डोडी, जित्थे भगत भगवान महकाईआ। धर्म दा कर संजोगी, मेला लवां मिलाईआ। प्रेम दा बण के मौजी, मजलस दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। तोले किहा कुछ मेरा दस्स पता निशानी, किस बिध मेला लएं मिलाईआ। नानक किहा एह ओस दी मेहरवानी, जो मालक मेरा माहीआ। ओने चिर नूं उस दी भैण आ गई अंञाणी, उमर नौ साल वखाईआ। हथ्थ विच दवात ते काने वाली कानी, नानक अग्गे दिती टिकाईआ। बाबा मैनूं लिख के दस्स आपणी कहाणी, भुल्ल कदे ना जाईआ। नानक किहा आ मेरी राणी, देवां माण वड्याईआ। आह लै मेरे चरणां दा ठंडा पाणी, अमृत दयां चखाईआ। मेरा परम पुरख सुल्तानी, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जिस वेले जलवा नूर करे नुरानी, निरगुण फेरा पाईआ। भगतां दे घर खावे महिमानी, दर दर डेरा लाईआ। कलयुग दी कूड़ वेखे तुग्यानी, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। साचे नाम दी होवे हानी, चार वरन लड़ाईआ। ओस वेले कला वरते दो जहानी, जीव जगत समझ किसे ना आईआ। पुरख अकाल खेल करे आसानी, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। तोले दी छोटी भैण दोहां दी जवानी, प्रेम आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। नन्ही किहा

१२३८
२०

लिख दे नाल कलम दवात, बाबा अक्खर सोहणा पाईआ। मेरे भाई नूं नहीं जाच, किस बिध सतिगुर तों मंग मंगाईआ। एह तक्कड़ी दी बोदी नहीं जाणी साथ, पैसा धेला कम्म किसे ना आईआ। कुझ सानूं भैण भ्रावां नूं दे सौग़ात, वस्त अमलोक झोली पाईआ। नानक मेहर निगाह नाल ल्या झाक, मुहब्बत अक्ख उठाईआ। बच्चयो तुहाडा पिछला लेखा कीता साफ़, जन्म दा गुनाह रिहा ना राईआ। अग्गे सुणो निक्की जेही बात, तुहानूं दयां समझाईआ। जिस वेले आवे कलयुग अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले हुक्म देवां आप, आपणे हुक्म नाल प्रगटाईआ। हुण तुसीं भैण भ्रा फेर दोहां दा वक्खरा वक्खरा होवे बाप, माई इक्क ना कोए जाईआ। दोहां नूं दस्स के आपणा जाप, तूं मेरा मैं तेरा दयां समझाईआ। शब्दी हुक्म अंदर आख, संदेसा सच सुणाईआ। सम्मत शहिनशाही तिन्न दी इक्की माघ दी होणी रात, नानक अंक दिता बणाईआ। ओ तोलया हुण तूं अनपढ़ फेर तैनूं पढ़ा के जगत दे पिच्छो आपणी जमात, पट्टी देणी समझाईआ। तेरी चिट्टी बोदी दा चिट्टा चोला होवे साथ, चिट्टी धार दए समझाईआ। तेरी निक्की भैण जेहड़ी मर जाणी ऐसे विसाख, फेर जन्म विच ना आईआ। ओहदा बधक नाल नात, कृष्न दए गवाहीआ। फेर भगतां दी मिले जमात, पुरख अबिनाशी

१२३६ होए सहाईआ। एहो कलम ते एहो दवात, फेर ओसे दे हथ्थ फड़ाईआ। ओस बच्ची नूं बच्चयां वांग प्रभ दे हुक्म दे लिखण १२३६

दी होवे जाच, कलम शाही रंग चढ़ाईआ। चिट्टा चोला कहे बधक दी बेटी नाँ जोगिंदर ते सवरन दी पिछली भैण ते नाता

भरात, हुण तक्क समझ किसे ना आईआ। अगली खेल पुरख अबिनाश, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणे सब दे रिहा मुकाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने प्रभ दे निक्के जिहे दीवे, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जगदे जगदे जगदे लोकमात हो गए आ के नीवें, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। विष्नूं कहे ओ ब्रह्मे हुण अमृत रस किथों पीवें, शंकर लै हिलाईआ। शंकर किहा मैं वेख्या ओहदे भगत हो गए खीवे, मस्ती विच सरनाईआ। जेहड़ा एस दे चरणां थीवे, मस्तक धूढ़ रमाईआ। उह आदि जुगादि जीवे, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण साडा प्रकाश होया मधम, मद्दद इक्को मंग मंगाईआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर चुम्मदे कदम, निउँ निउँ सीस निवाईआ। उस दा रूप रंग रेख समझे कोई ना बदन, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जो भगतां आया सद्दण, हुक्मे हुक्म सुणाईआ। हैरान हो के विष्नूं कहिंदा ओ ब्रह्मे ओ शंकर वेख अग्ग लग्गी लग्गण, सके ना कोए बुझाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर आपणे हुक्म लग्गे तज्जण, पल्लू रहे छुडाईआ। साची धूढ़ी मिले किसे ना मजन, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। तत्ती वा लग्गी वगण, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। ब्रह्मा कहे शंकर वेख मैं किड्डा चालाक, चालाकी समझ किसे ना आईआ। विष्नूं नूं नाल लै के प्रभ दी किरपा नाल सृष्टी दी रचना रच दिती पंज तत माटी ख़ाक, ख़ाक दे अंदर दीवे दिते टिकाईआ। एह तिन्नां बत्तीआं दी हर अंदर लाट, इक्क मन इक्क आत्मा इक्क परमात्मा तिन्नां दी समझ ना किसे समझाईआ। जे कोई गुर अवतार पैगम्बर आया ते बण के प्रभू दा चाक, चाकर हो के सीस निवा निवा के आपणा झट लँघाईआ। थोड़ा जेहा प्रभू खोल्हदा रिहा ताक, घूँगट विच्चों परदा आप उठाईआ। रमज़ नाल दस्सदा रिहा बात, इशारयां विच समझाईआ। सिफ्तां लिखा के उत्ते काग़ज़ात, जगत दिती वड्याईआ। अन्त सारे पा के गए वफात, नज़र कोए ना आईआ। क्यों, सारयां नूं बन्द कीता पंज तत काया हवालात, कुंजी जिंदा आपणे हथ्थ रखाईआ। बिना नानक तों किसे नूं हथ्थ ना आई रबाब, जो भगतां दे अंदर दित्ती टिकाईआ। काया कपड़ दे सारे बणे रहे बज़ाज़, राम कृष्न अल्ला वाहिगुरू सतिनाम दे टुकड़े दिते कराईआ। हुण वही खाते दा होण लग्गा हिसाब, अंकड़ा समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ।

१२४० २० विष्न ब्रह्मा शिव कहिण असीं जगदे रहे जोत, जोत जोत रुशनाईआ। जोत तों बण गई वरन गोत, तत्तां वण्ड वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सक्या ना कोई सोच, समझ ना कोए समझाईआ। प्रभ ने दे के नाम सलोक, सूरे दिते बणाईआ। थोड़ा थोड़ा नाल दे के रोक, हट्ट निक्के निक्के खुल्हाईआ। जे कोई घर मंगण आया थोक, पिठ्ठ ते ठपकी ला के मातलोक दिता भजाईआ। तूं चल ते मैं पिच्छे घलदा आं जोत, पहले मात गर्भ विच डेरा लाईआ। बाहर आवीं ते फेर दस्सां मौज, अंदर सड़न दी मैनूं लोड़ ना राईआ। अक्खां मीट के ध्यान धर के मेरी करयो खोज, पल्लू गल्ल विच पाईआ। साधना वाला साधिओ जोग, जुगती दयां दृढ़ाईआ। जे ध्यान धरोगे ते फेर दरस दयांगा रोज़, बिना कार कमाई तों हथ्थ किसे ना आईआ। पर सरीर दा ज़रूर भुगताऊंगा रोग, छुटकारा नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले मेरा वेखणा चाहोगे चोज, चोजी प्रीतम हो के दयां वखाईआ। जे कहो असीं मालक लोक परलोक, फेर सुणा के इक्क सलोक, तुहानूं बच्चयां वांग वरचाईआ। जे आकड़ो ओसे वेले खिच्च लवां जोत, खाली भाण्डे दयां कराईआ। एसे कर के गुर अवतार पैगम्बर डरदे रहे बहुत, अल्ला अल्ला वाहिगुरू वाहिगुरू राम राम कहि के सीस निवाईआ। किते साडे उत्ते लग्ग ना जाए कोई दोष, भुल्ल ना लए भुलाईआ। जितने गुर अवतार पैगम्बर होए रात नूं बुल्लां उत्ते हथ्थ रख के रैहन्दे रहे ख़ामोश, आसण ऐहो रहे

लगाईआ। ना किसे दा बंक दुआर ना रिहा कोट, कोटी कोट गए फेरीआं पाईआ। इक्क दूजे नूं सारे गए टोक, नाम दा टुकड़ा दे के सारे दित्ते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। दीवे कहिण साडी बुझण वाली लो, सदा रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो तुसीं सुणो ओस दी सो, जो सोहँ रूप समाईआ। जो तुहाडे जोगा गया हो, हुक्म नाल मिलाईआ। जे तुसीं हो जावो निर्मोह, फिर वी ना कदे भुलाईआ। जिस दा बूटा ल्या बो, बीज उपर फल लगाईआ। जित्थे ना इक्क ते ना दो, दोहां दा एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। तिन्न मुखीआ कहे गुरमुखो कर ना ल्यो गुस्सा, मैं सच दयां सुणाईआ। वेखो विष्न ब्रह्मा शिव दा इक्को गुच्छा, तिन्ने मिल के सारी सृष्टी रहे चलाईआ। मरन जम्मण दा इन्हां नूं नहीं कोई दुक्खा, कोई उपाए कोई सँघारे आपणी आपणी सेव कमाईआ। जे तुसीं चाहो साचा सुखा, सुखमन दा खहिड़ा लओ छुडाईआ। इक्को प्रभ दा नाम लओ सुक्का, जगत लाज़मा माया ममता नाल रलाईआ। पिच्छे भावें किसे दा तीर नहीं लग्गा ते तुहाडा सहिजे लग्ग गया तुक्का, आपणा गेड़ा लओ गिड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण ओ तुहाडा वेला उह ढुक्का, जिस ढुकाओ

 दा गुर अवतार पैगम्बर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। १२४१

दीपक कहिण की सारे बणोगे त्रैमुखी, मुक्खों दयो जणाईआ। पहला वाक् असीं जन्म नहीं लैणा फेर कुक्खीं, मात गर्भ कदे ना आईआ। (दूजा वाक्) चुरासी विच नहीं होणा दुखी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तीजा बचन प्रभ दी गोद विच रहिणा सुखी, जिस घर इक्को वज्जे वधाईआ। एह मंग मनी सिँघ ने उंगली नाल लिख के ते मंगी सी बड्डुक्खीं, मस्तुआणा दए गवाहीआ। आप लेट के पिठ पुट्ठी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किहा, ऐ प्रभू आपणयां भगतां नूं कदे ना वाड़ीं विच त्रिकुटी, त्रिकुटी तों अग्गे सिध्धा आपणा राह वखाईआ। जेहड़ी लिव माता दे गर्भ तों बाहर आ के छुट्टी, ओहो फेर लैणी बंधाईआ। तेरे कोल किहड़ी तरुट्टी, ख़ाली भण्डारे देणे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीवे कहिण साडी समझयो ना कोए दीवाली, दीवाला सब दा कढ्ढ वखाईआ। असां वेखणा खेल हाली, माज़ी दा डेरा देणा ढाहीआ। जन भगतो आपणी कर लओ बहाली, बौहड़ जन्म ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चल के आ गए मारन ताली, आपणा ताल वजाईआ। अग्गे किसे दी रहिण नहीं देणी कोई दलाली, टकयां वाला हट्ट ना कोए वखाईआ। शरअ दी रहे ना कोए गुलामी, गुलाम नफर गुरमुख ना कोए अख्वाईआ।

जन भगतो तुहाडी मन्जूर होई सलामी, जिस नूं सलाम सलामालैकम ईसा मूसा मुहम्मद सारे रहे सुणाईआ। तुहाडी कटण आया बदनामी, बदीआं दा डेरा ढाहीआ। तुहाडा मालक इक्क अनामी, जो इनाम विच आपणा पैग़ाम रिहा सुणाईआ। दे के धर्म निशानी, निशाना रिहा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दीपक दीआ सब दा डगमगाईआ।

बावन आह पिछला लै ला कटोरा, कुटीआ दे लुकण वाले जिस ने दिते भुलाईआ। बल दा पकवान सी थोड़ा, जिस विच दहीं नज़र ना आईआ। जिस तरह दुद्ध दहीं दा रूप इक्क ते वक्खरा जोड़ा, भगत भगवान आपणी खेल रखाईआ। तिन्न जुग विच अटकदा रिहा रोड़ा, गुर अवतार पैगम्बर आपणी आपणी कथा गए सुणाईआ। सस्से उत्ते तड़फदा रिहा होड़ा, निरगुण सरगुण हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दहीं कहे बावन कुछ हस्स के गया दस्स, मसख़रा रूप वटाईआ। जिस वेले सारयां जुगां दी हो गई बस्स, दानी रहिण कोए ना

१२४२ पाईआ। चक्रवर्ती होणे भठ्ठ, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए इक्ठ, साध सन्त ना कोए वड्याईआ। १२४२

भण्डारे वाला रिहा कोई ना हट्ट, सच वस्त ना कोए विकाईआ। मन ने साधूआं दे भाण्डे अंदरों लैणे चट्ट, सवान वांग

२० साफ़ देणे कराईआ। सब ने खाणा कट वच्छ, बुद्धी बिबेक ना कोए बणाईआ। ओ प्रभू तेरी धार ब्रह्म दुद्ध वांगूं जाए फट, २०

खट्टा मिठ्ठा स्वाद बणाईआ। तेरा नाम किसे नहीं लैणा रट, रट्टयां विच लोकाईआ। बल ने किहा एह कौण मारे सट्ट, अंदरे अंदर हिलाईआ। बावन किहा एह खेल पुरख समरथ, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। अन्त ओहो होवे प्रगट, जो परगणे रिहा प्रगटाईआ। सब दा लेखा वेखे सच, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। बावन किहा बल तेरे दवारे नहीं दहीं दी फुट्टी, मैं फुटकल वेखी लोकाईआ। कलयुग अन्त प्रीत वेखी टुट्टी, टुट्टयां ना कोए जुड़ाईआ। गाना बध्धा ना किसे गुट्टीं, सगन सच ना कोए मनाईआ। अन्तर लिव रहे ना रुची, रचना कूड़ होवे लोकाईआ। आत्मा रहे कोई ना सुची, क्यों सुच्ची आत्मा मन दे ओहले बहि के अक्ख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। बावन किहा अन्तर विचार, विचरण दी लोड़ रही ना राईआ। कुँवारी कन्या घर भण्डार, सवा सेर दहीं नज़री आईआ। जिस दा कलयुग अन्त होणा विहार, भण्डारा देणा भराईआ। जिस वेले जीव तन छड्डे विच संसार, अन्त सारे दहीं नाल उस दा इश्नान देण कराईआ। उह दहीं दुरमति

मैल ना सके उतार, पापां पार ना कोए कराईआ। बावन किहा एह किरपा करे आप निरँकार, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। सवा सेर नाल इके वार सारे भगत दए नुहाल, मरन तों पिच्छो मुड़ के नुहाउण दी लोड़ रहे ना राईआ। मरयां नूं फेर लए ज्वाल, आत्मा परमात्मा विच मिलाईआ। नाले गुरू नाले शब्द नाले दलाल नाले अकाल, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। बिना अक्खां तों सब नूं लए भाल, जुग जन्म के विछड़े आपणे जोड़ जुड़ाईआ। बग़ली फड़ के बणे ना कदे कंगाल, बग़लीआं सब दीआं दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। दहीं कहे बावन मैनूं याद आई बोली, अनबोलत दित्ती सुणाईआ। सतिजुग दी विछड़ी कलयुग विच ओहो कन्या भगतां दी बणी विचोली, गुरदर्शन दर्शन गुर का पाईआ। प्रभू दी खेल बड़ी आहिस्ता ते बड़ी हौली, तिन्न जुग अक्ख ना कोए उठाईआ। दहीं कहे मेरा हिसाब वेख लओ ते गुरमुखो ऐवें छेती ना पाओ रौली, वेले नाल सब कुछ दए कराईआ। एहनूं तुहाडे नालों तौली, तौले तौले आपणी खेल वखाईआ। तुहाडे नालों बहुती रोवे धौली, धरनी कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। दहीं कहे मैनूं क्यों किहा सेर सवा, सवाया दिता बणाईआ। भगतो अग्गे जुग चलणा नवां, नवीं रीत वखाईआ। सब दा बदल देणा समां, समझ देणी समझाईआ। मैं सच सच कहवां, सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। मैनूं खुशी सतिजुग दी मंग मंगी ते कलयुग अन्त भगतां विच बहवां, एह प्रभ दी बेपरवाहीआ। मैं तिन्न जुग कीता नहीं कोई तमअ, सवा दा सेर सवा सेर फेर तुहाडे अग्गे आईआ। तुहाडा अज्ज तों चुक्कया ग़मा आवण जावण दिता कटाईआ। बेशक विष्न ब्रह्मा शिव दी बुझ जाए शमां, तुहाडा दीवा गुल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडा भण्डारा तिन्न जुग सांभ के रख्या भगतो तुहानूं देणा वरताईआ। वेख लओ प्रभ ने कीता नहीं कोई लालच, उंगली मुख ना कोए छुहाईआ। तुहाडा हिस्सा पूरा ते पूरा वेखो ख़ालस, रला अवर ना कोए रलाईआ। पिछले जन्म दी बच्ची कलयुग अन्तिम सालस, सालसी बालकां विच रखाईआ। मकरूज कदे ना करे आलस, कर्ज़ा तुहाडा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं पार कराए बिना सफ़ारश, भगतां तों वड्डा सफ़ारश करन वाला नज़र कोए ना आईआ।

बाल्मीक दी मर गई गाँ, वैरागी हो के ध्यान लगाईआ। ओस ने मरी उत्ते कीती छाँ, पल्ला दिता पाईआ। ओने चिर नूं आ गई उस दी माँ, वेख के दए दुहाईआ। ओधरों उडदा आ गया काँ, ठूंगा सिर विच टिकाईआ। ला के आपणा

दाअ, भज्जयां वाहो दाहीआ। उस ने कीता हा हा, होकर दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। बाल्मीक दी माँ आई नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। गाँ दवाले दे के तिन्न गेड़े, नैणां नीर वहाईआ। बाल्मीक नाल करे झेड़े, तेरी भगती कम्म किसे ना आईआ। निज्झ जम्मया तूं रोड़ दिते साडे बेड़े, गऊ माता दिती सवाईआ। ओने चिर नूं काँ दे के आ गया गेड़े, ठूंगा माता सिर विच टिकाईआ। उह कर के वड्डे जेरे, दु:ख आपणे अंदर दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। माई कहे वे बाल्मीकू, मुक्की ज़ोर नाल लगाईआ। तैनूं सीखां नाल सीखूं, अक्खां लाल कढु डराईआ। तूं बड़ा बणया मीसू, चुप वट्ट के अक्ख शरमाईआ। ओने चिर नूं ओथे आ गया जगदीशू, ब्राह्मण बण के फेरा पाईआ। बटवारे की तुहाडी रीतू, चल गाँ दईए दफ़नाईआ। अग्गों माँ दी निकली चीकू, रो रो दिता सुणाईआ। एहनूं मोई नूं केहड़ा घसीटू, आपणा ज़ोर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। ब्राह्मण कहे बाल्मीक लईए खिच्च, आपणा बल वधाईआ। दोवें वड़ गए चौंह टंगां दे विच, खुर दो दो बंधाईआ। ओने चिर नूं बाल्मीक नूं आ गई छिक्क, ज़ोर नाल लगाईआ। ओने चिर नूं इक्क फिरदा आ गया रिच्छ, काला रंग रंगाईआ। बाल्मीक दी माता अंदर आई इच्छ, मनसा इक्क वधाईआ। जे ब्राह्मण कुछ मैनूं देवे लिख, नाल कलम शाहीआ। मेरा दुखड़ा दए नजिठ्ठ, मेहर नज़र उठाईआ। अंदरों काग़ज़ लै आई सवा गिठ्ठ, नौ उंगल चौड़ा सोभा पाईआ। रख के बाल्मीक दी पिठ्ठ, सहिज नाल सुणाईआ। पंडता साडे नाल कर हित, साडी गाँ दे जवाईआ। मेरे अंदर पैंदी खिच्च, कोई हलूणा रिहा लगाईआ। जिस दी सेवा करदी सां नित, अज्ज हो चली जुदाईआ। दोहथ्थड़ मार के पई पिट्ट, कूक कूक सुणाईआ। बाल्मीक ने फड़ के इक्क इट्ट, हथ्थ उत्ते रखाईआ। जां वेख्या ओहदे थल्लयों निकली इक्क चिट्ट, जिस दे उत्ते लिख्या लेख तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। इस नूं गऊ दे उत्ते सिट्ट, सिट्टाबाज़ी लै लगाईआ। फेर ब्राह्मण वल्ल ला टिक्क, टिक टिकी इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। ओने चिर नूं काँ आया चक्र ला, आपणा फेरा पाईआ। तीजा ठूंगा दिता ला, चुंज ज़ोर नाल खुभाईआ। रो के किहा बाल्मीक दी माँ, बच्चया मैनूं लै बचाईआ। ब्राह्मण किहा नाह, हथ्थ ना कोए छुहाईआ। बाल्मीक नींवीं लई पा, माँ वल्ल ना मूल तकाईआ। ओस दोहथ्थड़ दिती ला, ज़ोर नाल टिकाईआ। नाले मेरी गाँ जवा, नाले मेरा दु:ख वण्डाईआ। दोहां दी ब्राह्मण फड़ लई बांह, सहिज नाल समझाईआ। मस्तक नाल मथ्थे लओ लगा, माँ पुत्तर जोड़ दिता जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल खिलाईआ।

१२४४ २०

ब्राह्मण ने दोहां दे जोड़े सिर, सिर उपर हथ्थ रखाईआ। साझां दस्सया पिर, प्रीतम बेपरवाहीआ। जो वस्या घर थिर, दरगाह साची डेरा लाईआ। निरवैर सदा निर, निराकार नूर रुशनाईआ। जिस लेखा पिछला चिर, चिरी विछुन्ने रिहा वखाईआ। उलटा गेड़ा रिहा गिड़, परदा ओहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। ब्राह्मण किहा माँ पुत्त मथ्थे उत्ते रखो हथ्थ, हथेली नाल दबाईआ। ओसे वेले दोनां दी अंदरों खुल्ही अक्ख, नूर जोत जोत रुशनाईआ। बचन दिता सच्च, हुक्म इक्क सुणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, वड दाता बेपरवाहीआ। त्रेता द्वापर जाणा नस्स, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। जिस काँ ने माता तैनूं मारी सट्ट, तिन्न वार आपणी चुंज लगाईआ। इस दा तिन्न जन्म दा अग्गे लेखा देवां घत, नाता लोकमात जुड़ाईआ। इस ने राजा बणना समरठ, आपणा बल धराईआ। पुरख अकाल निरगुण सूरबीर सुत दुलारा करना प्रगट, योद्धा गोबिन्द इक्क अख्वाईआ। दोहां दा मुकाबला वेखणा डट्ट, विच आपणा परदा पाईआ। सति जुलम दा सांझा कर के हट्ट, इके धरती देणा टिकाईआ। अल्ला वाहिगुरू पा के वट्ट, दोवें देणे लड़ाईआ। एह खेल होणा अकथ, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१२४५ कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। ब्राह्मण किहा एह होणा शाह औरंगा, अवर की अवर खेल खिलाईआ। गोबिन्द दे हथ्थ १२४५
२० फड़ाउणा मृदंगा, प्रभ दी बेपरवाहीआ। दोहां दा होणा जंगा, सूरबीर अख्वाईआ। एस काँ दा तिन्नां चुंजां वाला डंगा, २०
तिन्नां जन्मां वेख वखाईआ। एह प्रभ दी साची वण्डा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस भगत दी माँ नाल कीता दंगा, दुःख विच दुःख पुचाईआ। इस तों होर सूरमां केहड़ा चंगा, जेहड़ा चंगयां नाल करे लड़ाईआ। इस नूं कलयुग दी चोटी उत्ते टंगां, बोदीआं वालयां दीआं बोदीआं हथ्थ फड़ाईआ। गोबिन्द दे हथ्थ फड़ा के डण्डा, वेखां खूब लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुल्हाईआ। काँ बण गया औरंगज़ेब, ज़ेबो ज़ीनत सोभा पाईआ। गोबिन्द भर के धुर दी जेब, नाम ख़ज़ाना लै के आईआ। दोहां नूं हुक्मे नाल दिता भेज, हुक्म विच वड्याईआ। परमात्मा दोहां दा साझां ते अंदरों वक्खरी सेज, सुख दुःख विच भुगताईआ। अन्त गोबिन्द ने लिख्या लेख, औरंगे दिता समझाईआ। हुण छड्डणा पए देस, कूड़ी जगत शाहीआ। हुक्म इक्क नरेश, तैनूं देवां सुणाईआ। तेरी आत्मा होवे पेश, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म सुणाईआ। गोबिन्द किहा नज़ूना ना रंगे ज़र्रे ज़ूर, हमदे सना तौफ़ीके ख़ुदा देवे अज़ाब, जलावतने बेवतने ख़ाताए ख़त, कागों के काग कागों के काग , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान बैठ सच्ची महिराब। सुणी

आवाज़ औरंगे, बिन कन्नां अंदरी आईआ। कवण वजाए मृदंगे, कवण रिहा समझाईआ। जां तकया कुरान शरीफ़ बत्ती टंगे, साहमणे सोभा पाईआ। उह वी नहीं लग्गदे चंगे, जिस वेले जम रहे डराईआ। जां वेख्या गोबिन्द दिस्या कन्ढे, जो भवजल पार कराईआ। ओस वेले किहा ऐ बन्दगी वाले बन्दे, बन्दना सीस निवाईआ। मैं काग ने कीते कम्म गंदे, फिर क्यों काग कागां विच मिलाईआ। गोबिन्द किहा आपणे सीने रख ठंडे, हौसला इक्क वधाईआ। सच दस्स किन्ने मारे पंडे, किन्ने हिन्दू मुस्लिम दिते बणाईआ। किथ्थे मुहम्मद जेहड़ा टुट्टी तेरी गंढे, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। ज़रा अक्खीं मीट ध्यान धर तैनूं नज़री आवण उह बन्दे, जो बाल्मीक तेरा वेखे अन्धेरा तारीक, लाशरीक नाल मिल के आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द किहा औरंगे सवलले सलद ईद नामे मध कदीमे यद सद इक्को इक्क सुणाईआ। हुण ज़रूर बणना पए कग, रुलणा पए जग, फिर वी तेरा विचोला पुरख अकाल ल्यावां सद्द, तेरे मकबरे उत्ते तेरा पूरा करा दयां हज्ज, हुजरा तेरा इक्क सुहाईआ। बिन चश्मदीद तों मेरा दर्शन कर लै रज्ज, अग्गे ज़रूर छुटकारा करावां जग, बाल्मीक नूं ल्यावां सद्द, जिस दी माँ दे पिच्छे तैनूं मिली सज़ाईआ। पाल सिँघ एहनूं उंगलां विच टंग, एहनूं गोबिन्द चाढ़े रंग, अग्गे बख्शे संग, जित्थे भुक्ख रहे ना नंग, दुखियां दुःख गवाईआ। पिछला कौल इकरार कीता नहीं होण दिता भंग, वेखो मारया बिना जंग, निशाने ओसे नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणे सब दे पूर कराईआ। नव नौ दा नव जैकारा, ढोला बेपरवाहीआ। नौ दुआर तों पार किनारा, साहिब सतिगुर आप कराईआ। नौ जन्म दा पूरब उधारा, पिछला झोली पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा अन्त सहारा, पुरख अकाल नज़री आईआ। जन भगत बहाए उस दवारा, जिस दा दरवाज़ा बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। नौ नौ नौं, तिन्नां मेल ना कोए मिलाईआ। जो आया सो दिने जागया ते रात नूं ज़रूर गया सौं, गुर अवतार पैगम्बर खराटयां विच आपणा झट लँघाईआ। प्रभ नूं याद करदे रहे क्यों उहनां दे अंदर आपणे मिलण दा रख्या गौं, इसे लालच विच दिवस रैण ध्याईआ। आपणी लोड़ नूं कहिंदे रहे साडा पिता साडा माउँ, जे एह ना कहिंदे ते सिर हथ्थ कौण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। नौ नौ नौ सारे लिख के गए अंक, नौ तक्क हिन्दसा इक्को नज़री आईआ। इस तों अग्गे क्यों इक्क ते सिफ़र दा बण गया बंक, एह गल्ल ना किसे समझाईआ। कलम शाही नाल लिख के भार टंक, वज़नां विच टिकाईआ। राम कृष्न अल्ला वाहिगुरू वजा के डंक, डौरू सारे गए खड़काईआ। पूरा किसे नहीं मेटया शंक, जे

शंका मिट जांदा फिर प्रभ दा नाँ क्यों गए बदलाईआ। किसे मक्की ते खाधा बाजरा किसे खाधी कणक, चपाती रोटी दाल नाल मिलाईआ। बिना प्रभू तों कोई आण के बैठा ना कदे अटंक, आसा तृष्ना तों बाहर डेरा लाईआ। अज्ज दी रात एह वी वास्ता पा के सीता दे नाल मिल के मंगी सी जनक, ओ राम दे राम बिना तेरे भगतां दा भार ना कोए उठाईआ। जनक ने कन्न फड़के मथ्था रगड़ के किहा अनेक तेरे होणे सन्त, बिना कन्त सोभा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो हो जाओ हाज़र, हज़ूरीओ हज़ूर रिहा सुणाईआ। चार जुग दे बणे रहे ताजर, व्यपारी सोहणे नज़री आईआ। प्रभ दा नाम छोटे छोटे हिस्सयां विच वेचया बणा के मूली गाजर, कीमत टकया वाली पाईआ। क्यों नहीं वखाया विच काया गागर, एहो जेही टेडी बंक तुसीं ना पार कराईआ। क्यों बणे बहादर, सूरबीर अख्वाईआ। जिस वेले मैं आपणे भगत नूं जुग जुग सिध्धा देंदा रिहा आरडर, उह दीन दुनी नूं छड्ड के सिध्धा मेरे विच समाईआ। मेरे भगत जिन्नां नूं मैं दर्शन दिता उह चार जुग उजागर, तुहाडा सेवक नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तूं गहर गम्भीर वड्डा सागर, असीं तेरी बूँद तेरे विच्चों निकल के तेरे विच समाईआ। पुरख अकाल कहे बच्चयो शाबाश हुण सौं जाओ अग्गे ताण के चिट्टी चादर, तुहाडी लोकमात लोड़ रहे ना राईआ। याद करो जिस वेले नानक ने शाही बख्शी सी बाबर, वास्ता मेरे अग्गे पाईआ। मैं समझ के सुत काबल, गोबिन्द इक्क प्रगटाईआ। कर के इन्साफ़ अदल बण के आदल, लहिणा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कहे मैं टेडी डण्डी, डण्डौत करन वालयां पार ना कोए कराईआ। जे प्रभू मैं ना हुन्दी तेरे दवारे ते साधां दी लग्ग जांदी मंडी, सारे बहिंदे धूंणीआँ ताईआ। मैं आपणे विच फसा लैंदी पखण्डी, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। जे कोई कहे एथों चंगी एथों गंदी, अग्गों कढु के दन्दी हीं हीं कर के सारे देवां डराईआ। सच पुछें मैनूं इक्क भय आवे गोबिन्द कोलों चण्डी, जेहड़ी चण्डालां करे सफ़ाईआ। एह मंग नैणां देवी उत्ते ओस ने सी मंगी, कल्गी तोड़ा ला के उंगल कन्न विच टिकाईआ। प्रभू तेरा सुत दुलारा इक्को शब्द बड़ा जंगी, जंगज़ू बहादर दो जहान अख्वाईआ। तेरे भगतां नूं अग्गे मैं आउण नहीं देंदा तंगी, दुःख सुख विच बदलाईआ। मेरी कटार रही नंगी, जिस दा ब्यान ना कोए वखाईआ। वायदा कर कौल कर इकरार कर अहिद कर मैं सदा बणां तेरा संगी, धुर दा संग निभाईआ। जन भगतां तोड़ां खानाबन्दी, बन्दगी इक्क सुणाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू मैनूं ऐं जापदा जिवें कलयुग सन्तां दे अंदर होणी खानाजंगी, दिवस रैण करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ

दी विंगी टेडी कहे सोटी, सोहणा हुक्म सुणाईआ। जन भगतो मैं रोंदी टेडी बंक क्यों तुहाडे अंदर प्रभू चढ़ गया आपणी चोटी, चोट आपणा नाम लगाईआ। सब दी दुरमति मैल जाए धोती, पतित पुनीत कराईआ। किसे दी मत्त रहे ना होछी, देवे माण वड्याईआ। ख़बरदार किसे पढ़ी पोथी, बेख़बरां रिहा उठाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी चार जुग गुर अवतार पैगम्बर किसे नहीं सोची, बिना सोचयां तुहानूं दिती समझाईआ। सच दुआर दी दे के सोझी, सुत्तयां ल्या उठाईआ। गुरमुख सवाणी कदे ना होवे कमली कोझी, नार सुहागण सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साढे तिन्न हथ्थ सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। सोटी कहे वेखो मेरे वल, वलवले सब नूं रही वखाईआ। सृष्ट सबाई नाल कर के छल, अछल छल रिहा कमाईआ। जन भगतां दवारा अन्तर मल्ल, मलीन साफ़ कराईआ। तुहाडी ख़ातर आया चल, निहचल फेरा पाईआ। अन्तर गया रल, नूर नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग रिहा रंगाईआ। गुरमुख दा सिर रहे कदे ना नंगा, ग़रीबां उत्ते परदा पाईआ। जेहड़ी शंकर दी धार गंगा, सब दे अन्तर दिती वहाईआ। इक्को घाट पत्तण इक्को कंडा, सब दा दिता बणाईआ। जिस दा अमृत जल ठंडा, अग्न जेठ ना कोए तपाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़े रंगा, कसुंभड़ा रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत

१२४८ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। नंगा सिर ते खुल्ह्ड़े केस, सोहणा वेस वटाईआ। एह १२४८

२० प्रेम कीता दस दस्मेश, पुरी अनन्द वज्जी वधाईआ। इक्क घड़े विच कर के छेक, मोरी विच्चों उंगल लँघाईआ। प्रकाश २०

पा के आपणा तेज, जोत दित्ती चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग चढ़ाईआ। गोबिन्द घड़े विच कढ्ढी मोरी, साढे तिन्न हथ्थ उच्ची दित्ती रखाईआ। रात सब तों कर के चोरी, पंजां ग़रीबां ल्या उठाईआ। आओ तुहानूं वस्त देवां थोड़ी थोड़ी, छोटयाँ नूं वड्डयां नाल मिलाईआ। जिस वेले मेरी अकाल नाल बणी जोड़ी, जोड़ा जुड़ के फेरा पाईआ। साचे नाम दी ला के पौड़ी, हरिजन वेखां थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। मोरी विच वहाई जल धार, पाणी पाणी विच्चों बदलाईआ। हस्स के किहा नाल प्यार, प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। जे ऐसे तरह उत्तों मिलें आण, वहिण थल्ले वल वहाईआ। फेर भगतां दी मंज़ल होए आसान, जिन्ह्हां दे अंदर वड़ के आपणा भेव खुल्हाईआ। जे तैनूं लभ्भण जाण विच जंगल बीआबान, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। ओथे मिले ना तेरा निशान, बिन तेरी किरपा तेरा घर ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करते कीता परवान, संदेसा गोबिन्द दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले आवां बण के वाली दो जहान, भगत सुहेले सहिजे लवां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। नामा कहे भरी कटोरी दुद्ध, ठाकर भोग लगाईआ। अगली आवे सुध्ध, परदा दे चुकाईआ। तैनूं लवां बुझ, आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। ठाकर किहा सुण नामे, सच संदेश सुणाईआ। करां खेल आपणे बदल के जामे, बहत्तर रूप धराईआ। कृष्न ने महल बणाए सुदामे, मैं तेरी छप्पर छन्न छुहाईआ। छड्डां पीणे खाणे, मुफ्त भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नामे किहा तूं बाढी बड़ा सोहणा तरखाण, प्रभू नज़री आईआ। सचखण्ड दा भगवान, पहला कटोरा तैनूं सचखण्ड भेंट चढ़ाईआ। फेर आवें विच जहान, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। एह भगतां दा दान, मैं तेरी झोली पाईआ। तीजा होर सुण फ़रमान, तैनूं दयां सुणाईआ। जिस वेले फेर जावें उत्ते असमान, आह तीजा कटोरा नाल लै के जाईं चाँईं चाँईंआ। अग्गों हस्स के किहा मेहरवान, नामे एह की खेल बणाईआ। नामे किहा तूं भगतां दा महिमान, भगत चाहुन्दे तैनूं ओथे एथे एथे ओथे सदा देईए रजाईआ। पर एहो दुःख साडे कोल कोई देण वाला नहीं दान, सारे तेरे मंगते नज़री आईआ। जे तूं किरपा करें श्री भगवान, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले आवें विच जहान, आपणा फेरा पाईआ। फिर भगतां लई सब तों वक्खरा लै के आवीं दान, जेहड़ा तिन्नां लोकां विच हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

मुहम्मद नबी बणना कि रसूल, रसूलल्लाह रिहा जणाईआ। किस नूं करना कबूल, काअबा कि काअबे दा मालक लैणा मनाईआ। केहड़ा मन्नणा दस्तूर, दस्त मिलाउणा कि दर्शन करना नूर इलाहीआ। इक्को शुक्रिए विच होणा मशकूर, किस मुश्किल विच ध्यान लगाईआ। ज़रा निगाह मार वेख दूर, दुराडी अक्ख खुल्हाईआ। सूली चढ़दा वेख मनसूर, तबरेज़ खल्ल लुहाईआ। मुहम्मद किहा मैनूं मन्ज़ूर, मन्ज़ूरी विच सीस झुकाईआ। मैं तेरा बरदा मज़दूर, चाकर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। मुहम्मद किहड़ी करें इबादत, अवल दे जणाईआ। मुहम्मद किहा जेहड़ी पावें आदत, ओहो राह वखाईआ। जेहड़ा बणावें तालब, ओहो करां पढ़ाईआ। तूं साहिब इक्को मालक, तेरी बेपरवाहीआ। मैं नन्हा तेरा बालक, नूर विच रुशनाईआ। मैनूं ऐंं दिसदा सदी चौधवीं सब दे मथ्थे लग्गणी कालख, टिक्का साफ़ ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। मुहम्मद आह लै बन्नह ला मौली तन्द, तैनूं दयां समझाईआ। ओनां चिर तेरा चमकदा रहे चन्द, लोकमात होए रुशनाईआ। जिस

वेले अमाम बण के आवां ते सारयां दा लेखा हो जाए बन्द, पिछली बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। सब दी बदल देवां कंड, मुख मुख नालों भवाईआ। इक्क सुणावां छन्द, धुर दा राग अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा लाहीआ। मुहम्मद किहा उह केहड़ा वेला होवे जगत, सच देणा दरसाईआ। परवरदिगार किहा जिस वेले सब दी खिच्चां शक्त, ताकत रहिण कोए ना पाईआ। नूर अलाही हो के आवां फर्श, अर्श वेख वखाईआ। सूफ़ीआं उत्ते करां तरस, भगतां नाल मिलाईआ। मुहम्मदा तेरी मेरी पक्की हो गई शर्त, तेरे वाला गाना फेर भगतां देवां बंधाईआ। अल्ला आपणयां बंदयां विच कदे ना पावे फ़र्क, फ़िरकेदारी दयां गवाईआ। हुण मग़रब ते फेर शरक, मशरक मुसतफ़ा सारे वेख वखाईआ। सब दी माण वड्याई होणी ग़रक, ग़रूब आफ्ताब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, अल्ला दा मौली तन्द, मुहम्मद सदा बख्शंद, बख्शिश विच रखशिश, रहमत आपणे नाल रखाईआ। आ ब्रह्मे वेख आपणी कौली, कँवल फुल्ल रहे मुरझाईआ। सब दी सुक्कण लग्गी बौली, जौहड़ तालाब रहे कुरलाईआ। चारे खाणी पावे रौली, रो रो नीर वहाईआ। धीरज मिले ना कोए धौली, धरनी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा रिहा चुकाईआ। कौली कहे जिस वेले मुहम्मद ने पहले पढ़ी कलाम, कलमा अंदरे अंदर सुण के खुशी मनाईआ। हक दा जाणया पैग़ाम, आवाज़ इक्क अल्ाईआ। तक्कया वल्ल असमान, अक्खां अक्ख उठाईआ। बदलदा वेख्या नज़ाम, दो जहान दुहाईआ। झगड़ा प्या इस्लाम, असल वसल ना कोए कराईआ। बरदे होए हैरान, गुलाम भज्जण वाहो दाहीआ। खुदा किहा मुहम्मद आपणी काया कौली विच मेरी कर पहचान, जिस विच आपणे प्रेम दा फुल्ल अनमुल्ल दिता टिकाईआ। मुहम्मद कर के सलाम, सईयदे विच सीस दिता निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र नाल तराईआ। कौली कहे मेरा सब तों छोटा रकबा, अरज़ तूल समझ कोए ना पाईआ। मैं वसावां काया दे अंदर इक्क कसबा, सब कुछ ओसे विच टिकाईआ। मेरे विच वड्डा गुण ते वड्डा वसफ़ा, काबलीअत विच वड्डी नज़री आईआ। भगतो सन्तो गुरमुखो गुरसिखो प्रभ नूं आपणे नाम वरताउण दा बड़ा सरफ़ा, गुर अवतार पैगम्बरां नूं निक्की जेही कौली दा जाम प्याईआ। अग्गे पा के आपणे नाम दा पर्चा, प्राचीन दे विछड़यां तों सवाल रिहा कढाहीआ। किसे नूं सतिजुग किसे नूं त्रेता किसे नूं द्वापर किसे नूं कलयुग किसे नूं चौदां सदीआं दा दिता ख़र्चा, अग्गों खाली सारे दित्ते कराईआ। सचखण्ड विच सारे बहि के करदे चर्चा, चर्चा विच नज़र कोए ना आईआ। खौरे केहो जेहा चढ़ना अग्गे बरसा, साडी बरसी भुल्ले जगत लोकाईआ। औह वेखो भगतां दे उत्ते किहड़ी करदा वरशा,

कवण मेघ वरसाईआ। गोबिन्द किहा ख़बरदार एह उह जेहड़े विछड़े सरसा, गुर अवतार पैगम्बर अक्ख ना कोए उठाईआ। मेरे कोल सब दीआं फ़रदां, जुग जन्म दे विछड़े लवां उठाईआ। मेरे कोल विछोड़े दीआं दर्दां, बिरहु वाले लवां जगाईआ। जिन्हां दीआं जन्म जन्म दीआं अरज़ां, ओन्हां होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। कौली कहे मैं वेखां कायनात, दीन दुनी फोल फुलाईआ। बिना मेरे किसे नूं प्रभ करे ना कुछ अनायत, वस्त झोली ना कोए टिकाईआ। चार जुग मैं सब दी करदी रही हमायत, हमसाजन हो के सेव कमाईआ। जन भगतो हुण पता नहीं शायद, प्रभ आपणी रीती दिती बदलाईआ। अज्ज तों मैं छोटी प्याली हो गई ग़ायब, जिंनां चाहे तुहानूं अमृत रस दए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग चढ़ाईआ।

जुग फिरदयां फिरदयां आ गया उह टिकाणा, जिस दे टिक्के सारे रहे लगाईआ। लभ्भदयां लभ्भदयां मिल गया उह घराना, जित्थे घरां दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चढ़दयां चढ़दयां मिल गया उह बबाणा, जो दो जहान आपणे हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतो रविदास दी उह बौली, जो चमड़यां रंग रंगाईआ। जित्थे प्रेम दी होवे बौहणी, नेम दा भेव खुल्हाईआ। सब दी लेखे लग्ग जाए आउणी, दुरमति मैल धवाईआ। काया अंदर हो जाए राउणी, अमृत जल करे सिंचाईआ। मनसा पूरी होवे भाउणी, भावना आपणे रंग रंगाईआ। जिस ने उजड़ी वस्ती सब दी वसाउणी, दर ठांडा इक्क वखाईआ। कलयुग रैण ना रहे डराउणी, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। रविदास बौली प्रभ दा तालाब, तारनहार इक्क अख्वाईआ। भगत सुहेले फुल्ल उह गुलाब, जेहड़ा गुल आप खिलाईआ। जित्थे नानक दी वज्जे रबाब, बिन ताल सुर सुणाईआ। खेल सच्ची जनाब, हरि करता आप वखाईआ। अर्जन दी किताब, कुतबख़ान्यां बाहर टिकाईआ। दुद्ध दी जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर देवे वड्याईआ। बौली कहे मेरे पाणी दा नहीं कोई नाप, पैमाना नज़र कोए ना आईआ। मेरे अंदरे कोट उतरन पाप, पापां करां सफ़ाईआ। मैं सदा सुणदी इक्को दा जाप, जो सोहँ ढोला गाईआ। अन्त सब नूं जावां आख, संदेसा इक्क इलाहीआ। चार जुग दे पूरे होणे भविख्त वाक्, जो भाख्या गुर अवतार पैगम्बर गए सुणाईआ। जन भगत होए ना कोए उदास, ग़मी विच ग़म ना कोए बणाईआ। प्रभ दा खेल तमाश, हुक्मे अंदर हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन होण ना देवे निरास, निरासा आसा विच समाईआ।

डेड़ रोटी दा खाणा खाधा, खा खा खुशी मनाईआ। एह भगत भगवान दा वाधा, इक्क दा अद्धा अद्धे दा इक्क दोहां दा डेड़ सोभा पाईआ। गोबिन्द पिता ते पुरख अकाल दादा, दोहां दा रिज़क मुक कदे ना जाईआ। सदा प्रेम प्यार विच होवे सादा, बुद्धी सादी दए बणाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, दलिद्रीआं दलिद्र गवाईआ। एह खाणा मंगया सी बावन कोलों बल राजा, भगती विच भगत हो के ध्यान लगाईआ। हुक्म होया जिस वेले आपणा भगत प्रगटावां धुर दा साहिबज़ादा, वंस बंस इक्को इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। एह रोटी नहीं डेड़ फुलका, फल फूल रिहा महकाईआ। पार उतारा होवे ओस कुल का, जिस कुल विच गुरमुख नज़री आईआ। लख चुरासी कदे ना रुलदा, जूनी विच ना कोए भवाईआ। किसे स्वाद नहीं माणना बुल्ल दा, रसना रस ना कोए वड्याईआ। सो भगत जो प्रभ दे हुक्म अंदर तुलदा, नाम तराज़ू उत्ते आपणा आप टिकाईआ। एह भाण्डा भज्जणा सब दी काया चुल्ह् दा, ठीकर नज़र कोए ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो भगतां दा दवारा खुल्ह्दा, भगवन होवे आप सहाईआ। जिस दा राह सुलहकल दा, मार्ग इक्को इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।

हरि संगत तेरा प्रशाद, प्रशादयां दा लहिणा दए चुकाईआ। तुहाडा प्रभू आदि, तुसीं जुग ते सतिगुरू जुगादि, बिना जुग तों जगत ना कोए वड्याईआ। तुसीं प्रभू दे पुत्तर तुसीं दामाद, ते पुत्तर धी इक्को रंग वखाईआ। तुसीं ओस दे सन्त तुसीं ओस दे साध, बिना तुहाडे नाद ना किते वजाईआ। तुसीं सुत्ते ते तुसीं पए जाग, जगावण वाला तुहानूं रिहा उठाईआ। अज्ज तों तुसीं नहीं रहे काग, कागों हँस बणाईआ। सृष्टी विच तुहाडा जगे चराग़, तेल बाती प्रभू आपे विच टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एहो पक्का रहे साक, दूजा नाता ना कोए बणाईआ। तुसीं भगत ते प्रभू तुहाडा चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। तुसीं आत्मा ते उह तुहाडी तत्तां वाली ख़ाक, अठ्ठे पहर परदा रिहा पाईआ। जे इक्क मन्न लओ बात, बातन होवे रुशनाईआ। सारे समझो इक्क नूं बाप, दूजी जन्म वाली ना कोए माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। प्रशाद कहे मैं सब नूं कीता इक्ट्ठा, प्रीती अंदर मेल मिलाईआ। क्यों टैंके अग्गे लग्गा ठठ्ठा, प्रभ नूं सारे करदे ठठ्ठा, ठठ्ठे दा ठाकर नज़र किसे ना आईआ। जे कोई वेखे लम्मा उच्चा जां कोई तक्के गठ्ठा, निक्कयां तों निक्का वेखण कोए ना पाईआ। जिस गुर अवतार पैगम्बरां तों सृष्टी विच पवाया रट्टा, रिटन विच आपणा नाम समझाईआ।

ते जे आदि तों अन्त तक इक्को दस्स देंदा आपणे नाम दा टप्पा, फेर टिप्पी बिन्दी दी लोड़ रैहन्दी ना राईआ। सचखण्ड बहि के गुर अवतार पैगम्बरां उत्ते लोकमात रखदा रिहा छप्पा, हुक्म विच डराईआ। पच्ची अक्खर बणा के पच्ची प्रकृती वण्ड वण्डा के सब तों अख़ीर छब्बीआं बणाया पप्पा, पप्पे विच पूरन दिता समाईआ। जिस ने फफ्फा बण सब दा मारना फक्का, बब्बा बक्करे खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। भब्बा हो के भिअंकर देवे धक्का, मम्मा मछलीआं जलां विच तराईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बर यइये दा बणा के यक्का, रारा रेल उत्ते चढ़ाईआ। आउँदे गए कोटन वार लखां, लल्ला लेख दए समझाईआ। वावा वतन वाला बेवतन हो के कोई ना बणया पक्का, जो आया सो गया पन्ध मुकाईआ। ड़ाड़ा कहे हुण ड़ाड़ मेटे प्रभ बण के सिध्धा जट्टा, जटा जूट धारी नज़र कोए ना आईआ। सब दी अक्खीं पा के घट्टा, आपणा खेल खिलाईआ। सवाल विच आपणा समझाया नहीं किसे बटा, इशारीए कसर सारे दिते उडाईआ। आपणे नाँ नूं लग्गण देवे कदे ना वट्टा, वटांदरे विच गुर अवतार पैगम्बर सारे दए बदलाईआ। सब दा लेखा कर के पूरा पटेदारी दा पट्टा, सदी चौधवीं पन्ध मुकाईआ। प्रशाद कहे गुरमुखो ज़रूर तुहानूं पाला लग्गदा होऊगा ठक्का, सारे लेफां तलाईआं वल्ल वेख वखाईआ। एह वी वायदा सी पिछला पूरा पक्का, जिस कारण पूर कराईआ। जे तुहानूं सर्दी ते मैं पिण्डा कर लवां नंगा, नंगा हो के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। प्रशाद कहे मैनूं दयो वरत, वर्तमान वेख वखाईआ। जे प्रभू आयों परत, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। लेखा चुका उत्ते धरत, धरनी धवल धौल तेरी ओट तकाईआ। सारयां दी पूरी कर के शर्त, शरीअत तों बाहर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, रहमत विच करे तरस, सदा सदा सद सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

★ २२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ पाल सिंघ दे गृह भलाई पुर डोगरां ★

गोबिन्द कहे प्रभ तेरी वेखी रसम, रसीआ हो के खोज खुजाईआ। सच सौगंद खाधी कसम, इकरार तेरा चेते आईआ। माटी ख़ाक वेख भस्म, जो भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। निगाह मार अगम्मे नूरे चश्म, परदा ओहला आप उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे चरण वसण, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। धुर संदेसा मात दस्सण, कलमा नाम सिफ्त सालाहीआ। अन्तिम सब दी पैज आवे रखण, निरगुण हो के फेरा पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं वेख्या तेरा रिवाज, जुग चौकड़ी भेव खुल्हाईआ। सृष्टी दृष्टी तक्की समाज, इष्टी वण्ड वण्डाईआ। पैग़म्बर तेरे मुहताज, अवतार झोलीआं डाहीआ। निरगुण तेरा काज, सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। दो जहानां सीस दिसे किसे ना ताज, हुक्मरान हुक्म ना कोए मनाईआ। कलयुग अन्त सब दा बेड़ा डुब्बदा दिसे जहाज़, पार किनारा ना कोए वखाईआ। इक्क बेनन्ती करां आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। भेव खोल्ह बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। साचा दिसे कोई ना साध, साधना सिद्ध ना कोए वखाईआ। रसना जेहवा सारे तैनूं रहे आराध, हिरदे अंदर दरस कोए ना पाईआ। दीन दुनिया होई बेइलाज, नाम दारू मुख ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गोबिन्द कहे वेख आपणी रीती, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। अन्तिम तेरी सदी बीती, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। मेरा लेखे ला खून कढुया चीची, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। गुरमुख भगत सुहेले धर्म दी इक्क बग़ीची, बाग़बान हो के वेख वखाईआ। दूर दुराडे वस नज़दीकी, नेरन नेरा नज़री आईआ। शरअ तोड़ जगत शरीकी, लाशरीक आपणी अक्ख खुल्हाईआ। तेरे विच इक्क तौफ़ीकी, रहमत सब दे उत्ते कमाईआ। पिछली बदल सर्ब तवारीखी, तारीख इक्क दृढ़ाईआ। दर दरवेश मंगण भीखी, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। गोबिन्द कहे मैं तेरा तक्कया बिवहार, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। साचा दिसे ना कोए मित्र प्यार, माया ममता मोह हल्काईआ। सच संदेसा दे अगम्मी धार, धुर दा हुक्म इक्क प्रगटाईआ। भविख्तां वाला लेखा मुके विच संसार, संसे सब दे दूर कराईआ। तेरी इक्क सुणे गुफ़तार, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। दर वखा सच्चा दरबार, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। हउँ मांगत दर भिखार, जगदीस सीस निवाईआ। तेरा लेखा कागद कलम ना लिखणहार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। नानक निरगुण तेरे प्रेम दी वजाए इक्क सतार, रबाब रब्बी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। गोबिन्द कहे तेरा वेख्या घाट पतण, किनारा सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी सारे करदे गए यतन, यथार्थ तेरी सेव कमाईआ। दुनिया वेखदे गए बेवतन, तेरा वतन नज़र किसे ना आईआ। धन्न भाग जे कलयुग अन्तिम आयों पैज रखण, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सच दुआर दा दिता भजन, बन्दगी इक्को इक्क दरसाईआ। लख चुरासी तोल के वज़न, भगत सुहेले लए उठाईआ। जिन्हां दे नेड़ ना आवे अज़ल, भय भउ ना कोए रखाईआ। ओन्हां दी पूरी करदे मज़ल, पैंडा अगला दे चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साची गाउँदे ग़ज़ल, ग़रज़ सब दी वेख

वखाईआ। मन विकार कूड़ी क्रिया करदे कत्ल, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। कुझ लेखा वेखां दक्खण, नदेड़, अधेड़ छेड़ जगत वाली छिड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग देणा रंगाईआ। गोबिन्द कहे मैं वेखां तेरा रंग, रंग रंगीला सोहणा भाईआ। सच सुहञ्जणा तेरा पलँघ, पारब्रह्म नज़री आईआ। नाम निधान तेरा मृदंग, दो जहान करे शनवाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघ, गुर अवतार पैगम्बर तेरा राह तकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पावे डण्ड, डण्डावत विच तैनूं सीस निवाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। नेत्र नीर वहावे जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, गहर गम्भीर तेरी ओट तकाईआ। साचा दे इक्क अनन्द, जो पुरी अनन्द विच्चों अनन्द मेरे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मेरा जंग तेरा जिदाल, मसीह वसीअ मुहम्मद रबीअ विच ध्यान लगाईआ। जमाद उलसानी तेरा ख्याल, ख़ैरख़ाह तेरी वड वड्याईआ। रमज़ान समझे ना कोए निशान, निशाने सारे गए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे जिदाल दा खेल कर जदीद, यदी आपणा हुक्म चलाईआ। परदा लाह शुनीद, गुफ़त राग सुणाईआ। तेरा हुक्म होवे शदीद, शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ। मेरे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी दी रखी उह रसीद, जिस विच हुक्मनामे सब नूं दिते सुणाईआ। कलमयां विच कीती तमहीद, ताकीद आपणा नाम दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना ईद बकरीद, बक्कर बुक्कर बाकायदा वेख वखाईआ। काली कफ़नी बिना बांहवां तों मुहम्मद दी वेख कमीज़, जिस दा अग्गा पिच्छा रूप ना कोए समझाईआ। साची रही ना कोई तमीज़, तमअ विच कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं तक्कां किहड़ी अक्ख, आख़र इक्को नज़री आईआ। सब नूं दस्सां सच, सच दयां समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल आदि जुगादी इष्ट पक्क, तत्तां वाला इष्ट रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे सारे मिल के इक्को गाओ जस, इक्को नाम सिफ्त सालाहीआ। इक्क दवारे जाओ वस, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। चरण कँवल जाओ ढठ्ठ, धूढ़ी टिक्के मस्तक लाईआ। मुहम्मद किहा मेरा लेखा पूरा होणा विच साल अठ्ठ, अठ्ठ सठ्ठ दए दुहाईआ। मेरी बद्धी वेखो गठ्ठ, गठड़ी आपणे कोल टिकाईआ। मैं चौदां तबकां बाहर जाणा नठ्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरी उम्मत दा अन्तिम लेखा होणा विच दिन सठ्ठ, सठ्ठां तों अग्गे ना कोए टपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मैं वेखी तेरी किताब, सत्तां सतरां वाली नज़री आईआ। जिस दा समझे ना कोए हिसाब, इलम विच ना कोए वड्याईआ। हिस्सयां

वाला नहीं बाब, गिणती गणत ना कोए गणाईआ। ओस दे विच इक्को सजदा इक्को आदाब, नमस्ते इक्को इक्क दरसाईआ। सच खुदा दस्स के वाहिद, पुरख अकाल परदा लाहीआ। जिस दा दो जहानां राज, रईयत विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब अख्वाईआ। अन्तिम सब दा करे काज, करनी दा करता इक्क हो आईआ। सब नूं देवे दात, अनमुल्ली झोली पाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। धुर दे भगतां देवे साथ, सच्चा संगी इक्को नज़री आईआ। गोबिन्द कहे प्रभू सब नूं दे दे आपणा विश्वास, विषयां दा झगड़ा दे चुकाईआ। तूं दाता सर्ब गुणतास, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा बणा इक्क समाज, समें दी समग्री सब दी झोली पाईआ।

★ २२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे टीउबैल लई नींह
भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ★

१२५६ रावी कहे खेल अनडिठ्ठा, याद पुराणी नज़री आईआ। जित्थे मिल्या अमृत रस मिठ्ठा, बूँद सवांत सोभा पाईआ। शब्दी १२५६
२० हुक्म सुणया चिठ्ठा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम पाया हिस्सा, साची वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप २०
हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग समाईआ। रावी कहे एथे हुन्दी सी इक्क झिड़ी, जंड इक्की सोभा पाईआ। पत्तयां वाली गुलज़ार खिड़ी, फुल्ल नज़र कोए ना आईआ। की वेख्या अमृत झिरना रिहा झिरी, आपणा रस वखाईआ। जां तक्कया दूर दुराडी इक्क सिल्ली, जो पूजस पाहन समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। साचा खेल श्री भगवान, हरि करता आप जणाईआ। अमृत रस ठंडा पाण, अमिउँ आप वहाईआ। पूरब शब्द दा ज्ञान, अगम्मी आवाज़ इलाहीआ। सच दर कर परवान, लेखा पूरब दए चुकाईआ। बौली नहीं बलीआं दा विधान, वास बौली विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा सतिजुग दा सच बणा के जाए निशान, जो निशाना चौसठ हज़ार बरस ना कोए उठाईआ।

★ २२ माघ शहिनशाही सम्मत ३ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

धरनी कहे मैं आ गई पैर दब्बे, हौली हौली कदम टिकाईआ। भगत सुहेले साचे लभ्भे, मिली माण सच्ची वड्याईआ। जो प्रेम प्रीती अंदर बद्धे, हुक्म हुक्मी जोड़ जुड़ाईआ। सच दवारे बहि के सजे, साजण मिल्या धुरदरगाहीआ। जीहदे नाम नगारे वज्जे, दो जहान करे शनवाईआ। निरगुण धार वक्खरी अड्डे, नेत्र जग नज़र ना आईआ। जिस ने धर्म निशाने गड्डे, चार कुण्ट रिहा लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे हथ्थ वखाईआ। धरनी कहे मैं आई छेती छेती, छत्रधारी दिते तजाईआ। जन भगत वेखे प्रभ दे भेती, दर घर बैठे सोभा पाईआ। मैनूं याद प्रहलाद वाली नेकी, सच संदेशे विच दृढ़ाईआ। जिस दे पिच्छे मालक बणया परदेसी, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशी, सचखण्ड निवासी एका एक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर मैं धरनी ओसे दी बेटी, धौल धर्म दी धार बंधाईआ। धरती कहे मैं आ गई अग्गे, पिछला पन्ध मुकाईआ। जित्थे दीपक जोत एका जगे, अन्ध अन्धेरा रिहा ना राईआ। सच प्रेम दे मिलदे मज़े, मज़ाक वेख्या जगत लोकाईआ। सन्त सुहेले गुर चेले धुर दे सद्दे, तिन्ना्ं सदके वारी घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। धरनी कहे मैं आ के गई झुक, नमस्ते सीस निवाईआ। कदम गया रुक, पन्ध ल्या मुकाईआ। जां वेख्या गुरमुख गाउँदे इक्को तुक, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। मेरी जन्म जन्म दी मिटी भुक्ख, तृष्ना अवर रही ना राईआ। अग्नी विच मिल्या सुख, तत्व तत ना कोए तपाईआ। मैं सुभावक रही पुछ, सीस जगदीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरे उत्ते तेरे किन्ने सचे पुत्त, लख चुरासी विच्चों नज़री आईआ। जिन्ना्ं दे अंदर तेरी धार पए फुट्ट, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिन्ना्ं दे गाना बन्ने्ं गुट, तन्दव तन्द जोड़ जुड़ाईआ। जिन्ना्ं दा आवण जावण लख चुरासी जन्म मरन जाए छुट्ट, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। मात गर्भ होवण ना उलटे रुक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा देणा चुकाईआ। धरती कहे मैं आ के झुकाया सीस, आपणा आप मिटाईआ। चरण छोह के इक्क जगदीस, जागरत जोत वेख वखाईआ। कलमा सुणया हक हदीस, जो हज़रतां करे पढ़ाईआ। सदी वेख के बीस, आपणा घूँगट ल्या चुकाईआ। जां सुणया ते इक्को सुणया गीत, तूं मेरा मैं तेरा राग बेपरवाहीआ। मेरा ध्यान बदल गया खहिड़ा छुट्ट गया मन्दिर मसीत, मठ्ठां वाले मठ्ठ दित्ते तजाईआ। वेख के अनोखी रीत, परीत मेरे अंदर आईआ। जिस दी तेई अवतार हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद गुरू दस करन तस्दीक शहादत विच इबादत विच सारे आपणा आप भुगताईआ। जां वेख्या जन भगतां अंदर बाहर

नज़दीक, दूर दुराडा नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी वलों बदल के पीठ, करवट आपणी आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। धरती कहे मैं आ के कीता दरस, तृष्ना तृप्त कराईआ। प्रभू होर किन्ने बरस, जदों पापियां करें सफ़ाईआ। सारे तेरे दवारे रहे तरस, तड़पना सके ना कोए बुझाईआ। मेरी आसा रही भटक, मैं भज्जी वाहो दाहीआ। जिधर वेखां कूड़ कुड़यार दा चढ़या कटक, गुर पीर ना कोए सहाईआ। अद्धविचकार सारे रहे लटक, फ़ासी गलों ना कोए तुड़ाईआ। धर्म दी धार बणे ना कोए रखक, रच्छया करे ना थाउँ थाँईंआ। धरनी कहे मैं समझया उह वेला आ गया वक्त, जिस दी थित ना कोए समझाईआ। क्यों मेल तक्कया भगवान भगत, भाण्डा भरम भन्नाईआ। प्रकाश वेख्या ना अर्श, अर्श दा फर्श सोभा पाईआ। सब दी पूरी करन आ गया शर्त, शरअ दा मालक शरीअत दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा देणा वखाईआ। धरती कहे मैं आ के मंगां मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी मंगदयां मंगदयां मंगदयां मेरे घस गए दन्द, दन्दी पीह के दयां दुहाईआ। मैनूं इशारा कर गया गुजरी दा चन्द, हलूणा दे के गया उठाईआ। जिस वेले आवे साहिब बख्शंद, हरि करता धुरदरगाहीआ। तूं रो के पावीं डण्ड, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सुणीं इक्को सोहँ छन्द, जो सोहला रिहा सुणाईआ। गोबिन्द किहा धरनी वेख मैं तेरे उत्ते कीता जंग, खण्डा खड़ग दिता खड़काईआ। छड्ड के पुरी अनन्द, माछूवाड़े डेरा लाईआ। मेरा खुशी बन्द बन्द, बन्दगी विच समाईआ। अग्गे हुक्म दा होवां पाबन्द, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सदा दा रखां संग, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले सदी चौधवीं गई हंढ, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओस वेले पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां पावे ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। धरनी कहे मोहे होया चाओ घनेरा, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। घर स्वामी ठाकर मिल्या मेरा, मेरा मेरा नज़री आईआ। जिस दा भगतां दे अंदर डेरा, बाहरों नज़र किते ना आईआ। मैं वेख्या लख चुरासी खेड़ा, बन खण्ड फेरा पाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत उच्चे पेड़ा, चोटीआं पत्ते फोल फुलाईआ। जिधर तक्कां माया ममता दा कूड़ा गेड़ा, साचा धर्म ना कोए दरसाईआ। बिना पुरख अकाल दीन दयाल करे ना कोए हक नबेड़ा, अदल सच ना कोए कमाईआ। हुण हुन्दा नहीं मैथों होर वड्डा जेरा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी चारों कुण्ट दए दुहाईआ। मैं ख़बर सुणी आ गया इक्को पुरख अकाल शेरा, भबक अगम्मी शब्द लगाईआ। जिस ने शरअ दा कटया जेड़ा, जेउड़ीआं वाले आपणे चरणां हेठ दबाईआ। अग्गे सति दा बन्न्हे बेड़ा, वञ्झ मुहाणा इक्को नाम रखाईआ।

ग़रीबां कारण मारया फेरा, गुरमुखां गोद बठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। धरती कहे मैं आ गई धर्म दवारे, जित्थे द्वारका वासी सीस निवाईआ। झुकदे वेखे गुर अवतारे, पैगम्बर सजदयां विच निउँ निउँ लागण पाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणे भिखारे, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। चारे जुग जिस दे वणजारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग कार कमाईआ। जिस दे शब्द अगम्म इशारे, निरगुण सरगुण भेव खुल्हाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारे, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। साचा गृह मन्दिर इक्क वखाले, भगत सुहेला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं पुज्ज गई ओस दरवाज़े, जिस दा दर बन्द ना कोए कराईआ। जित्थे भिखारी राजे महाराजे, शाह पातशाह जगत सीस निवाईआ। जो सब दे संवारे काजे, करनी दा करता इक्क अख्वाईआ। जिस ने सब तों वक्खरा खेल करना विच माझे, मजलस गुर अवतार पैगम्बरां देणी मिटाईआ। जन भगतां सोई सुरती जागे, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। इक्को आत्मा परमात्मा आराधे, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। चार जुग नालों वक्खरे करने वाधे, वायदा पिछला पूर कराईआ। जन भगतां नूं निक्के निक्के सुणन नहीं देणे अंदर वाजे, सिध्धा आपणा दरस वखाईआ। मनुषां दे वण्डे होए रहिण नहीं देणे इलाके, इक्को नाम देणा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर निक्के निक्के आपणे काके, आपणी गोद लैणे बहाईआ। साचे नाम दे किसे नूं कटणे पैण ना फ़ाके, भुक्ख्यां देणा रजाईआ। दीन मज़्हब दी रहे कोई ना ज़ाते, ज़ात इक्को देणी दरसाईआ। जो गावे सो प्रभ दी गाथे, तत्तां वाला गुरू ना कोए मनाईआ। धरती कहे प्रभ मेरे वी चीथड़ पाटे, लीरो लीर नज़री आईआ। कलयुग जीवां खेह पाई मेरे विच झाटे, अम्मां कहि के मैनूं धक्के लाईआ। सब नूं भुल्ल गया जो गोबिन्द अमृत प्याया इक्क बाटे, चार वरनां जोड़ जुड़ाईआ। एसे कारण सदी बीसवीं सब नूं पै गए घाटे, साध सन्त आपणा पल्लू ना कोए बचाईआ। सारे बैठे अद्धवाटे, जगत किनारा पार ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धरती कहे प्रभू मैं आ गई दौड़ी, खल्ल साह नाल भराईआ। तेरी मंज़ल किड्डी लंमी चौड़ी, जोजनां विच समझ कोए ना पाईआ। मैं बथेरे वेखे राग पढ़दे गौड़ी, सुरां नाल सुणाईआ। जिधर तक्कया सब दे अंदर वासना कौड़ी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। एथे आ के वेख्या तूं भगतां अंदर लाई आपणी पौड़ी, पउड़ी पढ़न दी लोड़ रही ना राईआ। मैं कूकां करां बौहड़ी बौहड़ी, ज़ोर नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। धरती कहे मैं भज्ज भज्ज गई थक्क, तन ज़ोर रिहा ना राईआ। लभ्भ लभ्भ गई अक्क, खोजयां हथ्थ कितों ना आईआ। झोली किसे ना पाया हक, हकीकत सच

ना कोए समझाईआ। तेरा हुक्म सुणया यक, जो इक्को वार दिता दृढ़ाईआ। जन भगतो किसे रहे कोई ना शक, संसा अंदरों देणा मिटाईआ। सब दा मालक इक्को होवे पति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जो सब दी कायम रखे सुहाग नथ, रंडेपा रंड ना कोए वखाईआ। जिस ने सोहँ ढोला ल्या जप, जपुजी दा नानक लेखा पूर कराईआ। इस तों वड्डा होर नहीं कोई तप, तपीशर रोवण मारन धाहींआ। आदि जुगादि गुर अवतार पैगम्बरां नाल जो होया पक्क, पक्की तरह समझाईआ। धरती कहे मैं बोलां सच, सच दयां सुणाईआ। मेरे उत्ते गुर अवतार पैगम्बर फिरदे रहे माटी भाण्डे कच्च, कंचन गढ़ बणाईआ। अन्तिम सब कुछ एथे गए छड्ड, तन वजूद साथ ना कोए लै जाईआ। मैं कुछ पैगम्बरां दे लै के आई हड्ड, मकबरयां विच्चों बाहर कढाहीआ। ऐ प्रभू की खेल कराया जग, जगजीवण दाते दे समझाईआ। उह किथ्थे रैहन्दे जेहड़े साड़े विच अग्ग, मेरे उत्ते ख़ाक नज़र किते ना आईआ। एह हुण पिछली वादी छड्ड, अग्गे इक्को मार्ग लाईआ। जे तूं सब दा सांझा रब्ब, इक्को सिख्या देणी सुणाईआ। मैं मन्नां फेर तब, जिस वेले ताब्या विच होवे लोकाईआ। धरनी कहे मैं चाहुन्दी प्रभू कोई दिन मुकरर कर जिस वेले आपणे भगतां नूं बन्नें पग्ग, सीस दस्तार इक्क टिकाईआ। ओस वेले पैगम्बरां नूं भुल्ल जाए
१२६० हज्ज, अर्शां तों आवण भज्ज, कदमां विच जावण सज्ज, कोई रहे ना लोक लज्ज, उच्ची कूक गावण गज्ज, तूं मेरा १२६०
मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा खेड़ा देणा वसाईआ। धरती
२० कहे मैं दस्सां नाल ज़ोर, माण तेरे उत्ते रखाईआ। प्रभू तेरे हथ्थ सब दी डोर, जुग चौकड़ी तेरे नाल बंधाईआ। हुण २०
अवर ना बण कोई होर, अवर दा अवर रूप वटाईआ। पिच्छे जुग चौकड़ी बणया रिहों चोर, चोरी चोरी आपणी खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम कौल इकरार कर के ग्यों बौहड़, करनी दे करते फेरा पाईआ। हुण मिटा दे पिछली औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। धरनी कहे मैं चाहुन्दी बिना तेरे दूजे सिर झुल्ले किसे ना चौर, छत्रधारी नजर कोए ना आईआ। आपणे हुक्म नाल सब नूं होड़, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। मैं सुणया खौरे किस तरह मेरे उत्ते फिरे ब्राह्मण गौड़, की पांधा रूप बणाईआ। किहड़े चढ़े घोड़, वागां हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे उठाईआ। धरती कहे मैनूं आया कुछ आराम, थकावट दूर कराईआ। प्रभू तूं किहो जेहा अमाम, जो मुहम्मद गया समझाईआ। मैनूं सहिज नाल दस्स आपणा पैग़ाम, कलमा इक्क दृढ़ाईआ। मेहरवान मेहरवान मैं वेख सब दी ग़ुलाम, हथ्थीं बद्धी सीस निवाईआ। मेरे उत्ते फिरदे तमाम, तमअ दे मारे नज़री आईआ। तेरा बदलदा वेख्या इंतज़ाम, बिन तुध नज़ाम कायम ना कोए कराईआ। मेरी इज़त हुन्दी बदनाम, बदी कलयुग जीव कमाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ हुन्दा हराम, तीर्थ

तटां धीआं भैणां सर्ब तकाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, शरअ विच लड़ाईआ। मेरे सिर कर एहसान, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। धरती कहे मेरे वेख हथ्थ जुड़दे, वास्ता रही पाईआ। प्रभू जेहड़े गुर अवतार आ के गए उह फेर कदे ना मुड़दे, मैं बैठी राह तकाईआ। कुछ कौल याद करां अनन्द पुर दे, गोबिन्द गया समझाईआ। जिस वेले कलयुग सतिजुग दोवें पुड़ जुड़दे, ओस वेले गेड़ा देवे धुरदरगाहीआ। खेल करे आपणी लोड़ दे, लोड़ींदा सज्जण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा धो दे धब्बा, जगत धोबी नज़र कोए ना आईआ। जे इक्को बण जाए सब दा अब्बा, फिर धरती माँ दी वण्ड वण्ड मींढी ना कोए पुटाईआ। मैं वास्ता पावां हाए मेरया रब्बा, दरोही आख सुणाईआ। दो जहान तेरे हुक्म बध्धा, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक्को शब्द दा मार दब्बा, हुक्म इक्क जणाईआ। काहनूं फिरदा विच गभ्भा, फ़ैसला इक्को इक्क कराईआ। जन भगतां दे आपणा सद्दा, संदेसा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्क वरताईआ। धरती कहे मेरा धो दे दाग़, मैल रहे ना राईआ। मेरे उत्ते तेरा जगे इक्क चिराग़,
१२६१ दूजा दीवा नज़र कोए ना आईआ। जे तूं कल्ला जावें जाग, आलस निंद्रा सब दी दएं मिटाईआ। क्यों तेरे हथ्थ चुरासी दी वाग, विष्न ब्रह्मा शिव तेरे हुक्मे सेव कमाईआ। मैं मंगती बणी आज, दर भिखारन फेरी पाईआ। प्रभू भगतां दा बणा दे समाज, समग्री इक्क वरताईआ। सतिजुग दा चला रिवाज, कलयुग कूड़ा डेरा ढाहीआ। तेरी सरनी सरनगति सारे जाण लाग, चरण मिले वड्याईआ। मैनूं उजड़ी नूं कर आबाद, अमृत सिंच हरा कराईआ। तेरी फुलवाड़ी तेरा महके बाग़, गुलशन तेरा सोभा पाईआ। एथे ओथे दो जहानां तेरा होवे इक्को राज, रईयत तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो सरन सरनाई तेरी जाए लाग, ओन्हां दी लागत कीमत दे चुकाईआ। १२६१

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ गुलज़ार सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

अवतार पैगम्बर गुर कहिण असीं कूंजां भरी डार, जुग चौकड़ी विलक विलक कुरलाईआ। वसेरा छड्ड के जंगल जूह उजाड़ पहाड़, बालू टिल्लयां डेरा लाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म भेव कोए ना आईआ। पाछे बचरे छड्डे विच संसार, पसचाताप विच सुणाईआ। किरपा कर परवरदिगार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तेरी साची सच ना लभ्भी यादगार,

याद विच याद आए समझाईआ। सरगुण हो के कट के आए वगार, वगारी हो के फेरा पाईआ। भरोसयां विच दे के आए एतबार, यकीनां विच एतमाद दवाईआ। तेरा साहिब सच दरबार, दर दरवाज़ा दे खुल्हाईआ। इक्ट्ठे हो के रोईए एका वार, एकँकार तेरी सरनाईआ। तेरी ख़बर सुणी वारो वार, तेरी वारता विरसा जगत दित्ती बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी कल्पणा उह कूंज, जिस दी बोली चार जुग ना किसे समझाईआ। अन्तिम साडे नेत्र अथ्थरू दे पूंझ, हन्झू हरि हरि आपणी झोली पाईआ। सानूं इक्ठयां नूं तेरी आ जाए इक्को सूझ, समझ इक्को नाल समझाईआ। तेरे दवारे छड्ड जाईए दूज, दुतीआ भाउ ना कोए वखाईआ। तेरा वेख के उच्च अरूज, महल अटल सोभा पाईआ। मज़्हब दी रहे ना कोए हदूद, हद्द बेहद देणी वखाईआ। कलमयां विच बन्द ना रखीं महिदूद, मुद्दा इक्को इक्क दरसाईआ। सचखण्ड दवारे ना तेरा ते ना साडा तत्तां वाला वजूद, क्यों वुज़ूआं दे झगड़े विच ख़लक दिती लड़ाईआ। जिधर वेखीए ओधर मौजूद, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। किरपा कर के साडे भविख्तां दा दे दे आप सबूत, सफ़ा कूड़ी दे चुकाईआ। तेरा हुक्म इक्क मज़बूत, मुश्किल सब दी वेख वखाईआ।

१२६२ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। अवतार पैगम्बर गुर कहिण साडा सुण १२६२

२० वरलाप, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। तेरा जुग जुग कीता जाप, सिमरन सिमर सिमर सिमर तेरा नाम ध्याईआ। तेरे हवाले २०

कीता आपणा आप, तन माटी तेरी झोली पाईआ। तैनूं मन्नदे रहे अगम्मा बाप, पिता पुरख अकाल सहाईआ। तेरा संदेसा देंदे रहे साच, सच सच समझाईआ। दो जहानां जणाउँदे आए तेरा राज, शहिनशाह इक्को बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम असीं सारे होए मुहताज, तेरे अग्गे झोलीआं डाहीआ। सृष्टी वल्लों असीं देईए जवाब, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपे वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं ज़ोर ज़ोर दी कूके, कूक कूक सुणाईआ। भेव दस्सदे रहे सच्चे सतिगुर दे, गुर गुर परदा लाहीआ। तेरे खेल अगम्मे धुर दे, धुर दी बाणी अगम्म अकथ कहाणी संदेश्यां विच सुणाईआ। तेरे हुक्म कदे ना मुड़दे, भाणे विच भावी सीस निवाईआ। कलयुग अन्तिम बेड़े वेखे रुढ़दे, नईआ नाम ना कोए चढ़ाईआ। लेखे पूरे करदे अनन्द पुर दे, पुरीआं तों बाहर देणा समझाईआ। जेहड़े साडे अंदर चार जुग फ़ुरने रहे फ़ुरदे, फुरनयां दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग वखाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण गुर पुरख अकाल चुक्क ला गोदी, गोद तेरी इक्को इक्क सुहाईआ। झगड़ा मुका दे जञ्ञू बोदी, तिलक त्रिसूल ना कोए वड्याईआ। तेरा गुंचा फुल्ल इक्को डोडी, महक इक्को दे भराईआ।

क्यों नानक ने धार बदली सोढी, सोढी दा बेदी बेदी दा भेदी अभेदी दाता इक्को नज़री आईआ। अग्गे रहे कोई ना जोगी, जगत जोगीशरां डेरा ढाहीआ। इक्को भगतां दे सोझी, सुंञी दिसे लोकाईआ। तेरे नाम दी मिले इक्को रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम देणी पुचाईआ। तेरा खेल सदा सच दवारे चोजी, चोरां यारां ठग्गां झगड़ा देणा गवाईआ। बिरहों दा रहे कोई ना रोगी, रहमत आपणी नाल मिलाईआ। धर्म दवारे दा बण के धोबी, दुरमति मैल साफ़ कराईआ। जिन्हां दी कीमत नहीं कोई कौडी, हीरे लाल लैणे उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर देणी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी कूंज वाली पुकार, पुनाह पुनह सीस निवाईआ। जे प्रभ आयों सरगुण तों निरगुण हो के आपणी धार, निरवैर फेरा पाईआ। इक्क बणा सच्ची सरकार, शहिनशाह इक्को इक्क अख्वाईआ। इक्को कदम झुके संसार, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। इक्को नाम होवे जैकार, सतिकार इक्को इक्क अख्वाईआ। तेरे दर खड़े गुरू अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। किरपा कर आप करतार, कुदरत कादर तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दो जहानां नज़री आए इक्क दरबार, दर बदर फिरन दी लोड़ रहे ना राईआ।

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सुखविंदर सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी अजे तक सारे गिणे नहीं किसे ने हरफ़, इक्ठा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। आदि दी रचना दे अंकड़यां विच हिसाब लाए नहीं किसे ने बरस, जुग चौकड़ी भेव ना कोए खुल्हाईआ। निरगुण धार सरगुण कर सक्या ना कोए परख, भेव अगम्म ना कोए खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी किसे दा मिटया नहीं हरख़, गुर अवतार पैगम्बर चिन्ता दीन मज़्हब दी दिती लगाईआ। किसे कोलों आदि अन्त दा पूरा नहीं होया ख़र्च, जो आया सो प्रभ दे कोलों मंग मंग झट लँघाईआ। किसे दा सचखण्ड विच प्रभ दे अन्तर नाम होया नहीं दरज, दरजा बदरजा सिलसिले वार सारे दिते टिकाईआ। हर्जानयां विच पूरा कर सक्या कोए ना हर्ज, साचे कंडे तोल तराज़ू तक्कड़ ना कोए तुलाईआ। सबर सबूरी सिदक विच किसे दी पूरी होई ना ग़रज़, हवस विच हवास सब दे दिते उडाईआ। जितने अक्खर जितने शब्द जितने नाम जितने कलमे इक्को प्रभ दे नाम नूं हुन्दी रही ज़रब, असल दा असल हथ्थ किसे ना आईआ। ममता विच पूरा होया किसे ना दरब, सांतक सति ना कोए वखाईआ। मुहम्मद ने रो

के किहा विच अरब, हौका हक हक सुणाईआ। परवरदिगार इक्क कदम दा वखाया इक्क करब, करब दा पिछला निशाना करबला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं जाण ना सके तेरे हरूफ़, शकल अकल विच कोए ना आईआ। तेरी सिफ्त विच होए रहे मसरूफ़, कलमयां विच ढोले गाईआ। ईसा किहा मख़रूब मुख़िलल विज़ाह वसीअ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे घर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की जाणीऐ तेरा लेखा, लिखण वाली कलम ना कोए वड्याईआ। जुग जुग तूं आपणा रखें भुलेखा, परदयां विच परदा इक्क छुपाईआ। सानूं इलम दा दे के ठेका, लाइलम हो के आपणा भेव छुपाईआ। मज़्हबां दा बणा के नेता, हुक्मे विच भवाईआ। छुडा के आपणा देसा, धरनी धरत धवल धौल वखाईआ। अग्गों बोल प्या दस दस्मेशा, गोबिन्द गोबिन्द बचन अलाईआ। सब दा याद कर के चेता, चेतावनी इक्क जणाईआ। तेरा इक्को शब्द इक्को गुरू इक्को बेटा, इक्को जन्म वाली माईआ। बाकी तेरे हुक्म दा शब्दी धार भेखा, जो तत्तां विच वड़ के तेरी करे वड्याईआ। इक्को दस्स टेका, टेक विच सिक्के धर्म दे दए बदलाईआ। एहो
१२६४ गुर अवतार पैगम्बरां विच रख्या तूं भुलेखा, जिस भुलेखे दा मूल समझ किसे ना आईआ। मूंड मुंडाए शरअ चलाए वाल १२६४
वधाए धारी केसा, किस्म सब दी आपणे अंदर छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव
२० देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी अक्खरां विच हरफ़ां विच कीती उल्फ़त, महिमा विच वड्याईआ। जां २०
तक्कीए तूं इक्को सब दा मुर्शद, मुरीदां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जुग चौकड़ी तैनूं मिले कोई ना फ़ुरसत, वेहला हो के आपणी कार कमाईआ। कोटां विच्चों कोई विरला तेरा गुरमुख, जिस नूं सिख्या दे के गुरसिख लएं बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की करीए तेरी गिणती, अगणत तेरी वड्याईआ। की नाप करीए मिणती, पैमाइश ना कोए कराईआ। की वेखीए दिशा सिम्मती, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। की बणीए हिम्मती, हौसला सच वधाईआ। गोबिन्द किहा नहीं करो अरज़ोई सीस जगदीस मिन्नती, निउँ निउँ लागो पाईआ। इस दी खेल इन बिन दी, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणा हुक्म आपणे विच रखाईआ।

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ बलवंत सिंघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण की करीए तेरी सिफ्त, सालाही सालाह ना कोए सालाहीआ। तेरे नाम विच हो के ग्रिफ़त, पाबन्दी मज़्हबां वाली नजरी आईआ। साडे कोल कोई हिस्सा नहीं निसफ़, अद्धो अद्ध ना वण्ड वण्डाईआ। सानूं तूं दिता पंज तत ख़ाकी जिस्म, सृष्ट विच वखाईआ। उस दे अंदर आपणी नूर जोत दा रख के इस्म, आपणा भेव छुपाईआ। बाहरों शरीर दी बणा के किस्म, नाँ गुरू अवतार पैगम्बर दिता धराईआ। जेहड़े जगत अक्खां दिसण, जगत नूं जगत भुलेखे विच रखाईआ। जिस्मां तों बणा के मिशन, मिशनरी आपणी ना किसे समझाईआ। ग्रन्थां विच लिखा के सृष्टी बणाई ब्रह्मा शंकर ते विष्न, आपणा पल्लू ल्या छुडाईआ। थोड़ी जेही थपकी दे के कृष्न, त्रैलोकी दी झलक जणाईआ। आपे मरन ते आपे जम्मण आपणा झगड़ा नजिठ्ठण, लड़दी वेखण लोकाईआ। धड़यां विच आ के पिट्टण, झगड़यां विच दुहाईआ। जे सारे गुर अवतार पैगम्बर आदि तों अन्त तक्क इक्को सिख्या सिक्खण, फेर सिख बणाउण दी लोड़ रहे ना राईआ। वक्खरे वक्खरे चरण प्रीती ओसे विकण, आपणी कीमत पाईआ। जे धर्म दे विच धर्म दवारे टिक्कण, जित्थे अल्ला वाहिगुरू ओम राम कृष्न नजर कोए ना आईआ। जे इके दी सिफ्त इके दी एक लिखण, एकँकार इक्क सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जे पढ़दे इक्को पट्टी, क्यों पटने वाला देंदा दुहाईआ। मज़्हबां दी चलदी कोई ना हट्टी, हरि दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सब दी सांझी हुन्दी खट्टी, वक्खरा घर ना कोए सुहाईआ। मुहम्मद कहे जे मैनूं तन्द ना बन्न्हदों विच्चों मौली दी अट्टी, चिट्टा लाल रंग बदलाईआ। फेर दाढ़ी कौण करदा रत्ती, राहत विच रहत कौण समझाईआ। जे तूं बण जांदों सब दा सांझा कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। इक्को देनों सांझी मत्ती, हुक्म इक्क मनाईआ। साडे अंदर ना रखदों आपणी मोमबत्ती, जो मोमन गई समझाईआ। फेर तेरी सिफ्तां वाली कहाणी रैहन्दी ठप्पी, एह गुर अवतार पैगम्बर तेरे वक्खरे वक्खरे ठप्पे नज़री आईआ। अग्गे साडे नाल कर ला पक्की, सुख़न सच सुणाईआ। साचा नाम इक्को दस्सीं, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। प्रेम प्यार अंदर वसीं, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। विछोड़ा दे कदे ना नस्सीं, करवट आपणी पिठ बदलाईआ। तेरे प्यारे तेरे दुलारे तेरे मुरीद धुर दे मुर्शद दर्शन पावण अक्खीं, अक्ख विच अक्ख लैणी मिलाईआ। काहनां दे काहन श्री भगवान जन भगत सुहेले बणाउणे आपणी सखी, सख़ावत विच सच प्रीती झोली पाईआ। धुर दे राम लख चुरासी सीता सुरती दा बणना पती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। तेरी तार निराकार संसार विच्चों जाए ना कटी, कटाकश आपणा देणा लगाईआ। तेरी सिख्या साख्यात

नज़र आए इक्को पट्टी, जिस दा हरफ़ ना कोए बदलाईआ। पिछली चार जुग दी आपणी कीती हद्द आपे टप्पीं, पन्ध पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा केहड़ा सरूप कारण, सूख़म दे समझाईआ। जड़ चेतन सारे विचारन, खोजत खोज खुजाईआ। किस बिध आयों पैज स्वारन परदा दे उठाईआ। तेरा रूप निराकारण, निरवैर तेरी सरनाईआ। तेरे नज़री आयण आसारन, असल आपणा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की असथूल तेरी असथित्ती, असत हस्त वस्त दे समझाईआ। की सूखम तेरी मिती, मित्र प्यारे परदा लाहीआ। की कारण पट्टी लिखी, परदा ओहला दे चुकाईआ। तिन्नां तों बाहर किहड़ी तेरी धार तिक्खी, एह दे समझाईआ। किहड़ी तेरी दो इक्क दी सिक्खी, साख्यात दे वखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो सस्से दा होड़ा हाहे दी टिप्पी, कारण करते दा नज़री आईआ। सूख़म इस दे विच विच्ची, फिरे चाँईं चाँईंआ। जड़ दी जड़ तत्तां दा तत मिट्टी दा मिट्टी, असथूल दा असूल इक्क समझाईआ। जिन्हां सिध्धी पुरख अकाल तों सिक्खणा सिक्खी, उह तिन्नां तों लेखा गए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बरां जो देंदा

रिहा चिट्ठी, जिस दी इबारत सदा अनडिट्ठी, पढ़न विच सुणन विच सुणाउण विच पुचाउण विच परचे दा खर्चा ना कोए रखाईआ।
१२६६ २०

★ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सुरैण सिंघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा पूरा कर दे पट्टा, लेखा अगला तेरी झोली पाईआ। तेरे नाम नूं लग्गे कोई ना वट्टा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। सब दा सांझा कर दे इक्को हट्टा, दर दवारा एकँकार इक्को सोभा पाईआ। किसे दी कीमत रहे ना कोई टका, टिकटिकी इक्को नाल लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा उडे घट्टा, अमृत मेघ अमर ना कोए बरसाईआ। सब दा चीथड़ पुराणा फटा, अल्फ़ी तन ना कोए हंढाहीआ। दीन दुनी विच धर्म दा हो गया बटा, अंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सृष्टी दृष्टी विच रिहा कोई ना सच्चा, सच संजम नेम समझ कोए ना पाईआ। अमृत धार मिले कोई ना रसा, रसना जगत विवाद विच हल्काईआ। माया ममता मोह विकार हँकार चढ़या नशा, हउमे हंगता करे लड़ाईआ। जो मार्ग गुर अवतार पैगम्बरां दस्सा, चार जुग सिख्या साख्यात समझाईआ। कलयुग जीव अन्त

कन्त भगवन्त उस दे कोलों नस्सा, दूर दुराडा भज्जया वाहो दाहीआ। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी मस्सा, निर्मल जोत बिन वरन गोत करे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वड ठाकर तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा पूरा होया ठेका, ठाकर तेरे अग्गे अरज़ोईआ। असीं सारे इक्ट्ठे हो गए कर के एका, एकँकार तेरी सरनाईआ। सब ने मथ्था बिन सीस जगदीस टेका, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। शब्दी शब्द अगम्म अथाह बेपरवाह तेरा बेटा, सुत अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक्को इक्क नज़री आईआ। सच सिँघासण साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी लख चुरासी वेख्या लेटा, दर दर घर घर मन्दिर अंदर फोल फुलाईआ। भविख्त लिख्त इष्ट गुरदेव स्वामी कर ला चेता, चेतन धार आपणा परदा लाहीआ। परवरदिगार सांझे यार परम पुरख सब दा नज़री आए इक्को नेता, नर नरायण तेरी वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप सब दा मेट भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान श्री भगवान तेरी इक्क सरनाईआ।
१२६७ गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू धुर दे जगदीस, जगत मालक ख़ालक प्रितपालक तेरी ओट तकाईआ। तेरा इक्को कलमा इक्को हदीस, नाम पैग़ाम राम इक्क सुणाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बातन सब दा परदा दे उठाईआ। सतिजुग साची सति धर्म दी चला आपणी रीत, रीतीवान हो के आपे वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म इक्को दस्स गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा चुक्क जाए मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को सोभा पाईआ। जित्थे अमृत धार निजर रस मिले ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच स्वामी साहिब सुल्तान इक्को नज़री आए मीत, मित्र प्यारा एकँकारा सोभा पाईआ। तेरे छत्र झुल्ले सीस, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी आसा मनसा होई पूरी, पूरन ब्रह्म सब नूं दे दृढ़ाईआ। तेरा जलवा जोत इक्को नज़र आवे धुर दा नूरी, नूर नुराना नूर कर रुशनाईआ। चार जुग दी साडी लेखे ला मज़दूरी, जो चाकर बरदे हो के सेव कमाईआ। तूं साहिब सुल्तान श्री भगवान सर्ब कला भरपूरी, बेअन्त तेरी सरनाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी अंदर होई मूर्ख मूढ़ी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी परदा ना कोए उठाईआ। कलयुग माया ममता मोह विकार हँकार जीव जंत साध सन्त मन दे बणाए हज़ूरी, हज़ूर मन नूं कहि के आपणा झट लँघाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी रिहा ना कोए दस्तूरी, बेदस्त होई लोकाईआ।

जिधर तक्कीए वासना दिसे कूड़ी, कूड़ कुटम्ब मिल के वज्जी वधाईआ। साचा टिक्का मस्तक लाए कोए ना धूढ़ी, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। सच प्रीती नाम रंगण चाढ़े कोई ना गूढ़ी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मेहरवान धुर दे मालक, दर तेरे आस रखाईआ। दीन दुनी कायनात वेख आपणी ख़लक ख़ालक, मख़लूक परदा आप उठाईआ। साचा दिसे ना कोए सालस, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान तेरा दर ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं सब ते पई आलस, माया ममता निंद्रा अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कोटां विच्चों जन भगत तेरे थोड़े ख़ालस, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। परवरदिगार सांझे यार हक मुकाम ला इक्क अदालत, अदल इन्साफ़ आपणा इक्क कमाईआ। मन मनूआं मेट सर्ब बग़ावत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी अरज़ोई, आरज़ू तेरे अग्गे रखाईआ। तन वजूद अंदर महबूब तेरी सुरती सोई, जागत जोत ना कोए रुशनाईआ। सच दुआर एकँकार मिले किसे ना ढोई, ढोलक छैणे सारे रहे खड़काईआ। पैगम्बर कहिण ओ तेरे नाम दी इक्क दरोही, यामबीन या महबूब निउँ
१२६८ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा दे उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर १२६८
२० कहिण बन्दगी डण्डावत सजदयां विच सलाम, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। सच संदेसा नर नरेशा एका दे पैग़ाम, पैगम्बरां २०
तों परे आपणी दस्स पढ़ाईआ। दीन मज़्ह्ब दा रहे ना कोए गुलाम, गुलामी सब दी शरअ ज़ंजीर दे कटाईआ। नज़री आ इक्क अमाम, अमलां तों रहत कर आपणी ख़लक ख़ुदाईआ। माया ममता करे ना कोए हराम, बेपहचान पहचान आपणी दे समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म चार कुण्ट दहि दिशा ढोला गाण, इक्को तेरा राग अल्हाईआ। काया मन्दिर साचा काअबा दस्स इक्क मुकाम, दीआ बाती कमलापाती इक्को कर रुशनाईआ। नाद शब्द धुन अगम्मी दे धुनकान, अमृत आत्म जाम प्याईआ। अन्त अख़ीर शाह हकीर हो मेहरवान, नज़रे कर्म आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पवण पाणी सब तेरी सेव कमाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं कर के आए सलाह, मशवरा इक्को वार बणाईआ। तूं दाता बेपरवाह, बेपरवाह तेरी वड वड्याईआ। सब दा सांझा बण इक्क मलाह, खेवट खेटा हो के जगत नईआ लै चलाईआ। चार जुग दे भविख्त हकीकी तेरे गवाह, लाशरीक तेरी तौफ़ीक नाल दईए भुगताईआ। सति धर्म दा मार्ग इक्क लगा, दूजी लग मातर रहिण कोए ना पाईआ। तूं कलमयां दा मालक वाहिद इक्क ख़ुदा, ख़ुदी सब दी मेट मिटाईआ। माया ममता रहे ना कोई वबा, तबीब तबा सब दी दे बदलाईआ।

पवित्र कर पंज तत अज़ा, दुरमति मैल धवाईआ। सदी चौधवीं सब दे सिर ते कूके कज़ा, कयामत आपणा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तूं साहिब नर नरेशा, वाली दो जहान अख्वाईआ। तैनूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, सुरप्त सीस जगदीस निवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे सदा हमेशा, हमसाजन सब दा नज़री आईआ। सद वसें सचखण्ड देसा, लख चुरासी काया मन्दिर अंदर आपणा नूर जोत करें रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा शब्दी धार बेटा, सुत दुलारा साचा सोभा पाईआ। अन्तिम सब दा पूरा कर दे ठेका, लहिणा देणा दे चुकाईआ। निउँ निउँ सजदयां विच तैनूं करन सर्ब आदेसा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती धार एकँकार निराकार निरवैर तेरा वेसा, भेख अवल्लड़ा सब नूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी आपणा मार्ग इक्क लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग कूड़ी क्रिया बुझा अग्ग, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी कर प्रकाश सृष्टी जग, जागरत जोत डगमगाईआ। बिन मक्के काअबिओ करा दे सब नूं हज्ज, हाजत अवर ना कोए जणाईआ। काया मन्दिर अंदर वखा दे तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जित्थे निउँ निउँ लागे पाईआ। नाम भण्डारा धर्म दवारा खोल्ह दे हट्ट, बणजारे गुरमुख गुर गुर सन्त लै बणाईआ। झगड़ा रहे ना अठ्ठ सठ्ठ, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। मेहर निगाह नाल दुरमति मैल सब दी कट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। तूं साहिब स्वामी सर्ब कला समरथ, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मानव मनुष मानुख तेरा गावण जस, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। निज नेत्र ज्ञान खोल्ह अक्ख, प्रतख दरस दे गुसाँईंआ। सरन सरनाई तेरी सारे जावण ढठ्ठ, ढठ्ठयां आपणी गोद उठाईआ। तूं वसणहारा घट घट, गृह गृह अंदर सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सच नाम दा दे रस, रस्ता वाबस्ता हो के आपणा इक्क चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा जैकारा इक्क अलख अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह दरगाह साची सच मुकाम हकीकत वाली वज्जे इक्क वधाईआ।

१२६६

२०

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ तेजा सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ मार्ग ला इक, एकँकार तेरी सरनाईआ। चार वरन अठारां बरन बणे धर्म दा सिख, ज़ात पात झगड़ा रहे ना राईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को तेरा इष्ट आवे दिस, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। आत्म

परमात्म कर साचा हित, निरवैर निराकार आपणी खेल आप खिलाईआ। हर घट अन्तर वस चित, सरगुण आपणा परदा लाहीआ। वस्त अमोलक काया गोलक पा भिक्ख, अगम्म अथाह बेपरवाह आप वरताईआ। जगत विकार शब्दी धार अंदर जित्त, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। अमृत नाम अगम्मा दे मिठ्ठ, रस इक्को इक्क चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा एका वर, दरगाह साची सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी सिख्या होवे सच, सच समग्री झोली पाईआ। भाग लग्गे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा उपजे सति, सति सन्तोख धीरज यति देणा समझाईआ। तेरे मिलण दी निज नेत्र खुल्ले अक्ख, अक्खरां तों परे कर पढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी परम पुरख समरथ, समरथ्या तेरे विच नज़री आईआ। हउँ सेवक बाल अंञाण जुग चौकड़ी तेरी महिमा आए दस्स, कहाणी अकथ कथ सुणाईआ। कलयुग अन्त सतिजुग सच दवारा खोल्ल हट्ट, वस्त इक्को इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा इक्को हो जाए नाम, कलमा इक्को नज़री आईआ। शब्द संदेसा धुर पैग़ाम, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं दे सुणाईआ। सदी चौधवीं सब दा बदल गया इंतज़ाम, नज़ाम कायम ना कोए कराईआ। साचे दर गुर अवतार पैगम्बर करे ना कोए कयाम, कयामत सब दे सिर ते आईआ। मन कल्पणा दीन दुनी भरमी विच हराम, बेईमान शैतान शरअ मन करे लड़ाईआ। साची मंज़ल करे ना कोए आसान, मेहरवान महबूब मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। हउँ सेवक बरदे तेरे गुलाम, चाकर ख़ाकी ख़ाक नज़री आईआ। सब दा इक्को सजदा इक्को सलाम, नमस्ते डण्डावत कहि के सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी आपणा करें काम, करनी दे करते बेपरवाह अगम्म अथाह धुर दा साचा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी घट प्रकाशी अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरी इक्क होवे गुफ़तार, गुफ़त शनीद कर शनवाईआ। हउँ बाले नढ्ढे तेरे बरखुरदार, बरख़लाफ़ी रहिण कोए ना पाईआ। साची सिख्या दे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे सीस निवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरा जलवा नूर होवे उज्यार, जोती जाते पुरख बिधाते इक्को वज्जे हक वधाईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान, दो जहान कूड़ी क्रिया जगत अलामत अदावत विच अदल दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दा सति धर्म तेरी अमानत, कलयुग अन्तिम तेरी झोली पाईआ।

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ सन्तोख सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ★

पुरख अकाल दा साचा नाम आदि, आदि आपणे विच्चों प्रगटाईआ। निरगुण निरगुण बणाए समाज, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी करे राइज, रईयत लख चुरासी वण्ड वण्डाईआ। सति सच दा साजण साज, सति सतिवादी वेख वखाईआ। परमात्म आत्म मार आवाज़, हुक्म संदेसा इक्क सुणाईआ। निरवैर निराकार रच के काज, करनी करता खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाम इक्क समझाईआ। साचा नाम इक्को आदि अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। जिस दी धार श्री भगवन्त, भगवन आपणी कार कमाईआ। जो चल्ले जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। लख चुरासी आत्म दा बणे कन्त, मालक इक्क अख्वाईआ। जिस दीआं सिफ्तां करदे गए गुर अवतार पैगम्बर सन्त, सालाही सालाह सालाहीआ। तिस दा लेखा सदा अनन्त, गिणती गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क उपजाईआ। साचा नाम आदी मेरा संग, अन्त मेरे विच समाईआ। दो जहानां चाढ़े रंग, रूप सके ना कोए बदलाईआ। निरगुण सरगुण पावे ठंड, सांतक सति वरताईआ। आत्म

१२७१ परमात्म जोड़े गंढ, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। निरगुण निरगुण सांझा कर के छन्द, सोहँ ढोला वड वड्याईआ। दो १२७१

२० जहानां वक्खरा देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो अगला खेल सूरा सरबंग, हरि करता २०

आप कराईआ। सब दा पिछला पूरा कर के पन्ध, पाँधी आपणे चरण बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम कर आप पाबन्द, पाबन्दी आपणी विच रखाईआ।

★ २४ माघ शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ★

पुरख अकाल कहे मेरा आदि जुगादी एका नाम, नाम निधान मेरी वड्याईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव गाण, बिन ज़बान राग अलाईआ। चलदा रहे विच दो जहान, जुग चौकड़ी ना कोए बदलाईआ। सुणया जावे ना किसे कान, सरवण समझ कोए ना आईआ। झुलाउँदा रहे अगम्म निशान, निशाना इक्क प्रगटाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो जिस वेले सब दा बदले विधान, पूरब लेखा सर्ब मुकाईआ। ओस वेले लोकमात प्रगट करां हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। साची वस्त पा के दान, भगत सुहेले मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सद आपणे रंग समाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा नाम अगम्मा अदली, आदल इक्क अख्वाईआ। जिस दी करे कोए ना बदली, तरमीम कर ना कोए वखाईआ। उह पन्ध मारे ना मज़लो मज़ली, मंजल मंजल ना कोए वखाईआ। उस दा राग समझे ना कोए ग़ज़ली, रसना सिफ्त ना कोए सालाहीआ। उस दी चाल निराली रंगली, रंगत बेपरवाहीआ। ओहदी मजलस अगम्म मंगली, मंगलाचार इक्को घर कराईआ। चार जुग किसे हथ्थ ना आया विच्चों जंगलीं, बन खण्ड ढूंड ढूंड (थक्की) जगत लोकाईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बरां हथ्थ फड़ाई आपणी सिफ्त नाम दी बग़ली, चार कुण्ट अलख जगाईआ। उस दी खेल समझे कोए ना अगली, परदा सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा आदि जुगादी नाम इक्को नवां, नवीन नजरी आईआ। बिन रसना जेहवा सदा ओहनूं गवां, बिन आवाज़ करे शनवाईआ। बिना बन्द करावां दमां, साह साह ना कोए वड्याईआ। जिस नूं हरख सोग़ नहीं कोई तमा, लालच विच ख़ालस कदे ना आईआ। जिस दे हुक्म नाल जुग चौकड़ी बदलदा समां, समाप्त पिछला लेख कराईआ। धुर फ़रमाना हुन्दा रवां, धरन धरत धवल मिले वड्याईआ। जिस दी कर ना सके कोई तफ़रीक
१२७२ जमअ, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। समझ सके कोई ना शमां, नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। भेव पाए कोई ना चौड़ा १२७२
लंमां, लम्हा विच ध्यान ना कोए लगाईआ। जुग जुग होवे ना कदे नकम्मा, बदली विच ना कोए बदलाईआ। रूप धारे
२० कदे ना पंमा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। आपणा हुनर करतब दस्से किसे ना फ़ना, परदा सके ना कोए उठाईआ। हद्द २०
हदूद ना जणाए बन्ना, बनावट नज़र कोए ना आईआ। लेखा जणाए ना उत्ते किसे सफ़ा पन्ना, काग़ज़ कलम शाही जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क समझाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा नाम सदा निधाना, गहर गम्भीर नज़री आईआ। जिस दी सिफ्तां दा सारे गाउंदे तराना, तुरीआ तक राग अलाईआ। अग्गे हो जाए उह बेगाना, वेक्खयां नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर ओसे दी महिमा दा गाउंदे गाणा, गा गा शुकर मनाईआ। जिस दी धारों सारे हुन्दे रवाना, बण के पाँधी राहीआ। ओस दा वेख्या ना किसे मैदाना, दर मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा नाम सदा अनदृष्ट, दृष्टी विच कदे ना आईआ। हथ्थ आया ना किसे विच सृष्ट, सृष्टी रूप ना कोए वखाईआ। मेरा मेरी धार दा आपणा इष्ट, इष्ट इष्ट आप अख्वाईआ। जित्थे ना कोई संगी साथी ना कोई नर नारी गृहस्त, गहर गम्भीर खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे साचे

नाम नूं जाणे कौण, कवण करे वड्याईआ। जिस दे हुक्मे अंदर सारे गाउण, ढोले राग नाद कलमे कर शनवाईआ। जिस नूं सजदयां अंदर सीस सारे झुकाउण, निउँ निउँ झोलीआं डाहीआ। हुक्मे अंदर भज्जे पाणी पवण पाउण, बसन्तर सेव कमाईआ। जो सब नूं हुक्म आवे सुणाउण, सच संदेसा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे नाम दा पर्चा कलयुग अन्तिम आया छपाउण, जिस दी छाप मोहर आपणा आप लगाईआ।

★ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

वेखो खेल ब्राह्मण गौड़े, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द वड वड्याईआ। जिस दे हुक्मे अंदर किसे कुछ ना औड़े, बुद्धी वाली चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग सन्त बणा कीड़े मकौड़े, मकड़ी वांग दिते उडाईआ। लत्तां बाहवां मार के फिरन दौड़े, भज्जण वाहो दाहीआ। मंज़ल चढ़े कोई ना पौड़े, पुठ्ठे डिग्ग डिग्ग आपणा आप भन्नाईआ। कारज कम्म कोए ना
१२७३ सौरे, सौहरे पईए होई जुदाईआ। मन कल्पणा कहे करे खेल कवण खौरे, ख़बरे ख़बर ना कोए समझाईआ। किसे कम्म १२७३
ना आवण कीते दौरे, दर दर होए हल्काईआ। बिन हरि किरपा कारज कोए ना सौरे, सिध्ध परसिध्ध ना कोए वखाईआ।
२० बिन सुरती होए डौरे, डंक हक ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क २०
वखाईआ। ब्राह्मण गौड़ा देवे हक सबूत, हरि वड्डा वड वड्याईआ। वेखे सब दे काया कलबूत, तत्व तत खोज खुजाईआ। जगत साध होए अवधूत, औध आपणी रहे मुकाईआ। कोई साफ़ करे ना आपणा गली कूचा ते दिवस रैण करदे कूच, बण बण पाँधी चल्लण राहीआ। साचा मार्ग परसिध्ध ना होए सूत, सूत्रधारी देण दुहाईआ। जगत वासना कूड़ कल्पणा भूत, पंज भूतक समझ कोए ना पाईआ। बिन हरि किरपा सारे दिसण ऊत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण राह ना कोए वखाईआ। सब दी लिव अंदरों गई छूट, अमृत रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा बदल देवे रूट, रस्ता आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्राह्मण गौड़ वेखे ब्रह्म दी धार, पारब्रह्म दया कमाईआ। लेखा जाणे जीव जगत संसार, लख चुरासी फोल फुलाईआ। चारों कुण्ट वेखे विगसे वेखणहार, हर हिरदा फोल फुलाईआ। साध सन्त करन विभचार, कर्म कुकर्म विच लोकाईआ। धर्म दा बोले ना कोए जैकार, नाअरा हक ना कोए सुणाईआ। हकीकत दा बणे ना कोए ख़िदमतगार, ख़ादम रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा

सब दे उपर पाईआ। ब्राह्मण गौड़ खेले खेल अपारी, अपरम्पर वड वड्याईआ। किसे दी रहिण ना देवे सरदारी, सीस ताज ना कोए रखाईआ। जुग जगत करे खुआरी, कंडा खार वाला चुभाईआ। जिस दी शब्द इक्क उडारी, दो जहानां चरणां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची वेख वखाईआ। ब्राह्मण गौड़ कहे मेरा कोई ना समझे मूले, असल वसल करन कोए ना आईआ। माया ममता सारे भूले, अभुल्ल मिल ना दर्शन पाईआ। साची चरण मिले ना धूले, मस्तक ख़ाक ना कोए रमाईआ। प्रेम प्यार मिले ना झूले, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। सृष्ट सबाई भरमे भूले, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले दूले, जो दुरमति मैल रहे धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ब्राह्मण गौड़ कहे मैं वेखणी सब दी पिण्डी, ठाकर पाहन फोल फुलाईआ। काया मन्दिर अंदर किसे दी वज्जण नहीं देणी बिंडी, सरंगी राग ताल ना कोए सुणाईआ। जिस नूं समझे ना कोए आलम उल्मा बेरूनी अंदरूनी हिन्दी, हिन्दसा सके ना कोए समझाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी सारे गए निन्दी, सिफ्त सिफ्त ना कोए वड्याईआ। सृष्ट सबाई ओसे दी नुकते वाली निक्की जेही बिन्दी, जिस बिन्दी विच्चों बिन्दराबन रहिण वाले काहन दिते उपजाईआ। जिस दी डण्डी सदा विंगी, रस्ता साफ़ ना कोए कराईआ। जिस दा राह तकदे ऋषी भिंगू सरिंगी, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। ब्राह्मण गौड़ कहे कोई ना समझे हस्त कीट, प्रभ दा भेव कोए ना आईआ। वरन बरन रहे पीट, सरन मिले ना कोए सरनाईआ। मानस जन्म लए कोई ना जीत, कल्पणा तन ना कोए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाए कोई ना चीत, चेतन सुरती ना कोए बणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेहरवान महबूब कलयुग विच सतिजुग बदले रीत, रीतीवान होए सहाईआ। झगड़ा मिटा के मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्क समझाईआ। जित्थे मिले हक असलीअत, असल वसल इक्क वखाईआ। ख़राब होवे ना कदे तबीअत, तबा सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दी सच प्रगटाए असलीअत, असल दा असल दए वखाईआ।

१२७४ २०

★ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

जन भगतो तुहाडा फल प्रभू दा गुण, फलगुण गुणवन्त आप दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों लए चुण, निरगुण निरवैर

खोज खुजाईआ। साचे नाम दी दे के धुन, आत्म अन्तर भेव खुल्हाईआ। चार जुग तों उत्तम बणा के मुन, ममता मोह रिहा मिटाईआ। मेल मिला के मालक कुल, कुलवन्ता होए सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दीवा कर के गुल, चिराग़ चश्म ना कोए चमकाईआ। करे खेल आप अभुल्ल, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। हरिजन साचे कंडे गए तुल, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जन भगतो अगला जाप रहिण नहीं देणा बुल्ल, हर हिरदे विच समाईआ। सच दवारा जावे खुल्ह, परदा अन्तर आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फलगुण कहे मैं वेखां गुणवन्ता, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दी महिमा सदा बेअन्ता, बेअन्त रिहा अख्वाईआ। जिस नूं झुकदे गुर अवतार पैगम्बर सन्ता, भगत भगवान राह तकाईआ। उह जुग जुग बणावे आपणी बणता, भेव अभेद ना किसे समझाईआ। लख चुरासी बण के धुर दा कन्ता, कन्त कन्तूहल वेख वखाईआ। कलयुग मौली वेखे रुत्त बसन्ता, कूड़ विकार जगत महकाईआ। खोज खोजाए ब्राह्मण पंडता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। फलगुण कहे मैं वेखां भगत निराले, निराकार दए वखाईआ। जिन्हां मिल्या दीन दयाले, दयानिध होए सहाईआ। वस्सण

१२७५ सच सच्ची धर्मसाले, दवारा इक्को सोभा पाईआ। नेड़ ना आवे काल महाकाले, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जीवण जगत १२७५

तुट्टे ज़ंजाले, जागरत जोत डगमगाईआ। साहिब स्वामी वसे नाले, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। हरिजन बाहर कोई

२० ना भाले, खोजण बन कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क चढ़ाईआ। २०

फलगुण कहे मैं वेखां फुल्ल फुलवाड़ी, हरि करता आप वखाईआ। जुग चौकड़ी आवे मेरी वारी, वारता सब दी दयां दुहराईआ। मेरी खेल अगम्म अपारी, अपरम्पर भेव कोए ना पाईआ। भज्जे फिरदे विष्न ब्रह्मा शिव सिक्दारी, कदम कदम नाल उठाईआ। नेत्र तक्कण गुरू अवतारी, पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। की खेल करे निरँकारी, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं सारे कहिंदे गए जुआरी, दाउ अग्गे ना कोए लगाईआ। कलयुग अन्त ओसे दी आई वारी, जिस दी वारता रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। फलगुण कहे मैं वेखां इक्को वारस, वरासत जिस दी नज़री आईआ। जिस दी लिखी अक्खरां वाली इबारत, सिफ्तां विच सालाहीआ। उह प्रगट होया भारत, भाव भेव दए जणाईआ। जिस दी सब ने करनी ज़िआरत, अज़ीज़ हो के सेव कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे गए सफ़ारश, सिफ्तां विच वड्याईआ। उह करन आया इक्क अदालत, अदली दाता धुरदरगाहीआ। कलयुग मेटे कूड़ जहालत, माया ममता मोह मिटाईआ। जन भगतां रखे सही सलामत, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। आपणा खेल करे अचानक, चंचल बुद्धी

समझ कोए ना पाईआ। जिस दा हुक्म होवे भयानक, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। फलगुण कहे मैं संदेसा देवां मुफ्त, जगत मुफ्तीआं आप जणाईआ। प्रभ दा हुक्म समझे ना कोए दरुस्त, दरुस्ती करनी विच लोकाईआ। सारे ख़बरदार होवो चुस्त, परदा ओहला दयो उठाईआ। कुछ झगड़ा पैणा धरती खुशक, खुशहाली सब दी दए मिटाईआ। काल दी पिठ ठकोरे पुश्त, सैनत नाल समझाईआ। नगारा वजावे अर्श कुर्श, जगत कुराह वेख वखाईआ। मेला रहे ना कौड़ी गुरस, दरजन अर्जन गया समझाईआ। मुनारा रहे कोई ना उरस, अर्श फर्श पए दुहाईआ। साबत रहे कोई ना पुरुष, जगत दे महापुरुषां दी कर सफ़ाईआ। मन कलमणा विच जेहड़े रहे भुड़क, बन्दीख़ाने विच टिकाईआ। जो हौली हौली रहे सुरक, सुरती थोड़्ही थोड़्ही हिलाईआ। ओनां माया ममता पा दे खुरक, ख़ारश सके ना कोए मिटाईआ। मुहम्मद कहे प्रभू एह वर दे दे पहलों तुरक, मेरी इक्क अरज़ोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। फलगुण कहे मैं वेखां पत्त डाली, टहणी खोज खुजाईआ। वक्त दुहंजणा दोभर तक्कां हाली, हालत कूड़ लोकाईआ। जिस गगन विच दीपक मण्डल दस्सया थाली, रवि
१२७६ ससि डगमगाईआ। उस तों वक्खरी खेल निराली, निराकार आप कराईआ। प्रगट हो के जोत अकाली, अकल कल वरताईआ। १२७६
२० जिस ने लख चुरासी अंदर निरगुण जोत बाली, बालम हो के फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम करन आया दलाली, दिलबर आपणा वेस वटाईआ। अग्गे किसे दी रहे ना कोई कवाली, कविता जगत ना कोए चतुराईआ। सूरबीर योद्धा रण भूमी बन्ने ना कोए रुमाली, छाती ठोक ना कोए वखाईआ। जगत साधू बिना साधना सब इक्क दूजे नूं कढ्ढण गाली, गलवकड़ी पा मिलण कोए ना आईआ। पंजां विकारां दी सब दी गर्दन रख देणी पंजाली, पंजां दा पंजा उत्ते लाईआ। जट्ट किरसाण पुराणा हाली, साची सिख्या दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। फलगुण कहे मैं वेखां खेल अनडिठ्ठा, अनडिठ्ठड़ी कार कमाईआ। जिस दा निकलण वाला सिट्टा, सिट्टेबाज़ी जगत लोकाईआ। कलयुग अन्तिम रस फिका, कूड़ी क्रिया जाग लगाईआ। बिना भगतां तों किसे दा कर्म होणा नहीं चिट्टा, जन्म जन्म ना कोए बदलाईआ। पूरी होवे कोई ना इच्छा, वस्तू सति ना कोए वरताईआ। धुरदरगाहों मिले कोई ना भिच्छा, ख़ाली भाण्डे ना कोए भराईआ। जेहड़ा लेख प्रभू ने लिखा, अन्तिम ओहो दए भुगताईआ। गुरमुख बणा के साचा सिक्खा, सिख्या इक्को इक्क सुणाईआ। लहिणा मुक्क जाए मुन रिखा, ऋषी मुनी ना कोए दरसाईआ। एह पिछली कहाणी ते पिछला किस्सा, अग्गे सब दी करे सफ़ाईआ। प्रभ दा दाउ पहलों उठाए ते फेर थल्लयों खिच्च दए गिट्टा, मूँह दे भार सुटाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल वखाईआ। फलगुण कहे मैं कुछ तकदा खेल अनोखा, वक्खरा दयां जणाईआ। प्रभ ने इक्क अखीरी करना धोखा, परदा परदयां विच पाईआ। जन भगतां देणा मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। फलगुण कहे नौ दिन दी खेल वक्खरी, मैनूं नज़री आईआ। जिस नूं समझे कोई ना पत्री, वाचण विच कदे ना आईआ। हत्थ ना आए पतणीं, भज्जण वाहो दाहीआ। चुप चुपीते जगत जिज्ञासूआं धार करनी सक्खणी, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। फलगुण कहे मैं दस्सां की बात, बातन हाल सुणाईआ। अबिनाशी करते खेल शुरु करना पंज चेत दी रात, रातो रात आपणी धार चलाईआ। पंज सत्त दी होवे नाल जमात, दूजे समझ ना कोए समझाईआ। मज़ल करे अमृत वेले प्रभात, आपणा पन्ध मुकाईआ। बेख़बरां खोल्हे जाग, सुत्तयां आप उठाईआ। लहिणा चुका कलम दवात, पूरब गंढु पवाईआ। एह खेल होवे इत्तफाक, इत्तफाकीआं कार कमाईआ। किसे नूं पता नहीं किस दे घर कटया करे रात, सवेरे उठ किधर नूं जाईआ। जेहड़ा नाल रखे साथ, परदा ओन्हां कोलों छुपाईआ। जोती जोत
१२७७ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। पंज चेत दी रात कहिंदी, कहि कहि खुशी मनाईआ। गुरमुख १२७७
सिँघ हत्थां नूं लाउणी मैहन्दी, तली विच पोटे पंज पंज छुहाईआ। काके सुरजीत ने नाल रखणी इक्क वैहन्गी, सोहणी
२० बणत बणाईआ। पहलों चलणा दिशा लहिंदी, आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, २०
आपणा रंग वखाईआ। पंज चेत कहे मैं की रखां उडीकां, कवण ध्यान लगाईआ। किस वेले करां प्रीतां, प्रीतम लवां मनाईआ। पुरख अकाल किहा आपणीआं पिछलीआं वेख तवारीखां, पत्रे वरकयां विच्चों उलटाईआ। जिस दीआं गुर अवतार पैगम्बर करन तस्दीकां, शहादत इक्क भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। पंज चेत कहे सवा पंज सेर नाल रखयो घृत, धर्म दी गंढु बन्हाईआ। जिस नाल मर्यादा चलाए पिरत, अगला राह वखाईआ। सब दी मेटे हिरस, हवस दए गवाईआ। जन भगतां दी जो सांभ के रखी किरस, पिछली झोली पाईआ। उलटा रहे कोई ना बिरख, जन्म यूनी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग चढ़ाईआ। पंज चेत कहे मैनूं थित दिसदी इक्की, दूए एके विच वड्याईआ। तिन्न सत्त दी साची सिक्खी, सत्त सत्त नाल वड्याईआ। रोज़ गोबिन्द दी लिखाया करनी पिछली चिठ्ठी, बिना गुरमुखां तों दूजा सुणन कोए ना पाईआ। धरनी धरत धवल रही पिट्टी, नेत्र रो दए दुहाईआ। मेरी ख़ाक उडदी मिट्टी, माटी भाण्डे ना कोए पोच पोचाईआ। किहो जेही तकदीर लिखी, मेरा

लेख दे बदलाईआ। मैं चाहुन्दी मैं वेखां तेरी नवें साल दी मिती, मित्र प्यारे ध्यान लगाईआ। मैं निवा के आपणी गिच्ची, तैनूं सीस दिता झुकाईआ। जेहड़ी गोबिन्द कटार खिच्ची, हथ्थ मुख उत्ते टिकाईआ। हुण किहड़े दवारे टिकी, मैनूं दे वखाईआ। पुरख अकाल किहा धरनी इक्क वेरां मुख चों कहि दे मेरे उत्ते कोई रिहा नहीं मुनी ऋषी, सन्त सुरत ना कोए खुल्हाईआ। बिन तेरे प्रभू होई जिच्ची, याचक नज़र कोए ना आईआ। निरमाणता विच हो निक्की, सीस जगदीस झुकाईआ। फेर तेरी तकदीर जाए लिखी, किस्मत दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। पंज चेत कहे खेल खेले चुप चुपीता, चौपट बाज़ी जगत लोकाईआ। चौथे जुग दी चौथे सम्मत विच रीता, अगली दए बदलाईआ। एह खेल प्रभू जगदीसा, जगत दा मालक आप कराईआ। गुरमुख ने नौ टके रखणे विच ख़ीसा, दसवां प्रभ दी झोली पाईआ। साचे हुक्म दा साफ़ करना शीशा, धब्बा अब्बा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। आपणा खेल खेले करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसार, संसारी भण्डारी भेव कोए ना आईआ। जिस दा राह तक्कण जुग चार, चारे वेद ध्यान लगाईआ। जिस नूं खोजदे गुर अवतार, पैगम्बर अक्ख उठाईआ। उह खेल करे निरँकार, निराकार आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आप उठाईआ। चेत कहे मेरे विच खेल होणा चुप चुपीते, समझ कोए ना पाईआ। एह वायदे गोबिन्द पिछले कीते, लेखा प्रभ दे नाल बणाईआ। जिस वेले भथ्था लाहया सी उत्तों पीठे, धरती उत्ते दबाईआ। जिस वेले वड़न लग्गा सी विच अंगीठे, चुप कर के आपणा डेरा लाईआ। इक्क गाया साचा गीते, ढोला धुरदरगाहीआ। ओसे वेले श्री भगवान आ के खड़्या पीछे, पिच्छे हथ्थ दिता लगाईआ। गोबिन्द सिर तों लाह दे कल्गी ते साफ़ दिसे सीसे, सोहणा नज़री आईआ। अग्गे तेरा लेखा नाल जगदीसे, जगत दा मालक जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द तूं अग्गे ते मैं तेरे पीछे, पिच्छा छड्ड कदे ना जाईआ। गोबिन्द किहा पहलों लँघ मेरी दहिलीज़े, अंदर वड़ के दे वखाईआ। पुरख अकाल किहा एह तेरी सच्ची रीझे, मैनूं सोहणी भाईआ। जिस वेले तेरी काया दा कपड़ पहनां कमीज़े, आपणी खेल वखाईआ। तेरे गुरसिख मिलावां नाल बीबे, बाहों फड़ उठाईआ। फेर तेरे नाल तेरा हो पतीजे, पिता पुरख अकाल दए वड्याईआ। ओस वेले गोबिन्द ने बाहरों मीट लए दीदे, अंदर इक्को विच समाईआ। जां तक्कया उह सब दे अंदर आपणा नाम बीज बीजे, किरसाणा इक्को नज़री आईआ। फेर वेख्या लख चुरासी विच्चों भगतां दी फुलवाड़ी विच प्रभू दे बग़ीचे, गुर अवतार पैगम्बर माली नज़र कोए ना आईआ। ओसे वेले आपणे मथ्थे उत्ते लाई इक्क लीके, लाईन दित्ती बणाईआ।

१२७६
२०

प्रभू सच दस्स साडे विच्चों कौण इक्क दूजे नूं उडीके, कवण राह तकाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द बिना तेरे मेरे बाकी सब दे पैणे शरीके, शरक्त सके ना कोए मिटाईआ। ओस वेले प्रभ ने जोत शब्द दी धार विच उह अक्खर उलीके, जिस नूं लिखे कोए ना कलम शाहीआ। गोबिन्द किहा पभू उह केहड़ा होवे तरीके, तरीका दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव चुकाईआ। चेत के मैं बड़ा आतर, आदि दा राह तकाईआ। मेरी रुत्त बड़ी चातर, चार्तक सारे वेख वखाईआ। मेरी सारे करदे ख़ातर, खुशीआं विच सेव कमाईआ। मैं इक्क संदेसा देवां पात्र, शब्दी शब्द सुणाईआ। जिस वेले आवे पंज चेत दी रातर, रुतड़ी इक्क महकाईआ। सवा फ़ुट दा प्रभ ने पाउणा गात्र, तन नंगे बदन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। चेत कहे मैं आपणे कोल रखणा कुछ इनाम, सोहणी गंढु बंधाईआ। नौ छुहारे नौ बादाम, नौ दाणे किशमिश जोड़ जुड़ाईआ। जेहड़ा मुहम्मद नूं पहला दिता हक पैग़ाम, उस दा लेखा देणा समझाईआ। जिस विच बदल जाणा नज़ाम, उह वी परदा लाहीआ। जेहड़ी मुहम्मद दे चार तरफ़ घुंमदी रही कलाम, अंदर वड़न दा हुक्म ना कोए सुणाईआ। कहिंदी रही तेरा आवे अमाम, जल्वागर नूर खुदाईआ। ओस नूं मुहम्मद पुट्ठयां हथ्थां दा करदा रिहा सलाम, सिर पिच्छे नूं निवाईआ। क्यों अग्गे नूं झुकयां दिसदा नहीं सी उत्ते असमान, असमान उत्ते रहमान आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दे बरदे ग़ुलाम, सेवक चाकर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। पंज चेत कहे पंज तों इक्की दी होवे थित, दोहां जोड़ जुड़ाईआ। खेल होणा इन्हां दे विच, परदयां विच रखाईआ। धार अगम्मी जाए लिख, लिख्त विच वड्याईआ। पंज सत्त दी रहे विथ, वध्ध घट्ट ना कोए बणाईआ। नाल नीला कपड़ा रखणा चारों तरफ़ सवा गिठ्ठ, इंचां नाप ना कोए नपाईआ। ओस नूं प्रभ ने बन्हणा उत्ते पिठ, पिण्डे नंगे सोभा पाईआ। उत्ते लाउणी गोबिन्द वाली चिट, तूं ही पिता तूं ही माईआ। इक्क नाल रखणी इट्ट, जो भगत दवारे दी सेव कमाईआ। इक्क कोल रखणी सटिक, पिछला लेखा लेख बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार भुगताईआ। चेत कहे मैं चात्रक प्यासा, तृखावन्त ध्यान लगाईआ। रख के इक्क भरवासा, बैठा राह तकाईआ। कवण वेला आए पुरख अबिनाशा, आपणा फेरा पाईआ। अगला खोल्हे खुलासा, परदा दए चुकाईआ। भगतां होवे दासा, साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। चेत कहे इक्क नाल रखणी चौकी, इंच सतारां सतारां वण्ड वण्डाईआ। जेहड़ी ख़बर किते नहीं पहुंची, उह हुक्मे देणी जणाईआ। सृष्टी बहुती दिसे औंती, साचा खौंत ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। चेत कहे मैं की दस्सां बोल, अनबोलत रिहा जणाईआ। जन भगतो सारे आपणे दवारे रखयो खोल्ह, हिरदे अंदर ध्यान लगाईआ। पता नहीं आ जाए किहदे कोल, सुत्तयां आण जगाईआ। केहड़ा दस्स के जावे बोल, आपणा हुक्म अलाहीआ। एहनूं कोई ना समझयो रोल, धोखा जगत ना कोए वखाईआ। एह हुक्म गोबिन्द दा सांभ के रख्या कोल, अक्खरां विच ना वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। चेत कहे नाल रखणा इक्क पैमाना, पैमाइश करे लोकाईआ। जिस वेले होणा भगत दवारयों रवाना, पुट्ठे पैरीं चल के पिछला पन्ध मुकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दा नाल रखणा काना, कायनात दए उठाईआ। काली अल्फ़ी विच निकले दीवाना, मस्त अलमस्त रूप वटाईआ। शब्दी सब नूं देवे परवाना, परे तों परे आप जणाईआ। कुछ लेखा लिखे चुहाना, चौंह अक्खरां विच समझाईआ। जो मित्र सोई होवे बेगाना, साचा संग ना कोए बणाईआ। सृष्टी दी दृष्टी प्रभू करे कमाना, हुक्मे अंदर जगत गृहस्ती रिहा भवाईआ। जिस दा झुलणा इक्क निशाना, निशाने निछावर दयो कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दा युद्ध करे महाना, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। चेत कहे गुरमुख इक्को वार लैणी नाल शाही, दूजी दवात ना कोए उठाईआ। इक्को हुक्म नाल होणी तबाही, तोबा तोबा करे लोकाईआ। चोरी चोरी फिरे बण के राही, रहिबर धुरदरगाहीआ। सब दी शहादत दए भुगताई, हुक्मे अंदर आप बुलाईआ। जिस दी दरोही ओसे दी दुहाई, वेखणहारा उह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सवेरे अठ्ठ वजे इस तों अगला लेखा दए लिखाई, इक्क तों दो नज़री आईआ।

फलगुण कहे तिन्न दिन मेरी पा दे झोली, झोली तेरे अग्गे डाहीआ। जो तेरे प्रेम दी गोली, गोलक उस दी दे भराईआ। जिस वेले इस सम्मत दी पहली आवे होली, हौली जेही आपणा कदम उठाईआ। कुछ लेखा चुकाउणा धौली, धवल राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। फलगुण कहे तिन्न दिन वेखीं आपणे यार, मित्र प्यारे खोज खुजाईआ। सब दा पिछला दिसे विहार, पूरब वण्ड वण्डाईआ। मेरा नहीं कुछ अख्त्यार, तेरे हुक्मे मंग मंगाईआ। फड़ बांहों देणे तार, आपणी गोद टिकाईआ। पंदरां इक्की दे विचकार, एह लेखा देणा भुगताईआ। तेरी लिख्त दा लिखार, लेखक इक्क उपजाईआ। सिर ते बन्न्ह के आवीं दस्तार, नवां जन्म दवाईआ। क्यों, नौ चेत नूं उस

दा वक्त पहुंचया आण, अग्गे लेखा रिहा ना राईआ। जिन्नां चिर किरपा करे ना आप भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। ओनां चिर जीवण दा मिले ना किसे दान, अगला पन्ध ना कोए मुकाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी सदा सदा मेहरवान, मेहरवान तेरी वड्याईआ। फलगुण कहे मेरी झोली पा दे दान, दाते तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी सरनाईआ।

★ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

गोबिन्द किहा सुण प्रभू मेरया वड्डुया सेठा, गुमराह तेरी वड्याईआ। दो फग्गण नूं उपरों आ हेठां, आपणी दया कमाईआ। कुछ कौल इकरार कर चेता, पिछली याद कराईआ। जे तेरा इक्क मैं बेटा, सपूत ल्या बणाईआ। तूं मैनूं बणाया खेवट खेटा, सेवा सच सच समझाईआ। धर्म दी धार बणा के नेता, निज दा हुक्म दिता सुणाईआ। मेरे हथ्थ फड़ाया गुरमुखां दा लेखा, सज्जण साचे जोड़ जुड़ाईआ। मैं पैण नहीं देणा कोई भुलेखा, भरम अंदरों चर्म देणा कढाहीआ। मेरा वसण वाला गुरमुखां दे अंदर होणा देसा, दूजा धाम ना कोए रखाईआ। शब्दी धार अगम्मा वेसा, तत समझ कोए ना पाईआ।
१२८१ मैं तेरा आदी सुत इक्क पलेठा, जिस नूं मुड़ के जन्मे कोए ना माईआ। मेरी सदा अल्लड़ जवानी नव नरेशा, बिरध बाल १२८१
२० रूप ना कोए वखाईआ। दो जहान तेरी मेहर अंदर देखा, परदा अवर रिहा ना राईआ। तैनूं नहीं पता क्यों बच्चे चढ़ाए २०
भेंटा, आपणा आप मिटाईआ। तेरा खेल वेखदा रिहा अगेता पछेता, जुग चौकड़ी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ पहली फग्गण तेरी रात, तेरे हिस्से आईआ। अज्ज दो वाली प्रभात, मैं एसे कर के पहलों मंग मंगाईआ। जिस विच लेखा पिछला कराउणा याद, याददाशत अगली लैणी बणाईआ। मेरा कोई तत्तां वाला नहीं समाज, समग्री जगत ना कोए वखाईआ। मैं तैनूं रिहा अराध, तेरी ओट तकाईआ। तेरा हुक्म बोध अगाध, समझ किसे ना आईआ। ना तूं सुत्ता ना मैं सुत्ता दोहां दी खुल्ही रही जाग, नेत्र अक्ख बन्द ना कोए कराईआ। पुरख अकाल तैनूं दस्सां मार अवाज, संदेशे विच जणाईआ। जे तूं मेरे सिर ते धरया ताज, हकूमत दो जहान बणाईआ। खेल वखाया आदि, अन्त दिता दृढ़ाईआ। बण के कन्त सुहाग, सेज दित्ती सुहाईआ। मेरी बेनन्ती दा दे इक्क जवाब, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं सुणदा रिहा तेरी धार, सुण सुण खुशी मनाईआ। मेरे साहिब सच्ची सरकार, तेरे हथ्थ वड्याईआ।

बेशक तूं सचखण्ड दा मुख्त्यार, दरगाह साची डेरा लाईआ। लोकमात तेरे नाल मेरा अखाड़, बिना तत्तां तेरा संग ना कोए मनाईआ। याद रख सतारां हाढ़, पिछला दयां जणाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां दा कर्ज़ा दिता उतार, बाकी रही ना राईआ। तूं शब्दी बोल किहा ललकार, हुक्म इक्क सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा तुट्टे कदे ना प्यार, ओहला रहिण कदे ना पाईआ। सदा होवां सांझा यार, मित्र प्यारा इक्क अख्वाईआ। जे भज्जां ते बणां ग़द्दार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मैं राती खिड़ खिड़ हस्सया, खुशी दिती जणाईआ। जिस वेले तूं हुक्म आपणा धुर दा दस्सया, जन भगतां दिता समझाईआ। ओसे वेले मैं ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ नस्सया, दो जहान वेख वखाईआ। जिधर जावां होवे अन्धेरी मस्या, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैनूं कुछ ना लग्गा अच्छया, नेत्र मीट वेख वखाईआ। इक्क आवाज़ आई गोबिन्द वेख आपणे बच्चयां, जो तेरा राह तकाईआ। जिन्हां नूं गुर अवतार पैगम्बरां मंनयां सच्चया, सच देणा दृढ़ाईआ। जिन्हां दे लूं लूं अंदर रचयां, घर घर डेरा लाईआ। साडा अंदरों अंदर मच्चया, अग्नी प्रेम तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे उठाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं आ

१२८२ गई हैरानी, हैरत विच समझाईआ। तेरा खेल शाह सुल्तानी, शरीअत वाले क्यों शरअ रिहा बदलाईआ। तेरा पिछला झगड़ा १२८२

२० चार जुग दा दीवानी, दाअवेदार रहे कुरलाईआ। मेरी जोबन वाली जवानी, बल आपणा रही वखाईआ। मैं भगतां नाल २०

गुरमुखां नाल तेरी चलण नहीं देणी बेईमानी, छल कपट ना कोए कमाईआ। तैथों दूर ते मेरी जगत एह निशानी, निशाना तैनूं देणा वखाईआ। हरि संगत नहीं बेगानी, जिन्हां तों लुक के झट लँघाईआ। जे तूं ना करें ते मैं करांगा मेहरवानी, एह मेरे विच वड्याईआ। मेरे कोल मंज़ल रुहानी, रहमत दयां कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे की लिखाया लेख, मैनूं दे समझाईआ। की होया तेरा जोती जामा वेस, बिना मेरे शब्द दे तेरी आवाज ना कोए सुणाईआ। तूं उत्ते ते मैं हेठ, दोवें मिल के रंग रंगाईआ। मैं धोखा होण नहीं देणा विच महीने चेत, चातिरका दा साथी हो के देणा समझाईआ। मैं वी रहिण वाला हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। भगतां दी थाँ गुरमुखां दी थाँ मैं तेरे अग्गे आप होवां पेश, एसे करके अज्ज दी पेशी पहले मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। गोबिन्द कहे उह प्रभ लुकण छिपण वाले चोर, बेनन्ती दयां सुणाईआ। तूं मेरे विच वधाया ज़ोर, आपणी ताकत नाल मिलाईआ। मैनूं भेजया विच अन्धेरे घोर, कलयुग अन्तिम हुक्म सुणाईआ। आपणे नाल बन्न्ह के डोर, नाता ल्या जुड़ाईआ। मैं सुण के तेरा विछोड़े वाला शोर, आपणा बल वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर कर बेपरवाहीआ। गोबिन्द कहे मेरी पिछली वेख लै अर्ज़ी, दर दरख़ासत दयां वखाईआ। बिना मेरे तेरी लोकमात विच चले ना कोई मर्ज़ी, इकल्ला आपणा हुक्म ना कोए बणाईआ। जिस तरह तूं मेरा ग़रज़ी, मैं ग़रज़ गुरमुखां नाल रखाईआ। पुरख अकाल तूं मेरा दर्दी, मैं दर्द ग़रीब निमाणयां झोली पाईआ। जेहड़ी धार तेरा मेरा ढोला पढ़दी, उहनां दी होण ना देवां जुदाईआ। गुरमुख आसा रहे ना सड़दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच संदेश इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द चुप, चुप चुपीता दयां जणाईआ। मैनूं फिर लैण दे छुप, लुक लुक वक्त लँघाईआ। तूं मेरा लाडला पुत्त, निउँ के सीस दे निवाईआ। मैं बदलां आपणा रुख़, रस्ता इक्क प्रगटाईआ। तैनूं बड़ा देवां सुख, सुख विच समाईआ। गोबिन्द अग्गों प्या उठ, आपणा बल प्रगटाईआ। तूं मेरे उत्ते रिहा तुठ, मैं भगतां दया कमाईआ। जे मैनूं लवें पुछ, प्रभ तैनूं दयां जणाईआ। मेरा नहीं गुरमुखां दा सब कुछ, सब कुछ एहनां दी झोली पाईआ। एहनां दा विछोड़े दा मैनूं वड्डा दुःख, तेरा सुख कम्म किसे ना आईआ। उजल करां मुख, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। गोबिन्द, कर लैण दे इक्क विहार, चोरी यारी मेरी रीती चली आईआ। मैनूं फेर किसे नहीं कहिणा चौवीआं अवतार, कल कल्की फेरा पाईआ। नबीआं दा सरदार, अमाम धुरदरगाहीआ। जोत दी धार, जोत विच रुशनाईआ। वेखां जा जा घर बार, आपणी समझ ना किसे समझाईआ। भगतां लवां उठाल, हलूणा इक्क दवाईआ। कदे शाह कदे कंगाल, दोवें रूप वखाईआ। लभ्भयां कोई ना सके भाल, खोजयां खोज ना कोए खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू वेख आपणी इबारत, जेहड़ी बिन अक्खरां दिती लिखाईआ। मैं भगतां नाल होण नहीं देणी शरारत, परदा रहिण कोए ना पाईआ। एह कृष्न नहीं जेहड़ा फेर बणावे महाभारत, जेब विच्चों खर्च ना कोए कराईआ। हुण कोई अवतार पैगम्बर नहीं जेहड़ा मैं किसे मज़्हब दी लवां आड़्हत, दुकान जगत विच चलाईआ। हुण लग्गणा नहीं किसे विच गारत, परदयां विच ना कोए छुपाईआ। मेरी सब तों वक्खरी होणी ज़िआरत, ज़ाहर ज़हूर करां रुशनाईआ। पुरख अकाल आपणा लेखा वेख जित्थे इक्की भगतां दी वज़ारत, नौ साल लिख के झट लँघाईआ। जे मैं ना बणया अज्ज एहनां दा वारस, विरसा कायम ना कोए कराईआ। मैं कहि के आया गोबिन्द दा ख़ालसा होवे ख़ालस, बिना भगतां तों ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। मैनूं ना कोई निंद्रा ना कोई आलस, ग़फ्लत विच झट ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा रंग रंगाईआ। गोबिन्द

कहे ओए अग्गे आ जा इक्की चेत, तैनूं दयां समझाईआ। की तैनूं नहीं मेरा भेत, मैं काहन रूप वटाईआ। ज़रा तक्क लै नेत नेत, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जिस वेले रण भूमी वेखी खेत, शत्रु मित्र खोज खुजाईआ। ओस दा उहनां नाल हेत, जो जुग जुग साचा संग निभाईआ। उहनां दा बदलण आया लेख, लेखा कूड़ मिटाईआ। एसे कारण होया पेश, सनमुख हो के रिहा सुणाईआ। प्रभू क्यों बणे मुल्ला शेख़, मसला झूठा ना कोए बणाईआ। जे तूं आपणा नाम रखाया दरवेश, मंगण वाला मंगता लुक के झट ना कदे लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक्क वखाईआ। गोबिन्द एह खेल बड़ी सोहणी, मैनूं नजरी आईआ। गोबिन्द किहा एह गल्ल कदे ना होणी, जिंनां चिर चलें ना मेरी रज़ाईआ। एह कोई जगत वाला नहीं नछत्र रोहणी, जिस दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। मैं शब्द खण्डे नाल सृष्टी सारी कोहणी, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। तूं ते प्रभू इक्क निक्की जेही जोत जगाउणी, छोटयाँ घरां विच करें रुशनाईआ। मैं हाहाकार जगत मचाउणी, जिस नूं सुणे सर्ब लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हरि संगत पहलों मेरे दवारे दी पराहुणी, फेर तेरे घर देणी पुचाईआ। पंज चेत नूं जेहड़ी तूं खेल खिलाउणी, उह मैनूं मूल ना भाईआ। जे धर्म दा प्यार ते सच दी करनी बहुणी, धुर दा कर्म बणाईआ। क्यों लुकण छुपण दी पाई अड़ाउणी, मैनूं दे समझाईआ। मैं चाहुन्दा पंज चेत नूं इक्कीआं दी धार आपणे नाल रखाउणी, इक्क दा लेखा दयां मुकाईआ। पिछली कीती सर्ब गवाउणी, गवाह विच पुरख अकाल तेरी शहादत दयां रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दाते दे वड्याईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द सुण लाडले पुत्ता, पितर हो के दयां जणाईआ। आह लै मेरी मुहब्बत दा गुच्छा, चार जुग दा लेखा तेरी झोली पाईआ। मेरे उत्ते कर ना गुस्सा, सहिज दयां सुणाईआ। मैं अग्गे वी पिच्छे रिहा लुका, लुक लुक के आपणा खेल वखाईआ। गोबिन्द ताअ दे के मुच्छा, बिन मुच्छां वट चढ़ाईआ। फड़ के बाहों गुट्टा, हलूणा रिहा लगाईआ। प्रभू जे तेरा लड़ मैथों नहीं छुट्टा ते मैं भगतां नालों पल्लू ना कदे छुडाईआ। मेरा प्रेम कदे ना टुट्टा, टुट्टदयां रिहा जुड़ाईआ। मैनूं एहो वड्डा दुक्खा, जेहड़ा तूं लुकण दा शब्द दिता लिखाईआ। जे तूं पिता ना होवें मैं तैनूं टंग देवां पुट्ठा, उलटा दयां लटकाईआ। फिर गुस्से विच पुछां, की भगतां तों मुख छुपाईआ। जे तूं प्रभू धुर दा सुच्चा, क्यों लुक लुक झट लँघाईआ। मैं हुण ना आप ते ना तैनूं बन्द होण नहीं देणा विच कुज्जा, ते कूजे मिशरी दा स्वाद देणा तजाईआ। जे तूं मैनूं बुज्झा ते मैं गुरमुखां भेत खोल्हया गुज्झा, दिवस रैण एसे विहार विच रुज्झा, चार कुण्ट वेखां थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द एह मेरी पहली परख,

शब्दी शब्द जणाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं एसे कर के आया हरख़, प्रभ तैनूं दयां सुणाईआ। जिस तरूां मैं ख़ुश तेरा कर के दरस, एसे तरूां गुरमुख मेरा दर्शन कर के ख़ुशी मनाईआ। मैं चाहुन्दा दोवें मिल के उनूां दी मेटीए हरस, तृष्ना दईए बुझाईआ। जिस कारण आए उत्ते फ़र्श, धरती उत्ते डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी मन्ज़ूर कर के अरज़, निरगुण धार वेस वटाईआ। अग्गे होईए ना दोवें लग़रज़, मेहनत नाल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द शाबाश, शहिनशाह हो के दयां वड्याईआ। मैनूं चार जुग लँघ गए करदयां तलाश, वेखां थाउँ थाँईंआ। सारे रोंदे वेखे ज्यों शंकर नीर वहाए कैलाश, कलाधारी नज़र कोए ना आईआ। बिन तेरे मेरा दिता ना किसे साथ, अगला संग ना कोए बणाईआ। मैं तेरी लेखे लावां मिट्टी ख़ाक, राख सब नूं दयां वरताईआ। तूं मेरा जन भगत मेरी शाख़, दोहां दा मेला सहिज सुभाईआ। तूं एह दस्स दे पंज चेत दी किथे कटणी रात, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा पहलों मन्ज़ूर कर लै जेहड़ा लेखा लिख्या नाल कलम दवात, पहली फग्गण लेख बणाईआ। प्रभ दा कीता ते गोबिन्द कीता (साफ़), रस्ता गुरमुखां इक्क जणाईआ। बचन देदे मैनूं कहवीं ना कदी
१२८५ गुस्ताख़, मैं आपणी आसा दिती वखाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मैं चाहुन्दा जिधर जावां अग्गे तेरे प्रेम दी करां बरसात, छहबर १२८५
आपणी नाल लगाईआ। सति दी देवां दात, धर्म दी धार बंधाईआ। गुरमुख सुत्ता जाए जाग, जागण वेला दयां दृढ़ाईआ।
चारों कुण्ट रौली पै जाए वांग काग, सृष्टी काग वांग कुरलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लुकण नालों भगतां दे अंदर दे उह वैराग, जिस वैराग विच कूड़े वैरी अंदरों दे कढाहीआ। जे माली ही लुक गया ते सुञा रह जाऊ बाग़, फल फुल्ल कम्म किसे ना आईआ। जे मन्दिर ही ढहि गया ते किथ्थे जगू चराग़, करे कौण रुशनाईआ। ते जे तूं वी लुक के कढ्ढें रात, गुरमुख किस दा दर्शन पाईआ। पिच्छे मैं डरदा रिहा गोबिन्द कहे हुण जे हेरा फेरी कीती खोलू दिउँगा पाज, परदा दयां उठाईआ। क्यों, मैं जाणदा बिना गोबिन्द दे तेरा दो जहानां दा चलणा नहीं राज, रईयत संभालण वाला नज़र कोए ना आईआ। मैं सदा रखणी आपणे नाल इक्कीआं दी जमात, इक्कीआं तों घट आपणा कदम ना कोए उठाईआ। मेरा शहिनशाहां वरगा होवे ठाठ, ठोकरां नाल सब नूं दयां उठाईआ। चार जुग दे साफ़ करां काग़ज़ात, अग्गे इक्को हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू तेरा लिख्या लेख सके ना कोए मिटा, अक्खर अक्खर ना कोए बदलाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द जिस उत्ते मेहर दी निगाह दयां टिका, दयावान हो के दया कमाईआ। ओस दे प्यार विच जुग दयां उलटा, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं कोई ख़ुदी करन वाला नहीं ख़ुदा, ख़ुद

मालक हो के ख़ादम बण के सेव कमाईआ। मैं वेखणा चाहुन्दा सां तेरी प्रेम दी केहो जेही अदा, भगतां नाल नज़री आईआ। गोबिन्द किहा इन्हां पिच्छे आपणे बच्चे कर के फ़िदा, तेरी झोली पाईआ। हुण किस तरह रहवां जुदा, अड्डरा झट लँघाईआ। मेरी ते इक्को इक्क दुआ, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। साचा मेला लवां मिला, मिलयां विछड़ कोए ना जाईआ। तेरे दवारे देवां बहा, जित्थे सति दी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द मैं वेखां प्यार तेरी सिक्खी, निगाह भगतां वल्ल उठाईआ। मेरे साहमणे पुच्छ कि गुरमुखो सदा नाल जाण नूं त्यार रहोगे इक्की, जे मन्ज़ूर ते हथ्थ दयो उठाईआ। फेर कोई ना रहिणा मुनी ऋषी, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। जगत दी रस धार होणी फिक्की, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। गुरमुख नाल सवा सेर पका के रखणी टिक्की, रोटी इक्को नज़री आईआ। इस दे उत्ते धार रखणी चिट्टी, कपड़ वस्त्र सोहणा उपर पाईआ। इक्क पहली चेत नूं लिखाउणी चिठ्ठी, मज़मून धुर दा आप बणाईआ। नाल तिन्न रंग दी लैणी मिट्टी, लाल कंचन सूहा लैणा चढ़ाईआ। ढाई इंच लक्कड़ दी लैणी गिट्टी, चारों तरफ़ इक्को जेही नज़री आईआ। काग़ज़ उत्ते इक्क गोल बणाउणी टिप्पी, हाहा थल्ले ना कोए वखाईआ।
१२८६ इक्क करद रखणी निक्की, छोटी जेही जो पिच्छे मालवे दे हिस्से आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १२८६
२० कर, साचा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे की प्रभ तैनूं मन्ज़ूर, जो बेनन्ती दित्ती सुणाईआ। जे मैं कर बैठा कसूर, उह २०
वी तेरी झोली पाईआ। मैं विछोड़े विच चूर, झल ना सकां जुदाईआ। गुरमुख इक्वे होण नेड़े दूर, सोहणा संग बणाईआ। मैं बणां हक दा मज़दूर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। क्यों, तेरा संग रिहा ज़रूर, सगला संग जणाईआ। हुण दोवें साचे भगतां नूं कर लईए मशहूर, आपणी लोड़ रही ना राईआ। पाणी तों साफ़ हो जाए बूर, दुर्गन्धी अंदरों बाहर कढाहीआ। जे मेरी अरज़ तैनूं कबूल, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरा सच्चा सच असूल, असल दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं लेख वखा दे बिना कलम शाही, बिना अक्खरां अक्खर वखाईआ। आपणी तस्दीक करके आपे पा दे गवाही, शहादत शाह हो के भुगताईआ। सदा चल्लां सति रज़ाई, रज़ा तेरी नाल मिलाईआ। जेहड़ी पहली फग्गण लिख्त लिखाई, लुक लुक के झट लँघाईआ। ओस दे थाँ कर रुशनाई, मेरी आसा पूर कराईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द मैं ज़रूर तेरी ते तेरयां गुरमुखां दी करां वड्याई, मेहर निगाह इक्क टिकाईआ। पहले दिन जाणा पुर भुलाई, गुरमुख दा निशान, आउणा बणाईआ। अगला लेखा आपे दए समझाई, चिन्ता दी लोड़ रहे ना राईआ। गोबिन्द किहा प्रभू तूं दस्सया लैहन्दे ते मैं चढ़दे करनी चढ़ाई, लहिंदीआं

कलां विच कदे ना आईआ। तूं दस्सया गुरमुख दे हथ्थ नूं लाउणी मैहन्दी, पंजे निशानां नाल वड्याईआ। मैं दस्सणा जित्थे प्रेमीआं दी मजलस रही बहिंदी, चार जुग दे डेरे लाईआ। ओथे हुण वेख्यो कच्ची कंध ढहिंदी, कल्लर वाली नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साचा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे वाह मेरे यार, तेरी बेपरवाहीआ। सच दा दस्स प्यार, रीती लई बणाईआ। सतारां दिन दा विहार, खुशीआं नाल लँघाईआ। हरि संगत दा सांझा होवे घर बार, कल्ला सेव ना कोए कमाईआ। सिर्फ़ रोटी होवे ते दाल, दूजी वस्त ना कोए बणाईआ। खाए कोई ना विच थाल, हथ्थां उत्ते टिकाईआ। प्रशादा ढके ना कोए नाल रुमाल, परदा उत्ते ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। गोबिन्द कहे गुरमुखो मैं वेखो तुहाथों किन्नां डरदा, साचा संगी नज़री आईआ। जिस वेले मैं शब्द सुणया रातीं हरि दा, रातीं सुत्यां नींद ना आईआ। जिन्हां दे पिच्छे दुखड़े रिहा झलदा, सूलां सेज हंढाहीआ। विछोड़ा रखां कदे ना पल दा, पलक ना होवे जुदाईआ। शब्दी धार हो के रलदा, रल मिल आपणा झट लँघाईआ। पुरख अकाल मेहरवान हो के आपणा लेख बदलया कल दा, कलम दी कलम नाल कीती सफ़ाईआ। क्यों, उह सब दे दुक्खड़े झलदा, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। भगतां नाल झगड़ा रहे ना कपट छल दा, एसे करके अज्ज फ़ैसला दिता कराईआ। तुहानूं शक हुन्दा जे फग्गण दो दा पहले दिन ना मंगदा, आसा इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द तूं हो गया मेरा भेती, एह वी मेरी बेपरवाहीआ। पर बहुता काहला पवीं ना करीं छेती, ख़ामोश नूं जोश विच ल्याईआ। गोबिन्द किहा प्रभू एह तेरी खेती, मैं ते राखा बण के सेव कमाईआ। मैं किसे हट्ट बाज़ार नहीं वेची, कीमत तेरे दवारे रखाईआ। मैं मुहब्बत दी करां नेकी, निक्कयां वड्डयां गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ बख्शणी इक्क सरनाईआ। पुरख अकाल किहा अंदर बाहर मार ला झाती, बाहरों अंदर ते अंदरों बाहर दयां वखाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दी राती, तेरी सुलझ गई प्रभाती, प्रभाती वेला सब नूं भाईआ। तेरे साथी नाम दे जमाती, शब्द दी हक पढ़ाईआ। मैं इन्हां दे अंदर दा पाठी, बिना रसना तों जाप जपाईआ। तूं सूरबीर योद्धा हाठी मैं दयावान दया कमाईआ। तूं मंज़ल चढ़ीं घाटी, मैं उपर नीचे वेख वखाईआ। तेरा खेल लोकमाती, मैं पाताल आकाश हुक्म वरताईआ। ज़रा वेख मेरी उह पाती, पत्रका इक्क उलटाईआ। जिस दी समझ किसे ना जाती, ज़ातां पातां विच वण्डी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क सुहाईआ। गोबिन्द कहे सब नूं दे दे इक्क दलासा, सही सलामत दया कमाईआ। भरम

विच्चों प्रगट कर भरवासा, धीरज धीर धराईआ। पूरी होवे आसा, तृष्ना दे बुझाईआ। जन भगत तेरा साचा, गुरमुख मेरा नज़री आईआ। दोहां दा सांझा होवे वासा, घर इक्को डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा पूरा करे घाटा, कीमत कौडीआं वाली चुकाईआ।

★ ४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

फ़रीदा तेरा लाहया उल्हामा, चिढ़ीआ खुशी मनाईआ। मिल्या धुर अमामा, शहिनशाह पातशाहीआ। सुणया पूरब पैग़ामा, हुक्म इक्क इलाहीआ। मुकया तृष्ना तामा, तृखा दित्ती बुझाईआ। मेरा पिछला लहिणा कृष्ना कान्हा, त्रेता राम दी दुहाईआ। मैं सदा बणदा रिहा कामा, गुरू घर दी सेव कमाईआ। लंगर विच्चों चोरी रिहा खांदा, परदयां विच छुपाईआ। पवित्र पाणी विच रिहा नहांदा, चंगा आपणे नाल छुहाईआ। खुशीआं नाल रिहा गांदा, तेरी बेपरवाहीआ। इक्क दिन मैनूं वेख ल्या इक्क पांडा, नेत्र अक्ख चुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। चिढ़ीआ कहे मैं पिछला सेवादार, दसरथ दुआर दा नज़री आईआ। कृष्न नाल करदा रिहा प्यार, अंदर बाहर वेख वखाईआ। मैं आदत विच बुरयार, मेरी नीती ना कोए बदलाईआ। जदों दिल चाहे जूठा करदा रिहा आहार, आपणा दाओ लगाईआ। पंडत वेख ब्राह्मण आई विचार, मन ही मन समाईआ। जे बल होवे एहनूं देवां मार, जो गुरू घर दा चोर नज़री आईआ। गुस्से विच मन दा कीता वार, बाहू बल ना कोए वड्याईआ। ओने चिर नूं कृष्न आ गया राधा नाल, आपणी खुशी बणाईआ। पंडत रो के दस्सया हाल, बौहड़ी दिती सुणाईआ। एह सब नूं जूठ रिहा खवाल, मूर्ख मूढ़ा नजरी आईआ। एहनूं एथों दयो नकाल, सज़ा अवर भुगताईआ। मारो ऐसी मार, दुःख दुःख विच सताईआ। कृष्न हस्स के किहा पंडता करां ख़बरदार, तैनूं दयां सुणाईआ। इस दा जामा फेर होवे संसार, पंखी रूप वटाईआ। फेर भगत दए आधार, नवां रूप बदलाईआ। फेर आउणा पए विच संसार, जन्म अजन्मा वेस वटाईआ। तेरा एसे नाल आधार, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जेहड़ा तेरे अंदर गुस्सा आया वशाल, मैं एह वी वेख वखाईआ। जे तूं वड्डा हुन्दों बलवान, अज्ज मार के देणा सी वखाईआ। मैं अंदरों समझी तेरी चाल, परदा दयां उठाईआ। जिस वेले खेल करे प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। सृष्टी उत्ते वधे पाप, पतित पुनीत बणाईआ। पूरी होवे किसे ना आस, निरासा दिसे लोकाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, आपणी कल वरताईआ।

तेरा भगतां विच जन्म होवे ख़ास, ब्राह्मण दयां माण वड्याईआ। एहदा बिना तृष्ना तों होवे खाज, तृप्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। ब्राह्मण कहे तेरे अग्गे लाई शकायत, प्रभू दिती सुणाईआ। तूं वी करें हमायत, तेरी बेपरवाहीआ। कृष्न किहा मैं करां ना कोई रयायत, धुर दा हुक्म जणाईआ। इस दे विच नहीं अशायत, शक ना कोए रखाईआ। फेर मैं ना होवां शायद, सच सच समझाईआ। जिस वेले मेरे काहन दा हुक्म होणा राइज, रईयत दो जहान बणाईआ। तैनूं प्रेम प्रीती विच बणा के लायक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ। ब्राह्मण तूं ना कर गुस्सा, त्रिलोकी नंदन दिता जणाईआ। तेरा रूप बणावां फेर दाढ़ी मुच्छा, नाता धर्म दे नाल जुड़ाईआ। एस नूं खाण पीण नूं लभ्भे ना टुक्कर सुक्का, जन्म जन्म दयां बदलाईआ। चीं चीं विच सब चिढ़ीआं नूं अंदर पैंदी हूक्का, जिस दी बोली बाहरों समझ किसे ना आईआ। सदा एह कहिंदीआं प्रभू साडा दाणा पाणी मुका, असां तेरी आस रखाईआ। मंगदीआं रैहन्दीआं सुक्खां, साह साह ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए वखाईआ। ब्राह्मण किहा इक्क वेरां सद्द लओ कोल, आपणा सेवादार लओ बुलाईआ। कृष्न मार के बोल, नेड़े ल्या बुलाईआ। हस्स के किहा अज्ज किन्ने चुरा लए चौल, मैनूं दे वखाईआ। ओस ने किहा ढाई छटांकां दा तोल, कड्ढ के आपणे अंदर ल्या टिकाईआ। फेर पूरे कर के अडोल, परदा आया पाईआ। एह मैं सदा मारदा रोल, मेरे अंदर दी आसा मैनूं भड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क समझाईआ। कृष्न नूं आया बड़ा हासा, हस्स के दिता वखाईआ। जाह चौलां वाला ल्या कासा, जो अंदर आया छुपाईआ। ओस ने बदल के आपणा पासा, मुख ल्या भवाईआ। मन्नया सच्चा आखा, चलया वाहो दाहीआ। जिस वेले खोल्ह्या ताका, अग्गे नज़र कुछ ना आईआ। इक्क चिढ़ीआ दा निक्का जेहा काका, बाटे विच बैठा मारे धाहींआ। उस सहिज नाल फड़या हाथा, उह फड़न नाल आपणा आप गया तजाईआ। अन्त समें ओस किहा मैं कटदा रिहा फ़ाका, भुक्ख्यां भुक्ख सताईआ। मैनूं चुक्क के लै जा जित्थे तेरा आका, मालक धुरदरगाहीआ। मेरा लेखा रहे ना बाका, पूरब देणा मुकाईआ। मेरी अन्तिम एहो आसा, भगवन चरणां विच टिकाईआ। तूं वी सुण ला मेरी इक्क बाता, तैनूं दयां समझाईआ। तूं जो चोरी चोरी खाधा, लंगर विच धरोह कमाईआ। एहो हुक्म देवे राजन राजा, मेरे वाली सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। सेवादार चुक्क के लै गया पंखी, कृष्न चरणां नाल छुहाईआ। काहन वजा के आपणी बंसी, मुरली विच्चों आवाज़, सुणाईआ। नाले खुशी नाल कीती हँसी, हस्स के दिता वखाईआ। जिस

वेले मालक आया फ़र्शी अर्शी, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। करे प्रकाश उपर धरती, धरन धरत धवल सुहाईआ। ओस वेले तुहाडे लेख दी कढ्ढे पर्ची, पिछला फोल फुलाईआ। लहिणे दा होवे दर्दी, देणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग चढ़ाईआ। चिढ़ीआ कहे मेरे भगवान, दर तेरे सीस निवाईआ। तेरा सेवादार बड़ा शैतान, चोरी चोरी खा के ख़ुशी मनाईआ। मैं बाल नढ्ढा अंञाण, बेनन्ती इक्क सुणाईआ। एहदा लेखा एसे तरह होवे जहान, जिस तरह मैं भुक्खे मरदे एहदे हथ्थों आपणी जान छुडाईआ। कृष्न किहा एह तैनूं देवां दान, एहदा एहो जन्म बदलाईआ। जिस ब्राह्मण नूं गुस्सा चढ़या विच आण, ओस दा मेला सहिज सुभाईआ। उह मनुख मानस एह पंखेरू नादान, दोहां दा लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। साचा रंग रंगावां आप, आपणी दया कमाईआ। सब दा वेख के पुन्न पाप, लहिणे देवां मुकाईआ। भगतां दा बण के बाप, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रूह बुत्त कर के पाक, अंदरों करां सफ़ाईआ। सच दुआर दा खोल्ह के ताक, परदा आप उठाईआ। पूरा करां भविख्त वाक्, पिछला लेखा मूल चुकाईआ। जेहड़ा सेवादार गुस्ताख़, उह चिढ़ीआ रूप वटाईआ। जिस ब्राह्मण ने कृष्न दा पकड़ के हाथ, संदेसा दिता जणाईआ। दोहां विचोला बण के आप, आपणा हुक्म वरताईआ। जे उह काहन नहीं एह काहनां दा काहन आप, जिस दी कृष्न ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। ब्राह्मण किहा भगवन दस्स बात, कान्हा दे सुणाईआ। किस बिध होवे खेल तमाश, परदा आप चुकाईआ। कृष्न किहा एह प्रभ दा खेल तमाश, ओसे दी बेपरवाहीआ। ज़रूर पूरी करां आस, दोहां दा मेल मिलाईआ। आप विचोला रहे साथ, इशारे विच वड्याईआ। ओस वेले ब्राह्मण टेक के माथ, मुक्खों मंग मंगाईआ। कुछ मैनूं दे खाज, कृष्न मेहर दया कमाईआ। ओस ने किहा झट देवां आज, तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्हाईआ। ब्राह्मण किहा किन्नी देवें दात, वस्त की वरताईआ। कृष्न किहा इक्क पाओ सौग़ात, तेरी झोली पाईआ। हस्सदे हस्सदयां कहि के निक्की जेही बात, हुक्म दिता सुणाईआ। एह सांभ के रखीं सौग़ात, कलयुग अन्तिम प्रभ आपे लए कढाहीआ। जिस वेले एहो तिन्न चार फग्गण दी आए रात, सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। सेवादार पंखी ने अरज़ करनी वेले प्रभात, तड़फ तड़फ के हाल सुणाईआ। तेरा पंडता पूरा होवे खवाब, भगत सुहेले दयां वड्याईआ। तैनूं सद्द के आखे आप, एहदा लेखा दे मुकाईआ। पूरा कर के हिसाब, पाओ प्रशाद लए मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सेवादार चोरी करन वाली चिढ़ी, चिढ़ीआ समझ किसे ना आईआ। जिस

ने आसा कीती बड़ी, नौ महीने अठारां दिन राह तकाईआ। अज्ज साढे पंज इक्क तुक पढ़ी, अंदरे अंदर दिती दुहाईआ। याद कर कृष्न वाली कड़ी, मेरा लेखा दे मुकाईआ। मैं पुराणा सेवादार तेरी किरपा नाल होवां बरी, चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। पुरख अकाल किहा अठ्ठ तेई दा वक्त वेख घड़ी, घड़याल दिती वखाईआ। ऐना समां होर जरीं, तेरा लहिणा दयां मुकाईआ। फेर चरणीं आ के पड़ीं, सीस जगदीस झुकाईआ। चरण छुहा के तैनूं पुचावां ओस घरी, जित्थे घर दा मालक इक्को नज़री आईआ। राह विच मूल ना डरीं, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर तेरा राह तकाईआ। इक्को ढोला गावीं हरी, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। भगतन आशा अग्गे खड़ी, तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। ओस ब्राह्मण दा नाँ दलीप कुमार, पिछला दयां समझाईआ। एसे कर के दस सालां तों दलीप सिँघ कर के मारी नहीं कदे आवाज़, कुमार कहि के आप बुलाईआ। अज्ज उतर गया उधार, लहिणा दिता मुकाईआ। किसे समझ नहीं आई क्यों एह नाउँ लए पुकार, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे रंग चढ़ाईआ। चिढ़ीआ कहे ओ ब्राह्मण कुमार दलीप, दीपां वाले नूं दिता मिलाईआ। मेरी सच दी लग्गी प्रीत, प्रीतम दए वड्याईआ। मेरा लेखे लग्गा अमृत वेले दा गाया गीत, आसा पूर कराईआ। चरण छोह नाल हो गया ठंडा सीत, मिली माण वड्याईआ। जेहड़ी कन्या लिखदी सी कोल अतीत, एह ब्राह्मण दी बेटी साढे तिन्न साल दी उंगली नाल लगाईआ। एसे कारण सब दा मेला कीता ठीक, मात पिता समझ किसे ना आईआ। भावें माढ़ा कहो ते भावें चंगा कहो मीत, मित्र प्यारा आपणी सेव कमाईआ। एह प्रभू दी आदि जुगादी रीत, जुग जुग लहिणा झोली पाईआ। चिढ़ीआ कहे मेरी आसा पुन्नी अगली मुक्की उडीक, घर बैठा चाँईं चाँईंआ। जित्थे रहमत दी बख्शीश, निगाह मेहर वरसाईआ। जिधर वेखां इक्को छत्र झुल्ले सीस, जगदीस सोभा पाईआ। इक्क संदेसा देवां मैं निमाणा हो के नीच, नन्हां नन्हां आख सुणाईआ। जन भगतो एथे लेखा मुकदा हस्त कीट, जूनीआं विच्चों बाहर कढाहीआ। किन्नां समां गया बीत, गुर अवतार सक्या ना कोए समझाईआ। मैं निमाणा नाचीज़, बैठा राह तकाईआ। जिस वेले सवेरे मेरी चरणां उत्ते डिग्ग के निकली चीक, अमृत वेले दिती दुहाईआ। उह पहला वेला चार नौ दा सी ठीक, आपणा दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क टिकाईआ। चिढ़ीआ कहे जिस वेले मेरी चरणां नाल लग्गी छाती, छत्रधारी नज़री आईआ। मेरे अंदर जगी बाती, बातन होई रुशनाईआ। दर्शन पाया कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। धन्न भाग एस ने मेरी मन्न लई आखी, आख़र आपणे विच मिलाईआ। गुरमुखो मैं संदेसा देवां पाती, धुर दा राग जणाईआ। भावें

मस्ती विच सुत्ते रहो राती, ग़फ्लत विच लँघाईआ। इक्क बचन सवेरे उठ के प्रभाती, ज़रूर चरणां नाल छोह के आपणा जन्म लैणा बदलाईआ। एह कोई चिढ़ी दी आपणी नहीं साखी, साख्यात भगवान दिती समझाईआ। मैं कोई बन्दा नहीं सां ख़ाकी, रसना ढोला गाईआ। चरण छोह नाल दर्शन करन नाल मेरी बदल गई हयाती, हरि दर मिली वड्याईआ। एह सब दी मनसा पूरी करदा आसी, असल आपणा रंग चढ़ाईआ। बाहरों एहदी करे ना कोए शनासी, शनाख़त विच कदे ना आईआ। किरपा कर के मेरी लाह दिती उदासी, चिन्ता ग़म दिता मिटाईआ। चिढ़ीआ कहे मैनूं याद आ गया जिस वेले ईसा नूं दिती फाँसी, सलीब गल दे विच लटकाईआ। ओस अन्त अख़ीर इक्क उच्ची आवाज़ आखी, हक खुदा दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ। ईसा कहे मेरे आअज़म इस्म, असमानां तों परे ध्यान लगाईआ। आह संभाल आपणा जिस्म, मैनूं लोड़ रही ना राईआ। धुर आवाज़ आई आपणी खा कसम, गंढु आपणे नाल पवाईआ। मेरी इस तों अग्गे वक्खरी चलणी रसम, जिस नूं रसना सके ना कोए जणाईआ। सब नूं हाल वखावां नवां चश्म, चश्म दीद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवे वड्याईआ।
१२६२ ईसा फाँसी दा काहदा दुःख, फ़ैसला बेपरवाहीआ। तेरा रूप तत्तां वाला मनुक्ख, जिस्म सोभा पाईआ। तूं मेरी धार जाणा १२६२
२० लुक, आपणा आप छुपाईआ। जिस वेले मैं आप आया उठ, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मेहरवान हो के जावां तुठ, २०
दीनां अनाथां खोज खुजाईआ। मैं लहिणा देणा पूरब सब दा मुकाउणा हभ कुछ, बचया नज़र कोए ना आईआ। शब्दी हुक्म अंदर रहिणा नहीं चुप, संदेसा इक्क सुणाईआ। ओस वेले कलयुग अन्धेरा होणा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। भगत बणने प्रभ दे पुत, पिता पूत गोद उठाईआ। ओस वेले चार खाणी दे उजल करने मुख, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज चरण आए सर्ब पार कराईआ। ओने चिर नूं जलाद ने रस्सा ल्या घुट्ट फट्टा दिता खसकाईआ। पुरख अकाल किहा मेरी प्रीत ना जावे टुट्ट, तत्तां तों बाहर जणाईआ। ईसा वेख भगत भगवान दा जुट, जोड़ी जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरा होया घुप्प, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले चार जुग दे लहिणयां दा लेखा जाए मुक, हरि करता आप मुकाईआ। चिढ़ीआ कहे मैं ओथे गई पुज्ज, जित्थे पूजण वाला इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे चौकड़ी जुग, जुगां दे लेखे पूर कराईआ।

★ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत सिंघ दे जन्म दिन ते हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

फलगुण कहे मैं इक्क इक्क ग्यारां, ग्यारवां गुरू ना कोए वड्याईआ। इक्क नाल इक्क दीआं बहारां, जोत शब्द वज्जे वधाईआ। शब्द धार गोबिन्द बलकारा, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। जिस दा सति धर्म दुलारा, पूत सपूता इक्क प्रगटाईआ। जिस दा सारे देंदे गए इशारा, बिन आवाज़ां नाद सुणाईआ। सो स्वामी खेल करे करतारा, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दा वसे इक्क (दुआरा), दूजा घर ना कोए वखाईआ। वेखणहार सर्ब संसारा, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। निरगुण रूप चव्वीआं अवतारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। देवणहार आदि अन्त सहारा, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर इक्को इक्क वखाईआ। फलगुण कहे मैं इक्क इक्क इक्का, अंक अंक मिल के वज्जे वधाईआ। इक्क नाल इक्क मिल के बणदा सिक्खा, सिख सतिगुर विच समाईआ। इक्क इक्क दा भेव लिखा, दूजी पट्टी ना कोए पढ़ाईआ। इक्क इक्क दा आदी हिता, अन्त इक्क इक्क विच समाईआ। इक्क दा इक्को इक्क पिता, इक्को इक्क जणेंदी माईआ। जिस दा कोई ना वण्डे हिस्सा, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। साचे भगतां करे रच्छा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अनमंगी दौलत पावे भिच्छा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जिस दा जन्म कर्म लेख पूरब लिखा, तिन्हां आपणे लेखे लाईआ। धूढ़ी मस्तक ला के टिक्का, टकयां दा लहिणा दए चुकाईआ। कर्म कागद कर के चिट्टा, दुरमति मैल धवाईआ। पन्ध मुका के पत्थर इट्टां, इक्को निरगुण जोत दए जणाईआ। शब्दी धार कढ्ढ के चिठ्ठा, गोबिन्द लहिणा दए वखाईआ। जिस दा झूजण वाला सुत दुलारा निक्का, निक्का वड्डा मेल मिलाईआ। पुरख अकाल बण के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। नेत्र नैण किसे ना दिसा, निरगुण धार खेल खिलाईआ। महल्ल अगम्म अथाह टिका, काया बंक डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप खिलाईआ। फलगुण कहे मेरा यारां परविष्टा, पुरख पुरखोतम दया कमाईआ। सृष्ट सबाई एका इष्टा, दीन दुनी देणा दृढ़ाईआ। जन भगतां अंदर खोल्हणी दृष्टा, दृष्टीकोन देणा दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म रस जणा के गृहस्ता, गहर गम्भीर परदा देणा उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल के रिश्ता, धुर दा जोड़ा लैणा उपजाईआ। जेहड़ा मुहम्मद नूं सुनेहड़े दिन्दा रिहा फ़रिश्ता, जबराईल सीस झुकाईआ। जो कलम शाही नाल चलाउँदा रिहा शकसता, शिकम अंदर ध्यान लगाईआ। रहिबर दस्सदा रिहा रस्ता, राह धुर दा इक्क वखाईआ। पुस्तक बन्न्हदा रिहा बस्ता, अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। सो हर घट अंदर वसदा, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। गीत सुणावे साचे जस दा, सिफ्ती राग अल्हाईआ। दन्दां नाल कदे नहीं हस्सदा, अन्तर खुशी दए प्रगटाईआ। नाम अणयाला

तीर कसदा, नेत्रां तों पिच्छे दए लगाईआ। जित्थे लहिणा इक्को अक्ख दा, दिब नूर करे रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए रहिणा इक्को वक्ख दा, महल्ल इक्को सोभा पाईआ। राग सुणना ना पए किसे भट्ट दा, धुर दी धार आप जणाईआ। जित्थे डोर नहीं कोई कटदा, तन्दी तन्द ना कोए तुड़ाईआ। उह गृह पुरख समरथ दा, जित्थे मिले इक्क वड्याईआ। सो सब दी पैज रखदा, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। परदा लाह अलखणा अलख दा, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। ग्यारां फग्गण कहे मेरा भाग, जन भगत दयां जणाईआ। गोबिन्द दा जगदा वेखो चिराग़, चरागाहां विच करे रुशनाईआ। धोणहारा दुरमति दाग़, पापां मैल गवाईआ। हँस बणावे काग, नाम मोती चोग चुगाईआ। सोई सुरती खोले जाग, नेत्र अक्ख उठाईआ। बिरहा ला वैराग, बिरहों अंदर दए उपजाईआ। त्रैगुण माया बुझाए आग, अमृत मेघ बरसाईआ। लेखा पूरब वेखणहारा आज, अज्ज दा भलक ना कोए बणाईआ। सति सच दा होणा काज, कंचन गढ़ कर रुशनाईआ। धर्म दी धार चले रिवाज, रवादार ना कोए बणाईआ। सारे इक्क दे होवण मुहताज, महबूब इक्क गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।
१२६४ गिअरां फग्गण कहे गोबिन्द दा लहिणा कर्ज़ा, मकरूज़ खुशी बणाईआ। दूसर होए कोए ना हर्जा, हर्जाना रहिण कोए ना १२६४
पाईआ। भगतां विच भगतां दा दरजा, दरज आपणे नाल कराईआ। लेखा इक्को साचे घर दा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ।
२० जो भाणा धुर दा जरदा, सीस जगदीस झुकाईआ। सो पल्लू इक्को फड़दा, टुट्टी गंढु वखाईआ। एह खेल पुरख नरायण नर दा, नर हरि आपणा राह चलाईआ। जेहड़ा सुत दुलारा कदे नहीं मर्दा, सो आपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। फलगुण कहे गोबिन्द दा लहिणा पूरब बाकी, बकता समझ कोए ना पाईआ। बिना शब्द तों वेखे कोए ना मार झाकी, अक्खां वाला अक्ख ना कोए उठाईआ। प्रभ दा खेल प्रभ दी राती, प्रभाती गोबिन्द नज़री आईआ। सच दुआर दा एका साथी, सज्जण धुरदरगाहीआ। जिस ने रचना रची साची, सच सच विच समाईआ। आपणा नाउँ रख अबिनाशी, निरगुण सरगुण वण्ड वण्डाईआ। कलयुग अन्तिम देवे दाती, दयावान दया कमाईआ। लेखा बणे कलम दवाती, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पाती, पतण इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। यारां फग्गण कहे क्यों नौ तों होए यारां बदली जगत कराईआ। इस दा वक्खरा अजब विहारा, विवहारी आपणे विच छुपाईआ। एह लेखा गोबिन्द वेख्या सरसा किनारा, आर पार ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल कीता इशारा, धुर दे शब्द नाल दृढ़ाईआ। कोल आ खड़ा जुझारा,

हथ्थ कमरकसे उत्ते टिकाईआ। साहिब किङ्डा सोहणा अखाड़ा, घमसान सोभा पाईआ। मैं नन्हां बच्चा दूल्हा तेरा लाड़ा, जोबनवन्ता नज़री आईआ। मेरी मिन्नत मेरा हाढ़ा, सीस साहिब दयां झुकाईआ। मैनूं दस्स उह इशारा, जो बिन कन्नां तों सुणदा चाँईं चाँईंआ। गोबिन्द किहा उठ वेख फेर दुबारा, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। जां तक्कया मिल्या नूर चमकतकारा, चमक चमक विच्चों रुशनाईआ। हुक्म नाद सुणया धुन्कारा, अगम्म आवाज़ सुणाईआ। एह लेखा अगली वारा, जन्म दा जन्म फेर बदलाईआ। रुत्त दी रुत्त नाल बहारा, बसन्त नाल फूल फुल्लां नाल बसन्त सोभा पाईआ। कलयुग दी काली धारा, धरनी दी धार दुहाईआ। कल्की दा कल अवतारा, निहकर्मी कर्म कमाईआ। गोबिन्द दा शब्द जैकारा, ढोला नाम अलाहीआ। तत्व दा तत अखाड़ा, बाले वज्जे वधाईआ। तिन्नां दा इक्क दवारा, दर ठांडा सोभा पाईआ। भगतां दा घर बाहरा, गृह मन्दिर इक्क जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सच जैकारा, जै जै कार दो जहान कराईआ। ओस ओसे वेले कर निमस्कारा, सीस दिता निवाईआ। एह खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग दा चौवीआं अवतारा, जिस दा रूप रंग चक्र चिहन् वरन बरन नज़र कोए ना आईआ।

★ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरबंस सिँघ दे नवित पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ★

जन भगत कहे मैं कदे ना मर्दा, मर्द मर्दाना दए वड्याईआ। भवजल पार जगत सागर तरदा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मैं मालक बणां ओस घर दा, जिस गृह बैठा धुरदरगाहीआ। साची मंज़ल हकीकी चढ़दा, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। परम पुरख परमात्म दर्शन करदा, बिन नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा चुक्के भय भउ डरदा, भयानक नज़र कोए ना आईआ। खेल वेख अगम्मी हरि दा, हरि हरि विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक्क रंगाईआ। जन भगत कहे मैं वेखे जगत संतापी रोग, दुखड़ा जगत लोकाईआ। चिन्ता हरख सोग, ग़मां विच दुहाईआ। ममता मोह विकार जगत तृष्ना लोच, लोचण नैण अक्ख शरमाईआ। बुद्धी मन कूड़ी करे सोच, सच समझ ना कोए दृढ़ाईआ। झूठा वेखां काया बंक कोट, तन वजूद संग ना कोए निभाईआ। बिन साहिब सतिगुर साचे शब्द लाए कोए ना चोट, चोटी चढ़ परदा ना कोए उठाईआ। सदा ताअने देवण लोक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहे मेरा काया नाता कूड़, सगला संग ना कोए रखाईआ। मन कल्पणा

करे मूढ़, बुध बिबेक ना कोए चतुराईआ। सच दवारयों वस्या दूर, नेरन नेरा पन्ध ना कोए वखाईआ। ममता मोह विकार कीता चूर, गढ़ हँकार ना कोए तुड़ाईआ। तन वजूद तपे तन्दूर, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सारे कहिंदे करमां दा कसूर, निहकर्मी अक्ख ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर इक्क सुहाईआ। जन भगत कहे मैं दस्सां इक्क संदेश, संदेसा धुर सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला एका ल्या वेख, एकँकारा नूर इलाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी भेख, जोती जाता पुरख बिधाता वेस वटाईआ। समझ सके ना कोई रंग रूप रेख, परदा अन्तर निरंतर ना कोए उठाईआ। दो जहानां खेले खेड, वड खिलाड़ी नज़री आईआ। जिस ने संसारी बणा के दिता भेज, लोकमात मात वड्याईआ। जोती जलवा दे के तेज, नूर तत विच समाईआ। साचा नाम दे संदेश, सुनेहड़ा इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक्क वखाईआ। भगत कहे मेरी आत्म सति, सति विच समाईआ। नाता छुट्टया काया कच्च, कंचन गढ़ वेख वखाईआ। जित्थे इक्को पुरख समरथ, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। महिमा दस्से नाम अकथ, अनबोलत राग सुणाईआ। वस्त अमोलक दे के वथ, खाली झोली दए भराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा दस्स के जस, वेद पुराणां दा खहिड़ा दए छुडाईआ। मंज़ल चाढ़ हकीकी हक, महबूब परदा अंदरों दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग सदा रंगाईआ। जन भगत आत्मा कहे मैं ओस प्रभू दी अंस, जो आदि अन्त अख्वाईआ। तत्तां कर के मेरा नाम रख्या सिँघ हरबंस, जगत जुगत विच वड्याईआ। कोट जन्म लेखे वेखणहार सहँस, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस दा सोहणा सच्चा भगतां वाला सरबंस, कुनबा इक्को इक्क वड्याईआ। प्रभ ठाकर मिल्या कन्त, हरि मालक शहिनशाहीआ। जिस दी रुत्त सदा बसन्त, ख़िज़ां रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दिता वखाईआ। आत्मा कहे मैं वेख्या सच घराना, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जित्थे वसे श्री भगवाना, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। धुर दे नाम दा इक्क तराना, जगत राग ना कोए सुणाईआ। सोहणा दिसे महल अटल मकाना, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मस्ती विच हो के मस्त दीवाना, चरण कँवलां सीस झुकाईआ। मैनूं भुल्ल गया आवण जाणा, अग्गा पिच्छा रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैं दस्सां खेल अगम्मी, ग़मां विच्चों बाहर कढाहीआ। मैं प्रभ दी धारों जम्मी, अन्त ओसे विच समाईआ। एह खेल नहीं कोई नवीं, जुग चौकड़ी चली आईआ। जगत नाता पवण स्वास दमी, दामनगीर पल्लू ना कोए फड़ाईआ। जिस ने सच रज़ा हुक्म वाली मन्नी, सीस जगदीस झुकाईआ। उह नेत्रहीण

होवे ना अन्न्ही, नेत्र लोचन इक्को इक्क खुल्हाईआ। दरगाह साची जावे भन्नी, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। सच प्रकाश दा बण के चन्नी, चन्द नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे विच समाईआ। आत्मा कहे मेरा तत्तां वाला कूड़ वजूद, नाता जगत विच रखाईआ। मंज़ल इक्को जित्थे मिले महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। जगत दवारा छुट्टी हदूद, बन्धन नज़र कोए ना आईआ। जिधर तक्कां उधर मौजूद, हरि करता शहिनशाहीआ। जिस दा अर्श तों उत्ते अरूज, अलीशान आपणी शान दए वड्याईआ। लोकमात विच्चों कर के कूच, सच दवारे सोभा पाईआ। जित्थे इक्को नाता पिता पूत, पुरख अकाला दीन दयाला सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग इक्क वखाईआ। भगत आत्मा कहे बिन प्रभ दी किरपा लग्गे कोई ना जड़्ह, बंसाँवली ना कोए वड्याईआ। मैं ओस मंज़ल गई चढ़, जित्थे इक्को नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करते किरपा दिती कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेरा पूरब जन्म लेखा पूरा करके वर, वारता अग्गे दिती जणाईआ। मैं कदे ना जावां मर, मरजीवत रूप ना कोए वटाईआ। ओसे दे हुक्म अंदर वसां काया घर, तत तत विच रखाईआ। ओसे दा अक्खर पढ़, निरअक्खर ढोला गाईआ। ओसे दे लग्गां लड़, जित्थों ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए वखाईआ। आत्मा कहे मैनूं हरबंस सिँघ कहि के जगत कहिंदे, आवाज़ां रसना नाल लगाईआ। मेरा खेल वेखदे रहे तन शरीर सहिंदे, दरोही दूर दुहाईआ। संगी साथी इक्ठे हो के बहिंदे, मन कल्पणा विच कुरलाईआ। वेंहदे रहे चढ़दे लैहन्दे, दक्खण पहाड़ अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा करे विचार, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। जिस दी समझ पावे कोई ना सार, परदा सके ना कोए उठाईआ। तन वजूद दा दुःख जगत वाला संसार, संसारीआं विच कुरलाईआ। आत्म रहत करे ना कोए विभचार, कुकर्मी कार ना कोए कमाईआ। अन्तर निरंतर इक्को इक्क दा प्यार, अन्तर प्रीतम आपणा आप बणाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां सांझा यार, सगला संग निभाईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, बातन खोजणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। आत्मा कहे मेरा मिल्या प्रभू निहकर्मी, कर्म कांड दिता गवाईआ। जिस दी धार विच्चों जरमी, अन्तिम ओसे विच समाईआ। मेरे अन्तश्करन दा बण के मरहमी, महिरम हो के वेख वखाईआ। अन्त निवास दे के आपणी सरनी, सच दवारे ल्या टिकाईआ। मैनूं रिहा कोई ना भरमी, भाण्डा भरम दिता भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क वखाईआ। घर वेख्या इक्क सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। दीपक जगे आदि निरँजणा,

१२६७
२०

जोती जाता डगमगाईआ। वेखणहारा दर्द दुख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। चरण धूढ़ करा के धुर दा मजना, दुरमति मैल धवाईआ। ठाकर स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बण के इक्को सज्जणा, साजण हो के मेल मिलाईआ। अन्तिम ओस दवारे वसणा, जित्थों बाहर ना कोए कढाहीआ। सच संदेसा इक्को दस्सणा, सब नूं आप सुणाईआ। भगत शरीर छड्डे ते गुरमुखां ने हस्सणा, रोण वाली रीत देणी बदलाईआ। एह लेखा समझा के गया जिस ने जन्म ल्या पटना, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। दोहां नूं मल के प्रेम दा वटना, जगत शहादत दिती भुगताईआ। गुरमुखां नूं ओस ने आपणी गोदी विच रखणा, जिस गोदी विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा जिस ने मन्नया बचना, बचपन ओसे दी झोली पाईआ। ओस नूं ओस ने ओस थाँ ते रखणा, जित्थों कदे ना होए जुदाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी जन्म मरन कटणा, जो नीहां विच ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अलखणा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परमात्म आत्म आत्म परमात्म आपणे विच समाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हरबंस सिँघ दे नवित पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड दा सोहणा अनन्द, अनरस आप उपजाईआ। जन भगतां हो बख्शंद, परम पुरख प्रभ दए वखाईआ। निरगुण धार बण के संग, नाता तोड़ निभाईआ। सच सुहञ्जणी सेज अगम्म पलँघ, आसण अबिनाशण इक्क प्रगटाईआ। जित्थे शब्द वज्जे मृदंग, दूजा नाद ना कोए शनवाईआ। लेखा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म विच समाईआ। झगड़ा मुक जाए माटी चम्म, चमन इक्को वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना पवण स्वासी दम, दमन आपणे विच कराईआ। हरख रहे ना सोग ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। नेत्र रोणा पए ना छम छम, छहबर अक्ख ना कोए वखाईआ। कल्पणा रहे कोए ना मन, मनसा मोह ना कोए हल्काईआ। लालच दिसे कोई ना धन, विकार हँकार ना कोए प्रगटाईआ। लोड़ रहे ना सूरज चन्न, दिवस रैण वेख वखाईआ। सुणना पए ना सरवण कन्न, रसना जेहवा ना कोए अलाईआ। जिधर तक्कां ओधर श्री भगवन, निरगुण नूर नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर रिहा वखाईआ। जन भगतो सचखण्ड दवारा किड्डा सोहणा, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। ऐर ग़ैर ओथे दिसे ना कोए पराहुणा, संगी साथी संग ना कोए वखाईआ। रसना जेहवा शास्त्र सिमरत वेद पुराण पए कोई ना गाउणा, चारे बाणी वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

बिस्तर सेज जगत लेफ तलाई ना पए सौणा, खटीआ खाट ना कोए वखाईआ। जल पाणी पए ना नहाउणा, वस्त्र तन ना कोए हंढाहीआ। इष्ट देव पए ना कोई मनाउणा, ग्रन्थां वाली ना कोए पढ़ाईआ। ठाकर स्वामी पए ना कोए मनाउणा, निउँ निउँ ना लागे पाईआ। आलस विच्चों पए ना कोए उठाउणा, निंद्रा अक्ख ना कोए समाईआ। कलमे पढ़ के आपणा आप ना पए पर्चाउणा, जगत विद्या विच सालाहीआ। ओथे इक्को पुरख आकल दीन दयाल दा दर्शन पाउणा, जिस दा नूर नूर जोत रुशनाईआ। महल अटल इक्क सुहाउणा, बिन दीआ बाती कमलापाती डगमगाईआ। बिन अक्खां दर्शन पाउणा, तृष्ना तृखा रहे ना राईआ। सदा सुख दी नींदे सौणा जित्थों सुत्तयां ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतो सचखण्ड दवारा किड्डा सोहणा, प्रभ सोहणी बणत बणाईआ। जित्थे तत्तां वाला शरीर पए ना कोई वसाउणा, निरगुण जोत जोत विच मिलाईआ। दर दरवाज़ा पए ना कोए खुल्हाउणा, कुण्डी खिड़की ना कोए खड़काईआ। मंज़ल पैंडा पन्ध पए ना कोए मुकाउणा, बणना पए ना पाँधी राहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना पए किसे पढ़ाउणा, अक्खरां वाली ना कोए लिखाईआ। जिधर तक्को इक्को इक्क नज़री आउणा, नर निरँकार सच्चा शहिनशाहीआ। जिस ने पूरब लहिणा सर्ब चुकाउणा, चुक्क चुक्क आपणी गोद उठाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां चुक्क चुक्क आपणे गल लाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। जन भगतो सचखण्ड दी खेल ख़ासी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। इक्को वसे पुरख अबिनाशी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। खेल करे जोती जाता सर्ब दी जाती, जगजीवण दाता वड वड्याईआ। नाम संदेसा दे के धुर दी पाती, पत्तन आपणा दए वखाईआ। गुरमुख लहिणा मुकदा रिहा राती, राती प्रभाती आपणा रंग रंगाईआ। अमृत दे के बूँद स्वांती, सांतक सति सति कराईआ। जन भगतां जन्म जन्म दी मेटे उदासी, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। आवण जावण मेट के वाटी, पन्ध चुरासी दए मुकाईआ। मंज़ल चाढ़ के आपणी घाटी, सच दवारा दए वखाईआ। कर प्रकाश आपणी बाती, लोइण लोचण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर जोत आदि आदी, जुग जगत जुगादि वेख वखाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड दवारा धुर दी बस्ती, वसावणहारा बेपरवाहीआ। जिस विच वसे इक्को पुरख अकाल दी हस्ती, दूसर नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत साचे नाम दी बख्शे मस्ती, खुमारी दो धारी ना रूप वटाईआ। ओथे याद ना आवे रहिणा उत्ते धरती, धरनी दी आस ना कोए रखाईआ। इक्को मिल के प्रीतम अर्शी, आसा मनसा विच खपाईआ। जन भगतां सदा बणया रहे दर्दी, दीनां अनाथां गोद उठाईआ। एह खेल अगम्मी ओस हरि दी, जो हर हिरदे अंदर डेरा लाईआ। कोटां विच्चों जन भगत आत्मा मंज़ल एह चढ़दी, लख चुरासी अधवाटे बैठी लोकाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला पढ़दी, अक्खर धार निरअक्खर विच दरसाईआ। एह खेल ओस अगम्मे घर दी, जित्थे दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। इक्को जोत प्रकाश रूप हो के बलदी, नूर नुराना डगमगाईआ। सोभा बणे निहचल धाम अटल दी, सिँघासण आसण इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्क सुहाईआ। जन भगतो सचखण्ड दवारा सोभावन्त, गहर गम्भीर आप बणाइंदा। जिस गृह वसे धुर दा स्वामी कन्त, हरि करता डेरा लाइंदा। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी मन्नदे रहे भगवन्त, अबिनाशी करता सोभा पाइंदा। जिस दी सिफ्त सालाह गुर अवतार पैगम्बर गाउँदे गए सन्त, रागां नादां विच कर शनवाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बेअन्त, बेपरवाही विच समाईआ। सो लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी चारे बाणी चार कुण्ट चारे जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, जिस गृह मन्दिर अंदर निरगुण धार जोत रुशनाईआ। जन भगतो सचखण्ड दवारा सोहणा सोभनीक, पवित्त नज़री आईआ। जित्थे वसे इक्क जिस दे विच हक तौफ़ीक, तोहफ़े सब नूं रिहा वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी निक्की धार बारीक, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सो जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल करे ठीक, ठाकर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं बीस इकीसे हरि जगदीसे जो करदे गए उडीक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तिन्नां दी साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला करे तस्दीक, वेखणहारा थाउँ थाँईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के ढोला धुर दा साचा गीत, आत्म परमात्म लेखा रिहा चुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के आपणी प्रीत, प्रीतम हो के पुरखोतम हो के परम पुरख प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार वखा के इक्क अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। गुरमुखां आत्म कर के ठांडा सीत, अग्नी तत दए बुझाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ मसीत, काया काअबा

इक्क दरसाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को हुक्म इक्को कलमा इक्को नाम इक्को हदीस, इक्को हज़रत हरि हज़ूर साहिब इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, सचखण्ड दवारा एकँकारा निरगुण धारा आपणा आप लए प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारा सच सुहञ्जणा, साहिब स्वामी अन्तरजामी सोभा पाईआ। करे प्रकाश आदि निरँजणा, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। वसे दाता दर्द दुख भय भंजना, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आपणा डेरा लाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी साजण सज्जणा, सन्बंधी इक्को इक्क अख्वाईआ। जिस दे हुक्म अंदर चार कुण्ट दहि दिशा सब ने भज्जणा, दिवस रैण चलण वाहो दाहीआ। सच दवारा दर दरवेश हो के सब ने मंगणा, मंगते हो के झोली डाहीआ। मेहरवान हो जिन्हां दा काया माटी चोला रंगणा, दुरमति मैल अंदरों बाहरों दए धवाईआ। साचा दे के इक्क अनन्द अनन्दना, निज आत्म रस चखाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन सांझी दरस के बन्दना, बन्दगी इक्को इक्क दरसाईआ। लोकमात मार झात गुरमुखां कट लख चुरासी फंदना, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। धाम अगम्मे निरगुण जोत आपे टंगणा, महल अटल उच्च अथाह आप वखाईआ। जित्थे नाद धुन शब्द बिना आवाज़ तों वज्जे मृदंगना, भेव अभेदा इक्क खुल्हाईआ। तिस दवारे जन भगत सुहेले गुरमुख साचे सन्त अन्त लँघणा, नाता तत्तां वाला छुडाईआ। अग्गों मिले साहिब सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह शहिनशाह पुरख अकाला दीन दयाला दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द शब्दी चाढ़े रंगणा, (रंगत) उतर कदे ना जाईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ हज़ारा सिँघ दे गृह अमृतसर ★

जन भगत तेरा सचखण्ड दवारा, सच साचा इक्क जणाईआ। जिस गृह मन्दिर वसे आप निरँकारा, निरगुण निरवैर सोभा पाईआ। दीवा बाती जगाए अगम्म अपारा, कमलापाती करे रुशनाईआ। नाम सुणाए अगम्मी धुन्कारा, अनादी नाद शनवाईआ। परदा लाह के बजर कवाड़ा, घर इक्को इक्क वखाईआ। झगड़ा मुका के पंज तत विकारा, अग्नी तृष्ना अग्ग बुझाईआ। हउमे हंगता रहे ना कोई दीवारा, जूठ झूठ दए चुकाईआ। दरस वखा के एकँकारा, अकल कलधारी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे परदा लाहीआ। सचखण्ड जन भगत घराना, गृह मन्दिर वज्जदी रहे वधाईआ। तख्त निवासी नज़री आए श्री भगवाना, शाहो भूप सच्चा शहिनशाहीआ। जलवा नूर जोत

महाना, शाह सुल्तान डगमगाईआ। तख्त निवासी हो प्रधाना, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा नौजवाना, मर्द मर्दाना आपणा खेल खिलाईआ। नित नवित पहरे बाणा, निरगुण सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। निरअक्खर अक्खर कर प्रधाना, जगत खाणी बाणी राह चलाईआ। सच नाम झुला निशाना, चार कुण्ट आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेला रहिण ना देवे कोई बेगाना, वैरी मित्र आपणे घर वसाईआ। किरपा निधान हो मेहरवाना, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। खेले खेल हरि वाली दो जहानां, दोए दोए आपणा हुक्म वरताईआ। सच वखाए इक्क मकाना, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। हर घट अन्तर हो के जाणी जाणा, जन भगत सुहेले मेल मिलाईआ। प्रेम प्रीती अंदर दे के पद निरबाना, सच ठिकाणा इक्क वखाईआ। जित्थे पुज्जे कोई ना राजा राणा, शाह सुल्तानां हथ्थ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा दर, धुर दा मन्दिर इक्क सुहाईआ। जन भगतां सचखण्ड दवारा एक, एकँकारा आप जणाईआ। जित्थे मिले प्रभू दी टेक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। माया ममता लाए कोए ना सेक, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। कूड़ा दिसे कोए ना भेख, पखण्डी रूप ना कोए वखाईआ। सुहञ्जणा

१३०२ होवे इक्क देस, सच स्वामी डेरा लाईआ। रुत्त मौली रहे बिना चेत, पत्त टहणी आप महकाईआ। त्रैगुण मूल ना लाए १३०२

२० सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना लेख, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। इक्को सुणे सच संदेश, २०

ढोला धुरदरगाहीआ। नर नरायण लए पेख, लोचण लोचण अक्ख खुल्हाईआ। जो सदा रहे हमेश, रविआ हर घट थाँईंआ। सो वेखणहारा पूरब पिछला परदेस, परदेसीआं देस इक्क समझाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए केती केत, कोटन कोटि फेरीआं गए पाईआ। नज़र ना आवे नेतन नेत, निज नैण ना कोए खुल्हाईआ। सो साहिब सातिगुर पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां बख्शे इक्को टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारा सब तों निराला, निराकार आप वखाईआ। जिस गृह वसे दीन दयाला, दयानिध वड्डी वड्याईआ। सोभावन्त करे सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को इक्क जणाईआ। जिस गृह दीपक अगम्मी इक्को बाला, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, घर मन्दिर इक्क प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारा जग नेत्र नज़र ना आए अक्ख, लोचन मिले ना कोए वड्याईआ। जिन्हां उत्ते किरपा करे पुरख समरथ, मेहर निगाह नैण उठाईआ। उन्हां अन्तर आत्म दे के नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सांझा दस्स के जस, सोभत इक्को इक्क दरसाईआ। अमृत झिरना दे के निजर रस, रस्ता आपणा दए प्रगटाईआ। गुरमुख सन्त

सुहेला जाए नठ नठ, जगत विकार ना कोए अटकाईआ। झगड़ा मुकावे अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नीर ना कोए वहाईआ। दूई द्वैती मेट के फट्ट, ममता मोह विकार मिटाईआ। लेखे ला के हड्ड मास नाड़ी रत, रतन अमोलक हीरा लए बणाईआ। आपे जानणहारा सब दी मित गत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बख्शे इक्क सरनाईआ। जिस दा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सच, सच सति विच समाईआ। सो लूं लूं अंदर जाए रच, रस आपणा दए चखाईआ। दयावान दया करे पुरख समरथ, मेहरवान मेहरवान मेहर निगाह उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सच दवारे अन्तिम करे इक्क इकठ, जित्थे ना कोई शिवदवाला मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, गुरदवारा नज़र कोए ना आईआ।

★ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ दलीप सिंघ दे गृह गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर ★

सचखण्ड कहे मैं तक्कां राह, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कवण वेला पुरख अकाल दीन दयाल बणे गवाह, खेवट खेटा आपणा रूप बदलाईआ। जन भगतां साचे सन्तां देवे सति सलाह, साची सिख्या इक्क समझाईआ। वाहिद कलमा दए पढ़ा, नाम इक्को इक्क उपजाईआ। नूरी दस्स के हक खुदा, खुदी तकब्बरी मेट मिटाईआ। साचा नाअरा दए लगा, ढोला धुरदगाहीआ। आत्म परमात्म मेला लए मिला, जगत विछोड़ा दूर कराईआ। मार्ग साचा दए वखा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सिरे दवारे दए पुचा, जोती शब्दी धार समाईआ। मैनूं चाओ घनेरा चढ़े अगम्मा चा, खुशीआं विच राग अल्लाईआ। जिस वेले भगत सुहेला मिले आ, दर दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमाईआ। सचखण्ड कहे मैं रखां उडीक, आदि जुगादि ध्यान लगाईआ। कवण वेला किरपा करे हरि जगदीश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन भगतां दस्स के अगम्मी रीत, पतित पुनीत दए बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गा के गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा दए उठाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी हो के वसे चीत, चेतन सुरती आप कराईआ। लेखा मुका के हस्त कीट, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। काया चोली रंग चढ़ा के इक्क मजीठ, दुरमति मैल अंदर बाहर धवाईआ। साची वस्त अमोलक कर बख्शीश, रहमत आपणी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क सुहाईआ। साचा घर सचखण्ड रंग राता, हरि करता आप उपजाईआ। जित्थे वसे पुरख बिधाता, पारब्रह्म प्रभ सोभा पाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राता, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई ढोला

ना कोई गाथा, ना कोई रसना जेहवा करे पढ़ाईआ। ना कोई निरगुण सरगुण दिसे नाता, एका नूर जोत रुशनाईआ। ना कोई सेजा बिस्तर खाटा, दर दुआर ना कोए प्रगटाईआ। ना कोई मंज़ल दिसे वाटा, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। ना कोई सेवक ना कोई दासी ना कोई दासा, गुर चेला नज़र कोए ना आईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा, जल धारा वहिण ना कोए वहाईआ। ना कोई वस्त्र दिसे ओढन पाटा, चीथड़ रंग ना कोए वखाईआ। इक्को नूर अगम्मी जोती जोत जोत प्रकाशा, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जुग चौकड़ी ख़ेले खेल तमाशा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा भेव चुकाईआ। जन भगतां सदा उडीके रखे आसा, आसावंद इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दवारा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड कहे मैं तक्कां बिना अक्ख, प्रभ आसा दिती वधाईआ। जन भगत सुहेले होण प्रतख, पारब्रह्म दए वड्याईआ। इक्क जैकारा बोलण अलख, दूजा नाउँ ना कोए ध्याईआ। राह तक्कण धुर दा सच, सच मिले वड्याईआ। भाग लगावण काया माटी कच्च, कंचन गढ़ मिले वड्याईआ। सब दी सांझी परमात्म आत्म वाली होवे मत, मता अवर ना कोए पकाईआ। जगत तृष्ना मूल ना उबले रत, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। अमृत झिरना निजर रस लैण चख, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। घर स्वामी वज्जे वधाई तत शरीर नाता जावण छड्ड, माटी ख़ाक ख़ाक विच मिलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर पार कर के हद्द, दर घर साचा वेख वखाईआ। जित्थे भगत भगवान होवण ना कदे अलग, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। सच सरनाई जावण ढठ्ठ, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, मालक ख़ालक प्रितपालक दया कमाईआ। सचखण्ड कहे मैं वेखां भगत सुहेले, हरि करते दिती वड्याईआ। जुग चौकड़ी करां मेले, नित नवित ध्यान रखाईआ। कलयुग अन्त अचरज खेल प्रभू कल खेले, कलकाती वेख वखाईआ। हरिजन वसाए धाम नवेले, गृह मन्दिर इक्क उपजाईआ। जित्थे होवे प्रकाश बिन बाती तेले, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, गृह मन्दिर इक्क वड्याईआ। सचखण्ड कहे मेरा अन्त अख़ीरी इक्क संदेसा, जुग चौकड़ी विछड़यां दयां जणाईआ। कूड़ कल्पणा प्रभ दी करयो भेंटा, मन मनसा मोह मिटाईआ। सब दा लहिणा मुके लेखा, चुरासी गेड़ा रहे ना राईआ। जो साहिब सतिगुर दा निरगुण धार हो के बणे बेटा, पिता पूत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दुआर एकँकार सदा रखे हमेशा, जुग चौकड़ी रूप ना कोए बदलाईआ।

सति धर्म कहे मैनूं प्रभ दी एका ओट, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा प्रकाश निर्मल जोत, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार करे रुशनाईआ। दुरमति मैल कढ्ढे अन्तर खोट, निरंतर आपणा भेव खुल्हाईआ। मन बुद्धी तों परे दस्से सोच, चंचल चित ना कोए वड्याईआ। सुरती शब्द समझावे खोज, परदा ओहला आप उठाईआ। सच दवारे बख़्श के मौज, रस अगम्मा मुख चुआईआ। झगड़ा मुका के लोक परलोक, सच सलोक इक्क सुणाईआ। लेखा रहे ना हरख़ सोग़, चिन्ता ग़म दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति धर्म कहे मेरी इक्को आस, हरि करता दए वड्याईआ। जुग जन्म दी पूरी होवे आस, तृष्ना ममता मोह मिटाईआ। जन भगतां लेखे लावे पवण स्वास, साह साह आपणा नाम जपाईआ। आत्म परमात्म मिल के पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। निज घर मन्दिर अंदर स्वामी हो के रखे वास, वसल असल आपणा इक्क समझाईआ। निज नेत्र कर प्रकाश, लोयण आपणा दए खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे रंग आप रंगाईआ। सति धर्म कहे मेरी इक्को आसा मनसा, दूजी ओट ना तकाईआ। हरिजन वेखां साचे सन्ता, गुरमुख गुर गुर सेव कमाईआ। चार वरन अठारां बरन बणे इक्को बंसा, द्वैती नज़र कोए ना आईआ। मन हँकारी रहे ना कंसा, दुष्ट दुराचारी दए खपाईआ। मिले वड्याई साचे सन्ता, सति सतिवादी वेख वखाईआ। मेल मिलाए धुर दा कन्ता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची भेव चुकाईआ। सति धर्म मैं निउँ निउँ रिहा झुक, हरि सरन मिले सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पैंडा जाए मुक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग साचा पुरख अकाल दा उठे इक्को सुत, नौजवान मर्द मर्दान आपणी लए अंगड़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल दी सुहञ्जणी करे कुक्ख, जगत जन जणेदी वेखे माईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां दर्दीआं वण्डे दु:ख, दलिद्रीआं दलिद्र दूर कराईआ। जन भगतां दी धारों पए उठ, काया मन्दिर अंदर लए अंगड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह विकार हँकारा कढ्ढे कुट्ट, धर्म दी कुटीआ करे सफ़ाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक देवे हभ कुछ, कुशलता विच वेखे थाउँ थाँईंआ। लेखे लावे जन भगत मानस मनुक्ख, मानव आपणा रूप दरसाईआ। सच दुआर एकँकार घर स्वामी जाए पुज्ज, अन्तरजामी सोभा पाईआ। भाउ दुतीआ रहे ना दुज, एका अंकर एका गृह दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक्क उपजाईआ। सति धर्म कहे

मैं नित नित रिहा उडीक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कवण वेला प्रभ बदले रीत, सतिजुग साचा राह चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन तस्दीक, शहादत इक्को वार भुगताईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाला बणे मीत, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को गावे गीत, ढोला धुर दा राग इलाहीआ। झगड़ा मुक्क जाए शिवदवाला मठ्ठ मन्दिर मसीत, काया काअबा होए रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला नज़री आए इक्क अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, कीटां आपणे घर वसाईआ। चरण कँवल सच सरनाई बख्शे इक्क प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। रहमत विच नाम करे बख्शीश, बख्शणहार नूर इलाहीआ। साचा कलमा इक्क हदीस, हरि हज़रत दए पढ़ाईआ। सन्त सुहेले बणा आपणे अज़ीज़, प्रेम प्यार मुहब्बत विच रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स तमीज़, तमा तमन्ना कूड़ी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, दर दरवाज़ा इक्क दरसाईआ। सति धर्म कहे मैं तक्कां धुर दा राह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी मिले मलाह, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देण सलाह, मश्वरा इक्को इक्क दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दी सारे लओ पनाह, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जो बख्शणहारा लख चुरासी गुनाह, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। सब दा इक्को राम अल्ला वाहिगुरू नूरी जल्वागर खुदा, खुदी कूड़ी दए मिटाईआ। भगत उधारना पैज संवारना जिस दी अदा, अदालत इक्को इक्क वखाईआ। जित्थे देवे ना कोई सज़ा, बन्दीखाने ना कोए टिकाईआ। मेहर विच मुहब्बत विच मेहरवान महबूब दरस दए वखा, बिन लोयण लोयण आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर घर ठांडे सोभा पाईआ। सति धर्म कहे प्रभू आसा मनसा कर पूर, दर ठांडे सीस निवाईआ। जन्म जन्म दा मेट कसूर, कसम खा के दयां दुहाईआ। दर तेरे चाकर बणां मज़दूर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं साहिब स्वामी हाज़र हज़ूर, हरि वड्डा इक्क अख्वाईआ। पन्ध मुका दे नेड़ा दूर, घर घर विच कर रुशनाईआ। काया मन्दिर जलवा वखा दे कोहतूर, नूरे चश्म चश्म दीद चमकाईआ। दरस दखा आ ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर फेरा पाईआ। सदी चौधवीं सारे कीते मजबूर, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। गढ़ तुट्टे ना कोए ग़रूर, ग़ुरबत विच वेखी लोकाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, जूठ झूठ पन्ध मुकाईआ। जन भगतां बख्श आपणी धूढ़, धूढ़ी टिक्के मस्तक लैण छुहाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, नाम निधाना झोली पाईआ। तूं दाता योद्धा बीर सूर, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर,

निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत उधारना तेरा दस्तूर, साचे सन्तां गुरमुखां गुरसिखां सद आपणे विच समाईआ।

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ जागीर सिँघ दे गृह रत्ते वाल ★

फलगुण कहे मेरी थित आई इक्की, एकँकार निरँकार दयां दृढ़ाईआ। शब्द अगम्मी वेख बिन अक्खरां गोबिन्द वाली चिठ्ठी, पात्र परदा आप उठाईआ। जिस विच धार अगम्मी लिखी, वाच के सके ना कोए समझाईआ। जेहड़ी हथ्थ किसे नहीं दित्ती, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। उस विच इशारा अगम्मी सिक्खी, जो साख्यात प्रभ दा दर्शन पाईआ। जिस दी धार निरगुण रखी निक्की, वड्डियां वड ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। फलगुण कहे मेरे मेहरवान, महबूब तेरी सरनाईआ। मैं मंगां एका दान, एकँकार झोली डाहीआ। साचा बख्श धर्म ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दे मिटाईआ। तेरा डंका वज्जे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड होवे शनवाईआ। लख चुरासी
१३०७ होवे तेरी आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म सारे ढोला गाण, तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। शरअ शरीअत १३०७
रहे ना कोए शैतान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। निज आत्म परमात्म होणा निगाहबान, निज लोयण देणा खुल्हाईआ।
२० बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द तेरी उपजे कलाम, धुन आत्मक राग देणा सुणाईआ। नाम खुमारी अगम्मी देणा जाम, अनरस २०
आपणा रस चखाईआ। ढोला गीत संगीत सुणाउणा बिना कान, बिन आवाज़ राज़ जणाईआ। साचा मन्दिर सुहाउणा इक्क मकान, मकबरयां दा डेरा देणा ढाहीआ। तेरा धर्म दा झुल्ले इक्क निशान, गुर अवतार पैगम्बर खुशी मनाईआ। सृष्टी दृष्टी बदल दे नज़ाम, नौबत आपणा नाम हक वजाईआ। मनसा मन रहे ना कोए गुलाम, तृष्ना तृखा देणी गवाईआ। दो जहानां दिसे तेरा इंतज़ाम, बन्दोबस्त वेख लोकाईआ। जन भगतां आत्म बख्श सच्चा बिसराम, विश्व आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। फलगुण कहे इक्की मिती मेरा मित्र, पीआ प्रीतम प्यारा नज़री आईआ। जो निरगुण धारों आवे नितर, जगत जन्मे कोए ना माईआ। सब दी चोटी चढ़े सिखर, सच सिँघासण डेरा लाईआ। मुलम्मा कूड़ मेटे पित्तल, माटी हाटी खोज खुजाईआ। सच संदेसा देवे बण के धुर दा पित्तन, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। कलयुग लहिणा देणा आवे नजिठ्ठण, सतिजुग साचा राह धर्म चलाईआ। जगत वासना मन कल्पणा आवे जित्तण, वैरी अंदरों बाहर कढाहीआ। धुर दा लेख अगम्मी आवे लिखण, कातब बण के कलम चलाईआ। जन भगतां

प्रेम प्रीती विच आवे विकण, कीमत अग्गे ना कोए रखाईआ। साची सिख्या जिस तों गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी सिक्खण, सो साख्यात प्रगट हो के आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क रंगाईआ। फलगुण कहे मेरा इक्कीवां अज्ज दिहाढ़ा, त्योहार सोहणा नज़री आईआ। मैं तक्कां पुरख अकाल इक्को लाड़ा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जिस दा जलवा जोत जोत नज़ारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जिस दा नाद शब्द धुन धुन्कारा, अगम्मी राग सुणाईआ। जिस दा विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, त्रै पंज दा मेला करे सहिज सुभाईआ। जिस नूं झुकदे गुर अवतारा, पैगम्बर निउँ निउँ लागण पाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी इज़हारा, रसना जेहवा ढोले सिफ्तां वाले सालाहीआ। जिस दा तीर्थ तट किनारा, अठ्ठ सठ्ठ वेखण रोवण मारन धाहींआ। जिस दा लहिणा देणा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत समुंद सागर खोज खुजाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलदा रहे बिवहारा, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगारा सांझा यारा, महबूब महिबान बीदो जगत विच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रंग रंगीला आपणा रंग रंगाईआ। फलगुण कहे मेरा इक्कीवां आया दिन, दिवस रैण ख़ुशी
१३०८ मनाईआ। जुग चौकड़ी वक्त लँघाया गिण गिण, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मिण मिण, पैमाइश विच १३०८
२० वण्ड वण्डाईआ। सच सरूप दा मिल्या कोई ना चिन्न्, चिन्ता ग़मी ना कोए मिटाईआ। खेल वेखदा रिहा भिन्न भिन्न, २०
भिन्नड़ी रैण ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणा दए खुल्हाईआ। फलगुण कहे मैं साहिब स्वामी तक्कां मीत, शाह सुल्ताना नज़री आईआ। जिस दा ढोला इक्को गीत, दो जहान रिहा सुणाईआ। जिस ने झगड़ा मुकाउणा मन्दिर मसीत, काया काअबा दए वखाईआ। सतिजुग चलाउणी धुर दी रीत, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। लख चुरासी परखे नीत, नीतीवान होए सहाईआ। जन भगतां इक्को नाम करे बख़्शीश, रहमत रहीम आप कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला गाउणा गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर दए समझाईआ। सति सतिवादी साची चले रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए दृढ़ाईआ। फलगुण कहे मेरा महीना सोहणा रुत्त, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। कीता खेल अबिनाशी अचुत्त, चेतन सुरती लैणी कराईआ। इक्क हुक्म संदेसा लैणा पुच्छ, आजज़ हो के सीस झुकाईआ। कवण कूट कवण दवारे रहें लुक, कवण आसण सिँघासण डेरा लाईआ। कवण तेरा नाम कवण राम कवण शाम कवण पैग़ाम कवण पढ़ें तुक, तुख्म तासीर कवण बदलाईआ। कवण अमृत

नाम धुर दा जाम आबेहयात देवें घुट, हयाती विच्चों ज़िंदगी दएं बदलाईआ। किस बिध साहिब स्वामी अन्तरजामी सतिगुर स्वामी ठांडे सीते आवण जावण लख चुरासी पैंडा जाए मुक, जन्म जन्म ना कोए बदलाईआ। सच दुआर एकँकार तेरी सरन सरनाई मिले सुख, सुख आत्मा परमात्मा विच समाईआ। दीन दयाल हो कृपाल आपणा बणाएं धुर दा सुत, अबिनाशी अचुत हो के वेख वखाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा कूड़ कुड़यार भाण्डा जाए फुट्ट, माया ममता मोह विकार हँकार बाहर कढाहीआ। तेरे चरण कँवल उपर धवल सरन सरनाई जाईए झुक, बन्दना विच बन्दगी मुछन्दगी विच तेरा राह तकाईआ। फलगुण कहे इक्क तेरी रखी ओट, सच नगारे ला चोट, भाग लग्गे किला कोट, बंक रंक दे वड्याईआ। तेरा प्रकाश होवे निर्मल जोत, झगड़ा रहे ना वरन गोत, मन बुद्धी दी परे होवे सोच, समझ विच रमज़ आपणी दे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा प्रकाश लोक परलोक, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना इक्को नज़री आईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ साधू सिँघ दे गृह १ सी० सी० राजस्थान ★

१३०६ २०

पंजाह सठ्ठ साल पिच्छो जे मिल जाए इक्क नुकता, नुकता नज़र दए बदलाईआ। जिस नुकते तों पैंडा मुकदा, मंज़ल अगली रहे ना राईआ। घर मार्ग मिले साचे सुख दा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुके मोह विकार कूड़ कुड़यार दुःख दा, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जाम प्यावे हकीकी सति सतिवादी चुप दा, बिन रसना जेहवा अनरस दए चखाईआ। नाम निधान शब्द ज्ञान देवे इक्क तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जित्थे परमात्मा आत्मा कोलों पुछदा, काया मन्दिर साचे काअबे फोल फुलाईआ। परदा ओहला रहे ना लुक दा, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। झगड़ा मुका अन्धेरे घुप दा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बाहरों तत्तां वाला शरीर मनुक्ख दा, अन्तर निरंतर दाता बेपरवाहीआ। जो आवण जावण गेड़ चुकाए जननी कुक्ख दा, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। धुर दा नाता जोड़ के पिता पुत्त दा, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। नुकता कहे जे मैनूं लए कोई जाण, अन्जाणत दयां जणाईआ। सति धर्म वखा निशान, निशाने पिछले दयां चुकाईआ। अन्तर दे के इक्क ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दूर कराईआ। अमृत बख्श के पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। नाम धुन दे धुनकान, सोई सुरती सुरत जगाईआ। घर स्वामी मेल भगवान, भाग पिछला झोली पाईआ। प्रकाश होवे काया मन्दिर मकान, निरगुण नूर जोत

रुशनाईआ। धुर दा ठाकर मिले आण, गहर गम्भीर गुण सागर फेरा पाईआ। मुहब्बत विच महबूब होवे मेहरवान, हक हकीकत परदा दए उठाईआ। साची मंज़ल करे आसान, मुश्किल नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार महल अटल वखाए जित्थे वसे शहिनशाह सुल्तान, भूपत भूप आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। पंजाह सठ्ठ साल जिस दे गए बीत, दिवस रैण आपणा पन्ध मुकाईआ। काया होई ना ठंडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। बिन हरि किरपा त्रैगुण होवे ना कोए अतीत, त्रैभवन धनी दरस कोए ना पाईआ। मन कल्पणा कोई ना सके जीत, चंचल चित ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मुके ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना डेरा ढाहीआ। जिस वेले साहिब सतिगुर करे बख्शीश, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सच दवारे बख्श के प्रीत, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, घर इक्को दए वखाईआ। जित्थे साहिब स्वामी बैठा बीठलो बीठ, नामें दा ठाकर डेरा लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धर्म दुआर दा इक्को गीत, सोहला धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। साचा रंग कहे मेरी सब तों वक्खरी रंगत, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि बैठे रहे मंगत, दर ठांडे रहे झोली डाहीआ। कोटन कोटि खोजदे रहे पंडत, अक्खर वक्खर राह तकाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर करदे रहे मिन्नत, निउँ निउँ नैण अक्ख शरमाईआ। जोगी जती करदे रहे हिम्मत, सन्यासी वैरागी पन्ध मुकाईआ। साची मिली किसे ना खिल्लत, ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्त खुआरी चार कुण्ट दहि दिशा दिसे ज़िल्लत, धर्म दी धार ना कोए बंधाईआ। धर्म पुजारी वेखे निन्दक, दुष्ट दुराचार देण दुहाईआ। सच दुआर मन्ज़ूर होवे किसे ना मिन्नत, जोती जोत ना कोए समाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सच नाम दी होई किल्लत, किल विख पाप ना कोए गवाईआ। माया ममता मोह विकार फस्या मिलख, नाम धन ख़ज़ीना हथ्थ ना किसे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा आप खुल्हाईआ। भेव कहे मैं कदे ना खुल्ल्हया, बिन पुरख अकाल ना कोए खुल्हाईआ। जग कीमत पाई ना कोई मुल्लया, वज़नां विच वज़न ना कोए रखाईआ। सच दवारे धर्म दवारा इक्को खुल्ल्हया, जिस दा तोलणहारा इक्को नज़री आईआ। जिस दा रस नाम ना डुल्ल्हया, धरनी धरत धवल धौल ना कोए वड्याईआ। सो भाग लगावे भगतां कुल्लया, कुल्ली काया काअबा वेख वखाईआ। हरिजन हरि भगत हरि सन्त गुरमुख गुरसिख सूफ़ी सन्त फ़कीर कदे ना रुल्लया, माटी ख़ाक ना कोए मिलाईआ। जो पुरख अकाल दीन दयाल दे दवारे आ जाए भुल्लया, भटकणा विच्चों अटकन दए मिटाईआ। उस दा दीवा चिराग़ चश्म कदे ना

गुल्लया, जोती जोत जोत रुशनाईआ। एथे ओथे उह दो जहान फलया फुल्लया, फलगुण रुत्त फुल्ल फुलवाड़ी नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार अगम्म अथाह बेपरवाह एका एकँकार देवे अनमुल्लया, अनडिठ्ठी दौलत महाबदौलत धुर झोली पाईआ।

★ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ महा सिँघ दे गृह २५ बी० बी० राजस्थान ★

सति धर्म कहे प्रभ मेरी इक्क बेनन्ती, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दयां जणाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा कन्ती, सति स्वामी अन्तरजामी नज़री आईआ। तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा अक्खर विच पंगती, पारब्रह्म भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। तेरी विद्या रसना जेहवा बोध अगाधी बणी पंडती, तकरीर तहिरीर विच बदलाईआ। साची समझ ना आई किसे इक्क अंक दी, अन्तश्करन विच शंका ना कोए मिटाईआ। मंज़ल मुकी ना दो जहान इक्क बंक दी, कोटन कोटि पाँधी चढ़ चढ़ थक्के राहीआ। जगत रुहानी वेखी खेल सन्त दी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी तेरा राह तकाईआ।
१३११ दो जहान नौजवान श्री भगवान तेरी रमज़ ना जाणी इक्क मंत दी, मंत्र अन्तर निरंतर पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। सेज १३११
२० सुहञ्जणी आदि निरँजणी सुभाएमान ना होई अगम्मी कन्त दी, लख चुरासी जीव जंत निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी २०
खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मैं इक्को तेरा मंगता, दरे दरबार सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण आपणा परदा दे चुकाईआ। झगड़ा रहे ना कूड़ कुड़यार विभचार मन दा, मन का मणका दे भवाईआ। इष्ट तत वजूद रहे ना तन का, सतिगुर शब्द नाद वज्जे शनवाईआ। साचा मार्ग नज़री आए दो जहान तेरे धर्म दा, कुकर्म दा लेखा देणा चुकाईआ। तेरे हुक्म नाल जुग चौकड़ी लोकमात जरम दा, जन्म दा दाता इक्क अख्वाईआ। अन्तिम लेखा मुका दे मन भरम दा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। हिस्सा रहे ना वरन बरन दा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। साचा रस्ता मार्ग दस्स दे आपणे चढ़न दा, बंक दवारी टेडी बंक अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नाद धुन शब्द सलोक दस्स दे अगम्मा पढ़न दा, जगत विद्या दा खहिड़ा देणा छुडाईआ। भय चुका दे आवण जावण मरन डरन दा, लख चुरासी जम की फाँसी नजर कोए ना आईआ। सच दुआर एकँकार सृष्टी दृष्टी अंदर बख्श आपणी सरन दा, सरनगति इक्को इक्क नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वखा

धुर दा दर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे मेरी अरदास, प्रभ चरण कँवल सीस निवाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी वसणा पास, दूर दुराडा नेरन नेरा हो के नज़री आईआ। सच दुआर एकँकार बिन गोपी काहन वेखां तेरी रास, मण्डल मण्डप वज्जदी रहे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नूर नुराना जोती जाते तेरा होवे जाप, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त ना कोए सालाहीआ। रूह बुत्त अबिनाशी अचुत दोवें कर पाक, पतित पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। तूं दीन दयाला सद कृपाला भगत वछल तैनूं रहे आख, आख़र मंज़ल आपणी दे वखाईआ। साचा परदा खोल्ह दे ताक, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द तेरा नूर होवे रुशनाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया रहे ना नार कमज़ात, धुर सुहागी हरि कन्त आपणा शब्द देणा मिलाईआ। सतिजुग सोया तेरी गोदी विच्चों जाए जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। धरनी धरत धौल कर वड्ड वड्ड भाग, भगवन आपणी दया कमाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी हो के पकड़ वाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा धुर दा घर, जिस गृह निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे धुर दे ठाकर, ठोकर आपणी दे लगाईआ। कलयुग गहर गम्भीर
१३१२ वेख डूँघा सागर, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। सति धर्म दा बणे ना कोए सौदागर, कूड़ कुड़यारा वणज जगत १३१२
कराईआ। बिन तेरे तेरे भगतां मिले कोई ना आदर, सच आदर्श ना कोए जणाईआ। तूं ख़ालक प्रितपालक करीम कादर,
२० कुदरत तेरा राह तकाईआ। तूं योद्धा सूरबीर बहादर, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश त्रैगुण माया तेरे चरण कँवल मंगे सरनाईआ। २०
जन भगतां निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ रंग अगम्मी रंग, रंगत तेरी नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया कर भंग, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। तेरे नाम दा वज्जे इक्क मृदंग, दो जहानां कर शनवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आत्म परमात्म निरगुण निरगुण होणा संग, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जाते चाढ़ चन्द, अन्ध अन्धेर दे गवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझा होवे दोहां दा छन्द, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी आदि जुगादी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल, स्वामी आपणी दया कमाईआ। निज गृह निज घर साचा दे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त अख़ीरी रिहा हंढ, सदी चौधवीं रो रो दए दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हक मुकामे दरगाह साची मंगां रहे मंग, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां आपे पार लँघ, गगन गगनंतर परदा दे चुकाईआ। बिन तेरी किरपा मन वासना कूड़ कल्पणा कोई ना मेटे गंद, सुगंध सच ना कोए भराईआ।

मेहरवान महबूब मुहब्बत विच पाईं ठंड, अग्नी तत दे बुझाईआ। सति धर्म कहे मेरी आसा मनसा पूरी कर दे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, समरथ तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार होणा संग, सरगुण आपणा मेल मिलाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३, २५ बी० बी० राजस्थान ★

धरनी कहे प्रभ वेख भगत सुहेले सच्चे, हरि साजन हो के दया कमाईआ। जिन्हां दे बाहरों तन वजूद माटी भाण्डे कच्चे, हड्ड मास नाड़ी मिल के सोभा पाईआ। उह अन्तर आत्म प्रेम प्यार विच पक्के, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा रूप वेख खुशी मनाईआ। बिन तेरी किरपा ओन्हां पत कोई ना रखे, दो जहान श्री भगवान दे वड्याईआ। साचा नाम जैकारा दे इक्क अलखे, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा परदा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म इक्को नाम स्वामी जपे, जप जीवत जग जीवण लै बदलाईआ। निजर धार अमृत दे रसे, रस्ता वाबस्ता हो के आपणा दे वखाईआ। जन्म कर्म दा लेख बदल दे मस्तक विच मथ्थे, त्रबैणी नैणी आपणी धार बंधाईआ। लख चुरासी आवण जावण मूल रहिण ना रट्टे, जम की फाँसी फंद देणा कटाईआ। तेरी सरन सच्चा लाहा इक्को खट्टे, खटका अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर धुर दा देणा समझाईआ। धरनी कहे प्रभ वेख सज्जण मीत, मित्र प्यारे दया कमाईआ। लख चुरासी परखणहारे नीत, जीव जंत साध सन्त खोज खुजाईआ। कवण करे तेरे नाल हक प्रीत, प्रीतम हो के परदा दे उठाईआ। साचा नाम कर बख्शीश, रहमत आपणी धुर दी झोली पाईआ। काया माटी कर ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जन भगतां झगड़ा मुक जाए मन्दिर मसीत, काया काअबा परदा दे चुकाईआ। गृह मन्दिर अंदर बैठा नज़री आएं त्रैगुण अतीत, जूठा झूठा डेरा देणा ढाहीआ। भरम रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म सांझा ढोला होवे गीत, गहर गम्भीर गुणी गहिन्द गोबिन्द मिले तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा धुर दा घर, जिस गृह छत्र झुल्ले तेरे सीस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मेरे साहिब प्रभू स्वामी, सतिगुर तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सुण सुण थक्की कहाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ढोले गाईआ। बिन नेत्र लोचण नैण तेरी तक्कदी

रही चारे खाणी, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ तट गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तेरा वेखदी रही पाणी, अछल छल तेरी लहिंदी धार वहिणां विच वहाईआ। मैं सेवक दरवेश तेरे दर दी बांदी, बन्दना विच सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार तेरे अग्गे वास्ता पांदी, दोए जोड़ सीस जगदीस झुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया वगे आंधी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मन कल्पना दृष्टी सृष्टी सारे फांदी, फंदन सके ना कोए कटाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी ढांडी, डण्डावत वाला नज़र कोए ना आईआ। सब दी बुद्धी काग वांग कुरलांदी, हँस रूप ना कोए बदलाईआ। मैं जुग चौकड़ी थक्की मांदी, बलहीण दयां दुहाईआ। साहिब सुल्तान श्री भगवान इक्को तेरा सोहला ढोला गांदी, कलमा तेरा नाम अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। धरनी कहे प्रभ जन भगत सुहेले वेख वड्डे निक्के, आयू वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिन्हां नूं निज निरंतर अन्तर आत्म परमात्म हो के दिसें, लोयण इक्को इक्क खुल्हाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े आए तेरे हिस्से, जो इक्को ओट रहे तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार कर हित्ते, हितकारी हो के दया

१३१४ कमाईआ। ओन्हां दे मानस जन्म जाण जित्ते, दूजी वार जन्म दी लोड़ रहिण ना पाईआ। जन्म कर्म दे लेखे कर दे चिट्टे, १३१४

दुरमति मैल धवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को नूर तेरा दिसे, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सच सिँघासण तेरे लिटे,

२० जगत खाटी दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग २०

दए वखाईआ। धरनी कहे तेरा भगत सुहेला मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस दी चार जुग दी वक्खरी रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे सीस निवाईआ। इक्को परम पुरख दा गाउँदे गीत, दूजा कलमा नाम ना कोए शनवाईआ। आपणा आप कर के ठांडा सीत, अग्नी अग्ग डेरा ढाहीआ। तूं साहिब सुहेला वस्या चीत, चेतन सुरती दिती कराईआ। सति धर्म दी दस्स के रीत, रीतीवान आपणी अक्ख खुल्हाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को दस्स प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बातन परदा दे उठाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी दिसे करीब, करबले वाले रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवण अमीर ग़रीब, ग़ुरबत अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। मन कल्पणा सब दा बदल दे नसीब, निस्बत आपणी दे समझाईआ। साचा कलमा धुर दा दस्स इक्क हदीस, गुर अवतार पैगम्बर हज़रतां दे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकारा इक्क सुणाईआ। धरनी कहे मेरे दीन दयाल तेरा धर्म दा वेखां युद्ध, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जन भगतां कारज कर सुध्ध,

वदी सुदी दी लोड़ रहे ना राईआ। निर्मल कर उजल बुध, बिबेक रूप दे समझाईआ। कूड़ी क्रिया दीपक जाए बुझ, निर्मल जोत कर रुशनाईआ। परदा ओहला चुका भेव खुल्ह्हे गुझ, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म दी साची सिख्या सब नूं जाए सुझ, सृष्टी दृष्टी अंदरों परदा दे उठाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी लेखा रिहा मुक, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव सत तेरे नाम दी मानव इक्को पढ़े तुक, आत्म परमात्म राग अनादी देणा जणाईआ। शाह सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान तैनूं सारे जावण झुक, निव निव लागण पाईंआ। सति धर्म दी साची मौले रुत्त, बसन्त कन्त भगवन्त आपणी महक इक्क महकाईआ। झगड़ा मुका दे काया माटी तत्तां वाला बुत्त, इष्ट देव स्वामी हुजरा हक इक्को सोभा पाईआ। जन भगत सुहेले तेरे विछोड़े दा रहे कोई ना दुःख, बिछरत आपणा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार निरगुण धार अनडिठ्ठ, दो जहानां हो सहाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां उत्ते तुठ, अतुट नाम भण्डारा दे वरताईआ। आवण जावण लख चुरासी सब दा पैंडा जाए मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत वड्डे छोटे बच्चे नन्न्हे आपे पुछ, निरगुण निराकार आपणा फेरा पाईआ। तेरी प्रेम प्यार मुहब्बत वाली मौले रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। तेरी मंज़ल चढ़दयां हरिजन अद्धविचकार कोई ना जावे रुक, देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव राह तक्कण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सतिगुर सति पुरख निरँजण तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे प्रभू मेरा मन्जूर कर अरदासा, अरज़ तेरे अग्गे सुणाईआ। जन भगतां पूरा दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। काया मन्दिर अंदर वेखां तेरी रासा, बिन गोपी काहन काहन गोपी देणा बणाईआ। जन भगतां लेखे ला पवण स्वासा, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। पन्ध मुका दे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर लेखा दे चुकाईआ। कलयुग मिटे रैण अन्धेरी राता, निरगुण सरगुण साचा चन्द कर रुशनाईआ। सति धर्म दा तेरा वेखां इक्क तमाशा, चार कुण्ट दहि दिशा अक्ख खुल्हाईआ। तेरा नूर होवे प्रकाशा, प्रकाश होवे सर्ब लोकाईआ। जन भगतां पूरीआं कर आसां, आहिस्ता आहिस्ता परदा दे उठाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कर वासा, बंक दवारा सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी सुणा अनादा, अनहद नादी नाद वजाईआ। ज्ञान दे बोध अगाधा, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। इक्को तेरे नाम दी जन भगत सुणन अगम्मी आवाज़ा, राज़ आपणा देणा खुल्हाईआ। पढ़नी पए ना कोई निमाज़ा, सजदयांविच सीस ना कोए झुकाईआ। तूं शाहो भूप वड सुल्तान धुर दा राजा, नवाब नौबत आपणी दे वजाईआ। जन भगतां रच के धुर दा काजा, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण मेला लैणा मिलाईआ। तेरा नाउँ ग़रीब निवाजा, सीस जगदीस सोहे ताजा, तख़्त निवासी शाहो शाबाशी आपणा परदा देणा उठाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो जन तेरी सरन सरनाई लागा, ओनां दा दुरमति मैल धो दाग़ा, आत्म दीप जगे चिराग़ा, बुद्धी रहे कूड़ ना कागा, सरवण सुणन कोई ना रागा, धुन आत्मक राग देणा सुणाईआ। धरनी कहे मेरी धर्म दी इक्क पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। जन भगत सुहेले कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। तेरी मंज़ल चढ़न दुष्वार, दूती दुष्ट राह ना कोए अटकाईआ। जिधर वेखण तेरा उज्यार, हर घट अंदर बैठा सोभा पाईआ। जन भगत सुहेले तेरे ख़िदमतगार, ख़ुदी तकब्बर अंदरों देणा कढाहीआ। तूं आदि जुगादी सांझा यार, तख़्त निवासी सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। प्रेम मुहब्बत बख़्श अगम्म अपार, जिस नूं मन कल्पना सके ना कोए तुड़ाईआ। मैं पिछली वेखां धार, कुछ लालो दा बिवहार, जिस दी महकी इक्क गुलज़ार, नन्हा बच्चा इक्क अपार, भईआ दा भतीजा पिछला नज़री आईआ। जिस दा कर्ज़ा रिहा उतार, पिछला रिहा ना कोए उधार, जन्म जन्म दी पैज दिती सुआर, लख चुरासी विच्चों कर के बाहर, पारब्रह्म ब्रह्म मेला कराए आपणी धार, जोती जाता अकल कलधारी कल आपणी इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां आदि जुगादि सदा सिक्दार, हुक्म विच हुक्म धुर दा इक्क जणाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ गुरदयाल सिँघ दे गृह २५ बी० बी० राजस्थान ★

धरनी धरत धवल धौल कहे मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। दर ठांडा वेख तेरा सच्चा दरबार, सचखण्ड दुआर दरगाह साची ध्यान लगाईआ। जिस गृह बिन दीआ बाती कमलापाती तेरा निरगुण नूर जोत होवे उज्यार, शाह सुल्तान नौजवान जल्वागर तेरी रुशनाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन शाहो भूप नज़री आए इक्क सरकार, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान सोभा पाईआ। चरण कँवल बिन सीस जगदीस झुकदे वेखे गुरू अवतार, पैगम्बर बिन सजदयां सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दिसण ख़िदमतगार, सिर सके ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी तेरे पनहार, दर ठांडे झोली डाहीआ। तूं देवणहार दातार, दाता दानी इक्क अख्वाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर तेरा सहार, मण्डल मण्डप तेरी वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप त्रैगुण माया पंज तत तेरा पसार, चारे खाणी चारे बाणी तेरी धार विच वड्याईआ। पवण पाणी शब्द नाद धुन तेरा जैकार, बोध अगाध बेपरवाह सिफ्त तेरी सालाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि तेरी धार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा वणज व्यपारा इक्को सोभा पाईआ। लख चुरासी जीव

जंत साध सन्त अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज चारे खाणी सेवादार, हुक्म अंदर हुक्म मन्न के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। धरनी कहे परम पुरख तेरी वेखी सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा सोभा पाईआ। जित्थे एका एक एकँकारा आदि जुगादि जुग चौकड़ी बैठा दीन दयाल, दीनन रच्छया आप कमाईआ। एथे ओथे दो जहान करे सर्ब संभाल, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म मनाईआ। नाम संदेसा धुर फ़रमाना दे के विच जहान, जीवत जागरत जोत करे रुशनाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही ढोले राग नाद गीत संगीत तेरा गान, गावत गा गहर गम्भीर खुशी मनाईआ। देवत सुर बिन सूरत अकाल मूर्त तेरा धरन ध्यान, नाद तूरत तुरीआ तों परे करे शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा सुणाउँदे धुर फ़रमान, सच संदेसा नर नरेशा निरअक्खर धार अक्खरां विच प्रगटाईआ। बिन तेरी किरपा मेहरवान, महबूब मुहब्बत हक ना कोए कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर परवरदिगार सांझे यार लाशरीक मैं वेख होई हैरान, चार कुण्ट दहि दिशा हैरानी इक्को नज़री आईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए निशान, दीन मज़ूब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान करन लड़ाईआ। शरअ शरीअत मन कल्पणा हर घट अंदर वड़ी शैतान, दिवस रैण अठ्ठे पहर सांतक सति ना कोए कराईआ। माया ममता मोह विकार हँकार विभचार दुराचार होया प्रधान, जूठ झूठ चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। आत्म ब्रह्म रिहा ना किसे दे कोल ज्ञान, बुद्धिवान बुद्धी दी करन चतुराईआ। अन्तर अन्तर मंज़ल चढ़े ना कोए महान, निरंतर तेरा दरस कोए ना पाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां वाले ढोले गाण, सरवणां नाल सुण के जगत जीव वक्त लँघाईआ। मैं दर निमाणी मंगां इक्को दान, सीस जगदीस तेरे चरण कँवल टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले जन भगत आप पछाण, आपणा परदा दे उठाईआ। नाम निधाना सुणा अगम्मा धुर फ़रमान, जिस नूं दूजा सुणन कोए ना पाईआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मकान, घर विच घर मेला लै मिलाईआ। अमृत आत्म रस दे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख दे मिटाईआ। दीआ बाती कमलापाती इक्क जगा महान, अन्ध अन्धेर अंदरों दे चुकाईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण सच स्वामी कर बिसराम, बिस्तर कूड़ी सफा दे उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हो निगाहबान, नौ दवारे ममता कूड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरे कर दे वड्डे भाग, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। दीपक बुझया जगा चिराग़, चरागाहां विच कर रुशनाईआ। हरिजन प्यारे अंदर धो दाग़, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। हँस बुद्धी बणा काग, कागों हँस दे वखाईआ। जो सरन सरनाई तेरी लग्ग जाए आज, अज्ज दा कल्ल लेखा दे मुकाईआ।

मन कल्पणा कूड़ी क्रिया आपणे हथ्थ पकड़ वाग, सुरत शब्द लै उठाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत दा दे वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढाहीआ। घर स्वामी ठाकर मेला होवे कन्त सुहाग, जो एथे ओथे दो जहान विछड़ कदे ना जाईआ। झगड़ा मुका दे दीन मज़्हब ज़ात पात जगत समाज, सच समग्री जोत इक्ग्री आपणी दे वखाईआ। सति दवारा एकँकारा इक्क वखा आपणा महाराज, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया कूड़ी तृष्ना बुझे आग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आसा इक्को इक्क वधाईआ। धरनी कहे साचा भगत बणा धुर दा जोगी, जोगीशर आपणा रूप बणाईआ। आत्म परमात्म बण मौजी, मजलस आपणी दे वखाईआ। काया मन्दिर अंदर बण के खोजी, परदा दूई दे चुकाईआ। जिस धार नूं दस्सदे गए वेदी सोढी, नानक गोबिन्द ढोला गाईआ। उह हुक्म वरता लोक परलोकी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा नाम गावण इक्क सलोकी, सोहला इक्को इक्क समझाईआ। साचे सन्तां पढ़नी पए कोई ना पोथी, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। इक्को प्रकाश तेरा वेखण निर्मल जोती, जोती जोत कर रुशनाईआ। आत्मा परमात्मा तेरा गोती, दूजी वण्ड ना कोए वखाईआ। जन भगतां आपणी मंज़ल

१३१८ दे सौखी, औझड़ राह ना कोए भवाईआ। हरख़ सोग़ चिन्ता ग़म विच रहे कोई ना दोखी, दुखियां दर्द लैणा वण्डाईआ। १३१८

२० तेरी याद विच दाद विच इमदाद विच बैठे कोटन कोटी, काया कुटीआ बैठ ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा काया मंज़ल चढ़े कोई ना चोटी, आख़र चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। माया ममता हउमे हंगता दे सारे बण गए रोगी, हँ ब्रह्म पारब्रह्म तेरा भेव कोए ना पाईआ। जगत विकार सृष्टी कीती विजोगी, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच जन भगतां बुद्धी जा सोधी, सुध आपणे नाल मिलाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब स्वामी समरथ, समां तेरा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कथा कहाणी लिख के गए अकथ, जिस नूं कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भविख्तां विच गए दस्स, नाम संदेश्यां विच जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण धार होए प्रगट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं जगत नेत्र वेखे कोई ना अक्ख, प्रतख रूप कवण गोसाँईंआ। सो दीन दयाला हो कृपाला सति धर्म दा खोल्हे इक्को हट्ट, जिस हट्ट दे वणजारे गुर अवतार पैगम्बर नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दृष्टी अंदर देवे इक्क वथ, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। सति धर्म दा सति सतिवादी हो के चलावे रथ, रथवाही बणे धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत मनारा जावे ढठ्ठ, सतिजुग साची नींह धराईआ। तट किनारा विरोले अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना

सुरस्ती परदा रहे ना राईआ। रागी नादी विस्मादी ब्रह्मादी वेखे गावत गाणेहारे भट्ट, भटनागर आपणी धार चलाईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी अक्खरां विच सतरां विच गई रट, रोटीन विच जगत धन्दे लाईआ। सो दीन दयाला आपणे नाम दा जैकारा बोल इक्क अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह परदा सब दा दए उठाईआ। जो हर घट अंदर रिहा वस, नाम निधाना देवे रस, मन मनुआ करे वस्स, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। भाग लगा के काया मट्ट, शब्द अगम्मी ला के सट्ट, सोई सुरत अकाल मूर्त लए उठाईआ। लख चुरासी आवण जावण गेड़ा देवे कट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता बेपरवाहीआ। धरनी मेरी पुनह पुनह निमस्कार, जगत जगदीश सीस निवाईआ। सदी बीसवीं पा सार, महासार्थी आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ होए खुआर, गुरुदुआर गुरदेव स्वामी नज़र कोए ना आईआ। तीर्थ तट दुरमति मैल ना सके कोए उतार, पापी अपराधी दुष्ट दुराचारी विकारी हँकारी करन लड़ाईआ। साची लेखे लग्गे किसे ना घाल, धायल वेखी जगत लोकाईआ। कोटां विच्चों थोड़े दिसण तेरे लाल, जो बैठे काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। ओनां दी आ के सुरत संभाल, नेड़ आ ना सके काल महाकाल, दीन दयाल तेरी सरन सरनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, नाम वस्त दे सच्चा धन माल, दीपक दीआ जोती इक्को बाल, गुरमुख बालक आपणे रंग रंगाईआ। तूं आदि जुगादी इक्क अमाम, झगड़ा मेट कूड़ तमाम, शरअ दा रहे ना कोए नज़ाम, सति धर्म दा कर इंतज़ाम, अदल इन्साफ़ इक्को इक्क वखाईआ। धरनी कहे मैं जुग चौकड़ी तेरे आगमन दा सुणदी रही पैग़ाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे मेरे साहिब स्वामी महबूब, तेरी मुहब्बत विच कुरलाईआ। राह वेखां तेरा अर्श उच्च अरूज, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। जित्थे पीर पैगम्बर गए झूज, नछावर आपणा आप कराईआ। ओथे झगड़ा नहीं दूज, कलमा अवर ना कोए पढ़ाईआ। तेरी इक्को हद्द मंज़ल मक्सूद, मुकामे हक सोभा पाईआ। साची रमज़ दे सूझ, धुर इशारे नाल दृढ़ाईआ। जगत जिज्ञासू तैनूं लैण बूझ, परदा अंदरों दे उठाईआ। माया ममता विच रहे ना कोए बेवकूफ़, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ। पिछला हुक्म चार जुग दा कर मनसूख, अग्गे इक्को हुक्म वरताईआ। सच प्रेम दा दे रसूख़, रुख़सत कूड़ी क्रिया दे कराईआ। शिकवा रहे ना किसे शकूक, शिकवागर तेरी सरनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आपणे हुक्म अंदर कर महिफ़ूज़, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। तेरा शब्दी धुरदरगाही इक्को दूत, दो जहान लए समझाईआ।

१३१६
२०

सिख्या दे दे सब नूं काया पंज भूत, पंच मार पंच दे वड्याईआ। जिधर वेखां ओधर दिसें मौजूद, मजलस भगतां नाल रखाईआ। कूड़ कुड़यार काया विभचार कर नेस्तोनाबूद, सदी चौधवीं जड़ उखड़ाईआ। तूं इक्क इकल्ला वाहिद तेरा आपणा आप सबूत, दूसरी शहादत ना कोए भुगताईआ। ना कोई तत ना वजूद, ना कोई काया कलबूत, निरगुण नूर तेरा रुशनाईआ। धरनी कहे तेरा हुक्म वरते चारे कूट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर फ़रमाना इक्क समझाईआ। धरनी कहे मेरे धर्म दे मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। मार्ग दस्स दे भगत भगवान, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर तेरा ढोला गाण, धुर दा राग अलाईआ। नव नौ चार झुल्ले तेरा निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी सरनाईआ। तेरा मन्दिर सोहे इक्क मकान, जगत दवारे लोड़ रहे ना राईआ। अमृत रस दे पीण खाण, रसना जेहवा ना होए हल्काईआ। सच प्रीती बख्श चरण ध्यान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। आत्म परमात्म कर परवान, परम पुरख बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, सतिजुग साचा राह वखाईआ। पूरब जन्म दा लेखा सब नूं दे आण, आनन फ़ानन परदा दे उठाईआ। मूर्ख मुग्धां आए ज्ञान, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। तन माया अंदर तेरे शब्द
१३२० उपजे धुनकान, धुन आत्मक राग समझाईआ। तेरा नूर होवे महान, जोती जोत डगमगाईआ। सचखण्ड तेरी भूमिका सोहे १३२०
२० अस्थान, अस्थिल तेरा दवारा नजरी आईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव सारे सीस निवाण, निउँ निउँ २०
लागण पाईआ। तूं तख्त निवासी शाह पातशाह शहिनशाह नौजवान, सच दवारे सोभा पाईआ। तेरा इक्को हुक्म इक्क फ़रमान, इक्क दृष्टी इक्क ध्यान, इक्क इष्ट इक्क ईमान, इक्क धर्म इक्क परवान, सतिजुग रीती चले भगत भगवान, भाग धरनी कहे प्रभ मेरा मेरी झोली पाईआ।

★ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ रतन सिंघ दे गृह २५ बी० बी० राजस्थान ★

तेई फलगुण कहे राह तक्कण तेई अवतार, त्रैगुण अतीता ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत रहे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ज़िमीं असमानां हाहाकार, दीन दुनी वज्जी कूड़ वधाईआ। साचा मिले ना कोई मित्र यार, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए खुआर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा भेव कोए ना आईआ। नव नौ चार रिहा हार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। आशा कहे मैं वेखणा दर, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। जित्थे सच

स्वामी अन्तरजामी वस्या आपणे घर, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना बैठा वड़, पतिपरमेश्वर डेरा लाईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार आपणा खेल रिहा कर, खालक ख़लक आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दरवेश बैठे दर, सीस जगदीस रहे झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सरनी रहे पड़, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। धुर फ़रमाना कहे मैं अगम्म अथाह, निरगुण सरगुण भेव कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी लेखा बेपरवाह, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे ध्या, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। रहिबर तक्कण राह खुदा, खुदी तकब्बर डेरा ढाहीआ। जेहड़ा आत्म परमात्म नालों होया जुदा, जुज़ आपणा वण्ड वण्डाईआ। उस ने शाह सुल्तान कीते जगत गदा, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहे कुरला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना होए हल्काईआ। साचा मार्ग दस्से कोई ना आ, आमद विच खुशामद विच भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी करनी दा करता कुदरत दा मालक कल आपणी कार कमाईआ। कल आपणी कार कमावेगा। दीन दयाल खेल खिलावेगा। ब्रह्मण्ड

१३२१ खण्ड फोल फुलावेगा। जेरज अंड परदा लाहवेगा। सच वजा इक्क मृदंग, सोहला ढोला दो जहान सुणावेगा। लख चुरासी १३२१

२० अंदर लँघ, काया माटी हाटी वेख वखावेगा। जन भगतां दे के इक्क अनन्द, अनन्द आत्म परमात्म विच्चों प्रगटावेगा। खुशी २०

कर के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक्क समझावेगा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दो जहान गाउणा छन्द, सोहँ ढोला राग अलावेगा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणा जोड़ जुड़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार इक्क इकल्ला आप प्रगटावेगा। सच संदेसा इक्क सुणावांगा। दो जहान आप उठावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप हिलावांगा। गुर अवतार पैगम्बर एका राग सुणावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। सतिजुग साचा राह चलावांगा। चार वरन अठारां बरन इक्को घर वसावांगा। जन भगतां नेत्र खोलू के हरन फरन, निज लोचन नैण नूर चमकावांगा। साचे पौड़े दस्सां चढ़न, मन्दिर अंदर इक्क सुहावांगा। आत्म परमात्म साचा गीत सुहागी बिन रसना जेहवा सारे पढ़न, अनादी नाद इक्क वजावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुल्तान हो के एका हुक्म वरतावांगा। एका हुक्म हरि वरताएगा। लख चुरासी वेख वखाएगा। सन्त सुहेले आप जगाएगा। गुर चेले मेल मिलाएगा। सज्जण सुहेले वेख वखाएगा। कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढाएगा।

साचा मंत्र इक्क दृढ़ाएगा। माया ममता मोह विकार मिटाएगा। सच प्रकाश कर के अंदर लो, अन्ध अन्धेरा दूर कराएगा। अमृत निजर धारा झिरना अगम्मी चो, बूँद स्वांती मुख पवाएगा। कूड़ी क्रिया विकार कढ्ढ धरोह, धर्म दवारा इक्क सुहाएगा। प्रभ अबिनाशी करता आपे हो, होका आपणा नाम उपजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक्क समझाएगा। सच संदेसा एकँकार, इक्क इकल्ला आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर खुआर, खुदी खुमारी दए मिटाईआ। सतिजुग सच धर्म कर उज्यार, सच सति करे रुशनाईआ। धर्म दवारा वखा धुर दरबार, दरगाह साची भेव खुलाईआ। सेवा ला गुरू अवतार, पैगम्बरां हुक्म मनाईआ। इष्ट देव इक्क अपार, अपरम्पर स्वामी दए वखाईआ। रसना जेहवा इक्क जैकार, सृष्टी दृष्टी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी राह वखाईआ। सति सतिवादी देवे मत, मता इक्को नाल रखाईआ। सब दी जाणे मित गत, लख चुरासी फोल फुलाईआ। धर्म दी धार चला के रथ, रथवाही बणे धुरदरगाहीआ। बोध अगाध दस्स दे महिमा अकथ, बिन कथनी करे पढ़ाईआ। नाम अमोलक दे के वथ, वास्ता इक्क नाल जुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना तत अठ्ठ, शरअ वाली ना
१३२२ कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म इक्क इक्ट्ठ, कठन तपस्सया दा खहिड़ा दए छुडाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला लैण १३२२
रट, रट्टा आवण जावण रहे ना राईआ। जम की फाँसी फास देवे कट, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। लेखे ला के तन
२० रत्त, रतन अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। धर्म दी धार दे के यति, यथार्थ आपणा परदा लाहीआ। आपणे मिलण दी दे २०
के अक्ख, आखर आपणे घर वसाईआ। जित्थे मेला पुरख समरथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। साचा रंग कहे मैं चढ़ना गुरमुख काया चोली, चोला देणा रंगाईआ। जो परम पुरख दी बणे गोली, गोलक उस दी देणी भराईआ। सति धर्म दी खेले होली, आपणी खुशी मनाईआ। ओहदे अंदर वड़ के दस्सणी अगम्मी बोली, शब्द सुनेहड़ा सच सुणाईआ। मन वासना पावे ना रौली, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। माण दवा के उपर धौली, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। उलटी करके नाभ कँवली, बूँद स्वांती इक्क टपकाईआ। नूर अलाही दस्स के अव्वली, आलमीन देणा मिलाईआ। जिस दी सूरत सदा सुंदर सवली, रंग रूप रेख समझ कोए ना पाईआ। उह लेखा जाणे स्वास पवणी, पवण पवण वेख वखाईआ। गुरमुखां झेड़ा मुका के अवण गवणी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। फुल्ल फुलवाड़ी महका के अगम्म चमनी, गुंचा आपणा नाम खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक्क चढ़ाईआ। साचा रंग कहे मैं चढ़ना काया बुत्त वजूद, सूफ़ी सन्त फ़कीर देणे रंगाईआ। अग्गे मिलाउणा इक्क

महबूब, जो मुहब्बत विच समाईआ। जिस दा आहला अर्श अरूज, मुकामे हक डेरा लाईआ। जिस दी सिफ्त सालाह करे हज़ारा दरूद, कलमयां विच शनवाईआ। जो हाज़र सदा मौजूद, मुफ़लसां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। परदा कहे मैं जाणा लथ्थ, काया मन्दिर अंदर रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल मिलणा इक्क समरथ, जो दाता धुरदरगाहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गाउँदे गथ, गुर अवतार पैगम्बर ढोलयां विच गाईआ। उस दा हुक्म संदेसा चार कुण्ट दहि दिशा दो जहानां देणा दस्स, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। जिस ने मार्ग लाउणा सच्च, सतिजुग साचा राह चलाईआ। करना प्रकाश काया माटी कच्च, कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। भगतां लूं लूं अंदर जाणा रच्च, साढे तिन्न करोड़ वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जाणी मच्च, अग्नी अग्ग देवे तपाईआ। सदी चौधवीं सब दा खेड़ा होणा भठ्ठ, नबी रसूल होवे ना कोए सहाईआ। मक्का काअबा काअबे वालयां जाणा छड्ड, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी करे करता पुरख, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस नूं सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। सदी बीसवीं सारे लए परख, पारखू हो के वेख वखाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले देवे दरस, दाता दानी बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी मेट के हरस, हवस अगली दए गवाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर के तरस, रहमत आपणी इक्क दरसाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार झगड़ा मुका दए मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ चर्च, चारों कुण्ट इक्को रंग वखाईआ। करे प्रकाश उपर अर्श, जलवा नूर धरे फर्श, धरनी धरत धवल आवे परत, निराकार आपणी खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां भविक्खतां दा लेखा पूरा करे पूरबली शर्त, शरअ दी शरीअत असलीअत विच असल वसल इक्को एक आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया सृष्टी दी दृष्टी विच्चों देवे झटक, नाम खण्डा खड़ग कटार ख़ैरख़ाह हो के इक्क चलाईआ।

★ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ नंता सिँघ दे गृह पदमपुर राजस्थान ★

गुर अवतार पैगम्बर सारे होण हैरान, दरगाह साची सचखण्ड बैठे ध्यान लगाईआ। की खेल करे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर श्री भगवान, परवरदिगार आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप शरअ होई शैतान, दीन

१३२३
२०

मज़्ब ज़ात पात वरन गोत करे लड़ाईआ। साचा मन्दिर सोहे ना कोए मकान, काया काअबा नूर ना कोए रुशनाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए निशान, माया ममता मोह होए हल्काईआ। आत्म ब्रह्म मिले ना कोए ज्ञान, जगत विद्या दए दुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान नैण शरमाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल तेरे अग्गे इक्क अरज़ोई, शाह सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान दईए सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी अंदर मिले कोए ना ढोई, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा परदा ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म सुरती उठे कोए ना सोई, पारब्रह्म तेरा ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। निजर धारा अमृत रस बूँद सवांत कोए ना चोई, रसना पढ़ पढ़ सारे करन पढ़ाईआ। सजदयां विच कलमयां विच तेरे दर इक्क दरोही, बी मेहरबान महिबान बीदो सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। साहिब स्वामी आपणी सृष्टी दृष्टी वेख आपणे अगम्मे नैण, जगत नेत्र दी लोड़ रहे ना राईआ। साचा मित्र मीत मिले कोई ना साक सज्जण सैण, सन्त सुहेला नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन कल्पणा पाए वैण, बुद्धी रोवे मारे धाहींआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोई चुकाए लहिण देण, आवण जावण पतित पावन पन्ध ना कोए मुकाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां वाला रह गया गायन, धुन आत्मक राग अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। सच दुआर एकँकार दरगाह साची किसे ना मिले बहण, मन्दिर मस्जिद शिदवाले मठ्ठ गुरुदुआर रहे कुरलाईआ। तेरा आत्मा तेरे नालों होया तरफ़ैन, तेरा ब्रह्म पारब्रह्म तेरे विच ना कोए समाईआ। किरपा कर आदि जुगादी परम पुरख नर नरायण, परवरदिगार सांझे यार लाशरीक तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा रिहा सच ना सजदा, सीस जगदीस ना कोए झुकाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार काया माटी अंदर पाया परदा, तन वजूद महबूब तेरा दरस कोए ना पाईआ। जीव जंत साध सन्त कलयुग अग्नी माया विच सड़दा, सति स्वामी अन्तरजामी तेरा नूरी नूर ना कोए चमकाईआ। चार जुग दे बकते तेरा नाम अगम्मी कोई ना परदा, अक्खरां वाली कर कर थक्के पढ़ाईआ। साची मंज़ल बिन हथ्थां पैरां कोई ना चढ़दा, दरगाह साची सच दवारे मिलण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा खेल आपणे घर दा, सदी चौधवीं चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ।

मानव मानस मानुख साफ़ रिहा कोई ना हिरदा, हिरदे अंदर काया मन्दिर तेरा दीपक जोती जोत ना कोए जगाईआ। बीस बीसे हरि जगदीसे तेरे हुक्मे अंदर आदि जुगादि गेड़ा गिड़दा, दो जहान नौजवान मर्द मर्दान आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां भविख्त लिख्या चिर दा, पोशीदा राज़ दे खुल्हाईआ। कर प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशी पुरख अबिनाशी घट निवासी नव नौ चार आपणा परदा दे उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साची रही ना कोए अदालत, अदल इन्साफ़ ना कोए कराईआ। माया ममता मोह लग्गी अलामत, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। कलयुग साध सन्त वैरागी त्यागी रिहा ना कोए सही सलामत, मन बुद्धी चली ना कोए चतुराईआ। तेरे नाम दी बिन तेरी किरपा सारे देण ज़मानत, बरीख़ाना अग्गे ना कोए वखाईआ। चार वरन अठारां बरन साचा नाम ना मिले नयामत, अमृत रस निजर झिरना ना कोए झिराईआ। चार जुग दी पिछली लेखे लग्गी कलामत, कलमा हक अगला दे समझाईआ। जिस दे नाल मनुआ करे ना कोए बग़ावत, झगड़ा तन रहे ना राईआ। आप संभाल आपणी अमानत, जो आत्मा तन वजूद विच दिती टिकाईआ। एथे ओथे दो जहानां तूं साहिब सुल्तान इक्क

१३२५ सही सलामत, कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरे हुक्मे अंदर वेस वटाईआ। जोती १३२५

२० जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कलयुग अन्तिम आपणा परदा दे उठाईआ। गुर अवतार २०

पैगम्बर कहिण मेहरवान महबूब चुक्क दे परदा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। लोकमात पैंडा मुक्कया साडे घर दा, सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी दए दुहाईआ। मालक रिहा ना कोई साचे सर दा, तीर्थ तट किनार गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रो रो नीर वहाईआ। झगड़ा पै गया गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ दा, शाह पातशाह शहिनशाह तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। दीन मज़्हब गुर अवतार पैगम्बरां झगड़ा बणाया तत तन दा, अल्ल्हा वाहिगुरू राम राम नाल दिता लड़ाईआ। अग्गे गुर अवतार पैगम्बर तेरे दवारे वस्त इक्को मंगदा, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साचा समां दे अनन्द दा, कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। भेव खुल्हा दे तन वजूद हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म आपणा नूर कर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार तन वजूद लै के मात गर्भ जम्मदा, बिन तेरे जन्म मरन विच अवर कोए ना आईआ। पिछला समां तेरे हुक्म नाल गया लँघदा, कलयुग अन्तिम सारे कूक देईए सुणाईआ। साडा हुक्म हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कोई नहीं मन्नदा, गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा भय ना कोए रखाईआ। हुण वेला आ गया अन्त अख़ीर तेरे डंन दा, डंका डौरू आपणा नाम दे वजाईआ। भाण्डा भरम भउ भन्न दे जननी जन का, अन्ध अन्धेर दे गवाईआ। झगड़ा मुका दे राग सुणन

कन्न दा, अनबोलत अन्तर निरंतर आपणा नाम दे जणाईआ। जेहड़ा मन शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़यां नहीं मन्नदा, साध सन्त डोर हथ्थ ना कोए वखाईआ। एह झगड़ा मुका दे खुशी ग़म दा, इक्को रंग दे रंगाईआ। बिन तेरी किरपा जुग चौकड़ी बेड़ा कोए ना बन्नृदा, बन्नृणहारा इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दुआर दर ठांडे इक्क रूप हो के तैथों मंगदा, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तेरा प्रकाश वेखीए सतिजुग साचे चन्द दा, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। चार कुण्ट नाअरा उपजे धन्न धन्न धन्न दा, धर्म दवारा इक्को दे खुलृाईआ। जिस दवारे क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश होवे मंगदा, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। प्रेम मिल जाए तेरे अगम्मी अंग दा, अंगीकार इक्क अख्वाईआ। सुख मिल जाए तेरी आत्मा सेज पलँघ दा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। ढोला सुणया जाए तेरे अगम्मी छन्द दा, अनादी नाद देणा जणाईआ। झगड़ा मुके पंच विकार जंग दा, भय भउ देणा गवाईआ। परदा रहे ना कोई आत्म ब्रह्म दा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। क्यों आत्मा सदा तेरी धार विच्चों जम्मदा, अन्त तेरे विच समाईआ। पंजां तत्तां वाला सरीर किसे नहीं कम्म दा, अन्त मढ़ी गोर रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्क सहारा मंगे तेरे नाम अगम्म दा, अगम्मड़े भेव देणा खुलृाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा मुकावे काया माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी अन्तर इष्टी इक्को नज़री आईआ।

१३२६
२०

★ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ बीबी तेज कौर दे गृह बनवाली ★

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ शरअ दी तोड़ गुलामी, तत वजूद झगड़ा रहे ना राईआ। सति धर्म दी दे इक्क निशानी, चार कुण्ट दहि दिशा आप समझाईआ। मनुषां उपर कर मेहरवानी, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। जलवा जोत दे नूरानी, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। साची मंज़ल इक्को बख्श रुहानी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा ना रहे जिस्मानी, जिस्म विच इस्म आपणा इक्क वखाईआ। तेरा कलमा अगम्मी सुणन पैग़ामी, पैगम्बरां तों परे कर पढ़ाईआ। तेरे साचे नाम दी करे ना कोए बदनामी, बदली दा बदला दे चुकाईआ। निरगुण धार प्रभ निहकामी, निरवैर आपणा हुक्म वरताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख होई बेइंतज़ामी, गुर अवतार पैगम्बर ना कोए सहाईआ। कलयुग मेट रैण अन्धेरी शामी, शमां दीप जोत कर रुशनाईआ। तेरी हकीकत उपजे इक्क कलामी, कायनात परदा दे उठाईआ। साचा मन्दिर सोहे मकानी, बंक दुआर वज्जे वधाईआ। चार वरन अठारां बरन नाता जुड़े बाहमी, इत्तफाक इक्को देणा कराईआ। झगड़ा

रहे ना चारे खाणी, चारे बाणी भेव दरसाईआ। अमृत रस दे धुर दा ठंडा पाणी, अग्नी तत बुझाईआ। सुरती शब्दी मेल करा धुर दे बानी, रंग इक्को घर रंगाईआ। लेखा मुका दे पवण मसाणी, मसला आपणा इक्क समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कोई ना करे बेईमानी, बेवा रूप ना कोए बणाईआ। तीर अणयाला तीर मार बिरहों वाली कानी, अणयाला आप चलाईआ। सब दा मस्तक लेख लिख आपणी पेशानी, पोशीदा परदा दे उठाईआ। आत्मा रहे ना कोए बेगानी, परमात्मा हो के मेल मिलाईआ। तेरा नूर चमके दो जहानी, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। तूं सर्ब जीआं घट जाण जाणी, लख चुरासी वेख वखाईआ। प्रगट हो योद्धे सूरबीर आप मैदानी, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। बिन तेरे दूजा दिसे कोई ना बानी, साचा राह ना कोए प्रगटाईआ। देणी पए ना कोए कुरबानी, करबला रूप ना कोए वटाईआ। साचा बख्श दे पद निरबानी, निरवैर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा मुकाईआ। किरपा कर साहिब सुल्तान, कलयुग जीवां सुत्यां दे जगाईआ। सच धर्म झुला निशान, कूड़ी क्रिया बाहर दे कढाहीआ। धुर दा मंत्र दे नाम, पैग़ाम नूर इलाहीआ। दरगाह मिलणा कर आसान, एहसान अवर ना कोए रखाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा मुके तमाम, तमा
१३२७ दा डेरा देणा ढाहीआ। तेरी सच दी साची होवे शान, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। इक्को मन्दिर सोहे मकान, मकबरयां १३२७
लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर सईयदे करन आण, सीस जगदीस झुकाईआ। इक्को कलमा तेरा गाण, तूं मेरा
२० मैं तेरा सति पढ़ाईआ। लेखा मुक जाए आवण जाण, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। मार्ग दस्स भगत भगवान, भेव अभेदा २०
आप खुल्हाईआ। सन्त सुहेले कर पहचान, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। गुरमुख दे सच्चा दान, दयावान दया कमाईआ। गुरसिख चरण कँवल कर परवान, परवाने आपणे रंग रंगाईआ। तूं साहिब सतिगुर सदा मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। अन्त अखीरी वेख आण, जोती जाते वेस वटाईआ। झगड़ा मुक जाए पत्थर पाहन, इट्टां सीस ना कोए निवाईआ। नज़र आ इक्क अमाम, नौबत आपणी हक वजाईआ। दीन दुनी होई परेशान, पशचम विच पए दुहाईआ। नेत्र रोवे शाह ईरान, धीरज धीर ना कोए धराईआ। तेरा खेल अगम्म महान, बुद्धी समझ सके ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर चारों कुण्ट तक्कण मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कवण वक्त पहुंचया आण, कवण वेला मिले वड्याईआ। सारे तक्क के होए हैरान, हैरत विच दुहाईआ। चारों कुण्ट वेखो कूड़ होया प्रधान, सति धर्म ना कोए अपणाईआ। मेला मिले ना किसे भगवान, भगती धार ना कोए जणाईआ। कूड़ा रस सारे खाण, अमृत रस ना कोए चखाईआ। काया मन्दिर दिसे सुंञ मसाण, दीवा बाती कमलापाती ना कोए रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ होया बीआबान, रुत्त बसन्त ना कोए खिलाईआ।

पवण स्वासी लेखे ना लग्गे प्राण, प्राणी प्राणपति मिल के ना ख़ुशी बणाईआ। कूड़ा रस पीण खाण, माया ममता मोह वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां उपर हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां दे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सचखण्ड दवारा वखा जित्थे वसे धुर दा काहन, जोत सरूपी डेरा लाईआ। साचे भगतां मेट दे आवण जाण, जाणीजाण तेरी सरनाईआ। हक बेनन्ती दरे दरवेश कर परवान, परम पुरख तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे झुकदे आण, निरगुण निरगुण तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ।

★ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ सुरजीत सिँघ दे गृह बनवाली ★

गुर अवतार पैगम्बर सारे रहे झुक, दरगाह साची सचखण्ड दवारे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी किरपा नाल कूड़ कुड़यारा पैंडा जाए मुक, अन्ध अन्धेरा अगला रहिण ना कोए पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी शब्द नाम जणा आपणी तुक, तुरत तुरीआ तों परे कर पढ़ाईआ। मन कल्पणा मेट आत्म दे सुख, बुध बिबेक सर्ब कराईआ। परदा ओहला रहे कोई ना लुक, जल्वागर निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आवे सच सुच, संजम इक्को देणा समझाईआ। माया ममता मोह विकार मेट दु:ख, दर्दी हो के दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गोदी चुक्क, चार वरनां विच्चों बाहर कढाहीआ। तेरा भगत उलटा मात गर्भ ना होवे रुक्ख, दस दस मास अग्नी तत ना कोए तपाईआ। असीं सारे होईए खुश, सचखण्ड बैठे ख़ुशी मनाईआ। धुर दा वेला रिहा ढुक, शहादत गुर अवतार पैगम्बर रहे भुगताईआ। दीनां अनाथां उत्ते तुठ, निगाह मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ विकारा कलयुग कुट्ठो, काया कपड़ कर सफ़ाईआ। अमृत जाम प्या अगम्मा घुट, निजर झिरना दे झिराईआ। शरअ जंज़ीर जावे टुट्ट, बन्धन अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साचा मार्ग ला एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। नव सत्त बख्श टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सच दुआर वखा आपणा देस, परदेसीआं पैंडा दे मुकाईआ। तूं ख़ालक प्रितपालक नर नरेश, नर नरायण तेरी वड्याईआ। भविख्त वेख दस दस्मेश, गोबिन्द कहि के गया जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को करे साचा हेत, जोती जाता सृष्ट सबाई वेख वखाईआ।

तेरा मार्ग नेतन नेत, दूर दुराडा पैंडा रिहा चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे लेख, सतिजुग साचे सच वज्जे वधाईआ। काया मन्दिर अंदर चढ़ के खोल्ह आपणा भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। माया ममता मोह विकार मेट दे रेख, ऋषी मुनी इक्को सीस जगदीस झुकाईआ। सहँसर मुख रो पुकारे शेष, दो सहँसर जेहवा रिहा हिलाईआ। तूं करनी दा करता कुदरत दा कादर रहें सदा हमेश, हमसाजण हो के हो सहाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर तेरी वेखीए खेड, जगत खलाड़ी आपणी कार देणी कमाईआ। जिस कारण सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सानूं दिता भेज, भजन बन्दगी जगत ना कोए समझाईआ। अन्तिम तेरा जोती जलवा तकणा चाहुन्दे तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपे वेख वखाईआ। सच दुआर एकँकार गृह मन्दिर बणा आपणी सेज, सिँघासण पुरख अबिनाशण डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे तेरे होए पेश, पेशीनगोई पिछली रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच दा कर हेत, हितकारी हो के निरँकारी हो के निराधारी हो के जोत उज्यारी हो के करमचारी आपणे कर्म कांड विच्चों बाहर कढाहीआ।

★ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ३ मलकीअत सिँघ दे गृह बनवाली ★

पुरख अकाल कहे मैं दीन दुनी दा मालक, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्ट सबाई प्रितपालक, लख चुरासी जीव जंत आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार ख़लक दा ख़ालक, परवरदिगार इक्क अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भेजदा रिहा अगम्मे बालक, धुर संदेसा नाम जणाईआ। सृष्टी दृष्टी दी वेखदा रिहा हालत, अंदर बाहर खोज खुजाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा रिहा अदालत, इन्साफ़ धुर दा इक्क कमाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं सतिगुर शब्द बणावां सालस, सिर समरथ आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार वरन विच्चों लभ्भां ख़ालसा ख़ालस, जो आत्म परमात्म ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के निंद्रा आलस, सति सच करां रुशनाईआ। कूड़ा मस्तक रहिण ना देवां कालख, कल कल्की हो के कलंक दयां मिटाईआ। किसे दी चलण ना देवां कोए सफ़ारश, सन्त सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। चार जुग दी जो लिखी गई पिच्छे इबारत, तिस दा लहिणा देणा झोली पाईआ। बुद्धी चुतराई करे ना किसे आरफ़, उल्मा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निरगुण हो के निरगुण धार करावां तुआरफ़, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। कर प्रकाश अन्धेरी ग़ारत, अन्ध अन्धेरा दयां चुकाईआ। साचे काअबे दी हक ज़िआरत, ज़र्रे ज़र्रे विच्चों वखाईआ। मनुआ करे

ना कोए शरारत, शरअ दा डेरा देवां ढाहीआ। कूड़ कुड़यार रहे ना कोए साज़श, सज़ा सब नूं दयां भुगताईआ। अग्नी तत लावे कोई ना आतश, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। चुतराई चले किसे ना नारद, मुनी मोन ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दा इक्क स्वामी, दीन दयाल दयानिध अखवाइंदा। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट अन्तर वेख वखाइंदा। बोध अगाध अगम्मी मेरी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिफ्त सालाहइंदा। मेरा नूर ज़हूर चारे खाणी, चारे बाणी रागां नादां विच वड्याइंदा। चार जुग मेरी खेल महानी, चार कुण्ट दहि दिशा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाइंदा। पुरख अकाल कहे मेरा सब तों वक्खरा अनन्द, रसना रस ना कोए चखाईआ। मेरा सब तों वक्खरा छन्द, गुर अवतार पैगम्बर सके ना कोए समझाईआ। मेरा सब तों वक्खरा चन्द, सूर्या चन्द ना कोए डगमगाईआ। मेरा सब तों वक्खरा बन्द, बन्दगी दो जहान दृढ़ाईआ। मेरा सब तों वक्खरा संग, एथे ओथे होवां सहाईआ। मेरा सब तों वक्खरा रंग, जगत ललारी ना कोए रंगाईआ। मेरा सब तों वक्खरा ढंग, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। मेरा सब

१३३० तों वक्खरा ब्रह्मण्ड, जिस दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेरा सब तों वक्खरा खण्ड, जित्थे खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। १३३०

२० मेरा सब तों वक्खरा मृदंग, दो जहानां करे शनवाईआ। मेरा सब तों वक्खरा पलँघ, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। मेरा सब तों वक्खरा परमानंद, जो निज आत्म दयां चखाईआ। मेरा सब तों वक्खरा लेखा हँ ब्रह्म, पारब्रह्म हो के परदा दयां उठाईआ। मेरा सब तों वक्खरा कम्म, करनी दा करता हो के आप वखाईआ। मेरा सब तों वक्खरा दम, पवण उणंजा ना विच समाईआ। मेरा सब तों वक्खरा चम्म, तत्व तत ना कोए हंढाहीआ। मेरा सब तों वक्खरा छप्पर छन्न, जिस दी चार दीवारी नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। पुरख अकाल कहे मैं आदि जुगादी भगवन्ता, भगवन हो के दया कमाईआ। मेरा लेखा सदा सदा बेअन्ता, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। मेरा बोध अगाधा मंता, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। मैं लख चुरासी कन्ता, नर नरायण इक्क अख्वाईआ। मैं गुर अवतार पैगम्बरां बणा पंडता, धुर दी सिख्या इक्क समझाईआ। मैं संदेसा देवां साचे सन्ता, धुर फ़रमाना इक्क दृढ़ाईआ। मैं लहिणा देणा जाणां लख चुरासी जीव जंता, जागरत जोत करां रुशनाईआ। मैं गढ़ हँकारी तोड़ां हउमे हंगता, हँ ब्रह्म परदा लाहीआ। मैं मेल मिलावां चार वरन इक्क दवारे साची संगता, संगम प्रेम प्रीती दयां बणाईआ। मैं किसे दवारे होवां कदे ना मंगता, देवणहार बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघदा, कलयुग

वेला अन्तिम आईआ। दीन दुनी दा झगड़ा वेखे भुक्ख नंग दा, शाह सुल्तान होए हल्काईआ। परदा ढाहे ना कोए द्वैती कंध दा, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भिखारी हो के मंगदा, दर दरवेश झोली डाहीआ। मेरा खेल सूरे सरबंग दा, करनी दा करता हो के आप कराईआ। बिन भगतां दूजे दुआर कदे ना लँघदा, सच दुआर ना कोए प्रगटाईआ। धुर दा संदेसा देवां आपणे अगम्मी छन्द दा, सोहँ ढोला इक्क दृढ़ाईआ। गुरमुखां पैंडा मुकावां आवण जावण लख चुरासी पन्ध दा, जूनी विच ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ कुड़यारा मन विकारा सदा दंडदा, जन भगतां डण्डावत आपणी इक्क दरसाईआ।

★ ★ ★ ★ ★